जनवरी १९४८ नम्बर १

نمبر ا

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर, लिये प्रेम की झोली.

[illegible] ہندستانی بولی،
[illegible] لئے پریم کی جھولی.

कबीर बानी

हिन्दू कहैं राम मोहिं प्यारा
तुरक कहैं रहिमाना
आपस में दोऊ लरि लरि मूए
मरम न काहू जाना.

❁ ❁ ❁ ❁

کبیر بانی

ہندو کہیں رام موہیں پیارا
ترک کہیں رحمانا
آپس میں دوؤ لر لر موئے
مرم نہ کاہو جانا.

❁ ❁ ❁

इसी के साथ आप देखेंगे इन्सान केअन्दर से त्याग और हमदर्दी का भाव मर चुका होगा. रहम और तरस फ़ना हो चुका होगा. अलबत्ता वहशत और बरबरियत उसके अन्दर अधिक से अधिक मिलेगी यानी धर्म उसका कुछ न होगा—नहीं, नहीं, जुल्म उसका धर्म होगा, खून धर्म का निशान होगा यानी आज का विकासी इनसान खूनी होगा, वहशी होगा, जंगली होगा, अत्याचारी होगा.

यही कारन है कि आज इनसान इनसान से भाग रहा है और भागता चला आ रहा रहा है. इनसान इनसान से रिश्ते नाते तोड़ रहा है और तोड़ता चला जा रहा है. वजह यह कि उसी से वह चोट पै चोट खा रहा है औरउसी से मौत पै मौत पा रहा है. दूसरी बात यह कि आज़ादी हिन्दुस्तान के ऊपर एक बला बन कर आन पड़ी है, एक अज़ाब बन कर टूट पड़ी है, जिससे सारी की सारी मख़लूक़ (सृष्टि) दबी जा रही है, पिसी जा रही है और सौ बात की एक बात यह कि बेमौत मरी जा रही है. इसी आज़ादी की नई रोशनी में दुनिया में देखा—

कहीं बीवी के सामने पति की गरदन पर छुरी चलाई जा रही है, कहीं बेटे के सामने प्रेमी बाप का गला काटा जा रहा है, और बाप की आंखों तले लाडला बेटा क़त्ल किया जा रहा है, कहीं बेटे के सामने मां की छाती पर अत्याचारी की आरी चल रही है और आदर की चादर फाड़ी जा रही है—ग़रज़ सियासी गुनहगारी इतनी बढ़ी हुई है कि जिसके बयान की ताब और ताक़त नहीं. क्या इसी का नाम है आज़ादी, और क्या इसी आज़ादकार का

[illegible]

اسی کے ساتھ آپ دیکھیں گے انسان کے اندر سے تیاگ اور ہمدردی کا بھاؤ مر چکا ہوگا۔ رحم اور ترس فنا ہو چکا ہوگا۔ البتہ وحشت اور بربریت اُس کے اندر ادھک سے ادھک ملے گی یعنی دھرم اُس کا کچھ نہ ہوگا — نہیں، نہیں، ظلم اُس کا دھرم ہوگا، خون دھرم کا نشان ہوگا یعنی آج کا وکاسی انسان خونی ہوگا، وحشی ہوگا، جنگلی ہوگا، اتیاچاری ہوگا۔

یہی کارن ہے کہ آج انسان انسان سے بھاگ رہا ہے اور بھاگتا چلا جا رہا ہے۔ انسان انسان سے رشتے ناتے توڑ رہا ہے اور توڑتا چلا جا رہا ہے۔ وجہ یہ کہ اُسی سے وہ چوٹ پہ چوٹ کھا رہا ہے اور اُسی سے موت پہ موت پا رہا ہے۔ دوسری بات یہ کہ آزادی ہندستان کے اوپر ایک بلا بن کر آن پڑی ہے، ایک عذاب بن کر ٹوٹ پڑی ہے، جس سے ساری کی ساری مخلوق (سرشٹی) دبی جا رہی ہے، پسی جا رہی ہے اور سو بات کی ایک بات یہ ہے کہ بے موت مری جا رہی ہے۔ اسی آزادی کی نئی روشنی میں دنیا میں دیکھا —

کہیں بیوی کے سامنے پتی کی گردن پر چھری چلائی جا رہی ہے، کہیں بیٹے کے سامنے پریمی باپ کا گلا کاٹا جا رہا ہے، اور باپ کی آنکھوں تلے لاڈلا بیٹا قتل کیا جا رہا ہے۔ کہیں بیٹے کے سامنے ماں کی چھاتی پر اتیاچاری کی آری چل رہی ہے اور آدر کی چادر پھاڑی جا رہی ہے — غرض سیاسی گنہگاری اتنی بڑھی ہوئی ہے کہ جس کے بیان کی تاب اور طاقت نہیں۔ کیا اسی کا نام ہے آزادی، اور کیا اسی آزادکار کا

[illegible]

अरे ! यह शैतान है शैतान,
लानत इस पर लानत !

वह इसी पापी आज़ादी के कारन है कि आदमी आदमी से दामन छुड़ा कर और रिश्ता नाता काट कर हांपता कांपता भागता चला जा रहा है. वह चूँकि ज़ख़्मी भी है और दुखी भी, इस लिये वह जहां कहीं भी जा रहा है ख़ून टपकाता टपकाता और आंसू गिराता गिराता—लेकिन बेहद परेशान और बदहवास, कहीं गिरता पड़ता और घुटने फोड़ता, कहीं उड़ता उड़ाता और जान बचाता. लेकिन वह भी एक धोका ही धोका है क्योंकि मौत का ज़ालिम पंजा उसके ऊपर है और ख़ुद वह साए की तरह साथ साथ है, सी० आई० डी० की तरह पीछे पीछे है. और मौत भी कैसी मौत ? मुसल्लह मौत ! यानी हथियार की इजाज़त के साथ, और बराबर पीछा किये हुए है—शहर शहर, जंगल जंगल, मील मील, टेसन टेसन—ढाटे बांधे, भाले ताने, तलवार खींचे, शलवार पहने, भेस बदले, तेवर बदले, कल्ले चढ़ाए, नथुने फुलाए, फ़ेन उड़ाए. इस रूप और ढब में शरीफ़ से शरीफ़ इनसानों के ऊपर और ग़रीब से ग़रीब जनता के ऊपर मौत का भूत सवार है और भूत के ऊपर मौत सवार है. ऐसी हालत में हिन्दुस्तान मसान घाट बना हुआ है. या यह कि एक दहकती हुई भाड़ है जिसके अन्दर छोटे बड़े, बच्चे कच्चे सभी चने फुली की तरह भुन रहे हैं और जो उचट उचट कर लाखों करोड़ों दिलों पर दाग़ पर दाग़ लगा रहे हैं और दाग़े पर दाग़े ! देश की इस दुर्दशा और मातमी फ़िज़ा में

ارے! یہ شیطان ہو شیطان، لعنت اِس پر لعنت!

یہ اِسی پاپی آزادی کے کارن ہو کہ آدمی آدمی سے دامن چھڑا کر اور رشتہ ناتا کاٹ کر ہانپتا کانپتا بھاگتا چلا جا رہا ہو۔ وہ چونکہ زخمی بھی ہو اور دکھی بھی، اس لئے وہ جہاں کہیں بھی جا رہا ہو خون ٹپکاتا ٹپکاتا اور آنسو گراتا گراتا — لیکن بے حد پریشان اور بدحواس، کہیں گرتا پڑتا اور گھٹنے پھوڑتا، کہیں اڑتا اڑاتا اور جان بچاتا۔ لیکن وہ بھی ایک دھوکا ہی دھوکا ہو کیونکہ موت کا ظالم پنجہ اس کے اوپر ہو اور خود وہ سائے کی طرح ساتھ ساتھ ہو، سی۔ آئی۔ ڈی۔ کی طرح پیچھے پیچھے ہو۔ اور موت بھی کیسی موت؟ مسلح موت! یعنی ہتھیار کی اجازت کے ساتھ اور برابر پیچھا کئے ہوئے ہو — شہر شہر، جنگل جنگل، میل میل، ٹیسن ٹیسن — ڈھاٹے باندھے، بھالے تانے، تلوار کھینچے، شلوار پہنے، بھیس بدلے، تیور بدلے، کلّے چڑھائے، نتھنے پھلائے، پھین اڑائے۔ اس روپ اور ڈھب میں شریف سے شریف انسانوں کے اوپر اور غریب سے غریب جنتا کے اوپر موت کا بھوت سوار ہو اور بھوت کے اوپر موت سوار ہو۔ ایسی حالت میں ہندستان مسان گھاٹ بنا ہوا ہو۔ یا یہ کہ ایک دہکتی ہوئی بھاڑ ہو جس کے اندر چھوٹے بڑے، بچے کچے سبھی چنے پھلی کی طرح بھن رہے ہیں اور اچٹ اچٹ کر لاکھوں کروڑوں دلوں پر داغ پر داغ ڈال رہے ہیں اور داغے پر داغے! دیش کی اس دردشا اور ماتمی فضا میں

हासिल हो सकती है? आज कल के दिनों में जब कोई मेरे सामने गाने बजाने का नाम लेता है या नाच रंग का ज़िक्र छेड़ता है तो मैं साफ़ कह देता हूँ कि ऐसी हालत में जब कि हमारा एक एक भाई बना हुआ है मौत का निशाना—कहाँ का गाना, कैसा बजाना ?

आज के हिन्दुस्तान की हालत यह है कि भारत माता के ऊपर जालें बिछी हैं और उसके सपूत के मुंह पर जालें बिछी हैं यानी भारत भूमि का टुकड़ा टुकड़ा और मुखड़ा मुखड़ा खतरनाक है. इन फंदों से बच बचाकर अगर इनसान जाय तो किधर जाय और इन मुखड़ों से हट बच कर अगर रहे तो किधर रहे. बड़ी कठिन और मुशकिल में इसकी जान आन पड़ी है.

एक बिलकुल नई स्कीम आज कल बड़े ज़ोरों पर चालू है कि दिन रात रेलगाड़ियों पर हमले हैं, मोटर लारियों पर हमले हैं, देवियों पर हमले हैं, मां बेटियों पर हमले हैं. औरत पर हमला औरत की इज्ज़त पर हमला है यानी स्त्री की बेइज़्ज़ती है. राजनीति की अंधी बुद्धि को जानना चाहिये कि देवी की बेइज़्ज़ती धर्म की बेइज़्ज़ती है. देवी का क़तल धर्म का क़तल है. जो धर्म को बध कर चुका, धर्म के शब्द से उसका क्या सम्बन्ध ?

शैतान के पुजारियो ! जानो, बूझो और समझो ! देवी का आदर धर्म है और निरादर अधर्म ! हमारे इस नूतन निकेतन (हिन्दुस्तान) का एक अनोखापन और देखो कि मौत मां अब रेल में सफ़र कर रही है. वह जानों की दुश्मन हर हर गाड़ी में मौजूद है, हर हर बुर्ज है और हर हर मोर्चे पर मौजूद है. इस अत्याचारी को

حاصل ہو سکتی ہے؟ آج کل کے دنوں میں جب کوئی میرے سامنے
گانے بجانے کا نام لیتا ہے یا ناچ رنگ کا ذکر چھیڑتا ہے تو میں
صاف کہہ دیتا ہوں کہ ایسی حالت میں جب کہ ہمارا ایک ایک بھائی
بنا ہوا ہے موت کا نشانہ — کہاں کا گانا، کیسا بجانا؟

آج کے ہندستان کی حالت یہ ہے کہ بھارت ماتا کے اوپر جالیں
بچھی ہیں اور اس کے سپوت کے منہ پر جالیں بچھی ہیں یعنی بھارت
بھومی کا ٹکڑا ٹکڑا اور مکھڑا مکھڑا خطرناک ہے۔ ان پھندوں سے بچ بچا کر
اگر انسان جائے تو کدھر جائے اور ان مکھڑوں سے ہٹ بچ کر اگر رہے
تو کدھر رہے۔ بڑی کٹھن اور مشکل میں اس کی جان آن پڑی ہے۔

ایک بالکل نئی اسکیم آج کل بڑے زوروں پر چالو ہے کہ دن
رات ریل گاڑیوں پر حملے ہیں۔ موٹر لاریوں پر حملے ہیں، دیویوں
پر حملے ہیں، ماں بیٹیوں پر حملے ہیں۔ عورت پر حملہ عورت کی عزت
پر حملہ ہے یعنی استری کی بے عزتی ہے۔ راج نیتی کی اندھی بدھی
کو جاننا چاہیے کہ دیوی کی بے عزتی دھرم کی بے عزتی ہے۔
دیوی کا قتل دھرم کا قتل ہے۔ جو دھرم کو بدھ کر چکا۔ دھرم
کے شبد سے اس کا کیا سمبندھ؟

شیطان کے پجاریو! جانو، بوجھو اور سمجھو! دیوی کا آدر
دھرم ہے اور نرادر ادھرم! ہمارے اس نوتن نکیتن (ہندستان)
کا ایک انوکھا پن اور دیکھو کہ موت بھی اب ریل میں سفر کر رہی
ہے۔ یہ جانوں کی دشمن ہر ہر گاڑی میں موجود ہے۔ ہر ہر
مورچے میں موجود ہے اور ہر ہر مورچے پر موجود ہے۔ اس اتیاچاری کو

इजाज़त किसने देदी ? इसको इजाज़त देने वाला' दोषी, इसको न रोकने वाला भी दोषी!

यह ज़ालिम जहां भी कहीं पहुँच रही है इनसानों को पकड़ पकड़ कर ज़िबह कर रही है, दबोच दबोच कर जान ले रही है. और ऊपर से ज़ुल्म यह कि उठा उठा कर फेंक भी देती है. लेकिन वह किस तरह ? अगर धड़ उधर तो सर इधर (या) सर उधर तो धड़ इधर.

यह एक वाक़या है कि देश की तरक़्क़ी की रफ़्तार में और देश की आज़ादी के सफ़र में हिन्दुस्तान की रेलगाड़ियां लाश-गाड़ियां बनी हुई हैं. जब जब उनके डब्बे खोले गए हैं तब तब वह देखे गए हैं लाशों से पटे हुए और ख़ून से अटे हुए. इससे भी इनकार नहीं किया जा सकता कि इस समय इनसानी ख़ून और वह भी हिन्दुस्तानी ख़ून—इसकी इतनी फ़िरावानी और अरज़ानी (ज़्यादती और सस्तापन) है कि सारा भारत आज वेदी (मज़बा) बना हुआ है. यह लाशों के तख़्ते और ख़ूनों के थक्के देखते हुए भी क्या कोई त्यागी और प्रेमी इनसान संगीत की महफ़िल सजाने और गाने रचाने पसन्द करेगा ? ऐसी हालत में मेरे ज़ख़्मी कलेजे पर तो हर राग और नग़में का नाम नमक मिर्च का काम करता है.

यह रेल के डाकू और कज़्ज़ाक़, वह निहत्थों और बेबसों पर हमले करने वाले और लूट मार मचाने वाले आखिर कौन लोग हैं जो शहरों शहरों, प्रान्तों प्रान्तों आफ़त पै आफ़त ढाते फिरते हैं, [illegible] शिकार खेले जाते हैं, मार काट के संगठन क़ायम करके देश देश [illegible] फिर रहे हैं, घर घर आग लगाते जा रहे हैं ?

اجازت کس نے دے دی ؟ اس کو اجازت دینے والا دوشی' اس کو نہ روکنے والا بھی دوشی!

یہ ظالم جہاں بھی کہیں پہنچ رہی ہے انسانوں کو پکڑ پکڑ کر ذبح کر رہی ہے' دبوچ دبوچ کر جان لے رہی ہے. اور اوپر سے ظلم یہ کہ اٹھا اٹھا کر پھینک بھی دیتی ہے. لیکن وہ کس طرح ؟ اگر دھڑ اُدھر تو سر اِدھر (یا) سر اُدھر تو دھڑ اِدھر.

یہ ایک واقعہ ہے کہ دیش کی ترقی کی رفتار میں اور دیش کی آزادی کے سفر میں ہندستان کی ریل گاڑیاں لاش گاڑیاں بنی ہوئی ہیں. جب جب ان کے ڈبے کھولے گئے ہیں تب تب وہ دیکھے گئے ہیں، لاشوں سے پٹے ہوئے اور خون سے اَٹے ہوئے. اس سے بھی انکار نہیں کیا جا سکتا کہ اس سمے انسانی خون اور وہ بھی ہندستانی خون — اس کی اتنی فراوانی اور ارزانی (زیادتی اور سستاپن) ہے کہ سارا بھارت آج ویدی (مذبح) بنا ہوا ہے. یہ لاشوں کے تختے اور خونوں کے تھکے دیکھتے ہوئے بھی کیا کوئی تیاگی اور پریمی انسان سنگیت کی محفل سجانے اور گانے رچانے پسند کرے گا؟ ایسی حالت میں میرے زخمی کلیجے پر تو ہر راگ اور نغمے کا نام نمک مرچ کا کام کرتا ہے.

وہ ریل کے ڈاکو اور قزاق' وہ نہتوں اور بے بسوں پر حملے کرنے والے اور لوٹ مار مچانے والے آخر کون لوگ ہیں جو شہروں شہروں' پرانتوں پرانتوں آفت پہ آفت ڈھاتے پھرتے ہیں، [illegible] شکار کھیلے جاتے ہیں، مار کاٹ کے سنگٹھن قائم کر کے دیش دیش [illegible] پھر رہے ہیں اور آگ لگاتے جا رہے ہیں؟

बेशक लोग इनको तरह तरह की शकलों में पहचानते हैं यानी धर्म बदले रूपों में भी और रूप बदले भेसों में भी. लेकिन मैं उनके बारे में फ़क़त इतना समझ सका हूँ कि वह किसी बड़ी ताक़त और छुपे हाथ के पानी चढ़ाए हुए धारदार हथियार हैं जिसकी हिम्मत और बूते पर वह धड़ाधड़ और बे रोक टोक अपना काम करते चले आ रहे हैं और कोई उन पर दोष नहीं !

मेरी बात का ख़ुलासा यह है कि हाथ किसी का है और हथियार किसी का.

इन्साफ़ का तक़ाज़ा यह है कि अगर हथियार छीना जाए तो खोज लगा के वह छुपा हुआ हाथ भी साथ ही साथ काटा जाय—चाहे वह हाथ 'अ' का हो या 'ब' का या 'प' का या किसी और का. क्योंकि क़ानून और इन्साफ़ की नज़र में सब बराबर हैं. सभी देख रहे हैं कि जनता के जानी माली और समाजी नुकसान और उसके आर्थिक भुगतान का कोई इन्तज़ाम नहीं हो रहा और न उसकी मालियत और जायदाद की ख़ास देख रेख. ऐसी हालत में जब कि उसकी जान और माल की ख़ैर नहीं हम मजबूर हैं यह गुमान करने पर कि 'जन राज' के कमज़ोर हाथ में वह शक्ति और पावर (Power) नहीं जो राज काजी शक्ति पर क़ाबू पाकर या कन्ट्रोल क़ायम रख कर हुकूमत की बागडोर सँभाल सके. इस बारे में मेरा ज़ाती निर्णय (फ़ैसला) बिल्कुल यह है कि "सियासत और चीज़ है, रियासत और चीज़ है." लेकिन हम देख रहे हैं कि माउन्टबेटन 'राज निकेतन' में हुकूमत का इन्तज़ाम चलाने की तालीम दे रहा है. ख़ुशक़िस्मत है [illegible] एक ऐसा अच्छा और पक्का उस्ताद मिला

بے شک لوگ ان کو طرح طرح کی شکلوں میں پہچانتے ہیں یعنی دھرم بدلے روپوں میں بھی اور روپ بدلے بھیسوں میں بھی. لیکن میں ان کے بارے میں فقط اتنا سمجھ سکا ہوں کہ وہ کسی بڑی طاقت اور چھپے ہاتھ کے پانی چڑھائے ہوئے دھاردار ہتھیار ہیں جس کی ہمت اور بوتے پر وہ دھڑادھڑ اور بے روک ٹوک اپنا کام کرتے چلے جا رہے ہیں اور کوئی ان پر دوش نہیں!

میری بات کا خلاصہ یہ ہے کہ ہاتھ کسی کا ہے اور ہتھیار کسی کا.

انصاف کا تقاضا یہ ہے کہ اگر ہتھیار چھینا جائے تو کھوج لگا کے وہ چھپا ہوا ہاتھ بھی ساتھ ہی ساتھ کاٹا جائے— چاہے وہ ہاتھ "ا" کا ہو یا "ب" کا یا "پ" کا یا کسی اور کا. کیونکہ قانون اور انصاف کی نظر میں سب برابر ہیں. سبھی دیکھ رہے ہیں کہ جنتا کے جانی مالی اور سماجی نقصان اور اس کے آرتھک بھگتان کا کوئی انتظام نہیں ہو رہا اور نہ اس کی مالیت اور جائداد کی خاص دیکھ ریکھ. ایسی حالت میں جب کہ اس کی جان اور مال کی خیر نہیں ہم مجبور ہیں یہ گمان کرنے پر کہ "جن راج" کے کمزور ہاتھ میں وہ شکتی اور پاور (Power) نہیں جو راج کاجی شکتی پر قابو پاکر یا کنٹرول قایم رکھ کر حکومت کی باگ ڈور سنبھال سکے. اس بارے میں میرا ذاتی نرنے (فیصلہ) بالکل یہ ہے کہ "سیاست اور چیز ہے، ریاست اور چیز ہے." لیکن ہم دیکھ رہے ہیں کہ ماؤنٹ بیٹن "راج نکیتن" میں حکومت کا انتظام چلانے کی تعلیم دے رہا ہے. خوش قسمت ہے بھارت ورش کہ اس کو ایک ایسا اچھا اور پکا استاد ملا

है जो राजकाजी शिक्षा देने के अलावा वक़्त के नए नए सबक़ पढ़ा रहा है और जंग के नए नए नक़्शे बता रहा है, जो अब चन्द ही दिन का मेहमान है और जो दो सौ साल के बृटिश साम्राज का आख़िरी निशान है !

एक बात यह भी है कि एक जमात अपने ही नेता के साथ बग़ावत पर तुली हुई है और अपने ही महापुरुष की दुश्मन बनी हुई है. उनके कामों में गड़बड़ी मचाये रखने की ठान रखी है. इन चीज़ों ने मिल जुलकर समाजी निज़ाम और राजकाजी मामलों में बड़ा उलझावा डाला है और अमन को ग़ारत कर रखा है. इससे पता चलता है कि बहुत से देश भक्त लोगों के दिलों में चोर है और उनकी नियतों में फ़साद है. ऐसी हालत में उनके दिल या ज़बान से अमन का नाम इस शक भरी फ़िज़ा में और इस फ़िरक़ेवारी हवा में एक ख़ौफ़नाक औज़ार का काम दे सकता है. साफ़ और सची बात यह है कि जब तक दिल साफ़ न हों और ख़ुदग़रज़ी से पाक न हों अमन नामुमकिन है. केवल अमन का नाम ही अमन और शान्ति क़ायम नहीं कर सकता, वह एक धोका भी हो सकता है और मुसीबत भी बन सकता है.

कितना दुख होता है यह देखकर कि यही हमारा हिन्दुस्तान जो कल तक 'जन्नत निशान' कहलाता था आज दोज़ख़ का नमूना बना हुआ है. और वही दिल्ली जिसके अन्दर भारत की सारी सुन्दरता थी आज सर पीटपीट कर अपने फूटे नसीबों पर रो रही है और अपने ऐसे ऐसे सपूतों पर रो रही है जिनको वह दोबारा पैदा नहीं कर सकेगी. दिल्ली की सुन्दर संस्कृति और सुन्दर

ہو جو راج کاجی شکشا دینے کے علاوہ وقت کے نئے نئے سبق پڑھا رہا ہو اور جنگ کے نئے نئے نقشے بتا رہا ہو، جو اب چند ہی دن کا مہمان ہو اور جو دو سو سال کے برٹش سامراج کا آخری نشان ہو!

ایک بات یہ بھی ہو کہ ایک جماعت اپنے ہی نیتا کے ساتھ بغاوت پر تلی ہوئی ہو اور اپنے ہی مہاپرش کی دشمن بنی ہوئی ہو۔ ان کے کاموں میں گڑبڑی مچائے رکھنے کی ٹھان رکھی ہو۔ ان چیزوں نے مل جل کر سماجی نظام اور راج کاجی معاملوں میں بڑا الجھاوا ڈالا ہو اور امن کو غارت کر رکھا ہو۔ اس سے پتہ چلتا ہو کہ بہت سے دیش بھگت لوگوں کے دلوں میں چور ہو اور ان کی نیتوں میں فساد ہو۔ ایسی حالت میں ان کے دل یا زبان سے امن کا نام اس شک بھری فضا میں اور اس فرقہ واری ہوا میں ایک خوفناک اوزار کا کام دے سکتا ہو۔ صاف اور سچی بات یہ ہو کہ جب تک دل صاف نہ ہوں اور خودغرضی سے پاک نہ ہوں امن ناممکن ہو۔ کیول امن کا نام ہی امن اور شانتی قایم نہیں کر سکتا، وہ ایک دھوکا بھی ہو سکتا ہو اور مصیبت بھی بن سکتا ہو۔

کتنا دکھ ہوتا ہو یہ دیکھ کر کہ یہی ہمارا ہندستان جو کل تک 'جنت نشان' کہلاتا تھا آج دوزخ کا نمونہ بنا ہوا ہو۔ اور وہی دلی جس کے اندر بھارت کی ساری سندرتا تھی آج سر پیٹ پیٹ کر اپنے پھوٹے نصیبوں پر رو رہی ہو اور اپنے ایسے ایسے سپوتوں پر رو رہی ہو جن کو وہ دوبارہ پیدا نہیں کر سکے گی۔ دلی کی سندر سنسکرتی اور سندر

बस्ती को मिटाने और उजाड़ने वाले क्या दोषी नहीं, पापी नहीं ?

याद करो पहले तुम दिल्ली की तबाही बरबादी और उसकी नोच खसोट पर बड़े ज़ोर शोर से अंगरेज़ पर इलज़ाम रखते थे. लेकिन अब जब कि अंगरेज़ बिलकुल अलग थलग है और उसकी पोज़ीशन निस्पक्ष (ग़ैरजानिबदार) है, तुम ही इन्साफ़ से बताओ अब इल्ज़ाम किस पर रखा जाय और दोष किस को दिया जाय ? एक देश में रहते हुए एक दूसरे की मारकाट, एक घर में रहते हुए एक दूसरे से लाग डाट क्या कोई अच्छी बात है ? यह द्वेष और दुश्मनी देश की बदक़िस्मती की सब से बड़ी दलील है. क्योंकि इससे दोनों का नुक़सान है—हमारा भी, तुम्हारा भी. तुम्हारे नुक़सान से हमें दुख है, तकलीफ़ है, हमदर्दी है. हमारे नुक़सान से तुम्हें दुख तकलीफ़ और हमदर्दी होनी चाहिये. इसी का नाम है मेल मोहब्बत और इसी का नाम है इनसानियत !

देश में जो ज़बरदस्त ग़ारतगरी और ख़ूनाख़ूनी हुई है वह कल की बात है, जिसके ज़ख़म अभी तक हरे हैं और आंखों में आंसू अभी तक भरे हैं.

दूर क्यों जाओ ! भरतपुर में मुसलमान को गोली का निशाना देखो. अलवर में उसके ऊपर तोपख़ाना देखो. पटियाले मे उसे दीवालिया देखो. ग्वालियर पर विचार दौड़ाओ. पानीपत तक ख़याल ले जाओ और दिल्ली का क़त्लआम देखो.

हमने माना ! दूसरी तरफ़ भी कुछ ऐसी ऐसी चीजें हैं पर वह उनकी तरफ़ से हैं जिनकी हालत यह है—"लड़ते हैं और हाथ में [illegible] नहीं" याद रहे जब [illegible] दिल्ली

بستی کو مٹانے اور اجاڑنے والے کیا دوشی نہیں، پاپی نہیں؟

یاد کرو پہلے تم دلی کی تباہی بربادی اور اس کی نوچ کھسوٹ پر بڑے زور شور سے انگریز پر الزام رکھتے تھے۔ لیکن اب جب کہ انگریز بالکل الگ تھلگ ہے اور اس کی پوزیشن نشپکش (غیر جانبدار) ہے، تم ہی انصاف سے بتاؤ اب الزام کس پر رکھا جائے اور دوش کس کو دیا جائے؟ ایک دیش میں رہتے ہوئے ایک دوسرے کی مارکاٹ، ایک گھر میں رہتے ہوئے ایک دوسرے سے لاگ ڈانٹ کیا کوئی اچھی بات ہے؟ یہ دویش اور دشمنی دیش کی بدقسمتی کی سب سے بڑی دلیل ہے کیونکہ اس میں دونوں کا نقصان ہے — ہمارا بھی، تمہارا بھی۔ تمہارے نقصان سے ہمیں دکھ ہے، تکلیف ہے، ہمدردی ہے۔ ہمارے نقصان سے تمہیں دکھ تکلیف اور ہمدردی ہونی چاہئے۔ اسی کا نام ہے میل محبت اور اسی کا نام ہے انسانیت!

دیش میں جو زبردست غارت گری اور خوناخونی ہوئی ہے وہ کل کی بات ہے، جس کے زخم ابھی تک ہرے ہیں اور آنکھوں میں آنسو ابھی تک بھرے ہیں۔

دور کیوں جاؤ! بھرت پور میں مسلمان کو گولی کا نشانہ دیکھو۔ الور میں اس کے اوپر توپ خانہ دیکھو۔ پٹیالے میں اسے دیوالیہ دیکھو۔ گوالیر پر وچار دوڑاؤ۔ پانی پت تک خیال لے جاؤ اور دلی کا قتل عام دیکھو۔

ہم نے مانا! دوسری طرف بھی کچھ ایسی ایسی چیزیں ہیں پر وہ ان کی طرف سے ہیں جن کی حالت یہ ہے "لڑتے ہیں اور ہاتھ میں تلوار بھی نہیں"۔ یاد رہے جب بھوشیہ کا اتہاس کار دلی

की सूनी दास्तान लिखेगा तो सारी दुनिया की तरफ़ से उस राजधानी की रानी के ऊपर मातम की चादर चढ़ाई जायगी और जगत जगत से उसकी सेवा में हमदर्दी का सौग़ात पेश होगी.

देखो न ! यह इसी आपसी खटपट का नतीजा है कि दिल्ली के बाज़ार के बाज़ार चौपट हैं. मोहल्ले के मोहल्ले चौपट हैं. चांदनी चौक में अंधियारी है. किस बला की वहशत और हिरासानी है ? क़ुतुब मीनार अलग सकते में खड़ा एक एक का मुँह तक रहा है. क्यों कि वह देख रहा है कि दिल्ली में क़त्लआम है. यहां तक कि लरज़े में 'दीवान ख़ास व आम' है. बदों का शैतानी भाव जोश पर है. नेकों का ईमानी जज़्बा सन्तोष में है.

फिर भी शैतानी तूफ़ान से जान बचाने और इज़्ज़त आबरू की ख़ैर मनाने की ख़ातिर ख़ानदान के ख़ानदान, कुटुम्ब के कुटुम्ब मारे दहशत भाग पड़े हैं और यह हिजरत करने वाले बेचारे लुटे पिटे, इधर उधर मारे मारे फिर रहे हैं. यह मज़लूम सेवा के क़ाबिल हैं. यह ग़रीब और यह शरीफ़ हमदर्दी के मुस्तहक़ हैं. बहुत से पुराने क़िले में बन्द हैं. बहुत से तारीख़ी मक़बरों में दफ़न हैं. देखा अपने-यह है वह राज यानी 'स्वराज' कि आज का आज़ाद इनसान क़ैद में है और आज का ज़िन्दा इनसान क़ब्र के पेट में है ! सितम पै सितम यह कि उसके ज़ाती मकानों पर ग़ैरों का क़ब्ज़ा है. यह क्या कम कम ज़ुल्म है कि बे घर वाले मुफ़्त के घर में हैं और घर वाले बे घर हैं, शहर बदर हैं, दर बदर हैं, दाने दाने को मुहताज, कपड़े लत्ते को मुहताज ! यह है आज के अच्छे अच्छे शरीफ़ों की दुर्गत, और

کی سونی داستان لکھے گا تو ساری دنیا کی طرف سے راجدھانی کی رانی کے اوپر ماتم کی چادر چڑھائی جائے گی اور جگت جگت سے اس کی سیوا میں ہمدردی کی سوغات پیش ہوگی۔

دیکھو نہ! یہ اسی آپسی کھٹ پٹ کا نتیجہ ہے کہ دلی کے بازار کے بازار چوپٹ ہیں۔ محلے کے محلے چوپٹ ہیں۔ چاندنی چوک میں اندھیاری ہے۔ کس بلا کی وحشت اور ہراسانی ہے؟ قطب مینار الگ سکتے میں کھڑا ایک ایک کا منہ تک رہا ہے۔ کیونکہ وہ دیکھ رہا ہے کہ دلی میں قتل عام ہے۔ یہاں تک کہ لرزے میں 'دیوان خاص و عام' ہے۔ بدوں کا شیطانی بھاو جوش پر ہے۔ نیکوں کا ایمانی جذبہ سنتوش میں ہے۔

پھر بھی شیطانی طوفان سے جان بچانے اور عزت آبرو کی خیر منانے کی خاطر خاندان کے خاندان، کٹمب کے کٹمب مارے دہشت بھاگ پڑے ہیں اور یہ ہجرت کرنے والے بیچارے لٹے پٹے، ادھر ادھر مارے مارے پھر رہے ہیں۔ یہ مظلوم سیوا کے قابل ہیں۔ یہ غریب اور یہ شریف ہمدردی کے مستحق ہیں۔ بہت سے پرانے قلعے میں بند ہیں۔ بہت سے تاریخی مقبروں میں دفن ہیں۔ دیکھا آپ نے یہ ہے وہ راج یعنی 'سوراج' کہ آج کا آزاد انسان قید میں ہے اور آج کا زندہ انسان قبر کے پیٹ میں ہے! ستم پہ ستم یہ کہ اس کے ذاتی مکانوں پر غیروں کا قبضہ ہے۔ یہ کیا کم کم ظلم ہے کہ بے گھر والے مفت کے گھر میں ہیں اور گھر والے بے گھر ہیں، شہر بدر ہیں، در بدر ہیں، دانے دانے کو محتاج، کپڑے لتے کو محتاج! یہ ہے آج کے اچھے اچھے شریفوں کی درگت، اور

अच्छे अच्छे अमीरों की दुर्गत. जानों के उनके लाले पड़े हैं और पेटों में उनके ताले पड़े हैं.

ऐसी हालत में किसी भी गीत की तान मेरे कान में तीर नश्तर का काम करती है और सच यह है ऐसी हालत में तो मुझको न किसी तक़रीब का मज़ा न किसी संगीत का. और ऐसी ही हालत में मैंने यह भी देखा कि कोई तो बहादुर कहकर उन ख़ून बहाने वालों का हौसला बढ़ाता है और कोई धार्मिक कहकर उनके रूहानी भाव को जोश में लाता है. मगर मुझे इन दोनों बातों से इनकार है इस लिये कि ख़ून बहाने वाला धार्मिक नहीं हो सकता. दूसरे इस लिये भी कि औरतों और बच्चों पर, मासूमों और बे गुनाहों पर, मरीज़ों और अपाहिजों पर, निहत्थों और अहिंसों पर तलवार चलाने वाला हरगिज़ बहादुर नहीं. बहुमत और हुकूमत का अभिमानी भी बहादुर नहीं. तलवार और शक्ति का घमंडी भी बहादुर नहीं. यह सारे के सारे समाज के दुश्मन हैं यानी अपने आप के दुश्मन हैं. मेरे नज़दीक बहादुर वह है जो अत्याचार की तलवार के टुकड़े कर डाले, शैतानी भाव को आग में डाले और मन पै अपने क़ाबू पाले. और वह तलवार जो ख़ून के बदले 'प्रेम जल' पिये और जिस जिस तलवार के लबों पर बजाय ख़ून के प्रेम का पानी चढ़ा हो, वही तलवार मेरे नज़दीक जीत की तलवार है और उसी तलवार का धनी सच्चे शब्दों में बहादुर है और ऐसे ही बहादुर का मेरे दिल में आदर है.

हिन्दुस्तान के इस तूफ़ानी और हैजानी दिनों में

اچھے اچھے امیروں کی دُرگت۔ جانوں کے اُن کے لالے پڑے ہیں اور پیٹوں میں اُن کے تالے پڑے ہیں۔

ایسی حالت میں کسی بھی گیت کی تان میرے کان میں تیر نشتر کا کام کرتی ہے اور سچ یہ ہے کہ ایسی حالت میں تو مجھ کو نہ کسی تقریب کا مزا نہ کسی سنگیت کا۔ اور ایسی ہی حالت میں میں نے یہ بھی دیکھا کہ کوئی تو بہادر کہہ کر اُن خون بہانے والوں کا حوصلہ بڑھاتا ہے اور کوئی دھارمک کہہ کر اُن کے روحانی بھاو کو جوش میں لاتا ہے۔ مگر مجھے اِن دونوں باتوں سے انکار ہے اس لئے کہ خون بہانے والا دھارمک نہیں ہو سکتا۔ دوسرے اِس لئے بھی کہ عورتوں اور بچوں پر، معصوموں اور بے گناہوں پر، مریضوں اور اپاہجوں پر، نہتوں اور اہنسوں پر تلوار چلانے والا ہرگز بہادر نہیں۔ بہومت اور حکومت کا ابھیمانی بھی بہادر نہیں۔ تلوار اور شکتی کا گھمنڈی بھی بہادر نہیں۔ یہ سارے کے سارے سماج کے دشمن ہیں یعنی اپنے آپ کے دشمن ہیں۔ میرے نزدیک بہادر وہ ہے جو اتیاچار کی تلوار کے ٹکڑے کر ڈالے، شیطانی بھاو کو آگ میں ڈالے اور من پہ اپنے قابو پالے۔ اور وہ تلوار جو خون کے بدلے 'پریم جل' پیے اور جس جس تلوار کے لبوں پر بجائے خون کے پریم کا پانی چڑھا ہو، وہی تلوار میرے نزدیک جیت کی تلوار ہے اور اسی تلوار کا دھنی سچے شبدوں میں بہادر ہے اور ایسے ہی بہادر کا میرے دل میں آدر ہے۔

ہندوستان کے اِن طوفانی اور ہیجانی دنوں میں

... आया, बकरीद आई, दीवाली आई. २४ अक्तूबर-दशहरे के लाल पीले झंडे शराबियों की तरह झूमते झामते मुझे अच्छे मालूम न पड़े. ऐसी हालत में जब कि भारत में जगह जगह बरबादी, नगर नगर मारकाट थी उनको देश भक्त सपूतों के ग़म और मातम में झुककर गुज़रना चाहिये था, या कम से कम मातमी लिबास में आना चाहिये था.

२५ अक्तूबर—ईद भी मुझे अच्छी नहीं लगी. वह सहमी सहमी आई और सूनी सूनी गुज़र गई. क़ुरबानी भी जगह जगह बन्द रही जिनका बेशक लोगों को मलाल रहा. इस लिये ईद ईद न रही. मगर क़ुरबानी तो लाखों इनसानों की पहले ही हो चुकी थी. जान की क़ुरबानी ही असल में क़ुरबानी की पहली और असली मांग थी और यही क़ुरबानी का असली फ़लसफ़ा था.

१२ नवम्बर—दीवाली की रोशनी और जगमगाहट में शान्ति और मुस्कराहट न थी. उसमें रुनलापन था, उदासी थी, मुर्दनी थी यानी शांतिपन न था. इस दिन जिस जिस ने भी अपने मकान या दुकान में चिराग़ां किया, मैं समझता हूँ उसने अच्छा न किया, क्यों कि वह मौक़ा न था, इसलिये शोभा न थी. जब कि करोड़ों ज़िंदगियों के चिराग़ गुल थे, लाखों आशाओं के दिये बुझे पड़े थे, ज़रूरत थी उस वक़्त और सख़्त ज़रूरत थी कि घर घर मुहब्बत की [illegible] रोशन की जाती और दिल के मकान को प्रेम के पानी से धोकर नफ़रत की गर्द से पोत कर साफ़ और उजला किया जाता. इसके

... گیا، بقرعید آئی، دیوالی آئی. ۲۴ اکتوبر- دشہرے کے لال پیلے جھنڈے نشیلوں کی طرح جھومتے جھامتے مجھے اچھے معلوم نہ پڑے. ایسی حالت میں جب کہ بھارت میں جگہ جگہ بربادی، نگر نگر مارکاٹ تھی ان کو دیش بھگت سپوتوں کے غم اور ماتم میں جھک کر گزرنا چاہئے تھا، یا کم سے کم ماتمی لباس میں آنا چاہئے تھا.

۲۵ اکتوبر- عید بھی مجھے اچھی نہیں لگی. وہ سہمی سہمی آئی اور سونی سونی گزر گئی. قربانی بھی جگہ جگہ بند رہی جن کا بیشک لوگوں کو ملال رہا. اس لئے عید عید نہ رہی. مگر قربانی تو لاکھوں انسانوں کی پہلے ہی ہو چکی تھی. جان کی قربانی ہی اصل میں قربانی کی پہلی اور اصلی مانگ تھی اور یہی قربانی کا اصلی فلسفہ تھا.

۱۲ نومبر- دیوالی کی روشنی اور جگمگاہٹ میں شانتی اور مسکراہٹ نہ تھی. اس میں رُنڈلاپن تھا، اداسی تھی، مُردنی تھی یعنی شانتی پن نہ تھا. اس دن جس جس نے بھی اپنے مکان یا دکان میں چراغاں کیا، میں سمجھتا ہوں اس نے اچھا نہ کیا، کیونکہ وہ موقع نہ تھا. اس لئے شوبھا نہ تھی. جب کہ کروڑوں زندگیوں کے چراغ گل تھے، لاکھوں آشاؤں کے دیئے بجھے پڑے تھے، ضرورت تھی اس وقت اور سخت ضرورت تھی کہ گھر گھر محبت کی مشعل روشن کی جاتی اور دل کے مکان کو پریم کے پانی سے دھوکر نفرت کی مٹی سے پوت کر اور صاف اجلا کیا جاتا. اس کے

जाता, शान्ति की दावत दी जाती, उसका इत्र पान होता. बस इसी का नाम है ख़ुशी. इस ख़ुशी को हम अपने लफ़्ज़ों में ईद कहलें और आप अपने शब्दों में इसकी जगमगाहट को दीवाली का नाम देलें. दोनों का मक़सद हासिल ! सारे झगड़े टंटे ख़तम. मगर ज़रूरत है रवादारी और ख़ुश दिली की ! लेकिन आज के इनसान की हालत यह है कि वह ग़टाग़ट ख़ून के घूंट पी रहा है —वह भी किस तरह ? ख़ून को ख़ून समझकर और ज़हर को ज़हर जानकर. वरना अपनी ज़िन्दगी से हाथ धो रहा है. और जो जाम से बच रहा है वह ग़म के आंसू पी रहा है. आज के हिन्दुस्तान का अजब समां है. हर तरफ़ भगदौड़ मची हैं, शोरा शोरी है, ख़ूना ख़ूनी है, ग़ुलग़पाड़ा है और एक हंगामा, है कि कि बपा है गोया शहर शहर क़यामत है, खंड खंड प्रलय है. इनसान इतना बदहवास है कि उसे ख़ुद नहीं ख़बर कि वह कहाँ है लेकिन जैसे कोई कान में उसके कह रहा है—

यह घड़ी महशर की है, तू अरसए महशर* में है.

क्या इस क़यामत की घड़ी में किसी भी राग रागनी से जीवन को रस और आनन्द मिल सकता है ? बेशक संगीत आत्मा को शान्ति और शक्ति पहुँचाने वाली चीज़ है. बेशक संगीत कला एक आला है आत्मविकास का. मगर हर चीज़ का एक वक़्त होता है. जब आत्मा दुखी होती है तो मीठा राग भी उसको कड़ुवा लगता है और प्यार भी उसको काटता मालूम होता है. और ऐसी ही हालत में किसी भी इनसान को न अच्छे से अच्छा

*अरसए महशर—प्रलय का मैदान

خاطر کی دعوت دی جاتی، اُس کا عطر پان ہوتا۔ بس اِسی کا نام ہے خوشی۔ اِس خوشی کو ہم اپنے لفظوں میں عید کہہ لیں اور آپ اپنے شبدوں میں اِس کی جگمگاہٹ کو دیوالی کا نام دے لیں۔ دونوں کا مقصد حاصل! سارے جھگڑے ٹنٹے ختم۔ مگر ضرورت ہے رواداری اور خوش دلی کی! لیکن آج کے انسان کی حالت یہ ہے کہ وہ غٹا غٹ خون کے گھونٹ پی رہا ہے — وہ بھی کس طرح؟ خون کو خون سمجھ کر اور زہر کو زہر جان کر۔ ورنہ اپنی زندگی سے ہاتھ دھو رہا ہے۔ اور جو جام سے بچ رہا ہے وہ غم کے آنسو پی رہا ہے۔ آج کے ہندوستان کا عجب سماں ہے۔ ہر طرف بھگدڑ مچی ہے، شورا شوری ہے، خونا خونی ہے، غل غپاڑہ ہے اور ایک ہنگامہ ہے کہ بپا ہے گویا شہر شہر قیامت ہے، کھنڈ کھنڈ پرلے ہے۔ انسان اِتنا بدحواس ہے کہ اُسے خود نہیں خبر کہ وہ کہاں ہے لیکن جیسے کوئی کان میں اُس کے کہہ رہا ہے —

یہ گھڑی محشر کی ہے، تو عرصۂ محشر* میں ہے۔

کیا اِس قیامت کی گھڑی میں کسی بھی راگ راگنی سے جیون کو رس اور آنند مل سکتا ہے؟ بے شک سنگیت آتما کو شانتی اور شکتی پہنچانے والی چیز ہے۔ بے شک سنگیت کلا ایک آلہ ہے آتم وکاس کا۔ مگر ہر چیز کا ایک وقت ہوتا ہے۔ جب آتما دکھی ہوتی ہے تو میٹھا راگ بھی اس کو کڑوا لگتا ہے اور پیار بھی اس کو کاٹتا معلوم ہوتا ہے۔ اور ایسی ہی حالت میں کسی بھی انسان کو نہ اچھے سے اچھا

* عرصۂ محشر — پرلے کا میدان

ज़िन्दगी अज़ाब जान हो रही है. हिन्दुस्तान का इतना बड़ा मैदान लाशों से पटा पड़ा है और इतना विशाल पाट ख़ून का सागर बना हुआ है. वजह यह कि इनसान तीर नश्तर का निशाना बना हुआ है. जो जहां भी ज़ख़मी है या जो जहां अधमरा पड़ा है उसकी ज़बान पर अत्याचार अत्याचार की आवाज़ है, फ़रियाद फ़रियाद की पुकार है. और जो बिलकुल हट्टा कट्टा है या जो क़िस्मत से सही सलामत बच रहा है कलेजा उसका हरा पीला है, दिल पर उसके धकधकी है, बदन में उसके कपकपी है, दिमाग़ उसका चक्कर में है, अक्कल उसकी अचरज में है, उसकी कमज़ोर और नाताक़त जान पर नई नई मुसीबत जो आ रही है और जो जो संकट उस पर पड़ रहे हैं— ख़ुदा को पनाह!

इसीलिये यानी इनसानों की जानों की रक्षा की ख़ातिर अधिक से अधिक कोशिश यह होनी चाहिये कि ज़िन्दगी सुगम से सुगम हो, सुख जीवन का धन हो, शान्ति उसका रस हो. इसके लिये ज़रूरत है ऊंचे इख़लाक़ की, ऊंचे किरदार की, रवादारी और भलमनसारी की, नरम नरम शब्दों की, मीठे मीठे बोलों की. बिना इसके काम बन नहीं पड़ेगा, ज़्यादातर बिगड़ जाने का ही ख़तरा है. ऐसी हालत में ज़रूरत है और बड़ी ज़रूरत है कि—

महात्मा गान्धी के रूहानी उपदेशों को यानी मिलाप और मसावात के पैग़ामों को, पंडित सुन्दरलाल जी की इत्तहाद की तक़रीरों को यानी एकता और प्रेम के प्रचारों को 'हिन्द से सिन्ध' तक ...को ताकि सिम्त सिम्त से इत्तहाद की हवाएं चलें, तरफ़

زندگی عذاب جان ہو رہی ہے۔ ہندستان کا اتنا بڑا میدان لاشوں سے پٹا پڑا ہے اور اتنا وشال پاٹ خون کا ساگر بنا ہوا ہے۔ وجہ یہ کہ انسان تیر نشتر کا نشانہ بنا ہوا ہے۔ جو جہاں بھی زخمی ہے یا جو جہاں ادھ مرا پڑا ہے اس کی زبان پر اتیاچار اتیاچار کی آواز ہے، فریاد فریاد کی پکار ہے۔ اور جو بالکل ہٹا کٹا ہے یا جو قسمت سے صحیح سلامت بچ رہا ہے کلیجہ اس کا ہرا پیلا ہے، دل پر اس کے دھکدھکی ہے، بدن میں اس کے کپکپی ہے، دماغ اس کا چکر میں ہے، عقل اس کی اچنبھے میں ہے، اس کی کمزور اور ناطاقت جان پر نئی نئی مصیبت جو آ رہی ہے اور جو جو سنکٹ اس پر پڑ رہے ہیں — خدا کی پناہ!

اس لئے یعنی انسانوں کی جانوں کی رکشا کی خاطر ادھک سے ادھک کوشش یہ ہونی چاہئے کہ زندگی سگم سے سگم ہو، سکھ جیون کا دھن ہو، شانتی اس کا رس ہو۔ اس کے لئے ضرورت ہے اونچے اخلاق کی، اونچے کردار کی، رواداری اور بھلمنساہی کی، نرم نرم شبدوں کی، میٹھے میٹھے بولوں کی۔ بنا اس کے کام بن نہیں پڑے گا۔ زیادہ تر بگڑ جانے کا ہی خطرہ ہے۔ ایسی حالت میں ضرورت ہے اور بڑی ضرورت ہے کہ —

مہاتما گاندھی کے روحانی اپدیشوں کو یعنی ملاپ اور مساوات کے پیغاموں کو، پنڈت سندر لال جی کی اتحاد کی تقریروں کو یعنی ایکتا اور پریم کے پرچاروں کو 'ہند سے سندھ' ... تاکہ سمت سمت سے اتحاد کی ہوائیں چلیں، طرف

[illegible] में मोहब्बत की लहरें उठें, धरती प्रेम की बस्ती हो, देश की [illegible] दूर हो और किया की धड़कन में ठहरावपन आए.

मैंने सरसरी तौर पर ज़ख़्मी और ख़ूनी हिन्दुस्तान का समां खींच कर आप के सामने रखा है जिसमें आप भारत को ज़ख़्मी और भारत वासियों को दुखी और तड़पता पाएंगे. लेकिन मैं विश्वास रखता हूँ कि इस मुख़्तसिर ख़ाक़े को सरसरी नज़र से देखने के बावजूद आप बहुत गहरे जा सकेंगे और बहुत दूर तक.

देश की बरबादी और ख़ानाजंगी में जो जो नुक़सान जिस जिसके हिस्से में आया है वह ऐसा वैसा नहीं है. वह इतना भारी और इतना कारी है कि अपनी अपनी जगह हर एक को पनपने के लिये काफ़ी ज़माना लगेगा. मैं अन्दाज़ा लगा सका हूँ कि इसके अन्दर नसलों तक के लिये बरबादी ही बरबादी है और पुश्तों तक के लिये रोना ही रोना है. लेकिन अब रोने धोने से क्या हासिल ?

आसमां डूबे हुए तारों का मातम कब तलक

अब सारे उन दुखड़ों को छोड़ कर और जीवन के दामन से सारे ग़मों को निचोड़ कर नई ज़िन्दगी की फ़िकर में लग जाना चाहिये. नया घर बसाना चाहिये और अपना अपना घर आबाद करना चाहिये ताकि अपने बाल बच्चों की देख भाल हो सके और ख़ुद अपनी सेवा भी हो सके.

[illegible] ! [illegible] भारत की हालत का अन्दाज़ा तो करो. एक [illegible] हैं, [illegible] चीज़ें हैं जिनको [illegible] के [illegible] चीज़ों के [illegible] हैं [illegible]

[illegible] سے محبت کی لہریں اٹھیں، دھرتی پریم کی بستی ہو، دیش کی [illegible] دور ہو اور فضا کی دھڑکن میں ٹھہراؤپن آئے.

[illegible] نے سرسری طور پر زخمی اور خونی ہندستان کا سماں کھینچکر [illegible] کے سامنے رکھا ہے جس میں آپ بھارت کو زخمی اور بھارت [illegible] کو دکھی اور تڑپتا پائیں گے. لیکن میں وشواس رکھتا ہوں کہ [illegible] مختصر خاکے کو سرسری نظر سے دیکھنے کے باوجود آپ بہت گہرے جا سکیں گے اور بہت دور تک.

[illegible] کی بربادی اور خانہ جنگی میں جو جو نقصان جس جس کے حصے میں آیا وہ ایسا ویسا نہیں ہے۔ وہ اتنا بھاری اور اتنا کاری ہے کہ [illegible] ہر ایک کو پنپنے کے لئے کافی زمانہ لگے گا. میں اندازہ [illegible] ہوں کہ اس کے اندر نسلوں تک بربادی ہی بربادی ہے [illegible] پشتوں تک کے لئے رونا ہی رونا ہے. لیکن اب رونے دھونے سے کیا حاصل؟

آسماں ڈوبے ہوئے تاروں کا ماتم کب تلک

اب سارے ان دکھڑوں کو چھوڑ کر اور جیون کے دامن سے سارے غموں کو نچوڑ کر نئی زندگی کی فکر میں لگ جانا چاہیئے. نیا گھر بسانا چاہیئے اور اپنا اپنا گھر آباد کرنا چاہیئے تاکہ اپنے بال بچوں کی دیکھ بھال ہو سکے اور خود اپنی سیوا بھی ہو سکے.

[illegible] ذرا بھارت کی حالت کا اندازہ تو کرو۔ ایک طرف [illegible] ہیں [illegible] چیزیں ہیں جن کو سن کر کانوں [illegible] طرف [illegible] کے [illegible]

नज़्ज़ारे हैं जिनको देखकर आंखों से अश्कों के दरिया बहते हैं. क्या इन आवाजों को सुनकर, क्या इन नज़्ज़ारों को देखकर कोई इनसानी दिल शान्ति पा सकता है ? कोई ईमानो आत्मा संतोष ले सकती है ?

ऐसी हालत में शान्ति ख़ुद दुखियारी है. जब कि संगीत ख़ुद रंजीदा है, जब कि कुटुम्ब कुटुम्ब मातम है, जब कि घर घर कोहराम है जब कि नगर नगर वावैला है और जीवन जीवन रोना है.—बस जी यही चाहता है कि संगीत के सारे रिकार्डों को तोड़ दो और सारे संगीतकारों को रज़ा पर छोड़ दो.

मुझको अहसास है कि मज़मून अन्दाज़े से ज़्यादा तूल पकड़ गया है जिसका सबब यह है.—

हदीसे दर्द दिलावेज़ दास्ताने हस्त
कि ज़ौक़ बेश देहद चूँ दराज़तर गरदद

दुख दर्द की बात बड़ी दिलचस्प दास्तान होती है जो मन को बहुत बहुत भाती है. यही वजह है कि वह जितनी लम्बी होती जाती है, शौक़ बढ़ता जाता है.

واسے ہیں جن کو دیکھ کر آنکھوں سے اشکوں کے دریا بہتے ہیں۔ کیا ان آوازوں کو سن کر، کیا ان نظاروں کو دیکھ کر کوئی انسانی دل شانتی پا سکتا ہے؟ کوئی انسانی آتما سنتوش لے سکتی ہے؟

ایسی حالت میں شانتی خود دکھیاری ہے. جب کہ سنگیت، خود رنجیت ہے، جب کہ کٹمب کٹمب ماتم ہے، جب کہ گھر گھر کہرام ہے جب کہ نگر نگر واویلا ہے اور جیون جیون روتا ہے — بس جی یہی چاہتا ہے کہ سنگیت کے سارے رکارڈوں کو توڑ دو اور سارے سنگیت کاروں کو رضا پر چھوڑ دو۔

مجھ کو احساس ہے کہ مضمون اندازے سے زیادہ طول پکڑ گیا ہے جس کا سبب یہ ہے —

حدیث درد دل آویز داستانے ہست
کہ ذوق بیش دہد چوں دراز تر گردد

دکھ درد کی بات بڑی دلچسپ داستان ہوتی ہے جو من کو بہت بہت بھاتی ہے. یہی وجہ ہے کہ وہ جتنی لمبی ہوتی جاتی ہے، ذوق بڑھتا جاتا ہے۔

तीन गीत

(प्रकाश)

(१)

अरे पागल, क्या अंगूरी के प्याले पर प्याले ढाल रहा है ! आज रात का यह ख़ुमार कल सुबह तेरे प्राणों पर केवल निष्प्राण होकर रह जायगा. साक़ी की आँखों का वह जाम पी जिसके ख़ुमार से तू हमेशा हमेशा मसरूर रहेगा, रे पागल.

---

(२)

ऐ हसीन दिलरुबा. मैं चला ही जाँऊ.
शमा पर बेज़ुबान दर्दमन्द परवानों का बरबाद होना मैं नहीं देख सकता.
ऐ हसीन दिलरुबा, मुझे चले जाना ही चाहिए.
या फिर शमा गुल करदे और हम चाँद की सफ़ेद ठंडी किरणों के ही साये में बैठ जाएँ.
इन बेज़ुबान दर्दमन्द परवानों की बरबादी से रात की बेहोश ख़ामोशी ही अच्छी.

تین گیت

(پرکاش)

(۱)

اے پاگل کیا انگوری کے پیالے پر پیالے ڈھال رہا ہی! آج رات کا یہ خمار کل صبح تیرے پرانوں پر کیول نش پران ہوکر رہ جائے گا. ساقی کی آنکھوں کا وہ جام پی جس کے خمار سے تو ہمیشہ ہمیشہ مسرور رہے گا، رے پاگل.

---

(۲)

اے حسین دلربا میں چلا ہی جاؤں.
شمع پر بے زبان دردمند پروانوں کا برباد ہونا میں نہیں دیکھ سکتا.
اے حسین دلربا، مجھے چلے ہی جانا چاہیے.
یا پھر شمع گل کردے اور ہم چاند کی سفید ٹھنڈی کرنوں کے ہی سائے میں بیٹھ جائیں.
ان بے زبان دردمند پروانوں کی بربادی سے رات کی بیہوش خاموشی ہی اچھی.

(३)

तुमने मेरी उठ कर झुकती हुई आँखों को देखा, मेरे दिल की बेताब धड़कनों को सुना !

परंतु आँखों में मचलते उन मोतियों का मोल नहीं जाना जो बिखर सकते हैं और बिखरने के बाद जिनका समेटना !—जिनका नामोनिशाँ भी बाक़ी नहीं रहता; उस दिल की बेबसी को नहीं पहचाना जो पीड़ा से टूट सकता है और टूटने के बाद जिसका पुनर्निमाण !—जिसकी ख़ाक भी नहीं बन सकती !

تم نے میری اُٹھ کر جھکتی ہوئی آنکھوں کو دیکھا، میرے دل کی بے تاب دھڑکنوں کو سُنا !

پرنتو آنکھوں میں مچلتے اُن موتیوں کا مول نہیں جانا جو بکھر سکتے ہیں اور بکھرنے کے بعد جن کا سمیٹنا !— جن کا نام ونشان بھی باقی نہیں رہتا ! اس دل کی بےبسی کو نہیں پہچانا جو پیڑا سے ٹوٹ سکتا ہے اور ٹوٹنے کے بعد جس کا پُورن زمانا— جس کی خاک بھی نہیں بن سکتی !

मौलाना उबैदुल्ला सिन्धी

(श्री रतन लाल बंसल)

वलीउल्लाई जमात के छुटे इमाम मौलाना महमूदुलहसन साहब के उन साथियों और शागिर्दों में, जिन्होंने मुल्क की आज़ादी की लड़ाई में निहायत दिलेरी के साथ हिस्सा लिया, मौलवी उबेदुल्ला सिन्धी का नाम हमेशा बड़ी इज्जत के साथ लिया जायगा. मौलाना उबेदुल्ला सिन्धी को अपनी जिन्दगी का बहुत बड़ा हिस्सा जलावतनी की दिल कँपा देने वाली मुशकिलों में बिताना पड़ा.

मौलाना उबेदुल्ला सिन्धी का जनम १० मार्च सन् १८७१ ई० को मियांवाली (पंजाब) के एक हिन्दू से सिख बने हुये खानदान में हुआ था. उनके बाप का नाम रामसिंह था, जो सुनारगीरी और साहूकारी का पेशा करते थे और अपने इस बेटे के जनम से चार महीने पहले ही चल बसे थे. नतीजा यह हुआ कि उबेदुल्ला साहब को अपने बाप की मुहब्बत न मिल सकी, लेकिन उनके बाबा जसपतराम जी उनके पैदा होने के क़रीब दो साल बाद तक जिन्दा रहे. इसके बाद उबेदुल्ला साहब की माँ अपनी गृहस्थी के साथ मायके आगईं. कुछ अरसे के बाद वह अपने भाई के साथ जमपुर ज़िला डेरा गाज़ीखाँ चली गईं और वहां रहने लगीं. वहीं पर मौलाना ने शुरू की तालीम पाई और वहीं पर [illegible]

مولانا عبیداللہ سندھی

(شری رتن لال بنسل)

ولی اللٰہی جماعت کے چھٹے امام مولانا محمودالحسن صاحب کے ان ساتھیوں اور شاگردوں میں، جنھوں نے ملک کی آزادی کی لڑائی میں نہایت دلیری کے ساتھ حصّہ لیا، مولوی عبیداللہ سندھی کا نام ہمیشہ بڑی عزت کے ساتھ لیا جائےگا. مولانا عبیداللہ سندھی کو اپنی زندگی کا بہت بڑا حصّہ جلاوطنی کی دل کپکپا دینے والی مشکلوں میں بِتانا پڑا.

مولانا عبیداللہ سندھی کا جنم ۱۰ مارچ ۱۸۷۱ء کو میانوالی (پنجاب) کے ایک ہندو سے سکھ بنے ہوئے خاندان میں ہوا تھا. ان کے باپ کا نام رام سنگھ تھا، جو سنارگیری اور ساہوکاری کا پیشہ کرتے تھے اور اپنے اس بیٹے کے جنم سے چار مہینے پہلے ہی چل بسے تھے. نتیجہ یہ ہوا کہ عبیداللہ صاحب کو اپنے باپ کی محبت نہ مل سکی، لیکن ان کے بابا جسپت رام ان کے پیدا ہونے کے قریب دو سال بعد تک زندہ رہے. اس کے بعد عبیداللہ صاحب کی ماں اپنی گرہستی کے ساتھ مایکے آگئیں. کچھ عرصے کے بعد وہ اپنے بھائی کے ساتھ جامپور ضلع ڈیرہ غازی خاں چلی گئیں اور وہاں رہنے لگیں. یہیں پہ مولانا نے شروع کی تعلیم پائی اور یہیں پہ [illegible]

हुई एक किताब 'तोहफ़तुल हिन्द' के असर में आकर उन्होंने इसलाम क़बूल कर लिया और घर छोड़कर सिन्ध जा पहुँचे. इस वक़्त मौलाना की उमर सिर्फ़ १६ साल की थी.

सिन्ध पहुँच कर मौलाना ने कुछ दिनों तक इसलामी फ़लसफ़े की शुरू की किताबें पढ़ीं जिनकी तरफ़ उनका ख़ास सम्मान था. इसके बाद सक्खर इसलामिया स्कूल के हेडमास्टर मुहम्मद अज़ीम ख़ाँ युसुफ़ज़ई की लड़की के साथ उनकी शादी हो गई. मौलाना ने इसके बाद सक्खर में ही रहने का इरादा कर लिया और इसकी ख़बर अपनी माँ को भी दे दी. माँ जो अपने बेटे के वियोग में बेहाल हो रही थीं, यह ख़बर मिलते ही सक्खर पहुँचीं. पर उनको यह देख कर बड़ा धक्का लगा कि उनके बेटे ने इसलाम क़बूल कर लिया है. फिर भी बेटे की मुहब्बत की वजह से वह उससे दूर रहने को तय्यार नहीं थीं. इसी तरह मौलाना के दिल में भी अपनी माँ के लिये इज़्ज़त और मुहब्बत थी, लेकिन जिस चीज़ को वह ठीक समझते थे उसे किसी दुनियावी मुहब्बत के लिये छोड़ देना भी वह गवारा नहीं कर सकते थे. इतना होने पर भी उन्होंने कभी अपनी माँ को जो सिर्फ़ उनके ही आसरे पर थीं, मुसलमान बनाने की कोशिश नहीं की. यही वजह है कि उनकी माँ अपने मज़हब पर क़ायम रहते हुए भी बराबर उनके साथ रह सकीं. इससे ज़ाहिर होता है कि मौलाना ने हालांकि अपने मज़हब को बदला था, लेकिन वह ग़ैर ज़रूरी मज़हबी जोश उनमें बिलकुल ही नहीं था जो अकसर एक मज़हब से दूसरे मज़हब में जाने वालों में पाया जाता है.

ہوئی ایک کتاب "تحفۃ الہند" کے اثر میں آکر انھوں نے اسلام قبول کرلیا اور گھر چھوڑکر سندھ جا پہنچے۔ اِس وقت مولانا کی عمر صرف ۱۶ سال کی تھی۔

سندھ پہنچ کر مولانا نے کچھ دنوں تک اسلامی فلسفے کی شروع کی کتابیں پڑھیں جن کی طرف اُن کا خاص سمان تھا۔ اِس کے بعد سکھر اسلامیہ اسکول کے ہیڈماسٹر محمد عظیم خاں یوسف زئی کی لڑکی کے ساتھ اُن کی شادی ہوگئی۔ مولانا نے اِس کے بعد سکھر میں ہی رہنے کا ارادہ کرلیا اور اِس کی خبر اپنی ماں کو دے دی۔ ماں جو اپنے بیٹے کے وِیوگ میں بےحال ہو رہی تھیں، یہ خبر ملتے ہی سکھر پہنچیں۔ پر اُن کو یہ دیکھ کر بڑا دھکا لگا کہ اُن کے بیٹے نے اسلام قبول کرلیا ہے۔ پھر بھی بیٹے کی محبت کی وجہ سے وہ اُس سے دُور رہنے کو تیار نہیں تھیں۔ اِسی طرح مولانا کے دل میں بھی اپنی ماں کے لئے عزت اور محبت تھی، لیکن جس چیز کو وہ ٹھیک سمجھتے تھے اُسے کسی دُنیاوی محبت کے لئے چھوڑ دینا بھی وہ گوارہ نہیں کرسکتے تھے۔ اِتنا ہونے پر بھی انھوں نے کبھی اپنی ماں کو جو صرف اُن کے ہی آسرے پر تھیں، مسلمان بنانے کی کوشش نہیں کی۔ یہی وجہ ہے کہ اُن کی ماں اپنے مذہب پر قایم رہتے ہوئے بھی برابر اُن کے ساتھ رہ سکیں۔ اِس سے ظاہر ہوتا ہے کہ مولانا نے حالانکہ اپنے مذہب کو بدلا تھا، لیکن وہ غیرضروری مذہبی جوش اُن میں بالکل ہی نہیں تھا جو اکثر ایک مذہب سے دوسرے مذہب میں جانے والوں میں پایا جاتا ہے۔

सिंध में रहते हुए मौलाना के हाथ कुछ किताबें लगीं जो वलीउल्लाई जमात के दूसरे इमाम शाह अब्दुल अजीज के भतीजे शाह इस्माइल शहीद का लिखी हुई थीं. इन किताबों के जरिये मौलाना को सबसे पहिले वलीउल्लाई जमात के उसूलों की जानकारी हुई और वह इसके बाबत कुछ ज्यादा मालूम करने के लिये बेचैन हो उठे. इसी सिलसिले में सिन्ध के कुछ ऐसे लोगों से भी उनकी जानकारी हुई जो वलीउल्लाई जमात से ताल्लुक़ रखते हुए हिन्दुस्तान से ब्रिटिश हुकूमत को उखाड़ फेंकने की तय्यारी कर रहे थे. मौलाना ने भी उनके काम में दिलचस्पी लेना शुरू कर दिया और जब उन लोगों को यह पक्का यक़ीन हो गया कि मौलाना हर तरह से एतबार के क़ाबिल हैं और उनके दिल में मुल्क की आजादी के लिये सच्ची तड़प है, तो उनको यह भेद भी बता दिया कि इस तमाम संगठन के सबसे बड़े मौजूदा नेता देवबन्द मदरसे के हेड मास्टर मौलाना महमूदउलहसन साहब हैं. इतना मालूम होते ही मौलाना उबेदुल्ला सिन्धी देवबन्द जा पहुंचे. वहां पहुँचते ही उन्होंने मौलाना महमूदउलहसन साहब से पढ़ना शुरू कर दिया और कुछ दिन बाद ही उन्होंने मौलाना महमूदउलहसन साहब का इतना यक़ीन हासिल कर लिया कि वह उनकी गुप चुप होने वाली सियासी मजलिसों में भी शरीक होने लगे.

इस वक़्त मौलाना महमूदउलहसन साहब के सामने एक खास काम मदरसा देवबन्द के विद्यार्थियों में देश भक्ती का प्रचार करना था जिससे आजादी की लड़ाई के लिये उनमें से रंगरूट मिल सकें. इस काम के लिये [illegible] से मदरसा देवबन्द के विद्यार्थियों

سندھ میں رہتے ہوئے مولانا کے ہاتھ کچھ کتابیں لگیں جو ولی اللہی جماعت کے دوسرے امام شاہ عبدالعزیز کے بھتیجے شاہ اسمٰعیل شہید کی لکھی ہوئی تھیں۔ ان کتابوں کے ذریعے مولانا کو سب سے پہلے ولی اللہی جماعت کے اصولوں کی جان کاری ہوئی اور وہ اس کے بابت کچھ زیادہ معلوم کرنے کے لئے بے چین ہو اٹھے۔ اسی سلسلے میں سندھ کے کچھ ایسے لوگوں سے بھی ان کی جان کاری ہوئی جو ولی اللہی جماعت سے تعلق رکھتے ہوئے ہندستان سے برٹش حکومت کو اکھاڑ پھینکنے کی تیاری کر رہے تھے۔ مولانا نے بھی ان کے کام میں دلچسپی لینا شروع کر دیا اور جب ان لوگوں کو یہ پکا یقین ہو گیا کہ مولانا ہر طرح سے اعتبار کے قابل ہیں اور ان کے دل میں ملک کی آزادی کے لئے سچی تڑپ ہے، تو ان کو یہ بھید بھی بتا دیا کہ اس تمام سنگٹھن کے سب سے بڑے موجودہ نیتا دیوبند مدرسے کے ہیڈ ماسٹر مولانا محمود الحسن صاحب ہیں۔ اتنا معلوم ہوتے ہی مولانا عبید اللہ سندھی دیوبند جا پہنچے۔ وہاں پہنچتے ہی انھوں نے مولانا محمود الحسن صاحب سے پڑھنا شروع کر دیا اور کچھ دن بعد ہی انھوں نے مولانا محمود الحسن صاحب کا اتنا یقین کر لیا کہ وہ ان کی گپ چپ ہونے والی سیاسی جلسوں میں بھی شریک ہونے لگے۔

اس وقت مولانا محمود الحسن صاحب کے سامنے ایک خاص کام مدرسہ دیوبند کے ودیارتھیوں میں دیش بھگتی کا پرچار کرنا تھا جس سے آزادی کی لڑائی کے لئے ان میں سے رنگروٹ مل سکیں۔

اس کام کے لئے ان کی صلاح سے مدرسہ دیوبند کے ودیارتھیوں

का एक संगठन मौलाना उबेदुल्ला ने बनाया, जिसका नाम 'जमय्यतुल अन्सार' रक्खा गया. मौलाना उबेदुल्ला ख़ुद इसके जनरल सेक्रेटरी बने. लेकिन इस वक़्त तक मदरसा देवबन्द में कुछ ऐसे लोग भी घुस आये थे जिनको ब्रिटिश हुकूमत की मुख़ालफ़त का नाम सुनते ही कपकपी आने लगती थी. ऐसे लोगों को मौलाना उबेदुल्ला साहब का देवबन्द के मदरसे में रहना खटका और उन्होंने उन पर तरह तरह के इलज़ाम लगाने शुरू कर दिये. बदक़िस्मती से उस वक़्त इन इलज़ाम लगाने वालों में कुछ ऐसे लोग भी शरीक हो गए थे, जिनको मौलाना उबेदुल्ला बहुत इज़्ज़त की निगाह से देखते थे. इसका नतीजा यह हुआ कि मौलाना उबेदुल्ला का मन देवबन्द से ऊबने लगा और वह सिंध वापस जाने की सोचने लगे. लेकिन मौलाना महमूदउलहसन साहब अपने इस शागिर्द की ग़ैर मामूली सचाई और दिमाग़ी ताक़त से वाक़िफ़ हो चुके थे. इस लिये उन्होंने समझा बुझा कर मौलाना उबेदुल्ला को देहली भेज दिया, जहां वह 'नज़ारतुल मआरिफ़' के नाम से एक मदरसा चलाने लगे. इस मदरसे का ज़रूरी इन्तज़ाम करने के लिये ख़ुद मौलाना महमूदउल हसन साहब देहली पहुंचे और हकीम अजमल ख़ाँ साहब व डाक्टर अन्सारी साहब वग़ैरा अपने ख़ास ख़ास दोस्तों से मौलाना उबेदुल्ला की जान पहचान करा कर उनसे यह वादा ले गए कि वह वक़्त ज़रूरत मदरसे की मदद करते रहेंगे.

जैसा कि रौलट कमेटी की रिपोर्ट में भी ज़िक्र है, देहली आ जाने के बाद भी मौलाना उबेदुल्ला मौलाना महमूदउलहसन साहब से मिलने के लिये बराबर देवबन्द आते जाते रहे. इसी बीच मौलाना

کا ایک سنگٹھن مولانا عبیداللہ نے بنایا، جس کا نام 'جمعیت الانصار' رکھا گیا۔ مولانا عبیداللہ خود اِس کے جنرل سکریٹری بنے۔ لیکن اِس وقت تک مدرسہ دیوبند میں کچھ ایسے لوگ بھی گھس آئے تھے جن کو برٹش حکومت کی مخالفت کا نام سُنتے ہی کپکپی آنے لگتی تھی۔ ایسے لوگوں کو مولانا عبیداللہ صاحب کا دیوبند کے مدرسے میں رہنا کھٹکا اور اُنھوں نے اُن پر طرح طرح کے الزام لگانے شروع کردئے۔ بدقسمتی سے اُس وقت اِن الزام لگانے والوں میں کچھ ایسے لوگ بھی شریک ہوگئے تھے، جن کو مولانا عبیداللہ بہت عزت کی نگاہ سے دیکھتے تھے۔ اِس کا نتیجہ یہ ہوا کہ مولانا عبیداللہ کا من دیوبند سے اُوبنے لگا اور وہ سندھ واپس جانے کی سوچنے لگے۔ لیکن مولانا محمودالحسن صاحب اپنے اِس شاگرد کی غیر معمولی سچائی اور دماغی طاقت سے واقف ہوچکے تھے۔ اِس لئے اُنھوں نے سمجھا بجھاکر مولانا عبیداللہ کو دہلی بھیج دیا، وہاں وہ 'نظارۃ المعارف' کے نام سے ایک مدرسہ چلانے لگے۔ اِس مدرسے کا ضروری انتظام کرنے کے لئے خود مولانا محمودالحسن صاحب دہلی پہنچے اور حکیم اجمل خاں صاحب و ڈاکٹر انصاری صاحب وغیرہ اپنے خاص خاص دوستوں سے مولانا عبیداللہ کی جان پہچان کراکر اُن سے یہ وعدہ لے گئے کہ وہ وقت ضرورت مدرسے کی مدد کرتے رہیں گے۔

جیسا کہ رولٹ کمیٹی کی رپورٹ میں بھی ذکر ہے، دہلی آجانے کے بعد بھی مولانا عبیداللہ مولانا محمودالحسن صاحب سے ملنے کے لئے برابر دیوبند آتے جاتے رہے۔ اِسی بیچ مولانا

उबेदुल्ला ने दिल्ली में एक इनक़लाबी पार्टी खड़ी कर ली थी जिसका मक़सद हथियारों के ज़रिये अंग्रेजों को हिन्दुस्तान से बाहर निकाल देना था. यह सन् १९१३ का ज़माना था और हिन्दुस्तान के दूसरे हिस्सों में भी ख़ासकर बंगाल और पंजाब में इसी तरह के और भी बहुत से संगठन क़ायम हो चुके थे. मौलाना उबेदुल्ला सिन्धी ने इन संगठनों से भी अपना ताल्लुक़ क़ायम करने की कोशिश की जिसका ज़िक्र हिन्दुस्तान के एक बहुत बड़े क्रान्तिकारी श्री शचीन्द्र नाथ सान्याल ने अपनी किताब 'बन्दी जीवन' में किया है.

इसके कुछ दिन बाद ही यूरप में लड़ाई के नगाड़े गनगना उठे. मौलाना महमूदउलहसन साहब ने इस मौक़े से फ़ायदा उठाना चाहा और मौलाना उबेदुल्ला सिन्धी को काबुल जाने के लिये कहा. मौलाना महमूदउलहसन साहब की आदत थी कि वह नज़दीक से नज़दीक के आदमी को भी सिर्फ़ उतनी ही बातें बताते थे जितनी बताना ज़रूरी होता था. इस वजह से मौलाना उबेदुल्ला नहीं जानते थे कि काबुल में मौलाना महमूदउलहसन साहब का कितना असर है. इधर वह देहली में काफ़ी काम कर चुके थे. इस लिये उनकी राय काबुल जाने की नहीं थी. इसी वजह से जब एक दिन मौलाना महमूदउलहसन साहब ने अकस्मात ही मौलाना उबेदुल्ला से कहा "उबेदुल्ला ! काबुल जाओ" तो उबेदुल्ला साहब ने कुछ हैरानी के साथ पूछा—"क्यों ?" मौलाना महमूदउलहसन साहब ने इसका कुछ जवाब न दिया और ख़ामोश होगए. दूसरे दिन भी उन्होंने मौलाना उबेदुल्ला से इसी तरह कहा और मौलाना के काबुल जाने की वजह पूछने पर ख़ामोश होगए. लेकिन उनकी आँखों में

عبیداللہ نے دلّی میں ایک انقلابی پارٹی کھڑی کر لی تھی جس کا مقصد ہتھیاروں کے ذریعے انگریزوں کو ہندستان سے باہر نکال دینا تھا. یہ ۱۹۱۳ء کا زمانہ تھا اور ہندستان کے دوسرے حصّوں میں بھی خاص کر بنگال اور پنجاب میں اسی طرح کے اور بھی بہت سے سنگٹھن قایم ہو چکے تھے. مولانا عبیداللہ سندھی نے ان سنگٹھنوں سے بھی اپنا تعلق قایم کرنے کی کوشش کی جس کا ذکر ہندستان کے ایک بہت بڑے کرانتی کاری شری سچیندر ناتھ سانیال نے اپنی کتاب 'بندی جیون' میں کیا ہے.

اس کے کچھ دن بعد ہی یورپ میں لڑائی کے نگاڑے گنگنا اٹھے. مولانا محمودالحسن صاحب نے اس موقع سے فائدہ اٹھانا چاہا اور مولانا عبیداللہ سندھی کو کابل جانے کے لئے کہا. مولانا محمودالحسن صاحب کی عادت تھی کہ وہ نزدیک سے نزدیک کے آدمی کو بھی صرف اُتنی ہی باتیں بتاتے تھے جتنی بتانا ضروری ہوتا تھا. اس وجہ سے مولانا عبیداللہ نہیں جانتے تھے کہ کابل میں مولانا محمودالحسن صاحب کا کتنا اثر ہے. ادھر وہ دہلی میں کافی کام کر چکے تھے. اس لئے اُن کی رائے کابل جانے کی نہیں تھی. اسی وجہ سے جب ایک دن مولانا محمودالحسن صاحب نے اکسمات ہی مولانا عبیداللہ سے کہا "عبیداللہ! کابل جاؤ" تو عبیداللہ صاحب نے کچھ حیرانی کے ساتھ پوچھا "کیوں؟" مولانا محمودالحسن صاحب نے اس کا کچھ جواب نہ دیا اور خاموش ہوگئے. دوسرے دن بھی انھوں نے مولانا عبیداللہ سے اسی طرح کہا اور مولانا کے کابل جانے کی وجہ پوچھنے پر خاموش ہوگئے. لیکن اُن کی آنکھوں میں

थोड़ी सी नाराज़ी की झलक उबेदुल्ला साहब को महसूस हुई. इससे मौलाना उबेदुल्ला को बड़ा धक्का लगा और वह यह इन्तज़ार करने लगे कि उनको फिर काबुल जाने का हुक्म मिले और वह उसकी तामील कर सकें.

दो चार दिन बाद ही मौलाना-महमूदुउलहसन साहब ने मौलाना उबेदुल्ला से फिर कहा—"उबेदुल्ला काबुल जाओ." उबेदुल्ला साहब ने यह सुनते ही "हाँ" करदी और काबुल जाने की तय्यारियाँ शुरू कर दीं. उस वक़्त उनके पास इतना पैसा नहीं था कि इस सफ़र का इन्तज़ाम कर सकें, लेकिन इसका ज़िक्र मौलाना महमूदुउलहसन साहब से करना उनको अच्छा न लगा. आख़िर उनके एक शागिर्द शेख़ अब्दुल रहीम (आचार्य कृपलानी जी के बड़े भाई) ने अपनी बीवी के ज़ेवर बेच कर इस सफ़र का ख़र्च जुटाया और मौलना उबेदुल्ला अपने तीन साथियों को लेकर अगस्त १९१५ में हिन्दुस्तान की सरहद पार करके काबुल की तरफ़ चल पड़े. रास्ते में बहुत सी दिक़्क़तों का सामना करते हुए १५ अक्तूबर सन् १९१५ को मौलाना काबुल में दाख़िल हो गए. इस वक़्त उनके पास ख़र्च के लिये सिर्फ़ एक पौन्ड बचा था और उनको इतना भी मालूम नहीं था कि आख़िर इस बेगाने मुल्क में उनको क्यों भेजा गया है. अपनी इस हालत का ज़िक्र करते हुए अपनी डायरी में उन्होंने एक जगह लिखा है—"सन् १९१५ में शेख़ उल हिन्द के हुक्म से काबुल गया. मुझे कोई मुफ़स्सिल प्रोग्राम नहीं बताया गया था, इसलिये मेरी तबियत इस हिजरत को पसन्द नहीं करती थी- लेकिन तामील हुक्म के लिये जाना ज़रूरी था. ख़ुदा ने अपने फ़ज़ल से निकलने

تھوڑی سی ناراضی کی جھلک عبیداللہ صاحب کو محسوس ہوئی۔ اس سے مولانا عبیداللہ کو بڑا دھکا لگا اور وہ یہ انتظار کرنے لگے کہ اُن کو پھر کابل جانے کا حکم ملے اور وہ اُس کی تعمیل کرسکیں۔

دو چار دن بعد ہی مولانا محمودالحسن صاحب نے مولانا عبیداللہ سے پھر کہا — "عبیداللہ کابل جاؤ۔" عبیداللہ صاحب نے یہ سنتے ہی "ہاں" کردی اور کابل جانے کی تیاریاں شروع کردیں۔ اُس وقت اُن کے پاس اتنا پیسہ نہیں تھا کہ اِس سفر کا انتظام کرسکیں، لیکن اِس کا ذکر مولانا محمودالحسن صاحب سے کرنا اُن کو اچھا نہ لگا۔ آخر اُن کے ایک شاگرد شیخ عبدالرحیم (آچاریہ کرپلانی جی کے بڑے بھائی) نے اپنی بیوی کے زیور بیچ کر اِس سفر کا خرچ جٹایا اور مولانا عبیداللہ اپنے تین ساتھیوں کو لےکر اگست ۱۹۱۵ میں ہندستان کی سرحد پار کرکے کابل کی طرف چل پڑے۔ راستے میں بہت سی دقتوں کا سامنا کرتے ہوئے ۱۵ اکتوبر ۱۹۱۵ء کو مولانا کابل میں داخل ہوگئے۔ اِس وقت اُن کے پاس خرچ کے لئے صرف ایک پونڈ بچا تھا اور اُن کو اتنا بھی معلوم نہیں تھا کہ آخر اِس بیگانے ملک میں اُن کو کیوں بھیجا گیا ہے۔ اپنی اِس حالت کا ذکر کرتے ہوئے اپنی ڈائری میں انھوں نے ایک جگہ لکھا ہے — "۱۹۱۵ء میں شیخ الہند کے حکم سے کابل گیا۔ مجھے کوئی مفصل پروگرام نہیں بتایا گیا تھا، اِس لئے میری طبیعت اِس ہجرت کو پسند نہیں کرتی تھی۔ لیکن تعمیل حکم کے لئے جانا ضروری تھا۔ خدا نے اپنے فضل سے نکلنے

का रास्ता साफ कर दिया और मैं अफ़ग़ानिस्तान पहुँच गया. दिल्ली की सियासी जमात को जब मैंने यह बताया कि मेरा काबुल जाना तय हो चुका है तो उसने भी अपना नुमाइन्दा मुझे बना दिया लेकिन कोई माक़ूल प्रोग्राम वह भी मुझे नहीं बता सके." इन लफ़्ज़ों से ज़ाहिर होता है कि मौलाना उबेदुल्ला साहब डिसिप्लिन की पाबन्दी का कितना ख़याल रखते थे.

काबुल पहुँच कर भी मौलाना उबेदुल्ला साहब को बड़ी बड़ी तकलीफ़ें उठानी पड़ीं. शुरू शुरू में तो उनको काबुल सरकार ने नज़रबन्द करके जेल में बन्द कर दिया, जहाँ कुछ और भी हिन्दुस्तानी, जो इसी मक़सद से काबुल आये थे, बन्द थे. इसके बाद जर्मन टर्किश मिशन के साथ राजा महेन्द्र प्रताप काबुल पहुँचे. तब उन तमाम हिन्दुस्तानियों के साथ मौलाना उबेदुल्ला को भी रिहाई मिली. रिहा होने के बाद मौलाना उबेदुल्ला जनरल नादिर ख़ाँ से मिले जिनको मौलाना उबेदुल्ला के मिशन की ख़बर पहिले ही लग चुकी थी. जनरल नादिर ख़ाँ ने मौलाना को हर तरह की मदद देने का वादा किया. इसके बाद ही काबुल में एक आरज़ी आज़ाद हिन्द सरकार बनाई गई और मौलाना उबेदुल्ला को उसमें होम मेम्बर का ओहदा दिया गया. इसके अलावा हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिये लड़ने वालों की जो फ़ौज काबुल में खड़ी की जाने वाली थी, उसके जनरल भी मौलाना उबेदुल्ला साहब को ही बनाया गया. इसके अलावा हिन्दुस्तान में भी 'ख़ुदाई फ़ौज' के नाम से एक फ़ौज का संगठन करना तय हुआ, जिसके सबसे बड़े कमाण्डर मौलाना महमूदुलहसन साहब चुने गए.

کا راستہ صاف کر دیا اور میں افغانستان پہنچ گیا . دلی کی سیاسی جماعت کو جب میں نے یہ بتایا کہ میرا کابل جانا طے ہو چکا ہے تو اس نے بھی اپنا نمائندہ مجھے بنا دیا لیکن کوئی معقول پروگرام وہ بھی مجھے نہیں بتا سکے"۔ ان لفظوں سے ظاہر ہوتا ہے کہ مولانا عبیداللہ صاحب ڈسپلن کی پابندی کا کتنا خیال رکھتے تھے .

کابل پہنچ کر بھی مولانا عبیداللہ صاحب کو بڑی بڑی تکلیفیں اٹھانی پڑیں . شروع شروع میں تو ان کو کابل سرکار نے نظر بند کر کے جیل میں بند کر دیا ، جہاں کچھ اور بھی ہندستانی ، جو اسی مقصد سے کابل آئے تھے ، بند تھے . اس کے بعد جرمن ٹرکش مشن کے ساتھ راجا مہندر پرتاپ کابل پہنچے . تب ان تمام ہندستانیوں کے ساتھ مولانا عبیداللہ کو بھی رہائی ملی . رہا ہونے کے بعد مولانا عبیداللہ جنرل نادر خاں سے ملے جن کو مولانا عبیداللہ کے مشن کی خبر پہلے ہی لگ چکی تھی . جنرل نادر خاں نے مولانا کو ہر طرح کی مدد دینے کا وعدہ کیا . اس کے بعد ہی کابل میں ایک عارضی آزاد ہند سرکار بنائی گئی اور مولانا عبیداللہ کو اس میں ہوم ممبر کا عہدہ دیا گیا . اس کے علاوہ ہندستان کی آزادی کے لئے لڑنے والوں کی جو فوج کابل میں کھڑی کی جانے والی تھی ، اس کے جنرل بھی مولانا عبیداللہ صاحب کو ہی بنایا گیا . اس کے علاوہ ہندستان میں بھی 'خدائی فوج' کے نام سے ایک فوج کا سنگٹھن کرنا طے ہوا ، جس کے سب سے بڑے کمانڈر مولانا محمود الحسن صاحب چنے گئے

मौलाना उबेदुल्ला सिन्धी ने इन तमाम फ़ैसलों की ख़बर मौलाना महमूदुल्लहसन साहब तक पहुँचाना जरूरी समझा. मौलाना महमूदुल्लहसन साहब इस वक़्त मक्के में थे. मौलाना उबेदुल्ला साहब ने पीले रेशम पर उनके लिये एक ख़त लिखवाया, जो इस कारीगरी से लिखा गया था कि देखने में तो वह फूल से मालूम होते थे, लेकिन दर असल उसमें लड़ाई का तमाम नक़्शा और इन तमाम कामों की रिपोर्ट थी. यह रेशम पर कढ़ा हुआ ख़त अब्दुल हक़ नाम के एक विद्यार्थी को सौंपा गया, कि वह उसे शेख़ अब्दुर्रहीम तक पहुँचादे. इसके बाद शेख़ अब्दुर्रहीम उसे मौलाना महमूदुल्लहसन साहब के पास तक पहुँचवा देते. लेकिन अब्दुलहक़ ने हिन्दुस्तान में आते ही यह ख़त ख़ान बहादुर हक़नवाज़ ख़ाँ को दे दिया और ख़ाँ साहब ने उसे सर माइकेल ओडायर तक पहुँचा दिया. इसका नतीजा यह हुआ कि अँगरेज़ों को यह तमाम भेद मालूम हो गया. मौलाना महमूदुलहसन साहब मक्के में फ़ौरन गिरफ़्तार कर लिये गए. शेख़ अब्दुर्रहीम के नाम भी वारंट निकला, लेकिन वह फ़रार हो गए. अँगरेज़ों ने काबुल के अमीर हबीबुल्ला ख़ाँ पर यह ज़ोर डाला कि वह मौलना उबेदुल्ला सिन्धी और उनके साथियों को अँगरेज़ों के हवाले कर दें. अमीर हबीबुल्ला इस वक़्त अँगरेज़ों के हाथों की कठपुतली बने हुए थे. इस लिये वह इन तमाम लोगों को अंगरेज़ों के हाथों में देने को भी तय्यार थे. लेकिन अमीर के छोटे भाई नसरुल्ला ख़ाँ और अमीर के लड़के अमानुल्ला ख़ाँ वग़ैरा अंगरेज़ों के ख़िलाफ़ थे. इन लोगों ने अमीर को ऐसा तो

مولانا عبید اللہ سندھی نے اِن تمام فیصلوں کی خبر مولانا محمود الحسن صاحب تک پہنچانا ضروری سمجھا. مولانا محمود الحسن صاحب اِس وقت مکّے میں تھے. مولانا عبید اللہ صاحب نے پیلے ریشم پر اُن کے لئے ایک خط لکھوایا، جو اِس کاریگری سے لکھا گیا تھا کہ دیکھنے میں تو وہ پھول سے معلوم ہوتے تھے، لیکن در اصل اُس میں لڑائی کا تمام نقشہ اور اِن تمام کاموں کی رپورٹ تھی. یہ ریشم پر کڑھا ہوا خط عبدالحق نام کے ایک ودّیارتھی کو سونپا گیا، کہ وہ اُسے شیخ عبدالرحیم تک پہنچادے. اِس کے بعد شیخ عبدالرحیم اُسے مولانا محمود الحسن صاحب کے پاس تک پہنچوا دیتے. لیکن عبدالحق نے ہندستان میں آتے ہی یہ خط خان بہادر حق نواز خاں کو دے دیا اور خاں صاحب نے اُسے سر مائکیل اوڈایر تک پہنچا دیا. اِس کا نتیجہ یہ ہوا کہ انگریزوں کو یہ تمام بھید معلوم ہوگیا. مولانا محمود الحسن صاحب مکّے میں فوراً گرفتار کر لئے گئے. شیخ عبدالرحیم کے نام بھی وارنٹ نکلا، لیکن وہ فرار ہو گئے. انگریزوں نے کابل کے امیر حبیب اللہ خاں پر یہ زور ڈالا کہ وہ مولانا عبید اللہ سندھی اور اُن کے ساتھیوں کو انگریزوں کے حوالے کردیں. امیر حبیب اللہ اِس وقت انگریزوں کے ہاتھوں کی کٹھ پتلی بنے ہوئے تھے. اِس لئے وہ اِن تمام لوگوں کو انگریزوں کے ہاتھوں میں دینے کو بھی تیار تھے. لیکن امیر کے چھوٹے بھائی نصر اللہ خاں اور امیر کے لڑکے امان اللہ خاں وغیرہ انگریزوں کے خلاف تھے. اِن لوگوں نے امیر کو ایسا تو

न करने दिया. फिर भी मौलाना को गिरफ़्तार करके काबुल की जेल में तो डाल ही दिया गया. मौलाना ने जेल से भी अपने काम को जारी रक्खा और वह अफ़ग़ानिस्तान की उस पार्टी को बराबर मदद करते रहे, जो अंगरेज़ों के ख़िलाफ़ थी.

कुछ दिन बाद १९ फ़रवरी सन् १९१९ को अमीर हबीबुल्ला ख़ाँ अंगरेज़ों से मिले रहने की अपनी पालिसी के कारन क़त्ल कर दिये गए और अमानुल्ला ख़ाँ काबुल की गद्दी पर बैठे. अमानुल्ला ख़ाँ ने सबसे पहला काम यह किया कि उबेदुल्ला साहब और उनके साथियों को जेल से छोड़ दिया और मौलाना से अपने राजकाजी मामलों में भी सलाह लेने लगे.

इस वक़्त तक यूरोप की बड़ी लड़ाई ख़त्म हो चुकी थी, जिसमें हालाँकि अंगरेज़ जीत गये थे लेकिन उनकी तमाम ताक़त ख़र्च हो चुकी थी. इधर हिन्दुस्तान में रौलट बिल के ख़िलाफ़ सत्याग्रह चालू था और पंजाब में तो सिर्फ़ मार्शल्ला के बल पर हुकूमत चलाई जा रही थी. उबेदुल्ला साहब ने महसूस किया कि अगर इस वक़्त काबुल हिन्दुस्तान पर चढ़ाई कर दे तो काबुल और हिन्दुस्तान दोनों ही अंगरेज़ों के पंजों से छूट सकते हैं. उन्होंने बादशाह अमानुल्ला ख़ाँ साहब के सामने अपना यह ख़याल रक्खा. इसका यह नतीजा हुआ कि ९ मई सन १९१९ को यकायक अफ़ग़ानिस्तान ने अंगरेज़ों के ख़िलाफ़ लड़ाई का ऐलान कर दिया. इस ऐलान के होते ही सरहद के आज़ाद क़बीले भी मौलाना उबेदुल्ला साहब के एक दूसरे साथी तुरंगज़ई के हाजी साहब की रहनुमाई में अंगरेज़ों के ख़िलाफ़ खड़े हो गए. यह

نہ کرنے دیا۔ پھر بھی مولانا کو گرفتار کرکے کابل کی جیل میں تو ڈال ہی دیا گیا۔ مولانا نے جیل سے بھی اپنے کام کو جاری رکھا اور وہ افغانستان کی اس پارٹی کی برابر مدد کرتے رہے، جو انگریزوں کے خلاف تھی۔

کچھ دن بعد ۱۹ فروری ۱۹۱۹ء کو امیر حبیب اللہ خاں انگریزوں سے ملے رہنے کی اپنی پالیسی کے کارن قتل کردئے گئے اور امان اللہ خاں کابل کی گدی پر بیٹھے۔ امان اللہ خاں نے سب سے پہلا کام یہ کیا کہ عبید اللہ صاحب اور ان کے ساتھیوں کو جیل سے چھوڑ دیا اور مولانا سے اپنے راج کاجی معاملوں میں بھی صلاح لینے لگے۔

اس وقت تک یوروپ کی بڑی لڑائی ختم ہوچکی تھی، جس میں حالانکہ انگریز جیت گئے تھے لیکن ان کی تمام طاقت خرچ ہوچکی تھی۔ ادھر ہندوستان میں رولٹ بل کے خلاف ستیہ گرہ چالو تھا اور پنجاب میں تو صرف مارشل لا کے بل پر حکومت چلائی جارہی تھی۔ عبید اللہ صاحب نے محسوس کیا کہ اگر اس وقت کابل ہندوستان پر چڑھائی کردے تو کابل اور ہندستان دونوں ہی انگریزوں کے پنجوں سے چھوٹ سکتے ہیں۔ انھوں نے بادشاہ امان اللہ خاں صاحب کے سامنے اپنا یہ خیال رکھا۔ اس کا یہ نتیجہ ہوا کہ ۹ مئی ۱۹۱۹ء کو یکایک افغانستان نے انگریزوں کے خلاف لڑائی کا اعلان کردیا۔ اس اعلان کے ہوتے ہی سرحد کے آزاد قبیلے بھی مولانا عبید اللہ صاحب کے ایک دوسرے ساتھی ترنگ زئی کے حاجی صاحب کی رہنمائی میں انگریزوں کے خلاف کھڑے ہوگئے۔ یہ

लड़ाई २४ जुलाई तक चली. इसके बाद अंगरेज़ों को अफ़ग़ानिस्तान से सुलह करनी पड़ी, जिसके मुताबिक़ अफ़ग़ानिस्तान की मुकम्मिल आज़ादी मंज़ूर की गई और उसे दूसरे दूसरे मुल्कों से बिना अंगरेज़ों की इजाज़त लिये अपने सम्बन्ध क़ायम करने का अख़्तियार दिया गया. इसके बदले में अंगरेज़ सरकार की तरफ़ से यह शर्त रक्खी गई कि काबुल की सरकार मौलना उबैदुल्ला को कोई सियासी काम काबुल में नहीं करने देगी. इस शर्त का नतीजा यह हुआ कि मौलना उबैदुल्ला ने काबुल हमेशा के लिये छोड़ दिया. काबुल की सरकार मौलाना की तमाम ज़रूरतों को पूरा करने के लिये तय्यार थी, लेकिन मौलना उबैदुल्ला साहब के दिल में तो हिन्दुस्तान का आज़ादी की चाह थी. इस लिये वह इस शर्त को मंज़ूर हो कैसे कर सकते थे. वह इस बात को अच्छी तरह जानते थे कि काबुल छोड़ते ही उनको सख़्त तकलीफ़ें ख़ास कर रुपये पैसे की भारी तंगी उठानी पड़ेगी. लेकिन उन्होंने कुछ दिन बाद ही काबुल छोड़ दिया. इसी बीच उन्होंने एक ख़ास काम यह भी किया था कि काबुल में कांग्रेस की एक शाख़ क़ायम कर दी जिसको आल इन्डिया कांग्रेस कमेटी ने अपने गया सेशन में मन्ज़ूर भी कर लिया. कांग्रेस की यह पहिली शाख़ थी जो हिन्दुस्तान से बाहर किसी दूसरे मुल्क में क़ायम हुई थी.

काबुल छोड़ने के बाद मौलाना उबैदुल्ला रूस पहुँचे और क़रीब सात महीने तक मास्को में रहकर कम्यूनिज़्म के उसूलों को पढ़ते और समझते रहे. लेकिन वह कम्यूनिस्ट पार्टी में शरीक न हो

لڑائی ۲۴ جولائی تک چلی۔ اس کے بعد انگریزوں کو افغانستان سے صلح کرنی پڑی، جس کے مطابق افغانستان کی مکمل آزادی منظور کی گئی اور اُسے دوسرے دوسرے ملکوں سے بنا انگریزوں کی اجازت لئے اپنے سمبندھ قایم کرنے کا اختیار دیا گیا۔ اس کے بدلے میں انگریز سرکار کی طرف سے یہ شرط رکھی گئی کہ کابل کی سرکار مولانا عبیداللہ کو کوئی سیاسی کام کابل میں نہیں کرنے دے گی۔ اس شرط کا نتیجہ یہ ہوا کہ مولانا عبیداللہ نے کابل ہمیشہ کے لئے چھوڑ دیا۔ کابل کی سرکار مولانا کی تمام ضرورتوں کو پورا کرنے کے لئے تیار تھی، لیکن مولانا عبیداللہ صاحب کے دل میں تو ہندستان کی آزادی کی چاہ تھی۔ اس لئے وہ اس شرط کو منظور ہی کیسے کر سکتے تھے۔ وہ اس بات کو اچھی طرح جانتے تھے کہ کابل چھوڑتے ہی اُن کو سخت تکلیفیں خاص کر روپئے پیسے کی بھاری تنگی اُٹھانی پڑے گی۔ لیکن اُنھوں نے کچھ دن بعد ہی کابل چھوڑ دیا۔ اسی بیچ اُنھوں نے ایک خاص کام یہ بھی کیا تھا کہ کابل میں کانگریس کی ایک شاخ قایم کر دی جس کو آل انڈیا کانگریس کمیٹی نے اپنے گیا سشن میں منظور بھی کر لیا۔ کانگریس کی یہ پہلی شاخ تھی جو ہندستان سے باہر کسی دوسرے ملک میں قایم ہوئی تھی۔

کابل چھوڑنے کے بعد مولانا عبیداللہ روس پہنچے اور قریب سات مہینے تک ماسکو میں رہ کر کمیونزم کے اُصولوں کو پڑھتے اور سمجھتے رہے۔ لیکن وہ کمیونسٹ پارٹی میں شریک نہ ہو

सके. क्योंकि खुदापरस्ती और दूसरी मजहबी बातों के लिये इस कम्यूनिज्म में कोई गुंजायश उनको न दिखलाई दी. इसके बाद वह तुर्की पहुँचे और वहां क़रीब तीन साल तक रहे. वहां उन्होंने 'पैन इस्लामिक' की तहरीक पर काफ़ी ग़ौर किया. लेकिन उसमें कामयाबी की कोई उम्मेद दिखाई नहीं दी. आखिर वह इस नतीजे पर पहुँचे कि इन्डियन नेशनल कांग्रेस में ही इसलाम की मजहबी तहरीक को भी शरीक कर दिया जाय. इस पर उन्होंने एक किताब लिखी जो तुर्की में ही छपी. इसी जमाने में लाला लाजपतराय और डाक्टर अन्सारी साहब भी घूमते घामते तुर्की पहुँचे. मौलाना उबैदुल्ला हिन्दुस्तान के इन दोनों नेताओं से मिले. इसके कुछ दिन बाद ही इटली जाकर वह पं० जवाहरलाल जी से भी मिले और उनसे भी अपने इस प्रोग्राम पर बातचीत की. इस प्रोग्राम की खास बात यह थी कि उसमें अहिंसा पर बहुत ज़ोर दिया गया था. जवाहर लाल जी ने अपनी मशहूर किताब 'मेरी कहानी' में मौलाना के इस प्रोग्राम को "हिन्दू मुसलमानों के सवाल को हल करने की एक काफ़ी अच्छी कोशिश" बताया है.

इसके बाद मौलाना कुछ दिनों तक इसी तरह एक मुल्क से दूसरे मुल्क में घूमते रहे. न पास में पैसा, न कोई साथी और न कोई हमदर्द. ब्रिटिश हुकूमत के खुफ़िया हर वक़्त मौलाना के साथ लगे रहते थे और परेशान करते रहते थे. पर इन तकलीफ़ों के बावजूद मौलाना अपनी धुन में लगे रहते थे.

कुछ दिन बाद मौलाना को मालूम हुआ कि मक्का में एक खिलाफ़त कानफ़्रेन्स होने वाली है जिसमें हिन्दुस्तान के नुमाइन्दे

سکے. کیونکہ خدا پرستی اور دوسری مذہبی باتوں کے لئے اس کمیونزم میں کوئی گنجائش ان کو نہ دکھلائی دی. اس کے بعد وہ ترکی پہنچے اور وہاں قریب تین سال تک رہے. یہاں انھوں نے "پین اسلامک" کی تحریک پر کافی غور کیا. لیکن اس میں کامیابی کی کوئی امید دکھائی نہیں دی. آخر وہ اس نتیجے پر پہنچے کہ انڈین نیشنل کانگریس میں ہی اسلام کی مذہبی تحریک کو بھی شریک کر دیا جائے. اس پر انھوں نے ایک کتاب لکھی جو ترکی میں ہی چھپی. اسی زمانے میں لالہ لاجپت رائے اور ڈاکٹر انصاری صاحب بھی گھومتے گھامتے ترکی پہنچے. مولانا عبیداللہ ہندستان کے ان دونوں نیتاؤں سے ملے. اس کے کچھ دن بعد ہی اٹلی جا کر وہ پنڈت جواہر لال سے بھی ملے اور ان سے بھی اپنے اس پروگرام پر بات چیت کی. اس پروگرام کی خاص بات یہ تھی کہ اس میں اہنسا پر بہت زور دیا گیا تھا. جواہر لال جی نے اپنی مشہور کتاب 'میری کہانی' میں مولانا کے اس پروگرام کو "ہندو مسلمانوں کے سوال کو حل کرنے کی ایک کافی اچھی کوشش" بتایا ہے.

اس کے بعد مولانا کچھ دنوں تک اسی طرح ایک ملک سے دوسرے ملک میں گھومتے رہے. نہ پاس میں پیسہ، نہ کوئی ساتھی اور نہ کوئی ہمدرد. برٹش حکومت کے خفیہ ہر وقت مولانا کے ساتھ لگے رہتے تھے اور پریشان کرتے رہتے تھے. پر ان تکلیفوں کے باوجود مولانا اپنی دھن میں لگے رہتے تھے.

کچھ دن بعد مولانا کو معلوم ہوا کہ مکہ میں ایک خلافت کانفرنس ہونے والی ہے جس میں ہندستان کے نمائندے

भी हिस्सा लेंगे. मौलाना ने इस मौक़े पर मक्का पहुँचना जरूरी समझा और वह इटली के रास्ते मक्के के लिये चल पड़े. वह जब मक्का पहुँचे, तब तक कानफ़्रेन्स ख़त्म हो चुकी थी और हिन्दुस्तान के नुमाइन्दे भी वहाँ से चल दिये थे. इसके बाद मौलाना ने मक्का में ही रहना तय किया और वहीं पढ़ना पढ़ाना शुरू कर दिया.

सन् १९३६ में कांग्रेस ने मौलाना को हिन्दुस्तान आने की इजाजत देने के लिये आवाज़ उठाई. कुछ दिन बाद सिन्ध में खान-बहादुर अल्लाबख़्श की सरकार बनी और काँग्रेस को अपनी इस तहरीक में कामयाबी हुई. १ नवम्बर सन् १९३७ को ब्रिटिश हुकूमत से मौलाना को यह इत्तला मिली कि वह हिन्दुस्तान आ सकते हैं. १ जनवरी सन् '३८ को मौलाना ने पासपोर्ट भी हासिल कर लिया और वह हज करके क़रीब २२ साल बाद अपनी प्यारी जनम भूमि की गोद में वापस आगए. यहाँ आकर पहिले वह अपने तमाम पुराने साथियों से मिले और उसके बाद दिल्ली में रह कर शाह वलीउल्लाह के उसूलों का प्रचार करना उन्होंने शुरू कर दिया, जो वह अपनी आखिरी साँस तक करते रहे. जलावतनी की तकलीफें और परेशानियाँ उनके देशभक्ती के जज़बे को कम नहीं कर सकी थीं.

मौलाना का इन्तक़ाल २१ अगस्त १९४४ को दीनपुर (भावलपुर) में हुआ. अपने आखिरी वक़्त तक वह हिन्दू मुसलिम एकता के ज़बरदस्त हामी रहे. वह अक्सर कहा करते थे कि सबसे बड़ी ख़ुदापरस्ती यही है कि हम सभी इनसानों से, फिर चाहे वह किसी भी क़ौम या मज़हब के हों, सच्चे दिल से मुहब्बत करें. अपने एक

بھی حصّہ لیں گے۔ مولانا نے اس موقع پر مکّہ پہنچنا ضروری سمجھا اور وہ اٹلی کے راستے مکّے کے لئے چل پڑے۔ وہ جب مکّہ پہنچے، تب تک کانفرنس ختم ہو چکی تھی اور ہندستان کے نمائندے بھی وہاں سے چل دئے تھے۔ اس کے بعد مولانا نے مکّہ میں ہی رہنا طے کیا اور وہیں پڑھنا پڑھانا شروع کر دیا۔

۱۹۳۶ء میں کانگریس نے مولانا کو ہندستان آنے کی اجازت دینے کے لئے آواز اٹھائی۔ کچھ دن بعد سندھ میں خان بہادر اللہ بخش کی سرکار بنی اور کانگریس کو اپنی اس تحریک میں کامیابی ہوئی۔ ۱ر نومبر ۱۹۳۷ء کو برٹش حکومت سے مولانا کو یہ اطلاع ملی کہ وہ ہندستان آسکتے ہیں۔ ۱ر جنوری ۳۸ء کو مولانا نے پاسپورٹ بھی حاصل کر لیا اور وہ حج کر کے قریب ۲۲ سال بعد اپنی پیاری جنم بھومی کی گود میں واپس آگئے۔ یہاں آکر پہلے وہ اپنے تمام پرانے ساتھیوں سے ملے اور اس کے بعد دلّی میں رہ کر شاہ ولی اللہ کے اصولوں کا پرچار کرنا انھوں نے شروع کر دیا، جو وہ اپنی آخری سانس تک کرتے رہے۔ جلاوطنی کی تکلیفیں اور پریشانیاں ان کے دیش بھکتی کے جذبے کو کم نہیں کر سکی تھیں۔

مولانا کا انتقال ۲۱ر اگست ۱۹۴۴ء کو دین پور (بہاول پور) میں ہوا۔ اپنے آخری وقت تک وہ ہندو مسلم ایکتا کے زبردست حامی رہے۔ وہ اکثر کہا کرتے تھے کہ سب سے بڑی خداپرستی یہی ہے کہ ہم سبھی انسانوں سے، پھر چاہے وہ کسی بھی قوم یا مذہب کے ہوں، سچے دل سے محبت کریں۔ اپنے ایک

मज़मून में उन्होंने अपने इस ख़याल को ज़ाहिर करते हुए लिखा था—

"ईमान बिल्लाह या .खुदापरस्ती की एक मंज़िल इन्सानियत दोस्ती भी है. अगर आदमी यह मानता है कि सारे इनसान उसी के पैदा किये हुए हैं, और उसको ख़ालिक़ से हक़ीक़ी मुहब्बत है, तो लाज़मी है कि उसे उसकी मख़लूक़ से भी मुहब्बत हो और अगर उसे उसकी मख़लूक़ से मुहब्बत नहीं, तो यह समझिये कि वह .खुदा की मुहब्बत के दावे में सच्चा नहीं. हमारे सूफ़िया अकराम ने तो .खुदापरस्ती को अमली शक्ल में इनसानियत दोस्ती को ही असल दीन करार दिया था. उनका तो यह अक़ीदा हो गया था कि जिसे सिर्फ़ अपने गिरोह और जमात से मुहब्बत है और वह दूसरों को, जो हम-अक़ीदा नहीं हैं, नफ़रत की निगाह से देखता है. वह सच्चा मुहिद और .खुदापरस्त हो नहीं है."

काश! आज का हिन्दुस्तान अपने इस देश भक्त शहीद के इन सोने के हरूफ़ों में लिखे जाने लायक़ लफ़्ज़ों का असली मरम समझ सके और उन पर अमल कर सके.

مضمون میں اُنھوں نے اپنے اِس خیال کو ظاہر کرتے ہوئے لکھا تھا —

"ایمان باللہ یا خدا پرستی کی ایک منزل انسانیت دوستی بھی ہے. اگر آدمی یہ مانتا ہے کہ سارے انسان اُسی کے پیدا کئے ہوئے ہیں، اور اُس کو خالق سے حقیقی محبت ہے، تو لازمی ہے کہ اُسے اُس کی مخلوق سے بھی محبت ہو اور اگر اُسے اُس کی مخلوق سے محبت نہیں، تو یہ سمجھیئے کہ وہ خدا کی محبت کے دعوے میں سچا نہیں. ہمارے صوفیائے کرام نے تو خدا پرستی کی عملی شکل میں انسانیت دوستی کو ہی اصل دین قرار دیا تھا. اُن کا تو یہ عقیدہ ہوگیا تھا کہ جسے صرف اپنے گروہ اور جماعت سے محبت ہے اور وہ دوسروں کو، جو ہم عقیدہ نہیں ہیں، نفرت کی نگاہ سے دیکھتا ہے، وہ سچا موحد اور خدا پرست ہی نہیں ہے."

کاش! آج کا ہندستان اپنے اِس دیش بھکت شہید کے اِن سونے کے حرفوں میں لکھے جانے لائق لفظوں کا اصلی مرم سمجھ سکے اور اُن پر عمل کر سکے.

—— .:<.>.✲.<.>:. ——

कट्टरपन से पछताना पड़ेगा

(श्री ओंकारनाथ शास्त्री)

धर्म जनता के लिये ज़हर है. धर्म का इस्तेमाल, लूटने वाले तबक़े के लोग, मेहनत की कमाई से ज़िन्दगी बसर करने वाले मज़दूरों किसानों की गुलामी की ज़ंजीर और मुफ़लिसी को मज़बूत करने में करते हैं. अकसर लोग इसे नहीं मानते. पर जो कुछ इस बदक़िस्मत मुल्क में हो रहा है, उसे देखते हुए कौन इनकार करेगा कि मज़हबियत की इस ख़ौफ़नाक आग में सब कुछ जलकर भस्म हो सकता है. आज पंजाब की वहशत से इनसान की सारी तहज़ीब शर्मिन्दा है. २० वीं सदी का इनसान इतना गिर सकता है, इतना ज़ुल्म, दर असल इतना बुज़दिली और बेशर्मी का इज़हार कर सकता है जिसके सामने तवारीख़ के सारे मुज़ालिम का सर झुक जाता हो-यहाँ तक जिससे फ़ासिस्टों के ज़ुल्म भी शर्मिन्दा हों- और वह भी हिन्दुस्तान का इनसान जिसको अपनी तहज़ीब और तमद्दुन पर नाज़ हो. जो अपने सामने सारी दुनिया को असभ्य और हेच मानता हो वह हिन्दू और वह मुसलमान अपने को इतना भूल सकता है-पागल पन का यह नमूना पेश कर सकता है इसका ख़याल भी ग़ैर मुमकिन था.

पर जो कुछ बंगाल बिहार और पंजाब में हुआ, यहाँ तक कि

کٹرپن سے پچھتانا پڑے گا

(شری اونکارناتھ شاستری)

دھرم جنتا کے لئے زہر ہے. دھرم کا استعمال، لوٹنے والے طبقے کے لوگ، محنت کی کمائی سے زندگی بسر کرنے والے مزدوروں کسانوں کی غلامی کی زنجیر اور مفلسی کو مضبوط کرنے میں کرتے ہیں. اکثر لوگ اسے نہیں مانتے، پر جو کچھ اس بدقسمت ملک میں ہو رہا ہے، اسے دیکھتے ہوئے کون انکار کرے گا کہ مذہبیت کی اس خوفناک آگ میں سب کچھ جل کر بھسم ہو سکتا ہے. آج پنجاب کی وحشت سے انسان کی ساری تہذیب شرمندہ ہے. ۲۰ویں صدی کا انسان اتنا گر سکتا ہے، اتنا ظلم، دراصل اتنا بزدلی اور بےشرمی کا اظہار کر سکتا ہے جس کے سامنے تواریخ کے سارے مظالم کا سر جھک جاتا ہو یہاں تک جس سے فاسسٹوں کے ظلم بھی شرمندہ ہوں. اور وہ بھی ہندستان کا انسان جس کو اپنی تہذیب اور تمدن پر ناز ہو، جو اپنے سامنے ساری دنیا کو اسبھیہ اور ہیچ مانتا ہو وہ ہندو اور وہ مسلمان اپنے کو اتنا بھول سکتا ہے. پاگل پن کا یہ نمونہ پیش کر سکتا ہے اس کا خیال بھی غیر ممکن تھا.

پر جو کچھ بنگال بہار اور پنجاب میں ہوا، یہاں تک کہ

जो लड़ाई कश्मीर और जूनागढ़ में हो रही है, या जिसके दूसरी जगहों में बढ़ने का अन्देशा है, वह जल्द गुजर जाने वाले फ़ेज़ (Phase) नहीं मालूम होते. इनसे पैदा हुई कड़ुवाहट बरसों के लिये बवाल जान बन कर रहेगी. आज कौन ऐसा हिन्दू है, कौन ऐसा मुसलमान है जिसका दिल इस मज़हबी जहालत, इस फ़िरक़ेवाराना कट्टरता, अन्ध विश्वास और तरफ़दारी के जुनून से ओतप्रोत न हो. आज चारों तरफ़ तर्क और इनसाफ़, अक़्ल और दूर-अन्देशी को बलाए ताक़ रखकर हर शख़्स बदला लेने की भावना से अन्धा हो रहा है. कट्टरता की यह फ़िज़ा इतना घर कर गई है कि आपके लिये यह ग़ैर मुमकिन हो रहा है कि दरमियानी तबक़े में कोई ऐसा फ़ील्ड मिले जहाँ सही ख़यालातों का आदर हो. हाँ, यह रोग अगर कहीं आज भी सबसे कम है तो वह है इनक़लाबी मज़दूरों और ग़रीब किसानों में. वहाँ भी यह कहना ग़लत होगा कि बिल्कुल ही नहीं है. इनसान इनसान में, मज़दूर मज़दूर में, किसान किसान में ऐसा ख़ूँख़्वार तफ़रक़ा पैदा करने वाली इस बला से ख़ुदा पनाह !

फ़िरक़ेवाराना कट्टरपन ने क़त्ले आम, जंगलीपन और आख़िरकार लड़ाई की शक्ल अख़्तियार की. लड़ाई कट्टरपन को बढ़ा रही है. इस शैतानी चक्कर (विशस सर्किल) का क्या नतीजा होगा कहना मुश्किल है. एक साहब कहते हैं-'जब पाकिस्तान मिल गया तो हिन्दुस्तान में मुसलमानों का क्या काम !' दूसरे साहब कहते हैं- 'जम्हूरियत का राज जनता का राज है. उसमें अक्सरियत का बोल बाला होना ज़रूरी है. अक्सरियत की बोली, अक्सरियत के हक़ों को कैसे नज़रअन्दाज़ किया जा सकता है.' इस दलील के हामी

جو لڑائی کشمیر اور جوناگڑھ میں ہو رہی ہے، یا جس کے دوسری جگہوں میں بڑھنے کا اندیشہ ہے، وہ جلد گزر جانے والے فیز (Phase) نہیں معلوم ہوتے. ان سے پیدا ہوئی کڑواہٹ برسوں کے لئے وبالِ جان بن کر رہے گی. آج کون ایسا ہندو ہے، کون ایسا مسلمان ہے جس کا دل اس مذہبی جہالت، اس فرقہ وارانہ کٹرتا، اندھ وشواس اور طرفداری کے جنون سے اوت پروت نہ ہو. آج چاروں طرف ترک اور انصاف، عقل اور دور اندیشی کو بالائے طاق رکھ کر ہر شخص بدلہ لینے کی بھاونا سے اندھا ہو رہا ہے. کٹرتا کی یہ فضا اتنا گھر کر گئی ہے کہ آپ کے لئے یہ غیر ممکن ہو رہا ہے کہ درمیانی طبقے میں کوئی ایسا فیلڈ ملے جہاں صحیح خیالاتوں کا آدر ہو. ہاں، یہ روگ اگر کہیں آج بھی سب سے کم ہے تو وہ ہے انقلابی مزدوروں اور غریب کسانوں میں. وہاں بھی یہ کہنا غلط ہوگا کہ بالکل ہی نہیں ہے. انسان انسان میں، مزدور مزدور میں، کسان کسان میں ایسا خونخوار تفرقہ پیدا کرنے والی اس بلا سے خدا پناہ !

فرقہ وارانہ کٹرپن نے قتلِ عام، جنگلی پن اور آخرکار لڑائی کی شکل اختیار کی. لڑائی کٹرپن کو بڑھا رہی ہے. اس شیطانی چکر (وشس سرکل) کا کیا نتیجہ ہوگا کہنا مشکل ہے. ایک صاحب کہتے ہیں. "جب پاکستان مل گیا تو ہندوستان میں مسلمانوں کا کیا کام !" دوسرے صاحب کہتے ہیں۔ "جمہوریت کا راج جنتا کا راج ہے. اس میں اکثریت کا بول بالا ہونا ضروری ہے. اکثریت کی بولی، اکثریت کے حقوق کو کیسے نظرانداز کیا جا سکتا ہے." اس دلیل کے حامی

महज़ हिन्दू सभाई नहीं, कांग्रेस के लीडर भी हो रहे हैं. आज कांग्रेस के हिन्दू लीडर समझौते की बात भी सुनने के लिये तैयार नहीं हैं. जब ज़रूरत नहीं थी तब इन लीडरों ने मिस्टर जिन्ना और लीग को किसी तरह राज़ी करने (Appeasement) की नीति अख़्तियार की, बराबर उनकी हस्ती को माना, उनसे सौदा करने में ही स्वराज की कामयाबी समझी और इस तरह लगातार उनकी ताक़त को बढ़ाया. पाकिस्तान इसी कमज़ोरी का नतीजा है. आज भी लीग की दूसरे तरीक़े से ताक़त मज़बूत की जा रही है. आज का कट्टरपन, आज के काम लीग की उस धारणा और प्रचार को सच साबित कर रहे हैं जो वह करती रही है. मिसाल के लिये यू० पी० असेम्बली के लिये यह बात मुश्किल नहीं थी कि वह दो सरकारी लिखावटों को मान लेती और दफ़्तर के कामों को आम बोली में चलाती. यहाँ तक कि दो लिखावटों की मौजूदगी में बोली के किसी क़दर मुश्किल होने पर भी लोग पूछ ताछ से काम चला सकते थे. संसार में ऐसे मुल्कों की कमी नहीं जहाँ दो सरकारी बोलियां हैं. ऐसा नहीं किया गया. हिन्दू तमद्दुन के प्रचार के लिये 'राज के ज़रिये' हिन्दी की तरफ़दारी ज़रूरी समझी गयी. ज़ाहिरा दलीलें हिन्दू नेताओं के साथ हैं—बहुमत का राज, बहुमत की बोली, बहुमत का तमद्दुन! लेकिन अमल में जनता का नुकसान है. ज़रूर पाकिस्तान में इतनी ताक़त नहीं कि महज़ अपने बल पर इंडिया के अल्पमत के मुसलमानों के हक़ों का बचाव सीधे तौर पर कर सके. मगर पाकिस्तान की ताक़त महज़ पाकिस्तान की ताक़त नहीं है. ब्रिटेन और अमरीका

محض ہندو سبھائی نہیں، کانگریس کے لیڈر بھی ہو رہے ہیں. آج کانگریس کے ہندو لیڈر سمجھوتے کی بات بھی سننے کے لئے تیار نہیں ہیں. جب ضرورت نہیں تھی تب ان لیڈروں نے مسٹر جناح اور لیگ کو کسی طرح راضی کرنے (Appeasement) کی نیتی اختیار کی، برابر ان کی ہستی کو مانا، ان سے سودا کرنے میں ہی سوراج کی کامیابی سمجھی اور اس طرح لگاتار ان کی طاقت کو بڑھایا. پاکستان اسی کمزوری کا نتیجہ ہے. آج بھی لیگ کی دوسرے طریقے سے طاقت مضبوط کی جا رہی ہے. آج کا کٹرپن، آج کے کام لیگ کی اس دھارنا اور پرچار کو سچ ثابت کر رہے ہیں جو وہ کرتی رہی ہے. مثال کے لئے یو. پی. اسمبلی کے لئے یہ بات مشکل نہیں تھی کہ وہ دو سرکاری لکھاوٹوں کو مان لیتی اور دفتر کے کاموں کو عام بولی میں چلاتی. یہاں تک کہ دو لکھاوٹوں کی موجودگی میں بولی کے کسی قدر مشکل ہونے پر بھی لوگ پوچھ تاچھ سے کام چلا سکتے تھے. سنسار میں ایسے ملکوں کی کمی نہیں جہاں دو سرکاری بولیاں ہیں. ایسا نہیں کیا گیا. ہندو تمدن کے پرچار کے لئے 'راج کے ذریعے' ہندی کی طرف داری ضروری سمجھی گئی. ظاہرا دلیلیں ہندو نیتاؤں کے ساتھ ہیں — بہومت کا راج، بہومت کی بولی، بہومت کا تمدن! لیکن عمل میں جنتا کا نقصان ہے. ضرور پاکستان میں اتنی طاقت نہیں کہ محض اپنے بل پر انڈیا کے الپمت کے مسلمانوں کے حقوں کا بچاؤ سیدھے طور پر کر سکے. مگر پاکستان کی طاقت محض پاکستان کی طاقت نہیں ہے. برٹین اور امریکا

उसे फ़िज़ा ख़राब करने की ताक़त हमेशा देते रहेंगे. हिन्दुओं के कट्टरपन से कश्मीर भी किसी वक़्त हिन्दुस्तान से निकल सकता है. हिन्दुस्तान के सूबों में अक्सरियत की तरफ़दारियाँ कश्मीर के राष्ट्रीय ख़्याल के मुसलमानों को बदज़न कर देंगी. उस वक़्त शेख़ अब्दुल्ला काम नहीं देंगे. पाकिस्तान का हाथ मज़बूत करने के लिये हैदराबाद एक दूसरा हथकंडा है, जो लगातार ख़ौफ़नाक सूरत अख़्तियार कर रहा है. यह सब बातें मिस्टर जिन्ना और लीग को ताक़त देने वाली हैं.

जो लोग यह दलील पेश करते हैं कि अब तक हिन्दुओं ने मुसलमानों के साथ रियायत की. पर अब वह ऐसा करने के लिये तय्यार नहीं है, भूल करते हैं. बात तो यों है कि जब उदारता दिखलाने की जरूरत नहीं थी, जब इनक़लाबी तरीक़े से ब्रिटिश सरकार को ख़त्म करने की जरूरत थी, जब मिस्टर जिन्ना और लीग को नज़रअन्दाज़ करने की जरूरत थी उस वक़्त उन्हें जरूरत से ज़्यादा अहमियत दी गयी और आज जब किसी क़दर चीज़ों को दरगुज़र करना चाहिये उस समय अजीब कट्टरपन है.

किसी फ़िरक़े को अपनी हिफ़ाज़त का पूरा हक़ है. हिन्दुस्तान सरकार को आत्मरक्षा का उससे भी अधिक हक़ है. पर अभी तो हिन्दुस्तान आज़ाद मुल्क बन भी नहीं पाया. अभी तो उसकी 'हिफ़ाज़त' ब्रिटिश साम्राज्यशाही ख़ुद ही कर रही है. ब्रिटिश शाही नीति अपने छोटे साझीदारों, यानी हिन्दुस्तान के सरमायादारों को ख़त्म करने की नहीं है, महज़ उन्हें फँसाये रखने की है.

आचार्य कृपलानी जी का कहना है कि हिन्दुस्तान की हिफ़ाज़त

اُسے فضا خراب کرنے کی طاقت ہمیشہ دیتے رہیں گے۔ ہندوؤں کے کٹرپن سے کشمیر بھی کسی وقت ہندستان سے نکل سکتا ہے۔ ہندستان کے صوبوں میں اکثریت کی طرفداریاں کشمیر کے راشٹریہ خیال کے مسلمانوں کو بدظن کر دیں گی۔ اُس وقت شیخ عبداللہ کام نہیں دیں گے۔ پاکستان کا ہاتھ مضبوط کرنے کے لئے حیدرآباد ایک دوسرا ہتھکنڈا ہے، جو لگاتار خوفناک صورت اختیار کر رہا ہے۔ یہ سب باتیں مسٹر جناح اور لیگ کو طاقت دینے والی ہیں۔

جو لوگ یہ دلیل پیش کرتے ہیں کہ اب تک ہندوؤں نے مسلمانوں کے ساتھ رعایت کی، پر اب وہ ایسا کرنے کے لئے تیار نہیں ہیں، بھول کرتے ہیں۔ بات تو یوں ہے کہ جب اُدارتا دکھلانے کی ضرورت نہیں تھی، جب انقلابی طریقے سے برٹش سرکار کو ختم کرنے کی ضرورت تھی، جب مسٹر جناح اور لیگ کو نظرانداز کرنے کی ضرورت تھی اُس وقت اُنھیں ضرورت سے زیادہ اہمیت دی گئی اور آج جب کسی قدر چیزوں کو درگزر کرنا چاہئے اُس سمے عجیب کٹرپن ہے۔

کسی فرقے کو اپنی حفاظت کا پورا حق ہے۔ ہندستان سرکار کو آتم رکشا کا اُس سے بھی ادھک حق ہے۔ پر ابھی تو ہندستان آزاد ملک بن بھی نہیں پایا۔ ابھی تو اُس کی 'حفاظت' برٹش سامراج شاہی خود ہی کر رہی ہے۔ برٹش شاہی نیتی اپنے چھوٹے ساجھی داروں، یعنی ہندستان کے سرمایہ داروں کو ختم کرنے کی نہیں ہے، محض اُنھیں پھنسائے رکھنے کی ہے۔

آچاریہ کرپلانی جی کا کہنا ہے کہ ہندستان کی حفاظت

के लिये हथियारों के बड़े बड़े कारखाने खुलने जरूरी हैं. पर इस काम के लिये इतनी बड़ी रक़में चाहियें जिन्हें सरमायादार यों ही सरकार के सुपुर्द करने वाले नहीं हैं. फिर मुल्क की हिफ़ाजत होगी कैसे ? तभी जब दोनों फ़िर्क़ों के मजदूर किसान समझ लें कि असल सवाल सरमायादारी को खतम करने का है जिसके बिना उनकी हिफ़ाजत के जराए हासिल नहीं हो सकते.

कश्मीर के हमले ने, हिन्द में हर तरह के बेशुमार हथियारों के पकड़े जाने ने, यह साफ़ कर दिया है कि ब्रिटिश सरकार ने फ़िरक़ेवाराना झगड़ों की बुनियाद मजबूत करने में कोई भी बात उठा नहीं रक्खी है. डाक्टर पट्टाभी सीतारमैया ने भी इसे साफ़ तसलीम किया कि कश्मीर के पीछे साम्राज्यशाही का हाथ है. कांग्रेस के सभी लीडर इसको जानते हैं.

इधर हिन्दुस्तान के लीगी नेताओं की टोन-हरकतें बिलकुल बदल गई हैं. लोग कहते हैं कि यह काफ़ी नहीं है. इसके पीछे साजिश और डर है. जरूरत है सचाई की. सही, बिलकुल सही. लेकिन जहाँ किसी काम में होशियारी की जरूरत है, वहाँ अविश्वास और शक शुबहे के इजहार और जाहिरदारी में कटुता नहीं आने देना चाहिये. हिन्दुस्तान के मजबूत हकूमत होने के लिये जिन तमाम बातों की जरूरत है, हिन्दू मुसलिम इत्तहाद उनमें से एक है. ब्रिटिश सरकार और उसके हिमायतियों ने फूट की जड़ को इतना मजबूत कर दिया है कि इसको यों ही नहीं टाला जा सकता. दमन कोई रास्ता नहीं है. जबरन न कोई हमेशा के लिये दबाया जा सकता है और न दबाया जा सकेगा. कमजोर को दबाना कोई नई

کے لئے ہتھیاروں کے بڑے بڑے کارخانے کھلنے ضروری ہیں۔ پر اِس کام کے لئے اتنی بڑی رقمیں چاہئیں جنھیں سرمایہ دار یوں ہی سرکار کے سپرد کرنے والے نہیں ہیں۔ پھر ملک کی حفاظت ہوگی کیسے؟ تبھی جب دونوں فرقوں کے مزدور کسان سمجھ لیں کہ اصل سوال سرمایہ داری کو ختم کرنے کا ہو جس کے بنا اُن کی حفاظت کے ذرائع حاصل نہیں ہو سکتے۔

کشمیر کے حملے نے، ہند میں ہر طرح کے بے شمار ہتھیاروں کے پکڑے جانے نے، یہ صاف کر دیا ہو کہ برٹش سرکار نے فرقے وارانہ جھگڑوں کی بنیاد مضبوط کرنے میں کوئی بھی بات اٹھا نہیں رکھی ہو۔ ڈاکٹر پٹابھی سیتارمیہ نے بھی اسے صاف تسلیم کیا ہو کہ کشمیر کے پیچھے سامراج شاہی کا ہاتھ ہو۔ کانگریس کے سبھی لیڈر اس کو جانتے ہیں۔

اِدھر ہندستان کے لیگی نیتاؤں کی ٹون حرکتیں بالکل بدل گئی ہیں۔ لوگ کہتے ہیں کہ یہ کافی نہیں ہو۔ اِس کے پیچھے سازش اور ڈر ہو۔ ضرورت ہو سچائی کی۔ صحیح، بالکل صحیح۔ لیکن جہاں کسی کام میں ہوشیاری کی ضرورت ہو، وہاں اوشواس اور شک شبہے کے اظہار اور ظاہرداری میں کڑواہٹ نہیں آنے دینا چاہئے۔ ہندستان کے مضبوط حکومت ہونے کے لئے جن تمام باتوں کی ضرورت ہو، ہندو مسلم اتحاد اُن میں سے ایک ہو۔ برٹش سرکار اور اُس کے حمایتیوں نے پھوٹ کی جڑ کو اتنا مضبوط کر دیا ہو کہ اس کو یوں ہی نہیں ٹالا جا سکتا۔ دمن کوئی راستہ نہیں ہو۔ جبراً نہ کوئی ہمیشہ کے لئے دبایا جا سکتا ہو اور نہ دبایا جا سکے گا۔ کمزور کو دبانا کوئی نئی

बात नहीं है. उनमें विश्वास और मुहब्बत पैदा करना जरूर नई बात और दूरअन्देशी की बात है. मुसलमानों को 'फ़िफ्थ कालमिस्ट' कहना एक फैशन हो गया है. यह फ़ैशन नासमझों का है इत्तफ़ाक़ का मौक़ा खोया जा रहा है.

लीग के नेताओं के टोन बदलने का बायस महज चाल और ख़ौफ़ नहीं है. उन्हें यह भी एहसास हो रहा है कि उनकी साज़िशें नाकामयाब रहीं. हथियारों का पकड़ा जाना उनको पस्त हिम्मती का एक सबब है. साथ ही जो लोग सचाई के साथ पाकिस्तान की जरूरत महसूस करते थे उनका ख्याल है. कि अब लड़ाई की कोई वजह नहीं. इस लिये सभी को एक तराजू में रखना मुनासिब नहीं.

एकता के लिये हमारा नारा क्या हो ? भारत एक राष्ट्र हो सभी चाहते हैं. पाकिस्तान की सरकार का यह रुख साफ़ है कि वह 'एक राज' के नारे को किसी तरह बरदाश्त करने के लिये तैयार नहीं है. 'एक राज' के लिये इंडिया के सरमायादार और मजदूर दोनों अपने अपने ढंग से दिलचस्पी रखते हैं. सरमायादार को अपनी तिजारत का ख़याल है. इसलिये वह पाकिस्तान पर सब तरह का दबाव डाल कर अपने रोजगार का बाजार पहिले जैसा देखना चाहता है. मजदूर का 'एक राज' दूसरी तरह का है. वह सरमायादारी को खत्म करने के लिये एक राज' चाहता है. पाकिस्तान में सामन्तवादियों का बोल बाला है. उन के दिमाग में सबसे ज्यादा सामन्तवादी निजाम को महफूज रखने का सवाल है. मगर वह यह भी जानते हैं कि बिना रोजगार के

بات نہیں ہے۔ اُن میں وشواس اور محبت پیدا کرنا ضرور نئی بات اور دُور اندیشی کی بات ہے۔ مسلمانوں کو 'ففتھ کالمسٹ' کہنا ایک فیشن ہوگیا ہے۔ یہ فیشن ناسمجھوں کا ہے۔ اتفاق کا موقع کھویا جا رہا ہے۔

لیگ کے نیتاؤں کے ٹون بدلنے کا باعث محض چال اور خوف نہیں ہے۔ اُنھیں یہ بھی احساس ہو رہا ہے کہ اُن کی سازشیں ناکامیاب رہیں۔ ہتھیاروں کا پکڑا جانا اُن کی پست ہمتی کا ایک سبب ہے۔ ساتھ ہی جو لوگ سچائی کے ساتھ پاکستان کی ضرورت محسوس کرتے تھے اُن کا خیال ہے کہ اب لڑائی کی کوئی وجہ نہیں۔ اس لئے سبھی کو ایک ترازو میں رکھنا مناسب نہیں۔

ایکتا کے لئے ہمارا نعرہ کیا ہو؟ بھارت ایک راشٹر ہو سبھی چاہتے ہیں۔ پاکستان کی سرکار کا یہ رخ صاف ہے کہ وہ 'ایک راج' کے نعرے کو کسی طرح برداشت کرنے کے لئے تیار نہیں ہے۔ 'ایک راج' کے لئے انڈیا کے سرمایہ دار اور مزدور دونوں اپنے اپنے ڈھنگ سے دلچسپی رکھتے ہیں۔ سرمایہ دار کو اپنی تجارت کا خیال ہے۔ اس لئے وہ پاکستان پر سب طرح کا دباؤ ڈال کر اپنے روزگار کا بازار پہلے جیسا دیکھنا چاہتا ہے۔ مزدور کا 'ایک راج' دوسری طرح کا ہے۔ وہ سرمایہ داری کو ختم کرنے کے لئے 'ایک راج' چاہتا ہے۔ پاکستان میں سامنت وادیوں کا بول بالا ہے۔ اُن کے دماغ میں سب سے زیادہ سامنت وادی نظام کو محفوظ رکھنے کا سوال ہے۔ مگر وہ یہ بھی جانتے ہیں کہ بنا روزگار کے

किसी राज का निज़ाम ठीक नहीं रह सकता. इसलिये वह मुसलिम बनियों को भी तरक़्क़ी देने के लिये मजबूर हैं. ज़मींदार सरमायादार हो रहा है. मुसलिम बनियों की भी तादाद बढ़ रही है. पाकिस्तान का बनिया कितना भी कमज़ोर हो पर उसके बिना पाकिस्तान और भी नहीं चल सकेगा. पाकिस्तान के दोनों तबक़े, बनिये और ज़मींदार चूसने वालों का एक नया गिरोह तय्यार करने में लगे हैं. वह मज़दूरों किसानों की तहरीक को और भी बरदाश्त नहीं कर सकते. वह 'एक राज' के नारे को उससे भी ज़्यादा ख़तरनाक समझते हैं जितना सरमायादारों के एक राज के नारे को. मज़हब के परदे ने पाकिस्तान के मज़दूरों किसानों से चूसने वालों की चाल को दरपर्दा रक्खा है. हम इस इस पर्दे को कैसे फाड़ें. वह दिन जल्द आवे जब पाकिस्तान की जनता शेख़ अब्दुल्ला की बात पर ग़ौर करना शुरू कर दे कि पाकिस्तान का हमला जनता का ध्यान उसके असल सवालों से हटाना है.

हम हिन्दू हैं या मुसलिम हैं, भारत को एकसाँ प्यारे हैं
ईसाई, बौद्ध और सिक्ख, पारसी देश की आँख के तारे हैं
हम भारत माँ की गोद में पलते, बच्चे इसके सारे हैं
हम सब के मिल कर रहने से, भारत के वारे न्यारे हैं.

—काशीराम चावला.

کسی راج کا نظام ٹھیک نہیں رہ سکتا۔ اس لئے وہ مسلم بنیوں کو بھی ترقی دینے کے لئے مجبور ہیں۔ زمیندار سرمایہ دار ہو رہا ہے۔ مسلم بنیوں کی بھی تعداد بڑھ رہی ہے۔ پاکستان کا بنیا کتنا بھی کمزور ہو پر اس کے بنا پاکستان اور بھی نہیں چل سکے گا۔ پاکستان کے دونوں طبقے، بنیے اور زمیندار چوسنے والوں کا ایک نیا گروہ تیار کرنے میں لگے ہیں۔ وہ مزدوروں کسانوں کی تحریک کو اور بھی برداشت نہیں کر سکتے۔ وہ 'ایک راج' کے نعرے کو اس سے بھی زیادہ خطرناک سمجھتے ہیں جتنا سرمایہ داروں کے ایک راج کے نعرے کو۔ مذہب کے پردے نے پاکستان کے مزدوروں کسانوں سے چوسنے والوں کی چال کو درپردہ رکھا ہے۔ ہم اس پردے کو کیسے پھاڑیں۔ وہ دن جلد آوے جب پاکستان کی جنتا شیخ عبداللہ کی بات پر غور کرنا شروع کر دے کہ پاکستان کا حملہ جنتا کا دھیان اس کے اصل سوالوں سے ہٹانا ہے۔

ہم ہندو ہیں یا مسلم ہیں، بھارت کو یکساں پیارے ہیں
عیسائی، بودھ اور سکھ، پارسی دیش کی آنکھ کے تارے ہیں
ہم بھارت ماں کی گود میں پلتے، بچے اس کے سارے ہیں
ہم سب کے مل کر رہنے سے، بھارت کے وارے نیارے ہیں

— کاشی رام چاولا۔

दो घटनाएं

(श्री यशपाल जैन)

[क़ायदे-आज़म मुहम्मद अली जिन्ना की 'सीधी कर्रवाई-दिन' मनाने को अपील के बाद पिछले दिनों हिन्दुस्तान के बड़े बड़े शहरों में बदअमनी फैल गई थी. तभी की दो सच्ची घटनाएं यहाँ दी जाती हैं. मुनासिब समझ कर नामों में थोड़ी तब्दीली कर दी गई है, लेकिन वाक़यों में किसी क़िस्म का हेर फेर नहीं किया गया है—लेखक]

(१)

दूसरे शहरों की तरह उन दिनों दिल्ली में भी बड़ा तूफ़ान आगया था. [illegible] वहाँ का रहने वाला नहीं है. काम से आया था और जैसे तैसे [illegible] दिन काट कर घर लौट रहा था. तीसरे दर्जे का डिब्बा. मुसाफ़ि[illegible] से खचाखच. बड़ी मुश्किल से उसने सात आठ घंटे गुज़ारे; लेकिन गाड़ी जब झांसी पहुँची तो हद हो गई. उतरे तो वहाँ बहुत थोड़े, चढ़े इतने कि अरुन को बैठा रह सकना कठिन हो गया. इस [illegible] भी एक मुसलमान भाई इतने तेज़ निकले कि खिड़की से अन्दर [illegible] बिस्तर और आदमियों को लाँघते एन अरुन के सिर पर आ सवार हुए. उनकी देह पसीने से लथपथ हो रही थी और उनके चेहरे को देख कर साफ़ ज़ाहिर था कि उन्हें काफ़ी परेशानी के बाद रेल में जगह मिली है. अन्दर आकर उन्होंने

دو گھٹنائیں

(شری یش پال جین)

[قائد اعظم محمد علی جناح کی ڈسیدھی کارروائی دن' منانے کی اپیل کے بعد پچھلے دنوں ہندستان کے بڑے بڑے شہروں میں بدامنی پھیل گئی تھی. تبھی کی دو سچی گھٹنائیں یہاں دی جاتی ہیں. مناسب سمجھ کر ناموں میں تھوڑی تبدیلی کر دی گئی ہے، لیکن واقعوں میں کسی قسم کا ہیر پھیر نہیں کیا گیا ہے— لیکھک]

(۱)

دوسرے شہروں کی طرح اُن دنوں دلی میں بھی بڑا طوفان آگیا تھا. ارن وہاں کا رہنے والا نہیں ہے. کام سے آیا تھا اور جیسے تیسے دو تین دن کاٹ کر گھر لوٹ رہا تھا. تیسرے درجے کا ڈبہ. مسافروں سے کھچاکھچ. بڑی مشکل سے اُس نے سات آٹھ گھنٹے گزارے؛ لیکن گاڑی جب جھانسی پہنچی تو حد ہوگئی. اترے تو وہاں بہت تھوڑے. چڑھے اتنے کہ ارن کو بیٹھا رہ سکنا کٹھن ہوگیا. اس پر بھی ایک مسلمان بھائی اتنے تیز نکلے کہ کھڑکی سے اندر کود بستر اور آدمیوں کو لانگھتے عین ارن کے سر پر آ سوار ہوئے. اُن کی دیہہ پسینے سے لتھ پتھ ہو رہی تھی اور اُن کے چہرے کو دیکھ کر صاف ظاہر تھا کہ انھیں کافی پریشانی کے بعد ریل میں جگہ ملی ہے. اندر آکر انھوں نے

जेब से रुमाल निकाल कर पसोना पोछा और कुर्ते से मुंह की हवा करते हुए बोले, "बड़ी गर्मी है, साब"

अरुन को उनकी हरकत अच्छी नहीं लग रही थी. फिर भी उसने जवाब दिया—

"घबराइये नहीं, गाड़ी के चलते ही सब ठीक हो जायेगा. कहाँ जाइयेगा ?"

"खण्डवा."

"ओफ्फो, बड़ा लम्बा सफ़र है"

"जी हाँ लम्बा तो है ही. इन दिनों की मुसाफ़िरी वाक़ई बड़ी जहमत की चीज़ है. आपकी टोकरी में लोटा है, ज़रा दीजियेगा ? गला सूख गया है."

अरुन ने लोटा निकाल कर दे दिया. खिड़की से हाथ बढ़ा कर उन साहब ने पानी वाले को आवाज़ दी और पानी लेकर लोटे से मुंह लगा दिया. उनका लोटे से मुँह लगाना था कि पास बैठे एक हिन्दू भाई को हँसी आगई जिसे उन्होंने देख लिया. वह कुछ झेंपे और अरुन की तरफ़ मुख़ातिब हो कर बोले, "माफ़ कीजियेगा. मुझसे थोड़ी ग़लती हुई."

अरुन ने कहा, "जी नहीं, आप फ़िक्र न करें. मेरे लिये सब इंसान एक से हैं. सब भाई हैं. और मुझे किसी से भी किसी क़िस्म का परहेज़ नहीं है."

"जी हाँ, यही चाहिये." वह बोले, "इंसानियत का यही तक़ाज़ा है. और मैं सच कहता हूँ असली मज़हब वही है, जो आपस के फ़र्क़ को दूर करके एक दूसरे को नज़दीक लाता है. जो धरम

جیب سے رومال نکال کر پسینہ پونچھا اور کُرتے سے مُنہ کی ہوا کرتے ہوئے بولے، "بڑی گرمی ہے صاب"

ارُن کو اُن کی حرکت اچھی نہیں لگ رہی تھی۔ پھر بھی اُس نے جواب دیا—

"گھبرائیے نہیں، گاڑی کے چلتے ہی سب ٹھیک ہو جائے گا۔ کہاں جائیے گا؟"

"کھنڈوا۔"

"اُف اوہ، بڑا لمبا سفر ہے۔"

"جی ہاں لمبا تو ہے ہی۔ ان دنوں کی مسافری واقعی بڑی زحمت کی چیز ہے۔ آپ کی ٹوکری میں لوٹا ہے، ذرا دیجئے گا؟ گلا سوکھ گیا ہے۔"

ارُن نے لوٹا نکال کر دے دیا۔ کھڑکی سے ہاتھ بڑھا کر ان صاحب نے پانی والے کو آواز دی اور پانی لے کر لوٹے سے مُنہ لگا دیا۔ اُن کا لوٹے سے مُنہ لگانا تھا کہ پاس بیٹھے ایک ہندو بھائی کو ہنسی آگئی جسے اُنھوں نے دیکھ لیا۔ وہ کچھ جھینپے اور ارُن کی طرف مخاطب ہو کر بولے "معاف کیجئے گا۔ مجھ سے تھوڑی غلطی ہوئی۔"

ارُن نے کہا، "جی نہیں، آپ فکر نہ کریں۔ میرے لئے سب انسان ایک سے ہیں۔ سب بھائی ہیں۔ اور مجھے کسی سے بھی کسی قسم کا پرہیز نہیں ہے۔"

"جی ہاں، یہی چاہیے۔" وہ بولے، "انسانیت کا یہی تقاضا ہے۔ اور میں سچ کہتا ہوں اصلی مذہب وہی ہے جو آپس کے فرق کو دور کرکے ایک دوسرے کو نزدیک لاتا ہے۔ جو دھرم

आपस में लड़ाता है वह खुदावन्द ताला का धरम नहीं है, खुद-ग़रज़ आदमी का है और उससे दूर से ही हाथ जोड़ना अच्छा है."

अरुन कुछ कहता कि इतने में गाड़ी चल पड़ी. सब मुसाफ़िरों ने चैन की सांस ली. अरुन और उसके पास के मुसाफिर ने थोड़ा सरक कर जगह कर दी और वह मुसलमान सज्जन बैठ गये. उनके बैठते ही अरुन ने पूछा, "आपका इस्म शरीफ़ ?"

"ख़ादिम को हामिद कहते हैं."

अरुन बोला, "देखिये, हामिद साहब, बात असल में यह है कि आज कल मुल्क में बड़ी ख़राब हवा चल पड़ी है. भाई भाई तक एक दूसरे को शुबह की नज़र से देखते हैं और अपना फ़ायदा होता हो तो बेरहमी से दूसरे का गला काट डालते हैं. सबसे बुरी बात तो यह है कि मजहब की आड़ लेकर यह सब किया जा रहा है. मैं पूछता हूँ, मुसलमानों की किस किताब में लिखा है कि हिन्दुओं को मारो और हिन्दुओं की कौन सी किताब मुसलमानों को मारने की इजाज़त देती है ? हिन्दुस्तान एक है और उसकी धरती पर जो लोग बसते हैं वे भाई हैं. तारीख़ उठा कर देखलो, कितने राजा और बादशाह बदले; पर हिन्दुस्तान और उसके बाशिंदों को कोई दो कर सका ? वे एक थे, एक हैं और आगे भी एक रहेंगे क्यों खां साब ?"

"आपने बिल्कुल सही बात कही. अपने प्यारे मुल्क का ऐसा हाल देख कर रोना आता है. एक जमाना था, जब हिन्दुस्तान का नाम दूर दूर तक रोशन था. दूसरे मुल्क उससे रश्क करते थे. अबतो वह हिन्दुस्तान के मौजूदा रंग को देख कर हंसते होंगे. देखिये तो कैसी हवा बदली है. कल तक जो भाई भाई थे वह आज एक

آپس میں لڑاتا ہے وہ خداوند تعالیٰ کا دھرم نہیں ہے، خود غرض آدمی کا ہے اور اُس سے دُور سے ہی ہاتھ جوڑنا اچھا ہے."

ارُن کچھ کہتا کہ اِتنے میں گاڑی چل پڑی. سب مسافروں نے چین کی سانس لی. ارُن اور اُس کے پاس کے مسافر نے تھوڑا سرک کر جگہ کر دی اور وہ مسلمان سجن بیٹھ گئے. اُن کے بیٹھتے ہی ارُن نے پوچھا، "آپ کا اسم شریف؟"

"خادم کو حامد کہتے ہیں."

ارُن بولا، "دیکھئے، حامد صاحب، بات اصل میں یہ ہے کہ آج کل ملک میں بڑی خراب ہوا چل پڑی ہے. بھائی بھائی تک ایک دوسرے کو شبہ کی نظر سے دیکھتے ہیں اور اپنا فائدہ ہوتا ہو تو بے رحمی سے دوسرے کا گلا کاٹ ڈالتے ہیں. سب سے بُری بات تو یہ ہے کہ مذہب کی آڑ لے کر یہ سب کیا جا رہا ہے. میں پوچھتا ہوں، مسلمانوں کی کس کتاب میں لکھا ہے کہ ہندوؤں کو مارو اور ہندوؤں کی کون سی کتاب مسلمانوں کو مارنے کی اجازت دیتی ہے؟ ہندستان ایک ہے اور اُس کی دھرتی پر جو لوگ بستے ہیں وے بھائی ہیں. تاریخ اُٹھا کر دیکھ لو، کتنے راجا اور بادشاہ بدلے؛ پر ہندستان اور اُس کے باشندوں کو کوئی دو کر سکا؟ وے ایک تھے، ایک ہیں اور آگے بھی ایک رہیں گے کیوں خاں صاب؟"

"آپ نے بالکل صحیح بات کہی. اپنے پیارے ملک کا ایسا حال دیکھ کر رونا آتا ہے. ایک زمانہ تھا، جب ہندستان کا نام دُور دُور تک روشن تھا. دوسرے ملک اُس سے رشک کرتے تھے. اب تو وہ ہندستان کے موجودہ رنگ کو دیکھ کر ہنستے ہوں گے. دیکھئے تو کیسی ہوا بدلی ہے. کل تک جو بھائی بھائی تھے وہ آج ایک

दूसरे के जानी दुश्मन हो गये हैं. कलकत्ता, बम्बई, दिल्ली, ग़र्ज़ कि सभी छोटे बड़े शहर मार काट में मुबतिला हैं. ख़ुदा जाने कब इससे निजात मिलेगी ?"

कहते कहते हामिद साहब का जी भर आया और आँखें डबडबा आईं.

अरुन ने कहा, "हामिद साहब, इस दुनिया में सब आदमी बुरे नहीं हैं. वह तो चंद लोग ऐसे हैं, जो यह सब करा रहे हैं. एक मछली सारे तालाब के पानी को गंदा कर देती है. बहुत से लोग ऐसे भी हैं, जिन्होंने अपनी जान पर खेल कर दूसरों की हिफ़ाज़त की है."

हामिद साहब बोले, "आप माफ़ फ़रमावें तो हाल की एक बात सुनाऊँ. अपनी बात सुनाना है तो ज़रा गुस्ताख़ी; लेकिन आप उसका कोई ख़याल न करेंगे."

अरुन ने कहा, "कोई बात नहीं ख़ां सांब. ज़रूर सुनाइये."

वह बोले, "अभी पांच छै रोज़ पहले की बात है. मैं खाना खाकर बैठा ही था कि दो आदमी मेरे घर में घुस आये. देखने में वह मारवाड़ी से लगते थे. बुरी तरह से डरे थे. दोनों का चेहरा फ़क़ पड़ रहा था. आकर बोले, 'हम आपकी पनाह हैं. हमें बचाइये.' उनकी हालत देख कर रहम आता था. मैंनें उन्हें दिलासा दिया और कहा, कि आप दोनों बे फ़िकर होकर यहाँ रहें. जब तक मैं ज़िन्दा हूँ, आपका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता. हमारा मज़हब सिखाता है कि अपने घर दुश्मन भी आजाय तो उसकी मदद करना और उसे इज़्ज़त बख़्शना. आप तो फिर भी अपने भाई हैं."

دوسرے کے جانی دشمن ہو گئے ہیں. کلکتہ، بمبئی، دلی غرضیکہ سبھی چھوٹے بڑے شہر مار کاٹ میں مبتلا ہیں. خدا جانے کب اس سے نجات ملے گی؟"

کہتے کہتے حامد صاحب کا جی بھر آیا اور آنکھیں ڈبڈبا آئیں.

ارُن نے کہا، "حامد صاحب، اس دنیا میں سب آدمی بُرے نہیں ہیں. وہ تو چند لوگ ایسے ہیں، جو یہ سب کرا رہے ہیں. ایک مچھلی سارے تالاب کے پانی کو گندا کر دیتی ہے. بہت سے لوگ ایسے بھی ہیں، جنھوں نے اپنی جان پر کھیل کر دوسروں کی حفاظت کی ہے."

حامد صاحب بولے، "آپ معاف فرماویں تو حال کی ایک بات سناؤں. اپنی بات سنانا ہے تو ذرا گستاخی؛ لیکن آپ اس کا کوئی خیال نہ کریں گے."

ارُن نے کہا، "کوئی بات نہیں خاں صاحب. ضرور سنائیے."

وہ بولے، "ابھی پانچ چھے روز پہلے کی بات ہے. میں کھانا کھاکر بیٹھا ہی تھا کہ دو آدمی میرے گھر میں گھس آئے. دیکھنے میں وہ مارواڑی سے لگتے تھے. بُری طرح سے ڈرے تھے. دونوں کا چہرہ فق پڑ رہا تھا. آکر بولے، 'ہم آپ کی پناہ میں ہیں. ہمیں بچائیے.' ان کی حالت دیکھ کر رحم آتا تھا. میں نے انھیں دلاسا دیا اور کہا، کہ آپ دونوں بے فکر ہو کر یہاں رہیں. جب تک میں زندہ ہوں آپ کا کوئی کچھ نہیں بگاڑ سکتا. ہمارا مذہب سکھاتا ہے کہ اپنے گھر دشمن بھی آجائے تو اس کی مدد کرنا اور اسے عزت بخشنا. آپ تو پھر بھی اپنے بھائی ہیں."

"फिर क्या हुआ ?" बीच में ही एक मुसाफ़िर ने टोक कर पूछा.

"अजी जनाब, क्या कहूँ ! मेरे इतना कहते ही वे दोनों बच्चों की तरह फूट फूट कर रोने लगे. बहुत समझाने पर चुप हुए. उसके बाद मैंने उन्हें ज़नाने खाने की भीतरी कोठरी में छिपा दिया. छिपा कर बाहर आया तो देखता क्या हूँ, आठ दस मुसलमान मेरे घर की तरफ़ चले आ रहे हैं. मैं समझ गया कि कुछ दाल में काला है. मुझे देखते ही बोले. "उन्हें बाहर निकालो."

"किन्हें ?"

"उन्हें जो अभी तुम्हारे घर में आये हैं."

"किसकी बात कर रहे हो ? यहाँ तो कोई भी नहीं आया."

उनमें से एक ने थोड़ा आगे बढ़ कर कहा, "मियाँ, झूट क्यों बोलते हो. वह दोनों इसी गली में आये हैं और तुम्हारे घर के अलावा और कहीं जा नहीं सकते."

दूसरा बोला, "मैं दावे के साथ कहता हूँ, वह इसी घर में हैं."

बड़ी मुश्किल का वक़्त था. मैंने हिम्मत के साथ कहा, "आप लोग मेरी बात का यक़ीन कीजिये. अगर झूटी साबित हो तो मुझे गोली से उड़ा दीजिये."

सामने की सीट पर बैठीं महिला सारी बात चीत बड़े ग़ौर से सुन रही थीं. बोलीं. "तो वह आपकी बात मान गये ?"

"अजी साहब. वह तो ख़ुदा की निगाह सीधी थी कि वह लोग वापस लौट गये, नहीं तो अल्लाह जानता है. क्या होता !"

"फिर आपने क्या किया ?"—उन्हीं महिला ने पूछा.

"پھر کیا ہوا؟" بیچ میں ہی ایک مسافر نے ٹوک کر پوچھا۔

"اجی جناب کیا کہوں! میرے اتنا کہتے ہی وے دونوں بچوں کی طرح پھوٹ پھوٹ کر رونے لگے۔ بہت سمجھانے پر چپ ہوئے۔ اس کے بعد میں نے انھیں زنان خانے کی بھیتری کوٹھری میں چھپا دیا۔ چھپا کر باہر آیا تو دیکھتا کیا ہوں، آٹھ دس مسلمان میرے گھر کی طرف چلے آ رہے ہیں۔ میں سمجھ گیا کہ کچھ دال میں کالا ہے۔ مجھے دیکھتے ہی بولے! "انھیں باہر نکالو۔"

"کنھیں؟"

"انھیں جو ابھی تمھارے گھر میں آئے ہیں۔"

"کس کی بات کر رہے ہو؟ یہاں کوئی بھی نہیں آیا۔"

ان میں سے ایک نے تھوڑا آگے بڑھ کر کہا، "میاں، جھوٹ کیوں بولتے ہو۔ وہ دونوں اسی گلی میں آئے ہیں اور تمھارے گھر کے علاوہ اور کہیں جا نہیں سکتے۔"

دوسرا بولا، "میں دعوے کے ساتھ کہتا ہوں، وہ اسی گھر میں ہیں۔"

بڑی مشکل کا وقت تھا۔ میں نے ہمت کے ساتھ کہا، "آپ لوگ میری بات کا یقین کیجئے۔ اگر جھوٹی ثابت ہو تو مجھے گولی سے اڑا دیجئے۔"

سامنے کی سیٹ پر بیٹھیں مہیلا ساری بات چیت بڑے غور سے سن رہی تھیں۔ بولیں، "تو وہ آپ کی بات مان گئے؟"

"اجی صاحب، وہ تو خدا کی نگاہ سیدھی تھی کہ وہ لوگ واپس لوٹ گئے، نہیں تو اللہ جانتا ہے کیا ہوتا!"

"پھر آپ نے کیا کیا؟" انھیں مہیلا نے پوچھا۔

"उसके बाद तो सबसे पहले मैंने अंदर जाकर मकान के पिछवाड़े वाले खंडहर के एक हिस्से में, जहाँ किसी को ज़रा भी शक नहीं हो सकता था, उन्हें रख दिया. दो रोज़ वह वहीं रहे. तीसरे दिन रात को तांगे पर पर्दा बाँध कर मैं और बड़ी बी उनको बुर्क़ा उढ़ा कर बाहर ले गये और ख़तरे से बाहर छोड़ आये. उस वक़्त मन को जो ख़ुशी हासिल हुई उसे बयान नहीं कर सकता."

डिब्बे के उस हिस्से में सन्नाटा-सा छा गया और वहाँ बैठे सब मुसाफ़िरों के हृदय गद् गद् हो गये.

अरुन ने कहा, "हामिद साहब. आपने तो कमाल का काम कर दिखाया."

हामिद साहब ने उसी सहज बोली में कहा, "उसमें कमाल क्या था साब. मैंने जो कुछ किया वह मेरा फ़र्ज़ था."

ख़ुशी की एक लहर डिब्बे में यहाँ से वहाँ तक फैल गई.

---

(२)

बेचारी दया को क्या पता था कि सदर और पहाड़ी धीरज पर बड़ी गड़ बड़ हो गई है. उसे मुन्नी को डाक्टर को दिखाना था. खाने पीने से निपट कर उसने मुन्नी को गोद में लिया और जामा मस्जिद से ट्राम में बैठ गई. ट्राम चल पड़ी तो पहले तो उसने कुछ इधर उधर की बातें सोचीं, फिर उसका ख़याल मुन्नी की बीमारी की तरफ़ चला गया. बेटा का मुंह कैसा पीला पड़ गया है और कैसी दुबली हो गई है. ऐसा लगता है दिल्ली की आबोहवा इसे मुआफ़िक़ नहीं है……और न जाने क्या क्या सोचने लगी. ट्राम तेज़ी से चला रही थी. चाँदनी चौक आया. दया ने सरसरी तौर पर देखा कि वहाँ अब उतनी चहल पहल नहीं है.

"اس کے بعد تو سب سے پہلے میں نے اندر جا کر مکان کے پچھواڑے والے کھنڈہر کے ایک حصے میں، جہاں کسی کو ذرا بھی شک نہیں ہو سکتا تھا، انھیں رکھ دیا۔ دو روز وہ وہیں رہے۔ تیسرے دن رات کو تانگے پر پردہ باندھ کر میں اور بڑی بی ان کو برقعہ اڑھا کر باہر لے گئے اور خطرے سے باہر چھوڑ آئے۔ اس وقت من کو جو خوشی حاصل ہوئی اسے بیان نہیں کر سکتا۔"

ڈبے کے اس حصے میں سناٹا سا چھا گیا اور وہاں بیٹھے سب مسافروں کے ہردے گد گد ہو گئے۔

ارن نے کہا، "حامد صاحب، آپ نے تو کمال کا کام کر دکھلایا!"

حامد صاحب نے اسی سہج بولی میں کہا، "اس میں کمال کیا تھا صاب۔ میں نے جو کچھ کیا وہ میرا فرض تھا۔"

خوشی کی ایک لہر ڈبے میں یہاں سے وہاں تک پھیل گئی۔

(۲)

بے چاری دیا کو کیا پتہ تھا کہ صدر اور پہاڑی دھیرج پر بڑی گڑبڑ ہو گئی ہے۔ اسے منی کو ڈاکٹر کو دکھانا تھا۔ کھانے پینے سے نپٹ کر اس نے منی کو گود میں لیا اور جامع مسجد سے ٹرام میں بیٹھ گئی۔ ٹرام چل پڑی تو پہلے تو اس نے کچھ ادھر ادھر کی باتیں سوچیں، پھر اس کا خیال منی کی بیماری کی طرف چلا گیا۔ بیٹی کا منہ کیسا پیلا پڑ گیا ہے اور کیسی دبلی ہو گئی ہے۔ ایسا لگتا ہے دلی کی آب و ہوا اسے موافق نہیں ہے..... اور نہ جانے کیا کیا سوچنے لگی۔ ٹرام تیزی سے چل رہی تھی۔ چاندنی چوک آیا۔ دیا نے سرسری طور پر دیکھا کہ وہاں اب اتنی چہل پہل نہیں ہے۔

दुकानें कुछ खुली हैं, कुछ बंद हैं और वह फिर अपनी उधेड़ बुन में लग गई.

कोटपुरी निकली, खाड़ी बावड़ी और कुतुब रोड; पर दया ज्यादातर अपने में ही घिरी रही. ट्राम फिर सदर की ओर बढ़ी और कुछ चल कर धीमी पड़ने लगी. शायद सामने से दूसरी गाड़ी आती है, दया ने सोचा; लेकिन तभी उसे कुछ शोर सुनाई दिया. उसे सुनकर दया के कान खड़े हो गये. दस पंद्रह दंगाई सामने से चले आरहे थे और ट्राम को रोकने के लिये इशारा कर रहे थे. वह देखो, ट्राम रुक भी गई. दया को काटो तो खून नहीं. उसने अपने इधर उधर देखा. पास में एक जईफ मुसलमान बैठे थे. कुछ लोग ऐसे भी थे जो ट्राम के रुकते ही नौ दो ग्यारह होने की फिराक में थे.

ट्राम के रुकते ही कुछ दंगाई भीतर घुस आये. दया के मुंह से एक दबी चीख निकला. चीख निकली कि एक ने आगे बढ़कर उसका हाथ पकड़ लिया और बाहर को खींचने लगा. दया ने डपट कर कहा, "यह क्या करते हो? आखिर तुम्हारे भी तो मां बहन हैं. छोड़ दो मुझे."

जवाब में वह कुछ बोला नहीं. क्रूर हंसी हंस कर रह गया और दया को खींचने की कोशिश उसकी जारी रही.

उस वक्त सब को अपनी अपनी जान की पड़ी थी. ट्राम में ज्यादातर मुसाफिर दंगाइयों के धरम के थे, जिन्हें किसी तरह का कोई खतरा न था. बाक़ी जो बचे वह ट्राम के रुकने से पहले ही रफू चक्कर हो गये थे. पास बैठे बुजुर्ग से बर्दाश्त न हुआ तो उन्होंने कहा, "इस बेचारी को क्यों सताते हो? और आजमाना हो तो किसी ताकतवर को पकड़ो."

دکانیں کچھ کھلی ہیں، کچھ بند ہیں اور وہ پھر اپنی اُدھیڑ بُن میں لگ گئی۔

کوٹپوری نکلی، کھاڑی باوڑی اور قطب روڈ؛ پر دیا زیادہ تر اپنے میں ہی گھری رہی۔ ٹرام پھر صدر کی اُور بڑھی اور کچھ چل کر دھیمی پڑنے لگی۔ شاید سامنے سے دوسری گاڑی آتی ہو، دیا نے سوچا؛ لیکن تبھی اسے کچھ شور سُنائی دیا۔ اسے سُن کر دیا کے کان کھڑے ہو گئے۔ دس پندرہ دنگائی سامنے سے چلے آ رہے تھے اور ٹرام کو روکنے کے لئے اشارہ کر رہے تھے۔ وہ دیکھو، ٹرام رُک بھی گئی۔ دیا کو کاٹو تو خون نہیں۔ اس نے اپنے اِدھر اُدھر دیکھا۔ پاس میں ایک ضعیف مسلمان بیٹھے تھے۔ کچھ لوگ ایسے بھی تھے جو ٹرام کے رُکتے ہی نو دو گیارہ ہونے کی فراق میں تھے۔

ٹرام کے رُکتے ہی کچھ دنگائی بھیتر گھس آئے۔ دیا کے مُنہ سے ایک دبی چیخ نکلی۔ چیخ نکلی کہ ایک نے آگے بڑھ کر اس کا ہاتھ پکڑ لیا اور باہر کو کھینچنے لگا۔ دیا نے ڈپٹ کر کہا، "یہ کیا کرتے ہو؟ آخر تمہارے بھی تو ماں بہن ہیں۔ چھوڑ دو مجھے۔"

جواب میں وہ کچھ بولا نہیں۔ کرور ہنسی ہنس کر رہ گیا اور دیا کو کھینچنے کی کوشش اس کی جاری رہی۔

اس وقت سب کو اپنی اپنی جان کی پڑی تھی۔ ٹرام میں زیادہ تر مسافر دنگائیوں کے دھرم کے تھے۔ جنھیں کسی طرح کا کوئی خطرہ نہ تھا۔ باقی جو بچے وہ ٹرام کے رُکنے سے پہلے ہی رفو چکر ہو گئے تھے۔ پاس بیٹھے بزرگ سے برداشت نہ ہوا تو انھوں نے کہا، "اس بیچاری کو کیوں ستاتے ہو؟ اور آزمانا ہو تو کسی طاقتور کو پکڑو۔"

लेकिन उनकी बात कौन सुनता !

ट्राम के रुकते ही शोर मच गया था. सुनते ही पास के स्कूल के कर्मचारी बाहर निकल आये. उनमें से एक दया को पहचानता था. देखते ही बोला, "अरे, यह तो बहू जी हैं !" और उसने आव देखा न ताव वहीं से आवाज़ लगाई, "बहू जी, आप घबराइये नहीं. मैं आता हूँ." अपने संगी साथियों को इशारा करके वह स्कूल की सीढ़ियों से कूद कर ट्राम के पास पहुँच गया.

दया ने देखा तो चीखी, "राम नाथ, मुझे बचाना."

दंगाई अब भी अपनी कोशिश में थे. राम नाथ को झपट कर वहाँ पहुंचते देख कुछ और लोग भी उधर दौड़े. बिजली की रफ़्तार से राम नाथ उछल कर ट्राम के भीतर घुस गया. दया को बचावे कि उससे पहले पास बैठे बुज़ुर्ग बोल उठे, "पहले इस फूल को बचाओ." और मुन्नी को, जिसे उन्होंने दंगाई के दस्त से भिड़ते ही अपनी गोद में ले लिया था, राम नाथ की तरफ़ बढ़ा दिया.

मुन्नी को पहचानते राम नाथ को देर न लगी. उसने अहसान-भरी निगाह से एक मरतबा उन जईफ़ को देखा और मुन्नी को हाथों में लेकर अपने एक साथी की तरफ़ बढ़ा दिया.

इसके बाद दया को बचाने के लिये उसे और उसके साथियों को बहुत कोशिश नहीं करनी पड़ी. उन लोगों को देख कर और बहुत से लोग आ गये थे और दंगाइयों को अब खुद निकल भागने की फ़िक्र पड़ी थी. उनमें से कुछ तो भाग गये, कुछ पकड़े गये.

दया के सिर, दाईं बाँह और कलाई पर बड़ी चोट आई; [illegible] की दया से उसकी जान बच गई. उसे लेकर जब

لیکن اُن کی بات کون سُنتا !

ٹرام کے رُکتے ہی شور مچ گیا تھا. سُنتے ہی پاس کے اسکول کے کرمچاری باہر نکل آئے. اُن میں سے ایک دیا کو پہچانتا تھا. دیکھتے ہی بولا، "ارے، یہ تو بہو جی ہیں!" اور اُس نے آؤ دیکھا نہ تاؤ وہیں سے آواز لگائی، "بہو جی، آپ گھبرائیے نہیں. میں آتا ہوں." اپنے سنگی ساتھیوں کو اشارہ کرکے وہ اسکول کی سیڑھیوں سے کود کر ٹرام کے پاس پہنچ گیا.

دیا نے دیکھا تو چیخی، "رام ناتھ، مجھے بچانا."

دنگائی اب بھی اپنی کوشش میں تھے. رام ناتھ کو جھپٹ کر وہاں پہنچتے دیکھ کچھ اور لوگ بھی اُدھر دوڑے. بجلی کی رفتار سے رام ناتھ اچھل کر ٹرام کے بھیتر گھس گیا. دیا کو بچاوے کہ اُس سے پہلے پاس بیٹھے بزرگ بول اُٹھے، "پہلے اس پھول کو بچاؤ." اور منی کو، جسے انھوں نے دنگائی کے دست سے بھڑتے ہی اپنی گود میں لے لیا تھا، رام ناتھ کی طرف بڑھا دیا.

منی کو پہچانتے رام ناتھ کو دیر نہ لگی. اُس نے احسان بھری نگاہ سے ایک مرتبہ ان ضعیف کو دیکھا اور منی کو ہاتھوں میں لے کر اپنے ایک ساتھی کی طرف بڑھا دیا.

اس کے بعد دیا کو بچانے کے لئے اُسے اور اُس کے ساتھیوں کو بہت کوشش نہیں کرنی پڑی. ان لوگوں کو دیکھ کر اور بہت سے لوگ آ گئے تھے اور دنگائیوں کو اب خود نکل بھاگنے کی فکر پڑی تھی. اُن میں سے کچھ تو بھاگ گئے، کچھ پکڑے گئے.

دیا کے سر، داہنی بانہہ اور کلائی پر بڑی چوٹ آئی ؛ بھگوان کی دیا سے اُس کی جان بچ گئی. اِسے لے کر جب

राम नाथ ट्राम से नीचे उतरा तो उसने मुन्नी की जान बचाने वाले उस फरिश्ते की तरफ एक बार फिर अहसान की नजर से देखा. वह उन्हीं की तरफ देख रहे थे. उनको आँखें गीली थीं और उनके चेहरे पर दया के बचने की खुशी के साथ साथ दुख की एक गहरी लकीर साफ दीख पड़ती थी, मानों वह कहते हों कि हाय, यह दुनिया कैसी हो गई है!

देर करने के लिये वक्त नहीं था. राम नाथ ने झटपट हाथ जोड़ और सिर झुका कर उन्हें नमस्कार किया और फिर दया को साथ लेकर स्कूल के भीतर चला गया.

पंजाब हमें क्या सिखाता है

लेखक-पंडित सुन्दरलाल

पंडित सुन्दरलाल जी ने, महात्मा गांधी की सलाह से, अक्तूबर सन् '४७ में पच्छमी और पूरबी पंजाब का दौरा किया था. इस छोटे से बयान में उन्होंने वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मारकाट की वजह से जो जो नतीजे लोगों को भुगतने पड़ रहे हैं उनका बहुत ही दर्दनाक वर्णन किया है. आखीर में, आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये, कुछ सुझाव भी पेश किये हैं. हमें विश्वास है कि पंजाब की मौजूदा हालत को ठीक तरह से समझने में इस बयान से बड़ी मदद मिलेगी.

किताब उर्दू और नागरी दोनों लिखावटों में मिल सकती है. [illegible] चार आने.

—मैनेजर 'नया हिन्द'
[illegible], बाई का बाग, इलाहाबाद

رام ناتھ ٹرام سے نیچے اترا تو اس نے منّی کی جان بچانے والے اس فرشتے کی طرف ایک بار پھر احسان کی نظر سے دیکھا۔ وہ انھیں کی طرف دیکھ رہے تھے۔ اُن کی آنکھیں گیلی تھیں اور اُن کے چہرے پر دیا کے بچنے کی خوشی کے ساتھ ساتھ دُکھ کی ایک گہری لکیر صاف دکھائی دیتی تھی، مانو وہ کہتے ہوں کہ ہائے! یہ دُنیا کیسی ہو گئی ہے!

دیر کرنے کے لئے وقت نہیں تھا۔ رام ناتھ نے جھٹ پٹ ہاتھ جوڑ اور سر جھکا کر انھیں نمسکار کیا اور پھر دیا کو ساتھ لے کر اسکول کے بھیتر چلا گیا۔

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

لیکھک ـ پنڈت سندرلال

پنڈت سندرلال جی نے، مہاتما گاندھی کی صلاح سے، اکتوبر ۴۷ء میں پچھمی اور پوربی پنجاب کا دورہ کیا تھا۔ اس چھوٹے سے بیان میں انھوں نے وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مارکاٹ کی وجہ سے جو جو نتیجے لوگوں کو بھگتنے پڑ رہے ہیں اُن کا بہت ہی دردناک ورنن کیا ہے۔ آخر میں، آج کل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے، کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے ہیں۔ ہمیں وشواس ہے کہ پنجاب کی موجودہ حالت کو ٹھیک طرح سے سمجھنے میں اس بیان سے بڑی مدد ملے گی۔

کتاب اردو اور ناگری دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے۔ قیمت چار آنے۔

[illegible]

हिंदुस्तानी कलचर और संगीत

रबाबी ख़ानदान

(पंडित गनेश प्रसाद द्विवेदी)

(८)

'तिलक कामोद' हिंदुस्तानी संगीत का एक मशहूर और बड़ा सुन्दर राग है. यह कोई पुराना शास्त्री राग नहीं है. इसकी ईजाद प्यार ख़ां साहब रबाबिये ने की. इसके ईजाद की एक अजीब कहानी है. प्यार ख़ां साहब को भोर की रात में अकेले घूमने का बड़ा शौक था. वह ज़्यादातर देहाती बस्तियों की तरफ़ या शहर बाहर जंगलों की तरफ़ सुनसान जगहों में निकल जाया करते थे. एक बार यह किसी पहाड़ की तलहटी में एक अहीरों की बस्ती से गुज़र रहे थे. सुबह होने में घंटे भर की देर थी. एक झोपड़ी से जाँत (देहाती घर की चक्की जिसे औरतें हाथ से चला कर रोज़ का आटा रोज़ पीस लेती हैं.) पीसने की आवाज़ आ रही थी. कोई औरत चक्की पीसती हुई गा रही थी. यह एक ग्रामगीत की धुन थी जो 'जांते पर का गीत'* कहलाता है.

इस गीत की धुन या तर्ज़ प्यार ख़ां साहब को इतनी

*हमारे सूबे के देहातों में ख़ास ख़ास सामाजिक मौक़ों पर सैकड़ों तरह की धुनें गाई जाती हैं जो 'ग्रामगीत' (Folksong) के नाम से मशहूर हैं. इनमें हमारी पिछले ज़माने की सभ्यता और संस्कृत का सारा इतिहास भरा पड़ा है. दुख है कि अभी तक किसी ने इनको इकट्ठा कर इनके

ہندوستانی کلچر اور سنگیت

ربابی خاندان

(پنڈت گنیش پرساد دوویدی)

(۸)

تلک کامود' ہندستانی سنگیت کا ایک مشہور اور بڑا سُندر راگ ہے۔ یہ کوئی پرانا شاستری راگ نہیں ہے۔ اس کی ایجاد پیار خاں صاحب ربابیے نے کی۔ اس کے ایجاد کی ایک عجیب کہانی ہے۔ پیار خاں صاحب کو بھور کی رات میں اکیلے گھومنے کا بڑا شوق تھا۔ وہ زیادہ تر دیہاتی بستیوں کی طرف یا شہر باہر جنگلوں کی طرف سنسان جگہوں میں نکل جایا کرتے تھے۔ ایک بار یہ کسی پہاڑ کی تلہٹی میں ایک اہیروں کی بستی سے گزر رہے تھے۔ صبح ہونے میں گھنٹے بھر کی دیر تھی۔ ایک جھونپڑی سے جانت (دیہاتی گھر کی چکی جسے عورتیں ہاتھ سے چلا کر روز کا آٹا روز پیس لیتی ہیں) پیسنے کی آواز آ رہی تھی۔ کوئی عورت چکی پیستی ہوئی گا رہی تھی۔ یہ ایک گرام گیت کی دھن تھی جو جانتے پر کا گیت* کہلاتا ہے۔ اس گیت کی دھن یا طرز پیار خاں صاحب کو اتنی

* ہمارے صوبے کے دیہاتوں میں خاص خاص سماجک موقعوں پر سیکڑوں طرح کی دھنیں گائی جاتی ہیں جو گرام گیت (Folksong) کے نام سے مشہور ہیں۔ ان میں ہماری پچھلے زمانے کی سبھیتا اور سنسکرتی کا سارا اتہاس بھرا پڑا ہے۔ دکھ ہے کہ ابھی تک کسی نے ان کو اکٹھا کر ان کے

अच्छी लगी कि वह देर तक इसे वहीं खड़े खड़े सुनते रहे. उन्होंने देखा कि इस देहाती धुन में बिहाग, कामोद और सोरठ या देस ऐसे तीन पुराने शास्त्री रागों की बड़ी सुन्दर मिलावट है. वह इस धुन को गुनगुनाते हुये घर आये. कई दिन तक इसी पर काम करते रहे और फिर इसे अपने जतर पर बजाकर दरबार में भी सुना दिया लोगों को बेहद पसंद आया. इस नये राग का नाम पूछा गया. तब इन्होंने सारा क़िस्सा बताया और इसका नाम

रेकार्ड भरा लेने की कोशिश नहीं की है. पं० राम नरेश त्रिपाठी ने अपनी 'ग्राम गीत' नाम की किताब में सैकड़ों ग्राम गीत इकट्ठे कर छपवा तो दिये हैं पर जब तक इनको देहाती गाने वालों से गवा कर इनके रेकार्ड नहीं बनवा लिये जाते तब तक इनकी गायकी या धुनों का पता पढ़ी लिखी दुनिया को न चलेगा. अब हिन्दुस्तान आज़ाद है. कोई वजह नहीं कि एक आज़ाद देश में संस्कृति के इतिहास से संबन्ध रखने वाली इन चीज़ों की तरफ़ ख़ास तौर से ध्यान न दिया जाय. और अगर जल्दी ही इस तरफ़ ध्यान न दिया गया तो यह सब गीत और धुनें लोप हो जायंगी. हमें और भी दुख है कि देहाती दुनिया भी अब अपने पुराने गीतों को भूल चली है. इसी तरह शादी ब्याह, जनेऊ, आदि संस्कारों के मौक़ों पर गाए जाने वाले गीतों का रिवाज भी उठता आ रहा है. दुनिया के आज़ाद देशों में लोक विद्या का एक अलग विभाग या मुहकमा हुआ करता है. यूनिवर्सिटियों में भी इसके क्लास होते हैं. अगर हमारी आज़ाद सरकार इस तरफ़ जल्दी ही ध्यान नहीं देगी तो यह चीज़ें हमेशा के लिये लोप हो जायंगी.

اچھی لگی کہ وہ دیر تک اِسے وہیں کھڑے کھڑے سنتے رہے۔ انھوں نے دیکھا کہ اِس دیہاتی دھن میں بہاگ، کامود اور سورٹھ یا دیس ایسے تین پرانے شاستری راگوں کی بڑی سندر ملاوٹ ہے۔ وہ اِس دھن کو گنگناتے ہوئے گھر آئے۔ کئی دن تک اِسی پر کام کرتے رہے اور پھر اِسے اپنے جنتر پر بجا کر دربار میں بھی سنا دیا۔ لوگوں کو بے حد پسند آیا۔ اِس نئے راگ کا نام پوچھا گیا۔ تب انھوں نے سارا قصہ بتایا اور اِس کا نام

ریکارڈ بھرا لینے کی کوشش نہیں کی ہے۔ پنڈت رام نریش ترپاٹھی نے اپنی "گرام گیت" نام کی کتاب میں سیکڑوں گرام گیت اکٹھے کر چھپوا تو دئے ہیں پر جب تک ان کو دیہاتی گانے والوں سے گوا کر ان کے ریکارڈ نہیں بنوا لئے جاتے تب تک ان کی گایکی یا دھنوں کا پتہ پڑھی لکھی دنیا کو نہ چلے گا۔ اب ہندستان آزاد ہے۔ کوئی وجہ نہیں کہ ایک آزاد دیش میں سنسکرتی کے اتہاس سے سمبندھ رکھنے والی ان چیزوں کی طرف خاص طور سے دھیان نہ دیا جائے۔ اور اگر جلدی ہی اس طرف دھیان نہ دیا گیا تو یہ سب گیت اور دھنیں لوپ ہو جائیں گی۔ ہمیں اور بھی دکھ ہے کہ دیہاتی دنیا بھی اب اپنے پرانے گیتوں کو بھول چلی ہے۔ اسی طرح شادی بیاہ، جنیو، آدی سنسکاروں کے موقعوں پر گائے جانے والے گیتوں کا رواج بھی اٹھتا جا رہا ہے۔ دنیا کے آزاد دیشوں میں لوک ودیا کا ایک الگ وبھاگ یا محکمہ ہوا کرتا ہے۔ یونیورسٹیوں میں بھی اس کے کلاس ہوتے ہیں۔ اگر ہماری آزاد سرکار اس طرف جلدی ہی دھیان نہ دے گی تو یہ چیزیں ہمیشہ کے لئے لوپ ہو جائیں گی۔

तिलक कामोद रक्खा जो अब संगीत की दुनिया में अमर हो गया है. फिर इसमें उन्होंने बहुत से धुरपद वग़ैरा भी बनाए, पर इस का बर्ताव धुन, ठुमरी या छोटे ख़्यालों में ही ज़्यादातर होता है.

हम ध्यान देने पर समझ सकते हैं कि हमारे यहाँ चैती, कजली, लावनी, झूमर, फाग वग़ैरा की शकल में बहुत सी ऐसी धुनें पड़ी हुई हैं जो सुनने में बेहद प्यारी लगती हैं और जिनमें हमारे समाज और जाति की समूची आत्मा और पूरा दिल उड़ेल कर रक्खा हुआ है. इस संगीत का ताल्लुक़ क़ुदरत और देस से है न कि गुनियों के दिमाग़ से. इसी से शास्त्र में इसको "देशी" कहकर छोड़ दिया गया है. "मार्ग" और "देशी" नाम से कला की दो क़िस्में मानी गई हैं. 'मार्ग' वह है जिसे 'क्लासिकल' कहते हैं और जो सब के लिये, सब काल के लिये एक सा रहेगा. पर 'देशी' वह रूप है जो देश, काल, समाज के ख़ास ख़ास ज़मानों में लोगों के दिल से उपजा. इस की संस्कृति संबंधी क़ीमत बहुत ज़्यादा है. इन में से ख़ास ख़ास धुनों को रेकार्ड करा कर अगर हम उनका मिलान प्रचलित मार्ग संगीत के रागों से करें तो हमें बहुत सी दिलचस्प बातों की जानकारी होगी. हम देखेंगे कि भैरव, श्री, मालकोस, बसंत वग़ैरा कुछ सात या आठ बुनियादी रागों और उनके परिवार को छोड़ कर बाक़ी जितने राग हैं और जो ख़ास कर मुस्लिम ज़माने में बने जैसे—काफ़ी, पीलू, ज़िलफ़, साज़गिरी, तिलक कामोद, जंगला, जैजैवंती, बारा, झिंझोटी, बिहारी, सिंदूरा वग़ैरा—अगर सब नहीं तो ज़्यादातर देशी धुनों की बुनियाद पर मुसलमान कलावंतों ने तैयार किये और उनका इतना संस्कार किया, उन्हें साज सँवार कर

تلک کاموذ رکھا جو اب سنگیت کی دنیا میں امر ہوگیا ہے۔ پھر اس میں انھوں نے بہت سے دھرپد وغیرہ بھی بنائے۔ پر اس کا برتاؤ دھن، ٹھمری یا چھوٹے خیالوں میں ہی زیادہ تر ہوتا ہے۔

ہم دھیان دینے پر سمجھ سکتے ہیں کہ ہمارے یہاں چیتی، کجلی، لاونی، جھومر، پھاگ وغیرہ کی شکل میں بہت سی ایسی دھنیں پڑی ہوئی ہیں جو سننے میں بے حد پیاری لگتی ہیں اور جن میں ہمارے سماج اور جاتی کی سموچی آتما اور پورا دل انڈیل کر رکھا ہوا ہے۔ اس سنگیت کا تعلق قدرت اور دیش سے ہے نہ کہ گنیوں کے دماغ سے۔ اسی سے شاستر میں اس کو "دیشی" کہہ کر چھوڑ دیا گیا ہے۔ "مارگ" اور "دیشی" نام سے کلا کی دو قسمیں مانی گئی ہیں۔ 'مارگ' وہ ہے جسے 'کلاسیکل' کہتے ہیں اور جو سب کے لئے، سب کال کے لئے ایک سا رہے گا۔ پر 'دیشی' وہ روپ ہے جو دیش، کال، سماج کے خاص خاص زمانوں میں لوگوں کے دل سے اپجا۔ اس کی سنسکرتی سمبندھی قیمت بہت زیادہ ہے۔ ان میں سے خاص خاص دھنوں کو ریکارڈ کرا کر اگر ہم ان کا ملان پرچلت مارگ سنگیت کے راگوں سے کریں تو ہمیں بہت سی دلچسپ باتوں کی جانکاری ہوگی۔ ہم دیکھیں گے کہ بھیرو، شری، مالکوس، بسنت وغیرہ کچھ سات یا آٹھ بنیادی راگوں اور ان کے پریوار کو چھوڑ کر باقی جتنے راگ ہیں اور جو خاص کر مسلم زمانے میں بنے جیسے — کافی، پیلو، زلف، سازگیری، تلک کاموذ، جنگلا، جے جے ونتی، بارا، جھنجھوٹی، بہاری، سندورا وغیرہ — اگر سب نہیں تو زیادہ تر دیشی دھنوں کی بنیاد پر مسلمان کلاونتوں نے تیار کئے اور ان کا اتنا سنسکار کیا، انھیں ساج سنوار کر

इतना सुघड़ बना दिया कि वह पुराने ऋषि मुनियों की अनोखी सूझ बूझ से निकले भैरों, श्री वग़ैरा पांच या छै बुनियादी रागों का मुक़ाबला करने लगे. यह हिंदुस्तान में हिंदू और मुसलमानों की घुली मिली संस्कृति की बेजोड़ मिसाल है. संगीत की मामूली जानकारी रखने वाला भी कह सकता है कि काफ़ी राग की धुन देसी होली की धुन से हूबहू मिलती है. इस काफ़ी को अमीर ख़ुसरो ने पहले पहल 'राग' का रूप दिया जो मँजते मँजते, मुहम्मद शाह रँगीले के ज़माने में यहाँ तक चमक उठी कि बड़े से बड़े रागों के मुक़ाबले में रखा जाने लगा. हालाँ कि बीनकार और धुरपदिये आख़ीर तक काफ़ी वग़ैरा से झिझकते रहे पर राग संगीत में इनका स्थान तो हो ही गया. अमीर ख़ुसरो का ही बनाया हुआ ईमन राग तो इतना चमका कि इसमें धुरपद भी बहुत से बने और बीनकारों ने इसे दिल खोल कर अपनाया. इसी तरह जैजैवंती और ज़िलफ़ भी बहुत ऊंचे उठे. जैजैवंती कान्हरों की, और ज़िलफ़ तोड़ी या आसावरी की पगंत में पहुंची.

इस तरफ़ खोज या रिसर्च करने की बहुत बड़ी गुंजायश और सख़्त ज़रूरत है. हमारी देसी धुनों की बुनियाद पर ही हमारे ज़्यादा-तर राग बने हैं यह हमारा पक्का विश्वास है.

प्यार ख़ाँ के ज़माने में बीनकार घराने में उन दिनों उमराव ख़ाँ साहब गद्दी नशीन थे जिनकी चर्चा पहले हो चुकी है. उमराव ख़ाँ के दो बेटे अमीर ख़ाँ और रहीम ख़ाँ बहुत मशहूर हुए थे. इन्हीं के ज़माने में यह विद्या अलवर के

اس نے شگوفہ بنا دیا کہ وہ پرانے رشی منیوں کی انوکھی سوجھ بوجھ سے نکلے بھیروں، شری وغیرہ پانچ یا چھے بنیادی راگوں کا مقابلہ کرنے لگے۔ یہ ہندوستان میں ہندو اور مسلمانوں کی گھلی ملی سنسکرتی کی بے جوڑ مثال ہے۔ سنگیت کی معمولی جان کاری رکھنے والا بھی کہہ سکتا ہے کہ کافی راگ کی دھن دیسی ہولی کی دھن سے ہو بہو ملتی ہے۔ اس کافی کو امیر خسرو نے پہلے پہل 'راگ' کا روپ دیا جو منجھتے منجھتے، محمد شاہ رنگیلے کے زمانے میں یہاں تک چمک اٹھا کہ بڑے سے بڑے راگوں کے مقابلے میں رکھا جانے لگا۔ حالانکہ بین کار اور دھرپدیے آخیر تک کافی وغیرہ سے جھجکتے رہے پر راگ سنگیت میں ان کا استھان تو ہو ہی گیا۔ امیر خسرو کا ہی بنایا ہوا ایمن راگ تو اتنا چمکا کہ اس میں دھرپد بھی بہت سے بنے اور بین کاروں نے اسے دل کھول کر اپنایا۔ اسی طرح جے جے ونتی اور زلف بھی بہت اونچے اٹھے۔ جے جے ونتی کانہڑوں کی، اور زلف توڑی یا آساوری کی پنگت میں پہنچی۔

اس طرف کھوج یا ریسرچ کرنے کی بہت بڑی گنجائش اور سخت ضرورت ہے۔ ہماری دیشی دھنوں کی بنیاد پر ہی ہمارے زیادہ تر راگ بنے ہیں یہ ہمارا پکا وشواس ہے۔

پیار خاں کے زمانے میں بین کار گھرانے میں ان دنوں امراؤ خاں صاحب گدی نشین تھے جن کی چرچا پہلے ہو چکی ہے۔ امراؤ خاں کے دو بیٹے امیر خاں اور رحیم خاں بہت مشہور ہوئے تھے۔ انھیں کے زمانے میں [illegible]

घराने के बाहर बहुत से लोगों में फैली. इनके पहले तक तो यह नियम सा था कि अपने कुनबे के बाहर यह किसी को अपना फ़न नहीं सिखलाते थे. पर इनके वक़्त से यह नियम टूट चला. पर इन्होंने भी यह नियम तो रक्खा ही कि बाहर के लोगों को और और चीज़ें सिखलाते रहे, अपनी ख़ास चीज़ यानी बीन और रबाब अपने ही तक रखी. उमराव ख़ाँ ने नवाब क़ुतुबुद्दौला को सितार सिखलाया और इनसे भी ज़्यादा ग़ुलाम मुहम्मद को बड़े सितार पर आलाप की पूरी तालीम दी. यही बड़ा सितार आगे चल कर सुरबहार कहलाया और ग़ुलाम मुहम्मद के बेटे सज्जाद मुहम्मद इसके सब से बड़े उस्ताद हुए. इन्हीं सज्जाद मुहम्मद के शागिर्द मशहूर सितारिये इमदाद ख़ाँ और उनके बेटे इनायत ख़ाँ थे जो हिन्दुस्तान में सब से बड़े सितारिये माने गये. इनके लड़के विलायत ख़ाँ मौजूद हैं और यह भी अच्छा नाम कर रहे हैं. सज्जाद मुहम्मद ख़ाँ राजा यतींद्र मोहन ठाकुर के दरबारी गुनी थे और कलकत्ते में इनको सुने हुए बहुत से लोग अब भी मौजूद हैं, पर इन्होंने सिखलाया और किसी को नहीं.

इसी तरह प्यार ख़ाँ साहब ने भी अपने घराने के बाहर अपनी विद्या का ख़ूब ख़ूब प्रचार किया. यों तो इनके शागिर्द बीसों हुए पर सब से ज़्यादा इन्होंने अपने भाँजे बहादुर सेन को बताया. इनके बाद इनके ख़ास शागिर्द बेतिया के राजा नंदकिशोर और टंक के नवाब असमत जंग बहादुर थे. ध्यान देने की बात यह है कि बहादुर सेन को तो इन्होंने रबाब की पूरी तालीम दी, पर बेतिया

گھرانے کے باہر بہت سے لوگوں میں پھیلی۔ ان کے پہلے تک تو یہ نیم سا تھا کہ اپنے کنبے کے باہر یہ کسی کو اپنا فن نہیں سکھلاتے تھے۔ پر ان کے وقت سے یہ نیم ٹوٹ چلا۔ پر انھوں نے بھی یہ نیم تو رکھا ہی کہ باہر کے لوگوں کو اور اور چیزیں سکھلاتے رہے، اپنی خاص چیز یعنی بین اور رباب اپنے ہی تک رکھی۔ امراؤ خاں نے نواب قطب الدولہ کو ستار سکھلایا اور ان سے بھی زیادہ غلام محمد کو بڑے ستار پر آلاپ کی پوری تعلیم دی۔ یہی بڑا ستار آگے چل کر سُربہار کہلایا اور غلام محمد کے بیٹے سجاد محمد اس کے سب سے بڑے استاد ہوئے۔ انھیں سجاد محمد کے شاگرد مشہور ستاریے امداد خاں اور ان کے بیٹے عنایت خاں تھے جو ہندستان میں سب سے بڑے ستاریے مانے گئے۔ ان کے لڑکے ولایت خاں موجود ہیں اور یہ بھی اچھا نام کر رہے ہیں۔ سجاد محمد خاں راجا یتندر موہن ٹھاکر کے درباری گنی تھے اور کلکتے میں ان کو سننے ہوئے بہت سے لوگ اب بھی موجود ہیں، پر انھوں نے سکھلایا اور کسی کو نہیں۔

اسی طرح پیار خاں صاحب نے بھی اپنے گھرانے کے باہر اپنی ودیا کا خوب خوب پرچار کیا۔ یوں تو ان کے شاگرد بیسوں ہوئے پر سب سے زیادہ انھوں نے اپنے بھانجے بہادر سین کو بتایا۔ ان کے بعد ان کے خاص شاگرد بیتیا کے راجا نند کشور اور ٹونک کے نواب عصمت جنگ بہادر تھے۔ دھیان دینے کی بات یہ ہے کہ بہادر سین کو تو انھوں نے رباب کی پوری تعلیم دی، پر بیتیا

महाराज और टंक के नवाब साहब को इन्होंने गाने (धुरपद) का ही शौक दिलाया.

जफ़र खां और प्यार खां के छोटे भाई बासित खां थे और इन्हीं का नाम इन तीनों भाइयों में सब से ज़्यादा हुआ. तालीम भी शायद इन्हें सबसे ज़्यादा मिली थी. सन् १७८७ ई० के लगभग इनकी पैदाइश हुई. तब इनके पिता छज्जू खां दिल्ली दरबार में थे. छज्जू खां के भाई ज्ञान खां ला औलाद थे. इसीसे बासित खां को इन्होंने गोद ले लिया और अपनी सारी विद्या जी खोलकर इन्हें सिखाई. ज्ञान खां फ़क़ीर और योगी थे और अपनी समूची शक्ति लगाकर इन्होंने बासित खां को संगीत विद्या के साथ ही योग और प्राणायाम भी सिखाया जिसकी वजह से १०० बरस से ऊपर की उम्र बासित खां ने पाई थी. बारह बरस तक बासित खां को उन्होंने सिर्फ़ सरगम का ही अभ्यास कराया जिससे स्वर ज्ञान पक्का हो. सिर्फ़ सातों स्वरों का अभ्यास ही गले से उनको बारह साल तक करना पड़ा था. यह ज़रूर है कि इन्हीं सात सुरों के मेल से जितने पलटे और तानें हर मेल या ठाट में हो सकती हैं वह इनके गले में उतरवा दी गई थीं. इसके बाद भी जब राग की तालीम देने में ज्ञान खां आनाकानी करने लगे तब बासित खां के दिल पर उदासी छा गई और यह अकेले घूमने लगे. एक दिन ज्ञान खां ने बुला कर पूछा कि 'क्या कारण है जो तुम रियाज़ नहीं करते?' इन्होंने कहा-'सरगम रटते रटते बारह साल गुज़र गये, मेरे भाई लोग बख़ूबी सब रागों का आलाप अंतर पर और गले से कर रहे हैं, क्या मैं तमाम उम्र सरगम ही रटा करूँगा?' तब

مہاراج اور ٹنک کے نواب صاحب کو انھوں نے گانے (دھرپد) کا ہی شوق دلایا۔

ظفر خاں اور پیار خاں کے چھوٹے بھائی باسط خاں تھے اور انھیں کا نام ان تینوں بھائیوں میں سب سے زیادہ ہوا۔ تعلیم بھی شاید انھیں سب سے زیادہ ملی تھی۔ ۱۷۸۷ء کے لگ بھگ ان کی پیدائش ہوئی۔ تب ان کے پتا چھجو خاں دلی دربار میں تھے۔ چھجو خاں کے بھائی گیان خاں لاولاد تھے۔ اسی سے باسط خاں کو انھوں نے گود لے لیا اور اپنی ساری ودیا جی کھول کر انھیں سکھائی۔ گیان خاں فقیر اور یوگی تھے اور اپنی سموچی شکتی لگاکر انھوں نے باسط خاں کو سنگیت ودیا کے ساتھ ہی یوگ اور پرانایام بھی سکھایا جس کی وجہ سے ۱۰۰ برس سے اوپر کی عمر باسط خاں نے پائی تھی۔ بارہ برس تک باسط خاں کو انھوں نے صرف سرگم کا ہی ابھیاس کرایا جس سے سور گیان پکا ہو۔ صرف ساتوں سوروں کا ابھیاس ہی گلے سے ان کو بارہ سال تک کرنا پڑا تھا۔ یہ ضرور ہے کہ انھیں سات سوروں کے میل سے جتنے پلٹے اور تانیں ہر میل یا ٹھاٹ میں ہو سکتی ہیں وہ ان کے گلے میں اتروا دی گئی تھیں۔ اس کے بعد بھی جب راگ کی تعلیم دینے میں گیان خاں آناکانی کرنے لگے تب باسط خاں کے دل پر اداسی چھا گئی اور یہ اکیلے گھومنے لگے۔ ایک دن گیان خاں نے بلا کر پوچھا کہ 'کیا کارن ہے جو تم ریاض نہیں کرتے؟' انھوں نے کہا: 'سرگم رٹتے رٹتے بارہ سال گزر گئے، میرے بھائی لوگ بخوبی سب راگوں کا آلاپ جنتر پر اور گلے سے کر رہے ہیں، کیا میں تمام عمر سرگم ہی رٹا کروں گا؟' تب

ज्ञान खां ने हँस कर कहा, 'तुम इन लोगों से अच्छा रागों को गा बजा सकोगे, इसीसे तुम्हें इतने दिन तक स्वरसाधन कराया है. अगर कुछ दिन तक और सब्र के साथ स्वर साधन ही करते तो तुम नायकों की गिनती में हो सकते थे. नायक बैजू बावरे ने सिर्फ एक स्वर-खरज-का साधन बारह साल तक किया था, तुमने तो बारह साल में सातों स्वरों का अभ्यास किया है. ख़ैर, तब भी इस ज़माने के लोगों में तुम्हारा बराबरी कोई नहीं कर सकेगा.' हुआ भी ऐसा ही. इसके बाद एक एक दिन में एक एक राग पक्का कराना शुरू किया और देखते देखते बासित ख़ाँ अपने भाइयों को बराबरी करने लगे और फिर कई बातों में आगे भी निकल गए.

संगीत के सिवा बासित ख़ां को संस्कृत और फ़ारसी भाषा की तालीम भी मिली थी. धर्मशास्त्र के यह अच्छे जानकार थे. रबाब का अभ्यास इन्होंने इतना बढ़ा लिया कि तैयारी में इनकी बराबरी कोई नहीं कर पाता था. पर इसी बीच एक घटना ऐसी हो गई जिसकी वजह से इनका रबाब छूट ही गया.

लखनऊ के नवाब के दरबार में एक मौक़े पर कोई मृदंग बजाने वाला साधू आया, लय और ताल का जैसा वह पण्डित था वैसा ही हाथ भी उसका बेहद तैयार था. उसने दरबार में सब लोगों को चुनौती दी और एक एक कर सभी गुनी उससे शिकस्त खा गए. सब परेशान थे. वह सिर्फ़ फल और दूध पर रहता था और एक आसन से छै छै घंटे तक पखावज बजा सकता था. महीनों तक जलसे होते रहे पर कोई उसे नीचा न दिखा सका. लोगों में

گیان خاں نے ہنس کر کہا، 'تم اِن لوگوں سے اچھا راگوں کو گا بجا سکوگے، اِسی سے تمھیں اِتنے دن تک سورسادھن کرایا ہے. اگر کچھ دن تک اور صبر کے ساتھ سورسادھن ہی کرتے تو تم نایکوں کی گنتی میں ہوسکتے تھے. نایک بیجو باورے نے صرف ایک سور-کھرج-کا سادھن بارہ سال تک کیا تھا، تم نے تو بارہ سال میں ساتوں سوروں کا ابھیاس کیا ہے. خیر، تب بھی اِس زمانے کے لوگوں میں تمھاری برابری کوئی نہیں کرسکےگا.' ہوا بھی ایسا ہی. اِس کے بعد ایک ایک دن میں ایک ایک راگ پکا کرانا شروع کیا اور دیکھتے دیکھتے باسط خاں اپنے بھائیوں کی برابری کرنے لگے اور پھر کئی باتوں میں آگے بھی نکل گئے.

سنگیت کے سوا باسط خاں کو سنسکرت اور فارسی بھاشا کی تعلیم بھی ملی تھی. دھرم شاستر کے یہ اچھے جان کار تھے. رباب کا ابھیاس اِنھوں نے اِتنا بڑھا لیا کہ تیاری میں اِن کی برابری کوئی نہیں کر پاتا تھا. پر اِسی بیچ ایک گھٹنا ایسی ہوگئی جس کی وجہ سے اِن کا رباب چھوٹ ہی گیا.

لکھنؤ کے نواب کے دربار میں ایک موقع پر کوئی مردنگ بجانے والا سادھو آیا. لے اور تال کا جیسا وہ پنڈت تھا ویسا ہی ہاتھ بھی اُس کا بےحد تیار تھا. اُس نے دربار میں سب لوگوں کو چُنوتی دی اور ایک ایک کر سبھی گنی اُس سے شکست کھا گئے. سب پریشان تھے. وہ صرف پھل اور دودھ پر رہتا تھا اور ایک آسن سے چھے چھے گھنٹے تک پکھاوج بجا سکتا تھا. مہینوں تک جلسے ہوتے رہے پر کوئی اُسے نیچا نہ دکھا سکا. لوگوں میں

मशहूर हो गया था कि इस साधू में कोई दैवी शक्ति है जिसके असर से इसके सामने कोई नहीं ठहर पाता. आखिर में बासित खां की बुलाहट दिल्ली से हुई. बुज़ुर्गों के मना करने पर भी यह नहीं माने. लखनऊ में बड़ा भारी जलसा हुआ. देश भर के मशहूर गुनी इकट्ठा हुए. तीन दिन तक लगातार बासित खां के रबाब के साथ उस साधू के मृदंग की संगत होती रही, कभी वह हावी हो जाता और कभी बासित खां. आखिरी दिन बासित खां ने लयदारी के कुछ ऐसे दांव पेंच किये जिनका जवाब उस साधू के पास न निकला. वह साधू यह कह कर चला गया कि—'तुमने छल कपट से हमको नीचा दिखाया, पर इसका फल भोगोगे' उस वक़्त किसी ने उसकी बात पर ध्यान न दिया. पर उसी दिन शाम को एक अजीब बात हुई. बासित खां का दाहिना हाथ एकायक सुन्न हो गया और उसे लक़वा मार गया. कहते हैं कि उस साधू ने कोई प्रयोग कर दिया. उस साधू की बहुत बहुत खोज की गई पर फिर उसका कहीं पता न चला. इलाज भी बहुत हुआ पर बासित खां का हाथ फिर नहीं उठा. इस दर्दनाक वाक़ये के बाद फिर वह रबाब न बजा सके, सिर्फ़ गाना गा सके और रबाब की तालीम दे सके.

उस ज़माने में लखनऊ के नवाब वाजिद अली शाह थे जो गाने बजाने के बेहद शौक़ीन थे. वह बासित खां को बहुत मानते थे. मशहूर है कि एक बार इनसे 'देश' नाम के राग का आलाप सुन कर उन्होंने अपना हीरे का हार गले से उतार कर इन्हें भेंट कर दिया था. लखनऊ दरबार के टूटने पर जब वाजिद अली शाह

مشہور ہوگیا تھا کہ اِس سادھو میں کوئی دیوی شکتی ہو جس کے اثر سے اِس کے سامنے کوئی نہیں ٹھہر پاتا۔ آخر میں باسط خاں کی بلاہٹ دلی سے ہوئی۔ بزرگوں کے منع کرتے پر بھی یہ نہیں مانے۔ لکھنؤ میں بڑا بھاری جلسہ ہوا۔ دیش بھر کے مشہور گنی اکٹھا ہوئے۔ تین دن تک لگاتار باسط خاں کے رباب کے ساتھ اُس سادھو کے مردنگ کی سنگت ہوتی رہی؛ کبھی وہ حاوی ہوجاتا اور کبھی باسط خاں۔ آخری دن باسط خاں نے لے داری کے کچھ ایسے داؤں پیچ کیے جن کا جواب اُس سادھو کے پاس نہ نکلا۔ وہ سادھو یہ کہہ کر چلا گیا کہ— "تم نے چھل کپٹ سے ہم کو نیچا دکھایا، پر اِس کا پھل بھوگوگے!" اُس وقت کسی نے اُس کی بات پر دھیان نہ دیا۔ پر اُسی دن شام کو ایک عجیب بات ہوئی۔ باسط خاں کا داہنا ہاتھ ایکایک سن ہوگیا اور اُسے لقوہ مار گیا۔ کہتے ہیں کہ اُس سادھو نے کوئی پریوگ کر دیا۔ اُس سادھو کی بہت بہت کھوج کی گئی پر پھر اُس کا کہیں پتہ نہ چلا۔ علاج بھی بہت ہوا پر باسط خاں کا ہاتھ پھر نہیں اٹھا۔ اِس دردناک واقعے کے بعد پھر وہ رباب نہ بجا سکے، صرف گانا گا سکے اور رباب کی تعلیم دے سکے۔

اِس زمانے میں لکھنؤ کے نواب واجد علی شاہ تھے جو گانے بجانے کے بے حد شوقین تھے۔ وہ باسط خاں کو بہت مانتے تھے۔ مشہور ہے کہ ایک بار اِن سے "دیش" نام کے راگ کا آلاپ سن کر انھوں نے اپنے ہیرے کا ہار گلے سے اتار کر انھیں بھینٹ کر دیا تھا۔ لکھنؤ دربار کے ٹوٹنے پر جب واجد علی شاہ

क़ैद हो कर कलकत्ते के मटिया बुर्ज में क़ैद रहे उन दिनों अङ्गरेजों से ख़ास तौर पर इजाज़त लेकर बासित ख़ां को वह अपने साथ ले गये थे.

क़रीब दो साल बासित ख़ां कलकत्ते रहे और इस बीच इन्होंने बहुत से लोगों को तालीम दी जिनमें सबसे मशहूर थे उस्ताद नियामत उल्ला ख़ां सरोदिये. यह लोग सरहद्दी पठान थे. सरोद इनका क़ौमी बाजा है. नियामत उल्ला को सिर्फ़ साल भर बासित ख़ां से तालीम मिली पर सरोद पर अगर कोई रबाब के पूरे करतब दिखा सका तो नियामत उल्ला ख़ां और फिर उनके बेटे करामत उल्ला ख़ां और कौकब ख़ां साहब ही. इनके अलावा हरकुमार ठाकुर नाम के एक बंगाली राजा को भी बासित ख़ां ने अच्छी तालीम दी थी. कलकत्ते में एक बहुत बड़ी सभा करके इन ठाकुर साहब ने बासित ख़ां को 'संगीत-नायक' की पदवी दी थी. इनकी तालीम का ढंग भी कुछ अजीब था. पहले बहुत दिनों तक यह स्वर साधन ही कराते थे जैसा कि ज्ञान ख़ां ने इन्हें कराया था. राजा हरकुमार को भी यह छै महीने तक सरगम और उनके पलटे ही रटाते रहे. वह ऊब चले. पर ख़ां साहब ने बताया कि मुझे बारह बरस तक सरगम ही रटाया गया था, तुम तो छै महीने में ही ऊब गये. इसके बाद के छै महीनों में ही उन्होंने ख़ास ख़ास सभी रागों की तालीम राजा साहब को दे दी.

हम देखते हैं कि बड़े गुनी जितने भी हुए हैं उन्हें एक लम्बे अरसे तक सरगम ही रटाया गया है. अलाउद्दीन ख़ां मैहर वाले जिनकी चर्चा हो चुकी है, बारह बरस तक स्वर और अलंकार

قید ہوکر کلکتے کے مٹیا برج میں قید رہے ان دنوں انگریزوں سے خاص طور پر اجازت لے کر باسط خاں کو وہ اپنے ساتھ لے گئے تھے۔

قریب دو سال باسط خاں کلکتے رہے اور اس بیچ انھوں نے بہت سے لوگوں کو تعلیم دی جن میں سب سے مشہور تھے استاد نعمت اللہ خاں سرودیے۔ یہ لوگ سرحدی پٹھان تھے۔ سرود ان کا قومی باجا ہے۔ نعمت اللہ کو صرف سال بھر باسط خاں سے تعلیم ملی پر سرود پر اگر کوئی رباب کے پورے کرتب دکھا سکا تو نعمت اللہ خاں اور پھر ان کے بیٹے کرامت اللہ خاں اور کوکب خاں صاحب ہی۔ ان کے علاوہ ہرکمار ٹھاکر نام کے ایک بنگالی راجا کو بھی باسط خاں نے اچھی تعلیم دی تھی۔ کلکتے میں ایک بہت بڑی سبھا کرکے ان ٹھاکر صاحب نے باسط خاں کو 'سنگیت-نایک' کی پدوی دی تھی۔ ان کی تعلیم کا ڈھنگ بھی کچھ عجیب تھا۔ پہلے بہت دنوں تک یہ سور سادھن ہی کراتے تھے جیسا کہ گیان خاں نے انھیں کرایا تھا۔ راجا ہرکمار کو بھی یہ چھے مہینے تک سرگم اور ان کے پلٹے ہی رٹاتے رہے۔ وہ اوب چلے۔ پر خاں صاحب نے بتایا کہ مجھے بارہ برس تک سرگم ہی رٹایا گیا تھا، تم تو چھے مہینے میں ہی اوب گئے۔ اس کے بعد کے چھے مہینوں میں ہی انھوں نے خاص خاص سبھی راگوں کی تعلیم راجا صاحب کو دے دی۔

ہم دیکھتے ہیں کہ بڑے گنی جتنے بھی ہوئے ہیں انھیں ایک لمبے عرصے تک سرگم ہی رٹایا گیا ہے۔ علاؤالدین خاں میہر والے جن کی چرچا ہو چکی ہے، بارہ برس تک سور اور النکار

साधते रहे हैं. फ़ैयाज़ खां साहब (आफ़ताबे मौसूकी) १४ बरस की उमर तक सिर्फ़ सरगम याद करते रहे हैं.

दो साल कलकत्ते रह कर, बासित खां साहब को टिकरी के राजा साहब ने बड़े आदर से बुलवा भेजा. ये गए. यह रियासत गया के पास है. इसके बाद से आख़िरी दम तक ये टिकरी और गया में ही रहे. टिकरी के राजा साहब को ख़ूब ख़ूब सिखाया और गया के कुछ संगीत प्रेमी पंडे भी इनके शागिर्द हुए.

एक दफ़े का क़िस्सा है कि टिकरी में साल भर तक बारिश न होने की वजह से अकाल पड़ा. सारी प्रजा भूखों मरने लगी. राजा साहब ने बासित खां को बुला कर कहा कि आपके बुज़ुर्ग मियां तानसेन मलार गाकर पानी बरसा सकते थे, आप में भी वह करतब होना चाहिये. बासित खां ने कहा-'वह लोग अवतारी पुरुष थे. उनका साधना इनसानी ताक़त के बाहर की बात थी. हम लोग तो उनके सामने कुछ भी नहीं. पर राजा साहब ने बहुत ज़िद की. आख़िर इन्होंने तीन दिन तक अपने बुज़ुर्ग मियां तानसेन की मूरत सामने रख उनका ध्यान किया. फिर मियां-मलार राग का आवाहन लगातार सात दिन तक किया. कहते हैं सातवें दिन तीसरे पहर सचमुच आकाश बादलों से घिर गया और रात को घनघोर बारिश हुई. इनके मलार गाने के फल से हो या उस दिन बारिश होनी ही थी, जो भी हो, बारिश हुई ज़रूर. राजा साहब ने इन्हें कई गाँव दिये जो पुश्तहा पुश्त के लिये माफ़ी की तौर पर इनके ख़ानदान को लिख दिये गए.

यहीं तक नहीं. एक बात और हुई जो हिन्दू-मुसलमानों के

سادھتے رہے ہیں. فیاض خاں صاحب (آفتابِ موسیقی) ۱۴ برس کی عمر تک صرف سرگم یاد کرتے رہے ہیں.

دو سال کلکتے رہ کر باسط خاں صاحب کو ٹیکری کے راجا صاحب نے بڑے آدر سے بلوا بھیجا. یہ گئے. یہ ریاست گیا کے پاس ہے. اس کے بعد سے آخری دم تک یہ ٹیکری اور گیا میں ہی رہے. ٹیکری کے راجا صاحب کو خوب خوب سکھایا اور گیا کے کچھ سنگیت پریمی پنڈے بھی ان کے شاگرد ہوئے.

ایک دفعہ کا قصہ ہے کہ ٹیکری میں سال بھر تک بارش نہ ہونے کی وجہ سے اکال پڑا. ساری پرجا بھوکوں مرنے لگی. راجا صاحب نے باسط خاں کو بلا کر کہا کہ آپ کے بزرگ میاں تان سین ملار گا کر پانی برسا سکتے تھے، آپ میں بھی وہ کرتب ہونا چاہیے. باسط خاں نے کہا— "وہ لوگ اوتاری پرش تھے. اُن کی سادھنا انسانی طاقت کے باہر کی بات تھی. ہم لوگ تو اُن کے سامنے کچھ بھی نہیں، پر راجا صاحب نے بہت ضد کی. آخر انھوں نے تین دن تک اپنے بزرگ میاں تان سین کی مورت سامنے رکھ اُن کا دھیان کیا. پھر میاں-ملار راگ کا آواہن لگاتار سات دن تک کیا. کہتے ہیں ساتویں دن تیسرے پہر سچ مچ آکاش بادلوں سے گھر گیا اور رات کو گھنگھور بارش ہوئی. ان کے ملار گانے کے پھل سے ہو یا اُس دن بارش ہونی ہی تھی، جو بھی ہو، بارش ہوئی ضرور، راجا صاحب نے انھیں کئی گاؤں دئے جو پشتہا پشت کے لئے معافی کی طور پر ان کے خاندان کو لکھ دئے گئے.

یہیں تک نہیں. ایک بات اور ہوئی جو ہندو مسلمانوں کے

आपसी ताल्लुक़ को ध्यान में रखते हुए ख़ास तौर पर मार्के की है. हम कह चुके हैं गया के कुछ ख़ास पंडे इनके शागिर्द हुए थे. उस अकाल के मौक़े पर जब इनके मलार गाने के बाद बारिश हुई तब पंडों की जमात में यह तै हुआ कि पिंडदान की दच्छिणा की तौर पर जो रक़म उन्हें मिलती है उसका एक हिस्सा हमेशा के लिये ख़ां साहब और उनके ख़ानदान के नाम पर अलग कर दिया जाय. गया के मशहूर इसराजिये हनुमान दास, ढेढ़ी जी, सोनी जी वग़ैरा पंडे थे जो इसी घराने के शागिर्द थे. अभी दस बरस पहले तक का हाल हम को मालूम है कि पिंडदान की आमदनी में से 'तानसेनी भाग' लगा करता था.

सन् १८८७ में गया में तीन पुत्र और एक कन्या छोड़कर वासित ख़ाँ परलोक सिधारे. इनके बेटों के नाम थे अली मुहम्मद उर्फ़ बबक़ू मियां, मोहम्मद अली ख़ां और रियासत अली ख़ां. वासित ख़ां की मौत पहुंचे हुए योगियों की तरह हुई. मरते वक़्त इन्हें किसी क़िस्म की तकलीफ़ या बीमारी या घबराहट नहीं हुई थी. इन्होंने राजा साहब टिकरी और कुछ ख़ास लोगों को इसकी सूचना देकर इजाज़त ले ली थी और अपने घर के लोगों को महीनों पहले से तैयार कर रक्खा था. एक दिन गया धाम में ईश्वर का ध्यान करते करते ही इनकी गरदन झुक गई.

इनकी अरथी जब निकली तब इनको मिट्टी देने के लिये मुसलमानों से ज़्यादा गया के ब्राह्मण और पंडे पहुंचे थे. इसकी ख़ास वजह यह थी कि मुसलमान होने पर भी यह देवी-देवताओं की बड़ी इज़्ज़त करते थे और अक्सर किसी न किसी मन्दिर में

آپسی تعلق کو دھیان میں رکھتے ہوئے خاص طور پر معرکے کی ہے. ہم کہہ چکے ہیں گیا کے کچھ پنڈے اِن کے شاگرد ہوئے تھے. اُس اکال کے موقع پر جب اِن کے ملار گانے کے بعد بارش ہوئی تب پنڈوں کی جماعت میں یہ طے ہوا کہ پنڈدان کی دکشنا کی طور پر جو رقم اُنھیں ملتی ہے اُس کا ایک حصّہ ہمیشہ کے لئے خاں صاحب اور اُن کے خاندان کے نام پر الگ کر دیا جائے. گیا کے مشہور اسراجیے ہنومان داس، ڈھیڑھی جی، سونی جی وغیرہ پنڈے تھے جو اِسی گھرانے کے شاگرد تھے. ابھی دس برس پہلے تک کا حال ہم کو معلوم ہے کہ پنڈدان کی آمدنی میں سے 'تان سینی بھاگ' لگا کرتا تھا.

۱۸۸۷ء میں گیا میں تین پُتر اور ایک کنیا چھوڑ کر باسط خاں پرلوک سدھارے. اِن کے بیٹوں کے نام تھے علی محمد عرف ببّو میاں، محمد علی خاں اور ریاست علی خاں. باسط خاں کی موت پہنچے ہوئے یوگیوں کی طرح ہوئی. مرتے وقت اِنھیں کسی قسم کی تکلیف یا بیماری یا گھبراہٹ نہیں ہوئی تھی. اِنھوں نے راجا صاحب ٹیکری اور کچھ خاص لوگوں کو اِس کی سوچنا دے کر اجازت لے لی تھی اور اپنے گھر کے لوگوں کو مہینوں پہلے سے تیار کر رکھا تھا. ایک دن گیا دھام میں ایشور کا دھیان کرتے کرتے ہی اِن کی گردن جھک گئی.

اِن کی ارتھی جب نکلی تب اِن کو مٹی دینے کے لئے مسلمانوں سے زیادہ گیا کے براہمن اور پنڈے پہنچے تھے. اِس کی خاص وجہ یہ تھی کہ مسلمان ہونے پر بھی یہ دیوی-دیوتاؤں کی بڑی عزت کرتے تھے اور اکثر کسی نہ کسی مندر میں

भजन करने चले आया करते थे. प्राणायाम (हब्सेदम) का साधन वह नियम से करते थे. गया में मन्दिर बहुत हैं. इनका ज्यादातर वक़्त मन्दिरों में भजन वग़ैरा में ही कटता था. यह सच्चे साधू थे. इनके रचे हुए ध्रुपदों में महादेव और सरस्वती की प्रार्थना की गई है.

ज़फ़र ख़ां, प्यार ख़ां और बासित ख़ां इन तीनों भाइयों में से प्यार ख़ां ने शादी नहीं की थी. उन्होंने अपनी बहन के लड़के बहादुर सेन को गोद लेकर अपनी पूरी विद्या सिखलाई. ज़फ़र ख़ां के चार बेटे थे—काज़म अली ख़ां, सादिक़ अली ख़ां, अहमद अली ख़ां और निसार अली ख़ां. इनमें से वंस चला सिर्फ़ काज़म अली का. इनके लड़के का नाम कासिम अली था. इन चारों भाइयों में काज़म अली और सादिक़ अली ने अपने बुज़ुर्गों का नाम बर्क़रार रक्खा. ख़ास कर सादिक़ अली मालूमात और संगीत शास्त्र की जानकारी में सबसे आगे निकल गए. इन्हें लोग 'पंडित' कहा करते थे. इन्होंने संस्कृत के ब्राह्मण पंडितों से बाक़ायदा संस्कृत पढ़ी थी और श्लोकों का पाठ तो ऐसा सुंदर और उच्चारण इतना सही करते थे कि काशी के पंडित तक इन्हें मान गए. गवैये यह थे ही. रागों में जब यह गीतगोविंद के पदों को गाते तो सुनने वालों में हाय तोबा मच जाती थी. इनके ममेरे भाई बहादुर सेन और इनमें बेहद लाग डाट रहती थी. बहादुर सेन में जानकारी ज़्यादा न थी, पर हाथ में बेहद क़ुदरती मिठास और 'रियाज़' बहुत ज़्यादा था, जिसकी वजह से महफ़िल ज़्यादातर बहादुर सेन के ही हाथ रहती थी. कौन से राग में कौन सा सुर किस तरह बरतना चाहिये इस

بھجن کرنے چلے جایا کرتے تھے. پرانایام (حبسِ دم) کا سادھن وہ نیم سے کرتے تھے. گیا میں مندر بہت ہیں. ان کا زیادہ تر وقت مندروں میں بھجن وغیرہ میں ہی کٹتا تھا. یہ سچے سادھو تھے. ان کے رچے ہوئے دھرپدوں میں مہادیو اور سرسوتی کی پرارتھنا کی گئی ہے.

ظفر خاں، پیار خاں اور باسط خاں ان تینوں بھائیوں میں سے پیار خاں نے شادی نہیں کی تھی. انھوں نے اپنی بہن کے لڑکے بہادر سین کو گود لے کر اپنی پوری ودّیا سکھلائی. ظفر خاں کے چار بیٹے تھے — کاظم علی خاں صادق علی خاں احمد علی خاں اور نثار علی خاں. ان میں سے بنس چلا صرف کاظم علی خاں کا. ان کے لڑکے کا نام قاسم علی تھا. ان چاروں بھائیوں میں کاظم علی اور صادق علی نے اپنے بزرگوں کا نام برقرار رکھا. خاص کر صادق علی معلومات اور سنگیت شاستر کی جانکاری میں سب سے آگے نکل گئے. انھیں لوگ 'پنڈت' کہا کرتے تھے. انھوں نے سنسکرت کے براہمن پنڈتوں سے باقاعدہ سنسکرت پڑھی تھی اور اشلوکوں کا پاٹھ تو ایسا سُندر اور اُچارن اتنا صحیح کرتے تھے کہ کاشی کے پنڈت تک انھیں مان گئے. گویّے یہ تھے ہی. راگوں میں جب یہ گیت گووند کے پدوں کو گاتے تو سننے والوں میں ہائے توبہ مچ جاتی تھی. ان کے ممیرے بھائی بہادر سین اور ان میں بے حد لاگ ڈانٹ رہتی تھی. بہادر سین میں جانکاری زیادہ نہ تھی، پر ہاتھ میں بے حد قدرتی مٹھاس اور 'ریاض' بہت زیادہ تھا جس کی وجہ سے محفل زیادہ تر بہادر سین کے ہی ہاتھ رہتی تھی. کون سے راگ میں کون سا سُر کس طرح برتنا چاہیے اس

पर ज्यादा ध्यान वह नहीं देते थे, पर जो कुछ भी उनके हाथ से निकलता था वह इतना सुरीला और लुभावना होता था कि सुनने वाले यह भी भूल जाते कि कौन सा राग बज रहा है. पर सादिक अली में ठीक इसकी उलटी बात थी. वह संगीत के एक चलते फिरते ज्ञानकोश या लुग़त थे. बजाते, गाते वक़्त भी लेकचर देते चलते थे. हर एक राग के स्थायी, अँतरा, संचारी, आभोग में सुरों को किस तरह बरतना चाहिये इस फ़न में काज़म अली और सादिक़ अली बजोड़ थे. इधर इनके वालिद जफ़र ख़ां और चाचा प्यार ख़ां में भीतर ही भीतर बेहद तनातनी रहती थी. प्यार ख़ां को बहादुर सेन पर बड़ा नाज़ था. वह चाहते थे कि तीनों भाइयों के बाद हिंदुस्तान के ख़लीफ़ा की पगड़ी बहादुर सेन को ही मिले. भीतर ही भीतर जफ़र ख़ां अपने सगे भाई प्यार ख़ां से इस वजह से बेहद नाराज़ थे कि उन्होंने अपने ख़ानदान के बाहर (भाँजा भी बाहर का लड़का ही माना गया!) के एक लड़के को अपना इल्म सिखलाया. यहाँ तक कि दोनों भाइयों में बोल चाल भी बंद हो गई. जफ़र ख़ां ने आख़ीर तक प्यार ख़ां को इसके लिये माफ़ नहीं किया. ख़ैर, तो जफ़र ख़ां के मरने के बाद जब प्यार ख़ाँ भी बहुत बूढ़े हो चले तो सवाल यह पैदा हुआ कि गद्दी किसे मिले. आख़ीर में प्यार ख़ां ने यह फ़ैसला किया कि काशी में एक बड़ा जलसा किया जाय और सब लोग जिसके करतब को सबसे ऊंचा मानें वही बड़ा माना जाय. तय हुआ कि सब लोग बिहाग नाम के राग का ही आलाप करें. पहले और और गुनियों ने बिहाग गाया बजाया और ख़ूब समां बँधा. तब प्यार ख़ां ने बहादुर सेन को बजाने के लिये कहा. बड़े

پر زیادہ دھیان وہ نہیں دیتے تھے۔ پر جو کچھ بھی ان کے ہاتھ سے نکلتا تھا وہ اتنا سُریلا اور لبھاونا ہوتا تھا کہ سننے والے یہ بھی بھول جاتے کہ کون سا راگ بج رہا ہے۔ پر صادق علی میں ٹھیک اس کی الٹی بات تھی۔ وہ سنگیت کے ایک چلتے پھرتے گیان کوش یا لغت تھے۔ بجاتے گاتے وقت بھی لیکچر دیتے چلتے تھے۔ ہر ایک راگ کے استھائی، انترا، سنچاری، آبھوگ میں سُروں کو کس طرح برتنا چاہیے اس فن میں کاظم علی اور صادق علی بے جوڑ تھے۔ ادھر ان کے والد ظفر خاں اور چاچا پیار خاں میں بھیتر ہی بھیتر بے حد تناتنی رہتی تھی۔ پیار خاں کو بہادر سین پر بڑا ناز تھا۔ وہ چاہتے تھے کہ تینوں بھائیوں کے بعد ہندستان کے خلیفہ کی پگڑی بہادر سین کو ہی ملے۔ بھیتر ہی بھیتر ظفر خاں اپنے سگے بھائی پیار خاں سے اس وجہ سے بے حد ناراض تھے کہ انھوں نے اپنے خاندان کے باہر (بھانجا بھی باہر کا لڑکا ہی مانا گیا!) کے ایک لڑکے کو اپنا علم سکھلایا۔ یہاں تک کہ دونوں بھائیوں میں بول چال بھی بند ہو گئی۔ ظفر خاں نے آخیر تک پیار خاں کو اس کے لئے معاف نہیں کیا۔ خیر، تو ظفر خاں کے مرنے کے بعد جب پیار خاں بھی بہت بوڑھے ہو چلے تو سوال یہ پیدا ہوا کہ گدی کسے ملے۔ آخیر میں پیار خاں نے یہ فیصلہ کیا کہ کاشی میں ایک بڑا جلسہ کیا جائے اور سب لوگ جس کے کرتب کو سب سے اونچا مانیں وہی بڑا مانا جائے۔ طے ہوا کہ سب لوگ بہاگ نام کے راگ کا ہی آلاپ کریں۔ پہلے اور اور گنیوں نے بہاگ گایا بجایا اور خوب سماں بندھا۔ تب پیار خاں نے بہادر سین کو بجانے کے لئے کہا۔ بڑے

भाई के लड़कों के पहले ही बहादुर सेन से बजवाने की कैफ़ियत देते हुये उन्होंने कहा कि बहादुर छोटा है, पहले यह थोड़ा बजाले तब तुम लोग बजाना. पर भीतर से उन्हें पक्का यक़ीन था कि बहादुर सेन के बजाने के बाद और किसी का गाना बजाना हरगिज़ नहीं जम सकेगा, और मुमकिन है ज़फ़र ख़ां के लड़कों को फिर बजाने की हिम्मत ही न पड़े. अक्सर ऐसा हुआ करता था कि जिस महफ़िल में पहले बहादुर सेन बजा चुकते थे उसमें फिर काज़म अली और सादिक़ अली बजाना नहीं पसंद करते थे. वजह इसकी चाहे जो कुछ भी हो. असल में बात यह थी कि ज़फ़र ख़ां को हुक्म था कि जिस महफ़िल में बहादुर सेन शरीक़ हों उसमें तुम लोग हिस्सा मत लिया करो. ख़ैर, तो बहादुर सेन ने बिहाग बजाया, दो घंटे आलाप किया, और सारी महफ़िल फड़क उठी. सबने जी खोलकर तारीफ़ की. जब यह पूरा बजा चुके तब प्यार ख़ां ने अपने भतीजों से भरी सभा में आवाज़ ऊंची करके कहा—"अब इसके बाद तुम लोगों को और कुछ मालूम हो तो बजाओ". काज़म अली और सादिक़ अली ने अपने बुज़ुर्गों का ध्यान कर रबाब उठाई. बहादुर सेन ने सुरसिंगार बजाया था, इन्होंने रबाब बजाई. दोनों बाजों की तासीर अलग अलग है. सुरसिंगार बहुत मीठा और नीचा बोलता है पर रबाब की आवाज़ बहुत ऊंची होती है. ख़ैर, तो रबाब पर बिहाग के स्थाई अंतरे पूरे कर यह यकायक जब एक नये ही रास्ते से सचारी में घुसे तो ऐसा जान पड़ा मानो कहीं से चाँद उदय हो गया हो. सारी महफ़िल में सनसनी दौड़ गई और वाह 'सुभान अल्ला' की वह झड़ी लगी कि देर तक रुकी ही

بھائی کے لڑکوں کے پہلے ہی بہادر سین سے بجوانے کی کیفیت دیتے ہوئے انھوں نے کہا کہ بہادر چھوٹا ہے. پہلے یہ تھوڑا بجالے تب تم لوگ بجانا. پر بھیتر سے انھیں پکا یقین تھا کہ بہادر سین کے بجانے کے بعد اور کسی کا گانا بجانا ہرگز نہیں جم سکےگا، اور ممکن ہے ظفر خاں کے لڑکوں کو پھر بجانے کی ہمت ہی نہ پڑے. اکثر ایسا ہوا کرتا تھا کہ جس محفل میں پہلے بہادر سین بجا چکتے تھے اس میں پھر کاظم علی اور صادق علی بجانا نہیں پسند کرتے تھے. وجہ اس کی چاہے جو کچھ بھی ہو. اصل میں بات یہ تھی کہ ظفر خاں کو حکم تھا کہ جس محفل میں بہادر سین شریک ہو اس میں تم لوگ حصہ مت لیا کرو. خیر، تو بہادر سین نے بہاگ بجایا، دو گھنٹے آلاپ کیا، اور ساری محفل پھڑک اٹھی. سب نے جی کھول کر تعریف کی. جب یہ پورا بجا چکے تب پیار خاں نے اپنے بھتیجوں سے بھری سبھا میں آواز اونچی کرکے کہا "اب اس کے بعد تم لوگوں کو اور کچھ معلوم ہو تو بجاؤ". کاظم علی اور صادق علی نے اپنے بزرگوں کا دھیان کر رباب اٹھائی. بہادر سین نے سُرسنگار بجایا تھا، انھوں نے رباب بجائی. دونوں باجوں کی تاثیر الگ الگ ہے. سُرسنگار بہت میٹھا اور نیچا بولتا ہے پر رباب کی آواز بہت اونچی ہوتی ہے. خیر، تو رباب پر بہاگ کے استھائی انترے پورے کر یہ یکایک جب ایک نئے ہی راستے سے سنچاری میں گھسے تو ایسا جان پڑا مانو کہیں سے چاند اُدے ہو گیا ہو. ساری محفل میں سنسنی دوڑ گئی اور واہ 'سبحان اللہ' کی وہ جھڑی لگی کہ دیر تک رکی ہی

नहीं. तब क़ाज़िम अली ने रबाब रख कर प्यार ख़ां से कहा—"चाचा मियां, आपने यह तालीम क्या बहादुर भाई को दी है ?" प्यार ख़ां ने सिर झुका कर बड़े प्रेम से काज़िम अली के सिर हाथ फेरा और कहा—"काज़िम, यह तालीम तुम्हारे ही लायक़ है. बहादुर का बाज तो हीरे का घड़ा है. वह अपनी रोशनी की जगमगाहट से हिन्दुस्तान को चकाचौंध कर देगा; और लोगों का मिट्टी का घड़ा है, रोशनी नहीं हैं, पर घड़े में तीरथ का पवित्र जल भरा हुआ है. बहादुर के घड़े में वह अमृत कहाँ ? विद्या का अमृत कलस तुम्हीं दोनों भाइयों के पास है."

अब यहां पर यह ग़ौर करने की बात है कि यह हो नहीं सकता कि बिहाग की वह संचारी प्यार ख़ां को याद न रही हो. उन्होंने उसे बहादुर को बताना मुनासिब न समझा होगा. मुमकिन है दुनिया को यह दिखा देने के लिये और अपने गुज़रे हुए बड़े भाई की आत्मा के संतोष के लिये उन्होंने यह मजलिस की हो कि असल तालीम घर के बाहर नहीं जाने की.

बासित ख़ां के लड़के बक़्क़ू मियां वग़ैरा अभी छोटे थे और इस जलसे में भाग लेने लायक़ नहीं थे. प्यार ख़ां के बाद सादिक़ अली और बहादुर सेन ही हिन्दुस्तान में सिर मौर रहे. सादिक़ अली के मिज़ाज में आत्माभिमान बहुत ज़्यादा था. यह बेतिया महाराज के यहां मुलाज़िम थे. एक मौक़े पर कुछ महीनों के लिये यह बिना छुट्टी मांगे कहीं चले गये. आने पर इनसे कैफ़ियत तलब की गई तो यह तुरन्त नौकरी छोड़ कर चले गये.

रागों पर इनको इतना कमाल हासिल था कि किसी भी राग

نہیں. تب کاظم علی نے رباب رکھ کر پیار خاں سے کہا—"چچا میاں، آپ نے یہ تعلیم کیا بہادر بھائی کو دی ہے؟" پیار خاں نے سر جھکا کر بڑے پریم سے کاظم علی کے سر ہاتھ پھیرا اور کہا—"کاظم، یہ تعلیم تمہارے ہی لائق ہے. بہادر کا باج تو ہیرے کا گھڑا ہے. وہ اپنی روشنی کی جگمگاہٹ سے ہندستان کو چکاچوندھ کر دیگا؛ اور لوگوں کا مٹی کا گھڑا ہے، روشنی نہیں ہیں، پر گھڑے میں تیرتھ کا پوتر جل بھرا ہوا ہے. بہادر کے گھڑے میں وہ امرت کہاں؟ ودیا کا امرت کلس تم ہی دونوں بھائیوں کے پاس ہے."

اب یہاں پر یہ غور کرنے کی بات ہے کہ یہ ہو نہیں سکتا کہ بہاگ کی وہ سنچاری پیار خاں کو یاد نہ رہی ہو. انھوں نے اُسے بہادر کو بتانا مناسب نہ سمجھا ہوگا. ممکن ہے دنیا کو یہ دکھا دینے کے لئے اور اپنے گزرے ہوئے بڑے بھائی کی آتما کے سنتوش کے لئے انھوں نے یہ مجلس کی ہو کہ اصل تعلیم گھر کے باہر نہیں جانے کی.

باسط خاں کے لڑکے بڑکو میاں وغیرہ ابھی چھوٹے تھے اور اس جلسے میں بھاگ لینے لائق نہیں تھے. پیار خاں کے بعد صادق علی اور بہادر سین ہی ہندستان میں سر مور رہے. صادق علی کے مزاج میں آتما بھیمان بہت زیادہ تھا. یہ بیتیا مہاراج کے یہاں ملازم تھے. ایک موقع پر کچھ مہینوں کے لئے یہ بنا چھٹی مانگے کہیں چلے گئے. آنے پر ان سے کیفیت طلب کی گئی تو یہ ترنت نوکری چھوڑ کر چلے گئے.

راگوں پر ان کو اتنا کمال حاصل تھا کہ کسی بھی راگ

को तोड़ कर उसी में अलग अलग रागों के अंगों को खपा कर, और फिर उसी राग को क़ायम कर के दिखा सकते थे. एक बार महाराज जयपुर की सभा में इन्होंने बड़े बड़े गुनियों के सामने दरबारी कान्हड़े को कोमल रिखब लगा कर बजाया, पर दरबारी बिगड़ने के बजाय और सुघड़ जँची. किसी को इसके खिलाफ कुछ कहने की हिम्मत नहीं पड़ी. इतना हक़ रागों पर शायद ही किसी को हुआ हो.

बहादुर सेन ने गतें और तराने बहुत से बनाए और सितार, सरोद पर आज दिन जो घराने की गतें, सरगमें वग़ैरा बजती हैं, और गवैये जो पेचीदे तराने गाया करते हैं उनमें से ज्यादातर इन्हीं के बनाए हुए हैं. तोड़ी राग की एक क़िस्म जो 'बहादुरी तोड़ी' नाम से मशहूर है, इन्हीं की रची हुई कही जाती है.

अमन मेरी नज़र में—

अमन एक आईना है जो देखने में साफ़ है, सुथरा है और बहुत ही प्यारा प्यारा; जिसमें सुन्दर सुन्दर आसें आकर मुसकराती हैं और कली कली दिल की खिलाती हैं.

नेकी शान्ति को लेकर इसी आश्रम में दर्शन देने आती है. पर नेकी के पीछे पीछे बदी लगी रहती है. जब हम उसकी परछाइयाँ इसके ऊपर छाई हुई पाते हैं तो उस वक़्त हमको अमन के पीछे जंग नज़र आने लगती है.

—[illegible]

کو توڑکر اسی میں الگ الگ راگوں کے انگوں کو کھپاکر، اور پھر اسی راگ کو قایم کرکے دکھا سکتے تھے. ایک بار مہاراج جے پور کی سبھا میں انھوں نے بڑے بڑے گنیوں کے سامنے درباری کانہڑے کو کومل ریکھب لگاکر بجایا، پر درباری بگڑنے کے بجائے اور سگھڑ جنچی. کسی کو اس کے خلاف کچھ کہنے کی ہمت نہیں پڑی. اتنا حق راگوں پر شاید ہی کسی کو ہوا ہو.

بہادر سین نے گتیں اور ترانے بہت سے بنائے اور ستار، سرود پر آج دن جو گھرانے کی گتیں، سرگمیں وغیرہ بجتی ہیں، اور گویئے جو پیچیدے ترانے گایا کرتے ہیں ان میں سے زیادہ تر انھیں کے بنائے ہوئے ہیں. توڑی راگ کی ایک قسم جو 'بہادری توڑی' نام سے مشہور ہے، انھیں کی رچی ہوئی کہی جاتی ہے.

امن میری نظر میں—

امن ایک آئینہ ہے جو دیکھنے میں صاف ہے، ستھرا ہے اور بہت ہی پیارا پیارا؛ جس میں سندر سندر آسیں آکر مسکراتی ہیں اور کلی کلی دل کی کھلاتی ہیں.

نیکی شانتی کو لے کر اسی آشرم میں درشن دینے آتی ہے. پر نیکی کے پیچھے پیچھے بدی لگی رہتی ہے. جب ہم اس کی پرچھائیاں اس کے اوپر چھائی ہوئی پاتے ہیں تو اس وقت ہم کو امن کے پیچھے جنگ نظر آنے لگتی ہے.

—عبدالعلیم انصاری

मुझे प्यार की चाँदनी में सुला दो

(श्री रघुवीर सहाय)

मुझे प्यार की चाँदनी में सुला दो.

सुनहरी सजी जब थीं चारों दिशाएँ
अदाओं में अपनी क़यामत छिपाए
ये क्यों छा गई हैं गगन में घटाएं
कहीं चाँद मेरा न छिप उनमें जाए

सुला दो—अरी, नींद मुझको सुला दो
मुझे प्यार की चाँदनी में सुला दो.

अजब भीनी भीनी महकती हवाएं
मधुर थपकियाँ दे के हमको सुलाएं
ये सपने अजब हमको किसने दिखाए
कहीं फिर से एक बार याद आ न जाए

भुला दो—अरी, बात जग की भुला दो
मुझे प्यार की चाँदनी में सुला दो.

مجھے پیار کی چاندنی میں سُلا دو

(شری رگھوویر سہائے)

مجھے پیار کی چاندنی میں سُلا دو۔

سُنہری سجی جب تھیں چاروں دشائیں
اداؤں میں اپنی قیامت چھپائے
یہ کیوں چھا گئی ہیں گگن میں گھٹائیں
کہیں چاند میرا نہ چھپ اُن میں جائے

سُلا دو — اری، نیند مجھ کو سُلا دو
مجھے پیار کی چاندنی میں سُلا دو۔

عجب بھینی بھینی مہکتی ہوائیں
مدھر تھپکیاں دے کے ہم کو سُلائیں
یہ سپنے عجب ہم کو کس نے دکھائے
کہیں پھر سے ایک بار یاد آ نہ جائے

بھُلا دو — اری، بات جگ کی بھُلا دو
مجھے پیار کی چاندنی میں سُلا دو۔

राष्ट्र भाषा का सवाल और हमारी ज़हनियत

(रसूल अहमद साहब 'अबोध')

हमारे दूसरे मुल्की सवालों की तरह भाषा का सवाल भी एक अहम सवाल है. आम जनता की बेदारी ने, और उन ताक़तों ने जिन्होंने आम जनता को बेदार कर दिया है, उन्होंने ही इस सवाल को भी पैदा कर दिया है.

हमारी समाजी जिन्दगी में जो चीज़ सब से ज़्यादा खुली चमकती है, या जिसमें हम और सब चीज़ों का अक्स देख सकते हैं वह सियासत यानो राजनीति है. आम जनता को और समाज के बड़े से बड़े रूप को हम मुल्क की सियासत में ही देख सकते हैं. उसी के ज़रिये हम जनता के ज़्यादा से ज़्यादा नज़दीक पहुँचते हैं. इस तरह सियासत एक तरफ़ तो हमारी सारी समाजी ज़िन्दगी का अक्स होती है और दूसरी तरफ़ समाज बनाकर रहने में ही हमारी ज़िन्दगी और ज़िन्दगी की असलियत है. भाषा वह चीज़ है, हमारी समाजी ज़िन्दगी के शुरू और आख़ीर का वह सिरा है जिसे पकड़ कर हम पूरे समाजी जीवन को पकड़ सकते हैं. समाजी जीवन के साथ भाषा का नाता बिल्कुल वैसा ही है जैसा ज़िन्दगी के साथ प्राणों का.

अगर हम आदमी की रूहानी और माद्दी ज़िन्दगी दोनों पर निगाह डालें तो हमें पता चलेगा कि आदमी एक तरफ़ तो अपने आपको दूसरों से बचा कर रखना चाहता है, अपने को सब से

راشٹر بھاشا کا سوال اور ہماری ذہنیت

(رسول احمد صاحب 'ابودھ')

ہمارے دوسرے مُلکی سوالوں کی طرح بھاشا کا سوال بھی ایک اہم سوال ہے. عام جنتا کی بیداری نے اور اُن طاقتوں نے جنھوں نے عام جنتا کو بیدار کردیا ہے، اُنھوں نے ہی اِس سوال کو بھی پیدا کردیا ہے.

ہماری سماجی زندگی میں جو چیز سب سے زیادہ کھُلی چمکتی ہے، یا جس میں ہم اور سب چیزوں کا عکس دیکھ سکتے ہیں وہ سیاست یعنی راج نیتی ہے. عام جنتا کو اور سماج کے بڑے سے بڑے روپ کو ہم ملک کی سیاست میں ہی دیکھ سکتے ہیں. اُسی کے ذریعے ہم جنتا کے زیادہ سے زیادہ نزدیک پہنچتے ہیں. اِس طرح سیاست ایک طرف تو ہماری ساری سماجی زندگی کا عکس ہوتی ہے اور دوسری طرف سماج بناکر رہنے میں ہی ہماری زندگی اور زندگی کی اصلیت ہے. بھاشا وہ چیز ہے، ہماری سماجی زندگی کے شروع اور آخر کا وہ سرا ہے جسے پکڑکر ہم پورے سماجی جیون کو پکڑ سکتے ہیں. سماجی جیون کے ساتھ بھاشا کا ناتا ویسا ہی ہے جیسا زندگی کے ساتھ پرانوں کا.

اگر ہم آدمی کی روحانی اور مادی زندگی دونوں پر نگاہ ڈالیں تو ہمیں پتہ چلےگا کہ آدمی ایک طرف تو اپنے آپ کو دوسروں سے بچاکر رکھنا چاہتا ہے، اپنے کو سب سے

अलग देखना चाहता है, और अपने आप में कोई न कोई ऐसी विशेषता जान बूझ कर या अनजाने बनाए रखता है, जिसमें उसकी अपनी खुदी, उसका आपा क़ायम रहे, और दूसरी तरफ़ वह अपने आप को इतना फैलाना चाहता है, इतना फैलता है कि वामन औतार की तरह आकाश पाताल और मृत्यु लोक तीनों को नाप कर फिर भी उसका आधा क़दम बाक़ी रह जाता है.

आदमी के इस फैलाव को रूप देने वाली सबसे पहिली, सबसे आखिरी और सब से बड़ी चीज यही भाषा है. इसी के जरिये वह अपने आप को दूसरों पर जाहिर करता है, फैलता है. इसी से जीवन का समाजी रूप बनता है. और दूसरी तरफ़ साथ ही साथ उसकी यही फैलने की उमंग आकाश पाताल और मृत्यु लोक नाप कर भी संतोष न पाने वाली इच्छा, भाषा को बनाती और रूप देती चलती है.

आदमी का अपने आप को फैलाना ही भाषा के बनने का कारण है. इसी लिये आज संसार की नई पुरानी सैकड़ों हजारों भषाओं के बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि इनमें किस भाषा का अपना अलग आज़ाद रूप है. सारी भाषाएं एक दूसरे के बने बिगड़े शब्दों के सहारे चलती हैं. हाँ, जहां के लोगों की जैसी देस की हालत हुई, उनके इर्द गिर्द की आब हवा का जैसा असर हुआ वैसी ही उनके शरीर की बनावट होती है, वैसे ही उनके आचार विचार होते हैं और वैसी ही उनकी बोली, आवाज और धुनि होती है. इसी तरह भाषाओं का अलग अलग रूप बनने या मालूम होने लगता है. इसमें आचार विचार रहन सहन और नस्ल का भी असर

الگ دیکھنا چاہتا ہے، اور اپنے آپ میں کوئی نہ کوئی ایسی وشیشتا جان بوجھ کر یا انجانے بنائے رکھتا ہے، جس میں اس کی اپنی خودی، اس کا آپا قایم رہے، اور دوسری طرف وہ اپنے آپ کو اتنا پھیلانا چاہتا ہے، اتنا پھیلتا ہے کہ وامن اوتار کی طرح آکاش پاتال اور مرتیو لوک تینوں کو ناپ کر پھر بھی اس کا آدھا قدم باقی رہ جاتا ہے۔

آدمی کے اس پھیلاؤ کو روپ دینے والی سب سے پہلی، سب سے آخری اور سب سے بڑی چیز یہی بھاشا ہے۔ اسی کے ذریعے وہ اپنے آپ کو دوسروں پر ظاہر کرتا ہے، پھیلتا ہے۔ اسی سے جیون کا سماجی روپ بنتا ہے۔ اور دوسری طرف ساتھ ہی ساتھ اس کی یہی پھیلنے کی امنگ آکاش پاتال اور مرتیو لوک ناپ کر بھی سنتوش نہ پانے والی اچھا، بھاشا کو بناتی اور روپ دیتی چلتی ہے۔

آدمی کا اپنے آپ کو پھیلانا ہی بھاشا کے بننے کا کارن ہے۔ اسی لئے آج سنسار کی نئی پرانی سیکڑوں ہزاروں بھاشاؤں کے بارے میں یہ نہیں کہا جا سکتا کہ ان میں کس بھاشا کا اپنا الگ آزاد روپ ہے۔ ساری بھاشائیں ایک دوسرے کے بنے بگڑے شبدوں کے سہارے چلتی ہیں۔ ہاں، جہاں کے لوگوں کی جیسی دیس کی حالت ہوئی، ان کے ارد گرد کی آب ہوا کا جیسا اثر ہوا ویسی ہی ان کے شریر کی بناوٹ ہوتی ہے، ویسے ہی ان کے آچار وچار ہوتے ہیں اور ویسی ہی ان کی بولی، آواز اور دھنی ہوتی ہے۔ اسی طرح بھاشاؤں کا الگ الگ روپ بننے یا معلوم ہونے لگتا ہے۔ اس میں آچار وچار رہن سہن اور نسل کا بھی اثر

सकता है. पर दुनिया की कोई भाषा ऐसी नहीं जिसका अपने आसपास की या दूर की अगली पिछली अनगिनत और भाषाओं से गहरा नाता रिश्ता न हो.

किसी भाषा का अपना अलग, सबसे अनोखा रूप नहीं है और न हो सकता है. वह सारी भाषाएँ जो आज जिन्दा भाषाएँ कही जा सकती हैं समाजी जीवन और उसकी जरूरतों के मुताबिक़ ही बनी हैं. दूसरे शब्दों में सब भाषाओं को जनता की भाषा, समाजी भाषा या क़ौमी ज़बान या इन्सानी ज़बान के नाम से पुकारा जा सकता है.

आदमी के इस फैलाव में वह ताक़त होती है जो पुरानी शक्लों को पछाड़ कर नया रास्ता बनाती रहती है, और पुरानी चीज़ें किसी बड़ के दरख्त के नीचे छिपी रह जाती हैं.

इस तरह इन्सानी समाज की गाड़ी समय के साथ साथ चलती रहती है.

हमारी सियासी और समाजी जिन्दगी के बढ़ने के साथ साथ आज हमारी भाषा का सवाल, उसके रूप और नाम का सवाल भी हमारे सामने आ खड़ा हुआ है. आज हमारा समाजी जीवन काफी फैल चुका है. वह चौहद्दियां जो एक ज़माने में 'चीन की दीवार' बनी हुई थीं, अब टूट चुकी हैं और आर पार देखने, आने जाने की ज़रूरत ज़िन्दगी की ज़रूरत बन गई है. यही ज़रूरत, प्रकृति का यही तक़ाज़ा भाषा को एक ऐसा रूप देना चाहता है जिसके ज़रिये हम ज़्यादा से ज़्यादा फैल सकें, एक हो सकें. मगर क्या कोई ऐसी भाषा बनाई जानी चाहिये, या बनाई जा सकती है? पहाड़ों

سکتا ہے۔ پر دنیا کی کوئی بھاشا ایسی نہیں جس کا اپنے آس پاس کی یا دور کی اگلی پچھلی ان گنت اور بھاشاؤں سے گہرا ناتا رشتہ نہ ہو۔

کسی بھاشا کا اپنا الگ، سب سے انوکھا روپ نہیں ہے اور نہ ہو سکتا ہے۔ وہ ساری بھاشائیں جو آج زندہ بھاشائیں کہی جا سکتی ہیں سماجی جیون اور اس کی ضرورتوں کے مطابق ہی بنی ہیں۔ دوسرے شبدوں میں سب بھاشاؤں کو جنتا کی بھاشا، سماجی بھاشا یا قومی زبان یا انسانی زبان کے نام سے پکارا جا سکتا ہے۔

آدمی کے اس پھیلاؤ میں وہ طاقت ہوتی ہے جو پرانی شکلوں کو پچھاڑ کر نیا راستہ بناتی رہتی ہے، اور پرانی چیزیں کسی بڑ کے درخت کے نیچے چھپی رہ جاتی ہیں۔

اس طرح انسانی سماج کی گاڑی سمے کے ساتھ ساتھ چلتی رہتی ہے۔

ہماری سیاسی اور سماجی زندگی کے بڑھنے کے ساتھ ساتھ آج ہماری بھاشا کا سوال، اس کے روپ اور نام کا سوال بھی ہمارے سامنے آ کھڑا ہوا ہے۔ آج ہمارا سماجی جیون کافی پھیل چکا ہے۔ وہ چوحدیاں جو ایک زمانے میں 'چین کی دیوار' بنی ہوئی تھیں، اب ٹوٹ چکی ہیں اور آر پار دیکھنے، آنے جانے کی ضرورت زندگی کی ضرورت بن گئی ہے۔ یہی ضرورت پرکرتی کا یہی تقاضا بھاشا کو ایک ایسا روپ دینا چاہتا ہے جس کے ذریعے ہم زیادہ سے زیادہ پھیل سکیں۔ مگر کیا کوئی ایسی بھاشا بنائی جانی چاہیے، یا بنائی جا سکتی ہے؟ پہاڑوں

और जंगलों के बीच से एक नदी बहती है, नदी का पानी कितना साफ है, पोजिए तो कलेजा ठण्डा हो जाए, थकान मिट जाए. और एक राजा साहब का वह पक्का तालाब है, जिसमें घाट और सीढ़ियां बनी हुई हैं. मगर कितनी काई है उसके पानी में. पीने का क्या सवाल, नहाया भी नहीं जा सकता, कितनी बदबू आती है. यह है फ़र्क़ क़ुदरत की जनता की देन और कुछ लोगों की ईजाद की हुई चीज़ में. जीवन देने वाली चीज़ें समय के बहाव के साथ ख़ुद ही रूप ले लेती हैं. उन्हें छेनी हथौड़ी लेकर गढ़ना नहीं पड़ता, और गढ़ी हुई चीज़ समय के बहाव को कभी रोक नहीं पाती-जनता की भाषा, समाजी भाषा, हिन्दुस्तान की क़ौमी ज़बान जो आज हमारी समाजी फ़ितरत का तक़ाज़ा है उसे बनाना नहीं है, न बनाई जा सकती है. वह बनी बनाई है. सिर्फ़ हमें उसे झुठलाना छोड़ देना है. सबसे बड़ी मुसीबत यही है कि जनता की क़ुदरती बोली को, जिसे कबीर साहब ने 'बहता नीर' कहा है, हम तरह तरह से झुठलाते, तोड़ते, मरोड़ते और बिगाड़ते हैं. हिन्दुस्तानी या क़ौमी ज़बान के सामने सबसे बड़ा मसला यही है. भाषा के बारे में टाँग अड़ाने वाले लोगों में दो तरह के जीव शामिल हैं. एक वह जो एक भाषा, एक क़ौमी ज़बान की बात ही नहीं सुनना चाहते, और जिन्हें इस बात को सुनकर ठेस लगती है. दूसरे वह हैं जो ज़बान की एकता, क़ौमी ज़बान या हिन्दुस्तानी के तरफ़दार हैं पर जिनके दिल में कोई न कोई चोर छिपा बैठा है.

हमारी सारी ज़िन्दगी—समाजी और सियासी—में सबसे दुख की बात है—हिन्दू, मुसलमान. दुनि-

اور جنگلوں کے بیچ سے ایک ندی بہتی ہے، ندی کا پانی کتنا صاف ہے، پیجئے تو کلیجہ ٹھنڈا ہو جائے، تھکان مٹ جائے۔ اور ایک راجا صاحب کا وہ پکا تالاب ہے، جس میں گھاٹ اور سیڑھیاں بنی ہوئی ہیں۔ مگر کتنی کائی ہے اس کے پانی میں۔ پینے کا کیا سوال، نہایا بھی نہیں جا سکتا، کتنی بدبو آتی ہے۔ یہ ہے فرق قدرت کی جنتا کی دین اور کچھ لوگوں کی ایجاد کی ہوئی چیز میں۔ جیون دینے والی چیزیں سمے کے بہاؤ کے ساتھ خود ہی روپ لے لیتی ہیں۔ انھیں چھینی ہتھوڑی لے کر گڑھنا نہیں پڑتا، اور گڑھی ہوئی چیز سمے کے بہاؤ کو کبھی روک نہیں پاتی۔ جنتا کی بھاشا، سماجی بھاشا، ہندستان کی قومی زبان جو آج ہماری سماجی فطرت کا تقاضا ہے اسے بنانا نہیں ہے، نہ بنائی جا سکتی ہے۔ وہ بنی بنائی ہے۔ صرف ہمیں اسے جھٹلانا چھوڑ دینا ہے۔ سب سے بڑی مصیبت یہی ہے کہ جنتا کی قدرتی بولی کو، جسے کبیر صاحب نے 'بہتا نیر' کہا ہے، ہم طرح طرح سے جھٹلاتے، توڑتے، مروڑتے اور بگاڑتے ہیں۔ ہندستانی یا قومی زبان کے سامنے سب سے بڑا مسئلہ یہی ہے۔ بھاشا کے بارے میں ٹانگ اڑانے والے لوگوں میں دو طرح کے جیو شامل ہیں۔ ایک وہ جو ایک بھاشا، ایک قومی زبان کی بات ہی نہیں سننا چاہتے، اور جنھیں اس بات کو سن کر ٹھیس لگتی ہے۔ دوسرے وہ ہیں جو زبان کی ایکتا، قومی زبان یا ہندستانی کے طرفدار ہیں پر جن کے دل میں کوئی نہ کوئی چور چھپا بیٹھا ہے۔

ہماری ساری زندگی — سماجی اور سیاسی — میں سب سے دکھ کی بات ہے — ہندو، مسلمان، دنیا

में कोई देश ऐसा नहीं जहाँ कई मजहबों और धर्मों के मानने वाले न हों. मगर हिन्दुस्तान ही ऐसा मुल्क है जहां हिन्दू और मुसलमान मजहब के कारण नहीं राजकाजी सियासी कारणों से सदियों के मुर्दे उखाड़ उखाड़ कर एक दूसरे के लिये और सारे मुल्क के लिये एक अहम मसला बने हुए हैं. एक दूसरे का विरोध करना ही दोनों अपने अपने धर्मों का पालन करना समझते हैं. नतीजा यह है कि किसी रूप में भी चोर जिस दिल में छिपा है फिर देवता का प्रवेश उस दिल में हो तो कैसे हो ?

हिन्दू मुसलमानों दोनों में एक तो वह हैं जो क़ौमी ज़बान या भाषा की एकता जैसी बातों से अपना आसन हिलता हुआ देखते हैं. दूसरे वह हैं जो मानने को तो क़ौमी ज़बान की एकता जैसी सब बातें मानते हैं मगर चोर दिल से नहीं निकलता. ऐसी हालत में हिन्दुस्तानी का आन्दोलन एक मसला बन गया है. लोग पूछते हैं, हिन्दुस्तानी किसे कहें. हर तरफ के आवाज आती है—हमारी ज़बान को, हमारी भाषा को. पूछने वाला चौराहे तक आकर लौट जाता है और फिर अपनी कँकरीली पथरीली पगडंडी पर चलना शुरू कर देता है. जो लोग क़ौमी ज़बान या जनता की भाषा की सुहावनी कुदरती सूरत को झुठलाना नहीं चाहते उन्हें चाहिये कि अपने दिलों को टटोलें और उस चोर को जो दिल को घिरौंदा समझ कर घुस बैठा है निकाल बाहर करें, और इस मामले में अपने आपको ज्यादा से ज्यादा ईमानदार बनाएँ. वह देखेंगे कि वह हजारों शब्द जो जनता तक पहुंच चुके हैं, उनके सामने कितनी तेज़ी और जल्दी से आ जाते हैं, [illegible] शब्दों का [illegible] जो समाज की ज़रूरतों के मुताबिक़

میں کوئی دلیش ایسا نہیں جہاں کئی مذاہبوں اور دھرموں کے ماننے والے نہ ہوں. مگر ہندستان ہی ایسا ملک ہے جہاں ہندو اور مسلمان مذہب کے کارن نہیں راج کاجی سیاسی کارنوں سے صدیوں کے مُردے اکھاڑ اکھاڑ کر ایک دوسرے کے لئے اور سارے ملک کے لئے ایک اہم مسئلہ بنے ہوئے ہیں. ایک دوسرے کا ورودھ کرنا ہی دونوں اپنے اپنے دھرموں کا پالن کرنا سمجھتے ہیں. نتیجہ یہ ہے کہ کسی روپ میں بھی چور جس دل میں چھپا ہو پھر دیوتا کا پرویش اس دل میں ہو تو کیسے ہو؟

ہندو مسلمانوں دونوں میں ایک تو وہ ہیں جو قومی زبان یا بھاشا کی ایکتا جیسی باتوں سے اپنا آسن ہلتا ہوا دیکھتے ہیں. دوسرے وہ ہیں جو ماننے کو تو قومی زبان کی ایکتا جیسی سب باتیں مانتے ہیں مگر چور دل سے نہیں نکلتا. ایسی حالت میں ہندستانی کا اندولن ایک مسئلہ بن گیا ہے. لوگ پوچھتے ہیں، ہندستانی کسے کہیں. ہر طرف سے آواز آتی ہے— ہماری زبان کو، ہماری بھاشا کو. پوچھنے والا چوراہے تک آکر لوٹ جاتا ہے اور پھر اپنی کنکریلی پتھریلی پگڈنڈی پر چلنا شروع کر دیتا ہے. جو لوگ قومی زبان یا جنتا کی بھاشا کی سہاونی قدرتی صورت کو جھٹلانا نہیں چاہتے انھیں چاہئے کہ اپنے دلوں کو ٹٹولیں اور اس چور کو جو دل کو گھروندا سمجھ کر گھس بیٹھا ہے نکال باہر کریں، اور اس معاملے میں اپنے آپ کو زیادہ سے زیادہ ایماندار بنائیں. وہ دیکھیں گے کہ وہ ہزاروں شبد جو جنتا تک پہنچ چکے ہیں ان کے سامنے کتنی تیزی اور جلدی سے آجاتے [illegible]

बनेंगे वह भी जनता की प्रकृति को सामने रख कर बनाए और उस तक पहुँचाए जा सकते हैं. अजीब बात एक यह है कि जहां एक तरफ़ भाषा को लेकर ऐसे सियासी अखाड़े बन गए हैं जो खोज खोज कर ऐसे शब्दों का इस्तेमाल करते हैं जिनसे भाषा तंग से तंग और महदूद से महदूद होती चली जाय, दूसरी तरफ़ हमारे कुछ एक भाषा के हिमायती भी सरलता की खोज में कभी कभी पहाड़ खड़ा कर देते हैं. जबान की एकता के मामले में और हमारी समाजी ज़िन्दगी के लिये ये दोनों रास्ते खतरनाक हैं दोनों क़ुदरती बहाव से अपने को अलग कर लेते हैं. एक मुशकिल लफ्जों को भरकर और दूसरा आसान लफ्जों के नाम पर मुशकिल पैदा कर देता है.

इस लिये हमें बीच के रास्ते पर चलना है, बीच का रास्ता मध्यम मार्ग ही सही रास्ता है. किसी से खामख्वाह का परहेज नहीं. किसी को अछूत मान कर उससे बचना नहीं, प्रकृति से दूर न मुश्किल बनाने में न आसान बनने में. जनता को देखिये. उसकी बातचीत सुनिये. उसकी तबियत और आदत को समझिये. और समाज के रुझान कौमी जबान हिन्दुस्तानी के राज पथ तक खुद पहुँचिये और देश को पहुँचाइये. फिर देखिये कि इस एक बात से आपके कितने मसले बात की बात में हल हो जाते हैं.

بنیں گے وہ بھی جنتا کی پرکرتی کو سامنے رکھ کر بنائے اور اُس تک پہنچائے جا سکتے ہیں۔ عجیب بات ایک یہ ہو کہ جہاں ایک طرف بھاشا کو لے کر ایسے سیاسی اکھاڑے بن گئے ہیں جو کھوج کھوج کر ایسے شبدوں کا استعمال کرتے ہیں جن سے بھاشا تنگ سے تنگ اور محدود سے محدود ہوتی چلی جائے، دوسری طرف ہمارے کچھ ایک بھاشا کے حامی بھی سرلتا کی کھوج میں کبھی کبھی پہاڑ کھڑا کر دیتے ہیں۔ زبان کی ایکتا کے معاملے میں اور ہماری سماجی زندگی کے لئے یہ دونوں راستے خطرناک ہیں دونوں قدرتی بہاؤ سے اپنے کو الگ کر لیتے ہیں۔ ایک مشکل لفظوں کو بھر کر اور دوسرا آسان لفظوں کے نام پر مشکل پیدا کر دیتا ہے۔

اس لئے ہمیں بیچ کے راستے پر چلنا ہے، بیچ کا راستہ مدھیم مارگ ہی صحیح راستہ ہے۔ کسی سے خوامخواہ کا پرہیز نہیں۔ کسی کو اچھوت مان کر اُس سے بچنا نہیں، پرکرتی سے دور نہ مشکل بنانے میں نہ آسان بنانے میں۔ جنتا کو دیکھئے۔ اُس کی بات چیت سنئے۔ اُس کی طبیعت اور عادت کو سمجھئے۔ اور سماج کے رجحان قومی زبان ہندستانی کے راج پتھ تک خود پہنچئے اور دیش کو پہنچائیے۔ پھر دیکھئے کہ اِس ایک بات سے آپ کے کتنے مسئلے بات کی بات میں حل ہو جاتے ہیں۔

सुपरिनटेनडेन्ट पुलिस ने बड़े गम्भीर स्वर में मुझे चेतावनी दी—"अगर कोई फ़िसाद झगड़ा शहर में हुआ तो मैं आप को ज़िम्मेवार ठहराऊँगा".

मैं हैरान था कि यह अँगरेज़ कैसी बातें कर रहा है. मैंने उलझ कर कहा—"हम कांग्रेस वाले अपने भाइयों में झगड़ा कैसे करवा सकते हैं. हमारा तो काम उनमें मेल मोहब्बत कराना है. पुलीस रिआया को बराबर सता रही है."

कुछ देर हम दोनों में काफ़ी बहस रही. इस दौरान में मेरी किसी दलील पर सुपरिनटेनडेन्ट पुलिस ने कहा—"यह बिलकुल बेमानी बात है".

मैंने गरमा कर जवाब दिया-"यह उतनी ही बेमानी है जितनी आप की दलील ... मैं उम्मीद करता हूँ कि आप मुझसे शराफ़त से बात करेंगे नहीं तो मैं भी वैसे ही पेश आऊंगा जैसे आप मेरे साथ बरताव करेंगे." यह मैंने बिगड़ कर कहा.

कप्तान साहब के मिज़ाज, बोली, स्वर व चेहरे में जादू का सा असर हुआ. मुसकरा कर बड़ी नम्रतासे बोले-"आप सिगरेट से शौक़ करते हैं ?"

मैं उस ज़माने में सिगरेट पिया करता था. उन्होंने मुझे सिगरेट दिया. मैंने क़बूल किया और शुक्रिया अदा किया.

फिर वह बड़ी मीठी बोली में कहने लगे-"पंडित मोती लाल नेहरू का घराना बड़ा शायस्ता है. मैं उनकी लड़कियों से पहाड़ पर मिल चुका हूँ. मेरे ऊपर उस ख़ानदान का बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा."

سپرنٹنڈنٹ پولیس نے بڑے گمبھیر سور میں مجھے چیتاونی دی۔ "اگر کوئی فساد جھگڑا شہر میں ہوا تو میں آپ کو ذمہ وار ٹھہراؤں گا۔"

میں حیران تھا کہ یہ انگریز کیسی باتیں کر رہا ہے۔ میں نے الجھ کر کہا۔ "ہم کانگریس والے اپنے بھائیوں میں جھگڑا کیسے کروا سکتے ہیں۔ ہمارا تو کام اُن میں میل محبت کرانا ہے۔ پولیس رعایا کو برابر ستا رہی ہے"

کچھ دیر ہم دونوں میں کافی بحث رہی۔ اِس دوران میں میری کسی دلیل پر سپرنٹنڈنٹ پولیس نے کہا۔ "یہ بالکل بے معنی بات ہے۔"

میں نے گرما کر جواب دیا۔ "یہ اُتنی ہی بے معنی ہے جتنی آپ کی دلیل۔۔۔ میں اُمید کرتا ہوں کہ آپ مجھ سے شرافت سے بات کریں گے۔ نہیں تو میں بھی ویسے ہی پیش آؤں گا جیسے آپ میرے ساتھ برتاؤ کریں گے" یہ میں نے بگڑ کر کہا۔

کپتان صاحب کے مزاج، بولی، سر و چہرے میں جادو کا سا اثر ہوا۔ مسکرا کر بڑی نمرتا سے بولے۔ "آپ سگریٹ سے شوق کرتے ہیں؟"

میں اُس زمانے میں سگریٹ پیا کرتا تھا۔ انھوں نے مجھے سگریٹ دیا۔ میں نے قبول کیا اور شکریہ ادا کیا۔

پھر وہ بڑی میٹھی بولی میں کہنے لگے۔ "پنڈت موتی لال نہرو کا گھرانا بڑا شائستہ ہے۔ میں اُن کی لڑکیوں سے پہاڑ پر مل چکا ہوں۔ میرے اوپر اُس خاندان کا بڑا اچھا پربھاؤ پڑا۔"

مجھے دل میں ہنسی آ رہی تھی۔ وہ گھڑی پہلے تو یہ انگریز مجھے

और मेरे मुंह तोड़ जवाब देते ही मेरा पुराना दोस्त बन गया.

मैं ख़ुद बचपन में अंगरेज़ी स्कूल में पढ़ा था. मुझे अंगरेज़ी लड़कों की बन्दर भपकियों की काफ़ी पहचान थी. मुझसे कई बार लड़कों से झड़प और मारपीट भी हुई थी और जब कभी मैं उनको ठोंक देता और उन पर ग़ालिब आ जाता तो वह मुझसे हाथ मिलाते और बाद को दोस्ताना बरताव बरतते.

यही तजुरबा मुझे २३ बरस की उमर में फिर हुआ.

इसके बाद क़रीब एक घंटा बड़ी घुट घुट के हम दोनों ने बातें कीं. ज़्यादातर राजनीतिक विषयों पर बातें हुईं. बहस भी काफ़ी हुई. मैंने कप्तान साहब को खरी खरी सुनाई. उन्होंने ज़रा सा भी बुरा माने बग़ैर मेरी बातें सुनी और "माई डियर फ्रेन्ड" कह कर मुझे जवाब दिये. मार्शललाॅ और जलियान वाला बाग़ के क़तलेआम के बारे में भी मैंने उनसे साफ़ साफ़ तरीक़े पर बातें कीं. हम दोनों की राय में काफ़ी फ़र्क़ था मगर कोई बेलुत्फ़ी पैदा नहीं हुई.

आख़िर में कप्तान साहब ने खड़े होकर मुझसे बड़े तमीज़ से हाथ मिलाया और बाहर आकर मुझे मोटर तक पहुँचाया.

× × × ×

लायलपुर के कुछ तजुरबे

(१०)

गुजरानवाला में हम शायद चार दिन कुल जमा ठहरे होंगे. मगर इन चार दिनों में मैंने बहुत कुछ सीखा.

फिर हम मोटरकार पर लायलपुर को रवाना हुए. वहां शायद एक ही दिन पड़ाव किया. रास्ते भर हमारी मोटर आगे चलती थी

اور میرے منہ توڑ جواب دیتے ہی میرا پرانا دوست بن گیا۔

میں خود بچپن میں انگریزی اسکول میں پڑھا تھا۔ مجھے انگریزی لڑکوں کی بندر بھبکیوں کی کافی پہچان تھی۔ مجھ سے کئی بار لڑکوں سے جھڑپ اور مارپیٹ ہوئی تھی اور جب کبھی میں ان کو ٹھونک دیتا ان پر غالب آجاتا تو وہ مجھ سے ہاتھ ملاتے اور بعد کو دوستانہ برتاؤ برتتے۔

یہی تجربہ مجھے ۲۳ برس کی عمر میں پھر ہوا۔

اس کے بعد قریب ایک گھنٹہ بڑی گھٹ گھٹ کے ہم دونوں نے باتیں کیں۔ زیادہ تر راج نیتک وشیوں پر باتیں ہوئیں۔ بحث بھی کافی ہوئی۔ میں نے کپتان صاحب کو کھری کھری سنائی۔ انھوں نے ذرا سا بھی برا مانے بغیر میری باتیں سنیں اور "مائی ڈیر فرینڈ" کہہ کر مجھے جواب دئے۔ مارشل لا اور جلیان والا باغ کے قتل عام کے بارے میں بھی میں نے ان سے صاف صاف طریقے پر باتیں کیں۔ ہم دونوں کی رائے میں کافی فرق تھا مگر کوئی بے لطفی پیدا نہیں ہوئی۔

آخر میں کپتان صاحب نے کھڑے ہوکر مجھ سے بڑے تمیز سے ہاتھ ملایا اور باہر آکر مجھے موٹر تک پہنچایا۔

× × × ×

لایل پور کے کچھ تجربے

(۱۰)

گجرانوالہ میں ہم شاید چار دن کل جمع ٹھہرے ہوں گے۔ مگر ان چار دنوں میں میں نے بہت کچھ سیکھا۔

پھر ہم موٹرکار پر لائل پور کو روانہ ہوئے۔ وہاں شاید ایک ہی دن پڑاؤ کیا۔ راستے بھر ہماری موٹر آگے چلتی تھی

और कुछ फ़ासले पर हमारा पीछा एक पुलीस इन्सपेक्टर कुछ कान्सटेबलों के हमराह दूसरी मोटर में कर रहा था.

हम एक मामूली मकान में टिके थे. थोड़ी देर में यह इन्सपेक्टर साहब भी वहीं तशरीफ़ ले आये.

झेंपते हुये उन्होंने हमसे कुछ सवाल किये. हैदर मेंहदी साहब ने उन्हें उलटे सीधे जवाब दिये. यह उनका मज़ाक था मगर इन्सपेक्टर साहब ने फ़ौरन बड़े इतमीनान से उन जवाबों की बिना पर अपनी नोट बुक में जो चाहा दर्ज कर लिया.

इन्सपेक्टर साहब ने थोड़ी ही देर के बाद कहना शुरू किया कि वह अपनी नौकरो से बेज़ार थे. मगर क्या करें, पेट के लिए हाकिमों का कहना मानना पड़ता था. उन्होंने हमारी देश भक्ती और क़ुरबानियों की तारीफ़ के पुल बांध दिये.

खाना खाने के वक़्त इन्सपेक्टर साहब को भी हमने अपना मेहमान बनाया. उनकी हालत रहम के क़ाबिल थी.

× × ×

देखते देखते ग़ायब

एक साहब, जो ग़ालिबन हमारे साथ मोटर पर बतौर गाइड के आये थे, मुझे एक पत्रिका के सम्पादक से मिलाने ले गये. हम दोनों सीढ़ियों पर चढ़कर एक छोटे से कमरे में पहुँचे. यहां एक सज्जन कुरता धोती पहने बैठे थे. यही सम्पादक थे. कुछ देर मैंने उनसे बातें की होंगी कि वह जल्दी से कुरसी छोड़ कमरे में से निकल छत की तरफ भागे. मेरे कुछ समझ में नहीं आया कि [illegible] क्या है.

اور کچھ فاصلے پر ہمارا پیچھا ایک پولیس انسپکٹر کچھ کانسٹبلوں کے ہمراہ دوسری موٹر میں کر رہا تھا.

ہم ایک معمولی مکان میں ٹکے تھے. تھوڑی دیر میں یہ انسپکٹر صاحب بھی وہیں تشریف لے آئے.

جھینپتے ہوئے اُنھوں نے ہم سے کچھ سوال کئے. حیدر مہندی صاحب نے اُنھیں اُلٹے سیدھے جواب دئے. یہ اُن کا مذاق تھا مگر انسپکٹر صاحب نے فوراً بڑے اطمینان سے اُن جوابوں کی بنا پر اپنی نوٹ بک میں جو چاہا درج کرلیا.

انسپکٹر صاحب نے تھوڑی ہی دیر کے بعد کہنا شروع کیا کہ وہ اپنی نوکری سے بیزار تھے. مگر کیا کریں، پیٹ کے لئے حاکموں کا کہنا ماننا پڑتا تھا. اُنھوں نے ہماری دیش بھکتی اور قربانیوں کی تعریف کے پُل باندھ دئے.

کھانا کھانے کے وقت انسپکٹر صاحب کو بھی ہم نے اپنا مہمان بنایا. اُن کی حالت رحم کے قابل تھی.

× × ×

دیکھتے دیکھتے غایب

ایک صاحب، جو غالباً ہمارے ساتھ موٹر پر بطور گائڈ کے آئے تھے، مجھے ایک پتریکا کے سمپادک سے ملانے لے گئے. ہم دونوں سیڑھیوں پر چڑھ کر ایک چھوٹے سے کمرے میں پہنچے. یہاں ایک سجن کُرتا دھوتی پہنے بیٹھے تھے. یہی سمپادک تھے. کچھ دیر میں نے اُن سے باتیں کی ہوں گی کہ وہ جلدی سے کرسی چھوڑ کمرے میں سے نکل چھت کی [illegible] میری سمجھ میں نہیں آیا کہ آخر بات کیا ہے.

मैंने अपने मित्र से पूछा तो उन्होंने होंठों पर उंगली रखकर हाथ से इशारा किया कि सबर करो.

फिर दो चार मिनट के बाद मेरे कान में हलके से कहा—"एडिटर साहब के नाम वारन्ट है........पुलीस का धावा होने वाला है."

कमरे में दो एक सज्जन और भी थे. वह सब चुप थे और बड़े इतमीनान से अपनी अपनी जगह पर बैठे रहे. कुछ इशारों से एक दूसरे से बातें जरूर कर रहे थे.

पांच मिनट बाद मेरे मित्र ने सूचना दी "गए". उनका मतलब पुलीस से था.

मैंने पूछा—"और एडिटर साहब कहां हैं ? क्या उनको गिरफ़तार कर लिया ?"

वह बोले—"वह पुलीस के हाथ नहीं आ सकते."

अपने मित्र की सलाह से मैं वहाँ से फ़ौरन चला आया.

जनता से बयान लेना तो हमारा खास काम था. वह जितने ले सके लिये.

लायलपुर से हम अमृतसर लौटे जो हमारा असली हेड-क्वाटर था.

میں نے اپنے مِتر سے پوچھا تو انھوں نے ہونٹوں پر انگلی رکھ کر ہاتھ سے اشارہ کیا کہ صبر کرو.

پھر دو چار منٹ کے بعد میرے کان میں ہلکے سے کہا—"اڈیٹر صاحب کے نام وارنٹ ہے........پولیس کا دھاوا ہونے والا ہے."

کمرے میں دو ایک سجن اور بھی تھے. وہ سب چُپ تھے اور بڑے اطمینان سے اپنی اپنی جگہ پر بیٹھے رہے. کچھ اشاروں سے ایک دوسرے سے باتیں ضرور کر رہے تھے.

پانچ منٹ بعد میرے مِتر نے سوچنا دی "گئے". اُن کا مطلب پولیس سے تھا.

میں نے پوچھا—"اور اڈیٹر صاحب کہاں ہیں؟ کیا اُن کو گرفتار کر لیا؟"

وہ بولے—"وہ پولیس کے ہاتھ نہیں آ سکتے."

اپنے مِتر کی صلاح سے میں وہاں سے فوراً چلا آیا.

جنتا سے بیان لینا تو ہمارا خاص کام تھا. وہ جتنے لے سکے لئے.

لائل پور سے ہم امرتسر لوٹے جو ہمارا اصلی ہیڈکوارٹر تھا.

بکٹ کہانی پر کچھ اور

(پروفیسر سید مسیح الزماں جائسی)

ستمبر ۴۷ء کے 'نیا ہند' میں بکٹ کہانی پر میرا ایک لیکھ چھپا ہے۔ اس کے بعد محترمی ڈاکٹر عبدالستار صدیقی سے ایک دن ملا، تو باتوں باتوں میں 'بکٹ کہانی' کا ذکر چھڑ گیا اور اُن کے سمجھانے سے میں اب اس نتیجے پر پہنچا ہوں کہ 'بکٹ کہانی' کے لکھنے والے افضل الہ آباد کے رہنے والے نہیں تھے۔ افضل الہ آبادی دوسرے ہیں۔ 'سپرنگر' نے 'قایم' کی رائے اپنے یہاں لکھی ہے کہ 'بکٹ کہانی' کے لکھنے والے افضل جھنجھانا ضلع میرٹھ کے رہنے والے تھے اور ۱۱ویں صدی ہجری کے شروع میں تھے۔ لیکن محمود شیروانی نے اپنی کتاب 'پنجاب میں اردو' میں 'بکٹ کہانی' کے لکھنے والے افضل کو پانی پت کا رہنے والا لکھا ہے اور ساتھ میں علی قلی خاں والہ داغستانی کے بے چھپے ہوئے فارسی تذکرے 'ریاض الشعرا' سے یہ بات لکھی ہے کہ 'بکٹ کہانی' اصل میں افضل کی آپ بیتی ہے۔ افضل پانی پت میں مولوی تھے۔ وہاں انھیں ایک ہندو استری سے پریم ہوگیا۔ افضل کے دل کی حالت دن دن بگڑتی گئی یہاں تک کہ یہ گلیوں میں گھومنے اور اس عورت کے مکان کے چکر کاٹنے لگے۔ جب بات بہت

विकट कहानी पर कुछ और

(प्रोफ़ेसर सैयद मसीहुज़्ज़मा जायसी)

सितम्बर सन् '४७ के 'नया हिन्द' में विकट कहानी पर मेरा एक लेख छपा है. उसके बाद मोहतरमी डाक्टर अब्दुस्सत्तार सिद्दीक़ी से एक दिन मिला, तो बातों बातों में 'विकट कहानी' का जिकर छिड़ गया और उनके सुझाने से मैं अब इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि 'विकट कहानी' के लिखने वाले अफ़ज़ल इलाहाबाद के रहने वाले नहीं थे. अफ़ज़ल इलाहाबादी दूसरे हैं. 'स्प्रिंगर' ने 'क़ायम' की राय अपने यहां लिखी है कि 'विकट कहानी' के लिखने वाले अफ़ज़ल झंझाना ज़िला मेरठ के रहने वाले थे और ११ वीं सदी हिजरी के शुरू में थे. लेकिन महमूद शेरवानी ने अपनी किताब 'पंजाब में उर्दू' में 'विकट कहानी' के लिखने वाले अफ़ज़ल को पानीपत का रहने वाला लिखा है और साथ में अलीकुली खां वाला दाग़िस्तानी के बे-छपे हुए फ़ारसी तज़किरे 'रियाज़ुश शोअरा' से यह बात लिखी है कि 'विकट कहानी' असल में अफ़ज़ल की आप बीती है. अफ़ज़ल पानीपत में मौलवी थे. वहाँ उन्हें एक हिन्दू स्त्री से प्रेम हो गया. अफ़ज़ल के दिल की हालत दिन दिन बिगड़ती गई यहाँ तक कि वह गलियों में घूमने और उस औरत के मकान के चक्कर काटने लगे. जब बात बहुत

[illegible] अफ़ज़ल ने "बिकट कहानी" में बरताया है. कहा नहीं जा सकता [illegible] कितनी है लेकिन 'बिकट कहानी' के सिलसिले [illegible] बात का जानना आवश्यक था इसलिए मैंने यहां लिख दिया.

[illegible] बात और, इस कहानी के बाद "पंजाब में उर्दू" में बिकट कहानी के कुछ नमूने दिये हैं. यह सब मैंने पढ़े. मुझे तो ऐसा जान पड़ता है कि जिस किताब का मैंने अपने सितम्बर के लेख में ज़िक्र किया है वह कोई दूसरी ही किताब है. बहुत से शेर तो मिलते हैं लेकिन 'पंजाब में उर्दू' वाले नमूनों की ज़बान पुरानी है जैसी कि ११ वीं सदी हिजरी में हो सकती है. अगर 'बिकट कहानी' के लिखने वाले वही अफ़ज़ल हैं जो 'स्प्रिंगर', 'क़ायम', और महमूद शेरवानी की किताबों में हैं तो ज़रूर ऐसा हुआ है कि जब मेरे पास वाली बिकट कहानी नवल किशोर प्रेस लखनऊ में छपने लगी है तो किसी ने उसे ठीक किया है और उसके शेर जगह जगह से बदले हैं लेकिन मतलब वही रक्खा है. क्योंकि जो ज़बान उसमें है और जिसके नमूने मैंने अपने लेख में दिये हैं वह ज़बान ११ वीं सदी हिजरी में नहीं हो सकती.

अफ़ज़ल को इलाहाबादी कहलाने की वजह यह थी कि मुन्शी करीमुद्दीन और फ़ेलन के तज़किरे 'तबक़ा तुल शोअरा' के सफ़ा २५९ में अफ़ज़ल को इलाहाबाद का लिखा गया है और बिकट कहानी का लिखने वाला भी उन्हीं को बताया गया है. लेकिन मालूम होता है कि फ़ेलन और मुन्शी करीमुद्दीन को ग़लतफ़हमी हुई है.

افضل نے "بکٹ کہانی" میں برتا ہے. کہا نہیں جا سکتا کہ اس میں کتنی ... ہے لیکن "بکٹ کہانی" کے سلسلے میں اس بات کا جاننا ضروری تھا اس لیے میں نے یہاں لکھ دیا.

... اس کہانی کے بعد "پنجاب میں اردو" میں بکٹ کہانی کے کچھ نمونے دیے ہیں. یہ سب میں نے پڑھے. مجھے تو ایسا جان پڑتا ہے کہ جس کتاب کا میں نے اپنے ستمبر کے لیکھ میں ذکر کیا ہے وہ کوئی دوسری ہی کتاب ہے. بہت سے شعر تو ملتے ہیں لیکن "پنجاب میں اردو" والے نمونوں کی زبان پرانی ہے جیسی کہ ۱۱ ویں صدی ہجری میں ہو سکتی ہے. اگر "بکٹ کہانی" کے لکھنے والے وہی افضل ہیں جو "سپرنگر"، "قایم" اور محمود شیروانی کی کتابوں میں ہیں تو ضرور ایسا ہوا ہے کہ جب میرے پاس والی بکٹ کہانی نولکشور پریس لکھنؤ میں چھپنے لگی ہے تو کسی نے اسے ٹھیک کیا ہے اور اس کے شعر جگہ جگہ سے بدلے ہیں لیکن مطلب وہی رکھا ہے کیونکہ جو زبان اس میں ہے اور جس کے نمونے میں نے اپنے لیکھ میں دیے ہیں وہ زبان ۱۱ ویں صدی ہجری میں نہیں ہو سکتی.

افضل کو الہ آبادی کہلانے کی وجہ یہ تھی کہ منشی کریم الدین اور فیلن کے تذکرے "طبقات الشعرا" کے صفحہ ۲۵۹ میں افضل کو الہ آباد کا لکھا گیا ہے اور بکٹ کہانی کا لکھنے والا بھی انہیں کو بتایا گیا ہے لیکن معلوم ہوتا ہے کہ فیلن اور منشی کریم الدین [illegible]

हमारी राय

नेपाली समझौता—

हिन्दुस्तान से लगी हुई उत्तर की हद पर नैपाल रियासत है. यह अंग्रेजों के यहाँ रहते हुए पूरी आजाद तो नहीं पर आजाद जैसी थी. अंग्रेजी फ़ौजों को लड़ाई के लिये सिपाही देना उसका खास काम रहा है. हाल की बड़ी लड़ाई में उसने एक लाख सिपाही दिये. आज भी हिन्दुस्तानी फ़ौज में उसके सत्ताईस बटेलियन हैं. नैपाली लोग सूरत शकल में तो चीनी हैं पर रहन सहन और धरम करम में हर तरह हिन्दुस्तानी हैं. नैपाल का हिन्दुस्तान तीर्थ है और उसी तरह नैपाल हिन्दुस्तान का तीर्थ है. यों नैपाल एक हिन्दू रियासत भी है. और हिन्दू होने के नाते गोरखा पलटनों के बटवारे में पाकिस्तान को हिस्सा नहीं मिल सका क्योंकि पाकिस्तान अपने को पाकिस्तानी नेशन न मान कर मुसलमानी नेशन मानता है. इसलिये गोरखों की सत्ताईस की सत्ताईस पलटन हिन्दुस्तान को मिलनी चाहिये थी. पर तराजू पकड़ने वाला बर्तानिया उन में से हिस्सा बांट सका. वह चाहता तो यह था कि सब की सब गोरखा पलटनें उसे ही मिल जायें और इसके लिये उसने सीधे नैपाल से [illegible] भी [illegible] पर हिन्दुस्तान उसे बर्दाश्त न कर सका. अंग्रेजों [illegible] पलटनों पर कोई हक होना तो नहीं चाहिये, वह सब की सब हिन्दुस्तान को ही मिलनी चाहियें, पर मुश्किल यह है कि —

ہماری رائے

نیپالی سمجھوتا—

ہندستان سے لگی ہوئی اُتر کی حد پر نیپال ریاست ہے۔ انگریزوں کے یہاں رہتے ہوئے پوری آزاد تو نہیں پر آزاد جیسی تھی۔ انگریزی فوجوں کو لڑائی کے لئے سپاہی دینا اس کا خاص کام رہا ہے۔ حال کی بڑی لڑائی میں اس نے ایک لاکھ سپاہی دئے۔ آج بھی ہندستانی فوج میں اس کے ستائیس بٹیلین ہیں۔ نیپالی لوگ صورت شکل میں تو چینی ہیں پر رہن سہن اور دھرم کرم میں ہر طرح ہندستانی ہیں۔ نیپال کا ہندستان تیرتھ ہے اور اسی طرح نیپال ہندستان کا تیرتھ ہے۔ یوں نیپال ایک ہندو ریاست بھی ہے۔ اور ہندو ہونے کے ناتے گورکھا پلٹنوں کے بٹوارے میں پاکستان کو حصہ نہیں مل سکا کیونکہ پاکستان اپنے کو پاکستانی نیشن نہ مان کر مسلمانی نیشن مانتا ہے اس لئے گورکھوں کی ستائیس کی ستائیس پلٹن ہندستان کو ملنی چاہئے تھی۔ پر ترازو پکڑنے والا برطانیہ ان میں سے حصہ بانٹ سکا۔ وہ چاہتا تو یہ تھا کہ سب کی سب گورکھا پلٹنیں اسے ہی مل جائیں اور اس کے لئے اس نے سیدھے نیپال سے [illegible] پر ہندستان اسے برداشت نہ کر سکا۔ انگریزوں [illegible] سب کی [illegible]

[illegible] रखते हुए वह उस तरफ बढ़ जाते हैं
जिधर [illegible] जाना है, जिधर जाने का हुक्म उन्हें उस ईश्वर से
मिला है जो उनके अन्दर बैठा है. हम समझते हैं कि हैदराबाद की
[illegible] उसी ईश्वर की तरफ़ निगाह रखती हुई आगे बढ़ती चलेगी
और न मंज़िल तक पहुँचने में ऐसी आफ़तें ही आयेंगी जिनसे
आगे रास्ता एक दम बन्द हो जाए.

—भगवान दीन

हिन्दी या हिन्दुस्तानी—

यू० पी० और बिहार दोनों से ख़बरें आयी हैं कि वहाँ की
सरकारों ने 'हिन्दी' को अपने अपने सूबे की सरकारी भाषा और
[illegible] को [illegible] अकेला लिपि अैलान कर दिया. अिन अैलानों
पर कार्रवाई भी होने लगी. यू० पी० सरकार की तरफ़ से जो दलीलें
[illegible] दी गयी हैं अुनमें से अेक यह है कि अगर हिन्दुस्तान
[illegible] रहता, तो हिन्दुस्तानी बोली या दोनों लिपियों की बात सोची
जा सकती थी, पर अब पाकिस्तान के अलग हो जाने से बात बदल
गयी. जिसका मतलब यह हुआ कि पाकिस्तान बनते ही अुस
[illegible] की मुस्लिम लीग के 'दो नेशन' या 'दो राष्ट्र' के अुसूल के
[illegible] हमने भी सिर झुका दिया. 'अुस समय की' ये शब्द
[illegible] जानबूझ कर लिखे हैं, क्यों कि मुस्लिम लीग के कुछ सोचने
[illegible] भी अब यह कहने लगे हैं कि पाकिस्तान के हिन्दू, मुसलमान
[illegible] मिलकर अेक 'नेशन' हैं और हिन्दुस्तान के हिन्दू,
[illegible] मिलकर दूसरी 'नेशन'. जिस तरह लगनी बीमारियों
[illegible] बीमार [illegible] लगता है, वो दूसरे नये बीमार का

[illegible] اٹھ [illegible] ہوئے وہ اُس طرف بڑھ جاتے ہیں
جدھر [illegible] جانا ہو، جدھر جانے کا حکم اُنھیں اُس ایشور سے ملا ہو
جو اُن کے اندر بیٹھا ہو. ہم سمجھتے ہیں کہ حیدرآباد کی جنتا اُسی ایشور
کی طرف نگاہ رکھتی ہوئی آگے بڑھتی چلے گی اور نہ منزل تک پہنچنے میں
ایسی آفتیں ہی آئیں گی جن سے آگے راستہ ایک دم بند ہو جائے.

—بھگوان دین

ہندی یا ہندستانی—

یو. پی. اور بہار دونوں سے خبریں آئی ہیں کہ وہاں کی سرکاروں
نے 'ہندی' کو اپنے اپنے صوبے کی سرکاری بھاشا اور دیوناگری کو اُس
کی اکیلی لپی اعلان کر دیا. اِن اعلانوں پر کارروائی بھی ہونے لگی.
یو. پی. سرکار کی طرف سے جو دلیلیں اِس کے لئے دی گئی ہیں اُن
میں سے ایک یہ ہے کہ اگر ہندستان ایک رہتا، تو ہندستانی بولی یا
دونوں لپیوں کی بات سوچی جا سکتی تھی. پر اب پاکستان کے الگ
ہو جانے سے بات بدل گئی. اِس کا مطلب یہ ہوا کہ پاکستان بنتے
ہی اُس سمے کی مسلم لیگ کے 'دو نیشن' یا 'دو راشٹر' کے اُصول
کے سامنے ہم نے بھی سر جھکا دیا. 'اُس سمے کی' یہ شبد
[illegible] بوجھ کر لکھے ہیں، کیونکہ مسلم لیگ کے کچھ سوچنے
[illegible] بھی اب یہ کہنے لگے ہیں کہ پاکستان کے ہندو مسلمان اور
[illegible] مل کر ایک 'نیشن' ہیں اور ہندستان کے ہندو،
[illegible] مل کر دوسری 'نیشن'. جس طرح لگنی بیماریوں
[illegible] بیمار [illegible] ہو [illegible] ہونے سے بیمار کا

[illegible] है, अुसी तरह जिस मामले में अेक तरफ़ का रोग [घटता] दिखाओ दे रहा है, वो दूसरी तरफ़ का बढ़ता दीख [रहा] है.

[पाकिस्तान] बन जाने से अेक राष्ट्र मानने वालों का असूल नहीं [बदल] सकता. अगर हमारे दिलों में पहले से पाप छिपा नहीं था, तो [अुसूल] [इतनी] कच्ची चीज़ नहीं होते. चार करोड़ से अूपर मुसल-[मानों] और लाखों औसाअियों, पारसियों और दूसरे मजहब वालों के रहते हिन्दुस्तान को अपने पुराने दावे की सचाओ साबित करने का [काफ़ी] मौक़ा है. यही हमारी परख का वक़्त है.

हम बार बार कह चुके हैं कि हिन्दी, अुर्दू और हिन्दुस्तानी तीन [अलग] अलग ज़बानें नहीं हैं. दुनिया की सब ज़बानें अेक दूसरी के [भंडारों] से लेती देती रहती हैं. विद्वानों का मत है कि पाणिनी के समय की संस्कृत भी, जिसे आजकल शुद्ध संस्कृत कहा जाता है, अेक [मिली] जुली ज़बान है. उसमें बेशुमार शब्द दूसरे देशों की भाषाओं के हैं. अुसे अुस समय की हिन्दुस्तानी कहना भी बेजा न होगा. [भाषा] के चालू और आमफ़हम शब्दों को छोड़कर अुसे संस्कृतमयी बनाने की कोशिश करना आम जनता से दुश्मनी करना है, मुल्क में [फूट] के पौधों को सींचना है और अुलटी गंगा बहाने की कोशिश करना है.

अुर्दू हिन्दुस्तान से बाहर किसी देश की ज़बान नहीं है. वह यहीं [पैदा] हुआी और यहीं फली-फूली. अुर्दू के पुराने शायरों, हिन्दु-[illegible] और अुर्दू साहित्य को [illegible]

[illegible]

[illegible] ہو، اسی طرح جس معاملے میں ایک طرف کا روگ کچھ گھٹتا [دکھائی دے رہا] ہو، دوسری طرف کا بڑھتا دکھائی دیتا ہے۔

پاکستان بن جانے سے ایک راشٹر ماننے والوں کا اصول [نہیں بدل سکتا]۔ اگر ہمارے دلوں میں پہلے سے پاپ چھپا نہیں تھا، تو [اصول] اتنی کچی چیز نہیں ہوتے۔ چار کروڑ سے اوپر مسلمانوں اور [لاکھوں] عیسائیوں، پارسیوں اور دوسرے مذہب والوں کے رہتے ہندستان کو اپنے پرانے دعوے کی سچائی ثابت کرنے کا کافی موقع ہے۔ [یہی] ہماری پرکھ کا وقت ہے۔

ہم بار بار کہہ چکے ہیں کہ ہندی، اردو اور ہندستانی تین الگ الگ زبانیں نہیں ہیں۔ دنیا کی سب زبانیں ایک دوسرے کے بھنڈاروں سے لیتی دیتی رہتی ہیں۔ ودوانوں کا مت ہے کہ پاننی کے [سمے] کی سنسکرت بھی، جسے آج کل شدھ [سنسکرت] کہا جاتا ہے، ایک ملی جلی زبان ہے۔ اس میں بے شمار شبد دوسرے دیشوں کی بھاشاؤں کے ہیں۔ اسے اس سمے کی ہندستانی کہنا بھی بے جا نہ ہوگا۔ بھاشا کے چالو اور عام فہم شبدوں کو چھوڑ کر اسے سنسکرت مئی بنانے کی کوشش کرنا عام جنتا سے دشمنی کرنا ہے، ملک میں پھوٹ کے [پودوں کو] سینچنا ہے اور الٹی گنگا بہانے کی کوشش کرنا ہے۔

اردو ہندستان سے باہر کسی دیش کی زبان نہیں ہے۔ وہ یہیں [پیدا ہوئی اور یہیں] پھلی پھولی۔ اردو کے پرانے شاعروں، [illegible]

[illegible]

[illegible] गये. अिस मामले की बाबत १८ जनवरी, १८४३ को लॉर्ड ऐलनबरा ने ड्यूक ऑफ़ वेलिंगटन के नाम एक ख़त में लिखा था — "मुझे हर तरह से यक़ीन है कि सोमनाथ के मन्दिर के किवाड़ों को फिर से वहाँ ले जाकर लगाने की तजवीज़ से हिन्दुओं की बहुत बड़ी तादाद हमसे ख़ुश हो गई है और हमारी दोस्त बन गई है. मेरे पास यह मानने की कोई वजह नहीं है कि मुसलमान अिससे नाराज़ हुअे हों. पर मैं अिस बात से अपनी आँखें नहीं बन्द कर सकता कि मुसलमान क़ौम बुनियादी तौर पर हमारी दुश्मन है. अिसलिअे हमारी सच्ची चाल यही है कि हिन्दुओं को अपने दोस्त बनाकर रखें."

सोमनाथ के किवाड़ अफ़ग़ानिस्तान से हिन्दुस्तान लाये गये. हैदराबाद, सिंध, नैपाल, सागर, बुन्देलखण्ड और क़रीब क़रीब सारे हिन्दुस्तान में इसके ऐलान बाँटे गये. इन ऐलानों में सब हिन्दू सरदारों, राजाओं, महाराजाओं और हिन्दू प्रजा को मुसलमान बादशाहों की करतूतों की याद दिला-दिलाकर उन्हें हिन्दू धर्म का दुश्मन और अंगरेज़ सरकार को हिन्दू धर्म का दोस्त दिखलाया गया. किवाड़ों का जुलूस सारे पंजाब में निकाला गया. पर वे किवाड़ सोमनाथ तक पहुँचने की जगह आगरे से आगे न बढ़ सके.

कुछ लोगों को हैरानी हो रही थी कि जब कि अफ़ग़ानिस्तान पर हमला करने वाली १६००० की सारी अंग्रेज़ी फ़ौज में से सिर्फ़ एक अंग्रेज़ डॉक्टर ज़िन्दा बचकर हिन्दुस्तान लौट सका, तो ये किवाड़ अफ़ग़ानिस्तान से यहाँ तक कैसे आ सके. धीरे धीरे

گئے. اس معاملے کی بابت ۱۸ جنوری ۱۸۴۳ کو لارڈ ایلنبرو نے ڈیوک آف ویلنگٹن کے نام ایک خط میں لکھا کہ — "مجھے ہر طرح سے یقین ہے کہ سومناتھ کے مندر کے کواڑوں کو پھر سے لے جا کر لگانے کی تجویز سے ہندوؤں کی بہت بڑی تعداد ہم سے خوش ہو گئی ہے اور ہماری دوست بن گئی ہے. میرے پاس یہ ماننے کی کوئی وجہ نہیں ہے کہ مسلمان اس سے ناراض ہوئے ہوں. پر میں اس بات سے اپنی آنکھ نہیں بند کر سکتا کہ مسلمان قوم بنیادی طور پر ہماری دشمن ہے. اس لئے ہماری سچی چال یہی ہے کہ ہندوؤں کو اپنے دوست بنا کر رکھیں."

سومناتھ کے کواڑ افغانستان سے ہندستان لائے گئے. حیدرآباد، سندھ، نیپال، ساگر، بندیلکھنڈ اور قریب قریب سارے ہندستان میں اس کے اعلان بانٹے گئے. ان اعلانوں میں سب ہندو سرداروں، راجاؤں، مہاراجاؤں اور ہندو پرجا کو مسلمان بادشاہوں کی کرتوتوں کی یاد دلا دلا کر انھیں ہندو دھرم کا دشمن اور انگریز سرکار کو ہندو دھرم کا دوست دکھلایا گیا. کواڑوں کا جلوس سارے پنجاب میں نکالا گیا. پر وے کواڑ سومناتھ تک پہنچنے کی جگہ آگرے سے آگے نہ بڑھ سکے.

کچھ لوگوں کو حیرانی ہو رہی تھی کہ جب کہ افغانستان پر حملہ کرنے والی ۱۶۰۰۰ کی ساری انگریزی فوج میں سے صرف ایک انگریز ڈاکٹر برائیڈن زندہ بچ کر ہندستان لوٹ سکا، تو یہ کواڑ افغانستان سے یہاں تک کیسے آ سکے. دھیرے دھیرے

किवाड़ों के आगरे पहुँचते तक बात खुल गई कि वे किवाड़ सोमनाथ के मन्दिर के किवाड़ थे ही नहीं. जुलूस आगे न बढ़ सका. दोनों बनावटी किवाड़ आगरे के क़िले में रख दिये गये. उनपर यह साफ लिख कर टाँग दिया गया कि चूंकि बाद में पता चला कि किवाड़ बनावटी हैं इसलिये उन्हें आगे नहीं ले जाया गया. शायद इन्हीं बनावटी किवाड़ों को अब सोमनाथ के मन्दिर में ले जाकर लगाने की तजवीज़ हो रही है.

('हरिजन सेवक' से) —सुन्दरलाल

सिख भाइयों से—

इसलाम को इस देश में आए सात सौ बरस हो चुके थे. उस का शुरू का दौर ख़त्म हो चुका था. उसका सीधा सादा रूप बदल चुका था. दुनिया के दूसरे धर्मों की तरह हठ, कट्टरता और अंधी मानताओं के खोल उस पर चढ़ चुके थे. हिन्दुओं में भी ऊँच नीच, जात पात, छुआ छूत के अलावा तरह तरह की कुरीतियां और अंधी मानताएं सच्चे धर्म को ढके हुए थीं. हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों में अपनी अपनी ज़िद और निकम्मी बहसें जारी थीं. देश की उस समय की मज़हबी हालत की तसवीर कबीर साहब के इस दोहे में मौजूद है—

हिन्दू कहैं राम मोंहि प्यारा
मुसलमान रहिमाना
आपस में दोउ लरि लरि मूए

کواڑوں کے آگرے پہنچتے تک بات کھل گئی کہ وے کواڑ سومناتھ کے مندر کے کواڑ تھے ہی نہیں۔ جلوس آگے نہ بڑھ سکا۔ دونوں بناوٹی کواڑ آگرے کے قلعے میں رکھ دئے گئے۔ اُن پر یہ صاف لکھ کر ٹانگ دیا گیا کہ چونکہ بعد میں پتہ چلا کہ کواڑ بناوٹی ہیں اس لئے انھیں آگے نہیں لے جایا گیا۔ شاید انھیں بناوٹی کواڑوں کو اب سومناتھ کے مندر میں لے جاکر لگانے کی تجویز ہو رہی ہے۔

(ہریجن سیوک سے) — سندرلال

سکھ بھائیوں سے —

اسلام کو اس دیش میں آئے سات سو برس ہو چکے تھے۔ اُس کا شروع کا دور ختم ہو چکا تھا۔ اس کا سیدھا سادا روپ بدل چکا تھا۔ دنیا کے دوسرے دھرموں کی طرح ہٹ، کٹڑتا اور اندھی مانتاؤں کے خول اس پر چڑھ چکے تھے۔ ہندوؤں میں بھی اونچ نیچ، جات پات، چھوا چھوت کے علاوہ طرح طرح کی کُریتیاں اور اندھی مانتائیں سچے دھرم کو ڈھکے ہوئے تھیں۔ ہندوؤں اور مسلمانوں دونوں میں اپنی اپنی ضد اور نکمی بحثیں جاری تھیں۔ دیش کی اُس سمے کی مذہبی حالت کی تصویر کبیر صاحب کے اس دوہے میں موجود ہے —

ہندو کہیں رام موہیں پیارا
مسلمان رحمانا
آپس میں دوؤ لڑ لڑ موئے
مرم نہ کاہو جانا

इन दोनों धर्मों के निकम्मे रीत रिवाजों और अंधी मानताओं के मैल को उनके ऊपर से हटा कर उनकी बुनियादी एकता को चमकाने और उन्हें एक दूसरे के नज़दीक लाने के लिये जिन महान आत्माओं ने उस समय इस देश में जन्म लिया उनमें ख़ास नाम गुरु नानक का है. गुरु नानक को मानव धर्म यानी मज़हबे इन्सानियत के बड़े से बड़े प्रचारकों में गिना जाता है. मानव धर्म का नाम ही प्रेम धर्म या मज़हबे इश्क़ है.

मक्के और रामेश्वर दोनों की गुरु नानक ने यात्रा की. उनका सारा रहन सहन एक मिला जुला रहन सहन था. सिखों की पाक किताब ग्रन्थ साहब में गुरु नानक के बताए हुए धर्म की पूरी तसवीर मौजूद है. गुरु नानक का धर्म हिन्दू और मुसलमानों के मेल का धर्म था. "नानक पैग़म्बरे बूद" की कहावत सरहद और उसके पार के मुसलमानों में सदियों सुनाई देती रही. उस समय के हिन्दू धर्म को अगर गंगा और इसलाम को जमना माना जावे तो गुरु नानक का धर्म प्रयाग का संगम था. आदमी आदमी की बराबरी का ज़िक्र करते हुए उन्होंने लिखा है—

अव्वल अल्लाह नूर उपाया
कुदरत दे सब बन्दे
इक नूर ते सब जग उपज्या
कौन भले कौन मन्दे

हिन्दू और मुसलमानों के आपसी झगड़ों को उन्होंने बड़े दर्द भरे शब्दों में बयान किया है और उन झगड़ों ही की बिना पर अपने को हिन्दू या मुसलमान कहने से साफ़ इनकार किया.

ان دونوں دھرموں کے نکمے ریت رواجوں اور اندھی مانتاؤں کے میل کو اُن کے اوپر سے ہٹا کر اُن کی بنیادی ایکتا کو چمکانے اور انھیں ایک دوسرے کے نزدیک لانے کے لئے جن مہان آتماؤں نے اُس سمے اِس دیش میں جنم لیا اُن میں خاص نام گرو نانک کا ہے. گرو نانک کو مانو دھرم یعنی مذہبِ انسانیت کے بڑے سے بڑے پرچارکوں میں گنا جاتا ہے. مانو دھرم کا نام ہی پریم دھرم یا مذہبِ عشق ہے.

مکے اور رامیشور دونوں کی گرو نانک نے یاترا کی. اُن کا سارا رہن سہن ایک ملا جلا رہن سہن تھا. سکھوں کی پاک کتاب گرنتھ صاحب میں گرو نانک کے بتائے ہوئے دھرم کی پوری تصویر موجود ہے. گرو نانک کا دھرم ہندو اور مسلمانوں کے میل کا دھرم تھا. "نانک پیغمبر بود" کی کہاوت سرحد اور اس کے پار کے مسلمانوں میں صدیوں سنائی دیتی رہی. اُس سمے کے ہندو دھرم کو اگر گنگا اور اسلام کو جمنا مانا جاوے تو گرو نانک کا دھرم پریاگ کا سنگم تھا. آدمی آدمی کی برابری کا ذکر کرتے ہوئے اُنھوں نے لکھا ہے—

اوّل اللہ نور اُپایا
قدرت دے سب بندے
اک نور تے سب جگ اُپجیا
کون بھلے کون مندے

ہندو اور مسلمانوں کے آپسی جھگڑوں کو اُنھوں نے بڑے درد بھرے شبدوں میں بیان کیا ہے اور اُن جھگڑوں ہی کی بنا پر اپنے کو ہندو یا مسلمان کہنے سے صاف انکار کیا.

तग्गा न हिन्दू पाइया, तग्गा न मूसलमान
दावा राम रहीम कर, लड़दे बेईमान
न हम हिन्दू न मुसलमान, दोनों बिच बसे शैतान

ग्रन्थ साहब की भाषा इधर से उधर तक मिली जुली भाषा है. 'साहब' शब्द खुद अरबी का है. इस निगाह से ग्रन्थ साहब की भाषा सच्ची हिन्दुस्तानी है. ईश्वर के नामों में अल्लाह नाम ग्रन्थ साहब में एक बार नहीं सैकड़ों बार आया है. ईश्वर के दूसरे फ़ारसी और अरबी नाम भी ग्रन्थ साहब में भरे पड़े हैं. सिख गुरुओं के अलावा और भी बहुत से सन्तों, भक्तों और अल्लाह वालों की बानी ग्रन्थ साहब में मौजूद है जिनमें कम से कम चार मुसलमान थे. गुरु अरजुन देव को जब अमृतसर के गुरुद्वारे की नींव रखाने की जरूरत पड़ी तो उन्होंने मुसलमान फ़कीर साईं मियां मीर को इस पाक काम के लिये चुना. गुरुद्वारे की नींव साईं मियां मीर ही के हाथ की रखी हुई है. सिख धर्म की यह सुन्दरता आखीर तक इसी तरह बनी रही. दशम ग्रन्थ को पढ़ने से पता चलता है कि इस बारे में पहले नौ गुरुओं के विचारों और गुरु गोविन्द सिंह के विचारों में कोई फ़रक़ नहीं है. गुरु गोविन्द सिंह का एक पद है—

कोऊ भयो मुंडिया सन्यासी कोऊ योगी भयो
कोऊ ब्रह्मचारी, कोऊ जतियन मानबो
हिन्दू तुरक कोऊ, राफ़ज़ी इमाम शाफ़ी
मानस की जात सबै इक्कै पहचानबो
करता करीम सोई राज़िक़ रहीम ओई

تگّا نہ ہندو پائیا، تگّا نہ مسلمان
داوا رام رحیم کرا، لڑدے بے ایمان
نہ ہم ہندو نہ مسلمان، دونوں بیچ بسے شیطان

گرنتھ صاحب کی بھاشا اِدھر سے اُدھر تک ملی جلی بھاشا ہے۔ 'صاحب' شبد خود عربی کا ہے۔ اِس نگاہ سے گرنتھ صاحب کی بھاشا سچّی ہندستانی ہے۔ ایشور کے ناموں میں اللہ نام گرنتھ صاحب میں ایک بار نہیں سیکڑوں بار آیا ہے۔ ایشور کے دوسرے فارسی اور عربی نام بھی گرنتھ صاحب میں بھرے پڑے ہیں۔ سِکھ گروؤں کے علاوہ اور بھی بہت سے سنتوں، بھگتوں اور اللہ والوں کی بانی گرنتھ صاحب میں موجود ہے جن میں کم سے کم چار مسلمان تھے۔ گرو ارجن دیو کو جب امرتسر کے گردوارے کی نیو رکھانے کی ضرورت پڑی تو انھوں نے مسلمان فقیر سائیں میاں میر کو اِس پاک کام کے لئے چُنا۔ گردوارے کی نیو سائیں میاں میر ہی کے ہاتھ کی رکھی ہوئی ہے۔ سِکھ دھرم کی یہ سُندرتا آخیر تک اِسی طرح بنی رہی۔ دشم گرنتھ کو پڑھنے سے پتہ چلتا ہے کہ اِس بارے میں پہلے نو گروؤں کے وچاروں اور گرو گووند سنگھ کے وچاروں میں کوئی فرق نہیں ہے۔ گرو گووند سنگھ کا ایک پد ہے—

کوؤ بھیو مُنڈیا سنیاسی کوئی یوگی بھیو
کوؤ برہمچاری، کوؤ جتیین مانبو
ہندو ترک کوؤ، رافضی امام شافعی
مانس کی جات سبے اِکّے پہچانبو
کرتا کریم سوئی رازق رحیم اوئی

दूसरो न भेद कोई भूल भ्रम मानबो
एक ही की सेव, सब ही को गुरु देव एक
एक ही सरूप सबै एकै जोत जानबो
देहुरा मसीत सोई, पूजा और नमाज ओई
मानस सबै एक पै अनेक को भ्रमाव है
देवता अदेव जच्छ गंधर्व तुरुक हिन्दू
न्यारे न्यारे देसन के भेसन को प्रभाव है
एकै नैन एकै कान एकै देह एकै बानि
खाक बाद आतिश औ आब को रलाव है
अल्लाह अभेद सोई पुरान औ कुरान ओई
एकही सरूप सबै एक ही बनाव है

पर आज उसी ग्रन्थ साहब और उन ही सिख गुरुओं के कुछ पैरो 'अल्लाह' नाम के लिये जाने और 'क़ुरान' के पढ़े जाने पर एतराज करते हैं. किसी दूसरे के कोई ग़लती करने की वजह से सिख गुरुओं ने अपने धर्म के इस व्यापक रूप को नहीं बदला. बदल भी नहीं सकते थे. बदलते तो सिख धर्म सिख धर्म न रह जाता. ग्रन्थ साहब को नहीं बदला जा सकता था. उस ग्रन्थ साहब को जिस का रुतबा दुनिया के धर्म ग्रन्थों में ऊँचे से ऊँचा है, जो दुनिया के अमर ग्रन्थों में से है और अनन्त काल के लिये आदमी को कल्याण का सच्चा रास्ता बताने वाला है.

लगभग सब सिख गुरु फ़ारसी के ऊँचे दरजे के कवि थे और उस भाषा में खूब कविता करते थे. ग्रन्थ साहब खुद देश की उस समय की सब भाषाओं का भंडार है. वह प्रेम, मेल और

دوسرو نہ بھید کوئی بھول بھرم مانبو
ایک ہی کی سیوا سب ہی کو گرو دیو ایک
ایک ہی سروپ سبے ایکے جوت جانبو
دیہورا مسیت سوئی، پوجا اور نماج اوئی
مانس سبے ایک پے انیک کو بھرماو ہے
دیوتا ادیو جچھ گندھرو ترک ہندو
نیارے نیارے دیسن کے بھیسن کو پربھاو ہے
ایکے نین ایکے کان ایکے دیہہ ایکے بانی
خاک باد آتش او آب کو رلاو ہے
اللہ ابھید سوئی پران او قرآن اوئی
ایک ہی سروپ سبے ایک ہی بناو ہے

پر آج اسی گرنتھ صاحب اور ان ہی سکھ گروؤں کے کچھ پیرو "اللہ" نام کے لئے جانے اور "قرآن" کے پڑھے جانے پر اعتراض کرتے ہیں. کسی دوسرے کے کوئی غلطی کرنے کی وجہ سے سکھ گروؤں نے اپنے دھرم کے اس ویاپک روپ کو نہیں بدلا. بدل بھی نہیں سکتے تھے. بدلتے تو سکھ دھرم سکھ دھرم نہ رہ جاتا. گرنتھ صاحب کو نہیں بدلا جا سکتا تھا. اس گرنتھ صاحب کو جس کا رتبہ دنیا کے دھرم گرنتھوں میں اونچے سے اونچا ہے، جو دنیا کے امر گرنتھوں میں سے ہے اور اننت کال کے لئے آدمی کے کلیان کا سچا راستہ بتانے والا ہے.

لگ بھگ سب سکھ گرو فارسی کے اونچے درجے کے کوی تھے اور اس بھاشا میں خوب کویتا کرتے تھے. گرنتھ صاحب خود دیش کی اس سمے کی سب بھاشاؤں کا بھنڈار ہے. وہ پریم، میل اور

एकता का अपंक समुद्र है. फिर भी आज अनेक सिख भाई हैं जिन्हें उर्दू और उर्दू लिपि से परहेज़ है.

दिल्ली के एक सिख गुरुद्वारे 'बंगला साहब' के फाटक पर उर्दू के 'क़याम किया' का हिन्दी तरजुमा 'प्रवेश किया' पढ़ कर हमें दुख और अचरज हुआ. जो आदमी सिर्फ़ नागरी ही पढ़े और उर्दू या अंगरेज़ी न पढ़े वह मतलब भी ग़लत समझ सकता है. 'क़याम किया' 'आराम किया' या 'ठहरे' कौन नहीं समझ सकता ? उर्दू भाषा, या उर्दू लिपि या किसी भी ज़बान के चालू शब्दों का बायकाट, या भाषा के मामले में इस तरह का भेद भाव उदार सिख पंथ, ग्रन्थ साहब, और सिख मर्यादा तीनों के ख़िलाफ़ है.

पूजा पाठ आदि से कहीं बढ़कर जोर सिख धर्म में 'न्याव' 'नेकी' 'क्षिमा' 'दया' और सदाचार पर दिया गया है. पर आज यह कहते हुए हमें लज्जा और दुख हो रहा है कि सन् १९४७ के काले से काले पापों में, जिन्होंने हमें सारी दुनिया की निगाह में ज़लील कर दिया, सिख धर्म के मानने वाले हिन्दू या मुसलमान, किसी से किसी तरह भी कम नहीं रहे. चलती रेलों में से दूसरे मज़हब वाले मुसाफ़िरों को उठा कर फेंक देने की दर्दनाक घटनाएं इस महीने के शुरू तक सुनाई दी हैं और फेंकने वालों में ज़्यादातर नाम सिख भाइयों ही का लिया जाता है. आम शिकायत है कि आबादियों के बदलाव में जहां जहां सिखों की तादाद बढ़ी है वहां वहां शराब की बिकरी भी बढ़ी है. इससे भद्दी शिकायतें भी हो चुकी हैं. हम यह बातें बड़े दुख के साथ लिख रहे हैं. सिख नेताओं और सिख

ایکتا کا اپل سمندر ہے۔ پھر بھی آج انیک سکھ بھائی ہیں جنھیں اُردو اور اُردو لپی سے پرہیز ہے۔

دلی کے ایک سکھ گوردوارے 'بنگلا صاحب' کے پھاٹک پر اُردو کے 'قیام کیا' کا ہندی ترجمہ 'پرویش کیا' پڑھ کر ہمیں دُکھ اور اچرج ہوا۔ جو آدمی صرف ناگری ہی پڑھے اور اُردو یا انگریزی نہ پڑھے وہ مطلب بھی غلط سمجھ سکتا ہے۔ 'قیام کیا' 'آرام کیا' یا 'ٹھہرے' کون نہیں سمجھ سکتا؟ اُردو بھاشا، یا اُردو لپی یا کسی بھی زبان کے چالو شبدوں کا بائیکاٹ، یا بھاشا کے معاملے میں اس طرح کا بھید بھاؤ اُدار سکھ پنتھ، گرنتھ صاحب، اور سکھ مریادا تینوں کے خلاف ہے۔

پوجا پاٹھ آدی سے کہیں بڑھ کر زور سکھ دھرم میں 'نیاؤ' 'نیکی' 'چھما' 'دیا' اور سداچار پر دیا گیا ہے۔ پر آج یہ کہتے ہوئے ہمیں لجا اور دُکھ ہو رہا ہے کہ سن ۱۹۴۷ء کے کالے سے کالے پاپوں میں، جنھوں نے ہمیں ساری دُنیا کی نگاہ میں ذلیل کر دیا، سکھ دھرم کے ماننے والے ہندو یا مسلمان، کسی سے کسی طرح بھی کم نہیں رہے۔ چلتی ریلوں میں سے دوسرے مذہب والے مسافروں کو اٹھا کر پھینک دینے کی دردناک گھٹنائیں اس مہینے کے شروع تک سنائی دی ہیں اور پھینکنے والوں میں زیادہ تر نام سکھ بھائیوں ہی کا لیا جاتا ہے۔ عام شکایت ہے کہ آبادیوں کے بدلاؤ میں جہاں جہاں سکھوں کی تعداد بڑھی ہے وہاں وہاں شراب کی بکری بھی بڑھی ہے۔ اس سے بھدی شکایتیں بھی ہو چکی ہیں۔ ہم یہ باتیں بڑے دُکھ کے ساتھ لکھ رہے ہیں۔ سکھ نیتاؤں

दूसरो न भेद कोई भूल भ्रम मानबो
एक ही की सेव, सब ही को गुरु देव एक
एक ही सरूप सबै एकै जोत जानबो
देहुरा मसीत सोई, पूजा और नमाज ओई
मानस सबै एक पै अनेक को भ्रमाव है
देवता अदेव जच्छ गंधर्व तुरुक हिन्दू
न्यारे न्यारे देसन के भेसन को प्रभाव है
एकै नैन एकै कान एकै देह एकै बानि
खाक बाद आतिश औ आब को रलाव है
अल्लाह अभेद सोई पुरान औ कुरान ओई
एकही सरूप सबै एकही बनाव है

पर आज उसी ग्रन्थ साहब और उन ही सिख गुरुओं के कुछ पैरो 'अल्लाह' नाम के लिये जाने और 'क़ुरान' के पढ़े जाने पर एतराज़ करते हैं. किसी दूसरे के कोई ग़लती करने की वजह से सिख गुरुओं ने अपने धर्म के इस व्यापक रूप को नहीं बदला. बदल भी नहीं सकते थे. बदलते तो सिख धर्म सिख धर्म न रह जाता. ग्रन्थ साहब को नहीं बदला जा सकता था. उस ग्रन्थ साहब को जिस का दरजा दुनिया के धर्म ग्रन्थों में ऊँचे से ऊँचा है, जो दुनिया के अमर ग्रन्थों में से है और अनन्त काल के लिये आदमी को कल्याण का सच्चा रास्ता बताने वाला है.

लगभग सब सिख गुरु फ़ारसी के ऊँचे दरजे के कवि थे और उस भाषा में ख़ूब कविता करते थे. ग्रन्थ साहब ख़ुद देश की उस समय की सब भाषाओं का भंडार है. वह प्रेम, मेल और

دوسرو نہ بھید کوئی بھول بھرم مانبو
ایک ہی کی سیوا سب ہی کو گرو دیو ایک
ایک ہی سروپ سبے اکے جوت جانبو
دیہورا مسیت سوئی، پوجا اور نماج اوئی
مانس سبے ایک پے انیک کو بھرماو ہے
دیوتا ادیو جچھہ گندھرو ترک ہندو
نیارے نیارے دیسن کے بھیس کو پربھاو ہے
اکے نین اکے کان اکے دیہہ اکے بانی
خاک باد آتش او آب کو رلاو ہے
اللہ ابھید سوئی پُران او قرآن اوئی
ایک ہی سروپ سبے ایک ہی بناو ہے

پر آج اُسی گرنتھ صاحب اور اُن ہی سکھ گروؤں کے کچھ پیرو 'اللہ' نام کے لئے جانے اور 'قرآن' کے پڑھے جانے پر اعتراض کرتے ہیں. کسی دوسرے کے کوئی غلطی کرنے کی وجہ سے سکھ گروؤں نے اپنے دھرم کے اِس ویاپک روپ کو نہیں بدلا. بدل بھی نہیں سکتے تھے. بدلتے تو سکھ دھرم سکھ دھرم نہ رہ جاتا. گرنتھ صاحب کو نہیں بدلا جا سکتا تھا. اُس گرنتھ صاحب کو جس کا مرتبہ دُنیا کے دھرم گرنتھوں میں اونچے سے اونچا ہے، جو دُنیا کے امر گرنتھوں میں سے ہے اور اننت کال کے لئے آدمی کے کلیان کا سچا راستہ بتانے والا ہے.

لگ بھگ سب سکھ گرو فارسی کے اونچے درجے کے کوی تھے اور اُس بھاشا میں خوب کویتا کرتے تھے. گرنتھ صاحب خود دیش کی اُس سمے کی سب بھاشاؤں کا بھنڈار ہے. وہ پریم، میل اور

एकता का अचल समुद्र है. फिर भी आज अनेक सिख भाई हैं जिन्हें उर्दू और उर्दू लिपि से परहेज़ है.

दिल्ली के एक सिख गुरुद्वारे 'बंगला साहब' के फाटक पर उर्दू के 'क़याम किया' का हिन्दी तरजुमा 'प्रवेश किया' पढ़ कर हमें दुख और अचरज हुआ. जो आदमी सिर्फ़ नागरी ही पढ़े और उर्दू या अंगरेज़ी न पढ़े वह मतलब भी ग़लत समझ सकता है. 'क़याम किया' 'आराम किया' या 'ठहरे' कौन नहीं समझ सकता ? उर्दू भाषा, या उर्दू लिपि या किसी भी ज़बान के चालू शब्दों का बायकाट, या भाषा के मामले में इस तरह का भेद भाव उदार सिख पंथ, ग्रन्थ साहब, और सिख मर्यादा तीनों के ख़िलाफ़ है.

पूजा पाठ आदि से कहीं बढ़कर ज़ोर सिख धर्म में 'न्याव' 'नेकी' 'छिमा' 'दया' और सदाचार पर दिया गया है. पर आज यह कहते हुए हमें लज्जा और दुख हो रहा है कि सन् १९४७ के काले से काले पापों में, जिन्होंने हमें सारी दुनिया की निगाह में ज़लील कर दिया, सिख धर्म के मानने वाले हिन्दू या मुसलमान, किसी से किसी तरह भी कम नहीं रहे. चलती रेलों में से दूसरे मज़हब वाले मुसाफ़िरों को उठा कर फेंक देने की दर्दनाक घटनाएं इस महीने के शुरू तक सुनाई दी हैं और फेंकने वालों में ज़्यादातर नाम सिख भाइयों ही का लिया जाता है. आम शिकायत है कि आबादियों के बदलाव में जहां जहां सिखों की तादाद बढ़ी है वहां वहां शराब की बिकरी भी बढ़ी है. इससे भद्दी शिकायतें भी हो चुकी हैं. हम यह बातें बड़े दुख के साथ लिख रहे हैं. सिख नेताओं और सिख क़ौम के बुज़ुर्गों से हमारी आजिज़ी के साथ प्रार्थना है कि वह

ایکتا کا اچل سمندر ہے۔ پھر بھی آج انیک سکھ بھائی ہیں جنھیں اُردو اور اُردو لپی سے پرہیز ہے۔

دلی کے ایک سکھ گوردوارے "بنگلا صاحب" کے پھاٹک پر اُردو کے "قیام کیا" کا ہندی ترجمہ "پرویش کیا" پڑھ کر ہمیں دکھ اور اچرج ہوا۔ جو آدمی صرف ناگری ہی پڑھے اور اُردو یا انگریزی نہ پڑھے وہ مطلب بھی غلط سمجھ سکتا ہے۔ "قیام کیا" "آرام کیا" یا "ٹھہرے" کون نہیں سمجھ سکتا؟ اُردو بھاشا، یا اُردو لپی یا کسی بھی زبان کے چالو شبدوں کا بائیکاٹ، یا بھاشا کے معاملے میں اِس طرح کا بھید بھاؤ اُدار سکھ پنتھ، گرنتھ صاحب، اور سکھ مریادا تینوں کے خلاف ہے۔

پوجا پاٹھ آدی سے کہیں بڑھ کر زور سکھ دھرم میں "نیاؤ" "نیکی" "چھما" "دیا" اور سداچار پر دیا گیا ہے۔ پر آج یہ کہتے ہوئے ہمیں لجا اور دکھ ہو رہا ہے کہ سنہ ۱۹۴۷ء کے کالے سے کالے پاپوں میں، جنھوں نے ہمیں ساری دنیا کی نگاہ میں ذلیل کر دیا، سکھ دھرم کے ماننے والے ہندو یا مسلمان، کسی سے کسی طرح بھی کم نہیں رہے۔ چلتی ریلوں میں سے دوسرے مذہب والے مسافروں کو اٹھا کر پھینک دینے کی دردناک گھٹنائیں اِس مہینے کے شروع تک سنائی دی ہیں اور پھینکنے والوں میں زیادہ تر نام سکھ بھائیوں ہی کا لیا جاتا ہے۔ عام شکایت ہے کہ آبادیوں کے بدلاؤ میں جہاں جہاں سکھوں کی تعداد بڑھی ہے وہاں وہاں شراب کی بکری بھی بڑھی ہے۔ اِس سے بھدی شکایتیں بھی ہو چکی ہیں۔ ہم یہ باتیں بڑے دکھ کے ساتھ لکھ رہے ہیں۔ سکھ نیتاؤں اور سکھ قوم کے بزرگوں سے ہماری عاجزی کے ساتھ پرارتھنا ہے کہ

"गीता और क़ुरान"

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले देकर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों को बयान किया गया है।

इसके बाद गीता के लिखे जाने के वक़्त की इस देश की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है।

आखिर में क़ुरान से पहले की अरब की हालत, क़ुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर क़ुरान की तालीम को बयान किया गया है। इस में क़ुरान की पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ़्ज़ी तरजुमा दिया गया है। यह भी बताया गया है कि क़ुरान में जेहाद, आक़ेबत, आख़ेरत, जन्नत, जहन्नम, काफ़िर वग़ैरा किसे कहा गया है।

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की इन दो अमर पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिये।

किताब आसान हिन्दुस्तानी ज़बान में, नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकती है। पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपए। डाक ख़र्च अलग।

मैनेजर "नया हिन्द"

४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

"گیتا اور قرآن"

لیکھک - پنڈت سندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیا ہے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دے کر ملتی جلتی بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ہے۔

اسکے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اس دیش کی حالت، گیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ہے۔

آخر میں قرآن سے پہلے عرب کی حالت، قرآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پر قرآن کی تعلیم کو بیان کیا گیا ہے۔ اسمیں قرآن کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ہے۔ یہ بھی بتایا گیا ہے کہ قرآن میں جہاد، عاقبت، آخرت، جنت، جہنم، کافر وغیرہ کسے کہا گیا ہے۔

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاہیں یا ہندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو امر پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاہیں انہیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاہئے۔

کتاب ہندستانی زبان میں ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہے۔ پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ - ڈاک خرچ الگ

منیجر "نیا ہند"

۴۸ - بائی کا باغ، الہ آباد

Printer—Bishambhar Nath, Vishwavani Press, South Malaka, Allahabad.

Publisher—Bishambhar Nath for Hindustani Culture Society, 48 Bai ka Bagh, Allahabad.

نیا ہند

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडिटर—

ताराचन्द, भगवानदीन, मुज़फ्फ़र हसन, विशम्भरनाथ, सुन्दरलाल.

फ़रवरी १९४८

कथा-किस्से

कीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपए साल. बाहर दस रुपए साल. एक परचा दस आने.

मैनेजर

'नया हिन्द'

बाई का बाग, इलाहाबाद

ہندستانی کلچر سوسائٹی کا پرچا

اڈیٹر—

تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، شمبھر ناتھ، سندر لال۔

فروری ۱۹۴۸

فہرست

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال. باہر دس روپیہ سال۔ ایک پرچا دس آنے۔

منیجر—

"نیا ہند"

بائی کا باغ، الہ آباد۔

महात्मा गान्धी का बलिदान

—:o:—

सन् १९१६ से मुझे बराबर गान्धी जी के पास आते जाते रहने और महीनों लगातार उनके साथ रहने का सुभाग मिला है. छै दिसम्बर सन् '४७ से उनके जीवन की आख़री घड़ी तक—केवल दो दिन को छोड़ कर जब उनकी आज्ञा से मुझे दिल्ली से बाहर जाना पड़ा था—लगभग मेरा सारा समय उनही के चरणों के पास बीता. आम तौर पर शाम की प्रार्थना में मैं उनके साथ साथ उनके कमरे से प्रार्थना की जगह तक जाया करता था. ३० जनवरी सन् '४८ की शाम को मुझे अपने कमरे में कुछ मेओ भाइयों से बातें करते हुए देर हो गई. मैं जल्दी से अकेला सीधा प्रार्थना की जगह पहुंचा. गान्धी जी ठीक पाँच बजे वहाँ पहुँच जाया करते थे. उस दिन पाँच बज कर दस मिनट हो गए थे. वह अभी तक नहीं पहुँचे थे. मैं सोच ही रहा था कि इतने में वह आते दिखाई दिये. प्रार्थना के मैदान की

مہاتما گاندھی کا بلیدان

۱۹۱۶ء سے مجھے برابر گاندھی جی کے پاس آتے جاتے رہنے اور مہینوں لگاتار اُن کے ساتھ رہنے کا سوبھاگ ملا ہے۔ چھ دسمبر ۴۷ء سے اُن کے جیون کی آخری گھڑی تک — کیول دو دن کو چھوڑ کر جب اُن کی آگیا سے مجھے دلّی سے باہر جانا پڑا تھا — لگ بھگ میرا سارا سمے اُن ہی کے چرنوں کے پاس بیتا۔ عام طور پر شام کی پرارتھنا میں میں اُن کے ساتھ ساتھ اُن کے کمرے سے پرارتھنا کی جگہ تک جایا کرتا تھا۔ ۳۰ جنوری ۴۸ء کی شام کو مجھے اپنے کمرے میں کچھ میو بھائیوں سے باتیں کرتے ہوئے دیر ہو گئی۔ میں جلدی سے اکیلا سیدھا پرارتھنا کی جگہ پہنچا۔ گاندھی جی ٹھیک پانچ بجے وہاں پہنچ جایا کرتے تھے۔ اُس دن پانچ بج کر دس منٹ ہو گئے تھے۔ وہ ابھی تک نہیں پہنچے تھے۔ میں سوچ ہی رہا تھا کہ اتنے میں وہ آتے دکھائی دیئے۔ پرارتھنا کے میدان کی

चार पाँच सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद ज्योंही वह दोनों तरफ़ के आदमियों की क़तारों के बीच आए कि अचानक तीन फ़ायर हुए. बाद का हाल दुनिया भर के अख़बारों में छप चुका है. मेरा अपना अन्दाज़ा है कि उन्हें गोली पाँच बज कर बारह और तेरह मिनट के बीच में लगी. सब को हाथ जोड़ कर "हे राम!" उनके आख़िरी शब्द थे. उन्हें फ़ौरन उठाकर उनके कमरे में पहुँचा दिया गया. ख़ून के कुछ क़तरे उस जगह पर गिरे जहाँ वह ख़ुद गोली खाकर गिरे थे. कुछ भाइयों ने तुरन्त गोली के निशानों पर उंगली रख दी जिससे कपड़ों पर या और कहीं बहुत कम ख़ून लग पाया—गांधी जी जब अपने कमरे में बिछौने पर लाकर लिटा दिए गए उस वक़्त तक उन्हें थोड़ा बहुत होश ज़रूर था. चेहरे पर साफ़ मुसकराहट थी. यह मुसकराहट क़रीब क़रीब पाँच बज कर पच्चीस मिनट पर गुम हुई. चेहरा कुछ गम्भीर हो गया, मानो एकदम गहरी नींद आ गई हो. मुसकराहट का गुम होना ही उनका आख़िरी साँस लेना था. मेरी निगाह इसके बहुत देर बाद तक टकटकी की तरह उनके चेहरे पर लगी रही. कमरे में रोती हुई आवाज़ों के साथ साथ ज़ोर ज़ोर से गीता पाठ जारी था. भीड़ बढ़ती जा रही थी. रात को गीता पाठ के साथ साथ, बीच बीच में, ग्रन्थ साहब से पाठ. क़ुरान शरीफ़ की तलावत, ईसाई धर्म के भजन. और उनकी यह प्यारी रामधुन चलती रही—.

ईश्वर अल्लाह तेरे नाम
सबको सम्मति दे भगवान

چار پانچ سیڑھیاں چڑھنے کے بعد جیوں ہی وہ دونوں طرف کے آدمیوں کی قطاروں کے بیچ آئے کہ اچانک تین فائر ہوئے۔ بعد کا حال دنیا بھر کے اخباروں میں چھپ چکا ہے۔ میرا اپنا اندازہ ہے کہ انھیں گولی پانچ بج کر بارہ اور تیرہ منٹ کے بیچ میں لگی۔ سب کو ہاتھ جوڑ کر "ہے رام!" ان کے آخری شبد تھے۔ انھیں فوراً اٹھا کر ان کے کمرے میں پہنچا دیا گیا۔ خون کے کچھ قطرے اس جگہ پر گرے جہاں وہ خود گولی کھا کر گرے تھے۔ کچھ بھائیوں نے فوراً گولی کے نشانوں پر انگلی رکھ دی جس سے کپڑوں پر یا اور کہیں بہت کم خون لگ پایا — گاندھی جی جب اپنے کمرے میں بچھونے پر لا کر لٹا دئے گئے اس وقت تک انھیں تھوڑا بہت ہوش ضرور تھا۔ چہرے پر صاف مسکراہٹ تھی۔ یہ مسکراہٹ قریب قریب پانچ بج کر پچیس منٹ پر گم ہوئی۔ چہرہ کچھ گمبھیر ہو گیا، مانو ایک دم گہری نیند آ گئی ہو۔ مسکراہٹ کا گم ہونا ہی ان کا آخری سانس لینا تھا۔ میری نگاہ اس کے بہت دیر بعد تک ٹکٹکی کی طرح ان کے چہرے پر لگی رہی۔ کمرے میں روتی ہوئی آوازوں کے ساتھ ساتھ زور زور سے گیتا پاٹھ جاری تھا۔ بھیڑ بڑھتی جا رہی تھی۔ رات کو گیتا پاٹھ کے ساتھ ساتھ، بیچ بیچ میں، گرنتھ صاحب سے پاٹھ، قرآن شریف کی تلاوت، عیسائی دھرم کے بھجن، اور ان کی یہ پیاری رام دھن چلتی رہی—

ایشور اللہ تیرے نام
سب کو سمتی دے بھگوان

हर चीज़ के बहुत से पहलू होते हैं. महापुरुषों की ज़िन्दगी के भी बेशुमार पहलू होते हैं. गान्धी जी की ज़िन्दगी का वह पहलू जो मुझे सबसे ज़्यादा अपनी तरफ़ खींचता था उनका पग पग पर अपने आप को अन्दर की कसौटी पर कसना था. खाने में, पीने में, किसी से बात करने में, बहस करने में, किसी चीज़ पर राय क़ायम करने में, कोई भी छोटा बड़ा क़दम उठाने में, हर बात और हर फ़िक़रे में वह बराबर अन्दर ही अन्दर, देखते रहते थे कि कहीं वह अधीर तो नहीं हो रहे हैं, क्षमा के असूल का उल्लंघन तो नहीं कर रहे हैं, कोई बात ख़ुदी या अहंकार के असर से तो नहीं कर रहे हैं, दूसरे का हक़ तो नहीं छीन रहे हैं, कोई नापाक बात तो नहीं कर रहे हैं, स्वाद के बस तो नहीं खा रहे हैं, पूरी समझ और अपनी पूरी जानकारी से काम ले रहे हैं या नहीं, बाल बराबर भी सच्चाई से तो नहीं हट रहे हैं, दिल के अन्दर कहीं क्रोध की रमक तो नहीं है इत्यादि. हाल ही में मैं ने एक दिन बापू से कहा था कि आप जब दूसरों से या कांग्रेस नेताओं से बातें करते हैं तो मैं यह देख कर दंग रह जाता हूँ कि किस सावधानी के साथ आप हिन्सा के बारीक से बारीक रूपों से हर क़दम पर बचने की कोशिश करते रहते हैं.

मैं गान्धी जी से अपने लगभग तीस बरस के साथ से यह कह सकता हूँ कि अगर कोई आदमी मैंने गीता के अनुसार या योग सूत्रों के अनुसार या मनु के दस लक्षणों के अनुसार जीवन बताने की कोशिश करते हुए देखा है तो गान्धी जी को. इस निगाह से वे एक आदर्श पुरुष थे. इस बारे में उनकी ज़िन्दगी

ہر چیز کے بہت سے پہلو ہوتے ہیں۔ مہا پُرشوں کی زندگی کے بھی بے شمار پہلو ہوتے ہیں۔ گاندھی جی کی زندگی کا وہ پہلو جو مجھے سب سے زیادہ اپنی طرف کھینچتا تھا اُن کا پگ پگ پر اپنے آپ کو اندر کی کسوٹی پر کسنا تھا۔ کھانے میں، پینے میں، کسی سے بات کرنے میں، بحث کرنے میں، کسی چیز پر رائے قایم کرنے میں، کوئی بھی چھوٹا بڑا قدم اٹھانے میں، ہر بات اور ہر فقرے میں وہ برابر اندر ہی اندر، دیکھتے رہتے تھے کہ کہیں وہ ادھیر تو نہیں ہو رہے ہیں۔ کشما کے اصول کا اُلنگھن تو نہیں کر رہے ہیں، کوئی بات خودی یا اہنکار کے اثر سے تو نہیں کر رہے ہیں، دوسرے کا حق تو نہیں چھین رہے ہیں، کوئی ناپاک بات تو نہیں کر رہے ہیں، سواد کے بس تو نہیں کھا رہے ہیں، پوری سمجھ اور اپنی پوری جانکاری سے کام لے رہے ہیں یا نہیں، بال برابر بھی سچائی سے تو نہیں ہٹ رہے ہیں، دل کے اندر کہیں کرودھ کی رمک تو نہیں ہے اتیادی۔ حال ہی میں میں نے ایک دن باپو سے کہا تھا کہ آپ جب دوسروں سے یا کانگریس نیتاؤں سے باتیں کرتے ہیں تو میں یہ دیکھ کر دنگ رہ جاتا ہوں کہ کس ساودھانی کے ساتھ آپ ہنسا کے باریک سے باریک روپوں سے ہر قدم پر بچنے کی کوشش کرتے رہتے ہیں۔

میں گاندھی جی سے اپنے لگ بھگ تیس برس کے ساتھ سے یہ کہہ سکتا ہوں کہ اگر کوئی آدمی میں نے گیتا کے انوسار یا یوگ سوتروں کے انوسار یا منو کے دس لکشنوں کے انوسار جیون بتانے کی کوشش کرتے ہوئے دیکھا ہے تو گاندھی جی کو۔ اس نگاہ سے وے ایک آدرش پُرش تھے۔ اس بارے میں اُن کی زندگی

ऊँचे से ऊँचे मुसलमान सूफ़ियों की ज़िन्दगी से मिलती थी. इमाम ग़िज़ाली के मुताबिक़ वह सच्चे सूफ़ी और सच्चे मुसलमान थे. 'इमिटेशन आफ़ क्राइस्ट' के लेखक कैम्पिस के अनुसार वह सच्चे ईसाई थे. उनकी ज़िन्दगी सब धर्मों का संगम थी. वह आदर्श धर्मात्मा और सच्चे दीनदार थे. उनकी राजनीत भी इसीलिये ऊँची थी क्योंकि वह धर्म की इस कसौटी पर कस कर सामने आती थी. जिस किसी के दिल में भी दीन या धर्म की प्यास हो वह महात्मा गान्धी की ज़िन्दगी से अनमोल अमली सबक़ सीख सकता है.

नई दिल्ली. —सुन्दर लाल

३ - २ - ४८

—: ०❀० :❀—

اونچے سے اونچے مسلمان صوفیوں کی زندگی سے ملتی تھی۔ امام غزالی
کے مطابق وہ سچے صوفی اور سچے مسلمان تھے۔ "امیٹیشن آف
کرائسٹ" کے لیکھک کیمپس کے انوسار وہ سچے عیسائی تھے۔
ان کی زندگی سب دھرموں کا سنگم تھی۔ وہ آدرش دھرماتما اور
سچے دین دار تھے۔ ان کی راج نیتی بھی اسی لئے اونچی تھی کیونکہ
وہ دھرم کی اس کسوٹی پر کس کر سامنے آتی تھی۔ جس کسی کے
دل میں بھی دین یا دھرم کی پیاس ہو وہ مہاتما گاندھی کی زندگی
سے انمول عملی سبق سیکھ سکتا ہے۔

— سندر لال

نئی دلی

۳-۲-۴۸

जिल्द ४ फ़रवरी '४८ नम्बर २

جلد ۴ فروری ۴۸ نمبر ۲

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली.
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

राम-रहीम

(श्री श्याम दीक्षित)

बन्दे सबका भला किये जा

जी भर कर जीने दे सबको सुख से आप जिये जा

आपस में लड़ने की तुमको किसने बात सिखाई ?

छोड़ भलाई का दामन क्यों बाँधी गाँठ बुराई ?

नैन खोल कर देख जगत में सब हैं भाई भाई

मन मंदिर के ठाकुर से तू कर ले प्रेम सगाई

رام - رحیم

(شری شیام دکشت)

بندے سب کا بھلا کئے جا

جی بھر کر جینے دے سب کو سکھ سے آپ جئے جا

آپس میں لڑنے کی تم کو کس نے بات سکھائی ؟

چھوڑ بھلائی کا دامن کیوں باندھی گانٹھ برائی ؟

نین کھول کر دیکھ جگت میں سب ہیں بھائی بھائی

من مندر کے ٹھاکر سے تو کر لے پریم سگائی

नया हिन्द   राम रहीम   फरवरी सन् '४८

कौसर के प्याले में जमज़म भर ले और पिये जा

बन्दे सब का भला किये जा

सुबह निकलता है जब सूरज जगमग सब जग होता

और रात को चन्द्र ज्योति में मानव जी भर सोता

उसके यहाँ न हिन्दू-हिन्दू मुसलिम-मुसलिम होता

क़ुदरत के पलने में पलता, हँसता, गाता, रोता

इसी तरह तू भी दुनिया को अपना प्रेम दिये जा

बन्दे सबका भला किये जा

एक चिता पर चढ़ जाता है पल भर में खो जाता

और दूसरा भी मजार में चुप होकर सो जाता

फिर न लौट कर आ पाता है एक बार जो जाता

यह ग़रूर से भरा हुआ तन धूल धूल हो जाता

केवल अपना भला न करना, सबका भला किये जा

बन्दे सबका भला किये जा

('मधुकर' से)

نیا ہند   رام رحیم   فروری ۴۸ء

کوثر کے پیالے میں زمزم بھر لے اور پیئے جا
بندے سب کا بھلا کیئے جا
صبح نکلتا ہے جب سورج جگ مگ سب جگ ہوتا
اور رات کو چندر جیوتی میں مانو جی بھر سوتا
اس کے یہاں نہ ہندو۔ہندو مسلم۔مسلم ہوتا
قدرت کے پلنے میں پلتا، ہنستا، گاتا، روتا
اسی طرح تو بھی دنیا کو اپنا پریم دیئے جا
بندے سب کا بھلا کیئے جا
ایک چتا پر چڑھ جاتا ہے پل بھر میں کھو جاتا
اور دوسرا بھی مزار میں چپ ہوکر سو جاتا
پھر نہ لوٹ کر آپاتا ہے ایک بار جو جاتا
یہ غرور سے بھرا ہوا تن دھول دھول ہو جاتا۔
کیول اپنا بھلا نہ کرنا، سب کا بھلا کیئے جا
بندے سب کا بھلا کیئے جا
('مدھوکر' سے)

मज़हब और साइन्स

(डा० भगवान दास, बनारस)

यह बात मशहूर है कि एशिया वालों के विचार धर्म मज़हब की तरफ़ ज़्यादा जाते हैं और आज कल के योरप वालों के ख़याल साइन्स की तरफ़ ज़्यादा झुकते हैं. दुनिया के सब बड़े बड़े मज़हब, जिनके नाम लेवा इस समय मौजूद हैं, और लगभग वह सब भी जिनके नामलेवा अब नहीं रहे, एशिया ही में पैदा हुए. एशिया वालों की सारी ज़िन्दगी पर मज़हब छाया रहता है. हिन्दू मुसलमान, यहूदी, पारसी, कन्फ़्यूशियस यहां तक कि रोमन कैथोलिक फ़िरक़े के ईसाइयों के भी रहन सहन, खान पान, आचार विचार सब पर धर्म की गहरी छाप रहती है. इनमें से हर मज़हब वाला हर बात में यही सोचता है कि उसका मज़हब क्या चाहता है. नए मज़हबों में पुराने मज़हबों की निस्बत इनसाफ़, नेकी और सचाई पर ज़्यादा ज़ोर दिया जाता है और रीत रिवाज पर कम. इसी लिये बौद्ध, जैन और सिख मज़हब शायद आदमी की रात दिन की ज़िन्दगी और उसके छोटे छोटे कामों को इतना ज़्यादा नहीं कसते जितना इनसे पुराने मज़हब. पर हालत इन मज़हबों के मानने वालों की भी क़रीब क़रीब यही है.

सब मज़हब मानते हैं कि आदमी का नाता हर समय किसी ऐसी बड़ी शक्ति के साथ जुड़ा हुआ है जो हमारे ऊपरी हाथ, आंख, कान की पहुँच से बाहर है. आदमी की दुनियावी ज़िन्दगी बड़े दरजे तक उस शक्ति के आधीन है. वह शक्ति इस ज़िन्दगी के बाद भी

مذہب اور سائنس

(ڈاکٹر بھگوان داس، بنارس)

یہ بات مشہور ہے کہ ایشیا والوں کے وچار دھرم مذہب کی طرف زیادہ جاتے ہیں اور آج کل کے یورپ والوں کے خیال سائنس کی طرف زیادہ جھکتے ہیں۔ دُنیا کے سب بڑے بڑے مذہب جن کے نام لیوا اِس سمے موجود ہیں، اور لگ بھگ وہ سب بھی جن کے نام لیوا اب نہیں رہے، ایشیا ہی میں پیدا ہوئے۔ ایشیا والوں کی ساری زندگی پر مذہب چھایا رہتا ہے۔ ہندو، مسلمان، یہودی، پارسی، کنفیوشیس یہاں تک کہ رومن کیتھلک فرقے کے عیسائیوں کے بھی رہن سہن، کھان پان، آچار وچار سب پر دھرم کی گہری چھاپ رہتی ہے۔ اِن میں سے ہر مذہب والا ہر بات میں یہی سوچتا ہے کہ اُس کا مذہب کیا چاہتا ہے۔ نئے مذہبوں میں پُرانے مذہبوں کی نسبت انصاف، نیکی اور سچائی پر زیادہ زور دیا جاتا ہے اور ریت رواج پر کم۔ اِسی لئے بُدھ، جین اور سکھ مذہب شاید آدمی کی رات دن کی زندگی اور اُس کے چھوٹے چھوٹے کاموں کو اِتنا زیادہ نہیں کستے جتنا اِن سے پُرانے مذہب، پر حالت اِن مذہبوں کے ماننے والوں کی بھی قریب قریب یہی ہے۔

سب مذہب مانتے ہیں کہ آدمی کا ناتا ہر سمے کسی ایسی بڑی شکتی کے ساتھ جُڑا ہوا ہے جو ہمارے اوپری ہاتھ، آنکھ، کان کی پہنچ سے باہر ہے۔ آدمی کی دُنیاوی زندگی بڑے درجے تک اُس شکتی کے آدھین ہے۔ وہ شکتی اِس زندگی کے بعد بھی

अपना काम करती रहती है, चाहे उसे हम ईश्वर या ख़ुदा कहें या आत्मा कहें. इसी लिये इन मजहबों के मानने वालों की निगाह दूसरी दुनिया की तरफ़ जाती रहती है. कभी कभी यह चीज इतनी बढ़ जाती है कि बीमारी बन जाती है और दूसरी दुनिया की बेजा फ़िक्र में हम अपनी यह दुनिया बिगाड़ लेते हैं.

हर धर्म का मानने वाला यह चाहता है कि मेरा धर्म जिन्दगी के हर काम में मुझे रास्ता दिखावे—मैं क्या ख़र्च करूं, क्या पहरूँ, क्या खाऊँ पिऊँ, कैसे रहूं सहूं. कैसे रोज़ी कमाऊं. क्या काम करूं वग़ैरा. क्यों कि एक न एक दिन इन सब कामों के लिये मुझसे पूछ ताछ की जावेगी. हर मजहब अपने जमाने, मुल्क और हालत के मुताबिक़ इस फ़र्ज़ को पूरा करने की कोशिश भी करता है. धीरे धीरे हर मजहब में कुछ ठेकेदार पैदा हो जाते हैं जो इन्हीं बातों में बाल की खाल निकालने लगते हैं. छोटी छोटी बातों पर बेजा जोर देने लगते हैं. उनका मज़हब ठस, कट्टर और बेजान होने लगता है. उसका लचीलापन जाता रहता है. वह जमाने की जरूरत के मुताबिक़ अपने छोटे मोटे रीत रिवाजों को भी नहीं बदल सकता. वह निकम्मी. ग़ैर जरूरी चीज़ों को इतना चिपटता है कि जरूरी और काम की चीजों को भूल जाता है. यहां तक कि जो रास्ता अगर समझ कर चला जाता तो नेकी और भलाई का रास्ता होता, वही बदी और बरबादी का रास्ता बन जाता है.

यह तो एशिया वालों की हालत रही. अब जरा योरप की हालत लीजिये. बहुत थोड़े दिनों पहले तक योरप के वह सोचने वाले जो समाज के आगे आगे चलते थे, उन सब चीजों की तरफ़ से

اپنا کام کرتی رہتی ہے، چاہے اُسے ہم ایشور یا خدا کہیں یا آتما کہیں۔ اسی لئے اِن مذہبوں کے ماننے والوں کی نگاہ دوسری دُنیا کی طرف جاتی رہتی ہے۔ کبھی کبھی یہ چیز اتنی بڑھ جاتی ہے کہ بیماری بن جاتی ہے اور دوسری دُنیا کی بے جا فکر میں ہم اپنی دُنیا بگاڑ لیتے ہیں۔

ہر دھرم کا ماننے والا یہ چاہتا ہے کہ میرا دھرم زندگی کے ہر کام میں مجھے راستہ دکھاوے — میں کیا خرچ کروں، کیا پہروں، کیا کھاؤں پیوں، کیسے رہوں سہوں، کیسے روزی کماؤں، کیا کام کروں وغیرہ۔ کیونکہ ایک نہ ایک دن اِن سب کاموں کے لئے مجھ سے پوچھ تاچھ کی جاوے گی۔ ہر مذہب اپنے زمانے، ملک اور حالت کے مطابق اِس فرض کو پورا کرنے کی کوشش بھی کرتا ہے۔ دھیرے دھیرے ہر مذہب میں کچھ ٹھیکے دار پیدا ہو جاتے ہیں جو اُن ہی باتوں میں بال کی کھال نکالنے لگتے ہیں، چھوٹی چھوٹی باتوں پر بے جا زور دینے لگتے ہیں۔ اُن کا مذہب ٹھس، کٹر اور بے جان ہونے لگتا ہے۔ اُس کا لچیلا پن جاتا رہتا ہے۔ وہ زمانے کی ضرورت کے مطابق اپنے چھوٹے موٹے ریت رواجوں کو بھی نہیں بدل سکتا، وہ نکمّی، غیر ضروری چیزوں کو اتنا چپٹتا ہے کہ ضروری اور کام کی چیزوں کو بھول جاتا ہے۔ یہاں تک کہ جو راستہ اگر سمجھ کر چلا جاتا تو نیکی اور بھلائی کا راستہ ہوتا، وہی بدی اور بربادی کا راستہ بن جاتا ہے۔

یہ تو ایشیا والوں کی حالت رہی۔ اب ذرا یورپ کی حالت لیجئے۔ بہت تھوڑے دنوں پہلے تک یورپ کے وہ سوچنے والے جو سماج کے آگے آگے چلتے تھے، اُن سب چیزوں کی طرف سے

दिन दिन बेपरवाह होते जाते थे जो हमारे बाहरी हाथ, कान, आंख, नाक की पहुँच से बाहर हैं. गोया उन्हें इन चीजों से कोई वास्ता ही नहीं. तरह तरह की साइन्सों के अन्दर भी इस तरह की बहुत सी खयाली चीजें हैं जिनके बिना काम नहीं चल सकता. और यह साइन्सें लोगों को बारबार आगाह करती रहती हैं कि हाथ, कान, आंख, नाक के पहुँच के अन्दर की चीजों और इनकी पहुँच से बाहर की चीजों दोनों में गहरा और अटूट नाता है. फिर भी योरप वालों का खयाल दूसरी दुनिया की तरफ़ नहीं गया. पर इस दुनिया में इतना ज्यादा फंस गया कि वहां के लोग हमसे भी ज्यादा बुरे रोग के शिकार हो गए जिससे दो भयंकर महायुद्ध हो चुके और तीसरे उनसे ज्यादा भयंकर महायुद्ध का डर बना हुआ है.

हमें अगर यह देखना है कि एशिया वालों के तरह तरह के मजहबी विचारों में कोई एकता है या नहीं तो हमे अलग अलग धर्मों का मुक़ाबला करना होगा. ऐसे ही यह देखने के लिये कि योरप वालों के अपने खयालों में एकता है या नहीं हमें अलग अलग साइन्सों और साइन्स वालों के खयालों का मुक़ाबला करना होगा.

कुछ लोग कहते हैं कि सब साइन्सों की बुनियादी एकता साफ़ दिखाई देती है और मजहबों के लड़ाई, झगड़े और फ़रक़ भी उतने ही साफ़ नजर आते हैं. दूसरे लोग कहते हैं कि नई नई साइन्सों के राज के नए नए असूल, डाक्टरी की नई नई दवाएं, नई नई खोजों के नए नए नतीजे बता रहे हैं कि साइन्सों और साइन्स वालों में कोई एकता नहीं. बात यह है कि जैसे मजहबों में

دن دن بےپرواہ ہوتے جاتے تھے جو ہمارے باہری ہاتھ، کان، آنکھ، ناک کی پہنچ سے باہر ہیں۔ گویا انھیں ان چیزوں سے کوئی واسطہ ہی نہیں۔ طرح طرح کی سائنسوں کے اندر بھی اس طرح کی بہت سی خیالی چیزیں ہیں جن کے بنا کام نہیں چل سکتا۔ اور یہ سائنسیں لوگوں کو برابر آگاہ کرتی رہتی ہیں کہ ہاتھ، کان، آنکھ، ناک کے پہنچ کے اندر کی چیزوں اور ان کی پہنچ سے باہر کی چیزوں دونوں میں گہرا اور اٹوٹ ناتا ہے۔ پھر بھی یورپ والوں کا خیال دوسری دنیا کی طرف نہیں گیا۔ پر اس دنیا میں اتنا زیادہ پھنس گیا کہ وہاں کے لوگ ہم سے بھی زیادہ برے روگ کے شکار ہو گئے جس سے دو بھیانکر مہایدھ ہو چکے اور تیسرے ان سے زیادہ بھیانکر مہایدھ کا ڈر بنا ہوا ہے۔

ہمیں اگر یہ دیکھنا ہے کہ ایشیا والوں کے طرح طرح کے مذہبی وچاروں میں کوئی ایکتا ہے یا نہیں تو ہمیں الگ الگ دھرموں کا مقابلہ کرنا ہوگا۔ ایسے ہی یہ دیکھنے کے لئے کہ یورپ والوں کے اپنے خیالوں میں ایکتا ہے یا نہیں ہمیں الگ الگ سائنسوں اور سائنس والوں کے خیالوں کا مقابلہ کرنا ہوگا۔

کچھ لوگ کہتے ہیں کہ سب سائنسوں کی بنیادی ایکتا صاف دکھائی دیتی ہے اور مذہبوں کی لڑائی، جھگڑے اور فرق بھی اتنے ہی صاف نظر آتے ہیں۔ دوسرے لوگ کہتے ہیں کہ نئی نئی سائنسوں کے نئے نئے اصول، ڈاکٹری کی نئی نئی دوائیں، نئی نئی کھوجوں کے نئے نئے نتیجے بتا رہے ہیں کہ سائنسوں اور سائنس والوں میں کوئی ایکتا نہیں۔ بات یہ ہے کہ جیسے مذہبوں میں

संगनज़री और कट्टरता होती है वैसे ही अपने ढंग की तंगनज़री और कट्टरता साइन्सों में भी होती है. अंधी मानताएं भी दोनों में होती हैं. सल्तनतों और कूटनीति की बाँदी बनकर साइन्स ने मजहब से कहीं ज्यादा मारकाट की है. पर यह सब झगड़े न सच्ची साइन्स का नतीजा हैं और न सच्चे धर्म या मजहब का. यह नतीजा हैं हमारे अन्दर के शैतान. हमारी खुदी. हमारे स्वार्थ और हमारे अहंकार का. हम अपनी छोटी. झूठी और चन्दरोज़ा ग़रज़ों के लिये साइन्स और मजहब दोनों का ग़लत इस्तेमाल कर लेते हैं, और दोनों को बदनाम करते हैं.

हर आदमी के अन्दर जो कुछ होता है वही वह बाहर देखना चाहता है, और जो वह चाहता है वही देख लेता है. जो एकता देखना चाहते हैं उन्हें एकता दिखाई देती है और जो झगड़े देखना चाहते हैं उन्हें झगड़े दिखाई देते हैं. जो बेलाग होकर दोनों पहलुओं को ठीक ठीक देखना चाहते हैं वह दोनों को देखलेते हैं. सचाई हमेशा दो पहलुओं के बीच में होती है. सच यह है कि दुनिया की सब चीज़ों में बुनियादी बातों में एकता है और ऊपरी बातों में फ़रक़. जड़ एक और डाल पत्ते अलग अलग. यही बात साइन्स की है और यही मजहब की. इस एकता को दरशाना और चमकाना दर्शनशास्त्र यानी फ़लसफ़े और विद्वानों का काम है. कोई दो चेहरे एक से नहीं होते. कोई दो दिमाग़ एक तरह नहीं चलते. दुनिया नाम दो रंगा रंगी और बहुरूप का है. फिर भी एक दरजे तक सब आदमी एक से दिखाई देते हैं और एक तरह सोचते हैं. नहीं तो न हम एक दूसरे को समझ पाते और न मिल कर रह सकते.

تنگ نظری اور کٹرتا ہوتی ہے ویسے ہی اپنے ڈھنگ کی تنگ نظری اور کٹرتا سائنسوں میں بھی ہوتی ہے۔ اندھی مانتائیں بھی دونوں میں ہوتی ہیں۔ سلطنتوں اور کوٹ نیتی کی باندی بن کر سائنس نے مذہب سے کہیں زیادہ مارکاٹ کی ہے۔ پر یہ سب جھگڑے نہ سچی سائنس کا نتیجہ ہیں اور نہ سچے دھرم یا مذہب کا۔ یہ نتیجہ ہیں ہمارے اندر کے شیطان، ہماری خودی، ہمارے سوارتھ اور ہمارے اہنکار کا۔ ہم اپنی چھوٹی، جھوٹی اور چند روزہ غرضوں کے لئے سائنس اور مذہب دونوں کا غلط استعمال کر لیتے ہیں، اور دونوں کو بدنام کرتے ہیں۔

ہر آدمی کے اندر جو کچھ ہوتا ہے وہی وہ باہر دیکھنا چاہتا ہے، اور جو وہ چاہتا ہے وہی دیکھ لیتا ہے۔ جو ایکتا دیکھنا چاہتے ہیں انھیں ایکتا دکھائی دیتی ہے اور جو جھگڑے دیکھنا چاہتے ہیں انھیں جھگڑے دکھائی دیتے ہیں۔ جو بے لاگ ہوکر دونوں پہلوؤں کو ٹھیک ٹھیک دیکھنا چاہتے ہیں وہ دونوں کو دیکھ لیتے ہیں۔ سچائی ہمیشہ دو پہلوؤں کے بیچ میں ہوتی ہے۔ سچ یہ ہے کہ دنیا کی سب چیزوں میں بنیادی باتوں میں ایکتا ہے اور اوپری باتوں میں فرق۔ جڑ ایک اور ڈال پتے الگ الگ۔ یہی بات سائنس کی ہے اور یہی مذہب کی۔ اس ایکتا کو درشانا اور چمکانا درشن شاستر یعنی فلسفے اور ودوانوں کا کام ہے۔ کوئی دو چہرے ایک سے نہیں ہوتے۔ کوئی دو دماغ ایک طرح نہیں چلتے۔ دنیا نام دو رنگا رنگی اور بہروپ کا ہے۔ پھر بھی ایک درجے تک سب آدمی ایک سے دکھائی دیتے ہیں اور ایک طرح سوچتے ہیں۔ نہیں تو نہ ہم ایک دوسرے کو سمجھ پاتے اور نہ مل کر رہ سکتے۔

वह एकता ही हमारी आपसी हमदर्दी, मेल मिलाप और सारी सभ्यता, तहज़ीब की जड़ है. इसी इनसानी तहज़ीब को ज़िन्दा रखने और आगे बढ़ाने के लिये सब मजहबों की बुनियादी एकता को देखना. समझना और सामने लाना जरूरी है.

जो लोग ख़ुद इस सचाई को देख सकें, उन्हें अगर एशिया और योरप दोनों की करोड़ों जनता से प्रेम है तो उनका धर्म है कि वह इस एकता को सामने लावें, चमकावें और फैलावें ताकि रीत रिवाज के फ़रक़ की चीजें भी इस एकता ही के रंग में रंगी रहें. इनसानी क़ौम के प्रेमियों को अपनी पूरी ताक़त इस काम में लगा देनी चाहिये. योरप के अन्दर मुल्क मुल्क के बीच लड़ाइयां, झगड़ाद और दुशमनी और एशिया, ख़ासकर हिन्दुस्तान में, हमारे जातपात छुआछूत और मजहब के नाम पर लड़ाई दंगे दिखा रहे हैं कि हमारी निगाहें इस एकता पर कम और ऊपरी फ़रक़ों पर ज्यादा रहती हैं. यही दोनों जगह की आम जनता की ग़ुलामी, बरबादी, लूट और मुसीबतों का कारन है. दोनों जगह अमन, प्रेम, शान्ति और ख़ुशहाली को बढ़ाने का तरीक़ा यही है कि लोगों को समझाया जावे कि मजहब मजहब सब एक हैं और मजहब और साइन्स भी एक हैं. उनके सामने एक ऐसे इनसानी संगठन का नक़शा पेश किया जावे जिसमें सब तबियतों और सब उमरों के लोगों को अपनी अपनी शक्ति के अनुसार काम और अपना अपनी जरूरत का सामान मिल सके. सब दुनिया को ठीक ठीक जिस्मानी और रूहानी दोनों तरह की ख़ुराक पहुँचाने का यही तरीक़ा है.

یہ ایکتا ہی ہماری آپسی ہمدردی، میل ملاپ اور ساری سبھیتا، تہذیب کی جڑ ہے۔ اسی انسانی تہذیب کو زندہ رکھنے اور آگے بڑھانے کے لئے سب مذہبوں کی بنیادی ایکتا کو دیکھنا، سمجھنا اور سامنے لانا ضروری ہے۔

جو لوگ خود اس سچائی کو دیکھ سکیں انھیں اگر ایشیا اور یورپ دونوں کی کروڑوں جنتا سے پریم ہے تو ان کا دھرم ہے کہ وہ اس ایکتا کو سامنے لاویں، چمکاویں اور پھیلاویں تاکہ ریت رواج کے فرق کی چیزیں بھی اس ایکتا ہی کے رنگ میں رنگی رہیں۔ انسانی قوم کے پریمیوں کو اپنی پوری طاقت اس کام میں لگا دینی چاہئے۔ یورپ کے اندر ملک ملک کے بیچ لڑائیاں، لاگ ڈاٹ اور دشمنی اور ایشیا، خاص کر ہندستان میں، ہمارے جات پات چھوا چھوت اور مذہب کے نام پر لڑائی دنگے دکھا رہے ہیں کہ ہماری نگاہیں اس ایکتا پر کم اور اوپری فرقوں پر زیادہ رہتی ہیں۔ یہی دونوں جگہ کی عام جنتا کی غلامی، بربادی، لوٹ اور مصیبتوں کا کارن ہے۔ دونوں جگہ امن، پریم، شانتی اور خوشحالی کو بڑھانے کا طریقہ یہی ہے کہ لوگوں کو سمجھایا جاوے کہ مذہب مذہب سب ایک ہیں اور مذہب اور سائنس بھی ایک ہیں۔ ان کے سامنے ایک ایسے انسانی سنگٹھن کا نقشہ پیش کیا جاوے جس میں سب طبیعتوں اور سب عمروں کے لوگوں کو اپنی اپنی شکتی کے انوسار کام اور اپنی اپنی ضرورت کا سامان مل سکے۔ سب دنیا کو ٹھیک ٹھیک جسمانی اور روحانی دونوں طرح کی خوراک پہنچانے کا یہی طریقہ ہے۔

मज़हब के नाम पर झगड़े दुनिया में हुए हैं और होंगे. पर इन झगड़ों की वजह से मज़हब को दुनिया से मिटाने की कोशिश ऐसी ही है जैसे रोग को दूर करने के लिये शरीर को मार डालने की कोशिश. जब तक दुनिया में दुख और मौत हैं तब तक लोगों को मज़हब की ज़रूरत रहेगी और उससे उन्हें तसल्ली भी मिलेगी. ऐसे ही जब तक लोगों को यह बताया जाता रहेगा कि बुनियादी बातों में भी सब मज़हब एक दूसरे के ख़िलाफ़ हैं, तब तक लोग अपने अपने अलग अलग मज़हबों के नाम पर लड़ते रहेंगे. दूसरी तरफ़ अगर उन्हें यह बताया जावेगा कि बुनियादी बातों में सब मज़हब एक हैं तब लोगों के दिल एक दूसरे के नज़दीक आवेंगे और वह सबको अपना भाई समझकर एक दूसरे से प्रेम करना सीखेंगे.

इस तरह जब लोगों को सब मज़हबों की एकता और मज़हब और साइंस की एकता दरशाई और समझाई जावेगी और लोग उसे समझेंगे तब एक नया ज़माना शुरू होगा जिसे साइन्टिफ़िक मज़हब या मज़हबी साइन्स का ज़माना कह सकेंगे, जिसमें हर एक को सबके भले में अपना भला दिखाई देगा और सब सबके भले में लगेंगे.

थोड़े दिनों पहले तक साइन्सों साइन्सों में भी काफ़ी फ़र्क़ था. पर अब बड़े बड़े साइन्सदां यह समझने और कहने लगे हैं कि साइन्सें अलग अलग नहीं हैं, बल्कि सब साइन्सें एक ही साइन्स हैं. उसी एक साइन्स की रोशनी में और उसकी मदद से लोग बहुत जल्दी इस चीज़ को भी समझ लेंगे कि मज़हब अलग अलग नहीं हैं बल्कि सब मज़हब एक ही मज़हब हैं. आख़ीर में हम देखेंगे कि

مذہب کے نام پر جھگڑے دُنیا میں ہوئے ہیں اور ہوں گے۔ پر ان جھگڑوں کی وجہ سے مذہب کو دُنیا سے مٹانے کی کوشش ایسی ہی ہے جیسے روگ کو دور کرنے کے لئے شریر کو مار ڈالنے کی کوشش۔ جب تک دُنیا میں دُکھ اور موت ہیں تب تک لوگوں کو مذہب کی ضرورت رہے گی اور اس سے انھیں تسلی بھی ملے گی۔ ایسے ہی جب تک لوگوں کو یہ بتایا جاتا رہے گا کہ بنیادی باتوں میں بھی سب مذہب ایک دوسرے کے خلاف ہیں، تب تک لوگ اپنے اپنے الگ الگ مذہبوں کے نام پر لڑتے رہیں گے۔ دوسری طرف اگر انھیں یہ بتایا جاوے گا کہ بنیادی باتوں میں سب مذہب ایک ہیں تب لوگوں کے دل ایک دوسرے کے نزدیک آویں گے اور وہ سب کو اپنا بھائی سمجھ کر ایک دوسرے سے پریم کرنا سیکھیں گے۔

اس طرح جب لوگوں کو سب مذہبوں کی ایکتا اور مذہب اور سائنس کی ایکتا درشائی اور سمجھائی جاوے گی اور لوگ اسے سمجھیں گے تب ایک نیا زمانہ شروع ہوگا جسے سائنٹفک مذہب یا مذہبی سائنس کا زمانہ کہہ سکیں گے، جس میں ہر ایک کو سب کے بھلے میں اپنا بھلا دکھائی دے گا اور سب سب کے بھلے میں لگیں گے۔

تھوڑے دنوں پہلے تک سائنسوں سائنسوں میں بھی کافی فرق تھا، پر اب بڑے بڑے سائنس داں سمجھنے اور کہنے لگے ہیں کہ سائنسیں الگ الگ نہیں ہیں، بلکہ سب سائنسیں ایک ہی سائنس ہیں۔ اسی ایک سائنس کی روشنی میں اور اس کی مدد سے لوگ بہت جلدی اس چیز کو بھی سمجھ لیں گے کہ مذہب الگ الگ نہیں ہیں بلکہ سب ایک ہی مذہب ہیں۔ آخیر میں ہم دیکھیں گے کہ

साइन्स और मजहब भी दोनों एक ही सचाई के दो रुख हैं, एक ही हक़ीक़त है जिसकी रोशनी में हम अपनी जिन्दगी को समझ सकते हैं और इस दुनिया और दूसरी दुनिया दोनों में उसे काम का बना सकते हैं. मजहब मजहब और साइन्स और मजहब की एकता में ही हमारी रूह या आत्मा के आगे के रास्ते खुल सकते हैं.

दुनिया में जब जब कोई नया मजहब आया है तब तब इस लिये आया है कि उससे पहले का मजहब या पहले के मजहब ग़ैरजरूरी निकम्मी बातों, ग़लत रीत रिवाजों और झूठी अंधी मानताओं से इतने ढक गए थे कि उनकी असली शुरू की शकल पहचानी तक नहीं जा सकती थी. एक नए मजहबी ऐलान की जरूरत पड़ी. किसी महान् आत्मा ने अपने तप, अपने अन्दर की रूहानी आग से उसी पुराने सनातन मजहब के ऊपर के मैल को जलाकर उसे फिर से चमकाया, उसमें नई जान डाली, उसका नए सिरे से ऐलान किया, उसकी बुनियादी सचाइयों की तसदीक़ की. ढांचा बदल गया, चीज वही थी. शब्द बदले, पर मानी वही थे.

अब इस जमाने में जिस नए ऐलान की जरूरत है वह भी किसी नए धर्म का ऐलान न होगा. वह हो सकता है कुछ लोगों के लिये नया, पर असल में वही व्यापक, आलमगीर, साइन्टिफ़िक, इनसानी धर्म होगा, जिसके लिये किसी नए महापुरुष की जरूरत न होगी. उस तरह के महापुरुष जो कहना था सब कह गए. जरूरत है सब मजहबों और सब साइन्सों के सोचने वालों के मिलकर उन बुनियादी सचाइयों को चमकाने की जो सब मजहबों और सब साइन्सों की

[illegible] लिया और दोनों [illegible] पर कड़ी नजर रखनी शुरू

سائنس اور مذہب بھی دونوں ایک ہی سچّائی کے دو رُخ ہیں، ایک ہی حقیقت ہے جس کی روشنی میں ہم اپنی زندگی کو سمجھ سکتے ہیں اور اِس دُنیا اور دوسری دُنیا دونوں میں اُسے کام کا بنا سکتے ہیں۔ مذہب مذہب اور سائنس اور مذہب کی ایکتا میں ہی ہماری روح یا آتما کے آگے کے راستے کھل سکتے ہیں۔

دُنیا میں جب جب کوئی نیا مذہب آیا ہے تب تب اِس لئے آیا ہے کہ اُس سے پہلے کا مذہب یا پہلے کے مذہب غیر ضروری نکمّی باتیں، غلط ریت رواجوں اور جھوٹی اندھی مانتاؤں سے اِتنے ڈھک گئے تھے کہ اُن کی اصلی شروع کی شکل پہچانی تک نہیں جا سکتی تھی۔ ایک نئے مذہبی اعلان کی ضرورت پڑی۔ کسی مہان آتما نے اپنے تپ، اپنے اندر کی روحانی آگ سے اُسی پُرانے سناتن مذہب کے اوپر کے میل کو جلا کر اُسے پھر سے چمکایا، اُس میں نئی جان ڈالی، اُس کا نئے سِرے سے اعلان کیا، اُس کی بُنیادی سچّائیوں کی تصدیق کی۔ ڈھانچا بدل گیا، چیز وہی تھی، شبد بدلے، پر معنی وہی تھے۔

اب اِس زمانے میں جس نئے اعلان کی ضرورت ہے وہ بھی کسی نئے دھرم کا اعلان نہ ہوگا۔ وہ ہو سکتا ہے کچھ لوگوں کے لئے نیا، پر اصل میں وہی ویاپک، عالمگیر، سائنٹفک، انسانی دھرم ہوگا، جس کے لئے کسی نئے مہاپُرش کی ضرورت نہ ہوگی۔ اُس طرح کے مہاپُرش جو کہنا تھا سب کہہ گئے۔ ضرورت ہے سب مذہبوں اور سب سائنسوں کے سوچنے والوں کے مل کر اُن بُنیادی سچّائیوں کو چمکانے کی جو سب مذہبوں اور سب سائنسوں کی

[illegible] پر کڑی نظر رکھنی شروع

जड़ और जान हैं. यह काम शुरू भी हो चुका है. उसे बढ़ाना, फैलाना और रूप देना है.

मजहब और साइन्स एक दूसरे के कितने नजदीक आते जा रहे हैं, इसे समझने के लिये दुनिया के कुछ बड़े साइन्स वालों के विचार नीचे दिये जाते हैं—

योरोपियन साइन्स के नामी पंडित सर ओलिवर लाज ने मौत के बाद की जिन्दगी और रूह के बारे में बात करते हुए सन् १६३० में ब्रिस्टल में कहा था—

"इसमें शक नहीं वह वक़्त नजदीक आ रहा है जब साइन्स इन नए मैदानों में घुसेगी और उनका हाल जानने की कोशिश करेगी... सच यह है कि हम एक ऐसी रूहानी दुनिया में रह रहे हैं जो इस माद्दी दुनिया पर हावी है. वह रूहानी दुनिया एक बड़ी और सच्ची दुनिया है. वह सदा हमारे पास है. उसकी जबरदस्त ताक़तों को हमने अभी कुछ कुछ समझना शुरू किया है. अगर हमें यह भरोसा और तसल्ली न होती कि वह जबरदस्त ताक़तें एक ऐसी शक्ति के मातहत हैं जो सबका भला चाहती है, सब के बाप की तरह है और जिसका नाम 'प्रेम' है, तो यह ताक़तें हमारे लिये बड़ी डरावनी होतीं.'

ग्रेट बृटेन की रायल सासाइटी के सेक्रेटरी सर जेम्स जीन्स ने लिखा है—"पहले हम जड़ माद्दे को असली चीज और मन या आत्मा को उससे पैदा हो जाने वाली चीज समझते थे. अब मालूम होता है बात उल्टी है. अब हमें यह महसूस होने लगा है कि मन या आत्मा ही माद्दी दुनिया को पैदा करता है और उसे चलाता है. मेरा मतलब हमारी अलग अलग आत्माओं से नहीं है, बल्कि उस

جڑ اور جان ہیں۔ یہ کام شروع بھی ہو چکا ہے۔ اسے بڑھانا، پھیلانا اور روپ دینا ہے۔

مذہب اور سائنس ایک دوسرے کے کتنے نزدیک آتے جا رہے ہیں، اسے سمجھنے کے لئے دنیا کے کچھ بڑے سائنس والوں کے وچار نیچے دئے جاتے ہیں—

یوروپین سائنس کے نامی پنڈت سر آلیور لاج نے موت کے بعد کی زندگی اور روح کے بارے میں بات کرتے ہوئے ۱۹۳۰ء میں برسٹل میں کہا تھا—

"اس میں شک نہیں وہ وقت نزدیک آ رہا ہے جب سائنس ان نئے میدانوں میں گھسے گی اور ان کا حال جاننے کی کوشش کرے گی.... سچ یہ ہے کہ ہم ایک ایسی روحانی دنیا میں رہ رہے ہیں جو اس مادی دنیا پر حاوی ہے۔ وہ روحانی دنیا ایک بڑی اور سچی دنیا ہے۔ وہ سدا ہمارے پاس ہے۔ اس کی زبردست طاقتوں کو ہم نے ابھی کچھ کچھ سمجھنا شروع کیا ہے۔ اگر ہمیں یہ بھروسا اور تسلی نہ ہوتی کہ وہ زبردست طاقتیں ایک ایسی شکتی کے ماتحت ہیں جو سب کا بھلا چاہتی ہے، سب کے باپ کی طرح ہے اور جس کا نام 'پریم' ہے، تو یہ طاقتیں ہمارے لئے بڑی ڈراونی ہوتیں۔"

گریٹ برٹین کی رایل سوسائٹی کے سکریٹری سر جیمس جینس نے لکھا ہے—"پہلے ہم جڑ مادے کو اصلی چیز اور من یا آتما کو اس سے پیدا ہو جانے والی چیز سمجھتے تھے۔ اب معلوم ہوتا ہے بات الٹی ہے۔ اب ہمیں یہ محسوس ہونے لگا ہے کہ من یا آتما ہی مادی دنیا کو پیدا کرتا ہے اور اسے چلاتا ہے۔ میرا مطلب ہماری الگ الگ آتماؤں سے نہیں ہے، بلکہ اس

बड़ी सब जगह मौजूद आत्मा से है जिसके विचार ज़र्रों से हमारी अलग अलग आत्माएँ बनी हैं".

सन् १९३३ में 'दि न्यू बैकग्राउन्ड आफ साइन्स' नामी किताब में सर जेम्स जीन्स ने लिखा था—

"उन्नीसवीं सदी की साइन्स (फ़िज़िक्स) की ख़ास चीज़ माद्दीयत और माद्दी जगत के अटल और ऊँचे क़ानून समझे जाते थे. अब हम उससे शायद ज़्यादा ज़्यादा दूर होते जांयगे."

सन् १९३७ में 'दि मिस्टीरियस यूनिवर्स' नाम की किताब में उन्होंने लिखा कि—

"जो नई बातें हमें पता चली हैं उनसे हम मजबूर हैं कि शुरू में जल्दी में आकर हमने जो राय बना ली थी उसे अब हम फिर से जांचें. अब मालूम होता है कि जिसे हम जड़ माद्दा और असली हक़ीक़त समझे थे वह असल में मन या आत्मा ही से पैदा हुआ है और उसी का एक ज़हूर या रूप है."

प्रोफ़ेसर सर ए० एस० एडिंगटन ने हाल में कहा है—

"हम आजकल इस नतीजे पर पहुंच गए हैं कि कोई ग़ैर मालूम ताक़त काम कर रही है और हम यह नहीं जानते कि वह क्या कर रही है".

और "आजकल की साइंस (फ़िज़िक्स) में से बेजान माद्दे का ख़याल मिट गया. अब हमारे तजुरबों में पहली और सब से सीधी चीज़ मन, ख़याल या आत्मा है. मैं समझता हूँ चेतनता या ख़याल ही बुनियादी चीज़ है. माद्दा इसी चेतनता या ख़याल से पैदा हुआ है."

بڑی سب جگہ موجود آتما سے ہے جس کے وچار ذرّوں سے ہماری الگ الگ آتمائیں بنی ہیں۔"

سنہ ۱۹۳۳ء میں 'دی نیو بیک گراؤنڈ آف سائنس' نامی کتاب میں سر جیمس جینس نے لکھا تھا—

"انیسویں صدی کی سائنس (فزکس) کی خاص چیز مادیت اور مادی جگت کے اٹل اور اونچے قانون سمجھے جاتے تھے۔ اب ہم اس سے شاید زیادہ دور ہوتے جائیں گے۔"

سنہ ۱۹۳۷ء میں 'دی مسٹریس یونیورس' نام کی کتاب میں انھوں نے لکھا کہ—

"جو نئی باتیں ہمیں پتہ چلی ہیں ان سے ہم مجبور ہیں کہ شروع میں جلدی میں آکر ہم نے جو رائے بنالی تھی اسے اب ہم پھر سے جانچیں۔ اب معلوم ہوتا ہے کہ جسے ہم جڑ مادہ اور اصلی حقیقت سمجھے تھے وہ اصل میں من یا آتما ہی سے پیدا ہوا ہے اور اسی کا ایک ظہور یا روپ ہے۔"

پروفیسر سر اے۔ ایس۔ ایڈنگٹن نے حال میں کہا ہے—

"ہم آج کل اس نتیجے پر پہنچ گئے ہیں کہ کوئی غیر معلوم طاقت کام کر رہی ہے اور ہم یہ نہیں جانتے کہ وہ کیا کر رہی ہے"۔

اور "آج کل سائنس (فزکس) میں سے بے جان مادّے کا خیال مٹ گیا۔ اب ہمارے تجربوں میں پہلی اور سب سے سیدھی چیز من، خیال یا آتما ہے۔ میں سمجھتا ہوں چیتنتا یا خیال ہی بنیادی چیز ہے۔ مادہ اسی چیتنتا یا خیال سے پیدا ہوا ہے۔"

हरबर्ट स्पेन्सर ने सन् १९०० के क़रीब अस्सी साल की उमर में कहा था—

"जिस चीज़ को मैं 'हमारे जानने की पहुँच से परे' (अननोएबल) कहता हूँ वह किसी तरह मजहब को नहीं काटती. बल्कि उसे ताक़त पहुंचाती है."

सब बड़े बड़े मजहबों के क़ायम करने वाले कह गए हैं कि यह 'हमारे जानने की पहुंच से परे' चीज़ ही आत्मा है.

हरबर्ट स्पेन्सर और चार्ल्स डारविन के साथी एलफ्रेड रसल वैलेस ने अपनी किताब 'सोशल इनवाइरनमेन्ट एन्ड मारल प्रोग्रेस' में साफ़ लिखा है कि—'मुझे यक़ीन है कि रूह माद्दे को चलाती है.'

'दि ग्रेट डिज़ाइन' (१९३४) नाम की किताब में चौदह बड़े बड़े साइन्स वालों ने अपनी सब की यह मिली हुई राय ज़ाहिर की है कि—"यह दुनिया बिना रूह की मशीन नहीं है. यह इत्तफ़ाक़ ही से यूँही नहीं बन गई है. माद्दे के इस परदे के पीछे एक दिमाग़, एक चेतन शक्ति काम कर रही है चाहे उसे हम कुछ भी नाम क्यों न दें."

इस सदी का सबसे मशहूर और सबसे बड़ा साइंस का पंडित एल्बर्ट आइन्सटाइन लिखता है—

"मैं ख़ुदा को मानता हूँ. इस दुनिया की तरतीब में और सारी सृष्टि के सुरीले मेल में ख़ुदा अपने को ज़ाहिर करता है. मैं मानता हूँ कि सारी क़ुदरत में चेतनता काम कर रही है. साइन्स के काम की बुनियाद अब इसी यक़ीन पर है कि यह दुनिया यूँही इत्तफ़ाक़ से पैदा नहीं हो गई है बल्कि इसमें एक तरतीब और मतलब है जो समझ में आ सकता है."

ہربرٹ سپنسر نے سن ۱۹۰۰ کے قریب اسّی سال کی عمر میں کہا تھا—

"جس چیز کو میں 'ہمارے جاننے کی پہنچ سے پرے' (انوایبل) کہتا ہوں وہ کسی طرح مذہب کو نہیں کاٹتی، بلکہ اُسے طاقت پہنچاتی ہے۔"

سب بڑے بڑے مذہبوں کے قایم کرنے والے کہہ گئے ہیں کہ یہ 'ہمارے جاننے کی پہنچ سے پرے' چیز ہی آتما ہے۔

ہربرٹ سپنسر اور چارلس ڈاروِن کے ساتھی الفریڈ رسل ویلیس نے اپنی کتاب 'سوشل انوائرنمنٹ اینڈ مارل پروگریس' میں صاف لکھا ہے کہ— 'مجھے یقین ہے کہ روح مادّے کو چلاتی ہے۔'

'دی گریٹ ڈیزائن' (۱۹۳۴) نام کی کتاب میں چودہ بڑے بڑے سائنس والوں نے اپنی سب کی یہ ملی ہوئی رائے ظاہر کی ہے کہ— "یہ دُنیا بنا روح کی مشین نہیں ہے، یہ اتفاق ہی سے یونہی نہیں بن گئی ہے۔ مادّے کے اِس پردے کے پیچھے ایک دماغ، ایک چیتن شکتی کام کر رہی ہے چاہے اُسے ہم کچھ بھی نام کیوں نہ دیں۔"

اسی صدی کا سب سے مشہور اور سب سے بڑا سائنس کا پنڈت البرٹ آئینسٹائن لکھتا ہے—

"میں خدا کو مانتا ہوں۔ اِس دُنیا کی ترتیب میں اور ساری سرشٹی کے سُریلے میل میں خدا اپنے کو ظاہر کرتا ہے۔ میں مانتا ہوں کہ ساری قدرت میں چیتنتا کام کر رہی ہے۔ سائنس کے کام کی بنیاد اب اسی یقین پر ہے کہ یہ دُنیا یونہی اتفاق سے پیدا نہیں ہوگئی ہے بلکہ اِس میں ایک ترتیب اور مطلب ہے جو سمجھ میں آسکتا ہے۔"

जे० बी० एस० हैलडेन ने लिखा है—

"जिस दुनिया को हम एक अंधी मशीन की तरह समझे थे, वह असल में रूहानी दुनिया है जिसे हम अभी बहुत कम और बहुत अधूरा देख पाए हैं. रूहानी दुनिया ही असली दुनिया है. सच यह है कि दुनिया या विश्व की असलियत न माद्दा है, न कोई माद्दी ताक़त न कोई और माद्दी चीज बल्कि असलियत मन या आत्मा है."

सर आर्थर एस० एडिंगटन ने लिखा है—

"यह पुराना ख्याल कि खुदा नहीं है जाता रहा. मजहब का नाता रूह और मन की दुनिया से है. इस लिये मजहब को हिलाया नहीं जा सकता."

आर्थर एच० कौम्पटन ने लिखा है—

"मालूम होता है हमारा सोचना एक दरजे तक हमारे दिमाग से अलग भी होता है, जिससे पूरी तरह साबित तो अभी नहीं होता. पर मालूम ऐसा होता है कि मरने के बाद भी चेतनता या रूह रहती है."

राबर्ट ए. मिल्लीकान का कहना है—"इस दुनिया को एक डोरे में बांधने वाली ताक़त खुदा की ताक़त है. विकासवाद (एवोल्यूशन या इर्तक़ा) से पता चलता है कि अनगिनत युगों या बे अन्त जमाने के अन्दर प्रकृति में लगातार जान फूंक कर और आखीर में एक दर्जे तक खुदा की सी रूहानी ताक़तों वाले इंसान को पैदा करके खुदा अपने आप को जाहिर करता है. इससे बढ़कर ऊंचा ख्याल कोई इन्सान के दिमाग़ में अभी पैदा नहीं हुआ."

جے. بی. ایس. ہیلڈن نے لکھا ہے—

"جس دنیا کو ہم ایک اندھی مشین کی طرح سمجھے تھے. وہ اصل میں روحانی دنیا ہے جسے ہم ابھی بہت کم اور بہت ادھورا دیکھ پائے ہیں. روحانی دنیا ہی اصلی دنیا ہے. سچ یہ ہے کہ دنیا یا وشو کی اصلیت نہ مادہ ہے، نہ کوئی مادی طاقت نہ کوئی اور مادی چیز بلکہ اصلیت من یا آتما ہے."

سر آرتھر ایس. ایڈنگٹن نے لکھا ہے—

"یہ پرانا خیال کہ خدا نہیں ہے جاتا رہا. مذہب کا ناتا روح اور من کی دنیا سے ہے. اس لئے مذہب کو ہلایا نہیں جا سکتا."

آرتھر ایچ. کومپٹن نے لکھا ہے—

"معلوم ہوتا ہے ہمارا سوچنا ایک درجے تک ہمارے دماغ سے الگ بھی ہوتا ہے، جس سے پوری طرح ثابت تو ابھی نہیں ہوتا. پر معلوم ایسا ہوتا ہے کہ مرنے کے بعد بھی چیتنتا یا روح رہتی ہے."

رابرٹ اے. ملیکان کا کہنا ہے—"اس دنیا کو ایک ڈورے میں باندھنے والی طاقت خدا کی طاقت ہے. وکاس واد (ایوولیوشن یا ارتقا) سے پتہ چلتا ہے کہ ان گنت یگوں یا بے انت زمانے کے اندر پرکرتی میں لگاتار جان پھونک کر اور آخیر میں ایک درجے تک خدا کی سی روحانی طاقتوں والے انسان کو پیدا کر کے خدا اپنے آپ کو ظاہر کرتا ہے. اس سے بڑھ کر اونچا خیال کوئی انسان کے دماغ میں ابھی پیدا نہیں ہوا."

सर जे० ए० टामसन 'दि ग्रेट डिज़ाइन' नाम की किताब में यह बताने के बाद कि दरख्तों, पौदों और छोटे से छोटे कीड़ों से लेकर इन्सान तक सब में रूह ही का जहूर है, एक बिल्कुल नई और बहुत बड़ी अमरीकन यूनीवर्सिटी के दरवाज़े पर खुदे हुए इस दुआइया फ़िक़रे को दोहराता है—"ऐ ख़ुदा ! तू मेरी आँखें खोल दे, ताकि मैं तेरी क़ुदरत की अजीब-अजीब चीज़ों को देख सकूं !"

लन्दन, बौन, लेडेन, लीपज़िग और और बहुत सी योरप और अमरीका की यूनीवर्सिटियों में अब रूहानी चीज़ों की खोज के लिये खास महकमें खुलते जा रहे हैं और खास प्रोफ़ेसर रखे गए हैं जहां पुराने मिस्र की मज़हबी किताबों से लेकर हिन्दुस्तान के 'योग' और सूफ़ियों के 'सलूक' तक की तालीम दी जाती है.

आजकल की योरप की साइन्स बच्चे की हैसियत से मज़हब ही से पैदा हुई. जब वह जवान हुई तो मज़हब ने उसे खूब सताया और दबाया. उसके बाद साइन्स ने बढ़कर बदला लिया और मज़हब पर हमले किये. फिर जब बदला हो चुका तो वही साइन्स अब शुरू के प्रेम का कर्ज़ा चुकाने के लिये एक ज़्यादा ऊंचे, ज़्यादा नफ़ीस, ज़्यादा समझदारी के और झूठे वहमों और अंधी मानताओं से पाक रूप में मज़हब को फिर से ज़िन्दा और जानदार बनाने की कोशिश में है.

जब साइन्स और मज़हब के बीच की दीवारें टूटेंगी तो मज़हब मज़हब के बीच की दीवारें भी टूटे बिना नहीं रह सकतीं. तब ही मुल्क-मुल्क और क़ौम-क़ौम के बीच की दीवारें भी टूटेंगी. तब ही सब क़ौमों, सब मुल्कों और सब इन्सानों के दिल मिलेंगे. तब ही

سر جے. اے. ٹامسن 'دی گریٹ ڈیزائن' نام کی کتاب میں یہ بتانے کے بعد کہ درختوں، پودوں اور چھوٹے سے چھوٹے کیڑوں سے لے کر انسان تک سب میں روح ہی کا ظہور ہے، ایک بالکل نئی اور بہت بڑی امریکن یونیورسٹی کے دروازے پر کھدے ہوئے اس دعائیہ فقرے کو دہراتا ہے—"اے خدا! تو میری آنکھیں کھول دے، تاکہ میں تیری قدرت کی عجیب عجیب چیزوں کو دیکھ سکوں!"

لندن، بون، لیڈین، لیپزگ اور اور بہت سی یورپ اور امریکا کی یونیورسٹیوں میں اب روحانی چیزوں کی کھوج کے لئے خاص محکمے کھلتے جا رہے ہیں اور خاص پروفیسر رکھے گئے ہیں جہاں پرانے مصر کی مذہبی کتابوں سے لے کر ہندوستان کے 'یوگ' اور صوفیوں کے 'سلوک' تک کی تعلیم دی جاتی ہے۔

آج کل کی یورپ کی سائنس بچے کی حیثیت سے مذہب ہی سے پیدا ہوئی۔ جب وہ جوان ہوئی تو مذہب نے اسے خوب ستایا اور دبایا۔ اس کے بعد سائنس نے بڑھ کر بدلہ لیا اور مذہب پر حملے کئے۔ پھر جب بدلہ ہو چکا تو وہی سائنس اب شروع کے پریم کا قرضہ چکانے کے لئے ایک زیادہ اونچے زیادہ نفیس، زیادہ سمجھداری کے اور جھوٹے وہموں اور اندھی مانتاؤں سے پاک روپ میں مذہب کو پھر سے زندہ اور جاندار بنانے کی کوشش میں ہے۔

جب سائنس اور مذہب کے بیچ کی دیواریں ٹوٹیں گی تو مذہب مذہب کے بیچ کی دیواریں بھی ٹوٹے بنا نہیں رہ سکتیں۔ تب ہی ملک ملک اور قوم قوم کے بیچ کی دیواریں بھی ٹوٹیں گی۔ تب ہی سب قوموں، سب ملکوں اور سب انسانوں کے دل ملیں گے۔ تب ہی

और इन्सानी दुनिया, सारा मानव समाज सचमुच एक मिला जुला कुटुम्ब होगा. तब ही आदमी आदमी में सच्चा भाईचारा होगा. आजकल की हमारी सारी मुसीबतें उसी सुनहरे दिन के आने की तय्यारी हैं.

इस मज़मून पर ज़्यादा जानकारी के लिये लेखक की अंग्रेज़ी किताब 'The Essential Unity Of All Religions' पढ़िये—एडिटर.

पंजाब हमें क्या सिखाता है

लेखक-पंडित सुन्दरलाल

पंडित सुन्दरलाल जी ने, महात्मा गांधी की सलाह से, अक्तूबर सन् '४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब का दौरा किया था. इस छोटे से बयान में उन्होंने वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मारकाट की वजह से जो जो नतीजे लोगों को भुगतने पड़ रहे हैं उनका बहुत ही दर्दनाक वर्णन किया है. आख़ीर में, आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये, कुछ सुझाव भी पेश किये हैं. हमें विश्वास है कि पंजाब की मौजूदा हालत को ठीक तरह से समझने में इस बयान से बड़ी मदद मिलेगी.

किताब उर्दू और नागरी दोनों लिखावटों में मिल सकती है. क़ीमत चार आने.

—मैनेजर 'नया हिन्द'

اور انسانی دنیا، سارا مانو سماج سچ مچ ایک ملا جلا کٹمب ہوگا۔ تب ہی آدمی آدمی میں سچا بھائی چارا ہوگا۔ آج کل ہماری ساری مصیبتیں اسی سنہرے دن کے آنے کی تیاری ہیں۔

اس مضمون پر زیادہ جان کاری کے لئے لیکھک کی انگریزی کتاب The Essential Unity of All Religions پڑھئے۔—ایڈیٹر

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

لیکھک۔ پنڈت سندر لال

پنڈت سندر لال جی نے مہاتما گاندھی کی صلاح سے اکتوبر ۴۷ء میں پچھمی اور پوربی پنجاب کا دورہ کیا تھا۔ اس چھوٹے سے بیان میں انھوں نے وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مارکاٹ کی وجہ سے جو نتیجے لوگوں کو بھگتنے پڑ رہے ہیں ان کا بہت ہی دردناک ورنن کیا ہے۔ آخیر میں، آج کل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے ہیں۔ ہمیں وشواس ہے کہ پنجاب کی موجودہ حالت کو ٹھیک طرح سے سمجھنے میں اس بیان سے بڑی مدد ملے گی۔

کتاب اردو اور ناگری دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے۔ قیمت چار آنے۔

—منیجر نیا ہند

"मजहब की आड़ में"

(श्री चरन सरन 'नाज़')

मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर—यह हैं पूजा के स्थान, भगवान के घर. इनमें शान्ति, दया और सचाई विराजती हैं. बावले मन ! कहाँ भटक रहा है. देख तो सही शायद तेरे रोग की ओषधि मिल जाय.

"मंदिर"

यह है मंदिर. सोने का कलस. संगमरमर की मूर्त्तियाँ और यह हैं उनके लिये मखमल के बिछौने. देख रात है, सबेरे आना, नहीं देवता नाराज हो जायंगे. "ऐं ! देवता भी रात में सोते हैं. भूखे और ग़रीब इनसान को जगा जगा कर ?" चुप मूर्ख ! शोर न कर. मन्दिर और देवता उनके लिये हैं जो अमूल्य चढ़ावे चढ़ाते हैं. जा सड़क के पत्थर में सर फोड़, वही तुझे ठिकाना देंगे. भूख ! इसका नाम न ले, प्रसाद लेने का साहस न कर. तूने के पैसे चढ़ाये हैं ? वह देख ....घी का दीपक. भगवान अँधेरे से नहीं डरते. धीमी और सुहानी रोशनी उनके आराम के लिये है. नहीं समझे ? घबड़ाता क्यों है. घी नहीं जानता ? चिराग़ नहीं जानता ? रोशनी नहीं जानता ? भाग जा, अँधेरे में बसने वाले नीच, भाग जा. भगवान को अँधेरी रात में वही जगा सकता है जो हजारों को अँधेरे में सुलाकर भगवान के लिये रोशनी पैदा कर सकता हो. अरे ! इधर क्या देखता है ? यह चढ़ावे हैं, सोने चांदी की सिलें, रुपए पैसे. क्या रुपये पैसे भी नहीं देखे ? रोता क्यों है ? आख़िर पैदा ही ऐसा अभागा क्यों हुआ ? ....दरवाजा बन्द, पुजारी जी सो गए. भूखे इनसान ! चोरी की हिम्मत न कर. भगवान का घर है, भगवान का घर..............

"مذہب کی آڑ میں"

(شری چرن سرن 'ناز')

مندر، مسجد، گرجاگھر— یہ ہیں پوجا کے استھان، بھگوان کے گھر. ان میں شانتی، دیا اور سچائی براجتی ہیں. باولے من! کہاں بھٹک رہا ہو. دیکھ تو سہی شاید تیرے روگ کی اوشدھی مل جائے.

"مندر"

یہ ہو مندر. سونے کا کلس، سنگ مرمر کی مورتیاں اور یہ ہو ان کے لئے مخمل کے بچھونے. دیکھ رات ہو، سویرے آنا، نہیں دیوتا ناراض ہو جائنگے. "ایں! دیوتا بھی رات میں سوتے ہیں، بھوکے اور غریب انسان کو جگا جگا کر؟" چپ مورکھ! شور نہ کر، مندر اور دیوتا ان کے لئے ہیں جو انمول چڑھاوے چڑھاتے ہیں. جا سڑک کے پتھر میں سر پھوڑ، وہی تجھے ٹھکانا دیں گے. بھوک! اس کا نام نہ لے، پرساد لینے کا ساہس نہ کر. تو نے کے پیسے چڑھائے ہیں؟ وہ دیکھ...... گھی کا دیپک. بھگوان اندھیرے سے نہیں ڈرتے. دھیمی اور سہانی روشنی ان کے آرام کے لئے ہو. نہیں سمجھے؟ گھبراتا کیوں ہو. گھی نہیں جانتا؟ چراغ نہیں جانتا؟ روشنی نہیں جانتا؟ بھاگ جا، اندھیرے میں بسنے والے نیچ، بھاگ جا. بھگوان کو اندھیری رات میں وہی جگا سکتا ہو جو ہزاروں کو اندھیرے میں سلا کر بھگوان کے لئے روشنی پیدا کر سکتا ہو. ارے! ادھر کیا دیکھتا ہو؟ یہ چڑھاوے ہیں، سونے چاندی کی سلیں، روپئے پیسے. کیا روپئے پیسے بھی نہیں دیکھے؟ روتا کیوں ہو؟ آخر پیدا ہی ایسا ابھاگا کیوں ہوا؟...... دروازہ بند، پجاری جی سو گئے. بھوکے انسان! چوری کی ہمت نہ کر. بھگوان کا گھر ہو، بھگوان کا گھر......

सुहाने समय ने भैरवी अलापी, चिड़ियाँ चहचहा उठीं. पवित्र गंगा की धार तेज़ हो गई, पुजारी जी ने मन्दिर का पट खोला. स्नान, ध्यान, पूजा, पाठ·········सेठ दामोदर दास की हवन सामग्री तैयार है ?"—महन्त जी ने ललकारा. तीन दिन के भूखे इनसान से न रहा गया. बोल उठा, "क्या होगा ?······ढाई मन जौ, २० सेर घी. कपूर, लौंग, चन्दन, इत्र, धूप·········" फिर आ गया नीच ! जानता नहीं, हवन सामग्री बनने जा रही है. सेठ जी को सट्टे में ४ लाख का फ़ायदा हुआ है. सट्टा नीच काम ? चुप बदमाश ! भगवान सुनेंगे तो तुझे शाप दे देंगे·········कहीं तुझ पर सेठ जी के बदमाश न छूट जांय. ख़ामोश हो जा·······क्या तेरी बच्ची मर गई ?—भूख से ! भोले इनसान, ग़रीब का मर जाना ही अच्छा है·······उधर क्या देखता है ? भगवान का जूठन है. ७½ सेर मिठाई, वह गंगा जी की बहती हुई धार में चढ़ेगी; पच्चीस सेर दूध में भगवान नहायेंगे; पांच मन दूध गंगा जी के लिये है. ख़राब होना ?—नीच ! कोई चीज़ ख़राब नहीं होती, न कोई चीज़ कम होती है. भगवान की माया अपार है········ प्रसाद लेगा ? अच्छा बैठ. तीन घंटे बाद भगवान का भोग लुटाया जायगा. अभागे ! फिर भी भूखे न रह जाना.

"मसजिद"

अल्लाह हो अकबर ! अज़ानें हो रही हैं ! नमाज़ का समय है शायद. भाई, यह जगह ख़ूब है. ग़रीब को जरा ढारस हुई. यहाँ सब बराबर हैं. ऊंच नीच की क़ैद नहीं. "तेरे दरबार में पहुँचे तो सभी एक हुए". नमाज़ ख़त्म हुई. एक बुज़ुर्ग ने कुछ खजूर, मिठाइयां बांटीं. ग़रीब ने भी हाथ बढ़ा दिया. शायद ज़कात

سہانے سمے نے بھیروی الاپی، چڑیاں چہچہا اٹھیں، پوتر گنگا کی دھار تیز ہوگئی، پجاری جی نے مندر کا پٹ کھولا۔ اسنان، دھیان، پوجا پاٹھ...... سیٹھ دامودر داس کی ہون سامگری تیار ہے؟" مہنت جی نے للکارا۔ تین دن کے بھوکے انسان سے نہ رہا گیا۔ بول اٹھا، "کیا ہوگا؟...... ڈھائی من جو، بیس سیر گھی، کپور، لونگ، چندن، عطر، دھوپ......" پھر آگیا نیچ! جانتا نہیں، ہون سامگری بننے جا رہی ہے۔ سیٹھ جی کو سٹے میں ۴ لاکھ کا فائدہ ہوا ہے۔ سٹا نیچ کام؟ چپ بدمعاش! بھگوان سنیں گے تو تجھے شراپ دے دیں گے...... کہیں تجھ پر سیٹھ جی کے بدمعاش نہ چھوٹ جائیں۔ خاموش ہوجا...... کیا تیری بچی مر گئی؟ — بھوک سے! بھولے انسان، غریب کا مرجانا ہی اچھا ہے...... ادھر کیا دیکھتا ہے؟ بھگوان کا جوٹھن ہے۔ ۷½ سیر مٹھائی، وہ گنگا جی کی بہتی ہوئی دھار میں چڑھے گی؛ پچیس سیر دودھ میں بھگوان نہائیں گے؛ پانچ من دودھ گنگا جی کے لئے ہے۔ خراب ہوگا؟ — نیچ! کوئی چیز خراب نہیں ہوتی، نہ کوئی چیز کم ہوتی ہے۔ بھگوان کی مایا اپار ہے...... پرساد لے گا؟ اچھا بیٹھ۔ تین گھنٹے بعد بھگوان کا بھوگ لٹایا جائے گا۔ ابھاگے! پھر بھی بھوکے نہ رہ جانا۔

"مسجد"

اللہ اکبر! اذانیں ہو رہی ہیں! نماز کا سمے ہے شاید۔ بھائی، یہ جگہ خوب ہے۔ غریب کو ذرا ڈھارس ہوئی۔ یہاں سب برابر ہیں۔ اونچ نیچ کی قید نہیں۔ "تیرے دربار میں پہنچے تو سبھی ایک ہوئے"۔ نماز ختم ہوئی۔ ایک بزرگ نے کچھ کھجور، مٹھائیاں بانٹیں۔ غریب نے بھی ہاتھ بڑھا دیا۔ شاید زکوٰۃ

बट रही थी. मगर हाय रे भाग ! उसके हाथ में आकर खजूर एक ही रह गया, और मिठाइयों में दो अदद नदारद. उसने आंखें ऊपर उठाई. बांटने वाले की आंखों ने चिल्ला कर कहा—"क्या तुम भी मुसलमान हो ?"

"क्या मुसलमान और इनसान में कुछ फ़र्क़ है ?"

पड़ोसी ने कहा—फ़िलासफ़र मालूम होता है. एक दूसरे ने कहा—दहरिया है. तीसरे ने दो हाथ मार ही दिये. "हाय ग़रीबी हाय यह मज़हब"........

अभी ज़कात बट ही रही थी कि भीड़ संख और ढोल बजाती हुई निकली. कहते हैं कि वह कीर्तन पार्टी थी. नाज़ुक मिज़ाज अल्लाह के कान के पर्दे फटने लगे. भगवान को जोश आ रहा था. आख़िर भगवान और ख़ुदा में वह भयानक लड़ाई हुई कि दूसरे दिन अख़बार में देखने से मालूम हुआ—तीन मरे और बीस घायल.

उस बेचारे ने यह देख कर सोचा कि क्या अच्छा हो कि इन बासी और बुड्ढे ख़ुदाओं और भगवानों को दफ़ना दिया जाय.

शायर ने भी एक राग अलापा—

"सच कहदूं ऐ बिरहमन, गर तू बुरा न माने
तेरे सनमकदों के बुत हो गए पुराने
अपनों से बैर रखना, तूने बुतों से सीखा
जंगो जदल सिखाया वाइज़ को भी ख़ुदा ने"

सच्चाई के शराब ख़ाने से लौटता हुआ एक और मतवाला यों गुनगुना उठा—

"लड़वाते हैं मन्दिर मसजिद मेल कराती मधुशाला".

بٹ رہی تھی. مگر ہائے رے بھاگ! اس کے ہاتھ میں آکر کھجور ایک ہی رہ گیا، اور مٹھائیوں میں دو عدد ندارد. اس نے آنکھیں اوپر اٹھائیں. بانٹنے والے کی آنکھوں نے چلاّ کر کہا—"کیا تم بھی مسلمان ہو؟"

"کیا مسلمان اور انسان میں کچھ فرق ہے؟"

پڑوسی نے کہا—فلاسفر معلوم ہوتا ہے. ایک دوسرے نے کہا—دہریہ ہے. تیسرے نے دو ہاتھ مار ہی دئے. "ہائے غریبی ہائے یہ مذہب"......

ابھی ذکوٰۃ بٹ ہی رہی تھی کہ بھیڑ سنکھ اور ڈھول بجاتی ہوئی نکلی. کہتے ہیں کہ وہ کیرتن پارٹی تھی. نازک مزاج اللہ کے کان کے پردے پھٹنے لگے. بھگوان کو جوش آرہا تھا. آخر بھگوان اور خدا میں وہ بھیانک لڑائی ہوئی کہ دوسرے دن اخبار میں دیکھنے سے معلوم ہوا—تین مرے اور بیس گھایل.

اس بےچارے نے یہ دیکھ کر سوچا کہ کیا اچھا ہو کہ ان باسی اور بڈھے خداؤں اور بھگوانوں کو دفنا دیا جائے.

شاعر نے بھی ایک راگ الاپا—

"سچ کہہ دوں اے برہمن، گر تو برا نہ مانے
تیرے صنم کدوں کے بت ہوگئے پرانے
اپنوں سے بیر رکھنا، تو نے بتوں سے سیکھا
جنگ و جدل سکھایا واعظ کو بھی خدا نے"

سچائی کے شراب خانے سے لوٹتا ہوا ایک اور متوالا یوں گنگنا اٹھا—

"لڑواتے ہیں مندر مسجد میل کراتی مدھوشالا"!

जब सच्चाई का नशा कुछ और गम्भीर हुआ तो कहने लगे—
"प्रार्थना मत कर, मत कर, मत कर".

"गिर्जाघर"

जरा गिर्जाघर की सैर कर लीजिये. आह! कितना मन-भावन सीन है. जन्नत की हूरें, मथुरा की ग्वालिन.लब पर प्रभू मसीह, आंख में हुस्नाबाद की देवियाँ और दिल में अजीब तरह की धड़कन.......भई चुप रहो. प्रेयर हो रही है. एक कोने से आवाज आई "आजादी". दूसरे ने कहा "बको मत." तीसरे ने कहा "दिमाग़ खराब है".......इस मन्दिर में आकर आजादी और गुलामी का फ़र्क़ मिट जाता है.......ग़रीबी! बिलकुल झूठ. कहीं कोई ग़रीब भी होता है? प्रभू मसीह! यह कैसे लोग हैं. इन्हें बेनियाजी नहीं हासिल होती. बड़े दुनियादार हैं.......एक दूसरे कोने पर एक कराहती हुई बुढ़िया का अंग अंग बोल उठा. "जवानी का अंजाम!" हुस्न में सराबोर एक युवती की जवानी सुरीली लय में कहने लगी, "जवानी इसे सोचा नहीं करती". एक नवजवान ने कनखियों से इशारा किया, दोनों ग़ायब.......

हम सभ्य हैं. ग़रीब न देख सका यह ढोंग.

جب سچائی کا نشہ کچھ اور گمبھیر ہوا تو کہنے لگے۔
"پرارتھنا مت کر، مت کر، مت کر!"

"گرجا گھر"

ذرا گرجا گھر کی سیر کر لیجئے۔ اوہ! کتنا من بھاون سین ہے۔ جنّت کی حوریں، متھرا کی گوالن لب پر پربھو مسیح، آنکھ میں حسن آباد کی دیویاں اور دل میں عجیب طرح کی دھڑکن....... بھئی چپ رہو، پریئر ہو رہی ہے۔ ایک کونے سے آواز آئی "آزادی"۔ دوسرے نے کہا "بکو مت"۔ تیسرے نے کہا "دماغ خراب ہے"..... اس مندر میں آکر آزادی اور غلامی کا فرق مٹ جاتا ہے...... غریبی! بالکل جھوٹ، کہیں کوئی غریب بھی ہوتا ہے؟ پربھو مسیح! یہ کیسے لوگ ہیں۔ انھیں بے نیازی نہیں حاصل ہوتی۔ بڑے دنیادار ہیں....... ایک دوسرے کونے پر ایک کراہتی ہوئی بڑھیا کا انگ انگ بول اٹھا، "جوانی کا انجام!" حسن میں سرابور ایک یوتی کی جوانی سریلی لے میں کہنے لگی، "جوانی اسے سوچا نہیں کرتی"۔ ایک نوجوان نے کنکھیوں سے اشارہ کیا، دونوں غایب......

ہم سبھیہ ہیں۔ غریب نہ دیکھ سکا یہ ڈھونگ۔

धर्म, संस्कृति, सभ्यता

(श्री किशोरलाल घ० मशरूवाला, वर्धा)

क़ायदे आज़म जिनाह से जब पूछा गया कि क्या आप अिसलाम का 'थियोक्रैटिक' (सांप्रदायिक या मज़हबी) राज क़ायम करना चाहते हैं? तब अुन्होंने अिसका जोर से अिन्कार किया. महात्मा गांधी, पं० जवाहरलाल नेहरू और कॉंग्रेस के दूसरे नेताओं ने भी जाहिर किया है कि हिन्द में हिन्दू-सांप्रदायिक या मज़हबी राज बनाने का अुनका तनिक भी अिरादा नहीं, बल्कि वैसी कोशिशों का वे सामना करेंगे.

फिर भी कॉंग्रेस का मुसलिम लीग पर यह आक्षेप (अिलज़ाम) है कि वह पाकिस्तान में मुसलिम मज़हबी राज क़ायम करना चाहती है. अिस के सबूत में क़ायदे-आज़म और दूसरे लीगी नेताओं के भाषणों और बयानों में अिसलाम के अुसूल और क़ुरान की हिदायतों का जो बार बार ज़िक्र आता है, वह पेश किया जाता है. और यह बात ज़रूर है कि लीगी नेता कअी बार कह चुके हैं कि पाकिस्तान अेक अिसलामी राज (स्टेट) है और दुनिया के दूसरे अिसलामी राजों से दोस्ती बढ़ाना चाहता है.

दूसरी तरफ़ से मुसलिम लीग का कॉंग्रेस पर अिससे ठीक अुलटा अिलज़ाम है. क़रीब ८-१० साल पहले जिनाह साहब ने अपने अेक भाषण में कहा था कि गांधी जी—जो कांग्रेस के सब कुछ हैं— सारे देश को गांधी आश्रम और गांधी सेवा संघ बनाना

دھرم، سنسکرتی، سبھیتا

(شری کشور لال گھا مشروالا، وردھا)

قائدِ اعظم جناح سے جب پوچھا گیا کہ کیا آپ اسلام کا "تھیوکریٹک" (سامپردایک یا مذہبی) راج قایم کرنا چاہتے ہیں؟ تب اُنھوں نے اِس کا زور سے انکار کیا۔ مہاتما گاندھی، پنڈت جواہر لال نہرو اور کانگریس کے دوسرے نیتاؤں نے بھی ظاہر کیا ہے کہ ہند میں ہندو سامپردایک یا مذہبی راج بنانے کا اُن کا تنک بھی ارادہ نہیں، بلکہ ویسی کوششوں کا وے سامنا کریں گے۔

پھر بھی کانگریس کا مسلم لیگ پر یہ آکشیپ (الزام) ہے کہ وہ پاکستان میں مسلم مذہبی راج قایم کرنا چاہتی ہے۔ اِس کے ثبوت میں قائدِ اعظم اور دوسرے لیگی نیتاؤں کے بھاشنوں اور بیانوں میں اسلام کے اُصول اور قرآن کی ہدایتوں کا جو بار بار ذکر آتا ہے، وہ پیش کیا جاتا ہے۔ اور یہ بات ضرور ہے کہ لیگی نیتا کئی بار کہہ چکے ہیں کہ پاکستان ایک اسلامی راج (اسٹیٹ) ہے اور دُنیا کے دوسرے اسلامی راجوں سے دوستی بڑھانا چاہتا ہے۔

دوسری طرف سے مسلم لیگ کا کانگریس پر اِس سے ٹھیک اُلٹا الزام ہے۔ قریب ۸-۱۰ سال پہلے جناح صاحب نے اپنے ایک بھاشن میں کہا تھا کہ گاندھی جی — جو کانگریس کے سب کچھ ہیں — سارے دیش کو گاندھی آشرم اور گاندھی سیوا سنگھ بنانا

चाहते हैं. वे हिंदुस्तान में 'राम राज्य' क़ायम करना चाहते हैं. उन्हें किसी न किसी तरह की वर्ण व्यवस्था (यानी पीढ़ी दर पीढ़ी अेक ही पेशा चलाने की रस्म.) सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य आदि व्रत वग़ैरा का प्रचार करना है. अुन्हें सारी जनता को 'हिंदुअी' (Hinduize) कर डालना है. अिस ज़माने की 'पश्चिम' की अिलमी तरक़्क़ी उन्हें पसन्द नहीं. अिस तरह कांग्रेस न सिर्फ़ हिन्दू, बल्कि सवर्ण हिन्दू संस्था ही है. और सिर्फ़ नाम लेने भर के लिये और मेहरबानी के तौर पर दूसरी जातियों को कुछ जगह देकर सवर्ण हिन्दुओं का राज क़ायम करना चाहती है.

अिस सिलसिले में अेक बात ध्यान में लाने लायक़ है. अगस्त १४-१५ के दिन हुअे भाषणों में पं० जवाहर लाल को अशोक का धर्मचक्र याद आया. लार्ड माउन्टबैटेन ने अकबर को याद किया और उन्हें जवाब देते हुअे क़ायदे आज़म ने उलाहना दिया कि लोकशाही (डेमोक्रसी) को अकबर क्या जानता था ? अुससे कअी सदी पहले हज़रत मुहम्मद पैग़म्बर लोकशाही की मिसाल दुनिया में पेश कर गये ? ये तीन यादें तीन अलग अलग प्रकार के बने हुअे दिल व दिमाग़ की गढ़न का परिचय देती हैं.

अिस तरह दोनों राज के नेता सांप्रदायिक-राज्य-वाद के हिमायती होने से अिनकार करते हैं. लेकिन, दोनों ही अपने अपने मज़हबों से रंगी हुअी बोली में ही अपने आदर्श पेश करते हैं, और अुसी की बुनियाद पर अपने अपने राज्य की आअिन्दा अिमारत खड़ी करने की ख़ाहिश रखते हैं. चुनांचे दोनों ही अेक दूसरे पर मज़हबी राज क़ायम करने की मुराद का दोष लगाते हैं.

چاہتے ہیں۔ وے ہندستان میں 'رام راجیہ' قایم کرنا چاہتے ہیں۔ انھیں کسی نہ کسی طرح کی ورن ویوستھا (یعنے پیڑھی در پیڑھی ایک ہی پیشہ چلانے کی رسم) ستیہ، اہنسا، برہمچریہ آدی برت وغیرہ کا پرچار کرنا ہے۔ انھیں ساری جنتا کو 'ہندوی' (Hinduize) کر ڈالنا ہے۔ اس زمانے کی 'پشچم' کی علمی ترقی انھیں پسند نہیں۔ اس طرح کانگریس نہ صرف ہندو، بلکہ سورن ہندو سنستھا ہی ہے۔ اور صرف نام لینے بھر کے لئے اور مہربانی کے طور پر دوسری جاتیوں کو کچھ جگہ دے کر سورن ہندوؤں کا راج قایم کرنا چاہتی ہے۔

اس سلسلے میں ایک بات دھیان میں لانے لایق ہے۔ اگست ۱۴-۱۵ کے دن ہوئے بھاشنوں میں پنڈت جواہر لال کو اشوک کا دھرم چکر یاد آیا، لارڈ ماؤنٹ بیٹن نے اکبر کو یاد کیا اور انھیں جواب دیتے ہوئے قائد اعظم نے اُلاہنا دیا کہ لوک شاہی (ڈیموکریسی) کو اکبر کیا جانتا تھا؟ اس سے کئی سال پہلے حضرت محمدؐ پیغمبر لوک شاہی کی مثال دنیا میں پیش کر گئے؟ یے تین یادیں تین الگ الگ پرکار کے بنے ہوئے دل و دماغ کی گڑھن کا پریچے دیتی ہیں۔

اس طرح دونوں راج کے نیتا سامپردایک-راجیہ-واد کے حمایتی ہونے سے انکار کرتے ہیں۔ لیکن، دونوں ہی اپنے اپنے مذہبوں سے رنگی ہوئی بولی میں ہی اپنے آدرش پیش کرتے ہیں، اور اُسی کی بنیاد پر اپنے اپنے راجیہ کی آئندہ عمارت کھڑی کرنے کی خواہش رکھتے ہیں۔ چنانچہ دونوں ہی ایک دوسرے پر مذہبی راج قایم کرنے کی مراد کا دوش لگاتے ہیں۔

तब अिस विषय को ज़रा गहरे अुतर कर तटस्थ वृत्ति (ग़ैर जानिबदारी) से समझ लेने की ज़रूरत है.

मुमकिन है कि धर्म, संस्कृति और सभ्यता अिन तीनों के फ़र्क़ को अगर हम समझ लें तो अिस विषय को ज़्यादा साफ़ तौर पर हम समझ सकेंगे.

जो आदमी अिस बात में यक़ीन करता हो कि 'अल्लाह अेक है, उसके सिवा और कोअी देव नहीं. मुहम्मद अुसका पैग़म्बर है. क़ुरान उसकी भेजी हुई किताब है, और नमाज़, रोज़ा, ज़कात वग़ैरा अुसके पांच ख़ास (मुख्य) हुक्म हैं' अुसे महज़ब से मुसलमान कहा जा सकता है. अैसा मानने वाले का नाम चाहे अबदुल्ला या हसन न होते हुअे भगवान दास या भीना भाअी हो. और चाहे वह पाजामा और फ़ेज़ के बजाय धोती और पगड़ी बांधता हो, फिर भी वह मुसलमान ही है.

अिससे अुलटा जो मनुष्य वेद, पुरान, आगम वग़ैरा शास्त्रों में से और अुन में बताअे हुअे देव, अवतार, तीर्थंकर आदि में से किसी न किसी में श्रद्धा रखता है. पुनर्जन्म कर्म आदि सिद्धान्तों को मानता है और हिन्दू ग्रन्थों में समझाअी हुअी वर्ण व्यवस्था, धर्म के काम, विवाह वग़ैरा की रस्में वग़ैरा को अदा (पालन) करने में अुत्साह रखता है वह धर्म से हिन्दू है. भले ही अुसका नाम जवाहर, रोशन, दौलत, गुलाब या दिलख़ुश हो और अुस का रहन-सहन लिबास आदि अरब, पठान या अीरानी के जैसे हों.

मतलब यह कि जिस तरह आज हम देखते ही हैं कि कअी हिन्दू और मुसलमान अंग्रेज़ी ढब के रहन-सहन, व्यवहार, रमन

تب اِس وشئے کو ذرا گہرے اُتر کر تٹستھ ورتی (غیر جانب داری) سے سمجھ لینے کی ضرورت ہے۔

ممکن ہے کہ دھرم، سنسکرتی اور سبھیتا اِن تینوں کے فرق کو اگر ہم سمجھ لیں تو اس وشئے کو زیادہ صاف طور پر سمجھ سکیں گے۔

جو آدمی اِس بات میں یقین کرتا ہو کہ "اللہ ایک ہے، اُس کے سوا اور کوئی دیو نہیں، محمدؐ اُس کا پیغمبر ہے، قرآن اُس کی بھیجی ہوئی کتاب ہے، اور نماز، روزہ، زکوٰۃ وغیرہ اُس کے پانچ خاص (مکھیہ) حکم ہیں" اُسے مذہب سے مسلمان کہا جاسکتا ہے۔ ایسا ماننے والے کا نام چاہے عبداللہ یا حسن نہ ہوتے ہوئے بھگوان داس یا جناح بھائی ہو، اور چاہے وہ پاجامہ اور فیز کے بجائے دھوتی اور پگڑی باندھتا ہو، پھر بھی وہ مسلمان ہی ہے۔

اِس سے اُلٹا جو منشیہ وید، پُران، آگم وغیرہ شاستروں میں سے اور اُن میں بتائے ہوئے دیو، اوتار، تیرتھنکر آدی میں سے کسی نہ کسی میں شردھا رکھتا ہے، پنرجنم کرم آدی سدّھانتوں کو مانتا ہے اور ہندو گرنتھوں میں سمجھائی ہوئی ورن ویوستھا، دھرم کے کام، وواہ وغیرہ کی رسمیں وغیرہ کو ادا (پالن) کرنے میں اُتساہ رکھتا ہے وہ دھرم سے ہندو ہے۔ بھلے ہی اُس کا نام جواہر، روشن، دولت، گلاب یا دل خوش ہو اور اُس کا رہن سہن لباس آدی عرب، پٹھان یا ایرانی کے جیسے ہوں۔

مطلب یہ کہ جس طرح آج ہم دیکھتے ہی ہیں کہ کئی ہندو اور مسلمان انگریزی ڈھب کے رہن سہن، دیوہار،

अैरा को अपनाये हुअे हैं अुसी तरह अेक आदमी धर्म से मुसलमान होते हुअे भी उसकी सभ्यता—रहन-सहन और व्यवहार (तौर तरीक़ा)—हिन्दू मानो हुआ सभ्यता-सी हो सकती है और जिससे अुलटा भी हो सकता है.

दोनों धर्मों में इस तरह की कुछ जमातें हमारे देश में हैं भी. यानी, धर्म-मज़हब और सभ्यता—ज़िन्दगी का तौर-तरीक़ा—अेक दूसरे से स्वतंत्र, अलग किये जा सकते हैं.

अिन दोनों के अलावा संस्कृति-तहज़ीब-कल्चर अेक तीसरी ही चीज़ है. वह बहुत कुछ पैदा होती है संप्रदाय-मज़हब से, और अकसर अुसके साथ ही रहती है, लेकिन कभी कभी अलग भी रह सकती है.

पश्चिम पंजाब की मुसलिम लीग के हाल ही में बने हुअे सदर मियां अिफ़्तिख़ारुद्दीन के बारे में सुना है कि वे मार्क्सवादी ख़यालों के हैं. और भी कभी मार्क्सवादी या कम्युनिस्ट मुसलमान हैं, जैसे, डा. सैयद महमूद के अेक बेटे. मुमकिन है कि मुसलमान धर्म में अुन्हें श्रद्धा नहीं रही. यानी, अल्लाह की हस्ती, हज़रत मुहम्मद का पैग़म्बरपन, क़ुरान की अीश्वर-प्रेरितता तथा नमाज़ वग़ैरा हिदायतों में वे विश्वास नहीं रखते. अिसी तरह पं० जवाहर लाल नेहरू और सैकड़ों अैसे हिंदू पाये जायेंगे जिनको हिंदू 'धर्म' यानी अुसके किसी पंथ, शास्त्र या विधि में विश्वास नहीं रहा. ब्रह्म समाज और प्रार्थना समाज के लोग भी 'धर्म' से वे हिन्दू हैं, अैसा क़बूल न करेंगे. अिनमें राजा राममोहन राय, केशवचंद्र सेन, रवीन्द्र नाथ टागोर, महादेव गोविंद रानडे, नारायण गणेश चंदावरकर,

وغیرہ کو اپنائے ہوئے ہیں اسی طرح ایک آدمی دھرم سے مسلمان ہوتے ہوئے بھی اس کی سبھیتا — رہن سہن اور ویوہار (طور طریقہ) — ہندو مانی ہوئی سبھیتا سی ہو سکتی ہے اور اس سے الٹا بھی ہو سکتا ہے۔

دونوں دھرموں میں اس طرح کی کچھ جماعتیں ہمارے دیش میں ہیں بھی۔ یعنی، دھرم - مذہب اور سبھیتا — زندگی کا طور طریقہ — ایک دوسرے سے سوتنتر، الگ کئے جا سکتے ہیں۔

ان دونوں کے علاوہ سنسکرتی - تہذیب - کلچر ایک تیسری ہی چیز ہے۔ وہ بہت کچھ پیدا ہوتی ہے۔ سمپردایہ - مذہب سے، اور اکثر اس کے ساتھ ہی رہتی ہے، لیکن کبھی کبھی الگ بھی رہ سکتی ہے۔

پچھم پنجاب کی مسلم لیگ کے حال ہی میں بنے ہوئے صدر میاں افتخارالدین کے بارے میں سنا ہے کہ وے مارکس وادی خیالوں کے ہیں۔ اور بھی کئی مارکس وادی یا کمیونسٹ مسلمان ہیں، جیسے، ڈاکٹر سید محمود کے ایک بیٹے۔ ممکن ہے کہ مسلمان دھرم میں انہیں شردھا نہیں رہی۔ یعنی، اللہ کی ہستی، حضرت محمدؐ کا پیغمبرپن، قرآن کی ایشور - پریرتا تتھا نماز وغیرہ ہدایتوں میں وے وشواس نہیں رکھتے۔ اسی طرح پنڈت جواہر لال نہرو اور سیکڑوں ایسے ہندو پائے جائیں گے جن کو ہندو 'دھرم' یعنی اس کے کسی پنتھ، شاستر یا ودھی میں وشواس نہیں رہا۔ برہمو سماج اور پرارتھنا سماج کے لوگ بھی 'دھرم' سے وے ہندو ہیں، ایسا قبول نہ کریں گے۔ ان میں راجا رام موہن رائے، کیشو چندر سین، رویندرناتھ ٹاگور، مہادیو گووند رانڈے، نارائن گنیش چندا ورکر،

नरसिंहराव भोलानाथ जैसे बड़े बड़े नाम शुमार किये जा सकते हैं.

फिर भी मियां अिफ़्तिख़ारुद्दीन को प्रान्तिक मुसलिम लीग के सदर होने में मुश्किल पैदा नहीं हुअी. और दूसरे भी वैसे ख़याल के शख़्स हों तो अुन्हें भी लीग या और कोअी मुसलिम संस्था में शरीक होना मुश्किल न होगा. पं० जवाहर लाल या मेरे जैसा कोअी आदमी हिंदू महासभा में शरीक होना चाहे तो अुन्हें दाख़िल करने में अुनकी हिंदू धर्म में अश्रद्धा के कारण कोअी अड़चन पैदा न की जायगी. मुसलिम लीग (या हिंदू महासभा) के मेम्बर बनने वाले के बारे में यह नहीं देखा जाता कि अुसका 'धर्म' मुसलमान (या हिंदू) है. मगर, अितना ही देखा जाता है कि अुसकी संस्कृति-तहज़ीब-उसके दिल और दिमाग़ का घाट मुसलमान (या हिंदू) है या नहीं, और अुसके सारे सामाजिक संबंध-रिश्ते मुसलमानों (या हिंदुओं) से हैं या नहीं.

पीढ़ी दर पीढ़ी चलते आये सिलसिले और बचपन से मिले हुअे पालन-पोसन और संबंधों से हर अेक समाज में अेक अेक ख़ास तरह का दिल व दिमाग़ का घाट (मानस) बंध जाता है. यह मानस पैदा होने में अुस समाज के संप्रदाय-मज़हब के अुसूल, विधियाँ, महापुरुषों के चरित्र, स्थानिक और जाति-पाँति की रूढ़ियां, अितिहास-पुराण आदि की कथाअें, व्यवसाय-तालीम वग़ैरा की विशिष्टताअें (ख़ासियत) वग़ैरा अनेक बातें होती हैं. अिन सब के असर में पला हुआ आदमी अपना असल धर्म और रहन-सहन (सभ्यता) आदि छोड़ दे तो भी अुसके स्वभाव,

نرسنگھ راؤ بھولا ناتھ جیسے بڑے بڑے نام شمار کیے جا سکتے ہیں۔

پھر بھی میاں افتخار الدین کو پرانتک مسلم لیگ کے صدر ہونے میں مشکل پیدا نہیں ہوئی۔ اور دوسرے بھی ویسے خیال کے شخص ہوں تو انھیں بھی لیگ یا اور کوئی مسلم سنستھا میں شریک ہونا مشکل نہ ہوگا۔ پنڈت جواہر لال یا میرے جیسا کوئی آدمی ہندو مہاسبھا میں شریک ہونا چاہے تو انھیں داخل کرنے میں اُن کی ہندو دھرم میں اشردھا کے کارن کوئی اڑچن پیدا نہ کی جائے گی۔ مسلم لیگ (یا ہندو مہاسبھا) کے ممبر بننے والے کے بارے میں یہ نہیں دیکھا جاتا کہ اُس کا دھرم مسلمان (یا ہندو) ہے۔ مگر، اتنا ہی دیکھا جاتا ہے کہ اُس کی سنسکرتی-تہذیب- اُس کے دل اور دماغ کا گھاٹ مسلمان (یا ہندو) ہے یا نہیں، اور اُس کے سارے سماجک سنبندھ-رشتے مسلمانوں (یا ہندوؤں) سے ہیں یا نہیں۔

پیڑھی در پیڑھی چلتے آئے سلسلے اور بچپن سے ملے ہوئے پالن-پوسن اور سنبندھوں سے ہر ایک سماج میں ایک خاص طرح کا دل و دماغ کا گھاٹ (مانس) بندھ جاتا ہے۔ یہ مانس پیدا ہونے میں اُس سماج کے سمپرادیہ-مذہب کے اصول، ودھیاں، مہاپرشوں کے چرتر، استھانک اور جاتی-پانتی کی رُوڑھیاں، اتہاس-پُران آدی کی کتھائیں، ویوسایہ-تعلیم وغیرہ کی وششٹتائیں (خاصیت) وغیرہ انیک باتیں ہوتی ہیں۔ ان سب کے اثر میں پلا ہوا آدمی اپنا اصل دھرم اور رہن-سہن (سبھیتا) آدی چھوڑ دے تو بھی اُس کے سوبھاو،

बोली, विचारों का ढांचा, आदर्श वग़ैरा का असर अुस पर क़ायम-सा रह जाता है. वह तभी जाता है जब अुसने अपने पुराने धर्म या समाज को अुस पर नफ़रत ला कर छोड़ा हो और दूसरे का बड़ी श्रद्धा से स्वीकार किया हो. वरना अेक अेक जमात की अेक अेक ख़ास मनोरचना (दिमाग़ की गढ़न) बनती है. अैसी हर समाज की ख़ास गढ़न (विशिष्ट मनोरचना) अुस समाज की संस्कृति या तहज़ीब है.

ब्राह्मण, जैन, सिख वग़ैरा सम्प्रदाय अेक दूसरे से बिलकुल अलग हैं. लेकिन, अिन सब सम्प्रदायों के लोगों के मन की गढ़न बहुत हद तक मिलती जुलती है. सीलोन, बरमा, चीन, जापान वग़ैरा देशों के लोग बौद्ध धर्मी हैं. अिस लिये (सुना है कि) अुनके धार्मिक पूजा पाठ, शास्त्रों की पढ़ाई आदि हिंदुओं की धार्मिक क्रियाओं के जैसा ही मालूम होती हैं. लेकिन, ज़िन्दगी की दूसरी बातों में बहुत फ़र्क़ है. अिस लिअे, अुस हर अेक देश की जनता का दिमाग़ और दिल की गढ़न—यानी, संस्कृति, तहज़ीब—जुदा जुदा तरह की है. चीन में मज़हब के नाम पर बौद्ध, लाओत्से, मुसलमान, अीसाई वग़ैरा अनेक धर्म के लोग हैं. ब्राह्मण, जैन वग़ैरा की तरह ही—शायद अुनसे भी ज़्यादा—वे अेक दूसरे से स्वतंत्र हैं. फिर भी, चीन की प्रजा का मानस और ज़िन्दगी का तरीक़ा श्येन-फ़्यु चांग (कॉन्फ़्युशियस) की परम्परा में गढ़ा है. अिस लिअे, चीन का आदमी व्यक्तिगत रूप में चाहे जिस धर्म का हो, वह संस्कृति की नज़र से श्येन-फ़्यु-चांगी ही समझा जाता है. दूसरी तरफ़ से देखें तो

بولی، وچاروں کا ڈھانچا، آدرش وغیرہ کا اثر اُس پر قایم سا رہ جاتا ہے۔ وہ تبھی جاتا ہے جب اُس نے اپنے پُرانے دھرم یا سماج کو اُس پر نفرت لاکر چھوڑا ہو اور دوسرے کا بڑی شردھا سے سویکار کیا ہو۔ ورنہ ایک ایک جماعت کی ایک ایک خاص منورچنا (دماغ کی گڑھن) بنتی ہے۔ ایسی ہر سماج کی خاص گڑھن (وششٹ منورچنا) اس سماج کی سنسکرتی یا تہذیب ہے۔

براہمن، جین، سکھ وغیرہ سمپردایہ ایک دوسرے سے بالکل الگ ہیں۔ لیکن، ان سب سمپردایوں کے لوگوں کے من کی گڑھن بہت حد تک ملتی جُلتی ہے۔ سیلون، برما، چین، جاپان وغیرہ دیشوں کے لوگ بودھ دھرمی ہیں۔ اس لئے (سُنا ہے کہ) ان کے دھارمک پوجا پاٹھ، شاستروں کی پڑھائی آدی ہندوؤں کی دھارمک کریاؤں کے جیسی ہی معلوم ہوتی ہے۔ لیکن، زندگی کی دوسری باتوں میں بہت فرق ہے۔ اس لئے، اُس ہر ایک دیش کی جنتا کا دماغ اور دل کی گڑھن — یعنی، سنسکرتی، تہذیب — جُدا جُدا طرح کی ہے۔ چین میں مذہب کے نام پر بودھ، لاؤتسے، مسلمان، عیسائی وغیرہ انیک دھرم کے لوگ ہیں۔ براہمن، جین وغیرہ کی طرح ہی — شاید اُن سے بھی زیادہ — وے ایک دوسرے سے سوتنتر ہیں۔ پھر بھی، چین کی پرجا کا مانس اور زندگی کا طریقہ شین فیو-چانگ (کانفیوشیس) کی پرمپرا میں گڑھا ہے۔ اس لئے چین کا آدمی ویکتی گت روپ میں چاہے جس دھرم کا ہو، وہ سنسکرتی کی نظر سے شین-فیو-چانگی ہی سمجھا جاتا ہے۔ دوسری طرف سے دیکھیں تو

(जहाँ तक मेरा खयाल है) श्येन-मयु-चांग नाम का कोअी धर्म या मजहब नहीं.

गांधी जी जैसे महात्मा पुरुष सर्वधर्मसमभाव दिखावें और सर्वधर्मसमभाव का दावा भी करें, फिर भी अुनका जीवन और मनोरचना पग पग पर हिंदू संस्कृति को ही प्रकट करती है. पं० जवाहर लाल सब धर्मों के बारे में अुदासीनता दिखावें लेकिन अुनका भी मानस हिंदू संस्कृति की ही गवाही देता रहता है. मैं हर अेक धर्म पर चाहे जितने तटस्थ भाव से नजर डालूँ और अुनकी नुक्ताचीनी करूं, और जिस संप्रदाय में बचपन से पला था अुसमें से निकल गया हुआ मालूम होअूं, फिर भी मेरा रहन सहन और स्वभाव अुसका असर दिखाये बिना रह नहीं सकता. यही संस्कृति-तहजीब है. किसी ने संस्कृति की व्याख्या ही अैसी की है कि याद की हुअी सब बातें भूल जाने पर दिल और जीवन पर जो असर रह जाय वह संस्कृति है (Culture is what remains after everything that has been learnt is forgotten).

अिस नजर से देखें तो ताज्जुब नहीं कि क़ायदे-आज़म जिनाह को अैसा मालूम हो कि अखंड हिन्दुस्तान में हिन्दू लोग चाहे जितनी पर-मत-सहिष्णुता, अुदारता वग़ैरा दिखावें, राज कारोबार में ग़ैर-हिन्दुओं को स्थान दें, फिर भी क्यों कि हिन्दुओं की ही हिन्दुस्तान में बहुत बड़ी आबादी है अिसलिये सब कामों में विचार और काम करने का तरीक़ा हिन्दू-संस्कृति से रंगा हुआ ही रहेगा. अिस बात को न जुदा जुदा मतदार-मंडल से, न हर मजहब

(جہاں تک میرا خیال ہے) شیین۔فیو۔چانگ نام کا کوئی دھرم یا مذہب نہیں۔

گاندھی جی جیسے مہاتما پُرش سروَدھرم سمبھاو دکھاویں اور سروَدھرم سمبھاو کا دعویٰ بھی کریں، پھر بھی اُن کا جیون اور منورچنا پگ پگ پر ہندو سنسکرتی کو ہی پرکٹ کرتی ہے۔ پنڈت جواہر لال سب دھرموں کے بارے میں اُداسینتا دکھاویں لیکن اُن کا بھی مانس ہندو سنسکرتی کی ہی گواہی دیتا رہتا ہے۔ میں ہر ایک دھرم پر چاہے جتنے تٹستھ بھاو سے نظر ڈالوں اور اُن کی نکتہ چینی کروں، اور جس سمپردایہ میں بچپن سے پلا تھا اُس میں سے نکل گیا ہوا معلوم ہوؤں، پھر بھی میرا رہن سہن اور سوبھاو اُس کا اثر دکھائے بنا رہ نہیں سکتا۔ یہی سنسکرتی۔تہذیب ہے۔ کسی نے سنسکرتی کی ویاکھیا ہی ایسی کی ہے کہ یاد کی ہوئی سب باتیں بھول جانے پر دل اور جیون پر جو اثر رہ جائے وہ سنسکرتی ہے (Culture is what remains after everything that has been learnt is forgotten).

اِس نظر سے دیکھیں تو تعجب نہیں کہ قائدِ اعظم جناح کو ایسا معلوم ہو کہ اکھنڈ ہندستان میں ہندو لوگ چاہے جتنی پر۔مت۔سہشنتا، اُدارتا وغیرہ دکھاویں، راج کاروبار میں غیر ہندوؤں کو استھان دیں، پھر بھی کیوں کہ ہندوؤں کی ہی ہندستان میں بہت بڑی آبادی ہے اِس لئے سب کاموں میں وچار اور کام کرنے کا طریقہ ہندو۔سنسکرتی سے رنگا ہوا ہی رہے گا۔ اِس بات کو نہ جُدا جُدا مت دار۔منڈل سے، نہ ہر مذہب کے

लोगों के लिये अमुक जगह रख छोड़ने से, और न कांग्रेस जैसी असांप्रदायिक संस्था के जरिये मिटाया जा सकता है. चुनाँचे, लोकशाही (डेमोक्रेटिक) आज़ाद हिन्दुस्तान में हिन्दू मानस—हिन्दू संस्कृति—ही अगुआपन ले सकती है. दूसरी तरह के मानस—संस्कृतियों—का स्थान दोयम रहेगा. बरगद के नीचे अुगने वाले नीम को बरगद जड़ से अुखाड़ कर फेंक न दे, तो भी साफ़ है कि बरगद की छाया में नीम पूरा पूरा पनप नहीं सकता. अिसी तरह हिन्दू संस्कृति की विशाल छाया में मुसलिम वग़ैरा तहज़ीबें पूरे जोश से खिल नहीं सकतीं. हिंदू महासभा के आन्दोलन और अुनके तथा कांग्रेस-वादी कुछ हिन्दू नेताओं के बयान लीगी नेताओं के अिस मत या डर को बढ़ाने वाले भी होते थे, और गांधी जी की अपने सिद्धान्तों को समझाने की रीत दूसरी तरह की होते हुओ भी, लीग नेता की नज़र से देखें तो अुनका दिल और दिमाग़ का घाट गीता और प्राचीन रामायण की बुनियाद पर बना हुआ मालूम होता है. अुसमें पीढ़ी दर पीढ़ी चले आये धंधे, किसी न किसी प्रकार की जन्म से बनी हुअी वर्णव्यवस्था, रअीस-रैयत, धनिक-रंक ज़मींदार-किसान आदि की हस्ती (भले ही वे संबंध ट्रस्टीशिप के विचार पर हों) आदि पुराने ज़माने की कल्पनाएं भरी हुअी हैं. अिस ज़माने की पश्चिम की तहज़ीब से अुनका विरोध तो ज़ाहिर ही है. लेकिन, लीग की नज़र से, अिसलामी तहज़ीब को भी उनकी तजवीज़ में अुतनी ही जगह मिल सकती है, जितनी कि कोअी कट्टर लेकिन अुदार दिल का विष्णु-भक्त शिव-पार्वती को दे दे. यानी "वह

لوگوں کے لئے اَمک جگہ رکھ چھوڑنے سے، اور نہ کانگریس جیسی اسمپردائک سنستھا کے ذریعے مٹایا جاسکتا ہے۔ چنانچہ لوک شاہی (ڈیموکریٹک) آزاد ہندستان میں ہندو مانس — ہندو سنسکرتی — ہی اگواپن لے سکتی ہے۔ دوسری طرح کے مانس — سنسکرتیوں — کا استھان دویم رہے گا۔ برگد کے نیچے اُگنے والے نیم کو برگد جڑ سے اکھاڑ کر پھینک نہ دے، تو بھی صاف ہے کہ برگد کی چھایا میں نیم پورا پورا پنپ نہیں سکتا۔ اسی طرح ہندو سنسکرتی کی وشال چھایا میں مسلم وغیرہ تہذیبیں پورے جوش سے کھل نہیں سکتیں۔ ہندو مہاسبھا کے آندولن اور ان کے تتھا کانگریس وادی کچھ ہندو نیتاؤں کے بیان لیگی نیتاؤں کے اس مت یا ڈر کو بڑھانے والے بھی ہوتے تھے، اور گاندھی جی کی اپنے سدھانتوں کو سمجھانے کی ریت دوسری طرح کی ہوتے ہوئے بھی، لیگ نیتا کی نظر سے دیکھیں تو ان کا دل اور دماغ کا گھاٹ گیتا اور پراچین رامائن کی بنیاد پر بنا ہوا معلوم ہوتا ہے۔ اس میں پیڑھی در پیڑھی چلے آئے دھندے، کسی نہ کسی پرکار کی جنم سے بنی ہوئی ورن ویوستھا، رئیس-رعیت، دھنک-رنک، زمیندار-کسان آدی کی ہستی (بھلے ہی وے سنبندھ ٹرسٹی شپ کے وچار پر ہوں) آدی پرانے زمانے کی کلپنائیں بھری ہوئی ہیں۔ اس زمانے کی پشچم کی تہذیب سے ان کا ورودھ تو ظاہر ہی ہے۔ لیکن، لیگ کی نظر سے، اسلامی تہذیب کو بھی ان کی تجویز میں اتنی ہی جگہ مل سکتی ہے، جتنی کہ کوئی کٹر لیکن اُدار دل کا وشنو بھکت شیو-پاروتی کو دے دے۔ یعنی "وہ

भी भगवान के बड़े भक्त हैं, भगवान के साथ साथ दो फूल अुन पर चढ़ा देने से हमारा क्या बिगड़ता है ?" अिसी तरह कुरान, अवस्ता का कोअी पाठ या अेकाध जापानी मंत्र भी प्रार्थना में वे बोल लेंगे. मुसलिम दृष्टि से यह बात अुलटी अुन्हें बुरी और हिंदू धर्म का अैब मालूम होता है. जैसे कोअी बनिया बहुत मेहरबानी करने का दिखावा करके अेक रुपया का किसी को कर्ज दे, और फिर अुसके सूद में ही अुस आदमी की सारी जायदाद पचा डाले, वैसे दूसरे धर्म-संप्रदाय का अेक छोटा हिस्सा स्वीकार कर उसे सारा का सारा पचा डालने की यह रीत है. हिंदू दृष्टि से यह 'समन्वय-वाद' (घुल मिल जाने का असूल) है. लेकिन, लीगवादी कहता है, "हो सकता है. मगर हमें अपना विशुद्ध (निर्मल) विकास सिद्ध करने में यह समन्वय अनुकूल नहीं. हमें तो हिंदू संस्कृति से अछूत रही हुअी अिसलामी तहजीब को बढ़ाना है. और यह सिर्फ मजहबी विधियों और घरेलू रस्मों में ही नहीं, लेकिन सब तरह के दुनियावी कारोबार में. अिस लिअे, अिसलामी संस्कृति को हिन्दुस्तान में पनपने और हिंदू-संस्कृति में अुसे पिघल जाने से रोकने के लिअे एक अलग और आजाद क्षेत्र चाहिअे" अैसी पुकार लीग ने अुठाअी.

संस्कृति और सामाजिक संबंधों की दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि हिंदुस्तान के हिन्दू, मुसलमान, अीसाअी, पारसी वगैरा अलग अलग समाज हैं. अिस अलगपन को अलग अलग कौम (नेशन) कहा जाय या दूसरा नाम दिया जाय यह महत्व का होते हुअे भी अलग मुद्दा है.

بھی بھگوان کے بڑے بھکت ہیں. بھگوان کے ساتھ ساتھ دو پھول اُن پر چڑھا دینے سے ہمارا کیا بگڑتا ہے؟" اِسی طرح قرآن، اوستا کا کوئی پاٹھ یا ایکادھ جاپانی منتر بھی پرارتھنا میں وے بول لیں گے. مسلم درِشٹی سے یہ بات اُلٹی اُنھیں بُری اور ہندو دھرم کا عیب معلوم ہوتا ہے. جیسے کوئی بنیا بہت مہربانی کرنے کا دکھاوا کرکے ایک روپیہ کا کسی کو قرض دے، اور پھر اُس کے سود میں ہی اُس آدمی کی ساری جایداد پچا ڈالے، ویسے دوسرے دھرم- سمپردایہ کا ایک چھوٹا حصہ سویکار کر اُسے سارا کا سارا پچا ڈالنے کی یہ ریت ہے. ہندو درِشٹی سے یہ 'سمنویواد' (گھل مل جانے کا اُصول) ہے. لیکن، لیگ وادی کہتا ہے، "ہوسکتا ہے. مگر ہمیں اپنا وشودھ (نرمل) وکاس سدھ کرنے میں یہ سمنویہ انوکول نہیں. ہمیں تو ہندو سنسکرتی سے اچھوت رہی ہوئی اسلامی تہذیب کو بڑھانا ہے. اور یہ صرف مذہبی ودھیوں اور گھریلو رسموں میں ہی نہیں، لیکن سب طرح کے دُنیاوی کاروبار میں. اِس لئے، اسلامی سنسکرتی کو ہندستان میں پنپنے اور ہندو- سنسکرتی میں اُسے پگھل جانے سے روکنے کے لئے ایک الگ اور آزاد کشیتر چاہئے" ایسی پکار لیگ نے اُٹھائی.

سنسکرتی اور سماجک سمبندھوں کی درِشٹی سے یہ کہا جاسکتا ہے کہ ہندستان کے ہندو، مسلمان، عیسائی، پارسی وغیرہ الگ الگ سماج ہیں. اِس الگ پن کو الگ الگ قوم (نیشن) کہا جائے یا دوسرا نام دیا جائے یہ مہتو کا ہوتے ہوئے بھی الگ مدعا ہے.

फिर, यह भी अेक महत्त्व का लेकिन अलग सवाल है कि क्यों हिंदू, मुसलिम, अीसाअी, पारसी वग़ैरा जमातें और तहज़ीबें हमेशा के लिये अेक दूसरे से अलग और अछूत या विशुद्ध ही रहनी चाहियें. और क्यों अिन सब की भेलसेल होकर अेक बिलकुल नयी और मिश्र संस्कृति पैदा न होनी चाहिये ?

फिर, यह भी अेक सोचने लायक़ लेकिन अलग बात है कि अगर अिस पुकार के पीछे रही हुअी वेदना बिलकुल सच्चे दिल की होती और द्वेषयुक्त तरीक़े से प्रकट न की जा कर सात्त्विक रूप में प्रकट की जाती, तो अुस का सन्तोषजनक रास्ता निकलना असंभव न था. अिस विषय में मुसलिमों की तरफ़ से यह शिकायत की जा सकती है कि यह तरीक़ा द्वेष से भरा हुआ बना, अिसके लिअे हिंदू महासभा के आन्दोलन और जाने-अजाने कॉंग्रेसवाद हिंदुओं की पुनरुद्धारक (revivalist) मनोवृत्ति भी बहुत कुछ ज़िम्मेदार है. लेकिन, यह भी अेक अलग सवाल है. अिस जगह मैं अिन सब सवालों की चर्चा छेड़ता नहीं हूँ. अिस लेख में मेरा अितना ही दिखाने का प्रयत्न है कि अेक धर्म के सांप्रदायिक (मज़हबी-थियोक्रेटिक) राज और सांस्कृतिक (तहज़ीबी-कल्चरल) राज में फ़र्क़ है.

पाकिस्तान को अेक अिसलामी राज बनाना है, अैसा स्वीकार करने में लीग के नेता हिचकिचाते नहीं. लेकिन, अिस बात को वे अिसलामी सांप्रदायिक (थियोक्रेटिक) राज के माने में नहीं, मगर सांस्कृतिक (कल्चरल) राज के माने में ही कहने का दावा करेंगे. मज़हबी राज में अहमियत धर्म गुरुओं—मौलवियों— की होती है.

پھر یہ بھی ایک مہتو کا لیکن الگ سوال ہے کہ کیوں ہندو، مسلم، عیسائی، پارسی وغیرہ جماعتیں اور تہذیبیں ہمیشہ کے لئے ایک دوسرے سے الگ اور اچھوت یا وشودھ ہی رہنی چاہیئے. اور کیوں اِن سب کی بھیل سیل ہوکر ایک بالکل نئی اور مِشر سنسکرتی پیدا نہ ہونی چاہیئے ؟

پھر، یہ بھی ایک سوچنے لائق لیکن الگ بات ہے کہ اگر اِس پکار کے پیچھے رہی ہوئی ویدنا بالکل سچے دل کی ہوتی اور دویش یکت طریقے سے پرکٹ نہ کی جاکر ساتوِک روپ میں پرکٹ کی جاتی، تو اس کا سنتوش جنک راستہ نکلنا اسمبھو نہ تھا. اِس وشے میں مسلموں کی طرف سے یہ شکایت کی جاسکتی ہے کہ یہ طریقہ دویش سے بھرا ہوا بنا، اِس کے لئے ہندو مہاسبھا کے آندولن اور جانے۔اجانے کانگریس واد ہندوؤں کی پُنر ادھارک (revivalist) منوورتی بھی بہت کچھ ذمے دار ہے. لیکن، یہ بھی ایک الگ سوال ہے. اِس جگہ میں اِن سب سوالوں کی چرچا چھیڑتا نہیں ہوں. اِس لیکھ میں میرا اِتنا ہی دکھانے کا پریتن ہے کہ ایک دھرم کے سمپردایک (مذہبی-تھیوکریٹک) راج اور سنسکرتک (تہذیبی-کلچرل) راج میں فرق ہے.

پاکستان کو ایک اسلامی راج بنانا ہے، ایسا سویکار کرنے میں لیگ کے نیتا ہچکچاتے نہیں. لیکن، اِس بات کو وے اسلامی سمپردایک (تھیوکریٹک) راج کے معنے میں نہیں، اگر سنسکرتک (کلچرل) راج کے معنے میں ہی کہنے کا دعویٰ کریں گے.

مذہبی راج میں اہمیت دھرم گروؤں—مولویوں— کی ہوتی ہے.

और हर अेक जिम्मेदार अफ़सर को जाहिर करना होता है कि अुस का अिसलाम के 'मजहब' में यक़ीन है. अिंग्लैंड बहुत अर्से तक मजहबी राज रहा और आज भी कुछ कुछ है. अगर फ़िलिप माअुन्टबैटन ग्रीक चर्च को छोड़ कर अँग्रेज़ी चर्च की दीक्षा लेने से अिनकार करता तो वह राजकुमारी अिलिज़ाबेथ से शादी न कर सकता. अगर अिलिज़ाबेथ फ़िलिप से शादी करने के लिये ग्रीक चर्च की दीक्षा लेती, तो अुसे अिंग्लैंड की गद्दी से अपना हक़ खोना पड़ता. यह मजहबी राज के निशान हैं. अैसा कोअी क़ानून बनाने की पाकिस्तान के नेताओं की मन्शा हो, अैसा नज़र नहीं आता. लेकिन, यह कहा जा सकता है कि पाकिस्तान के राज का सारा कारोबार, तजवीजें, और संस्थाओं पर अिसलाम के ख़यालों और तहज़ीब की अच्छी-बुरी छाप अुठेगी. और अुस संस्कृति को पोसने की कोशिश रहेगी.

अिसी तरह, हिंद-संघ हिंदू धर्म का सांप्रदायिक राज न होते हुअे भी, मुमकिन है, कि अुसमें हिन्दू संस्कृति ही प्रधान रूप में खिल अुठे. अगर अुसमें दूसरी संस्कृतियों की भेलसेल करने की अनिच्छा रही, और जो कुछ भेलसेल हो चुकी है, अुसे भी धीरे धीरे हटाने की प्रवृत्ति बनी, तो कहा जा सकता है कि हिन्द संघ का हिंदू सांस्कृतिक राज बनने की ओर झुकाव है. कहा जा सकता है कि कुछ हद तक अैसी मनोवृत्ति है और बढ़ भी रही है. अिस विषय में युक्त प्रान्त अगुआ हो रहा है. अिस प्रान्त को हिंदू-मुस्लिम मिश्र संस्कृति का मुख्य केन्द्र माना जा सकता है. लेकिन, वहां पुनरुद्धारक (Revivalist) वृत्ति ज़ोर कर रही है. मेरा

اور ہر ایک ذمّے دار افسر کو ظاہر کرنا ہوتا ہے کہ اُس کا اسلام کے 'مذہب' میں یقین ہے۔ انگلینڈ بہت عرصے تک مذہبی راج رہا اور آج بھی کچھ کچھ ہے۔ اگر فلپ ماؤنٹ بیٹن گریک چرچ کو چھوڑ کر انگریزی چرچ کی دیکشا لینے سے انکار کرتا تو وہ راج کماری الزبیتھ سے شادی نہ کر سکتا۔ اگر الزبیتھ فلپ سے شادی کرنے کے لئے گریک چرچ کی دیکشا لیتی، تو اُسے انگلینڈ کی گدی سے اپنا حق کھونا پڑتا۔ یہ مذہبی راج کے نشان ہیں۔ ایسا کوئی قانون بنانے کی پاکستان کے نیتاؤں کی منشا ہو، ایسا نظر نہیں آتا۔ لیکن، یہ کہا جا سکتا ہے کہ پاکستان کے راج کا سارا کاروبار، تجویزیں، اور سنستھاؤں پر اسلام کے خیالوں اور تہذیب کی اچھی۔ بُری چھاپ اُٹھے گی، اور اُس سنسکرتی کو پوسنے کی کوشش رہے گی۔

اسی طرح، ہند۔سنگھ ہندو دھرم کا سامپردایک راج نہ ہوتے ہوئے بھی، ممکن ہے، کہ اُس میں ہندو سنسکرتی ہی پردھان روپ میں کھل اُٹھے۔ اگر اُس میں دوسری سنسکرتیوں کی بھیل سیل کرنے کی انچھا رہی، اور جو کچھ بھیل سیل ہو چکی ہے، اُسے بھی دھیرے دھیرے ہٹانے کی پرورتی بنی، تو کہا جا سکتا ہے کہ ہند سنگھ کا ہندو سنسکرتک راج بننے کی اور جھکاؤ ہے۔ کہا جا سکتا ہے کہ کچھ حد تک ایسی منوورتی ہے اور بڑھ بھی رہی ہے۔ اس وشے میں یُکت پرانت اگوا ہو رہا ہے۔ اس پرانت کو ہندو مسلم مشر سنسکرتی کا مکھیہ کیندر مانا جا سکتا ہے۔ لیکن وہاں پُنرُدھارک (Revivalist) ورتی زور کر رہی ہے۔ میرا

ख़याल है कि गुजरात में श्री कन्हैयालाल मुन्शी का मानस भी किसी दिशा में काम कर रहा है. हिंदू महासभा का तो वह ध्येय ही है. अगर यह प्रवृत्ति ज़ोरदार हो जाय और लोगों में फैल जाय तो हो सकता है कि मुसलमानों की तरह दूसरे अ-हिंदू लोगों में भी असन्तोष के बीज बोये जायँ. परिणाम में पाकिस्तान की तरह दूसरे 'स्तानों' का अथवा एक तरफ़ हिंदू (या सिर्फ़ सवर्ण हिन्दू) और दूसरी तरफ़ सब अहिंदू (और अवर्ण हिन्दू) के बीच 'ढूनों-मेन्ट' जम जाने का प्रसंग आ सकता है.

हम किस तरफ़ जायँगे यह हिंदू संस्कृति के नेताओं की प्रवृत्ति और बर्ताव पर निर्भर है.

'हिन्दू मुस्लिम एकता'

पंडित सुन्दरलाल के
चार लैकचर जो उन्होंने
सेन्ट्रल कन्सोलिडेटरी बोर्ड ग्वालियर
की दावत पर ग्वालियर में दिये.
सौ सफ़े की किताब की क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.
किताब नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में मिल सकती है.

—मैनेजर "नया हिन्द"
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

خیال ہے کہ گجرات میں شری کنھیا لال منشی کا مانس بھی اِسی دشا میں کام کر رہا ہے۔ ہندو مہاسبھا کا تو وہ دھیہ ہی ہے۔ اگر یہ پرورتی زوردار ہو جائے اور لوگوں میں پھیل جائے تو ہو سکتا ہے کہ مسلمانوں کی طرح دوسرے اہندو لوگوں میں بھی اسنتوش کے بیج بوئے جائیں۔ پرینام میں پاکستان کی طرح دوسرے 'ستانوں' کا اتھوا ایک طرف ہندو (یا صرف سورن ہندو) اور دوسری طرف سب اہندو (اور اورن ہندو) کے بیچ 'ڈوناملینٹ' جم جانے کا پرسنگ آ سکتا ہے۔

ہم کس طرف جائیں گے یہ ہندو سنسکرتی کے نیتاؤں کی پرورتی اور برتاؤ پر نربھر ہے۔

'ہندو مسلم ایکتا'

پنڈت سندر لال کے
چار لکچر جو انھوں نے سنٹرل کنسلیڈٹری بورڈ گوالیر کی دعوت پر گوالیر میں دئے
سو صفحے کی کتاب کی قیمت صرف بارہ آنے۔
کتاب ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے

—منیجر "نیا ہند"
۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد

पागलपन

(श्री ज्ञानचन्द)

रामू कलकत्ते से आया, श्यामू कलकत्ते से आया, माधव कलकत्ते से आया. लोचन कलकत्ते से आया. रामू ने चार कहानियां कहीं, श्यामू ने तीन कहानियां कहीं, माधव ने छै और लोचन ने दस. इन्हें एक ने पांच से कहा, पाँचों ने दस से, इस तरह दो ही दिन में न केवल गाँव ही में वरन दस पाँच गाँवों में इन कलकत्ते की कहानियों की धूम मच गयी.

जो सुनता उसी के क्रोध का ठिकाना न रहता. कहता, मुसलमान इतनी तैयारी कर रक्खे हैं, ऐसे जालिम हैं. उन सबको सुना ठाकुर राम शरन सिंह ने. गाँव के जमींदार ही ठहरे. उनको भला कब बर-दाश्त. उनके गुस्से का ठिकाना न था. मन ही मन कहने लगे—वाहरे मुसलमान ! जो चार दिन से यहाँ आकर बसें उनकी यह दशा, कोई और कुछ करे या न करे. न पिद्दी न पिद्दी का शोरबा. मैं देखता हूँ. वहाँ हिन्दू मिट गये तो क्या ? यहाँ देखना है कि रहीम जुलाहा कैसे रहता है, जुम्मन धुनिया कैसे रहता है. कपड़ा हाथ से धो लूंगा पर आस्तीन के साँप पालना ठीक नहीं . मैं देख लूंगा कि करीम धोबी गाँव में कैसे रहता है ?..........

वह इन्हीं बातों को सोच ही रहा था कि उनका छोटा भाई शहर से आया. बोला—मैं शहर गया था. कल शहर में मुसलमानों का जुलूस निकला था. वे कहते थे—'मारेंगे मर जायेंगे पर पाकिस्तान बनायेंगे.'

پاگل پن

(شری گیان چند)

رامو کلکتے سے آیا، شامو کلکتے سے آیا، مادھو کلکتے سے آیا. لوچن کلکتے سے آیا. رامو نے چار کہانیاں کہیں. شامو نے تین کہانیاں کہیں، مادھو نے چھے اور لوچن نے دس. انھیں ایک نے پانچ سے کہا، پانچوں نے دس سے، اس طرح دو ہی دن میں نہ کیول گاؤں ہی میں ورن دس پانچ گاؤں میں ان کلکتے کی کہانیوں کی دھوم مچ گئی.

جو سنتا اسی کے کرودھ کا ٹھکانا نہ رہتا. کہتا مسلمان اتنی تیاری کر رکھے ہیں، ایسے ظالم ہیں. ان سب کو سنا ٹھاکر رام شرن سنگھ نے. گاؤں کے زمیندار ہی ٹھہرے. ان کو بھلا کب برداشت. ان کے غصے کا ٹھکانا نہ تھا. من ہی من کہنے لگے — واہ رے مسلمان! جو چار دن سے یہاں آکر بسیں ان کی یہ دشا، کوئی اور کچھ کرے یا نہ کرے. نہ پدی نہ پدی کا شوربا. میں دیکھتا ہوں. وہاں ہندو مٹ گئے تو کیا؟ یہاں دیکھنا ہے کہ رحیم جلاہا کیسے رہتا ہے، جمن دھنیا کیسے رہتا ہے. کپڑا ہاتھ سے دھو لوں گا پر آستین کے سانپ پالنا ٹھیک نہیں. میں دیکھ لوں گا کہ کریم دھوبی گاؤں میں کیسے رہتا ہے؟......

وہ انھیں باتوں کو سوچ ہی رہا تھا کہ ان کا چھوٹا بھائی باہر سے آیا. بولا — میں شہر گیا تھا. کل شہر میں مسلمانوں کا جلوس نکلا تھا. وے کہتے تھے — 'ماریں گے مر جائیں گے پر پاکستان بنائیں گے'.

इसको सुनते ही तो गुस्सा और बढ़ गया जैसे किसी ने आग में घी डाल दिया हो. वह बोले—बनावें पाकिस्तान. चाहे जहाँ बनाना हो बनावें पर छपर के गुरुदासपुर में तो मुमकिन नहीं है. बाबू साहब की बात से तो ऐसा लगा कि गुरुदासपुर हैदराबाद की तरह पूरी दुनिया से अलग रहेगा.

इतने में नौकर ने आकर कहा—सरकार नहा लें. सरकार नहाने खाने चले गये. पर उनका गुस्सा न गया.

× × × ×

शाम को अलाव पर गांव के सभी लोग बैठे. चर्चा ही क्या थी. फिर रामू, श्यामू, माधव की कहाँनियाँ निकल पड़ीं. किसी ने कुछ कहा, किसी ने कुछ कहा. बाबू रामशरन सिंह का धीरज जब सुनते सुनते क़ाबू में न रह गया तब बोल पड़े—भाई! घर में यह साँप पालना ठीक नहीं. हमारे भी बहू बेटी हैं. देख लूंगा, यह रहीम, जुम्मन और करीम कैसे रहते हैं. देख लूंगा उसको भी जो गवाही देगा. गुस्सा तो ऐसा आता है कि चाहे जो हो पर इनको खत्म ही कर दिया जाय. बाबू साहब की बातों से सभी को जोश आया. बोले—हाँ सरकार.

इतने में बुड्ढे छट्ठन चमार से न रहा गया. बोल उठा—मैं तो सरकार के पैर का जूता हूँ. मैं क्या कहूँ. मैं तो कहूँगा कि सरकार क़सूर कोई करे सज़ा कोई पावे, यह ठीक नहीं है. सरकार, इस तरह मारना पीटना शरीफ़ों का काम नहीं है. अगर सरकार बहुत ही नाख़ुश हैं तो उनसे कह दें गांव छोड़ कर चले जाँय.

कुछ मामला सुलझा हुआ मालूम पड़ा. एक ने कहा—हाँ सरकार.

ان کو سنتے ہی تو غصہ اور بڑھ گیا جیسے کسی نے آگ میں گھی ڈال دیا ہو۔ وہ بولے — بناویں پاکستان۔ چاہے جہاں بنانا ہو بناویں پر چھپرے کے گورداسپور میں تو ممکن نہیں ہے۔ بابو صاحب کی بات سے تو ایسا لگا کہ گورداسپور حیدرآباد کی طرح پوری دنیا سے الگ رہے گا۔

اتنے میں نوکر نے آکر کہا — سرکار نہا لیں۔ سرکار نہانے کھانے چلے گئے۔ پر ان کا غصہ نہ گیا۔

× × × ×

شام کو الاؤ پر گاؤں کے سبھی لوگ بیٹھے۔ چرچا ہی کیا تھی۔ پھر رامو، شیامو، مادھو کی کہانیاں نکل پڑیں۔ کسی نے کچھ کہا، کسی نے کچھ کہا۔ بابو رام شرن سنگھ کا دھیرج جب سنتے سنتے قابو میں نہ رہ گیا تب بول پڑے — بھائی! گھر میں یہ سانپ پالنا ٹھیک نہیں۔ ہمارے بھی بہو بیٹی ہیں۔ دیکھ لوں گا، یہ رحیم، جمّن اور کریم کیسے رہتے ہیں۔ دیکھ لوں گا اس کو بھی جو گواہی دے گا۔ غصہ تو ایسا آتا ہے کہ چاہے جو ہو پر ان کو ختم ہی کر دیا جائے۔
بابو صاحب کی باتوں سے سبھی کو جوش آیا۔ بولے — ہاں سرکار۔

اتنے میں بڈھے چھٹن چمار سے نہ رہا گیا۔ بول اٹھا — میں تو سرکار کے پیر کی جوتی ہوں۔ میں کیا کہوں۔ میں تو کہوں گا کہ سرکار قصور کوئی کرے سزا کوئی پاوے، یہ ٹھیک نہیں ہے۔ سرکار اس طرح مارنا پیٹنا شریفوں کا کام نہیں ہے۔ اگر سرکار بہت ہی ناخوش ہیں تو ان سے کہہ دیں گاؤں چھوڑ کر چلے جائیں۔

کچھ معاملہ سلجھا ہوا معلوم پڑا۔ ایک نے کہا — ہاں سرکار۔

दूसरे ने कहा—हां सरकार. यही तय रहा.

दीवार के भी कान होते हैं. अकेले की बात तो खुल ही जाती है फिर अलाव पर की बात कैसे छिपी रहती. रहीम, जुम्मन, करीम सब ने सुना कि सरकार हम सब से नाखुश हैं. सभी डर के मारे काँपने लगे. जुम्मन दौड़ा गया रहीम के घर. करीम पहिले ही से मौजूद था. जुम्मन ने कहा—भाई, घर दुआर छोड़ कर कहाँ जाँय. खेत में फसल बो दी है. सब से ऊपर तो सरकार का लगान बाक़ी है. एक मुश्त दो सौ रुपया देंगे कैसे ? मैंने तो अभी यह सुना. सुनकर भगा चला आया. मेरी तो तबीअत घबड़ा रही है. करीम ने कहा—४०) नक़द लेकर अभी चौआ ले आया हूँ. सोचा था कि चार छै महीने में धुलाई में पटेगा. पर यह नक़द देना कैसे पार लगेगा. देना पावना तो दर किनार. पर सवाल तो यह है कि आखिर जाऊं कहाँ. बाप दादे इसी गुरुदासपुर में पैदा हुए, यहीं दफ़नाये गये, इन्हीं रामशरन के यहाँ दरबार किया. फिर आज मैं कहाँ जाऊँ.

रहीम इन सब में पूँजी वाला आदमी था. पर उसकी अलग से पूंजी ही क्या थी. घर में २-४ थान कपड़े पड़े थे. वह कह उठा, भाई पर्दे की बात क्या है ? मजबूरी आयी मैंने भी १००) ठाकुर से काढ़े, तब सूत का ड्योढ़ बैठाया है. चार छै थान कपड़े हैं बेच दें तो ठाकुर को हो जाय. पर उससे होता क्या है. फिर खायंगे क्या ?

रहीम की लड़की बफ़ातन सुन रही थी. उसने जाकर अपनी अम्माँ से कहा. अम्माँ को तो एतबार ही नहीं हुआ. वह दौड़ी आयी किवाड़ के पीछे से सुनने लगी. उसे काटो तो जैसे खून

دوسرے نے کہا—ہاں سرکار۔ یہی طے رہا۔

دیوار کے بھی کان ہوتے ہیں۔ اکیلے کی بات تو کھل ہی جاتی ہے پھر الاؤ پر کی بات کیسے چھپی رہتی۔ رحیم، جمن، کریم سب نے سنا کہ سرکار ہم سب سے ناخوش ہیں۔ سبھی ڈر کے مارے کانپنے لگے۔ جمن دوڑا گیا رحیم کے گھر۔ کریم پہلے ہی سے موجود تھا۔ جمن نے کہا—بھائی، گھر دوار چھوڑ کر کہاں جائیں۔ کھیت میں فصل بو دی ہے۔ سب سے اوپر تو سرکار کا لگان باقی ہے۔ ایک مشت دو سو روپیہ دیں گے کیسے؟ میں نے تو ابھی یہ سنا۔ سن کر بھگا چلا آیا۔ میری تو طبیعت گھبرا رہی ہے۔ کریم نے کہا—۴۰ روپیہ نقد لیکر ابھی چوا لے آیا ہوں۔ سوچا تھا کہ چار چھے مہینے میں دھلائی میں پٹے گا۔ پر یہ نقد دینا کیسے پار لگے گا۔ دینا پاونا تو درکنار، پر سوال تو یہ ہے کہ آخر جاؤں کہاں۔ باپ دادے اسی گرداسپور میں پیدا ہوئے یہیں دفنائے گئے، انھیں رام شرن کے یہاں دربار کیا، پھر آج میں کہاں جاؤں۔

رحیم ان سب میں پونجی والا آدمی تھا۔ پر اس کی الگ سے پونجی ہی کیا تھی۔ گھر میں ۲-۴ تھان کپڑے پڑے تھے۔ وہ کہہ اٹھا، بھائی پردے کی بات کیا ہے؟ مجبوری آئی میں نے بھی ۱۰۰ روپیہ ٹھاکر سے کاڑھے، تب سوت کا ڈیوڑھ بیٹھایا ہے۔ چار چھے تھان کپڑے ہیں بیچ دیں تو ٹھاکر کو ہو جائے۔ پر اس سے ہوتا کیا ہے۔ پھر کھائیں گے کیا؟

رحیم کی لڑکی وفاتن سن رہی تھی۔ اس نے جاکر اپنی اماں سے کہا۔ اماں کو تو اعتبار ہی نہیں ہوا۔ وہ دوڑی آئی کواڑ کے پیچھے سے سننے لگی۔ اسے کاٹو تو جیسے خون

ही नहीं. घर में आकर बैठ गयी. खाना, पीना, पकाना कुछ अच्छा ही न लगता. सोचती—या अल्लाह ! अब क्या होगा ?

रहीम, जुम्मन, करीम सब ने तय किया कि रहीम ठाकुर के यहाँ जाय और ठाकुर को समझाए. यह बात हो ही रही थी कि ठाकुर का प्यादा पहुँचा. करीम और जुम्मन सभी को देख कर कह उठा—तुम्हें ठाकुर ने बुलाया है. तुम सब यहाँ बैठ कर पाकिस्तान ले रहे हो. चलो आज तुम लोगों को पाकिस्तान मिलेगा.

रहीम बोला—मैं तो खुद ही सरकार के यहाँ चल रहा था.

प्यादा बोला—तुम क्या जिन्ना हो जो आ रहे थे सरगना बनकर. यहां जिन्ना विन्ना कुछ नहीं. तुम सब चलो.

× × ×

बाबू साहब की बैठक में दो चार दरबारी लोग बैठे थे और बात चीत कर रहे थे कि प्यादा उन तीनों को लेकर पहुँचा और बोल उठा—सरकार, चार बार गया पर ये सब नहीं मिले. इस बार मिले सब रहीम के घर. जब बुलाया तब रहीम कहने लगा कि मैं तो खुद ही आ रहा हूँ. सरकार यही इस गाँव के तीनों तुरकों का जिन्ना है.

सरकार का गुस्सा और भड़क उठा. उन्होंने सोचा कि ये सलाह कर रहे थे. बोल उठे—रहीम, मैं कुछ कहना सुनना नहीं चाहता. सीधी सी एक बात है कि तुम सब यहाँ से चले जाओ. तुम सबों की अब गाँव में कोई जरूरत नहीं है.

करीम हंसकर बोला—हम तो सरकार के चाकर हैं. चले जायंगे तो सरकार का कपड़ा कौन साफ करेगा.

ہی نہیں۔ گھر میں آکر بیٹھ گئی۔ کھانا، پینا، پکانا کچھ اچھا ہی نہ لگتا۔ سوچتی — یا اللہ! اب کیا ہوگا؟

رحیم، جمن، کریم سب نے طے کیا کہ رحیم ٹھاکر کے یہاں جائے اور ٹھاکر کو سمجھائے۔ یہ بات ہو ہی رہی تھی کہ ٹھاکر کا پیادہ پہنچا۔ کریم اور جمن سبھی کو دیکھ کر کہہ اٹھا — تمھیں ٹھاکر نے بلایا ہے۔ تم سب یہاں بیٹھ کر پاکستان لے رہے ہو۔ چلو آج تم لوگوں کو پاکستان ملے گا۔

رحیم بولا — میں تو خود ہی سرکار کے یہاں چل رہا تھا۔

پیادا بولا — تم کیا جناح ہو جو آ رہے تھے سرغنہ بن کر۔ یہاں جناح وناح کچھ نہیں۔ تم سب چلو۔

× × ×

بابو صاحب کی بیٹھک میں دو چار درباری لوگ بیٹھے تھے اور بات چیت کر رہے تھے کہ پیادا ان تینوں کو لے کر پہنچا اور بول اٹھا — سرکار، چار بار گیا پر یہ سب نہیں ملے۔ اس بار ملے سب رحیم کے گھر۔ جب بلایا تب رحیم کہنے لگا کہ میں تو خود ہی آ رہا ہوں۔ سرکار یہی اس گاؤں کے تینوں ترکوں کا جناح ہے۔

سرکار کا غصہ اور بھڑک اٹھا۔ انھوں نے سوچا کہ یہ صلاح کر رہے تھے۔ بول اٹھے — رحیم، میں کچھ کہنا سننا نہیں چاہتا۔ سیدھی سی ایک بات ہے کہ تم سب یہاں سے چلے جاؤ۔ تم سبھوں کی اب گاؤں میں کوئی ضرورت نہیں ہے۔

کریم ہنس کر بولا — ہم تو سرکار کے چاکر ہیں۔ چلے جائیں گے تو سرکار کا کپڑا کون صاف کرے گا۔

यह सुनते ही ठाकुर का गुस्सा और फूट पड़ा. बोल उठे—जहाँ कौआ नहीं रहता, वहाँ क्या सवेरा नहीं होता ? तुम क्या बक रहे हो. चले जाओ. हम गन्दा ही कपड़ा पहिनेंगे. तुम सबने कलकत्ते का हाल सुना ? सब कहते थे कि लड़कर लेंगे पाकिस्तान. तो जाओ जहाँ लेना हो वहाँ लेना पर गुरुदासपुर नापाकिस्तान ही रहेगा.

रहीम बोला—सरकार गुस्सा न हों. हमारे बाप दादे इसी दरबार की खिदमत में जिन्दगी भर रहे. अब हम सब कहाँ जाँय. सरकार, जो चाहे सो पाकिस्तान ले. पर मेरा पाकिस्तान तो गुरुदासपुर की मंडई ही है. मेरा पाकिस्तान कहाँ है ? ग़रीब को कोई नहीं पूछता.

बहुत कहा सुनी हुई. आखिर रामशरन सिंह ने उन सबों को रहने की इजाज़त दे ही दी.

× × ×

कलकत्ते का दंगा चलते चलते आज बीसवां दिन है. अब रामू, शामू, माधव की कहानियों तक ही कहानियाँ सीमित नहीं हैं. सैकड़ों हज़ारों कहानियाँ बन गयी हैं. उनको सुनते यही मालूम होता है कि अब आदमी आदमी नहीं रह गया है. मुसलमान सब राक्षस हो गये हैं.

गुरुदासपुर तक ही मामला न रह गया. जो जिधर ही जाता उधर ही एक न एक कहानी सुनता. गुरुदासपुर के ठाकुर रामशरन सिंह के जोड़ीदार एक न एक ठाकुर मिलते. सभी कहते कि कलकत्ते का बदला लेना ज़रूरी है.

× × ×

एक दिन शिवपुर में कुछ आपसी खेत का झगड़ा हुआ. शिवदान

یہ سنتے ہی ٹھاکر کا غصہ اور پھوٹ پڑا. بول اُٹھے — جہاں کوّا نہیں رہتا، وہاں کیا سویرا نہیں ہوتا؟ تم کیا بک رہے ہو. چلے جاؤ. ہم گندا ہی کپڑا پہنیں گے. تم سب نے کلکتے کا حال سُنا؟ سب کہتے تھے کہ لڑ کر لیں گے پاکستان. تو جاؤ جہاں لینا ہو وہاں لینا پر گرداس پور ناپاکستان ہی رہے گا.

رحیم بولا — سرکار غصہ نہ ہوں. ہمارے باپ دادے اسی دربار کی خدمت میں زندگی بھر رہے. اب ہم سب کہاں جائیں. سرکار، جو چاہے سو پاکستان لے. پر میرا پاکستان تو گرداس پور کی منڈئی ہی ہے. میرا پاکستان کہاں ہے؟ غریب کو کوئی نہیں پوچھتا.

بہت کہا سُنی ہوئی. آخر رام شرن سنگھ نے اُن سبھوں کو رہنے کی اجازت دے ہی دی.

× × ×

کلکتے کا دنگا چلتے چلتے آج بیسواں دن ہے. اب رامو، شامو، مادھو کی کہانیوں تک ہی کہانیاں سمٹ نہیں ہیں. سیکڑوں ہزاروں کہانیاں بن گئی ہیں. اُن کو سُنتے یہی معلوم ہوتا ہے کہ اب آدمی آدمی نہیں رہ گیا ہے، مسلمان سب راکشس ہو گئے ہیں.

گرداس پور تک ہی معاملہ نہ رہ گیا. جو جدھر ہی جاتا اُدھر ہی ایک نہ ایک کہانی سُنتا. گرداس پور کے ٹھاکر رام شرن سنگھ کے جوڑی دار ایک نہ ایک ٹھاکر ملتے. سبھی کہتے کہ کلکتے کا بدلہ لینا ضروری ہے.

× × ×

ایک دن شیوپور میں کچھ آپسی کھیت کا جھگڑا ہوا. شیودان

और सुबराती दोनों झगड़ पड़े. सुबराती के मामले में उसका मौसेरा भाई भी खड़ा हो गया. पड़ोसी नियाज़ भी खड़ा हो गया. तब तक खुदाबख्श भी आ गया. इसलाम भी आ गया.

शिवदान के दिल में कलकत्ते की कहानी थी. वह इतने मुसलमानों को इकट्ठा देख कर चिल्ला पड़ा—यह देखो मुसलमानों को. एक तो डांड भी तोड़ा, दूसरे अकेले से लड़ने इतने आ भी गये.

मुसलमान शब्द ही आग लगाने के लिये काफ़ी था. सभी दौड़ पड़े. किसी ने न पूछा कि क्या हुआ. लाठियाँ चलने लगीं. सुबराती, नियाज़, खुदाबख्श. इसलाम सभी ढेर हो गए.

भीड़ दौड़ी उनके घर. एक आदमी मिट्टी का तेल ले आया. फूँक दिये गये सारे घर. औरतें जिनकी शक्ल आज तक किसी ने न देखी थी बिलबिलाती घर में से निकलीं. उनकी पूजा के लिये लठैत खड़े ही थे. वे भी लेट गयीं.

सब को उठाकर आग में झोंक दिया.

× × ×

भीड़ चली माधोपुर. वहाँ भी यही.

× × ×

भीड़ चली रामनगर. वहाँ भी वही.

× × ×

गुरुदासपुर में भी कथा फैली. रामशरन पहिले से ही गुस्सा था. उसने रहीम, करीम, जुम्मन तीनों के घर में ताला बंद करा दिया और आग लगवा दी.

× × ×

اور شبراتی دونوں جھگڑ پڑے۔ شبراتی کے معاملے میں اُس کا موسیرا بھائی بھی کھڑا ہوگیا۔ پڑوسی نیاز بھی کھڑا ہوگیا۔ تب تک خدابخش بھی آگیا۔ اسلام بھی آگیا۔

شیودان کے دل میں کلکتے کی کہانی تھی۔ وہ اتنے مسلمانوں کو اکٹھا دیکھ کر چلّا پڑا — یہ دیکھو مسلمانوں کو۔ ایک تو ڈانڈ بھی توڑا، دوسرے اکیلے سے لڑنے اتنے آ بھی گئے۔

مسلمان شبد ہی آگ لگانے کے لئے کافی تھا۔ سبھی دوڑ پڑے۔ کسی نے نہ پوچھا کہ کیا ہوا۔ لاٹھیاں چلنے لگیں۔ شبراتی، نیاز، خدابخش، اسلام سبھی ڈھیر ہوگئے۔

بھیڑ دوڑی اُن کے گھر۔ ایک آدمی مٹی کا تیل لے آیا۔ پھونک دئے گئے سارے گھر۔ عورتیں جن کی شکل آج تک کسی نے نہ دیکھی تھی بلبلاتی گھر میں سے نکلیں۔ اُن کی پوجا کے لئے لٹھیت کھڑے ہی تھے۔ وے بھی لیٹ گئیں۔

سب کو اُٹھا کر آگ میں جھونک دیا۔

× × ×

بھیڑ چلی مادھوپور۔ وہاں بھی یہی۔

× × ×

بھیڑ چلی رام نگر۔ وہاں بھی وہی۔

× × ×

گرداس پور میں بھی کتھا پھیلی۔ رام شرن کو پہلے سے ہی غصّہ تھا۔ اُس نے رحیم، کریم، جمّن تینوں کے گھر میں تالا بند کرا دیا اور آگ لگوا دی۔

× × ×

[२]

आग की लपट धू धू करके चारों तरफ़ फैल गई. भगवान बुद्ध ने जहाँ से सारा दुनिया को अहिंसा का संदेश दिया था वहाँ की बर्बरता सुनकर स्वर्ग में अशोक भी शरमाया होगा. चन्द्रगुप्त भी लज्जित हुआ होगा.

× × ×

दूर नोआखाली में बैठे बापू को ये खबरें लगीं. दूसरों से इनसाफ़ की आशा रखने वाला खुद इनसाफ़ से कैसे पीछे रहे. रंगे हाथों कोई किसी का रंग नहीं छुड़ा सकता. चल पड़े. वहाँ से आ पहुँचे विहार.

× × ×

विहार.....
भगवान बुद्ध का स्थान !
महात्मा जी के पहुँचते ही पानी पानी हो गया.

× × ×

बापू पहुँचे छपरा.

आज सभा है लाखों की भीड़ है. बापू पहुँचे. नारा लगा, 'महात्मा गांधी की जय'.

बापू ने कहा—जब तक अपने पापों का प्रायश्चित (कफ़ारा) न कर लें तब तक महात्मा गांधी की जय मत कहिये. मैं तो कहता हूँ कि हिन्दू मुसलमान दोनों भाई भाई हैं. दोनों अलग कैसे होंगे ? इसका प्रायश्चित इसी तरह मुमकिन है कि जिन्होंने खून किये हों वे पुलिस में खुद हाज़िर हो जांय.

सभा में सैकड़ों खड़े हो गए. पर उन सब में पहिला आदमी था रामशरन. उसके खड़े होते ही भीड़ ने नारा लगाया—

'महात्मा गांधी की जय'

[۲]

آگ کی لپٹ دھو دھو کر کے چاروں طرف پھیل گئی. بھگوان بدھ نے جہاں سے ساری دنیا کو اہنسا کا سندیش دیا تھا وہاں کی بربرتا سن کر سورگ میں اشوک بھی شرمایا ہوگا. چندرگپت بھی لجت ہوا ہوگا.

× × ×

دور نواکھالی میں بیٹھے باپو کو یہ خبریں لگیں. دوسروں سے انصاف کی آشا رکھنے والا خود انصاف سے کیسے پیچھے رہے. رنگے ہاتھوں کوئی کسی کا رنگ نہیں چھڑا سکتا. چل پڑے. وہاں سے آ پہنچے بہار.

× × ×

بہار.........
بھگوان بدھ کا استھان !
مہاتما جی کے پہنچتے ہی پانی پانی ہوگیا.

× × ×

باپو پہنچے چھپرا.

آج سبھا ہے. لاکھوں کی بھیڑ ہے. باپو پہنچے. نعرہ لگا 'مہاتما گاندھی کی جے'.

باپو نے کہا— جب تک اپنے پاپوں کا پرائشچت (کفارہ) نہ کرلیں تب تک مہاتما گاندھی کی جے مت کہئے. میں تو کہتا ہوں کہ ہندو مسلمان دونوں بھائی بھائی ہیں. دونوں الگ کیسے ہوں گے؟ اس کا پرائشچت اسی طرح ممکن ہو کہ جنھوں نے خون کئے ہوں وے پولیس میں خود حاضر ہوجائیں.

سبھا میں سیکڑوں کھڑے ہوگئے. پر اُن سب میں پہلا آدمی تھا رام شرن. اُس کے کھڑے ہوتے ہی بھیڑ نے نعرہ لگایا—
'مہاتما گاندھی کی جے'

हाजी फ़ज़ल वाहिद

(श्री रतनलाल बंसल)

हिन्दुस्तान की पच्छिमी उत्तरी सरहद पर बसा हुआ क़बाइली इलाक़ा और उसमें रहने वाली पठान क़ौम हमेशा इस बात के लिये मशहूर रही है. कि उसने कभी पूरी तरह से न तो अङ्गरेज़ों का गुलामी ही मंज़ूर की और न उसने कभी त्रिटिश हुकूमत को चैन से ही बैठने दिया. अङ्गरेज़ों ने शुरू से ही वहाँ पर अपनी पूरी फ़ौजी ताक़त लगाई और अपनी आदत के मुताबिक़ पठानों में फूट डालने और उनको फुसलाने. ललचाने की भी पालसी बरती. लेकिन पठान किसी न किसी सरदार की मातहती में अङ्गरेज़ों के खिलाफ़ बग़ावत करते ही रहे. अङ्गरेज़ों के प्रचार ने पठानों की इस आज़ादी की लड़ाई को लूट मार के नाम से बदनाम किया और उनके बहादुर नेताओं को भी लुटेरा और डाकू की शकल में जनता के सामने पेश किया. यही वजह है कि हाजी फ़ज़ल वाहिद साहब भी. जिनको आम जनता 'तुरङ्गज़ई के हाजी' के नाम से ही जानती पहिचानती है. हमारे नज़दीक सरहद के और दूसरे लुटेरे क़बाइली सरदारों की तरह फ़क़त एक हिम्मतवर लुटेरे सरदार ही बन कर रह गए. और उनकी शख़्सियत की बलन्दी और हिन्दुस्तान की आज़ादी की लड़ाई में उनकी अहमियत को सिर्फ़ इने गिने लोग ही जान सके.

हाजी फ़ज़ल वाहिद साहब दरअसल वलीउल्लाई आन्दोलन

حاجی فضل واحد

(شری رتن لال بنسل)

ہندستان کی پچھمی اُتری سرحد پر بسا ہوا قبائلی علاقہ اور اُس میں رہنے والی پٹھان قوم ہمیشہ اِس بات کے لئے مشہور رہی ہو، کہ اُس نے کبھی پوری طرح سے نہ تو انگریزوں کی غلامی ہی منظور کی اور نہ اُس نے کبھی برٹش حکومت کو چین سے ہی بیٹھنے دیا۔ انگریزوں نے شروع سے ہی وہاں پر اپنی پوری فوجی طاقت لگائی اور اپنی عادت کے مطابق پٹھانوں میں پھوٹ ڈالنے اور اُن کو پھسلانے، للچانے کی بھی پالسی برتی۔ لیکن پٹھان کسی نہ کسی سردار کی ماتحتی میں انگریزوں کے خلاف بغاوت کرتے ہی رہے۔ انگریزوں کے پرچار نے پٹھانوں کی اِس آزادی کی لڑائی کو لوٹ مار کے نام سے بدنام کیا۔ اور اُن کے بہادر نیتاؤں کو بھی لٹیرا اور ڈاکو کی شکل میں جنتا کے سامنے پیش کیا۔ یہی وجہ ہو کہ حاجی فضل واحد صاحب بھی، جن کو عام جنتا 'ترنگ زئی کے حاجی' کے نام سے ہی جانتی پہچانتی ہو، ہمارے نزدیک سرحد کے اور دوسرے لٹیرے قبائلی سرداروں کی طرح فقط ایک ہمت ور لٹیرے سردار ہی بن کر رہ گئے، اور اُن کی شخصیت کی بلندی اور ہندستان کی آزادی کی لڑائی میں اُن کی اہمیت کو صرف اِنے گنے لوگ ہی جان سکے۔

حاجی فضل واحد صاحب دراصل ولی اللہی آندولن

के ही एक नेता थे, जिनकी पीरी मुरीदी का सिलसिला वलीउल्लाई जमात की उस शाख से मिलता था जो सन् १८२४ में सय्यद अहमद साहब बरेलवी की लीडरी में अङ्गरेजों के दोस्त सिक्खों से लड़ने के लिये सरहद पर चली आई थी. सय्यद अहमद साहब के मरने के बाद उनके शागिर्दों ने उनके काम को जारी रक्खा और जब सन् १८४९ में सरहद का यह इलाक़ा अङ्गरेजों की हुकूमत में आगया, तो सतियाना नाम के पहाड़ी मुक़ाम पर उन्होंने अपनी छावनी बना कर अङ्गरेजों से लड़ना शुरू कर दिया. सन् १८५८ में अङ्गरेजों ने जब इस छावनी को बर्बाद कर दिया तो यहीं के लोग पेशावर से उत्तर पूरब की तरफ़ बसे हुए मलका गाँव में जाकर रहने लगे. इस पर सन् १८६३ से अक्तूबर महीने में अङ्गरेजों ने क़रीब ५००० फ़ौज लेकर मलका पर भी चढ़ाई कर दी और दो महीने की घनघोर लड़ाई के बाद मलका को तहस नहस कर दिया. इसके बाद इन लोगों को, जो अपने को 'मुजाहिदीन' कहते थे, बिखर जाना पड़ा और उन्होंने अलग अलग क़बीलों में जाकर अङ्गरेजों से लड़ने के लिये अलग अलग सङ्गठन बनाने शुरू कर दिये. इन लोगों में से ही एक थे मौलाना नजमुद्दीन साहब. जिनका सरहद की तवारीख़ में 'मुल्ला हड्डा' के नाम से ज़िक्र मिलता है और जिन्होंने अपनी जिन्दगी भर कभी अँगरेजों को चैन से नहीं बैठने दिया.

हाजी फ़ज़लवाहिद साहब इन मुल्ला हड्डा के ही शागिर्द और ख़लीफ़ा थे इस लिये जब मुल्ला हड्डा का इन्तक़ाल हुआ, तो उनके तमाम शागिर्दों और मुरीदों ने हाजी फ़ज़ल वाहिद साहब

کے ہی ایک نیتا تھے، جن کی پیری مُریدی کا سلسلہ ولی اللہی جماعت کی اُس شاخ سے ملتا تھا جو ۱۸۲۴ء میں سید احمد صاحب بریلوی کی لیڈری میں انگریزوں کے دوست سکھوں سے لڑنے کے لئے سرحد پر چلی آئی تھی. سید احمد صاحب کے مرنے کے بعد اُن کے شاگردوں نے اُن کے کام کو جاری رکھا اور جب ۱۸۴۹ء میں سرحد کا یہ علاقہ انگریزوں کی حکومت میں آگیا، تو ستیانا نام کے پہاڑی مقام پر اُنھوں نے اپنی چھاونی بناکر انگریزوں سے لڑنا شروع کردیا۔ ۱۸۵۸ء میں انگریزوں نے جب اس چھاونی کو برباد کردیا تو یہیں کے لوگ پیشاور سے اُتر پورب کی طرف بسے ہوئے ملکا گاؤں میں جاکر رہنے لگے. اس پر ۱۸۶۳ء کے اکتوبر مہینے میں انگریزوں نے قریب ۵۰۰۰ فوج لےکر ملکا پر بھی چڑھائی کردی اور دو مہینے کی گھنگھور لڑائی کے بعد ملکا کو تہس نہس کردیا. اس کے بعد ان لوگوں کو، جو اپنے کو 'مجاہدین' کہتے تھے، بکھر جانا پڑا اور اُنھوں نے الگ الگ قبیلوں میں جاکر انگریزوں سے لڑنے کے لئے الگ الگ سنگھٹن بنانے شروع کردئے. ان لوگوں میں سے ہی ایک تھے. مولانا نجم الدین صاحب، جن کا سرحد کی تواریخ میں 'مُلّا ہڈّا' کے نام سے ذکر ملتا ہے اور جنھوں نے اپنی زندگی بھر کبھی انگریزوں کو چین سے نہیں بیٹھنے دیا.

حاجی فضل واحد صاحب ان مُلّا ہڈّا کے ہی شاگرد اور خلیفہ تھے اس لئے جب مُلّا ہڈّا کا انتقال ہوا، تو اُن کے تمام شاگردوں اور مُریدوں نے حاجی فضل واحد صاحب

को ही अपना नेता चुना. उस वक़्त हाजी फ़ज़लवाहिद साहब अपने
तमाम खानदान के साथ अपने गाँव तुरंगज़ई में रहते थे. तुरंगज़ई
पेशावर ज़िले की चरसद्दा तहसील में है और सरहदी गान्धी खान
अब्दुलग़फ़्फ़ार ख़ाँ साहब के गाँव उतमानज़ई से सिर्फ़ एक मील
की दूरी पर है. तुरंगज़ई गाँव के बाशिन्दे होने की वजह से ही
हाजी फ़ज़लवाहिद साहब 'हाजी तुरंगज़ई' के नाम से मशहूर
हुए.

अपने गुरू को मसनद पर बैठ जाने के बाद मुजाहिदीनों के
रिवाज के मुताबिक़ हाजीफ़ज़ल वाहिद साहब के लिये यह लाज़िमी
था कि वे अंगरेज़ों के ख़िलाफ़ लड़ाई का एलान कर दें. उनके
दूसरे दूसरे साथियों ने इसके लिये हाजी साहब पर ज़ोर भी बहुत
डाला. लेकिन हाजी साहब ने ऐसा करने से इनकार कर दिया.
क्योंकि इस तरह बिना मौक़ा देखे हुए लड़ते रहना वे सिर्फ़ अपनी
बरबादी को दावत देना समझते थे. उनका कहना था कि इस तरह
की लड़ाई में अभी तक पठान क़ौम अपने हज़ारों सपूतों को
खो चुकी है. लेकिन अंग्रेज़ों की ताक़त और हुकूमत का फैलाव
सरहद में बढ़ता ही गया है. इसका साफ़ मतलब यह है कि हम
सिर्फ़ लड़ने के लिये ही लड़ते रहे हैं जो अक़्लमन्दी और दूरन्देशी
की बात नहीं है. इस लिये अब हमको पहिले अपनी ताक़त बढ़ानी
चाहिये और क़बाइली इलाक़े से बाहर रहने वाले पठानों और
ग़ैर पठानों में भी आज़ादी की चाह पैदा करनी चाहिये. जिससे
अँगरेज़ों से लड़ाई छिड़ने पर हमारे ये भाई हमारे मुक़ाबले में न
आवें और हम अङ्गरेज़ी हुकूमत पर कोई करारी चोट कर सकें.

کو ہی اپنا نیتا چُنا۔ اُس وقت حاجی فضل واحد صاحب اپنے تمام
خاندان کے ساتھ اپنے گاؤں ترنگ زئی میں رہتے تھے۔ ترنگ زئی
پشاور ضلع کی چرسدا تحصیل میں ہے اور سرحدی گاندھی خان عبدالغفار
خاں صاحب کے گاؤں اُتمان زئی سے صرف ایک میل کی دوری پر
ہے۔ ترنگ زئی گاؤں کے باشندے ہونے کی وجہ سے ہی حاجی
فضل واحد صاحب 'حاجی ترنگ زئی' کے نام سے مشہور ہوئے۔

اپنے گرو کی مسند پر بیٹھ جانے کے بعد مجاہدینوں کے رواج
کے مطابق حاجی فضل واحد صاحب کے لئے یہ لازمی تھا کہ وے
انگریزوں کے خلاف لڑائی کا اعلان کر دیں۔ اُن کے دوسرے دوسرے
ساتھیوں نے اِس کے لئے حاجی صاحب پر زور بھی بہت ڈالا لیکن
حاجی صاحب نے ایسا کرنے سے انکار کر دیا۔ کیونکہ اس طرح بنا موقع
دیکھے ہوئے لڑتے رہنا وے صرف اپنی بربادی کو دعوت دینا سمجھتے
تھے۔ اُن کا کہنا تھا کہ اس طرح کی لڑائی میں ابھی تک پٹھان قوم
اپنے ہزاروں سپوتوں کو کھو چکی ہے۔ لیکن انگریزوں کی طاقت اور
حکومت کا پھیلاؤ سرحد میں بڑھتا ہی گیا ہے۔ اس کا صاف مطلب
یہ ہے کہ ہم صرف لڑنے کے لئے ہی لڑتے رہے ہیں جو عقلمندی اور
دوراندیشی کی بات نہیں ہے۔ اس لئے اب ہم کو پہلے اپنی طاقت بڑھانی
چاہئے اور قبائلی علاقے سے باہر رہنے والے پٹھانوں اور غیر پٹھانوں
میں بھی آزادی کی چاہ پیدا کرنی چاہئے جس سے انگریزوں سے
لڑائی چھڑنے پر ہمارے بھائی ہمارے مقابلے میں نہ آویں اور
ہم انگریزی حکومت پر کوئی کراری چوٹ کر سکیں۔

सरहद की तवारीख़ में इस तरह हाजी फ़ज़ल वाहिद साहब पहिले नेता थे, जिन्होंने पठानों की आज़ादी के मसले को पूरे हिन्दुस्तान की आज़ादी के मसले के साथ मिलाकर सोचा और 'जहाद' के मज़हबी जोश से अलग रह कर उस पर एक सियासी लीडर की तरह ग़ौर किया. यह ठीक है कि अगर इसी तरह की बातें कोई दूसरा लीडर कहता, तो उनके साथी पठान ही, अपने उस लीडर को अंग्रेज़ों का भेदिया समझते और उसकी बोटी बोटी उड़ा देते. लेकिन हाजी फ़ज़ल वाहिद साहब की सच्चाई, नेक चलनी और ख़ुदा परस्ती का उनके साथियों पर इतना गहरा असर था कि किसी ने भी हाजी साहब के इस ख़्याल के ख़िलाफ़ चूं तक नहीं की और उनके कहने के मुताबिक़ चलना मंज़ूर कर लिया. इससे साबित होता है कि शुरू से ही हाजी साहब ने अपने साथियों का कितना यक़ीन हासिल कर लिया था.

इसके बाद हाजी साहब ने पूरे हिन्दुस्तान की सियासत पर ग़ौर किया और उन्होंने यह खोज करनी शुरू की कि हिन्दुस्तान की सियासी पार्टियों में कौन सी पार्टी उनकी मदद कर सकती है. उसी वक़्त वली उल्लाई जमात के छोटे इमाम मौलाना महमूद उल हसन साहब भी सरहदी सूबे से अपना ताल्लुक़ क़ायम करने की फ़िक्र में थे. नतीजा यह हुआ कि सन् १९०९ के क़रीब हाजी फ़ज़ल वाहिद साहब और मौलाना महमूद उल हसन साहब में ख़तों के ज़रिये कुछ जान पहचान हुई. पहले हाजी साहब ने क़बाइली इलाक़े के कुछ लड़कों को पढ़ने के बहाने देवबन्द भेजा, और जब उन लड़कों से यह मालूम कर लिया कि मौलाना महमूद उल हसन

سرحد کی تواریخ میں اِس طرح حاجی فضل واحد صاحب پہلے نیتا تھے، جنھوں نے پٹھانوں کی آزادی کے مسئلے کو پورے ہندستان کی آزادی کے مسئلے کے ساتھ ملاکر سوچا اور 'جہاد' کے مذہبی جوش سے الگ رہکر اُس پر ایک سیاسی لیڈر کی طرح غور کیا۔ یہ ٹھیک ہو کہ اگر اِسی طرح کی باتیں کوئی دوسرا لیڈر کہتا، تو اُس کے ساتھی پٹھان ہی، اپنے اُس لیڈر کو انگریزوں کا بھیدیا سمجھتے اور اُس کی بوٹی بوٹی اُڑا دیتے، لیکن حاجی فضل واحد صاحب کی سچائی، نیک چلنی اور خدا پرستی کا اُن کے ساتھیوں پر اِتنا گہرا اثر تھا کہ کسی نے بھی حاجی صاحب کے اِس خیال کے خلاف چوں تک نہیں کی اور اُن کے کہنے کے مطابق چلنا منظور کرلیا۔ اِس سے ثابت ہوتا ہو کہ شروع سے ہی حاجی صاحب نے اپنے ساتھیوں کا کتنا یقین حاصل کرلیا تھا۔

اِس کے بعد حاجی صاحب نے پورے ہندستان کی سیاست پر غور کیا اور اُنھوں نے یہ کھوج کرنی شروع کی کہ ہندستان کی سیاسی پارٹیوں میں کون سی پارٹی اُن کی مدد کرسکتی ہو۔ اُسی وقت ولی اللٰہی جماعت کے چھوٹے امام مولانا محمود الحسن صاحب بھی سرحدی صوبے سے اپنا تعلق قائم کرنے کی فکر میں تھے۔ نتیجہ یہ ہوا کہ ۱۹۰۹ء کے قریب حاجی فضل واحد صاحب اور مولانا محمود الحسن صاحب میں خطوں کے ذریعے کچھ جان پہچان ہوئی۔ پہلے حاجی صاحب نے قبائلی علاقے کے کچھ لڑکوں کو پڑھنے کے بہانے دیوبند بھیجا، اور جب اُن لڑکوں سے یہ معلوم کرلیا کہ مولانا محمود الحسن

साहब हिन्दुस्तान की आज़ादी सचमुच ही चाहते हैं और उसके लिये सब तरह की कुरबानी करने को तय्यार हैं. तो उन्होंने भी मौलाना महमूद उल हसन साहब को अपना नेता मान लिया. इस तरह वली उल्लाई जमात की इन दोनों शाखों का रिश्ता, जो सन् १८२५-२६ में टूट गया था, फिर से क़ायम हो गया.

इसके क़रीब दो साल बाद हाजी फ़ज़ल वाहिद साहब ने अपने इलाक़े में मदरसे क़ायम करने शुरू किये. इन मदरसों में यूँ देखने के लिये तो देवबन्द के मदरसे की तरह मज़हबी तालीम होती थी. लेकिन हाजी साहब का इरादा था कि इन मदरसों के ज़रिये ही पठानों में आज़ादी का सन्देश फैलाया जाय. तालीम के लिये उस वक़्त तक सरहद में इस तरह का कोई इन्तज़ाम नहीं था. इस लिये पठानों ने हाजी साहब के इस काम को बहुत पसन्द किया और ख़ान अब्दुलगफ़्फ़ार ख़ाँ साहब तो पहले पहल इन मदरसों की वजह से ही क़ौमी काम के मैदान में आए. इसी लिये ख़ान अब्दुलगफ़्फ़ार ख़ां साहब आज भी हाजी फ़ज़ल वाहिद साहब को अपना और तमाम सरहद का सबसे पहिला सियासी पेशवा मानते हैं.

हाजी साहब के यह मदरसे कुछ दिन तक तो चले. लेकिन उसके बाद ही अलीगढ़ यूनीवर्सिटी के एक विद्यार्थी अनीस अहमद के ज़रिये अंगरेज़ों को यह मालूम हो गया कि हाजी साहब का कुछ ताल्लुक़ देवबन्द के मदरसे से भी है. इसका नतीजा यह हुआ कि सरहद के अङ्गरेज़ हाकिमों ने उन स्कूलों को ज़बरदस्ती बन्द करा दिया और हाजी साहब पर कड़ी नज़र रखनी शुरू

صاحب ہندستان کی آزادی سچ مچ ہی چاہتے ہیں اور اُس کے لئے سب طرح کی قربانی کرنے کو تیار ہیں، تو اُنھوں نے بھی مولانا محمود الحسن صاحب کو اپنا نیتا مان لیا. اس طرح ولی اللہی جماعت کی اِن دونوں شاخوں کا رشتہ، جو ۲۶-۱۸۲۵ میں ٹوٹ گیا تھا، پھر سے قایم ہوگیا.

اِس کے قریب دو سال بعد حاجی فضل واحد صاحب نے اپنے علاقے میں مدرسے قایم کرنے شروع کئے. اِن مدرسوں میں یوں دیکھنے کے لئے تو دیوبند کے مدرسے کی طرح مذہبی تعلیم ہوتی تھی، لیکن حاجی صاحب کا ارادہ تھا کہ اِن مدرسوں کے ذریعے ہی پٹھانوں میں آزادی کا سندیش پھیلایا جائے. تعلیم کے لئے اُس وقت تک سرحد میں اِس طرح کا کوئی انتظام نہیں تھا. اِس لئے پٹھانوں نے حاجی صاحب کے اِس کام کو بہت پسند کیا اور خان عبدالغفار خاں صاحب تو پہلے پہل اِن مدرسوں کی وجہ سے ہی قومی کام کے میدان میں آئے. اِسی لئے خان عبدالغفار خاں صاحب آج بھی حاجی فضل واحد صاحب کو اپنا اور تمام سرحد کا سب سے پہلا سیاسی پیشوا مانتے ہیں.

حاجی صاحب کے یہ مدرسے کچھ دن تک تو چلے، لیکن اُس کے بعد ہی علی گڑھ یونیورسٹی کے ایک ودیارتھی انیس احمد کے ذریعے انگریزوں کو یہ معلوم ہوگیا کہ حاجی صاحب کا کچھ تعلق دیوبند کے مدرسے سے بھی ہے. اِس کا نتیجہ یہ ہوا کہ سرحد کے انگریز حاکموں نے اُن اسکولوں کو زبردستی بند کرادیا اور حاجی صاحب پر کڑی نظر رکھنی شروع

कर दी. उस वक्त कुछ अँगरेज़ हाकिमों की राय तो हाजी साहब को गिरफ़्तार कर लेने की भी थी. लेकिन सरहद पर हाजी साहब का जैसा असर था. उसको देखते हुए अंग्रेज़ों को ऐसा करने की हिम्मत नहीं हुई. सिर्फ़ उन्होंने बहुत से जासूस हाजी साहब के पीछे लगा दिये.

हाजी साहब इस हालत में भी घबराये नहीं और उन्होंने चुपचाप अपने काम को जारी रक्खा. इतनी निगरानी होने के बावजूद भी मदरसा देवबन्द और मौलाना महमूद उल हसन साहब से उनका ताल्लुक़ बराबर बना रहा और वे पठानों में आज़ादी का प्रचार करते रहे.

कुछ दिन बाद ही जब सन् १९१४ में योरप में लड़ाई शुरू हुई, तो मौलाना महमूद उल हसन साहब ने हाजी साहब को यह सन्देश भेजा कि हम लोगों को इस मौक़े से फ़ायदा उठाकर अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ फ़ौरन लड़ाई शुरू कर देनी चाहिये. यह सन्देश पाते ही, २० जून १९१४ को हाजी साहब अपने तमाम ख़ानदान के साथ चुपचाप ब्रिटिश इलाक़े से निकल कर क़बाइली इलाक़े में चले गये और उन्होंने अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ लड़ाई का ऐलान कर दिया. इस ऐलान का होना था कि क़बाइली पठानों की फ़ौजें जगह जगह इकट्ठी होनी शुरू हो गईं. जिसके सुप्रीम कमान्डर हाजी साहब चुने गए. इन फ़ौजों ने सब से पहिला हमला, १७ अगस्त को अम्बेला दर्रे में होकर ब्रिटिश इलाक़े पर किया और उस पर क़ब्ज़ा भी कर लिया. जो कई दिनों तक बना रहा. इसके बाद ऊपरी स्थान की तरफ़ से एक हमला किया गया और वहाँ की चौकियों से

کر دی۔ اس وقت کچھ انگریز حاکموں کی رائے تو حاجی صاحب کو گرفتار کر لینے کی بھی تھی، لیکن سرحد پر حاجی صاحب کا جیسا اثر تھا، اس کو دیکھتے ہوئے انگریزوں کو ایسا کرنے کی ہمت نہیں ہوئی۔ صرف انھوں نے بہت سے جاسوس حاجی صاحب کے پیچھے لگا دئے۔

حاجی صاحب اس حالت میں بھی گھبرائے نہیں اور انھوں نے چپ چاپ اپنے کام کو جاری رکھا۔ اتنی نگرانی ہونے کے باوجود بھی مدرسہ دیوبند اور مولانا محمود الحسن صاحب سے ان کا تعلق برابر بنا رہا اور وے پٹھانوں میں آزادی کا پرچار کرتے رہے۔

کچھ دن بعد ہی سنہ 1914 میں یورپ میں لڑائی شروع ہوئی، تو مولانا محمود الحسن صاحب نے حاجی صاحب کو یہ سندیش بھیجا کہ ہم لوگوں کو اس موقع سے فائدہ اٹھاکر انگریزوں کے خلاف فوراً لڑائی شروع کر دینی چاہیے۔ یہ سندیش پاتے ہی، ۲۰ جون 1914 کو حاجی صاحب اپنے تمام خاندان کے ساتھ چپ چاپ برٹش علاقے سے نکل کر قبائلی علاقے میں چلے گئے اور انھوں نے انگریزوں کے خلاف لڑائی کا اعلان کر دیا۔ اس اعلان کا ہونا تھا کہ قبائلی پٹھانوں کی فوجیں جگہ جگہ اکٹھی ہونی شروع ہو گئیں، جس کے سپریم کمانڈر حاجی صاحب چنے گئے۔ ان فوجوں نے سب سے پہلا حملہ، ۱۷ اگست کو امبیلا درے میں ہو کر برٹش علاقے پر کیا اور اس پر قبضہ بھی کر لیا، جو کئی دنوں تک بنا رہا۔ اس کے بعد اوپری استھان کی طرف سے ایک حملہ کیا گیا اور وہاں کی چوکیوں سے

अंग्रेज़ी फ़ौजों को भगा दिया गया. इसी तरह कई और हमले भी जगह जगह किये गये जिनमें अंग्रेज़ों की कई पलटनें सफ़ा कर दी गईं.

इन लड़ाइयों से हाजी साहब इस नतीजे पर पहुँचे कि जब तक हमारे पास रसद और हथियारों का अच्छा इन्तज़ाम नहीं होगा, तब तक कामयाबी मिलना मुश्किल है. इन चीज़ों का इन्तज़ाम करने के लिये हाजी साहब ने मौलाना महमूदउल हसन साहब को लिखा. इस पर मौलाना ने अपने शागिर्द मौलवी उबैदुल्ला सिन्धी को काबुल भेजा और ख़ुद मक्का-मदीना पहुँच कर ग़ालिब पाशा वग़ैरा से मिले. लेकिन कुछ ऐसी मुश्किलें सामने आईं कि न तो हाजी साहब को काबुल से ही मदद मिल सकी और न टर्की सरकार से ही. नतीजा यह हुआ कि हाजी साहब की तमाम फ़ौजें धीरे धीरे बिखर गईं और मुल्क की आज़ादी का उनका सपना पूरा न हो सका. इसी बीच मौलाना सैफ़ुर्रहमान वग़ैरा हाजी साहब के कुछ साथी भी अंग्रेज़ों से जा मिले और उन्होंने हाजी साहब को पकड़वाने के भी जाल रचे. लेकिन हाजी साहब की होशियारी की वजह से वे अपनी इन कोशिशों में कामयाब न हो सके.

योरप की लड़ाई ख़त्म होते ही एक तरफ़ तो हिन्दुस्तान में रौलट बिल के ख़िलाफ़ तहरीक शुरू हुई और दूसरी तरफ़ काबुल के नए बादशाह अमानुल्ला ख़ां साहब ने हिन्दुस्तान पर चढ़ाई कर दी. काबुल से होने वाली इस चढ़ाई में हाजी साहब का पूरा हाथ पहिले से ही था. क्यों कि बादशाह अमानुल्ला से यह तय हो चुका था कि हिन्दुस्तान से अंग्रेज़ सल्तनत ख़त्म करने में

انگریزی فوجوں کو بھگا دیا گیا. اسی طرح کئی اور حملے بھی جگہ جگہ کئے گئے جن میں انگریزوں کی کئی پلٹنیں صفا کر دی گئیں.

ان لڑائیوں سے حاجی صاحب اس نتیجے پر پہنچے کہ جب تک ہمارے پاس رسد اور ہتھیاروں کا اچھا انتظام نہیں ہوگا، تب تک کامیابی ملنا مشکل ہے. ان چیزوں کا انتظام کرنے کے لئے حاجی صاحب نے مولانا محمود الحسن صاحب کو لکھا. اس پر مولانا نے اپنے شاگرد مولوی عبیداللہ سندھی کو کابل بھیجا اور خود مکہ مدینہ پہنچ کر غالب پاشا وغیرہ سے ملے. لیکن کچھ ایسی مشکلیں سامنے آئیں کہ نہ تو حاجی صاحب کو کابل سے ہی مدد مل سکی اور نہ ٹرکی سرکار سے ہی. نتیجہ یہ ہوا کہ حاجی صاحب کی تمام فوجیں دھیرے دھیرے بکھر گئیں اور ملک کی آزادی کا ان کا سپنا پورا نہ ہو سکا. اسی بیچ مولانا سیف الرحمان وغیرہ حاجی صاحب کے کچھ ساتھی بھی انگریزوں سے جا ملے اور انھوں نے حاجی صاحب کو پکڑوانے کے بھی جال رچے، لیکن حاجی صاحب کی ہوشیاری کی وجہ سے وے اپنی ان کوششوں میں کامیاب نہ ہو سکے.

یورپ کی لڑائی ختم ہوتے ہی ایک طرف تو ہندستان میں رولٹ بل کے خلاف تحریک شروع ہوئی اور دوسری طرف کابل کے نئے بادشاہ امان اللہ خاں صاحب نے ہندستان پر چڑھائی کر دی. کابل سے ہونے والی اس چڑھائی میں حاجی صاحب کا پورا ہاتھ پہلے سے ہی تھا، کیونکہ بادشاہ امان اللہ سے یہ طے ہو چکا تھا کہ ہندستان سے انگریزی سلطنت ختم کرنے میں

हिन्दुस्तानी काबुल की मदद करेंगे, जिसके बदले में काबुल हिन्दुस्तान की आज़ादी मंज़ूर करेगा. इसी वजह से हाजी फ़ज़ल वाहिद साहब ने इस लड़ाई में भी पूरा हिस्सा लिया और अंग्रेज़ों को गहरा नुक़सान पहुँचाया. लेकिन कुछ ही दिन बाद काबुल सरकार और ब्रिटिश सरकार में सुलह हो गई, जिसके मुताबिक़ काबुल की मुकम्मिल आज़ादी अंग्रेज़ों ने मंज़ूर कर ली. अपनी आज़ादी मंज़ूर करा कर काबुल की फ़ौजें वापस लौट गईं और हाजी साहब को फिर एक बार नाकामयाबी का कड़ुआ फल खना पड़ा. लेकिन फिर भी वे हिम्मत के साथ अपने उसूलों पर जमे रहे और उन्होंने दूसरे क़बाइली सरदारों की तरह ब्रिटिश हुकूमत से कभी माफ़ी की दरख़ास्त नहीं की.

इसके बाद सन् १९२०–२१ में तमाम हिन्दुस्तान की तरह सरहद में भी असहयोग की आँधी उठी, जिसकी रहबरी हाजी साहब के पुराने साथी ख़ान अब्दुलग़फ़्फ़ार ख़ाँ साहब कर रहे थे. इसी बीच मौलाना महमूदउल हसन साहब भी माल्टा की नज़रबन्दी से रिहा हो कर हिन्दुस्तान वापस आ गये थे और उन्होंने इस तहरीक में दिलचस्पी लेना शुरू कर दिया था. हाजी साहब ने भी इस आन्दोलन में दिलचस्पी लेना शुरू किया. लेकिन ब्रिटिश इलाक़े से बाहर रहने के कारण वे इसमें कोई ख़ास हिस्सा नहीं ले सके. हाँ, उन्होंने इतना ज़रूर किया कि जब तक असहयोग चलता रहा, उन्होंने अपने असर के क़बीलों को शांत बनाए रक्खा. जिससे अंग्रेज़ हुकूमत क़बाइलियों की बग़ावत का बहाना लेकर उन पठानों पर ज़्यादा ज़ुल्म नहीं कर सकी, जो इस तहरीक में हिस्सा ले रहे थे.

ہندستانی کابل کی مدد کریں گے، جس کے بدلے میں کابل ہندستان کی آزادی منظور کرے گا۔ اسی وجہ سے حاجی فضل واحد صاحب نے اس لڑائی میں بھی پورا حصّہ لیا اور انگریزوں کو گہرا نقصان پہنچایا۔ لیکن کچھ ہی دن بعد کابل سرکار اور برٹش سرکار میں صلح ہو گئی، جس کے مطابق کابل کی مکمل آزادی انگریزوں نے منظور کر لی۔ اپنی آزادی منظور کرا کر کابل کی فوجیں واپس لوٹ گئیں اور حاجی صاحب کو پھر ایک بار ناکامیابی کا کڑوا پھل چکھنا پڑا۔ لیکن پھر بھی وے ہمت کے ساتھ اپنے اصولوں پر جمے رہے اور انھوں نے دوسرے قبائلی سرداروں کی طرح برٹش حکومت سے کبھی معافی کی درخواست نہیں کی۔

اس کے بعد ۲۱–۱۹۲۰ء میں تمام ہندستان کی طرح سرحد میں بھی اسہیوگ کی آندھی اٹھی، جس کی رہبری حاجی صاحب کے پرانے ساتھی خان عبدالغفار خاں صاحب کر رہے تھے۔ اسی بیچ مولانا محمودالحسن صاحب بھی مالٹا کی نظربندی سے رہا ہو کر ہندستان واپس آ گئے تھے اور انھوں نے اس تحریک میں دلچسپی لینا شروع کر دیا تھا۔ حاجی صاحب نے بھی اس آندولن میں دلچسپی لینا شروع کیا۔ لیکن برٹش علاقے سے باہر رہنے کے کارن وے اس میں کوئی خاص حصہ نہیں لے سکے۔ ہاں انھوں نے اتنا ضرور کیا کہ جب تک اسہیوگ چلتا رہا، انھوں نے اپنے اثر کے قبیلوں کو شانت بنائے رکھا، جس سے انگریزی حکومت قبائلیوں کی بغاوت کا بہانہ لے کر ان پٹھانوں پر زیادہ ظلم نہیں کر سکی، جو اس تحریک میں حصہ لے رہے تھے۔

असहयोग को तहरीक के ही जमाने में हिजरत की भी आँधी उठी, जिसमें हजारों मुसलमान हिन्दुस्तान से निकल कर काबुल और दूसरे दूसरे इस्लामी हुकूमतों में बसने के लिये चले गये. हाजी साहब ने इस वक़्त हिजरत करने वाले लोगों की पूरी पूरी मदद की और जो लोग उनके इलाक़े से होकर निकले उनको पूरी तरह से हिफ़ाजत की. इसी हिजरत के सिलसिले में जब ख़ान अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ाँ साहब काबुल गये थे. तब आते जाते हुये हाजी साहब से उनकी भी मुलाक़ात हुई थी.

इसके बाद हाजी साहब ने पश्तो में एक अख़बार निकालना शुरू किया जिसके पश्तो नाम का तरजुमा 'चिनगारी' होता है. यह अख़बार शायद पश्तो में निकलने वाला पहिला अख़बार था जो पहाड़ियों की छिपी हुई गुफ़ाओं में छापा जाता था. सन १९२४ से सन् १९२८–२९ तक जब तमाम हिन्दुस्तान की तरह सरहद में भी हिन्दू मुसलमानों के बीच तनाव फैला हुआ था, तब इस अख़बार के ज़रिये हाजी साहब ने लोगों को सही रास्ता दिखाने में बहुत बड़ा काम किया था. इस तरह हाजी साहब एक पुरअसर मोलवी, एक ऊँचे दर्जे के कमान्डर और एक दूरन्देश लीडर होने के साथ साथ एक अच्छे अख़बार नवीस भी थे.

इसके बाद सन् १९३०–३१ में जब फिर कांग्रेस ने आज़ादी की लड़ाई का ऐलान किया, तो हाजी साहब की पूरी हमदर्दी उसके साथ थी. और जब सरकारी अफ़सरों ने ख़ुदाई ख़िदमत-गारों पर दिल दहलाने वाले जुल्म करने शुरु किये, तो बूढ़े हाजी

اسہیوگ کے ہی زمانے میں ہجرت کی بھی آندھی اٹھی، جس میں ہزاروں مسلمان ہندستان سے نکل کر کابل اور دوسرے دوسرے اسلامی حکومتوں میں بسنے کے لئے چلے گئے۔ حاجی صاحب نے اس وقت ہجرت کرنے والے لوگوں کی پوری پوری مدد کی اور جو لوگ اُن کے علاقے سے ہوکر نکلے اُن کی پوری طرح سے حفاظت کی۔ اسی ہجرت کے سلسلے میں جب خان عبدالغفار خاں صاحب کابل گئے تھے، تب آتے جاتے ہوئے حاجی صاحب سے اُن کی بھی ملاقات ہوئی تھی۔

اس کے بعد حاجی صاحب نے پشتو میں ایک اخبار نکالنا شروع کیا جس کے پشتو نام کا ترجمہ 'چنگاری' ہوتا ہے۔ یہ اخبار شاید پشتو میں نکلنے والا پہلا اخبار تھا جو پہاڑیوں کی چھپی ہوئی گپھاؤں میں چھاپا جاتا تھا۔ ۱۹۲۴ء سے ۱۹۲۸–۲۹ء تک جب تمام ہندستان کی طرح سرحد میں بھی ہندو مسلمانوں کے بیچ تناؤ پھیلا ہوا تھا، تب اس اخبار کے ذریعے حاجی صاحب نے لوگوں کو صحیح راستہ دکھانے میں بہت بڑا کام کیا تھا۔ اس طرح حاجی صاحب ایک پُراثر مولوی، ایک اونچے درجے کے کمانڈر اور ایک دُوراندیش لیڈر ہونے کے ساتھ ساتھ ایک اچھے اخبار نویس بھی تھے۔

اس کے بعد ۱۹۳۰–۳۱ء میں جب پھر کانگریس نے آزادی کی لڑائی کا اعلان کیا تو حاجی صاحب کی پوری ہمدردی اُن کے ساتھ تھی۔ اور جب سرکاری افسروں نے خدائی خدمت گاروں پر دل دہلانے والے ظلم کرنے شروع کئے، تو بوڑھے حاجی

साहब ने, जून १९३० में, महमन्दों और अफ़्रीदियों के एक लशकर के साथ पेशावर पर हमला बोल दिया, जिसने कुछ समय के लिये तो अँग्रेज़ों को बड़ी भयानक मुश्किल में डाल दिया था.

सन् १९३० के बाद के किसी साल में हाजी फ़ज़लवाहिद साहब का इन्तक़ाल होगया. उस दिन सरहद के अंग्रेज हाकिमों ने घी के चिराग़ जलाये और अभागे हिन्दुस्तानी यह जान भी न सके कि आज उनके देश का एक ऐसा देश भक्त सपूत हमेशा के लिये उनको छोड़ कर चला गया है, जो अपनी जिन्दगी भर हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिये लड़ता रहा और जिसके नाम से हिन्दुस्तान के दुश्मन थर थर कांपते थे.

अब हाजी साहब के लड़के बादशाह गुल हैं, जो महमन्द इलाक़े में रहते हैं और खान अब्दुल ग़फ़्फ़ार खां साहब के असर से अहिंसा के पुजारी बन गये हैं. अपने पिता की तरह ही बादशाह गुल भी हिन्दू मुसलिम एकता के बहुत बड़े हामी हैं और अभी पिछले दिनों जब कुछ मतलबी लोगों ने महमन्दों को इसके लिये भड़काना शुरू किया कि वे अपने इलाक़े के पास बसे हुए हिन्दू सिक्खों को लूट लें, तो बादशाह गुल ने इसकी सख़्त मुख़ालफ़त की और इसी वजह से आज भी उस इलाक़े के हिन्दू और सिक्ख बड़े अमन के साथ रह रहे हैं.

वलीउल्लाई तहरीक की तवारीख़ में हाजी फ़ज़लवाहिद साहब की एक अलग कहानी है, जो बहुत कम लोगों की नज़रों में आई है. लेकिन उसकी अहमियत से इनकार नहीं किया जा सकता और सरहदी सूबे की सियासत का तो उनको 'पिता' कहा जा सकता है.

صاحب نے، جون ۱۹۳۰ میں، مہمندوں اور افریدیوں کے ایک لشکر کے ساتھ پشاور پر حملہ بول دیا، جس نے کچھ سمے کے لئے تو انگریزوں کو بڑی بھیانک مشکل میں ڈال دیا تھا۔

۱۹۳۰ء کے بعد کے کسی سال میں حاجی فضل واحد صاحب کا انتقال ہوگیا۔ اُس دن سرحد کے انگریز حاکموں نے گھی کے چراغ جلائے اور ابھاگے ہندستانی یہ جان بھی نہ سکے کہ آج اُن کے دیش کا ایک ایسا دیش بھکت سپوت ہمیشہ کے لئے اُن کو چھوڑ کر چلا گیا ہے۔ جو اپنی زندگی بھر ہندستان کی آزادی کے لئے لڑتا رہا اور جس کے نام سے ہندستان کے دشمن تھر تھر کانپتے تھے۔

اب حاجی صاحب کے لڑکے بادشاہ گل ہیں، جو مہمند علاقے میں رہتے ہیں اور خان عبدالغفار خاں صاحب کے اثر سے اہنسا کے پجاری بن گئے ہیں۔ اپنے پتا کی طرح ہی بادشاہ گل بھی ہندو مسلم ایکتا کے بہت بڑے حامی ہیں اور ابھی پچھلے دنوں جب کچھ مطلبی لوگوں نے مہمندوں کو اس کے لئے بھڑکانا شروع کیا کہ وے اپنے علاقے کے پاس بسے ہوئے ہندو سکھوں کو لوٹ لیں، تو بادشاہ گل نے اِس کی سخت مخالفت کی اور اِسی وجہ سے آج بھی اُس علاقے کے ہندو اور سکھ بڑے امن کے ساتھ رہ رہے ہیں۔

ولی اللہی تحریک کی تواریخ میں حاجی فضل واحد صاحب کی ایک الگ کہانی ہے، جو بہت کم لوگوں کی نظروں میں آئی ہے۔ لیکن اُس کی اہمیت سے انکار نہیں کیا جاسکتا اور سرحدی صوبے کی سیاست کا تو اُن کو 'پتا' کہا جاسکتا ہے۔

हिंदुस्तानी कलचर और संगीत

(पंडित गनेश प्रसाद द्विवेदी)

(१०)

पिछले लेखों में हम जफ़र खां, प्यार खां और बासित खां का बयान कर चुके हैं. अब हम इनके बेटों के बारे में लिखेंगे. इनमें से प्यार खां ने ला-औलाद होने की वजह से अपने भांजे बहादुर सेन को पाल लिया था. जफ़र खां के बेटों में सादिक़ अली सब से मशहूर हुए थे और इनमें व बहादुर सेन में कितनी लाग डांट रहा करती थी यह भी हम देख चुके हैं. अब खास तौर से बासित खां के बेटों के बारे में कहना है. इनके तीन बेटे थे—अली मुहम्मद (बड़कू मियां), मुहम्मद अली खां व रियासत अली खां. बासित खां साहब का इन्तक़ाल १८८७ ई० में गया में ही हुआ. उस समय उनकी उमर सौ से ऊपर थी.

जफ़र खां के बेटे सादिक अली खां ने शादी नहीं की थी. ये और इनके बड़े भाई काज़िम अली ने किस तरह अपने चाचा प्यार खां की मौजूदगी में उनके भांजे बहादुर सेन को उस बिहाग वाले जलसे में नीचा दिखाया था यह हम देख चुके हैं. काज़िम अली के बाद उनकी गद्दी सादिक अली को ही मिली. ये लोग चार भाई थे जिनमें से अहमद अली बचपन में ही मर गये थे. सादिक अली रागों के महा पंडित थे संस्कृत इन्होंने पंडितों से बाक़ायदा पढ़ी थी. इनका ऐसा संगीत का विद्वान शायद ही कोई हुआ हो. इनके बाद

ہندستانی کلچر اور سنگیت

(پنڈت گنیش پرساد دوویدی)

(۱۰)

پچھلے لیکھوں میں ہم ظفر خاں، پیار خاں اور باسط خاں کا بیان کر چکے ہیں۔ اب ہم اِن کے بیٹوں کے بارے میں لکھیں گے۔ ان میں سے پیار خاں نے لاولد ہونے کی وجہ سے اپنے بھانجے بہادر سین کو پال لیا تھا۔ ظفر خاں کے بیٹوں میں صادق علی سب سے مشہور ہوئے تھے اور اِن میں و بہادر سین میں کتنی لاگ ڈانٹ رہا کرتی تھی یہ بھی ہم دیکھ چکے ہیں۔ اب خاص طور سے باسط خاں کے بیٹوں کے بارے میں کہنا ہے۔ اِن کے تین بیٹے تھے— علی محمد (بڑکو میاں)، محمد علی خاں و ریاست علی خاں۔ باسط خاں صاحب کا انتقال ۱۸۸۷ء میں گیا میں ہی ہوا۔ اُس سمے اُن کی عمر سَو سے اوپر تھی۔

ظفر خاں کے بیٹے صادق علی خاں نے شادی نہیں کی تھی۔ یہ اور اِن کے بڑے بھائی کاظم علی نے کس طرح اپنے چاچا پیار خاں کی موجودگی میں اُن کے بھانجے بہادر سین کو اُس بہاگ والے جلسے میں نیچا دکھایا تھا یہ ہم دیکھ چکے ہیں۔ کاظم علی کے بعد اُن کی گدی صادق علی کو ہی ملی۔ یہ لوگ چار بھائی تھے جن میں سے احمد علی بچپن میں ہی مر گئے تھے۔ صادق علی راگوں کے مہا پنڈت تھے۔ سنسکرت اِنھوں نے پنڈتوں سے باقاعدہ پڑھی تھی۔ اِن کا ایسا سنگیت کا وِدوان شاید ہی کوئی ہوا ہو۔ اِن کے بعد

इनकी गद्दी छोटे भाई निसार अली को मिली. पर ये भी ज्यादा दिन जिंदा नहीं रहे. बंस चला सिर्फ़ काज़िम अली से ही जिनके बेटे कासिम अली बंगाल में अच्छा नाम कर गये हैं. ये ज्यादातर बंगाल में ही रहे और इस वजह से बंगाल (ख़ासकर कलकत्ता और ढाका) से बाहर इनको बहुत कम लोग जानते हैं. पर सादिक़ अली का नाम हिंदुस्तान भर में मशहूर था. कासिम अली का भी बंस नहीं चला.

छज्जू ख़ां के छोटे भाई जीवन ख़ां के तीन लड़के बाक़र ख़ां, हैदर ख़ां, और बहादुर ख़ां थे जिनके बंस नहीं चले. इनके पहले करीम सेन के दूसरे लड़के रागरस ख़ां के बेटे मशहूर मसीत ख़ां साहब हुए थे जिन्हों ने सितार बजाने का एक नया स्टाइल ईजाद किया था जो इनके नाम से 'मसीत ख़ानी बाज' कहलाता है. सितार बजाने का इससे अच्छा ढंग अभी तक किसी ने नहीं निकाला. मसीत ख़ां के बेटे का नाम भी बहादुर ख़ां था, पर इनका बंस नहीं चला.

इस तरह हम देखते हैं कि सिवा बासित ख़ां के और किसी का बंस नहीं चला. और इनके बंस में भी अब इस समय कोई नहीं है. इनके दूसरे बेटे मुहम्मद अली ने शौकत अली नाम के एक अपने नज़दीकी रिश्तेदार के बच्चे को पाल लिया था जो मौजूद हैं और कलकत्ते में रहते हैं.

बीनकार और रबाबी दोनों घरानों में अक्सर ब्याह शादी का सम्बन्ध भी हो जाया करता था. यों तो इस तरह की कई शादियां हुईं पर उनमें मार्के की शादी जो हुई वह थी रबाबी काज़िम अली की

ان کی گدی چھوٹے بھائی نثار علی کو ملی۔ پر یہ بھی زیادہ دن زندہ نہیں رہے۔ بنس چلا صرف کاظم علی سے ہی جن کے بیٹے قاسم علی بنگال میں اچھا نام کر گئے ہیں۔ یہ زیادہ تر بنگال میں ہی رہے اور اس وجہ سے بنگال (خاص کر کلکتہ اور ڈھاکا) سے باہر ان کو بہت کم لوگ جانتے ہیں۔ پر صادق علی کا نام ہندستان بھر میں مشہور تھا۔ قاسم علی کا بھی بنس نہیں چلا۔

چھجو خاں کے چھوٹے بھائی جیون خاں کے تین لڑکے باقر خاں، حیدر خاں اور بہادر خاں تھے جن کے بنس نہیں چلے۔ ان سے پہلے کریم سین کے دوسرے لڑکے راگرس خاں کے بیٹے مشہور مسیت خاں صاحب ہوئے تھے جنھوں نے ستار بجانے کا ایک نیا اسٹائل ایجاد کیا تھا جو ان کے نام سے 'مسیت خانی باج' کہلاتا ہے۔ ستار بجانے کا اس سے اچھا ڈھنگ ابھی تک کسی نے نہیں نکالا۔ مسیت خاں کے بیٹے کا نام بھی بہادر خاں تھا، پر ان کا بنس نہیں چلا۔

اس طرح ہم دیکھتے ہیں کہ سوا باسط خاں کے اور کسی کا بنس نہیں چلا۔ اور ان کے بنس میں بھی اب اس سمے کوئی نہیں ہے۔ ان کے دوسرے بیٹے محمد علی نے شوکت علی نام کے ایک اپنے نزدیکی رشتے دار کے بچے کو پال لیا تھا جو موجود ہیں اور کلکتے میں رہتے ہیں۔

بین کار اور ربابی دونوں گھرانوں میں اکثر بیاہ شادی کا سمبندھ بھی ہو جایا کرتا تھا۔ یوں تو اس طرح کی کئی شادیاں ہوئیں پر ان میں معرکے کی شادی جو ہوئی وہ تھی ربابی کاظم علی کی

लड़का से बीनकार अमीर खां की शादी. बहादुर सेन रबाबिये बाद में नवाब रामपूर क़ल्बे अली खां के गुरू के रूप में रामपुर जा बसे थे. काज़िम अली (जो उनके फुफेरे भाई थे) की लड़की भी उन्हीं के साथ गई थी. वहाँ पर अमीर खां से उसकी शादी उन्होंने करदी जिससे वज़ीर खां की पैदायश हुई.

अब बासित खां के लड़कों को लेते हैं क्यों कि इस घराने में अब सिर्फ़ इन्हीं की चर्चा करनी रह गई है. यह हम कह चुके हैं कि बासित खां का इन्तक़ाल गया में हुआ और गया के पास के टिकरी नाम के राज से इनको बहुत सी ज़मीन और कई गांव मिले थे. पिता के बाद सारे ताल्लुक़े के मालिक अली मुहम्मद खां हुए. इनके दोनों छोटे भाई मुहम्मद अली खां और रियासत अली भी इनके साथ ही रहते थे. बड़े भाई अली मुहम्मद (बड़कू मियां) और मुहम्मद अली की तालीम पूरी हो चुकी थी. बड़कू मियां को रबाब और सुरसिंगार की सारी कैफ़ियत बता दी गई थी. महम्मूद अली खां का गला बड़ा सुरीला और मीठा था इस लिये इन्हें रबाब के साथ गाने की भी पूरी तालीम दी गई थी.

अली मुहम्मद उर्फ़ बड़कू मियां को बहुत बड़ा तालुका गया और टिकरी वालों से मिला था, पर उसकी देख भाल इनसे न हो सकी. ये ज़रा एयाश मिज़ाज और आरामतलब आदमी थे. ज़मींदारी चलाने की विद्या इनको नहीं मालूम थी. नतीजा यह हुआ कि इनकी सारी जायदाद देखते देखते ख़तम हो गई. ग़रीबों की ख़ैरात, और दोस्तों की दावत में इन्होंने सारा ताल्लुक़ा स्वाहा कर दिया. कल क्या होगा, इसको इन्हों ने कभी नहीं सोचा. जिसने जो

لڑکی سے بین کاری امیر خاں کی شادی. بہادر سین ربابیے بعد میں نواب رام پور کلب علی خاں کے گرو کے روپ میں رام پور جا بسے تھے. کاظم علی (جو اُن کے پھوپھیرے بھائی تھے) کی لڑکی بھی انھیں کے ساتھ گئی تھی. وہیں پر امیر خاں سے اُس کی شادی اُنھوں نے کر دی جس سے وزیر خاں کی پیدائش ہوئی.

اب باسط خاں کے لڑکوں کو لیتے ہیں کیونکہ اِس گھرانے میں اب صرف انھیں کی چرچا کرنی رہ گئی ہے. یہ ہم کہہ چکے ہیں کہ باسط خاں کا انتقال گیا میں ہوا اور گیا کے پاس کے ٹکری نام کے راج سے اِن کو بہت سی زمین اور کئی گاؤں ملے تھے. پتا کے بعد سارے تعلقے کے مالک علی محمد خاں ہوئے. اِن کے دونوں چھوٹے بھائی محمد علی خاں اور ریاست علی بھی اِن کے ساتھ ہی رہتے تھے. بڑے بھائی علی محمد (بڑکو میاں) اور محمد علی کی تعلیم پوری ہو چکی تھی. بڑکو میاں کو رباب اور سُرسنگار کی ساری کیفیت بتا دی گئی تھی. محمد علی خاں کا گلا بڑا سُریلا اور میٹھا تھا اِس لئے انھیں رباب کے ساتھ گانے کی بھی پوری تعلیم دی گئی تھی.

علی محمد عرف بڑکو میاں کو بہت بڑا تعلقہ گیا اور ٹکری والوں سے ملا تھا، پر اُس کی دیکھ بھال اِن سے نہ ہو سکی. یہ ذرا عیاش مزاج اور آرام طلب آدمی تھے. زمینداری چلانے کی ودیا اِن کو نہیں معلوم تھی. نتیجہ یہ ہوا کہ اِن کی ساری جائداد دیکھتے دیکھتے ختم ہو گئی. غریبوں کی خیرات، اور دوستوں کی دعوت میں انھوں نے سارا تعلقہ سواہا کر دیا. کل کیا ہوگا، اِس کو انھوں نے کبھی نہیں سوچا. جس نے جو

मांगा उठाकर दे दिया. किसी को 'न' कहना नहीं जानते थे. बहुत से धूर्तों ने इन्हें बेतरह ठगा. लड़की को शादी, बाढ़ की बरबादी, महाजन का कर्ज़. इस तरह की ज़रूरियात को ले कर कोई न कोई इनके पास पहुँचा ही रहता था और इनके मिजाज में मुरौवत इतनी भरी हुई थी कि किसी को निराश ये कर ही नहीं सकते थे. इनकी आदत से आजिज आकर अक्सर इनके भाई लाग इस तरह के याचकों का पहुँच व सुनवाई इन तक न होने देते थे और ऐसे लोगों को बाहर ही बाहर लौटा दिया करते थे. पर जब कभी इन्हें पता चलता तो भाइयों को इसके लिये डाँट सुननी पड़ती थी. ये सख़्त नाराज हो कर भाइयों से कहते कि, यह जो कुछ भी हमारे तुम्हारे पास है, इन्हीं लोगों का है और इन्हीं के काम आ सके तो इससे बढ़कर और क्या. इल्म ही की बदौलत बुज़ुर्गों को यह दौलत मिली थी, सो हमारा इल्म तो कोई छीन नहीं लेगा. हम तुम जहाँ कहीं भी खड़े हो जांयगे बुज़ुर्गों की दुआ से तकलीफ़ नहीं होगी, पर इन बेचारों को कौन देगा. यह इन्हीं का है, और इन्हीं को मिलना चाहिये. इसका फल यह हुआ कि राजाओं की सी इनकी दौलत देखते देखते ग़ायब हो गई. ग़रीब शागिर्दों के तो यह सचमुच ग़रीब निवाज ही थे. आमदनी का ज़्यादातर हिस्सा इन्हीं लोगों पर सर्फ़ होता था. बात यहां तक बढ़ी कि बहुत से चालाक लोग इसी मौज की लालच से ही इनके शागिर्द हो गए. पर पता चलने पर इनके भाइयों ने ऐसे धूर्तों को निकाल भगाया.

مانگا اُٹھاکر دے دیا. کسی کو 'نہ' کہنا نہیں جانتے تھے. بہت سے دُھورتوں نے اِنھیں بےطرح ٹھگا. لڑکی کی شادی، باڑھ کی بربادی، مہاجن کا قرض، اِس طرح کی ضروریات کو لے کر کوئی نہ کوئی اِن کے پاس پہنچا ہی رہتا تھا اور اِن کے مزاج میں مروّت اِتنی بھری ہوئی تھی کہ کسی کو نراش یہ کر ہی نہیں سکتے تھے. اِن کی عادت سے عاجز آکر اکثر اِن کے بھائی لوگ اِس طرح کے یاچکوں کی پہنچ و شنوائی اِن تک نہ ہونے دیتے تھے اور ایسے لوگوں کو باہر ہی باہر لوٹا دیا کرتے تھے. پر جب کبھی اِنھیں پتہ چلتا تو بھائیوں کو اِس کے لئے ڈانٹ سُننی پڑتی تھی. یہ سخت ناراض ہوکر بھائیوں سے کہتے کہ، یہ جو کچھ بھی ہمارے تمھارے پاس ہے، اِنھیں لوگوں کا ہے اور اِنھیں کے کام آسکے تو اِس سے بڑھکر اور کیا. علم ہی کی بدولت بزرگوں کو یہ دولت ملی تھی، سو ہمارا علم تو کوئی چھین نہیں لےگا. ہم تم جہاں کہیں بھی کھڑے ہوجائیں گے بزرگوں کی دُعا سے تکلیف نہیں ہوگی، پر اِن بےچاروں کو کون دےگا. یہ اِنھیں کا ہے، اور اِنھیں کو ملنا چاہئے. اِس کا پھل یہ ہوا کہ راجاؤں کی سی اِن کی دولت دیکھتے دیکھتے غائب ہوگئی. غریب شاگردوں کے تو یہ سچ مچ غریب نواز ہی تھے. آمدنی کا زیادہ‌تر حصّہ اِنھیں لوگوں پر صَرف ہوتا تھا. بات یہاں تک بڑھی کہ بہت سے چالاک لوگ اِسی موج کی لالچ سے ہی اِن کے شاگرد ہوگئے، پر پتہ چلنے پر اِن کے بھائیوں نے ایسے دُھورتوں کو نکال بھگایا.

मुख्तसर यह कि १०–१५ साल के अन्दर ही गया और टिकरी की सारी जर जमीन काफ़ूर हो गई, एक के बाद एक गांव बिक चले, जिससे टिकरी के राजा इनसे बहुत नाखुश भी हुए, पर इसकी उन्हों ने रत्ती भर भी परवाह नहीं की. सब, कुछ फूंक कर नैपाल दरबार में चले गये.

नैपाल के राजा (इस समय जो हैं उनके बाबा) को गाने बजाने की विद्या से बड़ा प्रेम था. उनके दरबार में कई अच्छे अच्छे गुनी मौजूद थे. वह अर्से से बासित खां को बुलाना चाह रहे थे पर उन्हों ने, जैसा कि हम देख चुके हैं, गया और टिकरी छोड़ कर किसी दूसरे दरबार में जाना नहीं चाहा. इधर जब राजा साहब को खबर मिली कि बासित खां के लड़कों और टिकरी वालों से कुछ अनबन हो रही है तो उन्होंने बड़े आदर से दावत देकर बड़कू मियां को बुला भेजा. जो कुछ थोड़ी सी जायदाद बची थी उसको छोटे भाई रियासत अली के सुपुर्द कर बड़कू मियां तुरंत नैपाल रवाना होगए. रियासत अली को तालीम कम मिली थी. इनका ध्यान ज्यादातर जमींदारी की देख भाल की तरफ़ ही था. सब से छोटे होने की वजह से इनको अपने वालिद से कुछ सीखने का मौक़ा नहीं मिला. बड़कू मियां की फ़ैयाज़ी सब से ज्यादा इन्हीं को खलती थी. इसीसे बची हुई जमीन इनके सुपुर्द कर बड़कू मियां मुहम्मद अली (मँझले) को लेकर नैपाल चले गए.

इन लोगों के वहां कुछ बरस तक रह जाने के बाद नैपाल हिंदुस्तान में संगीत का केंद्र (मरकज़) होगया. पहले

مختصر یہ کہ ۱۰-۱۵ سال کے اندر ہی گیا اور ٹکری کی ساری زر زمین کافور ہوگئی، ایک کے بعد ایک گاؤں بک چلے، جس سے ٹکری کے راجا اِن سے بہت ناخوش بھی ہوئے، پر اِس کی اُنھوں نے رتّی بھر بھی پرواہ نہیں کی. سب کچھ پھونک کر نیپال دربار میں چلے گئے.

نیپال کے راجا (اِس سمے جو ہیں اُن کے بابا) کو گانے بجانے کی وِدّیا سے بڑا پریم تھا. اُن کے دربار میں کئی اچھّے اچھّے گُنی موجود تھے. وہ عرصے سے باسط خاں کو بُلانا چاہ رہے تھے پر اُنھوں نے، جیسا کہ ہم دیکھ چکے ہیں، گیا اور ٹکری چھوڑ کر کسی دوسرے دربار میں جانا نہیں چاہا. اِدھر جب راجا صاحب کو خبر ملی کہ باسط خاں کے لڑکوں اور ٹکری والوں سے کچھ اَن بَن ہو رہی ہے تو اُنھوں نے بڑے آدر سے دعوت دے کر بڑکو میاں کو بُلا بھیجا. جو کچھ تھوڑی سی جائداد بچی تھی اس کو چھوٹے بھائی ریاست علی کے سپرد کر بڑکو میاں تُرنت نیپال روانہ ہوگئے. ریاست علی کو تعلیم کم ملی تھی. اِن کا دھیان زیادہ تر زمینداری کی دیکھ بھال کی طرف ہی تھا. سب سے چھوٹے ہونے کی وجہ سے اِن کو اپنے والد سے کچھ سیکھنے کا موقع نہیں ملا. بڑکو میاں کی فیاضی سب سے زیادہ اِنھیں کو کھلتی تھی. اِسی سے بچی ہوئی زمین اِن کے سپرد کر بڑکو میاں محمد علی (منجھلے) کو لے کر نیپال چلے گئے.

اِن لوگوں کے وہاں کچھ برس تک رہ جانے کے بعد نیپال ہندستان میں سنگیت کا کیندر (مرکز) ہوگیا. پہلے

जैसा दिल्ली दरबार था और बाद में रामपुर दरबार जैसा चमका, संगीत के मानी में नैपाल की शान भी उसी तरह की होगई. उन दिनों बात यह थी कि देसी बड़ी रियासतों में कुछ होड़ सी लगी हुई थी कि चोटी के संगीत गुनी किसके दरबार में ज्यादा हैं. दिल्ली की मजलिस उखड़ने के बाद, रामपुर, और लखनऊ के नवाब, फिर बनारस, और फिर नैपाल इन दरबारों में आपसी लाग डाँट सी लगी हुई थी. ज्यादा से ज्यादा तनख्वाह और इलाक़े का लालच देकर ये सेनियों को बुलाने की कोशिश में रहा करते थे. और बातों के अलावा इससे देश भर में संगीत का प्रचार व फैलाव बहुत हुआ. जिस दरबार में ये लोग दस या पांच बरस के लिये भी टिक जाते थे वहां इनके सैकड़ों शागिर्द तैयार हो जाते और फिर समय पर उनकी शिष्य मंडली (शागिर्दों की जमात) तैयार होती. ख़ैरियत यह थी कि उस जमाने के रजवाड़े सोडा, ह्विस्की, पोलो, घुड़दौड़, कुत्ता दौड़ या मोटर दौड़ में उतने ग़र्क़ नहीं रहते थे जितने कि संगीत, साहित्य और कला की सेवा में. काश कि अब भी ऐसा ही होता. अंगरेज़ी सभ्यता और विलायत में तालीम पाने या अपने देश में अंगरेज़ रेज़ीडेंट की तालीम में इन के महराज कुमारों को जो ख़ास तालीम मिली उसमें अपने देश की पुरानी कला, अदब और सभ्यता को हिकारत की निगाह से देखना और योरप की संस्कृति, सभ्यता, साहित्य और कलाओं को दुनिया में बेजोड़ मानना उनकी रग रग में भर दिया गया. बीन, रबाब के दैवी सुरों की जगह इनको विलायती जाज़ बैंड के संगीत के साथ बालरूम में विलायती

جیسا دلّی دربار تھا اور بعد میں رام پور دربار جیسا چمکا، سنگیت کے معنی میں نیپال کی شان بھی اسی طرح کی ہوگئی. ان دنوں بات یہ تھی کہ دیسی بڑی ریاستوں میں کچھ ہوڑ سی لگی ہوئی تھی کہ چوٹی کے سنگیت گنی کس کے دربار میں زیادہ ہیں. دلّی کی مجلس اکھڑنے کے بعد، رام پور اور لکھنؤ کے نواب، پھر بنارس، اور پھر نیپال ان درباروں میں آپسی لاگ ڈانٹ سی لگی ہوئی تھی. زیادہ سے زیادہ تنخواہ اور علاقے کا لالچ دے کر یہ سینیوں کو بلانے کی کوشش میں رہا کرتے تھے. اور باتوں کے علاوہ اس سے دیش بھر میں سنگیت کا پرچار و پھیلاو بہت ہوا. جس دربار میں یہ لوگ دس یا پانچ برس کے لئے بھی ٹک جاتے تھے وہاں ان کے سیکڑوں شاگرد تیار ہوجاتے اور پھر سمے پر ان کی شیشیہ منڈلی (شاگردوں کی جماعت) تیار ہوتی. خیریت یہ تھی کہ اس زمانے کے رجواڑے سوڈا، وہسکی، پولو، گھوڑدوڑ، کتّا دوڑ یا موٹر دوڑ میں اتنے غرق نہیں رہتے تھے جتنے کہ سنگیت، ساہتیہ اور کلا کی سیوا میں. کاش کہ اب بھی ایسا ہی ہوتا. انگریزی سبھیتا اور ولایت میں تعلیم پانے یا اپنے دیش میں انگریز ریذیڈنٹ کی تعلیم میں ان کے مہاراج کماروں کو جو خاص تعلیم ملی اس میں اپنے دیش کی پرانی کلا، ادب اور سبھیتا کو حقارت کی نگاہ سے دیکھنا اور یورپی سنسکرتی، سبھیتا، ساہتیہ اور کلاؤں کو دنیا میں بے جوڑ ماننا ان کی رگ رگ میں بھر دیا گیا. بین، رباب کے دیوی سُروں کی جگہ ان کو ولایتی جاز بینڈ کے سنگیت کے ساتھ بال روم میں ولایتی

लड़कियों के साथ नाचने की तालीम दी जाने लगी. अंगरेजों को इन्हें अपने 'मसरफ़' का बनाना था. ख़ैर, तो इस चाल के अंदर जो कुछ भी राजकाजी मक़सद अंगरेजों का रहा हो वह आज दुनिया के सामने है. यह जगह उस पर ग़ौर करने की नहीं है. पर यह हमें यहाँ कहना ही पड़ेगा कि अंग्रेज़ों की इस नीत से हमारे देश की ललित कलाओं ख़ास कर संगीत को बड़ी गहरी ठेस लगी. इन रजवाड़ों के हां आश्रय (ज़ेरसाये) में हमारी कलाएं पनपीं, फूलीं, फलीं और इतने ऊंचे उठीं कि जिसकी मिसाल दुनिया में नहीं है.

संगीत और साहित्य की ऊंचे दरजे की सेवा के लिये यह ज़रूरी है कि कलावंत नून, तेल लकड़ी की फ़िक्र से बरी रहे और इसका इंतज़ाम हिन्दुस्तानी राजा लोग ही करते रहते थे. ईसवी सदी के पहले से लेकर १९ वीं सदी तक इतिहास हमें बताता है कि हिन्दू जुग में हिन्दू राजे और मुसलिम जुग में मुसलिम राजे दोनों ही हमारी कला को हर तरह से सजाते सँवारते रहे. हिन्दू जुग के बाद जब हिन्दू लोग ख़ुद अपनी कला से उदासीन हो पड़े थे तब मुसलमानों ने हमारी संगीत कला को ज़िंदा ही नहीं, बल्कि अपने ही ढंग से बड़े जतन से ख़ूब ख़ूब सजाया, सँवारा यहाँ तक की मरी हुई सी हिन्दू जाति ने करवटें बदल कर अचरज भरी निगाहों से इस अचंभे को देखा और फिर से धीरे धीरे अपने भुलाये हुए रागों की खोज ख़बर करने लगी. मुसलमानों के बड़े से बड़े बादशाह, नवाब, वज़ीर वग़ैरा ख़ुद इसका जी खोल कर अभ्यास करते थे. इस सिलसिले में, अलाउद्दीन ख़िलजी, अकबर,

لڑکیوں کے ساتھ ناچنے کی تعلیم دی جانے لگی۔ انگریزوں کو انھیں اپنے 'مصرف' کا بنانا تھا۔ خیر تو اس چال کے اندر جو کچھ بھی راج کاجی مقصد انگریزوں کا رہا ہو وہ آج دنیا کے سامنے ہے۔ یہ جگہ اس پر غور کرنے کی نہیں ہے۔ پر یہ ہمیں یہاں کہنا ہی پڑے گا کہ انگریزوں کی اس نیت سے ہمارے دیش کی للت کلاؤں خاص کر سنگیت کو بڑی گہری ٹھیس لگی۔ ان رجواڑوں کے ہی آشرے (زیر سایے) میں ہماری کلائیں پنپیں، پھولیں، پھلیں اور اتنے اونچے اٹھیں کہ جس کی مثال دنیا میں نہیں ہے۔

سنگیت اور ساہتیہ کی اونچے درجے کی سیوا کے لئے یہ ضروری ہے کہ کلاونت نون، تیل لکڑی کی فکر سے بری رہے اور اس کا انتظام ہندستانی راجا لوگ ہی کرتے رہتے تھے۔ عیسوی صدی کے پہلے سے لے کر ۱۹ویں صدی تک اتہاس ہمیں بتاتا ہے کہ ہندو جگ میں ہندو راجے اور مسلم جگ میں مسلم راجے دونوں ہی ہماری کلا کو ہر طرح سے سجاتے سنوارتے رہے۔ ہندو جگ کے بعد جب ہندو لوگ خود اپنی کلا سے اداسین ہو پڑے تھے تب مسلمانوں نے ہماری سنگیت کلا کو زندہ ہی نہیں، بلکہ اپنے ہی ڈھنگ سے بڑے جتن سے خوب خوب سجایا سنوارا یہاں تک کہ مری ہوئی سی ہندو جاتی نے کروٹیں بدل کر اچرج بھری نگاہوں سے اس اچنبھے کو دیکھا اور پھر سے دھیرے دھیرے اپنے بھلائے ہوئے راگوں کی کھوج خبر کرنے لگی۔ مسلمانوں کے بڑے سے بڑے بادشاہ، نواب، وزیر وغیرہ خود اس کا جی کھول کر ابھیاس کرتے تھے۔ اس سلسلے میں، علاؤالدین خلجی، اکبر،

मुहम्मदशाह, सुलतान शर्की (जौनपुर). नवाब क़ल्बे अली, नवाब वाजिद अली वग़ैरा की मिसाल हम किससे दें. रीवां के राजा राम और ग्वालियर के राजा मान हिन्दू राजाओं में संगीत के मानी में अगुआ थे. पर कौन कहेगा कि मुहम्मद शाह 'रंगीले' और सुलतान शर्की इस मानी में किसी से कम थे. ये दोनों ही ख़्याल गायकी के जनम और रूप देने वालों में से थे. जिनके बनाये हुये सैकड़ों मशहूर ख़्याल आज भी हिन्दू मुसलमान सभी गवैयों की ज़बान पर हैं. सुलतान शर्की ने तो नये राग भी बनाये जिनमें 'जौनपुरी' नाम का राग इतना हरदिलअज़ीज़ साबित हुआ कि उसके सामने हमारी आसावरी (जिसका अंग लेकर यह राग निकाला गया और जिसको हम इसकी माता कह सकते हैं) आज ओझल हो गई है. यहां तक कि ज़्यादातर लोग जौनपुरी को ही आसावरी (पं० भातखंडे तक) मानने लग गये हैं. और असली आसावरी को दुनिया भूल चली.

कहने का मतलब यह कि कम से कम मुसलमानों के ऊपर यह दोष लगाने की हिम्मत किसी भी इतिहास लिखने वाले को नहीं होगी कि मुसलमान शासकों ने इस देश की शिक्षित कला को तबाह या नष्ट करने की कोशिश की.

पर अंग्रेज़ों का पहला वार ही इसी तरफ़ से शुरू हुआ. हमारी भाषा, सभ्यता, संस्कृति और कला, साहित्य वग़ैरा जिससे हमारी निगाहों में गिर जायं वही तरकीब इन्होंने की. रजवाड़ों को कुछ इस तरह के शौक़ दिला दिये जिससे कि हिन्दुस्तानी संगीत को ये जंगलियों की हुल्लड़बाज़ी समझने लगे. कुछ रियासतों में पुराने ज़माने के उस्ताद अब भी पड़े हैं पर उनकी कोई क़द्र नहीं है. ये लोग क़द्र के

محمد شاہ، سلطان شرقی (جون پور)، نواب کلب علی، نواب واجد علی وغیرہ کی مثال ہم کس سے دیں۔ ریواں کے راجا رام اور گوالیر کے راجا مان ہندو راجاؤں میں سنگیت کے معنی میں اگوا تھے۔ پر کون کہے گا کہ محمد شاہ 'رنگیلے' اور سلطان شرقی اس معنی میں کسی سے کم تھے۔ یے دونوں ہی خیال گایکی کے جنم اور روپ دینے والوں میں سے تھے۔ جن کے بنائے ہوئے سیکڑوں مشہور خیال آج بھی ہندو مسلمان سبھی گویوں کی زبان پر ہیں۔ سلطان شرقی نے تو نئے راگ بھی بنائے جن میں 'جون پوری' نام کا راگ اتنا ہردلعزیز ثابت ہوا کہ اس کے سامنے ہماری آساوری (جس کا انگ لے کر یہ راگ نکالا گیا اور جس کو ہم اس کی ماتا کہہ سکتے ہیں) آج اوجھل ہوگئی ہے۔ یہاں تک کہ زیادہ تر لوگ جون پوری کو ہی آساوری (پنڈت بھات کھنڈے تک) ماننے لگ گئے ہیں، اور اصلی آساوری کو دنیا بھول چلی۔

کہنے کا مطلب یہ ہے کہ کم سے کم مسلمانوں کے اوپر یہ دوش لگانے کی ہمت کسی بھی اتہاس لکھنے والے کو نہیں ہوگی کہ مسلمان شاسکوں نے اس دیش کی شکشت کلا کو تباہ یا نشٹ کرنے کی کوشش کی۔

پر انگریزوں کا پہلا وار ہی اسی طرف سے شروع ہوا۔ ہماری بھاشا، سبھیتا، سنسکرتی اور کلا، ساہتیہ وغیرہ جس سے ہماری نگاہوں میں گر جائیں وہی ترکیب انھوں نے کی۔ رجواڑوں کو کچھ اس طرح کے شوق دلا دیے جس سے کہ ہندستانی سنگیت کو یے جنگلیوں کی ہلڑ بازی سمجھنے لگے۔ کچھ ریاستوں میں پرانے زمانے کے استاد بھی پڑے ہیں پر ان کی کوئی قدر نہیں ہے۔ یے لوگ قدر کے

लिये तरसते हैं. उस्ताद सादिक अली बीनकार अब भी रामपुर दरबार में हैं. इस साल वह इलाहाबाद म्यूज़िक कानफ़रेन्स में तशरीफ़ लाये थे. उनकी बातों से ऐसा जान पड़ा कि उनका जी ऊबा हुआ है और यदि यहां कोई संस्था (अंजुमन) उन्हें आदर से रक्खे तो वे बड़े ख़ुश हों. इन सतरों के लेखक ने जब उनसे पूछा कि आप को वहां क्या तकलीफ़ है तो उन्होंने बड़े दर्द से सिर्फ़ यह कहा कि राजाओं के यहां जैसे अजायब घरों में हर क़िस्म के हाथी, घोड़े, शेर, भालू वग़ैरा देखने के लिये होते हैं और ख़ास ख़ास मौक़ों पर मेहमानों को बड़े नाज़ के साथ दिखाये जाते हैं उसी तरह हम लोगों को कभी कभी दरबार की शोभा बढ़ाने के लिये याद फ़रमाया जाता है, पर हमारे फ़न से कोई फ़ायदा नहीं उठाया जाता. न किसी को सुनने की फ़ुरसत है न सीखने की. ये अपने बच्चों को अब बीन की तालीम न देकर अंग्रेज़ी पढ़ा रहे हैं.

अली मुहम्मद (बड़कू मियां) वग़ैरा के ज़माने में यहां अंग्रेज़ों की जड़ पूरी जम चुकी थी. सिर्फ़ दो चार देसी रियासतें ऐसी रह गई थीं जिनके यहां अब भी संगीत की चर्चा हुआ करती थी. उस समय नैपाल इस मानी में सबसे आगे था. उस ज़माने के नैपाल दरबार के लगभग सभी गुनी बड़कू मियां के शागिर्द हो गये. जो गुनी वहां पहले से मौजूद थे उनमें ख़ास थे पंडित राम सेवक मिश्र ख़्यालिये और सितारिये, ताज खां ध्रुपदिये, न्यामत उल्ला खां सरोदिये, मुराद अली खां सरोदिये. इन्हीं रामसेवक जी के लड़के मशहूर शिवसेवक और पशुपति सेवक हुए जो शिव—पशुपति के नाम से सारे हिन्दुस्तान में प्रसिद्ध हुए ताल और लयदारी के मामले में

لئے ترستے ہیں۔ اُستاد صادق علی بین کار اب بھی رام پور دربار میں ہیں۔ اس سال وہ الہ آباد میوزک کانفرنس میں تشریف لائے تھے۔ اُن کی باتوں سے ایسا جان پڑا کہ اُن کا جی اوبا ہوا ہے اور یدی یہاں کوئی سنستھا (انجمن) اُنھیں آدر سے رکھے تو وے بڑے خوش ہوں۔ اِن سطروں کے لیکھک نے جب اُن سے پوچھا کہ آپ کو وہاں کیا تکلیف ہے تو بڑے درد سے صرف یہ کہا کہ راجاؤں کے یہاں جیسے عجائب گھروں میں ہر قسم کے ہاتھی، گھوڑے، شیر، بھالو وغیرہ دیکھنے کے لئے ہوتے ہیں اور خاص خاص موقعوں پر مہمانوں کو بڑے ناز کے ساتھ دکھائے جاتے ہیں اُسی طرح ہم لوگوں کو کبھی کبھی دربار کی شوبھا بڑھانے کے لئے یاد فرمایا جاتا ہے، پر ہمارے فن سے کوئی فائدہ نہیں اٹھایا جاتا۔ نہ کسی کو سننے کی فرصت ہے نہ سیکھنے کی۔ یے اپنے بچوں کو اب بین کی تعلیم نہ دے کر انگریزی پڑھا رہے ہیں۔

علی محمد (بڑکو میاں) وغیرہ کے زمانے میں یہاں انگریزوں کی جڑ پوری جم چکی تھی۔ صرف دو چار دیسی ریاستیں ایسی رہ گئی تھیں جن کے یہاں اب بھی سنگیت کی چرچا ہوا کرتی تھی۔ اُس سمے نیپال اس معنی میں سب سے آگے تھا۔ اُس زمانے کے نیپال دربار کے لگ بھگ سبھی گنی بڑکو میاں کے شاگرد ہوگئے۔ جو گنی وہاں پہلے سے موجود تھے اُن میں خاص تھے پنڈت رام سیوک مشر خیالیے، اور ستاریے، تاج خاں دھرپدیے، نعمت اللہ خاں سرودیے، مراد علی خاں سرودیے۔ انھیں رام سیوک جی کے لڑکے مشہور شیو سیوک اور پشوپتی سیوک ہوئے جو شیو۔پشوپتی کے نام سے سارے ہندستان میں پرسدھ ہوئے تال اور لے داری کے معاملے میں

देश में भर में इनकी कोई बराबरी नहीं कर सका. पशुपति जी बीनकार थे और शिवजी धुरपद और ख़्याल दोनों में माहिर थे. इनके पूर्वज प्रसिद्ध और मनोहर नाम के दो भाई थे जो अपने ज़माने में बहुत बड़े गुनी हो गए हैं. नियामतउल्ला ख़ां के लड़के करामतउल्ला और कौकब ख़ां हिन्दुस्तान के सबसे बड़े सरोदिये हुए. हिन्दुस्तान में यही दो भाई ऐसे हुए जो रबाबी तरकीब से सरोद बजाते थे. इसकी ख़ास वजह यह है कि इनके वालिद न्यामत उल्ला साहब ने बड़कू मियां रबाबिये से नैपाल में तालीम ली थी.

मुरादअली ख़ां के सरोद में बीन का अंग था. इसकी ख़ास वजह यह थी कि इन्होंने सुरबहारिये ग़ुलाममुहम्मद (सज्जाद मुहम्मद के वालिद) और बीनकार वज़ीर ख़ां की सोहबत बहुत की थी. वज़ीर ख़ां से इन्होंने बीन अंग के आलाप की तालीम भी पाई थी. इन्हीं मुरादअली के भतीजे हफ़ीज़अली ख़ां साहब हैं. जो सरोद में अपना सानी नहीं रखते और इस समय हिन्दुस्तान के सब बड़े तंत्रकार माने जाते हैं.

शिव-पशुपति के पिता रामसेवक जी ने बड़कू मियाँ से नैपाल में सितार की तालीम ली थी. मुरादअली के ही ख़ास शागिर्द अबदुल्ला ख़ां और उनके बेटे अमीर ख़ां सरोदिये हुए जो अर्से तक कलकत्ते में रहे और बहुत से लोगों को तालीम दी.

इस तरह हम देखते हैं कि उस ज़माने के सभी मशहूर गुनियों को बड़कू मियां या उनके भाइयों से तालीम लेने का इत्तफ़ाक़ हुआ था. एक लंबे अरसे तक नैपाल में रहकर बुढ़ौती में ये बनारस चले आये. नैपाल की सर्द आबहवा से ढलती उम्र में

دیش بھر میں اِن کی کوئی برابری نہیں کرسکا. پشوپتی جی بین کار تھے اور شیو جی دُھرپد اور خیال دونوں میں ماہر تھے. اِن کے پُروج پرسدھ اور منوہر نام کے دو بھائی تھے جو اپنے زمانے میں بہت بڑے گُنی ہوگئے ہیں. نعمت اللہ خاں کے لڑکے کرامت اللہ اور کوکب خاں ہندستان کے سب سے بڑے سرودیئے ہوئے ہندستان میں یہی دو بھائی ایسے ہوئے جو ربابی ترکیب سے سرود بجاتے تھے. اِس کی خاص وجہ یہ ہو کہ اِن کے والد نعمت اللہ صاحب نے بڑکو میاں ربابیئے سے نیپال میں تعلیم لی تھی.

مرادعلی خاں کے سرود میں بین کا انگ تھا. اِس کی خاص وجہ یہ تھی کہ اِنھوں نے سُربہاریئے غلام محمد (سجاد محمد کے والد) اور بین کار وزیر خاں کی صحبت بہت کی تھی. وزیر خاں سے اِنھوں نے بین انگ کے آلاپ کی تعلیم بھی پائی تھی. اِنھیں مرادعلی کے بھتیجے حفیظ علی خاں صاحب ہیں. جو سرود میں اپنا ثانی نہیں رکھتے اور اِس سمے ہندستان کے سب سے بڑے تنترکار مانے جاتے ہیں.

شیو۔پشوپتی کے پِتا رام سیوک جی نے بڑکو میاں سے نیپال میں ستار کی تعلیم لی تھی. مرادعلی کے ہی خاص شاگرد عبداللہ خاں اور اُن کے بیٹے امیر خاں سرودیئے ہوئے جو عرصے تک کلکتے میں رہے اور بہت سے لوگوں کو تعلیم دی.

اِس طرح ہم دیکھتے ہیں کہ اُس زمانے کے سبھی مشہور گُنیوں کو بڑکو میاں یا اُن کے بھائیوں سے تعلیم لینے کا اتفاق ہوا تھا. ایک لمبے عرصے تک نیپال میں رہ کر بُڑھوتی میں یہ بنارس چلے آئے. نیپال کی سرد آب ہوا سے ڈھلتی عمر میں

इन्हें तकलीफ़ होने लगी थी. पूरब में उन दिनों बनारस में भी बहुत से गुनी इकट्ठा थे. काशीराज के दरबार में उस वक़्त इनके छोटे भाई निसारअली उनके गुरू के रूप में थे. इनके अलावा जो बड़े गुनी इस वक़्त वहां पर थे उनमें ख़ास थे अलीबख़्श धमारिये. ये बंगाल के मशहूर धुरपद धमार के गुनी अघोरचंद चक्रवर्ती के गुरू थे. दौलत ख़ां. और रसूल बख़्श नाम के दो और नामी धुरपदिये वहां मौजूद थे. बनारस के मशहूर बीनकार मिठाईलाल बड़कू मियां के ही शागिर्द थे. जलन्धर के एक सैयद मीर साहब इनके ख़ास शागिर्द थे. इनको जी लगाकर बड़कू मियां ने सुरसिंगार का आलाप बताया था. बंगाल में भी इनके दो मशहूर शागिर्द थे जिनमें एक थे राजा सर सौरींद्र मोहन टैगोर. बनारस और कलकत्ते में इन्होंने कई बरस तक इनसे तालीम ली. राजा साहब सितार बहुत बेहतरीन बजाते थे. इन्होंने बँगला में संगीत पर कई अच्छी-अच्छी किताबें लिखीं जिनसे साबित है कि इनकी मालूमात और याददाश्त बहुत ऊँचे दर्जे की थी. बंगाल में संगीत विद्या का जो इतना शौक़ बढ़ा वह ख़ास कर इन्हीं राजा साहब की वजह से.

बंगाल में बड़कू मियां के दूसरे मशहूर शागिर्द हैं बाबू ताराप्रसाद घोष. ये कलकत्ते के मशहूर जमींदार काशी प्रसाद घोष के पोते हैं और अभी मौजूद हैं. इनके यहां इमदाद ख़ां सितारिये, काले ख़ां ख्यालिये (बड़े ग़ुलामअली के वालिद) और दौलत ख़ां धुरपदिये ऐसे बड़े-बड़े संगीत महारथी ज़्यादातर टिके ही रहते थे. कलकत्ते की बेंटिनस्ट्रीट वाली इनकी कोठी संगीत

انھیں تکلیف ہونے لگی تھی۔ پورب میں اُن دنوں بنارس میں بھی بہت سے گنی اکٹھا تھے۔ کاشی راج کے دربار میں اُس وقت اِن کے چھوٹے بھائی نثار علی اُن کے گرو کے روپ میں تھے۔ اِن کے علاوہ جو بڑے گنی اِس وقت وہاں پر تھے اُن میں خاص تھے علی بخش دھماریے۔ یے بنگال کے مشہور دُھرپد دھمار کے گنی اگھور چند چکرورتی کے گرو تھے۔ دولت خاں، اور رسول بخش نام کے دو اور نامی دُھرپدیے وہاں موجود تھے۔ بنارس کے مشہور بین کار مٹھائی لال بڑکو میاں کے ہی شاگرد تھے۔ جلندھر کے ایک سید میر صاحب اِن کے خاص شاگرد تھے۔ اِن کو جی لگا کر بڑکو میاں نے سُرسنگار کا آلاپ بتایا تھا۔ بنگال میں بھی اِن کے دو مشہور شاگرد تھے جن میں ایک تھے راجا سر سوگندر موہن ٹیگور۔ بنارس اور کلکتے میں اِنھوں نے کئی برس تک اِن سے تعلیم لی۔ راجا صاحب ستار بہت بہترین بجاتے تھے۔ اِنھوں نے بنگلہ میں سنگیت پر کئی اچھی اچھی کتابیں لکھیں جن سے ثابت ہو کہ اِن کی معلومات اور یادداشت بہت اونچے درجے کی تھی۔ بنگال میں سنگیت وِدیا کا جو اِتنا شوق بڑھا وہ خاص کر اِنھیں راجا صاحب کی وجہ سے۔

بنگال میں بڑکو میاں کے دوسرے مشہور شاگرد ہیں بابو تاراپرساد گھوش۔ یے کلکتے کے مشہور زمیندار کاشی پرشاد گھوش کے پوتے ہیں اور ابھی موجود ہیں۔ اِن کے یہاں امداد خاں ستاریے، کالے خاں خیالیے، (بڑے غلام علی کے والد) اور دولت خاں دُھرپدیے ایسے بڑے بڑے سنگیت مہارتھی زیادہ تر ٹکے ہی رہتے تھے۔ کلکتے کی بینٹنک اسٹریٹ والی اِن کی کوٹھی سنگیت

के माहिरों का एक ख़ास अड्डा था.

बड़कू मियां हिन्दुस्तान में अपनी बहुत-सी निशानियां छोड़ गये हैं. बीसवीं सदी के शुरू में ही बनारस में ये परलोक सिधारे. इनके कोई बेटा नहीं था. एक लड़की थी जिसके कुनबे की परवरिश अब भी महाराज बनारस के दरबार से होती है. बड़कू मियां में सबसे ख़ास बात थी उनकी उदारता या फ़ैयाज़ी. विद्या और धन दोनों का इन्होंने जी खोलकर दान किया. कभी इस बात का ख़्याल नहीं किया कि कौन इनके ख़ानदान का है, कौन बाहर का है, या कौन हिन्दू है और कौन मुसलमान. सबको एक निगाह से देखा. इनके शागिर्दों में हिन्दुओं की ही तादात ज़्यादा है. ख़ानदान से बाहर वाले को घर की असली तालीम न देनी चाहिये, इस बात के वे क़ायल नहीं थे और इसे बहुत छोटी बात समझते थे. गाने या बजाने की जिस क़िस्म को जो सीखना चाहता था उसे इन्होंने कभी निराश नहीं किया.

इनके बाद इनके भाई मुहम्मदअली ख़ां को बुज़ुर्गों की गद्दी मिली. पर इनके पहले इनके बड़े बाप (काज़िम अली) के बेटे क़ासिम अली का कुछ हाल कह देना ज़रूरी है. बचपन में क़ासिम अली को रबाब और बीन दोनों ही की अच्छी तालीम मिली. इनमें एक ख़ास बात यह थी कि हालाँकि उनकी पैदायश रबाबी ख़ानदान में हुई थी इन्होंने बीन में ही ज़्यादा कमाल हासिल किया. काज़िम अली थे तो रबाबिये पर बीन की भी सारी कैफ़ियत से वाक़िफ़ थे. हिन्दुस्तान के पिछली सदी के सबसे बड़े बीनकारों में से एक—वज़ीर अली ख़ां साहब के यह नाना थे. उस सदी के दो और

کے ماہروں کا ایک خاص اڈا تھا۔

بڑکو میاں ہندستان میں اپنی بہت سی نشانیاں چھوڑ گئے ہیں۔ بیسویں صدی کے شروع میں ہی بنارس میں یے پرلوک سدھارے۔ ان کے کوئی بیٹا نہیں تھا۔ ایک لڑکی تھی جس کے کنبے کی پرورش اب بھی مہاراج بنارس کے دربار سے ہوتی ہے۔ بڑکو میاں میں سب سے خاص بات تھی ان کی اُدارتا یا فیاضی۔ ودّیا اور دھن دونوں کا انھوں نے جی کھول کر دان کیا۔ کبھی اس بات کا خیال نہیں کیا کہ کون ان کے خاندان کا ہے، کون باہر کا ہے، یا کون ہندو ہے اور کون مسلمان۔ سب کو ایک نگاہ سے دیکھا۔ ان کے شاگردوں میں ہندوؤں کی ہی تعداد زیادہ ہے۔ خاندان سے باہر والے کو گھر کی اصلی تعلیم نہ دینی چاہیئے، اس بات کے وے قایل نہیں تھے اور اسے بہت چھوٹی بات سمجھتے تھے۔ گانے یا بجانے کی جس قسم کو جو سیکھنا چاہتا تھا اُسے انھوں نے کبھی نراش نہیں کیا۔

ان کے بعد ان کے بھائی محمد علی خاں کو بزرگوں کی گدی ملی۔ پر ان کے پہلے ان کے بڑے باپ (کاظم علی) کے بیٹے قاسم علی کا کچھ حال کہہ دینا ضروری ہے۔ بچپن میں قاسم علی کو رباب اور بین دونوں ہی کی اچھی تعلیم ملی۔ ان میں ایک خاص بات یہ تھی کہ حالاںکہ ان کی پیدائش ربابی خاندان میں ہوئی تھی انھوں نے بین میں ہی زیادہ کمال حاصل کیا۔ کاظم علی تھے تو ربابیے پر بین کی بھی ساری کیفیت سے واقف تھے۔ ہندستان کے پچھلی صدی کے سب سے بڑے بین کاروں میں سے ایک — وزیر علی خاں صاحب کے یہ نانا تھے۔ اس صدی کے دو اور

बड़े बीनकार थे उस्ताद बंदेअली खां और मुशर्रफ़ खां. ये लोग सेनी घराने के नहीं थे. उमराव खां के शागिर्दों में से थे. पर नाम इनका सेनियों से ज्यादा हुआ. अपना अभ्यास, अपनी लगन के बल से ये लोग अपने गुरुघराने से आगे निकल गए. मुशर्रफ़ खां साहब के लड़के सादिक़अली खां साहब अभी जिन्दा हैं और वज़ीर खां साहब की गद्दी पर रामपुर दरबार में हैं. ये अपना घराना सेनियों से बिलकुल अलग—स्वामी हरीदास (तानसेन के गुरू) से शुरू बताते हैं. माधवानल को इस घराने का आदिपुरुष बताया जाता है. यह माधव नाम का ब्राह्मण राजा विक्रमादित्य के जमाने में था और अपने समय का बेजोड़ बीनकार था. कहा जाता है कि इनका बाजा सुन कर चाँद रुक जाता था और रात बड़ी हो जाया करती थी. 'माधवानल—कामकंदला' नाम के नाटक और आलम कवि की रची हुई इसी नाम की प्रेमगाथा* में यह कथा दी हुई है. इस घराने की चर्चा हम फिर करेंगे. मुख्तसर यह कि इस समय मुशर्रफ़ खां के बेटे सादिक़ अली ही हिन्दुस्तान के सबसे बड़े बीनकार हैं.

क़ासिम अली का झुकाव बीन की तरफ़ ज्यादा देखकर काज़िम अली ने इन्हें बीन की ही तालीम ज्यादा दी. पर रबाब पर भी इनको पूरा हक़ था. जहां तक हमें मालूम है, यही एक उस्ताद ऐसे गुज़रे जिन्होंने बीन और रबाब दोनों में कमाल हासिल किया. पखावज की भी सारी कैफ़ियत इन्हें मालूम थी और पखावज की संगत के साथ साथ बीन और रबाब दोनों बाजों को सिर्फ़ ये ही

*'हिन्दी के कवि और काव्य' भाग ३ जिसमें, इस गाथा को लेखक सबसे पहले हिन्दी दुनिया के सामने लाया.

بڑے بین کار تھے اُستاد بندے علی خاں اور مشرّف خاں . یے لوگ سینی گھرانے کے نہیں تھے ، اُمراؤ خاں کے شاگردوں میں سے تھے ، پر نام اِن کا سینیوں سے زیادہ ہوا ۔ اپنا ابھیاس ، اپنی لگن کے بل سے یے لوگ اپنے گرو گھرانے سے آگے نکل گئے ۔ مشرّف خاں صاحب کے لڑکے صادق علی خاں صاحب ابھی زندہ ہیں اور وزیر خاں صاحب کی گدّی پر رامپور دربار میں ہیں ۔ یے اپنا گھرانا سینیوں سے بالکل الگ — سوامی ہری داس (تان سین کے گرو) سے شروع بتلاتے ہیں ۔ مادھوانل کو اِس گھرانے کا آدی پُرُش بتایا جاتا ہے ۔ یہ مادھو نام کا براہمن راجا وکرمادتیہ کے زمانے میں تھا اور اپنے سمے کا بے جوڑ بین کار تھا ۔ کہا جاتا ہے کہ اِن کا باجا سن کر چاند رُک جاتا تھا اور رات بڑی ہو جایا کرتی تھی ۔ 'مادھوانل — کام کندلا' نام کے ناٹک اور آلم کوی کی رچی ہوئی اِسی نام کی پریم گاتھا* میں یہ کتھا دی ہوئی ہے ۔ اِس گھرانے کی چرچا ہم پھر کریں گے ۔ مختصر یہ کہ اِس سمے مشرّف خاں کے بیٹے صادق علی ہی ہندستان کے سب سے بڑے بین کار ہیں ۔

قاسم علی کا جھکاؤ بین کی طرف زیادہ دیکھ کر کاظم علی نے اِنھیں بین کی ہی تعلیم زیادہ دی ، پر رباب پر بھی اِن کو پورا حق تھا ۔ جہاں تک ہمیں معلوم ہے ، یہی ایک اُستاد ایسے گزرے جنھوں نے بین اور رباب دونوں میں کمال حاصل کیا ۔ پکھاوج کی بھی ساری کیفیت اِنھیں معلوم تھی اور پکھاوج کی سنگت کے ساتھ ساتھ بین اور رباب دونوں باجوں کو صرف یے ہی

* 'ہندی کے کوی اور کاویہ' بھاگ ۳ جس میں ، اِس گاتھا کو لیکھک سب سے پہلے ہندی دنیا کے سامنے لایا ۔

पूरी क़ाबलियत के साथ बजा पाये. लड़कपन और जवानी में ये कलकत्ते में ही थे. अपने वालिद के इन्तक़ाल के बाद ये नवाब वाजिद अली शाह के दरबार में (जब वे नज़रबन्द होकर कलकत्ते के फ़ोर्टविलियम नाम के क़िले में रखे गए थे) बीनकार की शकल में तैनात हुए. उस वक़्त नवाब साहब के गुरू के रूप में रबाबिये बासित खां साहब वहां मौजूद थे जो इनके दादा होते थे (काज़िम अली के वालिद ज़फ़र खां के सगे भाई बासित खां थे). इस मौक़े पर बासित खां से भी बहुत सी तालीम क़ासिम अली ने ली, ख़ासकर ध्रुपद और ग़ैर मामूली रागों की. मटियाबुर्ज वाला वाजिद अली शाह का दरबार जब टूटा तो बासित खां गया चले गये जैसा कि हम पहले कह चुके हैं. और क़ासिम अली टिपरा महराज वीर चंद्र माणिका बहादुर के दरबार में चले गए जो कि इनके शागिर्द हो गए. उस वक़्त उनके यहाँ यदुभट्ट नाम के एक ब्राह्मण पंडित गवैये रहते थे जिनकी याददाश्त इतनी ज़बरदस्त थी कि जो कुछ ये एक बार सुनते उन्हें याद हो जाता था. यदुभट्ट ने इनसे रबाब सीखनी चाही थी पर उन्होंने उनसे सितार ही सीखने को कहा, यह कहकर कि 'पंडित जी आप तो गवैये हैं, रबाब क्या कीजियेगा सीख कर, सितार ही बजाइये.' उनका मतलब साफ़ था कि रबाब अब तुम्हें इस उम्र में क्या आवेगा, क्यों बेकार तकलीफ़ करते हो. बात पंडित जी को लग गई और वह छिप कर इनकी रबाब सुनने लगे. रात में और दिन भर घर में रियाज़ करते. एक दिन दरबार में इन्होंने क़ासिम अली को ललकारा और अपनी रबाब सुनाई और इनकी जितनी हरकतें महराज ने सुनी थीं सब ज्यों की त्यों सुना गए.

پوری قابلیت کے ساتھ بجا پائے. لڑکپن اور جوانی میں یے کلکتے میں ہی تھے. اپنے والد کے انتقال کے بعد یے نواب واجد علی شاہ کے دربار میں (جب وے نظربند ہوکر کلکتے کے فورٹ ولیم نام کے قلعے میں رکھے گئے تھے) بین کار کی شکل میں تعینات ہوئے. اس وقت نواب صاحب کے گرو کے روپ میں ربابیے باسط خاں صاحب وہاں موجود تھے جو ان کے دادا ہوتے تھے (کاظم علی کے والد ظفر خاں کے سگے بھائی باسط خاں تھے). اس موقع پر باسط خاں سے بھی بہت سی تعلیم قاسم علی نے لی، خاصکر دھرپد اور غیر معمولی راگوں کی. مٹیابرج والا واجد علی شاہ کا دربار جب ٹوٹا تو باسط خاں گیا چلے گئے جیسا کہ ہم پہلے کہہ چکے ہیں، اور قاسم علی ٹپرا مہاراج ویرچندر مانیکا بہادر کے دربار میں چلے گئے جو کہ ان کے شاگرد ہوگئے. اس وقت ان کے یہاں یدوبھٹ نام کے ایک براہمن پنڈت گوئیے رہتے تھے جن کی یادداشت اتنی زبردست تھی کہ جو کچھ یے ایک بار سنتے انھیں یاد ہوجاتا تھا. یدوبھٹ نے ان سے رباب سیکھنی چاہی تھی پر انھوں نے ان سے ستار ہی سیکھنے کو کہا، یہ کہہ کر کہ 'پنڈت جی آپ تو گوئیے ہیں، رباب کیا کیجئے گا سیکھ کر، ستار ہی بجائیے!' ان کا مطلب صاف تھا کہ رباب اب تمھیں اس عمر میں کیا آوے گا کیوں بیکار تکلیف کرتے ہو. بات پنڈت جی کو لگ گئی اور وہ چھپ کر ان کی رباب سننے لگے. رات میں اور دن بھر گھر میں ریاض کرتے. ایک دن دربار میں انھوں نے قاسم علی کو للکارا اور اپنی رباب سنائی اور ان کی جتنی حرکتیں مہاراج نے سنی تھیں سب جیوں کی تیوں سنا گئے

कासिम अली दंग रह गए और दांतों उंगली दबाकर यह बोले कि 'ग़ज़ब का दिमाग़ है ब्राह्मण का. पर पंडित जी आप ने छिप कर हमारा इल्म चुराया यह अच्छा नहीं किया.' भट्ट जी ने जवाब दिया 'यह इल्म हमारा है न कि तुम्हारा, सिर्फ़ यह बाजा तुम्हारा है.'

ख़ैर, बात ज़रा बढ़ गई. और कासिम अली को इसका इतना सदमा गुज़रा कि वह टिपरा छोड़कर चले ही गए और भावल राज में राजेंद्रनारायन राय के दरबार में रहने लगे. इनकी ज़्यादातर ज़िंदगी पूरबी बंगाल में ही कटी. ढाके में भी यह कुछ दिन रहे. पर इनमें एक बात यह थी कि सिखाना या सुनाना ज़्यादा पसंद नहीं करते थे. जब तक इनकी दिल से इच्छा नहीं होती थी तब तक सिखाने को कौन कहे किसी को सुनाने तक को भी राज़ी नहीं होते थे चाहे कोई कितनी ही ज़िद करे और चाहे कोई राजा महराजा ही क्यों न हो. अपने इसी सुभाव के कारन कई राज दरबार इन्हें छोड़ने पड़े, पर इसके लिये इन्होंने कभी कुछ परवाह नहीं की. ढाके के मशहूर तबला बजाने वाले प्रसन्न बाबू अभी ज़िंदा हैं और इनके बाजे की बेहद तारीफ़ करते हैं.

قاسم علی دنگ رہ گئے اور دانتوں انگلی دباکر یہ بولے کہ غضب کا دماغ ہو برہمن کا، پر پنڈت جی آپ نے چھپ کر ہمارا علم چرایا یہ اچھا نہیں کیا۔ بھٹ جی نے جواب دیا 'یہ علم ہمارا ہو نہ کہ تمھارا، صرف یہ باجا تمھارا ہو۔'

خیر، بات ذرا بڑھ گئی، اور قاسم علی کو اس کا اتنا صدمہ گزرا کہ وہ ٹپرا چھوڑکر چلے ہی گئے اور بھاول راج میں راجیندر نارائن رائے کے دربار میں رہنے لگے۔ ان کی زیادہ تر زندگی پوربی بنگال میں ہی کٹی۔ ڈھاکے میں بھی یہ کچھ دن رہے۔ پر ان میں ایک بات یہ تھی کہ سکھانا یا سنانا زیادہ پسند نہیں کرتے تھے۔ جب تک ان کی دل سے اچھا نہیں ہوتی تھی تب تک سکھانے کی کون کہے کسی کو سنانے تک کو بھی راضی نہیں ہوتے تھے چاہے کوئی کتنی ہی ضد کرے اور چاہے کوئی راجا مہاراجا ہی کیوں نہ ہو۔ اپنے اسی سبھاؤ کے کارن کئی راج دربار انھیں چھوڑنے پڑے، پر اس کے لئے انھوں نے کبھی کچھ پرواہ نہیں کی۔ ڈھاکے کے مشہور طبلہ بجانے والے پرسن بابو ابھی زندہ ہیں اور ان کے باجے کی بے حد تعریف کرتے ہیں۔

उर्दू और हिन्दी का झगड़ा

(अकरम साहब इलाहाबादी)

आजकल जहां हममें और बहुत सी फूट वाली बीमारियां घुसी हुई हैं वहां उर्दू हिन्दी का झगड़ा भी बहुत हद तक आम है. यह पहले ऐसा न था. लेकिन जैसे जैसे हमारे भाइयों में सूझ बूझ और इल्म, विद्या का उठान होता जा रहा है वैसे वैसे उनकी फ़ितरत, उनका दिमाग़, उनकी बुद्धि उल्टी जा रही है. यह हमारी ग़लत तालीम और ग़लत शिक्षा का असर है.

बच्चा जब पैदा होता है तो उसे आजकल के मां बाप यही सिखाते हैं कि—'यह हिन्दू है, वह मुसलमान है. यह नीच है, वह ऊंच है. हम फलां जात के हैं, वह ऐसी जात का है.' और यह कि हिन्दुओं की ज़बान हिन्दी और मुसलमानों की ज़बान उर्दू है. या यह कि मुसलमान अरब के हैं और हिन्दू भारतवर्ष के.

फिर जहाँ यह फूट, यह नफ़रत और यह मैल, कपट घुट्टी ही में पिला दी जाती हो वहां के कलचर और उसकी तरक़्क़ी का क्या कहना. दो ताक़तें, दो शक्तियां आपस में टकरा कर एक दूसरे को कमज़ोर कर देती हैं. लेकिन अगर वह ही दोनों मिलकर एक शक्ति, एक ताक़त और एक आवाज़ बन जाय तो फिर उनकी ताक़त दुगनी हो जाती है. हमें दुनिया के सामने अपने देश की ताक़त को बढ़ाना है ताकि हमारी खोई हुई इज्ज़त, हमारी खोई

اُردو اور ہندی کا جھگڑا

(اکرم صاحب الہ آبادی)

آج کل جہاں ہم میں اور بہت سی پھوٹ والی بیماریاں گھسی ہوئی ہیں وہاں اُردو ہندی کا جھگڑا بھی بہت حد تک عام ہے: یہ پہلے ایسا نہ تھا. لیکن جیسے جیسے ہمارے بھائیوں میں سوجھ بوجھ اور علم، ودیا کا اُٹھان ہوتا جا رہا ہے ویسے ویسے اُن کی فطرت، اُن کا دماغ، اُن کی بدھی اُلٹی جا رہی ہے: یہ ہماری غلط تعلیم اور غلط شکشا کا اثر ہے۔

بچہ جب پیدا ہوتا ہے تو اُسے آج کل کے ماں باپ یہی سکھلاتے ہیں کہ — "یہ ہندو ہے، وہ مسلمان ہے. یہ نیچ ہے، وہ اونچ ہے. ہم فلاں جات کے ہیں، وہ ایسی جات کا ہے" اور یہ کہ ہندوؤں کی زبان ہندی اور مسلمانوں کی زبان اُردو ہے. یا یہ کہ مسلمان عرب کے ہیں اور ہندو بھارت ورش کے۔

پھر جہاں یہ پھوٹ، یہ نفرت اور یہ میل، کپٹ گھٹی ہی میں پلا دی جاتی ہو وہاں کے کلچر اور اُس کی ترقی کا کیا کہنا۔ دو طاقتیں، دو شکتیاں آپس میں ٹکرا کر ایک دوسرے کو کمزور کر دیتی ہیں۔ لیکن اگر وہ ہی دونوں مل کر ایک شکتی، ایک طاقت اور ایک آواز بن جائے تو پھر اُن کی طاقت دُگنی ہو جاتی ہے۔ ہمیں دُنیا کے سامنے اپنے دیش کی طاقت کو بڑھانا ہے تاکہ ہماری کھوئی ہوئی عزت، ہماری کھوئی

हुई जाय, हमें फिर मिल जाय—लेकिन फिर अगर हम आपस में ही उलझे रहे तो दुनिया आगे बढ़ती जायगी और हम इन्हीं झगड़ों में फँसे रह जायंगे.

हिन्दी को अगर देवभाषा और उर्दू को अगर फ़ारसी ज़बान कहा जाय तो दोनों अलग अलग ज़बानें बन जाती हैं. लेकिन हिन्दी को अगर हिन्दुस्तान के रहने वालों की ज़बान और उर्दू को भी हिन्दुस्तानी आम ज़बान, जो लश्करी ज़बान भी कहलाती है, कहा जाय तो कोई फ़र्क़ नहीं. क्यों कि अपनी रोज़ाना की बोल चाल में हम एक ही ज़बान, एक ही भाषा बोलते हैं. लिखते एक ही ज़बान हैं, लेकिन अगर वही शब्द एक हिन्दू के मुंह से निकलते हैं तो हम कहने लगते हैं कि यह हिन्दी है और अगर किसी मुसलमान के मुंह से वह लफ़्ज़ निकलते हैं तो हम समझते हैं कि यह उर्दू है. फिर यह तो हमारी समझ का फेर है. रास्ता तो सीधा साधा और एक ही है.

आख़िर यह उर्दू या हिन्दी बनी कहां से. मुसलमानों से पहले यहां के पुराने हिन्दू राजाओं की सरकारी भाषा तो संस्कृत थी और जब मुसलमान आए तो क्यों कि वह ईरान की तरफ़ से आए थे इस लिये फ़ारसी बोलते थे. फ़ारसी का मतलब है फ़ारस यानी ईरान की ज़बान. इसलिये उनके ज़माने की सरकारी ज़बान फ़ारसी रही. और क्यों कि हर हुकूमत की सरकारी ज़बान का असर दूसरी भाषाओं से इसलिये ज़्यादा होता है कि लोगों को हुकूमत या राज की कार्रवाइयां जानने के लिये उसे सीखना पड़ता है. इसलिये हर सरकारी भाषा अपने

ہو جائے، ہمیں پھر مل جائے — لیکن پھر اگر ہم آپس میں ہی الجھے رہے تو دنیا آگے بڑھتی جائے گی اور ہم انھیں جھگڑوں میں پھنسے رہ جائیں گے.

ہندی کو اگر دیو بھاشا اور اردو کو اگر فارسی زبان کہا جائے تو دونوں الگ الگ زبانیں بن جاتی ہیں. لیکن ہندی کو اگر ہندستان کے رہنے والوں کی زبان کہا جائے اور اردو کو بھی ہندستانی عام زبان، جو لشکری زبان بھی کہلاتی ہے، کہا جائے تو کوئی فرق نہیں. کیونکہ اپنی روزانہ کی بول چال میں ہم ایک ہی زبان، ایک ہی بھاشا بولتے ہیں. لکھتے ایک ہی زبان ہیں، لیکن اگر وہی شبد ایک ہندو کے منہ سے نکلتے ہیں تو ہم کہنے لگتے ہیں کہ یہ ہندی ہے اور اگر کسی مسلمان کے منہ سے وہ لفظ نکلتے ہیں تو ہم سمجھتے ہیں کہ یہ اردو ہے. پھر یہ تو ہماری سمجھ کا پھیر ہے. راستہ تو سیدھا سادھا اور ایک ہی ہے.

آخر یہ اردو یا ہندی بنی کہاں سے. مسلمانوں سے پہلے یہاں کے پرانے ہندو راجاؤں کی سرکاری بھاشا تو سنسکرت تھی اور جب مسلمان آئے تو کیونکہ وہ ایران کی طرف سے آئے تھے اس لئے فارسی بولتے تھے. فارسی کا مطلب ہے فارس یعنی ایران کی زبان. اس لئے ان کے زمانے کی سرکاری زبان فارسی رہی. اور کیونکہ ہر حکومت کی سرکاری زبان کا اثر دوسری بھاشاؤں سے اس لئے زیادہ ہوتا ہے کہ لوگوں کو حکومت یا راج کی کارروائیاں جاننے کے لئے اسے سیکھنا پڑتا ہے، اس لئے ہر سرکاری بھاشا اپنے

ज़माने में तरक़्क़ी कर जाती है जैसे कि हिन्दू राजाओं के वक़्त में संस्कृत, मुग़ल मुसलमानों के ज़माने में फ़ारसी और अंगरेज़ों के ज़माने में अंगरेज़ी.

पहले हिन्दुस्तान में कई ज़बानें बोली जाती थीं और अब भी बोली जाती हैं जैसे संस्कृत, द्रावड़ी (तामिल, तेलगू वग़ैरा), राजस्थानी, उड़िया, गुजराती, सिन्धी, आसामी, पंजाबी, बंगाली, मरहठी वग़ैरा. इनमें से आधी से ज़्यादा बहुत पुरानी ज़बानें हैं. फिर जब मुसलमान आए तो क्यों कि उनको न सिर्फ़ यहां हकूमत करना था बल्कि अपना घर समझकर दूसरों में मिल जुलकर बसना था इस लिए यहां की भाषाओं को समझने की उन्होंने कोशिश की. और आपने तवारीख़ में पढ़ा भी होगा कि अकबर वग़ैरा के दरबार में हर तरह की ज़बानों के आलिम और विद्यापति रहा करते थे.

मुग़लिया हुकूमत के ज़माने में हिन्दुस्तान का बन्दोबस्त वग़ैरा संभालने के लिये हिन्दुस्तानी और मुग़ली मिली जुली फ़ौजें या लश्कर (सेनाएं) बनाए गए थे जिसमें हिन्दुस्तान के हर कोने के बासी भरती होते थे और इस तरह कई कई भाषाएं बोलने वालों को एक साथ रहना पड़ता था. उन्हें एक दूसरे की बातचीत समझने में बड़ी तकलीफ़ होती थी. लेकिन धीरे धीरे एक ने दूसरे की भाषा जानी और टुकड़े टुकड़े शब्दों में वह एक दूसरे की भाषा को बोलने और समझने की कोशिश करने लगे. नतीजा यह हुआ कि कई ज़बानों से मिलकर एक ज़बान निकल आई जिसे हम खिचड़ी कह सकते हैं. और फिर धीरे धीरे यह ज़बान लश्करी ज़बान बनकर सब की ज़बान बन गई क्यों कि उसमें सब भाषाओं के टुकड़े मिले हुए थे.

زمانے میں ترقی کر جاتی ہو جیسے کہ ہندو راجاؤں کے وقت میں سنسکرت، مغل مسلمانوں کے زمانے میں فارسی اور انگریزوں کے زمانے میں انگریزی۔

پہلے ہندستان میں کئی زبانیں بولی جاتی تھیں اور اب بھی بولی جاتی ہیں جیسے سنسکرت، دراوڑی (تامل، تیلگو وغیرہ) راجستھانی، اڑیا، گجراتی، سندھی، آسامی، پنجابی، بنگالی، مرہٹی وغیرہ۔ ان میں سے آدھی سے زیادہ بہت پرانی زبانیں ہیں۔ پھر جب مسلمان آئے تو کیونکہ ان کو نہ صرف یہاں حکومت کرنا تھا بلکہ اپنا گھر سمجھ کر دوسروں سے مل جل کر بسنا تھا اس لئے یہاں کی بھاشاؤں کو سمجھنے کی انھوں نے کوشش کی۔ اور آپ نے تواریخ میں پڑھا بھی ہوگا کہ اکبر وغیرہ کے دربار میں ہر طرح کی زبانوں کے عالم اور ودیاپتی رہا کرتے تھے۔

مغلیہ حکومت کے زمانے میں ہندستان کا بندوبست وغیرہ سنبھالنے کے لئے ہندستانی اور مغلی ملی جلی فوجیں یا لشکر (سینائیں) بنائے گئے تھے جس میں ہندستان کے ہر کونے کے باسی بھرتی ہوتے تھے اور اس طرح کئی کئی بھاشائیں بولنے والوں کو ایک ساتھ رہنا پڑتا تھا۔ انھیں ایک دوسرے کی بات چیت سمجھنے میں بڑی تکلیف ہوتی تھی۔ لیکن دھیرے دھیرے ایک نے دوسرے کی بھاشا جانی اور ٹکڑے ٹکڑے شبدوں میں وہ ایک دوسرے کی بھاشا کو بولنے اور سمجھنے کی کوشش کرنے لگے۔ نتیجہ یہ ہوا کہ کئی زبانوں سے مل کر ایک زبان نکل آئی جسے ہم کھچڑی کہہ سکتے ہیں۔ اور پھر دھیرے دھیرے یہ زبان لشکری زبان بن کر سب کی زبان بن گئی کیونکہ اس میں سب بھاشاؤں کے ٹکڑے ملے ہوئے تھے۔

इस जोड़ ने उन लोगों के दिल भी आपस में जोड़ दिये. वह मेल मुहब्बत से आपस में रहने लगे. फ़ारसी में लश्कर या सेना को उर्दू कहते हैं और इसलिये इस लश्करी ज़बान को भी उर्दू बोलने लगे. एक तरह से देखा जाय तो इसे हिन्दी भी कहा जा सकता है और वह इसलिये कि हिन्द के माने हिन्दुस्तान और हिन्दी का मतलब हिन्दुस्तानी होता है. इस चीज़ का यह सबूत और भी है कि हम बोलते वही ज़बान हैं हालां कि लिखने के दो ढंग हैं—एक तो अरबी के हरफ़ों में उसे सादा तरह पर उर्दू के नाम से लिखते हैं और दूसरे देवनागरी अक्षरों में उसे हिन्दी के नाम से लिखते हैं. मगर है वह सबकी जायदाद—एक ज़बान—जो भारत की सारी भाषाओं का निचोड़ है. फिर न जाने क्यों हम आपस में झगड़ते हैं कि यह हमारी है और वह तुम्हारी है.

सच तो यह है कि अगर देश के तमाम समझदार लोग सच्चे दिल से इन चीज़ों को समझते हुए यह बेकार की फूट और नफ़रत की जड़ काटने पर तुल जायं तो हम सब बहुत जल्दी एक दूसरे से क़रीब हो कर एकता का सबक़ सीख सकते हैं और जिस तरह कई ज़बानों से मिलकर एक लश्करी ज़बान बन सकती थी, उसी तरह अब भी कई फ़िरक़ों से मिलकर एक मज़बूत ताक़त भी बन सकती है जो दुनिया में इस मुल्क का झंडा बुलन्द कर दे.

اِس جوڑ نے اِن لوگوں کے دل بھی آپس میں جوڑ دئے۔ وہ میل محبت سے آپس میں رہنے لگے۔ فارسی میں لشکر یا سینا کو اُردو کہتے ہیں اور اِس لئے اِس لشکری زبان کو بھی اُردو بولنے لگے۔ ایک طرح سے دیکھا جائے تو اِسے ہندی بھی کہا جاسکتا ہے اور وہ اِس لئے کہ ہند کے معنے ہندستان اور ہندی کا مطلب ہندستانی ہوتا ہے۔ اِس چیز کا یہ ثبوت اور بھی ہے کہ ہم بولتے وہی زبان ہیں حالاں کہ لکھنے کے دو ڈھنگ ہیں — ایک تو عربی کے حرفوں میں اُسے سادی طرح پر اُردو کے نام سے لکھتے ہیں اور دوسرے دیوناگری اکشروں میں اُسے ہندی کے نام سے لکھتے ہیں۔ مگر ہے وہ سب کی جایداد — ایک زبان — جو بھارت کی ساری بھاشاؤں کا نچوڑ ہے۔ پھر نہ جانے کیوں ہم آپس میں جھگڑتے ہیں کہ یہ ہماری ہے اور وہ تمہاری ہے۔

سچ تو یہ ہے کہ اگر دیش کے تمام سمجھدار لوگ سچے دل سے اِن چیزوں کو سمجھتے ہوئے یہ بےکار کی پھوٹ اور نفرت کی جڑ کاٹنے پر تُل جائیں تو ہم سب بہت جلدی ایک دوسرے سے قریب ہو کر ایکتا کا سبق سیکھ سکتے ہیں اور جس طرح کئی زبانوں سے مل کر ایک لشکری زبان بن سکتی تھی، اُسی طرح اب بھی کئی فرقوں سے مل کر ایک مضبوط طاقت بھی بن سکتی ہے جو دنیا میں اِس ملک کا جھنڈا بلند کر دے۔

नए वर्ष का सन्देश--भारतवर्ष को

(भाई अब्दुल हलीम अंसारी)

हिन्दुस्तान आज़ाद होने के ठीक साढ़े चार माह बाद आज का सूरज आज़ादी के साल का नया और पहला सूरज है जो हिन्दुस्तान के उफ़क पर मुसकराता मुसकराता आ रहा है, 'भारत-वर्ष' पर मुबारकबादी की किरणे डालता हुआ. मैं अचरज में हूँ कि किसके साथ इसका सम्बन्ध बांधा जाय और किसको इसका पैग़ाम दिया जाय.

अगर मैं कहता हूँ कि यह सूरज आज़ाद हिन्दुस्तान का सूरज है तो पाकिस्तान बुरा मानता है. अगर कहता हूँ कि यह आज़ाद पाकिस्तान का सूरज है तो हिन्दुस्तान बुरा मानता है. मैं सख्त उलझन और कशमकश में हूँ और इस विचार में परेशान कि करूँ तो क्या करूँ? मुझे दोनों का दिल भी रखना है और यह भी ख्याल रखना है कि अगर मेरी बात किसी के भी ख़िलाफ़ पड़ी तो ख़तरा है, कोई न कोई झगड़ा खड़ा हो जाय. इस झगड़े क़िस्से को चुकाने के लिये मेरी समझ में तो यह आता है कि जब हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बटवारे के सिलसिले में हर चीज़ की तक़सीम हुई है, ज़मीन और फ़िज़ा की तक़सीम हुई है, पानी और हवा की तक़सीम हुई है. तो सूरज की भी तक़सीम होनी चाहिये. जब कि हर एक जुदा जुदा अपनी अपनी दुनिया बनाने में लगा हुआ है ऐसी सूरत में एक आधा सूरज हिन्दुस्तान के संसार में

نئے ورش کا سندیش بھارت ورش کو

(بھائی عبدالحلیم انصاری)

ہندستان آزاد ہونے کے ٹھیک ساڑھے چار ماہ بعد آج کا سورج آزادی کے سال کا نیا اور پہلا سورج ہے جو ہندستان کے افق پر مسکراتا مسکراتا آرہا ہے، 'بھارت ورش' پر مبارکبادی کی کرنیں ڈالتا ہوا. میں اچرج میں ہوں کہ کس کے ساتھ اس کا سمبندھ باندھا جائے اور کس کو اس کا پیغام دیا جائے.

اگر میں کہتا ہوں کہ یہ سورج آزاد ہندستان کا سورج ہے تو پاکستان برا مانتا ہے. اگر کہتا ہوں کہ یہ آزاد پاکستان کا سورج ہے تو ہندستان برا مانتا ہے. میں سخت الجھن اور کشمکش میں ہوں اور اس وچار میں پریشان کہ کروں تو کیا کروں؟ مجھے دونوں کا دل بھی رکھنا ہے اور یہ بھی خیال رکھنا ہے کہ اگر میری بات کسی کے بھی خلاف پڑی تو خطرہ ہے، کوئی نہ کوئی جھگڑا کھڑا ہو جائے. اس جھگڑے قصے کو چکانے کے لئے میری سمجھ میں تو یہ آتا ہے کہ جب ہندستان اور پاکستان کے بٹوارے کے سلسلے میں ہر چیز کی تقسیم ہوئی ہے، زمین اور فضا کی تقسیم ہوئی ہے، پانی اور ہوا کی تقسیم ہوئی ہے، تو سورج کی بھی تقسیم ہونی چاہیئے. جب کہ ہر ایک جدا جدا اپنی اپنی دنیا بنانے میں لگا ہوا ہے ایسی صورت میں ایک آدھا سورج ہندستان کے سنسار میں

उजाला करे तो दूसरा आधा पाकिस्तान की कायनात पर रोशनी फैंके.

यह हक़ीक़त बिलकुल सूरज की तरह रोशन है कि तक़सीम हिन्द के बाद हिन्दुस्तान की दुनिया अलग है और पाकिस्तान की दुनिया अलग. जब यह दोनों दुनियाएं अलग अलग हैं तो मेरा ख्याल यह है कि इनके चांद सूरज भी अलग अलग होने चाहियें. इसमें बड़ी मसलहत यह है कि आगे चलकर अगर रोशनी के मामले में कोई गड़बड़ी पड़ गई या कोई नया झगड़ा हो पड़ा और वह जल्द न निपट सका तो दोनों दुनियाओं में अंधेरी ही अंधेरी रहेगी. और फिर उनकी अंधेर नगरी में सारे राज पाट का माट बिगड़ जायगा और प्रजा के सर पर काली काली घटाएँ टूट पड़ेंगी या फिर यह होगा कि दो राजों के पाटों के बीचो बीच ग़रीब प्रजा पिस कर रह जाएगी. यह एक ऐसा सुझाव है कि अगर इस पर रवादारी से समझौता हो जाए तो मैं यक़ीन रखता हूँ कि दोनों दुनियाएं हमेशा के लिये अमन शान्ति की दुनियाएं बन सकेंगी और हर आने वाले साल में नए साल के सन्देश के मौक़े पर किसी भी क़िस्म का झगड़ा टन्टा न होने पाएगा और न किसी ख़ून मून की नौबत आएगी. जब कि 'जमहूर राज' की तराजू का रोशन पल्ला एक हिन्दुस्तान में रहेगा और एक पाकिस्तान में, तो ऐसी सूरत में सियासी तवाज़न भी क़ायम रहेगा, और हर एक के काम काज अपनी अपनी रोशनी में ठीक ठीक अंजाम पा सकेंगे.

अगर नए साल के सूरज की तरह पैग़ाम और तहनियत

اجالا کرے تو دوسرا آدھا پاکستان کی کائنات پر روشنی پھینکے۔

یہ حقیقت بالکل سورج کی طرح روشن ہے کہ تقسیم ہند کے بعد ہندستان کی دنیا الگ ہے اور پاکستان کی دنیا الگ۔ جب یہ دونوں دنیائیں الگ الگ ہیں تو میرا خیال یہ ہے کہ ان کے چاند سورج بھی الگ الگ ہونے چاہئیں۔ اس میں بڑی مصلحت یہ ہے کہ آگے چل کر اگر روشنی کے معاملے میں کوئی گڑبڑی پڑ گئی یا کوئی نیا جھگڑا ہو پڑا اور وہ جلد نہ نبٹ سکا تو دونوں دنیاؤں میں اندھیری ہی اندھیری رہے گی۔ اور پھر ان کی اندھیر نگری میں سارے راج پاٹ کا ماٹ بگڑ جائے گا اور پرجا کے سر پر کالی کالی گھٹائیں ٹوٹ پڑیں گی یا پھر یہ ہوگا کہ دو راجوں کے پاٹوں کے بیچوں بیچ غریب پرجا پس کر رہ جائے گی۔ یہ ایک ایسا سجھاؤ ہے کہ اگر اس پر رواداری سے سمجھوتا ہو جائے تو میں یقین رکھتا ہوں کہ دونوں دنیائیں ہمیشہ کے لئے امن شانتی کی دنیائیں بن سکیں گی اور ہر آنے والے سال میں نئے سال کے سندیش کے موقع پر کسی بھی قسم کا جھگڑا ٹنٹا نہ ہونے پائے گا اور نہ کسی خون مون کی نوبت آئے گی۔ جب کہ 'جمہور راج' کی ترازو کا روشن پلہ ایک ہندستان میں رہے گا اور ایک پاکستان میں، تو ایسی صورت میں سیاسی توازن بھی قائم رہے گا، اور ہر ایک کے کام کاج اپنی اپنی روشنی میں ٹھیک ٹھیک انجام پا سکیں گے۔

اگر نئے سال کے سورج کی طرح پیغام اور تہنیت

(मुबारकबाद) देने का रिवाज चांद के लिये भी होता तो मैं रजनी-पति (चाँद) के लिये भी राष्ट्रपति (सद्र कांग्रेस) को यही सलाह मशविरा देता और प्रधान मन्त्री (वज़ीर आज़म) से भी यही कहता कि इसकी भी तक़सीम की जाए. पाकिस्तान में भी अपने इस विचार का ज़्यादा से ज़्यादा प्रचार कराता.

मैं जानता हूँ कि मेरे इस कहने पर लोग हँसेंगे. और क्या ताज्जुब लोग मुझको पागल तक कह डालें लेकिन मैं कहता हूँ और फिर कहता हूँ कि यह कोई अचम्भे और अचरज की बात नहीं और न नामुमकिन बात. जो चीज़ मुमकिन हो चुकी है उसको नामुमकिन कहना ऐसा ही है जैसे सूरज की गरम गरम धूप खाकर सूरज की दया से इनकार करना—जैसे चांद की ठंडी ठंडी रोशनी पीकर चांदनी की शान्ति को न मानना.

तारीख़ गवाह है. कुरान शाहिद (साक्षी) है. विद्यावान जानते हैं कि हज़रत मुहम्मद साहब की उंगली के इशारे से चांद के दो टुकड़े हो गए थे. पैग़म्बर मुहम्मद साहब का यह चन्द्र चमत्कार (मोजिज़ा शक़्क़ुल क़मर) सारे संसार में फैल चुका है और चांद के शक़ होने के नाम से दुनिया के इतिहास में मशहूर है और धर्म ग्रंथों में मौजूद !

अगर उस युग में हिन्दुस्तान पाकिस्तान का सवाल उठा हुआ होता तो मैं यक़ीन के साथ कह सकता हूँ कि उसे हासिल करने में यह दोनों राजधानियां खूब जी खोल कर मुफ़्त के इनसानों की भेंट चढ़ातीं और चुटकी बजाते बजाते करोड़ों जानों की कुरबानियां कर डालतीं. अगर अपने मक़सद में कामयाब हो जातीं तो

(مبارک باد) دینے کا رواج چاند کے لئے بھی ہوتا تو میں رجنی پتی (چاند) کے لئے بھی راشٹرپتی (صدر کانگریس) کو یہی صلاح مشورہ دیتا اور پردھان منتری (وزیر اعظم) سے بھی یہی کہتا کہ اس کی بھی تقسیم کی جائے. پاکستان میں بھی اپنے اس وچار کا زیادہ سے زیادہ پرچار کراتا.

میں جانتا ہوں کہ میرے اس کہنے پر لوگ ہنسیں گے، اور کیا تعجب لوگ مجھ کو پاگل تک کہہ ڈالیں لیکن میں کہتا ہوں اور پھر کہتا ہوں کہ یہ کوئی اچنبھے اور اچرج کی بات نہیں اور نہ ناممکن بات. جو چیز ممکن ہو چکی ہو اس کو ناممکن کہنا ایسا ہی ہے جیسے سورج کی گرم گرم دھوپ کھا کر سورج کی دیا سے انکار کرنا۔ جیسے چاند کی ٹھنڈی ٹھنڈی روشنی پی کر چاندنی کی شانتی کو نہ ماننا.

تاریخ گواہ ہے، قرآن شاہد (ساکشی) ہے، ودیاوان جانتے ہیں کہ حضرت محمدؐ صاحب کی انگلی کے اشارے سے چاند کے دو ٹکڑے ہو گئے تھے. پیغمبر محمدؐ صاحب کا یہ چندر چمتکار (معجزہ شق القمر) سارے سنسار میں پھیل چکا ہے اور چاند کے شق ہونے کے نام سے دنیا کے اتہاس میں مشہور ہے اور دھرم گرنتھوں میں موجود!

اگر اس یُگ میں ہندستان پاکستان کا سوال اٹھا ہوا ہوتا تو میں یقین کے ساتھ کہہ سکتا ہوں کہ اسے حاصل کرنے میں یہ دونوں راج دھانیاں خوب جی کھول کر مفت کے انسانوں کی بھینٹ چڑھاتیں اور چٹکی بجاتے بجاتے کروڑوں جانوں کی قربانیاں کر ڈالتیں. اگر اپنے مقصد میں کامیاب ہو جاتیں تو

हिन्दुस्तान अपने आकाश पर और पाकिस्तान अपने आसमान पर आखिरकार अपना अपना चांद चिपका कर ही रहता.

नमरूद ने हजरत इब्राहीम को एक बड़ी आग में डाला था. आग में गिरते ही आग उन पर गुलजार हो गई थी यानी अंगारों ने फूलों का रूप ले लिया था. कुदरती तौर पर यहां दो सवाल पैदा होते हैं. पहला सवाल—इब्राहीम* कौन थे ? दूसरा सवाल—उनका जुर्म क्या था, किस दोष † पर उनको आग में झोंक दिया गया था ?

वह मिट्टी पत्थर की बेबस मूर्तियों को देवी देवता न मानते थे. जिनमें कोई हरकत न थी, वह उनके सन्मुख सर न झुकाते थे. जिनमें कोई कुदरत न थी, उनसे कुछ अर्जमारूज (प्रार्थना) नहीं करते थे और न उन पै भेंट चढ़ाते थे, न उनसे कोई आस रखते थे. वजह यह कि वह उनको अपना हाजतरवा (जरूरत पूरी करने वाला) न समझते थे यानी अपना खुदा न मानते थे. न कभी वह किसी यात्रा में जाते थे और न किसी मन्दिर में दरशन को आते थे और न किसी मूर्ति की आरती करते थे.

वह हक़ के खोजी थे और सच्चे खोजी. इसीलिये उन्होंने सितारों को भी आजमाया. चांद सूरज को भी जांचा परखा. अन्त

*इब्राहीम बुत तराश (बुतसाज) बाप के बेटे थे यानी आजर के पिसर.

† दोष उनका यह था कि वह सारे बुतों के इनकारी थे और सिर्फ एक खुदा के पुजारी थे. वह शिर्क को पाप जानते थे और बाप की बात तक न मानते थे.

ہندستان اپنے آکاش پر اور پاکستان اپنے آسمان پر آخرکار چاند چپکا کر ہی رہتا۔

نمرود نے حضرت ابراہیم کو ایک بڑی آگ میں ڈالا تھا۔ آگ میں گرتے ہی آگ اُن پر گلزار ہوگئی تھی یعنی انگاروں نے پھولوں کا روپ لے لیا تھا۔ قدرتی طور پر یہاں دو سوال پیدا ہوتے ہیں۔ پہلا سوال — ابراہیم* کون تھے؟ دوسرا سوال — اُن کا جرم کیا تھا، کس دوش† پر اُن کو آگ میں جھونک دیا گیا تھا؟

وہ مٹی پتھر کی بےبس مورتیوں کو دیوی دیوتا نہ مانتے تھے۔ جن میں کوئی حرکت نہ تھی، وہ اُن کے سنمکھ سر نہ جھکاتے تھے۔ جن میں کوئی قدرت نہ تھی، اُن سے کچھ عرض معروض (پرارتھنا) نہیں کرتے تھے اور نہ اُن پے بھینٹ چڑھاتے تھے، نہ اُن سے کوئی آس رکھتے تھے۔ وجہ یہ کہ وہ اُن کو اپنا حاجت روا (ضرورت پوری کرنے والا) نہ سمجھتے تھے یعنی اپنا خدا نہ مانتے تھے۔ نہ کبھی وہ کسی یاترا میں جاتے تھے اور نہ کسی مندر میں درشن کو آتے تھے اور نہ کسی مورتی کی آرتی کرتے تھے۔

وہ حق کے کھوجی تھے اور سچے کھوجی۔ اس لئے اُنھوں نے ستاروں کو بھی آزمایا۔ چاند سورج کو بھی جانچا پرکھا۔ انت

* ابراہیم بت تراش (بت ساز) باپ کے بیٹے تھے یعنی آزر کے پسر۔

† دوش اُن کا یہ تھا کہ وہ سارے بتوں کے انکاری تھے اور صرف ایک خدا کے پجاری تھے۔ وہ شرک کو پاپ جانتے تھے اور باپ کی بات تک نہ مانتے تھے۔

वह कि खूब सोच विचार करके और पक्का विचार करके दुनिया को अपना आखिरी निणय दे दिया और खुले तौर पर इन शब्दों में अपने ऐलान का प्रचार संसार में कर दिया—

" फ़ानी और डूबने वाली चीजों को मैं खुदा नहीं मानता और न उनसे प्रेम रखता हूँ."

दूसरे शब्दों में जिसका मतलब यह हुआ कि मैं उस एक अविनाशी हस्ती (ग़ैर फ़ानी ज़ात) को अपने दिल की बस्ती में रखता हूँ.

मूल बात यह है कि वह बुतपरस्त न थे, वह बुत नास्तिक थे. और सच्ची बात यह है कि वह बड़े आत्मिक थे और भगवान के मित्र !

वह फ़क़त सर्व शक्तिमान को अपना खुदा और रहमान मानते थे उसी के नाम प वह दान देते थे और उसी की मांग पर जान देते थे. वह तस्लीम और रज़ा के बन्दे थे, यानी पक्के सच्चे मुसलमान थे. इसालिये उसी एक अल्लाह, एक ब्रह्म, एक निराकार की पूजा, इबादत और बंदगी करते थे. इसी वजह से उनका नाम ब्राहीम पड़ा यानी ब्रह्म की पूजा करने वाला !

कुरान में इनको अव्वलुल मुसलमीन (मुसलमानों में पहले मुसलमान) कहा गया है और खलील-उल-अल्लाह (अल्लाह का दोस्त) भी !

आज यह सवाल पैदा हो सकता है—(१) क्या अब भी कोई खुदा का दोस्त और मित्र नमरूद की आग से निजात और सलामती पा सकता है ?

یہ کہ خوب سوچ وچار کرکے اور پکا وچار کرکے دُنیا کو اپنا آخری نرنے دے دیا اور کھلے طور پر اِن شبدوں میں اپنے اعلان کا پرچار سنسار میں کردیا—

"فانی اور ڈوبنے والی چیزوں کو میں خدا نہیں مانتا اور نہ اُن سے پریم رکھتا ہوں."

دوسرے شبدوں میں جس کا مطلب یہ ہوا کہ میں اُس ایک اوی ناشی ہستی (غیر فانی ذات) کو اپنے دل کی بستی میں رکھتا ہوں.

مُول بات یہ ہے کہ وہ بُت پرست نہ تھے، وہ بُت ناستک تھے. اور سچی بات یہ ہے کہ وہ بڑے آتمک تھے اور بھگوان کے متر!

وہ فقط سرو شکتی مان کو اپنا خدا اور رحمان مانتے تھے اُسی کے نام پے وہ دان دیتے تھے اور اُسی کی مانگ پر جان دیتے تھے. وہ تسلیم اور رضا کے بندے تھے، یعنی پکے سچے مسلمان تھے. اِس لئے اُسی ایک اللہ، ایک برھم، ایک نراکار کی پوجا، عبادت اور بندگی کرتے تھے. اِسی وجہ سے اُن کا نام براہیم پڑا یعنی برھم کی پوجا کرنے والا!

قرآن میں اِن کو اوّل المسلمین (مسلمانوں میں پہلے مسلمان) کہا گیا ہے اور خلیل اللہ (اللہ کا دوست) بھی!

آج یہ سوال پیدا ہوسکتا ہے— (۱) کیا اب بھی کوئی خدا کا دوست اور متر نمرود کی آگ سے نجات اور سلامتی پاسکتا ہے؟

(२) क्या अब भी कोई अल्लाह का दूत और दुलारा चांद के दो टुकड़े कर सकता है. इसका जवाब इक़बाल ने दिया है—

आज भी हो जो ब्राहीम का इमां पैदा
आग कर सकती है अन्दाज़े गुलिस्तां पैदा.

दूसरे सवाल का जवाब भी इसी में मौजूद है. यानी वह ब्राहीम की औलाद ही तो थी जिसने चांद के दो टुकड़े किये थे. वह ब्राहीमी ईमान का वारिस और मालिक ही तो था जिसने सूरज को वपस खींच बुलाया था. यहां यह सवाल उठ सकता है—क्या सूरज भी किसी का तावेदार हो सकता है ? इसका जवाब आसान है. जिसके कहने से वह वापस हुआ था, समझो उसी का वह ताबेदार था. लेकिन आज किसी भी क़ौम का लीडर या क़ायद किसी भी नेशन का रिफ़ारमर या डिक्टेटर पैग़म्बर नहीं हो सकता. यह भी न भूलना चाहिये कि इस आख़िरी सदी यानी इस शताब्दी में कोई भी इन्सान रियाज़त, मशक़्क़त या तपस्या करके कुतुब या भक्त बन सकता है, मुनि बन सकता है, ऋषि बन सकता है, वली बन सकता है पर "नबी" नहीं बन सकता. जिस तरह रूहानियत का सम्बन्ध वहदानियत के मर्कज़ से क़ायम रहता है, इसी तरह हर दिनकर की किरणें अपने अपने सूरज के मर्कज़ से सम्बन्ध रखती हैं. जिस तरह नूर की किरणें रोशनी के देवता को अपने निकास का सरचश्मा समझती हैं, इसी तरह किसी मुल्क के अफ़राद (लोग) क़ौम के नेता को अपनी आशाओं का मर्कज़ मानते हैं. अगर यह सच है कि हमारे देश के सिर से मुसीबत की शाम टल चुकी है और आज़ादी का दिन निकल चुका है तो उसकी

(۲) کیا اب بھی کوئی اللہ کا دوت اور دلارا چاند کے دو ٹکڑے کر سکتا ہے۔ اس کا جواب اقبال نے دیا ہے—

آج بھی ہو جو براہیم کا ایماں پیدا
آگ کر سکتی ہے انداز گلستاں پیدا

دوسرے سوال کا جواب بھی اسی میں موجود ہے۔ یعنی وہ براہیم کی اولاد ہی تو تھی جس نے چاند کے دو ٹکڑے کئے تھے۔ وہ براہیمی ایمان کا وارث اور مالک ہی تو تھا جس نے سورج کو واپس کھینچ بلایا تھا۔ یہاں یہ سوال اٹھ سکتا ہے—کیا سورج بھی کسی کا تابعدار ہو سکتا ہے؟ اس کا جواب آسان ہے۔ جن کے کہنے سے وہ واپس ہوا تھا، سمجھو اسی کا وہ تابعدار تھا۔ لیکن آج کسی بھی قوم کا لیڈر یا قائد کسی بھی نیشن کا رفارمر یا ڈکٹیٹر پیغمبر نہیں ہو سکتا۔ یہ بھی نہ بھولنا چاہئے کہ اس آخری صدی یعنی اس شتابدی میں کوئی بھی انسان ریاضت، مشقت یا تپسیا کر کے قطب یا بھگت بن سکتا ہے، منی بن سکتا ہے، رشی بن سکتا ہے، ولی بن سکتا ہے پر "نبی" نہیں بن سکتا۔ جس طرح روحانیت کا سمبندھ وحدانیت کے مرکز سے قائم رہتا ہے اسی طرح ہر دنکر کی کرنیں اپنے اپنے سورج کے مرکز سے سمبندھ رکھتی ہیں۔ جس طرح نور کی کرنیں روشنی کے دیوتا کو اپنے نکاس کا سرچشمہ سمجھتی ہیں، اسی طرح کسی ملک کے افراد (لوگ) قوم کے نیتا کو اپنی آشاؤں کا مرکز مانتے ہیں۔ اگر یہ سچ ہے کہ ہمارے دیش کے سر سے مصیبت کی شام ٹل چکی ہے اور آزادی کا دن نکل چکا ہے تو [illegible]

भटकी हुई किरणों को अपना सही केन्द्र (मर्कज़) तलाश करके उससे अपना क़दीमी और पैदायशी रिश्ता नाता जोड़े रखना ज़रूरी है. जब एक सही और सच्चे मर्कज़ पर सारी शक्ति इकट्ठा हो जाती है तो कामयाबी के दरवाज़े उसके लिये आप ही आप हर तरफ़ खुल जाते हैं.

मैंने सन्' ४७ का संदेश इन शब्दों में दिया था—

"सन् ४६ अपनी ताक़त के घमन्ड में देश के रंगीन वातावरण और उसकी ख़ूनी पालिसी को सन् ४७ के चार्ज में दे गया है, इसलिये आगे के लिये इससे कुछ ख़तरा लगता है. देखना यह है कि यह अपने नए राज (आरज़ी हुकूमत) में अपनी क़ाबलियत से इस पर क़ाबू पाता है या क़दम रखते ही कोई ताज़ा गुल खिलाता है." और मैंने यह भी कहा था—

"सन् ४७ तमाम अपने ख़ुफ़िया सामान यानी वक़्त के ज़रूरी और राजकाजी हथियारों के साथ 'भारतवर्ष के तारीख़ी मैदान' (पानीपत) में रोशनी फेंकता और मज़बूत क़दम जमाता आ रहा है."

ग़रज़ यह है कि जो जो उसने गुल खिलाये वह आंखों के सामने हैं और जो जो ज़ुल्म ढाये वह ज़ख़्मों की शकल में हैं. मैंने चूंकि पहले ही उसकी नियत को भाँप लिया था इसलिये पेशतर से वह सब कुछ बतला दिया था जो पेश आने वाला था और वह सामने आ कर रहा.

अब सन् ४८ के बारे में कुछ इशारे देने हैं और कुछ इसकी आंखों देखी चीज़ें पेश करनी हैं.

بھٹکی ہوئی کرنوں کو اپنا صحیح کیندر (مرکز) تلاش کرکے اس سے
اپنا قدیمی اور پیدائشی رشتہ ناتا جوڑے رکھنا ضروری ہے۔ جب
ایک صحیح اور سچے مرکز پر ساری شکتی اکٹھی ہو جاتی ہے تو کامیابی
کے دروازے اس کے لئے آپ ہی آپ ہر طرف کھل جاتے ہیں۔

میں نے ۴۷ء کا سندیش ان شبدوں میں دیا تھا—

"۴۶ء اپنی طاقت کے گھمنڈ میں دیش کے رنگین واتاورن
اور اس کی خونی پالیسی کو ۴۷ء کے چارج میں دے گیا ہے، اس
لئے آگے کے لئے اس سے کچھ خطرہ لگتا ہے۔ دیکھنا یہ ہے کہ یہ
اپنے نئے راج (عارضی حکومت) میں اپنی قابلیت سے اس پر قابو
پاتا ہے یا قدم رکھتے ہی کوئی تازہ گل کھلاتا ہے۔" اور میں نے
یہ بھی کہا تھا—

"۴۷ء تمام اپنے خفیہ سامان یعنی وقت کے ضروری اور
راج کاجی ہتھیاروں کے ساتھ 'بھارت ورش کے تاریخی میدان'
(پانی پت) میں روشنی پھینکتا اور مضبوط قدم جماتا آ رہا ہے۔"

غرض یہ ہے کہ جو جو اس نے گل کھلائے وہ آنکھوں کے
سامنے ہیں اور جو جو ظلم ڈھائے وہ زخموں کی شکل میں ہیں۔ میں نے
چونکہ پہلے ہی اس کی نیت کو بھانپ لیا تھا اس لئے پیشتر
سے وہ سب کچھ بتلا دیا تھا جو پیش آنے والا تھا اور وہ
سامنے آ کر رہا۔

اب ۴۸ء کے بارے میں کچھ اشارے دینا ہیں اور کچھ

'नये साल के सूरज ने मशरिक की वादी से जैसे ही सर उठाया उसने देखा—

हिन्दुस्तान ख़ूं का दरिया बहा रहा है
इन्सान के लहू में इन्सां नहा रहा है

और उसने देखा—

'बह रही थीं ख़ूने इन्सानी की हरसू नद्दियां'

ख़ून का यह समां देख कर एकदम वह झिझक गया, थर्रा गया. किरण किरण उसकी चमक पड़ी. उसने चाहा और बहुत चाहा कि हिन्दुस्तान पर अपने नूरानी क़दम रखते ही "नये वर्ष का सन्देश भारतवर्ष को दे और नये साल का जाम पैग़ाम के साथ पिलाये." लेकिन जब उसने हिन्दुस्तान के इन्सानों में आज़ादी के पहले ही साल में मुहब्बत का काल देखा—और देखा हिन्द के मशहूर चमन के फूलों में न प्रेम की लगन है न कोई भाईपन है, न मुहब्बत की बू बास है, न ख़ुलूस और इख़लास है तो उसने कोहर भरी सुबह में ठन्डी ठन्डी आह भरी और बस इतना ही कह कर ही रह गया——

जिसके फूलों में अख़वत की हवा आई नहीं.
उस चमन में कोई लुत्फ़े नग़मा पैराई नहीं

और उसने समझ लिया—

अभी इस ख़ुदग़रज़ इन्सान को जीना नहीं आता
अभी जामे शराबे ज़िन्दगी पीना नहीं आता.

लेकिन जब वह आ ही गया है तो उसे कुछ कहना ही है—

ग़ुबारआलूद फ़िज़ा में अपनी आँखों को मसलते हुए जब

نئے سال کے سورج نے مشرق کی وادی سے جیسے ہی سر اٹھایا اس نے دیکھا—

ہندستان خوں کا دریا بہا رہا ہے
انسان کے لہو میں انساں نہا رہا ہے

اور اس نے دیکھا—

'بہہ رہی تھیں خونِ انسانی کی ہر سو ندیاں'

خون کا یہ سماں دیکھ کر ایک دم وہ جھجک گیا، تھرا گیا. کرن کرن اس کی چمک پڑی. اس نے چاہا اور بہت چاہا کہ ہندستان پر اپنے نورانی قدم رکھتے ہی "نئے ورش کا سندیش بھارت ورش کو دے اور نئے سال کا جام پیغام کے ساتھ پلائے." لیکن جب اس نے ہندستان کے انسانوں میں آزادی کے پہلے ہی سال میں محبت کا کال دیکھا—اور دیکھا ہند کے مشہور چمن کے پھولوں میں نہ پریم کی لگن ہے نہ کوئی بھائی پن ہے، نہ محبت کی بو باس ہے، نہ خلوص اور اخلاص ہے تو اس نے کہرے بھری صبح میں ٹھنڈی ٹھنڈی آہ بھری اور بس اتنا ہی کہہ کر ہی رہ گیا—

جس کے پھولوں میں اخوت کی ہوا آئی نہیں
اس چمن میں کوئی لطفِ نغمہ پیرائی نہیں

اور اس نے سمجھ لیا—

ابھی اس خود غرض انسان کو جینا نہیں آتا
ابھی جامِ شرابِ زندگی پینا نہیں آتا.

لیکن جب وہ آ ہی گیا ہے تو اسے کچھ کہنا ہی ہے—

غبار آلود فضا میں اپنی آنکھوں کو مسلتے ہوئے جب

उसकी पहली ही नज़र हिन्दुस्तान की चोटी पर पड़ी तो उसने कश्मीर में शमशेर (तलवार) चलती देखी. और जैसे ही उसने अपनी निगाह का ज़ाविया बदला, जूनागढ़ का दूसरा नक़शा देखा और हैदराबाद की तरकीब ही अजीब देखी. वह बूढ़ा और जहाँदीदा सूरज फ़ौरन ही ताड़ गया कि ये हालतें ख़ानाजंगी (गृह युद्ध) के इमकान में मदद पहुँचाने वाली हैं और हिन्दुस्तान के मुस्तक़बिल (भविष्य) को नामालूम तबाही की तरफ़ ले जाने वाली. क्योंकि उसने अपनी ज़ाती रोशनी में यह देख लिया कि अलग अलग अमलदारी में ख़ुफ़िया ख़ुफ़िया जंग की तैयारी है. इसके बाद जब उसने निगाह ज़्यादा ऊंची उठायी और दूर तक पँहुचाई तो फ़िलिस्तीन के मामलों को देखकर वह चौंक पड़ा और उसकी दूरबीन निगाह (दूर तक देखने वाली नज़र) इस नतीजे पर पहुँची कि यह मामला सिर्फ़ अरब तक ही नहीं है और न फ़िलिस्तीन की पाक ज़मीन तक बल्कि इसका ताल्लुक़ इस्लामी दुनिया से है और इस्लाम के हर नाम लेवा से है. इसीलिये उसकी नज़र में मुत्तहिदा अक़वाम का फ़ैसला (संयुक्त राष्ट्रीय निर्णय) इसलाम के तमाम सपूतों के नाम जिहाद का पैग़ाम साबित हुआ.

दुनिया का आज अजब रंग है. जिधर देखो जंग ही जंग है. कहीं जिहाद है, कहीं क़ौमी फ़िसाद है. आज की सियासत बड़ी ख़तरनाक है और आज का सियासी इन्सान बड़ा चालाक और मतलबबाज़ है. राजकाजी चालबाज़ी अपना काम कर रही है और साम्राजी पालिसी अपनी चाल चल रही है.

फ़िज़ा इस बुरी तरह बिगड़ी हुई है कि आज बादशाह के सिर

اس کی پہلی ہی نظر ہندستان کی چوٹی پر پڑی تو اس نے کشمیر میں شمشیر (تلوار) چلتی دیکھی. اور جیسے ہی اس نے اپنی نگاہ کا زاویہ بدلا، جوناگڑھ کا دوسرا نقشہ دیکھا اور حیدرآباد کی ترکیب ہی عجیب دیکھی. وہ بوڑھا اور جہاں دیدہ سورج فوراً ہی تاڑ گیا کہ یہ حالتیں خانہ جنگی (گرہ یدھ) کے امکان میں مدد پہنچانے والی ہیں اور ہندستان کے مستقبل (بھوشیہ) کو نامعلوم تباہی کی طرف لے جانے والی. کیونکہ اس نے اپنی ذاتی روشنی میں یہ دیکھ لیا کہ الگ الگ عمل داری میں خفیہ خفیہ جنگ کی تیاری ہے. اس کے بعد جب اس نے نگاہ زیادہ اونچی اٹھائی اور دور تک پہنچائی تو فلسطین کے معاملوں کو دیکھ کر وہ چونک پڑا اور اس کی دوربین نگاہ (دور تک دیکھنے والی نظر) اس نتیجے پر پہنچی کہ یہ معاملہ صرف عرب تک ہی نہیں ہے اور نہ فلسطین کی پاک زمین تک بلکہ اس کا تعلق اسلامی دنیا سے ہے اور اسلام کے ہر نام لیوا سے ہے. اس لیے اس کی نظر میں متحدہ اقوام کا فیصلہ (سنیکت راشٹریہ نرنے) اسلام کے تمام سپوتوں کے نام جہاد کا پیغام ثابت ہوا.

دنیا کا آج عجب رنگ ہے. جدھر دیکھو جنگ ہی جنگ ہے. کہیں جہاد ہے، کہیں قومی فساد ہے. آج کی سیاست بڑی خطرناک ہے اور آج کا سیاسی انسان بڑا چالاک اور مطلب باز ہے. راج کاجی چال بازی اپنا کام کر رہی ہے اور سامراجی پالیسی اپنی چال چل رہی ہے.

فضا اس بری طرح بگڑی ہوئی ہے کہ آج بادشاہ کے سر

पर ताज पहाड़ हो रहा है और राज काटने को दौड़ रहा है. ख़ास कर हिन्दुस्तानी फ़िज़ा का मिज़ाज इतना चिड़चिड़ा हो रहा है कि आज़ादी का शब्द भी उस पर नागवार गुज़र रहा है और इनक़लाब के गहरे गहरे झंडे ख़ूनी मुतने मालूम पड़ रहे हैं. और सियासी ख़ुदग़रज़ियों का यह हाल है कि इस विकास के काल में जिस की बदौलत इन्सानियत की मिट्टी पलीद हो रही है और तहज़ीब मलियामेट हो रही है—कहीं वह ज़ख़्मी खड़ी है तो कहीं मुरदा पड़ी है. सच है—

मइयते तहज़ीब है ख़ुदग़रज़ियों के दोश पर

यह नया नया सूरज आ तो रहा है, जगमगाता जगमगाता, मगर पीछे अपने भयानक भविष्य रखता है और सामने प्यासी ज़मीन—ख़ून की प्यासी! वह हिन्दुस्तान की सियासत और नई नई उसकी रियासत पर ताज़ा रोशनी फेंक रहा है. उसकी साफ़ और बेलाग रोशनी में बड़ी बड़ी साज़िशों का भेद खुल रहा है और बड़ी बड़ी बग़ावतों का परदा चाक हो रहा है. वह उस बग़ावत का भी पता दे रहा है जो अन्दर ही अन्दर परवरिश पा रही है और जो आगे चल कर ज़बरदस्त ख़तरनाकी और तबाहकारी लाने वाली है जिससे ज़्यादातर हमारा ही हमारा नुक़सान होगा.

मैंने सियासत का उलटा असर यह देखा कि देश में जैसे जैसे प्रेम और मिलाप की कोशिशें बढ़ती जा रही हैं वैसे वैसे दिलों में और भी फ़रक़ पड़ते जा रहे हैं. जिससे पता यह चला कि दुनिया सचाई की राह से हट कर अपने आबादकारों को फ़रेब की सड़क [illegible] रही है. सियासत की [illegible] —

پر تاج پہاڑ ہو رہا ہے اور راج کاٹنے کو دوڑ رہا ہے. خاص کر ہندستانی فضا کا مزاج اتنا چڑچڑا ہو رہا ہے کہ آزادی کا شبد بھی اس پر ناگوار گزر رہا ہے اور انقلاب کے گہرے گہرے جھنڈے خونی چھینٹے معلوم پڑ رہے ہیں. اور سیاسی خودغرضیوں کا یہ حال ہے کہ اس وکاس کے کال میں جس کی بدولت انسانیت کی مٹی پلید ہو رہی ہے اور تہذیب ملیامیٹ ہو رہی ہے— کہیں وہ زخمی کھڑی ہے تو کہیں مردہ پڑی ہے. سچ ہے—

میتِ تہذیب ہے خودغرضیوں کے دوش پر

یہ نیا نیا سورج آ تو رہا ہے، جگمگاتا جگمگاتا، مگر پیچھے اپنے بھیانک بھوشیہ رکھتا ہے اور سامنے پیاسی زمین— خون کی پیاسی! وہ ہندستان کی سیاست اور نئی نئی اس کی ریاست پر تازہ روشنی پھینک رہا ہے. اس کی صاف اور بےلاگ روشنی میں بڑی بڑی سازشوں کا بھید کھل رہا ہے اور بڑی بڑی بغاوتوں کا پردہ چاک ہو رہا ہے. وہ اس بغاوت کا بھی پتہ دے رہا ہے جو اندر ہی اندر پرورش پا رہی ہے اور جو آگے چل کر زبردست خطرناکی اور تباہ کاری لانے والی ہے جس سے زیادہ تر ہمارا ہی ہمارا نقصان ہوگا.

میں نے سیاست کا الٹا اثر یہ دیکھا کہ دیش میں جیسے جیسے پریم اور ملاپ کی کوششیں بڑھتی جا رہی ہیں ویسے ویسے دلوں میں اور بھی فرق پڑتے جا رہے ہیں. جس سے پتہ یہ چلا کہ دنیا سچائی کی راہ سے ہٹ کر اپنے آبادکاروں کو فریب کی سڑک [illegible] پالکس کی [illegible] پگڈنڈی کی طرف—

और एक खास मोड़ पर पहुंच कर वह अपनी चाल चलेगी, जहां बला की अँधियारी भी होगी और कोई प्रेमी इन्सान इन मजलूमों पर तरस खाकर यह कहता दिखाई दे रहा होगा—

क्रोध कपट की जहरी नागिन और इन्सान बेचारा
अनदेखी पगडन्डी है और तूफ़ानी अँधियारा.

इस बला की अँधियारी से निकल कर यह मुसीबत की मारी दुनिया जल्दी ही एक नया पलटा लेने वाली है. हिन्दुस्तान भी मजबूर होकर और अपने जब्र और सब्र के बन्धन तोड़कर इस बड़े तूफ़ान में कूदने का इरादा रखता है जिसके नतीजे में इस तपती जमीन से आगों के चश्मे उबलेंगे और धरती की इस सन्तोष भरी छाती से दबे और जोश भरे माद्दे फूट पड़ेंगे.

हिन्दुस्तान की सियासत का सही अन्दाजा करके, और क़ौम के सेवकों की कमज़ोरी को देख भाल कर सूरज नरेश ने यह हुक्म लगा दिया कि इस नये राज की बिसात पर नये नये मोहरे दिखाई देंगे और हलके हलके लोग ऐसे उभरे नज़र आयेंगे जैसे पानी की चादर पर बुलबुले. सज्जन और भार वज़न इन्सान थाह में ऐसे बैठे मिलेगें जैसे पानी के अन्दर सीपी और सीपी के अन्दर मोती!

यह वह वक़्त है कि छोटों का उभार होगा. कम कम लोगों की अधिकारी में नई नई क़िस्म की तबाहकारी होगी और यह भी आप नोट कर लें कि इस जमहूरी भाग में अनपढ़ अफ़सरी करेंगे और पढ़े लिखे दफ़्तरी करेगें. बदले का ख़ूब दौर दौरा होगा. हर तरफ़ कपट की लपट होगी जिससे जीवन का दामन दाग़ दाग़ होगा.

اور ایک خاص موڑ پہ پہنچ کر وہ اپنی چال چلے گی، جہاں بلا کی اندھیاری بھی ہوگی اور کوئی پریمی انسان اِن مظلوموں پہ ترس کھاکر یہ کہتا دکھائی دے رہا ہوگا—

کرودھ کپٹ کی زہری ناگن اور انسان بے چارا
اَن دیکھی پگڈنڈی ہے اور طوفانی اندھیارا۔

اِس بلا کی اندھیاری سے نکل کر یہ مصیبت کی ماری دُنیا جلدی ہی ایک نیا پلٹا لینے والی ہے۔ ہندستان بھی مجبور ہوکر اور اپنے جبر اور صبر کے بندھن توڑکر اُس بڑے طوفان میں کودنے کا اِرادہ رکھتا ہے جس کے نتیجے میں اِس تپتی زمین سے آگوں کے چشمے اُبلیں گے اور دھرتی کی اِس سنتوش بھری چھاتی سے دبے اور جوش بھرے مادّے پھوٹ پڑیں گے۔

ہندستان کی سیاست کا صحیح اندازہ کرکے اور قوم کے سیوکوں کی کمزوری کو دیکھ بھال کر سورج نریش نے یہ حکم لگا دیا کہ اِس نئے راج کی بساط پر نئے نئے مُہرے دکھائی دیں گے اور ہلکے ہلکے لوگ ایسے اُبھرے نظر آئیں گے جیسے پانی کی چادر پر بُلبُلے۔ سجن اور بھار وزن انسان تھاہ میں ایسے بیٹھے ملیں گے جیسے پانی کے اندر سیپی اور سیپی کے اندر موتی!

یہ وہ وقت ہے کہ چھوٹوں کا اُبھار ہوگا۔ کم کم لوگوں کی ادھکاری میں نئی نئی قسم کی تباہ کاری ہوگی اور یہ بھی آپ نوٹ کرلیں کہ اِس جمہوری بھاگ میں اَن پڑھ افسری کریں گے اور پڑھے لکھے دفتری کریں گے۔ بدلے کا خوب دَور دَورہ ہوگا۔ ہر طرف کپٹ کی لپٹ ہوگی جس سے جیون کا دامن داغ دار ہوگا۔

और उसने आज़ादी के इस भाग में किसी रियासत की सियासत का यह अजीब प्रबन्ध देखा कि ज्ञान घर में अंधेरा देखा, चाँद को तारे के आधीन देखा, सूरज के मुंह पर ख़ाक देखी, गोया विद्यार्थी की नाक़द्री देखी और 'विद्या मन्दिर' में देवी सरस्वती की सरपरस्ती न देखी यानी इल्मो पूजा बन्द देखी.

भारत में आकर जैसे ही उसने आज़ादी का परचम देखा, साम्राज्य का मातम देखा, शाही महलों में ज़लज़ला देखा, साम्राजियों का चेहरा उतरा देखा, दिमाग़ पर बिजली गिरती देखी, आँखों तले अंधेरा देखा, दिल पर वहशत छाती देखी, ऐश पर आफ़त आती देखी, शाहंशाहियत की आख़िरी घन्टी बजती देखी, और हिन्द से अंगरेज़ की चिट्ठी कटती देखी.

रियासतों को सख़्त उलझन में देखा, छिपी छिपी उनकी सिरकोट देखी, ख़तरे में शाही वोट देखी, कहीं कहीं भारी ख़ज़ाने उड़ते देखे और कहीं शाही घर और घराने बिकते देखे. सरमाया इधर से उधर चलता फिरता देखा. कहीं चुपके चुपके आने वाले ख़तरे से भागने की तैयारी देखी और कहीं मुक़ाबले की बराबरी की लाग डांट देखी.

इसने इनक़लाब का नाम सुना, इसने मसावात का काम देखा. राजों महाराजों का कर्म क्रिया देखी. नवाबों की मट्टी पलीद देखी. शरीफ़ों की ख़राबी देखी. महात्मा जी की भंगी निवाज़ी देखी और नेता को शूद्र परवर देखा.

इसने आते ही बटवारे के नक़्शे देखे, भारत के हिस्से बखरे

نئے بھارت کا سندیش فروری ۴۸ء

اور اس نے آزادی کے اس بھاگ میں کسی ریاست کی سیاست عجیب پربندھ دیکھا کہ گیان گھر میں اندھیرا دیکھا، چاند کو تارے کے آدھین دیکھا، سورج کے منہ پر خاک دیکھی، گویا ودیارتھی کی ناقدری دیکھی اور ودیا مندر میں دیوی سرسوتی کی سرپرستی نہ دیکھی یعنی علم پوجا بند دیکھی۔

بھارت میں آکر جیسے ہی اس نے آزادی کا پرچم دیکھا، سامراجیہ کا ماتم دیکھا، شاہی محلوں میں زلزلہ دیکھا، سامراجیوں کا چہرہ اترا دیکھا، دماغ پر بجلی گرتی دیکھی، آنکھوں تلے اندھیرا دیکھا، دل پر وحشت چھاتی دیکھی، عیش پر آفت آتی دیکھی، شہنشاہیت کی آخری گھنٹی بجتی دیکھی، اور ہند سے انگریز کی چھٹی کٹتی دیکھی۔

ریاستوں کو سخت الجھن میں دیکھا، چھپی چھپی ان کی سرکوٹ دیکھی، خطرے میں شاہی ووٹ دیکھی، کہیں کہیں بھاری خزانے اڑتے دیکھے اور کہیں شاہی گھر اور گھرانے بکتے دیکھے۔ سرمایہ ادھر سے ادھر چلتا پھرتا دیکھا۔ کہیں چپکے چپکے آنے والے خطرے سے بھاگنے کی تیاری دیکھی اور کہیں مقابلے کی برابری کی لاگ ڈانٹ دیکھی۔

اس نے انقلاب کا نام سنا، اس نے مساوات کا کام دیکھا، راجوں مہاراجوں کی کرم کریا دیکھی۔ نوابوں کی مٹی پلید دیکھی۔ شریفوں کی خرابی دیکھی۔ مہاتما جی کی بھنگی نوازی دیکھی اور نیتا کو شودر پرور دیکھا۔

اس نے آتے ہی بٹوارے کے نقشے دیکھے، بھارت کے حصے بخرے دیکھے، ... کے ... ٹکڑے دیکھے

[illegible] में साहब सलामत होगी, फिर एक नई क़यामत होगी—जिसकी तैयारी में तोपों के फन्दे होंगे, फ़ौजों के फन्दे होंगे, गोलों के फन्दे होंगे, गोलों के फन्दे होंगे. नतीजा क्या होगा? हर तरफ़ हिन्दुस्तानी पाकिस्तानी झगड़े होंगे—और सामने हमारे तुम्हारे बरबादी के नक्शे होंगे.

हिन्दुस्तान इस वक्त बहुत दुखिया है और बहुत बहुत ज़ख्मी. इस लिये मेरी ख़ाहिश है कि यह सन ४८ का नया नया और गरम गरम सूरज अपनी लाल पीली किरणों से देश की सूजन सेंके और उसके दुख दर्द का इलाज करे. क़ौमों का निफ़ाक़ जलाये और अपने सुनहरे थाल में अमन शान्ति का तोहफ़ा लेकर आये.

क्यों कि सन् ४८ का सूरज आज के रोज़ आज़ादी की थाली में नई आशाओं की डाली लेकर आया है, मुझे डर है कि कोई जी जला और हसद ख़ोरा उसमें लात न मार दे या उसमें ख़ाक न डाल दे और चूँकि यह अपने अन्दर एक "तारीख़ी दस्तावेज़" (एटली का बयान) रखता है इस लिये हमारे आज़ाद हिन्दुस्तान की तरफ़ दुनिया की आंखें लगी हुई हैं. ऐसी हालत में लाज़िम है कि यह नया सूरज देश के गिरे हुये इन्सानों को अपने साथ लेकर ऊपर चढ़े और मंज़िल मंज़िल आगे बढ़े. इस तरह तरक़्क़ी के ज़ीने चढ़ा कर और मयार उसका बढ़ा कर विकाश के आकाश तक ले जाये और दुनिया को उसका कमाल दिखाये. इसलिये कि हमारा हिन्दुस्तान एक तारीख़ी मकान है, क़दीम शराफ़त और कल्चर का—और एक [illegible] संसार है [illegible] की आवाज़ का।

[illegible] میں صاحب سلامت ہوگی، پھر ایک نئی قیامت ہوگی — جس کی تیاری میں توپوں کے پھندے ہوں گے، فوجوں کے پھندے ہوں گے، گولیوں کے پھندے ہوں گے، گولوں کے پھندے ہوں گے. نتیجہ کیا ہوگا؟ ہر طرف ہندستانی پاکستانی جھگڑے ہوں گے — اور سامنے ہمارے تمھارے بربادی کے نقشے ہوں گے.

ہندستان اس وقت بہت دکھیا ہے اور بہت بہت زخمی اس لئے میری خواہش ہے کہ یہ ۴۸ء کا نیا نیا اور گرم گرم سورج اپنی لال پیلی کرنوں سے دیش کی سوجن سینکے اور اس کے دکھ درد کا علاج کرے. قوموں کا نفاق جلائے اور اپنے سنہرے تھال میں امن شانتی کا تحفہ لے کر آئے.

کیوں کہ ۴۸ء کا سورج آج کے روز آزادی کی تھالی میں نئی آشاؤں کی ڈالی لے کر آیا ہے، مجھے ڈر ہے کہ کوئی جی جلا اور حسد خورہ اس میں لات نہ مار دے یا اس میں خاک نہ ڈال دے اور چونکہ یہ اپنے اندر ایک "تاریخی دستاویز" (اٹلی کا بیان) رکھتا ہے اس لئے ہمارے آزاد ہندستان کی طرف دنیا کی آنکھیں لگی ہوئی ہیں. ایسی حالت میں لازم ہے کہ یہ نیا سورج دیش کے گرے ہوئے انسانوں کو اپنے ساتھ لے کر اوپر چڑھے اور منزل منزل آگے بڑھے. اس طرح ترقی کے زینے چڑھا کر اور معیار اس کا بڑھا کر وکاش کے آکاش تک لے جائے اور دنیا کو اس کا کمال دکھلائے. اس لئے کہ ہمارا ہندستان ایک تاریخی مکان ہے، قدیم شرافت اور کلچر کا — اور ایک [illegible] سنسار ہے [illegible] کی آواز کا!

[illegible]

अब सन् ... के बारे में जो कुछ कह रहा हूँ उसको आप आने वाले दिनों में आज़मायेंगे. लेकिन इस मौक़े पर मैं यह बतला देना चाहता हूँ कि मैं न ग़ैब का हाल जानने वाला हूँ और न कोई ज्योतिषी. अलबत्ता मैं रखता हूँ प्रकृति से दोस्ती. इसी दोस्ती के सबब कुछ कुछ भेद की बातें कह दिया करता हूँ.

आर्टिस्ट अपना पैग़ाम जिन चीज़ों की ज़बान से चाहता है अदा करा देता है और जिस रंग में चाहता है ज़ाहिर कर देता है. इस लिये सूरज जो कुछ कह रहा है और किरणें जो रंग बरसा रही हैं समझो वह सब आर्टिस्ट ही का संदेश और पैग़ाम है.

मेरी दिली तमन्ना है कि ग़ुलामी के बाद का यह पहला और नया सूरज नये सिरे से मुहब्बत और रवादारी की भारत भूमि में दाग़बेल डाले. आज का आज़ाद और ज़िन्दा इन्सान ख़ौफ़ और दहशत के कफ़न फाड़ कर क़ब्रों से बाहर आए और नई ज़िन्दगी पाए. ज़िन्दगी शान्ति पाए.

इन्सान का नाम धोका है—

इन्सान उसको कहते हैं जिसके अन्दर त्याग और हमदर्दी का भाव हो, सदाचार हो, परोपकार हो. जिसमें यह इन्सानी गुन नहीं उसको इन्सान कहना या इन्सान समझना मेरे ख़्याल में एक धोका है. इसलिये उसे अपना नाम बदल देना चाहिये ताकि कोई दूसरा इन्सान धोका न खा जाए.

کے دل کا سندیش — فرصت

اب [illegible] کے بارے میں جو کچھ کہہ رہا ہوں اس کو آپ آنے والے دنوں میں آزمائیں گے۔ لیکن اس موقع پر میں یہ بتلا دینا چاہتا ہوں کہ میں نہ غیب کا حال جاننے والا ہوں اور نہ کوئی جوتشی۔ البتہ میں رکھتا ہوں پرکرتی سے دوستی۔ اسی دوستی کے سبب کچھ کچھ بھید کی باتیں کہہ دیا کرتا ہوں۔

آرٹسٹ اپنا پیغام جن چیزوں کی زبان سے چاہتا ہے ادا کرا دیتا ہے اور جس رنگ میں چاہتا ہے ظاہر کر دیتا ہے۔ اس لئے سورج جو کچھ کہہ رہا ہے اور کرنیں جو رنگ برسا رہی ہیں سمجھو وہ سب آرٹسٹ ہی کا سندیش اور پیغام ہے۔

میری دلی تمنا ہے کہ غلامی کے بعد کا یہ پہلا اور نیا سورج نئے سرے سے محبت اور رواداری کی بھارت بھومی میں داغ بیل ڈالے۔ آج کا آزاد اور زندہ انسان خوف اور دہشت کے کفن پھاڑ کر قبروں سے باہر آئے اور نئی زندگی پائے۔ زندگی شانتی پائے۔

انسان کا نام دھوکا ہے—

انسان اس کو کہتے ہیں جس کے اندر تیاگ اور ہمدردی کا بھاو ہو، سداچار ہو، پروپکار ہو۔ جس میں یہ انسانی گن نہیں اس کو انسان کہنا یا انسان سمجھنا میرے خیال میں ایک دھوکا ہے۔ اس لئے اسے اپنا نام بدل دینا چاہئے تاکہ کوئی دوسرا انسان دھوکا نہ کھا جائے۔

हमारी राय

गांधी जी का उपवास—

गांधी जी को उपवास शुरू किये चौबीस घण्टे हो चुके. सारे देश के कान और आँखें दिल्ली से आने वाली खबरों की तरफ़ लगी हुई हैं. करोड़ों दिलों से दुआ निकल रही है कि भगवान उन्हें बहुत दिनों ज़िन्दा रखें. हम इस समय अपने देश के बड़े से बड़े संकटों में से निकल रहे हैं. देश के लोगों और उनके अगुओं में से ज़्यादातर को रास्ता नहीं सूझ रहा है. ऐसी हालत में लोग महसूस कर रहे हैं कि गांधी जी का रहना मुल्क के लिये कितना क़ीमती और ज़रूरी है. हिन्दुस्तान से बाहर भी लाखों के विचार इसी तरफ़ जा रहे हैं. हो सकता है कि इन लाइनों के छपने से पहले ही गांधी जी का उपवास हँसी ख़ुशी और कामयाबी के साथ ख़त्म हो चुका हो. गांधी जी की निगाह से तो इस तरह का उपवास नाकाम जा ही नहीं सकता, क्योंकि उनका उपवास राजकाजी नहीं है. किसी पर किसी तरह का भी बेजा दबाव डालना उनके ज़मीर में नहीं है. उनका उपवास एक इख़लाक़ी चीज़ है, वह एक रूहानी चीज़ है, वह उनके और उनके मालिक के बीच की चीज़ है, वही सबसे बड़ा [illegible] है जो वह इस समय इन्सानी समाज की तरफ़ पूरा कर सकते हैं. [illegible] है—और जो लोग उन्हें पिछले चौबीस

ہماری رائے

گاندھی جی کا اُپواس—

گاندھی جی کو اُپواس شروع کئے چوبیس گھنٹے ہو چکے. سارے دیش کے کان اور آنکھیں دلی سے آنے والی خبروں کی طرف لگی ہوئی ہیں. کروڑوں دلوں سے دعا نکل رہی ہے کہ بھگوان انھیں بہت دنوں زندہ رکھے. ہم اس سمے اپنے دیش کے بڑے سے بڑے سنکٹوں میں سے نکل رہے ہیں. دیش کے لوگوں اور ان کے اگوؤں میں سے زیادہ تر کو راستہ نہیں سوجھ رہا ہے. ایسی حالت میں لوگ محسوس کر رہے ہیں کہ گاندھی جی کا رہنا ملک کے لئے کتنا قیمتی اور ضروری ہے. ہندستان سے باہر بھی لاکھوں کے وچار اسی طرف جا رہے ہیں. ہو سکتا ہے کہ ان لائنوں کے چھپنے سے پہلے ہی گاندھی جی کا اُپواس ہنسی خوشی اور کامیابی کے ساتھ ختم ہو چکا ہو. گاندھی جی کی نگاہ سے تو اس طرح کا اُپواس ناکام جا ہی نہیں سکتا، کیونکہ اُن کا اُپواس راج کاجی نہیں ہے. کسی پر کسی طرح کا بھی بے جا دباؤ ڈالنا اُن کے ضمیر میں نہیں ہے. اُن کا اُپواس ایک اخلاقی چیز ہے، وہ ایک روحانی چیز ہے، وہ اُن کے اور اُن کے مالک کے بیچ کی چیز ہے، وہی سب سے بڑا [illegible] ہے جو وہ اس سمے انسانی سماج کی طرف پورا کر سکتے ہیں. [illegible] اور جو لوگ انھیں پچھلے چوبیس

[illegible] से देख रहे हैं उन्होंने देखा है—कि वह कितने सुखी और गीता के शब्दों में 'प्रसन्न चित्त' दिखाई देते हैं.

अब कांग्रेसियों, ग़ैर कॉंग्रेसियों, हिन्दू, मुसलमानों, सिक्खों और हम सबको गहराई और सचाई के साथ यह सोचना चाहिये कि इस समय हमारा क्या फ़र्ज़ है. हमें ईमानदारी के साथ अपने अन्दर निगाह डालनी चाहिये. अपने रोग या अपनी कमी को समझना चाहिये और फिर हिम्मत के साथ उसे दूर करने की कोशिश करनी चाहिये. सचाई को छिपाना ख़ास कर ऐसे मौक़े पर जबकि हमारे देश का सबसे बड़ा आदमी, जिसे हम राष्ट्र का पिता कहते हैं, हज़रत ईसा की तरह हमारे लिये अपनी जान की बाज़ी लगा रहा हो, जुर्म है. अमली नतीजे की निगाह से भी ऐसा करना ग़लती और घातक है. हमें ख़ुद इस समय नीचे लिखी पांच चीज़ें सूझती हैं.

१—इन में सब से पहली और ज़रूरी चीज़ हमारे लिये अपनी राजकाजी और पब्लिक ज़िन्दगी को फिर से पाक करना है. पुराने देशभक्त श्री कोण्डा वेङ्कटपय्या गारू ने महात्मा गांधी को हाल में एक बड़ा साफ़ ख़त लिखा है, जो 'हरिजन' में छप चुका है. उससे मालूम होता है कि कांग्रेस वालों की हैसियत से हमारा चलन कितना गिर चुका है. श्री गारू ने अपने सूबे ही की बात लिखी है. पर हम सब को मालूम है कि हालत दूसरे सूबों में भी क़रीब क़रीब वैसी ही है. हाल में कई महकमों में रिश्वतख़ोरी बेहद बढ़ी है. बहुत से लोगों को शक है कि तरह तरह के कन्ट्रोलों के हटाये जाने में इतनी ढिलाई का एक सबब शायद यह भी है कि बहुत से

[illegible] سے دیکھ رہے ہیں انھوں نے دیکھا ہے — کہ وہ کتنے سکھی اور گیتا کے شبدوں میں "پرسن چت" دکھائی دیتے ہیں۔

اب کانگریسیوں، غیر کانگریسیوں، ہندو، مسلمانوں، سکھوں اور ہم سب کو گہرائی اور سچائی کے ساتھ یہ سوچنا چاہئے کہ اس سمے ہمارا کیا فرض ہے۔ ہمیں ایمانداری کے ساتھ اپنے اندر نگاہ ڈالنی چاہئے۔ اپنے روگ یا اپنی کمی کو سمجھنا چاہئے اور پھر ہمت کے ساتھ اُسے دور کرنے کی کوشش کرنی چاہئے۔ سچائی کو چھپانا خاص کر ایسے موقع پر جب کہ ہمارے دیش کا سب سے بڑا آدمی، جسے ہم راشٹر کا پتا کہتے ہیں، حضرت عیسیٰ کی طرح ہمارے لئے اپنی جان کی بازی لگا رہا ہو، جرم ہے۔ عملی نتیجے کی نگاہ سے بھی ایسا کرنا غلطی اور گھاتک ہے۔ ہمیں خود اس سمے نیچے لکھی پانچ چیزیں سوجھتی ہیں۔

۱۔ ان میں سب سے پہلی اور ضروری چیز ہمارے لئے اپنی راج کاجی اور پبلک زندگی کو پھر سے پاک کرنا ہے۔ پُرانے دیش بھکت شری کونڈا وینکٹ پتیا گارو نے مہاتما گاندھی کو حال میں ایک بڑا صاف خط لکھا ہے، جو "ہریجن" میں چھپ چکا ہے۔ اس سے معلوم ہوتا ہے کہ کانگریس والوں کی حیثیت سے ہمارا چلن کتنا گر چکا ہے۔ شری گارو نے اپنے صوبے ہی کی بات لکھی ہے۔ پر ہم سب کو معلوم ہے کہ حالت دوسرے صوبوں میں بھی قریب قریب ویسی ہی ہے۔ حال میں کئی محکموں میں رشوت خوری بے حد بڑھی ہے۔ بہت سے لوگوں کو شک ہے کہ طرح طرح کے کنٹرولوں کے ہٹائے جانے میں اتنی ڈھلائی کا ایک سبب شاید یہ بھی ہے کہ بہت سے

कांग्रेस वालों को कन्ट्रोलों के रहने से फ़ायदा है. यह एक आम शिकायत है कि हाल के फ़िरक़ेवाराना दंगों में कुछ कांग्रेस वालों ने, यहाँ तक कि कांग्रेस कमेटियों के कुछ मेम्बरों ने भी हिस्सा लिया है. यह शिकायत बिलकुल झूटी नहीं है. बात बड़े दुख की है. कांग्रेस और कांग्रेस वाले देश भर के सच्चे सेवक हैं. उन्हें अगर यह बात निबाहनी है तो उन्हें ख़ुद अपने को सुधारने की ज़ोरदार कोशिश करनी चाहिये और अपनी ज़िन्दगी को पाक रखना चाहिये. बाक़ी के मुल्क पर भी इसका अच्छा असर पड़े बिना नहीं रह सकता.

२– दूसरी ज़रूरी बात यह है कि हम सब धर्म मज़हबों की बुनियादी एकता को समझें और अनुभव करें. जो लोग सचमुच दीन धर्म के मानने वाले हैं उन्हें अब तक यह यक़ीन हो जाना चाहिये कि मज़हबी झगड़े सच्ची मज़हबी ज़िन्दगी के रास्ते में सब से बड़ी रुकावट हैं. इसका यह मतलब नहीं कि रीत रिवाज, पूजा के तरीक़ों और प्रार्थना की अलग अलग भाषा के सब फ़रक़ मिट जावेंगे. पर इस तरह के सब फ़रक़ों को हमें कम अहमियत की चीज़ समझना चाहिये. और यह समझना चाहिये कि जड़ में सब मज़हब एक हैं. सब का ईश्वर एक है चाहे हम उसे किसी भी नाम से क्यों न पुकारें, सब आदमी भाई भाई हैं. और सारी धार्मिक ज़िन्दगी की बुनियाद नेकी, बदी और सदाचार के वह असूल हैं जिन्हें मनुष्य समाज ने हज़ारों बरस के तजरबे

کانگریس والوں کو کنٹرولوں کے رہنے سے فائدہ ہے۔ یہ ایک عام شکایت ہے کہ حال کے فرقہ وارانہ دنگوں میں کچھ کانگریس والوں نے، یہاں تک کہ کانگریس کمیٹیوں کے کچھ ممبروں نے بھی حصہ لیا ہے۔ یہ شکایت بالکل جھوٹی نہیں ہے۔ بات بڑے دکھ کی ہے۔ کانگریس اور کانگریس والے دیش بھر کے سچے سیوک ہیں۔ انھیں اگر یہ بات نباہنی ہے تو انھیں خود اپنے کو سدھارنے کی زوردار کوشش کرنی چاہیے اور اپنی زندگی کو پاک رکھنا چاہیے۔ باقی کے ملک پر بھی اس کا اچھا اثر پڑے بنا نہیں رہ سکتا۔

۲۔ دوسری ضروری بات یہ ہے کہ ہم سب دھرم مذہبوں کی بنیادی ایکتا کو سمجھیں اور انوبھو کریں۔ جو لوگ سچ مچ دین دھرم کے ماننے والے ہیں انھیں اب تک یہ یقین ہو جانا چاہیے کہ مذہبی جھگڑے سچی مذہبی زندگی کے راستے میں سب سے بڑی رکاوٹ ہیں۔ اس کا یہ مطلب نہیں ہے کہ ریت رواج، پوجا کے طریقوں اور پرارتھنا کی الگ الگ بھاشا کے سب فرق مٹ جاویں گے۔ پر اس طرح کے سب فرقوں کو ہمیں کم اہمیت کی چیز سمجھنا چاہیے۔ اور یہ سمجھنا چاہیے کہ جڑ میں سب مذہب ایک ہیں۔ سب کا ایشور ایک ہے چاہے ہم اسے کسی بھی نام سے کیوں نہ پکاریں، سب آدمی بھائی بھائی ہیں اور ساری دھارمک زندگی کی بنیاد نیکی، بدی اور سداچار کے وہ اصول ہیں جنھیں منشیہ سماج نے ہزاروں برس کے تجربے

है सोचा है. उदारता या रवादारी ही काफी चीज नहीं है. हमें सब धर्मों के लिये बराबर की इज्जत अपने अन्दर पैदा करनी है. इस तरह से रीत रिवाज के फ़रक़, या पूजा बन्दगी के अलग अलग तरीक़े भी हमारी जिन्दगी के सुख, सुन्दरता, मेल जोल और प्रेम को घटाने की जगह और बढ़ावेंगे.

३—तीसरी बात दूसरी ही से निकलती है. वह यह है कि हमें एक मिली जुली हिन्दुस्तानी कलचर और एक मिली जुली समाजी जिन्दगी अपने अन्दर पैदा करनी और बढ़ानी चाहिये. इस मिली जुली जिन्दगी में वह सब अच्छी अच्छी और काम की चीजें शामिल होंगी जो अनेक अलग अलग संस्कृतियों के साथ समय समय पर इस देश में आती रही हैं. इस तरह की सुन्दर मिली जुली संस्कृति देश में अब भी है, हमेशा रही है, हमें उसे समझना, फैलाना और उजागर करना है. इसी तरह चलकर हम भाषा के सवाल और दूसरे सवालों को भी ठीक ठीक देख सकेंगे और ठीक ठीक हल कर सकेंगे.

चौथी बात, जिसे एक तरह सबसे पहले रखना चाहिये था, यह है कि हमें अपनी सब फ़िरक़ेवाराना या साम्प्रदायिक फूट, नफ़रतों, लड़ाइयों और झगड़ों को तुरन्त बिल्कुल बन्द कर देना चाहिये. हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि हमारी आजादी, असली या नक़ली जैसी भी वह है, चन्द दिन की पैदाइश है. अभी उसकी जड़ें भी नहीं पड़ी हैं. दुनिया की बड़ी ताक़तों ने न अभी अपनी सल्तनत की चाह छोड़ी है और न दूसरों के धन का लोभ अभी उनसे गया है. दिल्ली

سیکھا ہے۔ اُدارتا یا رواداری ہی کافی چیز نہیں ہے۔ ہمیں سب دھرموں کے لئے برابر کی عزت اپنے اندر پیدا کرنی ہے۔ اس طرح سے ریت رواج کے فرق، یا پوجا بندگی کے الگ الگ طریقے بھی ہماری زندگی کے سکھ، سندرتا، میل جول اور پریم کو گھٹانے کی جگہ اور بڑھاویں گے۔

۳۔ تیسری بات دوسری ہی سے نکلتی ہے۔ وہ یہ ہے کہ ہمیں ایک ملی جلی ہندستانی کلچر اور ایک ملی جلی سماجی زندگی اپنے اندر پیدا کرنی اور بڑھانی چاہئے۔ اس ملی جلی زندگی میں وہ سب اچھی اچھی اور کام کی چیزیں شامل ہوں گی جو انیک الگ الگ سنسکرتیوں کے ساتھ سمے سمے پر اس دیش میں آتی رہی ہیں۔ اس طرح کی سندر ملی جلی سنسکرتی دیش میں اب بھی ہے، ہمیشہ رہی ہے، ہمیں اسے سمجھنا، پھیلانا اور اُجاگر کرنا ہے۔ اسی طرح چل کر ہم بھاشا کے سوال اور دوسرے سوالوں کو بھی ٹھیک ٹھیک دیکھ سکیں گے اور ٹھیک ٹھیک حل کر سکیں گے۔

۴۔ چوتھی بات، جسے ایک طرح سب سے پہلے رکھنا چاہئے تھا، یہ ہے کہ ہمیں اپنی سب فرقے وارانہ یا سامپردایک پھوٹ، نفرتوں، لڑائیوں اور جھگڑوں کو ترنت بالکل بند کر دینا چاہئے۔ ہمیں یہ نہیں بھولنا چاہئے کہ ہماری آزادی، اصلی یا نقلی جیسی بھی وہ ہے، چند دن کی پیدائش ہے۔ ابھی اس کی جڑیں بھی نہیں پڑی ہیں۔ دنیا کی بڑی طاقتوں نے نہ ابھی اپنی سلطنت کی چاہ چھوڑی ہے اور نہ دوسروں کے دھن کا لوبھ ابھی ان سے گیا ہے۔ دلّی

[illegible] हिन्दुस्तान का दरवाजा है जो दोनों तरफ खुलता है. इस बार थोड़ी सी समझ और संयम से काम लें तो अब भी वह इस तरह खुल सकता है कि वहां से एकता, मेल जोल, आजादी और खुशहाली की लहरें चारों तरफ फैल जावें. दूसरी तरफ गान्धी जी नरमी के साथ पर साफ साफ चेतावनी दे चुके हैं कि अगर दिल्ली के अन्दर का सदियों का पुराना मेल जोल मिट गया, और किसी भी एक धर्म के लोगों के लिये दिल्ली में अमन और सुख चैन से रह सकना नामुमकिन हो गया तो हम बाजी हार जायेंगे और दिल्ली ही हमारी गाढ़ी कमाई वाली आजादी की क़ब्र साबित होगी. इसीलिये ताकि वह बुरा दिन देखना न पड़े गान्धी जी ने अपनी जान की बाजी लगा दी. हमें उम्मीद है कि दिल्ली वाले और सारे देश के लोग इस कसौटी पर पूरे उतरेंगे.

५—पांचवी चीज—और यह भी जड़ की चीज है—यह है कि हम यह अच्छी तरह समझने की कोशश करें कि हिंसा से हमारी जिन्दगी के अनेक पहलुओं को कितना भारी नुक़सान पहुँचा है. योरप के लोग भी धीरे धीरे इस बात को समझते जा रहे हैं और यह साबित हो चुका है कि हिंसा से न इनसानी समाज के सवाल हल हो सकते हैं और न उसकी कठिनाइयाँ दूर हो सकती हैं. हमें भी इसे समझना होगा. पिछले तीस बरस में हिंसा से दुनिया की समस्याएं हल होने की जगह और बढ़ी ही हैं. दुनिया की मुसीबतें भी बढ़ी हैं. आदमी की तरक़्क़ी रुकी है और पीछे को हटी है. डर होने लगता है कि हमारी आज कल की सारी सभ्यता ही खत्म होने जा रही है. [illegible] गान्धी कह चुके हैं कि पिछले तीस बरस की हमारी

اس وقت سچ مچ ہندستان کا دروازہ ہے جو دونوں طرف کھلتا ہے. اگر ذرا سی سمجھ اور سنیم سے کام لیں تو اب بھی وہ اس طرح کھل سکتا ہے کہ وہاں سے ایکتا، میل جول، آزادی اور خوشحالی کی لہریں چاروں طرف پھیل جاویں. دوسری طرف گاندھی جی نرمی کے ساتھ پر صاف صاف چیتاونی دے چکے ہیں کہ اگر دلی کے اندر کا صدیوں کا پرانا میل جول مٹ گیا، اور کسی بھی ایک دھرم کے لوگوں کے لئے دلی میں امن اور سکھ چین سے رہ سکنا ناممکن ہوگیا تو ہم بازی ہار جائیں گے اور دلی ہی ہماری گاڑھی کمائی والی آزادی کی قبر ثابت ہوگی. اسی لئے تاکہ وہ برا دن دیکھنا نہ پڑے گاندھی جی نے اپنی جان کی بازی لگادی. ہمیں امید ہے کہ دلی والے اور سارے دیش کے لوگ اس کسوٹی پر پورے اتریں گے.

۵- پانچویں چیز—اور یہ بھی جڑ کی چیز ہے—یہ ہے کہ ہم یہ اچھی طرح سمجھنے کی کوشش کریں کہ ہنسا سے ہماری زندگی کے انیک پہلوؤں کو کتنا بھاری نقصان پہنچا ہے. یورپ کے لوگ بھی دھیرے دھیرے اس بات کو سمجھتے جارہے ہیں اور یہ ثابت ہوچکا ہے کہ ہنسا سے نہ انسانی سماج کے سوال حل ہوسکتے ہیں اور نہ اس کی کٹھنائیاں دور ہوسکتی ہیں. ہمیں بھی اسے سمجھنا ہوگا. پچھلے تیس برس میں ہنسا سے دنیا کی سمسیائیں حل ہونے کی جگہ اور بڑھی ہی ہیں. دنیا کی مصیبتیں بھی بڑھی ہیں. آدمی کی ترقی رکی ہے اور پیچھے کو ہٹی ہے. ڈر ہونے لگتا ہے کہ ہماری آج کل کی ساری سبھیتا ہی ختم ہونے جارہی ہے. [illegible] کہ چکے ہیں کہ پچھلے تیس برس کی ہماری

अहिंसा सिर्फ़ दिखावटी और नक़ली थी, वह कमज़ोरों की और लाचारी की अहिंसा थी. उसका क़ुदरती नतीजा यह हुआ कि पहला मौक़ा मिलते ही बुरी से बुरी हिंसा हमसे फूट निकली. हमने उसके नतीजे भी देख लिये. हम बरबादी के गड्ढे के मुँह पर खड़े हुए हैं. जो लोग देख सकते हैं और जिनके दिल है उनको चाहिये कि अपने अन्दर सच्ची अहिंसा में, बहादुरों की अहिंसा में, विश्वास जगावें. जो इस राय के साथ इत्तफ़ाक़ करें उन्हें फिर यह भी चाहिये कि उस तामीरी काम में अपनी सब ताक़तें लगा दें जिसके बिना सच्ची अहिंसा न इस देश में टिकाऊ हो सकती है, न बाहर दुनिया में.

जो लोग इन पाँचों तरह के कामों की सचाई और ज़रूरत को महसूस करते हों वह अगर एक बार मिलकर पूरा ज़ोर लगा दें तो महात्मा गांधी का उपवास अब भी देश के लिये बरकत साबित हो सकता है.

नई दिल्ली —सुंदरलाल

१४-१-४८

लखनऊ मुसलिम कानफ़रेन्स—

लखनऊ में पिछली २७, २८ दिसम्बर को हिन्द के मुसलमानों की एक बड़ी कान्फरेन्स हुई जो बड़े मौक़े की और काम की चीज़ थी. मौलाना अबुलकलाम आज़ाद ने सद्र की हैसियत से तक़रीर करते हुए इस बात पर ज़ोर दिया कि जिन राजकाजी जमातों की बुनियाद फ़िरक़ापरस्ती पर है उन सब को बन्द कर देना चाहिये. कान्फरेन्स में जगह जगह से सत्तर हज़ार

اہنسا صرف دکھاوٹی اور نقلی تھی، وہ کمزوری اور لاچاری کی اہنسا تھی۔ اس کا قدرتی نتیجہ یہ ہوا کہ پہلا موقع ملتے ہی بُری سے بُری ہنسا ہم سے پھوٹ نکلی۔ ہم نے اس کے نتیجے بھی دیکھ لئے۔ ہم بربادی کے گڑھے کے منہ پر کھڑے ہوئے ہیں۔ جو لوگ دیکھ سکتے ہیں اور جن کے دل ہو اُن کو چاہئے کہ اپنے اندر سچی اہنسا میں، بہادروں کی اہنسا میں، وشواس جگاویں۔ جو اس رائے کے ساتھ اتفاق کریں اُنھیں پھر یہ بھی چاہئے کہ اُس تعمیری کام میں سب طاقتیں لگادیں جس کے بنا سچی اہنسا نہ اس دیش میں ٹکاؤ ہوسکتی ہے، نہ باہر دُنیا میں۔

جو لوگ ان پانچوں طرح کے کاموں کی سچائی اور ضرورت کو محسوس کرتے ہیں وہ اگر ایک بار مل کر پورا زور لگادیں تو مہاتما گاندھی کا اُپواس اب بھی دیش کے لئے برکت ثابت ہوسکتا ہے۔

نئی دلی —سندرلال

۱۳-۱-۴۸

لکھنؤ مسلم کانفرنس—

لکھنؤ میں پچھلی ۲۷، ۲۸ دسمبر کو ہند کے مسلمانوں کی ایک بڑی کانفرنس ہوئی جو بڑے موقع کی اور کام کی چیز تھی۔ مولانا ابوالکلام آزاد نے صدر کی حیثیت سے تقریر کرتے ہوئے اس بات پر زور دیا کہ جن راج کاجی جماعتوں کی بنیاد فرقہ پرستی پر ہے اُن سب کو بند کر دینا چاہئے۔ کانفرنس میں جگہ جگہ سے ستر ہزار

[illegible] मौलाना साहब की सलाह पर चलने के लिये जमा हुए थे. इस लिये मौलाना साहब सिर्फ़ मुसलमानों से ही बात कर रहे थे. पर जो बात उन्होंने कही वह इस तरह की हर संस्था के लिए ठीक है चाहे वह संस्था मुसलिम हो, हिन्दू हो या सिख. मौलाना साहब ने यह भी कहा कि जो संस्थाएँ किसी खास फ़िरक़े की सिर्फ़ मज़हबी बातों या कलचर की चीज़ों से वास्ता रखती हैं उन पर किसी को कोई एतराज़ नहीं होना चाहिये. असली मतलब यह है कि जब तक हम अपनी राजकाजी ज़िन्दगी में हिन्दुओं के जान माल और मुसलमानों के जान माल में फ़रक़ करना बन्द न करेंगे, जब तक हम हिन्दुओं के नुक़सानों और मुसलमानों के नुक़सानों को अलग अलग गिनना और अलग अलग निगाह से देखना न छोड़ेंगे, और हिन्दू, मुसलिम या सिख सब के जान माल की एक सी इज़्ज़त न करेंगे तब तक न हम इस मुल्क में शान्ति पैदा कर सकते हैं और न अपने अपने मज़हबों की शान या इज़्ज़त बनाए रख सकते हैं. इस तरह के मामलों में किसी तरह का भी फ़िरक़ेवाराना भेदभाव मज़हब की असली ग़रज़ को ही ख़त्म कर देता है, और सारे समाज को तहस नहस कर डालता है. मौलाना साहब ने बिलकुल सच कहा कि सब फ़िरक़ों के लोगों के हाथ ख़ून में सने हुए हैं. उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि राज काज के मामलों में हर तरह की फ़िरक़ापरस्ती को हमेशा के लिये दफ़न कर देना चाहिये.

[illegible] के बटवारे पर और दो-क़ौम के उसूल पर मौलाना

مسلمان مولانا صاحب کی صلاح پر چلنے کے لئے جمع ہوئے تھے. اس لئے مولانا صاحب صرف مسلمانوں سے ہی بات کر رہے تھے۔ پر جو بات انھوں نے کہی وہ اس طرح کی ہر سنستھا کے لئے ٹھیک ہے چاہے وہ سنستھا مسلم ہو، ہندو ہو یا سکھ۔ مولانا صاحب نے یہ بھی کہا کہ جو سنستھائیں کسی خاص فرقے کی صرف مذہبی باتوں یا کلچر کی چیزوں سے واسطہ رکھتی ہیں ان پر کسی کو کوئی اعتراض نہیں ہونا چاہئے۔ اصلی مطلب یہ ہے کہ جب تک ہم اپنی راج کاجی زندگی میں ہندوؤں کے جان مال اور مسلمانوں کے جان مال میں فرق کرنا بند نہ کریں گے، جب تک ہم ہندوؤں کے نقصانوں اور مسلمانوں کے نقصانوں کو الگ الگ گننا اور الگ الگ نگاہ سے دیکھنا نہ چھوڑیں گے، اور ہندو، مسلمان یا سکھ سب کے جان مال کی ایک سی عزت نہ کریں گے تب تک نہ ہم اس ملک میں شانتی پیدا کر سکتے ہیں اور نہ اپنے اپنے مذہبوں کی شان یا عزت بنائے رکھ سکتے ہیں۔ اس طرح کے معاملوں میں کسی طرح کا بھی فرقے وارانہ بھید بھاؤ مذہب کی اصلی غرض کو ہی ختم کر دیتا ہے، اور سارے سماج کو تہس نہس کر ڈالتا ہے۔ مولانا صاحب نے بالکل سچ کہا کہ سب فرقوں کے لوگوں کے ہاتھ خون میں سنے ہوئے ہیں۔ انھوں نے اس بات پر زور دیا کہ راج کاج کے معاملوں میں ہر طرح کی فرقہ پرستی کو ہمیشہ کے لئے دفن کر دینا چاہئے۔

ملک کے بٹوارے پر اور دو قوم کے اصول پر مولانا

साहब के विचार सब को मालूम हैं. उन्होंने उन विचारों को दोहराया और हिन्द के सब मुसलमानों को इंडियन नेशनल काँग्रेस में शामिल होने की सलाह दी. पर क्यों कि यह कान्फ़रेन्स एक खास ग़रज़ से की गई थी इस लिये मौलाना साहब ने कान्फ़रेन्स में पुरानी कड़वी बातों को न कुरेदा और न हाल की भी ज़्यादा झगड़े की बातों को छेड़ा. यह बात भी दूर अन्देशी की थी.

कान्फ़रेन्स ने जो ठहराव पास किये वह एक राय से किये और मौलाना साहब ही की सलाह से किये. फ़िरक़ेवाराना संस्थाओं के बारे में जो ठहराव पास हुआ वह ऐसा था कि एक दो मामूली शब्दों को अदल बदल कर कोई भी नेशनल या राष्ट्रीय संस्था उसे अच्छी तरह पास कर सकती थी. ठहराव को पेश करते हुए मौलाना अहमद सईद ने दिखाया कि दो क़ौम के असूल के प्रचार ने कितना नुक़सान किया है. डाक्टर सय्यद महमूद ने हिन्दुओं और सिखों को बिलकुल ठीक चेतावनी दी कि अगर किसी एक फ़िरक़े के लोगों को मिटाया गया तो बाक़ी सब भी मिट जावेंगे. सय्यद अब्दुल्ला बरेलवी, प्रोफ़ेसर हुमायूं कबीर, मौलाना हिफ़ज़ुर्रहमान जैसे कई बोलने वालों ने कहा कि मुसलमानों को इस लिये भी पूरी तादाद में कांग्रेस में शामिल हो जाना चाहिये ताकि कांग्रेस सच्चे मानी में सारे हिन्द की नेशनल कांग्रेस बनी रह सके.

मौलाना अबुलकलाम हमारे देश के उन चोटी के नेताओं में से हैं जिनकी नेकी, धीरज और सूझबूझ ने लगातार चालीस बरस तक क़ौम का साथ दिया है. इण्डियन नेशनल कांग्रेस के सदर की हैसियत से वह बड़े संकट के अन्दर से क़ौम के जहाज़ को इतनी

صاحب کے وچار سب کو معلوم ہیں۔ انھوں نے اُن وچاروں کو دہرایا اور ہند کے سب مسلمانوں کو انڈین نیشنل کانگریس میں شامل ہونے کی صلاح دی۔ پر کیونکہ یہ کانفرنس ایک خاص غرض سے کی گئی تھی اس لئے مولانا صاحب نے کانفرنس میں پرانی کڑوی باتوں کو نہ کریدا اور نہ حال کی بھی زیادہ جھگڑے کی باتوں کو چھیڑا۔ یہ بات بھی دوراندیشی کی تھی۔

کانفرنس نے جو ٹھہراو پاس کئے وہ ایک رائے سے کئے اور مولانا صاحب ہی کی صلاح سے کئے۔ فرقے وارانہ سنستھاؤں کے بارے میں جو ٹھہراو پاس ہوا وہ ایسا تھا کہ ایک دو معمولی شبدوں کو اَدل بدل کر کوئی بھی نیشنل یا راشٹریہ سنستھا اُسے اچھی طرح پاس کر سکتی تھی۔ ٹھہراو کو پیش کرتے ہوئے مولانا احمد سعید نے دکھایا کہ دو قوم کے اُصول کے پرچار نے کتنا نقصان کیا ہے۔ ڈاکٹر سید محمود نے ہندوؤں اور سکھوں کو بالکل ٹھیک چیتاونی دی کہ اگر کسی ایک فرقے کے لوگوں کو مٹایا گیا تو باقی سب بھی مٹ جاویں گے۔ سید عبداللہ بریلوی، پروفیسر ہمایوں کبیر، مولانا حفظ الرحمان جیسے کئی بولنے والوں نے کہا کہ مسلمانوں کو اس لئے بھی پوری تعداد میں کانگریس میں شامل ہو جانا چاہئے تاکہ کانگریس سچے معنی میں سارے ہند کی نیشنل کانگریس بنی رہ سکے۔

مولانا ابوالکلام ہمارے دیش کے اُن چوٹی کے نیتاؤں میں سے ہیں جن کی نیکی، دھیرج اور سوجھ بوجھ نے لگاتار چالیس برس تک قوم کا ساتھ دیا ہے۔ انڈین نیشنل کانگریس کے صدر کی حیثیت سے وہ بڑے سنکٹ کے اندر سے قوم کے جہاز کو اتنی

तरह निकाल ले गए कि उनकी हम जितनी भी तारीफ़ करें और उनका जितना भी एहसान मानें कम है. फ़िरक़ेवाराना सवाल पर उनकी सलाह मुसलमानों के लिये ही नहीं और सब मज़हब वालों के लिये भी बड़ी क़ीमती है. आशा है कि हम सब इन संकट के दिनों में उनकी नेक सलाह से पूरा फ़ायदा उठायेंगे.

—सुन्दरलाल

धर्म के नाम पर गिरोहबन्दी—

जिस तरह तन की बीमारियां होती हैं उसी तरह दिल और दिमाग़ की बीमारियां भी होती हैं. दोनों तरह की बीमारियां जब तब दुनिया के मुल्कों में फैलती रहती हैं और लाखों अच्छे से अच्छे लोगों को अपना शिकार बना लेती हैं.

तन का हमारे चाल चलन और हमारी आत्मा के साथ उतना गहरा नाता नहीं है जितना दिल और दिमाग़ का. इसलिये दिल और दिमाग़ की बीमारियां ज़्यादा ख़तरनाक होती हैं. आज हमारा सारा देश इसी तरह की गहरी वबा में से निकल रहा है.

यह वबा साम्प्रदायिकता, फ़िरक़ापरस्ती या धर्म के नाम पर गिरोहबन्दी की है. हिन्दू, मुसलमान या सिख कोई इसके ज़हर से नहीं बच पाए. अच्छे से अच्छे, पढ़े लिखे और भले लोग भी—जो दूसरी बातों में सचमुच भले कहे जा सकते हैं—इस ज़हर से अपने को नहीं बचा सके. हमारे चाल चलन पर इसका असर [illegible]

اچھی طرح نکال لے گئے کہ اُن کی ہم جتنی بھی تعریف کریں اور اُن کا جتنا بھی احسان مانیں کم ہے۔ فرقہ وارانہ سوال پر اُن کی صلاح مسلمانوں کے لئے ہی نہیں اور سب مذہب والوں کے لئے بھی بڑی قیمتی ہے۔ آشا ہے کہ ہم سب اِن سنکٹ کے دنوں میں اُن کی نیک صلاح سے پورا فائدہ اُٹھاویں گے۔

— سُندر لال

دھرم کے نام پر گروہ بندی—

جس طرح تن کی بیماریاں ہوتی ہیں، اُسی طرح دل اور دماغ کی بیماریاں بھی ہوتی ہیں۔ دونوں طرح کی بیماریاں جب تب دُنیا کے ملکوں میں پھیلتی رہتی ہیں اور لاکھوں اچھے سے اچھے لوگوں کو اپنا شکار بنا لیتی ہیں۔

تن کا ہمارے چال چلن، اور ہماری آتما کے ساتھ اُتنا گہرا ناتا نہیں ہے جتنا دل اور دماغ کا۔ اِس لئے دل اور دماغ کی بیماریاں زیادہ خطرناک ہوتی ہیں۔ آج ہمارا سارا دیش اِسی طرح کی گہری وبا میں سے نکل رہا ہے۔

یہ وبا سامپردایکتا، فرقہ پرستی یا دھرم کے نام پر گروہ بندی کی ہے۔ ہندو، مسلمان یا سکھ کوئی اِس کے زہر سے نہیں بچ پائے۔ اچھے سے اچھے، پڑھے لکھے اور بھلے لوگ بھی — جو دوسری باتوں میں سچ مچ بھلے کہے جا سکتے ہیں — اِس زہر سے اپنے کو نہیں بچا سکے۔ ہمارے چال چلن پر اِس کا [illegible]

अगर एक गाँव, गली या शहर के किसी एक मज़हब वाले ने दूसरे मज़हब वाले का गला मरोड़ दिया तो हर गाँव, गली या शहर के उस मज़हब वालों को यह हक़ मिल गया कि वह अपने पड़ोसी दूसरे, मज़हब वालों को पकड़ कर उनका गला मरोड़ दे. इससे भी ज्यादा काले पापों के बारे में भी बहुत से ऐसा ही मानने लगे हैं. देश की माओं, बेटियों और बहनों के साथ हिन्दुओं, मुसलमानों और सिक्खों तीनों ने जो अनाचार किये हैं उनसे सदियों तक हम अपनी गरदन दुनिया के सामने ऊँची करने के क़ाबिल नहीं रहे. देश का एक बड़ा हिस्सा घोर से घोर पापों के तालाब में डुबकि-याँ खा रहा है.

तन के पाप इस समय उतने ज्यादा सुनाई नहीं पड़ रहे हैं जितने आज से कुछ महीने पहले सुनाई देते थे. इसकी एक वजह यह भी है कि बहुत जगह इस तरह के पापों की गुंजाइश भी नहीं रह गई है. पर हमारे दिलों और दिमाग़ों की हालत अभी सुधरी नहीं कही जा सकती. कई जगह तो ऐसा लगता है कि लाखों भोली जनता ज्वालामुखी के मुंह पर बैठी हुई है. इसके अलावा अनेक बीमारियों में बीमारी के हमले के ठीक बाद का समय बीमारी के समय से भी ज्यादा नाज़ुक होता है. उस वक़्त रोगी को न संभाला गया तो रोग के फिर से हमले का डर रहता है और हर नया हमला पहले हमले से ज्यादा ख़तरनाक होता है. मन का पाप भी तन के पाप से किसी तरह कम बुरा नहीं होता.

इस तरह के घोर पाप अगर धन के लिये या राजकाज के नाम पर किये जायें तब भी वह काफ़ी बुरे हैं. पर जब वह दीन, धर्म

اگر ایک گاؤں، گلی یا شہر کے کسی ایک مذہب والے نے دوسرے مذہب والے کا گلا مروڑ دیا تو ہر گاؤں، گلی یا شہر کے اس مذہب والوں کو یہ حق مل گیا کہ وہ اپنے پڑوسی دوسرے مذہب والوں کو پکڑکر اُن کا گلا مروڑ دیں۔ اس سے بھی زیادہ کالے پاپوں کے بارے میں بھی بہت سے ایسا ہی ماننے لگے ہیں۔ دیش کی ماؤں، بیٹیوں اور بہنوں کے ساتھ ہندوؤں، مسلمانوں اور سکھوں تینوں نے جو اناچار کیا ہے اُن سے صدیوں تک ہم اپنی گردن دُنیا کے سامنے اونچی کرنے کے قابل نہیں رہے۔ دیش کا ایک بڑا حصّہ گھور سے گھور پاپوں کے تالاب میں ڈبکیاں کھا رہا ہے۔

تن کے پاپ اس سمے اُتنے زیادہ سنائی نہیں پڑ رہے ہیں جتنے آج سے کچھ مہینے پہلے سنائی دیتے تھے۔ اس کی ایک وجہ یہ بھی ہے کہ بہت جگہ اس طرح کے پاپوں کی گنجائش بھی نہیں رہ گئی ہے۔ پر ہمارے دلوں اور دماغوں کی حالت ابھی سدھری نہیں کہی جاسکتی۔ کئی جگہ تو ایسا لگتا ہے کہ لاکھوں بھولی جنتا جوالا مکھی کے منہ پر بیٹھی ہوئی ہے۔ اس کے علاوہ انیک بیماریوں میں بیماری کے حملے کے ٹھیک بعد کا سمے بیماری کے سمے سے بھی زیادہ نازک ہوتا ہے۔ اس وقت روگی کو نہ سنبھالا گیا تو روگ کے پھر سے حملے کا ڈر رہتا ہے اور ہر نیا حملہ پہلے حملے سے زیادہ خطرناک ہوتا ہے۔ من کا پاپ بھی تن کے پاپ سے کسی طرح کم بُرا نہیں ہوتا۔

اس طرح کے گھور پاپ اگر دھن کے لئے یا راج کاج کے نام پر کئے جاویں تب بھی وہ کافی بُرے ہیں۔ پر جب وہ دین، دھرم

...मज़हब के नाम पर किये जायें तो उनकी बुराई और उनसे मन, बुद्धि और आत्मा की बरबादी सैकड़ों गुना बढ़ जाती है. हमारे देश की इस वक़्त यही हालत है. जिन महान धर्मों, हिन्दू धर्म, इस्लाम और सिख मत, के नाम पर यह पाप किये गए उनकी इससे बुरी छीछालेदर नहीं हो सकती थी. इनमें से किसी भी धर्म का कोई भी सच्चा प्रेमी इस छीछालेदर पर खून के आंसू बहाए बिना नहीं रह सकता.

रोग के इस तरह फैलने की वजह भी साफ़ है. रोग की जड़ें तो हमारे अन्दर थीं ही. पर देश के बटवारे ने, उससे भी ज़्यादा पंजाब के बटवारे ने अपने अपने शहर या इलाक़े को हिन्दुस्तान या पाकिस्तान में रखने की कोशिश ने और लाखों मर्दों, औरतों और बच्चों को उनके घरों से निकाल कर सैकड़ों मील दूर बसाने की कार्रवाई ने हमारे अन्दर के दबे रोग को उभाड़ दिया, दिलों में सोए हुए शैतानों को जगा दिया.

बड़ी बड़ी आबादियों को, लोगों के मज़हब की बिना पर इधर से उधर लेजाने की इस कार्रवाई से बढ़कर जुर्म दुनिया के इतिहास में शायद ही कोई हुआ हो. जो लोग किसी भी इलाक़े के एक मज़हब के लोगों को अपने भाई और दूसरों को ग़ैर समझते हुए आबादी के इस बदलाव पर ख़ुशी मनाते हैं या एक दूसरे को बधाई देते हैं वह करोड़ों के शरीरों और उनकी आत्माओं दोनों की बरबादी पर घर फूंक तमाशा देख रहे हैं. हम अपनी इन्सानियत खो बैठे. हम अपना सदाचार खो बैठे. हम, हमारे सारे [illegible]

...مذہب کے نام پر کئے جاویں تو ان کی برائی اور ان سے من، بدھی اور آتما کی بربادی سیکڑوں گنا بڑھ جاتی ہے. ہمارے دیش کی اس سمے یہی حالت ہے. جن مہان دھرموں، ہندو دھرم، اسلام اور سکھ مت، کے نام پر یہ پاپ کئے گئے ان کی اس سے بری چھیچھالیدر نہیں ہو سکتی تھی. ان میں سے کسی بھی دھرم کا کوئی بھی سچا پریمی اس چھیچھالیدر پر خون کے آنسو بہائے بنا نہیں رہ سکتا.

روگ کے اس طرح پھیلنے کی وجہ بھی صاف ہے. روگ کی جڑیں تو ہمارے اندر تھیں ہی. پر دیش کے بٹوارے نے اس سے بھی زیادہ پنجاب کے بٹوارے نے اپنے اپنے شہر یا علاقے کو ہندستان یا پاکستان میں رکھنے کی کوشش نے اور لاکھوں مردوں، عورتوں اور بچوں کو ان کے گھروں سے نکال کر سیکڑوں میل دور بسانے کی کارروائی نے ہمارے اندر کے دبے روگ کو ابھاڑ دیا، دلوں میں سوئے ہوئے شیطانوں کو جگا دیا.

بڑی بڑی آبادیوں کو، لوگوں کے مذہب کی بنا پر ادھر سے ادھر لے جانے کی اس کارروائی سے بڑھ کر جرم دنیا کے اتہاس میں شاید ہی کوئی ہوا ہو. جو لوگ کسی بھی علاقے کے ایک مذہب کے لوگوں کو اپنے بھائی اور دوسروں کو غیر سمجھتے ہوئے آبادی کے اس بدلاؤ پر خوشی مناتے ہیں یا ایک دوسرے کو بدھائی دیتے ہیں وہ کروڑوں کے شریروں اور ان کی آتماؤں دونوں کی بربادی پر گھر پھونک تماشا دیکھ رہے ہیں. ہم اپنی انسانیت کھو بیٹھے. [illegible]

धर्म और हमारा शानदार मुल्क सब इस वक़्त विनाश के मुँह पर खड़े हुए हैं.

अब हमारे लिये असली सोचने की चीज़ इलाज है. राम-राज या धर्म-राज के सपने देखना बड़ी अच्छी बात है. पर जिस राज में अलग अलग आदमियों के साथ इस बिना पर भेद भाव बरता जावे कि एक आदमी एक भाषा में अपने पैदा करने वाले को याद करता है और दूसरा दूसरी भाषा में, एक हिन्दुस्तान में पैदा हुए श्री राम या श्रीकृष्ण को अपना आदर्श पुरुष मानता है और दूसरा अरब या फ़िलिस्तीन में पैदा हुए हज़रत मुहम्मद या हज़रत ईसा को, एक काशी को अपना सब से बड़ा तीर्थ मानता है और दूसरा काबे को, एक एक तरह के ऊपरी रीत रिवाज पालता है दूसरा दूसरी तरह के, वह न राम-राज कहा जा सकता है न धर्म-राज. पिछले महीनों के दंगों से अगर कोई एक नतीजा साफ़ निकाला जा सकता है तो वह यह है कि रीति रिवाज या नाम रूप के इन ऊपरी फ़रक़ों से हमारे चलन में कोई फ़रक़ नहीं पड़ता. इस समय हमारे सब के मुँह एक से काले हैं. किसी पाप की पहल किसने की इससे भी पाप का पापपन कम नहीं हो जाता. हां, अगर राम-राज का मतलब वह राज हो जिसमें राज की तरफ़ से इन बातों की बिना पर भेद भाव न बरता जावे, जिसमें पृथ्वी के कुल लोगों को एक कुटुम्ब समझा जावे, जिसमें सब का एक बराबर भला चेता जावे, और जिसमें ऋषियों के शब्दों में लोग सब के अन्दर एक ईश्वर को और एक ईश्वर के अन्दर सब को देखने की कोशिश करते हों,

مذہب اور ہمارا شاندار ملک سب اس وقت وناش کے منہ پر کھڑے ہوئے ہیں۔

اب ہمارے لئے اصلی سوچنے کی چیز علاج ہے۔ رام راج یا دھرم راج کے سپنے دیکھنا بڑی اچھی بات ہے۔ پر جس راج میں الگ الگ آدمیوں کے ساتھ اس بنا پر بھید بھاو برتا جاوے کہ ایک آدمی ایک بھاشا میں اپنے پیدا کرنے والے کو یاد کرتا ہے اور دوسرا دوسری بھاشا میں، ایک ہندستان میں پیدا ہوئے شری رام یا کرشن کو اپنا آدرش پرش مانتا ہے اور دوسرا عرب یا فلسطین میں پیدا ہوئے حضرت محمدؐ یا حضرت عیسیٰ کو، ایک کاشی کو اپنا سب سے بڑا تیرتھ مانتا ہے اور دوسرا کعبہ کو، ایک ایک طرح کے اوپری ریت رواج پالتا ہے دوسرا دوسری طرح کے، وہ نہ رام-راج کہا جاسکتا ہے نہ دھرم-راج۔ پچھلے مہینوں کے دنگوں سے اگر کوئی ایک نتیجہ صاف نکالا جاسکتا ہے تو وہ یہ ہے کہ ریت رواج یا نام روپ کے ان اوپری فرقوں سے ہمارے چلن میں کوئی فرق نہیں پڑتا۔ اس سمے ہمارے سب کے منہ ایک سے کالے ہیں۔ کسی پاپ کی پہل کس نے کی اس سے بھی پاپ کا پاپ پن کم نہیں ہوجاتا۔ ہاں، اگر رام-راج کا مطلب وہ راج ہو جس میں راج کی طرف سے ان باتوں کی بنا پر بھید بھاو نہ برتا جاوے، جس میں پرتھوی کے سب لوگوں کو ایک کٹمب سمجھا جاوے، جس میں سب کا ایک برابر بھلا چیتا جاوے، اور جس میں رشیوں کے شبدوں میں لوگ سب کے اندر ایک ایشور کو اور ایک ایشور کے اندر سب کو دیکھنے کی کوشش کرتے ہوں،

[किसी] धर्म के 'दस लक्षणों' का पालन होता हो, तो वह राम-राज सचमुच हमारे सब दुखों का इलाज है.

इस तरह के राज को सच्चा हिन्दू राज भी कह सकते हैं क्योंकि इसमें हिन्दू शब्द के अन्दर हर हिन्दुस्तानी शामिल है चाहे वह किसी भी देश में पैदा हुए धर्म या आचार्य को मानता हो.

इसी तरह, इसलामी राज या हुकूमते इलाहिया अगर कुरान की इस आयत पर चलने वाली हो—'ला इकराहा फ़िद्दीन' यानी दीन के मामले में किसी के साथ किसी तरह की जबरदस्ती नहीं होनी चाहिये, अगर वह हुकूमत खलीफ़ा उमर की उस हुकूमत की तरह हो जिसमें हज़रत उमर ने यरूसलम के गिरजे के आंगन में इस लिये नमाज़ पढ़ने से इनकार कर दिया था ताकि 'मेरे बाद के मुसलमान इस बहाने दूसरे की इबादतगाह पर क़ब्ज़ा न कर बैठें', या खलीफ़ा उमर सानी (दूसरे) की उस हुकूमत की तरह हो जिसमें कुछ मुसलमानों के दूसरे मजहब वालों की जमीनों में जबरदस्ती मसजिदें बना लेने पर खलीफ़ा ने उन सब मसजिदों को यह कह कर गिरवा दिया था कि मसजिद नाजायज़ क़ब्ज़े की या 'झगड़े की' ज़मीन पर नहीं बन सकती, तो ऐसी इसलामी हुकूमत सचमुच मुल्क के लिये बरकत होगी. इस तरह की सैकड़ों मिसालें इसलाम के इतिहास में भरी पड़ी हैं.

इस तरह का हिन्दू राज और इस तरह का इसलामी राज दोनों एक ही चीज़ होंगे. उनमें हाकिमों के इस धर्म को या उस धर्म को पालने से लोगों की पूरी आज़ादी, खुशहाली और बढ़ोती [illegible] इस तरह चलकर पाकिस्तान और

جس میں دھرم کے 'دس لکشنوں' کا پالن ہوتا ہو، تو وہ رام راج سچ مچ ہمارے سب دکھوں کا علاج ہے۔

اس طرح کے راج کو سچا ہندو راج بھی کہہ سکتے ہیں کیوں کہ اس میں ہندو شبد کے اندر ہر ہندوستانی شامل ہے۔ چاہے وہ کسی بھی دیش میں پیدا ہوئے دھرم یا آچاریہ کو مانتا ہو۔

اسی طرح اسلامی راج یا حکومتِ اسلامیہ اگر قرآن کی اس آیت پر چلنے والی ہو — لا اِکراہَ فِی الدِّین یعنی دین کے معاملے میں کسی کے ساتھ کسی طرح کی زبردستی نہیں ہونی چاہئے، اگر وہ حکومت خلیفہ عمر کی اس حکومت کی طرح ہو جس میں حضرت عمر نے یروشلم کے گرجے کے آنگن میں اس لئے نماز پڑھنے سے انکار کر دیا تھا تاکہ 'میرے بعد کے مسلمان اس بہانے دوسرے کی عبادت گاہ پر قبضہ نہ کر بیٹھیں'، یا خلیفہ عمر ثانی (دوسرے) کی اس حکومت کی طرح ہو جس میں کچھ مسلمانوں کے دوسرے مذہب والوں کی زمینوں میں زبردستی مسجدیں بنا لینے پر خلیفہ نے ان سب مسجدوں کو یہ کہہ کر گروا دیا تھا کہ مسجد ناجائز قبضے کی یا 'جھگڑے کی' زمین پر نہیں بن سکتی، تو ایسی اسلامی حکومت سچ مچ ملک کے لئے برکت ہوگی۔ اس طرح کی سیکڑوں مثالیں اسلام کے اتہاس میں بھری پڑی ہیں۔

اس طرح کا ہندو راج اور اس طرح کا اسلامی راج دونوں ایک ہی چیز ہوں گے۔ ان میں حاکموں کے اس دھرم کو یا اس دھرم کو پالنے سے لوگوں کی پوری آزادی، خوش حالی اور بڑھوتی میں کوئی فرق نہیں پڑ سکتا۔ اس طرح چل کر پاکستان اور

हिन्दुस्तान दोनों एक दूसरे के दोस्त बन सकते हैं और दोनों सारे मुल्क के लिये बरकत हो सकते हैं. इसकी सब से पहली सीढ़ी और सब से पहली कसौटी है दोनों जगह सब मजहबों के लोगों को बराबर का अमन आमान, बराबर की आजादी और बराबर के हक और दोनों जगह से निकल कर आए हुए लोगों को फिर से वहां ले जा कर अमन के साथ बसाने की सच्ची कोशिश. इसके खिलाफ सब तय्यारियां और सब कोशिशें हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों को मिटा देने वाली और इस सारे मुल्क को बरबाद कर देने वाली होंगी. हमें अपने अन्दर की तंगी को जीतना होगा. अपने दिलों को फिर से बड़ा बनाना होगा. यही एक हमारे रोग का असली इलाज है. हम सच्चे आदमी बनने की कोशिश करें तभी सच्चे हिन्दू, सच्चे मुसलमान या सच्चे सिख बन सकते हैं. हमारे भाग से दोनों तरफ की सरकारें और बड़े बड़े नेता इसे महसूस करने लगे हैं. दोनों तरफ से ही अब इसकी पूरी कोशिश होनी चाहिये.

(हरिजन सेवक से)

—सुन्दरलाल

ہندستان دونوں ایک دوسرے کے دوست بن سکتے ہیں اور دونوں سارے ملک کے لئے برکت ہو سکتے ہیں۔ اس کی سب سے پہلی سیڑھی اور سب سے پہلی کسوٹی ہے دونوں جگہ سب مذہبوں کے لوگوں کو برابر امن امان، برابر کی آزادی اور برابر کے حق اور دونوں جگہ سے نکل کر آئے ہوئے لوگوں کو پھر سے وہاں لے جاکر امن کے ساتھ بسانے کی سچی کوشش۔ اس کے خلاف سب تیاریاں اور سب کوششیں ہندو دھرم اور اسلام دونوں کو مٹا دینے والی اور اس سارے ملک کو برباد کردینے والی ہوں گی۔ ہمیں اپنے اندر کی تنگی کو جیتنا ہوگا۔ اپنے دلوں کو پھر سے بڑا بنانا ہوگا۔ یہی ایک ہمارے روگ کا اصلی علاج ہے۔ ہم سچے آدمی بننے کی کوشش کریں تبھی سچے ہندو، سچے مسلمان یا سچے سکھ بن سکتے ہیں۔ ہمارے بھاگ سے دونوں طرف کی سرکاریں اور بڑے بڑے نیتا اسے محسوس کرنے لگے ہیں۔ دونوں طرف سے ہی اب اس کی پوری کوشش ہونی چاہیے۔

(ہریجن سیوک سے)

— سندرلال

نیا ہند

नया हिन्द

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडिटर—

तारा चन्द, भगवान दीन, मुज़फ़्फ़र हसन, विश्वम्भर नाथ, सुन्दर लाल

मार्च १९४८

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छे रुपये साल, बाहर दस रुपया साल

एक परचा दस आने

मनेजर

'नया हिन्द'

चक बाई का बाग़, इलाहाबाद

'نیا ہند'

ہندستانی کلچر سوسائٹی کا پرچا

اڈیٹر—

تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال۔

مارچ ۱۹۴۸

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال۔ باہر دس روپیہ سال۔

ایک پرچا دس آنے۔

منیجر—

"نیا ہند"

چک بائی کا باغ، الہ آباد

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द ४ मार्च '४८ नम्बर ३

جلد ۴ مارچ ۴۸ء نمبر ۳

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہو، ہندوستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

बापू से

(नवाब रामपूर)

अँखियाँ खोलो मुख से बोलो देश की राखो लाज,
लाए हैं श्रद्धांजली हम गांधी जी महाराज.
घर घर दुख के बादल छाये सुख की नैया डूबी जाए,
भारत माता रो रो कहति हैं बन के बिगड़ गए काज.
नयनन नीर बहाता छोड़ा भगतों से काहे मुख मोड़ा,
देवें दुहाई भारतवासी जागो बापू आज.

باپو سے

(نواب رامپور)

انکھیاں کھولو مکھ سے بولو دیش کی راکھو لاج،
لائے ہیں شردھانجلی ہم گاندھی جی مہاراج۔
گھر گھر دکھ کے بادل چھائے سکھ کی نیا ڈوبی جائے،
بھارت ماتا رو رو کہتی ہیں بن کے بگڑ گئے کاج۔
نینن نیر بہاتا چھوڑا بھگتوں سے کاہے مکھ موڑا،
دیویں دہائی بھارت واسی جاگو باپو آج۔

दोनों जग में तुमरी जै हो गोली खा के अमर भए हो,
हम से बिछुड़ के स्वर्ग गए हो सुमति का पहने ताज.

जिसने बेड़ा देश का तारा भवसागर से पार उतारा,
उसको किस निरदई ने मारा बता दो हे यमराज.

इस धरती की रीत है न्यारी उसको मेटे हिंसाकारी,
तन मन धन जो तज के चाहे सदा अहिंसा राज.

हिन्दू मुसलिम अब बलहारें मन तुमरे उपदेश पै वारें,
मिलजुल सब जय हिन्द पुकारें बाजें प्रेमी बाज.

हार कहाँ यही सत्त विजय है घर घर देखलो तुमरी जै है,
पहले तो गाँधी जी देश गुरू थे जगत गुरू भयो आज.

रजापिया को सोच यही है तुमरे बिन संकोच यही है,
इस जीवन में देख न पाए फूला फला स्वराज.

دونوں جگ میں تمھری جے ہو گولی کھا کے امر بھئے ہو
ہم سے بچھڑ کے سورگ گئے ہو سمتی کا پہنے تاج.

جس نے بیڑا دیش کا تارا بھوساگر سے پار اتارا
اس کو کس نردئی نے مارا بتادو ہے یمراج.

اس دھرتی کی ریت ہے نیاری اس کو میٹے ہنسا کاری
تن من دھن جو تج کے چاہے سدا اہنسا راج.

ہندو مسلم اب بلہاریں من تمرے اپدیش پہ واریں
مل جل سب جے ہند پکاریں باجیں پریمی باج.

ہار کہاں یہی ست وجے ہے گھر گھر دیکھ لو تمری جے ہے
پہلے تو گاندھی جی دیش گرو تھے جگت گرو بھیو آج.

رجاپیا کو سوچ یہی ہے تمرے بن سنکوچ یہی ہے
اس جیون میں دیکھ نہ پائے پھولا پھلا سوراج.

जमुना-तट की राख में से

राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद

हमसे बोलने, हमें धीरज बँधाने, हमें बढ़ावा देने और हमारी रहनुमाअी करने के लिअे महात्मा गांधी आज हमारे बीच जिन्दा नहीं हैं. मगर क्या अुन्होंने अक्सर हमसे यह नहीं कहा कि शरीर अस्थायी है और अेक न अेक दिन अुसका नाश अवश्य होता है, और सिर्फ़ आत्मा ही अमर है और अुसका कभी नाश नहीं होता? क्या अुन्होंने हमसे यह नहीं कहा था कि जब तक भगवान को मेरे अिस शरीर से काम लेना होगा, तब तक वह अिसे बनाये रखेगा? हो सकता है कि अुनकी आत्मा शरीर के बन्धनों से छूटकर ज्यादा आज़ादी से काम करे और अैसे साधन पैदा करे जो अुनके अधूरे काम को पूरा कर सकें। हो सकता है कि जमुनाके किनारे पड़ी हुअी अुनकी राख में से अैसी ताक़तें अुठ खड़ी हों, जो ग़लतफ़हमी और अविश्वासके सारे कुहरे और बादलको अुड़ा दें और अैसी शान्ति और मेल क़ायम करें, जिसके लिअे वह जिये, अुन्होंने काम किया और हाय! अन्तमें हत्यारे की गोली के शिकार बने.

हिन्दू धर्म में या सच पूछिय तो अिन्सानियतमें जो महान् और श्रेष्ठ है, क्या वह अुस सबके सार और साकार रूप नहीं थे? और अिसपर क्या वह अेक हिन्दू का ही हाथ नहीं था, जिसने अुस हृदय को अपना गोली का निशाना बनाया, जो जाति, धर्म और देश की सरहदों से परे था? अिस पाप का मक़सद क्या हो सकता है?

جمنا تٹ کی راکھ میں سے

(راشٹرپتی ڈاکٹر راجیندر پرساد)

ہم سے بولنے، ہمیں دھیرج بندھانے، ہمیں بڑھاوا دینے اور ہماری رہنمائی کرنے کے لئے مہاتما گاندھی آج ہمارے بیچ زندہ نہیں ہیں۔ مگر کیا انھوں نے اکثر ہم سے یہ نہیں کہا کہ شریر استھائی ہے اور ایک نہ ایک دن اس کا ناش اوشیہ ہوتا ہے اور صرف آتما ہی امر ہے اور اس کا کبھی ناش نہیں ہوتا؟ کیا انھوں نے ہم سے یہ نہیں کہا تھا کہ جب تک بھگوان کو میرے اس شریر سے کام لینا ہوگا، تب تک وہ اسے بنائے رکھے گا؟ ہو سکتا ہے کہ اُن کی آتما شریر کے بندھنوں سے چھوٹ کر زیادہ آزادی سے کام کرے اور ایسے سادھن پیدا کرے جو ان کے ادھورے کام کو پورا کر سکیں۔ ہو سکتا ہے کہ جمنا کے کنارے پڑی ہوئی اُن کی راکھ میں سے ایسی طاقتیں اٹھ کھڑی ہوں، جو غلط فہمی اور اوشواس کے سارے کہرے اور بادل کو اڑا دیں اور ایسی شانتی اور میل قایم کریں، جس کے لئے وہ جئے، انھوں نے کام کیا اور ہائے! انت میں ہتیارے کی گولی کے شکار بنے۔

ہندو دھرم میں یا سچ پوچھئے تو انسانیت میں جو مہان اور شریشٹھ ہے، کیا وہ اس سب کے سار اور ساکار روپ نہیں تھے؟ اور اس پر کیا وہ ایک ہندو کا ہی ہاتھ نہیں تھا، جس نے اس ہردے کو اپنی گولی کا نشانہ بنایا، جو جاتی، دھرم اور دیش کی سرحدوں سے پرے تھا؟ اس پاپ کا مقصد کیا ہو سکتا ہے؟

क्या यह हिन्दू धर्म को बचाने के लिये किया गया है ? क्या जिससे हिन्दू समाज की सेवा होगी ? क्या अैसा करने से हिन्दू धर्म बचा लिया गया ? क्या जिस तरह हिन्दू समाज की सेवा हो गअी ? हिन्दू धर्म और हिन्दू समाज के तरह तरह की बातों से भरे अितिहास के बेशुमार पन्नों को देख जाअिये, आपको अैसे बुरे, और धोखे से भरे हुअे काम की दूसरी मिसाल नहीं मिलेगी. यह अुस अितिहास पर अैसा अमिट कलंक है, जो किसी तरह नहीं धुलेगा.

हम दुःखी हैं. हम भौंचक्के से हैं. तो क्या हम निराश हो जायें ? गांधी जी का शरीर अब हमें देखने को नहीं मिलेगा. अब हम अुनकी आवाज नहीं सुन सकेंगे. मगर क्या वह अेक बेश-क़ीमती मीरास हमारे लिये नहीं छोड़ गये हैं ? अपने रास्ते में आगे बढ़ाने और सहारा देने के लिये क्या अुन्होंने हमारी काफ़ी रहनुमाअी नहीं की और हमें काफ़ी प्रेरणा (तहरीक) नहीं दी है ? जिस संकट के समय अुनकी ललकार हममें फिरसे फ़र्ज़ अदा करने का भाव जगाये. अुन्होंने मिट्टी में से योद्धा पैदा किये. बेअिन्साफ़ी, दमन और गुलामी के खिलाफ़ अपनी जीवन-भर की लड़ाअी में अुन्होंने बेमिसाल हथियार का कुशलता से अुपयोग किया. अच्छाअी को क़ायम करने के लिअे हिन्दुस्तान को वैसी ही बहादुरी की, वैसे ही खतरों से बेपरवाह रहने और अुसी तरह नतीजों की तरफ़ से बेफ़िकर रहने की जरूरत है. गांधी जी ने अुसे क़ायम करने के लिअे अपनी जान दे दी. क्या हम गांधी जी के मरने के बाद उसी तरह उनके रास्ते पर नहीं चलेंगे, जैसे उनके जीते जी चलते थे ? यह गुस्सा करने या बदला लेने का समय नहीं है. गांधी जी के अुपदेश में

کیا یہ ہندو دھرم کو بچانے کے لئے کیا گیا ہے؟ کیا اس سے ہندو سماج کی سیوا ہوگی؟ کیا ایسا کرنے سے ہندو دھرم بچا لیا گیا؟ کیا اس طرح ہندو سماج کی سیوا ہوگئی؟ ہندو دھرم اور ہندو سماج کے طرح طرح کی باتوں سے بھرے اتہاس کے بے شمار پنّوں کو دیکھ جائیے، آپ کو ایسے بُرے، اور دھوکے سے بھرے ہوئے کام کی دوسری مثال نہیں ملے گی۔ یہ اُس اتہاس پر ایسا امٹ کلنک ہے، جو کسی طرح نہیں دُھلے گا۔

ہم دُکھی ہیں۔ ہم بھونچکّے سے ہیں۔ تو کیا ہم نراش ہو جائیں؟ گاندھی جی کا شریر اب ہمیں دیکھنے کو نہیں ملے گا۔ اب ہم اُن کی آواز نہیں سُن سکیں گے۔ مگر کیا وہ ایک بیش قیمتی میراث ہمارے لئے نہیں چھوڑ گئے ہیں؟ اپنے راستے میں آگے بڑھانے اور سہارا دینے کے لئے کیا اُنھوں نے ہماری کافی رہنمائی نہیں کی اور ہمیں کافی پریرنا (تحریک) نہیں دی ہے؟ اس سنکٹ کے سمے اُن کی للکار ہم میں پھر سے فرض ادا کرنے کا بھاو جگائے۔ اُنھوں نے مٹی میں سے یودھا پیدا کئے۔ بے انصافی، دمن اور غلامی کے خلاف اپنی جیون بھر کی لڑائی میں اُنھوں نے بے مثال ہتھیار کا کشلتا سے اپیوگ کیا۔ اچھائی کو قایم کرنے کے لئے ہندستان کو ویسی ہی بہادری کی، ویسے ہی خطروں سے بے پرواہ رہنے اور اُسی طرح نتیجوں کی طرف سے بے فکر رہنے کی ضرورت ہے۔ گاندھی جی نے اُسے قایم کرنے کے لئے اپنی جان دے دی۔ کیا ہم گاندھی جی کے مرنے کے بعد اسی طرح اُن کے راستے پر نہیں چلیں گے، جیسے اُن کے جیتے جی چلتے تھے؟ یہ غصہ کرنے یا بدلہ لینے کا وقت نہیں ہے۔ گاندھی جی کے اُپدیش میں

[...] से किसी के लिये भी कोयी जगह नहीं है. ज़रूरत अिस बात की है कि हम आत्मा को मारने वाली अुस संकुचित साम्प्रदायि-कता या तंग फ़िरक़ा परस्ती को जड़ से अुखाड़ फेंकने का पक्का निश्चय कर लें, जिसकी वजह से यह पाप सम्भव हुआ है. गांधी जी के सियासी, सामाजिक या आर्थिक कामों के हमेशा दो पहलू रहे हैं—नकारात्मक और स्वीकारात्मक. बुरी अिच्छाओं का अवश्य खातिमा कर देना चाहिये, ताकि अच्छी भावनायें अुनकी जगह ले सकें. फ़िरक़ेवाराना अविश्वास और झगड़े खत्म होने चाहिये और आपसी मेल-मिलाप और भाओचारा क़ायम किया जाना चाहिये. यह गांधी जी की अन्तिम अिच्छा थी. हमें अुनकी यह अिच्छा अवश्य पूरी करनी चाहिये और हम अुसे पूरी करके रहेंगे.

('हरिजन सेवक' से)

ان میں سے کسی کے لئے بھی کوئی جگہ نہیں ہے. ضرورت اِس بات کی ہے کہ ہم آتما کو مارنے والی اُس سنکچت سمپردایکتا یا تنگ فرقہ پرستی کو جڑ سے اکھاڑ پھینکنے کا پکا نشچے کریں، جس کی وجہ سے یہ پاپ سمبھو ہوا ہے. گاندھی جی کے سیاسی، سماجک اور آرتھک کاموں کے ہمیشہ دو پہلو رہے ہیں — نکاراتمک اور سویکاراتمک. بُری اِچھاؤں کا اوشیہ خاتمہ کردینا چاہیئے، تاکہ اچھی بھاونائیں اُن کی جگہ لے سکیں. فرقہ وارانہ اوشواس اور جھگڑے ختم ہونے چاہیئے اور آپسی میل ملاپ اور بھائی چارہ قایم کیا جانا چاہیئے. یہ گاندھی جی کی انتم اِچھا تھی. ہمیں اُن کی یہ اِچھا اوشیہ پوری کرنی چاہیئے اور ہم اُسے پوری کرکے رہیں گے.

('ہریجن سیوک' سے)

बापू

जवाहर लाल नेहरू

१९१६ का साल था. कोअी ३२ सालसे अूपर की बात है. तब मैंने बापू को पहले पहल देखा था, और तबसे तो अेक पूरा युग बीत गया है. लाजमी तौर पर हम बीते हुअे जमाने की तरफ देखते हैं और बेशुमार यादें ताजा हो जाती हैं. हिन्दुस्तान के अितिहास में यह कितना अनोखा जमाना रहा है! सारे अुतार चढ़ाव और हारजीतवाली अिस सच्ची कहानी ने वीर रसके काव्य का अनोखा रूप ले लिया है. हमारी मामूली जिन्दगियों को भी रोमांचक कल्पनाके प्रकाश ने छुआ, क्योंकि हम अिस जमाने में जिये, और हिन्दुस्तान के महान नाटक में कम या ज़्यादा हमने अपना पार्ट अदा किया!

यह जमाना सारी दुनिया में लड़ाअियों, क्रान्तियों और हिलाने वाली घटनाओं का जमाना रहा है. फिर भी हिन्दुस्तान की घटनाओं अुनसे बिलकुल अलग और साफ दिखाअी देती हैं, क्योंकि वह बिलकुल दूसरी ही सतह पर हुअी थीं. अगर कोअी बापू के बारे में काफी जाने बिना अिस जमाने का अध्यन (मुताला) करे, तो अुसे ताज्जुब होगा कि हिन्दुस्तान में यह सब कैसे और क्यों हुआ! अिसे समझाना कठिन है. अक्ल के ठण्डे प्रकाश की मदद से यह समझना भी कठिन है कि हममें से हरअेक मर्द या औरत ने जो कुछ किया, वह क्यों किया. कभी कभी यह होता है कि अेक शख्स

باپو

(پنڈت جواہر لال نہرو)

۱۹۱۶ کا سال تھا. کوئی ۳۲ سال سے اوپر کی بات ہے. تب میں نے باپو کو پہلے پہل دیکھا تھا، اور تب سے تو ایک پورا یگ بیت گیا ہے. لازمی طور پر ہم بیتے ہوئے زمانے کی طرف دیکھتے ہیں اور بے شمار یادیں تازہ ہو جاتی ہیں. ہندستان کے اتہاس میں یہ کتنا انوکھا زمانہ رہا ہے! سارے اتار چڑھاؤ اور ہار جیت والی اس سچی کہانی نے ویر رس کے کاویہ کا انوکھا روپ لے لیا ہے. ہماری معمولی زندگیوں کو بھی رومانچک کلپنا کے پرکاش نے چھوا، کیونکہ ہم اس زمانے میں جیے، اور ہندستان کے مہان ناٹک میں کم یا زیادہ ہم نے اپنا پارٹ ادا کیا!

یہ زمانہ ساری دنیا میں لڑائیوں، کرانتیوں اور ہلانے والی گھٹناؤں کا زمانہ رہا ہے. پھر بھی ہندستان کی گھٹنائیں ان سے بالکل الگ اور صاف دکھائی دیتی ہیں، کیونکہ وہ بالکل دوسری ہی سطح پر ہوئی تھیں. اگر کوئی باپو کے بارے میں کافی جانے بنا اس زمانے کا ادھین (مطالعہ) کرے، تو اسے تعجب ہوگا کہ ہندستان میں یہ سب کیسے اور کیوں ہوا! اسے سمجھانا کٹھن ہے. عقل کے ٹھنڈے پرکاش کی مدد سے یہ سمجھنا بھی کٹھن ہے کہ ہم میں سے ہر ایک مرد یا عورت نے جو کچھ کیا، وہ کیوں کیا. کبھی کبھی یہ ہوتا ہے کہ ایک شخص

या अेक राष्ट्र भी किसी भावना या जोश में बह कर अेक खास ढंग का काम करता है—कभी कभी अूँचा और तारीफ़ के लायक काम करता है, अक्सर नीचा और बुरा काम करता है, लेकिन वह जोश और वह भावना थोड़े समय बाद खतम हो जाती है और व्यक्ति जल्दी ही कर्म और अकर्म की अपनी मामूली सतह पर लौट आता है.

अिस ज़माने में हिन्दुस्तान के बारे में सिर्फ़ यही ताज्जुब की बात नहीं थी कि, सारे देश ने अेक अूँची सतह पर काम किया, बल्कि यह भी थी कि अुसने अितने लम्बे अरसे में लगातार कम या ज्यादा अुसी सतह पर काम किया. वह सचमुच तारीफ़ के लायक काम था. अिसे तब तक आसानी से समझाया या समझा नहीं जा सकता, जब तक हम अुस अचरज में डालने वाले व्यक्तिकी तरफ़ नहीं देखते, जिसने अिस ज़माने को बनाया है. अेक बड़ी भारी मूर्ति की तरह बापू हिन्दुस्तान के अितिहास की आधी सदी में पाँव फैलाकर खड़े हैं. वह बड़ी भारी मूर्ति शरीर की नहीं, बल्कि मन और आत्मा की है.

हम बापू के लिअे शोक करते हैं और अपने को अनाथ महसूस करते हैं. लेकिन अुनके तेजस्वी जीवन को देखते हुअे शोक मानने को है ही क्या ? सचमुच दुनिया के अितिहास में शायद ही मनुष्यों के भाग में यह बदा होगा कि वह अपने ही जीवन में अितनी बड़ी कामयाबी देख सकें. बापू हमारी कमज़ोरियों और गलतियों के लिये दुखी थे और हिन्दुस्तान को और ज्यादा अूँचाओ पर [illegible] अफ़सोस था. अुस दुख और अफ़सोस को

یا ایک راشٹر بھی کسی بھاونا یا جوش میں بہہ کر ایک خاص ڈھنگ کا کام کرتا ہے۔ کبھی کبھی اونچا اور تعریف کے لائق کام کرتا ہے، اکثر نیچا اور برا کام کرتا ہے، لیکن وہ جوش اور وہ بھاونا تھوڑے سمے بعد ختم ہو جاتی ہے اور ویکتی جلدی ہی کرم اور اکرم کی اپنی معمولی سطح پر لوٹ آتا ہے۔

اس زمانے میں ہندستان کے بارے میں صرف یہی تعجب کی بات نہیں تھی کہ سارے دیش نے ایک اونچی سطح پر کام کیا، بلکہ یہ بھی تھی کہ اس نے اتنے لمبے عرصے میں لگاتار کم یا زیادہ اسی سطح پر کام کیا۔ یہ سچ مچ تعریف کے لائق کام تھا۔ اسے تب تک آسانی سے سمجھایا یا سمجھا نہیں جا سکتا، جب تک ہم اس اچرج میں ڈالنے والے ویکتی کی طرف نہیں دیکھتے جس نے اس زمانے کو بنایا ہے۔ ایک بڑی بھاری مورتی کی طرح باپو ہندستان کے اتہاس کی آدھی صدی میں پاؤں پھیلا کر کھڑے ہیں۔ وہ بڑی بھاری مورتی شریر کی نہیں بلکہ من اور آتما کی ہے۔

ہم باپو کے لئے شوک کرتے ہیں اور اپنے کو اناتھ محسوس کرتے ہیں۔ لیکن ان کے تیجسوی جیون کو دیکھتے ہوئے شوک ماننے کو ہے ہی کیا؟ سچ مچ دنیا کے اتہاس میں شاید ہی منشیوں کے بھاگ میں یہ بدا ہوگا کہ وہ اپنے ہی جیون میں اتنی بڑی کامیابی دیکھ سکیں۔ باپو ہماری کمزوریوں اور غلطیوں سے دکھی تھے اور ہندستان کو اور زیادہ اونچائی پر [illegible]

हम आसानी से समझ सकते हैं. फिर भी कौन कह सकता है कि अुनका जीवन असफल रहा ? जिस चीज को अुन्होंने छुआ, अुसे कीमती और गुणवाली बना दिया. जो काम अुन्होंने किया अुसका काफी अच्छा नतीजा निकला—हालाँकि शायद अुतना बड़ा नहीं जितने की वह आशा करते थे. हम पर यही छाप पड़ती थी की वह जो कोअी काम हाथ में लेंगे, अुसमें सचमुच असफल हो ही नहीं सकते. गीता के अुपदेश के मुताबिक वे फलकी अिच्छा न रखते हुअे स्थितप्रज्ञकी तरह अुदासीन रह कर काम करते थे. अिसलिये काम का फल अुन्हें मिलता ही था.

कठिन कामों, हलचलों, और अेकसी प्रवृत्तिवाले सामान्य जीवन से भिन्न अनेक साहसों से भरी हुअी अुनकी लम्बी जिन्दगी में बेसुरा राग शायद ही कभी सुनाअी पड़ता था. अुनकी सारी विविध प्रवृत्तियों में ज्यादा मात्रा में एक रसता आती गअी और अुनके मुंह से निकलने वाला हर अेक शब्द और हर अेक चेष्टा अिसमें ठीक तरह से जम गअी थी, और इस तरह बेजाने ही वे पूरे कलाकार बन गये; क्योंकि अुन्होंने जीने की कला सीखी थी; अगर वे जीवन का जो ढंग अुन्होंने अख्तियार किया था, वह दुनिया के ढंग से बहुत अलग था. अिससे यह बात साफ हो गअी कि सत्य और अच्छाअी की लगन, दूसरी चीजों के अलावा, जीवन में कैसी कलात्मकता प्रदान करती है.

जैसे जैसे वह बूढ़े होते गये, अुनका शरीर अुनके भीतर की [illegible] आत्मा का सिर्फ अेक वाहन जैसा दिखाअी पड़ने लगा. अुनकी बात सुनते हुअे या अुनको देखते हुअे लोग अुनके

ہم آسانی سے سمجھ سکتے ہیں. پھر بھی کون کہہ سکتا ہو کہ اُن کا جیون اسپھل رہا؟ جس چیز کو اُنھوں نے چھوا، اُسے قیمتی اور گُن والی بنادیا. جو کام اُنھوں نے کیا اُس کا کافی اچھا نتیجہ نکلا— حالاں کہ شاید اُتنا بڑا نہیں جتنے کی وہ آشا کرتے تھے. ہم پر یہی چھاپ پڑتی تھی کہ وہ جو کوئی کام ہاتھ میں لیں گے، اُس میں سچ مچ اسپھل ہو ہی نہیں سکتے. گیتا کے اُپدیش کے مطابق وے پھل کی اِچھا نہ رکھتے ہوئے ستھت پرگیہ کی طرح اُداسین رہ کر کام کرتے تھے. اِس لئے کام کا پھل اُنھیں ملتا ہی تھا.

کٹھن کاموں، ہلچلوں، اور ایک سی پرورتی والے سامانیہ جیون سے بھن انیک ساہسوں سے بھری ہوئی اُن کی لمبی زندگی میں بے سُرا راگ شاید ہی کبھی سنائی پڑتا تھا. اُن کی ساری وِوِدھ پرورتیوں میں زیادہ ماترا میں ایک رستا آتی گئی اور اُن کے منہ سے نکلنے والا ہر ایک شبد اور ہر ایک چیشٹا اس میں ٹھیک طرح سے جم گئی تھی، اور اِس طرح بے جانے ہی وے پورے کلاکار بن گئے؛ کیونکہ اُنھوں نے جینے کی کلا سیکھی تھی؛ اگرچہ جیون کا جو ڈھنگ اُنھوں نے اختیار کیا تھا، وہ دُنیا کے ڈھنگ سے بہت الگ تھا. اِس سے یہ بات صاف ہوگئی کہ ستیہ اور اچھائی کی لگن، دوسری چیزوں کے علاوہ، جیون میں کیسی کلاتمکتا پردان کرتی ہو.

جیسے جیسے وہ بوڑھے ہوتے گئے، اُن کا شریر اُن کے بھیتر کی [illegible] خالی آتما کا صرف ایک واہن جیسا دکھائی پڑنے لگا. اُن کی بات سنتے ہوئے یا اُن کو دیکھتے ہوئے لوگ اُن کے

शरीर को भूल जाते थे, और अिसलिये जहाँ वे बैठते थे, वह मन्दिर बन जाती थी, और जहाँ वे चलते थे, वह पूजा का स्थान बन जाता था.

अुनके अवसान में भी अेक अनोखी भव्यता और कलापूर्णता थी. अुन जैसे व्यक्ति के लिये और अुनकी जैसी जिन्दगी के लिये हर दृष्टिकोण से वह अेक योग्य अन्त था. सचमुच अुस मृत्यु से अुनके जीवन का सबक अूँचा अुठ गया. मौत के समय वे अपनी शक्तियों से भरपूर थे, और प्रार्थना के वक्त अुनकी मृत्यु हुअी, जब कि बेशक वे मरना पसन्द करते. दो फ़िरक़ों के बीच अेकता क़ायम करने के लिये वह शहीद हुअे. अिसके लिअे अुन्होंने हमेशा काम किया था और खास करके पिछले अेक या ज्यादा बरसों से तो अुन्होंने अिसके लिअे लगातार मेहनत की थी. वे अचानक मर गये, जिस तरह कि सभी लोग मरना चाहेंगे. अुनके बारे में शरीर के घुलते जाने या लम्बे अरसे तक बीमार रहने की कोअी बात ही पैदा नहीं हुअी. ज्यादा अुम्र में अिन्सान की याददाश्त में जो कमी आ जाती है, वह भी अुनमें नहीं आअी. तब हम क्यों अुनके लिअे शोक करें ? हमारी याद में वे अुस 'गुरु' की तरह हमेशा रहेंगे, जिनके डग अन्त तक फुर्तीले रहे, जिनकी मुसकान दूसरों के ओंठों पर भी मुसकान ला देती थी और जिनकी आँखों से हँसी छलकी पड़ती थी. अुनकी शारीरिक और मानसिक शक्तियाँ अचूक थीं. अपने जीवन और मृत्यु दोनों में अुनकी शक्तियां अपनी चरम सीमा पर पहुँची हुअी थीं. वे हमारे मन में और जिस युग में हम रहते हैं, अुसके मन में अपनी अैसी तसवीर छोड़ गये हैं, जो

جسم کو بھول جاتے تھے، اور اس لئے جہاں وے بیٹھتے تھے، وہ جگہ مندر بن جاتی تھی، اور جہاں وے چلتے تھے، وہ پوجا کا استھان بن جاتا تھا۔

ان کے اوسان میں بھی ایک انوکھی بھویتا اور کلا پورنتا تھی۔ ان جیسے ویکتی کے لئے اور ان کی جیسی زندگی کے لئے ہر درشٹی کون سے وہ ایک یوگیہ انت تھا۔ سچ مچ اس مرتیو سے ان کے جیون کا سبق اونچا اٹھ گیا۔ موت کے سمے وے اپنی شکتیوں سے بھرپور تھے، اور پرارتھنا کے وقت ان کی مرتیو ہوئی، جب کہ بے شک وے مرنا پسند کرتے۔ دو فرقوں کے بیچ ایکتا قایم کرنے کے لئے وہ شہید ہوئے۔ اس کے لئے انھوں نے ہمیشہ کام کیا تھا اور خاص کر کے پچھلے ایک یا زیادہ برسوں سے تو انھوں نے اس کے لئے لگاتار محنت کی تھی۔ وے اچانک مر گئے، جس طرح کہ سبھی لوگ مرنا چاہیں گے۔ ان کے بارے میں شریر کے گھلتے جانے یا لمبے عرصے تک بیمار رہنے کی کوئی بات ہی نہیں پیدا ہوئی۔ زیادہ عمر میں انسان کی یادداشت میں جو کمی آجاتی ہے، وہ بھی ان میں نہیں آئی۔ تب ہم کیوں ان کے لئے شوک کریں؟ ہماری یاد میں وے اس 'گرو' کی طرح ہمیشہ رہیں گے، جن کے ڈگ انت تک پھرتیلے رہے، جن کی مسکان دوسروں کے اونٹھوں پر بھی مسکان لا دیتی تھی اور جن کی آنکھوں سے ہنسی چھلکی پڑتی تھی۔ ان کی شاریرک اور مانسک شکتیاں اچوک تھیں۔ اپنے جیون اور مرتیو دونوں میں ان کی شکتیاں اپنی چرم سیما پر پہنچی ہوئی تھیں۔ وے ہمارے من میں اور جس یگ میں ہم رہتے ہیں، اس کے من میں اپنی ایسی تصویر چھوڑ گئے ہیں، جو

कभी मिट नहीं सकती.

वह तसवीर कभी धुंधली नहीं होगी. मगर अुनकी सिद्धि अिससे बहुत ज्यादा है. अुन्होंने हमारे मन और आत्मा के तत्त्वों में प्रवेश करके अुन्हें बदला है और अुनको नये ढंग से तैयार किया है. गांधी-युग की पीढ़ी का तो अन्त हो जायगा, मगर गांधी का वह असर बना रहेगा, और हर आने वाली पीढ़ी को प्रभावित करता रहेगा, क्योंकि वह हिन्दुस्तान की आत्मा का अेक अंग बन गया है. जब अिस देश में हम रूहानी तौर पर कंगाल होते जा रहे थे, बापू हमें समृद्ध और बलवान बनाने के लिये हमारे बीच में आये. और जो ताक़त अुन्होंने हमें दी, वह अेक दिन या अेक बरस की नहीं, बल्कि अुससे हमारी राष्ट्रीय विरासत में हमेशा के लिये भारी वृद्धि हो गयी है.

बापू ने हिन्दुस्तान के लिये, दुनिया के लिये और हम ग़रीबों के लिये भी बहुत बड़ा काम किया है, और अुन्होंने अुसे आश्चर्य-जनक रीति से अच्छा किया है. अब हमारी बारी है कि हम अुन्हें या अुनकी याद को धोखा न दें, बल्कि अपनी पूरी योग्यता के साथ अुनके काम को आगे बढ़ाते रहें और जो प्रतिज्ञायें हमने अितनी बार ली हैं, अुन्हें पूरा करें.

('हरिजन सेवक से')

کبھی مٹ نہیں سکتی۔

وہ تصویر کبھی دھندلی نہیں ہوگی۔ مگر اُن کی سدھی اِس سے بہت زیادہ ہے۔ اُنھوں نے ہمارے من اور آتما کے تتووں میں پرویش کرکے اُنھیں بدلا ہے اور اُن کو نئے ڈھنگ سے تیار کیا ہے۔ گاندھی یگ کی پیڑھی کا تو انت ہو جائے گا، مگر گاندھی کا وہ اثر بنا رہے گا اور ہر آنے والی پیڑھی کو پربھاوت کرتا رہے گا، کیوں کہ وہ ہندستان کی آتما کا ایک انگ بن گیا ہے۔ جب اِس دیش میں ہم روحانی طور پر کنگال ہوتے جا رہے تھے، باپو ہمیں سمردھ اور بلوان بنانے کے لئے ہمارے بیچ میں آئے۔ اور جو طاقت اُنھوں نے ہمیں دی، وہ ایک دن یا ایک برس کی نہیں، بلکہ اُس سے ہماری راشٹریہ وراثت میں ہمیشہ کے لئے بھاری وردھی ہو گئی ہے۔

باپو نے ہندستان کے لئے، دُنیا کے لئے اور ہم غریبوں کے لئے بھی بہت بڑا کام کیا ہے، اور اُنھوں نے اُسے آشچریہ جنک ریتی سے اچھا کیا ہے۔ اب ہماری باری ہے کہ ہم اُنھیں یا اُن کی یاد کو دھوکا نہ دیں، بلکہ اپنی پوری یوگیتا کے ساتھ اُن کے کام کو آگے بڑھاتے رہیں۔ اور جو پرتگیائیں ہم نے اِتنی بار لی ہیں اُنھیں پورا کریں۔

('ہریجن سیوک' سے)

बापू ज़िन्दा हैं

(डा० सुशीला नैय्यर)

कहते हैं समुद्र-मन्थन में से अमृत निकला. हीरे-जवाहरात निकले और हलाहल जहर निकला. जहर जितना घातक था कि सारे जगत का नाश कर सकता था. अुसे क्या किया जाय? सब अिस बारे में चिन्तित थे. शिवजी आगे बढ़े और अुन्होंने वह जहर पी लिया. हिन्दुस्तान के समुन्द्र-मन्थन में से आज़ादी का अमृत निकला. साथ ही, आपस की मारकाट का, दुश्मनी का, वैर का, हिंसा का जहर भी निकला. गांधी जी ने अिसके सामने अपनी आवाज़ बुलन्द की. लोग अपनी बेहोशी में से चौंके, लेकिन जागे नहीं. पाकिस्तान के लोगों के कानों में भी वह आवाज़ पहुँची. बापू की आवाज़ अकेली गगन में गूँज रही थी—"अिस आग को बुझाओ नहीं तो दोनों अिस आग में भस्म हो जाओगे." अुनका दिल दिन-रात पुकारता था—"हे अीश्वर, अिस ज्वाला को शान्त कर, नहीं तो मुझे अिसमें भस्म होने दे. मैं अिसका साक्षी नहीं बनना चाहता."

जो बापू अनेक अुपवासों में से, अनेक हमलों से बच निकले थे, वे अपने ही अेक गुमराह पुत्र की गोली से न बच सके. पुत्र के हाथ से हलाहल का प्याला लेकर वे पी गये, ताकि हिन्दुस्तान ज़िन्दा रह सके. किसी ने कहा, जगत ने दूसरी बार अीसा को सूली पर चढ़ाना देखा है!

[illegible] मुलतान में भी. [illegible]

باپو زندہ ہیں

(ڈاکٹر سوشیلا نیّر)

کہتے ہیں سمندر منتھن میں سے امرت نکلا۔ ہیرے جواہرات نکلے اور ہلاہل زہر نکلا۔ زہر اتنا گھاتک تھا کہ سارے جگت کا ناش کر سکتا تھا۔ اسے کیا کیا جائے؟ سب اس بارے میں چنتت تھے۔ شیوجی آگے بڑھے اور انھوں نے وہ زہر پی لیا۔ ہندستان کے سمندر منتھن میں سے آزادی کا امرت نکلا۔ ساتھ ہی، آپس کی مارکاٹ کا، دشمنی کا، بَیر کا، ہنسا کا زہر بھی نکلا۔ گاندھی جی نے اس کے سامنے اپنی آواز بلند کی۔ لوگ اپنی بے ہوشی میں سے چونکے، لیکن جاگے نہیں۔ پاکستان کے لوگوں کے کانوں میں بھی وہ آواز پہنچی۔ باپو کی آواز اکیلی گگن میں گونج رہی تھی —"اس آگ کو بجھاؤ نہیں تو دونوں اس آگ میں بھسم ہو جاؤ گے۔" ان کا دل دن رات پکارتا تھا —"ہے ایشور، اس جوالا کو شانت کر، نہیں تو مجھے اس میں بھسم ہوتے دے۔ میں اس کا ساکشی نہیں بننا چاہتا۔"

جو باپو انیک اپواسوں میں سے، انیک حملوں سے بچ نکلے تھے، وہ اپنے ہی ایک گمراہ پتر کی گولی سے نہ بچ سکے۔ پتر کے ہاتھ سے ہلاہل کا پیالہ لے کر وہ پی گئے، تاکہ ہندستان زندہ رہ سکے۔ کسی نے کہا، جگت نے دوسری بار عیسیٰ کا سولی پر چڑھانا دیکھا ہے!

पुरियों की बापू को जितनी चिन्ता थी कि अुन्होंने मुझे लेसली क्रास साहब के साथ बहावलपुर भेजा था. वहाँ डिप्टी कमिश्नर की पत्नी ने बहुत प्यार से पूछा—"गांधी जी अब कैसे हैं ? हमारे पास कब आवेंगे ?" मैंने कहा—"जब आपकी हुकूमत चाहेगी."

हर जगह ग़रीब-अमीर मुसलमान प्यार से गांधी जी की तबीयत के बारे में पूछते थे. अुनके सवाल होते—अुपवास के बाद गांधी जी को ताक़त आयी या नहीं? वे क्या खाते हैं ? वग़ैरा. अुनकी मुहब्बत ज़ाहिर थी. गांधी जी अुनके दोस्त हैं, अिस बारे में अुन्हें शक नहीं था. जिन्हें अिस्लाम का पहले नम्बर का दुश्मन मुसलमान अखबारों ने कहा था, अुनके बारे में पाकिस्तान में यह भाव देखकर मुझे ख़ुशी हुअी. मैंने हर्ष से सोचा. बापू को यह सब सुनाअूँगी, तो अुन्हें कितना अच्छा लगेगा ?

और शाम को ६ बजे के क़रीब डिप्टी कमिश्नर साहब की पत्नी हाँफती, हाँफती आयीं और बोलीं—"दुनिया किधर जा रही है ? गांधी जी को गोली से मार दिया !" सुनते ही मेरे हाथ-पाँव ठण्डे पड़ गये. मैं सुन्न बैठ गअी. किसी दूसरे ने कहा—"नहीं, नहीं, यह तो अफ़वाह है. हम दिल्ली को फ़ोन करके पक्की ख़बर निकालेंगे. घबराअिये नहीं." मैंने कहा—"नहीं, मुझे अभी लाहौर जाना है. अभी गाड़ी दिलाअिये. सच्ची ख़बर हो या झूठी, मैं जल्दी-से-जल्दी दिल्ली पहुँचना चाहती हूँ."

डी०सी० ने अपनी मोटर दी. सुनसान सड़क पर मोटर पूरी रफ़्तार से चली जा रही थी. आकाश में चाँद निकल आया था. चारों तरफ़ शान्ति का राज था. मन से बारबार आवाज़ निकलती

پوریوں کی باپو کو اتنی چنتا تھی کہ انھوں نے مجھے لیسلی کراس صاحب کے ساتھ بھاولپور بھیجا تھا۔ وہاں ڈپٹی کمشنر کی پتنی نے بہت پیار سے پوچھا۔ "گاندھی جی اب کیسے ہیں؟ ہمارے پاس کب آویں گے؟" میں نے کہا۔ "جب آپ کی حکومت چاہے گی۔"

ہر جگہ غریب امیر مسلمان پیار سے گاندھی جی کی طبیعت کے بارے میں پوچھتے تھے۔ ان کے سوال ہوتے۔ اپواس کے بعد گاندھی جی کو طاقت آئی یا نہیں؟ وے کیا کھاتے ہیں؟ وغیرہ۔ ان کی محبت ظاہر تھی۔ گاندھی جی ان کے دوست ہیں، اس بارے میں انھیں شک نہیں تھا۔ جنھیں اسلام کا پہلے نمبر کا دشمن مسلمان اخباروں نے کہا تھا، ان کے بارے میں پاکستان میں یہ بھاؤ دیکھ کر مجھے خوشی ہوئی۔ میں نے ہرش سے سوچا۔ باپو کو یہ سب سناؤں گی، تو انھیں کتنا اچھا لگے گا؟

اور شام کو ۶ بجے کے قریب ڈپٹی کمشنر صاحب کی پتنی ہانپتی، ہانپتی آئیں اور بولیں۔ "دنیا کدھر جا رہی ہے؟ گاندھی جی کو گولی سے مار دیا!" سنتے ہی میرے ہاتھ پاؤں ٹھنڈے پڑ گئے۔ میں سن بیٹھ گئی۔ کسی دوسرے نے کہا۔ "نہیں، نہیں، یہ تو افواہ ہے۔ ہم دلی کو فون کرکے پکی خبر نکالیں گے۔ گھبرائیے نہیں۔" میں نے کہا۔ "نہیں، مجھے ابھی لاہور جانا ہے۔ کوئی گاڑی دلائیے۔ سچی خبر ہو یا جھوٹی، میں جلدی سے جلدی دلی پہنچنا چاہتی ہوں۔"

ڈی۔سی۔ نے اپنی موٹر دی۔ سنسان سڑک پر موٹر پوری رفتار سے چلی جا رہی تھی۔ آکاش میں چاند نکل آیا تھا۔ چاروں طرف شانتی کا راج تھا۔ من سے برابر آواز نکلتی

थी—"नहीं, बापू ज़िन्दा हैं." बुद्धि कहती थी, चार गोलियाँ चलीं, यह बात बनावटी नहीं हो सकती. मगर मनुष्य निराशा में भी आशा को पकड़े रखने का आदी है. मैंने मनको समझा दिया—चार गोलियाँ चलीं, मगर क्या जाने लगीं या न लगीं ? शायद बापू घायल हों भी, मगर वे जीवित हैं. हृदय कहता है वे मरे नहीं हैं.

सुबह ६ बजे हमारी मोटर लाहौर पहुँची. किसी से कुछ भी पूछने की हिम्मत न हुअी. डर था, कहीं कोअी कह न दे कि जो अफ़वाह सुनी थी, वह सच है. आखिर अेक दोस्त ने आकर मेरी कल्पना का महल ढा दिया. वे आँसू बहाकर हमदर्दी दिखाने लगे. अुनको क्या पता था कि अुनके तसल्ली के शब्द मुझे कितनी गहरी चोट पहुँचा रहे थे ! अितने में रेडियो पर पंडित जी की दुःखभरी आवाज़ सुनी और मेरी रही सही आशा भी टूट गअी. विश्वास हो गया कि बापू नहीं रहे. अभी तक जो आँसू दबे हुअे थे, वे थामे न थमे. हम अनाथ बन गये !

हवाअी अड्डे पर हवाई जहाज़ के अिन्तज़ार में छण छण सदियों जैसा लगने लगा. वहाँ हिन्दू-मुसलमान सब ग़मगीन थे. वहाँ के अफ़सरों ने मेरे सुभीते का ज़्यादा से ज़्यादा ख़याल रखा. अुन्होंने कहा—"हम ख़ुशी से पेशावर से स्पेशल हवाअी जहाज़ बुला लेते. लेकिन अुससे आपके वक़्त में कोई ख़ास बचत नहीं होगी." लेकिन जब हवाअी जहाज़ आ गया, तो अुन्होंने १० मिनट में अुसे रवाना करा दिया. पाअिलॉट भी ख़ूब तेज़ी से लाया. हम सवा ग्यारह के क़रीब दिल्ली के वेलिंग्डन हवाअी अड्डे पर पहुँच गये. मियाँ [illegible] भी हमारे साथ आये थे. वे और मैं तुरन्त मोटर

تھی— "نہیں، باپو زندہ ہیں۔" بدھی کہتی تھی، چار گولیاں چلیں، یہ بات بناوٹی نہیں ہو سکتی۔ مگر منشیہ نراشا میں بھی آشا کو پکڑے رکھنے کا عادی ہے۔ میں نے من کو سمجھا دیا— چار گولیاں چلیں، مگر کیا جانے لگیں نہ لگیں؟ شاید باپو گھائل ہوں بھی، مگر وہ جیوت ہیں۔ ہردے کہتا ہے وہ مرے نہیں ہیں۔

صبح ۶ بجے ہماری موٹر لاہور پہنچی۔ کسی سے کچھ بھی پوچھنے کی ہمت نہ ہوئی۔ ڈر تھا، کہیں کوئی کہہ نہ دے کہ جو افواہ سنی تھی، وہ سچ ہے۔ آخر ایک دوست نے آکر میری کلپنا کا محل ڈھا دیا۔ وے آنسو بہا کر ہمدردی دکھلانے لگے۔ ان کو کیا پتہ تھا کہ ان کے تسلی کے شبد مجھے کتنی گہری چوٹ پہنچا رہے تھے! اتنے میں ریڈیو پر پنڈت جی کی دکھ بھری آواز سنی اور میری رہی سہی آشا بھی ٹوٹ گئی۔ وشواس ہو گیا کہ باپو نہیں رہے۔ ابھی تک جو آنسو دبے ہوئے تھے، وے تھامے نہ تھمے۔ ہم اناتھ بن گئے!

ہوائی اڈے پر ہوائی جہاز کے انتظار میں کشن کشن صدیوں جیسا لگنے لگا۔ وہاں ہندو مسلمان سب غمگین تھے۔ وہاں کے افسروں نے میرے سبیتے کا زیادہ سے زیادہ خیال رکھا۔ انھوں نے کہا— "ہم خوشی سے پشاور سے اسپیشل ہوائی جہاز بلا لیتے۔ لیکن اس سے آپ کے وقت میں کوئی خاص بچت نہیں ہوگی۔" لیکن جب ہوائی جہاز آ گیا، تو انھوں نے ۱۰ منٹ میں اسے روانہ کرا دیا۔ پائیلاٹ بھی خوب تیزی سے لایا۔ ہم سوا گیارہ کے قریب دلی کے ولنگڈن ہوائی اڈے پر پہنچ گئے۔ میاں [illegible] بھی ہمارے ساتھ آئے تھے۔ وہ اور میں فوراً موٹر

में बैठकर बिड़ला-भवन की तरफ़ चले. क्रास साहब सामान के लिये ठहरे. डबडबाती आँखों से मोटर में मियां साहब ने कहा—"बापू का खून हम सबके सिर पर है. हम सबके हाथ खून से रँगे हुअे हैं." मुझे कभी अैसी चर्चाओं का खयाल आया, जिनमें भले लोगों ने बापू की टीका की थी कि वे मुसलमानों की तरफ़दारी करते हैं. अच्छे अच्छे लोग कभी कभी सोचते थे—"कहाँ तक मार खाते जावें ?" बापू का बारबार यह कहना कि बुराओी का बदला भलाई से दो, अुनके गले नहीं अुतरता था. मैंने सोचा, हममें से सबको कभी न कभी पाकिस्तान की ज्यादतियों पर गुस्सा आया था. मन में खयाल आया था कि लातों के भूत बातों से नही मानते. ये सब विचार बापू का खून करने वालों के पक्ष का समर्थन करने वाले थे. अिसलिअे बापू का खून हम सब के सिर पर था. खूनी अिससे भी आगे गया. जो अिन्सान अींट का जवाब पत्थर से देने से रोक रहा था, अुसे अुसने हटा दिया. क्या बापू के जाने के बाद हिन्दू-मुसलमानों की आँख खुलेगी ? बापू की बात हम मानेंगे ?

गाड़ी बिड़ला-भवन के पिछले दरवाजे से दाखिल हुअी. अुधर भी बहुत भीड़ थी. दूर से अेक अूँचा फूलों का ढेर दिखा. मैं भीड़ को पूरे जोर से चीरती हुअी हाँफती हाँफती वहाँ पहुँची, जहाँ पालकी रवाना होने के लिअे तैयार थी. वहाँ सरदार अपने दिवंगत स्वामी के पाँवों के पास अुदास और गंभीर बैठे थे. अुन्होंने मुझे अूपर चढ़ाया. फूलों में से बापू का चेहरा ही दिखता था. हमेशा की तरह मैंने अपना सिर अुनकी छाती पर रख दिया. बिना सोचे

(२०६)

میں بیٹھ کر برلا بھون کی طرف چلے۔ کراس صاحب سامان کے لئے ٹھہرے۔ ڈبڈباتی آنکھوں سے موٹر میں میاں صاحب نے کہا — "باپو کا خون ہم سب کے سر پر ہے۔ ہم سب کے ہاتھ خون سے رنگے ہوئے ہیں۔" مجھے کئی ایسی چرچاؤں کا خیال آیا، جن میں بھلے لوگوں نے باپو کی ٹیکا کی تھی کہ وے مسلمانوں کی طرفداری کرتے ہیں۔ اچھے اچھے لوگ کبھی کبھی سوچتے تھے — "کہاں تک مار کھاتے جاویں؟" باپو کا بار بار یہ کہنا کہ بُرائی کا بدلہ بھلائی سے دو، اُن کے گلے نہیں اُترتا تھا۔ میں نے سوچا، ہم میں سے سب کو کبھی نہ کبھی پاکستان کی زیادتیوں پر غصہ آیا تھا۔ من میں خیال آیا تھا کہ لاتوں کے بھوت باتوں سے نہیں مانتے۔ یے سب وچار باپو کا خون کرنے والوں کے پکش کا سمرتھن کرنے والے تھے۔ اس لئے باپو کا خون ہم سب کے سر پر تھا۔ خونی اس سے بھی آگے گیا۔ جو انسان اینٹ کا جواب پتھر سے دینے سے روک رہا تھا، اُسے اُس نے ہٹا دیا۔ کیا باپو کے جانے کے بعد ہندو مسلمانوں کی آنکھ کھلے گی؟ باپو کی بات ہم مانیں گے؟

گاڑی برلا بھون کے پچھلے دروازے سے داخل ہوئی۔ اُدھر بھی بہت بھیڑ تھی۔ دور سے ایک اونچا پھولوں کا ڈھیر دکھا۔ میں بھیڑ کو پورے زور سے چیرتی ہوئی ہانپتی ہانپتی وہاں پہنچی، جہاں پالکی روانہ ہونے کے لئے تیار تھی۔ وہاں سردار اپنے دِوَنگت سوامی کے پاؤں کے پاس اُداس اور گمبھیر بیٹھے تھے۔ انھوں نے مجھے اوپر چڑھایا۔ پھولوں میں سے باپو کا چہرہ ہی دکھتا تھا۔ ہمیشہ کی طرح میں نے اپنا سر اُن کی چھاتی پر رکھ دیا۔ بنا سوچے

…से भावना अुठी, अभी बापू अेक प्यार की थपत लगा देंगे, पीठ पर जोर की अेक थपकी लगा देंगे ! मगर मैंने तो अुनकी आखिरी थपकी बहावलपुर जाते समय ही ले ली थी.

सिर के पास मनु और आभा खड़ी थीं. 'सुशीला बहन ! सुशीला बहन !' पुकार कर वे फूट फूट कर रोने लगीं. आँसुओं में से मैंने देखा बापू का चेहरा पीला था, पर हमेशा की तरह शान्त था. वे गहरी नींद में सोये दिखते थे. अपने आप मेरा हाथ अुनके माथे पर चला गया. अुनके चेहरे को मैंने छुआ. वह अभी भी मुझे गरम लगा, जीवित लगा. मेरा सिर फिर से अुनके चेहरे पर झुक गया. माथा अुनके गाल को जा लगा. किसी ने पुकारा—अब सब नीचे अुतरो.

नीचे सिर की तरफ पंडितजी खड़े थे. दुःख और ग़मकी गहरी रेखायें अुनके चेहरेपर थीं. मुँह सूखा हुआ था. अुन्होंने प्यार से हम तीनों को नीचे अुतारा. पुराने जमाने में महादेव भाओी, देवदास भाओी और प्यारेलालजी तीनों बापू के साथ हुआ करते थे—त्रिमूर्ति कहलाते थे. अुसी तरह कुछ महीनों से आभा, मनु और मैं बापू के साथ त्रिमूर्ति-सी बन गओी थी. अुन तीनों में महादेव भाओी बड़े थे, अिन तीनों में मैं. दोनों लड़कियाँ दोनों तरफ से मुझे लिपट गओीं. अेक-दूसरीको सहारा देते हुओे हम आगे बढ़ीं. बापू चाहेंगे राम-धुन चले, सो रामधुन शुरू की. लेकिन बहुत चल न सकी. मणि बहन बार-बार ध्यान खींचती थीं. रोना नहीं चाहिये. सिक्ख भाअियों ने गुरु ग्रन्थसाहबके शब्द बोलने शुरू किये. हम सब अुनके पीछे रामनाम बोलने लगे.

…زور سے بھاونا اٹھی، ابھی باپو ایک پیار کی چپت لگا دیں گے، پیٹھ پر زور کی ایک تھپکی لگا دیں گے! مگر میں نے تو ان کی آخری تھپکی بہاولپور جاتے سمے ہی لے لی تھی.

سر کے پاس منو اور آبھا کھڑی تھیں. 'سشیلا بہن! سشیلا بہن!' پکار کر وے پھوٹ پھوٹ کر رونے لگیں. آنسوؤں میں سے میں نے دیکھا باپو کا چہرہ پیلا تھا، پر ہمیشہ کی طرح شانت تھا. وے گہری نیند میں سوئے دکھتے تھے. اپنے آپ میرا ہاتھ ان کے ماتھے پر چلا گیا. ان کے چہرے کو میں نے چھوا. وہ ابھی بھی مجھے گرم لگا، جیوت لگا. میرا سر پھر سے ان کے چہرے پر جھک گیا. ماتھا ان کے گال کو جا لگا. کسی نے پکارا— اب سب نیچے اترو.

نیچے سر کی طرف پنڈت جی کھڑے تھے. دکھ اور غم کی گہری ریکھائیں ان کے چہرے پر تھیں. منہ سوکھا ہوا تھا. انھوں نے پیار سے ہم تینوں کو نیچے اتارا. پرانے زمانے میں مہادیو بھائی، دیوداس بھائی اور پیارے لال جی تینوں باپو کے ساتھ ہوا کرتے تھے— ترمورتی کہلاتے تھے. اسی طرح کچھ مہینوں سے آبھا، منو اور میں باپو کے ساتھ ترمورتی سی بن گئی تھی. ان تینوں میں مہادیو بھائی بڑے تھے، ان تینوں میں میں. دونوں لڑکیاں دونوں طرف سے مجھے لپٹ گئیں. ایک دوسرے کو سہارا دیتے ہوئے ہم آگے بڑھیں. باپو چاہیں گے رام دھن چلے، سو رام دھن شروع کی. لیکن بہت چل نہ سکی. منی بہن بار بار دھیان کھینچتی تھیں. رونا نہیں چاہئے. سکھ بھائیوں نے گرو گرنتھ صاحب کے شبد بولنے شروع کئے. ہم سب ان کے پیچھے رام نام

कुछ देर बाद हम लोग पीछे बापूकी गाड़ीके पास आ गये. अुस गाड़ी के स्पर्श में बापू का स्पर्श था. दोनों तरफ़ लाखों जनता खड़ी थी. हर दरख़्तकी हर टहनी पर लोग बैठे थे. 'महात्मा गांधीजी की जय' के नारों से गगन गूँज रहा था. जैसे जीवन में वैसे मृत्यु में निन्दा और तारीफ़ से ग़ाफ़िल बापू सो रहे थे. जीवन में हम लोगों को चुप कराते थे. जयनाद से भी अुनके कानों को तकलीफ़ पहुँचती थी. वे कानोंको उँगलियों से बन्द कर लिया करते थे. कान बन्द कराने को हमें साथ रूअी रखनी होती थी. मगर आज अुसकी जरूरत न थी. किसीको चुप कराने की जरूरत न थी. सब की आँखें गीली थीं. मनमें आया, क्या अपनी भावनाओं हम आँसू बहा कर धो डालेंगे ? क्या जयघोष करके ही बैठ जायेंगे ? या क्या इन भावनाओं पर अमल भी होगा ?

शामको जुलूस जमनाजी के किनारे पहुँचा. अींटोंके अेक छोटे से चबूतरे पर लकड़ियाँ रखी थीं. जिस तख़्ते पर बापू बैठा करते थे, अुसी पर अुनकी लाश थी. अुसे लाकर लकड़ियोंपर रखा गया. ब्राह्मण ने कुछ मंत्र पढ़े. हम लोगों ने छोटी सी प्रार्थना की. देवदास भाअी ने बापू के पाँव पर सिर रखकर प्रणाम किया. अुनके बाद हम सबने प्रणाम किया. हृदय से अेक ही पुकार निकल रही थी: बापू, मेरे अपराध क्षमा करना. मेरी भूलचूक, ग़लतियाँ क्षमा करना. जीवन में कितनी बार आपको सताया, आपको मानवी पिता मानकर आपसे झगड़ा किया. आपके साथ दलीलें कीं. बापू, क्षमा करना! क्षमा करना!! क्षमा करना!!! मैं चिता से दूर हट कर बैठ गयी. मैं ज्यादा देख न सकी. मन में मैं गीता के श्लोक दोहराती रही.

کچھ دیر بعد ہم لوگ پیچھے باپو کی گاڑی کے پاس آ گئے. اس گاڑی کے سپرش میں باپو کا سپرش تھا. دونوں طرف لاکھوں جنتا کھڑی تھی. ہر درخت کی ہر ٹہنی پر لوگ بیٹھے تھے. 'مہاتما گاندھی جی کی جے' کے نعروں سے گگن گونج رہا تھا. جیسے جیون میں ویسے مرتیو میں نندا اور تعریف سے غافل باپو سو رہے تھے. جیون میں ہم لوگوں کو چپ کراتے تھے. جے ناد سے بھی ان کے کانوں کو تکلیف پہنچتی تھی. وے کانوں کو انگلیوں سے بند کر لیا کرتے تھے. کان بند کرانے کو ہمیں ساتھ روئی رکھنی ہوتی تھی. مگر آج اس کی ضرورت نہ تھی. کسی کو چپ کرانے کی ضرورت نہ تھی. سب کی آنکھیں گیلی تھیں. من میں آیا، کیا اپنی بھاونائیں ہم آنسو بہا کر دھو ڈالیں گے! کیا جےگھوش کر کے ہی بیٹھ جائیں گے؟ یا کیا ان بھاوناؤں پر عمل بھی ہوگا؟

شام کو جلوس جمنا جی کے کنارے پہنچا. اینٹوں کے ایک چھوٹے سے چبوترے پر لکڑیاں رکھی تھیں. جس تختے پر باپو بیٹھا کرتے تھے، اسی پر ان کی لاش تھی. اسے لا کر لکڑیوں پر رکھا گیا. براہمن نے کچھ منتر پڑھے. ہم لوگوں نے چھوٹی سی پرارتھنا کی. دیوداس بھائی نے باپو کے پاؤں پر سر رکھ کر پرنام کیا. ان کے بعد ہم سب نے پرنام کیا. ہردے سے ایک ہی پکار نکل رہی تھی. باپو! میرے اپرادھ کشما کرنا. میری بھول چوک، غلطیاں کشما کرنا. جیون میں کتنی بار آپ کو ستایا، آپ کو مانوی پتا مان کر آپ سے جھگڑا کیا. آپ کے ساتھ دلیلیں کیں. باپو! کشما کرنا! کشما کرنا!! کشما کرنا!!! میں چتا سے دور ہٹ کر بیٹھ گئی. میں دیکھ نہ سکی. من میں میں گیتا کے اشلوک دہراتی رہی.

बापू, आपने जो अगाध प्रेम मुझ पर बरसाया; जो अगाध विश्वास [बताया]; भूल पर भूल क्षमा की; तुच्छ अज्ञान, मतिहीन को अपनाया, सिखाया; अपनी बेटी बनाया; अुसके लायक बनाना. अेक बार बापू ने महादेवभाअी और भाअी प्यारेलाल से बातें करते हुअे कहा था— "सुशीलाने सबसे आखिरमें मेरे जीवनमें प्रवेश किया, मगर वह सबसे निकट आअी. मुझ में समा गअी है." "हे प्रभु, अुसी समय तूने मुझे क्यों न अुठा लिया! अुसके बाद सुशीला अुनसे दूर चली गअी. बापू की बात पर अुसके मन में शंका आने लगी मगर बापू ने धीरज से अुसकी शंकाओं को दूर करनेका जतन किया. अुसे अपनेसे दूर न जाने दिया. अेक बार कहने लगे—'तूने 'Hound of Heaven' की कविता पढ़ी है. तू मुझसे भाग कैसे सकती है? मैं भागने दूँ तब न?" अिस नालायक बेटी के प्रति अितना प्रेम! हे प्रभो, जो योग्यता अुनके जीवन-काल में मुझमें न थी, वह अुनके जाने के बाद दोगे?

लाश पर चन्दन की लकड़ियाँ रखने लगे. सुगन्धित सामग्री डालने लगे. मैं जाकर सरदार काका के पास बैठ गअी. घुटनों में सिर रख लिया और देख न सकी. सारा जगत चक्कर खा रहा सा लगता था. भीड़ का जोर से धक्का आया. मनु, आभा, मैं और मणि बहन पास बैठी थीं. सरदारने हमें साथ लेकर अुस भीड़ में से निकलने की कोशिश की. धक्केपर धक्का आता था. हम गिरते-पड़ते मुश्किल से बाहर निकले. अेक मिलिटरी ट्रक में बैठे. सरदार काका और सरदार [बलदेवसिंह]जी साथ थे. ट्रक चली. आभाने मेरा हाथ खींचा. दूसरे [?] की ज्वाला की लपटें आकाश को छू रही थी. हृदय-पुकार अुठा,

باپو، آپ نے جو اگادھ پریم مجھ پر برسایا؛ جو اگادھ وشواس بتایا؛ بھول پر بھول کشما کی؛ تچھ اگیان، مت ہین کو اپنایا، سکھایا؛ اپنی بیٹی بنایا؛ اس کے لائق بنانا۔ ایک بار باپو نے مہادیو بھائی اور بھائی پیارے لال سے باتیں کرتے ہوئے کہا تھا— سشیلا نے سب سے آخر میں میرے جیون میں پرویش کیا، مگر وہ سب سے نکٹ آئی۔ مجھ میں سما گئی ہے۔" ہے پربھو اسی سمے تو نے مجھے کیوں نہ اٹھا لیا! اس کے بعد سشیلا ان سے دور چلی گئی۔ باپو کی بات پر اس کے من میں شنکا آنے لگی مگر باپو نے دھیرج سے اس کی شنکاؤں کو دور کرنے کا جتن کیا۔ اسے اپنے سے دور نہ جانے دیا۔ ایک بار کہنے لگے— تو نے 'Hound of Heaven' کی کویتا پڑھی ہے۔ تو مجھ سے بھاگ کیسے سکتی ہے؟ میں بھاگنے دوں تب نہ؟ اس نالائق بیٹی کے پرتی اتنا پریم! ہے پربھو جو یوگیتا ان کے جیون کال میں مجھ میں نہ تھی، وہ ان کے جانے کے بعد دوگے؟

لاش پر چندن کی لکڑیاں رکھنے لگے۔ سگندھت سامگری ڈالنے لگے۔ میں جا کر سردار کاکا کے پاس بیٹھ گئی۔ گھٹنوں میں سر رکھ لیا اور دیکھ نہ سکی۔ سارا جگت چکر کھا رہا سا لگتا تھا۔ بھیڑ کا زور سے دھکا آیا۔ منو، آبھا، میں اور منی بہن پاس بیٹھی تھیں۔ سردار نے ہمیں ساتھ لیکر اس بھیڑ میں سے نکلنے کی کوشش کی۔ دھکے پر دھکا آتا تھا۔ ہم گرتے پڑتے مشکل سے باہر نکلے۔ ایک ملٹری ٹرک میں بیٹھے۔ سردار کاکا اور سردار بلدیو سنگھ جی ساتھ تھے۔ ٹرک چلی۔ آبھا نے میرا ہاتھ کھینچا۔ [illegible]

हैं भाओ, जिस अग्निमें हमारे दोष, हमारी कमज़ोरियाँ, भस्म हो जायें, ताकि हम बापू के बताये मार्ग पर दृढ़ता से आगे बढ़ सकें. जिस अग्निको शान्त करने में अुनके प्राण गये, वह जिस अग्नि के साथ शान्त हो. रातको बिड़ला-भवनमें जिस गद्दी पर बैठ कर बापू काम किया करते थे, अुस पर रखी बापूकी फ़ोटो के सामने बैठे मन में विचार आने लगा—कल सारी रात मोटर में बैठे हृदयसे जो आवाज़ निकल रही थी: "बापू ज़िन्दा हैं. बापू जीवित हैं.' वह क्या ग़लत थी? वह ध्वनि अितनी साफ़ थी, मगर क्या सब कल्पनाका ही खेल था? जवाब मिला: नहीं, बापू ज़िन्दा हैं. सचमुच ज़िन्दा हैं. तुम्हारे अेक अेक विचार को, अेक अेक आचार को देख रहे हैं. दूसरे दिन क्रास साहब अंग्रेज़ी कविता की कुछ लाअिनें लिख कर दे गये. अुनमें आख़िरी लाअिनों का भाव कुछ अैसा था :

"याद रखो, अब अुनके हथियार सिर्फ़ तुम्हारे हाथ और पाँव हैं. वे देखते हैं. सँभालना कि किस चीज़ को तुम छूते हो, कहाँ पर क़दम रखते हो."

अेक दफ़ा बापू को किसी ने कहा था—"आपके मानने वालों, रचनात्मक कार्य करने वालों में कुछ बेबसी-सी पाअी जाती है. अुनमें वह तेज़ नहीं, जिससे वे आपका सन्देश घर-घर, गाँव-गाँव देशभर में पहुँचावें." बापू गंभीर हो गये. कहने लगे—"हाँ, आज वे बेबस-से लगते हैं. मेरे जीवन में दूसरा हो नहीं सकता. अुन सबका व्यक्तित्व (शख़्सियत) मेरे व्यक्तित्व के नीचे दबा हुआ है. वे बात बात में मुझे पूछते हैं. मगर मेरे बाद, मैं आशा रखता हूँ, अुनमें वह [illegible] और शक्ति अपने आप आ जायेगी. अगर मेरे सन्देशमें कुछ

ہے بہنو، اِس اگنی میں ہمارے دوش، ہماری کمزوریاں بھسم ہو جائیں، تاکہ ہم باپو کے بتائے مارگ پر دڑھتا سے آگے بڑھ سکیں. جس اگنی کو شانت کرنے میں اُن کے پران گئے، وہ اس اگنی کے ساتھ شانت ہو. رات کو برلا بھون میں جس گدّی پر بیٹھ کر باپو کام کیا کرتے تھے، اُس پر رکھی باپو کی فوٹو کے سامنے بیٹھے من میں وچار آنے لگا— کل ساری رات موٹر میں بیٹھے ہردے سے جو آواز نکل رہی تھی: 'باپو زندہ ہیں. باپو جیوت ہیں.' وہ کیا غلط تھی؟ وہ دھونی اتنی صاف تھی، مگر کیا سب کلپنا کا ہی کھیل تھا؟ جواب ملا، نہیں، باپو زندہ ہیں. سچ مچ زندہ ہیں. تمہارے ایک ایک وچار کو، ایک ایک آچار کو دیکھ رہے ہیں. دوسرے دن کراس صاحب انگریزی کویتا کی کچھ لائنیں لکھ کر دے گئے. اُن میں آخری لائنوں کا بھاؤ کچھ ایسا تھا:

"یاد رکھو، اب اُن کے ہتھیار صرف تمہارے ہاتھ اور پاؤں ہیں. وے دیکھتے ہیں. سنبھالنا کہ کس چیز کو تم چھوتے ہو، کہاں پر قدم رکھتے ہو."

ایک دفعہ باپو کو کسی نے کہا تھا: "آپ کے ماننے والوں، رچناتمک کاریہ کرنے والوں میں کچھ بے بسی سی پائی جاتی ہے. اُن میں وہ تیج نہیں، جس سے وے آپ کا سندیش گھر گھر، گاؤں گاؤں دیش بھر میں پہنچاویں." باپو گمبھیر ہو گئے. کہنے لگے— 'ہاں آج وے بے بس سے لگتے ہیں. میرے جیون میں دوسرا ہو نہیں سکتا. اُن سب کا وِیکتیتو (شخصیت) میرے ویکتیتو کے نیچے دبا ہوا ہے. وے بات بات میں مجھے پوچھتے ہیں. مگر میرے بعد، میں آشا رکھتا ہوں، اُن میں [illegible] تیج اور شکتی اپنے آپ آ جاوے گی. اگر میرے سندیش میں کچھ

है, तो वह मेरे जानेके बाद मर नहीं जायगा." हम लोगोंसे अेक बार कहने लगे कि वह हमसे क्या-क्या आशाअें रखते हैं. आगाखाँ महल में अुपवास की बातें चल रही थीं. वे न रहें, तो हमारा क्या हाल होगा, हमें क्या करना होगा, वह हमें समझा रहे थे. हमसे वह भी सहन नहीं हुअी. मैं बोल अुठी—"नहीं बापू, यह सब न सुनाअिये. हमारी तो यही प्रार्थना है कि आपके देखते देखते महादेवभाअी की तरह हमें भी अीश्वर अुठाले. आपके बाद कुछ भी करने की हमारी शक्ति नहीं." बापू और ज्यादा गंभीर हो गये. बोले—"महादेव की तरह तुम सब मुझे छोड़ते जाओगे, तो मैं कहाँ जाअूँगा? अैसे विचार करना तुम्हें शोभा नहीं देता. और तुम लोगों में आज शक्ति नहीं, मगर अीसा की मृत्यु के समय अुनके शिष्यों में शक्ति थी क्या? दृढ़ विश्वास से, सच्चे हृदयसे, जो अीश्वर-परायण होकर काम करता है, अुसे अीश्वर अपने आप शक्ति दे देता है. जो अपने आपको भूल कर सचाअी की पूजा करता है उसको ईश्वर खुद रास्ता बताता है. क्या हम अपने आपको भूल सकेंगे?

('हरिजन सेवक से')

ہے تو وہ میرے جانے کے بعد مر نہیں جائے گا۔" ہم لوگوں سے ایک بار کہنے لگے کہ وہ ہم سے کیا کیا آشائیں رکھتے ہیں۔ آغا خاں محل میں اپواس کی باتیں چل رہی تھیں۔ وے نہ رہیں، تو ہمارا کیا حال ہوگا، ہمیں کیا کرنا ہوگا، وہ ہمیں سمجھا رہے تھے۔ ہم سے وہ بھی سہن نہیں ہوئی۔ میں بول اٹھی — "نہیں باپو، یہ سب نہ سنائیے۔ ہماری تو یہی پرارتھنا ہے کہ آپ کے دیکھتے دیکھتے مہادیو بھائی کی طرح ہمیں بھی ایشور اٹھا لے۔ آپ کے بعد کچھ بھی کرنے کی ہماری شکتی نہیں۔" باپو اور زیادہ گمبھیر ہوگئے۔ بولے — "مہادیو کی طرح تم سب مجھے چھوڑتے جاؤگے تو میں کہاں جاؤں گا؟ ایسے وچار کرنا تمھیں شوبھا نہیں دیتا۔ اور تم لوگوں میں آج شکتی نہیں، مگر عیسیٰ کی مرتیو کے سمے ان کے ششیوں میں شکتی تھی کیا؟ دڑھ وشواس سے، سچے ہردے سے، جو ایشور پرائن ہوکر کام کرتا ہے، اسے ایشور اپنے آپ شکتی دے دیتا ہے۔ جو اپنے آپ کو بھول کر سچائی کی پوجا کرتا ہے اس کو ایشور خود راستہ بتاتا ہے۔ کیا ہم اپنے آپ کو بھول سکیں گے؟

(ہریجن سیوک سے)

मेल या लड़ाई

(डा० भगवानदास, बनारस)*

आदमी के अन्दर प्रेम और नफ़रत मेल और लड़ाई दोनों तरफ़ झुकाव मौजूद है. प्रेम हमारे दिल के अन्दर का ख़ुदा है. नफ़रत ख़ुदी से पैदा होती है और वही हमारे अन्दर का शैतान है. यही हमारे अन्दर का सुर-असुर संग्राम है. मौलाना रूम का एक बड़ा अच्छा और मशहूर शेर है—

तू बराए वस्ल करदन आमदी.
नै बराए फ़स्ल करदन आमदी.

यानी आदमी को दुनिया में एक दूसरे से मेल और प्रेम के लिये भेजा गया था, लड़ाई और नफ़रत के लिये नहीं.

आज अब हमारे देश के बहुत से लोग एक मज़हब वालों और दूसरे मज़हब वालों में, देश की एक सरकार और दूसरी सरकार में, लड़ाई की बातें करते रहते हैं, हम यह देखें कि यूरोप के इतने बड़े महायुद्धों से वहाँ के कुछ तजरबेकार लोगों ने क्या नतीजा निकाला. कई बड़े बड़े राजकाजियों और सेनापतियों ने, जिन्होंने पहले और दूसरे महायुद्धों को खड़ा करने और चलाने में सब से ज़्यादह हिस्सा लिया था—बाद में महसूस किया कि युद्ध

---

*इस बारे में और जानना हो तो देखिये. डाक्टर भगवान दास की अंगरेज़ी किताब—'दी एसनशल युनिटी आफ आल रिलीजंस'

میل یا لڑائی

(ڈاکٹر بھگوان داس بنارس)*

آدمی کے اندر پریم اور نفرت میل اور لڑائی دونوں طرف جھکاؤ موجود ہے. پریم ہمارے دل کے اندر کا خدا ہے. نفرت خودی سے پیدا ہوتی ہے اور وہی ہمارے اندر کا شیطان ہے. یہی ہمارے اندر کا سُر اسُر سنگرام ہے. مولانا روم کا ایک بڑا اچھا اور مشہور شعر ہے—

تو برائے وصل کردن آمدی
نے برائے فصل کردن آمدی

یعنی آدمی کو دنیا میں ایک دوسرے سے میل اور پریم کے لئے بھیجا گیا تھا. لڑائی اور نفرت کے لئے نہیں.

آج جب ہمارے دیش کے بہت سے لوگ ایک مذہب والوں اور دوسرے مذہب والوں میں، دیش کی ایک سرکار اور دوسری سرکار میں، لڑائی کی باتیں کرتے رہتے ہیں، ہم یہ دیکھیں کہ یوروپ کے اتنے بڑے مہایدھوں سے وہاں کے کچھ تجربے کار لوگوں نے کیا نتیجہ نکالا. کئی بڑے بڑے راج کاجیوں اور سیناپتیوں نے. جنھوں نے پہلے اور دوسرے مہایدھوں کو کھڑا کرنے اور چلانے میں سب سے زیادہ حصہ لیا تھا بعد میں محسوس کیا کہ یدھ

---

*اس بارے میں اور جاننا ہو تو دیکھئے. ڈاکٹر بھگوان داس کی انگریزی کتاب "دی ایسنشل یونیٹی آف آل ریلیجنس".

करा भी भी इज्जत या शान या काम की चीज नहीं है.

इंगलिस्तान के एक फ़ील्ड मार्शल सर विलियम रौबर्टसन ने, जिन्होंने पहले महायुद्ध में बहुत बड़ा हिस्सा लिया था, सन् १९३० में अपनी एक तक़रीर में कहा था—

"पहले कभी लोगों ने इतने आम तौर से इस बात को नहीं समझा था जितना अब कि मुल्कों मुल्कों या क़ौमों क़ौमों के बीच के झगड़ों को तय करने के लिये लड़ाई का तरीक़ा एक ग़लत और नाकारा तरीक़ा साबित हो चुका है. दिन पर दिन यह बात ज़ाहिर होती जा रही है कि असल में कोई क़ौम ग़ैर क़ौम है ही नहीं, बल्कि सब का नफ़ा नुक़सान एक दूसरे के साथ इस तरह गुथा हुआ है कि अगर एक क़ौम या एक मुल्क को नुक़सान होता है तो कम या ज़्यादह सब को नुक़सान उठाना पड़ेगा. इसमें कोई शक नहीं कि युद्ध को रोकने के लिये सब से ज़रूरी चीज़ यह नहीं है कि बड़ी बड़ी फ़ौजें और क़ीमती हथियार रखे जावें. सब से पहली और ज़रूरी चीज़ यह है कि क़ौमों क़ौमों के आपसी व्यवहार में 'खुद ग़रज़ी' कम हो और एक दूसरे से 'डाह या जलन' मिटे. हमें उम्मीद है कि अब धीरे धीरे हम उधर को जा रहे हैं. जब तक यह बात न हो जावेगी तब तक न हथियारों की दौड़ ख़त्म होगी और न दुनिया की क़ौमों में मेल मिलाप और अमन क़ायम होगा. और जब यह बात हो जावेगी तो आसानी के साथ हथियारों का भी ख़ात्मा हो जावेगा और दुनिया मेल मिलाप और अमन के रास्ते पर भी चलने लगेगी."

यह अलफ़ाज़ एक ऐसे तजरुबेकार सेनापति के हैं जो जंग से उकता गया

تا کی بھی عزت یا شان یا کام کی چیز نہیں ہے۔

انگلستان کے ایک فیلڈ مارشل سر ولیم روبرٹسن نے، جنھوں نے پہلے مہایدھ میں بہت بڑا حصہ لیا تھا، ۱۹۳۰ء میں اپنی ایک تقریر میں کہا تھا—

"پہلے کبھی لوگوں نے اتنے عام طور سے اس بات کو نہیں سمجھا تھا جتنا اب کہ ملکوں ملکوں یا قوموں قوموں کے بیچ کے جھگڑوں کو طے کرنے کے لئے لڑائی کا طریقہ ایک غلط اور ناکارہ طریقہ ثابت ہو چکا ہے۔ دن پر دن یہ بات ظاہر ہوتی جا رہی ہے کہ اصل میں کوئی قوم غیر قوم ہے ہی نہیں، بلکہ سب کا نفع نقصان ایک دوسرے کے ساتھ اس طرح گتھا ہوا ہے کہ اگر ایک قوم یا ایک ملک کو نقصان ہوتا ہے تو کم یا زیادہ سب کو نقصان اٹھانا پڑے گا۔ اس میں کوئی شک نہیں کہ یدھ کو روکنے کے لئے سب سے ضروری چیز یہ نہیں ہے کہ بڑی بڑی فوجیں اور قیمتی ہتھیار رکھے جاویں۔ سب سے پہلی اور ضروری چیز یہ ہے کہ قوموں قوموں کے آپسی ویوہار میں 'خود غرضی' کم ہو اور ایک دوسرے سے 'ڈاہ یا جلن' مٹے۔ ہمیں امید ہے کہ اب دھیرے دھیرے ہم ادھر کو جا رہے ہیں۔ جب تک یہ بات نہ ہو جاوے گی تب تک نہ ہتھیاروں کی دوڑ ختم ہوگی اور نہ دنیا کی قوموں میں میل ملاپ اور امن قایم ہوگا۔ اور جب یہ بات ہو جاوے گی تو آسانی کے ساتھ ہتھیاروں کا بھی خاتمہ ہو جاوے گا اور دنیا میل ملاپ اور امن کے راستے پر بھی چلنے لگے گی۔"

یہ الفاظ ایک ایسے تجربہ کار سیناپتی کے ہیں جو جنگ سے اکتا گیا

था. इस सारे बयान में दो शब्द सब से मार्के के हैं - 'खुद ग़रज़ी' और 'डाह'. श्री कृष्ण ने जिन्हें शायद जंग का इससे कम तजरबा नहीं था, हजारों साल पहले कहा था कि—

"काम, क्रोध और लोभ, नरक के यही तीन दरवाज़े हैं."

युद्ध से बढ़कर नरक और कौन सा हो सकता है ?

एक दूसरे बहुत बड़े योधा ब्रिगेडियर जनरल एफ़० पी० क्रोज़ियर ने सन् १९२९ में लिखा था—

"दुनिया धीरे धीरे इस बात की तरफ़ आरही है कि अब लड़ाई के तरीक़ों से हट कर शान्ति के तरीक़ों को बरतना चाहिये. इधर ही दुनिया को आना चाहिये. दुनिया की आगे की खुशहाली का दार मदार इसी बात पर है कि आम जनता की राय को ऐसा बना दिया जावे जिससे लोगों को लड़ाई की बातें सोचने की जगह हमेशा अमन की ही बातें सोचने की आदत पड़ जावे. मैंने इस बात पर अच्छी तरह सोचा है, समझा है और तजरबा करके देखा है.

इसलिये अब मैं चाहता हूँ कि इस तरह के विचारों को फैलाऊं. मेरी जिन्दगी का बहुत सा हिस्सा लड़ने में या लड़ाई की तय्यारी करने में बीता है. अब मैं अपनी रही सही जिन्दगी दुनिया के अन्दर अमन, क़ायम करने में बिताना चाहता हूं."

यूरोप के किसी विद्वान ने कहा है—"अगर ईश्वर न होता तब भी हमें खुद अपनी खैरियत के लिये एक ईश्वर गढ़ लेना पड़ता."

खुदा या खुदा में सच्चा विश्वास ही आदमी को आदमी का

تھا. اِس سارے بیان میں دو شبد سب سے معرکے کے ہیں — 'خود غرضی' اور 'ڈاہ'. شری کرشن نے جنھیں شاید جنگ کا اِس سے کم تجربہ نہیں تھا، ہزاروں سال پہلے کہا تھا کہ—

"کام، کرودھ اور لوبھ، نرک کے یہی تین دروازے ہیں."

یدھ سے بڑھ کر نرک اور کون سا ہو سکتا ہے؟

ایک دوسرے بہت بڑے یودھا برگیڈیر جنرل ایف. پی. کروزیر نے ۱۹۲۹ء میں لکھا تھا—

"دُنیا دھیرے دھیرے اِس بات کی طرف آرہی ہے کہ اب لڑائی کے طریقوں سے ہٹ کر شانتی کے طریقوں کو برتنا چاہئے. اِدھر ہی دُنیا کو آنا چاہئے. دُنیا کی آگے کی خوشحالی کا دار مدار اِسی بات پر ہے کہ عام جنتا کی رائے کو ایسا بنا دیا جاوے جس سے لوگوں کو لڑائی کی باتیں سوچنے کی جگہ ہمیشہ امن کی ہی باتیں سوچنے کی عادت پڑ جاوے. میں نے اِس بات پر اچھی طرح سوچا ہے، سمجھا ہے اور تجربہ کرکے دیکھا ہے.

اِس لئے اب میں چاہتا ہوں کہ اِس طرح کے وچاروں کو پھیلاؤں. میری زندگی کا بہت سا حصہ لڑنے میں یا لڑائی کی تیاری کرنے میں بیتا ہے. اب میں اپنی رہی سہی زندگی دُنیا کے اندر امن قائم کرنے میں بتانا چاہتا ہوں."

یورپ کے کسی ودوان نے کہا ہے— "اگر ایشور نہ ہوتا تب بھی ہمیں خود اپنی خیریت کے لئے ایک ایشور گھڑ لینا پڑتا."

خدا یا خدا میں سچا وشواس ہی آدمی کو آدمی کا

[illegible] से बचा सकता है. ख़ुशक़िस्मती से अब साइन्स और फ़िलासोफ़ी यानी विज्ञान और दर्शन शास्त्र दोनों मिलकर नये सिरे से आदमी को बता रहे हैं कि ख़ुदा है, और ख़ुदा जितना हमारे बाहर है उससे ज्यादह हमारे अन्दर है.

कई बरस से यूरोप के बहुत से मुल्कों में इस तरह की नई नई तहरीकें चल रही हैं जिनकी ग़रज़ लोगों में राष्ट्रीयता या नैशनलिज़्म की जगह अन्तरराष्ट्रीयता, इन्टर नैशनलिज़्म, या मानवता यानी इन्सानी क़ौम की एकता के ख़याल को जगाना है. इससे आगे की नसलों में ज्यादह ऊँचे सदाचार और ऊँची रूहानियत पैदा होगी. इन तहरीकों में नई पौध के लोग ही ज्यादह हिस्सा ले रहे हैं. राष्ट्रीयता एक हद के अन्दर अच्छी चीज़ हो सकती है. पर जब राष्ट्रीयता इनसानियत के ख़िलाफ़ जाती है, जब वह इन्सानी भाईचारे पर वार करती है तो वह ज़हर और हम सब के लिये घातक बन जाती है. आज दुनिया में नैशनलिज़्म राष्ट्रीयता या क़ौमीयत के पाक जज़्बों की यही बुरी गत बन रही है. इनसानियत के ख़िलाफ़ बुरे से बुरे पाप आज इन जज़्बों के नाम पर किये और कराए जा रहे हैं.

यूरोप के समझदार लोग इस बात का जतन कर रहे हैं कि इस बारे में स्कूलों और कालिजों की पढ़ाई का ढंग बदला जावे. अपनी अपनी क़ौम की बड़ाई की डींग हांकना, दूसरी क़ौमों की बुराई करना, हँसी उड़ाना और उनसे नफ़रत पैदा करना, मारकाट, लड़ाई और अपने पड़ोसी इनसानों के साथ बदसलूकी को अच्छी चीज़ें बताकर उनकी तारीफ़ें करना, यह सब बच्चों और

سے بچا سکتا ہے. خوش قسمتی سے اب سائنس اور فلاسفی یعنی وگیان اور درشن شاستر دونوں مل کر نئے سرے سے آدمی کو بتا رہے ہیں کہ خدا ہے، اور خدا جتنا ہمارے باہر ہے اُس سے زیادہ ہمارے اندر ہے.

کئی برس سے یوروپ کے بہت سے ملکوں میں اس طرح کی نئی نئی تحریکیں چل رہی ہیں جن کی غرض لوگوں میں راشٹریتا یا نیشنلزم کی جگہ انتر راشٹریتا، انٹر نیشنلزم یا مانوتا یعنی انسانی قوم کی ایکتا کے خیال کو جگانا ہے۔ اس سے آگے کی نسلوں میں زیادہ اونچے سداچار اور اونچی روحانیت پیدا ہوگی۔ ان تحریکوں میں نئی پود کے لوگ ہی زیادہ حصہ لے رہے ہیں۔ راشٹریتا ایک حد کے اندر اچھی چیز ہوسکتی ہے۔ پر جب راشٹریتا انسانیت کے خلاف جاتی ہے، جب وہ انسانی بھائی چارے پر وار کرتی ہے تو وہ زہر اور ہم سب کے لئے گھاتک بن جاتی ہے۔ آج دنیا میں نیشنلزم راشٹریتا یا قومیت کے پاک جذبوں کی یہی بری گت بن رہی ہے۔ انسانیت کے خلاف برے سے برے پاپ آج ان جذبوں کے نام پر کئے اور کرائے جا رہے ہیں۔

یوروپ کے سمجھدار لوگ اس بات کا جتن کر رہے ہیں کہ اس بارے میں اسکولوں اور کالجوں کی پڑھائی کا ڈھنگ بدلا جاوے۔ اپنی اپنی قوم کی بڑائی کی ڈینگ ہانکنا، دوسری قوموں کی برائی کرنا، ہنسی اڑانا اور اُن سے نفرت پیدا کرنا، مار کاٹ، لڑائی اور اپنے پڑوسی انسانوں کے ساتھ بدسلوکی کو اچھی چیزیں بتا کر ان کی تعریفیں کرنا، یہ سب بچوں اور

[illegible]वालों की तालीम से निकाल दिया जावे. इनकी जगह चुन चुन कर सब की अच्छी अच्छी बातों को गिनाना, सबसे प्रेम, मेल मिलाप और सब की सेवा के भाव को फैलाना तालीम की खास ग़रज़ होनी चाहिये. सब धर्मों के उन बड़े बड़े योधाओं और विजेताओं की तारीफें करने की जगह जिन्होंने दूसरों को मारकाट कर और जलाकर नाम कमाया, हमें दुनिया भर में शान्ति और प्रेम फैलाने वालों को उजागर करना चाहिये. लोगों के दिलों और दिमाग़ों से लड़ाई मिटे तब ही दुनिया से लड़ाई मिट सकती है, हथियारों को बढ़ाने या घटाने से नहीं. धार्मिक तालीम भी अगर इसी तरह सब धर्मों की अच्छी अच्छी बातों और सब धर्म वालों के अच्छे अच्छे कामों को मिलाकर, सब को एक सी तालीम दी जावे तो मनुष्य जाति के लिये बरकत साबित हो सकती है. सब धर्म एक, सब क़ौमें एक, सारा इनसानी समाज एक, यही हमारे सुख से रहने का एक मंत्र है.

भगवान की दुनिया में सब के लिये सब तरह के खाने मौजूद हैं. जो नमकीन चाहें उनके लिये नमकीन, जो मिठाई चाहें उनके लिये मिठाई, जो अचार खटाई चाहें उनके लिये अचार खटाई, जो फल चाहें उनके लिये फल, एक दूसरे की चाह और पसन्द के लिये हम एक दूसरे के सर क्यों फोड़ें, हाँ, साफ़ नाज, निरमल पानी और शुद्ध हवा की सब को जरूरत है. इन के बिना किसी का खाना हज़म नहीं हो सकता और न बदन को लग सकता है. यही सब धर्मों के वह बुनियादी असूल, नेकी और मुहब्बत की वह बातें हैं जिनके बिना सब धर्म बेकार, सब रास्ते ग़लत.

[illegible] کی تعلیم سے نکال دیا جاوے۔ ان کی جگہ چن چن کر سب کی اچھی اچھی باتوں کو گنانا، سب سے پریم، میل ملاپ اور سب کی سیوا کے بھاؤ کو پھیلانا تعلیم کی خاص غرض ہونی چاہئے۔ سب دھرموں کے ان بڑے بڑے یودھاؤں اور وجیتاؤں کی تعریفیں کرنے کی جگہ جنھوں نے دوسروں کو مار کاٹ کر اور جلا کر نام کمایا، ہمیں دنیا بھر میں شانتی اور پریم پھیلانے والوں کو اجاگر کرنا چاہئے۔ لوگوں کے دلوں اور دماغوں سے لڑائی مٹے تب ہی دنیا سے لڑائی مٹ سکتی ہے، ہتھیاروں کو بڑھانے یا گھٹانے سے نہیں۔ دھارمک تعلیم بھی اگر اسی طرح سب دھرموں کی اچھی اچھی باتوں اور سب دھرم والوں کے اچھے اچھے کاموں کو ملا کر، سب کو ایک سی تعلیم دی جاوے تو منش جاتی کے لئے برکت ثابت ہو سکتی ہے۔ سب دھرم ایک، سب قومیں ایک، سارا انسانی سماج ایک، یہی ہمارے سکھ سے رہنے کا ایک منتر ہے۔

بھگوان کی دنیا میں سب کے لئے سب طرح کے کھانے موجود ہیں۔ جو نمکین چاہیں ان کے لئے نمکین، جو مٹھائی چاہیں ان کے لئے مٹھائی، جو اچار کھٹائی چاہیں ان کے لئے اچار کھٹائی، جو پھل چاہیں ان کے لئے پھل، ایک دوسرے کی چاہ اور پسند کے لئے ہم ایک دوسرے کے سر کیوں پھوڑیں، ہاں، صاف اناج، نرمل پانی اور شدھ ہوا کی سب کو ضرورت ہے۔ ان کے بنا کسی کا کھانا ہضم نہیں ہو سکتا اور نہ بدن کو لگ سکتا ہے۔ یہی سب دھرموں کے وہ بنیادی اصول، نیکی اور محبت کی وہ باتیں ہیں جن کے بنا سب دھرم بیکار، سب راستے غلط۔

जिस तरह बहुत ज़्यादा क़ानून लोगों की शहरी ज़िन्दगी, उनके दिलों की सुख शान्ति को मलियामेट कर देते हैं और लोगों को सैकड़ों हज़ारों छोटे बड़े सरकारी नौकरों का हर वक़्त मुँह ताकने वाले बेबस अपाहज बना देते हैं. उसी तरह बहुत ज़्यादा मज़हब, हर बात में मज़हब, आदमी के अन्दर के ख़ुदा को मार डालता है और आदमी को तरह तरह के वहमों, रीत रिवाजों और अन्धी मान्ताओं का ग़ुलाम और फूट और बरबादी का शिकार बना देता है. अच्छी से अच्छी चीज़ की भी अति या ज़्यादती बुरी होती है. सचाई और कल्यान हमेशा औसत की राह पर, बीच के रास्ते पर है.

इसीलिये बुद्ध ने अपने धर्म का नाम ही 'मज्झिम पतिपदा' यानी बीच का रास्ता रखा. यही बात किसी न किसी शब्दों में सब धर्मों में कही गई है.

चीन के महात्मा कन्फ़्यूशे की एक धर्म पुस्तक का नाम 'बीच का असूल' है.

संस्कृत की एक मशहूर कहावत है—

'बीच के रास्ते पर चलना चाहिये, किसी बात में भी अति नहीं करनी चाहिये.

श्रीकृष्ण ने गीता[1] में कहा है—

'न ज़्यादा खाने वाले को योग से फ़ायदा हो सकता है, न बिल्कुल न खाने वाले को, न ज़्यादा सोने वाले को और न ज़्यादा जागने वाले को, जो बीच की राह से खावे पिये, हमेशा [illegible]

[illegible]

جس طرح بہت زیادہ قانون لوگوں کی شہری زندگی، اُن کے دلوں کی سُکھ شانتی کو ملیامیٹ کردیتے ہیں اور لوگوں کو سیکڑوں ہزاروں چھوٹے بڑے سرکاری نوکروں کا ہر وقت مُنہ تاکنے والے بےبس اپاہج بنا دیتے ہیں، اُسی طرح بہت زیادہ مذہب، ہر بات میں مذہب، آدمی کے اندر کے خدا کو مار ڈالتا ہے اور آدمی کو طرح طرح کے وہموں، ریت رواجوں اور اندھی مانتاؤں کا غلام اور پھوٹ اور بربادی کا شکار بنا دیتا ہے. اچھی سے اچھی چیز کی بھی اتی یا زیادتی بُری ہوتی ہے. سچائی اور کلیان ہمیشہ اوسط کی راہ پر، بیچ کے راستے پر ہے.

اسی لئے بُدھ نے اپنے دھرم کا نام ہی 'مجھم پتی پدا' یعنی بیچ کا راستہ رکھا. یہی بات کسی نہ کسی شبدوں میں سب دھرموں میں کہی گئی ہے.

چین کے مہاتما کنفیوشس کی ایک دھرم پُستک کا نام 'بیچ کا اصول' ہے.

سنسکرت کی ایک مشہور کہاوت ہے—

'بیچ کے راستے پر چلنا چاہیئے، کسی بات میں بھی اتی نہیں کرنی چاہیئے.

شری کرشن نے گیتا میں کہا ہے—

'نہ زیادہ کھانے والے کو یوگ سے فائدہ ہو سکتا ہے، نہ بالکل نہ کھانے والے کو، نہ زیادہ سونے والے کو اور نہ زیادہ جاگنے والے کو، جو بیچ کی راہ سے کھاوے پیے، ہمیشہ [illegible] چلے، ٹھیک سوئے بھی اور جاگے بھی، اُس کے دکھ [illegible]

लोग से दूर होते हैं,

उपनिषद का कहना है—

"विद्वान आदमी बात करने में या काम करने में किसी में अति नहीं करता."

महाभारत में लिखा है—"समझदार वह है जिससे जब कोई बढ़ बढ़ कर बातें करे या बेजा बहस करे तो वह ख़ामोश होकर सुन ले, सह ले और कोई जवाब न दे."

क़ुरान में लिखा है—

"उस रहमान के सच्चे बन्दे वह हैं जो आजज़ी के साथ झुक कर धरती पर चलते हैं, और जब जाहिल लोग उनसे कुछ उलटी सीधी बात करते हैं तो वह जवाब देते हैं 'सलाम,"

(२५-६३)

चीनी महात्मा लाओत्से ने कहा है—"भरे हुए बरतन में पानी भरते ही रहो तो पानी जाया जायगा. कुल्हाड़ी की धार तेज़ हो जाने के बाद भी उसे सान पर घिसते ही रहो तो धार ख़त्म हो जायगी. ज़्यादा रोशनी अंधा कर देती है. ज़्यादा शोर बहरा कर देता है. ज़्यादा मसाले सवाद को मार डालते हैं. जो बीच की राह से चलता है वही टिकता है और क़ायम रहता है. अति हर बात में लानत है, और सब से ज़्यादा धन की अति"

कनफ़्यूत्से ने लिखा है—

"किसी बात में भी अति न करो."

इंजील में लिखा है—

لوگ سے دور ہوتے ہیں،

اُپنشد کا کہنا ہے—

"وِدوان آدمی بات کرنے میں یا کام کرنے میں کسی میں اتی نہیں کرتا."

مہابھارت میں لکھا ہے— "سمجھدار وہ ہے جس سے جب کوئی بڑھ بڑھ کر باتیں کرے یا بے جا بحث کرے تو وہ خاموش ہو کر سن لے، سہہ لے اور کوئی جواب نہ دے."

قرآن میں لکھا ہے—

"اس رحمان کے سچے بندے وہ ہیں، جو عاجزی کے ساتھ جھک کر دھرتی پر چلتے ہیں، اور جب جاہل لوگ اُن سے کچھ الٹی سیدھی بات کرتے ہیں تو وہ جواب دیتے ہیں 'سلام.'"

(۶۳-۲۵)

چینی مہاتما لاؤتزے نے کہا ہے— "بھرے ہوئے برتن میں پانی بھرتے ہی رہو تو پانی ضائع جائے گا. کلہاڑی کی دھار تیز ہو جانے کے بعد بھی اسے سان پر گھستے ہی رہو تو دھار ختم ہو جائے گی. زیادہ روشنی اندھا کر دیتی ہے. زیادہ شور بہرا کر دیتا ہے. زیادہ مسالے سواد کو مار ڈالتے ہیں. جو بیچ کی راہ سے چلتا ہے وہی ٹکتا ہے اور قایم رہتا ہے. اتی ہر بات میں لعنت ہے، اور سب سے زیادہ دھن کی اتی."

کنفیوشس نے لکھا ہے—

"کسی بات میں بھی اتی نہ کرو."

انجیل میں لکھا ہے—

ऐ ईश्वर ! मुझे न बहुत ग़रीब बना न मालदार. मुझे मेरी ज़रूरत भर का खाना दे. ऐसा न हो बहुत धन मिलने से मैं तुझे भूल जाऊं. या बहुत ग़रीब होने से चोरी करने लगूं और तेरे नाम पर धब्बा लगे.

जापान का शिन्तो धर्म कहता है—

" जो आदमी बीच के इन्साफ़ के रास्ते (संयम या एतदाल) से नहीं चलता वह हद से बढ़कर अपने बदन और आत्मा दोनों को नापाक करता है. देवताओं की नक़ल करने के मानी हैं क़ुदरत पर चलना. इसका मतलब है जैसे क़ुदरत करती है वैसे करना ! यानी हमारी आत्मा और हमारे विवेक (ज़मीर और अक़्ल) ने जो हदें बांध दी हैं उनके अन्दर रहना" ('जापान'—इनाज़ो नितोबे)

बुद्ध के धर्म का नाम है "मज्झिम पतिपदा" जैन धर्म का नाम है "अनेकान्तवाद." पहले फ़िक़रे का मतलब है—बीच का रास्ता, दूसरे का मतलब है—किसी एक ही राय को न चिपटना, सब के अन्दर सच को देखना.

"जिस तरह ग्वालिन मेहनत के साथ बारी बारी दोनों तरफ़ की डोरियों को खेंचती और ढीला करती है, तब सोने जैसा मक्खन निकालती है, वैसे ही समझदार आदमी हर सवाल के दोनों पहलुओं पर बार बार सोच कर आख़ीर में सचाई को पाता है." (अमृत चन्द सूरी).

क़ुरान में लिखा है—

"हद से न बढ़ो, सचमुच अल्लाह हद से बढ़ने वाले को प्यार नहीं करता."

اے ایشور! مجھے نہ بہت غریب بنا نہ مالدار. مجھے میری ضرورت بھر کا کھانا دے. ایسا نہ ہو بہت دھن ملنے سے میں تجھے بھول جاؤں. یا بہت غریب ہونے سے چوری کرنے لگوں اور تیرے نام پر دھبہ لگے.

جاپان کا شنتو دھرم کہتا ہے—

"جو آدمی بیچ کے انصاف کے راستے (سنیم یا اعتدال) سے نہیں چلتا وہ حد سے بڑھ کر اپنے بدن اور آتما دونوں کو ناپاک کرتا ہے. دیوتاؤں کی نقل کرنے کے معنی ہیں قدرت پر چلنا. اس کا مطلب ہے جیسے قدرت کرتی ہے ویسے کرنا! یعنی ہماری آتما اور ہمارے وویک (ضمیر اور عقل) نے جو حدیں باندھ دی ہیں ان کے اندر رہنا" (جاپان—اِنازو نتوبے).

بدھ کے دھرم کا نام ہے "مجھم پتی پدا" جین دھرم کا نام ہے "انے کانت واد." پہلے فقرے کا مطلب ہے—بیچ کا راستہ، دوسرے کا مطلب ہے—کسی ایک ہی رائے کو نہ چپٹنا، سب کے اندر سچ کو دیکھنا.

"جس طرح گوالن محنت کے ساتھ باری باری دونوں طرف کی ڈوریوں کو کھینچتی اور ڈھیلا کرتی ہے، تب سونے جیسا مکھن نکالتی ہے، ویسے ہی سمجھدار آدمی ہر سوال کے دونوں پہلوؤں پر بار بار سوچ کر آخر میں سچائی کو پاتا ہے" (امرت چند سوری).

قرآن میں لکھا ہے—

"حد سے نہ بڑھو، سچ مچ اللہ حد سے بڑھنے والے کو پیار نہیں کرتا."

मुहम्मद साहब की एक हदीस है—

"सब कामों में भलाई एतदाल में रहती है।"

यूनान के एक फ़िलासफ़र का कहना है—

"ठीक तवाज़ुन (बराबर की तोल) हासिल करने की कोशिश करो—तुममें बहादुरी हो, जल्दबाज़ी न हो, अहतियात हो बुज़दिली न हो, दया हो कमज़ोरी न हो, इन्साफ़ हो बदले का ख़याल न हो, मौन हो दम्भ न हो, चतुराई हो दग़ाबाज़ी न हो, मिठास हो ख़ुशामद न हो, दृढ़ता (इस्तेक़लाल) हो ज़िद न हो, सोच समझ कर काम करने की आदत हो पर काम को टालने की आदत न हो, धीरज हो बेपरवाही न हो, दोस्ती हो पर किसी की बेजा रिआयत न हो, ऊँचे आने की लगन हो पर ख़ुदग़रज़ी न हो।"

महाभारत, शान्ति पर्व, अध्याय ७० में लिखा है—'धार्मिक बनो पर तअस्सुबी (हठधर्मी) नहीं, नेक बनो पर अपनी नेकी पर इतराओ नहीं, भक्त बनो पर कट्टर नहीं, धन कमाओ पर किसी से अन्याय करके नहीं, ख़ुश रहो फूलो नहीं, मीठा बोलो पर बन कर नहीं, बहादुर हो पर डींग न हाँको, उदार हो पर फ़ज़ूल ख़र्च न हो, दान दो पर बिना देखे भाले नहीं, निडर होकर बोलो पर कठोर वचन न बोलो, दोस्ती करो पर बुरे लोगों से नहीं, लड़ो पर अपने दोस्तों से नहीं, ख़बरें सुनो पर बेएतबारों से नहीं, अपना भला चेतो पर दूसरों को नुक़सान पहुँचा कर नहीं, सलाह लो पर मूर्खों से नहीं, नेक कामों की तारीफ़ करो पर अपने नेक कामों की नहीं, साफ़सुथरे रहो पर [illegible] नहीं, स्वाद वाली चीज़ें खाओ पर तन्दुरुस्ती के ख़िलाफ़ नहीं, अच्छों की इज़्ज़त करो पर उस पर घमण्ड न करो,

محمد صاحب کی ایک حدیث ہے—

"سب کاموں میں بھلائی اعتدال میں رہتی ہے۔"

یونان کے ایک فلاسفر کا کہنا ہے—

"ٹھیک توازن (برابر کی تول) حاصل کرنے کی کوشش کرو—تم میں بہادری ہو، جلدبازی نہ ہو، احتیاط ہو بزدلی نہ ہو، دیا ہو کمزوری نہ ہو، انصاف ہو بدلے کا خیال نہ ہو، مون ہو دمبھ نہ ہو، چترائی ہو دغابازی نہ ہو، مٹھاس ہو خوشامد نہ ہو، دڑھتا (استقلال) ہو ضد نہ ہو، سوچ سمجھ کر کام کرنے کی عادت ہو پر کام کو ٹالنے کی عادت نہ ہو، دھیرج ہو بےپرواہی نہ ہو، دوستی ہو پر کسی کی بےجا رعایت نہ ہو، اونچے جانے کی لگن ہو پر خودغرضی نہ ہو۔"

مہابھارت، شانتی پرو ادھیائے ۷۰ میں لکھا ہے—"دھارمک بنو پر تعصبی (ہٹ دھرمی) نہیں، نیک بنو پر اپنی نیکی پر اتراؤ نہیں، بھگت بنو پر کٹر نہیں، دھن کماؤ پر کسی سے انیائے کرکے نہیں، خوش رہو پھولو نہیں، میٹھا بولو پر بن کر نہیں، بہادر ہو پر ڈینگ نہ ہانکو، اُدار ہو پر فضول خرچ نہ ہو، دان دو پر بنا دیکھے بھالے نہیں، نڈر ہوکر بولو پر کٹھور بچن نہ بولو، دوستی کرو پر برے لوگوں سے نہیں، لڑو پر اپنے دوستوں سے نہیں، خبریں سنو پر بےاعتباروں سے نہیں، اپنا بھلا چیتو پر دوسروں کو نقصان پہنچا کر نہیں، صلاح لو پر مورکھوں سے نہیں، نیک کاموں کی تعریف کرو پر اپنے نیک کاموں کی نہیں، صاف ستھرے رہو پر [illegible] نہیں، سواد والی چیزیں کھاؤ پر تندرستی کے خلاف نہیں، اچھوں کی عزت کرو پر اس پر گھمنڈ نہ کرو،

भरोसा करो धोखा मत दो, दूसरों को खुश रखो खुशामद न करो, मदद करो पर बेमौक़े नहीं, नाराज़गी ज़ाहिर करो पर बिना काफ़ी सबब के नहीं, भगवान की पूजा करो पर दिखावा करके नहीं।"

हर सवाल के दो पहलू होते हैं, समझदारी दोनों को समझकर चलने में होती है.

'हिन्दू मुस्लिम एकता'

पंडित सुन्दरलाल के
चार लेकचर जो उन्होंने
सेन्ट्रल कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर
की दावत पर ग्वालियर में दिये.

सौ सफ़े की किताब की क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.
किताब नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में मिल सकती है.

—मैनेजर "नया हिन्द"
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

بھروسا کرو دھوکا مت دو، دوسروں کو خوش رکھو خوشامد نہ کرو، مدد کرو پر بے موقعے نہیں، ناراضگی ظاہر کرو پر بنا کافی سبب کے نہیں، بھگوان کی پوجا کرو پر دکھاوا کر کے نہیں۔"

ہر سوال کے دو پہلو ہوتے ہیں، سمجھداری دونوں کو سمجھ کر چلنے میں ہوتی ہے۔

ہندو مسلم ایکتا

پنڈت سندر لال کے
چار لیکچر جو انھوں نے سنٹرل کنسیلیٹری بورڈ گوالیر کی دعوت پر گوالیر میں دئے۔

سو صفحے کی کتاب کی قیمت صرف بارہ آنے
کتاب ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے۔

منیجر "نیا ہند"
۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد

बारह फ़रवरी

(श्री मधुकर खेर)

आज महात्मा गाँधी की मृत्यु हुए तेरह दिन हो चुके हैं. आज सुबह से ही सूरज नहीं निकलता है—शायद उसे भी हमारी बेवकूफ़ियों पर शर्म आ रही है. सूरज हमारे मुल्क में देवता माना जाता है; हम उसकी पूजा करते हैं और आज जब हमने अपना एक हीरा अपनी बेवकूफ़ी से खो दिया, वह भी शरमिन्दा है. इकतीस जनवरी का सूरज ग़ुस्से से लाल था. एक बाप अपने बेटे की बेजा हरकतों से नाराज़ था—पर आज वह हमें हमदर्दी से देख रहा है. गाँधी जी के चेहरे पर जो दया और माफ़ी के भाव थे उसने सूरज पर भी असर किया और वह ग़ुस्से से लाल होने के बजाय इतना शरमिन्दा है कि आज बादलों में ही छिपा है.

आज पूरे मुल्क में अफ़सोस और चिन्ता की लहर फैली हुई है. गाँधी जी हमें राह दिखाते थे; हमें सहारा देते थे. उनको खोने के बाद मुल्क अनाथ हो गया है; उसकी हालत यतीमों सी हो गयी है और यह सवाल उठता है कि आगे क्या होगा, हमें आगे क्या करना पड़ेगा. पिछले दिनों मुल्क ने रंज मनाया पर आज उसके सामने एक ज़बरदस्त सवाल आ गया है. आज हर हिन्दुस्तानी के चेहरे पर एक ही सवाल लिखा है—"आगे क्या होगा, हमें आगे क्या करना पड़ेगा?" यह सवाल हमें आज परेशान कर रहा है. एक हैवान ने (जिसे इंसान कहना "इंसानियत" को दफ़नाना ही है) हमारी क़ौम

بارہ فروری

(شری مدھوکر کھیر)

آج مہاتما گاندھی کی مرتیو ہوئے تیرہ دن ہو چکے ہیں. آج صبح سے ہی سورج نہیں نکلتا ہے— شاید اُسے بھی ہماری بے وقوفیوں پر شرم آ رہی ہے. سورج ہمارے ملک میں دیوتا مانا جاتا ہے؛ ہم اُس کی پوجا کرتے ہیں اور آج جب ہم نے اپنا ایک ہیرا اپنی بے وقوفی سے کھو دیا، وہ بھی شرمندہ ہے. اکتیس جنوری کا سورج غصے سے لال تھا. ایک باپ اپنے بیٹے کی بے جا حرکتوں سے ناراض تھا— پر آج وہ ہمیں ہمدردی سے دیکھ رہا ہے. گاندھی جی کے چہرے پر جو دیا اور معافی کے بھاو تھے اُس نے سورج پر بھی اثر کیا اور وہ غصے سے لال ہونے کے بجائے اتنا شرمندہ ہے کہ آج بادلوں میں ہی چھپا ہے.

آج پورے ملک میں افسوس اور چنتا کی لہر پھیلی ہوئی ہے. گاندھی جی ہمیں راہ دکھاتے تھے؛ ہمیں سہارا دیتے تھے. اُن کو کھونے کے بعد ملک اناتھ ہو گیا ہے؛ اُس کی حالت یتیموں سی ہو گئی ہے اور یہ سوال اُٹھتا ہے کہ آگے کیا ہوگا، ہمیں آگے کیا کرنا پڑے گا. پچھلے دنوں ملک نے رنج منایا پر آج اُس کے سامنے ایک زبردست سوال آ گیا ہے. آج ہر ہندوستانی کے چہرے پر ایک ہی سوال لکھا ہے— "آگے کیا ہوگا، ہمیں آگے کیا کرنا پڑے گا؟" یہ سوال ہمیں آج پریشان کر رہا ہے. ایک حیوان نے (جسے انسان کہنا "انسانیت" کو دفنانا ہی ہے) ہماری قوم

की पीठ पर छुरी मारी ! क़ौम तड़प उठी और उसने कराह कर करवट ली है. यह नई करवट कैसी होगी ? नई तवारीख़ कैसी बनेगी—यह हर आदमी का एक समस्या हो गयी है. गाँधी जी की क़ुरबानी ने हमें एक ठोकर मारी है और इससे हमें जागना है. आज बारह फ़रवरी को हम गाँधी जी की काया को अन्तिम प्रणाम कर रहे हैं पर इसके आगे हमें बहुत कुछ करना है. इसी दिन से हमें अपनी तवारीख़ बदलनी पड़ेगी और एक नया क़दम उठाना पड़ेगा. आज ही सुबह एक अपढ़ व्यक्ति ने मुझसे पूछा—"बाबू अब गाँधी राज रहेगा या नहीं ?" मैं सोचने लगा कि क्या हमने गाँधी राज बनाया. क़ौम ने गाँधी जी से बहुत पाया पर बदले में गाँधी जी को कुछ न दे सकी. यह एक ऐसा सत्य है जो मानना ही पड़ेगा, मुझे मौलाना आज़ाद के शब्द याद आते हैं—"गाँधी जी का सफ़र ख़त्म हुआ पर क़ौम का सफ़र अब शुरू हुआ है." गाँधी जी ने अपने आपको क़ौम के लिये, मुल्क के लिये, इंसानियत के लिये क़ुरबान कर डाला. उनकी यह क़ुरबानी तभी कामयाब होगी जब इस से हमारी क़ौम, हमारा मुल्क अपने में नई ज़िन्दगी महसूस करे. ये विचार मेरे दिमाग़ में बढ़ते ही गये. ऐसे विचार हर आदमी के दिमाग़ में थे. मुझे ऐसा महसूस हुआ कि यह बारह फ़रवरी हमें नया संदेश दे रही, नई रोशनी दिखा रही है और इस नई राह पर चलने से ही क़ौम बच सकती है. हम अपने राष्ट्रपिता को न रख सके—यह एक अमिट कलंक हमारे माथे पर लग गया है पर अब इस कलंक को हमें मिटाना ही पड़ेगा. जिस तवारीख़ में यह लिखा जायेगा कि "इसने (यानी हमने) अपने राष्ट्रपिता की हत्या की

پیٹھ پر چھری ماری! قوم تڑپ اٹھی اور اس نے کراہ کر کروٹ لی ہے۔ یہ نئی کروٹ کیسی ہوگی؟ نئی تاریخ کیسی بنے گی— ہر آدمی کی ایک سمسیا ہو گئی ہے۔ گاندھی جی کی قربانی نے ہمیں ایک ٹھوکر ماری ہے اور اس سے ہمیں جاگنا ہے۔ آج بارہ فروری کو ہم گاندھی جی کی کایا کو انتم پرنام کر رہے ہیں پر اس کے آگے ہمیں بہت کچھ کرنا ہے۔ اسی دن سے ہمیں اپنی تاریخ بدلنی پڑے گی اور ایک نیا قدم اٹھانا پڑے گا۔ آج ہی صبح ایک اَن پڑھ ویکتی نے مجھ سے پوچھا— "بابو اب گاندھی راج رہے گا یا نہیں؟" میں سوچنے لگا کہ کیا ہم نے گاندھی راج بنایا۔ قوم نے گاندھی جی سے بہت پایا پر بدلے میں گاندھی جی کو کچھ نہ دے سکی۔ یہ ایک ایسا سچ ہے جو ماننا ہی پڑے گا۔ مجھے مولانا آزاد کے شبد یاد آتے ہیں— "گاندھی جی کا سفر ختم ہوا پر قوم کا سفر اب شروع ہوا ہے۔" گاندھی جی نے اپنے آپ کو قوم کے لئے، ملک کے لئے، انسانیت کے لئے قربان کر ڈالا۔ ان کی یہ قربانی تبھی کامیاب ہوگی جب اس سے ہماری قوم، ہمارا ملک اپنے میں نئی زندگی محسوس کرے۔ یہ وچار میرے دماغ میں بڑھتے ہی گئے۔ ایسے وچار ہر آدمی کے دماغ میں تھے۔ مجھے ایسا محسوس ہوا کہ یہ بارہ فروری ہمیں نیا سندیش دے رہی، نئی روشنی دکھا رہی ہے اور اس نئی راہ پر چلنے سے ہی قوم بچ سکتی ہے۔ ہم اپنے راشٹرپتا کو نہ رکھ سکے— یہ ایک اَمِٹ کلنک ہمارے ماتھے پہ لگ گیا ہے پر اب اس کلنک کو ہمیں مٹانا ہی پڑے گا۔ جس تاریخ میں یہ لکھا جائے گا "اس نے (یعنی ہم نے) اپنے راشٹرپتا کی ہتیا

[illegible] ." इसीमें यह भी लिखा जाये—"इन्हीं लोगों ने (हम लोगों ने) अपने राष्ट्र पिता के उसूलों को माना और दुनिया को नई राह दिखायी."—हमने अब तक गाँधी जी की मृत्यु पर मातम मनाया. हम सोचते थे कि हमने गाँधी को खो दिया पर आज ऐसा महसूस होता है कि हमने गाँधी जी को फिर से पा लिया और वह हमारे दिल में बैठे हमें नई राह दिखा रहे हैं. हमारी आत्मा कहती है कि हमें इसी नई राह पर चलना पड़ेगा और इसीमें देश की, दुनिया की भलाई है.

मैं सोच रहा था कि गाँधी जी की मृत्यु से हमारे देशकी जिम्मेदारियाँ बढ़ गयी हैं. हमने देखा कि हैवानियत की "ज़हरीली हवा" ने "इंसानियत" की पीठ में छुरा भोंक दिया पर अब हमारा यह फ़र्ज़ हो जाता है कि हम दुनिया को दिखा दें कि "इंसानियत" अमर है और उसे दुनिया की कोई ताक़त नहीं मार सकती. वह अमर है, अमिट है, अजेय है. उसके साथ ही मेरे कानों में गूँजने लगा—"हमारा मुल्क शानदार था, नेता भी शानदार था. वह हमारे दिलों में रहेगा. इस लिये हम ऐसा कुछ न करें जो उसकी शान के खिलाफ़ हो." इसके साथ ही मुझे पिछले दिनों पूरे देश में मची मार-काट की याद आ गयी. मैं सोचने लगा कि यह हमारी ग़लती रही कि हम अफ़सोस और गुस्से के कारण गाँधी जी के संदेश को भूल गये. इसके साथ ही मैं सोचने लगा कि गाँधी जी एक अवतार थे. उन्होंने ईसा, हज़रत मोहम्मद, बुद्ध की तरह अपना काम किया और चले गये पर आज ईसा भी जीवित हैं; हज़रत मोहम्मद और बुद्ध भी जीवित हैं. गाँधी भी जीवित रहेंगे. उन्हें मिटाने का ख़्वाब देखने वाले को तो

کر دکھائی۔" اسی میں یہ بھی لکھا جائے — "انھیں لوگوں نے (ہم لوگوں نے) اپنے راشٹر پیتا کے اصولوں کو مانا اور دنیا کو نئی راہ دکھائی۔" — ہم نے اب تک گاندھی جی کی مرتیو پر ماتم منایا۔ ہم سوچتے تھے کہ ہم نے گاندھی کو کھو دیا پر آج ایسا محسوس ہوتا ہے کہ ہم نے گاندھی جی کو پھر سے پا لیا اور وہ ہمارے دل میں بیٹھے ہمیں نئی راہ دکھا رہے ہیں۔ ہماری آتما کہتی ہے کہ ہمیں اسی نئی راہ پر چلنا پڑے گا اور اسی میں دیش کی، دنیا کی بھلائی ہے۔

میں سوچ رہا تھا کہ گاندھی جی کی مرتیو سے ہمارے دیش کی ذمے داریاں بڑھ گئی ہیں۔ ہم نے دیکھا کہ حیوانیت کی "زہریلی ہوا" نے "انسانیت" کی پیٹھ میں چھرا بھونک دیا پر اب ہمارا یہ فرض ہو جاتا ہے کہ ہم دنیا کو دکھا دیں کہ "انسانیت" اٹل ہے اور اسے دنیا کی کوئی طاقت نہیں مار سکتی۔ وہ امر ہے، امِٹ ہے، اجیہ ہے۔ اس کے ساتھ ہی میرے کانوں میں گونجنے لگا — "ہمارا ملک شان دار تھا، نیتا بھی شان دار تھا۔ وہ ہمارے دلوں میں رہے گا۔ اس لئے ہم ایسا کچھ نہ کریں جو اس کی شان کے خلاف ہو۔" اس کے ساتھ ہی مجھے پچھلے دنوں پورے دیش میں مچی مار کاٹ کی یاد آ گئی۔ میں سوچنے لگا کہ یہ ہماری غلطی رہی کہ ہم افسوس اور غصے کے کارن گاندھی جی کے سندیش کو بھول گئے۔ اس کے ساتھ ہی میں سوچنے لگا کہ گاندھی جی ایک اوتار تھے۔ انھوں نے عیسیٰ، حضرت محمد، بُدھ کی طرح اپنا کام کیا اور چلے گئے پر آج عیسیٰ بھی جیوت ہیں؛ حضرت محمد اور بدھ بھی جیوت ہیں۔ گاندھی بھی جیوت رہیں گے۔ انھیں مٹانے کا خواب دیکھنے والے کو تو

[illegible] दिन में भी तारे नज़र आते होंगे.

[illegible] गाँधी धर्म के लिये मरे. उन्होंने हमें 'इंसानियत' का [illegible] पढ़ाया. उन्होंने हमें सेवा और मुहब्बत का संदेश दिया. हम [illegible] उन्हें समझ न सके और इसीलिये हमने उन्हें खो दिया, पर [illegible] कहती है कि यदि अब भी हम उन्हें न समझ सके तो [illegible] हस्ती भी मिट जायेगी. गुस्सा और नफ़रत इन दो राक्षसों ने हमारे घर में आग लगा दी है पर हमें ही इस आग को बुझाना होगा. हमारे राष्ट्रपिता ने मुहब्बत और सेवा को अपनी ज़िन्दगी का मक़सद बनाया. उसने इंसान की पूजा को भगवान की पूजा माना. वह नोआखाली गया; उसने उपवास किये; गालियाँ सहीं और अन्त में मर मिटा पर अपनी राह न छोड़ी. मुझे उसका एक भजन याद आ गया—"will not be a traitor to God to please the whole world." हमारे बापू का जीवन उनके इस भजन की सार्थकता प्रमाणित करता है. हमारे बापू ने, हमारे नेता ने सत्य को समझा था; भगवान को समझा था और इसीलिये उन्होंने कहा था—"I Have no God to serve but truth." मैं सोचने लगा कि हमारे मुल्क में इंसानियत और हैवानियत की जो लड़ाई चली है; उसमें हमने गाँधी जी को खो दिया पर इस से हमें निराश नहीं होना चाहिये. हम अपनी ज़िन्दगी में, अपनी क़ौम में सेवा और मुहब्बत को अपनाना पड़ेगा. हम सत्य की राह पर चलना पड़ेगा चाहे पूरी दुनिया ही क्यों न हमारा विरोध करे. अहिंसा को नापने के लिये सत्य का गज़ छोटा न [illegible] यह हमारा [illegible] नोआखाली में, बिहार में, पंजाब में,

شاید دن میں بھی تارے نظر آتے ہوں گے۔

مہاتما گاندھی دھرم کے لئے مرے۔ انھوں نے ہمیں "انسانیت" کا پاٹھ پڑھایا۔ انھوں نے ہمیں سیوا اور محبت کا سندیش دیا۔ ہم ابھاگے انھیں سمجھ نہ سکے اور اسی لئے ہم نے انھیں کھو دیا، پر میری آتما کہتی ہے کہ یدی اب بھی ہم انھیں نہ سمجھ سکے تو ہماری ہستی بھی مٹ جائے گی۔ غصہ اور نفرت ان دونوں راکشسوں نے ہمارے گھر میں آگ لگا دی ہے پر ہمیں ہی اس آگ کو بجھانا ہوگا۔ ہمارے راشٹر پتا نے محبت اور سیوا کو اپنی زندگی کا مقصد بنایا۔ اس نے انسان کی پوجا کو بھگوان کی پوجا مانا۔ وہ نواکھالی گیا؛ اس نے اپواس کئے؛ گالیاں سہیں اور انت میں مرمٹا پر اپنی راہ نہ چھوڑی۔ مجھے اس کا ایک بھجن یاد آگیا— "Will not be a traitor to God to please the whole world" ہمارے باپو کا جیون ان کے اس بھجن کی سارتھکتا پرمانت کرتا ہے۔ ہمارے باپو نے، ہمارے نیتا نے سچ کو سمجھا تھا؛ بھگوان کو سمجھا تھا اور اسی لئے انھوں نے کہا تھا— "I Have no God to serve but truth." میں سوچنے لگا کہ ہمارے ملک میں انسانیت اور حیوانیت کی جو لڑائی چلی ہے؛ اس میں ہم نے گاندھی جی کو کھو دیا پر اس سے ہمیں نراش نہیں ہونا چاہئے۔ ہمیں اپنی زندگی میں، اپنی قوم میں، سیوا اور محبت کو اپنانا پڑیگا۔ ہمیں ستیہ کی راہ پر چلنا پڑے گا چاہے پوری دنیا ہی کیوں نہ ہمارا ورودھ کرے۔ اہنسا کو ناپنے کے لئے ستیہ کا گز چھوٹا نہ بنے، یہ ہمارا کرتویہ رہیگا۔ نواکھالی میں، بہار میں، پنجاب میں،

कलकत्ते में, दिल्ली में जो हुआ वह हर इंसान के लिये एक शर्म की बात है. राम और रहीम के नाम पर गीता और क़ुरान के नाम पर यह किया गया जब कि असलियत यह है कि राम-रहीम, गीता-क़ुरान सभी को हमने दफ़ना दिया. गाँधी जी ने दुनिया के सामने फिर से राम-रहीम, गीता-क़ुरान को रखने का पुण्य-कार्य किया और इसी में वह शहीद भी हुए. मुल्क में ज़हरीली हवा फैली हुई है. यह मुल्क को तबाह कर रही है. बर्बाद कर रही है. हमें सब धर्मों में एकता पैदा कर के दुनिया को दिखाना पड़ेगा कि मुहब्बत और इंसानियत का नाम ही धर्म है, मज़हब है.

हम अपनी इंसानियत खो बैठे हैं. आपसी फूट, झगड़े रोज़ बढ़ते जा रहे हैं. गाँधी जी की मृत्यु से अनाथ हो मुल्क रो रहा है. गाँधी जी मज़दूरों और किसानों के प्राण थे, भारत के झोपड़ों के देवता थे. गाँधी जी ने हमें इंसान को इंसान समझने का पाठ पढ़ाया पर हम बदनसीब आज भी इंसान को इंसान नहीं समझते. हम अभी भी गाँधी-राज, राम-राज्य बनाने में कामयाब नहीं हुए हैं. हमने गाँधी जी की उपेक्षा की पर अब हमें "गाँधी राज" बनाना ही पड़ेगा. भारतवर्ष की एक एक झोपड़ी में कपड़ा और खाना पहुँचाना पड़ेगा. जो काम हमारी क़ौम गाँधी जी के जीवन काल में पूरा न कर सकी वह उसे अब पूरे करने हैं. गाँधी जी ने हमारे लिये अपना फ़र्ज़ पूरा किया पर अब हमें उनके लिये अपना फ़र्ज़ पूरा करना है. हमें दुनिया को बताना है कि गाँधी जी ने मरकर क़ौम को जिला दिया और क़ौम दुनिया को जिला देगी.

आज की दुनिया नफ़रत, बैर और हिंसा का केन्द्र बनी है.

کلکتے میں، دلی میں جو ہوا وہ ہر انسان کے لئے ایک شرم کی چیز ہے۔ رام اور رحیم کے نام پر گیتا اور قرآن کے نام پر یہ کیا گیا جب کہ اصلیت یہ ہے کہ رام رحیم، گیتا قرآن سبھی کو ہم نے دفنا دیا۔ گاندھی جی نے دنیا کے سامنے پھر سے رام رحیم، گیتا قرآن کو رکھنے کا پنیہ کاریہ کیا اور اسی میں وہ شہید بھی ہوئے۔ ملک میں زہریلی ہوا پھیلی ہوئی ہے۔ یہ ملک کو تباہ کر رہی ہے، برباد کر رہی ہے۔ ہمیں سب دھرموں میں ایکتا پیدا کر کے دنیا کو دکھانا پڑے گا کہ محبت اور انسانیت کا نام ہی دھرم ہے، مذہب ہے۔

ہم اپنی انسانیت کھو بیٹھے ہیں۔ آپسی پھوٹ، جھگڑے روز بڑھتے جا رہے ہیں۔ گاندھی جی کی مرتیو سے اناتھ ہو ملک رو رہا ہے۔ گاندھی جی مزدوروں اور کسانوں کے پران تھے۔ بھارت کے جھونپڑوں کے دیوتا تھے۔ گاندھی جی نے ہمیں انسان کو انسان سمجھنے کا پاٹھ پڑھایا پر ہم بدنصیب آج بھی انسان کو انسان نہیں سمجھتے۔ ہم ابھی بھی گاندھی راج، رام راجیہ بنانے میں کامیاب نہیں ہوئے ہیں۔ ہم نے گاندھی جی کی اپیکشا کی پر اب ہمیں "گاندھی راج" بنانا ہی پڑے گا۔ بھارت ورش کی ایک ایک جھونپڑی میں کپڑا اور کھانا پہنچانا پڑے گا۔ جو کام ہماری قوم گاندھی جی کے جیون کال میں پورے نہ کر سکی وہ ہم سے اب پورے کرنے ہیں۔ گاندھی جی نے ہمارے لئے اپنا فرض پورا کیا پر اب ہمیں ان کے لئے اپنا فرض پورا کرنا ہے۔ ہمیں دنیا کو بتانا ہے کہ گاندھی جی نے مر کر قوم کو جلا دیا اور قوم دنیا کو جلا دے گی۔

آج کی دنیا نفرت، بیر اور ہنسا کا کیندر بنی ہے۔

भाई-भाई का गला काट रहा है. इंसानियत सिर धुन रही है.
इंसान जानवर बन रहा है. हैवानियत का जो ज़हर भरा था
बर्बरता की जो जड़ें थीं, आज वे सब फूट रही हैं और अपनी
लपटों में इंसानियत को जला देना चाहती हैं. हम यह न होने देंगे.
हमारा हिन्द अब "नया हिन्द" होगा जिसमें केवल इंसान रहेंगे.
जो दुनिया को मुहब्बत और सेवा का पाठ पढ़ायेंगे. हम नया अदब
बनायेंगे, नई दुनिया बनायेंगे. जिस ज़हर ने हमारे बापू को छीन
लिया उसे ख़त्म करना ही पड़ेगा. हिन्द में केवल इंसान ही रहेंगे
गाँधी जी का सपना पूरा होगा. पूरे मुल्क को सुखी और तरक्क़ी
वाला देश बनाना पड़ेगा. गाँधी जी ने हमें जो राह दिखाई है हमें
उसी पर चलना पड़ेगा. उनका बलिदान हमें 'नई रोशनी' दिखायेगा.
दिये की ज्योत कभी नहीं बुझती. हम आज अपने राष्ट्र पिता को
खो कर यह सोच रहे हैं कि दुनिया में अँधकार छा गया है पर
यह रोशनी ज़रूर चमकेगी. यह अमर ज्योति हमारे दिलों में सदा
चमकती रहेगी और हमें प्रेम, शान्ति और समता का पाठ पढ़ाती
रहेगी. यही पाठ हम दुनिया को पढ़ायेंगे. महात्मा गाँधी को हम
उनके जीवन में न अपना सके पर अब हमें इस लायक़ बनना है
कि हम उन्हें अपना नेता कह सकें. उनके चरणों में प्रणाम कर
सकें. हमें आज उनकी स्मृति में आँसू बहाने का अधिकार है पर
उन्हें अपना नेता कह उनके चरणों में प्रणाम करने के हम हक़दार
नहीं हैं. इसी हक़ को पाने के लिये हमें गाँधी राज बनाना होगा.
राम राज्य बनाना होगा. "नया हिन्द" बनाना होगा. तभी दुनिया
[illegible]

بھائی بھائی کا گلا کاٹ رہا ہے۔ انسانیت سر دھن رہی ہے۔ انسان
جانور بن رہا ہے۔ حیوانیت کا جو زہر بھرا تھا بربرتا کی جو جڑیں تھیں
آج وہ سب پھوٹ رہی ہیں اور اپنی لپٹوں میں انسانیت کو جلا
دینا چاہتی ہیں۔ ہم یہ نہ ہونے دیں گے۔ ہمارا ہند اب "نیا ہند"
ہوگا جس میں کیول انسان رہیں گے۔ جو دنیا کو محبت اور سیوا کا پاٹھ
پڑھائیں گے۔ ہم نیا ادب بنائیں گے، نئی دنیا بنائیں گے۔ جس زہر
نے ہمارے باپو کو چھین لیا اسے ختم کرنا ہی پڑے گا۔ ہند میں کیول
انسان ہی رہیں گے گاندھی جی کا سپنا پورا ہوگا۔ پورے ملک کو
سکھی اور ترقی والا دیش بنانا پڑے گا۔ گاندھی جی نے ہمیں جو راہ
دکھائی ہے ہمیں اسی پر چلنا پڑے گا۔ ان کا بلیدان ہمیں نئی روشنی
دکھائے گا۔ دیے کی جوت کبھی نہیں بجھتی۔ ہم آج اپنے راشٹر پتا کو
کھو کر یہ سوچ رہے ہیں کہ دنیا میں اندھکار چھا گیا ہے پر یہ روشنی
ضرور چمکے گی۔ یہ امر جیوتی ہمارے دلوں میں سدا چمکتی رہے گی اور ہمیں
پریم، شانتی اور سمتا کا پاٹھ پڑھاتی رہے گی۔ یہی پاٹھ ہم دنیا کو
پڑھائیں گے۔ مہاتما گاندھی کو ہم ان کے جیون میں نہ اپنا سکے
پر اب ہمیں اس لائق بننا ہے کہ ہم انھیں اپنا نیتا کہہ سکیں۔
ان کے چرنوں میں پرنام کر سکیں۔ ہمیں آج ان کی سمرتی میں
آنسو بہانے کا ادھیکار ہے پر انھیں اپنا نیتا کہہ ان کے چرنوں
میں پرنام کرنے کے ہم حقدار نہیں ہیں۔ اسی حق کو پانے کے لیے
ہمیں گاندھی راج بنانا ہوگا۔ رام راجیہ بنانا ہوگا "نیا ہند" بنانا ہوگا۔

को जिला दिया." हमारा हिन्द ही गाँधी जी की सब से बड़ी यादगार होगा. यह बारह फ़रवरी हमें इसीलिये बार-बार कह रही है—"इंसान बनो ! इंसान बनो !! इंसान बनो !!!"

नोट- लेखक का ऐसा ख़याल है कि महात्मा गाँधी की इस हैवानियत और बेरहमी भरी हत्या ने "नया हिन्द" और उसके लेखकों की ज़िम्मेदारी बढ़ा दी है और उसे विश्वास है कि वे उसे पूरी तरह निभायेंगे.

मधुकर

کو جلا دیا۔" ہمارا ہند ہی گاندھی جی کی سب سے بڑی یادگار ہوگا۔ یہ بارہ فروری ہمیں اس لئے بار بار کہہ رہی ہے— "انسان بنو! انسان بنو!! انسان بنو!!!"

نوٹ- لیکھک کا ایسا خیال ہے کہ مہاتما گاندھی کی اس حیوانیت اور بے رحمی بھری ہتیا نے "نیا ہند" اور اس کے لیکھکوں کی ذمّے داری بڑھا دی ہے اور اسے وشواس ہے کہ وے اسے پوری طرح نبھائیں گے۔

مدھوکر

काश ! बन्दूक न बनी होती

श्रीमती पर्ल बक

शनीचर का दिन था. हम रोज़ की तरह खाने की मेज़ पर बैठे बातचीत कर रहे थे. हमारे मकान के चारों तरफ़ बर्फ़ जमी हुई थी और आकाश पर हलके हलके बादल छाये हुए थे. हमारे बच्चे पूछ रहे थे. "क्या और बर्फ़ पड़ेगी ?" एकाएक मेरे पिता कमरे में आये. उनका चेहरा उदास था. उन्होंने कहा—"रेडियो ने अभी अभी बड़ी भयानक खबर सुनाई है." हमने बेताबी से पूछा—"क्या हुआ ?" उन्होंने कहा गान्धी जी मार डाले गये.

मैं हिन्दुस्तानियों को बताना चाहती हूँ कि उनके देश से हज़ारों मील दूर एक अमेरिकन औरत और उसके खानदान के नज़दीक गान्धी जी की मौत के क्या मानी हैं ? हमने हत्या का पूरा हाल सुना कि गान्धी जी, जो शान्ति के देवता थे और जिन्होंने जीवन भर अपने देशवासियों की सेवा की, क़त्ल कर दिये गये. हमारे सोलह बरस के लड़के ने आँखों में आँसू भरते हुए कहा "काश ! किसी को भी बन्दूक बनाना और चलाना न आता !"

हमारे घर के लोगों में से किसी ने भी गान्धी जी को नहीं देखा था. जब हम हिन्दुस्तान में जाते थे तो वे हमेशा जेल में होते थे. पर हम सब उन्हें जानते थे. हमारे बच्चे महात्मा जी की तस्वीरों को देखकर उन्हें इस तरह पहिचानने लगे थे जैसे वे हमारे घर ही में रहते हों. हमारे नज़दीक के संसार की उन चन्द गिनी चुनी

کاش ! بندوق نہ بنی ہوتی

(شریمتی پرل بک)

سنیچر کا دن تھا۔ ہم روز کی طرح کھانے کی میز پر بیٹھے بات چیت کر رہے تھے۔ ہمارے مکان کے چاروں طرف برف جمی ہوئی تھی اور آکاش پر ہلکے ہلکے بادل چھائے ہوئے تھے۔ ہمارے بچے پوچھ رہے تھے۔ "کیا اور برف پڑے گی ؟" یکایک میرے پتا کمرے میں آئے۔ اُن کا چہرہ اُداس تھا۔ اُنھوں نے کہا۔ "ریڈیو نے ابھی ابھی بڑی بھیانک خبر سنائی ہے۔" ہم نے بےتابی سے پوچھا۔ "کیا ہوا ؟" اُنھوں نے کہا گاندھی جی مار ڈالے گئے۔

میں ہندستانیوں کو بتانا چاہتی ہوں کہ اُن کے دیش سے ہزاروں میل دور ایک امریکن عورت اور اُس کے خاندان کے نزدیک گاندھی جی کی موت کے کیا معنی ہیں ؟ ہم نے ہتیا کا پورا حال سنا کہ گاندھی جی، جو شانتی کے دیوتا تھے اور جنھوں نے جیون بھر اپنے دیش واسیوں کی سیوا کی، قتل کر دیے گئے۔ ہمارے سولہ برس کے لڑکے نے آنکھوں میں آنسو بھرتے ہوئے کہا "کاش ! کسی کو بھی بندوق بنانا اور چلانا نہ آتا !"

ہمارے گھر کے لوگوں میں سے کسی نے بھی گاندھی جی کو نہیں دیکھا تھا۔ جب ہم ہندستان میں جاتے تھے تو وے ہمیشہ جیل میں ہوتے تھے۔ پر ہم سب اُنھیں جانتے تھے۔ ہمارے بچے مہاتما جی کی تصویروں کو دیکھ کر اُنھیں اس طرح پہچاننے لگے تھے جیسے وے ہمارے گھر ہی میں رہتے ہوں۔ ہمارے نزدیک کے سنسار کی اُن چند گنی چُنی

बहादुर हस्तियों में से थे जो जिस बात को सही समझती हैं उसी पर जमी रहती हैं. हमने उनकी मौत की खबर सुनकर इस विषय (मौजू) पर बात चीत शुरू की कि महात्मा जी की ज़िन्दगी के क्या मानी थे और उनकी मौत का क्या असर होगा. महात्मा जी का हिंदुस्तानी होना हमारे लिये गर्व या फ़ख़्र की बात थी. पर इस बात के लिये हमें हिन्दुस्तान पर तरस आता है कि उसके ही एक पूत ने गाँधी जी को मौत के घाट उतार दिया. इसके बाद खामोशी और उदासी से हम अपने अपने कामों पर चले गये..

हिन्दुस्तानियों को अचंभा होगा अगर वह आकर यह देखें कि हमारे देश में लोग गाँन्धी को किस तरह चाहते हैं. एक घन्टे के बाद सड़क पर एक देहाती मुझे मिला. उसने मुझे रोक कर पूछा—"संसार में सभी लोगों का यही विचार था कि गान्धी जी नेक आदमी हैं. फिर उन्हें क्यों मार डाला गया ?" मैंने अपना सिर हिलाते हुए कहा—"कुछ पता नहीं. क्यों मारा गया." उस किसान ने आह भर कर कहा—"मैं समझता हूँ कि उन्हें उसी तरह मारा गया जैसे हज़रत ईसा को."

उस किसान ने सच कहा. ईसा मसीह की हत्या के सिवा कोई और घटना गान्धी जी की हत्या से नहीं मिलती. अपने देश-वासियों के हाथों शहीद होना गान्धी जी की शहादत को और भी ऊँची बना देता है. सिर्फ हमारे घर में ही गान्धी जी का शोक नहीं मनाया गया, सारे अमेरिका बल्कि सारी दुनिया में ज़िन लोगों ने गान्धी जी को देखा भी नहीं, वह उनका शोक मना रहे हैं. वह ऐसे

بہادر ہستیوں میں سے تھے جو جس بات کو صحیح سمجھتی ہیں اسی پر جمی رہتی ہیں۔ ہم نے اُن کی موت کی خبر سن کر اس وشے (موضوع) پر بات چیت شروع کی کہ مہاتما جی کی زندگی کے کیا معنی تھے اور اُن کی موت کا کیا اثر ہوگا۔ مہاتما جی کا ہندستانی ہونا ہمارے لئے گرو یا فخر کی بات تھی۔ پر اس بات کے لئے ہمیں ہندستان پر ترس آتا ہے کہ اُس کے ہی ایک پوت نے گاندھی جی کو موت کے گھاٹ اُتار دیا۔ اس کے بعد خاموشی اور اُداسی سے ہم اپنے اپنے کاموں پر چلے گئے۔

ہندستانیوں کو اچنبھا ہوگا اگر وہ آ کر یہ دیکھیں کہ ہمارے دیش میں لوگ گاندھی کو کس طرح چاہتے ہیں۔ ایک گھنٹے کے بعد سڑک پر ایک دیہاتی مجھے ملا۔ اُس نے مجھے روک کر پوچھا — "سنسار میں سبھی لوگوں کا یہی وچار تھا کہ گاندھی جی نیک آدمی ہیں۔ پھر اُنھیں کیوں مار ڈالا گیا؟" میں نے اپنا سر ہلاتے ہوئے کہا — "کچھ پتہ نہیں۔ کیوں مارا گیا۔" اس کسان نے آہ بھر کر کہا — "میں سمجھتا ہوں کہ اُنھیں اُسی طرح مارا گیا جیسے حضرت عیسیٰ کو۔"

اس کسان نے سچ کہا۔ عیسیٰ مسیح کی ہتیا کے سوا کوئی اور گھٹنا گاندھی جی کی ہتیا سے نہیں ملتی۔ اپنے دیش واسیوں کے ہاتھوں شہید ہونا گاندھی جی کی شہادت کو اور بھی اونچی بنا دیتا ہے۔ صرف ہمارے گھر میں ہی گاندھی جی کا شوک نہیں منایا گیا، سارے امریکا بلکہ ساری دنیا میں جن لوگوں نے گاندھی جی کو دیکھا بھی نہیں، وہ اُن کا شوک منا رہے ہیں۔ وہ ایسے

... दुनिया से पैदा हुए जब कि उनका असर और प्रभाव बहुत बढ़ा हुआ था.

कुछ ही दिन हुए हम अमेरिकनों में गान्धी जी के बारे में दिल-चस्पी से बातें कर रहे थे. अमेरिकनों के दिल में उन्होंने बड़ी जगह हासिल करली थी. अमेरिका वासियों के दिलों में गान्धी जी की बड़ी इज्ज़त पैदा हो रही थी और लोगों को महसूस होने लगा था कि जो कुछ गान्धी जी कहते हैं वह ठीक है. हमारे अखबारों ने गान्धी जी की नई शक्ति को मान लिया. इससे हिन्दुस्तान की बहुत बड़ाई हुई. क़ौमों के बीच अच्छे ढंग से झगड़ों को निपटाने के लिये गान्धी जी ने जो कोशिश और जतन किये उनका हम पर बड़ा असर पड़ा. मैं चाहती हूँ कि हिन्दुस्तान में हर मर्द और औरत के मन में यह बात जमा सकूं कि इस मामले में दूसरों के नज़दीक उनके मुल्क की क्या अहमियत या महत्व है. हिन्दुस्तान सिर्फ़ हिन्दुस्तान ही नहीं बल्कि इस से ज्यादा है. चर्चिल और उनकी तरह के दूसरे लोग कहते हैं कि सारी क़ौमों को आज़ाद नहीं होना चाहिये. ऐसे लोगों की दलील यह है कि कुछ मजबूत और ताक़तवर राष्ट्र संसार में राज करने के लिये पैदा हुए हैं. हमें बताया जाता है कि मजबूत और ताक़तवर क़ौमों को किसी पर हुकूमत करनी ही होती है. इस खयाल के लोग कहते हैं कि वह यह नहीं चाहते कि कोई उन पर हुकूमत करे और क्योंकि हम दूसरों से ताक़तवर हैं इसलिये राज करने का हक़ हमें ही है. पर हम चर्चिल और उनके साथियों के इस दृष्टिकोण (नज़रिये) पर विश्वास नहीं रखते. हम इस दुनिया के खतम

کے دنیا سے پیدا ہوئے جب کہ اُن کا اثر اور پربھاؤ بہت بڑھا ہوا تھا۔

کچھ ہی دن ہوئے ہم امریکنوں میں گاندھی جی کے بارے میں دلچسپی سے باتیں کر رہے تھے۔ امریکنوں کے دل میں انھوں نے بڑی جگہ حاصل کر لی تھی۔ امریکا واسیوں کے دلوں میں گاندھی جی کی بڑی عزت پیدا ہو رہی تھی اور لوگوں کو محسوس ہونے لگا تھا کہ جو کچھ گاندھی جی کہتے ہیں وہ ٹھیک ہے۔ ہمارے اخباروں نے گاندھی جی کی نئی شکتی کو مان لیا۔ اس سے ہندستان کی بہت بڑائی ہوئی۔ قوموں کے بیچ اچھے ڈھنگ سے جھگڑوں کو نپٹانے کے لئے گاندھی جی نے جو کوشش اور جتن کئے اُن کا ہم پر بڑا اثر پڑا۔ میں چاہتی ہوں کہ ہندستان میں ہر مرد اور عورت کے من میں یہ بات جما سکوں کہ اس معاملے میں دوسروں کے نزدیک اُن کے ملک کی کیا اہمیت یا مہتو ہے۔ ہندستان صرف ہندستان ہی نہیں بلکہ اس سے زیادہ ہے۔ چرچل اور اُن کی طرح کے دوسرے لوگ کہتے ہیں کہ ساری قوموں کو آزاد نہیں ہونا چاہئے۔ ایسے لوگوں کی دلیل یہ ہے کہ کچھ مضبوط اور طاقتور راشٹر سنسار میں راج کرنے کے لئے پیدا ہوئے ہیں۔ ہمیں بتایا جاتا ہے کہ مضبوط اور طاقتور قوموں کو کسی پر حکومت کرنی ہی ہوتی ہے۔ اس خیال کے لوگ کہتے ہیں کہ وہ یہ نہیں چاہتے کہ کوئی اُن پر حکومت کرے اور کیونکہ ہم دوسروں سے طاقتور ہیں اس لئے راج کرنے کا حق ہمیں ہی ہے۔ پر ہم چرچل اور اُن کے ساتھیوں کے اس درشٹی کون (نظریے) پر وشواس نہیں رکھتے۔ ہم اس دنیا کے ختم

हो जाने की आशा करते हैं जहाँ क़ौमें एक दूसरे पर राज करने के लिये आज़ाद होती हैं. हमारे नज़दीक हिन्दुस्तान के मानी हमारी आशाओं का सुबूत हैं. हम हिन्दुस्तान की खबरों के लिये हर रोज़ अखबारों को बड़ी बेचैनी से देखते हैं, यह देखने के लिये कि चर्चिल ने हिन्दुस्तान में जिस खून की होली की भविष्य-वाणी या पेशीनगोई की थी क्या वह सचमुच खेली जा रही है ?

क्या यह सच है कि क़ौमें शान्ति के साथ अपने झगड़ों का निबटारा नहीं कर सकतीं ? क्या लड़ाई सदा चलती रहेगी ? गान्धी जी हम सब लोगों की आशा थे. जो विश्वास रखते थे कि लोगों पर विश्वास किया जा सकता है. हम सोचते थे कि मनुष्य जीवन के लिये उनके पास बुनियादी सच्चाई है. गान्धी जी की हत्या उनके उसूलों की हार है या जीत ? इस सवाल का जवाब हिन्दुस्तान के लोगों के अख्तियार में है. अगर उनकी मौत ने उन लोगों में नई ताक़त और नया हौसला पैदा कर दिया, जो गान्धी जी के रास्ते को ठीक समझते थे तो वह हिन्दुस्तान के लिये और हमारे लिये भी. जो उनके रास्ते को सही मानते थे, एक शुभ लच्छन होगा. लेकिन अगर उनकी मौत ने उनके विचारों पर विश्वास रखने वालों को बेहौसला और उनकी हिम्मतों को पस्त कर दिया तब फिर यह सारी दुनिया में इन्सानियत की हार होगी. आज ये विचार हमारे मन में उठ रहे हैं. अमरिका ने गान्धी जी की मौत के सदमे को पहले तो खामोशी से सहलिया था. फिर लोगों ने एक दूसरे की तरफ़ देखना शुरू किया और [illegible] चला गया. पर अभी नेहरू ज़िन्दा है, अभी

ہو جانے کی آشا کرتے ہیں جہاں قومیں ایک دوسرے پر راج کرنے کے لئے آزاد ہوتی ہیں۔ ہمارے نزدیک ہندستان کے معنی ہماری آشاؤں کا ثبوت ہے۔ ہم ہندستان کی خبروں کے لئے ہر روز اخباروں کو بڑی بےچینی سے دیکھتے ہیں، یہ دیکھنے کے لئے کہ چرچل نے ہندستان میں جس خون کی ہولی کی بھوشیہ وانی یا پیشین گوئی کی تھی کیا وہ سچ مچ کھیلی جا رہی ہے۔

کیا یہ سچ ہے کہ قومیں شانتی کے ساتھ اپنے جھگڑوں کا نبٹارا نہیں کر سکتیں؟ کیا لڑائی سدا چلتی رہے گی؟ گاندھی جی ہم سب لوگوں کی آشا تھے۔ جو وشواس رکھتے تھے کہ لوگوں پر وشواس کیا جا سکتا ہے۔ ہم سوچتے تھے کہ منش جیون کے لئے ان کے پاس بنیادی سچائی ہے۔ گاندھی جی کی ہتیا ان کے اصولوں کی ہار ہے یا جیت؟ اس سوال کا جواب ہندستان کے لوگوں کے اختیار میں ہے۔ اگر ان کی موت نے ان لوگوں میں نئی طاقت اور نیا حوصلہ پیدا کر دیا، جو گاندھی جی کے راستے کو ٹھیک سمجھتے تھے تو وہ ہندستان کے لئے اور ہمارے لئے بھی۔ جو ان کے راستے کو صحیح مانتے تھے۔ ایک شبھ لچھن ہوگا لیکن اگر ان کی موت نے ان کے وچاروں پر وشواس رکھنے والوں کو بے حوصلہ اور ان کی ہمتوں کو پست کر دیا تو پھر یہ ساری دنیا میں انسانیت کی ہار ہوگی۔ آج یہ وچار ہمارے من میں اٹھ رہے ہیں۔ امریکا میں گاندھی جی کی موت کے صدمے کو پہلے تو خاموشی سے سہہ لیا گیا۔ پھر لوگوں نے ایک دوسرے کی طرف دیکھنا شروع کیا اور کہا گاندھی تو چلا گیا۔ پر ابھی نہرو زندہ ہے، ابھی

...ने की कोई बात नहीं."

पच्छिम में नेहरू को लोग दूसरे हिन्दुस्तानी नेताओं की ...सबत थोड़ी ज्यादा नहीं जानते बल्कि इस कारन जानते हैं कि ...हें उनकी अक्लमन्दी, योग्यता और ईमानदारी पर पूरा विश्वास है. ...गर हिन्दुस्तान में आपसी मतभेद इतना बढ़ गया कि अपनी ...र्ज़ी से काम न करने के कारन नेहरू को अपने मौजूदा ओहदे ...इस्तीफ़ा देना पड़ गया तब फिर पच्छिम की नज़रों में हिन्दुस्तान ...क़दर बहुत कम हो जायगी.

समझदार हिन्दुस्तानी ऐसी ग़लती करने से पहले कई बार ...चेंगे. मैं अमेरिकन की हैसियत से यह बात नहीं कह रही हूँ ...ल्कि मुझे इस बात का थोड़ा सा ज्ञान है कि हिन्दुस्तान क्या कुछ ...र सकता है. न सिर्फ़ अपने देश में बल्कि दुनिया के नेता के रूप ...हिन्दुस्तान के लिये यह बड़ा अच्छा मौक़ा है, अगर उसके ...वासी अपने सबसे अच्छे आदमी के क़दम पर चले और ...र्म दल वाले छोटे आदमियों के असर में आकर अपने को आपसी ...मतभेद की भेंट न चढ़ा दिया.

मेरे ये शब्द हिन्दुस्तानियों के लिये चेतावनी की हैसियत भी ...ते हैं और उनसे आशा भी!

گھبرانے کی کوئی بات نہیں۔"

پچھم میں نہرو کو لوگ دوسرے ہندستانی نیتاؤں کی نسبت بہت زیادہ نہیں جانتے بلکہ اس کارن جانتے ہیں کہ انھیں ان کی عقل مندی، یوگتا اور ایمان داری پر پورا وشواس ہے۔ اگر ہندستان میں آپسی مت بھید اتنا بڑھ گیا کہ اپنی مرضی سے کام نہ کرنے کے کارن نہرو کو اپنے موجودہ عہدے سے استعفا دینا پڑ گیا تب پھر پچھم کی نظروں میں ہندستان کی قدر بہت کم ہو جائے گی۔

سمجھدار ہندستانی ایسی غلطی کرنے سے پہلے کئی بار سوچیں گے۔ میں امریکن کی حیثیت سے یہ بات نہیں کہہ رہی ہوں بلکہ مجھے اس بات کا تھوڑا سا گیان ہے کہ ہندستان کیا کچھ کر سکتا ہے۔ نہ صرف اپنے دیش میں بلکہ دنیا کے نیتا کے روپ میں ہندستان کے لیے یہ بڑا اچھا موقع ہے، اگر اس کے واسی اپنے سب سے اچھے آدمی کے قدم پر چلے اور گرم دل والے چھوٹے آدمیوں کے اثر میں آکر اپنے کو آپسی مت بھید کی بھینٹ نہ چڑھا دیا۔

میرے یہ شبد ہندستانیوں کے لیے چیتاونی کی حیثیت بھی رکھتے ہیں اور ان سے آشا بھی!

महमूद ग़ज़नवी

पं० सुन्दरलाल

अलीगढ़ युनिवर्सिटी से अेक तिमाही अुर्दू रिसाला निकलता है, जिसमें हाल में 'फ़रज़न्दाने क़ौमसे' नाम की अेक कविता छपी है. जिसके मानी हैं 'क़ौम के सपूतों से'. 'क़ौम' से यहाँ मतलब मुसलमान क़ौम से है. अुस कविता का अेक शेर यह है:

'गूँजती है फिर फ़िज़ाओं में सदाओ सोमनाथ
फिर किसी ग़ज़नी से कोअी ग़ज़नवी पैदा करो.'

यानी हवा के अन्दर फिर से सोमनाथ की आवाज़ गूँज रही है, अिसलिअे फिर कोअी महमूद ग़ज़नवी किसी ग़ज़नी से पैदा करो.

ज़ाहिर है कि कविका अिशारा अखबारों की अिस खबर की तरफ़ है कि सोमनाथ के मन्दिर की मरम्मत की तजवीज़ें हो रही हैं. महमूद ग़ज़नवी सोमनाथ तक पहुँचा था या नहीं और उसने वहाँ क्या किया और क्या नहीं किया, यह अेक अलग सवाल है. पर हम यह कहे बिना नहीं रह सकते कि अिन लाअिनों को पढ़ कर हमें दुःख हुआ.

हमने महमूद ग़ज़नवी के सोमनाथ जाने पर शक ज़ाहिर किया है. कुछ पाठकों को अिसे पढ़कर अचरज होगा. पर अितिहास में अिस तरह के अचरज सभी भरे पड़े हैं. पचास बरस पहले कौन

محمود غزنوی

(پنڈت سُندر لال)

علی گڑھ یونیورسٹی سے ایک تماہی اُردو رسالہ نکلتا ہے، جس میں حال میں "فرزندانِ قوم سے" نام کی ایک کویتا چھپی ہے۔ اس کے معنی ہیں "قوم کے سپوتوں سے"۔ "قوم" سے یہاں مطلب مسلمان قوم سے ہے۔ اس کویتا کا ایک شعر یہ ہے:

"گونجتی ہے پھر فضاؤں میں صدائے سومناتھ
پھر کسی غزنی سے کوئی غزنوی پیدا کرو۔"

یعنی ہوا کے اندر پھر سے سومناتھ کی آواز گونج رہی ہے۔ اس لئے پھر کوئی محمود غزنوی کسی غزنی سے پیدا کرو۔

ظاہر ہے کہ کوی کا اشارہ اخباروں کی اس خبر کی طرف ہے کہ سومناتھ کے مندر کی مرمت کی تجویزیں ہو رہی ہیں۔ محمود غزنوی سومناتھ تک پہنچا تھا یا نہیں اور اس نے وہاں کیا کیا اور کیا نہیں کیا، یہ ایک الگ سوال ہے۔ پر ہم یہ کہے بنا نہیں رہ سکتے کہ ان لائنوں کو پڑھ کر ہمیں دکھ ہوا۔

ہم نے محمود غزنوی کے سومناتھ جانے پر شک ظاہر کیا ہے۔ کچھ پاٹھکوں کو اسے پڑھ کر اچرج ہوگا۔ پر اتہاس میں اس طرح کے اچرج سبھی بھرے پڑے ہیں۔ پچاس برس پہلے کون

[सक]ता था कि कलकत्ते के ब्लैक हॉल का सारा क़िस्सा सफ़ेद [झूठ] है. आज भी कितनों को यक़ीन होगा कि सन् ५७ वाले [कानपुर] के बीबीगढ़ का हत्याकांड और वहाँ के 'कुँअे' की कहानी [मनगढ़ंत] कहानी है? दुनिया के चालू अितिहास में न जाने अैसी [कितनी] चीज़ें मिलेंगी.

हम यहाँ अिस मशहूर हमलेके बारे में महाराष्ट्र के माने हुअे [विद्वान] श्री चिन्तामणि विनायक वैद्यकी राय देते हैं. अपनी विद्वत्ता[भरी] किताब 'हिस्टरी आफ़ मिडीवल हिन्दू अिण्डिया' में वह लिखते हैं:

"बदक़िस्मती से अिस हमले का, जो महमूद का सबसे [बड़ा] कारनामा था, अुतबी के लिखे अितिहास में कोअी बयान [नहीं] मिलता, गो अुतबी १०२९ अी० तक यानी अिस घटना के चार साल बाद तक जिन्दा था. रशीदुद्दीन ने अपनी किताब [और] भी दो सौ बरस बाद लिखी. अुसमें भी सोमनाथ के हमले का कोअी ज़िक्र नहीं. हमीदुल्ला मुस्तफ़ीकी किताब अिसके [भी] बीस बरस बाद लिखी गअी. अुसमें भी सोमनाथ के हमले का कोअी ज़िक्र नहीं. अिस हमले का सबसे पहला ज़िक्र अिब्न असीर की किताब (१२७० अी०) में मिलता है और अुसके बाद के अितिहास-लेखकों ने अिब्न असीर ही के बयान को और ज़्यादा रंग दिया है. गुजरात के सोलंकी राजाओं का पूरा पूरा अितिहास अुस खानदान के पुरखे राजा मूलराज से लेकर, जो सन् ९६१ अी० में अनहिलवाड़ के तख़्त पर बैठा, गुजरात के बहुत से जैन और हिन्दू अितिहास-लेखकों

گھڑا تھا کہ کلکتے کے بلیک ہال کا سارا قصہ سفید جھوٹ ہو. آج بھی کتنوں کو یقین ہوگا کہ ستاون والے کانپور کے بی بی گڑھ کا ہتیا کانڈ اور وہاں کے 'کنوئیں' کی کہانی گھڑی ہوئی کہانی ہو؟ دنیا کے چالو اتہاس میں نہ جانے ایسی کتنی چیزیں ملیں گی.

ہم یہاں اس مشہور حملے کے بارے میں مہاراشٹر کے مانے ہوئے ودوان شری چنتامنی ونایک ویدیہ کی رائے دیتے ہیں. اپنی ودوتا بھری کتاب 'ہسٹری آف مڈیول ہندو انڈیا' میں وہ لکھتے ہیں:

"بدقسمتی سے اس حملے کا، جو محمود کا سب سے بڑا کارنامہ تھا، اتبی کے لکھے اتہاس میں کوئی بیان نہیں ملتا، گو اتبی ۱۰۲۹ء تک یعنی اس گھٹنا کے چار سال بعد تک زندہ تھا. رشید الدین نے اپنی کتاب اور بھی دو سو برس بعد لکھی. اس میں بھی سومناتھ کے حملے کا کوئی ذکر نہیں. حمید اللہ مستوفی کی کتاب اس کے بھی بیس برس بعد لکھی گئی. اس میں بھی سومناتھ کے حملے کا کوئی ذکر نہیں. اس حملے کا سب سے پہلا ذکر ابن اثیر کی کتاب (۱۲۷۰ء) میں ملتا ہے اور اس کے بعد کے اتہاس لیکھکوں نے ابن اثیر ہی کے بیان کو اور زیادہ رنگ دیا ہے. گجرات کے سولنکی راجاؤں کا پورا پورا اتہاس اس خاندان کے پرکھے راجا مولراج سے لے کر، جو سنہ ۹۶۱ء میں انہلواڑ کے تخت پر بیٹھا، گجرات کے بہت سے جین اور ہندو اتہاس لیکھکوں

में लिखा है. अुसमें भी गुजरात के अूपर, अिस अितनी बड़ी मुसीबत का, जो सोलंकी राजाओं ही के तड़क-भड़क के दिनों में आयी, कहीं कोअी ज़िक्र नहीं आता. अब तक किसी शिलालेख या कुतबे के अन्दर अिस मुसीबत की तरफ़ कहीं अिशारा भी नहीं मिला. अिन हालतों में हमें शक होने लगता है कि सचमुच महमूद ने कभी अितनी दूर गुजरात पर हमला किया भी था या नहीं, जहाँ पहुँचने के लिअे उसे अेक बहुत बड़े रेगिस्तान को पार करना पड़ा होगा."

फिर भी श्री चिन्तामणि विनायक वैद्य की राय है कि महमूद के सोमनाथ पर हमला करने में कुछ न कुछ सचाअी है. अिसके लिअे अुनकी दलील यह है :

"हिन्दू लेखक अपने अेक अितने बड़े देवता और अितने बड़े राजा के अूपर अितनी बड़ी मुसीबत को यूं ही बयान न करते. जिन लेखकों ने, घटना के कअी सौ बरस बाद ही सही, अिस घटना का जिक्र किया है अुनके सामने कुछ न कुछ मुसलमानों के लिखे बयान ज़रूर रहे होंगे. यह कम अुम्मीद होती है कि अुन्होंने अेक बिलकुल फ़ारज़ी कहानी गढ़ ली हो."

अिसके बाद श्री वैद्य ने अिब्न असीर के बयान का अंग्रेज़ी खुलासा दिया है. यही बयान बढ़ा-चढ़ा कर बाद की किताबों में पाया जाता है. पर अिस बाद बयान को देने से पहले श्री श्री वैद्य ने साफ़ लिख दिया है कि :

نے لکھا ہے۔ اس میں بھی گجرات کے اوپر، اس اتنی بڑی مصیبت کا، جو سولنکی راجاؤں ہی کے ترک بھڑک کے دنوں میں آئی، کہیں کوئی ذکر نہیں آتا۔ اب تک کسی شلالیکھ یا کتبہ کے اندر اس مصیبت کی طرف کہیں اشارہ بھی نہیں ملا۔ ان حالتوں میں ہمیں شک ہونے لگتا ہے کہ سچ مچ محمود نے کبھی اتنی دور گجرات پر حملہ کیا بھی تھا یا نہیں، جہاں پہنچنے کے لئے اسے ایک بہت بڑے ریگستان کو پار کرنا پڑا ہوگا۔"

پھر بھی شری چنتامنی ونایک ویدیہ کی رائے ہے کہ محمود کے سومناتھ پر حملہ کرنے میں کچھ نہ کچھ سچائی ہے۔ اس کے لئے ان کی دلیل یہ ہے:

"ہندو لیکھک اپنے ایک اتنے بڑے دیوتا اور اتنے بڑے راجا کے اوپر اتنی بڑی مصیبت کو یوں ہی بیان نہ کرتے۔ جن لیکھکوں نے، گھٹنا کے کئی سو برس بعد ہی سہی، اس گھٹنا کا ذکر کیا ہے ان کے سامنے کچھ نہ کچھ مسلمانوں کے لکھے بیان ضرور رہے ہوں گے۔ یہ کم امید ہوتی ہے کہ انھوں نے ایک بالکل فرضی کہانی گڑھ لی ہو۔"

اس کے بعد شری ویدیہ نے ابن اثیر کے بیان کا انگریزی خلاصہ دیا ہے۔ یہی بیان بڑھا چڑھا کر بعد کی کتابوں میں پایا جاتا ہے۔ پر اس چالو بیان کو دینے سے پہلے بھی شری ویدیہ نے صاف لکھ دیا ہے

हम पहले ही कह देते हैं कि यह घटना बढ़ा-चढ़ा कर के बयान की ही गयी थी, जिस पर भी बाद के लेखकों ने अुसकी अजीब बातों को और ज्यादा रंग दिया. अुन्होंने अुसमें फ़रज़ी क़िस्से जोड़ दिये, ख़ासकर अिसलिअे कि महमूद को और ज्यादा बड़ा मज़हबी आदमी साबित करें. मिसाल के तौर पर यह क़िस्सा—जिसे अितिहास-लेखक गिबनने भी लिखा है—कि सोमनाथ की मूर्ति के अन्दर बेशुमार ख़ज़ाना छिपा था, ब्राह्मणों ने करोड़ों रुपये अुसके बदले में महमूद को देने का वादा किया. महमूद के सेनापतियों ने अुसे सलाह दी कि रुपये ले लिये जावें और मूर्ति को छोड़ दिया जावे, पर महमूद ने यह कह कर अिनकार कर दिया कि मैं क़यामत के दिन बुतशिकन बन कर खड़ा होना पसन्द करूंगा, बुतफ़रोश बनकर नहीं. यह सारा क़िस्सा अगर अितिहास-लेखक फ़रिश्ता का मन गढ़न्त नहीं है तो किसी और का है. अितिहास-लेखक अिलियट (२-४७६) के अनुसार अितिहास-लेखक विलसन ने सोमनाथ के क़िस्से में अिस रंग भरे जाने पर अपनी राय देते हुअे लिखा है कि—"अिससे पहले के मुसलमान लेखकों ने मूर्ति के अंग-भंग किये जाने का कोअी जिक्र नहीं किया. सच यह है कि अुस मूर्ति के कोअी अंग थे ही नहीं. न अुसके अन्दर के ख़ज़ानों का कोअी जिक्र किया है, क्यों कि मूर्ति ठोस थी और अुसके अन्दर ख़ज़ाने नहीं हो सकते थे. फ़रिश्ताने बिलकुल बिना किसी असलियत के मोतियों और लालों के छिपे ख़ज़ाने का

ہم پہلے ہی کہہ دیتے ہیں کہ یہ گھٹنا بڑھا چڑھا کر تو بیان کی ہی گئی تھی، اس پر بھی بعد کے لیکھکوں نے اس کی عجیب باتوں کو اور زیادہ رنگ دیا۔ انھوں نے اس میں فرضی قصے جوڑ دئے، خاص کر اس لئے کہ محمود کو اور زیادہ بڑا مذہبی آدمی ثابت کریں۔ مثال کے طور پر یہ قصہ — جسے اتہاس لیکھک گبن نے بھی لکھا ہے — کہ سومناتھ کی مورتی کے اندر بے شمار خزانہ چھپا تھا، براہمنوں نے کروڑوں روپئے اس کے بدلے میں محمود کو دینے کا وعدہ کیا۔ محمود کے سیناپتیوں نے اسے صلاح دی کہ روپئے لے لئے جاویں اور مورتی کو چھوڑ دیا جاوے، پر محمود نے یہ کہہ کر انکار کر دیا کہ میں قیامت کے دن بت شکن بن کر کھڑا ہونا پسند کروں گا، بت فروش بن کر نہیں۔ یہ سارا قصہ اگر اتہاس لیکھک فرشتہ کا من گھڑنت نہیں ہے تو کسی اور کا ہے۔ اتہاس لیکھک ایلیٹ (۲-۴۷۶) کے انوسار اتہاس لیکھک ولسن نے سومناتھ کے قصے میں اس رنگ بھرے جانے پر اپنی رائے دیتے ہوئے لکھا ہے کہ — "اس سے پہلے کے مسلمان لیکھکوں نے مورتی کے انگ بھنگ کئے جانے کا کوئی ذکر نہیں کیا۔ سچ یہ ہے کہ اس مورتی کے کوئی انگ تھے ہی نہیں۔ نہ اس کے اندر کے خزانوں کا کوئی ذکر کیا ہے، کیونکہ مورتی ٹھوس تھی اور اس کے اندر خزانے نہیں ہو سکتے تھے۔ فرشتہ نے بالکل بنا کسی اصلیت کے موتیوں اور لعلوں کے چھپے خزانوں کا

क़िस्सा गढ़ लिया था.' यह क़िस्सा साफ़ गप्प है, क्यों कि सोमनाथ का लिंग ज़रूर ठोस पत्थर का रहा होगा. अिसी तरह यह क़िस्सा कि कोअी हिन्दू महमूद को धोखा देकर किसी अैसे रेगिस्तानी रास्ते से ले गया, जहाँ पानी नहीं था; और आख़िर महमूद ने ख़ुदा से दुआ माँगी तब उसे पानी मिल सका. अैसे ही यह क़िस्सा कि गुजरात की हरियाली और वहां की सोने की खानों को देखकर महमूद वहीं रहना चाहता था, पर जब अुसके वज़ीरों ने अुसे समझाया कि ख़ुरासान का मुल्क आपको अपने पिता से मिला है और आप के लिये वही सब से अच्छा है, तो महमूद ने यह ख़्याल छोड़ दिया. ये सब क़िस्से सच्चे नहीं माने जा सकते."

अिसी तरह श्री वैद्य ने सोमनाथ के कुछ और चालू क़िस्सों को भी झूठा बतलाया है. ये सब अिब्न असीर के बयान में बाद में जोड़े गये हैं, और श्री वैद्य ने ख़ुद अिब्न असीर के बयान को भी सारा सच नहीं माना है. यह अेक आम बात है और हर अितिहास पढ़ने वाला जानता है कि अुस ज़माने के ज़्यादातर मुसलमान लेखक अपने जिन बादशाहों के कारनामे बयान करते थे, अुनके मन्दिर गिराने, बुत तोड़ने, लोगों को ज़बरदस्ती मुसलमान बनाने वग़ैरा के क़िस्सों को ख़ूब बढ़ा-चढ़ा कर लिखते थे, ताकि अुनके बादशाह में अिस्लाम का जोश ख़ूब चमके. महमूद के सोमनाथ पर हमले का क़िस्सा अगर सच भी हो—और अुसकी सचाअी में कम से कम बहुत बड़ा शक है—तो भी जो चटक-मटक की बातें अुसके साथ जुड़ी हुअी हैं, अुनमें ज़्यादातर गप्पें हैं,

قصہ گڑھ لیا تھا! یہ قصہ صاف گپ ہے کیونکہ سومناتھ کا
لنگ ضرور ٹھوس پتھر کا رہا ہوگا۔ اسی طرح یہ قصہ کہ کوئی
ہندو محمود کو دھوکا دے کر کسی ایسے ریگستانی راستے سے لے
گیا، جہاں پانی نہیں تھا! اور آخر محمود نے خدا سے دعا مانگی
تب اسے پانی مل سکا۔ ایسے ہی یہ قصہ کہ گجرات کی ہریالی اور
وہاں کی سونے کی کھانوں کو دیکھ کر محمود وہیں رہنا چاہتا تھا، پر
جب اس کے وزیروں نے اسے سمجھایا کہ خراسان کا ملک
آپ کو اپنے پتا سے ملا ہے اور آپ کے لئے وہی سب
سے اچھا ہے، تو محمود نے یہ خیال چھوڑ دیا۔ یہ سب
قصے سچے نہیں مانے جا سکتے!"

اسی طرح شری ویدیہ نے سومناتھ کے کچھ اور چالو قصوں
کو بھی جھوٹا بتلایا ہے۔ یہ سب ابن اثیر کے بیان میں بعد
میں جوڑے گئے ہیں، اور شری ویدیہ نے خود ابن اثیر کے
بیان کو بھی سارا سچ نہیں مانا ہے۔ یہ ایک عام بات ہے
اور ہر اتہاس پڑھنے والا جانتا ہے کہ اس زمانے کے زیادہ تر
مسلمان لیکھک اپنے جن بادشاہوں کے کارنامے بیان کرتے تھے،
ان کے مندر گرانے، بت توڑنے، لوگوں کو زبردستی مسلمان بنانے وغیرہ
کے قصوں کو خوب بڑھا چڑھا کر لکھتے تھے، تاکہ ان کے بادشاہ میں
اسلام کا جوش خوب چمکے۔ محمود کے سومناتھ پر حملے کا قصہ اگر سچ بھی
ہو۔ اور اس کی سچائی میں کم سے کم بہت بڑا شک ہے۔ تو بھی جو چٹک
مٹک کی باتیں اس کے ساتھ جڑی ہوئی ہیں، ان میں زیادہ تر گپیں ہیں،

अितिहास नहीं है."

अब हम भी वैद्य ही के शब्दों में महमूद ग़ज़नवी के चरित्र पर भी अेक निगाह डालना चाहते हैं. श्री वैद्य का कहना है कि :

"महमूद सचमुच अुन महापुरुषों में से था, जिन्हे प्रकृति कभी कभी पैदा करती है. अकबर या शिवाजी नेपोलियन या पीटर दी ग्रेट की तरह, अुसमें ग़ैर मामूली गुण थे. अुसमें वह शक्ति और क़ाबलियत थी, जो बहुत कम में होती है. अिस तरह के लोग दुनिया के अितिहास में नये युग पैदा कर देते हैं और क़ौमों की क़िस्मतों को बदल डालते हैं. अुसके हमलों में हम शहरों और मन्दिरों की लूट और योधाओं के क़त्ल और अुनका दास बनाया जाना तो पढ़ते हैं, पर किसी भी औरत पर या अुसकी अिज़्ज़त पर हमले का ज़िक्र नहीं सुनते. महमूद अिन्साफ़ पसंद था. अन्याय से अुसे अितनी ज़बरदस्त नफ़रत थी कि जब अुसका अपना बेटा व्यभिचार में पकड़ा गया, तो महमूद बेटे को भी मौत की सज़ा देने से नहीं झिझका. वह अेक अच्छा बादशाह और अच्छा हाकिम था. अपनी प्रजा की ख़ुशहाली को हर तरह बढ़ाने की वह पूरी कोशिश करता था. लुटेरों और डाकुओं को दबा कर अुसने व्यापारियों की रक्षा की और दूर दूर के प्रान्तों की सड़कों पर अिस तरह अमन रखा कि ख़ुरासान से लाहौर तक और लाहौर से ख़ुरासान तक बेरोक-टोक और बिना किसी डर के क़ाफ़ले आ-जा सकते थे. अुसने प्रान्तों में अच्छे अच्छे गवर्नर बनाकर भेजे और अिस बातकी कड़ी

اتہاس نہیں ہے۔"

اب ہم شری ویدیہ ہی کے شبدوں میں محمود غزنوی کے چرتر پر بھی ایک نگاہ ڈالنا چاہتے ہیں۔ شری ویدیہ کا کہنا ہے کہ:

"محمود سچ مچ اُن مہاپرشوں میں سے تھا، جنھیں پرکرتی کبھی کبھی پیدا کرتی ہے۔ اکبر یا شیواجی نیپولین یا پیٹر دی گریٹ کی طرح اس میں غیر معمولی گن تھے۔ اس میں وہ شکتی اور قابلیت تھی جو بہت کم میں ہوتی ہے۔ اس طرح کے لوگ دنیا کے اتہاس میں نئے یگ پیدا کر دیتے ہیں اور قوموں کی قسمتوں کو بدل ڈالتے ہیں۔ اس کے حملوں میں ہم شہروں اور مندروں کی لوٹ اور یودھاؤں کے قتل اور اُن کا داس بنایا جانا تو پڑھتے ہیں، پر کسی بھی عورت پر یا اس کی عزت پر حملے کا ذکر نہیں سنتے۔ محمود انصاف پسند تھا۔ انیائے سے اُسے اتنی زبردست نفرت تھی کہ جب اُس کا اپنا بیٹا ویبھیچار میں پکڑا گیا، تو محمود بیٹے کو بھی موت کی سزا دینے سے نہیں جھجکا۔ وہ ایک اچھا بادشاہ اور اچھا حاکم تھا۔ اپنی پرجا کی خوشحالی کو ہر طرح بڑھانے کی وہ پوری کوشش کرتا تھا۔ لٹیروں اور ڈاکوؤں کو دبا کر اس نے بیوپاریوں کی رکشا کی اور دور دور کے پرانتوں کی سڑکوں پر اس طرح امن رکھا کہ خراسان سے لاہور تک اور لاہور سے خراسان تک بے روک ٹوک اور بنا کسی ڈر کے قافلے آجا سکتے تھے۔ اس نے پرانتوں میں اچھے اچھے گورنر بنا کر بھیجے اور اس بات کی کڑی

निगरानी रखी कि कोअी गवर्नर अपनी प्रजापर अन्याय न कर सके. महमूद गरीबों का सच्चा पालन हार था. बेबस बेवाओं और अमीर से अमीर लोगों के बीच वह बराबर का अिन्साफ करता था. उसके अफसर यह देखने के लिअे मुकर्रर थे कि कोअी दुकानदार हलके बाट या छोटे नाप काम में न लावे, और कोअी किसी को धोखा न दे. अुसने पक्की सड़कों और छते हुअे बाजारों से शहरों की शोभा बढ़ाअी. वह हर साल लगभग अेक लाख दीनार आम लोगों के भले के कामों और दान-पुण्य में खर्च करता था. वह जालिम नहीं था. बेबसों और बेगुनाहों की जिस तरह की हत्याअें चंगेज खाँ और तैमूरने कीं, महमूद ने कभी नहीं कीं. विद्या को बढ़ाने और विद्वानों को मदद देने में वह हर साल लाखों रुपये खर्च करता था. अुसने अेक बहुत बड़ा कॉलेज खोला. अुसमें बड़ी-बड़ी तनखाहें देकर प्रोफेसर रखे. विद्यार्थियों को राज की तरफ से मुफ्त खाना दिया जाता था. अीरान के पुराने बादशाहों का सच्चा अितिहास लिखाने के लिअे अुसने फिरदौसी की धन से खूब मदद की. महमूद सुन्नी था, फिरदौसी शिया था और अीरान के जिन बादशाहों का फिरदौसी ने अपने 'शाहनामे' में हाल लिखा और अुनकी खूब तारीफें की, वे आग की पूजा करने वाले पारसी थे. महमूद ने अरबी जबान की परवाह न कर अीरानी भाषा और अीरानी साहित्य को बढ़ाया. महमूद के दरबार का अेक दूसरा रतन अलबरूनी था, जिसने महमूद ही की छत्रछाया में संस्कृत साहित्य, संस्कृत दर्शन और संस्कृत विद्याओं को पढ़ा और जिसे जिन विद्याओं का पूरा पंडित माना जाता है.

نگرانی رکھی کہ کوئی گورنر اپنی پرجا پر انیائے نہ کرسکے۔ محمود غریبوں کا سچا پالن ہار تھا۔ بےبس بیواؤں اور امیر سے امیر لوگوں کے بیچ وہ برابر کا انصاف کرتا تھا۔ اس کے افسر یہ دیکھنے کے لئے مقرر تھے کہ کوئی دکان دار ہلکے باٹ یا چھوٹے ناپ کام میں نہ لاوے، اور کوئی کسی کو دھوکا نہ دے۔ اس نے پکی سڑکوں اور چھتے ہوئے بازاروں سے شہروں کی شوبھا بڑھائی۔ وہ ہر سال لگ بھگ ایک لاکھ دینار عام لوگوں کے بھلے کے کاموں اور دان پنیہ میں خرچ کرتا تھا۔ وہ ظالم نہیں تھا۔ بےبسوں اور بےگناہوں کی جس طرح کی ہتیائیں چنگیز خاں اور تیمور نے کیں، محمود نے کبھی نہیں کیں۔ ودیا کو بڑھانے اور ودوانوں کو مدد دینے میں وہ ہر سال لاکھوں روپئے خرچ کرتا تھا۔ اس نے ایک بہت بڑا کالج کھولا۔ اس میں بڑی بڑی تنخواہیں دیکر پروفیسر رکھے۔ ودیارتھیوں کو راج کی طرف سے مفت کھانا دیا جاتا تھا۔ ایران کے پرانے بادشاہوں کا سچا اتہاس لکھانے کے لئے اس نے فردوسی کی دھن سے خوب مدد کی۔ محمود سنی تھا، فردوسی شیعہ تھا اور ایران کے جن بادشاہوں کا فردوسی نے اپنے 'شاہنامے' میں حال لکھا اور ان کی خوب تعریفیں کیں، وہ آگ کی پوجا کرنے والے پارسی تھے۔ محمود نے عربی زبان کی پرواہ نہ کر ایرانی بھاشا اور ایرانی ساہتیہ کو بڑھایا۔ محمود کے دربار کا ایک دوسرا رتن البیرونی تھا، جس نے محمود ہی کی چھترچھایا میں سنسکرت ساہتیہ، سنسکرت درشن اور سنسکرت ودیاؤں کو پڑھا، اور جسے ان ودیاؤں کا پورا پنڈت مانا جاتا ہے۔

महमूद के दरबार में और भी बहुत से नामी विद्वानों और अूंचे दरजे के कवियों का जमघट रहता था. जिस बात में महमूद का मुक़ाबला हाल के अकबर और पिछले जमाने के विक्रमादित्य से किया जा सकता है. महमूद के राज का अिन्तज़ाम बहुत अच्छा था. वह खुद विद्वान था और बाबर की तरह लड़ाअी के दिनों में भी खुद अपना रोज़नामचा लिखता था, जो साहित्य की निगाह में अेक अच्छी चीज़ है. गिबन का यह कहना बिलकुल ठीक है कि महमूद दुनिया के बड़े से बड़े बादशाहों में से था. आदमी की हैसियत से महमूद बड़ा संयमी और अुदार था."

श्री वैद्य का यह भी कहना है कि :

"यह क़िस्सा, कि महमूद सोमनाथ के चन्दन के किवाड़ गज़नी ले गया था, आजकल के अितिहास के विद्वान सच्चा नहीं मानते, और जिन किवाड़ों को अफ़ग़ानिस्तान की लड़ाई के बाद सन् १८४३ में अंग्रेज लाये थे, वे आगरे के क़िले में निकम्मे पड़े हैं."

महमूद गज़नवी की सेना में काफ़ी हिन्दू थे, जो आख़िर तक अपने धर्म पर क़ायम रहे. अुसके अेक हिन्दू सेनापति का नाम तिलक था. तिलक और अुसके हिन्दू सिपाहियों की मदद से महमूद ने अपने वतन के कअी मुसलमान बादशाहों को जीता अुसके हिन्दुस्तान के हमलों में जहाँ कहीं पुजारियों या अुनके भक्तों से महमूद को काफ़ी धन मिल गया, अुसने मन्दिर को तोड़ने की जगह अुसकी हिफ़ाज़त की. मुल्कों को जीतने के लिअे जिस तरह की मारधाड़ अुसने हिन्दुस्तान में की, अुसी तरह की तातार, ख़ुरासान, बल्ख़ और अिस्फ़हान में भी की.

محمود کے دربار میں اور بھی بہت سے نامی ودوانوں اور اونچے درجے کے کویوں کا جمگھٹ رہتا تھا۔ اس بات میں محمود کا مقابلہ حال کے اکبر اور پچھلے زمانے کے وکرمادتیہ سے کیا جاسکتا ہے۔ محمود کے راج کا انتظام بہت اچھا تھا۔ وہ خود ودوان تھا اور بابر کی طرح لڑائی کے دنوں میں بھی خود اپنا روزنامچہ لکھتا تھا، جو ساہتیہ کی نگاہ میں ایک اچھی چیز ہے۔ گبن کا یہ کہنا بالکل ٹھیک ہے کہ محمود دنیا کے بڑے سے بڑے بادشاہوں میں سے تھا۔ آدمی کی حیثیت سے محمود بڑا سنیمی اور اُدار تھا۔"

شری ویدیہ کا یہ بھی کہنا ہے کہ:

"یہ قصہ کہ محمود سومناتھ کے چندن کے کواڑ غزنی لے گیا تھا، آج کل کے اتہاس کے ودوان سچا نہیں مانتے، اور جن کواڑوں کو افغانستان کی لڑائی کے بعد ۱۸۴۳ء میں انگریز لائے تھے وہ آگرے کے قلعے میں نکمے پڑے ہیں۔"

محمود غزنوی کی سینا میں کافی ہندو تھے، جو آخر تک اپنے دھرم پر قائم رہے۔ اُن کے ایک ہندو سیناپتی کا نام تلک تھا۔ تلک اور اُن کے ہندو سپاہیوں کی مدد سے محمود نے اپنے وطن کے کئی مسلمان بادشاہوں کو جیتا۔ اس کے ہندوستان کے حملوں میں جہاں کہیں پجاریوں یا اُن کے بھگتوں سے محمود کو کافی دھن مل گیا، اس نے مندر کو توڑنے کی جگہ اُس کی حفاظت کی۔ ملکوں کو جیتنے کے لئے جس طرح کی مار دھاڑ اس نے ہندوستان میں کی، اسی طرح کی تاتار، خراسان، بلخ اور اصفہان میں بھی کی۔

यह सब होते हुअे भी महमूद ग़ज़नवी ने अपने हिन्दुस्तान के हमलों में मन्दिरों को तोड़ा और कहा जाता है कि बहुत सों — खासकर लड़ाओी के कैदियों को — ज़बरदस्ती मुसलमान बनाया. अकबर या शिवाजी ने किसी दूसरे दीनवाले के साथ अिस तरह का बरताव नहीं किया. यह फ़र्क़ कम फ़र्क़ नहीं था. हमने जो कुछ अूपर लिखा है, वह सिर्फ़ दो बातें दिखाने के लिये. अेक यह कि अितिहास की सब चलती हुअी कहानियों को हमें ज्यों-का-त्यों सच नहीं मान लेना चाहिये. दूसरी यह कि आदमी के स्वभाव में कभी बार बुराअियों के पीछे अच्छाअियाँ और अच्छाअियों के पीछे बुराअियाँ भी छिपी होती हैं. हमें अितिहास को बड़ी शान्ति, होशियारी, हमदर्दी और धीरज के साथ बेलगाव होकर पढ़ना और समझना चाहिये, तभी हम सचाअी तक पहुँच सकते हैं और अितिहास से लाभ अुठा सकते हैं.

बड़ी आजिज़ी के साथ हमारा यह भी दावा है कि मज़हब के मामले में किसी के साथ किसी तरह की भी ज़बरदस्ती क़ुरान के हुक्म और अिस्लाम के पैग़म्बर की मिसाल दोनों के ख़िलाफ़ है. क़ुरान का साफ़ हुक्म है कि —"मज़हब के मामले में कोअी ज़बरदस्ती नहीं होनी चाहिये (२–२५६)." जो लोग अेक निराकार अीश्वर के सिवा दूसरे देवी-देवताओं या मूर्तियों को पूजते हैं, अुनके बारे में क़ुरान में मुसलमानों को हुक्म है कि —"अल्लाह के सिवा जिन (देवी-देवताओं, मूर्तियों वग़ैरह) की वे पूजा करते हैं, अुन्हें बुरा मत कहो (६–१०८)."जो क़ुरान दूसरों के बुतों को बुरा कहने तक की अिजाज़त नहीं देता, वह अुन्हें तोड़ने की अिजाज़त कैसे

یہ سب ہوتے ہوئے بھی محمود غزنوی نے اپنے ہندستان کے حملوں میں مندروں کو توڑا اور کہا جاتا ہے کہ بہت سوں — خاص کر لڑائی کے قیدیوں کو — زبردستی مسلمان بنایا۔ اکبر یا شیواجی نے کسی دوسرے دین والے کے ساتھ اس طرح کا برتاؤ نہیں کیا۔ یہ فرق کم فرق نہیں تھا۔ ہم نے جو کچھ اوپر لکھا ہے، وہ صرف دو باتیں دکھانے کے لئے۔ ایک یہ کہ اتہاس کی سب چلتی ہوئی کہانیوں کو ہمیں جوں کا توں سچ نہیں مان لینا چاہئے۔ دوسری یہ کہ آدمی کے سبھاؤ میں کئی بار برائیوں کے پیچھے اچھائیاں اور اچھائیوں کے پیچھے برائیاں بھی چھپی ہوتی ہیں۔ ہمیں اتہاس کو بڑی شانتی، ہوشیاری، ہمدردی اور دھیرج کے ساتھ بے لگاؤ ہو کر پڑھنا اور سمجھنا چاہئے، تبھی ہم سچائی تک پہنچ سکتے ہیں اور اتہاس سے لابھ اٹھا سکتے ہیں۔

بڑی عاجزی کے ساتھ ہمارا یہ بھی دعویٰ ہے کہ مذہب کے معاملے میں کسی کے ساتھ کسی طرح کی بھی زبردستی قرآن کے حکم اور اسلام کے پیغمبر کی مثال دونوں کے خلاف ہے۔ قرآن کا صاف حکم ہے کہ — "مذہب کے معاملے میں کوئی زبردستی نہیں ہونی چاہئے (۲—۲۵۶)۔" جو لوگ ایک نراکار ایشور کے سوا دوسرے دیوی دیوتاؤں یا مورتیوں کو پوجتے ہیں، ان کے بارے میں قرآن میں مسلمانوں کو حکم ہے کہ — "اللہ کے سوا جن (دیوی دیوتاؤں، مورتیوں وغیرہ) کی وہ پوجا کرتے ہیں، انہیں برا مت کہو (۶—۱۰۸)۔" جو قرآن دوسروں کے بتوں کو برا کہنے تک کی اجازت نہیں دیتا، وہ انہیں توڑنے کی اجازت کیسے

दे सकता है ? क़ुरान का अेक फ़िक़रा भी जिसके ख़िलाफ़ नक़ल नहीं किया जा सकता. अपने विचारों को फैलाने के लिअे क़ुरान की साफ़ हिदायत है कि दूसरे मज़हब वालों को "समझदारी के साथ और मीठे शब्दों में समझाओ और अुनसे बहस करो, तो मिठास के साथ करो (१६–१२५)." मुहम्मद साहब की सारी ज़िन्दगी अिन्हीं अुसूलों पर चल कर बीती. अपने मिशन के शुरू के तेरह बरस के अन्दर वह बराबर मक्के में थे. जब कभी बन पड़ता था, ज़्यादातर काबे में ही नमाज़ पढ़ते थे. काबा बुतों से भरा हुआ था. मुहम्मद साहब बुतपरस्ती के ख़िलाफ़ थे और अुपदेश देते थे. पर कभी अेक बार भी अुन्होंने न किसी बुत को हाथ लगाया. न अुसकी तौहीन की और न किसी मुसलमान को अिसकी अिजाज़त दी. अिन तेरह बरसों के बाद भी जब अुन्होंने दूसरी बार मदीने से आकर मक्के की यात्रा की, अुस वक़्त भी काबे के ३६० बुत सब काबे के अन्दर मौजूद थे और मुहम्मद साहब या अुनके दो हज़ार साथियों में से किसी ने कोअी बात भी अैसी नहीं की, जिससे किसी बुत की बेअिज़्ज़ती समझी जाती या जिससे किसी पुराने ख़यालवाले का दिल दुखता. यही वह रवादारी थी, जिसने कुछ बरसों के अन्दर ही सारे मक्के को पैग़म्बर के क़दमों पर ला गिरा दिया. अिस्लाम में बुतशिकनी की अिजाज़त भी है. मुहम्मद साहब ने ख़ुद काबे के सब बुत तुड़वाकर फिंकवाये. पर वह अुस वक़्त, जब सारे मक्के में अेक भी अुन बुतों की पूजा करने-वाला न रहा था, मोहम्मद साहब जिन मुसलमानों को दूसरे इलाक़ों में अुपदेश देने के लिअे भेजते थे, अुन्हें भी इस बारे में ठीक यह हुक्म

سکتا ہے؟ قرآن کا ایک فقرہ بھی اس کے خلاف نقل نہیں کیا جا سکتا۔ اپنے خیالات کو پھیلانے کے لئے قرآن کی صاف ہدایت ہے کہ دوسرے مذہب والوں کو "سمجھداری کے ساتھ اور میٹھے شبدوں میں سمجھاؤ اور ان سے بحث کرو، تو مٹھاس کے ساتھ کرو (۱۶–۱۲۵)۔" محمد صاحب کی ساری زندگی انھیں اصولوں پر چل کر بیتی۔ اپنے مشن کے شروع کے تیرہ برس کے اندر وہ برابر مکے میں تھے۔ جب کبھی بن پڑتا تھا، زیادہ‌تر کعبے میں ہی نماز پڑھتے تھے۔ کعبہ بتوں سے بھرا ہوا تھا۔ محمد صاحب بت پرستی کے خلاف تھے اور اپدیش دیتے تھے۔ پر کبھی ایک بار بھی انھوں نے کسی بت کو ہاتھ نہ لگایا۔ نہ اس کی توہین کی اور نہ کسی مسلمان کو اس کی اجازت دی۔ ان تیرہ برسوں کے بعد بھی جب انھوں نے دوسری بار مدینے سے آکر مکے کی یاترا کی، اس وقت بھی کعبے کے ۳۶۰ بت سب کعبے کے اندر موجود تھے اور محمد صاحب یا ان کے دو ہزار ساتھیوں میں سے کسی نے کوئی بات بھی ایسی نہیں کی، جس سے کسی بت کی بے عزتی سمجھی جاتی یا جس سے کسی پرانے خیال والے کا دل دکھتا۔ یہی وہ رواداری تھی، جس نے کچھ برسوں کے اندر ہی سارے مکے کو پیغمبر کے قدموں پر لا گرا دیا۔ اسلام میں بت شکنی کی اجازت بھی ہے۔ محمد صاحب نے خود کعبے کے سب بت تڑوا کر پھنکوائے۔ پر وہ اس وقت، جب سارے مکے میں ایک بھی ان بتوں کی پوجا کرنے والا نہ رہا تھا۔ محمد صاحب جن مسلمانوں کو دوسرے علاقوں میں اپدیش دینے کے لئے بھیجتے تھے، انھیں بھی اس بارے میں ٹھیک یہ حکم

देते थे. यमन भेजते वक्त अयाज़ को ठीक यही हुक्म दिया गया था. अधिक मिसालें देकर हम अिस लेख को लम्बा नहीं करना चाहते

महमूद में अनेक गुणों के होते हुअे भी धर्म के मामले में ज़बरदस्ती न अिस्लाम की निगाह से जायज़ थी और न अिन्सानियत की निगाह से। हम चाहते हैं कि हम दुनिया के सब महापुरुषों के गुणों को ही बखानें। अुनकी कमज़ोरियों को जहाँ तक हो सके, भूलें। अुर्दू रिसाले के अेडिटरने ने अिस छोटी सी कविता को छापने में अपनी ज़िम्मेवारी का पास नहीं रखा और न देश की आजकल की फ़िज़ाका ही ख़याल रखा है. हमें अपने देश की मुश्किलों को हल करना है, तो अिससे कहीं ज़्यादा अहतियात और समझदारी से काम लेना होगा और अिससे कहीं ज़्यादा अेक दूसरे के दिलों का ख़याल रखना होगा.

('हरिजन सेवक' से)

دیتے تھے۔ یمن بھیجتے وقت عیاض کو ٹھیک یہی حکم دیا گیا تھا۔
ادھک مثالیں دے کر ہم اس لیکھ کو لمبا نہیں کرنا چاہتے۔

محمود میں انیک گنوں کے ہوتے ہوئے بھی دھرم کے معاملے میں زبردستی نہ اسلام کی نگاہ سے جائز تھی اور نہ انسانیت کی نگاہ سے۔ ہم چاہتے ہیں کہ ہم دنیا کے سب مہاپرشوں کے گنوں کو ہی بکھانیں۔ ان کی کمزوریوں کو جہاں تک ہو سکے، بھول لیں۔ اردو رسالے کے اڈیٹر نے اس چھوٹی سی کویتا کو چھاپنے میں اپنی ذمے داری کا پاس نہیں رکھا اور نہ دیش کی آج کل کی فضا کا ہی خیال رکھا ہے۔ ہمیں اپنے دیش کی مشکلوں کو حل کرنا ہے، تو اس سے کہیں زیادہ احتیاط اور سمجھداری سے کام لینا ہوگا اور اس سے کہیں زیادہ ایک دوسرے کے دلوں کا خیال رکھنا ہوگا۔

('ہریجن سیوک' سے)

देख निर्दयी तेरी गोली चली कहां और लगी कहां !

भाई आसी राम नगरी

छिदा कलेजा सपूत का ममता की छाती गई दहल.
आज आँसुओं से तर है दुखिया भारत माँ का आँचल.
खुले बाल खा खाके पछाड़ें आज दुहाई देती है.
भारत माँ की आह कान में साफ़ सुनाई देती है.
अरे निर्दयी नर पिशाच क्यों गोद मेरी सूनी करदी ?
क्यों मेरी ममता की क्यारी निर्मम त्रिशूलों से भरदी ?
आह मेरा लाडला मेरी आँखों का तारा किधर गया ?
हाय हाय वह वीर सपूत वह गाँधी प्यारा किधर गया ?
कौन अहिन्सा की मीठी मीठी तान सुनायेगा ?
कौन वह संझा समय प्रेम की मधुर रागनी गायेगा ?
कौन बहायेगा आँसू अब अत्याचार के मारों पर ?
सच्ची बात कहेगा कौन अब तलवार की धारों पर ?
हाय हाय डूबी नैया वह वीर खेवैया नहीं रहा.
दुखियारों और असहायों का बाँह गहैया नहीं रहा.
देख निर्दयी गोली तेरी चली कहाँ और लगी कहाँ ?
देख मेरा रक्तिम आँचल और छाती पर यह लाल निशाँ ?

دیکھ نردئی تیری گولی چلی کہاں اور لگی کہاں؟

(بھائی آسی رام نگری)

چھدا کلیجہ سپوت کا ممتا کی چھاتی گئی دہل
آج آنسوؤں سے تر ہے دکھیا بھارت ماں کا آنچل
کھلے بال کھا کھا کے پچھاڑیں آج دہائی دیتی ہے.
بھارت ماں کی آہ کان میں صاف سنائی دیتی ہے.
ارے نردئی نر پشاچ کیوں گود میری سونی کردی؟
کیوں میری ممتا کی کیاری زخم ترشولوں سے بھردی؟
آہ میرا لاڈلا میری آنکھوں کا تارا کدھر گیا؟
ہائے ہائے وہ ویر سپوت وہ گاندھی پیارا کدھر گیا؟
کون اہنسا کی میٹھی میٹھی تان سنائے گا؟
کون وہ سنجھا سمے پریم کی مدھر راگنی گائے گا؟
کون بہائے گا آنسو اب اتیاچار کے ماروں پر؟
سچی بات کہے گا کون اب تلوار کی دھاروں پر؟
ہائے ہائے ڈوبی نیا وہ ویر کھیویا نہیں رہا.
دکھیاروں اور اسہایوں کا بانہہ گہیا نہیں رہا.
دیکھ نردئی گولی تیری چلی کہاں اور لگی کہاں؟
دیکھ میرا رکتم آنچل اور چھاتی پر یہ لال نشاں؟

आखिरी सहारा

(बहन सालिहा आबिद हुसैन)

मैं कौन हूँ ?

रूप और सुन्दरता का नमूना, खूबसूरती और निज़ाकत की मूरत, रंगीनियों की दुनिया, क़ुदरत की सब से सुन्दर रचना, दुनिया के बनाने वाले की सब से हसीन कारीगरी का नमूना. ऐसे ऐसे कितने ही सुन्दर नामों से मैं पुकारी जाती हूँ.

मैं इंसान को जन्म देती हूँ, इंसान को पालती हूँ, इंसानियत को संभालती हूँ·······मेरी ही हस्ती से दुनिया क़ायम है, मेरी ही बात से दुनिया के बड़े से बड़े आदमी की खूबियां सामने आई हैं !

सुक़रात और अफ़लातून, ईसा और बुद्ध, कृष्ण और मोहम्मद, हुसैन और अली, लंकन और गाँधी, एक़बाल और टैगोर मेरी ही डाली के फल, मेरे ही बाग़ के फूल, मेरी ही मेहनत का समर (फल) हैं !

मैं हव्वा हूँ, मरियम हूँ, हाजरा हूँ, खुदैजा हूँ, फ़ातमा हूँ, ज़ैनब हूँ, राबिया बसरा हूँ.

मैं कौशल्या हूँ, सीता हूँ, सावित्री हूँ, शकुन्तला हूँ······· नूरजहां हूँ ज़ेबुलनिसा हूँ,·······मैं चांद बीबी हूँ, झांसी की रानी हूँ, ·······मैं कस्तूरबा हूँ, मैं सरोजिनी हूँ !!

मैं औरत हूँ !!

दुनिया की सब से ज्यादा चाही जाने वाली, प्यारी, सुन्दर,

آخری سہارا

(بہن صالحہ عابد حسین)

میں کون ہوں؟

روپ اور سندرتا کا نمونہ، خوبصورتی اور نزاکت کی مورت، رنگینیوں کی دنیا، قدرت کی سب سے سندر رچنا، دنیا کے بنانے والے کی سب سے حسین کاریگری کا نمونہ۔ ایسے ایسے کتنے ہی سندر ناموں سے میں پکاری جاتی ہوں۔

میں انسان کو جنم دیتی ہوں، انسان کو پالتی ہوں، انسانیت کو سنبھالتی ہوں...... میری ہی ہستی سے دنیا قائم ہے، میری ہی بات سے دنیا کے بڑے سے بڑے آدمی کی خوبیاں سامنے آئی ہیں!

سقراط اور افلاطون، عیسیٰ اور بودھ، کرشن اور محمد، حسین اور علی، لنکن اور گاندھی، اقبال اور ٹیگور میری ہی ڈالی کے پھل، میرے ہی باغ کے پھول، میری ہی محنت کا ثمر (پھل) ہیں!

میں حوا ہوں، مریم ہوں، ہاجرہ ہوں، خدیجہ ہوں، فاطمہ ہوں، زینب ہوں، رابعہ بصری ہوں۔

میں کوشلیا ہوں، سیتا ہوں، ساوتری ہوں، شکنتلا ہوں... نورجہاں ہوں، زیب النساء ہوں...... میں چاند بی بی ہوں، جھانسی کی رانی ہوں...... میں کستوربا ہوں، میں سروجنی ہوں!!

میں عورت ہوں!!

دنیا کی سب سے زیادہ چاہی جانے والی پیاری، سندر،

पवित्र, और पाक हस्ती !

दुनिया की सब से ज्यादा मजलूम······सताई हुई, दुखियारी और आफत की मारी हस्ती !!

मैं खुशक़िस्मत, फ़र्ज़ पहचानने वाली, धर्म की रखवाली करने वाली, ईमान की शमा जलाने वाली, और इंसानियत की रक्षा करने वाली हूँ !

मैं इल्म से महरूम, जिहालत की माती, बोझों से दबी, बेकस, और बेबस हस्ती हूँ.

संसार के सिरजनहार, दुनिया के खालिक़ ने मेरे लिये मां का पाक और पवित्र दर्जा चुना !

दुनिया के अभागे इंसानों ने मुझे उस पवित्र आसन से खींच कर अपनी हविस के नापाक तख्त पर गिरा दिया !!

मैं औरत हूँ·······

क़ुदरत का सब से सुन्दर शाहकार·······

इंसान का सब से मजलूम शिकार·······

औरत !!!

हजारों बरस से मैं मर्द के हाथों जुल्म और सितम, जिल्लत और गुलामी की जिन्दगी बिताने पर मजबूर हूँ !

कहीं मुझे मालिका से लौंडी बना कर रखा गया. कहीं मुझे बीबी और मां बनाने की जगह अपनी जलील ख्वाहिशों का शिकार बनाया गया. कहीं मुझे पैदा होते ही जिन्दा दफन किया गया. कहीं मुझे जवानी में शौहरों के साथ जिन्दा चिता में जला दिया गया······

मैं इल्म की रोशनी से महरूम, घर की चार दिवारी में बन्द,

پاکیزہ اور پاک ہستی!

دنیا کی سب سے زیادہ مظلوم..... ستائی ہوئی، دکھیاری اور آفت کی ماری ہستی!!

میں خوش قسمت، فرض پہچاننے والی، دھرم کی رکھوالی کرنے والی، ایمان کی شمع جلانے والی، اور انسانیت کی رکھشا کرنے والی ہوں!

میں علم سے محروم، جہالت کی ماتی، بوجھوں سے دبی، بےکس، اور بےبس ہستی ہوں.

سنسار کے سرجن ہار، دنیا کے خالق نے میرے لئے ماں کا پاک اور پوتر درجہ چنا!

دنیا کے ابھاگے انسانوں نے مجھے اس پوتر آسن سے کھینچ کر اپنی ہوس کے ناپاک تخت پر گرا دیا!!

میں عورت ہوں.......

قدرت کا سب سے سندر شاہکار.........

انسان کا سب سے مظلوم شکار..........

عورت!!!

ہزاروں برس سے میں مرد کے ہاتھوں ظلم اور ستم، ذلت اور غلامی کی زندگی بتانے پر مجبور ہوں!

کہیں مجھے مالکہ سے باندی بنا کر رکھا گیا. کہیں مجھے بیوی اور ماں بنانے کی جگہ اپنی ذلیل خواہشوں کا شکار بنایا گیا. کہیں مجھے پیدا ہوتے ہی زندہ دفن کیا گیا. کہیں مجھے جوانی میں شوہروں کے ساتھ زندہ چتا میں جلا دیا گیا.......

میں علم کی روشنی سے محروم، گھر کی چار دیواری میں بند،

दुनिया से बेखबर, सिर्फ मर्द की ज़लील लौंडी और उसके सितम का शिकार बनी रही !

कहीं कहीं, कभी कभी, मेरी हिमायत में कोई कमजोरसी आवाज़ उठती, मेरी बड़ाई और पवित्रता हलके से शब्दों में मानी जाती·······मगर आम तौर पर यह आवाज़ इतनी धीमी होती कि दुनिया के ज़मीर (आत्मा) पर और उसके अमल (व्योहार) पर उसका कोई ज़िक्र के क़ाबिल असर न पड़ता !!

और फिर·······हज़ारों बरस की ज़िल्लत और मुसीबत की ज़िन्दगी के बाद मेरी दुनिया में एक इनक़लाब आया !

साढ़े तेरह सौ बरस हुए·······अरब के रेगिस्तान में एक इंसान पैदा हुआ·······ऐसा इंसान जिसने सारी दुनिया के इंसानों के सुधार और भलाई का बीड़ा उठा लिया; जिसने दुनिया के सारे ज़ुल्म सहने वालों और कमज़ोरों की हिमायत के लिये अपना झंडा ऊंचा किया और जिसने मुझे—औरत को—ज़िल्लत, जिहालत, ग़ुलामी, मुसीबत और बेबसी की ज़िन्दगी से निजात दिलाई·······मुझे इंसानियत के सारे हक़ दिये·······मुझे इज़्ज़त और सम्मान के सब से ऊंचे दर्जे पर बिठाया और दुनिया को दिखा दिया कि औरत का असली दर्जा और मुक़ाम या स्थान क्या है.

हाँ ! दुनिया के सब से बड़े रहबर हज़रत मोहम्मद ने सारी दुनिया के ज़ुल्म सहने वालों की मदद के साथ मुझ पर भी इतना बड़ा एहसान किया जिसके बोझ से मेरा सिर हमेशा झुका रहेगा.

और जहां जहां, जैसे जैसे, दुनिया इस बड़े रहनुमा की

دُنیا سے بے خبر، صرف مرد کی ذلیل لونڈی اور اس کے ستم کا شکار بنی رہی!

کہیں کہیں، کبھی کبھی، میری حمایت میں کوئی کمزور سی آواز اٹھتی، میری بڑائی اور پوترتا ہلکے سے شبدوں میں مانی جاتی...... مگر عام طور پر یہ آواز اتنی دھیمی ہوتی کہ دُنیا کے ضمیر (آتما) پر اور اس کے عمل (ویوہار) پر اس کا کوئی ذکر کے قابل اثر نہ پڑتا!!

اور پھر...... ہزاروں برس کی ذلت اور مصیبت کی زندگی کے بعد میری دُنیا میں ایک انقلاب آیا!

ساڑھے تیرہ سو برس ہوئے...... عرب کے ریگستان میں ایک انسان پیدا ہوا...... ایسا انسان جس نے ساری دُنیا کے انسانوں کے سدھار اور بھلائی کا بیڑا اُٹھا لیا، جس نے دُنیا کے سارے ظلم سہنے والوں اور کمزوروں کی حمایت کے لئے اپنا جھنڈا اونچا کیا اور جس نے مجھے عورت کو ذلت، جہالت، غلامی، مصیبت اور بےبسی کی زندگی سے نجات دلائی...... مجھے انسانیت کے سارے حق دئے...... مجھے عزت اور سمان کے سب سے اونچے درجے پر بٹھایا اور دُنیا کو دکھا دیا کہ عورت کا اصلی درجہ اور مقام یا استھان کیا ہے۔

ہاں! دُنیا کے سب سے بڑے رہبر حضرت محمد نے ساری دُنیا کے ظلم سہنے والوں کی مدد کے ساتھ مجھ پر بھی اتنا بڑا احسان کیا جس کے بوجھ سے میرا سر ہمیشہ جھکا رہے گا۔

اور جہاں جہاں، جیسے جیسے، دُنیا اس بڑے رہنما کی

तालीम को समझती गई, मेरी हालत सुधरती गई. लेकिन..........
कुछ अरसे के बाद............धीरे धीरे खुद उसी रहनुमा के मानने वालों, उसी रहबर के नाम लेने वालों ने ही उसकी तालीम को भूलना शुरू कर दिया. वह उस तालीम की रूह से दूर होते गए और रस्मी व रिवाजी मज़हब के बन्धनों में जकड़ते चले गए—उन्होंने मेरे सारे हक़—सारे अधिकार फिर मार लिये. मेरी इज़्ज़त ख़त्म हो गई मुझे जिहालत के अन्धेरे में ढकेल दिया गया..........और मेरी हालत फिर पालतू जानवरों की सी हो गई !!

और अगर आज तुम मेरी सबसे बदतर हालत देखना चाहते हो तो हिन्दुस्तान आओ. हिन्दुस्तान की औरत को देखो, जिसकी मोहब्बत और वफ़ादारी, त्याग और क़ुरबानी के चरचे सारी दुनिया में फैले हुए हैं..........जिसकी असमत परवरी और पतिव्रत धर्म कहावत बन गए और जिसका सीना ईमान की रोशनी से जगमगा रहा है—

जिसकी गोद से सूरमा, बली, ऋषि, बुज़ुर्ग और महात्मा पल कर निकले और भारतवर्ष का नाम दुनिया में ऊंचा किया !

और वह.....हिन्दुस्तान की औरत—दुनिया की सबसे लाचार और बेबस हस्ती, मर्द की लौंडी..........चार दीवारी में क़ैद है. हवा, रोशनी, तन्दुरुस्ती, इल्म और अमल—दुनिया की सब अच्छी बातों से महरूम है..........

हाँ यहाँ भी इक्का दुक्का कमज़ोर और धीमी आवाज़ें कभी कभी मेरी हिमायत में उठीं.......कोई लीडर, कोई शायर.......
कोई दर्दमन्द इन्सान, कोई इन्साफ़ [illegible] आदमी.......मेरी [illegible]

تعلیم کو سمجھتی گئی، میری حالت سُدھرتی گئی۔ لیکن ...... کچھ عرصے کے بعد ...... دھیرے دھیرے خود اسی رہنما کے ماننے والوں، اسی رہبر کے نام لینے والوں نے ہی اس کی تعلیم کو بھولنا شروع کر دیا۔ وہ اس تعلیم کی روح سے دور ہوتے گئے اور رسمی رواجی مذہب کے بندھنوں میں جکڑتے چلے گئے۔ انھوں نے میرے سارے حق — سارے ادھکار پھر مار لئے، میری عزت ختم ہو گئی مجھے جہالت کے اندھیرے میں دھکیل دیا گیا ...... اور میری حالت پھر پالتو جانوروں کی سی ہو گئی!!

اور اگر آج تم میری سب سے بدتر حالت دیکھنا چاہتے ہو تو ہندستان آؤ۔ ہندستان کی عورت کو دیکھو، جس کی محبت اور وفاداری تیاگ اور قربانی کے چرچے ساری دنیا میں پھیلے ہوئے ہیں ...... جس کی عصمت پروری اور پتی برت دھرم کہاوت بن گئے اور جس کا سینہ ایمان کی روشنی سے جگمگا رہا ہے —

جس کی گود سے سورما، بلی، رشی، بزرگ اور مہاتما پل کر نکلے اور بھارت ورش کا نام دنیا میں اونچا کیا!

اور وہ ...... ہندستان کی عورت — دنیا کی سب سے لاچار اور بےبس ہستی، مرد کی لونڈی ...... چار دیواری میں قید ہے۔ ہوا، روشنی، تندرستی، علم اور عمل — دنیا کی سب اچھی چیزوں سے محروم ہے ......

ہاں یہاں بھی اکا دکا کمزور اور دھیمی آوازیں کبھی کبھی میری حمایت میں اٹھیں ...... کوئی لیڈر، کوئی شاعر ......
کوئی دردمند انسان، کوئی انصاف پسند آدمی ...... میری طرح

हालत देखकर तड़प उठा, चीख पड़ा.......मेरी हालत सुधारने में लग गया—उसका असर किसी छोटे से हलक़े में हुआ भी.......कुछ औरतों की हालत सुधरी भी.......मगर फिर भी आमतौर पर मुल्क की करोड़ों औरतें वही मज़लूमी, गुलामी, बेबसी और जिहालत की ज़िन्दगी बिताती रहीं.

और फिर.......पिछली सदी में.......मैं ने.......हिन्दुस्तानी औरत ने.......एक सपूत को जन्म दिया. एक कमज़ोर बच्चे को. मैं उस वक़्त नहीं जानती थी कि मैंने कितना बड़ा इन्सान पैदा किया है.......पहले भी कभी अन्दाज़ा नहीं हुआ. मुझे तो अपने सभी बच्चे प्यारे होते हैं. और सब में होनहार होने के लच्छन नज़र आते हैं.

बड़ा होकर दुनिया के दूसरे सुधारकों और रहनुमाओं की तरह उस बच्चे ने दुनिया के सारे ज़ुल्म सहने वालों, गुलामों और बेबस लोगों की हिमायत का बीड़ा उठा लिया.

हाँ, मेरा वह बच्चा एक मुकम्मल और पूरन इन्सान बना! सच्चा रहबर, सच्चा रहनुमा! उसने इतने बहुत से अच्छे अच्छे काम किये जिनको गिनाना भी मुश्किल है. उसने देश को गुलामी की लानत से निकाला, उसने अछूतों की बिगड़ी दशा को सुधारा, उसने गांव सुधार का काम किया, उसने ज़्यादा से ज़्यादा लोगों में तालीम फैलाने की कोशिश की, उसने देश में आपस में प्रेम और एकता पैदा करने की कोशिश में अपनी जान तक बलिदान कर दी...

उसने दुनिया में अमन और शान्ति क़ायम करने के लिये एक निराला हथियार ईजाद किया था यूं कहो कि एक भूले हुए हथियार-

حالت دیکھ کر تڑپ اٹھا، چیخ پڑا...... میری حالت سدھارنے میں لگ گیا۔ اس کا اثر کسی چھوٹے سے حلقے میں ہوا بھی.... کچھ عورتوں کی حالت سدھری بھی...... مگر پھر بھی عام طور پر ملک کی کروڑوں عورتیں وہی مظلومی، غلامی، بےبسی اور جہالت کی زندگی بتاتی رہیں

اور پھر...... پچھلی صدی میں...... میں نے...... ہندستانی عورت نے...... ایک سپوت کو جنم دیا۔ ایک کمزور بچے کو۔ میں اس وقت نہیں جانتی تھی کہ میں نے کتنا بڑا انسان پیدا کیا ہے...... پہلے بھی کبھی اندازہ نہیں ہوا۔ مجھے تو اپنے سبھی بچے پیارے ہوتے ہیں۔ اور سب میں ہونہار ہونے کے لچھن نظر آتے ہیں۔

بڑا ہو کر دنیا کے دوسرے سدھارکوں اور رہنماؤں کی طرح اس بچے نے دنیا کے سارے ظلم سہنے والوں غلاموں اور بےبس لوگوں کی حمایت کا بیڑا اٹھا لیا۔

ہاں، میرا وہ بچہ ایک مکمل اور پورن انسان بنا! سچا رہبر، سچا رہنما! اس نے اتنے بہت سے اچھے اچھے کام کیے جن کو گنانا بھی مشکل ہے۔ اس نے دیش کو غلامی کی لعنت سے نکالا، اس نے اچھوتوں کی بگڑی دشا کو سدھارا، اس نے گاؤں سدھار کا کام کیا، اس نے زیادہ سے زیادہ لوگوں میں تعلیم پھیلانے کی کوشش کی، اس نے دیش میں آپس میں پریم اور ایکتا پیدا کرنے کی کوشش میں اپنی جان تک بلیدان کر دی۔

اس نے دنیا میں امن اور شانتی قائم کرنے کے لئے ایک [illegible] یوں کہو کہ ایک بھولے ہوئے ہتھیار

के इस्तेमाल करने का तरीक़ा फिर से याद दिलाया और उस हथियार से अपने हर दुश्मन को नीचा दिखा कर उसकी बड़ाई का दुनिया को क़ायल कर दिया.........उस हथियार का नाम था, अहिंसा—अदमतशद्दुद. उसके इस्तेमाल का गुर था बुराई का जवाब भलाई से देना, जुल्म का जवाब दया से देना, नफ़रत का जवाब मुहब्बत से देना. बदला लेने के बजाय माफ़ कर देना. इन असूलों का प्रचार वह अपनी जिन्दगी भर करता रहा. और उसकी सारी जिन्दगी उसकी तालीम और असूलों का जीता जागता नमूना बनी रही.

और यही अमन और शान्ति का देवता इंसाफ़ का साथी, सच्चाई का पुजारी, गरीबों, मज़लूमों और बेकसों का सहारा, यही प्रेम और दया का अवतार मेरी हिमायत और सुधार के लिये उठ खड़ा हुआ.

जब देश में एक तरफ़ औरत के हिस्से में सिर्फ़ जिहालत और गुलामी की जिन्दगी थी और दूसरी तरफ़ एक छोटे से 'मुहज़्ज़ब' (सभ्य) कहेजाने वाले तबक़े में औरत को तितली और नुमायशी गुड़िया की सी हैसियत दी जा रही थी, इसी दर्दमन्द इंसान ने दुनिया के सामने मेरा सही दर्जा पेश किया. उसने दुनिया को बताया कि औरत भी इंसान है. उसे इंसानियत के सारे हक़ मिलने चाहियें......वह मर्द से किसी चीज़ में कम नहीं है, मर्द को अब गुलामी की जिन्दगी से औरत को आज़ाद करना ही होगा......उसने कहा: ॐ "बीबी शौहर की लौंडी नहीं बल्कि

ॐ आपबीती (उर्दू) या आत्म कथा (हिन्दी)

استعمال کرنے کا طریقہ پھر سے یاد دلایا اور اُس ہتھیار سے اپنے ہر دشمن کو نیچا دکھا کر اُس کی بڑائی کا دُنیا کو قایل کر دیا...... اس ہتھیار کا نام تھا، اہنسا — عدم تشدد. اس کے استعمال کا گُر تھا بُرائی کا جواب بھلائی سے دینا، ظلم کا جواب دیا سے دینا، نفرت کا جواب محبت سے دینا. بدلہ لینے کے بجائے معاف کر دینا. ان اصولوں کا پرچار وہ اپنی زندگی بھر کرتا رہا. اور اُس کی ساری زندگی اُس کی تعلیم اور اصولوں کا جیتا جاگتا نمونہ بنی رہی.

اور یہی امن اور شانتی کا دیوتا انصاف کا ساتھی، سچائی کا پجاری، غریبوں، مظلوموں اور بےکسوں کا سہارا، یہی پریم اور دیا کا اوتار میری حمایت اور سدھار کے لئے اٹھ کھڑا ہوا.

جب دیش میں ایک طرف عورت کے حصے میں صرف جہالت اور غلامی کی زندگی تھی اور دوسری طرف ایک چھوٹے سے مہذب (سبھیہ) کہے جانے والے طبقے میں عورت کو تتلی اور نمائشی گڑیا کی سی حیثیت دی جا رہی تھی، اسی دردمند انسان نے دنیا کے سامنے میرا صحیح درجہ پیش کیا. اُس نے دُنیا کو بتایا کہ عورت بھی انسان ہے. اسے انسانیت کے سارے حق ملنے چاہئیں...... وہ مرد سے کسی چیز میں کم نہیں. مرد کو اب غلامی کی زندگی سے عورت کو آزاد کرنا ہی ہوگا...... اُس نے کہا: * "بی بی شوہر کی لونڈی نہیں بلکہ

* آپ بیتی (اردو) یا آتم کتھا (ہندی)

उसकी साथी और मददगार है और दुख सुख में उसकी बराबर की हिस्सेदार. वह भी अपने काम का रास्ता चुनने में उसी तरह आज़ाद है जैसे उसका शौहर." उसने कहा—"औरत त्याग की मूरत और बरदाश्त की देवी, अहिंसा की तसवीर, इंसानियत को अपनाने और इंसान को पैदा करने वाली है." उसने औरत को भी उसका दर्जा और उसके फ़र्ज़ समझाए और उसके सुधार की हर मुमकिन कोशिश की, उस ज्ञानी ने दुनिया को यह भी समझाया कि क़ुदरत ने मर्द और औरत के काम अलग अलग बांट दिये हैं. मर्द का काम रोटी कमाना है और औरत का रोटी बांटना. अगर मर्द घर की हिफ़ाज़त के लिये हथियार उठाता है तो औरत उस घर को घर बनाती है. और उसका यह फ़र्ज़ किसी तरह मर्द के काम से छोटा या कम मुश्किल नहीं है. उसने कहा, "जो लोग यह कहते हैं कि औरत को भी मर्द के साथ हथियार उठाने चाहियें, वे बड़ी ख़तरनाक ग़लती करते हैं. दुनिया में सच्ची शान्ति सिर्फ़ उसी सूरत में हो सकती है कि औरत अहिंसा के असूलों को पूरी तरह अपना ले. उससे ज़्यादा और कोई उसे समझ और अपना नहीं सकता, क्यों कि सब्र और बरदाश्त, माफ़ी और दया और अथाह मोहब्बत का ख़ज़ीरा उसके दिल में छिपा हुआ है और औरत ही अपने बच्चों को दुनिया में ज़ुल्म करने और बद-अमनी फैलाने से रोक सकती है.

उसने जितने आन्दोलन चलाये, जितने तहरीकों को चलाया, सब में औरत को साथ रखा. उसे हर क़िस्म के काम करने का हौसला और मौक़ा दिया. आज़ादी की जंग में भी औरत एक बहादुर सिपाही

اس کی ساتھی اور مددگار ہے اور دُکھ سُکھ میں اُس کی برابر کی حصے دار. وہ بھی اپنے کام کا راستہ چُننے میں اُسی طرح آزاد ہے جیسے اُس کا شوہر." اُس نے کہا—"عورت تیاگ کی مورت، صبر اور برداشت کی دیوی، اہنسا کی تصویر، انسانیت کو اپنانے اور انسان کو پیدا کرنے والی ہے." اُس نے عورت کو بھی اُس کا درجہ اور اُس کے فرض سمجھائے اور اُس کے سُدھار کی ہر ممکن کوشش کی. اُس گیانی نے دُنیا کو یہ بھی سمجھایا کہ قدرت نے مرد اور عورت کے کام الگ الگ بانٹ دیے ہیں. مرد کا کام روٹی کمانا ہے اور عورت کا روٹی بانٹنا. اگر مرد گھر کی حفاظت کے لئے ہتھیار اُٹھاتا ہے تو عورت اُس گھر کو گھر بناتی ہے. اور اُس کا یہ فرض کسی طرح مرد کے کام سے چھوٹا یا کم مشکل نہیں ہے. اُس نے کہا، "جو لوگ یہ کہتے ہیں کہ عورت کو بھی مرد کے ساتھ ہتھیار اُٹھانے چاہئیں، وے بڑی خطرناک غلطی کرتے ہیں. دُنیا میں سچی شانتی صرف اُسی صورت میں ہو سکتی ہے کہ عورت اہنسا کے اصولوں کو پوری طرح اپنا لے. اُس سے زیادہ اور کوئی اُسے سمجھ اور اپنا نہیں سکتا، کیوں کہ صبر اور برداشت، معافی اور دیا اور اتھاہ محبت کا ذخیرہ اُس کے دل میں چھپا ہوا ہے اور عورت ہی اپنے بچوں کو دُنیا میں ظلم کرنے اور بدامنی پھیلانے سے روک سکتی ہے.

اُس نے جتنے اندولن چلائے، جتنے تحریکوں کو چلایا، سب میں عورت کو ساتھ رکھا. اُسے ہر قسم کے کام کرنے کا حوصلہ اور موقع دیا. آزادی کی جنگ میں بھی عورت ایک بہادر سپاہی

की तरह उसके साथ साथ रही......उसके आश्रम में औरतों की गिनती मर्दों से कम न थी. उसने औरत को सीधा रास्ता दिखाने और उसका सुधार करने की ज़बान से, क़लम से हर तरह कोशिश की. उसने अपनी बीवी की—एक औरत की—जो यादगार क़ायम की उसका मक़सद भी हिन्दुस्तानी औरत को जिहालत और ग़रीबी की ज़िन्दगी से निकालना और इल्म-व-अमल की रोशनी से चमकाकर इज़्ज़त के साथ ज़िन्दगी बिताने का गुर सिखाना था. मैं ने बचपन में इसका नाम मोहन दास करम चन्द रखा था. बड़ा होकर यह गांधी के नाम से मशहूर हुआ.

हिन्दुस्तान में बहुत बड़े बड़े आदमी हुए, ऋषि, मुनि, महात्मा. लीडर, शायर, अदीब (साहित्यकार) वली, बुज़ुर्ग, राजकाजी—लेकिन मेरे लिये जो कुछ इस दुबले पतले कमज़ोर से इंसान ने किया, मेरी हिमायत और भलाई व सुधार की जैसी ज़बरदस्त कोशिश इसने की, वैसी आज तक इस देश में किसी ने न की थी—किसी और देश में भी न की गई थी—हां, साढ़ेतेरह सौ बरस पहले जो आवाज़ अरब के रेगिस्तान में उठी थी उसकी बाज़गश्त (प्रतिध्वनि) गांधी की बदौलत हिन्दुस्तान में सुनाई दी.

लेकिन दुनिया के रहनुमा और सुधारक अपनी बात बता सकते हैं समझा सकते हैं, ज़बरदस्ती मनवा तो नहीं सकते. इसमें शक नहीं कि उनकी तालीम असर ज़रूर करती है, उनका काम सफल होता है, उनका मक़सद पूरा होता है मगर यह ज़रूरी नहीं कि उसका असर जल्दी हो, फ़ौरन हो, और सब पर हो. अच्छी बात को वही लोग सुनते और समझते हैं जिनमें अच्छाई को

کی طرح اُس کے ساتھ ساتھ رہی...... اُس کے آشرم میں عورتوں کی گنتی مردوں سے کم نہ تھی. اُس نے عورت کو سیدھا راستہ دکھانے اور اُس کا سُدھار کرنے کی زبان سے، قلم سے ہر طرح کوشش کی. اُس نے اپنی بیوی کی — ایک عورت کی — جو یادگار قائم کی اُس کا مقصد بھی ہندستانی عورت کو جہالت اور غریبی کی زندگی سے نکالنا اور علم و عمل کی روشنی سے چمکا کر عزت کے ساتھ زندگی بتانے کا گُر سکھانا تھا. میں نے بچپن میں اس کا نام موہن داس کرم چند رکھا تھا. بڑا ہوکر یہ گاندھی کے نام سے مشہور ہوا.

ہندستان میں بہت بڑے بڑے آدمی ہوئے، رشی، مُنی، مہاتما. لیڈر، شاعر، ادیب (ساہتیہ کار) ولی، بزرگ، راج کاجی — لیکن میرے لئے جو کچھ اِس دُبلے پتلے کمزور سے انسان نے کیا، میری حمایت اور بھلائی و سُدھار کی جیسی زبردست کوشش اِس نے کی، ویسی آج تک اِس دیش میں کسی نے نہ کی تھی کسی اور دیش میں بھی نہ کی گئی تھی — ہاں، ساڑھے تیرہ سو برس پہلے جو آواز عرب کے ریگستان میں اُٹھی تھی اُس کی بازگشت (پرتی دھونی) گاندھی کی بدولت ہندستان میں سنائی دی.

لیکن دُنیا کے رہنما اور سُدھارک اپنی بات بتا سکتے ہیں سمجھا سکتے ہیں، زبردستی منوا تو نہیں سکتے. اِس میں شک نہیں کہ اُن کی تعلیم اثر ضرور کرتی ہے. اُن کا کام سپھل ہوتا ہے، اُن کا مقصد پورا ہوتا ہے مگر یہ ضروری نہیں کہ اُس کا اثر جلدی ہو، فوراً ہو، اور سب پر ہو. اچھی بات کو وہی لوگ سنتے اور سمجھتے ہیں جن میں اچھائی کو

सच्चाई को क़बूल करने की सलाहियत होती है अन्धे और बहरे न कुछ देख सकते है न सुन सकते हैं.

महात्मा गांधी ने अपनी सारी जिन्दगी तज दी थी. किसके लिये ? मुल्क को गुलामी से निकालने के लिये, मुल्क वालों में एकता पैदा करने के लिये, देश को एक रखने के लिये, जुल्म और हिंसा, नफ़रत और दुश्मनी को मिटाकर अमन और सलामती की दुनिया बसाने के लिये—औरत को इज़्ज़त. सुख और शान्ति की जिन्दगी की दौलत बख़्शने के लिये !

लेकिन देखने में क्या आया ? क्या आरहा है ??

देखते देखते हिन्दुस्तान में एकता की जगह फूट बढ़ी, मोहब्बत की जगह नफ़रत पैदा हुई, देश एक रहने की जगह दो हिस्सों में बट गया, और आज़ादी मिली तो उसे पाकर अक्सर लोग वहशी जानवर बन गए— बल्कि उनसे भी बदतर. अहिंसा की जगह जुल्म और हैवानियत का दौर दौरा हो गया. भाई भाई का दुश्मन बन गया. इंसान इंसानको काटने लगा—धरती माता हजारों ज़ख़्मों से चूर, दर्द से व्याकुल, शर्म से झुकी हुई, खून में नहाई बेबसी से अपने कपूतों की यह वहशियाना हरकतें देख रही थी.

और उस वक़्त शान्ति का देवता अहिंसा का पुजारी इंसानियत का दोस्त यह सब ख़ूनी नज़्ज़ारे अपनी आंखों से देख रहा था. उसका दिल और दिमाग़, रूह और जिस्म दर्द में डूबे हुए थे. वहशत और पागल पन के उस तूफ़ान में जहां इन्सानियत डूब रही थी उसकी अकेली आवाज़ तूफ़ान में पड़ने वालों के लिये रोशनी के मीनार का काम दे रही थी.........

سچائی کو قبول کرنے کی صلاحیت ہوتی ہو اندھے اور بہرے نہ کچھ دیکھ سکتے ہیں نہ سُن سکتے ہیں۔

مہاتما گاندھی نے اپنی ساری زندگی تج دی تھی۔ کس کے لئے؟ ملک کو غلامی سے نکالنے کے لئے، ملک والوں میں ایکتا پیدا کرنے کے لئے، دیش کو ایک رکھنے کے لئے، ظلم اور ہنسا، نفرت اور دشمنی کو مٹاکر امن اور سلامتی کی دنیا بسانے کے لئے—عورت کو عزت، سکھ اور شانتی کی زندگی کی دولت بخشنے کے لئے!

لیکن دیکھنے میں کیا آیا؟ کیا آرہا ہو؟؟

دیکھتے دیکھتے ہندستان میں ایکتا کی جگہ پھوٹ بڑھی، محبت کی جگہ نفرت پیدا ہوئی، دیش ایک رہنے کی جگہ دو حصّوں میں بٹ گیا، اور آزادی ملی تو اُسے پاکر اکثر لوگ وحشی جانور بن گئے— بلکہ اُن سے بھی بدتر۔ اہنسا کی جگہ ظلم اور حیوانیت کا دور دورہ ہوگیا۔ بھائی بھائی کا دشمن بن گیا۔ انسان انسان کو کاٹنے لگا— دھرتی ماتا ہزاروں زخموں سے چُور، درد سے ویاکل، شرم سے جھکی ہوئی، خون میں نہائی ہوئی بےبسی سے اپنے سپوتوں کی یہ وحشیانہ حرکتیں دیکھ رہی تھی۔

اور اُس وقت شانتی کا دیوتا اہنسا کا پجاری انسانیت کا دوست یہ سب خونی نظارے اپنی آنکھوں سے دیکھ رہا تھا۔ اُس کا دل اور دماغ، روح اور جسم درد میں ڈوبے ہوئے تھے۔ وحشت اور پاگل پن کے اُس طوفان میں جہاں انسانیت ڈوب رہی تھی اُس کی اکیلی آواز طوفان میں پڑنے والوں کے لئے روشنی کے مینار کا کام دے رہی تھی...

बेघर, बेवतन, बेसहारा, सताए हुए और मुसीबत के मारों के लिये इस दर्दमन्द इन्सान की जात निराशा और नाउम्मीदी के घटा टोप अँधेरे में उम्मीद का दिया बनकर चमक रही थी.

मुझ बदनसीब का—औरत का—सहारा भी उस वक़्त सिर्फ गांधी की जात थी. हिन्दुस्तान को आजादी मिली···मर्द को मनमानी हरकतें करने का मौक़ा मिला—और इसका फल·······आजादी की जंग में जो कुरबानियां और कोशिशें मैंने की थीं उसका फल मुझ अभागिनी को क्या मिला ?

देश में जो झगड़े फ़साद, खून खराबी, और जो जुल्म और सितम हुए, आप जानते हैं उसका सब से बड़ा शिकार कौन हुआ ? सबसे ज्यादा दुःख— जिस्म और रूह दोनों का दुख किसे सहना पड़ा ?—मुझे !—औरत को——

यह नोआखली है.........मेरी इज्जत और ईमान पर हमले हो रहे हैं—और मुझे कोई सहारा नजर नहीं आता..........सिर्फ एक दूरकी आवाज सुनाई दे रही है....."जब तुम अपनी इज्जत और ईमान न बचा सको तो जान पर खेल जाओ"

यह बिहार है..............मेरे देश के यह बहादुर सूरमा.....मेरी बेइज्जती का बदला खुद मुझसे ले रहे हैं.........वहाँ भी मैं ही सताई गई थी और यहां भी मुझे ही बरबाद किया जा रहा है.........मेरी भरी गोद से बच्चे छीनकर मेरी आंखों के सामने चीर डाले गए.....
उन बच्चों के पेट भरने का सहारा, उनकी गिज़ा का भंडार.........बच्चे की मां की छाती से दूध की धारों की जगह खून की नदियां बहीं !...हजारों मांओं के बच्चे इस ममता के चरनों से महरूम हो गए

بے گھر، بے وطن، بے سہارا، ستائے ہوئے اور مصیبت کے ماروں کے لئے اس دردمند انسان کی ذات نراشا اور ناامیدی کے گھٹاٹوپ اندھیرے میں امید کا دیا بن کر چمک رہی تھی۔

مجھ بدنصیب کا—عورت کا—سہارا بھی اس وقت صرف گاندھی کی ذات تھی۔ ہندوستان کو آزادی ملی...... مرد کو من مانی حرکتیں کرنے کا موقع ملا—اور اس کا پھل...... آزادی کی جنگ میں جو قربانیاں اور کوششیں میں نے کی تھیں اس کا پھل مجھ ابھاگن کو کیا ملا؟

دیش میں جو جھگڑے فساد، خون خرابی، اور جو ظلم اور ستم ہوئے، آپ جانتے ہیں اس کا سب سے بڑا شکار کون ہوا؟ سب سے زیادہ دکھ—جسم اور روح دونوں کا دکھ کسے سہنا پڑا؟—مجھے!—عورت کو—

یہ نواکھالی ہے...... میری عزت اور ایمان پر حملے ہو رہے ہیں—اور کوئی سہارا نظر نہیں آتا...... صرف ایک دور کی آواز سنائی دے رہی ہے—"جب تم اپنی عزت اور ایمان نہ بچا سکو تو جان پر کھیل جاؤ!"

یہ بہار ہے...... میرے دیش کے یہ بہادر سورما...... میری بےعزتی کا بدلہ خود مجھ سے لے رہے ہیں...... وہاں بھی میں ہی ستائی گئی تھی اور یہاں بھی مجھے ہی برباد کیا جا رہا ہے...... میری بھری گود سے بچے چھین کر میری آنکھوں کے سامنے چیر ڈالے گئے......
ان بچوں کے پیٹ بھرنے کا سہارا، ان کی غذا کا بھنڈار...... بچے کی ماں کی چھاتی سے دودھ کی دھاروں کی جگہ خون کی ندیاں
[illegible]

और यह है पंजाब......मौजूदा दुनिया का शायद सबसे वहशी सबसे, खूंखार और सबसे भयानक हिस्सा—मेरे दिल में इतनी हिम्मत नहीं, मेरे पास वह लफ्ज नहीं, मेरी आवाज में वह ताक़त नहीं कि मैं उन शैतानी हरकतों का थोड़ा सा हिस्सा भी बयान कर सकूं जो यहां की गई हैं......खास तौर से मेरे साथ—औरत के साथ......

आप जानते हैं......मैं औरत हूँ—और फिर हिन्दुस्तानी औरत, जिसको अपने घर अपने शहर, अपने शौहर और बच्चों से इश्क़ होता है. और जिसे अपना धर्म अपनी जान से भी प्यारा होता है. और अपनी आबरू दुनिया की हर चीज से ज्यादा प्यारी होती है......और उन जानवरों ने मेरी यह सभी प्यारी चीजें मुझ से छीन लीं. — — और ज्यादा तर लोग चुप चाप देखा किये या "अपनों" के लिये शोर मचाया और "दूसरों" की बेइज्जती और बरबादी पर खुश हुए—मूरख, अन्धे कहीं के......उन्हें यह नहीं मालूम कि मेरे यहाँ "अपने" और "गैर" नहीं होते.

मर्द को मुल्क प्यार होता है—औरत को अपना शहर उससे कहीं ज्यादा प्यारा होता हैं जहां वह अपनी सारी जिन्दगी बिताती हैं—वही उसकी दुनिया होता है और मुझे मेरे वतन से, शहर से निकाला गया, घर से बेघर किया गया, दर दर की ठोकरें खाने के लिये......

मेरे बाप भाइयों को मेरी आंखों के सामने मार डाला गया और मैं कुछ न कर सकी——मेरे प्यारे शौहर को क़त्ल करके मुझे सोहागिन से बेवा बनाया गया, मेरी दुनिया उजाड़ डाली गई......

اور یہ ہے پنجاب...... موجودہ دنیا کا شاید سب سے وحشی، سب سے خونخوار اور سب سے بھیانک حصہ — میرے دل میں اتنی ہمت نہیں، میرے پاس وہ لفظ نہیں، میری آواز میں وہ طاقت نہیں کہ ان شیطانی حرکتوں کا تھوڑا سا حصہ بھی بیان کر سکوں جو یہاں کی گئی ہیں...... خاص طور سے میرے ساتھ — عورت کے ساتھ......

آپ جانتے ہیں...... میں عورت ہوں — اور پھر ہندستانی عورت، جس کو اپنے گھر، اپنے شہر، اپنے شوہر اور بچوں سے عشق ہوتا ہے۔ اور جسے اپنا دھرم اپنی جان سے بھی پیارا ہوتا ہے۔ اور اپنی آبرو دنیا کی ہر چیز سے زیادہ پیاری ہوتی ہے...... اور ان جانوروں نے میری یہ سبھی پیاری چیزیں مجھ سے چھین لیں۔ —— اور زیادہ تر لوگ چپ چاپ دیکھا کئے یا "اپنوں" کے لئے شور مچایا اور "دوسروں" کی بے عزتی اور بربادی پر خوش ہوئے — مورکھ، اندھے کہیں کے...... انھیں یہ نہیں معلوم کہ میرے یہاں "اپنے" اور "غیر" نہیں ہوتے۔

مرد کو ملک پیارا ہوتا ہے — عورت کو اپنا شہر اس سے کہیں زیادہ پیارا ہوتا ہے جہاں وہ اپنی ساری زندگی بتاتی ہے — وہی اس کی دنیا ہوتی ہے اور مجھے میرے وطن سے، شہر سے نکالا گیا، گھر سے بے گھر کیا گیا، در در کی ٹھوکریں کھانے کے لئے......

میرے باپ بھائیوں کو میری آنکھوں کے سامنے مار ڈالا گیا اور میں کچھ نہ کر سکی — میرے پیارے شوہر کو قتل کر کے مجھے سہاگن سے بیوہ بنایا گیا، میری دنیا اجاڑ ڈالی گئی......

[illegible] गोद से मेरे लाल छीन लिये गए, उन मासूम नन्हे फरिश्तों
[illegible] बेज़बान देवताओं को मेरी इन पथराई आंखों के सामने
[illegible] टुकड़े किया गया……और सबसे कारी चोट—सबसे बड़ा
[illegible] मेरी रूह, मेरी आत्मा पर इस आज़ादी के बाद
किया गया, वह मेरी इज़्ज़त पर मर्द का जंगली और शैतानी हमला
था।

मुझे मालूम है, दुनिया में हर जगह और हमेशा कुछ न कुछ
बदचलन, बदकार और बुरे लोग होते हैं। जिनके नज़दीक औरत
एक खिलौना है उनको ज़लील शैतानी ख़्वाहिशें पूरी करने का……
वह औरत की पवित्रता और पाकीज़गी से बेख़बर उसकी मोह-
ब्बत और उसकी वफ़ादारी से इनकार करने वाले वहशी जानवर से
होते हैं……हां मैं यह जानता हूँ……

लेकिन जो शैतानी व्योहार दस बीस सौ पचास के साथ नहीं
हज़ारों लाखों औरतों के साथ पिछले डेढ़ साल में हिन्दुस्तानी मर्दों
ने किया (मैं जब हिन्दुस्तान कहता हूँ तो मेरा मतलब देश के उस
हिस्से से भी होता है जिसे अब दूसरा नाम दे दिया गया है)……
मासूम, कमसिन, कुंवारियों, नौजवान ब्याही औरतों, यहां तक कि
अधेड़ और बूढ़ी माओं के साथ जो कुछ इन मर्द कहलाने वाले
शैतानों ने किया उसकी मिसाल मुझे कम से कम हिन्दुस्तान की
तारीख़ में नहीं मिलती ——मैं औरत, बेबस औरत कमज़ोर
और हार जाने वाली बदनसीब ज़ात, मैं, हिन्दू, सिख, मुसलिम
[illegible]—हर हिन्दुस्तानी औरत—क़यामत के दिन ख़ुदा के सामने यह
[illegible]

آخری سہارا   مارچ [illegible]

[illegible] گود سے میرے لعل چھین لئے گئے، اُن معصوم ننھے
[illegible] کو اُن بے زبان دیوتاؤں کو میری اِن پتھرائی آنکھوں کے سامنے
[illegible] ٹکڑے کیا گیا...... اور سب سے کاری چوٹ — سب سے بڑا
میری روح، میری آتما پر اِس آزادی کے بعد کیا گیا، وہ میری
[illegible] پر مرد کا جنگلی اور شیطانی حملہ تھا!

مجھے معلوم ہے، دُنیا میں ہر جگہ اور ہمیشہ کچھ نہ کچھ بدچلن، بدکار
[illegible] لوگ ہوتے ہیں۔ جن کے نزدیک عورت ایک کھلونا ہے
[illegible] ذلیل شیطانی خواہشیں پوری کرنے کا...... وہ عورت کی
[illegible] اور پاکیزگی سے بے خبر اُس کی محبت اور اُس کی وفاداری
[illegible] کرنے والے وحشی جانور سے ہوتے ہیں.... ہاں میں یہ جانتی
......

لیکن جو شیطانی ویوہار دس بیس سو پچاس کے ساتھ نہیں ہزاروں
[illegible] عورتوں کے ساتھ پچھلے ڈیڑھ سال میں ہندستانی مردوں نے کیا
[illegible] ہندستان کہتی ہوں تو میرا مطلب دیش کے اُس حصّے سے
ہوتا ہے جسے اب دوسرا نام دے دیا گیا ہے)...... معصوم، کمسن،
[illegible] نوجوان بیاہی عورتوں، یہاں تک کہ ادھیڑ اور بوڑھی ماؤں
[illegible] جو کچھ اِن مرد کہلانے والے شیطانوں نے کیا اُس کی مثال
[illegible] کم ہندستان کی تاریخ میں نہیں ملتی...... میں عورت، بے بس
[illegible] اور ہار جانے والی بدنصیب ذات ہیں، ہندو، سکھ،
[illegible] ہندستانی عورت — قیامت کے دن خدا کے سامنے یہ

उसे इतना बेबस और लाचार बनाया ??—इतना मजबूर कि वह अपनी आबरू भी वहशी और शैतान मर्दों से न बचा सके ?

आप सोच रहे हैं कि यह तो औरत है. जज़्बात में बहने वाली ख़ामख़ाह छोटी सी बात को बढ़ाने वाली थोड़े को ज़्यादा महसूस करने वाली बेवक़ूफ़ औरत—दुनिया में ऐसी बातें हुआ ही करती हैं. उनकी इस ज़ोर और तेज़ी से शिकायत क्या ? क्या औरत बुरी नहीं होती ? बदचलन नहीं होती ? ज़ालिम नहीं होती ? पर औरत को तो शौक़ होता है मर्द पर दोष लगाने का. अपने को मज़लूम बताने का·········

हां आप यह सोच रहे होंगे, मर्द हैं न ! आप नहीं महसूस कर सकते लेकिन मैं—औरत—अपनी बात के सबूत में आप को ऐसे हज़ारों वाक़यात सुना सकती हूँ, लाखों ऐसे भयानक नज़्ज़ारे दिखा सकती हूँ कि आपके रोंगटे खड़े हो जायं, आप का दिल कांप जाय, रूह तड़प उठे,·········मगर मैं जानती हूँ, मर्द इस क़िस्म की बात सुनना पसन्द नहीं किया करते—कौन ऐसी बातें सुनकर अपना दिल दुखाए, अपने ज़मीर (आत्मा) की खटक सहे. और अपने ऐश को ख़राब करे. आप कहेंगे कि ख़ामख़ाह, आख़िर हम सुनकर करेंगे ही क्या·········हम कर ही क्या सकते हैं—मगर ज़रा—ज़रा थोड़ी देर के लिये रुक जाइए ······ दो चार घटनाएं मर्द की हैवानियत और शैतानी की सुनते जाइये·········बीसवीं सदी के मुहज़्ज़ब कहलाने वाले मर्द की हैवानियत के क़िस्से·········

यह रावलपिंडी है—वह देखो सैकड़ों मर्दों का एक गिरोह [illegible], [illegible] आ रहा है. अगर

اسے اتنا بے بس اور لاچار بنایا ؟ ؟ — اتنا مجبور کہ وہ اپنی آبرو بھی وحشی اور شیطان مردوں سے نہ بچا سکے ؟

آپ سوچ رہے ہیں کہ یہ تو عورت ہے. جذبات میں بہنے والی خوامخواہ چھوٹی سی بات کو بڑھانے والی تھوڑے کو زیادہ محسوس کرنے والی بے وقوف عورت — دنیا میں ایسی باتیں ہوا ہی کرتی ہیں. ان کی اس زور اور تیزی سے شکایت کیا ؟ کیا عورت بُری نہیں ہوتی ؟ بدچلن نہیں ہوتی ؟ ظالم نہیں ہوتی ؟ پر عورت کو تو شوق ہوتا ہے مرد پر دوش لگانے کا. اپنے کو مظلوم بتانے کا ....

ہاں آپ یہ سوچ رہے ہوں گے، مرد ہیں نہ ! آپ نہیں محسوس کر سکتے لیکن میں — عورت — اپنی بات کے ثبوت میں آپ کو ایسے ہزاروں واقعات سُنا سکتی ہوں، لاکھوں ایسے بھیانک نظارے دکھا سکتی ہوں کہ آپ کے رونگٹے کھڑے ہو جائیں، آپ کا دل کانپ جائے، روح تڑپ اُٹھے، ...... مگر میں جانتی ہوں، مرد اس قسم کی بات سُننا پسند نہیں کیا کرتے — کون ایسی باتیں سُن کر اپنا دل دُکھائے، اپنے ضمیر (آتما) کی کھٹک سہے. اور اپنے عیش کو خراب کرے. آپ کہیں گے کہ خوامخواہ، آخر ہم سُن کر کریں گے ہی کیا ...... ہم کر ہی کیا سکتے ہیں — مگر ذرا — ذرا تھوڑی دیر کے لئے رُک جائیے ...... دو چار گھٹنائیں مرد کی حیوانیت اور شیطانی کی سُنتے جائیے ..... بیسویں صدی کے مہذب کہلانے والے مرد کی حیوانیت کے قصے ....

یہ راولپنڈی ہے — وہ دیکھو سیکڑوں مردوں کا ایک گروہ [illegible] ناچتا کودتا آ رہا ہے. اگر

...में इन्सानियत का कोई माद्दा, दिल में शराफ़त का कोई ज़र्रा भी बाक़ी है तो आप के लिये इस नज़्ज़ारे का ख़याल करना भी रूह को कंपा देने वाला होगा. कि यह वहशी मर्द, औरतों के एक गिरोह को, कुंवारी ब्याही, बूढ़ी और जवान औरतों को जिनके बदन पर से कपड़े का एक एक तार खींच लिया गया है, अपने घेरे के अन्दर लिये हैं.............औरत को—जो उनकी मां.......है, बहन है, बेटी है—यह इस्लाम का नाम बदनाम करने वाले मुसलमान, यह मोहम्मद—औरत पर सबसे बड़ा एहसान करने वाले, उसके हक़ दिलाने वाले, उसकी इज़्ज़त और सम्मान बढ़ाने वाले—मोहम्मद को अपने गन्दे होठों से अपना रसूल कहने वाले आज औरत को नंगा करके नाचते कूदते गंदी गालियाँ बकते हुए सड़क पर चले आ रहे हैं.

यह अमृतसर है.......यहाँ भी वही नज़्ज़ारा देख लो.........रावल पिंडी में जो बर्ताव मुझ से किया गया, जो मुसीबत मुझ पर ढाई गई उसका बदला.......अमृतसर का मर्द ख़ुद मुझ से ले रहा है. वहाँ भी मेरी बेइज़्ज़ती की गई, मुझे बरबाद किया गया और यहाँ भी मुझे ज़ुल्म और सितम का निशाना बनाया जा रहा है कैसा बदला है ? कैसा इन्तक़ाम है ??

मर्द अपनी हवस के लिये कैसे कैसे नाम ईजाद करता है !.........शरीफ़ और इज़्ज़तदार औरतों को नंगी करके सड़कों, गलियों और बाज़ारों में घुमाया जा रहा है. और मर्दों का घेरा उनके चारों तरफ़ है—यह सीता सावित्री के पुजारी, यह हिन्दुस्तानी औरत की इस्मत और वफ़ादारी का राग अलापने वाले—यह पवित्र गीता

...میں انسانیت کا کوئی مادہ، دل میں شرافت کا کوئی ذرہ بھی باقی ہو تو آپ کے لئے اِس نظارے کا خیال کرنا بھی روح کو کنپا دینے والا ہوگا کہ یہ وحشی مرد، عورتوں کے ایک گروہ کو، کنواری بیاہی، بوڑھی اور جوان عورتوں کو جن کے بدن پر سے کپڑے کا ایک ایک تار کھینچ لیا گیا ہے، اپنے گھیرے کے اندر لئے ہیں.......
عورت کو— جو اُن کی ماں...... ہے، بہن ہے، بیٹی ہے—یہ اسلام کا نام بدنام کرنے والے مسلمان، یہ محمد— عورت پر سب سے بڑا احسان کرنے والے، اُس کے حق دلانے والے، اُس کی عزت اور شان بڑھانے والے— محمد کو اپنے گندے ہونٹھوں سے اپنا رسول کہنے والے آج عورت کو ننگا کرکے ناچتے کودتے گندی گالیاں بکتے ہوئے سڑک پر چلے آ رہے ہیں.

یہ امرتسر ہے...... یہاں بھی وہی نظارہ دیکھ لو...... راولپنڈی میں جو برتاؤ مجھ سے کیا گیا، جو مصیبت مجھ پر ڈھائی گئی اُس کا بدلہ امرتسر کا مرد خود مجھ سے لے رہا ہے. وہاں بھی میری بے عزتی کی گئی، مجھے برباد کیا گیا اور یہاں بھی مجھے ظلم اور ستم کا نشانہ بنایا جا رہا ہے کیسا بدلہ ہے؟ کیسا انتقام ہے؟؟

مرد اپنی ہوس کے لئے کیسے کیسے نام ایجاد کرتا ہے!......
شریف اور عزت دار عورتوں کو ننگی کرکے سڑکوں، گلیوں اور بازاروں میں گھمایا جا رہا ہے. اور مردوں کا گھیرا اُن کے چاروں طرف ہے— یہ سیتا ساوتری کے پجاری، یہ ہندستانی عورت کی عصمت اور وفاداری کا راگ الاپنے والے— یہ پوتر گیتا

को पढ़ने वाले····यह गुरु नानक के नाम लेवा, यह कृष्ण और बुद्ध के पुजारी···· अपनी ही माँ बहिनों की यह दुर्गत बना रहे हैं····यह गान्धी के जैकारे लगाने वाले उस औरत की हर बेइज़्ज़ती और अपमान करने पर तुले हैं, जिस की इज़्ज़त और हक़ों के लिये गान्धी जी ने ज़िन्दगी भर प्रचार किया.

और आसमान उन मर्दों पर नहीं टूटा, धरती ने उन्हें नहीं निगला ····आँखें नहीं फूटीं, सूरतें नहीं बिगड़ गईं, क्या औरत का बदला क़ुदरत भी नहीं ले सकती ?

यह कैम्प हैं····हिन्दू और सिक्ख शरणार्थियों के कैम्प····मुसलमान पनाहगुज़ीनों के कैम्प···यह क़ाफ़ले जा रहे हैं····पूर्वी पंजाब से पच्छिमी पंजाब की तरफ़····पच्छिमी पंजाब से पूर्वी पंजाब की तरफ़····इन पर बार बार चढ़ाइयाँ होती हैं, धावे होते हैं····हिन्दू और सिक्खों के····मुसलमानों के···हर फ़रीक़ दूसरे के मर्दों को मारता है, बच्चों को मारता है····और औरत को—आह !—जिसकी सबसे बड़ी ख़ुशनसीबी और जिसकी सबसे बड़ी आरज़ू यह होती है कि वह अपने प्यारों के सामने इस दुनिया से उठ जाय, उसे अक्सर ज़िन्दा छोड़ दिया जाता है—रहम खाकर ? मजबूर और कमज़ोर समझकर ? जी नहीं. मजबूरों और कमज़ोरों पर तो इन बहादुर 'वीरों' इन 'मुजाहिदों' का हाथ सबसे पहले उठता है. औरत को ज़िन्दा रक्खा जाता है.····अपनी हवस के लिये, अपनी नापाक ख़्वाहिशों को पूरा करने के लिये. और इन सैकड़ों हज़ारों दरिन्दों के सामने औरत का इतना बस भी नहीं कि मर ही जाय····आह ! ····मरना भी उसके बस में नहीं है····

کو پڑھنے والے..... یہ گورو نانک کے نام لیوا، یہ کرشن اور بدھ کے پجاری..... اپنی ہی ماں بہنوں کی یہ دُرگت بنا رہے ہیں..... یہ گاندھی کے جیکارے لگانے والے اس عورت کی ہر بے عزتی اور اپمان کرنے پر تلے ہیں، جس کی عزت اور حقوں کے لئے گاندھی جی نے زندگی بھر پرچار کیا۔

اور آسمان اُن مردوں پر نہیں ٹوٹا، دھرتی نے انھیں نہیں نگلا ..... آنکھیں نہیں پھوٹیں، صورتیں نہیں بگڑ گئیں، کیا عورت کا بدلہ قدرت بھی نہیں لے سکتی؟

یہ کیمپ ہیں..... ہندو اور سکھ شرنارتھیوں کے کیمپ..... مسلمان پناہ گزینوں کے کیمپ..... یہ قافلے جا رہے ہیں..... پوربی پنجاب سے پچھمی پنجاب کی طرف..... پچھمی پنجاب سے پوربی پنجاب کی طرف..... اِن پر بار بار چڑھائیاں ہوتی ہیں، دھاوے ہوتے ہیں..... ہندو اور سکھوں کے ..... مسلمانوں کے ..... ہر فریق دوسرے کے مردوں کو مارتا ہے، بچوں کو مارتا ہے..... اور عورت کو — آہ! — جس کی سب سے بڑی خوش نصیبی اور جس کی سب سے بڑی آرزو یہ ہوتی ہے کہ وہ اپنے پیاروں کے سامنے اس دنیا سے اُٹھ جائے، اُسے اکثر زندہ چھوڑ دیا جاتا ہے — رحم کھا کر؟ مجبور اور کمزور سمجھ کر؟ جی نہیں۔ مجبوروں اور کمزوروں پر تو اِن بہادر ویروں اِن 'مجاہدوں' کا ہاتھ سب سے پہلے اُٹھتا ہے۔ عورت کو زندہ رکھا جاتا ہے..... اپنی ہوس کے لئے، اپنی ناپاک خواہشوں کو پورا کرنے کے لئے۔ اور اِن سینکڑوں ہزاروں درندوں کے سامنے عورت کا اتنا بس بھی نہیں کہ مر ہی جائے..... آہ! ..... مرنا بھی اُس کے بس میں نہیں ہے.....

यह चन्द फ़ौजी बैठे हैं. देश की हिफ़ाज़त की जिम्मेवारी इनके कन्धों पर है. कमज़ोर की हिमायत इनका पहला फ़र्ज़ है !

ज़रा सुनिये इनकी बातें—

"क्यों भाई. हम तो अपना क़िस्सा सुना चुके—तुम बताओ. तुम्हारे हाथ भी कुछ 'माल' आया ?"

"हाँ हाँ, हमने भी मौक़े से ख़ूब फ़ायदा उठाया. एक दिन हम पाँचों साथी गये और शरनार्थी कैम्प से पाँच कुआँरी ख़ूबसूरत लड़कियाँ पकड़ लाये····जिसने भी दख़ल दिया उसे नतीजा भुगतना पड़ा."

"यार क्या लड़कियाँ थीं वह भी. सुन्दरता की मूर्तियाँ. मासूमियत और पाकीज़गी की देवियाँ !"

"सचमुच कितनी प्यारी. कितनी सुन्दर थीं वह. आज तक ऐसी औरतों का कभी साथ न हुआ था."

"हाँ यार, चन्द घन्टे ख़ूब कटे उनके साथ."

"और अब कहाँ हैं वह लड़कियाँ ? ज़रा हम भी देखते उनको."

"वह मामला तो ख़तम हुआ."

"क्या मतलब ?"

"अरे यार, अहमक़ हो तुम···जब हमारा काम निकल चुका तब फिर हम उनको क्या करते····बेकार का ख़तरा ही था. शोर मचातीं तो बखेड़े फँस जाते."

"क्या वापस छोड़ आये उनके कैम्प में ?"

"नहीं भाई, अगर ज़िन्दा छोड़ते तो हमारे ऊपर मुसीबत आ

یہ چند فوجی بیٹھے ہیں، دیش کی حفاظت کی ذمے داری ان کے کندھوں پر ہے۔ کمزور کی حمایت ان کا پہلا فرض ہے!

ذرا سنیے ان کی باتیں —

"کیوں بھائی۔ ہم تو اپنا قصہ سنا چکے — تم بتاؤ تمہارے ہاتھ بھی کچھ "مال" آیا؟"

"ہاں ہاں، ہم نے بھی موقع سے خوب فائدہ اٹھایا۔ ایک دن ہم پانچوں ساتھی گئے اور شرنارتھی کیمپ سے پانچ کنواری خوبصورت لڑکیاں پکڑ لائے.... جس نے بھی دخل دیا اسے نتیجہ بھگتنا پڑا۔"

"یار کیا لڑکیاں تھیں وہ بھی۔ سندرتا کی مورتیاں۔ معصومیت پاکیزگی کی دیویاں!"

"سچ مچ کتنی پیاری۔ کتنی سندر تھیں وہ۔ آج تک ایسی عورتوں کا کبھی ساتھ نہ ہوا تھا۔"

"ہاں یار، چند گھنٹے خوب کٹے ان کے ساتھ۔"

"اور اب کہاں ہیں وہ لڑکیاں؟ ذرا ہم بھی دیکھتے ان کو۔"

"وہ معاملہ تو ختم ہوا۔"

"کیا مطلب ہے؟"

"ارے یار، احمق ہو تم.... جب ہمارا کام نکل چکا تب پھر ہم ان کو کیا کرتے.... بیکار کا خطرہ ہی تھا۔ شور مچاتیں تو ہم اُلٹے پھنس جاتے۔"

"کیا واپس چھوڑ آئے ان کے کیمپ میں؟"

"نہیں بھائی، انھیں زندہ چھوڑتے تو ہمارے اوپر مصیبت آ جاتی۔ اس لیے ہم نے انھیں ہمیشہ کے لیے چپ کر دیا۔"

और फिर हवा में पाँच भयानक ठहाके गूँजने लगे.

अरे !....आप अभी से काँप उठे ? अभी तो दोचार ही क़िस्से सुने हैं....अभी आपने यह तो सुना ही नहीं कि दिल्ली में मुझपर क्या बीती, पानीपत में क्या बीती, लाहौर में, अमृतसर में, जालन्धर में, रावलपिंडी में, रियासतो में—हिन्दू, सिख, मुसलमान रियासतों में—और दूसरे और सैकड़ों गाँव और क़स्बो में मैंने क्या कुछ देखा क्या कुछ सहा, यह सब आप सुन नहीं सकते.....मैं सुना भी नहीं सकती...

आज एक लाख से ज्यादा औरतें वह हैं जिनको लोग जबरदस्ती पकड़ कर ले गये थे. जिनकी इज़्ज़त बरबाद हो चुकी है.....जिनमें से अकसर का धर्म जबरदस्ती बदल दिय गया है. जिनके घर बार लुट चुके हैं. सगे सम्बंधी छुट चुके हैं, जिनको उनके रिशते दार, उनकी बिरादरी, उनका समाज वापस लेने के लिये तैयार नहीं—उन बेगुनाह, सताई हुई और बेबस औरतों को जिन का अपना कोई क़ुसूर न था, कोई खता न थी, कोई दोष न था.....सिवाय इसके कि वह औरत थीं. जालिम, वहशी मर्द के सामने बेबस.....और अब भी मर्द—उसी फिरके से ताल्लुक़ रखने वाला मर्द—शर्म से जमीन में नहीं गड़ता—उसकी आत्मा उसके दिल में खटक नहीं पैदा करती कि यह सब क़ुसूर उसका—मर्द का है. अब भी उसके नज़दीक औरत ही पापी है—अछूत है, बे आबरू है, जिन्हें यह नेकचलन; बेगुनाह; मासूम; और भोला मर्द क़बूल नहीं कर सकता...यह इज्ज़त दार; इन्साफ़ पसन्द और बे ऐब' समाज क़बूल नहीं कर सकता........

اور پھر ہوا میں پانچ بھیانک قہقہے گونجنے لگے.

ارے... آپ ابھی سے کانپ اُٹھے ؟ ابھی تو دو چار ہی قصے سُنے ہیں ... ابھی آپ نے یہ تو سُنا ہی نہیں کہ دلّی میں مجھ پر کیا بیتی، پانی پت میں کیا بیتی، لاہور میں، امرتسر میں، جلندھر میں، راولپنڈی میں، ریاستوں میں— ہندو، سکھ، مسلمان ریاستوں میں— اور دوسرے اور سیکڑوں گاؤں اور قصبوں میں مَیں نے کیا کچھ دیکھا کیا کچھ سہا، یہ سب آپ سُن نہیں سکتے..... میں سُنا بھی نہیں سکتی.....

آج ایک لاکھ سے زیادہ عورتیں وہ ہیں جن کو لوگ زبردستی پکڑ کر لے گئے تھے. جن کی عزّت برباد ہو چکی ہے..... جن میں سے اکثر کا دھرم زبردستی بدل دیا گیا ہے. جن کے گھر بار لُٹ چکے ہیں. سگے سمبندھی چھوٹ چکے ہیں، جن کو ان کے رشتے دار، اُن کی برادری، ان کا سماج واپس لینے کے لئے تیار نہیں— اُن بے گناہ، ستائی ہوئی اور بےبس عورتوں کو جن کا اپنا کوئی قصور نہ تھا، کوئی خطا نہ تھی، کوئی دوش نہ تھا.... سوائے اِس کے کہ وہ عورتیں تھیں. ظالم، وحشی مرد کے سامنے بےبس..... اور اب بھی مرد— اُسی فرقے سے تعلق رکھنے والا مرد— شرم سے زمین میں نہیں گڑھتا— اُس کی آتما اُس کے دل میں کھٹک نہیں پیدا کرتی کہ یہ سب قصور اُس کا مرد کا ہے. اب بھی اُس کے نزدیک عورت ہی پاپی ہے— اچھوت ہے، بے آبرو ہے، جنھیں یہ نیک چلن، بےگناہ، معصوم اور بھولا مرد قبول نہیں کر سکتا.... یہ عزّت دار، انصاف پسند اور بے عیب سماج قبول نہیں کر سکتا.......

یہ سب ہوتا رہا اور ہو رہا ہے، لیکن دیش کے ضمیر پر، زیادہ تر لوگوں کے دلوں پر کوئی آنچ نہ آئی۔ اب بھی اسی بے پرواہی اور بے حیائی کے ساتھ لوگ اپنی دلچسپیوں، اپنی تفریحوں، اپنے عیش و عشرت میں پڑے ہیں۔ سنیما اور تھیٹر اسی طرح جاری ہیں اور پریم و محبت کی کہانیاں دکھا رہے ہیں۔ زیادہ تر اخبار، رسالے (پتریکائیں) اور کتابیں اب بھی پریم کے خیالی اور گندے قصّوں سے بھری پڑی ہیں جو مزے لے لے کر پڑھی جاتی ہیں۔ اب بھی آرٹ کے پجاری اور آرٹسٹ اسی طرح عورت کے حُسن اور جسم کی نمائش کر کے اسے آرٹ کا نام دے رہے ہیں، لیکن ان کے آرٹ کے مرکز — عورت — کی جو دُرگت ہوئی ہے اس سے ان کے دل پر کوئی چوٹ نہیں پڑتی..... اب بھی لوگ اپنے ضمیر، اپنی آتما پر آنچ نہیں آنے دیتے، اپنے دل کو ٹھیس نہیں لگانا چاہتے.......

اب — جس وقت یہ ضرورت ہے کہ ہر کام، ہر بات، ہر دلچسپی کو بھلا کر اپنے دل میں درد اور احساس (انوبھوتی) رکھنے والے لوگ اپنے جانور اور پاگل بننے والے بھائیوں کی حرکتوں کی تلافی یا پرائشچت کے لئے — اس شرمناک الزام کو کم سے کم اپنے سر سے ہٹانے کے لئے ہی تن، من، دھن، سے اس دکھیاری، ابھاگن عورت کی مصیبت دور کرنے کی کوشش کرتے۔ اب بھی، جب کہ سرکار کا، جنتا کا، ادب کا، آرٹ کا، ہر عورت کا، ہر مرد کا یہ فرض تھا کہ وہ پوری طاقت کے ساتھ ان ظلموں کے خلاف آواز اٹھاتے اور ان تباہیوں کو روکنے کی کوشش کرتے، اس وقت بھی صرف ایک آواز — ہاں

यह सब होता रहा और हो रहा है, मगर देश के ज़मीर पर, ज़्यादातर लोगों के दिलों पर कोई आँच न आई. अब भी उसी बेपरवाही और बेहयाई के साथ लोग अपनी दिलचस्पियों, अपनी तफ़रीहों, अपने ऐशोइशरत में पड़े हैं. सिनेमा और थियेटर उसी तरह जारी हैं और प्रेम व मुहब्बत की कहानियाँ दिखा रहे हैं. ज़्यादातर अख़बार, रिसाले (पत्रिकायें) और किताबें अब भी प्रेम के ख़याली और गन्दे क़िस्सों से भरी पड़ी हैं जो मज़े ले लेकर पढ़ी जाती हैं. अब भी आर्ट के पुजारी और आर्टिस्ट उसी तरह औरत के हुस्न और जिस्म की नुमाइश करके उसे आर्ट का नाम दे रहे हैं, लेकिन उनके आर्ट के मरकज़—औरत—की जो दुरगत हुई है उससे उनके दिल पर कोई चोट नहीं पड़ती····अब भी लोग अपने ज़मीर, अपनी आत्मा पर आँच नहीं आने देते, अपने दिल को ठेस नहीं लगाना चाहते·········

अब—जिस वक़्त यह ज़रूरत है कि हर काम, हर बात, हर दिलचस्पी को भुला कर अपने दिल में दर्द और एहसास (अनुभूति) रखने वाले लोग अपने जानवर और पागल बनने वाले भाइयों की हरकतों की तलाफ़ी या प्रायश्चित के लिये—इस शर्मनाक इलज़ाम को कम से कम अपने सिर से हटाने के लिये ही तन, मन, धन, से उस दुखियारी, अभागिन औरत की मुसीबत दूर करने की कोशिश करते. अब भी, जब कि सरकार का, जनता का, अदब का, आर्ट का, हर औरत का, हर मर्द का यह फ़र्ज़ था कि वह पूरी ताक़त के साथ इन ज़ुल्मों के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाते और इन तबाहियों को रोकने की कोशिश करते, उस वक़्त भी सिर्फ़ एक आवाज़—सिर्फ़ एक

करने और इन्साफ़ को पूजने वाली आवाज़ आज भी उठी जो पहले मेरी हिमायत के लिये उठी थी.—वही गान्धी की आवाज़......

अगर महात्मा गान्धी ने. हिन्दुस्तानी मर्द के पागलपन और शैतानी कारनामों के खिलाफ़ इस सख्ती से आवाज़ न उठाई होती और उससे नफ़रत न ज़ाहिर की होती तो आज मैं यह कहती हूँ कि हिन्दुस्तान के मर्द को दुनिया में मुँह दिखाने के लिये जगह न रहती ......मैं कहती कि मर्द इस क़ाबिल ही नहीं कि कोई औरत उससे बात करे. उससे वास्ता रक्खे या उसकी ज़रा भी इज़्ज़त करे.

लेकिन उस मर्द—बुराई से हमेशा लड़ते रहने वाले बहादुर मर्द ......ने मेरे ग़ुस्से और ग़ज़ब को धीमा कर दिया. मैंने देखा कि जिस जात के लोगों ने मुझे सताया उसी जात का एक आदमी मेरे लिये सब कुछ करने को तैयार है......जो मेरी हिमायत पर तुल गया है, जिसने मेरी मुसीबत दूर करने का अहद कर लिया है........

वह गान्धी ही था जिसने सबसे पहले डंके की चोट पर कहा कि जिन औरतों के साथ जबरदस्ती की गई है, वह मासूम हैं, पाकबाज़ हैं, निर्दोष हैं, ईमानदार हैं........

उसने मर्दों को समझाया, डाँटा, उनको मजबूर किया कि वह फिर इज़्ज़त और आदर के साथ उन मासूम और मज़लूम लड़कियों को अपने ख़ानदानों और घरों में वापस ले लें ......उसने यहाँ तक कहा कि वह सब मेरी बेटियाँ हैं, मेरी गोद में उनके लिये जगह है........

लेकिन आज...सत्य धर्म को असली मानी में जानने वाला बेकस, बेबस औरत का यह मददगार और हिमायती, इन्साफ़

کرنے اور انصاف کو پوجنے والی آواز آج بھی اٹھی جو پہلے میری حمایت کے لئے اٹھی تھی۔ — وہی گاندھی کی آواز.....

اگر مہاتما گاندھی نے۔ ہندستانی مرد کے پاگل پن اور شیطانی کارناموں کے خلاف اس سختی سے آواز نہ اٹھائی ہوتی اور اس سے نفرت نہ ظاہر کی ہوتی تو آج میں یہ کہتی ہوں کہ ہندستان کے مرد کو دنیا میں منہ دکھانے کے لئے جگہ نہ رہتی... میں کہتی کہ مرد اس قابل نہیں کہ کوئی عورت اس سے بات کرے۔ اس سے واسطہ رکھے یا اس کی ذرا بھی عزت کرے۔

لیکن اس مرد— برائی سے ہمیشہ لڑتے رہنے والے بہادر مرد نے میرے غصے اور غضب کو دھیما کر دیا۔ میں نے دیکھا کہ جس ذات کے لوگوں نے مجھے ستایا اسی ذات کا ایک آدمی میرے لئے سب کچھ کرنے کو تیار ہے.... جو میری حمایت پر تل گیا ہے، جس نے میری مصیبت دور کرنے کا عہد کر لیا ہے......

وہ گاندھی ہی تھا جس نے سب سے پہلے ڈنکے کی چوٹ پر کہا کہ جن عورتوں کے ساتھ زبردستی کی گئی ہے، وہ معصوم ہیں، پاک باز ہیں، نردوش ہیں، ایماندار ہیں...

اس نے مردوں کو سمجھایا، ڈانٹا، ان کو مجبور کیا کہ وہ پھر عزت اور آدر کے ساتھ ان معصوم اور مظلوم لڑکیوں کو اپنے خاندانوں اور گھروں میں واپس لے لیں...... اس نے یہاں تک کہا کہ وہ سب میری بیٹیاں ہیں، میری گود میں ان کے لئے جگہ ہے......

لیکن آج... ستیہ دھرم کو اصلی معنی میں جاننے والا بےکس، بے بس عورت کا مددگار اور حمایتی، انصاف

का पुजारी, अमन और शान्ति का देवता चल बसा……और मैं फिर बेबस और बेसहारा रह गई—

वह अकेली आवाज़ जो मेरी हिमायत में उठ रही थी ख़ामोश हो चुकी है—वह रहनुमा जो दुनिया को मेरा दर्जा समझा रहा था, सच्चाई की ख़ातिर शहीद हो गया—

और अब—अब मैं सोच रही हूं……देख रही हूं कि यह करोड़ों इन्सान……महात्मा गांधी के लिये आंसू बहाने वाले—राष्ट्र पिता की दया और मोहब्बत के गुन गाने वाले, उनकी बड़ाई मानने वाले, उनके जयकारे लगाने वाले, उनकी तालीम और हिदायतों पर अमल करने का दावा करने वाले—यह गांधी के पुजारी—उसके लिये जिसको इस ज़माने में सब से गहरी चोट लगी है, जिसका जिस्म और रूह ज़ख्मों से चूर चूर है, जो दर्द और तक़लीफ़ के समुन्दर में डुबकियां खा रही हैं……तबाही और बरबादी के भंवर में फंसी हुई है—क्या करते हैं ? औरत के लिये……क्या करते हैं ??

کا پجاری، امن اور شانتی کا دیوتا چل بسا…… اور میں پھر بے بس اور بے سہارا رہ گئی—

وہ اکیلی آواز جو میری حمایت میں اٹھ رہی تھی خاموش ہو چکی ہے— وہ رہنما جو دنیا کو میرا درجہ سمجھا رہا تھا، سچائی کی خاطر شہید ہو گیا—

اور اب— اب میں سوچ رہی ہوں…… دیکھ رہی ہوں کہ یہ کروڑوں انسان…… مہاتما گاندھی کے لئے آنسو بہانے والے— راشٹر پتا کی دیا اور محبت کے گن گانے والے، ان کی بڑائی ماننے والے، ان کے جیکارے لگانے والے، ان کی تعلیم اور ہدایتوں پر عمل کرنے کا دعویٰ کرنے والے— یہ گاندھی کے پجاری— اس کے لئے جس کو اس زمانے میں سب سے گہری چوٹ لگی ہے، جس کا جسم اور روح زخموں سے چور چور ہے، جو درد اور تکلیف کے سمندر میں ڈبکیاں کھا رہی ہیں…… تباہی اور بربادی کے بھنور میں پھنسی ہوئی ہیں— کیا کرتے ہیں؟ عورت کے لئے…… کیا کرتے ہیں؟؟

महात्मा गान्धी

हयातुल्ला अन्सारी

एक आदमी ने जैसे ही गांधीं जी की मौत की ख़बर सुनी, वह गिर पड़ा और मर गया. यह वाक़िया हिन्दुस्तान में एक जगह नहीं कई जगह हुआ. कितना प्रेमी था हिन्दूस्तान महात्मा का !!——उनके शहीद होने पर रंज और ग़म का एक तूफ़ान उबल पड़ा. जिस शहर को देखो, यह मालूल होता था जैसे हर हर जगह ग़मी हो गई है. मकानो में सन्नाटा, सड़कें गलियों में सन्नाटा, हर हर मुहल्ले में सन्नाटा, क्या हिन्दू क्या मुसलमान, क्या सिख और क्या ईसाई. हर शख़्स की ज़बानों पर ताले लगे हुए थे, अन्दर से दिल रोता हुआ और आँखों की ज़बान से फ़रियाद करता हुआ—यह हाल था सारे हिन्दुस्तान का !

महात्मा ने यह प्रेम सिर्फ़ सेवा के जरिये हासिल किया था. वह सेवा करते रहे. लाग उनके दीवाने होते गये. लोंगों के प्रेम से उनकी ताक़त बढ़ती गई. इस ताक़त को काम में लाकर वह और ज्यादा सेवा करते गये. और ताक़त बढ़ी. उन्होंने और सेवा की. इस सेवा के जादू से उन्होंने चालीस करोड़ इन्सानों का दिल मोह लिया.

दुनिया के बड़े सुधारकों की क़िस्मत में लिखा है अपने आदमियों के हाथ से मारा जाना. हज़रत ईसा को उनकी क़ौम ने फाँसो पर चढ़ाया. क़ुरैश ने हज़रत मोहम्मद पर हमले किये. वह

مہاتما گاندھی

(حیات اللہ انصاری)

ایک آدمی نے جیسے ہی گاندھی جی کی موت کی خبر سنی، وہ گر پڑا اور مر گیا۔ یہ واقعہ ہندوستان میں ایک جگہ نہیں کئی جگہ ہوا۔ کتنا پریمی تھا ہندوستان مہاتما کا!! —— اُن کے شہید ہونے پر رنج اور غم کا ایک طوفان اُبل پڑا۔ جس شہر کو دیکھو، یہ معلوم ہوتا تھا۔ جیسے ہر ہر جگہ غمی ہو گئی ہو، مکانوں میں سناٹا، سڑکوں گلیوں میں سناٹا، ہر ہر محلے میں سناٹا، کیا ہندو کیا مسلمان، کیا سکھ اور کیا عیسائی۔ ہر شخص کی زبانوں پر تالے لگے ہوئے تھے، اندر سے دل روتا ہوا اور آنکھوں کی زبان سے فریاد کرتا ہوا — یہ حال تھا سارے ہندوستان کا!

مہاتما نے یہ پریم صرف سیوا کے ذریعے حاصل کیا تھا۔ وہ سیوا کرتے رہے۔ لوگ اُن کے دیوانے ہوتے گئے۔ لوگوں کے پریم سے اُن کی طاقت بڑھتی گئی۔ اس طاقت کو کام میں لا کر وہ اور زیادہ سیوا کرتے گئے۔ اور طاقت بڑھی۔ انھوں نے اور سیوا کی۔ اس سیوا کے جادو سے انھوں نے چالیس کروڑ انسانوں کا دل موہ لیا۔

دنیا کے بڑے سُدھارکوں کی قسمت میں لکھا ہے اپنے آدمیوں کے ہاتھ سے مارا جانا۔ حضرت عیسیٰ کو اُن کی قوم نے پھانسی پر چڑھایا۔ قریش نے حضرت محمد پر حملے کیے۔

बच गये तो उनके बजाय हज़रत इमाम हुसेन को क़त्ल किया. सन् १९४८ में यह दास्तान यों दोहराई गई कि महात्मा गांधी को एक हिन्दुस्तानी ने क़त्ल किया। लेकिन ऐसी बुरी घटनाएँ सुधारकों के मिशन को कमज़ोर करने की जगह पूरा कर जाती हैं. सुधारकों की सुधार की ताक़त ज़माने में हलचल मचा देती है. हवा का रुख़ बदल जाता है. तारीख़ के धारे मुड़ जाते हैं. क़दामत (पुराने पन) और बुराई के अनासिर (तत्व) लड़ते हैं और हारते हैं और आख़िर अपनी मौत इस तरह मोल लेते हैं कि अपने सबसे बड़े एहसान करने वाले को मार डालते हैं. जब लोग अपने ख़िलाफ़ जमाअत को इतना बड़ा पाप करते देखते हैं तब उनके दिल समझ लेते हैं कि वह अन्दर से क्या हैं. इससे उनकी एख़लाक़ी (नैतिक) और समाजी मौत हो जाती है.

हज़रत इमाम हुसैन के क़त्ल का यह असर हुआ था कि जो क़बीले इसमें शरीक थे, शर्मिन्दगी के मारे उनकी शाखें एक दूसरे से जुदा हो गईं. उन्होंने अपने और अपनी जगहों के नाम तक बदल लिये ताकि दुनिया को मुँह दिखा सकें. बनु उमैया की सलतनत की पोज़ीशन इतनी गिर गई कि एक शहज़ादे ने तख़्त पर बैठने से सिर्फ़ इस कारन इन्कार कर दिया कि यह तख़्त ऐसे नापाक काम कर चुका है. हजाज बिन यूसुफ़ के हद से बढ़े हुए ज़ुल्म और उमरू बिन अब्दुल अज़ीज़ का ज़बरदस्त इन्साफ़ और बेहतरीन इन्तज़ाम भी सलतनत की इज़्ज़त न बना सका. इसी कारन सलतनत इस तरह ख़त्म हुई जैसे उसमें कोई ताक़त ही न थी.

بچ گئے تو اُن کے بجائے حضرت امام حسین کو قتل کیا. ۱۹۴۸ء میں یہ داستان یوں دُہرائی گئی کہ مہاتما گاندھی کو ایک ہندستانی نے قتل کیا. لیکن ایسی بُری گھٹنائیں سُدھارکوں کے مشن کو کمزور کرنے کی جگہ پورا کر جاتی ہیں. سُدھارکوں کی سُدھار کی طاقت زمانے میں ہلچل مچا دیتی ہے. ہوا کا رُخ بدل جاتا ہے، تاریخ کے دھارے مُڑ جاتے ہیں. قدامت (پُرانے پن) اور بُرائی کے عناصر (تتو) لڑتے ہیں اور ہارتے ہیں اور آخر اپنی موت اس طرح مول لیتے ہیں کہ اپنے سب سے بڑے احسان کرنے والے کو مار ڈالتے ہیں. جب لوگ اپنے خلاف جماعت کو اتنا بڑا پاپ کرتے دیکھتے ہیں تب اُن کے دل سمجھ لیتے ہیں کہ وہ اندر سے کیا ہیں. اس سے اُن کی اخلاقی (نَیتک) اور سماجی موت ہو جاتی ہے.

حضرت امام حسین کے قتل کا یہ اثر ہوا تھا کہ جو قبیلے اس میں شریک تھے شرمندگی کے مارے اُن کی شاخیں ایک دوسرے سے جُدا ہو گئیں. اُنھوں نے اپنے اور اپنی جگہوں کے نام تک بدل لئے تاکہ دُنیا کو مُنہ دکھا سکیں. بنو امیہ کی سلطنت کی پوزیشن اتنی گر گئی کہ ایک شہزادے نے تخت پر بیٹھنے سے صرف اس کارن انکار کر دیا کہ یہ تخت ایسے ناپاک کام کر چکا ہے. حجاج بن یوسف کے حد سے بڑھے ہوئے ظلم اور عمرو بن عبدالعزیز کا زبردست انصاف اور بہترین انتظام بھی سلطنت کی عزت نہ بنا سکا. اسی کارن سلطنت اس طرح ختم ہوئی جیسے اس میں کوئی طاقت ہی نہ تھی.

अंगरेजों ने हिन्दुस्तान छोड़कर बहुत दूर अन्देशी दिखाई. मान लीजिये कि आजादी की लड़ाई में महात्मा मरन व्रत से या किसी चोट से ख़त्म हो जाते तो अंगरेज़ पीढ़ियों तक दुनिया की फिटकार सहते और उनका साम्राज तो इस तरह ख़त्म होता जैसे था ही नहीं।

महात्मा का बलिदान उनकी विदाई का आख़िरी तोहफ़ा है. इसने हमारे दिलों को गन्दगी से इस तरह पाक कर दिया है जैसे भट्टी सोने को पाक करती है. हक़ और नाहक़ हमारी आँखों के सामने आ गया. सामने तो पहले भी था. लेकिन हक़ की तरफ़ हमारे भाव न थे—वह नाहक़ की तरफ़ थे. तअस्सुब (पक्षपात) और नफ़रत ने दिलों पर ऐसा क़बज़ा जमा लिया था कि महात्मा की बात में हमको ज़रूरत से ज़्यादा नेकी नज़र आती थी इसलिये सुनते सब थे पर अमल की तरफ़ मन नहीं झुकता था. नेकी और बदी की तराज़ू में बदी का पल्ला भारी था. अब महात्मा की भारी शख़्सियत हिमालय का वज़न लेकर दूसरे पल्ले पर बैठ गई है—इसलिये सारा बोझ इस तरफ़ है—बुराई मिट गई और हिन्दुस्तान को फ़िरक़ा वराना एकता का तोहफ़ा मिल गया.

महात्मा की जान क्यों गई? वजह और सबब उसी तरह साफ़ ज़ाहिर है जैसे गर्मियों में चमकता हुआ सूरज. महात्मा में जहाँ बहुत से कमाल थे वहाँ एक कमाल यह भी था कि वह कोई भी क़दम उठाने से पहले मसले को बहुत साफ़ कर देते थे. अपने बोलों से, लिखावट से, अमल से, दलीलों से, यहाँ तक कि जब बुराई बिलकुल साफ़ सामने आजाती थी तब वह क़दम उठाते थे.

انگریزوں نے ہندستان چھوڑ کر بہت دور اندیشی دکھائی۔ مان لیجئے کہ آزادی کی لڑائی میں مہاتما مرن برت سے یا کسی چوٹ سے ختم ہو جاتے تو انگریز پیڑھیوں تک دنیا کی پھٹکار سہتے اور اُن کا سامراج تو اِس طرح ختم ہوتا جیسے تھا ہی نہیں۔

مہاتما کا بلیدان اُن کی ودائی کا آخری تحفہ ہے۔ اِس نے ہمارے دلوں کو گندگی سے اِس طرح پاک کر دیا ہے جیسے بھٹی سونے کو پاک کرتی ہے۔ حق اور ناحق ہماری آنکھوں کے سامنے آ گیا۔ سامنے تو پہلے بھی تھا لیکن حق کی طرف ہمارے بھاو نہ تھے — وہ ناحق کی طرف تھے۔ تعصب (پکش پات) اور نفرت نے دلوں پر ایسا قبضہ جما لیا تھا کہ مہاتما کی بات میں ہم کو ضرورت سے زیادہ نیکی نظر آتی تھی اس لئے سنتے سب تھے پر عمل کی طرف من نہیں جھکتا تھا۔ نیکی اور بدی کی ترازو میں بدی کا پلہ بھاری تھا۔ اب مہاتما کی بھاری شخصیت ہمالیہ کا وزن لے کر دوسرے پلّے پر بیٹھ گئی ہے — اِس لئے سارا بوجھ اِس طرف ہے — برائی مٹ گئی اور ہندستان کو فرقہ وارانہ ایکتا کا تحفہ مل گیا۔

مہاتما کی جان کیوں گئی؟ وجہ اور سبب اُسی طرح صاف ظاہر ہیں جیسے گرمیوں میں چمکتا ہوا سورج۔ مہاتما میں جہاں بہت سے کمال تھے وہاں ایک کمال یہ بھی تھا کہ وہ کوئی بھی قدم اٹھانے سے پہلے مسئلے کو بہت صاف کر دیتے تھے۔ اپنے بول سے، لکھاوٹ سے، عمل سے، دلیلوں سے یہاں تک کہ جب برائی بالکل صاف سامنے آ جاتی تھی تب وہ قدم اٹھاتے تھے۔

आज सब जानते हैं कि गान्धी जी की जान इस वजह से गई कि वह हिन्दुस्तान के हिन्दुओं से कहते थे कि मुसलमान थोड़ी तादाद में हैं. इनको न सताओ और पाकिस्तान के मुसलमानों से कहते थे कि वहाँ के हिन्दू थोड़ी तादाद में हैं, उनको तंग न करो. उनके बलिदान का पूरा बोझ इस पल्ले पर है. यों समझ लो कि आसमान और जमीन ने बेहतरीन लाल रोशनाई से यह फ़रमान लिख दिया है कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की धरती पर अब फ़िरक़ावाराना दंगे न होंगे—मुमकिन है कि दो चार जगह छोटी मोटी घटनायें हो जायं. मुमकिन है कि पाकिस्तान का दिल ज़रा देर में पसीजे. लेकिन ऐटम बम बल्कि महा ऐटम बम छूट चुका है. वह अपना काम करके रहेगा. अब जो दंगे हों उनको पूरी घरेलू लड़ाई की लम्बी जिन्दगी की आख़िरी हिचकियाँ समझना चाहिये.

इन्सानी दिल का भी अजीब हाल है. अगर उसके किसी एक कोने में नेकी आजाती है तो फिर वह दूसरे कोनों में भी रोशनी करने लगती है. वह पाक जज़्बा, वह पवित्र भाव जो आज फ़िरक़ावाराना एकता का काम कर रहा है, कल दिल के दूसरे कोनों को भी जगमगायेगा, छोटे भावों के मुक़ाबले में हमेशा ऊँचे जज़्बात की मदद करेगा. यह जज़्बा सिर्फ़ हिन्दुस्तान तक नहीं रहेगा बल्कि दुनिया के दूसरे कोनों में भी जायगा और वहाँ भी लड़ाई के मुक़ाबले में शान्ति को ताक़त पहुँचायेगा. रहे गान्धी का पयाम रहती दुनिया तक.

آج سب جانتے ہیں کہ گاندھی کی جان اس وجہ سے گئی کہ وہ ہندستان کے ہندوؤں سے کہتے تھے کہ مسلمان تھوڑی تعداد میں ہیں۔ ان کو نہ ستاؤ اور پاکستان کے مسلمانوں سے کہتے تھے کہ وہاں کے ہندو تھوڑی تعداد میں ہیں ان کو تنگ نہ کرو۔ ان کے بلیدان کا پورا بوجھ اس پلڑے پر ہے۔ یوں سمجھ لو کہ آسمان اور زمین نے بہترین لال روشنائی سے یہ فرمان لکھ دیا ہے کہ ہندستان اور پاکستان کی دھرتی پر اب فرقہ وارانہ دنگے نہ ہوں گے — ممکن ہے کہ دو چار جگہ چھوٹی موٹی گھٹنائیں ہو جائیں۔ ممکن ہے کہ پاکستان کا دل ذرا دیر میں پسیجے۔ لیکن ایٹم بم بلکہ مہا ایٹم بم چھوٹ چکا ہے۔ وہ اپنا کام کرکے رہےگا۔ اب جو دنگے ہوں ان کو پوری گھریلو لڑائی کی لمبی زندگی کی آخری ہچکیاں سمجھنا چاہئے۔

انسانی دل کا بھی عجیب حال ہے۔ اگر اس کے کسی ایک کونے میں نیکی آجاتی ہے تو پھر وہ دوسرے کونوں میں بھی روشنی کرنے لگتا ہے۔ وہ پاک جذبہ، وہ پوتر بھاو جو آج فرقہ وارانہ ایکتا کا کام کر رہا ہے، کل دل کے دوسرے کونوں کو بھی جگمگائےگا، چھوٹے بھاووں کے مقابلے میں ہمیشہ اونچے جذبات کی مدد کرےگا۔ یہ جذبہ صرف ہندستان تک نہیں رہےگا بلکہ دنیا کے دوسرے کونوں میں بھی جائےگا اور وہاں بھی لڑائی کے مقابلے میں شانتی کو طاقت پہنچائےگا۔ رہے گاندھی کا پیام رہتی دنیا تک۔

इस घर को आग लग गई घर के चराग़ से

डाक्टर सैयद महमूद

महात्मा गांधी की मौत मुल्क की मौत है. कम से कम हिन्दुस्तान की एख़लाक़ी (नैतिक) मौत तो ज़रूर है. दुनिया के अमन और शान्ति की मौत है. सुलह और एकता की मौत है. अभी उनके व्रत के मौके पर मोसियो ब्लोम ने कहा था कि दुनिया के आन्इदा अमन और शान्ति की आशाएँ गांधी जी से लगी हुई हैं. ऐसी मौत पर हम जिस क़दर भी वावैला करें, जिस क़दर भी रोयें-पीटें. जिस क़दर भी अपना सिर धुनें, वह कम है. लोग कहते हैं कि सब्र करना चाहिये. बेशक सिवाय इसके दूसरा चारा नहीं. लेकिन ऐसी मौत पर कैसे सब्र हो, जिस मौत ने एक मुल्क की सारी आशाओं का ख़ात्मा कर दिया हो. एक क़ौम को दरिया के बीच मंझदार में छोड़ दिया हो. यहूदियों की क़ौम जब मिस्र से चली तो उसके साथ मूसा जैसा रहनुमा था. हज़रत मूसा हज़ार उनको सीधा रास्ता बतलाते रहे लेकिन वह क़ौम उनकी एक न सुनती और जो जी में आता वही करती. यहाँ तक कि चालीस बरस तक रेगिस्तान में रास्ता भटकती रही लेकिन फिर भी मूसा का कहना न मानी जिसका नतीजा यह हुआ कि क़ुदरत ने यहूदियों को हुकूमत से महरूम कर दिया. और आज तक वह कहीं हुकूमत न कर सके.

मुल्क को आज़ादी दिलाने के बाद गांधी जी को जिन मुसीबतों

اِس گھر کو آگ لگ گئی گھر کے چراغ سے

(ڈاکٹر سید محمود)

مہاتما گاندھی کی موت ملک کی موت ہے۔ کم سے کم ہندستان کی اخلاقی (نیتک) موت تو ضرور ہے۔ دُنیا کے امن اور شانتی کی موت ہے۔ صلح اور ایکتا کی موت ہے۔ ابھی اُن کے برت کے موقع پر موسیو بلوم نے کہا تھا کہ دُنیا کے آئندہ امن اور شانتی کی آشائیں گاندھی جی سے لگی ہوئی ہیں۔ ایسی موت پر ہم جس قدر بھی واویلا کریں، جس قدر بھی روئیں پیٹیں، جس قدر بھی اپنا سر دھنیں، وہ کم ہے۔ لوگ کہتے ہیں کہ صبر کرنا چاہیے۔ بے شک سوائے اِس کے دوسرا چارہ نہیں۔ لیکن ایسی موت پر کیسے صبر ہو، جس موت نے ایک ملک کی ساری آشاؤں کا خاتمہ کر دیا ہو۔ ایک قوم کو دریا کے بیچ منجھدار میں چھوڑ دیا ہو۔ یہودیوں کی قوم نے جب مصر سے چلی تو اُس کے ساتھ موسیٰ جیسا رہنما تھا۔ حضرت موسیٰ ہزار اُن کو سیدھا راستہ بتلاتے رہے لیکن وہ قوم اُن کی ایک نہ سنتی اور جو جی میں آتا وہی کرتی۔ یہاں تک کہ چالیس برس تک ریگستان میں راستہ بھٹکتی رہی لیکن پھر بھی موسیٰ کا کہنا نہ مانی جس کا نتیجہ یہ ہوا کہ قدرت نے یہودیوں کو حکومت سے محروم کر دیا، اور آج تک وہ کہیں حکومت نہ کر سکی۔

ملک کو آزادی دلانے کے بعد گاندھی جی کو جن مصیبتوں

का सामना करना पड़ा और जिस तरह हम सबने मिल कर उनका कहना न माना और उनके बतलाये हुए सीधे रास्ते को छोड़कर अपना रास्ता पकड़ा, उनकी चीख़ पुकार पर ज़रा भी ध्यान न दिया और इस तरह उनको बराबर तकलीफ़ पहुँचाते रहे. यह सब हाल ही की घटनाएँ हैं और सब लोग उनसे वाक़िफ़ हैं. आज़ादी मिलने के चन्द महीने बाद हमने देख लिया कि गांधी जी के बतलाये हुए रास्ते को छोड़कर दूसरा रास्ता पकड़ने का नतीजा क्या हुआ. हमारे सामने एक भयानक समुन्दर आगया. हर तरफ़ अन्धेरा ही अन्धेरा था. किसी तरफ़ कोई रास्ता न था. सिर्फ़ गांधी जी की रोशनी का एक दिया टिमटिमा रहा था जिसकी रोशनी में आशा थी कि शायद हमको सही रास्ता मिल जाय. लेकिन हमारी अभागी क़ौम ने उस दिये की रोशनी को भी बुझा दिया. अब चारों तरफ़ अँधेरा ही अँधेरा है. भयानक समुन्दर बीच में है. न कोई कशती है न कशती खेने वाला. अब हमारे देश के सामने मुश्किलों और कठिनाइयों का समुन्दर लहरें मार रहा है. क्या कहीं ऐसा तो नहीं है कि क़ुदरत ने हमारे गुनाहों से तंग आकर यह फ़ैसला कर लिया हो कि यहूदियों की क़ौम की तरह हमारी क़ौम को भी हुकूमत से हमेशा के लिये महरूम कर दे. हमने चन्द महीनों में दुनिया पर साबित कर दिया कि हम हुकूमत करने के क़ाबिल नहीं हैं. आज से चन्द दिन पहले दुनिया हम पर हँसती थी. आज दुनिया हम पर लानत भेजती है.

क्या इतिहास फिर से दोहराया तो नहीं जायगा ? सुक़रात और शम्स तबरेज़ को अपनी सच्चाई के कारन ज़हर का प्याला

کا سامنا کرنا پڑا اور جس طرح ہم سب نے مل کر ان کا کہنا نہ مانا اور ان کے بتلائے ہوئے سیدھے راستے کو چھوڑ کر اپنا راستہ پکڑا، ان کی چیخ پکار پر ذرا بھی دھیان نہ دیا اور اس طرح ان کو برابر تکلیف پہنچاتے رہے۔ یہ سب حال ہی کی گھٹنائیں ہیں اور سب لوگ ان سے واقف ہیں۔ آزادی ملنے کے چند مہینے بعد ہم نے دیکھ لیا کہ گاندھی جی کے بتلائے ہوئے راستے کو چھوڑ کر دوسرا راستہ پکڑنے کا نتیجہ کیا ہوا۔ ہمارے سامنے ایک بھیانک سمندر آگیا۔ ہر طرف اندھیرا ہی اندھیرا تھا۔ کسی طرف کوئی راستہ نہ تھا۔ صرف گاندھی جی کی روشنی کا ایک دیا ٹمٹما رہا تھا جس کی روشنی میں آشا تھی کہ شاید ہم کو صحیح راستہ مل جائے۔ لیکن ہماری ابھاگی قوم نے اس دیے کی روشنی کو بھی بجھا دیا۔ اب چاروں طرف اندھیرا ہی اندھیرا ہے۔ بھیانک سمندر بیچ میں ہے۔ نہ کوئی کشتی ہے نہ کشتی کھینے والا۔ اب ہمارے دیش کے سامنے مشکلوں اور کٹھنائیوں کا سمندر لہریں مار رہا ہے۔ کیا کہیں ایسا تو نہیں ہے کہ قدرت نے ہمارے گناہوں سے تنگ آکر یہ فیصلہ کر لیا ہو کہ یہودیوں کی قوم کی طرح ہماری قوم کو بھی حکومت سے ہمیشہ کے لئے محروم کر دے۔ ہم نے چند مہینوں میں دنیا پر ثابت کر دیا کہ ہم حکومت کرنے کے قابل نہیں ہیں۔ آج سے چند دن پہلے دنیا ہم پر ہنستی تھی۔ آج دنیا ہم پر لعنت بھیجتی ہے۔

کیا اتہاس پھر سے دہرایا تو نہیں جائے گا؟ سقراط اور شمس تبریز کو اپنی سچائی کے کارن زہر کا پیالہ

पीना पड़ा था. मंसूर को अब्बासिया सलतनत ने क़तल किया. फिर अब्बासिया सलतनत पर क्या गुज़री, यह सब को मालूम है. दक्खिन के बहमनी राज ने सैयद मौला को क़त्ल किया और बहुत जल्द बहमनी राज का खात्मा हो गया. सरमद को औरंगज़ेब ने क़त्ल कराया, थोड़े ही अरसे बाद मुग़ल सलतनत बाक़ी न रही. ख़ुदा के सामने हम सबको आजिज़ी के साथ अपने क़सूरों की माफ़ी माँगनी चाहिये और उस वक़्त से थर्राना चाहिये कि तारीख़ का यह सबक़ कहीं दोहराया न जाये.

जो लोग गांधी जी से क़रीब थे और जिनसे कभी कभी वह अपने दिल की बातें कह दिया करते थे, वह उनकी दिली तकलीफ़ से और उनकी मायूसी से वाक़िफ़ है, जो इस तरफ़ उनको थी. अभी हाल ही में उन्होंने मुझ से कहा था कि हिन्दू मेरी पूजा तो ज़रूर करना चाहते हैं लेकिन मेरा कहा नहीं सुनना चाहते. आज मुसलमान उनके लिये बेचैन और बेताब होकर रो रहे है, लेकिन अब रोने से क्या होता है. वक़्त निकल गया. बीस बरस तक वह उनको अपना दुशमन नम्बर एक समझते रहे. हममें से कुछ हर चन्द उनको समझाते रहे, अपना सिर धुनते रहे और मुसलमानों से कहते रहे कि वह ऐसा न समझें. गांधी जी इन्सानियत के दोस्त हैं. वह किसी के दुशमन नहीं हो सकते. लेकिन मुसलमानों ने एक न सुनी. अब वक़्त गुज़रने पर उनको पता चला कि असलियत क्या थी. हिन्दू पढ़े लिखे लोगों में एक अच्छी ख़ासी तादाद उन लोगों की पैदा हो गई जो उनको हिन्दू संस्कृति और हिन्दू सभ्यता का दुशमन समझने लगे. उन लोगों के मुंह पर हिन्दू

پینا پڑا تھا. منصور کو عباسیہ سلطنت نے قتل کیا، پھر عباسیہ سلطنت پر کیا گزری، یہ سب کو معلوم ہے. دکھن کے بہمنی راج نے سید مولا کو قتل کیا اور بہت جلد بہمنی راج کا خاتمہ ہو گیا. سرمد کو اورنگ زیب نے قتل کرایا، تھوڑے ہی عرصے بعد مغل سلطنت باقی نہ رہی. خدا کے سامنے ہم سب کو عاجزی کے ساتھ اپنے قصوروں کی معافی مانگنی چاہئے اور اس وقت سے تھرانا چاہئے کہ تاریخ کا یہ سبق کہیں دہرایا نہ جائے.

جو لوگ گاندھی جی سے قریب تھے اور جن سے کبھی کبھی وہ اپنے دل کی باتیں کہہ دیا کرتے تھے، وہ اُن کی دلی تکلیف سے اور اُن کی مایوسی سے واقف ہیں، جو اِس طرف اُن کو تھی. ابھی حال ہی میں انھوں نے مجھ سے کہا تھا کہ ہندو میری پوجا تو ضرور کرنا چاہتے ہیں لیکن میرا کہا نہیں سننا چاہتے. آج مسلمان ان کے لئے بےچین اور بےتاب ہوکر رو رہے ہیں، لیکن اب رونے سے کیا ہوتا ہے. وقت نکل گیا. بیس برس تک وہ ان کو اپنا دشمن نمبر ایک سمجھتے رہے. ہم میں سے کچھ ہر چند ان کو سمجھاتے رہے، اپنا سر دھنتے رہے اور مسلمانوں سے کہتے رہے کہ وہ ایسا نہ سمجھیں. گاندھی جی انسانیت کے دوست ہیں. وہ کسی کے دشمن نہیں ہو سکتے. لیکن مسلمانوں نے ایک نہ سنی. اب وقت گزرنے پر اُن کو پتہ چلا کہ اصلیت کیا تھی. ہندو پڑھے لکھے لوگوں میں ایک اچھی خاصی تعداد اُن لوگوں کی پیدا ہو گئی جو اُن کو ہندو سنسکرتی اور ہندو سبھیتا کا دشمن سمجھنے لگے. اُن لوگوں کے منہ پر ہندو

सभ्यता और हिन्दू संस्कृति के शब्द थे. लेकिन यह लोग हिन्दू संस्कृति और हिन्दू सभ्यता को न समझते थे और न उसके समझने की काबलीयत रखते थे. यह लोग हिन्दू सभ्यता और हिन्दू संस्कृति की बड़ाई को क्या जानें. हिन्दू सभ्यता और हिन्दू संस्कृति जिस चीज का नाम है वह इन्सानियत का दर्द है, इन्सानियत की सेवा है, इन्सानियत की भलाई है. हिन्दू सभ्यता और हिन्दू संस्कृति कुछ नौकरियों का या कौन्सिल की मेम्बरी का या इसी किस्म की दूसरी चीजों का नाम नहीं है. हिन्दू सभ्यता और हिन्दू संस्कृति का नाम लेने वालों ने आज दुनिया के आगे अपना नाम नीचा कर दिया. लेकिन गांधी जी ने, जिनको वह इन चीजों का दुश्मन कहते थे. आज हिन्दू सभ्यता और हिन्दू संस्कृति को इन्सानियत के लिये जान देकर इतना ऊँचा कर दिखाया कि दुनिया हमेशा उसकी इज्जत करेगी. हिन्दू सभ्यता और संस्कृति के मानी आज दुनिया को गांधी जी ने बतला दिये.

आम तौर पर लोग सवाल करते हैं कि कांग्रेस आन्दोलन के जमाने में अंगरेजी सरकार को कांग्रेसी नेताओं के हर राज की खबर रहा करती थी. लेकिन आज इतना बड़ा वाक़िआ हुआ और सरकार को इसकी खबर क्यों न हुई. यह कोई राज भी न था. सारे देश के गली कूचों में कई महीने से इसका जिक्र था, इसकी चर्चा थी. कुछ लोग आम तौर पर इस तरह के इरादे जाहिर करते थे. गवर्नमेन्ट आफ इन्डिया के एक बड़े ओहदेदार और मुल्क के एक मशहूर आदमी ने मुझ से नवम्बर में देहली में यह कहा था कि रेल में एक आदमी ने उनसे कहा कि उसने चालीस लाख

سبھیتا اور ہندو سنسکرتی کے شبد تھے. لیکن یہ لوگ ہندو سنسکرتی اور ہندو سبھیتا کو نہ سمجھتے تھے اور نہ اس کے سمجھنے کی قابلیت رکھتے تھے. یہ لوگ ہندو سبھیتا اور ہندو سنسکرتی کی بڑائی کو کیا جانیں. ہندو سبھیتا اور ہندو سنسکرتی جس چیز کا نام ہے وہ انسانیت کا درد ہے، انسانیت کی سیوا ہے، انسانیت کی بھلائی ہے. ہندو سبھیتا اور ہندو سنسکرتی کچھ نوکریوں کا یا کونسل کی ممبری کا یا اسی قسم کی دوسری چیزوں کا نام نہیں ہے. ہندو سبھیتا اور ہندو سنسکرتی کا نام لینے والوں نے آج دنیا کے آگے اپنا نام نیچا کر دیا. لیکن گاندھی جی نے، جن کو وہ ان چیزوں کا دشمن کہتے تھے. آج ہندو سبھیتا اور ہندو سنسکرتی کو انسانیت کے لئے جان دے کر اتنا اونچا کر دکھایا کہ دنیا ہمیشہ اس کی عزت کرے گی. ہندو سبھیتا اور سنسکرتی کے معنی آج دنیا کو گاندھی جی نے بتلا دئے.

عام طور پر لوگ سوال کرتے ہیں کہ کانگریس اندولن کے زمانے میں انگریزی سرکار کو کانگریسی نیتاؤں کے ہر راز کی خبر رہا کرتی تھی. لیکن آج اتنا بڑا واقعہ ہوا اور سرکار کو اس کی خبر کیوں نہ ہوئی. یہ کوئی راز بھی نہ تھا. سارے دیش کے گلی کوچوں میں کئی مہینے سے اس کا ذکر تھا، اس کی چرچا تھی. کچھ لوگ عام طور پر اس طرح کے ارادے ظاہر کرتے تھے. گورنمنٹ آف انڈیا کے ایک بڑے عہدے دار اور ملک کے ایک مشہور آدمی نے مجھ سے نومبر میں دہلی میں یہ کہا تھا کہ ریل میں ایک آدمی نے ان سے کہا کہ اس نے چالیس لاکھ

उनका गांधी जी और जवाहर लाल को मरवा डालने के लिये निकाल दिया है. इसके कहने से यह मतलब है कि हमको आगे के लिये होशियार रहना चाहिये. अभी एक अंगरेज ने अपने बयान में कहा कि गांधी जी की जान तीस बरस तक अंगरेज सरकार के पास हिन्दुस्तान की अमानत थी जिसको वह बड़ी खूबी से हिन्दुस्तान को वापस देकर चली आई. हमारे लिये यह बयान कितना शर्मनाक है, और हमारा सिर कितना नीचा करने वाला है. अब हमारे पास जवाहर लाल, सरदार पटेल, अबुलकलाम आजाद और राजेन्द्रप्रसाद की जानें रह गई हैं. अगर हम इन जानों की हिफाजत न कर सके तो हमारा बेड़ा जरूर ही डूब जायगा. मुल्क के बेड़े को डूबने से बचाने के लिये सबसे पहली शर्त यह है इन चार जानों की पूरी तरह पर हिफाजत की जाय. दूसरी शर्त यह है कि हमारे यह चार नेता आपस में एक होकर काम करें जैसे कांग्रेस आन्दोलन के जमाने में किया करते थे. तीसरी शर्त यह है कि कांग्रेस वाले अपने सामने के खतरे को समझें और देश की सेवा में उसी तरह तन, मन, धन से लग जायँ जैसा कि आजादी के मिलने से पहले लगे रहते थे. आपस के छोटे छोटे झगड़ों को खत्म कर दें और भूल जायँ. तंग नजरी (संकुचित दृष्टि) और हुकूमत का साथ नहीं हो सकता.

मुल्क को यह समझ लेना चाहिये कि अपनी बहुत सी बुराइयों के बावजूद इस वक्त मुल्क को गांधी जी के रास्ते पर चलकर कांग्रेस ही बचा सकती है. अगर कांग्रेस नाकाम रही तो मुल्क का कोई गिरोह इस कश्ती को डूबने से नहीं बचा सकता.

انہوں نے گاندھی جی اور جواہر لال کو مروا ڈالنے کے لئے نکال دیا ہے۔ اس کے کہنے سے یہ مطلب ہے کہ ہم کو آگے کے لئے ہوشیار رہنا چاہئے۔ ابھی ایک انگریز نے اپنے بیان میں کہا کہ گاندھی جی کی جان تیس برس تک انگریز سرکار کے پاس ہندستان کی امانت تھی جس کو وہ بڑی خوبی سے ہندستان کو واپس دے کر چلی آئی۔ ہمارے لئے یہ بیان کتنا شرمناک ہے، اور ہمارا سر کتنا نیچا کرنے والا ہے۔ اب ہمارے پاس جواہر لال، سردار پٹیل، ابوالکلام آزاد اور راجیندر پرساد کی جانیں رہ گئی ہیں۔ اگر ہم ان جانوں کی حفاظت نہ کر سکے تو ہمارا بیڑا ضرور ہی ڈوب جائے گا۔ ملک کے بیڑے کو ڈوبنے سے بچانے کے لئے سب سے پہلی شرط یہ ہے ان چار جانوں کی پوری طرح پر حفاظت کی جائے۔ دوسری شرط یہ ہے کہ ہمارے یہ چار نیتا آپس میں ایک ہو کر کام کریں جیسے کانگریس اندولن کے زمانے میں کیا کرتے تھے۔ تیسری شرط یہ ہے کہ کانگریس والے اپنے سامنے کے خطرے کو سمجھیں اور دیش کی سیوا میں اسی طرح تن، من، دھن سے لگ جائیں جیسا کہ آزادی کے ملنے سے پہلے لگے رہتے تھے۔ آپس کے چھوٹے چھوٹے جھگڑوں کو ختم کر دیں اور بھول جائیں۔ تنگ نظری (سنکچت درشٹی) اور حکومت کا ساتھ نہیں ہو سکتا۔

ملک کو یہ سمجھ لینا چاہئے کہ اپنی بہت سی برائیوں کے باوجود اس وقت ملک کو گاندھی جی کے راستے پر چل کر کانگریس ہی بچا سکتی ہے۔ اگر کانگریس ناکام رہی تو ملک کا کوئی گروہ اس کشتی کو ڈوبنے سے نہیں بچا سکتا۔

गाँधी जी से मेरी पहली मुलाक़ात सन् १९०९ ई० में लन्दन
में हुई थी, उस वक़्त वह वेस्ट मिनिस्टर पैलेस होटल में ठहरे
हुए थे, मैं उस वक़्त पढ़ रहा था. वह फ्राक कोट और टाप हैट
पहना करते थे। मेरे ज़रिये से उन्होंने हिन्दुस्तान से क़ुरान की
एक जिल्द मंगवाई थी. फिर इसके बाद मैंने उनको सन् १९१६ की
कांग्रेस के मौक़े पर देखा जब कि वह एक फ़क़ीर के रूप में थे.
मुझे उनपर बहुत तरस आया. एक दम से जी चाहा कि पतलून में
जो दस पन्द्रह अशर्फ़ियाँ थीं, वह उनको देदूं. फिर मैं उनसे सन्
१९१८ में बाँकी पुर में मिला जब वह मि. मजहरुल हक़ के मेहमान
थे और चम्पारन जाने के लिये आये थे. फिर मोती हारी में दो
तीन महीने तक रोजाना मुलाक़ात होती रही. उस वक़्त
मैं वहाँ एक मुक़दमे की पैरवी कर रहा था. फिर
इसके बाद अकसर मुलाक़ात होती रही. यहाँ तक कि जब वह
पटना में सन् १९२१ में आये तो मि० मजहरुल हक़ के यहाँ ठहरे
थे और अली भाई मेरे यहाँ ठहरे हुए थे. अली भाइयों ने मुझे
लाख समझाया कि मैं बैरिस्टरी छोड़ दूं. लेकिन मेरी समझ ही में
नहीं आया. उन्होंने गांधी जी के सामने यह मामला रक्खा. गांधी
जी से मैंने कहा कि मेरी समझ में नहीं आता. लेकिन अगर आप
हुक्म दें तो मैं बैरिस्टरी छोड़ दूँ. उन्होंने कहा कि मैं लोगों को
आम तौर पर हुक्म नहीं दिया करता, लेकिन आपको हुक्म देता हूँ कि
प्रैक्टिस छोड़ दो और मुल्क के काम में लग जाओ. मैंने फ़ौरन
बैरिस्टरी छोड़ दी. इसके बाद से गांधी जी का बहुत साथ रहा और
ताल्लुक़ बढ़ता गया. वह मुझ पर ख़ास मेहरबानी की नज़र रखते

گاندھی جی سے میری پہلی ملاقات ۱۹۰۹ء میں لندن میں ہوئی
تھی، اس وقت وہ ویسٹ منسٹر پیلس ہوٹل میں ٹھہرے ہوئے تھے، میں اُس
وقت پڑھ رہا تھا۔ وہ فراک کوٹ اور ٹاپ ہیٹ پہنا کرتے تھے۔ میرے
ذریعے سے انھوں نے ہندستان سے قرآن کی ایک جلد منگوائی تھی۔
اس کے بعد میں نے ان کو ۱۹۱۶ء کی کانگریس کے موقع پر دیکھا
کہ وہ ایک فقیر کے روپ میں تھے۔ مجھے ان پر بہت ترس آیا۔ ایک
دم سے جی چاہا کہ پتلون میں جو دس پندرہ اشرفیاں تھیں، وہ ان کو دے
دوں۔ پھر میں ان سے ۱۹۱۸ء میں بانکی پور میں ملا جب وہ
مسٹر مظہر الحق کے مہمان تھے اور چمپارن جانے کے لئے آئے تھے۔
موتی ہاری میں دو تین مہینے تک روزانہ ملاقات ہوتی رہی۔ اس
وقت میں وہاں ایک مقدمے کی پیروی کر رہا تھا۔ پھر اس کے بعد
ملاقات ہوتی رہی۔ یہاں تک کہ جب وہ پٹنہ میں ۱۹۲۱ء میں
آئے تو مسٹر مظہر الحق کے یہاں ٹھہرے تھے اور علی بھائی میرے
یہاں ٹھہرے ہوئے تھے۔ علی بھائیوں نے مجھے لاکھ سمجھایا کہ میں
بیرسٹری چھوڑ دوں۔ لیکن میری سمجھ ہی میں نہیں آیا۔ انھوں نے
گاندھی جی کے سامنے یہ معاملہ رکھا۔ گاندھی جی سے میں نے کہا کہ
میری سمجھ میں نہیں آتا۔ لیکن اگر آپ حکم دیں تو میں بیرسٹری چھوڑ
دوں۔ انھوں نے کہا کہ میں لوگوں کو عام طور پر حکم نہیں دیا کرتا،
لیکن آپ کو حکم دیتا ہوں کہ پریکٹس چھوڑ دو اور ملک کے کام میں
لگ جاؤ۔ میں نے فوراً بیرسٹری چھوڑ دی۔ اس کے بعد سے گاندھی جی کا
بہت ساتھ رہا اور تعلق بڑھتا گیا۔ وہ مجھ پر خاص مہربانی کی نظر رکھتے

थे यहाँ तक कि मुझे अपने खान्दान का एक मेम्बर समझने लगे थे.

मेरे साथ ऐसे ऐसे वाक़ेआत (घटनाएँ) पेश आये जिनकी तफ़सील का यह मौक़ा नहीं. दो वाक़ेआत तो ऐसे हुए जिससे मुझे यक़ीन हो गया कि वह बड़े ख़ुदा रसीदा फ़क़ीर और साधू थे. हद से ज्यादा काम में लगे रहते हुए भी वह हर शख़्स के निजी मामले सुनने के लिये वक़्त निकालते और सलाह मशविरा देते. वह एक ऐसे दोस्त थे कि जिन्दगी भर दोस्ती निभाते. इन्सानी कमजोरियों को समझने और उनको माफ़ कर देने में वह जरा भी देर न करते. जब किसी पर भरोसा करते तो पूरा भरोसा करते. एक मौक़े पर कांग्रेस वर्किंग कमेटी का एक राज जाहिर हो गया. उनसे किसी ने कह दिया कि शायद मैंने जाहिर किया होगा. मुझे इसकी ख़बर हो गई. मैंने सबूत देने शुरू किये कि यह मेरा काम न था. उन्होंने मुझे ख़त लिखा और ख़फ़ा हुए कि तुमने सबूत क्यों पेश किया. तुम्हारा इनकार मेरे लिये काफ़ी था. सबूत पेश करने के मानी तो यह हुए कि मुझे तुम पर भरोसा नहीं. यह बातें ग़ैर मामूली इन्सान में ही हो सकती हैं. जवाहर लाल से उनको बहुत ज्यादा मुहब्बत थी और चूंकि मुझे भी जवाहर लाल से बहुत लगाव था इस लिये उनका जिक्र मुझ से बहुत किया करते.

मुल्क की आजादी हासिल करने से बहुत ज्यादा जिस बात की गान्धी जी को धुन थी वह हिन्दू मुस्लिम एकता थी. ख़िलाफ़त का मसला उन्होंने उठाया. सन् १९२४ में पहला व्रत हिन्दू मुस्लिम एकता के लिये रक्खा. आख़िरी व्रत भी इसी काम के लिये रक्खा. इससे भी उनके दिल को तसल्ली नहीं हुई, यहाँ तक

تھے یہاں تک کہ مجھے اپنے خاندان کا ایک ممبر سمجھنے لگے تھے.

میرے ساتھ ایسے ایسے واقعات (گھٹنائیں) پیش آئے جن کی تفصیل کا یہ موقع نہیں. دو واقعات تو ایسے ہوئے جس سے مجھے یقین ہو گیا کہ وہ بڑے خدا رسیدہ فقیر اور سادھو تھے. حد سے زیادہ کام میں لگے رہتے ہوئے بھی وہ ہر شخص کے نجی معاملے سننے کے لئے وقت نکالتے اور صلاح مشورہ دیتے. وہ ایک ایسے دوست تھے کہ زندگی بھر دوستی نبھاتے. انسانی کمزوریوں کو سمجھنے اور ان کو معاف کر دینے میں وہ ذرا بھی دیر نہ کرتے. جب کسی پر بھروسا کرتے تو پورا بھروسا کرتے. ایک موقع پر کانگریس ورکنگ کمیٹی کا ایک راز ظاہر ہو گیا. ان سے کسی نے کہہ دیا کہ شاید میں نے ظاہر کیا ہوگا. مجھے اس کی خبر ہو گئی. میں نے ثبوت دینے شروع کئے کہ یہ میرا کام نہ تھا. انہوں نے مجھے خط لکھا اور خفا ہوئے کہ تم نے ثبوت کیوں پیش کیا. تمہارا انکار میرے لئے کافی تھا. ثبوت پیش کرنے کے معنی تو یہ ہوئے کہ مجھے تم پر بھروسا نہیں. یہی باتیں غیر معمولی انسان میں ہی ہو سکتی ہیں. جواہر لال سے ان کو بہت زیادہ محبت تھی اور چونکہ مجھے بھی جواہر لال سے بہت لگاؤ تھا اس لئے ان کا ذکر مجھ سے بہت کیا کرتے.

ملک کی آزادی حاصل کرنے سے بہت زیادہ جس بات کی گاندھی جی کو دھن تھی وہ ہندو مسلم ایکتا تھی. خلافت کا مسئلہ انہوں نے اٹھایا. ۱۹۲۴ء میں پہلا برت ہندو مسلم ایکتا کے لئے رکھا. آخری برت بھی اسی کام کے لئے رکھا. اس سے بھی ان کے دل کو تسلی نہیں ہوئی یہاں تک

कि अपनी जान भी हिन्दू मुस्लिम एकता के लिये दे दी. काश! मेरे मुसलमान हममजहब इसको अब भी समझें. वह मुझसे अक्सर कहा करते थे कि मैं तो स्वर्ग में भी मुसलमानों के बग़ैर जाने से इन्कार कर दूँगा. काश! मेरे हिन्दू हम वतन, जो आज उनके लिये रोते हैं और बेचैन हैं इसको अब भी समझें और उनकी आख़िरी ख़्वाहिश—हिन्दू मुसलिम एकता—को पूरा कर दिखायें. और अगर हम हिन्दू मुसलमानों ने उनकी ज़िन्दगी में उनकी यह सबसे प्यारी इच्छा पूरी न की तो हम उनके मरने के बाद उनकी इस ख़्वाहिश और हिदायत को पूरी करके उनकी आत्मा को ख़ुश करदें. अगर हिन्दुस्तान इस हादसे (दुर्घटना) पर हमेशा ख़ून के आँसू रोता रहे तो भी इसकी तलाफ़ी (पूर्ति) नहीं हो सकती. इसकी कुछ तलाफ़ी का सिर्फ़ एक ज़रिया है और वह यह है कि उनकी इस ख़्वाहिश को हम पूरा करें. हम उनकी यादगार क़ायम करना चाहते हैं. उनकी सबसे अच्छी यादगार सच्चाई अहिंसा और हिन्दू मुसलिम एकता होगी. बशर्तेकि हम उनको अपने दिलों में क़ायम करें और उन पर अमल करें. इससे बड़ी और अच्छी यादगार उनके लिये दूसरी नहीं हो सकती. जो कुछ भी उन्होंने कहा, देर सवेर उसे सच साबित किया. अगर हम उनका कहा न मानेंगे तो यक़ीन जानिये कि हम मिट जायँगे.

मैं आम तौर पर मुसीबत के वक़्त रोया नहीं करता, लेकिन इस मुसीबत पर मेरे आँसू नहीं थमते.

रुलाता है तेरा नज़्ज़ारा ए हिन्दोस्ताँ मुझ को.
कि इबरत ख़ेज़ है तेरा फ़साना सब फ़सानों में.

کہ اپنی جان بھی ہندو مسلم ایکتا کے لئے دے دی۔ کاش! میرے مسلمان ہم مذہب اس کو اب بھی سمجھیں۔ وہ مجھ سے اکثر کہا کرتے تھے کہ میں تو سورگ میں بھی مسلمانوں کے بغیر جانے سے انکار کر دوں گا۔ کاش! میرے ہندو ہم وطن، جو آج ان کے لئے روتے ہیں اور بے چین ہیں اس کو اب بھی سمجھیں اور ان کی آخری خواہش — ہندو مسلم ایکتا — کو پورا کر دکھائیں۔ اور اگر ہم ہندو مسلمانوں نے ان کی زندگی میں ان کی یہ سب سے پیاری اچھا پوری نہ کی تو ہم ان کے مرنے کے بعد ان کی اس خواہش اور ہدایت کو پورا کرکے ان کی آتما کو خوش کر دیں۔ اگر ہندوستان اس حادثے (دُرگھٹنا) پر ہمیشہ خون کے آنسو روتا رہے تو بھی اس کی تلافی (پورتی) نہیں ہو سکتی۔ اس کی کچھ تلافی کا صرف ایک ذریعہ ہے اور وہ یہ ہے کہ ان کی اس خواہش کو ہم پورا کریں۔ ہم ان کی یادگار قائم کرنا چاہتے ہیں۔ ان کی سب سے اچھی یادگار سچائی اہنسا اور ہندو مسلم ایکتا ہوگی۔ بشرطیکہ ہم ان کو اپنے دلوں میں قائم کریں اور ان پر عمل کریں۔ اس سے بڑی اور اچھی یادگار ان کے لئے دوسری نہیں ہو سکتی۔ جو کچھ بھی انھوں نے کہا، دیر سویر اسے سچ ثابت کیا۔ اگر ہم ان کا کہا نہ مانیں گے تو یقین جانئے کہ ہم مٹ جائیں گے۔

میں عام طور پر مصیبت کے وقت رویا نہیں کرتا، لیکن اس مصیبت پر میرے آنسو نہیں تھمتے۔

رُلاتا ہے تیرا نظارہ اے ہندوستاں مجھ کو
کہ عبرت خیز ہے تیرا فسانہ سب فسانوں میں

वतन की फ़िक्र कर नादाँ मुसीबत आने वाली है,
तेरी बरबादियों के मशविरे हैं आसमानों में.
न समझोगे तो मिट जाओगे ए हिन्दोस्ताँ वालो,
तुम्हारी दास्ताँ तक भी न होगी दास्तानों में,

जहाँ तक ख़ुद उनका ताल्लुक़ है, वह तो अमर हो गये. उनकी शहादत या बलिदान ने जहाँ उनकी शख़्सियत (व्यक्तित्व) की तकमील (पूर्णता) की, वहाँ उनके संदेश को हमेशा के लिये जिन्दा कर दिया. गांधी जी की जिन्दगी जिस काम को पूरा न कर सकी शायद उनकी मौत उसे पूरा कर दे. सुक़रात, हज़रत ईसा, इमाम हुसैन और दुनिया के दूसरे बड़े बड़े शहीदों की जिन्दगी से हमें यही सबक़ मिलता है.

'नया हिन्द' का गांधी नम्बर

हम चाहते हैं कि 'नया हिन्द' का अगला नम्बर गान्धी नम्बर हो. इस नम्बर में महात्मा गान्धी के असूलों, उनकी तालीम उनके जीवन का हाल, ग़रज़ गान्धी जी और गान्धी वाद के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा जानकारी बढ़ाने वाला मसाला हम अपने पढ़ने वालों को भेंट करें। अगर अप्रैल का अंक निकलने में देर हुई तो हम अप्रैल और मई का 'नया हिन्द' मिलाकर गान्धी अंक निकालेंगे जिसके सफ़े दूने यानी लगभग २०० होंगे। पढ़ने वाले नोट करलें।

—मैनेजर

وطن کی فکر کر ناداں مصیبت آنے والی ہے،
تیری بربادیوں کے مشورے ہیں آسمانوں میں۔
نہ سمجھوگے تو مٹ جاؤگے اے ہندستاں والو،
تمہاری داستاں تک بھی نہ ہوگی داستانوں میں،

جہاں تک خود اُن کا تعلق ہے، وہ تو امر ہوگئے۔ اُن کی شہادت یا بلیدان نے جہاں اُن کی شخصیت (ویکتتو) کی تکمیل (پورنتا) کی، وہاں اُن کے سندیش کو ہمیشہ کے لئے زندہ کردیا۔ گاندھی جی کی زندگی جس کام کو پورا نہ کرسکی شاید اُن کی موت اُسے پورا کردے۔ سقراط، حضرت عیسیٰ، امام حسین اور دُنیا کے دوسرے بڑے بڑے شہیدوں کی زندگی سے ہمیں یہی سبق ملتا ہے۔

'نیا ہند' کا گاندھی نمبر

ہم چاہتے ہیں کہ 'نیا ہند' کا اگلا نمبر گاندھی نمبر ہو۔ اس نمبر میں مہاتما گاندھی کے اصولوں، اُن کی تعلیم اُن کے جیون کا حال، غرض گاندھی جی اور گاندھی واد کے بارے میں زیادہ سے زیادہ جانکاری بڑھانے والا مسالہ ہم اپنے پڑھنے والوں کو بھینٹ کریں۔ اگر اپریل کا انک نکلنے میں دیر ہوئی تو ہم اپریل اور مئی کا 'نیا ہند' ملاکر گاندھی انک نکالیں گے جس کے صفحے دُگنے یعنی لگ بھگ ۲۰۰ ہوں گے۔ پڑھنے والے نوٹ کرلیں۔

— منیجر

जगाओ न बापू को नींद आ गई है

(भाई शमीम किरहानी)

सभी उठ के आये हैं बज़्मे दुआ से,
वतन के लिये लौ लगा कर ख़ुदा से.
टपकती है रूहानियत सी फ़िज़ा से,
चली आती है राम की धुन हवा से.
दुखी आत्मा शान्ती पा गई है. जगाओ....

नहीं चैन से बैठने देती हलचल,
जो हैं आज दिल्ली तो बंगाल में कल.
यह पीरी, यह दिन रात की दौड़ पैदल,
सदा क़ौम रखती है बापू को बेकल.
तड़प ज़िन्दगी की सकूं पा गई है. जगाओ...

यह घेरे है क्यों, रोने वालों की टोली,
ख़ुदारा ! न बोलो यह मनहूस बोली.
भला कौन मारेगा बापू को गोली,
कोई बाप के ख़ूँ से खेलेगा होली.
धरती ऐसी बातों से थर्रा गई है. जगाओ···

सभी को है प्यार इस अज़ीज़ो वतन से,
फ़िरंगी ने जेलों में रक्खा जतन से.
वतन पर वह क़ुरबान है जानो-तन से,

बज़्मे दुआ=प्रार्थना सभा. पीरी=बुढ़ापा. सकूँ=शान्ति.
ख़ुदारा=ख़ुदा के लिये.

جگاؤ نہ باپو کو نیند آ گئی ہے

(بھائی شمیم کرہانی)

سبھی اٹھ کے آئے ہیں بزم دعا سے،
وطن کے لئے لو لگا کر خدا سے.
ٹپکتی ہے روحانیت سی فضا سے،
چلی آتی ہے رام کی دھن ہوا سے.
دکھی آتما شانتی پا گئی ہے. جگاؤ...

نہیں چین سے بیٹھنے دیتی ہلچل،
جو ہیں آج دلی تو بنگال میں کل.
یہ پیری، یہ دن رات کی دوڑ پیدل،
سدا قوم رکھتی ہے باپو کو بے کل.
تڑپ زندگی کی سکوں پا گئی ہے. جگاؤ...

یہ گھیرے ہے کیوں، روتے والوں کی ٹولی،
خدارا! نہ بولو یہ منحوس بولی.
بھلا کون مارے گا باپو کو گولی،
کوئی باپ کے خوں سے کھیلے گا ہولی.
دھرتی ایسی باتوں سے تھرا گئی ہے. جگاؤ...

سبھی کو ہے پیار اس عزیز وطن سے،
فرنگی نے جیلوں میں رکھا جتن سے.
وطن پر وہ قربان ہے جان و تن سے،

بزم دعا = پرارتھنا سبھا. پیری = بڑھاپا. سکوں = شانتی.

कवन उसको मारेगी पिस्तौलो गन से ?
अबस ! मादरे हिन्द शरमा गई है. जगाओ…

...ब्बत के झंडे को गाड़ा है उसने.
...ल किसके दिल का उजाड़ा है उसने !
...बान अपना ही फाड़ा है उसने,
...सी का भला क्या बिगाड़ा है उसने !
... तो अदा अम्न को भा गई है. जगाओ……

अभी उठके खुद वह बिठाएगा सबको,
लतीफ़ों से पैहम हँसाएगा सबको.
सियासत के नुकते बताएगा सबको,
नई रोशनी फिर दिखाएगा सबको.
दिलों पर यह ज़ुलमत सी क्यों छा गई है ? जगाओ…

...भी सिन्ध बाचश्म नम तक रहा है,
...के दिल में पंजाब ग़म तक रहा है.
...भी वारधा दम-बदम तक रहा है,
...भी रास्ता आश्रम तक रहा है.
...फ़िर को रस्ते में नींद आ गई है. जगाओ……

वह सोएगा क्यों जो है सबको जगाता.
कभी मीठा सपना नहीं उसको भाता.

गरीबान = कुर्ते का गला. अम्न = शान्ति. लतीफ़ों = चुटकुलों. ...दम = बराबर. नुकते = बारीकियां. ज़ुलमत = अंधेरा. बाचश्मेनम = ...ली आंखों से.

جگاؤ نہ باپو کو نیند آگئی ہے

وطن اس کو مارے گا پستول و گن سے؟
عبث! مادرِ ہند شرما گئی ہے۔ جگاؤ...

محبت کے جھنڈے کو گاڑا ہے اس نے۔
چمن کس کے دل کا اجاڑا ہے اس نے!
گریباں اپنا ہی پھاڑا ہے اس نے،
کسی کا بھلا کیا بگاڑا ہے اس نے!
اسے تو ادا امن کی بھا گئی ہے۔ جگاؤ...

ابھی اٹھ کے خود وہ بٹھائے گا سب کو،
لطیفوں سے پیہم ہنسائے گا سب کو۔
سیاست کے نکتے بتائے گا سب کو،
نئی روشنی پھر دکھائے گا سب کو۔
دلوں پر یہ ظلمت سی کیوں چھا گئی ہے؟ جگاؤ...

ابھی سندھ باچشم نم تک رہا ہے،
سئے دل میں پنجاب غم تک رہا ہے۔
ابھی واردھا دم بدم تک رہا ہے،
ابھی راستہ آشرم تک رہا ہے۔
مسافر کو رستے میں نیند آگئی ہے۔ جگاؤ...

وہ سوئے گا کیوں جو ہے سب کو جگاتا۔
کبھی میٹھا سپنا نہیں اس کو بھاتا۔

گریباں = کرتے کا گلا۔ امن = شانتی۔ لطیفوں = چٹکلوں۔ پیہم = برابر۔ نکتے = باریکیاں۔ ظلمت = اندھیرا۔ باچشم نم = گیلی آنکھوں سے۔

नया हिन्द   जगाओ न बापू को नींद आ गई है.   मार्च सन् '४८

वह आज़ाद भारत का है जन्म दाता,
उठेगा, न आँसू बहा देश माता.
उदासी, यह क्यों बाल बिखरा गई है ! जगाओ···

वह खून अपना खाता वह खून अपना पीता,
वतन ही पै मरता वतन ही पै जीता.
जो इक बात कुरआँ, तो इक बात गीता,
सितमगर तो हारे वो मजलूम जीता.
ज़माने पै मजलूमियत छा गई है. जगाओ····

वह हक़ के लिये तन के अड़जाने वाला,
निशाँ की तरह रन में गड़ जाने वाला,
निहत्था हुकूमत से लड़ जाने वाला.
बसाने की धुन में उजड़ जाने वाला,
बिना जुल्म की, जिससे थर्रा गई है. जगाओ····

वह बादल जो खेती पै बरखा को उट्ठे,
वह "सूरज" जो धरती की सेवा को उट्ठे,
वह लाठी जो दुखियों की रक्षा को उट्ठे,
वह हस्ती, बचाने जो दुनिया को उट्ठे,
वह किश्ती जो तूफ़ाँ में काम आ गई है. जगाओ····

वह सुक़रातो ईसा की जुरअत भी उसमें,
श्री कृष्ण गौतम की शफ़क़त भी उसमें,

मजलूम = जुल्म सहने वाला. निशाँ = झण्डा. बिना = नींव. जुरअत = साहस. शफ़क़त = मिहरबानी.

نیا ہند   جگاؤ نہ باپو کو نیند آ گئی ہے۔   مارچ ۴۸ء

وہ آزاد بھارت کا ہے جنم داتا،
اٹھے گا، نہ آنسو بہا دیش ماتا۔
اداسی، یہ کیوں بال بکھرا گئی ہے! جگاؤ...

وہ خوں اپنا کھاتا وہ خوں اپنا پیتا،
وطن ہی پہ مرتا وطن ہی پہ جیتا۔
وہ اک بات قرآں، تو اک بات گیتا،
ستمگر تو ہارے وہ مظلوم جیتا۔
زمانے پہ مظلومیت چھا گئی ہے۔ جگاؤ...

وہ حق کے لئے تن کے اڑ جانے والا،
نشاں کی طرح رن میں گڑ جانے والا،
نہتا حکومت سے لڑ جانے والا،
بسانے کی دھن میں اجڑ جانے والا،
بنا ظلم کی، جس سے تھرا گئی ہے۔ جگاؤ...

وہ بادل جو کھیتی پہ برکھا کو اٹھے،
وہ سورج جو دھرتی کی سیوا کو اٹھے،
وہ لاٹھی جو دکھیوں کی رکشا کو اٹھے،
وہ ہستی بچانے جو دنیا کو اٹھے،
وہ کشتی جو طوفاں میں کام آ گئی ہے۔ جگاؤ...

وہ سقراط و عیسیٰ کی جرأت بھی اس میں،
شری کرشن گوتم کی شفقت بھی اس میں،

مظلوم = ظلم سہنے والا۔ نشاں = جھنڈا۔ بنا = بنیاد۔ جرأت = ساہس۔

मुहम्मद के दिल की हरारत भी उसमें.
हुसेन इब्ने हैदर की हिम्मत भी उसमें,
अहिंसा तशद्दुद से टकरा गई है. जगाओ....
कोई उसके खूँ से न दामन भरेगा,
बड़ा बोझ है सर पै क्यों कर धरेगा.
चिराग उसका दुश्मन जो गुल भी करेगा,
अमर है अमर वह भला क्यों मरेगा.
हयात उसकी खुद मौत पर छा गई है. जगाओ....
वह परबत वह बहरे रवाँ सो रहा है,
वह पीरी का अज़मे जवाँ सो रहा है.
वह अम्ने जहाँ का निशां सो रहा है,
वह आज़ाद हिन्दोस्ताँ सो रहा है.
उठेगा सहर मुझसे बतला गई है.
जगाओ न बापू को नींद आ गई है,

इब्ने हैदर = हैदर (अली) के लड़के. तशद्दुद = हिंसा.
हयात = ज़िन्दगी. बहरे रवाँ = बहता समुन्दर. अज़्मे जवां = जवान इरादा. सहर = सुबह.

محمد کے دل کی حرارت بھی اس میں،
حسین ابن حیدر کی ہمت بھی اس میں،
اہنسا تشدّد سے ٹکرا گئی ہے۔ جگاؤ...
کوئی اس کے خوں سے نہ دامن بھرے گا
بڑا بوجھ ہے سر پہ کیوں کر دھرے گا۔
چراغ اس کا دشمن جو گل بھی کرے گا،
امر ہے امر وہ بھلا کیوں مرے گا۔
حیات اس کی خود موت پر چھا گئی ہے۔ جگاؤ...
وہ پربت وہ بحر رواں سو رہا ہے،
وہ پیری کا عزم جواں سو رہا ہے،
وہ امن جہاں کا نشاں سو رہا ہے،
وہ آزاد ہندستاں سو رہا ہے،
اُٹھے گا سحر مجھ سے بتلا گئی ہے۔ جگاؤ...
جگاؤ نہ باپو کو نیند آگئی ہے۔

ابن حیدر = حیدر (علی) کے لڑکے۔ تشدّد = ہنسا۔ حیات = زندگی۔ بحر رواں = بہتا سمندر۔ عزم جواں = جوان ارادہ۔ سحر = صبح۔

हमारी राय

इसलाम और जिहाद—

कलकत्ते में मुसलिम लीग की 'सीधी कार्रवाई' के दिन शहर में नोटिस लगाए गए थे और पर्चे बांटे गए थे जिनमें मुसलमानों को जिहाद करने के लिये कहा गया था. कशमीर के ऊपर जिन क़बीले वालों ने हमला किया उन्होंने भी अपने हमले को 'जिहाद' नाम दिया. मुसलिम साहित्य और इसलाम की तारीख में 'जिहाद' शब्द जगह जगह 'धर्म युद्ध' के माने में आया है, यानी वह युद्ध या जंग जो मजहब को बचाने के लिये या मजहब फैलाने के लिये की जाए. एक मामूली मुसलमान की निगाह में जिहाद शब्द का साफ़ साफ़ सम्बंध मार काट या हथियार उठाने से है. अब हमें यह देखना है कि जिहाद शब्द के असली माने क्या हैं और कुरान में यह शब्द किन मानों में आया है.

जिहाद अरबी 'जेहद' से निकला है। जसके माने कोशिश करना है. इमाम राग़िब ने अपनी किताब 'ताज उल अरूस' में जिहाद के ये माने दिये हैं—'अपनी हद दरजे की ताक़त लगाकर किसी ऐसी चीज को, जो ठीक नहीं है, ठीक करने की कोशिश करना.' मिरजा अबुल फजल ने अपनी 'ग़रीबुल कुरान' में जिहाद के ये माने लिखे हैं—'किसी भी काम में जद्दोजेहद करना, जद्दोजेहद उर्दू का मशहूर फ़िक़रा है जिसका मतलब पूरे दिल से और सख्त कोशिश करना है.

ہماری رائے

اسلام اور جہاد—

کلکتے میں مسلم لیگ کی 'سیدھی کارروائی' کے دن شہر میں نوٹس لگائے گئے اور پرچے بانٹے گئے تھے جن میں مسلمانوں کو جہاد کرنے کے لئے کہا گیا تھا. کشمیر کے اوپر جن قبیلے والوں نے حملہ کیا انہوں نے بھی اپنے حملے کو 'جہاد' نام دیا. مسلم ساہتیہ اور اسلام کی تاریخ میں 'جہاد' شبد جگہ جگہ 'دھرم یدھ' کے معنے میں آیا ہے یعنی وہ یدھ یا جنگ جو مذہب کو بچانے کے لئے یا مذہب پھیلانے کے لئے کی جائے. ایک معمولی مسلمان کی نگاہ میں جہاد شبد کا صاف صاف سمبندھ مار کاٹ یا ہتھیار اٹھانے سے ہے. اب ہمیں یہ دیکھنا ہے کہ جہاد شبد کے اصلی معنے کیا ہیں اور قرآن میں یہ شبد کن معنوں میں آیا ہے.

جہاد عربی 'جہد' سے نکلا ہے جس کے معنی کوشش کرنا ہے. امام راغب نے اپنی کتاب 'تاج العروس' میں جہاد کے یہ معنے دئے ہیں—'اپنی حد درجے کی طاقت لگا کر کسی ایسی چیز کو جو ٹھیک نہیں ہے ٹھیک کرنے کی کوشش کرنا.' مرزا ابوالفضل نے اپنی 'غریب القرآن' میں جہاد کے یہ معنے لکھے ہیں—'کسی بھی کام میں جدوجہد کرنا، جدوجہد اردو کا مشہور فقرہ ہے جس کا مطلب پورے دل سے سخت کوشش کرنا ہے.'

क़ुरान में जगह जगह 'जिहाद फ़ी सबीलल्लाह' आया है. जिसके मानी हैं 'अल्लाह की राह में कोशिश करना.' इसलाम के शुरू के दिनों में क़ुरेश के ज़ुल्मों से अपने मज़हब और जान को बचाने के लिये अरब के जो मुसलमान अपना वतन छोड़कर हबशा यानी इथियोपिया चले गए थे उनके इस काम को क़ुरान में "अल्लाह की राह में अपनी जान और अपने माल से जिहाद करना' कहा गया है (८—७२, ७४, ७५).

इस जिहाद का किसी तरह के भी हथियारों या लड़ाई से कोई वास्ता न था. उस वक़्त तक मुसलमानों को हथियार उठाने की इजाज़त भी नहीं दी गई थी. बल्कि हुक्म था कि अपने दुश्मनों के ज़ुल्मों को बिना किसी तरह का बदला लिये "शान्ति और सब्र के साथ" बरदाश्त करें और जहाँ तक बन पड़े "बुराई का बदला भलाई से दें" (२३—९६ वग़ैरा).

क़ुरान में ख़ुद मोहम्मद साहब को अल्लाह ने कई जगह हुक्म दिया है कि जिन लोगों ने अभी तक तुम्हारी बात नहीं मानी या जो मुसलमान हो चुके थे और फिर भी सच्चे और साफ़ दिल से तुम्हारा साथ नहीं दे रहे हैं उन सब के साथ 'जिहाद' जारी रक्खो (९—७३, ९—६६). यहाँ जिहाद के साफ़ मानी हैं—प्रेम के साथ समझा बुझा कर अपनी तरफ़ लाना. यहाँ भी जिहाद शब्द से किसी तरह का कोई वास्ता हथियारों की लड़ाई से नहीं है. उन मुसलमानों के ख़िलाफ़ जिनका इन आयतों में ज़िक्र है न कभी किसी को हथियार उठाने की इजाज़त दी गई और न कभी किसी ने हथियार उठाए.

قرآن میں جگہ جگہ جہاد فی سبیل اللہ آیا ہے۔ جس کے معنی ہیں "اللہ کی راہ میں کوشش کرنا۔" اسلام کے شروع کے دنوں میں قریش کے ظلموں سے اپنے مذہب اور جان کے بچانے کے لئے عرب کے جو مسلمان اپنا وطن چھوڑ کر حبشہ یعنی اتھیوپیا چلے گئے تھے ان کے اس کام کو قرآن میں "اللہ کی راہ میں اپنی جان اور اپنے مال سے جہاد کرنا" کہا گیا ہے (۸-۷۲، ۷۴، ۷۵)۔

اس جہاد کا کسی طرح کے بھی ہتھیاروں یا لڑائی سے کوئی واسطہ نہ تھا۔ اس وقت تک مسلمانوں کو ہتھیار اٹھانے کی اجازت بھی نہیں دی گئی تھی۔ بلکہ حکم تھا کہ اپنے دشمنوں کے ظلموں کو بنا کسی طرح کا بدلہ لئے "شانتی اور صبر کے ساتھ" برداشت کریں۔ اور جہاں تک بن پڑے "برائی کا بدلہ بھلائی سے دیں"۔ (۲۳-۹۶ وغیرہ)۔

قرآن میں خود محمد صاحب کو اللہ نے کئی جگہ حکم دیا ہے کہ جن لوگوں نے ابھی تک تمہاری بات نہیں مانی یا جو مسلمان ہو چکے تھے اور پھر بھی سچے اور صاف دل سے تمہارا ساتھ نہیں دے رہے ہیں ان سب کے ساتھ "جہاد" جاری رکھو (۹-۷۳، ۹-۶۶)۔ یہاں جہاد کے صاف معنی ہیں — پریم کے ساتھ سمجھا بجھا کر اپنی طرف لانا۔ یہاں بھی جہاد شبد سے کسی طرح کا کوئی واسطہ ہتھیاروں کی لڑائی سے نہیں ہے۔ ان مسلمانوں کے خلاف جن کا ان آیتوں میں ذکر ہے نہ کبھی کسی کو ہتھیار اٹھانے کی اجازت دی گئی اور نہ کبھی کسی نے ہتھیار اٹھائے

एक और जगह अल्लाह ने मोहम्मद साहब को हुक्म दिया है कि "लोगों के साथ क़ुरान के ज़रिये 'जिहाद कबीर' यानी ज़बरदस्त जिहाद करो." (२५–५२). यह आयत मक्के में उतरी थी. मार काट या हथियार उठाने का उस वक़्त कोई सवाल ही नहीं था. क़ुरान के सब टीकाकार जैसे बैज़ावी, इमाम असीरुद्दीन और अबूहय्यान इस आयत में जिहाद शब्द के यही माने करते हैं—यानी समझाबुझा कर प्रेम से सच्चाई को फैलाने की जो भी कोशिश की जाय वह सिर्फ़ जिहाद ही नहीं बल्कि 'बड़ा जिहाद' है. ज़ुल्मों के होते हुए और उन्हें बरदाश्त करते हुए अपने धर्म पर क़ायम रहना भी जिहाद कहा गया है (१६–११०). दान देना, ग़रीबों को खाना खिलाना, यतीमों को पालना, दुखियों और ज़रूरत मन्दों की मदद करना और किसी अच्छे काम के लिये मुसीबतें सहना, इन सब चीज़ों को 'अल्लाह की राह में जिहाद' कहा गया है. मोहम्मद साहब की एक मशहूर हदीस है कि—"सब से बड़ा जिहाद अपने नफ़्स पर क़ाबू पाना यानी अपने ग़ुस्से और अपनी ख़्वाहिशों को जीतना है." इसलाम की तमाम किताबों में अपने नफ़्स पर क़ाबू पाने को जिहादे अकबर, 'यानी' 'सबसे बड़ा जिहाद' कहा गया है इसलाम में आज तक मज़हब के इस तरह के कामों को, जैसे रतजगे रखना, रातों को नमाज़ें पढ़ना बहुत ज़्यादह रोज़े रखना, दान देना वग़ैरा 'मुजाहिदा' कहा जाता है.

जहाँ तक जिहाद का क़ुरान के साथ ताल्लुक़ है, नीचे लिखी तीन बातें पूरे यक़ीन के साथ कही जा सकती हैं—

(१) क़ुरान में जिहाद [illegible] जगह जगह ऐसी चीज़ों का [illegible]

ایک اور جگہ اللہ نے محمد صاحب کو حکم دیا ہے کہ "لوگوں کے ساتھ قرآن کے ذریعے 'جہاد کبیر' یعنی زبردست جہاد کرو۔" (۲۵—۵۲) یہ آیت مکے میں اتری تھی۔ مار کاٹ یا ہتھیار اٹھانے کا اس وقت کوئی سوال ہی نہیں تھا۔ قرآن کے سب ٹیکاکار جیسے بیضاوی، امام اثیر الدین اور ابوحیان اس آیت میں جہاد شبد کے یہی معنے کرتے ہیں — یعنی سمجھا بجھا کر پریم سے سچائی کو پھیلانے کی جو بھی کوشش کی جائے وہ صرف جہاد ہی نہیں بلکہ 'بڑا جہاد' ہے۔ ظلموں کے ہوتے ہوئے اور انھیں برداشت کرتے ہوئے اپنے دھرم پر قایم رہنا بھی جہاد کہا گیا ہے (۱۶—۱۱۰)۔ دان دینا، غریبوں کو کھانا کھلانا، یتیموں کو پالنا، دکھیوں اور ضرورت مندوں کی مدد کرنا اور کسی اچھے کام کے لئے مصیبتیں سہنا، ان سب چیزوں کو 'اللہ کی راہ میں جہاد' کہا گیا ہے۔ محمد صاحب کی ایک مشہور حدیث ہے کہ — "سب سے بڑا جہاد اپنے نفس پر قابو پانا یعنی اپنے غصے اور اپنی خواہشوں کو جیتنا ہے۔" اسلام کی تمام کتابوں میں اپنے نفس پر قابو پانے کو جہاد کبیر، یعنی 'سب سے بڑا جہاد' کہا گیا ہے۔ اسلام میں آج تک مذہب کے اس طرح کے کاموں کو، جیسے رتجگے رکھنا، راتوں کو نمازیں پڑھنا بہت زیادہ روزے رکھنا، دان دینا وغیرہ 'مجاہدہ' کہا جاتا ہے۔

جہاں تک جہاد کا قرآن کے ساتھ تعلق ہے، نیچے لکھی تین باتیں پورے یقین کے ساتھ کہی جا سکتی ہیں —

है जहाँ हथियार उठाने या लड़ने से किसी तरह का कोई वास्ता नहीं है. धर्म के मामले में, या लोगों की सेवा करने में, या अपने दिल की सफ़ाई में जो भी कोशिश या मेहनत की जावे वह क़ुरान के मुताबिक़ जिहाद है.

(२) सारे क़ुरान में किसी एक ऐसी जगह भी जहाँ साफ़साफ़ मतलब सिर्फ़ लड़ने या हथियार उठाने से है. जिहाद शब्द इस्तेमाल नहीं किया गया.

(३) क़ुरान के अन्दर ख़ास हालतों में अपने धर्म के बचाव के लिये हथियार उठाने या लड़ने की इजाज़त दी गई है पर जहाँ कहीं और जब कभी इसका ज़िक्र आया है वहाँ जिहाद शब्द इस्तेमाल नहीं किया गया बल्कि सिर्फ़ 'क़ेताल' शब्द इस्तेमाल किया गया है जिसके साफ़ माने लड़ना हैं (२–१९०, ४–७४, ४–६१ वग़ैरा)

हो सकता है कि जो लोग किसी ख़ास मज़हब को मानने का दावा नहीं करते वह एक दरजे तक उस मज़हब को दुनियाँ की निगाह में ऊँचा करें. पर किसी भी मज़हब को उस मज़हब से बाहर का कोई आदमी नीचा नहीं कर सकता. लाखों आदमियों की निगाह में जिहाद शब्द के साथ जो एक नाख़ुशगवार माने जुड़े हुये हैं उसकी जिम्मेवारी सिर्फ़ मुसलमानों ही के ऊपर है. नेक और सच्चे मुसलमानों को चाहिये कि अगर होसकता हो तो. इस पाक शब्द जिहाद को राजकाजी या दूसरे गन्दे और ग़लत काम में घसीटे जाने से रोकें.

नई दिल्ली
५-२-४८

—सुन्दर लाल

ہے جہاں ہتھیار اٹھانے یا لڑنے سے کسی طرح کا کوئی واسطہ نہیں ہے. دھرم کے معاملے میں، یا لوگوں کی سیوا کرنے میں، یا اپنے دل کی صفائی میں جو بھی کوشش یا محنت کی جاوے وہ قرآن کے مطابق جہاد ہے۔

(۲) سارے قرآن میں کسی ایک ایسی جگہ بھی جہاں صاف صاف مطلب صرف لڑنے یا ہتھیار اٹھانے سے ہے. جہاد شبد استعمال نہیں کیا گیا۔

(۳) قرآن کے اندر خاص حالتوں میں اپنے دھرم کے بچاؤ کے لئے ہتھیار اٹھانے یا لڑنے کی اجازت دی گئی ہے پر جہاں کہیں اور جب کبھی اس کا ذکر آیا ہے وہاں جہاد شبد استعمال نہیں کیا گیا بلکہ صرف 'قتال' شبد استعمال کیا گیا ہے جس کے صاف معنے لڑنا ہیں (۲-۱۹۰، ۴-۷۴، ۴-۶۱)۔

ہوسکتا ہے کہ جو لوگ کسی خاص مذہب کو ماننے کا دعویٰ نہیں کرتے وہ ایک درجے تک اس مذہب کو دنیا کی نگاہ میں اونچا کریں. پر کسی بھی مذہب کو اس مذہب سے باہر کا کوئی آدمی نیچا نہیں کر سکتا. لاکھوں آدمیوں کی نگاہ میں جہاد شبد کے ساتھ جو ایک ناخوشگوار معنے جڑے ہوئے ہیں اس کی ذمے داری صرف مسلمانوں ہی کے اوپر ہے. نیک اور سچے مسلمانوں کو چاہئے کہ اگر ہوسکتا ہو تو اس پاک شبد جہاد کو راج کاجی یا دوسرے گندے اور غلط کام میں گھسیٹے جانے سے روکیں۔

نئی دلی

—سندرلال

पाकिस्तान में गोकुशी पर रोक थाम

पच्छिमी पंजाब की पाकिस्तानी सरकार ने हाल में यह हुक्म जारी किया है कि नीचे लिखी क़िस्मों के जानवर खाने के लिये या किसी दूसरे काम के लिये न काटे जावें—

(१) वह सब नर या मादा जानवर जिनकी उमर तीन साल से कम हो.

(२) वह सब नर जानवर जिनकी उमर तीन और दस साल के बीच में हो और जो खेती के काम के क़ाबिल हों.

(३) वह सब मादा जानवर जिनकी उमर तीन और दस साल के बीच में हो और जो बच्चा देने या दूध देने के क़ाबिल हों.

पाकिस्तान सरकार ने यह हुक्म अपनी ज़रूरत से मजबूर होकर दिया है, फिर भी बेज़बान जानवरों की हिफ़ाज़त की तरफ़ यह एक ठीक क़दम है. इसे अमली और साइन्टिफ़िक गो-रक्षा की तरफ़ भी एक क़दम कह सकते हैं.

नई दिल्ली.   —सुन्दर लाल

५-२-४८

پاکستان میں گؤکشی پر روک تھام

مغربی پنجاب کی پاکستانی سرکار نے حال میں یہ حکم جاری کیا ہے کہ نیچے لکھی قسموں کے جانور کھانے کے لئے یا کسی دوسرے کام کے لئے نہ کاٹے جاویں—

(۱) وہ سب نر یا مادہ جانور جن کی عمر تین سال سے کم ہو.

(۲) وہ سب نر جانور جن کی عمر تین اور دس سال کے بیچ میں ہو اور جو کھیتی کے کام کے قابل ہوں.

(۳) وہ سب مادہ جانور جن کی عمر تین اور دس سال کے بیچ میں ہو اور جو بچہ دینے یا دودھ دینے کے قابل ہوں.

پاکستانی سرکار نے یہ حکم اپنی ضرورت سے مجبور ہوکر دیا ہے پھر بھی بے زبان جانوروں کی حفاظت کی طرف یہ ایک ٹھیک قدم ہے. اسے عملی اور سائنٹفک گورکشا کی طرف بھی ایک قدم کہہ سکتے ہیں.

نئی دلی   —سُندر لال

۵-۲-۴۸

वफ़ादारी

हिन्द सरकार और पाकिस्तान सरकार दोनों को इस समय यह शिकायत है कि इनके बहुत से अफ़सर और नौकर इनकी अच्छी और उदार तजवीजों को कामयाब नहीं होने देते. दोनों तरफ़ की जनता का भी एक बड़ा हिस्सा इस नाफ़रमानी को बढ़ावा देता है और अजीब बात यह है कि जो लोग इस तरह अपनी ही सरकार को नीचा दिखाते हैं वही इस बात पर भी सब से बढ़ कर जोर देते हैं कि हिन्द में मुसलमानों से और पाकिस्तान में हिन्दुओं से सरकार की वफ़ादारी की क़समें ली जावें

हिन्दुस्तान में मुसलमानों को वफ़ादार बनाए रखने का तरीक़ा इन्हें सदा तानें देते रहना, इन्हें पाकिस्तान और 'दोनेशन' के उसूल की याद दिलाते रहना, इन पर शक़ करते रहना, और इन से बार बार क़समें खाने को कहना नहीं है. इस तरह की बातें न हमें शोभा देती हैं न फ़ायदा पहुँचा सकती हैं. किसी को अपना बना लेने का रास्ता पहले अपने दिल को साफ़ करना और अन्दर से ग़ैरियत के पर्दे को हटाना और फिर बे लाग सेवा और प्रेम से दूसरे के दिल को जीतना है. यही बर्ताव पाकिस्तान में वहां के मुसलमानों का अपने हिन्दू और सिख भाइयों के साथ होना चाहिये. दोनों तरफ़ के दिल अभी चोटिले हैं. हमें घाव को कुरेदते रहने के बजाय उसे भर जाने का मौक़ा देना चाहिये और इस मामले में सब को अपनी अपनी सरकार का पूरा साथ देना चाहिये.

('हरिजन सेवक' से) —सुन्दर लाल

وفاداری

ہند سرکار اور پاکستان سرکار دونوں کو اِس سمے یہ شکایت ہے کہ اِن کے بہت سے افسر اور نوکر اِن کی اچھی اور اُدار تجویزوں کو کامیاب نہیں ہونے دیتے۔ دونوں طرف کی جنتا کا بھی ایک بڑا حصہ اِس نافرمانی کو بڑھاوا دیتا ہے اور عجیب بات یہ ہے کہ جو لوگ اِس طرح اپنی ہی سرکار کو نیچا دکھاتے ہیں وہی اِس بات پر بھی سب سے بڑھ کر زور دیتے ہیں کہ ہند میں مسلمانوں سے اور پاکستان میں ہندوؤں سے سرکار کی وفاداری کی قسمیں لی جاویں۔

ہندستان میں مسلمانوں کو وفادار بنائے رکھنے کا طریقہ انھیں سدا طعنے دیتے رہنا، انھیں پاکستان اور 'دو نیشن' کے اصول کی یاد دلاتے رہنا، ان پر شک کرتے رہنا اور ان سے بار بار قسمیں کھانے کو کہنا نہیں ہے۔ اِس طرح کی باتیں نہ ہمیں شوبھا دیتی ہیں نہ فائدہ پہنچا سکتی ہیں۔ کسی کو اپنا بنا لینے کا راستہ پہلے اپنے دل کو صاف کرنا اور اندر سے غیریت کے پردے کو ہٹانا اور پھر بے لاگ سیوا اور پریم سے دوسرے کے دل کو جیتنا ہے۔ یہی برتاؤ پاکستان میں وہاں کے مسلمانوں کا اپنے ہندو اور سکھ بھائیوں کے ساتھ ہونا چاہیے۔ دونوں طرف کے دل ابھی چوٹیلے ہیں۔ ہمیں گھاؤ کو کریدتے رہنے کے بجائے اسے بھر جانے کا موقع دینا چاہیے اور اس معاملے میں سب کو اپنی اپنی سرکار کا پورا ساتھ دینا چاہیے۔

(ہریجن سیوک سے) — سندر لال

गीता और .कुरान
लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे देकर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों को बयान किया गया है.

उसके बाद गीता के लिखे जाने के वक़्त की इस देश की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आख़िर में .कुरान से पहले की अरब की हालत, .कुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर .कुरान की तालीम को बयान किया गया है. इस में .कुरान की पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ़्ज़ी तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि .कुरान में जेहाद, आक़ेबत, आख़ेरत, जन्नत, जहन्नम, काफ़िर वग़ैरा किसे कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की इन दो अमर पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को जरूर पढ़ना चाहिये.

किताब आसान हिन्दुस्तानी ज़बान में, नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकती है. पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपए. डाक खर्च अलग.

मैनेजर "नया हिन्द"
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

گیتا اور قرآن
لیکھک - پنڈت سندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیا ھے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دے دے کر ملتی جلتی بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ھے.

اسکے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اس دیش کی حالت' گیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ھے.

آخر میں قرآن سے پہلے عرب کی حالت' قرآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پر قرآن کی تعلیم کو بیان کیا گیا ھے. اسمیں قرآن کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ھے. یہ بھی بتایا گیا ھے کہ قرآن میں جہاد' عاقبت' آخرت' جنت' جہنم' کافر وغیرہ کسے کہا گیا ھے.

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاھیں یا ھندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو امر پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاھیں انہیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاھئے.

کتاب ہندستانی زبان میں ناگری اور اُردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ھے. پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ - ڈاک خرچ الگ

منیجر 'نیا ھند'
۴۸ - بائی کا باغ' الہآباد

Printer—Bishambhar Nath, Vishwavani Press, South Malaka, Allahabad.
Publisher—Bishambhar Nath for Hindustani Culture Societ'A 48 Bai ka Bagh, Allahabad.

Registered No A—210.

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

मक़सद

(१) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरह का छापना.

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना

—०—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—सर तेज बहादुर सप्रू ; वाइस प्रेसीडेन्ट डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़ गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट — डा० भगवानदास; सेक्रेटरी पं० सुन्दरलाल; ख़ज़ान्ची—डा० ताराचन्द.

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर

डा० सय्यदमहमूद, मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा, मौलवी सय्यद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता. श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, पं० विशम्भर नाथ.

— ० —

सोसाइटी की बम्बई शाख़ का दफ़्तर

जहाँगीर वाडिया बिल्डिङ्ग. ५१ महात्मा गान्धी रोड, फ़ोर्ट बम्बई.

बम्बई शाख़ की मैनेजिंग कमेटी के मेम्बर —

श्री बी० जी० खेर, श्रीमती सोफ़िया वाडिया. प्रिन्सिपल ए० ए० ए० फ़ैज़ी, श्री एम० एच० पकवासा, श्रीमती हंसा मेहता, सय्यद अब्दुल्ला ब्रेलवी, मि० के० वी० शाह.

मेम्बरी के क़ायदों के लिए लिखिए.

सुन्दर लाल.
सेक्रेटरी हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद.

ھندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(۱) ایک ایسی ھندستانی کلچر کا بڑھانا' پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ھندستانی شامل ھوں ۔

(۲) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں' اخباروں' رسالوں وغیرہ کا چھاپنا ۔

(۳) پڑھائی گھروں' کتاب گھروں' سبھاؤں' کانفرنسوں' لکچروں سے سب دھرموں' جاتوں' برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا ۔

:0:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ — سر تیج بہادر سپرو؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق؛ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ ۔ ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری - پنڈت سندر لال؛ خزانچی ڈاکٹر تارا چند ۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر

ڈاکٹر سید محمود' مسٹر عبدالمجید خواجہ' مولوی سید سلیمان ندوی' مسٹر منظر علی سوختہ شری بی جی کھیر' مسٹر ایس ۔ کے ۔ رودرا' پنڈت بشمبھر ناتھ ۔

— :0: —

سوسائٹی کی بمبئی شاخ کا دفتر—

جہانگیر واڈیا بلڈنگ' ۵۱ مہاتما گاندھی روڈ' فورٹ بمبئی ۔

بمبئی شاخ کی مینیجنگ کمیٹی کے ممبر—

شری بی - جی - کھیر' شریمتی صوفیا واڈیا' پرنسپل اے - اے - اے فیضی' شری ایم - ایچ - پکواسا' شریمتی ھنسا مہتا' سید عبداللہ بریلوی' مسٹر کے - وی - شاہ ۔

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے ۔

سندر لال
سکریٹری ھندستانی کلچر سوسائٹی'
۴۸ بائی کا باغ' الہ آباد ۔

नोट—सोसाइटी के मेम्बरों का [illegible] हिन्दी और [illegible]

अप्रैल
सन् १९४८

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—

ताराचन्द, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हुसन, विश्वम्भरनाथ, सुन्दरलाल

अप्रैल १९४८

क्या किससे

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा दस आने.

मैनेजर
'नया हिंद'

४८, बाई का बाग़, इलाहाबाद

" نیا ھند "

ھندستانی کلچر سوسائٹی کا پرچا

ایڈیٹر—

تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال،

اپریل ۱۹۴۸

کیا کس سے

قیمت—ھندستان میں چھ روپیہ سال، باھر دس روپیہ سال،
ایک پرچا دس آنے –

منیجر
نیا ھند

۴۸، بائی کا باغ، الہ آباد

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द ४ अप्रैल '४८ नम्बर ४

جلد۴ اپریل ۴۸ نمبر۴

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली.
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی۔
نیا ہند پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

उस शान्ति के उपदेशक का उपदेश है क्या प्यारा प्यारा

(भाई मुजफ़्फ़र साहब शाहजहाँपूरी)

जो देख नहीं सकता था कभी हिन्दू से मुसलमाँ का झगड़ा
जो देख नहीं सकता था कभी चोली से ये दामाँ का झगड़ा
जो देख नहीं सकता था कभी इन्साँ से ये इन्साँ का झगड़ा
कहता था वह हर हिन्दू मुसलिम भारत की है आँखों का तारा
उस शान्ति के उपदेशक का उपदेश है क्या प्यारा प्यारा

اُس شانتی کے اُپدیشک کا اُپدیش ہے کیا پیارا پیارا

(بھائی مظفر صاحب شاہجہاں پوری)

جو دیکھ نہیں سکتا تھا کبھی ہندو سے مسلماں کا جھگڑا
جو دیکھ نہیں سکتا تھا کبھی چولی سے یے داماں کا جھگڑا
جو دیکھ نہیں سکتا تھا کبھی انساں سے یے انساں کا جھگڑا
کہتا تھا وہ ہر ہندو مسلم بھارت کی ہے آنکھوں کا تارا
اُس شانتی کے اُپدیشک کا اُپدیش ہے کیا پیارا پیارا

हिन्दू मुसलिम सिक्ख ईसाई सब एक चमन की हैं डाली
उसको थी यही चिन्ता हर दम मिट जाये न इनकी हरियाली
बलिदान इसी से देकर अपना उठ गया भारत का माली
अब डाली हर तलवार बने और फूल बने हर अंगारा
उस शान्ति ....प्यारा

मुद्दत में दिये हैं हम सब को आजादी की देवी ने दर्शन
वह भारत माता के हाथों से टूटे गुलामी के बन्धन
इन हाथों की शोभा के लिये बन जाएं अब दोनों कंगन
अब देखो गुलामी का फन्दा फिर पड़ने न पाये दोबारा
उस शान्ति ....प्यारा

जब प्रीत के सागर से उठ कर हर ओर घटा छा जाएगी
आशाओं की कोंपल फूटेगी और प्रेमलता लहराएगी
आकाश से मोती बरसेंगे धरती सोना बन जाएगी
हर एक के मन के सोते से फूटेगी अमृत की धारा
उस शान्ति ....प्यारा

धन वालों की हठ धर्मी से अब कोई मनुष कंगाल न हो
चोरों की साहूकारी से बंगाल के ऐसा काल न हो
और छूत का रोगी कोई भी भारत माता का लाल न हो
इस देश का घर घर स्वर्ग बने ढूंढे न मिले एक दुखियारा
उस शान्ति ....प्यारा

ہندو مسلم سکھ عیسائی سب ایک چمن کی ہیں ڈالی
اس کو تھی یہی چنتا ہر دم مٹ جائے نہ اِن کی ہریالی
بلیدان اِسی سے دے کر اپنا اُٹھ گیا بھارت کا مالی
اب ڈالی ہر تلوار بنے اور پھول بنے ہر انگارا
اُس شانتی .... پیارا

مدت میں دئے ہیں ہم سب کو آزادی کی دیوی نے درشن
وہ بھارت ماتا کے ہاتھوں سے ٹوٹے غلامی کے بندھن
اِن ہاتھوں کی شوبھا کے لئے بن جائیں اب دونوں کنگن
اب دیکھو غلامی کا پھندا پھر پڑنے نہ پائے دوبارا
اُس شانتی .... پیارا

جب پریت کے ساگر سے اُٹھ کر ہر اور گھٹا چھا جائے گی
آشاؤں کی کونپل پھوٹے گی اور پریم لتا لہرائے گی
آکاش سے موتی برسیں گے دھرتی سونا بن جائے گی
ہر ایک کے من کے سوتے سے پھوٹے گی امرت کی دھارا
اُس شانتی .... پیارا

دھن والوں کی ہٹھ دھرمی سے اب کوئی منش کنگال نہ ہو
چوروں کی ساہوکاری سے بنگال کے ایسا کال نہ ہو
اور چھوت کا روگی کوئی بھی بھارت ماتا کا لال نہ ہو
اِس دیش کا گھر گھر سورگ بنے ڈھونڈے نہ ملے ایک دکھیارا
اُس شانتی .... پیارا

महात्मा गांधी की जीवनी

[भाई गणेश प्रसाद द्विवेदी]

महात्मा गांधी की पैदायश २ अक्तूबर, सन् १८६९ को रियासत पोरबंदर में हुई थी. वह करमचंद गांधी के सब से छोटे बेटे थे. उनके पिता इस वक्त पोरबंदर के दीवान थे और बाद में राजकोट, बीकानेर वगैरह कई रियासतों में दीवान रहे. इनका नाम मोहनदास पड़ा. इनकी बुनियादी तालीम राजकोट में हुई पर इंट्रेन्स पास करने के पहले ही इनके पिता चल बसे और फिर इनकी माँ ने ही इन्हें बड़े जतन से पाल पोस कर बड़ा किया. अपनी माँ के बारे में गांधी जी अक्सर कहा करते थे कि वह मेरी माँ और बाप दोनों ही थीं. इंट्रेन्स के बाद कुछ दिन इन्होंने भाव नगर में तालीम पाई पर इनके लोगों ने तालीम के लिये इन्हें विलायत भेजना तय किया. यह खुद डाक्टरी पढ़ना चाहते थे पर इनके बड़ों ने वारिस्टरी पास करना ही ठीक समझा और सिर्फ सत्तरह साल की उम्र में ये विलायत के लिये रवाना हो गये।

जन्म

गांधी जी की शादी तेरह साल की ही उमर में हो चुकी थी. इनकी माँ इनको विलायत भेजने के खिलाफ थीं। उनका ख्याल था कि विलायत जाने से धरम नष्ट हो जाता है. पर उनकी एक न चली. और इनके बड़े सम्बंधियों ने इन्हें विलायत भेज ही दिया. तो भी चलते

विलायत में तालीम

مہاتما گاندھی کی جیونی

(بھائی گنیش پرساد دویدی)

مہاتما گاندھی کی پیدائش ۲ر اکتوبر ۱۸۶۹ء کو ریاست پوربندر میں ہوئی تھی۔ وہ کرم چند گاندھی کے سب سے چھوٹے بیٹے تھے۔ اُن کے پتا اِس وقت پوربندر کے دیوان تھے اور بعد میں راج کوٹ، بیکانیر وغیرہ کئی ریاستوں میں دیوان رہے۔ اِن کا نام موہن داس پڑا۔ اِن کی بنیادی تعلیم راج کوٹ میں ہوئی پر انٹرنس پاس کرنے کے پہلے ہی اِن کے پتا چل بسے اور پھر اِن کی ماں نے اِنھیں بڑے جتن سے پال پوس کر بڑا کیا۔ اپنی ماں کے بارے میں گاندھی جی اکثر کہا کرتے تھے کہ وہ میری ماں اور باپ دونوں ہی تھیں۔ انٹرنس کے بعد کچھ دن اِنھوں نے بھاؤ نگر میں تعلیم پائی پر اِن کے لوگوں نے تعلیم کے لئے اِنھیں ولایت بھیجنا طے کیا۔ یہ خود ڈاکٹری پڑھنا چاہتے تھے پر اِن کے بڑوں نے بارسٹری پاس کرانا ہی ٹھیک سمجھا اور صرف سترہ سال کی عمر میں یے ولایت کے لئے روانہ ہوگئے۔

جنم

گاندھی جی کی شادی تیرہ سال کی ہی عمر میں ہوچکی تھی۔ اِن کی ماں اِن کو ولایت بھیجنے کے خلاف تھیں۔ اُن کا خیال تھا کہ ولایت جانے سے دھرم نشٹ ہوجاتا ہے۔ پر اُن کی ایک نہ چلی۔ اور اِن کے بڑے سمبندھیوں نے اِنھیں ولایت بھیج ہی دیا۔ تو بھی چلتے

ولایت میں تعلیم

चलते इनकी ने मां ने इनं से तीन वायदे ले लिये थे और वह थे शराब, गोश्त और पराई औरत से परहेज, और गांधी जी ने इन तीनों को अंत तक बड़ी सचाई के साथ पूरा किया. वह क़रीब चार साल इङ्गलैंड में रहे. लंदन यूनिवर्सिटी के अंडर ग्रेजुयेट होकर ये इनरटेंपुल में बारिस्टरी पढ़ने लगे और वक़्त पर उसकी सनद हासिल की. इङ्गलैंड रहते तक ये थियासोफ़ी और ईसाई मज़हबों की मजलिसों में अकसर शिरकत किया करते थे. वैष्णव (जैन) घर में जन्म होने की वजह से सब जीवों पर दया और अहिंसा का भाव इनके दिल पर बहुत पहले से असर कर चुका था. विलायत में थियासोफ़ी और ईसाई धर्म गुरुओं के व्याख्यान से, ख़ासकर सरमन आफ़ दि माउन्ट से, इनके अहिंसा और प्रेम के भाव और भी मज़बूत हुए.

अपनी तालीम पूरी कर जब ये भारत लौटे तो पता चला कि इसी बीच इनकी माता भी सुरलोक सिधार चुकीं थीं.

बारिस्टरी

यह घटना तो पहले ही हो चुकी थी पर इनके लोगों ने इसकी ख़बर इनके पास विलायत भेजना ठीक नहीं समझा था. इन्हें अपनी माता को खोकर अपार दुख हुआ और घर आने पर दूसरी मुसीबत यह सामने आई कि इनकी बिरादरी के धर्माचार्यों ने इनको विलायत जाने के अपराध में जात से निकाल दिया. हालाँकि भारत आते ही बाक़ायदा शुद्धि वग़ैरह की रस्म भी पूरी की गई थी.

इन्होंने वकालत का सिलसिला जमाने की कोशिश की पर इस काम में इनको अच्छी सफलता नहीं मिल रही

چلتے ان کی ماں نے ان سے تین وعدے لے لئے تھے اور وہ تھے شراب، گوشت اور پرائی عورت سے پرہیز، اور گاندھی جی نے ان تینوں کو انت تک بڑی سچائی کے ساتھ پورا کیا۔ وہ قریب چار سال انگلینڈ میں رہے۔ لندن یونیورسٹی کے انڈر گریجویٹ ہوکر یہ اِنرٹیمپل میں بارسٹری پڑھنے لگے اور وقت پر اس کی سند حاصل کی۔ انگلینڈ رہتے تک یہ تھیاسوفی اور عیسائی مذہبوں کی مجلسوں میں اکثر شرکت کیا کرتے تھے۔ ویشنو (جین) گھر میں جنم ہونے کی وجہ سے سب جیووں پر دیا اور اہنسا کا بھاؤ ان کے دل پر بہت پہلے سے اثر کر چکا تھا۔ ولایت میں تھیاسوفی اور عیسائی دھرم گوروؤں کے ویاکھیان سے، خاص کر سرمن آف دی ماؤنٹ سے، ان کے اہنسا اور پریم کے بھاؤ اور بھی مضبوط ہوئے۔

اپنی تعلیم پوری کر جب یہ بھارت لوٹے تو پتہ چلا کہ اسی بیچ ان کی ماتا بھی سرلوک سدھار چکی تھیں۔

بارسٹری

یہ گھٹنا تو پہلے ہی ہو چکی تھی پر ان کے لوگوں نے اس کی خبر ان کے پاس ولایت بھیجنا ٹھیک نہیں سمجھا تھا۔ انھیں اپنی ماتا کو کھوکر اپار دکھ ہوا اور گھر آنے پر دوسری مصیبت یہ سامنے آئی کہ ان کی برادری کے دھرماچاریوں نے ان کو ولایت جانے کے اپرادھ میں جات سے نکال دیا۔ حالاں کہ بھارت آتے ہی باقاعدہ شدھی وغیرہ کی رسم بھی پوری کی گئی تھی۔

انھوں نے وکالت کا سلسلہ جمانے کی کوشش کی پر اس کام میں ان کو اچھی سپھلتا نہیں مل رہی

दक्खिन अफ्रीका में

थी. संजोग से इन्हीं दिनों इन्हें पोरबंदर की एक कम्पनी के एक मुक़दमे की पैरवी के लिये दक्खिन अफ्रीका जाने का मौक़ा मिला और वह तुरंत चले गये. वह मुक़द्दमा अर्से तक चला, पर संजोग कुछ ऐसे आये कि पूरे बीस साल तक इन्हें अफ्रीका में रहना पड़ा. जिस मुक़दमे की पैरवी के लिये गये थे वह प्रेटोरिया नाम के ज़िले में महीनों चलता रहा. इनके मवक्किल मुसलमान थे और इनकी सोहबत से ही इन्हें इसलाम में दिलचस्पी पैदा हुई जो आगे बढ़ती ही गई. आख़िरकार वह मुक़द्दमा किसी तरह तय हुआ पर कचहरी के बाहर पंचायत से, जिस के एक पंच गांधी जी ख़ुद थे. पर इस लंबी पैरवी के दौरान में इन्हें वहां के गोरे हाकिमों के साथ के बहुत से ऐसे दर्दनाक और शर्मनाक तजरबे हुये जिनका टिकाऊ असर इनके भावुक हृदय पर पड़े बिना नहीं रह सका. कई बार इनके ऊपर हमले तक हुए, उनकी जान ख़तरे में पड़ी. एक बार तो यहां तक नौबत आई कि अगर पुलीस सुपरिटेंडेन्ट की बीबी बीच में न पड़ती तो ग़ुस्से से अंधो गोरा जनता उन्हें जान से मार डालती. तो भी ढेलों की मार से उनका सर फट गया था और लात घूंसों की चोट से उन्हें अंदरूनी चोट पहुंची थी. इस सब की वजह यह थी कि उस मुक़दमे के दौरान में उन्हें बहुत से तजरबे ऐसे हुये जिनसे उन्हें मालूम हो गया कि वहां के गोरे, हिन्दुस्तानियों पर कितनी ज्यादतियां करते हैं. गोरे काले का भेदभाव और क़ौमी घमंड इन गोरों में इस क़दर बढ़ा हुआ था कि एक हिन्दुस्तानी जानवर से भी बदतर समझा

دکھن افریقہ میں

تھی. سنجوگ سے انھیں دنوں انھیں پوربندر کی ایک کمپنی کے ایک مقدمے کی پیروی کے لئے دکھن افریقہ جانے کا موقع ملا اور وہ تُرنت چلے گئے. وہ مقدمہ عرصے تک چلا، پر سنجوگ کچھ ایسے آئے کہ پورے بیس سال تک انھیں افریقہ میں رہنا پڑا. جس مقدمے کی پیروی کے لئے گئے تھے وہ پریٹوریا نام کے ضلع میں مہینوں چلتا رہا. ان کے موکل مسلمان تھے اور ان کی صحبت سے ہی انھیں اسلام میں دلچسپی پیدا ہوئی جو آگے بڑھتی ہی گئی. آخرکار وہ مقدمہ کسی طرح طے ہوا پر کچہری کے باہر پنچایت سے، جس کے ایک پنچ گاندھی جی خود تھے. پر اس لمبی پیروی کے دوران میں انھیں وہاں کے گورے حاکموں کے ساتھ کے بہت سے ایسے دردناک اور شرمناک تجربے ہوئے جن کا ٹکاؤ اثر ان کے بھاؤک ہردے پر پڑے بنا نہیں رہ سکا. کئی بار ان کے اوپر حملے تک ہوئے، اُن کی جان خطرے میں پڑی. ایک بار تو یہاں تک نوبت آئی کہ اگر پولیس سپرنٹنڈنٹ کی بی بی بیچ میں نہ پڑتی تو غصّے سے اندھی گوری جنتا انھیں جان سے مار ڈالتی. تو بھی ڈھیلوں کی مار سے اُن کا سر پھٹ گیا تھا اور لات گھونسوں کی چوٹ سے اُنھیں اندرونی چوٹ پہنچی تھی. اس سب کی وجہ یہ تھی کہ اُس مقدمے کے دوران میں اُنھیں بہت سے تجربے ایسے ہوئے جن سے اُنھیں معلوم ہو گیا کہ وہاں کے گورے ہندستانیوں پر کتنی زیادتیاں کرتے ہیں. گورے کالے کا بھید بھاؤ اور قومی گھمنڈ ان گوروں میں اس قدر بڑھا ہوا تھا کہ ایک ہندستانی جانور سے بھی بدتر سمجھا

आता था और पग पग पर उसे अपमान और तौहीनी का सामना करना पड़ता था. गोरों और हिन्दुस्तानियों के अलग क़ानून थे. इन बुराइयों को दूर करने के लिये गांधी जी अक्सर सभाओं में व्याख्यान वग़ैरा दिया करते थे जिससे वहां के गोरे इनके जानी दुश्मन हो गये थे. वह मुक़दमा ख़तम होने के बाद जब वह हिन्दुस्तान के लिये तैयार हुये तो वहां के लोगों ने इन्हें रोक लिया, अपनी सुनवाई करने और अपने ऊपर किये जाने वाले ज़ुल्मों की रोक थाम करने लिये. इस काम के लिये वह इनकी एक तनख़ाह भी मुक़र्रर कर देना चाहते थे. पर गांधी जी ने यह मंज़ूर नहीं किया. फिर इनके ख़र्च के लिये यह इन्तज़ाम हुआ कि हिन्दुस्तानी कम्पनियां अपने क़ानूनी मामलात इन्हीं के सपुर्द किया करें. तब से ये वहां जम कर रहने लगे और मई १८९४ में इन्होंने नेटाल इंडियन कांग्रेस क़ायम की. साथ ही वहां के हिंदुस्तानियों में सामाजिक सुधार का काम भी ज़ोरों से चालू किया. रहन सहन सफ़ाई तनदुरुस्ती, तालीम वग़ैरह में इनकी तरक़्क़ी के उपाय सुझाये. १८९६ में ये कुछ दिनों के लिये हिंदुस्तान आये थे और नेटाल के रहने वाले हिंदुस्तानियों पर किये जाने वाले अत्याचारों पर यहां के लोगों का ध्यान खींचने के लिये देश में घूम घूम कर बहुत से लेक्चर दिये और कई छोटी छोटी किताबें निकालीं. इन तक़रीरों की ग़लत और बहुत बढ़ा चढ़ाकर रिपोर्टें नेटाल के गोरों को भेजी गईं जिससे वह गांधी जी के जानी दुश्मन हो गये और इसी का नतीजा था कि जब वह फिर नेटाल लौटे तो जहाज़ पर से उतरते ही उन पर हमला हुआ

नेटाल कांग्रेस

جاتا تھا اور پگ پگ پر اُسے اپمان اور توہین کا سامنا کرنا پڑتا تھا۔
گوروں اور ہندستانیوں کے الگ قانون تھے۔ اِن بُرائیوں کو دُور کرنے
کے لئے گاندھی جی اکثر سبھاؤں میں ویاکھیان وغیرہ دیا کرتے تھے
جس سے وہاں کے گورے اِن کے جانی دشمن ہو گئے تھے۔ وہ
مقدمہ ختم ہونے کے بعد جب یہ ہندستان کے لئے تیار ہوئے تو
وہاں کے لوگوں نے اِنھیں روک لیا، اپنی سُنوائی کرنے اور اپنے
اوپر کئے جانے والے ظلموں کی روک تھام کرنے کے لئے۔ اِس
کام کے لئے وہ اِن کی ایک تنخواہ بھی مقرر کر دینا چاہتے تھے،
پر گاندھی جی نے یہ منظور نہیں کیا۔ پھر اِن
کے خرچ کے لئے یہ انتظام ہوا کہ ہندستانی
کمپنیاں اپنے قانونی معاملات اِنھیں کے سپرد کیا کریں۔ تب سے یے
وہاں جم کر رہنے لگے اور مئی ۱۸۹۴ میں اِنھوں نے نیٹال انڈین
کانگریس قایم کی۔ ساتھ ہی وہاں کے ہندستانیوں میں سماجک سُدھار
کا کام بھی زوروں سے چالو کیا۔ رہن سہن صفائی تندرستی، تعلیم
وغیرہ میں اِتنی ترقی کے اُپائے سُجھائے۔ ۱۸۹۶ میں یے کچھ دنوں
کے لئے ہندستان آئے تھے اور نیٹال کے رہنے والے ہندستانیوں
پر کئے جانے والے اتیاچاروں پر یہاں کے لوگوں کا دھیان کھینچنے
کے لئے دیش میں گھوم گھوم کر بہت سے لیکچر دئے اور کئی چھوٹی چھوٹی
کتابیں نکالیں۔ اِن تقریروں کی غلط اور بہت بڑھا چڑھا کر رپورٹیں نیٹال
کے گوروں کو بھیجی گئیں جس سے وہ گاندھی جی کے جانی دشمن ہو گئے اور اِسی کا نتیجہ
تھا کہ جب وہ پھر نیٹال لوٹے تو جہاز پر سے اُترتے ہی اُن پر حملہ ہوا

نیٹال کانگریس

और सड़क पर ही उनकी खाल खींच ली गई होती, अगर उस गोरे पुलिस अफ़सर की बीवी ने इन्हें न बचाया होता.

इसी घटना के बाद ही सन १८९९ वाला बुअर युद्ध शुरू हुआ और गांधी जी ने वहां के हिंदुस्तानियों को यह राय दी कि चूंकि हिंदुस्तानी वहां अंग्रेजों के साये में रहते हैं और उनके बराबर के हक़ चाहते हैं इस लिये उनका फ़र्ज़ है कि इस मुसीबत में अंगरेजों का हाथ बटाँयें. उन्होंने बड़ी कोशिश से हिंदुस्तानियों की, एक टुकड़ी तैयार की जिसने लड़ाई के मोर्चों पर बड़ी दिलेरी का काम किया. यह टुकड़ी ख़ासकर एमबुलेंस का काम कर रही थी और ख़ुद गांधी जी इस में शरीक थे. लड़ाई के मोर्चों पर अपनी जान ख़तरे में डाल कर घायलों को उठाना और उनकी सेवा जतन करना इनका काम था. जिस लगन और बहादुरी से इस टुकड़ी ने काम किया था उसके लिये सरकारी तौर पर इसकी तारीफ़ की गई और इसमें के कइयों को बहादुरी के तमग़े दिये गये.

१९०१ में गांधी जी बम्बई लौटे और वहीं टिक जाना चाहते थे, पर कुछ ही महीनों बाद अफ्रीका से फिर इनकी बुलाहट आई.

एंबुलेंस कोर के वालेंटियर

बात यह थी कि बुअर युद्ध में अंग्रेजों की इतनी मदद करने के बाद भी हिंदुस्तानियों पर उनके रुख़ में कोई तब्दीली नहीं हुई. वही सब ज़ुल्म फिर ज्यों के त्यों दोहराये जाने लगे. गांधी जी ने उम्मीद की थी कि उस लड़ाई के बाद अंग्रेजों का दिल पसीजे और हिंदुस्तान वालों के साथ उनका बर्ताव अच्छा होगा पर उनके साथ फिर वही बर्ताव होने लगे जो इन्सानियत

اور سڑک پر ہی اُن کی کھال کھینچ لی گئی ہوتی، اگر اُس گورے پولیس افسر کی بی بی نے اِنھیں نہ بچایا ہوتا۔

اِسی گھٹنا کے بعد ہی ۱۸۹۹ء والا بوار یُدھ شروع ہوا اور گاندھی جی نے وہاں کے ہندستانیوں کو یہ رائے دی کہ چوں کہ ہندستانی وہاں انگریزوں کے سائے میں رہتے ہیں اور اُن کے برابر کے حق چاہتے ہیں اس لئے اُن کا فرض ہے کہ اِس مصیبت میں انگریزوں کا ہاتھ بٹائیں۔ اُنھوں نے بڑی کوشش سے ہندستانیوں کی ایک ٹکڑی تیار کی جس نے لڑائی کے مورچوں پر بڑی دلیری کا کام کیا۔ یہ ٹکڑی خاص کر امبولنس کا کام کر رہی تھی اور خود گاندھی جی اس میں شریک تھے۔ لڑائی کے مورچوں پر اپنی جان خطرے میں ڈال کر گھائلوں کو اُٹھانا اور اُن کی سیوا جتن کرنا اِن کا کام تھا۔ جس لگن اور بہادری سے اس ٹکڑی نے کام کیا تھا اُس کے لئے سرکاری طور پر اِس کی تعریف کی گئی اور اس میں کے کئیوں کو بہادری کے تمغے دئے گئے۔

۱۹۰۱ میں گاندھی جی بمبئی لوٹے اور وہیں ٹِک جانا چاہتے تھے، پر کچھ ہی مہینوں بعد افریقہ سے پھر اِن کی بُلاہٹ آئی۔

امبولنس کور کے والنٹیر

بات یہ تھی کہ بوار یُدھ میں انگریزوں کی اِتنی مدد کرنے کے بعد بھی ہندستانیوں پر اُن کے رُخ میں کوئی تبدیلی نہیں ہوئی۔ وہی سب ظلم پھر جیوں کے تیوں دوہرائے جانے لگے۔ گاندھی جی نے اُمید کی تھی کہ اُس لڑائی کے بعد انگریزوں کا دل پسیجے گا اور ہندستان والوں کے ساتھ اُن کا برتاؤ

[illegible]

के बाहर कहे जा सकते हैं. हाँ जब तक लड़ाई चालू रही तब तक के लिये बेशक उनका रुख बदला हुआ नज़र आया था. इन बातों से गांधी जी का माथा ठनका. बुअरों की हार के बाद ट्रांसवाल में हिंदुस्तानियों की हालत पहले से भी ख़राब हो गई थी.

वह फिर अफ्रीका लौटे और ट्रांसवाल के जाहन्सबर्ग नाम के शहर में डटकर हिंदुस्तानियों की सियासी हालत सुधारने में लग गये.

'इंडियन ओपीनियन'

'इंडियन ओपीनियन.' नाम का एक अख़बार उन्होंने निकालना शुरु किया और 'ब्रिटिश इंडियन एसोसियेशन' नामकी एक संस्था वहां क़ायम की. इसी बीच मशहूर अंग्रेज़ी लेखक रस्किन के 'अनटु दि लास्ट' नाम की किताब निकली जिसका ज़बरदस्त असर इनके दिल पर पड़ा और तभी से ये सादी ज़िन्दगी और निहायत सीधे सादे रहन सहन के पुजारी हो गये. फ़ीनिक्स नाम के स्थान पर इन्होंने इसी मक़सद से एक और संस्था क़ायम की.

रस्किन का असर

इसके कुछ ही दिनों बाद अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ ज़ुलू लोगों ने बग़ावत खड़ी करदी और इस में भी इन्होंने जी खोलकर अंग्रेज़ों की फिर मदद की. इन्होंने घायलों को ढोने की एक टुकड़ी क़ायम की और ख़ुद अपनी जान ख़तरे में डाल कर घायलों को उठाने का काम किया. पर इन बातों का कुछ भी असर अंग्रेज़ों पर न हुआ, और १९०१ से लेकर १९१३ तक ये लगातार अंग्रेज़ों की हिंदुस्तानी-विरोधी नीति के ख़िलाफ़ लड़ाई लड़ते रहे. वहाँ 'ब्लैक ऐक्ट'

کے باہر کہے جا سکتے ہیں. ہاں جب تک لڑائی چالو رہی تب تک کے لئے بے شک اُن کا رُخ بدلا ہوا نظر آیا تھا. اِن باتوں سے گاندھی جی کا ماتھا ٹھنکا. بواروں کی ہار کے بعد ٹرانسوال میں ہندستانیوں کی حالت پہلے سے بھی خراب ہو گئی تھی. وہ پھر افریقہ لوٹے اور ٹرانسوال کے جاہنسبرگ نام کے شہر میں ڈٹ کر ہندستانیوں کی سیاسی حالت سُدھارنے میں لگ گئے. 'انڈین اوپی نین' نام کا ایک اخبار انھوں نے نکالنا شروع کیا اور 'برٹش انڈین ایسوسی ایشن' نام کی ایک سنستھا وہاں قایم کی. اِسی بیچ مشہور انگریزی لیکھک رسکن کے 'انٹو دی لاسٹ' نام کی کتاب نکلی جس کا زبردست اثر اِن کے دل پر پڑا اور تبھی سے یہ سادی زندگی اور نہایت سیدھے سادے رہن سہن کے پجاری ہو گئے. فینکس نام کے استھان پر اِنھوں نے اِسی مقصد سے ایک اور سنستھا قایم کی.

'انڈین اوپی نین'

رسکن کا اثر

اِس کے کچھ ہی دنوں بعد انگریزوں کے خلاف زولو لوگوں نے بغاوت کھڑی کر دی اور اِس میں بھی انھوں نے جی کھول کر انگریزوں کی پھر مدد کی. انھوں نے گھایلوں کو ڈھونے کی ایک ٹکڑی قایم کی اور خود اپنی جان خطرے میں ڈال کر گھایلوں کو اُٹھانے کا کام کیا. پر اِن باتوں کا کچھ بھی اثر انگریزوں پر نہ ہوا، اور ۱۹۰۱ سے لے کر ۱۹۱۳ تک یہ لگاتار انگریزوں کی ہندستانی [illegible]

(काला क़ानून) नाम का एक क़ानून था जिस के मुताबिक़ हर बालिग़ हिन्दुस्तानी (काला) की उँगलियों की अलामत (निशानी) ली जानी ज़रूरी क़रार दी गई थी. एक दूसरे क़ानून से एशियायी लोगों के लिये ट्रांसवाल में घुसने पर रोक लगा दी गई. एक तीसरा क़ानून और पास हुआ था जिससे कि सिर्फ़ ईसाइयों की शादियां ही, जिन्हें रजिस्ट्रार शादी के रजिस्टर पर दर्ज कर चुका हो, वही जायज़ क़रार दी जाने लगीं. इन सभों के विरोध में गांधी जी ने एक आन्दोलन शुरू किया जो आगे चल कर 'सत्याग्रह' के नाम से मशहूर हुआ जिसके फल से अपने बहुत से साथियों के साथ गांधी जी को जेल जाना पड़ा. इसके बाद नेटाली मज़दूरों ने एक ख़ास टैक्स के ख़िलाफ़ भूख हड़ताल शुरू की. इन सभों को भर्ती होने पर तीन पौंड का एक टैक्स देना पड़ता था. गांधी जी इनका जुलूस निकाल कर सबके आगे आगे चल रहे थे. वह इन से अलग करके गिरफ़्तार कर लिये गये और बाक़ी सब को कोड़े मार मार कर काम करने के लिये मजबूर किया गया, बहुतों को गोलियाँ भी लगीं. इस ख़ौफ़नाक ज़ुल्म का असर हिंदुस्तान पर भी पड़ा और यहां इसके विरोध में एक आंदोलन शुरू हुआ. सारे हिंदुस्तान में इसकी वजह से सनसनी फैल गई थी. उस वक़्त के वाइसराय लार्ड हार्डिंग ने इस ज़ुल्म के ख़िलाफ़ एक ज़ोरदार बयान दिया. जनरल स्मट्स को मजबूर होकर घुटने टेकने पड़े. एक जांच कमीशन मुक़र्रर हुआ, और गांधी जी मय और लीडरों के, बिना किसी शर्त के रिहा कर दिये गये. इसके बाद १९१४ में वह मशहूर समझौता हुआ जो 'गांधी-स्मट्स पैक्ट' के नाम से मशहूर है. हिंदुस्तानियों

(کالا قانون) نام کا ایک قانون تھا جس کے مطابق ہر بالغ ہندستانی (کالا) کی انگلیوں کی علامت (نشانی) لی جانی ضروری قرار دی گئی تھی۔ ایک دوسرے قانون سے ایشیائی لوگوں کے لئے ٹرانسوال میں گھسنے پر روک لگادی گئی۔ ایک تیسرا قانون اور پاس ہوا تھا جس سے کہ صرف عیسائیوں کی شادیاں ہی، جنھیں رجسٹرار شادی کے رجسٹر پر درج کر چکا ہو، وہی جایز قرار دی جانے لگیں۔ ان سبھوں کے ورودھ میں گاندھی جی نے ایک اندولن شروع کیا جو آگے چل کر "ستیہ گرہ" کے نام سے مشہور ہوا جس کے پھل سے اپنے بہت سے ساتھیوں کے ساتھ گاندھی جی کو جیل جانا پڑا۔ اس کے بعد نیٹالی مزدوروں نے ایک خاص ٹیکس کے خلاف بھوک ہڑتال شروع کی۔ ان سبھوں کو بھرتی ہونے پر تین پونڈ کا ایک ٹیکس دینا پڑتا تھا۔ گاندھی جی ان کا جلوس نکال کر سب سے آگے آگے چل رہے تھے۔ وہ ان سے الگ کر کے گرفتار کر لئے گئے اور باقی سب کو کوڑے مار مار کر کام کرنے کے لئے مجبور کیا گیا، بہتوں کو گولیاں بھی لگیں۔ اس خوفناک ظلم کا اثر ہندستان پر بھی پڑا اور یہاں اس کے ورودھ میں ایک اندولن شروع ہوا۔ سارے ہندستان میں اس کی وجہ سے سنسنی پھیل گئی تھی۔ اس وقت کے وائسرائے لارڈ ہارڈنگ نے اس ظلم کے خلاف ایک زوردار بیان دیا۔ جنرل سمٹس کو مجبور ہو کر گھٹنے ٹیکنے پڑے۔ ایک جانچ کمیشن مقرر ہوا، اور گاندھی جی مع اور لیڈروں کے، بنا کسی شرط کے رہا کر دئے گئے۔ اس کے بعد ۱۹۱۴ میں وہ مشہور سمجھوتا ہوا جو گاندھی سمٹس پیکٹ کے نام سے مشہور ہے۔ ہندستانیوں

की खास शिकायतें रफ़ा कर दी गईं. वह 'काला क़ानून' और ३ पौंड टैक्स वाला क़ानून रद कर दिया गया. हिंदुस्तानी शादियां जायज़ और क़ानूनी मानी गईं और कम से कम उस वक़्त के लिये हिंदुस्तानियों की सामाजिक सतह ऊंची हो गई. इस तरह गांधी जी अपनी ज़िंदगी का एक भाग दक्खिन अफ़्रीक़ा में कामयाबी के साथ बिताकर घर लौटे. इस वक़्त तक उनकी लगन, सचाई और देश प्रेम की धाक अफ़्रीक़ा और हिंदुस्तान में तो जम गई थी ही, सारी दुनिया में उनका नाम एक क़ाबिल लीडर की शक्ल में लिया जाने लगा था.

स्व०. गोखले को गांधी जो राजनीति में अपना गुरु मानते थे. इसी बीच उन्होंने सुना कि वह इङ्गलैण्ड में सख़्त बीमार हैं, और वह तुरंत इङ्गलैण्ड के लिये रवाना हो गये और पहले महायुद्ध के शुरू होने के कुछ ही पहले वहां पहुंचे. गोखले जी धीरे धीरे अच्छे हो रहे थे और गांधी जी तुरंत वहां एक एंबुलेंस कार की भर्ती में जुट गये. पर अफ़्रीक़ा में उन्होंने अपनी तन्दुरुस्ती की परवा न कर जो सख़्त मेहनत की थी उसका बुरा असर अब महसूस हो चला था. लिहाज़ा सन् १९१५ के शुरू में वह हिन्दुस्तान लौटने पर मजबूर किये गये. हिन्दुस्तान की समूची जनता के दिल में उनके लिये जगह बन चुकी थी और अपोलो बंदर में उनके जहाज़ के लगते ही जो शानदार स्वागत उनका हुआ उसको मिसाल कम ही देखने को मिलेगी. हिन्दुस्तान की सरकार ने उन्हें 'क़ैसरे-हिन्द' सोने का तमग़ा देकर उनकी क़द्र की और जनता ने एक आवाज़ से उन्हें

हिन्दुस्तान में वापसी

کی خاص شکایتیں رفع کردی گئیں ۔ وہ 'کالا قانون' اور ۳ پونڈ ٹیکس والا قانون رد کردیا گیا ۔ ہندستانی شادیاں جایز اور قانونی مانی گئیں اور کم سے کم اُس وقت کے لئے ہندستانیوں کی سماجک سطح اونچی ہوگئی ۔ اِس طرح گاندھی جی اپنی زندگی کا ایک بھاگ دکھن افریقہ میں کامیابی کے ساتھ بِتاکر گھر لوٹے ۔ اِس وقت تک اُن کی لگن، سچائی اور دیش پریم کی دھاک افریقہ اور ہندستان میں تو جم گئی تھی ہی، ساری دنیا میں اُن کا نام ایک قابل لیڈر کی شکل میں لیا جانے لگا تھا ۔

سورگیہ گوکھلے کو گاندھی جی راجنیتی میں اپنا گرو مانتے تھے ۔ اِسی بیچ اُنھوں نے سُنا کہ وہ انگلینڈ میں سخت بیمار ہیں، اور وہ فوراً انگلینڈ کے لئے روانہ ہوگئے اور پہلے مہایدھ کے شروع ہونے کے کچھ ہی پہلے وہاں پہنچے ۔ گوکھلے جی دھیرے دھیرے اچھے ہو رہے تھے اور گاندھی جی فوراً وہاں ایک ایمبولینس کور کی بھرتی میں جُٹ گئے ۔ پر افریقہ میں اُنھوں نے اپنی تندرستی کی پروا نہ کر جو سخت محنت کی تھی اُس کا بُرا اثر اب محسوس ہو چلا تھا ۔ لہٰذا ۱۹۱۵ء کے شروع میں وہ ہندستان لوٹنے پر مجبور کیے گئے ۔ ہندستان کی سموچی جنتا کے دل میں اُن کے لئے جگہ بن چکی تھی اور اپولو بندر میں اُن کے جہاز کے لگتے ہی جو شاندار سواگت اُن کا ہوا اُس کی مثال کم ہی دیکھنے کو ملے گی ۔ ہندستان کی سرکار نے اُنھیں 'قیصرِ ہند' سونے کا تمغہ دے کر اُن کی قدر کی اور جنتا نے ایک آواز سے اُنھیں

ہندستان میں واپسی

'महात्मा' की पदवी दी. उन्होंने सारे देश का एक दौरा किया और साबरमती में अपना सत्याग्रह आश्रम क़ायम किया. १९१७ में उन्होंने बिहारके चंपारन जिले का दौरा किया. वहां के नील गोदामों के मजदूरों को बहुत सी शिकायतें थीं. वहां के अफ़सरों ने उन्हें नोटिस देकर तुरंत वापस जाने को कहा पर उन्होंने इनकार कर दिया और उन पर मुक़दमा चला. पर बिहार सरकार ने बीच में पड़ कर एक जांच कमीशन तैनात किया और उसके एक मेंबर गांधी जी भी बनाये गये. कमीशन की रिपोर्ट मजदूरों के मुआफ़िक हुई.

इसके बाद मजदूरों की हालत सुधारने के लिये गांधी जी ने कई आंदोलन चलाये जिनमें उन्हें कामयाबी हुई. अहमदाबाद की मिलों के मजदूरों के झगड़े को लेकर गांधी जी ने अपना पहला अनशन व्रत (उपवास) किया. उसी साल कैरा जिले के मजदूरों और किसानों का पक्ष लेकर उन्होंने एक आंदोलन चलाया. फसल नहीं हुई थी, घोर अकाल पड़ा था. और गांधी जी की राय से किसानों ने यह दरख़्वास्त दी कि इस साल लगान माफ़ किया जाय पर यह दरख़ास्त नामंजूर होने पर किसानों ने लगान देने से इनकार कर दिया. अफ़सरोंने किसानों केमवेशियों को पकड़ लियाऔरखड़ी फ़सलों को कटवा कर लगान वसूल करना शुरू किया. यह लड़ाई एक अर्से तक चलती रही और आखिर में सरकार को सुलह करनी पड़ी. १९१८ में वार कानफरेंस में भाग लेने के लिये गांधी जो देहली बुलाये गये. यह सरकार को लड़ाई में मदद

लड़ाई में अंग्रेजों को मदद

लड़ाई में

مہاتما کی پدوی دی۔ اُنھوں نے سارے دیش کا ایک دورہ کیا اور سابرمتی میں اپنا ستیہ گرہ آشرم قایم کیا۔ ۱۹۱۷ میں اُنھوں نے بہار کے چمپارن ضلع کا دورہ کیا۔ وہاں کے نیل گوداموں کے مزدوروں کو بہت سی شکایتیں تھیں۔ وہاں کے افسروں نے اُنھیں نوٹس دے کر فوراً واپس جانے کو کہا پر اُنھوں نے انکار کر دیا اور اُن پر مقدمہ چلا۔ پر بہار سرکار نے بیچ میں پڑکر ایک جانچ کمیشن تعینات کیا اور اس کے ایک ممبر گاندھی جی بھی بنائے گئے۔ کمیشن کی رپورٹ مزدوروں کے موافق ہوئی۔

اس کے بعد مزدوروں کی حالت سدھارنے کے لئے گاندھی جی نے کئی اندولن چلائے جن میں اُنھیں کامیابی ہوئی۔ احمدآباد کی ملوں کے مزدوروں کے جھگڑے کو لے کر گاندھی جی نے اپنا پہلا ان شن برت (اُپواس) کیا۔ اُسی سال کیرا ضلع کے مزدوروں اور کسانوں کا پکش لے کر اُنھوں نے ایک اندولن چلایا۔ فصل نہیں ہوئی تھی، گھور اکال پڑا تھا، اور گاندھی جی کی رائے سے کسانوں نے یہ درخواست دی کہ اِس سال لگان معاف کیا جائے پر یہ درخواست نامنظور ہونے پر کسانوں نے لگان دینے سے انکار کر دیا۔ افسروں نے کسانوں کے مویشیوں کو پکڑ لیا اور کھڑی فصلوں کو کٹوا کر لگان وصول کرنا شروع کیا۔ یہ لڑائی ایک عرصے تک چلتی رہی اور آخر میں سرکار کو صلح کرنی پڑی۔ ۱۹۱۸ میں وار کانفرنس میں بھاگ لینے کے لئے گاندھی جی دہلی بلائے گئے۔ یہ سرکار کو لڑائی میں مدد کرنے کے پکش میں ہوئے اور جی جان سے رنگروٹ

لڑائی میں انگریزوں کی مدد

لڑائی میں انگریزوں کی مدد

मदद

भर्ती करने में लग गये. खास कर कैरा जिले में उन्होंने बहुत जबर्दस्त रिक्रूटिंग की. इस समय के कुछ पहले कांग्रेस–लीग की सुधारों के लिये मिलीजुली मांग के पक्ष में वह एक बहुत बड़ा मसविदा मि० मांटेगू के पास भेज चुके थे.

पर इस बेहद मेहनत से उनकी तन्दुरुस्ती टूट गई और डाक्टरों ने उन्हें दूध पीने की राय दी. मगर किसी वजह से उन्होंने दूध पीना छोड़ रक्खा था. पर उनकी स्त्री श्री मती कस्तूरबा ने उन्हें यह समझाया कि आपने गाय के दूध से परहेज़ किया है, बकरी का दूध तो पी सकते हैं. गांधी जी मान गये और तब से वह लगातार और आख़िर तक बकरी का दूध सेवन करते रहे.

बकरी का दूध

सन् १९१९ से गांधी जी की जीवनी में जिसका अंत १९४८ की ३० जनवरी को नाथूराम विनायक गोडसे नाम के एक हिन्दू की चलाई हुई गोली खाकर मरने के साथ हुआ, लगातार तीस बरस तक वह आज़ादी की लड़ाई लड़ते रहे.

सन् १९१९

इस लड़ाई की शुरुआत 'रौलट बिल' नाम के बदनाम क़ानून के पास किये जाने के साथ हुई. हिन्दुस्तान की समूची जनता के विरोध पर भी यह बिल पास कर दिया गया. गांधीजी ने अफ़्रीक़ा के बुअर युद्ध और ज़ूलू युद्ध में और फिर जर्मनी युद्ध में अंग्रेज़ों की जी खोल कर मदद की और उनकी सलाह से सारे हिन्दुस्तान ने अपना धन जन दे कर अँगरेज़ों की मदद की. इस पहले महायुद्ध में लाखों हिन्दुस्तानी अंगरेज़ों के लिये काम आये, सारा देश कंगाल हो गया, पर इसकी क़द्र के तौर पर अँग्रेज़ों

بھرتی کرنے میں لگ گئے۔ خاص کر کیرا ضلع میں اُنھوں نے بہت زبردست رکوٹنگ کی۔ اِس سمے کے کچھ پہلے کانگریس لیگ کی سُدھاروں کے لئے ملی جلی مانگ کے پکش میں وہ ایک بہت بڑا مسودہ مسٹر مانٹیگو کے پاس بھیج چکے تھے۔

پر اِس بےحد محنت سے اُن کی تندرستی ٹوٹ گئی اور ڈاکٹروں نے انھیں دودھ پینے کی رائے دی۔ مگر کسی وجہ سے اُنھوں نے دودھ پینا چھوڑ رکھا تھا۔ پر اُن کی استری شری متی کستوربا نے اُنھیں سمجھایا کہ آپ نے گائے کے دودھ سے پرہیز کیا ہے، بکری کا دودھ تو پی سکتے ہیں۔ گاندھی جی مان گئے اور تب سے وہ لگاتار اور آخر تک بکری کا دودھ سیون کرتے رہے۔

بکری کا دودھ

۱۹۱۹ء سے گاندھی جی کی جیونی میں جس کا انت ۱۹۴۸ کی ۳۰ جنوری کو ناتھورام ونایک گوڈسے نام کے ایک ہندو کی چلائی ہوئی گولی کھا کر مرنے کے ساتھ ہوا، لگاتار تیس برس تک وہ آزادی کی لڑائی لڑتے رہے۔

۱۹۱۹ء

اِس لڑائی کی شروعات 'رولٹ بل' نام کے بدنام قانون کے پاس کئے جانے کے ساتھ ہوئی۔ ہندستان کی سموچی جنتا کے ورودھ پر بھی یہ بل پاس کر دیا گیا۔ گاندھی جی نے افریقہ کے بوآر یدھ اور زولو یدھ میں اور پھر جرمنی یدھ میں انگریزوں کی جی کھول کر مدد کی اور اُن کی صلاح سے سارے ہندستان نے اپنا دھن جن دے کر انگریزوں کی مدد کی۔ اِس پہلے مہایدھ میں لاکھوں ہندستانی انگریزوں کے لئے کام آئے، سارا دیش کنگال ہو گیا، پر اِس کی قدر کے طور پر انگریزوں

ने क्या किया—रौलट ऐक्ट और जलियान वाला बाग़. बस इसके बाद से गांधी जी ने तय कर लिया कि इस देश को अंग्रेज़ों से बरी किये बिना काम न चलेगा और यह उन्हों ने अपनी ज़िंदगी में कर के ही दिखा दिया.

उन्होंने सबसे पहले सारी क़ौम के लिये एक शपथ (हलफ़) निकाली जिसका सारांश यह था कि वह (रौलट) बिल अगर क़ानून

२८ फ़रवरी की शपथ

बना दिया गया तो हम उसके मानने से इनकार करेंगे और इसके साथ ही ऐसे और क़ानूनों को तोड़ेंगे जिन्हें हमारी कमेटी इस लायक़ समझेगी और साथ ही हम यह एलान करते हैं कि ऐसा करने में हम सचाई और अहिंसा से काम लेंगे और किसी की जान माल पर हमला न करेंगे, उसी साल २८ फ़रवरी को यह हलफ़नामा निकला. इसके बारे में गांधी जी ने 'यंग इन्डिया' नाम के अख़बार में बहुत बहुत लिखा, और घूम घूम कर बहुत से व्याख्यान दिये. एक 'सत्याग्रह दिन' मुक़र्रर किया गया. उस दिन सब लोग क़ौमी झंडे के नीचे खड़े होकर इस शपथ को दुहराते और उस दिन पूरी हड़ताल मनाई जाती और प्रार्थना की जाती, और जुलूस निकाले जाते. देश और क़ौम ने गांधी जी का साथ दिया. पर अहिंसा पर इतना ज़ोर दिये जाने पर भी जुलूसों में कई जगह हुल्लड़बाज़ी और मार काट होही गई, ख़ास कर पंजाब और अमृतसर में. नतीजा यह हुआ कि डायर नाम के उस ज़माने के पंजाबी गवर्नर के हुकुम से माइकेल ओडायर नाम के एक अँगरेज़ फ़ौजी अफ़सर ने जालियाँ वाले बाग़ में सैकड़ों हिन्दू, मुसलमानों सिखों को घिरवाकर, एक क़तार में

نے کیا کیا۔ رولٹ ایکٹ اور جلیان والا باغ۔ بس اِس کے بعد سے گاندھی جی نے طے کرلیا کہ اِس دیش کو انگریزوں سے بری کئے بنا کام نہ چلےگا اور یہ اُنھوں نے اپنی زندگی میں کرکے ہی دکھا دیا۔

اُنھوں نے سب سے پہلے ساری قوم کے لئے ایک شپتھ (حلف) نکالی جس کا سارانش یہ تھا کہ وہ (رولٹ) بل اگر قانون بنا دیا گیا تو

۲۸ فروری کی شپتھ

ہم اُس کے ماننے سے انکار کریں گے اور اس کے ساتھ ہی ایسے اور قانونوں کو توڑیں گے جنھیں ہماری کمیٹی اِس لائق سمجھےگی اور ساتھ ہی ہم یہ اعلان کرتے ہیں کہ ایسا کرنے میں ہم سچائی اور اہنسا سے کام لیں گے اور کسی کی جان مال پر حملہ نہ کریں گے، اُسی سال ۲۸ فروری کو یہ حلف نامہ نکلا۔ اِس کے بارے میں گاندھی جی نے 'ینگ انڈیا' نام کے اخبار میں بہت بہت لکھا، اور گھوم گھوم کر بہت سے ویاکھیان دئے۔ ایک 'ستیہ گرہ دن' مقرر کیا گیا۔ اُس دن سب لوگ قومی جھنڈے کے نیچے کھڑے ہوکر اِس شپتھ کو دُہراتے اور اُس دن پوری ہڑتال منائی جاتی اور پرارتھنا کی جاتی، اور جلوس نکالے جاتے۔ دیش اور قوم نے گاندھی جی کا ساتھ دیا۔ پر اہنسا پر اتنا زور دئے جانے پر بھی جلوسوں میں کئی جگہ ہُلڑ بازی اور مارکاٹ ہو ہی گئی، خاص کر پنجاب اور امرتسر میں۔ نتیجہ یہ ہوا کہ ڈائر نام کے اُس زمانے کے پنجابی گورنر کے حکم سے مائیکیل اوڈائر نام کے ایک انگریز فوجی افسر نے جلیان والے باغ میں سیکڑوں ہندو مسلمانوں سکھوں کو گھرواکر ایک قطار میں

खड़े करवा कर गोलियों से उड़वा दिया. मारशल-ला लगा दिया गया था. गांधी जी को इससे बेहद तकलीफ हुई और उन्होंने तीन दिन का उपवास किया और सत्याग्रह आंदोलन फ़िलहाल बंद कर दिया.

पर जब इस हत्याकांड और क़त्लेआम की ख़बरें सारे देश में पहुँची. तो सारी क़ौम आपे से बाहर हो गई. गांधी जी ने अपनी पूरी ताक़त लगाकर किसी तरह जनता को क़ाबू में किया. फिर भी बहुत से नौजवान क़ाबू के बाहर हो गये जैसे भगतसिंह, चंद्रशेखर आज़ाद वग़ैरह, जिन्हें खोज खोज कर अँगरेज़ सरकार ने सूली पर चढ़वा दिया. जालियां वाले बाग़ की करतूत की जाँच के लिये कांग्रेस ने एक अपनी कमेटी क़ायम की और एक सरकारी कमेटी भी क़ायम हुई जो 'हंटर कमेटी' के नाम से मशहूर है. दोनों ने अलग अलग जांच की. हंटर कमेटी की रिपोर्ट बहुत मुलायम लफ़्ज़ों में निकली, जिसमें फ़ौजी अफ़सरों के ज़ुल्मों को एक हद तक ढांक तोप देने की कोशिश की गई थी. और विलायत की पार्लीमेन्ट में इस मामले पर जो तक़रीरें हुईं उनसे और भी निराशा हुई. महात्मा गांधी इस नतीजे पर पहुँचे कि अब इनसे और बड़े पैमाने पर मोर्चा लेना होगा.

इसके बाद से महात्मा गांधी ने बहुत बड़े पैमाने पर सविनय आज्ञाभंग (बा अदब हुक्म उदूली) वाले मशहूर आंदोलन के लिये जनता को तैयार करना शुरू किया और इसमें हिन्दू मुसलमान दोनों ने एक होकर उनका साथ दिया. इस वक़्त वह तुर्की साम्राज के भविष्य को लेकर बहुत परीशान हो रहे थे. तुर्की का सुलतान मुसलिम दुनिया का ख़लीफ़ा भी था. उस वक़्त मौलाना शौक़त अली

बाअदब हुक्म उदूली व ख़िलाफ़त

کھڑے کرواکر گولیوں سے اُڑوا دیا۔ مارشل لا لگا دیا گیا تھا۔ گاندھی جی کو اس سے بے حد تکلیف ہوئی اور انھوں نے تین دن کا اُپواس کیا اور ستیہ گرہ اندولن فی الحال بند کر دیا۔

پر جب اس ہتیا کانڈ اور قتل عام کی خبریں سارے دیش میں پہنچی تو ساری قوم آپے سے باہر ہو گئی۔ گاندھی جی نے اپنی پوری طاقت لگا کر کسی طرح جنتا کو قابو میں کیا۔ پھر بھی بہت سے نوجوان قابو کے باہر ہو گئے جیسے بھگت سنگھ، چندر شیکھر آزاد وغیرہ جنھیں کھوج کھوج کر انگریز سرکار نے سولی پر چڑھوا دیا۔ جلیان والے باغ کی کرتوت کی جانچ کے لئے کانگریس نے ایک اپنی کمیٹی قایم کی اور ایک سرکاری کمیٹی بھی قایم ہوئی جو "ہنٹر کمیٹی" کے نام سے مشہور ہے۔ دونوں نے الگ الگ جانچ کی۔ ہنٹر کمیٹی کی رپورٹ بہت ملایم لفظوں میں نکلی جس میں فوجی افسروں کے ظلموں کو ایک حد تک ڈھانک توپ دینے کی کوشش کی گئی تھی۔ اور ولایت کی پارلیمنٹ میں اس معاملہ پر جو تقریریں ہوئیں ان سے اور بھی نراشا ہوئی۔ مہاتما گاندھی اس نتیجے پر پہنچے کہ اب ان سے اور بڑے پیمانے پر مورچا لینا ہوگا۔

اس کے بعد سے مہاتما گاندھی نے بہت بڑے پیمانے پر سوینے آگیا بھنگ (باادب حکم عدولی) والے مشہور اندولن کے لئے جنتا کو تیار کرنا شروع کیا اور اس میں ہندو و مسلمان دونوں نے ایک ہوکر ان کا ساتھ دیا۔ اس وقت وہ ترکی سامراج کے بھوشیہ کو لے کر بہت پریشان ہو رہے تھے۔ ترکی کا سلطان مسلم دنیا کا خلیفہ بھی تھا۔ اس وقت مولانا شوکت علی

باادب حکم عدولی و خلافت

व मुहम्मद अली जो 'अली बंधु' के नाम से मशहूर थे, खिलाफत आंदोलन चला रहे थे. गांधी जी ने हिन्दुओं को अपना निजी आंदोलन मान कर खिलाफत में हाथ बंटाने की राय दी और हिन्दुओं ने ऐसा ही किया. इस का फल यह हुआ कि हिन्दू-मुसलमानों में ऐसी एकता हो गई जैसी कि पहले कभी न थी. काश कि यह एकता क़ायम रहती. अब गांधी जी ने अपने असहयोग आन्दोलन का प्रोग्राम देश के सामने रक्खा. यह १ अगस्त १९२० से चालू किया जाना तय पाया. कांग्रेस की एक ग़ैर मामूली बैठक कलकत्ते में हुई जिसके सभापति लाला लाजपत राय बनाये गये और इस में यही सवाल पेश किया गया था कि आया यह आंदोलन चालू किया जाय या नहीं. महात्मा गांधी की राय बहुमत से मान ली गई. खुद महात्मा गांधी ने यह प्रस्ताव पेश किया था उनके प्रस्ताव का सारांश यह था कि चूंकि अंगरेजी सरकार ने मुसलमानों के साथ बेइंसाफ़ी की है और पंजाब हत्याकांड के लिये जिम्मेदार अफ़सरों को सजा नहीं दी इस लिये अब स्वराज को छोड़ कर हमारे पास और कोई दूसरा रास्ता नहीं है ताकि इस तरह के जुल्म आइन्दा न हो सकें. स्वराज हासिल करने के लिये पहला प्रोग्राम जो उन्होंने देश के सामने रखा वह था विदेशी चीजों (खास कर कपड़ों) का बायकाट. सरकारी कचहेरियों,

इनक़लाब

स्कूलों, कालेजों वग़ैरह से कोई सरोकार न रखना, सरकारी खिताबों को वापस करना, क़ानून बनाने वाली धारा सभाओं से स्तीफ़ा देना वग़ैरह. आंदोलन जोरों के साथ चल पड़ा. देखते देखते जेल कांग्रेसी नेताओं से भर गये. एक नेता जेल जाने के पहले अपनी

و محمد علی جو 'علی بندھو' کے نام سے مشہور تھے، خلافت اندولن چلا رہے تھے. گاندھی جی نے ہندوؤں کو اپنا نجی اندولن مان کر خلافت میں ہاتھ بٹانے کی رائے دی اور ہندوؤں نے ایسا ہی کیا. اس کا پھل یہ ہوا کہ ہندو مسلمانوں میں ایسی ایکتا ہو گئی جیسی کہ پہلے کبھی نہ تھی. کاش کہ یہ ایکتا قایم رہتی. اب گاندھی جی نے اپنے اسہیوگ اندولن کا پروگرام دیش کے سامنے رکھا. یہ ا اگست ۱۹۲۰ سے چالو کیا جانا طے پایا. کانگریس کی ایک غیر معمولی بیٹھک کلکتے میں ہوئی جس کے سبھاپتی لالہ لاجپت رائے بنائے گئے اور اس میں یہی سوال پیش کیا گیا تھا کہ آیا یہ اندولن چالو کیا جائے یا نہیں. مہاتما گاندھی کی رائے بہومت سے مان لی گئی، خود مہاتما گاندھی نے یہ پرستاو پیش کیا تھا ان کے پرستاو کا سارانش یہ تھا کہ چونکہ انگریزی سرکار نے مسلمانوں کے ساتھ بے انصافی کی ہے اور پنجاب ہتیا کانڈ کے لئے ذمے دار افسروں کو سزا نہیں دی اس لئے اب سوراج کو چھوڑ کر ہمارے پاس اور کوئی دوسرا راستہ نہیں ہے تاکہ اس طرح کے ظلم آئندہ نہ ہو سکیں. سوراج حاصل کرنے کے لئے پہلا پروگرام جو انھوں نے دیش کے سامنے رکھا وہ تھا ودیشی چیزوں (خاص کر کپڑوں) کا بائیکاٹ. سرکاری کچہریوں، اسکولوں، کالجوں وغیرہ سے کوئی سروکار نہ رکھنا، سرکاری خطابوں کو واپس کرنا، قانون بنانے والی دھارا سبھاؤں سے استعفیٰ دینا وغیرہ. اندولن زوروں کے ساتھ چل پڑا. دیکھتے دیکھتے جیل کانگریسی نیتاؤں سے بھر گئے. ایک نیتا جیل جانے کے پہلے اپنی

انقلاب

जगह पर काम करने वाला दूसरा नेता नामजद कर जाता था और इसतरह सैकड़ों नये नेता बन गये जिनके हाथ में आज आजाद हिन्द की बाग डोर है. इस आंदोलन की खास शर्त अहिंसा थी. महात्मा गांधी की सख्त ताकीद थी कि चाहे लाठी चार्ज, गोली चार्ज, कुछ भी हो, असहयोगी हाथ न उठावे. अजीब लड़ाई थी. एक तरफ़ बर्तानिया की पूरी फ़ौजी ताक़त और दूसरी तरफ़ इनक़लाबी जनता और उनके मुट्ठी भर नेता. पर महात्मा गांधी के अहिंसा पर इतना जोर देने पर भी यह आंदोलन अहिंसात्मक न रह सका. यानी कई जगह मार काट हो ही गई. उसी मौक़े पर इत्तफ़ाक़ से प्रिंस आफ़ वेल्स (अब ड्यूक आफ़ विंडसर) हिन्दुस्तान आये थे. उनका जहाज़ जब बंबई के बंदर पर लगा तो गांधी जी ने विलायती कपड़ों की एक विराट (बहुत बड़ी) होली उनकी अगवानी में जलवाई, पर इस मौक़े पर बंबई में दंगा हो गया और फिर गोरखपुर ज़िले के चौरीचौरा गांव में बड़े पैमाने पर लूट-मार और आगज़नी हो गई.

गांधी जी को इन बातों से फिर बेहद तकलीफ़ हुई. उन्होंने समझ लिया कि जिस तरह का सत्याग्रह और असहयोग वह चाहते हैं उसके लिये अभी देश तैयार नहीं है. उन्होंने इसे अपनी हिमालय सरीखी भूल कहा और इसे आम तौर पर महसूस किया. अपनी आत्मा को शुद्ध करने के लिये ५ दिन का उपवास भी किया. ६ मार्च १९२२ को वह साबरमती आश्रम में गिरफ़्तार कर लिये गये और उन्हें ६ बरस की क़ैद की सज़ा दी गई. वह सन् २४ की जनवरी तक यरवदा जेल में रहे जहां कि वह सख्त बीमार हो गये और

جگہ پر کام کرنے والا دوسرا نیتا نامزد کر جاتا تھا اور اس طرح سیکڑوں نئے نیتا بن گئے جن کے ہاتھ میں آج آزاد ہند کی باگ ڈور ہے۔ اس اندولن کی خاص شرط اہنسا تھی۔ مہاتما گاندھی کی سخت تاکید تھی کہ چاہے لاٹھی چارج، گولی چارج، کچھ بھی ہو، اسہیوگی ہاتھ نہ اُٹھاوے۔ عجیب لڑائی تھی۔ ایک طرف برطانیہ کی پوری فوجی طاقت اور دوسری طرف انقلابی جنتا اور اُن کے مٹھی بھر نیتا۔ پر مہاتما گاندھی کے اہنسا پر اتنا زور دینے پر بھی یہ اندولن اہنساتمک نہ رہ سکا۔ یعنی کئی جگہ مار کاٹ ہو ہی گئی۔ اسی موقع پر اتفاق سے پرنس آف ویلس (اب ڈیوک آف ونڈسر) ہندستان آئے تھے۔ اُن کا جہاز جب بمبئی کے بندر پر لگا تو گاندھی جی نے ولایتی کپڑوں کی ایک وراٹ (بہت بڑی) ہولی اُن کی اگوانی میں جلوائی، پر اس موقع پر بمبئی میں دنگا ہو گیا اور پھر گورکھپور ضلع کے چوری چورا گاؤں میں بڑے پیمانے پر لوٹ مار اور آتش زنی ہو گئی۔

گاندھی جی کو ان باتوں سے پھر بے حد تکلیف ہوئی۔ اُنھوں نے سمجھ لیا کہ جس طرح کا ستیہ گرہ اور اسہیوگ وہ چاہتے ہیں اُس کے لئے ابھی دیش تیار نہیں ہے۔ اُنھوں نے اسے اپنی ہمالے سریکھی بھول کہا اور اسے عام طور پر محسوس کیا۔ اپنی آتما کو شدھ کرنے کے لئے ۵ دن کا اُپواس بھی کیا۔ ۶ مارچ ۱۹۲۲ کو وہ سابرمتی آشرم میں گرفتار کر لئے گئے اور اُنھیں ۶ برس کی قید کی سزا دی گئی۔ وہ سنہ ۲۴ کی جنوری تک یرودا جیل میں رہے جہاں کہ وہ سخت بیمار ہو گئے اور

वहां उनको एपेंडिसाइटिज़ का अपरेशन हुआ जिसके बाद वह रिहा कर दिये गये.

इन दिनों हिन्दू मुसलमानों में ना इत्तफ़ाक़ी बहुत बढ़ रही थी और इस के लिये तपस्या के तौर पर उन्होंने दिल्ली में पहला लंबा उपवास किया. उसी साल कांग्रेस के वह सभापति बनाये गये.

गांधी जी को जब पक्का यक़ीन हो गया कि देश अहिंसा के साथ सत्याग्रह को लड़ाई के लिये अभी तैयार नहीं है तो उन्होंने उसे मुलतवी कर रचनात्मक कामों की तरफ़ ध्यान देना शुरू किया. कांग्रेस की एक पार्टी कौंसिलों में शिरकत करना चाहती थी और वह कौंसिल में शरीक भी होने लगी. पर सच्चे गांधीवादियों ने खादी के प्रचार, नशाख़ोरी बन्द कराने व इसी तरह के और और सामाजिक सुधारों की तरफ़ ध्यान देना शुरू किया. गांवों का सुधार और छुआ छूत दूरकर 'अछूत' कहलाने वाले लोगों को हालत सुधारने को ओर गांधी जी ने सब से ज्यादा ध्यान दिया.

सन् १९२७ में मशहूर साइमन कमीशन हिन्दुस्तान में आया. इसका मक़सद था क़ानूनी सुधारों की अगली क़िस्त हिन्दुस्तान को देना. इसमें हिन्दुस्तानी कोई नहीं था

साइमन कमीशन   इस लिये, यह 'सफ़ेद कमीशन' (All white commission) के नाम से मशहूर या बदनाम हुआ और सारे देश ने इसका बायकाट कर दिया. इसके आने से देश में उत्तेजना बहुत फैल गई और जनता में जातीयता और देश-प्रेम की भावना दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ चली. १९२८ में यह भावना हद दर्जे तक बढ़ गई थी. कांग्रेस ने डोमीनियन स्टेटस या

وہاں ان کو اپنڈیسائٹز کا اپریشن ہوا جس کے بعد وہ رہا کردئے گئے۔

ان دنوں ہندو مسلمانوں میں نااتفاقی بہت بڑھ رہی تھی اور اس کے لئے تپسیا کے طور پر انھوں نے دلی میں پہلا لمبا اپواس کیا۔ اسی سال، وہ کانگریس کے سبھاپتی بنائے گئے۔

گاندھی جی کو جب پکا یقین ہوگیا کہ دیش اہنسا کے ساتھ ستیہ گرہ کی لڑائی کے لئے ابھی تیار نہیں ہے تو انھوں نے اسے ملتوی کر رچناتمک کاموں کی طرف دھیان دینا شروع کیا۔ کانگریس کی ایک پارٹی کونسلوں میں شرکت کرنا چاہتی تھی اور وہ کونسلوں میں شریک بھی ہونے لگی۔ پر سچے گاندھی وادیوں نے کھادی کے پرچار، نشہ خوری بند کرانے و اسی طرح کے اور اور سماجک سدھاروں کی طرف دھیان دینا شروع کیا۔ گاؤوں کا سدھار اور چھوا چھوت دور کر 'اچھوت' کہلانے والے لوگوں کی حالت سدھارنے کی اور گاندھی جی نے سب سے زیادہ دھیان دیا۔

۱۹۲۷ء میں مشہور سائمن کمیشن ہندستان میں آیا۔ اس کا مقصد تھا قانونی سدھاروں کی اگلی قسط ہندستان کو دینا۔ اس میں ہندستانی کوئی نہیں تھا

سائمن کمیشن   اس لئے، یہ 'سفید کمیشن' (All white commission) کے نام سے مشہور یا بدنام ہوا اور سارے دیش نے اس کا بائیکاٹ کر دیا۔ اس کے آنے سے دیش میں اتیجنا بہت پھیل گئی اور جنتا میں جاتیتا اور دیش پریم کی بھاونا دن دونی رات چوگنی بڑھ چلی۔ ۱۹۲۸ء میں یہ بھاونا حد درجے تک بڑھ گئی تھی۔ کانگریس نے ڈومینین اسٹیٹس یا

उपनिवेशी स्वराज की मांग पेश की और सो भी साल भर के अंदर. और यह जाहिर कर दिया गया कि इस बीच अगर डोमीनियन स्टेटस नहीं मिलता तो कांग्रेस फिर आंदोलन जारी कर देगी. पर वही हुआ जो होना था, यानी कांग्रेस की मांग ठुकरा दी गई और अगले साल कांग्रेस ने पूरी स्वतन्त्रता यानी पूरी आजादी की मांग पेश कर फिर से आंदोलन जारी किया. कांग्रेस फिर एक होगई. सब लोग कौंसिल एसेम्बली वग़ैरह से बाहर आकर महात्मा गांधी के झंडे के नीचे आगये और पूरी तैयारी के साथ फिर से असहयोग आंदोलन शुरू हुआ.

१२ मार्च १९३० में महात्मा गांधी कुछ चुने हुये भक्तों के साथ साबरमती आश्रम से समुद्रतट की तरफ़ नमक निकालने को चले. वह नमक पर से सरकार का अकेला क़ब्ज़ा या एकाधिकार तोड़ना चाहते थे. उनकी यह यात्रा 'दांडी मार्च' के नाम से मशहूर है. एक महीने का पैदल सफ़र कर वह दांडी पहुंचे और ६ अप्रैल को उन्होंने बाक़ायदा समुन्दर के किनारे से अपने हाथ से नमक उठाया और इस तरह क़ानून तोड़ने की रस्म पूरी की. इस काम का नोटिस वायसराय को पहले ही दे दिया गया था. इस के बाद उन्होंने धरसाने वाले नमक के सरकारी गोदाम पर धावा बोलने का नोटिस दिया पर इसके पहले ही वह गिरफ़्तार कर लिये गये और एक अनिश्चित समय तक के लिये नज़रबन्द रक्खे जाने लगे. पर आंदोलन चलता रहा और हज़ारों आदमियों से जेल भर गये. इस मौक़े पर लंदन में पहली राउंड टेबुल कानफ़रेंस हुई और यह तय हुआ कि अगली गोलमेज़

१९३० का आंदोलन

اپنیویشی سوراج کی مانگ پیش کی اور سو بھی سال بھر کے اندر۔ اور یہ ظاہر کر دیا گیا کہ اس بیچ اگر ڈومینین اسٹیٹس نہیں ملتا تو کانگریس پھر اندولن جاری کر دے گی۔ پر وہی ہوا جو ہونا تھا، یعنی کانگریس کی مانگ ٹھکرا دی گئی اور اگلے سال کانگریس نے پوری سوتنترتا یعنی پوری آزادی کی مانگ پیش کر کے پھر سے اندولن جاری کیا۔ کانگریس پھر ایک ہو گئی، سب لوگ کونسل اسمبلی وغیرہ سے باہر آ کر مہاتما گاندھی کے جھنڈے کے نیچے آ گئے اور پوری تیاری کے ساتھ پھر سے اسہیوگ اندولن شروع ہوا۔

۱۲ مارچ ۱۹۳۰ء میں مہاتما گاندھی کچھ چنے ہوئے بھگتوں کے ساتھ سابرمتی آشرم سے سمندر تٹ کی طرف نمک نکالنے کو چلے۔ وہ نمک پر سے سرکار کا اکیلا قبضہ یا اکادھکار توڑنا چاہتے تھے۔ ان کی یہ یاترا "ڈانڈی مارچ" کے نام سے مشہور ہے۔ ایک مہینے کا پیدل سفر کر وہ ڈانڈی پہنچے اور ۶ اپریل کو انھوں نے باقاعدہ سمندر کے کنارے سے اپنے ہاتھ سے نمک اٹھایا اور اس طرح قانون توڑنے کی رسم پوری کی۔ اس کام کا نوٹس وائسرائے کو پہلے ہی دے دیا گیا تھا۔ اس کے بعد انھوں نے دھرسانے والے نمک کے سرکاری گودام پر دھاوا بولنے کا نوٹس دیا پر اس کے پہلے ہی وہ گرفتار کر لیے گئے اور ایک انشچت سمے تک کے لیے نظربند رکھے جانے لگے۔ پر اندولن چلتا رہا اور ہزاروں آدمیوں سے جیل بھر گئے۔ اس موقع پر لندن میں پہلی راؤنڈ ٹیبل کانفرنس ہوئی اور یہ طے ہوا کہ اگلی گول میز

۱۹۳۰ کا اندولن

कानफ्रेन्स में हिन्दुस्तानी प्रतिनिधि भी रक्खे जायँ. सर तेज बहादुर सप्रू और डा० जयकर ने इसमें ख़ास तौर से भाग लिया. २६ जनवरी सन ३१ को गांधी जी छोड़ दिये गये और गांधी–अरविन नाम का वह मशहूर समझौता हो गया जिसके मुताबिक कांग्रेस ने आंदोलन उठा लिया और सरकार ने दमन नीति को बन्द करने का वचन दिया.

गोलमेज़ सभा में

इसके कुछ दिन बाद गांधी जी दूसरी गोलमेज़ सभा में लंदन गये. वह कांग्रेस के प्रतिनिधि के तौर पर गये पर उनके गोलमेज़ कानफ्रेन्स में भाग लेने से कोई ख़ास फ़ायदा नहीं हुआ मगर उनके लंदन में रहने की वजह से वहाँ के लोगों पर उनका बड़ा असर पड़ा. लंदन में बहुत से लोग उनके भक्त हो गये. सन् ३२ में जब वह लौटे तो उन्हें पता चला कि गांधी-अरविन समझौते की शर्तें बरती नही जा रही थीं. शिकायतें दोनों तरफ़ से थीं और इसी बीच कुछ कांग्रेसी नेता जेल में भी भेजे जा चुके थे. पर फिर से आन्दोलन चालू करने के लिये उन्होंने वाइसराय से मिलकर मामला तय कर लेना चाहा था, लेकिन वाइसराय ने मिलने से इनकार कर दिया. यहीं तक नहीं, आंदोलन शुरू करने के पहले ही वह जेल में भेज दिये गये.

वह जेल में ही थे जब कि बर्तानिया के बड़े वज़ीर मैकडोनेल साहब ने सारे ख़ुराफ़ात की जड़ वह कम्यूनल अवार्ड वाला क़ानून कम तादाद वालों के हितों की रक्षा के लिये पास किया. हिन्दू-मुसलमान, और हिंदू-अछूतों में सदा के लिये फूट डाल देने के

کانفرنس میں ہندستانی پرتی ندھی بھی رکھے جائیں۔ سر تیج بہادر سپرو اور ڈاکٹر جیکر نے اِس میں خاص طور سے بھاگ لیا۔ ۲۶ جنوری ۳۱ء کو گاندھی جی چھوڑ دئے گئے اور گاندھی اروِن نام کا وہ مشہور سمجھوتا ہوگیا جس کے مطابق کانگریس نے اندولن اٹھا لیا اور سرکار نے دمن نیتی کو بند کرنے کا بچن دیا۔

گول میز سبھا میں

اِس کے کچھ دن بعد گاندھی جی دوسری گول میز سبھا میں لندن گئے۔ وہ کانگریس کے پرتی ندھی کے طور پر گئے پر اُن کے گول میز کانفرنس میں بھاگ لینے سے کوئی خاص فائدہ نہیں ہوا مگر اُن کے لندن میں رہنے کی وجہ سے وہاں کے لوگوں پر اُن کا بڑا اثر پڑا۔ لندن میں بہت سے لوگ اُن کے بھگت ہوگئے۔ ۳۲ء میں جب وہ لوٹے تو انھیں پتہ چلا کہ گاندھی اروِن سمجھوتے کی شرط برتی نہیں جارہی تھیں۔ شکایتیں دونوں طرف سے تھیں اور اسی بیچ کچھ کانگریسی نیتا جیل میں بھی بھیجے جاچکے تھے۔ پر پھر سے اندولن چالو کرنے کے لئے انھوں نے وائسرائے سے مل کر معاملہ طے کرلینا چاہا تھا، لیکن وائسرائے نے ملنے سے انکار کردیا۔ یہیں تک نہیں، اندولن شروع کرنے کے پہلے ہی وہ جیل میں بھیج دئے گئے۔

وہ جیل میں ہی تھے جب کہ برطانیہ کے بڑے وزیر میکڈونیل صاحب نے سارے خرافات کی جڑ وہ کمیونل اوارڈ والا قانون کم تعداد والوں کے ہتوں کی رکشا کے لئے پاس کیا۔ ہندو مسلمان، اور ہندو اچھوتوں میں سدا کے لئے پھوٹ ڈال دینے کے

लिये यह बेजोड़ शैतानी चाल थी. ६ करोड़ अछूत हिंदुओं से अलग माने गये. हिंदुओं का बहुमत और उनकी ताक़त तोड़ने के लिये यह तजवीज़ थी. गांधी जी को यह सुन कर बेहद सदमा गुज़रा और उन्होंने जेल में ही उपवास करके अपनी ज़िन्दगी का ख़ातमा कर देने की ठानी. पर कांग्रेस और हरिजनों के नेताओं ने पूना में सभा कर हरिजनों को हिंदुओं के अंदर शुमार किया और सरकार ने जब इसे मान लिया तभी उन्होंने उपवास तोड़ा. हिंदुओं ने हरिजनों को मंदिरों वग़ैरा में जाने से रोक उठा ली. गांधी जी इसके बाद रिहा कर दिये गये और उन्होंने आंदोलन उठा लिया. धीरे धीरे वह राजनीति से अलग भी हो गये.

हालाँकि गांधी जी ने आम तौर से राजनीति में हिस्सा लेना बंद कर दिया था पर ख़ास मौक़ों पर उनकी राय के बिना कांग्रेस का कोई काम न चलता था. जब कभी कोई ख़ास उलझन दार सवाल आजाता था तो उनके सिवा दूसरा नहीं सुलझा पाता था. उनकी राय से कांग्रेस ने नये विधान के मुताबिक़ सूबों में फिर अपनी वज़ारतें क़ायम कीं. सी. पी. को वज़ारत में जब एक तब्दीली की ज़रूरत हुई तब उन्हीं की राय माननी ज़रूरी समझी गई. कांग्रेस में और उसके बाहर उनका असर कितना ज़्यादा था यह तब बख़ूबी साबित हो गया जब कि सुभाश चंद्र बोस, जो इनकी राय के ख़िलाफ़ कांग्रेस के सभापति बना लिये गये थे, स्तीफ़ा देने पर मजबूर हुये।

सन् १९३९ में राजकोट के राजा और सरदार पटेल में एक समझौता हुआ था जिसकी शर्तें वह (राजकोट के राजा)

لئے یہ بے جوڑ شیطانی چال تھی۔ ۶ کروڑ اچھوت ہندوؤں سے الگ مانے گئے۔ ہندوؤں کا بہومت اور ان کی طاقت توڑنے کے لئے یہ تجویز تھی۔ گاندھی جی کو یہ سن کر بے حد صدمہ گزرا اور انھوں نے جیل میں ہی اپواس کرکے اپنی زندگی کا خاتمہ کر دینے کی ٹھانی۔ پر کانگریس اور ہریجنوں کے نیتاؤں نے پونا میں سبھا کر ہریجنوں کو ہندوؤں کے اندر شمار کیا اور سرکار نے جب اسے مان لیا تبھی انھوں نے اپواس توڑا۔ ہندوؤں نے ہریجنوں کو مندروں وغیرہ میں جانے سے روک اٹھالی۔ گاندھی جی اس کے بعد رہا کر دئے گئے اور انھوں نے اندولن اٹھالیا۔ دھیرے دھیرے وہ راج نیتی سے الگ بھی ہو گئے۔

حالاں کہ گاندھی جی نے عام طور سے راج نیتی میں حصہ لینا بند کر دیا تھا پر خاص موقعوں پر ان کی رائے کے بنا کانگریس کا کوئی کام نہ چلتا تھا۔ جب کبھی کوئی خاص الجھن دار سوال آجاتا تھا تو ان کے سوا دوسرا نہیں سلجھا پاتا تھا۔ ان کی رائے سے کانگریس نے نئے ودھان کے مطابق صوبوں میں پھر اپنی وزارتیں قائم کیں۔ سی۔ پی۔ کی وزارت میں جب ایک تبدیلی کی ضرورت ہوئی تب انھیں کی رائے ماننی ضروری سمجھی گئی۔ کانگریس میں اور اس کے باہر ان کا اثر کتنا زیادہ تھا یہ تب بخوبی ثابت ہو گیا جب کہ سوبھاش چندر بوس، جو ان کی رائے کے خلاف کانگریس کے سبھاپتی بنا لئے گئے تھے، استعفا دینے پر مجبور ہوئے۔

سن ۱۹۳۹ء میں راجکوٹ کے راجا اور سردار پٹیل میں ایک سمجھوتا ہوا تھا۔ جس کی شرطیں وہ (راجکوٹ کے راجا)

राजकोट वाला उपवास

पूरी नहीं कर रहे थे और इसी मामले को लेकर गाँधी जी ने फिर उपवास करके जान देने की ठानी. वाइसराय के बीच-बचाव करने पर ही यह उपवास उन्होंने तोड़ा. मामला फ़िडरल कोर्ट के बड़े जज के सुपुर्द किया गया और उन्होंने गांधी जी के मुआफ़िक़ फ़ैसला किया. पर इस फ़ैसले से गांधी जी को सिर्फ़ इस लिये तसल्ली नहीं हुई कि इसे उन्होंने अपनी जान देने की धमकी देकर हासिल किया था और इसमें हिंसा (ज़ोर, ज़बरदस्ती) आ गई थी. लिहाज़ा उन्होंने यह फ़ैसला मनसूख़ कर दिया।

यूरोप की दूसरी बड़ी लड़ाई शुरू होने के साथ ही गांधी जी को फिर राजनीति के मैदान में उतरना पड़ा. लड़ाई के मक़सद (War aims) के मामले को लेकर कांग्रेस ने वज़ारतों से स्तीफ़ा दे दिया. बर्तानिया

दूसरा महायुद्ध

इस लड़ाई में भी हिंदुस्तानियों से उसी मदद की उम्मीद करता था जो उसे पहली में मिली थी. पर लड़ाई जीतने के बाद हिंदुस्तानियों के साथ अंग्रेज़ी सरकार जिस तरह पेश आई थी उसकी याद अभी तरोताज़ा थी. रौलट एक्ट, जलियांवाला बाग़, भगतसिंह वग़ैरह की फांसी को हिंदुस्तान कभी नहीं भूल सकता था. हिंदुस्तान के लाखों बहादुर नौजवान खेत रहे. सारा देश दाने दाने का मुहताज हो गया, पर इस बेमिसाल वफ़ादारी के एवज़ में क्या इनाम हिंदुस्तान को मिला? कांग्रेस को इस क़दर कुचल देने की कोशिश जिससे फिर यह कभी सर न

راجکوٹ والا اُپواس

پوری نہیں کر رہے تھے اور اسی معاملے کو لے کر گاندھی جی نے پھر اُپواس کر کے جان دینے کی ٹھانی۔ وائسرائے کے بیچ بچاؤ کرنے پر ہی یہ اُپواس اُنھوں نے توڑا۔ معاملہ فیڈرل کورٹ کے بڑے جج کے سپرد کیا گیا اور اُنھوں نے گاندھی جی کے موافق فیصلہ کیا۔ پر اس فیصلے سے گاندھی جی کو صرف اس لئے تسلی نہیں ہوئی کہ اسے اُنھوں نے اپنی جان دینے کی دھمکی دے کر حاصل کیا تھا اور اس میں ہنسا (زور، زبردستی) آگئی تھی۔ لہٰذا اُنھوں نے یہ فیصلہ منسوخ کر دیا۔

یوروپ کی دوسری بڑی لڑائی شروع ہونے کے ساتھ ہی گاندھی جی کو پھر راج نیتی کے میدان میں کودنا پڑا۔ لڑائی کے مقصد (war aims) کے معاملے کو لے کر کانگریس نے وزارتوں سے استعفا دے دیا۔ برطانیہ

دوسرا مہایدھ

اس لڑائی میں بھی ہندستانیوں سے اُسی مدد کی اُمید کرتی تھی جو اُسے پہلی میں ملی تھی۔ پر لڑائی جیتنے کے بعد ہندستانیوں کے ساتھ انگریزی سرکار جس طرح پیش آئی تھی اس کی یاد ابھی تروتازہ تھی۔ رولٹ ایکٹ، جلیان والا باغ، بھگت سنگھ وغیرہ کی پھانسی کو ہندستان کبھی نہیں بھول سکتا تھا۔ ہندستان کے لاکھوں بہادر نوجوان کھیت رہے، سارا دیش دانے دانے کا محتاج ہو گیا، پر اس بے مثال وفاداری کے عوض میں کیا انعام ہندستان کو ملا؟ کانگریس کو اس قدر کچل دینے کی کوشش جس سے پھر کبھی سر نہ

उठा सके. दूसरी कोशिश थी वह कम्यूनल एवार्ड और हरिजनों को अलग क़रार देकर कांग्रेस को और क़ौमी एकाई को सदा के लिये खतम कर देने की कोशिश. इन वजहों से कांग्रेस ने मदद देने से पहिले यह पूछा कि अंग्रेज सरकार के मक़सद क्या हैं? वह किस मामले को हल करने के लिये लड़ाई लड़ रही है? हिंदुस्तानी इसमें क्यों शरीक हों? वह इस लड़ाई को क्यों अपनी मानें? इसके जीतने से उनका क्या फ़ायदा होगा? इन बातों का ठीक जवाब न मिलने पर कांग्रेस ने स्तीफ़ा दे दिया. जर्मनी की तोपों की खुराक बनने के लिये भारत अब तैयार नहीं था. गांधी ज इस बात पर अड़े हुये थे कि अहिंसा के तरीक़ों से लड़ाई के खिलाफ़ प्रचार करने का हक़ जायज़ क़रार दिया जाना चाहिये, पर अंग्रेजों को यह मंजूर नहीं था. फिर भी तरह तरह के लालच देकर उन्होंने इस मुल्क से बेशुमार जवानों को भर्ती कर लड़ाई में भेज ही दिया. इसी मौक़े पर एक बार फिर कांग्रेस की लीडरी गांधी जी को अपने हाथ में लेनी पड़ी. उन्होंने फिर सत्याग्रह शुरू किया. पर इस बार यह नई बात रही कि जिस खास कांग्रेसी को गांधी जी इजाज़त दें सिर्फ़ वही सत्याग्रह करे और सिर्फ़ वही जेल जाय. तो भी १९४१ तक सैकड़ों, हज़ारों की तादाद में खास खास लोग जेल चले गये. गांधी जी को खतरा था कि कहीं फिर न दंगा फ़साद हो जाय. इस ख्याल से उन्होंने आंदोलन को फिर मुल्तवी कर दिया और खुद कांग्रेस की लीडरी से अलग हो गये.

फिर जब जापान लड़ाई में कूदा और अँग्रेजों व अमरीकियों

اُٹھا سکے۔ دوسری کوشش تھی وہ کمیونل اوارڈ، اور ہریجنوں کو الگ قرار دے کر کانگریس کو اور قومی اکائی کو سدا کے لئے ختم کر دینے کی کوشش۔ اِن وجہوں سے کانگریس نے مدد دینے سے پہلے یہ پوچھا کہ انگریز سرکار کے مقصد کیا ہیں؟ وہ کس معاملہ کو حل کرنے کے لئے لڑائی لڑ رہی ہے؟ ہندستانی اِس میں کیوں شریک ہوں؟ وہ اِس لڑائی کو کیوں اپنی مانیں؟ اِس کے جیتنے سے اُن کا کیا فائدہ ہوگا؟ اِن باتوں کا ٹھیک جواب نہ ملنے پر کانگریس نے استعفا دے دیا۔ جرمنی کی توپوں کی خوراک بننے کے لئے بھارت اب تیار نہیں تھا۔ گاندھی جی اِس بات پر اڑے ہوئے تھے کہ اہنسا کے طریقوں سے لڑائی کے خلاف پرچار کرنے کا حق جائز قرار دیا جانا چاہئے۔ پر انگریزوں کو یہ منظور نہیں تھا۔ پھر بھی طرح طرح کے لالچ دے کر اُنھوں نے اِس ملک سے بےشمار جوانوں کو بھرتی کر کے لڑائی میں بھیج ہی دیا۔ اِسی موقع پر ایک بار پھر کانگریس کی لیڈری گاندھی جی کو اپنے ہاتھ میں لینی پڑی۔ اُنھوں نے پھر ستیہ گرہ شروع کیا۔ پر اِس بار یہ نئی بات رہی کہ جس خاص کانگریسی کو گاندھی جی اجازت دیں صرف وہی ستیہ گرہ کرے اور صرف وہی جیل جائے۔ تو بھی ۱۹۴۱ تک سیکڑوں، ہزاروں کی تعداد میں خاص خاص لوگ جیل چلے گئے۔ گاندھی جی کو خطرہ تھا کہ کہیں پھر نہ دنگا فساد ہو جائے۔ اِس خیال سے اُنھوں نے اندولن کو پھر ملتوی کر دیا اور خود کانگریس کی لیڈری سے الگ ہو گئے۔

پھر جب جاپان لڑائی میں کودا اور انگریزوں و امریکیوں

को बेहद नुक़सान पहुँचाता हुआ बर्मा तक फ़तह करता हुआ आया तब अंग्रेजों ने यह महसूस किया कि हिंदुस्तान की शर्तों को किसी तरह मान कर, इन्हें खुश कर लड़ाई के लिये तैयार कर लेना चाहिये ताकि यह अपनी लड़ाई समझ कर, दिलो जान से अपनी जान माल की पूरी ताक़त लगा कर दुश्मन का मुक़ाबला करें. जापान का कहना था कि वह हिंदुस्तान को आज़ाद करने आ रहा है. अंग्रेजों का कहना था कि वह हिंदुस्तान को मटियामेट करने आ रहा है और अपने घर बार की रक्षा के लिये ही हिंदुस्तानियों का लड़ना उनका फ़र्ज़ है. कलकत्ते तक जापानियों के हवाई महले होने लगे थे. उधर सुभाश बोस की आज़ाद हिंद फ़ौज बर्मा में अंग्रेजों के ख़िलाफ़ लड़ रही थी. अजीब घड़ी थी. फिर से समझौता करने के लिये विलायत के मशहूर राजनीति के पंडित सर स्टेफ़ोर्ड क्रिप्स साहब तशरीफ़ लाये. यही वह हज़रत थे जो रूस को अंग्रेजों के हमराह करने में कामयाब हुये थे और इनकी चाल अगर न चलती तो अंग्रेज ख़तम हो चुके थे. यह बहुत से लुभावने प्रस्ताव लेकर यहां पहुँचे. गांधी जी नहरू जी, सरदार जी वग़ैरह ख़ास ख़ास लीडरों से ख़ूब ख़ूब बातें हुईं, पर आख़िरकार, सब बेकार! कोई समझौता न हो सका. कुछ लोगों का ख़्याल है कि जिन्ना साहब ने जो अड़ंगे लगाये उन्हीं की वजह से समझौता न हो सका. जो हो, क्रिप्स साहब वापस गये. आज़ाद हिंद के नेता जी सुभाश बोस कई बार रेडियो पर से यह राय दे चुके थे कि समझौते में कांग्रेस को कोई भाग न लेना चाहिये. उनकी राय थी कि सारे हिंदुस्तानी

کو بے حد نقصان پہنچاتا ہوا برما تک فتح کرتا ہوا آیا تب انگریزوں نے یہ محسوس کیا کہ ہندستان کی شرطوں کو کسی طرح مان کر، انھیں خوش کر لڑائی کے لئے تیار کر لینا چاہیئے تاکہ یہ اپنی لڑائی سمجھ کر، دل و جان سے اپنی جان مال کی پوری طاقت لگا کر دشمن کا مقابلہ کریں۔ جاپان کا کہنا تھا کہ وہ ہندستان کو آزاد کرنے آ رہا ہے۔ انگریزوں کا کہنا تھا کہ وہ ہندستان کو ملیامیٹ کرنے آ رہا ہے اور اپنے گھر بار کی رکشا کے لئے ہی ہندستانیوں کا لڑنا ان کا فرض ہے۔ کلکتے تک جاپانیوں کے ہوائی حملے ہونے لگے تھے۔ ادھر سبھاش بوس کی آزاد ہند فوج برما میں انگریزوں کے خلاف لڑ رہی تھی۔ عجیب گھڑی تھی۔ پھر سے سمجھوتا کرنے کے لئے ولایت کے مشہور راج نیتی کے پنڈت سر اسٹیفورڈ کرپس صاحب تشریف لائے۔ یہی وہ حضرت تھے جو روس کو انگریزوں کے ہمراہ کرنے میں کامیاب ہوئے تھے اور ان کی چال اگر نہ چلتی تو انگریز ختم ہو چکے تھے۔ یہ بہت سے لبھاونے پرستاؤ لے کر یہاں پہنچے۔ گاندھی جی نہرو جی، سردار جی وغیرہ خاص خاص لیڈروں سے خوب خوب باتیں ہوئیں۔ پر آخرکار، سب بے کار! کوئی سمجھوتا نہ ہو سکا۔ کچھ لوگوں کا خیال ہے کہ جناح صاحب نے جو اڑنگے لگائے انھیں کی وجہ سے سمجھوتا نہ ہو سکا۔ جو ہو کرپس صاحب واپس گئے۔ آزاد ہند کے نیتا جی سبھاش بوس کئی بار ریڈیو پر سے یہ رائے دے چکے تھے کہ سمجھوتے میں کانگریس کو کوئی بھاگ نہ لینا چاہیئے۔ ان کی رائے تھی کہ سارے ہندستانی

आजाद हिंद फ़ौज का साथ दें और एक फूंक में यहां से अंग्रेजों को बाहर निकाल कर सची आजादी हासिल करें, पर इसको गांधी जी ने ठीक नहीं समझा. वह हिंसा या मार काट करके आजादी नहीं लेना चाहते थे.

इसकी जगह पर उन्होंने "क्विट इण्डिया" या "भारत छोड़ो" वाला नारा बुलंद कर बड़े जोरों से फिर से आंदोलन शुरू कर दिया। सन् १९४२ में कांग्रेस की एक मार्के की बैठक बंबई में हुई जिसमें यह तय पाया कि कांग्रेस की ओर से गांधी जी वाइसराय से इस मामले पर बात चीत करें और इसके फल से भारत को अगर आजादी नहीं मिलती है तो बड़े पैमाने पर असहयोग आंदोलन शुरू किया जाय. पर अँग्रेज सरकार कोई दूसरे आंदोलन का मुक़ाबला करने को तैयार नहीं थी. उन्होंने तुरंत गांधी जी और ख़ास ख़ास सब लीडरों को पकड़ कर जेल में ठूंस दिया. यह आजादी के लिये गांधी जी की आख़िरी लड़ाई थी जो कामयाब हुई.

"भारत छोड़ो"

पर नेताओं के पकड़ जाने के साथ ही सारे देश में वह उथल पुथल मची जिसकी मिसाल सन् १८५७ वाली आजादी की पहली लड़ाई (जिसे अंग्रेज सिपाही 'म्यूटिनी' या 'बलवा' कहते हैं) से ही दी जा सकती है. सारे देश में बहुत जगह दंगे हो गये और देश के सभी बाशिंदे इस लड़ाई में शरीक हो गये. सिवाय मुसलिम लीगी मुसलमानों के. बहुत बड़े पैमाने पर मार काट हुई जिसकी

"अगस्त सन् ४२"

آزاد ہند فوج کا ساتھ دیں اور ایک پھونک میں یہاں سے انگریزوں کو باہر نکال کر سچی آزادی حاصل کریں، پر اس کو گاندھی جی نے ٹھیک نہیں سمجھا. وہ ہنسا یا مار کاٹ کر کے آزادی نہیں لینا چاہتے تھے.

اس کی جگہ پر انھوں نے "کوئٹ انڈیا" یا "بھارت چھوڑو" والا نعرہ بلند کر بڑے زوروں سے پھر سے اندولن شروع کر دیا. سنہ ۱۹۴۲ میں کانگریس کی ایک معرکے کی بیٹھک بمبئی میں ہوئی جس میں یہ طے پایا کہ کانگریس کی اور سے گاندھی جی وائسرائے سے اس معاملے پر بات چیت کریں اور اس کے پھل سے بھارت کو اگر آزادی نہیں ملتی ہے تو بڑے پیمانے پر اسہیوگ اندولن شروع کیا جائے. پر انگریز سرکار کوئی دوسرے اندولن کا مقابلہ کرنے کو تیار نہیں تھی. انھوں نے ترنت گاندھی جی اور خاص خاص سب لیڈروں کو پکڑ کر جیل میں ٹھونس دیا. یہ آزادی کے لئے گاندھی جی کی آخری لڑائی تھی جو کامیاب ہوئی.

"بھارت چھوڑو"

پر نیتاؤں کے پکڑے جانے کے ساتھ ہی سارے دیش میں وہ اتھل پتھل مچی جس کی مثال سنہ ۱۸۵۷ والی آزادی کی پہلی لڑائی (جسے انگریز سپاہی 'میوٹنی' یا 'بلوہ' کہتے ہیں) سے دی جا سکتی ہے. سارے دیش میں بہت جگہ دنگے ہو گئے اور دیش کے سبھی باشندے اس لڑائی میں شریک ہو گئے سوائے مسلم لیگی مسلمانوں کے. بہت بڑے پیمانے پر مار کاٹ ہوئی جس کی

"اگست سنہ ۴۲"

सारी जिम्मेदारी अंग्रेज सरकार कांग्रेस के ऊपर रखना चाहती थी, पर जनता ने उनके इस फ़ैसले को नहीं माना. सरकार ने निहायत बेरहमी के साथ इस आंदोलन को दबाया और सब खास खास लीडरों को जेल के अन्दर बंद कर दिया और हजारों आदमियों को उनके सिपाहियों ने गाली से उड़ा दिया. गांव के गांव जला दिये गये. इन बातों से दुखी होकर गांधी जी ने जेल में २१ दिन का उपवास किया. उन दिनों वह आग़ा खाँ साहब के महल में नज़र बंद रखे गये थे. नेहरू जी वग़ैरह बाक़ी बड़े नेता अहमद-नगर के क़िले मे बंद किये गये थे. इस उपवास के मौक़े पर सारी दुनिया ने अंग्रेजों पर दबाव डाला कि गांधी जी तुरन्त छोड़ दिये जांय, पर उसने नहीं माना. उनकी जान ख़तरे में थी. जनता की मांग यह थी कि या तो सरकार एक ख़ास अदालत में कांग्रेस के ऊपर मुक़द्दमा दायर करे या गांधी जी वग़ैरह को तुरंत रिहा कर दे जिससे इस बदली हुई हालत में उन्हें अपना रुख़ दुहराने का मौक़ा मिल सके. पर सरकार दो में से एक के लिये भी तैयार नहीं थी. उसका कहना यह था कि कांग्रेस पहले अपना वह अगस्त सन् ४२ वाला आंदोलन वापस ले ले तभी आगे बात चीत हो सकती है.

क़ैद की ही हालत में गांधी जी को दो सख्त सदमे गुज़रे. पहले तो महादेव देसाई चल बसे जो इनके खास मुंशी (प्राइवेट सेक्रेटरी) थे और जिन्हें यह अपने पुत्र के समान मानते थे. फिर फ़रवरी सन् १९४४ में इनकी स्त्री—माता कस्तूरबा भी स्वर्ग सिधारीं. इन दोनों बातों का कितना सदमा गांधी जी पर गुज़रा होगा,

ساری ذمّے داری انگریز سرکار کانگریس کے اوپر رکھنا چاہتی تھی، پر جنتا نے اُن کے اِس فیصلے کو نہیں مانا۔ سرکار نے نہایت بے رحمی کے ساتھ اِس اندولن کو دبایا اور سب خاص خاص لیڈروں کو جیل کے اندر بند کر دیا اور ہزاروں آدمیوں کو اُن کے سپاہیوں نے گولی سے اُڑا دیا۔ گاؤں کے گاؤں جلا دئے گئے۔ اِن باتوں سے دُکھی ہو کر گاندھی جی نے جیل میں ۲۱ دن کا اُپواس کیا۔ اُن دنوں وہ آغا خاں صاحب کے محل میں نظر بند رکھے گئے تھے۔ نہرو جی وغیرہ باقی بڑے نیتا احمد نگر کے قلعے میں بند کئے گئے تھے۔ اِس اُپواس کے موقع پر ساری دُنیا نے انگریزوں پر دباؤ ڈالا کہ گاندھی جی تُرنت چھوڑ دئے جائیں، پر اُس نے نہیں مانا۔ اُن کی جان خطرے میں تھی۔ جنتا کی مانگ یہ تھی کہ یا تو سرکار ایک خاص عدالت میں کانگریس کے اوپر مقدمہ دائر کرے یا گاندھی جی وغیرہ کو تُرنت رہا کر دے جس سے اِس بدلی ہوئی حالت میں اُنھیں اپنا رُخ دُہرانے کا موقع مل سکے۔ پر سرکار دو میں سے ایک کے لئے بھی تیار نہیں تھی۔ اُس کا کہنا یہ تھا کہ کانگریس پہلے اپنا وہ اگست سنہ ۴۲ والا اندولن واپس لے لے تبھی آگے بات چیت ہو سکتی ہے۔

قید کی ہی حالت میں گاندھی جی کو دو سخت صدمے گزرے۔ پہلے تو مہادیو دیسائی چل بسے جو اِن کے خاص منشی (پرائیویٹ سکریٹری) تھے اور جنھیں یہ اپنے پُتر کے سمان مانتے تھے۔ پھر فروری سنہ ۱۹۴۴ میں اِن کی استری — ماتا کستوربا بھی سورگ سدھاریں۔ اِن دونوں باتوں کا کتنا صدمہ گاندھی جی پر گزرا ہوگا،

इसका अंदाज़ा करना कठिन है. ख़ैर, ता ६ मई. १९४४ में गांधी जो बिना किसी शर्त के छोड़ दिये गये. उनकी तंदुरुस्ती बहुत खराब हो चली थी और इसी वजह से वह छोड़े गये. इसके बाद फिर सभी नेता छोड़ दिये गये और वह मशहूर

शिमला कान्फ़रेन्स

'शिमला कान्फ़रेन्स' हुई जिसमें फिर से वही सब पचड़े उठाये गये. जिन्ना साहब ने फिर वह अड़ंगा डाल दिया जिसकी वजह से यह कान्फ़रेन्स भी कामयाब न हुई. पर अंग्रेज सरकार मानो आज़ादी देने ही पर तुल गई थी. कैबिनेट मिशन नाम से तीन भले अंग्रेज

केबिनेट मिशन

लार्ड पेथिक लारेंस, एलगज़ेंडर और तीसरे 'वही' क्रिप्स साहब फिर आये और तीन महीने लगातार बैठकें होती रहीं. पर जिन्ना साहब के अड़ंगों की वजह से इसे भी पूरी कामयाबी नहीं मिली. जिन्ना साहब पाकिस्तान चाहते थे जिसे इस मिशन ने रद्द कर दिया था. पर देश का बटवारा कुछ इस तरह का बना दिया था कि हक़ीक़त में पाकिस्तान हो ही जाय. लार्ड वेवेल यकायक वापस बुला लिये गये और उनकी जगह लार्ड माउन्ट बेटन वाइसराय होकर आये जो अब भी हैं.

इन्होंने फिर से कोशिश की और एक महीने के अंदर ही एक नई तजवीज़ तैयार की जिसे नेहरू सरकार और कृपलानी जी ने गांधी जी से राय लिये बिना ही मान लिया. इसमें हिंदुस्तान-पाकिस्तान इन दो हिस्सों में देश बांट दिया गया था. इस तारीख़ के एक दिन पहले तक गांधी जी ने कहा था कि बँटवारे

اِس کا اندازہ کرنا کٹھن ہے. خیر تاریخ ۶ مئی ۱۹۴۴ میں گاندھی جی بنا کسی شرط کے چھوڑ دئے گئے. اُن کی تندرستی بہت خراب ہو چلی تھی اور اِسی وجہ سے وہ چھوڑے گئے. اِس کے بعد پھر سبھی نیتا چھوڑ دئے گئے اور وہ مشہور "شملہ کانفرنس" ہوئی

شملہ کانفرنس

جس میں پھر سے وہی سب پچڑے اُٹھائے گئے. جناح صاحب نے پھر وہ اڑنگا ڈال دیا جس کی وجہ سے یہ کانفرنس بھی کامیاب نہ ہوئی. پر انگریز سرکار مانو آزادی دینے ہی پر تل گئی تھی. کیبنٹ مشن نام سے تین بھلے انگریز لارڈ پیتھک لارینس، الیگزینڈر اور تیسرے

کیبنٹ مشن

"وہی" کرپس صاحب پھر آئے اور تین مہینے لگاتار بیٹھکیں ہوتی رہیں. پر جناح صاحب کے اڑنگوں کی وجہ سے اِسے بھی پوری کامیابی نہیں ملی. جناح صاحب پاکستان چاہتے تھے جسے اِس مشن نے رد کر دیا تھا، پر دیش کا بٹوارہ کچھ اِس طرح کا بنا دیا تھا کہ حقیقت میں پاکستان ہی ہو جائے. لارڈ ویول یکایک واپس بلا لئے گئے اور اُن کی جگہ لارڈ ماؤنٹ بیٹن وائسرائے ہو کر آئے جو اب بھی ہیں.

انھوں نے پھر سے کوشش کی اور ایک مہینے کے اندر ہی ایک نئی تجویز تیار کی جسے نہرو سرکار اور کرپلانی جی نے گاندھی جی سے رائے لئے بنا ہی مان لیا. اِس میں ہندستان پاکستان اِن دو حصّوں میں دیش بانٹ دیا گیا تھا. اِس

को मानना पागलपन होगा.

नेहरू जी वग़ैरह ने इस लिये इसे मान लिया था कि जिससे कलकत्ता, नोआखाली वग़ैरह का तरह दंगे न हों. पर इससे कहीं बड़े पैमाने पर दंगे बंटवारे के बाद हुये और अभी तक होते ही जा रहे हैं. बंटवारे के बाद रैडक्लिफ़ साहब नाम के एक अंग्रेज को हिंदुस्तान और पाकिस्तान की सरहद बनाने का काम सौंपा गया. इन्होंने कुछ इस तरकीब से सरहद की लाइने खींचीं जिससे आयेदिन झगड़े होतेही रहेंगे. इन बातों से गांधी-जी को बेहद सदमा हुआ और हिंदू-मुसलमान की एकाई के लिये अपनी पूरी जान लड़ा देने को वह तैयार हुये. वह कई महीने नोआखाली में गाँव गाँव पैदल घूम घूम कर प्रेम और एकताके उपदेश देते रहे. फिर बिहार और फिर कलकत्ते में एक अर्से तक टिके रहे.

'३ जून' का बंटवारा

१५ अगस्त सन् ४८ को बाक़ायदा हिन्दुस्तान और पाकिस्तान को आज़ादी मिली. नेहरू जी ने और विधान सभा के सभापति बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी वग़ैरह ने बाक़ायदा चार्ज लिया. सारे देश में बहुत बड़े पैमाने पर जलसे हुये. पर उसके कुछ ही दिनों बाद पंजाब में बहुत बड़े पैमाने पर मार काट हो गई. गांधी जी दिल्ली पहुँचे. सरहद से लेकर दिल्ली तक सारा उत्तरी हिन्दुस्तान मार काट से हाय हाय कर रहा था. गांधी जी हिन्दू और सिखों को बदला लेने से मना करते थे. और इसी मामले को लेकर एक बार उन्होंने उपवास भी किया इससे पहले वह कलकत्ते में भी उपवास के ज़रिये

१५ अगस्त सन् ४८

کو ماننا پاگل پن ہوگا۔

نہرو جی وغیرہ نے اِسے اِس لئے مان لیا تھا کہ جس سے کلکتہ، نواکھالی وغیرہ کی طرح دنگے نہ ہوں۔ پر اِس سے کہیں بڑے پیمانے پر دنگے بٹوارے کے بعد ہوئے اور ابھی تک ہوتے ہی جا رہے ہیں۔ بٹوارے کے بعد ریڈکلف صاحب نام کے ایک انگریز کو ہندستان اور پاکستان کی سرحد بنانے کا کام سونپا گیا۔ انھوں نے کچھ اس ترکیب سے سرحد کی لائنیں کھینچیں جس سے آئے دن جھگڑے ہوتے ہی رہیں گے۔ ان باتوں سے گاندھی جی کو بے حد صدمہ ہوا اور ہندو مسلمان کی اکائی کے لئے اپنی پوری جان لڑا دینے کو وہ تیار ہوئے۔ وہ کئی مہینے نواکھالی میں گاؤں گاؤں پیدل گھوم گھوم کر پریم اور ایکتا کے اُپدیش دیتے رہے۔ پھر بہار اور پھر کلکتے میں ایک عرصے تک ٹکے رہے۔

۳ جون کا بٹوارہ

۱۵ اگست ۴۸ء کو باقاعدہ ہندستان اور پاکستان کو آزادی ملی۔ نہرو جی نے اور ودھان سبھا کے سبھاپتی بابو راجیندر پرساد جی وغیرہ نے باقاعدہ چارج لیا۔ سارے دیش میں بہت بڑے پیمانے پر جلسے ہوئے، پر اُس کے کچھ ہی دنوں بعد پنجاب میں بہت بڑے پیمانے پر مارکاٹ ہوگئی۔ گاندھی جی دلی پہنچے۔ سرحد سے لیکر دلی تک سارا اُتری ہندستان مارکاٹ سے ہائے ہائے کر رہا تھا۔ گاندھی جی ہندو اور سکھوں کو بدلہ لینے سے منع کرتے تھے۔ اور اسی معاملے کو لے کر ایک بار انھوں نے اُپواس بھی کیا اِس سے پہلے وہ کلکتے میں بھی اُپواس کے ذریعے

۱۵ اگست ۴۸ء

हिन्दू मुसलमानों में मेल मिलाप करा चुके थे-

पर दिल्ली में हिन्दु-सिखों का एक दल बदले के लिये तुला हुआ था. कोई खुल्लम खुल्ला इनके खिलाफ आवाज़ उठाने की हिम्मत नहीं कर सकता था. पर भीतर ही भीतर लोग इनके खिलाफ हो रहे थे. वह कहते थे कि मुसलमान चाहे जो करें उन्हें तो कोई रोकने वाला नहीं है और हिन्दुओं को यह रोक देते हैं. अपनी जान की बाजी लगा कर.

मरने के कुछ ही दिन पहले दिल्ली की प्रार्थना सभा में एक नौजवान ने हथगोला फेंक कर उनकी जान लेने की कोशिश की थी जिसे पकड़ लियागया था. इस घटना के बाद पुलिस का इन्तजाम और सख्त कर दिया गया था पर गाँधी जी ने सरकार की इस बात को नहीं माना कि उनकी हिफ़ाज़त के ख़याल से प्रार्थना सभा में आने वालों की तलाशी ले लीजाया करे.

३० जनवरी

आखिर ३० जनवरी की शाम को नाथूराम विनायक गोडसे नाम के एक मराठी नौजवान ने उनको गोली मारकर उनकी जान लेली उसी दिन यह खबर सारी दुनिया में बिजली की तरह फैल गई और सारी दुनिया रंज में डूब गई. उन दिनों वह बिड़ला भवन (सेठ घनश्यामदास बिड़ला की कोठी. दिल्ली) में रहते थे और उनकी उमर उस वक्त ८० से कुछ महीने कम थी. नाथूराम क़ैद है, अभी उसपर मुक़दमा नहीं चलाया जा रहा है. १२ फ़रवरी को उनका फूल इलाहाबाद लाया जाकर संगम में बहाया गया. दुनिया में आज तक किसी एक आदमी के मरने पर इतना अफ़सोस नहीं जाहिर किया गया।

ہندو مسلمانوں میں میل ملاپ کرا چکے تھے۔

پر دلی میں ہندو سکھوں کا ایک دل بدلے کے لئے تلا ہوا تھا۔ کوئی کھلم کھلا ان کے خلاف آواز اٹھانے کی ہمت نہیں کر سکتا تھا۔ پر بھیتر ہی بھیتر لوگ ان کے خلاف ہو رہے تھے وہ کہتے تھے کہ مسلمان چاہے جو کریں انھیں تو کوئی روکنے والا نہیں ہے، اور ہندوؤں کو یہ روک دیتے ہیں، اپنی جان کی بازی لگا کر۔

مرنے کے کچھ دن پہلے دلی کی پرارتھنا سبھا میں ایک نوجوان نے ہتھ گولا پھینک کر ان کی جان لینے کی کوشش کی تھی جسے پکڑ لیا گیا تھا۔ اس گھٹنا کے بعد پولیس کا انتظام اور سخت کر دیا گیا تھا پر گاندھی جی نے سرکار کی اس بات کو نہیں مانا کہ ان کی حفاظت کے خیال سے پرارتھنا سبھا میں آنے والوں کی تلاشی لے لی جایا کرے۔

۳۰ جنوری

آخر ۳۰ جنوری کی شام کو ناتھورام ونایک گوڈسے نام کے ایک مراٹھی نوجوان نے ان کو گولی مار کر ان کی جان لے لی۔ اسی دن یہ خبر ساری دنیا میں بجلی کی طرح پھیل گئی اور بس ساری دنیا رنج میں ڈوب گئی۔ ان دنوں وہ برلا بھون (سیٹھ گھنشیام داس برلا کی کوٹھی، دلی) میں رہتے تھے اور ان کی عمر اس وقت ۸۰ سے کچھ مہینے کم تھی۔ ناتھورام قید ہے، ابھی اس پر مقدمہ نہیں چلایا جا رہا ہے۔ ۱۲ فروری کو ان کا پھول الہ آباد لایا جا کر سنگم میں بہایا گیا۔ دنیا میں آج تک کسی ایک آدمی کے مرنے پر اتنا افسوس نہیں ظاہر کیا گیا۔

दो समुन्दरों का संगम

(पंडित सुन्दर लाल)

दारा शिकोह ने अपनी अनमोल किताब मजमे-उल-बहरैन में हिन्दुस्तान की सर जमीन पर हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों के मेल की मिसाल दो समुन्दरों के संगम से दी है. मजमे-उल-बहरैन के मानी हैं दो समुन्दरों का संगम. इन दोनों धर्मों में से पहले हम हिन्दू धर्म पर एक निगाह डालते हैं.

हिन्दू धर्म क्या है. यह सवाल अनेक बार उठ चुका है. हिन्दुओं को किसी मजहबी किताब में हिन्दू शब्द नहीं मिलता जिसे हम हिन्दू धर्म कहते हैं वह आज कल के मानी में कोई अलग धर्म या सम्प्रदाय या मजहब नहीं है. जो वैष्णव किसी तरह का भी गोश्त खाना पाप समझता है वह उतना ही हिन्दू है जितना वह शाक्त जिसके धर्म की रस्में बिना मांस के पूरी नहीं हो सकतीं. हर चीज में ईश्वर को देखने वाला वेदान्ती वैसा ही हिन्दू है जैसा ईश्वर को न मानने वाला चारवाक का अनुयायी. हिन्दुओं की धर्म पुस्तकों में इस धर्म को अगर कहीं कोई नाम दिया गया है तो इसे सिर्फ 'मानव धर्म' यानी 'मनुष्य का धर्म' या 'मजहबे इन्सानियत' ही कहा गया है. धर्म शब्द भी एक ऐसा शब्द है जिसका शायद किसी दूसरी बोली में ठीक ठीक उल्था नहीं हो सकता. मनु महाराज ने धर्म के जो दस लक्षण (जुज) गिनाए हैं उनसे दुनिया के किसी धर्म का कोई आदमी भी इनकार नहीं कर सकता. धर्म

دو سمندروں کا سنگم

(پنڈت سندر لال)

دارا شکوہ نے اپنی انمول کتاب مجمع البحرین میں ہندستان کی سرزمین پر ہندو دھرم اور اسلام دونوں کے میل کی مثال دو سمندروں کے سنگم سے دی ہے. مجمع البحرین کے معنی ہیں دو سمندروں کا سنگم. اِن دونوں دھرموں میں سے پہلے ہم ہندو دھرم پر ایک نگاہ ڈالتے ہیں.

ہندو دھرم کیا ہے. یہ سوال انیک بار اٹھ چکا ہے. ہندوؤں کی کسی مذہبی کتاب میں ہندو شبد نہیں ملتا جسے ہم ہندو دھرم کہتے ہیں وہ آج کل کے معنی میں کوئی الگ دھرم یا سمپردائے یا مذہب نہیں ہے. جو ویشنو کسی طرح کا بھی گوشت کھانا پاپ سمجھتا ہے وہ اتنا ہی ہندو ہے جتنا وہ شاکت جس کے دھرم کی رسمیں بنا مانس کے پوری نہیں ہو سکتیں. ہر چیز میں ایشور کو دیکھنے والا ویدانتی ویسا ہی ہندو ہے جیسا ایشور کو نہ ماننے والا چارواک کا انویائی. ہندوؤں کی دھرم پستکوں میں اِس دھرم کو اگر کہیں کوئی نام دیا گیا ہے تو اسے صرف 'مانو دھرم' یعنی 'منش کا دھرم' یا 'مذہبِ انسانیت' ہی کہا گیا ہے. دھرم شبد بھی ایک ایسا شبد ہے جس کا شاید کسی دوسری بولی میں ٹھیک ٹھیک التھا نہیں ہو سکتا. منو مہاراج نے دھرم کے جو دس لکشن (جُز) گنائے ہیں اُن سے دُنیا کے کسی دھرم کا کوئی آدمی بھی انکار نہیں کر سکتا. دھرم

के वह दस लक्षण यह हैं—धीरज, क्षमा, (माफ़ करना), दम (खुदी को मारना), चोरी न करना, सफ़ाई, इन्द्रियों पर क़ाबू, समझदारी, जानकारी, सचाई, और गुस्सा न करना. इसी तरह हिन्दू धर्म की ऊँची से ऊँची उपज को जैसे उपनिषद्, गीता, या योग सूत्र, किसी दूसरे धर्म वाला अगर ठीक ठीक समझ ले तो मानने या अपनाने से इनकार नहीं कर सकता. सच यह है कि हिन्दू धर्म कोई अलग धर्म है ही नहीं, न वह कोई सम्प्रदाय या फ़िरक़ा है. हिन्दू धर्म सब धर्मों का मेल या समन्वय है. धर्म के बारे में हिन्दू धर्म एक ऐसी उदार निगाह का नाम है जिसमें सब सम्प्रदायों, सब मजहबों और सब तरह के विचारों को जगह मिल सकती है. इसीलिये दाराशिकोह ने हिन्दू धर्म की मिसाल एक ऐसे समुन्दर से दी है जिसमें बहुत सी नदियां आकर मिल जाती हैं.

अब हम इसलाम पर एक निगाह डालें. जितने साफ़ शब्दों में क़ुरान ने अपने से पहले के सब बड़े बड़े मजहबों की सचाई को माना है उतने साफ़ शब्दों में शायद किसी दूसरी मजहबी किताब ने नहीं माना (५—४८ वग़ैरा). यह है भी क़ुदरती बात, क्योंकि इसलाम ही दुनिया के मजहबों में सबसे हाल का है. इसलाम शब्द के मानी अपने को 'अर्पण करना' या दूसरे की मर्जी पर छोड़ देना है. मुसलिम के मानी हैं—'वह आदमी जिसने अपने को ईश्वर की मरजी पर छोड़ रक्खा हो' (३—१९ वग़ैरा) क़ुरान मे बार बार क़ुरान से पहले के सब मजहबों को इसलाम और उनके मानने वालों को मुसलिम या मुसलमान कहा गया है (२२—

کے وہ دس لکشن یہ ہیں — دھیرج، کشما، (معاف کرنا)، دم (خودی کو مارنا)، چوری نہ کرنا، صفائی، اندریوں پر قابو، سمجھداری، جانکاری، سچائی، اور غصہ نہ کرنا۔ اسی طرح ہندو دھرم کی اونچی سے اونچی اپج کو جیسے اپنشد، گیتا، یا یوگ سوتر، کسی دوسرے دھرم والا اگر ٹھیک ٹھیک سمجھ لے تو ماننے یا اپنانے سے انکار نہیں کر سکتا۔ سچ یہ ہے کہ ہندو دھرم کوئی الگ دھرم ہے ہی نہیں، نہ وہ کوئی سمپرداسئے یا فرقہ ہے۔ ہندو دھرم سب دھرموں کا میل یا سمنوے ہے۔ دھرم کے بارے میں ہندو دھرم ایک ایسی اُدار نگاہ کا نام ہے جس میں سب سمپرداؤں، سب مذہبوں اور سب طرح کے وچاروں کو جگہ مل سکتی ہے۔ اسی لئے دارا شکوہ نے ہندو دھرم کی مثال ایک ایسے سمندر سے دی ہے جس میں بہت سی ندیاں آکر مل جاتی ہیں۔

اب ہم اسلام پر ایک نگاہ ڈالیں۔ جتنے صاف شبدوں میں قرآن نے اپنے سے پہلے کے سب بڑے بڑے مذہبوں کی سچائی کو مانا ہے اتنے صاف شبدوں میں شاید کسی دوسری مذہبی کتاب نے نہیں مانا (۴۸-۵ وغیرہ)۔ یہ ہے بھی قدرتی بات کیونکہ اسلام ہی دنیا کے مذہبوں میں سب سے حال کا ہے۔ اسلام شبد کے معنی اپنے کو 'ارپن کرنا' یا دوسرے کی مرضی پر چھوڑ دینا ہے۔ مسلم کے معنی ہیں — 'وہ آدمی جس نے اپنے کو ایشور کی مرضی پر چھوڑ رکھا ہو' (۱۹-۳ وغیرہ) قرآن میں بار بار قرآن سے پہلے کے سب مذہبوں کو اسلام اور ان کے ماننے والوں کو مسلم یا مسلمان کہا گیا ہے (۷۸ — ۲۲)۔

७८). कुरान की शिकायत सिर्फ यह है कि उन पिछले मजहबों के मानने वाले अपनी किताबें और अपने महापुरुषों के बताए असली रास्ते से हट गए. खुद कुरान शब्द के मानी हैं. 'वह चीज जो ऐलान की जावे या पढ़ी जावे' यहूदी लोग अपनी मजहबी किताब को 'क़राह' कहा करते थे. इबरानी शब्द क़राह और अरबी शब्द 'कुरान दोनों के एक ही मानी हैं. कुरान में अपने से पहले की धार्मिक किताबों को भी 'कुरान' नाम दिया गया है. (१५—९१) यानी कुरान के मुताबिक़ वेद, गीता. जिन्द अवस्ता. और इन्जील सब कुरान हैं और उनके उपदेशों पर सचाई से अमल करने वाले सब मुसलिम हैं. क़ुरान में यह भी साफ़ साफ़ लिखा है कि क़ुरान का पैग़ाम कोई नया पैग़ाम नहीं है. और क़ुरान में कोई ऐसी चीज नहीं कही गई जो पहले के रसूलों को न कही गई हो या पहले की किताबों में न मिलती हो (४१— ४३) कई आयतों में यह भी बताया गया है कि क़ुरान अरबी में क्यों उतरा—"ताकि यह अरब लोग जो अपने साथ जुल्म करते हैं आसानी से और अच्छी तरह समझ सकें" (४६—१२, ५१—४४, ४२—७ वग़ैरा) और "अल्लाह ने जो भी रसूल भेजा है उसने अपने ही लोगों की बोली में उपदेश दिया है ताकि लोग अच्छी तरह समझ सकें" (१४—४)

नीचे की आयतें हमारी बात को और साफ़ कर देती हैं—

"सचमुच जिन लोगों ने दीन के टुकड़े टुकड़े कर डाले और जो अपने अपने अलग अलग मजहब या गिरोह बना कर बैठ गए हैं उनसे तुम्हारा कोई सरोकार नहीं" (६—१६०).

قرآن کی شکایت صرف یہ ہے کہ ان پچھلے مذہبوں کے ماننے والے اپنی کتابیں اور اپنے مہاپوروشوں کے بتائے اصلی راستے سے ہٹ گئے۔ خود قرآن شبد کے معنی ہیں، "وہ چیز جو اعلان کی جاوے یا پڑھی جاوے" یہودی لوگ اپنی مذہبی کتاب کو "قراہ" کہا کرتے تھے۔ عبرانی شبد قراہ اور عربی شبد "قرآن" دونوں کے ایک ہی معنی ہیں۔ قرآن میں اپنے سے پہلے کی دھارمک کتابوں کو بھی "قرآن" نام دیا گیا ہے۔ (۱۵—۹۱) یعنی قرآن کے مطابق وید، گیتا، زند اوستا، اور انجیل سب قرآن ہیں اور ان کے اپدیشوں پر سچائی سے عمل کرنے والے سب مسلم ہیں۔ قرآن میں یہ بھی صاف صاف لکھا ہے کہ قرآن کا پیغام کوئی نیا پیغام نہیں ہے، اور قرآن میں کوئی ایسی چیز نہیں کہی گئی جو پہلے کے رسولوں کو نہ کہی گئی ہو یا پہلے کی کتابوں میں نہ ملتی ہو (۴۳—۴۱) کئی آیتوں میں یہ بھی بتایا گیا ہے کہ قرآن عربی میں کیوں اترا— "تاکہ یہ عرب لوگ جو اپنے ساتھ ظلم کرتے ہیں آسانی سے اور اچھی طرح سمجھ سکیں" (۴۶—۱۲، ۵۱—۴۴، ۴۲—۷ وغیرہ) اور "اللہ نے جو بھی رسول بھیجا ہے اس نے اپنے ہی لوگوں کی بولی میں اپدیش دیا ہے تاکہ لوگ اچھی طرح سمجھ سکیں" (۱۴—۴)۔

نیچے کی آیتیں ہماری بات کو اور صاف کر دیتی ہیں—

"سچ مچ جن لوگوں نے دین کے ٹکڑے ٹکڑے کر ڈالے اور جو اپنے اپنے الگ الگ مذہب یا گروہ بنا کر بیٹھ گئے ہیں ان سے تمہارا کوئی سروکار نہیں" (۶—۱۶۰)۔

"यहूदी कहते हैं कि सिवाय यहूदियों के और कोई जन्नत में नहीं जा सकता, ईसाई कहते हैं कि सिवाय ईसाई के कोई जन्नत में नहीं जा सकता, यह सब इन लोगों के झूठे वहम हैं. इन से कहो कि अगर तुम सच्चे हो तो (अपनी ही मज़हबी किताबों से) सबूत निकाल कर दिखाओ.

"नहीं, जिस किसी ने अपने आप को अल्लाह की मरज़ी पर छोड़ दिया है और जो दूसरों के साथ नेकी करता है उसे अपने रब से फल मिलेगा. उसे न किसी बात का डर है और न किसी तरह का ग़म होगा" (२—१११. ११२.).

"अल्लाह ने हर एक के लिये अलग अलग शरअ और मिनहाज (रीत-रिवाज और पूजा के तरीक़े) बना दिये हैं. अल्लाह चाहता तो तुम सबको एक ही फ़िरक़ा (एक ही रीत रिवाज के मानने वाले) बना देता. पर अल्लाह चाहता था कि जिसको जो तरीक़ा बता दिया है उसी में उसको परखे. इसलिये (इन फ़रक़ों में न पड़ कर) दूसरों की भलाई के कामों में एक दूसरे से बढ़ने की कोशिश करो. सब को अल्लाह ही के पास लौट कर जाना है. तब जिन बातों में तुममें फ़रक़ है वह अल्लाह तुम्हें समझा देगा" (५—४८).

कुरान में दो बातें साफ़ कही गई हैं. एक यह कि किसी आदमी को जो नेक काम करेगा सिर्फ़ उसके ग़लत अक़ीदों यानी ग़लत मानताओं की वजह से सज़ा नहीं दी जायगी. (११—११७) दूसरा यह कि कोई आदमी सिर्फ़ इसलिये कि उसका अक़ीदा ठीक था अपने बुरे कामों के बुरे नतीजों से नहीं बच सकेगा.

"یہودی کہتے ہیں کہ سوائے یہودیوں کے اور کوئی جنّت میں نہیں جا سکتا، عیسائی کہتے ہیں کہ سوائے عیسائی کے کوئی جنّت میں نہیں جا سکتا، یہ سب اِن لوگوں کے جھوٹے وہم ہیں۔ اِن سے کہو کہ اگر تم سچّے ہو تو (اپنی ہی مذہبی کتابوں سے) ثبوت نکال کر دکھاؤ۔

"نہیں، جس کسی نے اپنے آپ کو اللہ کی مرضی پر چھوڑ دیا ہو اور جو دوسروں کے ساتھ نیکی کرتا ہو اُسے اپنے رب سے پھل ملے گا۔ اُسے نہ کسی بات کا ڈر ہو اور نہ کسی طرح کا غم ہوگا" (۲—۱۱۱ ا ۱۱۲)۔

"اللہ نے ہر ایک کے لئے الگ الگ شرع اور منہاج (ریت رواج اور پوجا کے طریقے) بنا دئے ہیں۔ اللہ چاہتا تو تم سب کو ایک ہی فرقہ (ایک ہی ریت رواج کے ماننے والے) بنا دیتا۔ پر اللہ چاہتا تھا کہ جس کو جو طریقہ بتا دیا ہو اُسی میں اُس کو پرکھے۔ اِسی لئے (اِن فرقوں میں نہ پڑ کر) دوسروں کی بھلائی کے کاموں میں ایک دوسرے سے بڑھنے کی کوشش کرو۔ سب کو اللہ ہی کے پاس لوٹ کر جانا ہے۔ تب جن باتوں میں تم میں فرق ہو وہ اللہ تمھیں سمجھا دے گا" (۵—۴۸)۔

قرآن میں دو باتیں صاف کہی گئی ہیں۔ ایک یہ کہ کسی آدمی کو جو نیک کام کرے گا صرف اُس کے غلط عقیدوں یعنی غلط مانتاؤں کی وجہ سے سزا نہیں دی جائے گی۔ (۱۱—۱۱۷) دوسرا یہ کہ کوئی آدمی صرف اِس لئے کہ اُس کا عقیدہ ٹھیک تھا اپنے بُرے کاموں کے بُرے نتیجوں سے نہیں بچ سکے گا۔

(२९—२). क़ुरान का मशहूर और माना हुआ टीकाकार बैज़ावी साफ़ लिखता है कि पहली आयत में 'ग़लत अक़ीदे' से ख़ास मतलब 'शिर्क' यानी दूसरे देवी देवताओं की पूजा से है. क़ुरान में एक जगह सच्चा 'मोमिन' यानी ईमान वाला उस आदमी को बताया गया है जो "ग़ुलामोंको आज़ाद करता है और भूक के दिनों में अपने रिश्तेदारों को, यतीमों को, और मिट्टी में लोटते हुये ग़रीब आदमी को खाना देता है. ऐसे लोग ही एक दूसरे को सब्र करने और दूसरों पर दया करने की सलाह देते हैं." (९०–१२ से १७).

"लोगों को सिवा इसके और कुछ हुकुम नहीं दिया गया कि वह पाक दिल से अल्लाह की इबादत करें, सच्चे और ईमानदार रहें, अल्लाह से दुआ मांगते रहें, और ग़रीबों को दान दें. यही 'दीनुल क़य्यमह' यानी असली और पक्का दीन है" (९८–५).

क़ुरान में उन लोगों की "नमाज़ को ढोंग और अफ़सोस की चीज़" कहा गया है जो " यतीम को सताते हैं और ग़रीबों को खाना नहीं खिलाते" (१०७–१ से ७). क़ुरान ऐसे लोगों को "दीन को झुटलाने वाले" कहता है.

तो फिर मुसलमान के लिये क्या मानना ज़रूरी है ? क़ुरान में पाँच चीज़ें गिनाई गई हैं—अल्लाह, सब रसूल, सब धर्म पुस्तकें, फ़रिश्ते, और क़ियामत हर मुसलमान के लिये ज़रूरी है कि दुनिया के सब रसूलों और सब ईश्वरी किताबों को माने और सब का बराबर आदर करे. तुर्की के मशहूर आलिम महमूद मुहतार पाशा ने बहुत से पुराने टीकाकारों का हवाला देते हुए अपनी

(۲۹—۲). قرآن کا مشہور اور مانا ہوا ٹیکاکار بیضاوی صاف لکھتا ہے کہ پہلی آیت میں "غلط عقیدے" سے خاص مطلب "شرک" یعنی دوسرے دیوی دیوتاؤں کی پوجا سے ہے. قرآن میں ایک جگہ سچا "مومن" یعنی ایمان والا اس آدمی کو بتایا گیا ہے جو "غلاموں کو آزاد کرتا ہے اور بھوک کے دنوں میں اپنے رشتے داروں کو، یتیموں کو، اور مٹی میں لوٹتے ہوئے غریب آدمی کو کھانا دیتا ہے. ایسے لوگ ہی ایک دوسرے کو صبر کرنے اور دوسروں پر دیا کرنے کی صلاح دیتے ہیں." (۹۰—۱۲ سے ۱۷).

"لوگوں کو سوا اس کے اور کچھ حکم نہیں دیا گیا کہ وہ پاک دل سے اللہ کی عبادت کریں، سچے اور ایمان دار رہیں، اللہ سے دعا مانگتے رہیں، اور غریبوں کو دان دیں. یہی "دین القیامہ" یعنی اصلی اور پکا دین ہے" (۹۸ — ۵).

قرآن میں ان لوگوں کی "نماز کو ڈھونگ اور افسوس کی چیز" کہا گیا ہے جو "یتیم کو ستاتے ہیں اور غریبوں کو کھانا نہیں کھلاتے" (۱۰۷—۱ سے ۷). قرآن ایسے لوگوں کو "دین کو جھٹلانے والے" کہتا ہے.

تو پھر مسلمان کے لئے کیا ماننا ضروری ہے؟ قرآن میں پانچ چیزیں گنائی گئی ہیں — اللہ، سب رسول، سب دھرم پستکیں، فرشتے، اور قیامت ہر مسلمان کے لئے ضروری ہے کہ دنیا کے سب رسولوں اور سب ایشوری کتابوں کو مانے اور سب کا برابر آدر کرے. ترکی کے مشہور عالم محمود مختار پاشا نے بہت سے پرانے ٹیکاکاروں کا حوالہ دیتے ہوئے اپنی

किताब 'विज़डम आफ़ दि क़ुरान' में लिखा है कि क़ुरान में जिन्हें फ़रिश्ते कहा गया है वह सिर्फ़ आदमी के अन्दर के वह रुजहान या झुकाव हैं जो उसे नेक कामों की तरफ़ ले जाते हैं. रही क़यामत की बात, सो मोहम्मद् साहब की हदीसों में और ख़ुद क़ुरान में जगह जगह कहा गया है कि इस ज़िन्दगी से बाहर की चीज़ों का अन्दाज़ा इस आंख, नाक, कान और इस इनसानी दिमाग़ की सूझ बूझ की चीज़ों से नहीं करना चाहिये (बुख़ारी). क़यामत का मतलब हिन्दुओं के कर्म सिद्धान्त की तरह यही है कि हर आदमी को अपने अच्छे या बुरे कामों के अच्छे या बुरे नतीजों को भुगतना पड़ेगा.

इस तरह क़ुरान का इसलाम कोई अलग अनोखा सम्प्रदाय नहीं है. वह सब पिछले धर्मों का संगम या समन्वय है. मज़हब की हैसियत से क़ुरान का मज़हब सब से सीधा और सरल मज़हब है. इसलाम के इसी पहलू को सामने रख कर शम्स तबरेज़ की तरह सैकड़ों आज़ाद तबियत सूफ़ी यह कह गए हैं कि हम न मुसलमान हैं न ईसाई, न यहूदी और न पारसी वग़ैरा. दूसरे शब्दों में यही बात मौलाना जलालुद्दीन रूमी ने यूं कही है—

"ऐ इश्क़ ! ऐ मेरे प्यारे पागलपन ! शाबाश !

"तू ही मेरी सब बीमारियों की दवा है.

"तू ही मेरे अहंकार और ग़रूर का इलाज है.

"तू ही मुझे अन्दर की राह दिखाने वाला अफ़लातून और मेरे जिस्म को ठीक रखने वाला वैद्य जालीनूस है.

"वेद, ज़िन्द अवस्ता, क़ुरान और इन्जील,

کتاب "وزڈم آف دی قرآن" میں لکھا ہے کہ قرآن میں جنھیں فرشتے کہا گیا ہے وہ صرف آدمی کے اندر کے وہ رجحان یا جھکاؤ ہیں جو اسے نیک کاموں کی طرف لے جاتے ہیں۔ رہی قیامت کی بات، سو محمد صاحب کی حدیثوں میں اور خود قرآن میں جگہ جگہ کہا گیا ہے کہ اس زندگی سے باہر کی چیزوں کا اندازہ اس آنکھ، ناک، کان اور اس انسانی دماغ کی سوجھ بوجھ کی چیزوں سے نہیں کرنا چاہیے (بخاری)۔ قیامت کا مطلب ہندوؤں کے کرم سدھانت کی طرح یہی ہے کہ ہر آدمی کو اپنے اچھے یا برے کاموں کے اچھے یا برے نتیجوں کو بھگتنا پڑے گا۔

اس طرح قرآن کا اسلام کوئی الگ انوکھا سمپردائے نہیں ہے۔ وہ سب پچھلے دھرموں کا سنگم یا سمنوے ہے۔ مذہب کی حیثیت سے قرآن کا مذہب سب سے سیدھا اور سرل مذہب ہے۔ اسلام کے اسی پہلو کو سامنے رکھ کر شمس تبریز کی طرح سیکڑوں آزاد طبیعت صوفی یہ کہہ گئے ہیں کہ ہم نہ مسلمان ہیں نہ عیسائی نہ یہودی اور نہ پارسی وغیرہ۔ دوسرے شبدوں میں یہی بات مولانا جلال الدین رومی نے یوں کہی ہے—

"اے عشق! اے میرے پیارے پاگل پن! شاباش!

"تو ہی میری سب بیماریوں کی دوا ہے۔

"تو ہی میرے اہنکار اور غرور کا علاج ہے۔

"تو ہی مجھے اندر کی راہ دکھانے والا افلاطون اور میرے جسم کو ٹھیک رکھنے والا ویدیہ جالینوس ہے۔

"وید، ژند اوستا، قرآن اور انجیل،

"काबा और बुतखाना और पारसियों का आतिशकदा.

"मेरे दिल ने इन सब को अपना लिया है.

"क्यों कि मेरे लिये अब सिवा इश्क़ के और कोई खुदा ही नहीं है."

सूफ़ी साहित्य से इस तरह के सैकड़ों क़ौल नक़ल किये जा सकते हैं.

अगर हिन्दू और मुसलमान सचमुच अपनी आजकल की तंग खयालियों से ऊपर उठ कर उपनिषदों, गीता, क़ुरान, कबीर और नानक, जलालुद्दीन रूमी और शम्स तबरेज़ की असली हिदायतों पर अपनी जिन्दगी को ढाल सकते हैं और उन्हीं की निगाह से चीज़ों को देख सकते हैं तो अब भी हम इस सर ज़मीन को एक ऐसा हरा भरा बाग़ बना सकते हैं जिसमें रीत रिवाज का रंग बिरंगापन भी बाग़ की खूबसूरती को कम करने की जगह उसे और सुन्दर और शानदार ही बनाएगा. 'दोनों समुन्दरों के संगम' से दाराशिकोह का यही मतलब है. यह संगम ही हक़ है. यही हमारे लिये और दुनिया के लिये सलामती का रास्ता है.

"کعبہ اور بُت خانہ اور پارسیوں کا آتشکدہ؛

"میرے دل نے ان سب کو اپنا لیا ہے،

"کیونکہ میرے لئے اب سوا عشق کے اور کوئی خدا ہی نہیں ہے۔"

صوفی ساہتیہ سے اس طرح کے سیکڑوں قول نقل کئے جا سکتے ہیں۔

اگر ہندو اور مسلمان سچ مچ اپنی آج کل کی تنگ خیالیوں سے اوپر اٹھ کر اپنشدوں، گیتا، قرآن، کبیر اور نانک، جلال الدین رومی اور شمس تبریز کی اصلی ہدایتوں پر اپنی زندگی کو ڈھال سکتے ہیں اور انھیں کی نگاہ سے چیزوں کو دیکھ سکتے ہیں تو اب بھی ہم اس سرزمین کو ایک ایسا ہرا بھرا باغ بنا سکتے ہیں جس میں ریت رواج کا رنگ برنگاپن بھی باغ کی خوبصورتی کو کم کرنے کی جگہ اُسے اور سُندر اور شان دار ہی بنائے گا۔ دونوں سمندروں کے سنگم سے دارا شکوہ کا یہی مطلب ہے۔ یہ سنگم ہی حق ہے۔ یہی ہمارے لئے اور دنیا کے لئے سلامتی کا راستہ ہے۔

गांधी जी और कस्तूरबा

(भाई जी० राम चन्द्रन)

गांधी जी अपने मजबूत इरादे के लिये मशहूर थे. लोग ज्यों ज्यों उनके साथ अधिक से अधिक रहने लगते थे वह ज्यादा से ज्यादा उनके शासन के पाबन्द होते जाते थे. लोगों को अपनी राय आजाद रखने को वह रोकते न थे, मगर आजाद राय रखते हुए भी लोग गांधी जी की किसी बात का विरोध न करते थे, क्योंकि लोगों को जितना विश्वास अपने ऊपर था उससे ज्यादा गांधी जी पर था. लेकिन सत्याग्रह-आश्रम में एक प्रानी ऐसा भी था जो इस नियम का पालन न करता था. यह प्रानी सदा उनके पास रहने वाली उनकी धर्मपत्नी श्री कस्तूरबा थीं. गांधी कुटिया में जो 'बा' का हिस्सा था और जिसमें रसोई घर भी शामिल था. उस पर उन्हीं की पक्की हकूमत थी. पर, बेचारी छोटी सी बूढ़ी 'बा' के कन्धों पर वह सब जिम्मेदारी बहुत थी. उन्हें अपने महान पति, अपने बच्चों पोतों और क़रीब बीस आश्रम वासियों के लिये ख़ुद अपने हाथ से खाना बनाना और सब को ख़ुद ही खिलाना पड़ता था.

वैसे आश्रम में करीब दो सौ लोग रहा करते थे और इनके खाने पीने का प्रबन्ध अलग अलग कई रसोई घरों में होता था. पर इस बटवारे के अनुसार इस रसोई में क़रीब बीस आश्रम-वासियों को भोजन कराना होता था. 'बा' अपनी रसोई में सिर्फ़ ऊपरी निगरानी ही नहीं किया करती थीं, बल्कि ख़ुद ही असल

گاندھی جی اور کستوربا

(بھائی جی رام چندرن)

گاندھی جی اپنے مضبوط ارادے کے لئے مشہور تھے. لوگ جیوں جیوں اُن کے ساتھ ادھک سے ادھک رہنے لگتے تھے وہ زیادہ سے زیادہ اُن کے شاسن کے پابند ہوتے جاتے تھے. لوگوں کو اپنی رائے آزاد رکھنے کو وہ روکتے نہ تھے، مگر آزاد رائے رکھتے ہوئے بھی لوگ گاندھی جی کی کسی بات کا ورودھ نہ کرتے تھے، کیوں کہ لوگوں کو جتنا وشواس اپنے اوپر تھا اُس سے زیادہ گاندھی جی پر تھا. لیکن ستیہ گرہ آشرم میں ایک پرانی ایسا بھی تھا جو اِس نیم کا پالن نہ کرتا تھا. یہ پرانی سدا اُن کے پاس رہنے والی اُن کی دھرم پتنی شری کستوربا تھیں. گاندھی کٹیا میں جو 'با' کا حصہ تھا اور جس میں رسوئی گھر بھی شامل تھا اُس پر اُنھیں کی پکی حکومت تھی. پر، بےچاری چھوٹی سی بوڑھی 'با' کے کندھوں پر وہ سب ذمّے داری بہت تھی: اُنھیں اپنے مہان پتی، اپنے بچوں پوتوں اور قریب بیس آشرم واسیوں کے لئے خود اپنے ہاتھ سے کھانا بنانا اور سب کو خود ہی کھلانا پڑتا تھا.

ویسے آشرم میں قریب دو سو لوگ رہا کرتے تھے اور اِن کے کھانے پینے کا پربندھ الگ الگ کئی رسوئی گھروں میں ہوتا تھا. پر اِس بٹوارے کے انوسار اِس رسوئی میں قریب بیس آشرم واسیوں کو بھوجن کرانا ہوتا تھا. 'با' اپنی رسوئی میں صرف اوپری نگرانی ہی نہیں کیا کرتی تھیں، بلکہ خود ہی اصل

भोजन बनाया करती थीं. हालाँकि उनके इस काम में मदद करने वाले भी रहा करते थे मगर ज्यादा बोझ उन्हीं पर रहा करता था. उन दिनों वह बहुत मेहनत किया करती थीं. उनके काम का ढंग भी निराला था. हाँ यह बात जरूर थी कि उनके नीचे काम करना हँसी खेल न था. वह अपने सहकारियों से बहुत डटकर काम लेती थीं. और खुद भी समय की पूरी, पाबन्दी के साथ अथक मेहनत किया करती थीं. साथ काम करने वालों से भी वह ऐसी ही उम्मीद रखती थीं. और आलस या लापरवाही करने वाले का गुजारा उनके साथ कभी न हो पाता था.

एक बार त्रावनकोर का एक लड़का 'बा' के साथ रसोई में रखा गया था. उसे काम जरा कठिन मालूम पड़ा फिर भी उसने तरक्की करली और 'बा' को भी उससे पूरा सन्तोष हो गया. बापू पाकशाला के कामों में दखल न देते हुए भी निगाह पूरी रखते थे. उस बालक को उन्होंने भी बधाई दी. गांधी जी अपनी पाकशाला की 'राजनीति' से भी उतने ही परिचित थे जितने कि देश की राजनीति से.

लेकिन एक मामला ऐसा था जिस पर कभी-कभी बापू और बा में विरोध पैदा हो जाया करता. ऐसे मौक़ों पर बापू थोड़े बहुत ढील पड़ जाया करते. क्योंकि न्याय 'बा' के पक्ष में होता. आश्रम में जो उन दिनों देश की राजनैतिक राजधानी बना हुआ था, अक्सर बहुत ऐसे मेहमान आ जाया करते थे जिनकी कोई आशा न होती थी. ऐसे मेहमान भी अलग-अलग रसोइयों में बांट दिये जाया करते थे. मगर बा के हिस्से में सदा ही दूसरों

بھوجن بنایا کرتی تھیں۔ حالاں کہ اُن کے اِس کام میں مدد کرنے والے بھی رہا کرتے تھے مگر زیادہ بوجھ اُنھیں پر رہا کرتا تھا۔ اُن دنوں وہ بہت محنت کیا کرتی تھیں۔ اُن کے کام کا ڈھنگ بھی نرالا تھا۔ ہاں یہ بات ضرور تھی کہ اُن کے نیچے کام کرنا ہنسی کھیل نہ تھا۔ وہ اپنے سہکاریوں سے بہت ڈٹ کر کام لیتی تھیں۔ اور خود بھی سمے کی پوری، پابندی کے ساتھ اتھک محنت کیا کرتی تھیں۔ ساتھ کام کرنے والوں سے بھی وہ ایسی ہی اُمید رکھتی تھیں۔ اور آلس یا لاپرواہی کرنے والے کا گزارا اُن کے ساتھ کبھی نہ ہو پاتا تھا۔

ایک بار تراونکور کا ایک لڑکا 'با' کے ساتھ رسوئی میں رکھا گیا تھا۔ اُسے کام ذرا کٹھن معلوم پڑا پھر بھی اُس نے ترقی کر لی اور 'با' کو بھی اُس سے پورا سنتوش ہو گیا۔ باپو پاک شالا کے کاموں میں دخل نہ دیتے ہوئے بھی نگاہ پوری رکھتے تھے۔ اس بالک کو اُنھوں نے بھی بدھائی دی۔ گاندھی جی اپنی پاک شالا کی 'راج نیتی' سے بھی اُتنے ہی پریچت تھے جتنے کہ دیش کی راج نیتی سے۔

لیکن ایک معاملہ ایسا تھا جس پر کبھی کبھی باپو اور 'با' میں ورودھ پیدا ہو جایا کرتا۔ ایسے موقعوں پر باپو تھوڑے بہت ڈھیلے پڑ جایا کرتے۔ کیوں کہ نیائے 'با' کے پکش میں ہوتا۔ آشرم میں جو اُن دنوں دیش کی راج نیتک راجدھانی بنا ہوا تھا، اکثر بہت ایسے مہمان آ جایا کرتے تھے جن کی کوئی آشا نہ ہوتی تھی۔ ایسے مہمان بھی الگ الگ رسوئیوں میں بانٹ دئے جایا کرتے تھے۔ مگر با کے حصے میں سدا ہی دوسروں

से ज्यादा मेहमान पड़ते थे. ऐसे ही मौक़ों पर जब बिना किसी पहले से ख़बर के बहुत से मेहमानों का बोझ उन पर आ जाता तब ही किसी समय वह बिगड़ उठतीं. सो भी सब के सामने नहीं. अकेले में, गांधी जी ऐसे मौक़ों पर बड़ी दीनता दिखाते और चतुराई से काम लेते थे, बल्कि ऐसे मौक़े पर बा से थोड़ा बहुत डरते भी.

एक दिन ऐसी ही एक घटना हुई. दोपहर को बा और उनके साथ काम करने वाले भोजन वग़ैरा करके निपट चुके थे. रसोई घर भी बन्द किया जा चुका था. बा जैसा कि स्वाभाविक था, थक चुकी थीं. शायद कुछ तबियत भी भारी थी. वह अपने कमरे में जाकर पड़ रहीं. गांधी जी रसोई घर में पहुँचे और उस लड़के को इशारे से बुलाया, क्योंकि वह भी जाने वाला ही था. उससे वह धीरे से कान में बोले कि बग़ल वाले कमरे में ही बा लेटी हैं, उनके आराम में कोई विघ्न न पड़े और यह भी कहा कि एक घंटे के अन्दर ही बहुत से मेहमान आने वाले हैं. मामूली मेहमान नहीं—ख़ास मेहमान जिनमें पंडित मोतीलाल नेहरू भी हैं. उनके लिये दोपहर के भोजन का प्रबन्ध होना है. लड़के ने बा के कमरे की ओर ज्यों ही देखा, बापू ओठों पर उंगली रखते हुए बोले—"उन्हें कष्ट न पहुँचाओ, कुसुम को बुला लाओ, आग जलाओ और साग भाजी काट कर रोटी बनाने के लिये आटा गूँधो, बा को तभी बुलाना जब उनकी ज़रूरत हो और देखो, उन्हें खिजाना मत. अगर बा मुझ पर ख़फ़ा न हुईं तो तुम्हें इनाम मिलेगा."

سے زیادہ مہمان پڑتے تھے۔ ایسے ہی موقعوں پر جب بنا کسی پہلے سے خبر کے بہت سے مہمانوں کا بوجھ اُن پر آجاتا تب ہی کسی سمے وہ بگڑ اٹھتیں، سو بھی سب کے سامنے نہیں، اکیلے میں، گاندھی جی ایسے موقعوں پر بڑی دینتا دکھاتے اور چترائی سے کام لیتے تھے، بلکہ ایسے موقع پر با سے تھوڑا بہت ڈرتے بھی۔

ایک دن ایسی ہی ایک گھٹنا ہوئی۔ دوپہر کو 'با' اور اُن کے ساتھ کام کرنے والے بھوجن وغیرہ کر کے نپٹ چکے تھے۔ رسوئی گھر بھی بند کیا جا چکا تھا۔ با جیسا کہ سوابھاوک تھا تھک چکی تھیں۔ شاید کچھ طبیعت بھی بھاری تھی۔ وہ اپنے کمرے میں جا کر پڑ رہیں۔ گاندھی جی رسوئی گھر میں پہنچے اور اُس لڑکے کو اشارے سے بلایا کیونکہ وہ بھی جانے والا ہی تھا۔ اُس سے وہ دھیرے سے کان میں بولے کہ بغل والے کمرے میں ہی 'با' لیٹی ہیں، اُن کے آرام میں کوئی وگھن نہ پڑے اور یہ بھی کہا کہ ایک گھنٹے کے اندر ہی بہت سے مہمان آنے والے ہیں۔ معمولی مہمان نہیں — خاص مہمان جن میں پنڈت موتی لال نہرو بھی ہیں۔ اُن کے لئے دوپہر کے بھوجن کا پربندھ ہونا ہے۔ لڑکے نے با کے کمرے کی اور جوں ہی دیکھا، باپو ہونٹھوں پر انگلی رکھتے ہوئے بولے — "انھیں کشٹ نہ پہنچاؤ، کسم کو بلا لاؤ، آگ جلاؤ اور ساگ بھاجی کاٹ کر روٹی بنانے کے لئے آٹا گوندھو، با کو تبھی بلانا جب اُن کی ضرورت ہو اور دیکھو، انھیں کھجانا مت۔ اگر با مجھ پر خفا نہ ہوئیں تو تمھیں انعام ملے گا۔"

उस लड़के की शकल किसी भोले साज़िशी की तरह हो रही थी. वह थोड़ा घबरा भी रहा था कि कहीं ऐसा न हो कि बा जाग उठें और उसे उनकी डांट सुननी पड़े.

कुसुम और उस बालक ने धीरे से चुप चाप रसोई घर का दरवाज़ा खोला. आग जलाई गई और साग सब्ज़ी वग़ैरह काटने के बाद आटा भी गूंधा जा चुका था और तब बदक़िस्मती से एक तश्तरी झनझनाती हुई ज़मीन पर गिर पड़ी. आवाज़ ने बा को जगा दिया. वह समझीं कि शायद आश्रम की बिल्ली रसोई घर में घुसी है और ऐसा सोचकर वह रसोई घर के अन्दर दौड़ कर गई. उन्हें वहाँ जो कुछ दिखाई पड़ा उससे वह भौंचक्की सी रह गईं और पूछने लगीं, "यह सब क्या हो रहा है?" उन्होंने यह सवाल ज़रा तीखी आवाज़ में किया था; कुसुम और उस लड़के ने सब हाल बता दिया. "मगर तुमने मुझे क्यों न बुलाया" बा ने पूछा "क्या तुम यह समझते हो कि मैं यह फ़ाज़िल काम करने के नाक़ाबिल हूं?"

लड़के ने फिर सफ़ाई देते हुए कहा, "नहीं बा जब सब तैयार हो जाता तो हम तुम्हें बुलाते." बा की अंगरेज़ी ज़रा गड़बड़ ही थी और उसी तरह इस बालक को गुजराती भी कम आती थी. मुस्कुराती हुई वह अपनी निराली अंगरेज़ी में बोलीं. "You also tired much. Why you think you can work more and I can do no extra work." (तुम भी तो काफ़ी थक गए थे ऐसा क्यों सोचते हो कि तुम बहुत ज़्यादा काम कर सकते हो और मैं थोड़ा सा ज़्यादा काम भी नहीं कर सकती.)

इसके बाद सारी बातें बाक़ायदा होती रहीं. बा जानती थीं

اُس لڑکے کی شکل کسی بھولے سازشی کی طرح ہو رہی تھی. وہ تھوڑا گھبرا بھی رہا تھا کہ کہیں ایسا نہ ہو کہ با جاگ اُٹھیں اور اُسے اُن کی ڈانٹ سُننی پڑے.

کُسُم اور اُس بالک نے دھیرے سے چُپ چاپ رسوئی گھر کا دروازہ کھولا. آگ جلائی گئی اور ساگ سبزی وغیرہ کاٹنے کے بعد آٹا بھی گوندھا جا چکا تھا اور تب بدقسمتی سے ایک طشتری جھنجھناتی ہوئی زمین پر گر پڑی. آواز نے با کو جگا دیا. وہ سمجھیں کہ شاید آشرم کی بلّی رسوئی گھر میں گھسی ہے اور ایسا سوچ کر وہ رسوئی گھر کے اندر دوڑ کر گئیں. اُنھیں وہاں جو کچھ دکھائی پڑا اُس سے وہ بھونچکی سی رہ گئیں اور پوچھنے لگیں، "یہ سب کیا ہو رہا ہے؟" اُنھوں نے یہ سوال ذرا تیکھی آواز میں کیا تھا؛ کُسُم اور اُس لڑکے نے سب حال بتا دیا. "مگر تم نے مجھے کیوں نہ بُلایا" با نے پوچھا "کیا تم یہ سمجھتے ہو کہ میں یہ فاضل کام کرنے کے ناقابل ہوں؟"

لڑکے نے پھر صفائی دیتے ہوئے کہا، "نہیں با جب سب تیار ہو جاتا تو ہم تمھیں بُلاتے." با کی انگریزی ذرا گڑبڑ ہی تھی اور اُسی طرح اِس بالک کو گجراتی بھی کم آتی تھی. مسکراتی ہوئی وہ اپنی نرالی انگریزی میں بولیں. "You also tired much. Why you think you can work more and I can do no extra work." (تم بھی تو کافی تھک گئے تھے ایسا کیوں سوچتے ہو کہ تم بہت زیادہ کام کر سکتے ہو اور میں تھوڑا سا زیادہ کام بھی نہیں کر سکتی).

اِس کے بعد ساری باتیں باقاعدہ ہوتی رہیں. با جانتی تھیں

कि यह सब प्रबन्ध गांधी जी ने ही कराया था. रात को जब सब मेहमान जा चुके और प्रार्थना भी समाप्त हो गई तो बा एकाएक बापू के पास पहुँचीं. इनकी आंखों में विनोद चमक रहा था और वह गांधी जी के सामने खड़ी थीं.

"आपने उनसे मेरे बिना अकेले काम करने के लिये क्यों कहा था? क्या आप मुझे बिलकुल आलसी समझते हैं?"

बापू ने भी उसी तरह मजाक भरे स्वर में जवाब दिया, "क्या तुम नहीं जानतीं बा! ऐसे मौक़ों पर मुझे तुम से डर लगने लगता है."

बा हँसने लगीं और वह स्वर्गीय हँसी शायद यह कह रही थी —"आप? और मुझसे डरते हैं?" और सच भी यही था. गांधी जी को शायद किसी का भय नहीं था लेकिन अगर कभी रहा भी होगा तो वह एक छोटी सी कमजोर औरत का जो उनकी ही स्त्री थी.

('गांधी गाथा' से)

کہ یہ سب پربندھ گاندھی جی نے ہی کرایا تھا۔ رات کو جب سب مہمان جا چکے اور پرارتھنا بھی سماپت ہو گئی تو با ایکایک باپو کے پاس پہنچیں۔ اِن کی آنکھوں میں ونود چمک رہا تھا اور وہ گاندھی جی کے سامنے کھڑی تھیں۔

"آپ نے اُن سے میرے بنا اکیلے کام کرنے کے لئے کیوں کہا تھا؟ کیا آپ مجھے بالکل آلسی سمجھتے ہیں؟"

باپو نے بھی اُسی طرح مذاق بھرے سور میں جواب دیا، "کیا تم نہیں جانتیں 'با'! ایسے موقعوں پر مجھے تم سے ڈر لگنے لگتا ہے۔"

با ہنسنے لگیں اور وہ سورگیہ ہنسی شاید یہ کہہ رہی تھی — "آپ؟ اور مجھ سے ڈرتے ہیں!" اور سچ بھی یہی تھا۔ گاندھی جی کو شاید کسی کا بھے نہیں تھا لیکن اگر کبھی رہا بھی ہوگا تو وہ ایک چھوٹی سی کمزور عورت کا جو اُن کی ہی استری تھی۔

('گاندھی گاتھا' سے)

मौ० मुहम्मद मियाँ मन्सूर अन्सारी

(भाई रतन लाल बंसल)

हजरत मौलाना उबेदुल्ला साहब सिन्धी की तरह मौलाना मुहम्मद मियाँ साहब मंसूर अंसारी भी वलीउल्लाही संगठन के उस आन्दोलन से ताल्लुक़ रखते हैं, जो वलीउल्लाही जमात के छटे इमाम शेख उल-हिन्द मौलाना महमूदुल हसन साहब ने सन् १९१५ की पिछली बड़ी लड़ाई के वक़्त शुरु किया था और सरकारी क़ाग़ज़ों व रौलट कमेटी की रिपोर्ट में जिसको 'सिल्कन लेटर्स कान्सप्रेसी' यानी 'रेशमी ख़तों की साज़िश' के अनोखे और रंगीन नाम से पुकारा गया है. रौलट कमेटी की रिपोर्ट में इस तहरीक का हीरो मौ० मुहम्मद मियाँ साहब को ही बताया गया है.

मौलाना मुहम्मद मियाँ साहब इस पुराने इन्क़लाबी संगठन से अपने बचपन में ही परिचित हो चुके थे क्योंकि इस संगठन के पाँचवें इमाम मौ० मुहम्मद क़ासिम साहब उन के सगे नाना थे. मशहूर है कि जब मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहब ने अपनी बेटी यानी मौलाना मुहम्मद मियाँ साहब की माँ की शादी की थी तब उनके पास शादी में ख़र्च करने और दहेज़ में देने के लिये एक पैसा भी नहीं था. लेकिन इस बात का न तो उनको कुछ भी रंज था और न इससे उनको कोई दिक़्क़त ही महसूस हुई. दहेज के वक़्त उन्होंने अपनी कुछ किताबें अपनी प्यारी बेटी के हाथों में देते हुये कहा था कि मेरी दौलत तो यही है और मैं उम्मीद करता हूँ कि अगर तू इसकी

مولانا محمد میاں منصور انصاری

(بھائی رتن لال بنسل)

حضرت مولانا عبید اللہ صاحب سندھی کی طرح مولانا محمد میاں صاحب منصور انصاری بھی ولی اللہی سنگٹھن کے اُس اندولن سے تعلق رکھتے ہیں، جو ولی اللہی جماعت کے چھٹے امام شیخ الہند مولانا محمود الحسن صاحب نے ۱۹۱۵ء کی پچھلی بڑی لڑائی کے وقت شروع کیا تھا اور سرکاری کاغذوں و رولٹ کمیٹی کی رپورٹ میں جس کو "سلکن لیٹرس کانسپریسی" یعنی "ریشمی خطوں کی سازش" کے انوکھے اور رنگین نام سے پکارا گیا ہے۔ رولٹ کمیٹی کی رپورٹ میں اس تحریک کا ہیرو مولانا محمد میاں صاحب کو ہی بتایا گیا ہے۔

مولانا محمد میاں صاحب اِس پُرانے انقلابی سنگٹھن سے اپنے بچپن میں ہی پریچت ہو چکے تھے کیوں کہ اِس سنگٹھن کے پانچویں امام مولانا محمد قاسم صاحب اُن کے سگے نانا تھے۔ مشہور ہے کہ جب مولانا محمد قاسم صاحب نے اپنی بیٹی یعنی مولانا محمد میاں صاحب کی ماں کی شادی کی تھی تب اُن کے پاس شادی میں خرچ کرنے اور دہیز میں دینے کے لئے ایک پیسہ بھی نہیں تھا۔ لیکن اِس بات کا نہ تو اُن کو کچھ بھی رنج تھا اور نہ اِس سے اُن کو کوئی دقت ہی محسوس ہوئی۔ دہیز کے وقت انھوں نے اپنی کچھ کتابیں اپنی پیاری بیٹی کے ہاتھوں میں دیتے ہوئے کہا تھا کہ میری دولت تو یہی ہے اور میں اُمید کرتا ہوں کہ اگر تو اِس کی

क़द्र करेगी, तो तुझे सचमुच इस दौलत से ही सच्चा सुख और आराम नसीब होगा. बेटी ने भी बिना किसी हिचक के इस नायाब दौलत को लेकर आँखों से लगा लिया.

कहा जा सकता है कि अपने नाना और अपनी माँ की यही भावनाएँ मौलाना मुहम्मद मियाँ साहब को भी विरासत में मिलीं जिसकी वजह से वह हमेशा दुनियावी लालचों से बचे रहे और देशभक्ति की राह में आने वाली तमाम मुसीबतें ख़ुशी ख़ुशी झेलते रहे.

मौलाना मुहम्मद मियाँ साहब के पिता मौ० अब्दुल्ला अंसारी अलीगढ़ यूनीवर्सिटी में मज़हबी तालीम के महकमे के नाज़िम थे और उस मशहूर ख़ानदान से ताल्लुक़ रखते थे, जिसका सिलसिला बादशाह औरंगज़ेब के ज़माने में होने वाले मशहूर सूफ़ी फ़क़ीर शाह अबुल मआली से मिलता है. कहा जाता है कि उस ज़माने में जब कि चारों तरफ़ तंग दिली का दौर दौरा था और इसलाम को इस शक्ल में दुनिया के सामने पेश किया जा रहा था, जिससे दूसरे मज़हब के लोग उससे डरने लगे थे, तब शाह अबुल मआली ने अपने उपदेशों में प्रेम और मुहब्बत की धारा बहाकर इस्लाम की बहुत बड़ी सेवा की थी. इस तरह मौ० मुहम्मद मियाँ साहब को फ़िर्क़ेवाराना तंगदिली के ख़िलाफ़ लड़ने और आपसी प्रेम का प्रचार करने के जज़बात भी ख़ानदानी विरासत में मिले थे.

अपने मुल्क की गुलामी और अंग्रेज़ी राज की बर्बरीयत से भी मौलाना मन्सूर अपने होश संभालने से पहिले ही वाक़िफ़ हो

قدر کرے گی، تو تجھے سچ مچ اِس دولت سے ہی سچا سکھ اور آرام نصیب ہوگا. بیٹی نے بھی بنا کسی ہچک کے اِس نایاب دولت کو لے کر آنکھوں سے لگا لیا.

کہا جاسکتا ہے کہ اپنے نانا اور اپنی ماں کی یہی بھاونائیں مولانا محمد میاں صاحب کو بھی وراثت میں ملیں جس کی وجہ سے وہ ہمیشہ دُنیاوی لالچوں سے بچے رہے اور دیش بھکتی کی راہ میں آنے والی تمام مصیبتیں خوشی خوشی جھیلتے رہے،

مولانا محمد میاں صاحب کے پتا مولانا عبداللہ انصاری علی گڑھ یونیورسٹی میں مذہبی تعلیم کے محکمے کے ناظم تھے اور اُس مشہور خاندان سے تعلق رکھتے تھے، جس کا سلسلہ بادشاہ اورنگ زیب کے زمانے میں ہونے والے مشہور صوفی فقیر شاہ ابوالمعالی سے ملتا ہے. کہا جاتا ہے کہ اُس زمانے میں جب کہ چاروں طرف تنگ دلی کا دَور دَورہ تھا اور اسلام کو اِس شکل میں دُنیا کے سامنے پیش کیا جا رہا تھا، جس سے دوسرے مذہب کے لوگ اُس سے ڈرنے لگے تھے تب شاہ ابوالمعالی نے اپنے اُپدیشوں میں پریم اور محبت کی دھارا بہاکر اسلام کی بہت بڑی سیوا کی تھی. اس طرح مولانا محمد میاں صاحب کو فرقہ وارانہ تنگ دلی کے خلاف لڑنے اور آپسی پریم کا پرچار کرنے کے جذبات بھی خاندانی وراثت میں ملے تھے.

اپنے مُلک کی غلامی اور انگریزی راج کی بربریت سے بھی مولانا منصور اپنے ہوش سنبھالنے سے پہلے ہی واقف

चुके थे. सन् १८५७ की मशहूर आज़ादी की लड़ाई में उनके नाना मौलाना क़ासिम साहब ने किस तरह हिस्सा लिया था और उसकी वजह से उनको और उनके खानदान को कैसी कैसी तकलीफ़ें उठानी पड़ी थीं. सय्यद हसन अनसारी साहब, जो ननिहाल के नाते मौलाना के एक क़रीबी बुज़ुर्ग होते थे और जिनकी बादशाह के दरबार में बहुत बड़ी इज़्ज़त थी. किस तरह अङ्गरेज़ों की गोलियों से शहीद हुए थे. इसकी कहानियां मौलाना को बचपन से ही सुनने को मिलीं थीं. इसके बाद जब होश संभाला, तो आप देवबन्द मदरसे में मौलाना महमूदुल हसन साहब के पास पढ़ने के लिये भेज दिये गये. रही सही कमी अब यहाँ पूरी हो गई और मज़हबी तालीम के साथ साथ आपने वली उल्लाही तहरीक के उसूलों और उसके पिछले इतिहास को भी पढ़ा और समझा. इसके बाद आप मौलाना महमूदुलहसन की इन्क़लाबी कौंसिल के एक खास मेम्बर बना लिये गये और मुल्क की आज़ादी के काम में पूरे ज़ोर शोर से हिस्सा लेने लगे.

सन् १९१४ में जब यूरोप में लड़ाई छिड़ी और मौलाना महमूदुलहसन साहब, इस मौक़े से फ़ायदा उठाने के लिये हिन्दुस्तान की आज़ादी की लड़ाई में दूसरे मुल्कों की मदद लेने के विचार से मक्के के लिये चले तो मौलाना मुहम्मद मियाँ साहब भी उनके साथ थे. यह यात्रा भी ऐसी अनोखी थी. जिसमें पग-पग पर गिरफ़्तारी का या किसी भी और मुसीबत के आ जाने का खतरा था, पर देशभक्तों का यह दल किसी न किसी तरह हिन्दुस्तान से निकल ही

ہو چکے تھے. ۱۸۵۷ء کی مشہور آزادی کی لڑائی میں اُن کے نانا مولانا قاسم صاحب نے کس طرح حصّہ لیا تھا اور اُس کی وجہ سے اُن کو اور اُن کے خاندان کو کیسی کیسی تکلیفیں اُٹھانی پڑی تھیں، سید حسن انصاری صاحب، جو ننھیال کے ناتے مولانا کے ایک قریبی بزرگ ہوتے تھے اور جن کی بادشاہ کے دربار میں بہت بڑی عزّت تھی، کس طرح انگریزوں کی گولیوں سے شہید ہوئے تھے؟ اِس کی کہانیاں مولانا کو بچپن سے ہی سُننے کو ملی تھیں۔ اِس کے بعد جب ہوش سنبھالا، تو آپ دیوبند مدرسے میں مولانا محمود الحسن صاحب کے پاس پڑھنے کے لئے بھیج دیئے گئے۔ رہی سہی کمی اب یہاں پوری ہو گئی اور مذہبی تعلیم کے ساتھ ساتھ آپ نے ولی اللّٰہی تحریک کے اُصولوں اور اُس کے پچھلے اتہاس کو بھی پڑھا اور سمجھا۔ اِس کے بعد آپ مولانا محمود الحسن کی انقلابی کونسل کے ایک خاص ممبر بنا لئے گئے اور ملک کی آزادی کے کام میں پورے زور شور سے حصہ لینے لگے۔

۱۹۱۴ء میں جب یورپ میں لڑائی چھڑی اور مولانا محمود الحسن صاحب، اِس موقع سے فائدہ اُٹھانے کے لئے ہندوستان کی آزادی کی لڑائی میں دوسرے ملکوں کی مدد لینے کے وچار سے مکّے کے لئے چلے تو مولانا محمد میاں صاحب بھی اُن کے ساتھ تھے۔ یہ یاترا بھی ایسی انوکھی تھی، جس میں پگ پگ پر گرفتاری کا یا کسی بھی اور مصیبت کے آجانے کا خطرہ تھا، پر دیش بھگتوں کا یہ دَل کسی نہ کسی طرح ہندوستان سے نکل ہی گیا

मक्का पहुँच कर मौलाना महमूदुलहसन साहब ने हजाज के गवर्नर ग़ालिब पाशासे मुलाक़ात की और हिन्दुस्तान की उत्तर पच्छिम की सरहद पर बसने वाले आजाद क़बीलों के नाम एक ख़त हासिल किया जिसका ज़िक्र रौलट कमेटी की रिपोर्ट में 'ग़ालिब नामा' के नाम से किया गया है. इस ख़त में आजाद क़बीलों को टर्की की हुकूमत की तरफ़ से यह यक़ीन दिलाया गया था कि अगर वह हिन्दुस्तान की आजादी की लड़ाई में मौलाना महमूदुलहसन साहब को मदद देंगे, तो टर्की की सरकार उनकी पूरी पूरी मदद करेगी. इस ख़त को हासिल करने के बाद मौलाना महमूदुलहसन साहब और उनके साथी मदीना पहुँचे, जिसमें कि वह मदीना के गवर्नर बसरी पाशा की मार्फ़त टर्की के लड़ाई के महकमे के वज़ीर अनवर पाशा से भी मुलाक़ात कर के उनसे भी आजाद क़बीलों के लिये इसी तरह का ख़त हासिल करलें. लेकिन मदीना पहुंचने पर कुछ ऐसी उलझनें पैदा होगईं. जिससे मालूम हुआ कि अभी अनवर पाशा से मुलाक़ात होने में काफ़ी दिन लग सकते हैं. दूसरी तरफ़ हालत यह थी कि मौलाना महमूदुलहसन साहब हिन्दुस्तान छोड़ने से बहुत पहिले ही मौलाना उबैदुल्ला साहब सिन्धी को काबुल रवाना कर चुके थे. जो वहाँ पर मौलाना के हुक्म का इन्तज़ार कर रहे थे. इस लिये फ़ैसला यह किया गया कि फ़िलहाल ग़ालिब पाशा के ख़त को ही किसी शख़्स के ज़रिये आजाद क़बीलों में पहुँचा दिया जाय और फिर इसके बाद वही शख़्स काबुल पहुंच कर इस तमाम काम की रिपोर्ट मौलाना उबैदुल्ला साहब सिन्धी को दे दे, जिससे वह भी अपना काम शुरू कर दें.

مکہ پہنچ کر مولانا محمود الحسن صاحب نے حجاز کے گورنر غالب پاشا سے ملاقات کی اور ہندستان کی اتر پچھم کی سرحد پر بسنے والے آزاد قبیلوں کے نام ایک خط حاصل کیا جس کا ذکر رولٹ کمیٹی کی رپورٹ میں 'غالب نامہ' کے نام سے کیا گیا ہے۔ اس خط میں آزاد قبیلوں کو ٹرکی کی حکومت کی طرف سے یہ یقین دلایا گیا تھا، کہ اگر وہ ہندستان کی آزادی کی لڑائی میں مولانا محمود الحسن صاحب کو مدد دیں گے، تو ٹرکی کی سرکار اُن کی پوری پوری مدد کرے گی۔ اس خط کو حاصل کرنے کے بعد مولانا محمود الحسن صاحب اور اُن کے ساتھی مدینہ پہنچے، جس میں کہ وہ مدینہ کے گورنر بصری پاشا کی معرفت ٹرکی کے لڑائی کے محکمے کے وزیر انور پاشا سے بھی ملاقات کر کے اُن سے بھی آزاد قبیلوں کے لئے اسی طرح کا خط حاصل کرلیں۔ لیکن مدینہ پہنچنے پر کچھ ایسی اُلجھنیں پیدا ہوگئیں، جس سے معلوم ہوا کہ ابھی انور پاشا سے ملاقات ہونے میں کافی دن لگ سکتے ہیں۔ دوسری طرف حالت یہ تھی کہ مولانا محمود الحسن صاحب ہندستان چھوڑنے سے بہت پہلے ہی مولانا عبید اللہ صاحب سندھی کو کابل روانہ کر چکے تھے، جو وہاں پر مولانا کے حکم کا انتظار کر رہے تھے۔ اس لئے فیصلہ یہ کیا گیا کہ فی الحال غالب پاشا کے خط کو ہی کسی شخص کے ذریعے آزاد قبیلوں میں پہنچا دیا جائے اور پھر اس کے بعد وہی شخص کابل پہنچ کر اس تمام کام کی رپورٹ مولانا عبید اللہ صاحب سندھی کو دے دے، جس سے وہ بھی اپنا کام شروع کر دیں۔

यह फ़ैसला तो कर लिया गया, पर सवाल यह था कि यह काम सौंपा किसे जाय ? बहुत देर सोचने विचारने के बाद आख़िर मौलाना महमूदुलहसन साहब ने फ़ैसला किया कि यह काम सिर्फ़ मौलाना मुहम्मद मियाँ साहब ही पूरा कर सकते हैं. उन्होंने मौलाना मुहम्मद मियाँ साहब से यह बात कही, और मौलाना ने ख़ुशी ख़ुशी इस काम को पूरा करने का भार अपने सर ले लिया. इस काम में जो ख़तरे थे, उनसे मुहम्मद मियाँ साहब बेख़बर नहीं थे. वह जानते थे कि ख़ास हमारे ही क़ाफ़िले में कुछ अंग्रेज़ों के ख़ुफ़िया भी चल रहे हैं. जो हिन्दुस्तान का किनारा पड़ने से पहिले ही यह तमाम बातें हिन्दुस्तान की हकूमत तक पहुँचा देंगे, फिरभी उन्होंने इसकी कोई परवाह नहीं की और उस ख़त को लेकर हिन्दुस्तान चल दिये.

मौलाना मुहम्मद मियाँ साहब 'ग़ालिब नामा' के साथ हिन्दुस्तान आये. अंग्रेज़ हकूमत को भी इसकी ख़बर लग चुकी थी, इस लिये उनको फँसाने के लिये पूरा जाल बिछा लिया गया था. पर मौलाना ने ऐसी होशियारी से काम किया कि वह तमाम जाल बिछा का बिछा रह गया और मौलाना पूरे हिन्दुस्तान को पार करके सरहद के आज़ाद क़बीलों में जा पहुँचे. इतना ही नहीं, वह रास्ते में 'ग़ालिब नामा' की बहुत सी कापियाँ भी बाँटते गये, जिससे मुल्क के लोग भी जान जायँ कि हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिये इस तरह की कोशिश की जा रही है और वह भी उस मौक़े के लिये अभी से तय्यारी शुरू कर दें.

'ग़ालिब नामा' लेकर मौलाना मुहम्मद मियाँ साहब हाजी फ़ज़ल

یہ فیصلہ تو کر لیا گیا، پر سوال یہ تھا کہ یہ کام سونپا کسے جائے؟ بہت دیر سوچنے وچارنے کے بعد آخر مولانا محمود الحسن صاحب نے فیصلہ کیا کہ یہ کام صرف مولانا محمد میاں صاحب ہی پورا کر سکتے ہیں۔ انھوں نے مولانا محمد میاں صاحب سے یہ بات کہی۔ اور مولانا نے خوشی خوشی اِس کام کو پورا کرنے کا بار اپنے سر لے لیا۔ اِس کام میں جو خطرے تھے۔ ان سے محمد میاں صاحب بے خبر نہیں تھے۔ وہ جانتے تھے کہ خاص ہمارے ہی قافلے میں کچھ انگریزوں کے خفیہ بھی چل رہے ہیں۔ جو ہندستان کا کنارہ پڑنے سے پہلے ہی یہ تمام باتیں ہندستان کی حکومت تک پہنچا دیں گے، پھر بھی انھوں نے اِس کی کوئی پرواہ نہیں کی اور اُس خط کو لے کر ہندستان چل دئے۔

مولانا محمد میاں صاحب غالب نامہ کے ساتھ ہندستان آئے۔ انگریز حکومت کو بھی اِس کی خبر لگ چکی تھی۔ اِس لئے اُن کو پھنسانے کے لئے پورا جال بچھا لیا گیا تھا۔ پر مولانا نے ایسی ہوشیاری سے کام کیا کہ وہ تمام جال بچھا کا بچھا رہ گیا اور مولانا پورے ہندستان کو پار کرکے سرحد کے آزاد قبیلوں میں جا پہنچے۔ اِتنا ہی نہیں، وہ راستے میں 'غالب نامہ' کی بہت سی کاپیاں بھی بانٹتے گئے۔ جس سے ملک کے لوگ بھی جان جائیں کہ ہندستان کی آزادی کے لئے اِس طرح کی کوشش کی جا رہی ہے اور وہ بھی اُس موقع کے لئے ابھی سے تیاری شروع کر دیں۔

'غالب نامہ' لے کر مولانا محمد میاں صاحب حاجی فضل

वाहिद साहब (हाजी तुरँगज़ई) के पास पहुंचे. उनके सामने अपनी पूरी स्कीम रक्खी. हाजी फ़ज़ल वाहिद साहब इस स्कीम की बहुत सी बातें तो पहले से ही जानते थे, क्योंकि वह सन् १९०९ से ही देवबन्द मदरसे और मौलाना महमूदुलहसन साहब से अपना ताल्लुक़ क़ायम कर चुके थे. इसीलिये उन्होंने अंग्रेज़ों के साथ सरहद पर लड़ाई भी शुरू कर दी थी 'ग़ालिब नामा' पाने के बाद हाजी फ़ज़ल वाहिद साहब ने और भी ज़ोर शोर से अपनी फ़ौजों की भर्ती शुरू कर दी और इस में उनको कामयाबी भी काफ़ी हुई. मौलाना मुहम्मद मियाँ साहब ने भी हाजी साहब के काम में बहुत बड़ी मदद की और कई लड़ाइयों में भी हिस्सा लिया, लेकिन इसके बाद वह काबुल के लिये चल दिये. क्योंकि काबुल के शाह अमीर हबीबुल्ला साहब के नाम भी उनके पास कुछ ख़त थे. जो उनको अमीर तक पहुँचाने थे और जिनके सहारे उनको उम्मीद थी कि काबुल की सरकार से वह काफ़ी मदद हासिल कर लेंगे.

मौलाना मुहम्मद मियाँ साहब ने काबुल पहुंच कर अमीर हबीबुल्ला साहब के पास वह ख़त पहुँचा दिये. वह और मौलाना उबैदुल्ला साहबके साथ मिल कर काम करने लगे. मौलाना उबैदुल्ला ने कुछ ही दिन बाद जब हिन्दुस्तान की पहली आरज़ी आज़ाद हकूमत बनाई, गई तो मौलाना मुहम्मद मियाँ साहब ने उसमें बहुत बड़ा हिस्सा लिया. यह हकूमत इसलिये बनाई गई थी, जिससे उसके ज़रिये टर्की, अफ़ग़ानिस्तान और जर्मनी से मदद लेकर हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ी हकूमत के ख़िलाफ़ लड़ाई शुरू

واحد صاحب (حاجی ترنگ زئی) کے پاس پہنچے۔ اُن کے سامنے اپنی پوری اسکیم رکھی۔ حاجی فضل واحد صاحب اِس اسکیم کی بہت سی باتیں تو پہلے سے ہی جانتے تھے، کیوں کہ وہ ۱۹۰۹ء سے ہی دیوبند مدرسے اور مولانا محمود الحسن صاحب سے اپنا تعلق قایم کر چکے تھے۔ اِسی لئے اُنھوں نے انگریزوں کے ساتھ سرحد پر لڑائی بھی شروع کر دی تھی۔ 'غالب نامہ' پانے کے بعد حاجی فضل واحد صاحب نے اور بھی زور شور سے اپنی فوجوں کی بھرتی شروع کر دی اور اِس میں اُن کو کامیابی بھی کافی ہوئی۔ مولانا محمد میاں صاحب نے بھی حاجی صاحب کے کام میں بہت بڑی مدد کی اور کئی لڑائیوں میں بھی حصّہ لیا، لیکن اِس کے بعد وہ کابل کے لئے چل دئے، کیوں کہ کابل کے شاہ امیر حبیب اللہ صاحب کے نام بھی اُن کے پاس کچھ خط تھے، جو اُن کو امیر تک پہنچانے تھے اور جن کے سہارے اُن کو اُمید تھی کہ کابل کی سرکار سے وہ کافی مدد حاصل کر لیں گے۔

مولانا محمد میاں صاحب نے کابل پہنچ کر امیر حبیب اللہ صاحب کے پاس وہ خط پہنچا دئے۔ وہ اور مولانا عبید اللہ صاحب کے ساتھ مل کر کام کرنے لگے۔ مولانا عبید اللہ نے کچھ ہی دن بعد جب ہندستان کی پہلی عارضی حکومت بنائی گئی تو مولانا محمد میاں صاحب نے اُس میں بہت بڑا حصّہ لیا۔ یہ حکومت اِس لئے بنائی گئی تھی، جس سے اُس کے ذریعے ٹرکی، افغانستان اور جرمنی سے مدد لے کر ہندستان میں انگریزی حکومت کے خلاف لڑائی شروع

कर दी जाय. लेकिन अमीर हबीबुल्ला ने इस काम में कोई मदद नहीं की, इस लिये यह हकूमत कोई खास काम नहीं कर सकी. मौलाना मुहम्मद मियाँ साहब के दिल को इसमें इतना धक्का लगा और अमीर हबीबुल्ला के वह इतने ज्यादा खिलाफ़ हो गये कि काबुल का जो संगठन अमीर को तख्त से उतारने की कोशिश कर रहा था उसमें उन्होंने खुले आम हिस्सा लेना शुरू कर दिया. नतीजा यह हुआ कि अमीर उनसे नाराज़ हो गये और जब अंग्रेजों ने मुहम्मद मियाँ साहब को गिरफ़्तार करने की इजाज़त अमीर से माँगी, तो अमीर ने उनको फ़ौरन इजाज़त दे दी. लेकिन अमीर हबीबुल्ला के छ टे भाई नसरुल्ला खाँ साहब भी, जो अफ़ग़ानिस्तान के सबसे बड़े वज़ीर थे और अमीर की अंग्रेज परस्ती से तंग आकर उनको गद्दी से अलग कर देना चाहते थे, मौलाना मुहम्मद मियाँ साहब के हामी थे. इसका नतीजा यह हुआ कि इस हुकम की खबर जैसे ही नसरुल्ला खाँ को मिली उन्होंने अपनी मोटर के ज़रिये मौलाना मुहम्मद मियाँ साहब को चुपचाप अफ़ग़ानिस्तान के उत्तरी पहाड़ों में पहुँचा दिया और अंग्रेज़ लाख सर पटकने पर भी मौलाना को गिरफ़्तार न कर सके.

अफ़ग़ानिस्ताम के उत्तरी पहाड़ों से २३ दिन तक पैदल चल कर मौलाना बुखारा की हद में पहुंचे और एक दिन सरहदी पहरेदारों की आँखें बचा कर चुपचाप बुखारा में दाखिल हो गये. इसके कुछ ही दिन बाद जब अमीर हबीबुल्ला क़त्ल कर दिये गये और अमानुल्ला खाँ काबुल के तख्त पर बैठे, तब मौलाना मुहम्मद मियाँ साहब को काबुल की इस नई हकूमत ने काबुल

کردی جائے. لیکن امیر حبیب اللہ نے اِس کام میں کوئی مدد نہیں کی، اِس لئے یہ حکومت کوئی خاص کام نہیں کرسکی. مولانا محمد میاں صاحب کے دل کو اِس سے اِتنا دھکا لگا اور امیر حبیب اللہ کے وہ اِتنے زیادہ خلاف ہوگئے کہ کابل کا جو سنگٹھن امیر کو تخت سے اُتارنے کی کوشش کررہا تھا اُس میں اُنھوں نے کھلے عام حصّہ لینا شروع کردیا. نتیجہ یہ ہوا کہ امیر اُن سے ناراض ہوگئے اور جب انگریزوں نے محمد میاں صاحب کو گرفتار کرنے کی اجازت امیر سے مانگی، تو امیر نے اُن کو فوراً اجازت دے دی. لیکن امیر حبیب اللہ کے چھوٹے بھائی نصراللہ خاں صاحب بھی، جو افغانستان کے سب سے بڑے وزیر تھے اور امیر کی انگریز پرستی سے تنگ آکر اُن کو گدّی سے الگ کردینا چاہتے تھے، مولانا محمد میاں صاحب کے حامی تھے. اِس کا نتیجہ یہ ہوا کہ اس حکم کی خبر جیسے ہی نصراللہ خاں کو ملی اُنھوں نے اپنی موٹر کے ذریعے مولانا محمد میاں صاحب کو چپ چاپ افغانستان کے اُتری پہاڑوں میں پہنچادیا اور انگریز لاکھ سر پٹکنے پر بھی مولانا کو گرفتار نہ کرسکے

افغانستان کے اُتری پہاڑوں سے ۲۳ دن تک پیدل چل کر مولانا بخارا کی حد میں پہنچے اور ایک دن سرحدی پہرے داروں کی آنکھیں بچاکر چپ چاپ بخارا میں داخل ہوگئے. اِس کے کچھ ہی دن بعد جب امیر حبیب اللہ قتل کردئے گئے اور امان اللہ خاں کابل کے تخت پر بیٹھے، تب مولانا محمد میاں صاحب کو کابل کی اِس نئی حکومت نے کابل

वापस बुला लिया. मौलाना खुशी खुशी काबुल वापस आये और अफ़ग़ानिस्तान के राजकाज को चलाने में अमीर अमानुल्ला ख़ाँ की मदद करने लगे. लेकिन अपने देश की आज़ादी को वह नहीं भूल सके. इसका नतीजा यह हुआ कि कुछ ही दिनों में अमानुल्ला ख़ाँ ने हिन्दुस्तान पर हमला कर दिया. यह हमला मौलाना मुहम्मद मियाँ साहब और मौलाना उबैदुल्ला सिन्धी साहब की सलाह से किया गया था और सरहद का वह पूरा संगठन, जिसकी कमान हाजी तुरंगज़ई के हाथ में थी. इस वक़्त भी अफ़ग़ानिस्तान की पूरी मदद कर रहा था. लेकिन हवाई जहाज़ वग़ैरह न होने से अफ़ग़ान फ़ौजें ज़्यादा आगे न बढ़ सकीं. और अफ़ग़ानिस्तान अपनी मुकम्मल आज़ादी मंज़ूर करा कर वापस लौट गया. इस तरह मौलाना को एक बार फिर मायूसी का सामना करना पड़ा. लेकिन इस पर भी वह हिम्मत हार कर बैठ नहीं गये और उन्होंने अपने काम को जारी रखने का ही फ़ैसला किया.

अफ़ग़ानिस्तान की यह लड़ाई ख़त्म होने के बाद मौलाना उबैदुल्ला सिन्धी को काबुल छोड़कर चला जाना पड़ा. मौलाना मुहम्मद मियाँ साहब के लिये यह भी एक बहुत बड़ा सदमा था क्योंकि पिछले दसियों बरसों से दोनों एक दूसरे के कन्धे से कन्धा मिला कर देश की आज़ादी की लड़ाई लड़ रहे थे. मुसीबतों से भरी हुई न जाने कितनी घड़ियाँ दोनों ने साथ साथ बिताई थी और जब कि नाकामयाबी और निराशा ने उनके दिलों पर चोट की थी तब उन्होंने एक दूसरे को तसल्ली दी थी. लेकिन आज, जबकि अपने मुल्क में

واپس بلا لیا. مولانا خوشی خوشی کابل واپس آئے اور افغانستان کے راج کاج کو چلانے میں امیر امان اللہ خاں کی مدد کرنے لگے. لیکن اپنے دیش کی آزادی کو وہ نہیں بھول سکے. اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ کچھ ہی دنوں میں امان اللہ خاں نے ہندستان پر حملہ کر دیا. یہ حملہ مولانا محمد میاں صاحب اور مولانا عبید اللہ سندھی صاحب کی صلاح سے کیا گیا تھا اور سرحد کا وہ پورا سنگٹھن، جس کی کمان حاجی ترنگ زئی کے ہاتھ میں تھی، اس وقت بھی افغانستان کی پوری مدد کر رہا تھا، لیکن ہوائی جہاز وغیرہ نہ ہونے سے افغانی فوجیں زیادہ آگے نہ بڑھ سکیں. اور افغانستان اپنی مکمل آزادی منظور کرا کر واپس لوٹ گیا. اس طرح مولانا کو ایک بار پھر مایوسی کا سامنا کرنا پڑا، لیکن اس پر بھی وہ ہمت ہار کر بیٹھ نہیں گئے اور انھوں نے اپنے کام کو جاری رکھنے کا ہی فیصلہ کیا.

افغانستان کی یہ لڑائی ختم ہونے کے بعد مولانا عبید اللہ سندھی کو کابل چھوڑ کر چلا جانا پڑا. مولانا محمد میاں صاحب کے لئے یہ بھی ایک بہت بڑا صدمہ تھا کیونکہ پچھلے دسیوں برسوں سے دونوں ایک دوسرے کے کندھے سے کندھا ملا کر دیش کی آزادی کی لڑائی لڑ رہے تھے. مصیبتوں سے بھری ہوئی نہ جانے کتنی گھڑیاں دونوں نے ساتھ ساتھ بتائی تھیں اور جبکہ ناکامیابی اور نراشا نے ان کے دلوں پر چوٹ کی تھی تب انھوں نے ایک دوسرے کو تسلی دی تھی. لیکن آج جب کہ اپنے ملک میں

लौटने के दर्वाज़े उनके लिये बन्द हो चुके थे. तब वह क़रीब क़रीब हमेशा के लिये ही बिछुड़ रहे थे. पर देशभक्ति की राह में क्या नहीं सहना पड़ता. मौलाना ने यह भी सहा और एक दिन अपने दिल पर पत्थर रख कर अपने इस प्यारे दोस्त को विदा कर आये।

इसके बाद मौलाना मुहम्मद मियाँ साहब अंक़ोरा में अफ़ग़ान दूतावास के एक बड़े अफ़सर बना कर भेजे गये. वहीं आपने काफ़ी दिनों तक काम किया. लेकिन एक दिन आप अपने कुछ और साथियों के साथ रूस के जंगलों में गिरफ़्तार कर लिये गये. वहाँ आपको क़रीब तीन महीने तक ताशक़न्द के जेल ख़ाने में रहना पड़ा. इसके बाद आपका मुक़द्दमा हुआ, जिसमें आपको फांसी की सज़ा सुना दी गई, लेकिन ताशक़न्द के एक बड़े अफ़सर सरदार अब्दुल रसूल पर आपकी शख़्सियत का इतना असर पड़ा कि उसने आपकी रिहाई के लिये पूरी तरह कोशिश की. इसका नतीजा यह हुआ कि आप रिहा कर दिये गये. इस तरह आप एक बार फिर फाँसी के तख़्ते पर चढ़ते चढ़ते बचे.

ताशक़न्द की जेल से रिहा होने के बाद आप अफ़ग़ानिस्तान वापस लौटे. लेकिन जल्दी ही एक राजनैतिक मिशन पर अफ़ग़ान सरकार ने आपको रूस भेज दिया. जहाँ आप लेनिन व रूस के दूसरे बड़े बड़े लीडरों से मिले. इसके बाद आप अंक़ोरा के अफ़ग़ान दूतावास में सबसे बड़े अफ़सर बना कर भेजे गये. इस ज़माने में समरना की फ़तह पर अंक़ोरा में जो जलसा हुआ था उसमें आपने अफ़ग़ानी सफ़ीर (दूत) की हैसियत से तक़रीर की थी.

لوٹنے کے دروازے اُن کے لئے بند ہو چکے تھے۔ تب وہ قریب قریب ہمیشہ کے لئے ہی بچھڑ رہے تھے پر دیش بھگتی کی راہ میں کیا نہیں سہنا پڑتا۔ مولانا نے یہ بھی سہا اور ایک دن اپنے دل پر پتھر رکھ کر اپنے اِس پیارے دوست کو وداع کر آئے۔

اِس کے بعد مولانا محمد میاں صاحب انقورا میں افغان دوتاواس کے ایک بڑے افسر بنا کر بھیجے گئے۔ وہیں آپ نے کافی دنوں تک کام کیا۔ لیکن ایک دن آپ اپنے کچھ اور ساتھیوں کے ساتھ روس کے جنگلوں میں گرفتار کر لئے گئے۔ وہاں آپ کو قریب تین مہینے تک تاشقند کے جیل خانے میں رہنا پڑا۔ اِس کے بعد آپ کا مقدمہ ہوا، جس میں آپ کو پھانسی کی سزا سنا دی گئی، لیکن تاشقند کے ایک بڑے افسر سردار عبد الرسول پر آپ کی شخصیت کا اِتنا اثر پڑا کہ اُس نے آپ کی رہائی کے لئے پوری طرح کوشش کی۔ اِس کا نتیجہ یہ ہوا کہ آپ رہا کر دئے گئے۔ اِس طرح آپ ایک بار پھر پھانسی کے تختے پر چڑھتے چڑھتے بچے۔

تاشقند کی جیل سے رہا ہونے کے بعد آپ افغانستان واپس لوٹے۔ لیکن جلدی ہی ایک راجنیتک مشن پر افغان سرکار نے آپ کو روس بھیج دیا، جہاں آپ لینن و روس کے دوسرے بڑے بڑے لیڈروں سے ملے۔ اِس کے بعد آپ انقورہ کے افغان دوتاواس میں سب سے بڑے افسر بنا کر بھیجے گئے۔ اِس زمانے میں سمرنا کی فتح پر انقورہ میں جو جلسہ ہوا تھا اُس میں آپ نے افغانی سفیر (دوت) کی حیثیت سے تقریر کی تھی۔

इसी ज़माने में आप काज़िम कुरी बक्र पाशा, जमाल पाशा, रऊफ़बे और अली शकरीबे वग़ैरह टर्की के बड़े बड़े नेताओं के सम्पर्क में आये. इत्तिफ़ाक़ से यह सभी नेता उस पार्टी के थे. जो मुस्तफ़ा कमाल के ख़िलाफ़ थी. इसलिये मुस्तफ़ा कमाल से आपकी कभी नहीं निभ सकी.

अंक़ोरा से वापस आने के बाद आप कुछ दिनों तक अफ़ग़ानिस्तान के सियासी महकमे में एक बड़े अफ़सर की हैसियत से काम करते रहे और फिर उसके बाद आपको एजूकेशन के महकमे में डाइरेक्टर का पद दे दिया गया. जिस पर आप उस ज़माने तक रहे, जब तक अफ़ग़ानिस्तान के तख़्त पर अमानुल्ला ख़ाँ रहे. लेकिन इसके बाद ही अफ़ग़ानिस्तान में एक तूफ़ान उठा और बच्चा सक़्क़ा ने अपनी हुकूमत क़ायम कर ली. अंग्रेज़ों की पालिसी क्या क्या कर सकती है, उसका वह एक हैरत में डाल देने वाला नमूना था. जब कि एक मामूली डाकू काबुल के तख़्त पर बादशाह की हैसियत से बैठ कर हुकूमत कर रहा था. बच्चा सक़्क़ा चाहता था कि उसे कुछ ऐसे लोग मिल जायँ. जिनका आम लोगों पर असर हो और जिनमें राजकाज चलाने की भी क़ाबलियत हो. इस लिये उसने मौलाना मुहम्मद मियाँ साहब को अफ़ग़ान पार्लियामेन्ट का प्रेसीडेन्ट बनाना चाहा. लेकिन मुहम्मद मियाँ साहब जानते थे कि बच्चा सक़्क़ा की किसी भी तरह की मदद करना अंग्रेज़ों को मदद देना है. इसलिये उन्होंने प्रेसीडेन्ट बनना नामंज़ूर कर दिया. इसका नतीजा वही हुआ जो होना चहिये था. यानी मौलाना गिरफ़्तार कर लिये गये और उनको फाँसी का हुक्म सुना

اسی زمانے میں آپ کاظم کری بقر پاشا، جمال پاشا، رؤف بے اور علی شکری بے وغیرہ ٹرکی کے بڑے بڑے نیتاؤں کے سمپرک میں آئے۔ اتفاق سے یہ سبھی نیتا اُس پارٹی کے تھے، جو مصطفیٰ کمال کے خلاف تھی، اس لئے مصطفیٰ کمال سے آپ کی کبھی نہیں نبھ سکی۔

انقرہ سے واپس آنے کے بعد آپ کچھ دنوں تک افغانستان کے سیاسی محکمے میں ایک بڑے افسر کی حیثیت سے کام کرتے رہے اور پھر اس کے بعد آپ کو ایجوکیشن کے محکمے میں ڈائرکٹر کا پد دے دیا گیا، جس پر آپ اس زمانے تک رہے جب تک افغانستان کے تخت پر امان اللہ خاں رہے۔ لیکن اس کے بعد ہی افغانستان میں ایک طوفان اُٹھا اور بچہ سقہ نے اپنی حکومت قائم کرلی۔ انگریزوں کی پالیسی کیا کیا کرسکتی ہے، اس کا وہ ایک حیرت میں ڈال دینے والا نمونہ تھا، جبکہ ایک معمولی ڈاکو کابل کے تخت پر بادشاہ کی حیثیت سے بیٹھ کر حکومت کر رہا تھا۔ بچہ سقہ چاہتا تھا کہ اُسے کچھ ایسے لوگ مل جائیں، جن کا عام لوگوں پر اثر ہو اور جن میں راج کاج چلانے کی بھی قابلیت ہو۔ اس لئے اس نے مولانا محمد میاں صاحب کو افغان پارلیمنٹ کا پریسیڈنٹ بنانا چاہا، لیکن محمد میاں صاحب جانتے تھے کہ بچہ سقہ کی کسی بھی طرح کی مدد کرنا انگریزوں کو مدد دینا ہے۔ اس لئے انھوں نے پریسیڈنٹ بننا نامنظور کردیا۔ اس کا نتیجہ وہی ہوا جو ہونا چاہئے تھا۔ یعنی مولانا گرفتار کرلئے گئے اور اُن کو پھانسی کا حکم سُنا

दिया गया एक बार फिर मौलाना के सर पर फाँसी का रस्सा भूलने लगा, लेकिन मौलाना ऐसी आसानी से फाँसी पर चढ़जाने वाले जीव होते, तो अभी तक न जाने कितनी बार फाँसी पर चढ़ चुके होते. उन्होंने एक बार फिर जुगुत लगाई, पहरेदारों को मिलाया और एक रात को चुपचाप क़ैदख़ाने की दीवाल लाँघ कर सरहदी इलाक़े की तरफ़ चल दिये. क्योंकि इस इलाक़े में आपकी पुरानी जान पहिचान थी. छिपते छिपाते आप 'बाजाड़' आ पहुँचे और वहाँ तब तक रहे. जब तक बच्चा सक़्क़ा की हकूमत बिल्कुल ही ख़त्म न हो गई. इसके बाद आप फिर काबुल लौट गये.

इस तरह हमारे देश के इस देशभक्त सपूत ने अपने देश की सियासत के साथ साथ दूसरे दूसरे मुल्कों की सियासत में भी पूरा हिस्सा लिया

न जाने कितने बड़े बड़े इंक़लाब उन्होंने अपनी आखों से देखे थे. सन १९१५ में जब अरब में आज़ादी की लड़ाई चल रही थी, तब आप अरब में थे. इसके बाद जब अफ़ग़ानिस्तान में अंग्रेज़ों के असर और उनके अधिकारों के ख़िलाफ़ इन्क़लाब उठा. तो उसमें आपने ख़ास हिस्सा लिया और मुसीबतें झेलीं. फिर जब बुख़ारा में क्रान्ति की आग सुलगी. तो आप वहीं थे. रूस की मशहूर लाल क्रान्ति के वक़्त आप ताशक़ंद, मास्को, बाकू, बातूम और तिफ़्लस में घूम रहे थे. सन १९२१-२२ में जब तुर्की से ख़िलाफ़त हटी और तुर्की का नया जनम हुआ. तो आप वहाँ मौजूद थे.

इसी तरह न जाने कितने मुल्कों के क्रान्तकारी नेताओं में से भी आपके ताल्लुक़ात थे. ट्रिपोलीटेनियाके मशहूर क्रान्तिकारी नेता शेख़

دیا گیا۔ ایک بار پھر مولانا کے سر پر پھانسی کا رسا جھولنے لگا۔ لیکن مولانا ایسی آسانی سے پھانسی پر چڑھ جانے والے جیو ہوتے، تو ابھی تک نہ جانے کتنی بار پھانسی پر چڑھ چکے ہوتے۔ انھوں نے ایک بار پھر جگت لگائی، پہرے داروں کو ملایا اور ایک رات کو چپ چاپ قید خانے کی دیوال لانگھ کر سرحدی علاقے کی طرف چل دیے، کیوں کہ اس علاقے میں آپ کی پرانی جان پہچان تھی۔ چھپتے چھپاتے آپ 'باجوڑ' آ پہنچے اور وہاں تب تک رہے، جب تک بچہ سقہ کی حکومت بالکل ہی ختم نہ ہو گئی۔ اس کے بعد آپ پھر کابل لوٹ گئے۔

اس طرح ہمارے دیش کے اس دیش بھگت سپوت نے اپنے دیش کی سیاست کے ساتھ ساتھ دوسرے دوسرے ملکوں کی سیاست میں بھی پورا حصہ لیا۔

نہ جانے کتنے بڑے بڑے انقلاب انھوں نے اپنی آنکھوں سے دیکھے تھے۔ ۱۹۱۵ء میں جب عرب میں آزادی کی لڑائی چل رہی تھی تب آپ عرب میں تھے۔ اس کے بعد جب افغانستان میں انگریزوں کے اثر اور ان کے ادھکاروں کے خلاف انقلاب اٹھا تو اس میں آپ نے خاص حصہ لیا اور مصیبتیں جھیلیں۔ پھر جب بخارا میں کرانتی کی آگ سلگی، تو آپ وہیں تھے۔ روس کی مشہور لال کرانتی کے وقت آپ تاشقند، ماسکو، باکو، باطوم اور طفلس میں گھوم رہے تھے۔ ۲۲-۱۹۲۱ء میں جب ترکی سے خلافت ہٹی اور ترکی کا نیا جنم ہوا، تو آپ وہاں موجود تھے۔

اسی طرح نہ جانے کتنے ملکوں کے کرانتی کاری نیتاؤں میں سے بھی آپ کے تعلقات تھے۔ ٹریپولی ٹینیا کے مشہور کرانتی کاری نیتا شیخ

अहमद सनूसी, मिस्र की आज़ादी की लड़ाई के हीरो अल्लामा अब्दुल अज़ीज़ चश्तेशी और कुर्दस्तान की आज़ादी के लिये अपना सब कुछ दाँव पर लगा देने वाले शेख़ महमूद सईद कुर्दी आपके ख़ास दोस्तों में से थे. इसी तरह हिन्दुस्तान के बीसियों जिलावतन देशभक्तों को आपसे मदद मिलती रहती थी. मिसाल के लिये जब आप अंक़ोरा के दूतावास में थे, तब मौलाना अब्दुल हन्नान साहब अमृतसरी और मौलाना मौला बख़्श साहब नगीनवी महीनों तक आपके मेहमान रहे. असल बात तो यह है कि कोई भी ऐसा शख़्स, जो देशभक्त हो आपके लिये सगे भाई की तरह प्यारा हो जाता था.

सन् १९३७ में जब हिन्दोस्तान के सूबों में काँग्रेस सरकारें बनीं, तब आपसे भी कहा गया कि आप ब्रिटिश हकूमत से हिन्दुस्तान लौटने की इजाज़त माँगें, लेकिन आपको यह गवारा नहीं था कि जिस हकूमत से आप ज़िन्दगी भर लड़ते रहे, उसी के सामने अब कुछ रियायतों के लिये हाथ फैलायें. न आप उस हिन्दुस्तान में लौटने के लिये ही तय्यार थे, जिसकी सरकारी इमारतों पर अब भी यूनीयन जैक लहरा रहा था. आपका कहना था कि मैं तो उसी हिन्दुस्तान में लौटूंगा, जो पूरी तरह आज़ाद होगा.

लेकिन मौलाना को यह दिन देखना नसीब न हो सका और १३ जनवरी सन् १९४६ को अपने वतन की आज़ादी की माला जपते जपते वह हमेशा के लिये इस दुनिया से चल दिये.

कौन जानता है कि जब उनकी पलकें हमेशा के लिये मुँद रही होंगी, तब उनके दिल में क्या क्या अरमान उठ रहे थे. शायद एक

احمد سنوسی، مصر کی آزادی کی لڑائی کے ہیرو علامہ عبدالعزیز چشتی اور کردستان کی آزادی کے لئے اپنا سب کچھ داؤں پر لگا دینے والے شیخ محمود سعید کردی آپ کے خاص دوستوں میں سے تھے۔ اسی طرح ہندستان کے بیسیوں جلاوطن دیش بھگتوں کو آپ سے مدد ملتی رہتی تھی۔ مثال کے لئے جب آپ انقورہ کے دوتاواس میں تھے، تب مولانا عبدالحنان صاحب امرتسری اور مولانا مولا بخش صاحب نگینوی مہینوں تک آپ کے مہمان رہے۔ اصل بات تو یہ ہو کہ کوئی بھی ایسا شخص، جو دیش بھگت ہو آپ کے لئے سگے بھائی کی طرح پیارا ہو جاتا تھا۔

۱۹۳۷ء میں جب ہندستان کے صوبوں میں کانگریس سرکاریں بنیں، تب آپ سے بھی کہا گیا کہ آپ برٹش حکومت سے ہندستان لوٹنے کی اجازت مانگیں، لیکن آپ کو یہ گوارہ نہیں تھا کہ جس حکومت سے آپ زندگی بھر لڑتے رہے، اُسی کے سامنے اب کچھ رعایتوں کے لئے ہاتھ پھیلائیں۔ نہ آپ اُس ہندستان میں لوٹنے کے لئے ہی تیار تھے، جس کی سرکاری عمارتوں پر اب بھی یونین جیک لہرا رہا تھا۔ آپ کا کہنا تھا کہ میں تو اسی ہندستان میں لوٹوں گا، جو پوری طرح آزاد ہوگا۔

لیکن مولانا کو یہ دن دیکھنا نصیب نہ ہو سکا اور ۱۳ جنوری ۱۹۴۶ء کو اپنے وطن کی آزادی کی مالا جپتے جپتے وہ ہمیشہ کے لئے اس دنیا سے چل بسے۔

کون جانتا ہو کہ جب اُن کی پلکیں ہمیشہ کے لئے مُند رہی ہوں گی، تب اُن کے دل میں کیا کیا ارمان اٹھ رہے تھے۔ شاید ایک

बार तो उनको अपने वतन की याद आई ही होगी. जिसके लिये उन्होंने अपना सब कुछ दाँव पर लगा दिया था और जिससे वह पिछले तीस साल से जुदा रहे थे. पर इसके साथ ही उनके सामने हिन्दुस्तान में चल रहे हिन्दू मुसलमानों के वहशियाना झगड़ों की तस्वीर भी तो घूमी होगी और तब शायद उनको इससे तसल्ली ही मिली होगी कि आज वह हिन्दुस्तान में नहीं हैं और अपने इस आख़िरी वक़्त में, कम से कम उनके कानों में. किसी मुसलमान के हाथों मारे जाने वाले किसी हिन्दू या किसी हिन्दू के हाथों मारे जाने वाले मुसलमान की बेवा की चीख़ तो नहीं आ रही है.

मौलाना का नाम हिन्दुस्तान की आज़ादी की लड़ाई के इतिहास में हमेशा अमर रहेगा.

بار تو اُن کو اپنے وطن کی یاد آئی ہی ہوگی. جس کے لیے اُنھوں نے اپنا سب کچھ داؤں پر لگا دیا تھا اور جس سے وہ پچھلے تیس سال سے جُدا رہے تھے. پر اس کے ساتھ ہی اُن کے سامنے ہندستان میں چل رہے ہندو مسلمانوں کے وحشیانہ جھگڑوں کی تصویر بھی تو گھومی ہوگی اور تب شاید اُن کو اس سے تسلی ہی ملی ہوگی کہ آج وہ ہندستان میں نہیں ہیں اور اپنے اس آخری وقت میں، کم سے کم اُن کے کانوں میں. کسی مسلمان کے ہاتھوں مارے جانے والے کسی ہندو یا کسی ہندو کے ہاتھوں مارے جانے والے مسلمان کی بیوہ کی چیخ تو نہیں آ رہی ہے.

مولانا کا نام ہندستان کی آزادی کی لڑائی کے اتہاس میں ہمیشہ امر رہے گا.

प्यार की नींव

(भाई यशपाल जैन बी. ए., एल-एल. बी.)

वैसे उनका नाम तो था रहमतउल्ला खाँ; लेकिन छोटे-बड़े सब उन्हें 'मौलवी साहब' कह कर पुकारते थे. ढाई-तीन हजार की आबादी की बस्ती थी. जिसमें कोई खास' बात न थी—न पक्की सड़क, न बिजली. न शफ़ाखाना और रेल कोसों दूर; फिर भी मौलवी साहब को उस गाँव से बड़ी मुहब्बत थी. उनका जन्म वहीं हुआ था और वहीं की मिट्टी और हवा में खेल-कूद कर वह बड़े हुये थे. मुहब्बत की एक और भी वजह थी. वह यह कि उनका इकलौता बेटा करीम भरी-पूरी उमर में वहीं उनसे हमेशा के लिये बिछुड़ा था. उसकी याद में उन्होंने गाँव के बाहर एक छोटी-सी यादगार बनवादी थी. सो नहर की अफ़सरी से जब उन्हें छुट्टी मिली तो उन्होंने उसी गाँव में एक मदरसा खोल दिया और बड़े प्यार से बच्चों को पढ़ाने लगे. बच्चों से मौलवी साहब को बहुत प्यार था और बच्चे भी उन्हें बहुत चाहते थे. दौड़कर उनकी चिलम भर लाना, खेत से साग-सब्जी ले आना और तीज-त्यौहार पर उनके लिये बढ़िया-बढ़िया पकवान बना कर ले जाने मे उन्हें बड़ा मजा आता था और खुशी होती थी. मौलवी साहब का बोल बड़ा मीठा था और बच्चों के साथ उनका सलूक बड़ा ही अच्छा था. बच्चे कैसी ही गलती क्यों न कर डालें. क्या मजाल कि मौलवी साहब के मुँहसे एक भी तेज लफ्ज निकले. हाथ उठाने की बात तो दूर रही. बच्चों के गुरू होने

پیار کی نیو

(بھائی یش پال جین بی۔ اے۔، ایل۔ ایل۔ بی۔)

ویسے اُن کا نام تو تھا رحمت اللہ خاں؛ لیکن چھوٹے بڑے سب اُنھیں "مولوی صاحب" کہہ کر پکارتے تھے۔ ڈھائی تین ہزار کی آبادی کی بستی تھی، جس میں کوئی خاص بات نہ تھی۔ نہ پکّی سڑک، نہ بجلی، نہ شفاخانہ اور ریل کوسوں دور؛ پھر بھی مولوی صاحب کو اس گانو سے بڑی محبت تھی۔ اُن کا جنم وہیں ہوا تھا اور وہیں کی مٹی اور ہوا میں کھیل کود کر وہ بڑے ہوئے تھے۔ محبت کی ایک اور بھی وجہ تھی۔ وہ یہ کہ اُن کا اکلوتا بیٹا کریم بھری پُری عمر میں وہیں اُن سے ہمیشہ کے لئے بچھڑا تھا۔ اُس کی یاد میں اُنھوں نے گانو کے باہر ایک چھوٹی سی یادگار بنوادی تھی، سو نہر کی افسری سے جب اُنھیں چھٹی ملی تو اُنھوں نے اُسی گانو میں مدرسہ کھول دیا اور بڑے پیار سے بچوں کو پڑھانے لگے۔ بچوں سے مولوی صاحب کو بہت پیار تھا اور بچے بھی اُنھیں بہت چاہتے تھے۔ دوڑکر اُن کی چلم بھر لانا، کھیت سے ساگ سبزی لے آنا اور تیج تیوہار پر اُن کے لئے بڑھیا بڑھیا پکوان بناکر لے جانے میں اُنھیں بڑا مزا آتا تھا اور خوشی ہوتی تھی۔ مولوی صاحب کا بول بڑا میٹھا تھا اور بچوں کے ساتھ اُن کا سلوک بڑا ہی اچھا تھا۔ بچے کیسی ہی غلطی کیوں نہ کر ڈالیں، کیا مجال کہ مولوی صاحب کے منہ سے ایک بھی تیز لفظ نکلے۔ ہاتھ اُٹھانے کی بات تو دور رہی۔ بچوں کے گرو ہونے

की वजह से सारा गांव उन्हें आदर की निगाह से देखता था. वैसे भी उनका घराना बड़ा अच्छा था और जब करीम की मौत हुई थी. आधे से ज्यादा गांव साथ गया था.

धीरे-धीरे बरसों बीत गये. इस बीच मौलवी साहब की बीवी भी चल बसीं और करीम की यादगार के नजदीक ही मौलवी साहब ने दर्द भरे दिल से एक छोटी-सी यादगार फ़ातमा बेगम के लिये भी बनवादी. चोट पर चोट लगी; पर मौलवी साहब का मदरसा चलता ही रहा. दुख आदमियों को नजदीक लाता है. मौलवी साहब भी उस गांव के बाशिन्दों के एक हिस्सा बन गये. कुछ और बरस इसी तरह गुजरे और मौलवी साहब के सिर और दाढ़ी-मूँछों के बाल सन की तरह सफ़ेद हो गये.

अचानक मुल्क में साम्प्रदायिकता की आग भड़क उठी. हर तरफ़ मार-काट और लूट-पाट के बेरहमी भरे नज्जारे दिखाई देने लगे. हर जगह खौफ़ छा गया. कल तक जो दोस्त थे, फ़िजा ऐसी बिगड़ी कि वे दुश्मन बन गये और एक दूसरे की जान लेने पर उतारू हो गये. जिधर देखो, उधर ही शर्मनाक बातें नजर आने लगीं. शहरों की आग की लपटें देहातों में भी पहुँचीं और मौलवी साहब ने देखा कि उनके गाँव का रुख भी बदलता जा रहा है. इससे उन्हें जरा भी फ़िकर नहीं हुई. उसी प्यार और मुहब्बत से बच्चों को पढ़ाते रहे और गाँव वालों के साथ पेश आते रहे.

एक रोज मौलवी साहब खा-पोकर चारपाई पर बैठे हुक्का पी रहे थे कि मुखिया का लड़का आया और बंदगी करके खड़ा हो गया.

کی وجہ سے سارا گاؤں انھیں آدر کی نگاہ سے دیکھتا تھا۔ ویسے بھی ان کا گھرانا بڑا اچھا تھا اور جب کریم کی موت ہوئی تھی، آدھے سے زیادہ گاؤں ساتھ گیا تھا۔

دھیرے دھیرے برسوں بیت گئے۔ اسی بیچ مولوی صاحب کی بی بی بھی چل بسیں اور کریم کی یادگار کے نزدیک ہی مولوی صاحب نے درد بھرے دل سے ایک چھوٹی سی یادگار فاطمہ بیگم کے لئے بھی بنوادی۔ چوٹ پر چوٹ لگی؛ پر مولوی صاحب کا مدرسہ چلتا ہی رہا۔ دکھ آدمیوں کو نزدیک لاتا ہے۔ مولوی صاحب بھی اس گاؤں کے باشندوں کے ایک حصہ بن گئے۔ کچھ اور برس اسی طرح گزرے اور مولوی صاحب کے سر اور ڈاڑھی مونچھوں کے بال سن کی طرح سفید ہو گئے۔

اچانک ملک میں سمپردایکتا کی آگ بھڑک اٹھی۔ ہر طرف مارکاٹ اور لوٹ پاٹ کے بے رحمی بھرے نظارے دکھائی دینے لگے۔ ہر جگہ خوف چھا گیا۔ کل تک جو دوست تھے، فضا ایسی بگڑی کہ وے دشمن بن گئے اور ایک دوسرے کی جان لینے پر اتارو ہو گئے۔ جدھر دیکھو، ادھر ہی شرمناک باتیں نظر آنے لگیں۔ شہروں کی آگ کی لپٹیں دیہاتوں میں بھی پہنچیں۔ اور مولوی صاحب نے دیکھا کہ ان کے گاؤں کا رخ بھی بدلتا جا رہا ہے۔ اس سے انھیں ذرا بھی فکر نہیں ہوئی۔ اسی پیار اور محبت سے بچوں کو پڑھاتے رہے اور گاؤں والوں کے ساتھ پیش آتے رہے۔

ایک روز مولوی صاحب کھا پی کر چارپائی پر بیٹھے حقہ پی رہے تھے کہ مکھیا کا لڑکا آیا اور بندگی کر کے کھڑا ہو گیا۔

मौलवी साहब ने सहज भाव से पूछा. "क्या है बेटा, देवी ?" देवी के मुँह से एकदम बोल नहीं निकला. तब मौलवी साहब ने फिर कहा, "कहो बेटे क्या बात है?"

देवी अब अपने को रोक न रख सका और फूट-फूट कर रोने लगा. मौलवी साहब अचरज में भर रह गये. हुक्के को एक तरफ़ सरकाकर उन्होंने देवी को अपनी तरफ़ खींच लिया और पीठ थपथपाते हुये बोले, "इतना दुखी होने की क्या बात है, बेटे ?"

देर तक देवी की हिचकी बंधी रही. संभला तो बोला। "मौलवी साहब, आप यहां से चले जाइये."

"क्यों बेटे ?" मौलवी साहब ने बिना किसी घबराहट या परेशानी के पूछा.

"मैं आपके हाथ जोड़ता हूँ मौलवी साहब, आप आज ही चले जाइये. यहां के आसार अच्छे दिखाई नहीं दे रहे हैं. हवा ऐसी बिगड़ी है कि किसी का किसी को एतबार नहीं रहा. मैं आपसे क्या कहूँ···· कहते शरम आती है···· आज हरी, लीला, पंचम सलाह कर रहे थे····"

"क्या सलाह कर रहे ?" देवी के रुक जाने पर मौलवी साहब ने पूछा.

"मौलवी साहब, जबान नहीं खुलती····कहते थे कि एक दिन रात को मौलवी साहब के घर पर धावा बोल दो और उन्हें····"

आगे देवी को कुछ कहने की जरूरत न थी. मौलवी साहब सब समझ गये. उनके बूढ़े चेहरे पर ज़रा भी शिकन नहीं आई और उन्होंने हँसते हुये कहा. "बेटा, इसमें हैरान होने की ...

مولوی صاحب نے سہج بھاؤ سے پوچھا، "کیا ہے بیٹا، دیوی؟" دیوی کے منہ سے ایک دم بول نہیں نکلا. تب مولوی صاحب نے پھر کہا "کہو بیٹے کیا بات ہے؟"

دیوی اب اپنے کو روک نہ سکا اور پھوٹ پھوٹ کر رونے لگا. مولوی صاحب اچرج میں بھرے رہ گئے. حقے کو ایک طرف سرکا کر انھوں نے دیوی کو اپنی طرف کھینچ لیا اور پیٹھ تھپتھپاتے ہوئے بولے، "اتنا دکھی ہونے کی کیا بات ہے، بیٹے؟"

دیر تک دیوی کی ہچکی بندھی رہی. سنبھلا تو بولا "مولوی صاحب، آپ یہاں سے چلے جائیے."

"کیوں بیٹے؟" مولوی صاحب نے بنا کسی گھبراہٹ یا پریشانی کے پوچھا.

"میں آپ کے ہاتھ جوڑتا ہوں مولوی صاحب آپ آج ہی چلے جائیے. یہاں کے آثار اچھے دکھائی نہیں دے رہے ہیں. ہوا ایسی بگڑی ہے کہ کسی کا کسی کو اعتبار نہیں رہا. میں آپ سے کیا کہوں... کہتے شرم آتی ہے... آج ہری، لیلا، پنچم صلاح کر رہے تھے..."

"کیا صلاح کر رہے تھے؟" دیوی کے رک جانے پر مولوی صاحب نے پوچھا.

"مولوی صاحب، زبان نہیں کھلتی... کہتے تھے کہ ایک دن رات کو مولوی صاحب کے گھر پر دھاوا بول دو اور انھیں..."

آگے دیوی کو کچھ کہنے کی ضرورت نہ تھی. مولوی صاحب سب سمجھ گئے. ان کے بوڑھے چہرے پر ذرا بھی شکن نہیں آئی اور انھوں نے ہنستے ہوئے کہا "بیٹا، اس میں حیران ہونے کی کیا بات

है ! तुम लोगों को मेरी ज़रूरत नहीं है, तुम मुझे नहीं चाहते हो तो मुझे ही अपना फ़िकर क्या हो ! और सुनो, मैं तुमसे दिल से कहता हूँ, तुम्हारी ख़ुशी में मेरी अपनी ख़ुशी है. गिरधारी से कह देना कि रात का क्या, मैं तो दिन में ही हाज़िर हूँ. उसे डरने की ज़रूरत नहीं. जाओ बेटे, चैन से सोओ. तुम्हारे मौलवी साहब को एक दिन वैसे भी ......"

दवा का जी अंदर से उमड़ा आ रहा था ; लेकिन मौलवी साहब पर इसका ज़रा भी असर न था. जैसे दवा की बात बड़ी मामूली-सी है. अपने को संभाल कर दवा फिर बोला—"मैं आपके पैर पड़ता हूँ मौलवी साहब, आप चले जाइये. हम चार-छः जने कुछ दूर साथ चलेंगे, जिससे रास्ते में कोई कुछ कह न सके. फिर ज़रूरी सामान भी तो साथ में ले जाना होगा. ज़िन्दगी क़ीमती चीज़ है मौलवी साहब, और जहाँ आपने सारी ज़िन्दगी मुहब्बत ही मुहब्बत बांटी हो वहां कुछ होना कोई अच्छी बात नहीं है."

"अच्छा बुरा इस दुनिया में क्या है बेटा !" मौलवी साहब ने थोड़ा गंभीर होकर कहा—"वक़्त के साथ हमारे अच्छे-बुरे का नाप भी बदलता रहता है. जो आज अच्छा है, कौन कह सकता है कि कल भी वह अच्छा रहेगा ? अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ आदमी अच्छा-बुरा बनाता है. मैं पूछता हूँ बेटा, जहाँ एतबार नहीं, जहाँ मुहब्बत नहीं, वहाँ जीने से क्या फ़ायदा ! बेटा, मैं मुहब्बत का भूखा हूँ, वही मुझे ज़िन्दा रखती है. करीम और फ़ातमा की याद को मैंने तुम लोगों की मुहब्बत में भूल जाने की कोशिश की थी.

ہو ! تم لوگوں کو میری ضرورت نہیں ہے تم مجھے نہیں چاہتے ہو تو مجھے ہی اپنی فکر کیوں ہو ! اور سنو ! میں تم سے دل سے کہتا ہوں، تمھاری خوشی میں میری اپنی خوشی ہے. گردھاری سے کہہ دینا کہ رات کو کیوں، میں تو دن میں ہی حاضر ہوں. اسے ڈرنے کی ضرورت نہیں. جاؤ بیٹے، چین سے سوؤ. تمھارے مولوی صاحب کو ایک دن ویسے بھی ...."

دیوی کا جی اندر سے امڈا آرہا تھا ؛ لیکن مولوی صاحب پر اس کا ذرا بھی اثر نہ تھا. جیسے دیوی کی بات بڑی معمولی سی ہے. اپنے کو سنبھال کر دیوی پھر بولا—"میں آپ کے پیر پڑتا ہوں مولوی صاحب، آپ چلے جائیے. ہم چار چھ جنے کچھ دور ساتھ چلیں گے، جس سے راستے میں کوئی کچھ کہہ نہ سکے. پھر ضروری سامان بھی تو ساتھ میں لے جانا ہوگا. زندگی قیمتی چیز ہے مولوی صاحب، اور جہاں آپ نے ساری زندگی محبت ہی محبت بانٹی ہو وہاں کچھ ہونا کوئی اچھی بات نہیں ہے."

"اچھا برا اس دنیا میں کیا ہے بیٹا !" مولوی صاحب نے تھوڑا گمبھیر ہوکر کہا—"وقت کے ساتھ ہمارے اچھے برے کی ناپ بھی بدلتی رہتی ہے. جو آج اچھا ہے، کون کہہ سکتا ہے کہ کل بھی وہ اچھا رہے گا ؟ اپنی ضرورت کے مطابق آدمی اچھا برا بناتا ہے. میں پوچھتا ہوں بیٹا، جہاں اعتبار نہیں، جہاں محبت نہیں، وہاں جینے سے کیا فائدہ ! بیٹا، میں محبت کا بھوکا ہوں، وہی مجھے زندہ رکھتی ہے. کریم اور فاطمہ کی یاد کو میں نے تم لوگوں کی محبت میں بھول جانے کی کوشش کی تھی.

इधर की आस गई तो फिर मुझे उन्हीं दोनों के पास जाने में क्यों डर होना चाहिए."

यह कहते कहते मौलवी साहब की आँखें गीली हो आईं.

देवी ने बाद में बहुतेरी मिन्नत की, लेकिन मौलवी साहब जाने के लिए राजी नहीं हुए. उन्होंने साफ़ कह दिया कि देवी बेटे, मुसीबत से डर कर कायर भागते हैं और जिसकी जिंदगी की इमारत प्यार की नीव पर खड़ी हुई है, उसे डरने की जरा भी जरूरत नहीं है.

देवी चला गया और मौलवी साहब चारपाई पर लेट गये. उनके मन में डर रत्ती भर नहीं था; पर करीम और फ़ातमा की याद से उन्हें थोड़ी बेचैनी हो आई थी. वह सोचने लगे कि यह सब है क्या? आदमी का प्यार क्या एक बुलबुला है, जो जरा-सी देर में फूट जाता है. उसकी जड़ें इतनी कमजोर हैं कि हवा के एक हलके झोंके से उखड़ जाती हैं? नफ़रत लेकर हम कहाँ पहुँचेंगे? इस मारकाट और दुश्मनी का क्या नतीजा निकलेगा? हम लोग अपने को तबाह कर लेंगे. या अल्लाह!

मौलवी साहब के मुँह से एक लम्बी आह निकली और एक छन में उस गाँव की उनकी सारी जिन्दगी उनकी आँखों के सामने घूम गई. सोचा-विचारी में उन्हें उस रात देर तक नींद नहीं आई.

अगला दिन चैन से बीता. मौलवी साहब का मदरसा लगा और शाम को हर दिन की तरह बच्चे अपने-अपने घर चले गये.

रात को देर तक मौलवी साहब मुहम्मद साहब की जीवनी पढ़ते रहे. प्रसंग था कि मुहम्मद साहब एक पेड़ के नीचे सो रहे हैं.

اِدھر کی آس گئی تو پھر مجھے اُنھیں دونوں کے پاس جانے میں کیوں ڈر ہونا چاہیئے۔"

یہ کہتے کہتے مولوی صاحب کی آنکھیں گیلی ہو آئیں۔

دیوی نے بعد میں بہتیری منت کی، لیکن مولوی صاحب جانے کے لئے راضی نہیں ہوئے۔ انھوں نے صاف کہہ دیا کہ دیوی بیٹے، مصیبت سے ڈر کر کایر بھاگتے ہیں اور جس کی زندگی کی عمارت پیار کی نیو پر کھڑی ہوئی ہو، اسے ڈرنے کی ذرا بھی ضرورت نہیں ہے۔

دیوی چلا گیا اور مولوی صاحب چارپائی پر لیٹ گئے۔ اُن کے من میں ڈر رتی بھر نہیں تھا، پر کریم اور فاطمہ کی یاد سے انھیں تھوڑی بےچینی ہو آئی تھی۔ وہ سوچنے لگے کہ یہ سب ہے کیا؟ آدمی کا پیار کیا ایک بلبلا ہے، جو ذرا سی دیر میں پھوٹ جاتا ہے۔ اُس کی جڑیں اتنی کمزور ہیں کہ ہوا کے ایک ہلکے جھونکے سے اکھڑ جاتی ہیں؟ نفرت لے کر ہم کہاں پہنچیں گے؟ اس مارکاٹ اور دشمنی کا کیا نتیجہ نکلے گا؟ ہم لوگ اپنے کو تباہ کر لیں گے۔ یا اللہ!

مولوی صاحب کے منہ سے ایک لمبی آہ نکلی اور ایک چھن میں اس گاؤں کی اُن کی ساری زندگی اُن کی آنکھوں کے سامنے گھوم گئی۔ سوچا وچاری میں انھیں اس رات دیر تک نیند نہیں آئی۔

اگلا دن چین سے بیتا۔ مولوی صاحب کا مدرسہ لگا اور شام کو ہر دن کی طرح بچے اپنے اپنے گھر چلے گئے۔

رات کو دیر تک مولوی صاحب محمد صاحب کی جیونی پڑھتے رہے۔ پرسنگ تھا کہ محمد صاحب ایک پیڑ کے نیچے سو رہے ہیں۔

सुनसान जगह है. उनसे वैर मानने वाला एक आदमी उधर आता है और उन्हें यों अकेला पाकर ख़ुश हो उठता है और उन्हें मारने के लिए म्यान से तलवार खींचता है. हज़रत मुहम्मद बेफ़िकरी से सो रहे हैं. उन के चेहरे पर मुस्कराहट खेल रही है. आदमी का हाथ उठता है और उठा-का-उठा ही रह जाता है ! यह क्या ! अरे, यह कौन सी ताक़त है, जो उसका हाथ थाम लेती है ?

मौलवी साहब की आँखों की कोरों से दो बूँदें इधर-उधर टपक पड़ीं....वह मुहब्बत का असर था . आदमी अपना दिल साफ़ रक्खे तो दुनिया पाक है . फिर किसी को किसी से डरने की ज़रूरत ही क्या हो ? और सच तो यह है कि दुश्मन ख़ुद आदमी के भीतर बैठा है...

रात काफ़ी बीत चुकी थी; लेकिन मौलवी साहब की आँख नहीं लगी. हज़रत मुहम्मद के प्रसंग से वह बहुत बेचैन हो उठे थे. बत्ती उन्होंने बुझा दी और चारपाई पर लेट कर जाने क्या-क्या सोचने लगे .

इतने में दरवाज़े पर थोड़ा-सा खटका मालूम हुआ. वह चुप-चाप लेटे रहे कि देखें क्या है ! आहट होकर ख़ामोशी छा गई; लेकिन दो मिनट बाद ही वह देखते क्या हैं कि धीरे-से दरवाज़ा खुला और एक के बाद एक करके तीन आदमी अन्दर घुस आये. चाँद की रोशनी में मौलवी साहब को पहचानते देर न लगी कि आगे गिरधारी है. वह धीरे-धीरे क़दम बढ़ाता उनकी चारपाई की तरफ़ बढ़ा चला आ रहा है. मौलवी साहब ने फिर भी कुछ नहीं कहा. ज्यों-के-त्यों

شنسان جگہ ہے۔ ان سے بیر ماننے والا ایک آدمی ادھر آتا ہے اور انھیں یوں اکیلا پاکر خوش ہو اٹھتا ہے اور انھیں مارنے کے لئے میان سے تلوار کھینچتا ہے۔ حضرت محمدؐ بے فکری سے سو رہے ہیں۔ ان کے چہرے پر مسکراہٹ کھیل رہی ہے۔ آدمی کا ہاتھ اٹھتا ہے اور اٹھا کا اٹھا ہی رہ جاتا ہے! یہ کیا! ارے، یہ کون سی طاقت ہے، جو اس کا ہاتھ تھام لیتی ہے؟

مولوی صاحب کی آنکھوں کی کوروں سے دو بوندیں ادھر ادھر ٹپک پڑیں..... وہ محبت کا اثر تھا۔ آدمی اپنا دل صاف رکھے تو دنیا پاک ہے۔ پھر کسی کو کسی سے ڈرنے کی ضرورت ہی کیا ہے؟ اور سچ تو یہ ہے کہ دشمن خود آدمی کے بھیتر بیٹھا ہے.....

رات کافی بیت چکی تھی؛ لیکن مولوی صاحب کی آنکھ نہیں لگی۔ حضرت محمدؐ کے پرسنگ سے وہ بہت بے چین ہو اٹھے تھے۔ بتی انھوں نے بجھا دی اور چارپائی پر لیٹ کر جانے کیا کیا سوچنے لگے۔

اتنے میں دروازے پر تھوڑا سا کھٹکا معلوم ہوا۔ وہ چپ چاپ لیٹے رہے کہ دیکھیں کیا ہے! آہٹ ہو کر خاموشی چھا گئی؛ لیکن دو منٹ بعد ہی وہ دیکھتے کیا ہیں کہ دھیرے سے دروازہ کھلا اور ایک کے بعد ایک کرکے تین آدمی اندر گھس آئے۔ چاند کی روشنی میں مولوی صاحب کو پہچانتے دیر نہ لگی کہ آگے گردھاری ہے وہ دھیرے دھیرے قدم بڑھاتا ان کی چارپائی کی طرف بڑھا چلا آرہا ہے۔ مولوی صاحب نے پھر بھی کچھ نہیں کہا جیوں کے تیوں

लेटे रहे . गिरधारी चारपाई से कोई दो गज़ की दूरी पर रुक गया और इशारा करते ही साथी ने उसे कोई चीज़ दे दी . गिरधारी एक-क़दम और आगे बढ़ा .

मौलवी साहब ने देखा कि उसके दोनों साथियों में एक पंचम और दूसरा लीला है . इन तीनों को उन्होंने ही पढ़ाया था.

गिरधारी देर तक वहीं खड़ा रहा . वह न आगे बढ़ता था, न पीछे हटता था . बुत की तरह खड़ा था . उसे इस हालत में मौलवी साहब देर तक न देख सके . बोले,—"बेटा गिरधारी. क्या सोच रहे हो ? आगे क्यों नहीं बढ़ते ?"

गिरधारी को काटो तो खून नहीं !

मौलवी साहब उठकर बैठ गये . बोले,—"बेटा, आते क्यों नहीं ? तुम्हें जो करना है, शौक़ से करलो . मैं तुम्हें रोकूं या कुछ भी कहूँ तो अल्लाह मुझे दोज़ख़ में भी जगह न दे ! अरे पंचम और लीला, तुम लोग इतनी दूर क्यो खड़े हो ? आगे आओ बेटा और गिरधारी की मदद करो ."

गिरधारी और उसके दोनों साथी सन्न खड़े थे . गिरधारी सोचता था कि धरती फट जाय तो वह उसमें समा जाय, या आसमान टूट पड़े तो वह उसके नीचे दब जाय ! हाय राम, उसने किया क्या ? नव्वे बरस के प्यार भरे अपने मौलवी साहब का बुरा करने की बात सोचने से पहले वह मर क्यों नहीं गया ! उसके भयंकर जुर्म के एवज़ में भी उस फ़रिश्ते के मुँह से प्यार की बोली ही निकल रही है. हाय, वह कैसा नीच है ! कैसा पापी है !

لیٹے رہے. گردھاری چارپائی سے کوئی دو گز کی دوری پر رُک گیا اور اشارہ کرتے ہی ساتھی نے اُسے کوئی چیز دے دی. گردھاری ایک قدم اور آگے بڑھا.

مولوی صاحب نے دیکھا کہ اُس کے دونوں ساتھیوں میں ایک پنچم اور دوسرا لیلا ہے. اِن تینوں کو اُنھوں نے ہی پڑھایا تھا.

گردھاری دیر تک وہیں کھڑا رہا. وہ نہ آگے بڑھتا تھا نہ پیچھے ہٹتا تھا. بُت کی طرح کھڑا تھا. اُسے اس حالت میں مولوی صاحب دیر تک نہ دیکھ سکے. بولے "بیٹا گردھاری، کیا سوچ رہے ہو؟ آگے کیوں نہیں بڑھتے؟"

گردھاری کو کاٹو تو خون نہیں!

مولوی صاحب اُٹھ کر بیٹھ گئے. بولے، — "بیٹا، آتے کیوں نہیں؟ تمھیں جو کرنا ہے، شوق سے کرلو. میں تمھیں روکوں یا کچھ بھی کہوں تو اللہ مجھے دوزخ میں بھی جگہ نہ دے! ارے پنچم اور لیلا، تم لوگ اتنی دور کیوں کھڑے ہو؟ آگے آؤ بیٹا اور گردھاری کی مدد کرو."

گردھاری اور اُس کے دونوں ساتھی سن کھڑے تھے. گردھاری سوچتا تھا کہ دھرتی پھٹ جائے تو وہ اُس میں سما جائے، یا آسمان ٹوٹ پڑے تو وہ اُس کے نیچے دب جائے! ہائے رام، اُس نے کیا کیا؟ نوّے برس کے پیار بھرے اپنے مولوی صاحب کا بُرا کرنے کی بات سوچنے سے پہلے وہ مر کیوں نہیں گیا! اُس کے بھیانک جُرم کے عوض میں بھی اُس فرشتے کے مُنہ سے پیار کی بولی ہی نکل رہی ہے. ہائے، وہ کیسا نیچ ہے! کیسا پاپی ہے!

मौलवी साहब ने बड़े ही सरल और सिधे भाव से कहा—"बेटा गिरधारी, मुझे तो वह दिन याद आता है जब तुम मेरी गोद में खेले थे और मैंने तुम्हें अपना ही करीम मान कर पढ़ाया था; लेकिन बेटा, सच कहता हूँ, मुझे तुमसे कोई शिकायत नहीं है. इंसान को अपना फ़र्ज़ पूरा करना चाहिए. मैंने जो किया वह मेरा फ़र्ज़ था. बेटे, तुम मेरे अज़ीज़ हो. प्यारे हो और वैसा मान कर मेरे दिल से तुम्हारे लिये सदा असीस ही निकलेगी ."

दूध—सी चाँदनी में मौलवी साहब का चेहरा चमक उठा.

गिरधारी ने हाथ की चीज़ एक तरफ़ फेंक दी और आगे बढ़ कर हुक्के पर से चिलम उठा कर भरने के लिए बरोसी की तरफ़ बढ़ गया . पंचम और लीला भी चारपाई के नज़दीक आकर बैठ गये.

मौलवी साहब ने उन दोनों की पीठ थपथपाई और देखा कि बरोसी के पास बैठा गिरधारी बार-बार अपनी आँखें पोंछ रहा है .

—

مولوی صاحب نے بڑے ہی سرل اور سیدھے بھاؤ سے کہا۔ "بیٹا گردھاری، مجھے تو وہ دن یاد آتا ہے جب تم میری گود میں کھیلے تھے اور میں نے تمھیں اپنا ہی کریم مان کر پڑھایا تھا؛ لیکن بیٹا، سچ کہتا ہوں، مجھے تم سے کوئی شکایت نہیں ہے۔ انسان کو اپنا فرض پورا کرنا چاہیئے۔ میں نے جو کیا وہ میرا فرض تھا۔ بیٹے، تم میرے عزیز ہو، پیارے ہو اور ویسا مان کر میرے دل سے تمھارے لئے سدا اسیس ہی نکلے گی۔"

دودھ۔۔ سی چاندنی میں مولوی صاحب کا چہرہ چمک اٹھا۔

گردھاری نے ہاتھ کی چیز ایک طرف پھینک دی اور آگے بڑھ کر حقے پر سے چلم اٹھا کر بھرنے کے لئے بروسی کی طرف بڑھ گیا۔ پنچم اور لیلا بھی چارپائی کے نزدیک آکر بیٹھ گئے۔

مولوی صاحب نے ان دونوں کی پیٹھ تھپتھپائی اور دیکھا کہ بروسی کے پاس بیٹھا گردھاری بار بار اپنی آنکھیں پونچھ رہا تھا۔

—:<>*<>:—

मैं नई दिल्ली गया और रोया !

(भाई गु० म०)

पिछले मार्च में मैं नई दिल्ली गया. मेरे दिल में बड़ी उमंगें और उम्मीदें थीं. क्यों कि मैं अपने आज़ाद मुल्क की राजधानी देखने जा रहा था. वहां मुझे नए हिन्द की एक झलक ज़रूर मिलेगी ऐसा मुझे बार बार लगा.

मगर वहां पहुँचने पर ही मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मैं चारों तरफ़ आग के शोलों से जैसे घिरा हुआ हूँ. गला घुटने लगा. दिल में दर्द होने लगा.

इसका क्या कारन था ? एक ही, कि नई दिल्ली में मुझे नए हिन्द की एक भी झलक नज़र न आई. वहां के लोग पहले की तरह ही मौज शौक़ की दुनिया में बसते हैं. साहब लोगों की तरह पोशाक पहनते हैं. क़्लब घरों में जाते हैं, रमी (एक क़िस्म का ताश का खेल और वह भी, बतौर जुए के) और रम (शराब) के नशे में चूर होकर रात को घर लौटते हैं. उन का अहंकार ज़रा भी कम नहीं हुआ. उनकी बहुएं और बेटियाँ लिपिस्टिक (होटों पर रंग) और नाख़ूनों पर अब भी रंग लगाती हैं. उनके बच्चे अपने माँ बाप को 'ममी' और 'पपा' कहते हैं. और बात बात में अंगरेज़ी शब्द बोलते हैं. उनकी ज़िन्दगी से सादगी और सच्ची मोहब्बत, जिसका सबूत सिर्फ़ हमदर्दी और सेवा में ही मिल सकता है, हज़ारों मील दूर है. यह सब देखकर मैं रोया मगर मैं बार बार

میں نئی دلی گیا اور رویا!

(بھائی گ۔ م۔)

پچھلے مارچ میں میں نئی دلی گیا۔ میرے دل میں بڑی امنگیں اور امیدیں تھیں، کیوں کہ میں اپنے آزاد ملک کی راجدھانی دیکھنے جا رہا تھا۔ وہاں مجھے نئے ہند کی ایک جھلک ضرور ملے گی ایسا مجھے بار بار لگا۔

مگر وہاں پہنچنے پر ہی مجھے ایسا محسوس ہوا کہ میں چاروں طرف آگ کے شعلوں سے جیسے گھرا ہوا ہوں۔ گلا گھٹنے لگا۔ دل میں درد ہونے لگا۔

اس کا کیا کارن تھا؟ ایک ہی، کہ نئی دلی سے مجھے نئے ہند کی ایک بھی جھلک نظر نہ آئی۔ وہاں کے لوگ پہلے کی طرح ہی موج اور شوق کی دنیا میں بستے ہیں، صاحب لوگوں کی طرح پوشاک پہنتے ہیں، کلب گھروں میں جاتے ہیں، رمی (ایک قسم کا تاش کا کھیل اور وہ بھی بطور جوئے کے) اور رم (شراب) کے نشے میں چور ہو کر گھر لوٹتے ہیں۔ ان کا اہنکار ذرا بھی کم نہیں ہوا۔ ان کی بہوئیں اور بیٹیاں لپسٹک (ہونٹوں پر رنگ) اور ناخونوں پر اب بھی رنگ لگاتی ہیں۔ ان کے بچے اپنے ماں باپ کو 'ممی' اور 'پپا' کہتے ہیں۔ اور بات بات میں انگریزی شبد بولتے ہیں۔ ان کی زندگی سے سادگی اور سچی محبت، جس کا ثبوت صرف ہمدردی اور سیوا

रोया जब कि मैंने सरकारी दफ़्तरों में सीधा सादी अपनी देशी पोशाक पहनने वाले भाइयों के साथ जो बेपरवाही का सलूक होता है वह देखा. आप अपना कोई भी काम बग़ैर रिशवत और रुसवाई के नहीं करा सकते.

सरकारी दफ़्तरों में इस क़िस्म की लूट और शहर में दूसरी तरह का लूट चल रही है. टांगे वाले और टैक्सी (मोटर वाले) तो सीधे सादे·ग़रीब लोगों का चमड़ा ही उधेड़ लेते हैं. एक बीमार आदमी जो क़रौलबाग़ में रहता था, उससे मिलने के लिये टैक्सी वालों से पूछा कि वह कनाट सरकस से जाने का क्या किराया लेंगे तो कोई २५) रुपए से कम पर जाने को तैयार न हुआ. और टांगे वाले ५ और ७ रुपए की बात करने लगे, अगर कोई पूछे कि बस में गाड़ी क्यों न सफ़रकिया गया तो उसका जवाब यह है. कि पहले तो बस हर जगह दिल्ली में जाती नहीं और दिल्ली में एक जगह से दुसरी जगह जाने के लिये कितना फ़ासला काटना पड़ता है वह तो सबको बख़ूबी मालूम है ही. और नई दिल्ली के रास्ते ? उनसे तो सर चकराने लगता है !

अस्पताल में भी यही हाल है. इलाज करवाना हो तो जेब कटवानी पड़ती हैं. क्यों कि अस्पताल को वहां के काम करने वालों ने एक टकसाल (पैसा बनाने का कारख़ाना) बना रखा है. अगरचे उसे एक ख़ुदा का घर नहीं तो ख़ाला का घर तो ज़रूर ही होना चाहिये

आज़ादी के बाद अपने लीडरों से मिलना तो ऐसा मुश्किल हो गया है जैसे जेल में किसी क़ैदी से मिलना. पहले वह हमारे

روبا جب کہ میں نے سرکاری دفتروں میں سیدھی سادی اپنی دیشی پوشاک پہننے والے بھائیوں کے ساتھ جو بے پرواہی کا سلوک ہوتا ہے وہ دیکھا. آپ اپنا کوئی بھی کام بغیر رشوت اور رسوائی کے نہیں کرا سکتے.

سرکاری دفتروں میں اس قسم کی لوٹ اور شہر میں دوسری طرح کی لوٹ چل رہی ہے. تانگے والے اور ٹیکسی (موٹر والے) تو سیدھے سادے غریب لوگوں کا چمڑا ہی ادھیڑ لیتے ہیں. ایک بیمار آدمی جو قرول باغ میں رہتا تھا، اس سے ملنے کے لئے ٹیکسی والوں سے پوچھا کہ وہ کناٹ سرکس سے جانے کا کیا کرایہ لیں گے تو کوئی ۲۵ روپیہ سے کم پر جانے کو تیار نہ ہوا. اور تانگے والے ۵ اور ۷ روپئے کی بات کرنے لگے، اگر کوئی پوچھے کہ بس گاڑی میں کیوں نہ سفر کیا گیا تو اس کا جواب یہ ہے کہ پہلے تو بس ہر جگہ دلی میں جاتی نہیں اور دلی میں ایک جگہ سے دوسری جگہ جانے کے لئے کتنا فاصلہ کاٹنا پڑتا ہے وہ تو سب کو بخوبی معلوم ہی ہے. اور نئی دلی کے راستے ؟ ان سے تو سر چکرانے لگتا ہے!

اسپتال میں بھی یہی حال ہے. علاج کروانا ہو تو جیب کٹوانی پڑتی ہے. کیوں کہ اسپتال کو وہاں کے کام کرنے والوں نے ایک ٹکسال (پیسہ بنانے کا کارخانہ) بنا رکھا ہے، اگرچہ اسے ایک خدا کا گھر نہیں تو خالہ کا گھر تو ضرور ہی ہونا چاہئے.

آزادی کے بعد اپنے لیڈروں سے ملنا تو ایسا مشکل ہوگیا ہے جیسے جیل میں کسی قیدی سے ملنا. پہلے وہ ہمارے

प्रेम के क़ैदी थे अब वह पुलिस के क़ैदी हैं ! दिन रात और जहां भी वह जाते हैं बस पहरा ही लगा रहता है.

नई दिल्ली के रहने वालों के बड़े बड़े मकान जिनमें सिर्फ़ तीन या चार आदमी रहते हैं और पुरानी दिल्ली जहां एक एक छोटी अंधेरी कोठरी में पाँच से दस तक लोग रहते हैं. इन दोनों के बीच का फ़र्क़ देख कर दिल जल उठता है,

इन सब बातों के कारन मैं जितने दिन नई दिल्ली में रहा एक भी दिन ऐसा न था जब मैं न रोया हूँ. हो सकता है, कि इसकी तह में गांधी जी की ग़ैर मौजूदगी का दुख भी रहा हो क्योंकि पहले एक दो बार जब भी मैं नई दिल्ली गया तो गांधी जी के दर्शन का मौक़ा मुझे हर एक बार मिला, क्यों कि उनका दिल और दरबार तो हमेशा ही खुला रहता था. काश ! कि हमारे सरकारी दफ़्तरों में काम करने वाले और बाक़ी लोग भी अपना दिल और दरवाज़ा हमेशा खुला रख सकते ! तब तो हमारा देश एक स्वर्ग बन जाता. अब तो नई दिल्ली स्वराजस्थान नहीं बल्कि स्वार्थस्थान बनी हुई है.

एक ज़माना था जब हिन्दुस्तान में "दिल्ली अभी दूर है" का नारा सुनने में आता था. इसके बाद "दिल्ली चलो" का नारा सुनने में आया और अब जब दिल्ली पहुंच गए हैं तो उसकी मौजूदा हालत देखकर दिल बार बार पुकार उठता है "दिल्ली से दूर चलो"

बात यह है कि नई दिल्ली में अब तक न तो सरकारी रवैया बदला है और न ही लोगों का चाल चलन. आज़ादी एक पवित्र चीज़ है. उसका ख़्याल ही अभी तक लोगों को सही तौर पर नहीं

پریم کے قیدی تھے اب وہ پولیس کے قیدی ہیں! دن رات اور جہاں بھی وہ جاتے ہیں بس پہرہ ہی لگا رہتا ہے.

نئی دلی کے رہنے والوں کے بڑے بڑے مکان جن میں صرف تین یا چار آدمی رہتے ہیں اور پرانی دلی جہاں ایک ایک چھوٹی اندھیری کوٹھری میں پانچ سے دس تک لوگ رہتے ہیں. ان دونوں کے بیچ کا فرق دیکھ کر دل جل اٹھتا ہے.

ان سب باتوں کے کارن میں جتنے دن نئی دلی میں رہا ایک بھی دن ایسا نہ تھا جب میں نہ رویا ہوں. ہو سکتا ہے کہ اس کی تہہ میں گاندھی جی کی غیر موجودگی کا دکھ بھی رہا ہو کیوں کہ پہلے ایک دو بار جب بھی میں نئی دلی گیا تو گاندھی جی کے درشن کا موقع مجھے ہر ایک بار ملا، کیوں کہ ان کا دل اور دربار تو ہمیشہ ہی کھلا رہتا تھا. کاش! کہ ہمارے سرکاری دفتروں میں کام کرنے والے اور باقی لوگ بھی اپنا دل اور دروازہ ہمیشہ کھلا رکھ سکتے! تب تو ہمارا دیش ایک سورگ بن جاتا. اب تو نئی دلی سوراج استھان نہیں. بلکہ سوارتھ استھان بنی ہوئی ہے.

ایک زمانہ تھا جب ہندستان میں "دلی ابھی دور ہے" کا نعرہ سننے میں آتا تھا. اس کے بعد "دلی چلو" کا نعرہ سننے میں آیا اور اب جب دلی پہنچ گئے ہیں تو اس کی موجودہ حالت دیکھ کر دل بار بار پکار اٹھتا ہے "دلی سے دور چلو"

بات یہ ہے کہ نئی دلی میں اب تک نہ تو سرکاری رویہ بدلا ہے اور نہ ہی لوگوں کا چال چلن. آزادی ایک پوتر چیز ہے. اس کا خیال ہی ابھی تک لوگوں کو صحیح طور پر نہیں

नया हिन्द   मैं नई दिल्ली गया और रोया !   अप्रैल सन् '४८

आया. क्योंकि अगर आया होता तो सब से पहले तो हकूमत चलाने वालों के दिल ही बदल जाते. मगर दिल तो अब तक पहले की तरह अगर मुर्दा नहीं तो बिल्कुल सड़े हुए तो हैं ही.

आखिर में 'प्रभु मुझे नई दिल्ली से हमेशा दूरही रखिये !' ऐसी मेरी दिली दुआ है. यह कह कर मैं वहां से अपने छोटे से गांव को फिर वापस चला आया.

पढ़ने वालों से

इधर कई महीने से 'नया हिन्द' वक़्त पर नहीं निकल रहा है और इससे 'नया हिन्द' के प्रेमियों को 'नया हिन्द' के इन्तजार में बड़ी तकलीफ़ होती है. हम 'नयाहिन्द' के प्रेमियों को इसका कारन बतला देना चाहते हैं. आजकल बाज़ार में क़ाग़ज़ और प्रेसों में काम करने वालों की बड़ी कमी हो गई है. आम तौर पर प्रेस के मज़दूर मामूली माँगों के लिये हड़ताल का सहारा ले लेते हैं और इससे काम का इन्तज़ाम बहुत गड़बड़ हो जाता है. यह कठिनाई उसी प्रेस में नहीं है, जहाँ 'नया हिन्द' छपता है बल्कि इलाहाबाद के क़रीब क़रीब सभी प्रेसों का यही हाल है. हम जतन कर रहे हैं कि 'नयाहिन्द' को फिर वक़्त पर निकालने लगें पर जब तक हम सफल न हो सकें, तब तक हम 'नया हिन्द' के प्रेमियों से माफ़ी चाहते हैं.

मैनेजर

نیا ہند   میں نئی دلی گیا اور رویا !   اپریل سنہ ۴۸

آیا. کیوں کہ اگر آیا ہوتا تو سب سے پہلے تو حکومت چلانے والوں کے دل ہی بدل جاتے. مگر دل تو اب تک پہلے کی طرح اگر مُردہ نہیں تو بالکل سڑے ہوئے تو ہیں ہی.

آخر میں 'پربھو مجھے نئی دلی سے ہمیشہ دور ہی رکھیے! ایسی میری دلی دعا ہے. یہ کہہ کر میں وہاں سے اپنے چھوٹے سے گاؤں کو پھر واپس چلا آیا.

پڑھنے والوں سے

ادھر کئی مہینے سے 'نیا ہند' وقت پر نہیں نکل رہا ہے اور اس سے 'نیا ہند' کے پریمیوں کو 'نیا ہند' کے انتظار میں بڑی تکلیف ہوتی ہے. ہم 'نیا ہند' کے پریمیوں کو اس کا کارن بتلا دینا چاہتے ہیں. آج کل بازار میں کاغذ اور پریسوں میں کام کرنے والوں کی بڑی کمی ہو گئی ہے. عام طور پر پریس کے مزدور معمولی مانگوں کے لئے ہڑتال کا سہارا لے لیتے ہیں اور اس سے کام کا انتظام بہت گڑبڑ ہو جاتا ہے. یہ کٹھنائی اسی پریس میں نہیں ہے، جہاں 'نیا ہند' چھپتا ہے بلکہ الہ آباد کے قریب قریب سبھی پریسوں کا یہی حال ہے. ہم جتن کر رہے ہیں کہ 'نیا ہند' کو پھر وقت پر نکالنے لگیں پر جب تک ہم سپھل نہ ہو سکیں. تب تک ہم 'نیا ہند' کے پریمیوں سے معافی چاہتے ہیں.

منیجر

सबसे अलग

(भाई अब्दुल हलीम अन्सारी)

गांधी या बापू वर्तमान काल का एक दिल. लुभावना और दिलकश शीर्षक है. हर भाषा और लेखक के लिये—गांधी एक सुर्ख़ी है. गांधी एक उनवान है, हर क़लम और हर ज़बान के लिये.

हर शायर और हर कवि और हर लेखक, हर कला-वन्त. हर पत्र और हर समाचार ज्यादा से ज्यादा प्रचार कर रहा है, इस आत्मिक शब्द के गहरे-गहरे संदेश और ऊँचे-ऊँचे आदर्शों का.

कोई शक और शुबह नहीं कि दिली लगन और तड़प के साथ तमाम संपादकों और प्रचारकों ने उस मित्रता और दोस्ती के दोषी, उस एकता और प्रेम के मुजरिम की हसरत भरी मौत पर दुख भरे लेख लिखे. काले-काले जिन पर बार्डर लगे और अन्दर उनके उज्ज्वल उज्ज्वल जौहर खुले.

माहात्मा गांधी की अचानक मौत पर न सिर्फ़ हिन्दुस्तान बल्कि सारी दुनिया में मातम मनाया गया—हिन्दुस्तान के गवर्नर जेनरल माउन्टबेटेन ने सच कहा और ठीक कहा "३० जनवरी सारी दुनिया के लिए मातम का दिन था."

उस दिन महात्मा गांधी की मौत पर दिल्ली रेडियो इतना चीखा-चिल्लाया और इतना रोया-पीटा है कि उसकी भर्राई हुई और थर्राई हुई आवाज़ में दिल हिला देने वाला असर था. उसके दुःख भरे संदेश में दर्द था, तड़प थी, चमक थी, कसक थी. रेडियो ने अपनी

سب سے الگ

(بھائی عبدالحلیم انصاری)

گاندھی یا باپو ورتمان کال کا ایک دل، لبھاونا اور دلکش شیرشک ہے۔ ہر بھاشا اور لیکھک کے لئے ـ گاندھی ایک سرخی ہے۔ گاندھی ایک عنوان ہے، ہر قلم اور ہر زبان کے لئے۔

ہر شاعر اور ہر کوی اور ہر لیکھک، ہر کلاونت، ہر پتر اور ہر سماچار زیادہ سے زیادہ پرچار کر رہا ہے۔ اس آتمک شبد کے گہرے گہرے سندیش اور اونچے اونچے آدرشوں کا۔

کوئی شک اور شبہ نہیں کہ دلی لگن اور تڑپ کے ساتھ تمام سنپادکوں اور پرچارکوں نے اس مترتا اور دوستی کے دوشی، اس ایکتا اور پریم کے مجرم کی حسرت بھری موت پر دکھ بھرے لیکھ لکھے۔ کالے کالے جن پر بارڈر لگے اور اندر ان کے اجّل اجّل جوہر کھلے۔

مہاتما گاندھی کی اچانک موت پر نہ صرف ہندستان بلکہ ساری دنیا میں ماتم منایا گیا ـ ہندستان کے گورنر جنرل ماؤنٹ بیٹن نے سچ کہا اور ٹھیک کہا "۳۰ جنوری ساری دنیا کے لئے ماتم کا دن تھا۔"

اس دن مہاتما گاندھی کی موت پر دلی ریڈیو اتنا چیخا چلایا اور اتنا رویا پیٹا ہے کہ اس کی بھرائی ہوئی اور تھرائی ہوئی آواز میں دل ہلا دینے والا اثر تھا۔ اس کے دکھ بھرے سندیش میں درد تھا، تڑپ تھی، چمک تھی، کسک تھی۔ ریڈیو نے اپنی

सारी उमर में किसी एक इन्सान पर इतना लम्बा चौड़ा बयान कभी न बोला होगा. और फ़िज़ा पर दौड़ने वाली लहरों ने इतना 'शोक पूर्ण संदेश' दुनिया के पर्दे-पर्दे और चप्पे-चप्पे पर कभी न फैलाया होगा जिनकी लगातार भाग-दौड़ से सारी दुनिया में खल-बली मच गई और कायनात (सृष्टि) का सारा माहौल (वायु मण्डल) हौलनाक हो गया.

दुनिया के सारे झंडे एक नंगे और निहत्थे इन्सान पर इससे पहले कभी न झुक पड़े होंगे.

सामराज के सबसे भारी दुशमन पर खुद सामराज शाही ने शाही सवारी में जा कर जगह-जगह कभी इतने आँसू न बहाये होंगे और जनता के दरबार में हाज़िर होकर शहनशाहियत ने शाही मुजरिम की सेवा में खिराजे अक़ीदत (श्रद्धांजलि) न पेश किया होगा.

अंग्रेज़ ने गांधी जैसे बाग़ी पर इससे पहले कभी भी मातम न किया होगा. लेकिन उसके मातम पर यानी अपनी जीत पर 'महात्मा की आत्मा, अन्दर ही अन्दर हँस रही थी. वही हँसमुख आत्मा जिसके सन्मुख यह सारे के सारे अक़ीदत के फूल लिये खड़े थे—अदब के साथ! लेकिन वह चुप था. ऐसा चुप जैसे उसने उस रोज़ चुप का व्रत रख छोड़ा हो. तभी तो वह कुछ नहीं बोल रहा था—उसकी 'चिता' पर बेशुमार भीड़ इकट्ठा थी. उसकी अरथी पर बड़ो से बड़ी हस्ती मौजूद थी और उसकी 'अस्थि प्रवाह' पर जहाँ तक निगाह डालो इन्सानों का अथाह समुन्दर ठाठें मारता दिखाई देता था—वह धुन का पक्का और बात का सच्चा था. अपनी बात पर उसने जान दे दी पर एकता का काम कर के रहा और शहादत का जाम पी के रहा. वह

ساری عمر میں کسی ایک انسان پر اِتنا لمبا چوڑا بیان کبھی نہ بولا ہوگا۔ اور فضا پر دوڑنے والی لہروں نے اِتنا "شوک پورن سندیش" دُنیا کے پردے پردے اور چپے چپے پر کبھی نہ پھیلایا ہوگا جن کی لگاتار بھاگ دوڑ سے ساری دُنیا میں کھلبلی مچ گئی اور کائنات (سرشٹی) کا سارا ماحول (وایو منڈل) ہولناک ہوگیا۔

دُنیا کے سارے جھنڈے ایک ننگے اور نہتھے انسان پر اِس سے پہلے کبھی نہ جھک پڑے ہوں گے۔

سامراج کے سب سے بھاری دشمن پر خود سامراج شاہی نے شاہی سواری میں جاکر جگہ جگہ کبھی اِتنے آنسو نہ بہائے ہوں گے۔ اور جنتا کے دربار میں حاضر ہوکر شاہنشاہیت نے شاہی مجرم کی سیوا میں خراجِ عقیدت (شردھانجلی) نہ پیش کیا ہوگا۔

انگریز نے گاندھی جیسے باغی پر اِس سے پہلے کبھی بھی ماتم نہ کیا ہوگا۔ لیکن اُس کے ماتم پر یعنی اپنی جیت پر "مہاتما کی آتما" اندر ہی اندر ہنس رہی تھی۔ وہی ہنس مکھ آتما جس کے سنمکھ یہ سارے کے سارے عقیدت کے پھول لئے کھڑے تھے — ادب کے ساتھ! لیکن وہ چُپ تھا۔ ایسا چُپ جیسے اُس نے اُس روز چُپ کا برت رکھ چھوڑا ہو۔ تبھی تو وہ کچھ نہیں بول رہا تھا — اُس کی "چتا" پر بے شمار بھیڑ اکٹھی تھی۔ اُس کی ارتھی پر بڑی سے بڑی ہستی موجود تھی اور اُس کی "استھی پرواہ" پر جہاں تک نگاہ ڈالو انسانوں کا اتھاہ سمندر ٹھاٹھیں مارتا دکھائی دیتا تھا — وہ دُھن کا پکا اور بات کا سچا تھا۔ اپنی بات پر اُس نے جان دے دی پر ایکتا کا کام کرکے رہا اور شہادت کا جام پی کر رہا۔ وہ

काम उसका 'राज काम' है. मिलाप स्थान उसका 'राजघाट' है और मरकज़ उसका 'उत्तम संगम' है.

सभी देख रहे थे कि वहाँ (राजघाट) पर महज़ एक ढाँचा था. लेकिन उसी ढाँचे ने साम्राज शाही के ढाँचे बदले, पाँसे बदले. ताजदारों के ताज लूटे. तख्त लूटे. आज़ाद कारों के वक़्त फेरे, बख़्त (भाग) फेरे—हाँ, हाँ; वही भारत का पाला और वही एक लंगोटी वाला जिसको तूने हक़ीर (तुच्छ) समझा. जिसको चर्चिल ने नंगा फ़क़ीर समझा. सारी दुनिया पर उसका असर है—चर्चिल कब इससे बेख़बर है ?

यही वह सूखी पतली हड्डियों का इन्सान था जिसने सोने चाँदी के बुत (मूर्ति) तोड़े. कट्टर पंथियों के महल तोड़े. पुराने रीत रिवाज तोड़े. जीते जी जिसने मरमर के बुत तोड़े और मरकर जिसने साज़िश के मरकज़ तोड़े. हिन्द के दुशमनों की हिम्मतें तोड़ीं उनके हौसले तोड़े.

दुनिया का बड़े से बड़ा डिक्टेटर और विचार वान उसकी सियासत और क़ाबिलियत का क़ायल हो चुका है. बड़े से बड़ा अत्याचारी और सामराजकारी इस लंगोटी वाले के आगे घुटने टेक चुका है. और हेट (अंग्रेज़ी टोपी) भी फेंक चुका है. बड़े से बड़ा काफ़िर उसकी अहिंसा पर ईमान ला चुका है. बड़े से बड़ा सालार उसकी प्रेम की तलवार का घायल हो चुका है और उसका लोहा मान चुका है—और बड़े से बड़ा वीर, देर हुई उसके हाथ पर अपनी हार क़बूल कर चुका है. अब जो धीरे-धीरे और शर्मा-शर्मा कर अपना झंडा भी उतारता जा रहा है.

کام اُس کا 'راج کام' ہے. ملاپ استھان اُس کا 'راج گھاٹ' ہے اور مرکز اُس کا 'اُتّم سنگم' ہے.

سبھی دیکھ رہے تھے کہ وہاں (راج گھاٹ) پر محض ایک ڈھانچا تھا. لیکن اُسی ڈھانچے نے سامراج شاہی کے ڈھانچے بدلے، پانسے بدلے. تاجداروں کے تاج لوٹے، تخت لوٹے. آزادکاروں کے وقت پھیرے، بخت (بھاگ) پھیرے — ہاں! ہاں! وہی بھارت کا پالا اور وہی ایک لنگوٹی والا جس کو تو نے حقیر (تُچھ) سمجھا جس کو چرچل نے ننگا فقیر سمجھا. ساری دُنیا پر اُس کا اثر ہے — چرچل کب اِس سے بے خبر ہے؟

یہی وہ سوکھی پتلی ہڈیوں کا انسان تھا جس نے سونے چاندی کے بُت (مورتی) توڑے. کٹّر پنتھیوں کے محل توڑے. پُرانے ریت رواج توڑے. جیتے جی جس نے مرمر کے بُت توڑے اور مرکر جس نے سازش کے مرکز توڑے. ہند کے دشمنوں کی ہمّتیں توڑیں اُن کے حوصلے توڑے.

دُنیا کا بڑے سے بڑا ڈکٹیٹر اور وچار وان اُس کی سیاست اور قابلیت کا قایل ہو چکا ہے، بڑے سے بڑا اتیاچاری اور سامراج کاری اِس لنگوٹی والے کے آگے گھٹنے ٹیک چکا ہے، اور ہیٹ (انگریزی ٹوپی) بھی پھینک چکا ہے. بڑے سے بڑا کافر اُس کی اہنسا پر ایمان لا چکا ہے. بڑے سے بڑا سالار اُس کی پریم کی تلوار کا گھایل ہو چکا ہے اور اُس کا لوہا مان چکا ہے — اور بڑے سے بڑا ویر، دیر ہوئی اُس کے ہاتھ پر اپنی ہار قبول کر چکا ہے. اب جو دھیرے دھیرے اور شرما شرما کر اپنا جھنڈا بھی اُتارتا جا رہا ہے.

गाँधी ! भारत माता का वह सपूत था और महान सपूत; जिसकी मौत पर देश-देश और मुल्क-मुल्क से रंग-रंग की जबानों में और नये-नये ख़यालों में पैग़ाम आये, सोगवार भारत की सेवा में और दुखी माता की गोदी में .

किसी ने खुले दिल और दिली हमदर्दी के साथ उसपर अपने विचारों का इज़हार किया तो किसी ने उस बुलंद नज़र इन्सान के लिये अपनी तंग नज़री का सबूत दिया. अगर पैग़ाम देना एक रस्म थी तो वह अदा कर दी गई . अगर एक बोझ था तो वह सर से उतार दिया गया . कुछ भी हो लेकिन कहने में यह बात आती ही है कि दुशमनों ने उसपर फूल बरसाये और मुख़ालिफ़ों ने उसके गुण गाये. बस मालूम हुआ कि वह एक कामयाब इन्सान था . और दिलों को जीतने वाला—फिर भी मेरा ख्याल यह है कि उसको आज के आज समझना ज़रा जल्दी है—गांधी को आने वाली सदी समझेगी. एक़बाल के मुताल्लिक़ आज तक यही कहा जाता है कि "एक़बाल को समझना मुशकिल है"—टैगौर के बारे में भी बाज़ लोगों का यही ख्याल है—भला जब इतना ज़माना बीत जाने पर भी लोग एक़बाल और टैगौर को न जान सके तो एक दिन में गांधी को कैसे जाना जा सकता है ? जब कि वह एक अमली इन्सान था . चलता-फिरता एक तिलिस्मी संसार था और अचरज भरा वह एक ज़िन्दा मोअम्मा (पहेली) था—मेरे नज़दीक गाँधी ज़िन्दिगी का एक ऐसा जामा (कपड़ा) था, हिन्दु मुसलिम जिसका ताना-बाना था . बड़े से बड़ा विदेशी दिमाग़ उसको समझने में धोखा खा गये और अच्छे से अच्छे श्रद्धावान ख़ूबसूरती के इस गंगा जमुनी धारे

گاندھی! بھارت ماتا کا وہ سپوت تھا اور مہان سپوت؛ جس کی موت پر دیش دیش بعد ملک ملک سے رنگ رنگ کی زبانوں میں اور نئے نئے خیالوں میں پیغام آئے، سوگوار بھارت کی سیوا میں اور دکھی ماتا کی گودی میں.

کسی نے کھلے دل اور دلی ہمدردی کے ساتھ اس پر اپنے وچاروں کا اظہار کیا تو کسی نے اس بلند نظر انسان کے لئے اپنی تنگ نظری کا ثبوت دیا. اگر پیغام دینا ایک رسم تھی تو وہ ادا کردی گئی. اگر ایک بوجھ تھا تو وہ سر سے اتار دیا گیا. کچھ بھی ہو لیکن کہنے میں یہ بات آتی ہی ہے کہ دشمنوں نے اس پر پھول برسائے اور مخالفوں نے اس کے گن گائے. بس معلوم ہوا کہ وہ ایک کامیاب انسان تھا. اور دلوں کو جیتنے والا — پھر بھی میرا خیال یہ ہے کہ اس کو آج کے آج سمجھنا ذرا جلدی ہے — گاندھی کو آنے والی صدی سمجھے گی. اقبال کے متعلق آج تک یہی کہا جاتا ہے کہ "اقبال کو سمجھنا مشکل ہے" — ٹیگور کے بارے میں بھی بعض لوگوں کا یہی خیال ہے — بھلا جب اتنا زمانہ بیت جانے پر بھی لوگ اقبال اور ٹیگور کو نہ جان سکے تو ایک دن میں گاندھی کو کیسے جانا جاسکتا ہے؟ جب کہ وہ ایک عملی انسان تھا. چلتا پھرتا ایک طلسمی سنسار تھا اور اچرج بھرا وہ ایک زندہ معمہ (پہیلی) تھا — میرے نزدیک گاندھی زندگی کا ایک ایسا جامہ (کپڑا) تھا، ہندو مسلم جس کا تانا بانا تھا. بڑے سے بڑے ودیشی دماغ اس کو سمجھنے میں دھوکا کھا گئے اور اچھے سے اچھے شردھاوان خوبصورتی کے اس گنگا جمنی دھارے

में बह गये .

माहात्मा गांधी क्या थे ? इसका कोई पंडित नेहरू से पूछे. मौलाना आज़ाद से पूछे या मिसेज़ सरोजिनी नायडू से पूछे ? वह अपने रंग का एक ही जौहर था, रतन था . जवाहर लाल नामी जौहरी उसकी क़द्र क़ीमत बता सकेगा . वह एक अनमोल मोती था जिसकी आबताब अज़ाद नामी खेवैया ही जान सकेगा, और उस महान सपूत के गुण गान सच यह है देवी सरोजिनी ही बतला सकेंगी .

सन् १९२० में जब ख़िलाफ़त आन्दोलन ज़ोरों पर चालू था, मैं उन दिनों बम्बई में आर्ट की तालीम पा रहा था . उन्हीं दिनों मुझे मौलाना मोहम्मद अली के साथ महात्मा जी से मिलने की इज़्ज़त हासिल हुई थी, सेठ छोटानी की कोठी में. इसलिये मैं अपने तजरबे की बिना पर कह सकता हूँ कि जो महात्मा जी से नहीं मिला है और जो उनकी रोशनी के घेरे तक नहीं पहुँचा है वह उनको समझ भी नहीं सकता और न देख सकता है जैसा कि चाहिये ?

उनकी मीठी ज़बान और प्रेमी भाव, उनकी सादी ज़िन्दगी, सुथरा रहन-सहन और लुभावने बचन, ख़ूबसूरत एख़लाक़-सुन्दर शिष्टाचार, सच्चा त्याग और बुलंद मेयार यह वह गुण थे जो दिल को मोह लेते थे—

उनके पास बैठ कर कितनी शान्ति मिलती थी और कितना साहस—शब्दों में इसका ज़ाहिर करना मुशकिल है.

मैं जानता हूँ कि महात्मा गांधी ने हमेशा उस शख़्स की इज़्ज़त की है जिसने अपने धर्म की इज़्ज़त के साथ-साथ दूसरे के धर्म की

میں بہہ گئے۔

مہاتما گاندھی کیا تھے؟ اس کو کوئی پنڈت نہرو سے پوچھے، مولانا آزاد سے پوچھے یا مسز سروجنی نائیڈو سے پوچھے؟ وہ اپنے رنگ کا ایک ہی جوہر تھا، رتن تھا۔ جواہر لال نامی جوہری اُس کی قدر قیمت بتا سکے گا۔ وہ ایک انمول موتی تھا جس کی آب تاب آزاد نامی کھیوتیا ہی جان سکے گا، اور اُس مہان سپوت کے گن گان سچ یہ ہے دیوی سروجنی ہی بتلا سکیں گی۔

سنہ ۱۹۲۰ء میں جب خلافت اندولن زوروں پر چالو تھا، میں اُن دنوں بمبئی میں آرٹ کی تعلیم پا رہا تھا۔ اُنھیں دنوں مجھے مولانا محمد علی کے ساتھ مہاتما جی سے ملنے کی عزت حاصل ہوئی تھی، سیٹھ چھوٹانی کی کوٹھی میں۔ اس لئے میں اپنے تجربے کی بنا پر کہہ سکتا ہوں کہ جو مہاتما جی سے نہیں ملا ہے اور جو اُن کی روشنی کے گھیرے تک نہیں پہنچا ہے وہ اُن کو سمجھ بھی نہیں سکتا اور نہ دیکھ سکتا ہے جیسا کہ چاہئے؟

اُن کی میٹھی زبان اور پریمی بھاؤ، اُن کی سادی زندگی، ستھرا رہن سہن اور لبھاونے بچن، خوبصورت اخلاق، سندر شسٹاچار، سچا تیاگ اور بلند معیار یہ وہ گن تھے جو دل کو موہ لیتے تھے—

اُن کے پاس بیٹھ کر کتنی شانتی ملتی تھی اور کتنا ساہس—شبدوں میں اس کا ظاہر کرنا مشکل ہے۔

میں جانتا ہوں کہ مہاتما گاندھی نے ہمیشہ اُس شخص کی عزت کی ہے جس نے اپنے دھرم کی عزت کے ساتھ ساتھ دوسرے کے دھرم کی

इज़्ज़त की है और अपनी तहज़ीब और अपने कलचर की हिफ़ाज़त की है. यही सबब था कि वह हर धर्म और तहज़ीब के रक्षक थे. यही सबब है कि अब हर धर्म उनकी इज़्ज़त और उनके उसूल की हिफ़ाज़त कर रहा है--हर गुरुद्वारे और धर्मशाले ने उस धर्म सेवक पर अपने-अपने दरवाज़े खोले और उसको पसंद के भजन गाये. अपनी-अपनी दुआ और प्रार्थना में उसकी आत्मा को शान्ति का तोहफ़ा भेजा. ग़रज़कि मंदिर-मंदिर और मसजिद-मसजिद उसका न्योता गया. जग-जग और चर्च-चर्च उसका चर्चा फैला. वह चूँकि सब धर्मों की इज़्ज़त करने वाला था और सब क़ौमों का भला चाहने वाला—इसलिये दुनिया के सब धर्मों और सब क़ौमों ने उसकी इज़्ज़त की यानी क़ौम के 'क़ादर' को आदर दिया—इसलिये यह कहना सच है कि वह जिस तरह क़ौमों का संगम था धर्मों का भी संगम था. वह जो कुछ भी था लेकिन मुझे उसकी जो अदा सबसे ज़्यादा भाई और मेरे दिल को लगी वह यह है कि वह इन्सा-नियत का ख़ादिम था. इसलिये मैं उस इन्सानियत के सेवक की सेवा में अपना हार्दिक नज़राना पेश करता हूँ. श्रद्धांजलि के तौर पर और अपने ज़िम्मे एक सेवा समझकर—लेकिन सबसे अलग.

आज़ादी पाकर जो चीज़ सबसे भारी और क़ीमती क़ौम ने खोई वह महात्मा जी की हस्ती थी. और सबसे बड़ा नुक़सान जो क़ौम ने उठाया वह वही गौहर था जिसका जौहर अब खुला.

गांधी नामी मोती को खोकर अगर हिन्द ने आज़ादी पाई तो

عزّت کی ہے اور اپنی تہذیب اور اپنے کلچر کی حفاظت کی ہے۔ یہی سبب تھا کہ وہ ہر دھرم اور تہذیب کے رکشک تھے۔ یہی سبب ہے کہ اب ہر دھرم اُن کی عزّت اور اُن کے اصول کی حفاظت کر رہا ہے۔ ہر گردوارے اور دھرم شالے نے اُس دھرم سیوک پر اپنے اپنے دروازے کھولے اور اُس کی پسند کے بھجن گائے۔ اپنی اپنی دُعا اور پرارتھنا میں اُس کی آتما کو شانتی کا تحفہ بھیجا۔ غرض کہ مندر مندر اور مسجد مسجد اُس کا نیوتا گیا۔ جگ جگ اور چرچ چرچ اس کا چرچا پھیلا۔ وہ چوں کہ سب دھرموں کی عزّت کرنے والا تھا اور سب قوموں کا بھلا چاہنے والا — اس لئے دُنیا کے سب دھرموں اور سب قوموں نے اُس کی عزّت کی یعنی قوم کے 'قادر' کو آدر دیا — اس لئے یہ کہنا سچ ہے کہ وہ جس طرح قوموں کا سنگم تھا دھرموں کا بھی سنگم تھا۔ وہ جو کچھ بھی تھا لیکن مجھے اُس کی جو ادا سب سے زیادہ بھائی اور میرے دل کو لگی وہ یہ ہے کہ وہ انسانیت کا خادم تھا۔ اِس لئے میں اُس انسانیت کے سیوک کی سیوا میں اپنا ہاردک نذرانہ پیش کرتا ہوں۔ شردھانجلی کے طور پر اور اپنے ذمّے ایک سیوا سمجھ کر — لیکن سب سے الگ۔

آزادی پاکر جو چیز سب سے بھاری اور قیمتی قوم نے کھوئی وہ مہاتما جی کی ہستی تھی اور سب سے بڑا نقصان جو قوم نے اُٹھایا وہ وہی گوہر تھا جس کا جوہر اب کھلا۔

گاندھی نامی موتی کو کھو کر اگر ہند نے آزادی پائی تو

इस क़ीमत पर वह बहुत भारी पड़ी—सारी आज़ादी से वह एक मोती क़ीमती था और सारे भंडार पर वह एक दाना भारी था.

महात्मा गांधी चल बसे. ताज्जुब क्या ?

माहात्मा जी न रहे—अचरज कैसा ?

आज़ादी का फल था. पक गया. गिर गया. आख़िर उसको गिरना ही था. कल नहीं आज. जब पक गया, तब गिर गया !

गांधी एक दरख़्त था, जो भारत भूमि में उगा, बढ़ा और परवान चढ़ा—जब फल फूल लाया तो मुख़ालिफ़ हवा का एक तेज़ झोंका आया जिसकी नज़र में वह सफ़ेद और बूढ़ा दरख़्त न भाया आख़िर यह कि उसको उड़ा डाला.

महात्मा गांधी ! रूहानियत (आध्यात्मिकता) का झण्डा था जब वह गिरा है तो उसी आन दुनिया के सारे झण्डे झुक पड़े थे, जैसे कोई अन्दरूनी सम्बंध था. मालूम हुआ सब झण्डों से उसका ताल्लुक़ था और सब रंगों को उसका पैग़ाम था.

लेकिन हाय, जब वह रूहानियत का झंडा गिरा है तो हमने उसे दाग़ दार देखा.

गांधी ! अहिंसा का देवता था.

अहिंसा पर गोली चली, अहिंसा ज़ख्मी हुई. अहिंसा ने दम तोड़ा—गोया हिंसा की दुनिया से अहिंसा ने मुँह मोड़ा.

ग़ज़ब, ग़ज़ब !

इन्सान और हैवान के ख़ून का रक्षक अपने ही ख़ून में लथपथ.

गांधी ! रहम और तरस की नाज़ुक मूरत था.

दिल उसका फूल जैसा हृदय उसका शीशे जैसा.

اِس قیمت پر وہ بہت بھاری پڑی — ساری آزادی سے وہ ایک موتی قیمتی تھا اور سارے بھنڈار پر وہ ایک دانہ بھاری تھا.

مہاتما گاندھی چل بسے. تعجب کیا؟

مہاتما جی نہ رہے — اچرج کیسا؟

آزادی کا پھل تھا. پک گیا. گر گیا. آخر اُس کو گرنا ہی تھا. کل نہیں آج. جب پک گیا، تب گر گیا!

گاندھی ایک درخت تھا، جو بھارت بھومی میں اُگا، بڑھا اور پروان چڑھا — جب پھل پھول لایا تو مخالف ہوا کا ایک تیز جھونکا آیا اِس کی نظر میں وہ سفید اور بوڑھا درخت نہ بھایا آخر یہ کہ اُس کو اُڑا ڈالا.

مہاتما گاندھی روحانیت (آدھیاتمکتا) کا جھنڈا تھا جب وہ گرا ہے تو اُسی آن دُنیا کے سارے جھنڈے جھک پڑے تھے، جیسے کوئی اندرونی سمبندھ تھا. معلوم ہوا سب جھنڈوں سے اُس کا تعلق تھا اور سب رنگوں کو اُس کا پیغام تھا.

لیکن ہائے، جب وہ روحانیت کا جھنڈا گرا ہے تو ہم نے اُسے داغدار دیکھا.

گاندھی! اہنسا کا دیوتا تھا.

اہنسا پر گولی چلی، اہنسا زخمی ہوئی. اہنسا نے دم توڑا — گویا ہنسا کی دُنیا سے اہنسا نے منہ موڑا.

غضب، غضب!

انسان اور حیوان کے خون کا رکشک اپنے ہی خون میں لتھ پتھ.

گاندھی! رحم اور ترس کی نازک مورت تھا.

دل اُس کا پھول جیسا ہردے اُس کا شیشے جیسا.

वह रंगीन गुलदस्ता फ़िरक़ावारी की ज़हरीली हवा से लड़ गया. पंखड़ी पंखड़ी बिखर गई.

वह रंगीन शीशा एक अत्याचारी के हाथ से टूट गया और चूर चूर हो गया.

एक शैतानी सैलाब आया और विनाशकारी शोला! आख़िर यह कि अहिंसा का बन्धन टूट गया और भारत की गोदी में ख़ून की नहरें फूट पड़ीं.

गांधी एक दरख़्त था, तनेदार और वज़ादार, जो क़लम कर दिया गया. अब नई नई शाख़ें आयेंगी. नई नई कलियाँ खिलेंगी और नए नए फूल आयेंगे जो नए नए फल लायेंगे.

गांधी वीर था, प्रेम का. दाना था, मनमोहिनी का. मन मन में उसने प्रेम की खेती की. बन बन में उसने मोहब्बत की बरखा की.

गांधी ! साक़ी था प्रेम और आज़ादी के मधुशाले का. जिसने प्रेम के जाम पिलाये. जिसने आज़ादी का नशा चढ़ाया.

गांधी माली था आज़ादी के बाग़ का.

उसने हिन्द के चमन को पुरबहार बनाने के लिये क्या क्या जतन न किये. यहाँ तक कि उसने आज़ादी की डाली तैयार की ताकि भारत का बालक बालक खाये और ज़िन्दगी उसकी शांति पाये.

क्या गांधी कोई देवता था ?

नहीं नहीं ! वह करमचन्द का बेटा था. मक़सद उसका सेवा था और आज़ादी का वह मेवा था.

नाम का जो गांधी था.

लिबास जिसका खादी था.

وہ رنگین گلدستہ فرقہ داری کی زہریلی ہوا سے لڑ گیا۔ پنکھڑی پنکھڑی بکھر گئی۔

وہ رنگین شیشہ ایک اتیاچاری کے ہاتھ سے ٹوٹ گیا اور چور چور ہو گیا۔

ایک شیطانی سیلاب آیا اور وناش کاری شعلہ! آخر یہ کہ اہنسا کا بندھن ٹوٹ گیا اور بھارت کی گودی میں خون کی نہریں پھوٹ پڑیں۔

گاندھی ایک درخت تھا تنے دار اور وضع دار، جو قلم کر دیا گیا۔ اب نئی نئی شاخیں آئیں گی، نئی نئی کلیاں کھلیں گی اور نئے نئے پھول آئیں گے جو نئے نئے پھل لائیں گے۔

گاندھی ویر تھا، پریم کا۔ دانہ تھا من موہنی کا۔ من من میں اُس نے پریم کی کھیتی کی۔ بن بن میں اُس نے محبت کی برکھا کی۔

گاندھی! ساقی تھا پریم اور آزادی کے مدھوشالے کا۔ جس نے پریم کے جام پلائے۔ جس نے آزادی کا نشہ چڑھایا۔

گاندھی مالی تھا آزادی کے باغ کا۔

اُس نے ہند کے چمن کو پُر بہار بنانے کے لئے کیا کیا جتن نہ کئے۔ یہاں تک کہ اُس نے آزادی کی ڈالی تیار کی تاکہ بھارت کا بالک بالک کھائے اور زندگی اُس کی شانتی پائے۔

کیا گاندھی کوئی دیوتا تھا؟

نہیں نہیں! وہ کرم چند کا بیٹا تھا۔ مقصد اُس کا سیوا تھا اور آزادی کا وہ میوہ تھا۔

نام کا جو گاندھی تھا۔

لباس جس کا کھادی تھا۔

अंग्रेज़ का वह बाग़ी था.

देखने में जो हलका फुलका इन्सान था मगर हिम्मत और कर्त्तव्य में वह मज़बूत चट्टान था.

वही गाँधी जी, जो ख़ून और आग के नाम से चीख़ पड़ते थे, काँप उठते थे, बिलख जाते थे.

सबने देखा, ख़ून में वह लोट रहे थे—३० जनवरी.

सबने देखा, आग में वह जल रहे थे—३१ जनवरी.

उफ़ उफ़!

दोस्तों ने उसको आग में जलाया. दुश्मनों ने जिसको ख़ून में नहलाया.

अहिंसा के क़त्ल से एक भेद यह खुला कि अहिंसा के ख़ून से हिंसा जन्म लेती है.

कान लगा कर सुनो और ज़रा गहरा ध्यान दो! महात्मा के ख़ून का क़तरा क़तरा पुकार रहा है "हिंसा हिंसा!" उसकी हर गरम भाप में एक रंगीन बात है. कुछ दिन बाद उस आवाज़ को जाँचना पड़ेगा और उसकी एक-एक बात को नापना पड़ेगा.

वह हिन्दुस्तान का हिमालय था. जो रूहानियत का प्यासा था और आकाश उसका जाम और प्याला था. जैसे वह हिमालय बरफ़ पोश! वैसे यह हिमालय खादी पोश! दोनों सफ़ेद सफ़ेद, उजले-उजले सुथरे-सुथरे. जलथल जलथल; वह बरफ़ानी यह रूहानी.

इसलिये यह अज़मत (महानता) में बढ़ चढ़ कर था.

बेशक धीरज और हिम्मत का परबत और भारत की शान और अज़मत!

انگریز کا وہ باغی تھا.

دیکھنے میں جو ہلکا پھلکا انسان تھا مگر ہمت اور کرتویہ میں وہ مضبوط چٹان تھا.

وہی گاندھی جی، جو خون اور آگ کے نام سے چیخ پڑتے تھے، کانپ اٹھتے تھے، بلکھ جاتے تھے.

سب نے دیکھا، خون میں وہ لوٹ رہے تھے — ۳۰ جنوری.

سب نے دیکھا، آگ میں وہ جل رہے تھے — ۳۱ جنوری.

اُف اُف!

دوستوں نے اُس کو آگ میں جلایا. دشمنوں نے جس کو خون میں نہلایا.

اہنسا کے قتل سے ایک بھید یہ کھلا کہ اہنسا کے خون سے ہنسا جنم لیتی ہے.

کان لگا کر سنو اور ذرا گہرا دھیان دو! مہاتما کے خون کا قطرہ قطرہ پکار رہا ہے "ہنسا ہنسا!" اُس کی ہر گرم بھاپ میں ایک رنگین بات ہے. کچھ دن بعد اُس آواز کو جانچنا پڑے گا اور اُس کی ایک ایک بات کو ناپنا پڑے گا.

وہ ہندستان کا ہمالہ تھا، جو روحانیت کا پیاسا تھا اور آکاش اُس کا جام اور پیالہ تھا. جیسے وہ ہمالہ برف پوش! ویسے یہ ہمالہ کھادی پوش! دونوں سفید سفید، اجلے اجلے ستھرے ستھرے. جل تھل جل تھل! وہ برفانی یہ روحانی.

اس لئے یہ عظمت (مہانتا) میں بڑھ چڑھ کر تھا.

بیشک دھیرج اور ہمت کا پربت اور بھارت کی شان اور عظمت!

गांधी महात्मा एक ढाँचा था, इन्सानी हड्डियों का.

गांधी नामी सूरत एक मूरत थी काली मिट्टी की और भारत की गुलाम खाक की. इन हड्डियों में किस बला की जान थी और क्या जौहर था ?

लेकिन आज न वह हड्डियाँ हैं न वह जान, पर वह जौहर बाक़ी है जो जीवन की हड्डी से तप तपा कर तुम्हारे हाथ लगा है. इसको तुम खाली राख न समझो और न खाली खाक समझो—अगर इसकी सही क़द्र क़ीमत जानो तो अकसीर है अकसीर है. कीमिया है कीमिया है. इस कीमियाई असर से सारा हिन्दुस्तान सोने की कान बन सकता है और इसके एख़लाक़ी (नैतिक) जौहर से वहशी इन्सान सभ्य इन्सान बन सकता है.

گاندھی مہاتما ایک ڈھانچہ تھا، انسانی ہڈیوں کا.

گاندھی نامی صورت ایک مورت تھی کالی مٹی کی اور بھارت کی غلام خاک کی. اِن ہڈیوں میں کس بلا کی جان تھی اور کیا جوہر تھا؟

لیکن آج نہ وہ ہڈیاں ہیں نہ وہ جان، پر وہ جوہر باقی ہے جو جیون کی ہڈی سے تپ تپا کر تمھارے ہاتھ لگا ہے. اِس کو تم خالی راکھ نہ سمجھو اور نہ خالی خاک سمجھو—اگر اِس کی صحیح قدر قیمت جانو تو اکسیر ہے اکسیر ہے. کیمیا ہے کیمیا ہے. اِس کیمیائی اثر سے سارا ہندستان سونے کی کان بن سکتا ہے اور اِس کے اخلاقی (نیتک) جوہر سے وحشی انسان سبھیہ انسان بن سکتا ہے.

हिन्दू-मुसलिम एकता का पैग़म्बर और शहीद

(डा० मेहदी हुसैन, कलकत्ता यूनिवर्सिटी)

महात्मा गान्धी की ऊँची क़ुरबानियाँ—उनके सुनहरे कारनामे, देश की आज़ादी के लिये उनका बार बार व्रत रखना, कम तादाद की जाति के लोगों की हिफ़ाज़त, अहिंसा पर उनका ज़बरदस्त विश्वास, उनकी माफ़ और बरदाश्त करने की ख़ासियत, बम फेंक कर या उन पर खुल्लम खुल्ला हमला करके उनको क़त्ल करने की कोशिश के बावजूद उनका हमलावर से बदला लेने से मना करना और आख़िर में प्रार्थना सभा में शामिल होते वक़्त ख़ुद उनके धर्म के मानने वाले की गोली से उनकी शहादत या बलिदान—ऐसे वाक़िआत हैं जिनसे ज़ालिम से ज़ालिम इन्सानों के दिल भी पिघल गये. बहुतों को बेहद रंज और गुस्से से चक्कर आगये, बहुतेरे बेहोश हो गये, कई के दिल की हरकत बन्द हो जाने से वह मर गये. और लाखों आदमियों ने आँसू बहाये हैं. मैं ख़ुद उन हालतों का बराबर ध्यान करके, जिसमें हिन्दू मुसलिम एकता का यह पैग़म्बर गोली का शिकार हुआ है, रोया हूँ. महात्मा गान्धी हिन्दू मुसलिम एकता के वैसे ही पैग़म्बर थे जैसे बीच के ज़माने में कबीर साहब और गुरु नानक हुए हैं, चौदहवीं सदी के महान सुधारक कबीर साहब ही की तरह महात्मा गान्धी ने भी हिन्दू मुसलमान दोनों के दिलों को जीता है और आज हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों डुमीनियनों के हिन्दू मुसलमान उनको अपना बराबर का

ہندو مسلم ایکتا کا پیغمبر اور شہید

(ڈاکٹر مہدی حسین، کلکتہ یونیورسٹی)

مہاتما گاندھی کی اونچی قربانیاں — اُن کے سنہرے کارنامے، دیش کی آزادی کے لئے اُن کا بار بار برت رکھنا، کم تعداد کی جاتی کے لوگوں کی حفاظت، اہنسا پر اُن کا زبردست وشواس، اُن کی معاف اور برداشت کرنے کی خاصیت، بم پھینک کر یا اُن پر کھلم کھلا حملہ کرکے اُن کو قتل کرنے کی کوشش کے باوجود اُن کا حملہ والے سے بدلا لینے سے منع کرنا اور آخر میں پرارتھنا سبھا میں شامل ہوتے وقت خود اُن کے دھرم کے ماننے والے کی گولی سے اُن کی شہادت یا بلیدان — ایسے واقعات ہیں جن سے ظالم سے ظالم انسانوں کے دل بھی پگھل گئے۔ بہتوں کو بے حد رنج اور غصے سے چکر آگئے، بہتیرے بے ہوش ہوگئے، کئی کے دل کی حرکت بند ہو جانے سے وہ مر گئے۔ اور لاکھوں آدمیوں نے آنسو بہائے ہیں۔ میں خود اُن حالتوں کا برابر دھیان کرکے، جس میں ہندو مسلم ایکتا کا یہ پیغمبر گولی کا شکار ہوا ہے، رویا ہوں۔ مہاتما گاندھی ہندو مسلم ایکتا کے ویسے ہی پیغمبر تھے جیسے بیچ کے زمانے میں کبیر صاحب اور گرو نانک ہوئے ہیں، چودھویں صدی کے مہان سدھارک کبیر صاحب ہی کی طرح مہاتما گاندھی نے بھی ہندو مسلمان دونوں کے دلوں کو جیتا ہے اور آج ہندوستان اور پاکستان دونوں ڈومینینوں کے ہندو مسلمان ان کو اپنا برابر کا

(٣٦٤)

रहनुमा मानते हैं. पन्द्रहवीं सदी के हिन्दू मुसलिम एकता के पैग़म्बर गुरु नानक से भी ज्यादा महात्मा गान्धी हिन्दू, सिख, मुसलमान वग़ैरा सभी फ़िरक़ों के रहनुमा माने जाते हैं. और हिन्दुस्तान के कम तादाद मुसलमान और पाकिस्तान के हिन्दू तो उनको अपना प्यारा रहनुमा ही नहीं बल्कि अपना एहसान करने वाला और हिफ़ाज़त करने वाला भी समझते थे. जिस तरह कबीर साहब के मुर्दा शरीर को हिन्दुओं ने जलाया था और उनकी हड्डियों के बारे में कहा जाता है कि वह गुलाब का फूल बन गई थीं और उन फूलों को मुसलमानों ने अपने ढंग से दफ़्न किया था उसी तरह महात्मा गान्धी के पवित्र फूलों को त्रिवेनी और हिन्द की दूसरी नदियों में बहाया गया और मुसलमानों ने उनकी राख को जामा मसजिद के सामने दफ़्न किया और वहाँ एक शानदार मक़बरा बनाने वाले हैं. महात्मा गान्धी ऐसे नाज़ुक और कठिन ज़माने में पैदा हुए जिसके कारन उनको कबीर साहब और गुरु नानक दोनों से ज्यादा विरोध करने वालों का सामना करना पड़ा और दोनों से ज्यादा तकलीफ़ भोगनी पड़ी. इसी लिये उनका सन्देश भी सारे इन्सानों के लिये——ज़ात, रंग और नस्ल——किसी का लिहाज़ किये बिना सबके लिये एक सा है. उन्होंने हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के तमाम बसने वालों को हिदायत की है कि आपस में हर हाल में सुलह और शान्ति क़ायम रक्खें और तामीरी व कलचर की तरक़्क़ी के कामों में लगे रहकर अपने भाइयों को मारने और उनका नाश करने से बचें, नहीं तो अपनी बरबादी खुद बुलायेंगे और बड़ी मुशकिलों के बाद जो आज़ादी मिली है

رہنما مانتے ہیں۔ پندرھویں صدی کے ہندو مسلم ایکتا کے پیغمبر
گرو نانک سے بھی زیادہ، مہاتما گاندھی ہندو، سکھ، مسلمان
وغیرہ سبھی فرقوں کے رہنما مانے جاتے ہیں۔ اور ہندستان کے
کم تعداد مسلمان اور پاکستان کے ہندو تو اُن کو اپنا پیارا رہنما
ہی نہیں بلکہ اپنا احسان کرنے والا اور حفاظت کرنے والا بھی
سمجھتے تھے۔ جس طرح کبیر صاحب کے مُردہ شریر کو ہندوؤں
نے جلایا تھا اور اُن کی ہڈیوں کے بارے میں کہا جاتا ہے کہ وہ
گلاب کا پھول بن گئی تھیں اور اُن پھولوں کو مسلمانوں نے
اپنے ڈھنگ سے دفن کیا تھا اُسی طرح مہاتما گاندھی کے پوتر
پھولوں کو تریبینی اور ہند کی دوسری ندیوں میں بہایا گیا اور مسلمانوں
نے اُن کی راکھ کو جامع مسجد کے سامنے دفن کیا اور وہاں ایک
شاندار مقبرہ بنانے والے ہیں۔ مہاتما گاندھی ایسے نازک اور
کٹھن زمانے میں پیدا ہوئے جس کے کارن اُن کو کبیر صاحب
اور گرو نانک دونوں سے زیادہ [illegible] کرنے والوں کا سامنا کرنا پڑا اور
دونوں سے زیادہ تکلیف بھوگنی پڑی۔ اسی لئے اُن کا سندیش
بھی سارے انسانوں کے لئے — جات، رنگ اور نسل — کسی کا
لحاظ کئے بنا سب کے لئے ایک سا ہے۔ انھوں نے ہندستان اور
پاکستان کے تمام بسنے والوں کو ہدایت کی ہے کہ آپس میں ہر حال
میں صلح اور شانتی قایم رکھیں اور تعمیری و کلچری ترقی کے کاموں
میں لگے رہ کر اپنے بھائیوں کو مارنے اور اُن کا ناش کرنے سے بچیں،
نہیں تو اپنی بربادی خود بلائیں گے اور بڑی مشکلوں کے بعد جو آزادی ملی ہے

उसको बहुत जल्द खोदेंगे. उनका सन्देश इस बड़े द्वीप के सारे बासियों के लिये है बल्कि सारी दुनिया के लोगों के नाम है. यह सन्देश उस. शान्ति, अहिंसा और फ़िरक़ावाराना एकता की तरफ़ रहनुमाई करता है जिसके ज़रिये उन्होंने आख़िरकार हिन्दुस्तान को विदेशियों की ग़ुलामी और साम्राजी लूट खसोट से बचाने में कामयाबी हासिल की है.

लाखों आदमियों ने महात्मा गान्धी को श्रद्धांजलि भेंट की है और तरह तरह की उनकी यादगार क़ायम करना चाहा है. कुछ लोगों ने हज़रत ईसा से उनका मुक़ाबला किया है और दूसरों ने उनको शहीद का दरजा दिया है. मैं यह महसूस करता हूँ कि महात्मा गान्धी की जिन्दगी. उनके कारनामे और उनकी मौत देवताओं का सी ज़रूर थी. मुझको पूरा विश्वास है कि इन्सानियत की जो सेवायें उन्होंने की हैं और सच्चाई व अहिंसा के लिये उन्होंने जो त्याग और जो क़ुरबानियाँ की हैं वह उन पर किसी भी एतराज़ करने वाले पर यह साबित करने के लिये काफ़ी हैं कि महात्मा गान्धी एक सच्चे शहीद थे और एक सच्चे शहीद ही की तरह उनके ख़ून से एक मिशन पैदा होगा जिसका मक़सद होगा—"हिन्द व पाकिस्तान में कम तादाद वालों की हिफ़ाज़त हो और हिन्दू, मुसलमान और दूसरे फ़िरक़ों में आपस में भाई भाई के से सम्बन्ध पैदा हों.

यह एक पुरानी कहावत है कि 'शहीद का ख़ून मिशन का बीज बोता है.' और मेरे विचार में मौजूदा हालत में भी यह बात उतनी ही सच्ची साबित होगी जितनी कि पिछले ज़माने की दूसरी हालतों में हुई है.

اس کو بہت جلد کھودیں گے۔ اُن کا سندیش اِس بڑے دویپ کے سارے باسیوں کے لئے ہے بلکہ ساری دُنیا کے لوگوں کے نام ہے۔ یہ سندیش اُس شانتی اہنسا اور فرقہ وارانہ ایکتا کی طرف رہنمائی کرتا ہے جس کے ذریعے اُنھوں نے آخرکار ہندستان کو ودیشیوں کی غلامی اور سامراجی لوٹ کھسوٹ سے بچانے میں کامیابی حاصل کی ہے۔

لاکھوں آدمیوں نے مہاتما گاندھی کو شردھانجلی بھینٹ کی ہے اور طرح طرح کی اُن کی یادگار قایم کرنا چاہی ہے۔ کچھ لوگوں نے حضرت عیسٰی سے اُن کا مقابلہ کیا ہے اور دوسروں نے اُن کو شہید کا درجہ دیا ہے۔ میں یہ محسوس کرتا ہوں کہ مہاتما گاندھی کی زندگی، اُن کے کارنامے اور اُن کی موت دیوتاؤں کی سی ضرور تھی۔ مجھ کو پورا وشواس ہے کہ انسانیت کی جو سیوائیں اُنھوں نے کی ہیں اور سچائی و اہنسا کے لئے اُنھوں نے جو تیاگ اور جو قربانیاں کی ہیں وہ اُن پر کسی بھی اعتراض کرنے والے پر یہ ثابت کرنے کے لئے کافی ہیں کہ مہاتما گاندھی ایک سچے شہید تھے اور ایک سچے شہید ہی کی طرح اُن کے خون سے ایک مشن پیدا ہوگا جس کا مقصد ہوگا۔ "ہند و پاکستان میں کم تعداد والوں کی حفاظت ہو اور ہندو، مسلمان اور دوسرے فرقوں میں آپس میں بھائی بھائی کے سمبندھ پیدا ہوں۔"

یہ ایک پُرانی کہاوت ہے کہ 'شہید کا خون مشن کا بیج بوتا ہے۔' اور میرے وچار میں موجودہ حالت میں بھی یہ بات اُتنی ہی سچی ثابت ہوگی جتنی کہ پچھلے زمانے کی دوسری حالتوں میں ہوئی ہے۔

कुछ किताबें

जीवन के पहलू——लिखने वाले श्री अमृतराय, सफ़े १८६, क़ीमत दो रुपए, लिखावट नागरी, पता—हिन्दुस्तानी पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद.

यह किताब श्री अमृतराय की तेईस कहानियों का एक छोटा सा गुच्छा है.

"क्षुधा विक्षिप्त," "प्रोफ़ेसर साहब" और "शरीफ़े" कहानियां अच्छी हैं. "पति पत्नी" और "फीका काग़ज़" दोनों कहानियाँ आशिक़ाना माशूक़ाना प्रेम के दक़ियानूसी क़िस्सों की तरह हैं जिनका आदर्श छोटा और ग़न्दा है. "उड़ानें," "वह राह नहीं." और "प्रेम = अँगूठी + इयररिंग" कहानियों में भी वही गन्दा प्रेम महकता है. "मरुस्थल" में लेखक ने कलेजी वाले को अपनी ओर से गाली देते हुए लिखा है "चोखे ने उस हरामख़ोर से कितना ही कहा कि एक गुर्दा भी रख दे, पर ससुरा न माना तो न माना! भगवान जल्दी ही पूछे" यह ठीक नहीं है. जो कुछ भी कहना हो, कहानी के पात्रों से ही कहलाना ज़्यादा ठीक लगता है क्योंकि इसका सम्बन्ध सिर्फ़ उन्हीं से होता है न कि कहानी लिखने वाले से.

"प्रशन" एक सफ़ा की बहुत छोटी कहानी होते हुए भी पूरी और अच्छी है.

सभी कहानियों के लिखने का ढंग क़रीब क़रीब एक सा है और

کچھ کتابیں

جیون کے پہلو — لکھنے والے شری امرت رائے، صفحے ۱۸۶،
قیمت دو روپے، لکھاوٹ ناگری، پتہ — ہندستانی پبلشنگ
ہاؤس، الہ آباد۔

یہ کتاب شری امرت رائے کی تیئیس کہانیوں کا ایک
چھوٹا سا گچھا ہے۔

"کشودھا وکشپت"، "پروفیسر صاحب" اور "شریفے" کہانیاں اچھی
ہیں۔ "پتی پتنی" اور "پھیکا کاغذ" دونوں کہانیاں عاشقانہ
معشوقانہ پریم کے دقیانوسی قصّوں کی طرح ہیں جن کا آدرش
چھوٹا اور گندا ہے۔ "اڑانیں"، "وہ راہ نہیں" اور "پریم =
انگوٹھی + ایرنگ" کہانیوں میں بھی وہی گندا پریم مہکتا ہے۔
"مرو ستھل" میں لیکھک نے کلیجی والے کو اپنی اور سے گالی
دیتے ہوئے لکھا ہے "چوکھے نے اس حرام خور سے کتنا ہی کہا کہ
ایک گردہ بھی رکھ دے، پر سسرا نہ مانا تو نہ مانا! بھگوان جلدی
ہی پوچھے" یہ ٹھیک نہیں ہے۔ جو کچھ بھی کہنا ہو، کہانی کے پاتروں
سے ہی کہلانا زیادہ ٹھیک لگتا ہے کیونکہ اس کا سمبندھ صرف
انھیں سے ہوتا ہے نہ کہ کہانی لکھنے والے سے۔

"پرشن" ایک صفحہ کی بہت چھوٹی کہانی ہوتے ہوئے بھی
پوری اور اچھی ہے۔

سبھی کہانیوں کے لکھنے کا ڈھنگ قریب قریب ایک سا ہے اور

वह भी ऐसा कि उसमें मन को अपनी ओर खींचने की ताक़त क़रीब क़रीब नहीं के बराबर है.

किताब की ज़बान आसान हिन्दी है. यह किताब श्री अमृतराय की कोशिशों का पहला नमूना है इसलिये हमें पूरी आशा है कि इसकी सारी कमी दूसरी कोशिश में पूरी हो जायगी.

—गनेश प्रसाद

कलकत्ते का क़त्लेआम—लिखने वाले श्री ब्रजेन्द्र नाथ गौड़. सफ़े ७२, क़ीमत एक रुपया. लिखावट नागरी. पता—संस्कृत पुस्तकालय, अमीनुद्दौला पार्क. लखनऊ.

जैसा कि इस किताब को पढ़ने से मालूम होगा, २९ जुलाई सन् १९४६ को 'आल इन्डिया मुस्लिम लीग' ने यह फ़ैसला किया कि १६ अगस्त सन् ४६ को 'सीधी कारवाई दिन' (Direct-Action Day) मनाया जाय. इस फ़ैसले की सबसे ख़ास वजह यह थी कि बृटिश सरकार की इस पालिसी से कि 'आल इन्डिया नेशनल कांग्रेस' को हकूमत की बागडोर सौंप दी जाय. लीगी नेता ख़िलाफ़ होगये. १६ अगस्त ४६ को बंगाल के वज़ीर आज़म सुहरवर्दी ने अपने कुछ और साथियों की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कलकत्ते में 'आम छुट्टी', का ऐलान किया और उसी १६ अगस्त, ४६ की सुबह से कलकत्ता में लूट-पाट और क़त्ले आम शुरु हुआ. लेखक का कहना है कि इसकी सारी ज़िम्मेदारी लीग पर है. उन्होंने यह भी दिखलाया है कि यह सब जो कुछ भी हुआ. साफ़ साफ़ सुहरवर्दी और उस वक़्त के बंगाल के गवर्नर सर फ्रेडरिक बरोज़ की साज़िश से हुआ. शहर भरमें खुले आम लूट हुई. हज़ारों

وہ بھی ایسا کہ اس میں من کو اپنی اور کھینچنے کی طاقت قریب قریب نہیں کے برابر ہے۔

کتاب کی زبان آسان ہندی ہے۔ یہ کتاب شری امرت رائے کی کوششوں کا پہلا نمونہ ہے اس لئے ہمیں پوری آشا ہے کہ اس کی ساری کمی دوسری کوشش میں پوری ہوجائے گی۔

—گنیش پرساد

کلکتے کا قتل عام — لکھنے والے شری برجیندر ناتھ گوڑ، صفحے ۷۲، قیمت ایک روپیہ۔ لکھاوٹ ناگری، پتہ — سنسکرت پستکالے، امین الدولہ پارک، لکھنؤ۔

جیسا کہ اس کتاب کو پڑھنے سے معلوم ہوگا، ۲۹ جولائی سنہ ۱۹۴۶ کو "آل انڈیا مسلم لیگ" نے یہ فیصلہ کیا کہ ۱۶ اگست سنہ ۴۶ کو "سیدھی کارروائی دن" (Direct Action Day) منایا جائے۔ اس فیصلے کی سب سے خاص وجہ یہ تھی کہ برٹش سرکار کی اس پالیسی سے کہ "آل انڈیا نیشنل کانگریس" کو حکومت کی باگ ڈور سونپ دی جائے، لیگی نیتا خلاف ہوگئے۔ ۱۶ اگست ۴۶ کو بنگال کے وزیر اعظم سہروردی نے اپنے کچھ اور ساتھیوں کی مرضی کے خلاف کلکتے میں "عام چھٹی" کا اعلان کیا اور اسی ۱۶ اگست، ۴۶ کی صبح سے کلکتہ میں لوٹ پاٹ اور قتل عام شروع ہوا۔ لیکھک کا کہنا ہے کہ اس کی ساری ذمے داری لیگ پر ہے۔ انھوں نے یہ بھی دکھلایا ہے کہ یہ سب جو کچھ بھی ہوا صاف صاف سہروردی اور اس وقت کے بنگال کے گورنر سر فریڈرک بروز کی سازش سے ہوا۔ شہر بھر میں کھلے عام لوٹ ہوئی، ہزاروں

आदमियों का खून हुआ, बच्चे बेदर्दी के साथ चीर चीर कर फेंक दिए गए. लोगों को पेड़ों पर लटकाया गया, औरतों और लड़कियों की खुले आम लाज लूटी गई और फिर उन्हें बेरहमी से मार डाला गया, लड़कियाँ भगाई गईं, उनका धर्म बदला गया. आग लगाई गई और लोगों को आग में झोंक दिया गया, खौलते पानी में उबाला गया, छतों से नीचे फेंक दिया गया, मकानात बरबाद किये गये और अरबों रुपयों का नुक़सान हुआ और यह सब हुआ लीगी मिनिस्टरी की आँखों के सामने. किताब से मालूम होता है कि लीगी नेताओं ने आग बरसाने वाली ज़बान में लेक्चर दे दे कर गुन्डों को उकसाया, बाहर से गुन्डे बुलाए गए. उन्हें लीगी सरकार की तरफ़ से लूट मार करने का सामान जैसे मशीनगन, बन्दूकें, गोला बारूद, मोटरें, पेट्रोल और तरह तरह के दूसरे हथियार भी दिये गए. पुलिस के सामने सब कुछ होता था और वह मुंह फेर लेती थी. मदद मांगने पर भी लोगों को सरकार की तरफ़ से मदद नहीं दी गई और सबसे मज़े की बात तो यह है कि वहाँ के खून ख़राबे में एक भी अंग्रेज़ नहीं मारा गया. हालांकि जिन्ना साहेब ने कहा था "हमारा झगड़ा अंग्रेज़ों से है."

जब एक जूते की दूकान लूटी जा रही थी तो कुछ यूरोपियन लड़कियाँ उसमें से सैंडिलें पसन्द कर रही थीं. एक क्लब में अंगरेज़ लड़कियां और लड़के उस समय टेनिस खेल रहे थे. जब कि सौ गज़ के फ़ासले पर क़त्ले आम हो रहा था.

...पुलिस मैनों ने, जिनमें कुछ यूरोपियन और ऐंग्लो इंडियन

آدمیوں کا خون ہوا، بچے بیدردی کے ساتھ چیر چیر کر پھینک دئے گئے، لوگوں کو پیڑوں پر لٹکایا گیا، عورتوں اور لڑکیوں کی کھلے عام لاج لوٹی گئی اور پھر انھیں بے رحمی سے مار ڈالا گیا، لڑکیاں بھگائی گئیں، ان کا دھرم بدلا گیا۔ آگ لگائی گئی اور لوگوں کو آگ میں جھونک دیا گیا، کھولتے پانی میں ابالا گیا، چھتوں سے نیچے پھینک دیا گیا، مکانات برباد کئے گئے اور اربوں روپیوں کا نقصان ہوا اور یہ سب ہوا لیگی منسٹری کی آنکھوں کے سامنے۔ کتاب سے معلوم ہوتا ہے کہ لیگی نیتاؤں نے آگ برسانے والی زبان میں لکچر دے دے کر گنڈوں کو اکسایا، باہر سے گنڈے بلائے گئے، انھیں لیگی سرکار کی طرف سے لوٹ مار کرنے کا سامان جیسے مشین گن، بندوق، گولا بارود، موٹریں، پیٹرول اور طرح طرح کے دوسرے ہتھیار بھی دئے گئے۔ پولیس کے سامنے سب کچھ ہوتا تھا اور وہ منہ پھیر لیتی تھی۔ مدد مانگنے پر بھی لوگوں کو سرکار کی طرف سے مدد نہیں دی گئی اور سب سے مزے کی بات تو یہ ہے کہ وہاں کے خون خرابے میں ایک بھی انگریز نہیں مارا گیا، حالاں کہ جناح صاحب نے کہا تھا "ہمارا جھگڑا انگریزوں سے ہے۔"

جب ایک جوتے کی دکان لوٹی جا رہی تھی تو کچھ یوروپین لڑکیاں اس میں سے سینڈلیں پسند کر رہی تھیں۔ ایک کلب میں انگریز لڑکیاں اور لڑکے اس سمے ٹینس کھیل رہے تھے۔ جب کہ سو گز کے فاصلے پر قتلِ عام ہو رہا تھا۔

پولیس مینوں نے، جن میں کچھ یوروپین اور اینگلو انڈین

साजेंन्ट भी थे. खुद लूट के माल से अपनी जेबें भरीं. लीगी गुन्डों ने हिन्दुओं और ग़ैर लीगी मुसललानों का बिलकुल सफाया ही कर देन में कोई कोर कसर बाक़ी नहीं रक्खी. लेखक ने इस किताब को कुछ खास अखबारों जैसे बंगला युगान्तर, भारत, कृषक, अंगरेजी स्टेटसमैन, लीडर, पायोनियर, अमृतबाजार पत्रिका, हिन्दुस्तान टाइम्स, ब्लिट्ज़, नेशनल हेरालड, बाम्बे क्रानिकल, फ्री-प्रेस जर्नल, हिन्दू, नेशनल काल, प्रताप, हिन्दुस्तान, और साथ ही साथ श्रीमती इलासेन, वाई० के० मेनन और किम क्रिस्टिन के मजमूनों की बुनियाद पर लिखा है.

कुछ खास अखबारों ने सुहरवर्दी को जनता का शत्रु नम्बर एक कहकर बंगाल की लीगी सरकार और वहां की पुलिस को ही कलकत्ते के खून ख़राबे का ज़िम्मेदार ठहराया है. दुनिया के मशहूर पत्रकार लुई फ़िशर ने भी कलकत्ते के दंगे का दोषी लीग को ही बताया है.

कलकत्ते के दंगे से जानकारी हासिल करने के लिये किताब पढ़ने लायक़ है.

—गनेश प्रसाद

सन् बयालीस का विद्रोह—लिखने वाले श्री गोविन्द सहाय एम० एल० ए० पार्लीमेंटरी सेक्रेटरी, यू० पी० गवरमेंन्ट, भूमिका लिखने वाले श्री जयप्रकाशनारायन, लिखावट नागरी, सफ़े ३४३, क़ीमत साढ़े छः रुपये, पता-नवयुग साहित्य सदन, इन्दौर.

'क्रिप्स मिशन' के नाकामयाब होने के बाद जब हमारे मुल्क के बहुत से बड़े बड़े लीडर नाउम्मीद हो रहे थे, हिम्मत हार रहे

سارجنٹ بھی تھے. خود لوٹ کے مال سے اپنی جیبیں بھریں. لیگی گنڈوں نے ہندوؤں اور غیر لیگی مسلمانوں کا بالکل صفایا ہی کر دینے میں کوئی کور کسر باقی نہیں رکھی. لیکھک نے اس کتاب کو کچھ خاص اخباروں جیسے بنگلہ یگانتر، بھارت، کرشک، انگریزی اسٹیٹسمین، لیڈر، پائنیر، امرت بازار پترکا، ہندستان ٹائمس، ولٹز، نیشنل ہیرالڈ، بامبے کرانیکل، فری پریس جرنل، ہندو، نیشنل کال، پرتاپ، ہندستان، اور ساتھ ہی ساتھ شریمتی الاسین، وائی. کے. مینن اور کم کرسٹن کے مضمونوں کی بنیاد پر لکھا ہے.

کچھ خاص اخباروں نے سُہراوردی کو جنتا کا شترو نمبر ایک کہہ کر بنگال کی لیگی سرکار اور وہاں کی پولیس کو ہی کلکتے کے خون خرابے کا ذمے دار ٹھہرایا ہے. دنیا کے مشہور پترکار لوئی فشر نے بھی کلکتے کے دنگے کا دوشی لیگ کو ہی بتایا ہے.

کلکتے کے دنگے سے جان کاری حاصل کرنے کے لئے کتاب پڑھنے لائق ہے.

گنیش پرساد

سن بیالیس کا ودروہ — لکھنے والے شری گووند سہائے ایم. ایل. اے. پارلیمنٹری سکریٹری، یو. پی. گورنمنٹ، بھومیکا لکھنے والے شری جے پرکاش نارائن، لکھاوٹ ناگری، صفحے ۳۴۳، قیمت ساڑھے چھ روپئے، پتہ — نویگ ساہتیہ سدن، اندور.

'کرپس مشن' کے ناکامیاب ہونے کے بعد جب ہمارے ملک کے بہت سے بڑے بڑے لیڈر ناامید ہو رہے تھے، ہمت ہار رہے

थे और ठीक ठीक यह नहीं समझ पा रहे थे कि अब आगे क्या करना चाहिये, गांधी जी ने क्रान्ति का नारा लगाया और "करेंगे या मरेंगे" के जादू भरे पैग़ाम को सुना कर लोगों में नई जान पैदा कर दी. ठीक ऐसे ही समय कई ज्योतिषियों ने एलान किया कि १३ से २३ अगस्त तक ख़ौफ़नाक तबदीलियां होंगी और ९ अगस्त को सब नेता गिरफ़्तार हो गए. बस लोग पागल हो उठे. उसका नतीजा हुआ मुल्क भर में एक बहुत ज़ोरदार विद्रोह. यह किताब उसी विद्रोह की एक जोशीली तारीख़ है.

लेखक ने इस किताब को १९ अध्यायों में बांट कर सन् ४२ के उस बड़े विद्रोह के बारे में हमें सच्ची जानकारी हासिल कराने की कोशिश की है. किस तरह लोगों ने बृटिश नौकरशाही का मुक़ाबला करने और उसे पूरी तरह बरबाद करने के लिये बड़ी से बड़ी क़ुर्बानियाँ कीं और किस तरह मुल्क के हज़ारों मर्दों और औरतों, बच्चों और बूढ़ों पर दिल को कँपा देने वाले ज़ुल्म हुए, इस किताब में सफ़ाई के साथ बयान किये गए हैं. यू. पी. में बलिया. बंगाल में मिदनापुर, बम्बई के सूबे में सितारा और सी. पी. में आष्टी और चिमूर में जो ख़ौफ़नाक ज़ुल्म हुए उन सब का सनसनीख़ेज़ बयान इस किताब में पढ़ने के लायक़ है; मैसूर रियासत और उड़ीसा में तालचर रियासत के लोगों ने जो बहादुरी दिखाई उसकी झांकी भी हमें इस किताब में दिखाई देती है.

इस किताब में बम्बई में ८ अगस्त सन् ४२ को दी हुई जवाहरलाल नेहरू, मौलाना अबुलकलाम आज़ाद, सरदार पटेल और

تھے اور ٹھیک ٹھیک یہ نہیں سمجھ پا رہے تھے کہ اب آگے کیا کرنا چاہئے، گاندھی جی نے کرانتی کا نعرہ لگایا اور "کریں گے یا مریں گے" کے جادو بھرے پیغام کو سُنا کر لوگوں میں نئی جان پیدا کر دی. ٹھیک ایسے ہی سمے کئی جیوتشیوں نے اعلان کیا کہ ۱۳ سے ۲۳ اگست تک خوفناک تبدیلیاں ہوں گی اور ۹ اگست کو سب نیتا گرفتار ہو گئے. بس لوگ پاگل ہو اٹھے. اس کا نتیجہ ہوا ملک بھر میں ایک بہت زوردار وِدروہ. یہ کتاب اسی وِدروہ کی ایک جوشیلی تاریخ ہے.

لیکھک نے اس کتاب کو ۱۹ ادھیایوں میں بانٹ کر سنہ ۴۲ کے اس بڑے وِدروہ کے بارے میں ہمیں سچی جانکاری حاصل کرانے کی کوشش کی ہے. کس طرح لوگوں نے برٹش نوکرشاہی کا مقابلہ کرنے اور اسے پوری طرح برباد کرنے کے لئے بڑی سے بڑی قربانیاں کیں اور کس طرح ملک کے ہزاروں مردوں اور عورتوں، بچوں اور بوڑھوں پر دل کو کنپا دینے والے ظلم ہوئے، اس کتاب میں صفائی کے ساتھ بیان کئے گئے ہیں. یو. پی. میں بلیا. بنگال میں مدناپور. بمبئی کے صوبے میں ستارا اور سی. پی. میں آشٹی اور چمور میں جو خوفناک ظلم ہوئے ان سب کا سنسنی خیز بیان اس کتاب میں پڑھنے کے لائق ہے. میسور ریاست اور اڑیسہ میں تالچر ریاست کے لوگوں نے جو بہادری دکھائی اس کی جھانکی بھی ہمیں اس کتاب میں دکھائی دیتی ہے.

اس کتاب میں بمبئی میں ۸ اگست سنہ ۴۲ کو دی ہوئی جواہر لال نہرو، مولانا ابوالکلام آزاد، سردار پٹیل اور

गांधी जी की जोशीली स्पीचें दी हुई हैं जिसमें "भारत छोड़ो" वाला प्रस्ताव पेश करते हुए नेहरू जी ने कहा "हम अंग्रेजों और अमरीकनों से कहीं ज़्यादा जानते हैं कि ग़ुलामी क्या चीज़ है? हमें ही आग की लपटों में झुलसना होगा. अब तो हम आग में कूद पड़े हैं. या तो कामयाब होकर निकलेंगे या उसी में जल कर भस्म हो जाएंगे.' जिसमें सरकार के झूठे वादों पर पटेल कहते हैं—"हम वादों पर कैसे यक़ीन करें जब कि धोखों का ताँता लगा हुआ है" और हिन्दू मुस्लिम फ़ैसले पर कहते हैं—"जो लोग हिन्दू मुस्लिम फ़ैसले की बातें कह कर शोर ग़ुल मचा रहे हैं, अच्छा होता कि वह लीग का दरवाज़ा खटखटाते जो हमारे लिये न केवल बन्द कर दिया गया है बल्कि जिसमें कीलें ठोंक दी गई हैं." और जिसमें गांधी जी ने कहा—"या तो कांग्रेस देश को आज़ाद करेगी या ख़ुद फ़ना हो जायगी. करेंगे या मरेंगे."

लेखक लिखता है—"सन १८५७ का ग़दर, फ्रांसीसी राजविद्रोह और रूस का लाल विद्रोह सभी कई बातों में इसके सामने फीके जान पड़ते हैं."

इस किताब की भूमिका में जयप्रकाश नारायन जी लिखते हैं—"जिस पैमाने पर ४२ की क्रान्ति हुई थी वह इतिहास में अपना सानी नहीं रखता. सन् ४२ ने देश की काया पलट कर दी, एक नए भारत की बुनियाद शुरू हुई और उसकी सियासत को एक नया रास्ता दिखाया."

विद्रोह के बारे में जानकारी हासिल करने और उसके भेद को समझने के लिये यह किताब सचमुच अच्छी है. हिन्दुस्तान की

گاندھی جی کی جوشیلی اسپیچیں دی ہوئی ہیں جس میں "بھارت چھوڑو" والا پرستاو پیش کرتے ہوئے نہرو جی نے کہا "ہم انگریزوں اور امریکنوں سے کہیں زیادہ جانتے ہیں کہ غلامی کیا چیز ہے؟ ہمیں ہی آگ کی لپٹوں میں جھلسنا ہوگا. اب تو ہم آگ میں کود پڑے ہیں. یا تو کامیاب ہوکر نکلیں گے یا اسی میں جل کر بھسم ہو جائیں گے." جس میں سرکار کے جھوٹے وعدوں پر پٹیل کہتے ہیں — "ہم وعدوں پر کیسے یقین کریں جب کہ دھوکھوں کا تانتا لگا ہوا ہے" اور ہندو مسلم فیصلے پر کہتے ہیں — "جو لوگ ہندو مسلم فیصلے کی باتیں کہہ کر شور غل مچا رہے ہیں، اچھا ہوتا کہ وہ لیگ کا دروازہ کھٹکھٹاتے جو ہمارے لئے نہ کیول بند کر دیا گیا ہے بلکہ جس میں کیلیں ٹھونک دی گئی ہیں." اور جس میں گاندھی جی نے کہا — "یا تو کانگریس دیش کو آزاد کرے گی یا خود فنا ہو جائے گی. کریں گے یا مریں گے."

لیکھک لکھتا ہے — "۱۸۵۷ کا غدر، فرانسیسی راج ودروہ اور روس کا لال ودروہ سبھی کئی باتوں میں اس کے سامنے پھیکے جان پڑتے ہیں."

اس کتاب کی بھومیکا میں جے پرکاش نارائن جی لکھتے ہیں — "جس پیمانے پر ۴۲ کی کرانتی ہوئی تھی وہ اتہاس میں اپنا ثانی نہیں رکھتا. سن ۴۲ نے دیش کی کایا پلٹ کر دی، ایک نئے بھارت کی بنیاد شروع ہوئی اور اس کی سیاست کو ایک نیا راستہ دکھایا."

ودروہ کے بارے میں جانکاری حاصل کرنے اور اس کے بھید کو سمجھنے کے لئے یہ کتاب سچ مچ اچھی ہے. ہندستان کی

आज़ादी चाहने वाले हर एक आदमी को यह किताब पढ़नी चाहिये.

किताब के शुरू में शंकर का एक कार्टून है और आख़िर में सूबों के सन् ४२ के विद्रोह के दायरों के नक़्शे दिये गये हैं. किताब की छपाई अच्छी है. दाम कुछ ज्यादा है.

—गनेश प्रसाद

लुत्फ़े ज़िन्दगी—लिखने वाले श्री काशी राम चावला, सफ़े ३२०, लिखावट उर्दू. क़ीमत एक रुपया चार आने. पता—नरायन दत्त सहगल ऐन्ड सन्स, बुकसेलर लाहौरी गेट, लाहौर.

काशी राम जी चावला एक विद्वान लेखक हैं. इनकी और भी कई किताबें उर्दू और अंग्रेजी में छप चुकी हैं. इस किताब में इनके १५ मज़मून हैं. हर मज़मून ज़िन्दगी के उन ख़ास पहलुओं पर, जिनपर ज़िन्दगी का दारोमदार है और जिनकी बुनियाद पर ही ज़िन्दगी अमनो ईमान के साथ बीत सकती है, अच्छी रोशनी डालता है, हर मज़मून से ज़िन्दगी के लिये काफ़ी सबक़ मिलता है. इस किताब की तैय्यारी के लिये लेखक ने बहुत से लिटरेचर को पढ़ा है और कहीं कहीं बड़े बड़े लोगों के ख़यालात को हूबहू रख दिया है. जगह जगह पर बड़े बड़े शायरों और लेखकों जैसे चेस्टर फ़ील्ड, रस्किन, एहसान दानिश, ज़ौक़, निश्तर, शाद, अफ़ज़ल, हाली, आज़म, अहमदी, ज़फ़र, ख़लील, सादी, मौलाना रूम, अकबर, मीर, और दाग़ के चुने हुए शेर और बोल दिये हुए हैं. "लुत्फ़े ज़िन्दगी क्या है" नाम के मज़मून में समझाया गया है कि ताक़त सचमुच क्या है, ताक़त किस तरह पैदा करनी चाहिये और अपनी

آزادی چاہنے والے ہر ایک آدمی کو یہ کتاب پڑھنی چاہیئے۔
کتاب کے شروع میں شنکر کا ایک کارٹون ہے اور آخر میں صوبوں کے ۴۲ء کے ودروہ کے دائروں کے نقشے دئے گئے ہیں۔ کتاب کی چھپائی اچھی ہے۔ دام کچھ زیادہ ہے۔

—گنیش پرساد

لطفِ زندگی — لکھنے والے شری کاشی رام چاولا، صفحے ۳۲۰، لکھاوٹ اردو، قیمت ایک روپیہ چار آنے، پتہ — نرائن دت سہگل اینڈ سنز، بکسیلر لاہوری گیٹ، لاہور۔

کاشی رام جی چاولہ ایک ودوان لیکھک ہیں۔ ان کی اور بھی کئی کتابیں اردو اور انگریزی میں چھپ چکی ہیں۔ اس کتاب میں ان کے ۱۵ مضمون ہیں۔ ہر مضمون زندگی کے ان خاص پہلوؤں پر، جن پر زندگی کا دارومدار ہے اور جن کی بنیاد پر ہی زندگی امن و ایمان کے ساتھ بیت سکتی ہے، اچھی روشنی ڈالتا ہے، ہر مضمون سے زندگی کے لئے کافی سبق ملتا ہے۔ اس کتاب کی تیاری کے لئے لیکھک نے بہت سے لٹریچر کو پڑھا ہے اور کہیں کہیں بڑے بڑے لوگوں کے خیالات کو ہوبہو رکھ دیا ہے۔ جگہ جگہ پر بڑے بڑے شاعروں اور لیکھکوں جیسے چیسٹر فیلڈ، رسکن، احسان، دانش، ذوق، نشتر، شاد، افضل، حالی، اعظم، احمدی، ظفر، خلیل، سعدی، مولانا روم، اکبر، میر اور داغ کے چنے ہوئے شعر اور بول دئے ہوئے ہیں۔ "لطفِ زندگی کیا ہے" نام کے مضمون میں سمجھایا گیا ہے کہ طاقت سچ مچ کیا ہے، طاقت کس طرح پیدا کرنی چاہیئے اور اپنی

अपनी बुराइयों को किस तरह दूर करना चाहिये. कुछ बुनियादी असूलों पर सच्चा रास्ता दिखाने की कोशिश करते हुए लेखक महाशय लिखते हैं "बिना ताक़त के ज़िन्दगी का लुत्फ़ नहीं, सब ताक़तों से अच्छी ताक़त रूहानी ताक़त है" "सेहत का लुत्फ़" में तन्दुरुस्ती बनाए रखने की तरकीबों को बताया है और एक फ़ेहरिस्त दी है. जिसमें दुनिया भर के मुल्कों की आबादी का ब्यौरा देकर यह दिखाया है कि आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैन्ड के लोग सबसे ज़्यादा तन्दुरुस्त हैं और हिंदुस्तान सब में पीछे है. "सादगी का लुत्फ़" में कम खर्ची और सादगी से रहने की नसीहत की गई है. "मेहनत का लुत्फ़" में लिखा है—मेहनत में बड़ी बरकत है. दुनिया में तमाम काम मेहनत ही से सर अंजाम पाते हैं. हमें वाजिब है कि अपनी ही ताक़त पर भरोसा करें". "दौलत का लुत्फ़" में लिखा है—"जो लोग दौलत का इस्तेमाल नहीं जानते उनको न तो वह ज़िन्दगी में चैन लेने देती है और न मरते वक़्त". "रिश्तेदारी का लुत्फ़" में लिखा है—"जो लोग इस दुनिया में जन्नत के मज़े लेना चाहते हैं वह अपनी घरेलू ज़िन्दगी को ज़्यादा से ज़्यादा ख़ुशनुमा बनायें." इसी मे एक शेर है—

मुहब्बत छोड़ कर बाहम जो आपस ही में लड़ते हैं,
उन्हें बरबादियां आती हैं यूँही घर बिगड़ते हैं.

"प्रेम का लुत्फ़" में लेखक का ही एक शेर है—

"मुहब्बत ख़ुदा है ख़ुदा है, मुहब्बत, न होता ख़ुदा गर मुहब्बत न होती." "सोसायटी का लुत्फ़" में एक ग़ज़ल दी हुई है जिसमें यह दिखाया है कि मज़हबी-पेशवाओं जैसे राम, कृष्ण, बुद्ध, ईसा मुहम्मद, गुरु नानक, दयानन्द, और

اپنی برائیوں کو کس طرح دور کرنا چاہئے. کچھ بنیادی اصولوں پر سچا راستہ دکھانے کی کوشش کرتے ہوئے لیکھک مہاشیہ لکھتے ہیں. "بنا طاقت کے زندگی کا لطف نہیں، سب طاقتوں سے اچھی طاقت روحانی طاقت ہے." "صحت کا لطف" میں تندرستی بنائے رکھنے کی ترکیبوں کو بتایا ہے اور ایک فہرست دی ہے. جس میں دنیا بھر کے ملکوں کی آبادی کا بیورا دے کر یہ دکھایا ہے کہ آسٹریلیا اور نیوزیلینڈ کے لوگ سب سے زیادہ تندرست ہیں اور ہندستان سب میں پیچھے ہے. "سادگی کا لطف" میں کم خرچ اور سادگی سے رہنے کی نصیحت کی گئی ہے. "محنت کا لطف" میں لکھا ہے— محنت میں بڑی برکت ہے دنیا میں تمام کام محنت ہی سے سر انجام پاتے ہیں. ہمیں واجب ہے کہ اپنی ہی طاقت پر بھروسا کریں." "دولت کا لطف" میں لکھا ہے— "جو لوگ دولت کا استعمال نہیں جانتے ان کو نہ تو وہ زندگی میں چین لینے دیتی ہے اور نہ مرتے وقت." "رشتےداری کا لطف" میں لکھا ہے— "جو لوگ اس دنیا میں جنت کے مزے لینا چاہتے ہیں وہ اپنی گھریلو زندگی کو زیادہ سے زیادہ خوش نما بنائیں." اسی میں ایک شعر ہے—

محبت چھوڑ کر باہم جو آپس ہی میں لڑتے ہیں،
انھیں بربادیاں آتی ہیں یوں ہی گھر بگڑتے ہیں.

"پریم کا لطف" میں لیکھک کا ہی ایک شعر ہے—

"محبت خدا ہے خدا ہے، محبت، نہ ہوتا خدا گر محبت نہ ہوتی." "سوسائٹی کا لطف" میں ایک غزل دی ہوئی ہے جس میں یہ دکھایا گیا ہے کہ مذہبی پیشواؤں جیسے رام، کرشن، بدھ، عیسیٰ، محمد، گرو نانک، دیانند اور

अरतश्त के ख़यालात ज़िन्दगी के बारे में क्या थे. आख़िर में "लुत्फ़े ज़िन्दगी का नुसख़ा" देकर लेखक ने बताया है कि इन्सान कैसे ज़िन्दगी का मज़ा उठा सकता है. उसके बाद ख़ुदा का शुक्रिया अदा करते हुये किताब ख़त्म की गई है.

किताब की ज़बान मुश्किल उर्दू है. अच्छी उर्दू जानने वाला ही इसे आसानी से समझ सकता है. हिन्दी अदब से जानकारी रख कर लेखक महाशय अगर अपने विचार लोगों के सामने आसान उर्दू या हिन्दुस्तानी में रख सकें तो लोगों की भलाई के साथ-साथ भाषा का भी भला हो जायगा.

—गनेश प्रसाद

'नया हिन्द' का 'गान्धी नम्बर'

पिछले महीने हमने आशा ज़ाहिर की थी कि शायद हम अप्रैल में 'नयाहिन्द' का गान्धी नम्बर निकाल सकें. पर जैसा ठोस मसाला हम गान्धी नम्बर में देना चाहते थे, वह वक़्त की कमी के कारन जमा न हो सका और इसी लिये अभी जल्दी हमने गान्धी नम्बर निकालने का विचार छोड़ दिया है.

गान्धी नम्बर निकालने की जब हमारी तैयारियाँ पूरी हो जायँगी तब हम 'नया हिन्द' के ज़रिये अपने पढ़ने वालों को एक महीना पहले ख़बर कर देंगे.

मैनेजर

زرتشت کے خیالات زندگی کے بارے میں کیا تھے. آخر میں "لطف زندگی کا نسخہ" دے کر لیکھک نے بتایا ہے کہ انسان کیسے زندگی کا مزا اٹھا سکتا ہے. اس کے بعد خدا کا شکریہ ادا کرتے ہوئے کتاب ختم کی گئی ہے.

کتاب کی زبان مشکل اردو ہے. اچھی اردو جاننے والا ہی اسے آسانی سے سمجھ سکتا ہے. ہندی ادب سے جان کاری رکھ کر لیکھک مہاشیہ اگر اپنے وچار لوگوں کے سامنے آسان اردو یا ہندستانی میں رکھ سکیں تو لوگوں کی بھلائی کے ساتھ ساتھ بھاشا کا بھی بھلا ہو جائے گا.

—گنیش پرساد

'نیا ہند' کا 'گاندھی نمبر'

پچھلے مہینے ہم نے آشا ظاہر کی تھی کہ شاید ہم اپریل میں 'نیا ہند' کا گاندھی نمبر نکال سکیں. پر جیسا ٹھوس مسالہ ہم گاندھی نمبر میں دینا چاہتے تھے وہ وقت کی کمی کے کارن جمع نہ ہو سکا اور اسی لئے ابھی جلدی ہم نے گاندھی نمبر نکالنے کا وچار چھوڑ دیا ہے.

گاندھی نمبر نکالنے کی جب ہماری تیاریاں پوری ہو جائیں گی تب ہم 'نیا ہند' کے ذریعے اپنے پڑھنے والوں کو ایک مہینہ پہلے خبر کر دیں گے.

منیجر

हमारी राय

दिल्ली की बोली

दिल्ली सूबा कांग्रेस कमेटी की तरफ़ से चन्दे के लिये एक अपील, सफ़ेद काग़ज़ पर छपी, एक तरफ़ नागरी दूसरी तरफ़ उर्दू हमारी निगाह से गुज़री. पढ़ने से ऐसा मालूम होता है कि हिन्दी और उर्दू को अलग अलग रखने की कोशिश की गई है. 'कांग्रेस' और 'कमेटी' दोनों अंग्रेज़ी शब्द दोनों में खप सकते हैं. पर 'सूबा, हिन्दी में या प्रान्तीय उर्दू में नहीं खप सकता. शायद देहली उर्दू मान लिया गया है और 'दिल्ली' हिन्दी. पहला ही फ़िक़रा उर्दू मे है 'आज़ादी मिलने के बाद कांग्रेस की ज़िम्मेवारियां बहुत बढ़ गई हैं.' हिन्दी में 'स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् कांग्रेस का उत्तरदायित्व बढ़ गया है.' दोनों धारें आख़ीर तक इसी तरह अलग अलग बही हैं. अपील, फ़ार्म, रिलीफ़ यहाँ तक कि ऐडमिनिस्ट्रेशन 'ओरगेनिज़ेशन' जैसे कई अंगरेज़ी शब्द दोनों को मंज़ूर हैं, पर 'इसलिये', की जगह, 'अतः' 'महकमे' की जगह 'विभाग' 'चला रहा है' की जगह 'संचालन कर रही है,' 'मज़दूरों' की जगह 'श्रम जीवियों' 'ख़ज़ाने' की जगह 'कोष' 'याद' की जगह 'स्मरन' ऐसे ही दूसरी तरफ़ 'किसान' की जगह 'देहाती' 'सहायक' की जगह 'मुआविन' 'बुराइयों' की जगह 'बिदअतों' का रखना ज़रूरी समझा गया. यह सिर्फ़ कुछ मिसालें हैं.

हम कहां जा रहे हैं? सैकड़ों बरस से दिल्ली वाले हिन्दू मुसलमान दोनों अपने शहर को दिल्ली भी कहते हैं और देहली

ہماری رائے

دلی کی بولی

دلی صوبہ کانگریس کمیٹی کی طرف سے چندے کے لئے ایک اپیل، سفید کاغذ پر چھپی، ایک طرف ناگری دوسری طرف اردو ہماری نگاہ سے گزری. پڑھنے سے ایسا معلوم ہوتا ہے کہ ہندی اور اردو کو الگ الگ رکھنے کی کوشش کی گئی ہے. 'کانگریس' اور 'کمیٹی' دونوں انگریزی شبد دونوں میں کھپ سکتے ہیں. پر 'صوبہ' ہندی میں یا پرانتیہ اردو میں نہیں کھپ سکتا. شاید دلی اردو مان لیا گیا ہے اور دلی ہندی. پہلا ہی فقرہ اردو میں ہے 'آزادی ملنے کے بعد کانگریس کی ذمے داریاں بہت بڑھ گئی ہیں.' ہندی میں 'سوتنترتا پراپتی کے پشچات کانگریس کا اُتردائتو بڑھ گیا ہے.' دونوں دھاریں آخیر تک اسی طرح الگ الگ بہی ہیں. اپیل، فارم، رلیف، یہاں تک کہ ایڈمنسٹریشن، آرگنائزیشن جیسے کئی انگریزی شبد دونوں کو منظور ہیں، پر 'اس لئے' کی جگہ 'اَتہ' 'محکمے' کی جگہ 'وبھاگ' 'چلا رہی ہے' کی جگہ 'سنچالن کر رہی ہے' 'مزدوروں' کی جگہ 'شرم جیویوں' 'خزانے' کی جگہ 'کوش' 'یاد' کی جگہ 'سمرن' ایسے ہی دوسری طرف 'کسان' کی جگہ 'دیہاتی' 'سہایک' کی جگہ 'معاون' 'برائیوں' کی جگہ 'بدعتوں' کا رکھنا ضروری سمجھا گیا. یہ صرف کچھ مثالیں ہیں.

ہم کہاں جا رہے ہیں؟ سیکڑوں برس سے دلی والے ہندو مسلمان دونوں اپنے شہر کو دلی بھی کہتے ہیں اور دلی

भी. हर हिन्दू और हर हिन्दी वाला देहली समझता और बोलता है. उस्ताद जौक़ ने 'दिल्ली की गलियां' बांधा है. फिर क्या अब हम अपने शहरों के नाम भी उर्दू हिन्दी मे अलग अलग रखेंगे? या दो नामों में से अलग अलग बटवारा कर लेंगे? हम जिस तरह एक दूसरे से बोलते हैं वैसी ही प्यारी मिली जुली जबान दोनों क्यों नहीं लिख सकते? इस अपील को पढ़ने से मालूम होता है कि अलग अलग चलने की धुन में थोड़ा बहुत दोनों की जबान भद्दी और बेमहावरा होती जा रही है. इस तरह की चीजें और भी कांग्रेस कमेटियों की तरफ़ से निकल रही हैं. हमने एक नमूना दिखाया है. दिल्ली की बोली इस तरह बिगड़े और यहीं की कांग्रेस कमेटी भी, जो अभी तक मेल का नमूना है, इस बात में दो राहें चलावे इसे देख कर हमें और भी दुख हुआ. कांग्रेस ने इस बारे में अपना ठहराव अभी बदला नहीं है. कम से कम कांग्रेस कमेटियों से हमें प्रार्थना करने का हक़ है कि वह दोनों लिखावटों को अपनाए रहें, पर जो चीज निकालें दोनों एक ही जबान में निकालें. दोनों तरफ़ के थोड़े बहुत नए शब्दों को भी दोनों को समझना और अपनाना चाहिये. हमें जबान के मामले में इस फूट की चाल को रोकना चाहिये. इससे हमारी जबान सुधरेगी संवरेगी, चमकेगी, ज्यादा मालामाल होगी. बिगड़ेगी नहीं. इसी से वह सचमुच क़ौमी जबान बनेगी. फूट की राहें कम होंगी और दिल मिलेंगे.

—सुन्दर लाल

بھی. ہر ہندو اور ہر ہندی والا دہلی سمجھتا اور بولتا ہے. استاد ذوق نے 'دلی کی گلیاں' باندھا ہے. پھر کیا اب ہم اپنے شہروں کے نام بھی اردو ہندی میں الگ الگ رکھیں گے؟ یا دو ناموں میں سے الگ الگ بٹوارہ کر لیں گے؟ ہم جس طرح ایک دوسرے سے بولتے ہیں ویسے ہی پیاری ملی جلی زبان دونوں کیوں نہیں لکھ سکتے؟ اس اپیل کو پڑھنے سے معلوم ہوتا ہے کہ الگ الگ چلنے کی دھن میں تھوڑا بہت دونوں کی زبان بھدی اور بے محاورہ ہوتی جا رہی ہے. اس طرح کی چیزیں اور بھی کانگریس کمیٹیوں کی طرف سے نکل رہی ہیں ہم نے ایک نمونہ دکھایا ہے. دلی کی بولی اس طرح بگڑے اور یہاں کی کانگریس کمیٹی بھی، جو ابھی تک میل کا نمونہ ہے، اس بات میں دو راہیں چلاوے اسے دیکھ کر ہمیں اور بھی دکھ ہوا. کانگریس نے اس بارے میں اپنا ٹھہراؤ ابھی بدلا نہیں ہے. کم سے کم کانگریس کمیٹیوں سے ہمیں پرارتھنا کرنے کا حق ہے کہ وہ دونوں لکھاوٹوں کو اپنائے رہیں، پر جو چیز نکالیں دونوں ایک ہی زبان میں نکالیں. دونوں طرف کے تھوڑے بہت نئے شبدوں کو بھی دونوں کو سمجھنا اور اپنانا چاہئے. ہمیں زبان کے معاملے میں اس پھوٹ کی چال کو روکنا چاہئے. اس سے ہماری زبان سدھرے گی سنورے گی، چمکے گی، زیادہ مالامال ہوگی، بگڑے گی نہیں. اسی سے وہ سچ مچ قومی زبان بنے گی. پھوٹ کی راہیں کم ہوں گی اور دل ملیں گے.

— سندرلال

थोड़ा-सा प्रायश्चित

अक्तूबर महीने में लाहौर में और उसके आसपास डा० गुरुबख्श-राय नाम के एक भाई भगाई हुई हिन्दू बहनों को मुस्लिम घरों से निकालने का काम कर रहे थे. उन्होंने मुझसे कहा और मैंने ख़ुद भी देखा कि इस नेक काम में उन्हें सबसे ज्यादा मदद उन मुस्लिम घरों के आस पास रहने वाले नेक दिल मुसलमान मर्दों और औरतों से मिल रही थी. इस मदद के बिना यह बहुत ही कठिन होता.

डा० गुरुबख्शराय ख़ुद बड़े नेक और उदार आदमी हैं. जब उन्हें एक फ़ेहरिस्त उन भगाई हुई मुस्लिम बहनों की दी गई जो अमृतसर में और उसके आसपास हिन्दू घरों में बन्द हैं. तो डा० गुरुबख्शराय ने यह कह कर उन्हें ख़ुद जाकर निकाल लाने की हामी भरी कि—"जब मैं सुनता हूं कि कोई मुसलमान किसी हिन्दू या सिक्ख लड़की को भगा ले गया, तो मुझे दुःख होता है. पर जब मैं यह सुनता हूँ कि कोई हिन्दू या सिक्ख किसी मुसलनाम लड़की को भगा ले गया, तो मुझे दुःख भी होता है और शर्म भी आती है."

अब दोनों तरफ़ की सरकारों ने मिलकर इस नेक काम को पूरा करने का फ़ैसला किया है. जिन लोगों के घरों में इस तरह की हिन्दू, सिक्ख या मुस्लिम बहनें या बच्चे हैं उनका धर्म है कि वे उन्हें ख़ुद उनके रिश्तेदारों या निकालने वालों के हवाले कर दें. ऐसे ही सब हिंदुओं, मुसलमानों और सिक्खों का फ़र्ज़ है कि इस काम के करने वालों की हर तरह मदद दें. यह काम बहनों ही के सुपुर्द हुआ है.

تھوڑا سا پرائشچت

اکتوبر مہینے میں لاہور میں اور اُس کے آس پاس ڈاکٹر گروبخش رائے نام کے ایک بھائی بھگائی ہوئی ہندو بہنوں کو مسلم گھروں سے نکالنے کا کام کر رہے تھے۔ اُنھوں نے مجھ سے کہا اور میں نے خود بھی دیکھا کہ اس نیک کام میں اُنھیں سب سے زیادہ مدد اُن مسلم گھروں کے آس پاس رہنے والے نیک دل مسلمان مردوں اور عورتوں سے مل رہی تھی۔ اس مدد کے بنا یہ بہت ہی کٹھن ہوتا۔

ڈاکٹر گروبخش رائے خود بڑے نیک اور اُدار آدمی ہیں۔ جب اُنھیں ایک فہرست اُن بھگائی ہوئی مسلم بہنوں کی دی گئی جو امرتسر میں اور اُس کے آس پاس ہندو گھروں میں بند ہیں، تو ڈاکٹر گروبخش رائے نے یہ کہہ کر اُنھیں خود جاکر نکال لانے کی حامی بھری کہ — "جب میں سنتا ہوں کہ کوئی مسلمان کسی ہندو یا سکھ لڑکی کو بھگا لے گیا، تو مجھے دکھ ہوتا ہے۔ پر جب میں یہ سنتا ہوں کہ کوئی ہندو یا سکھ کسی مسلمان لڑکی کو بھگا لے گیا، تو مجھے دکھ بھی ہوتا ہے اور شرم بھی آتی ہے۔"

اب دونوں طرف کی سرکاروں نے مل کر اس نیک کام کو پورا کرنے کا فیصلہ کیا ہے۔ جن لوگوں کے گھروں میں اس طرح کی ہندو، سکھ یا مسلم بہنیں یا بچے ہیں اُن کا دھرم ہے کہ وے اُنھیں خود اُن کے رشتے داروں یا نکالنے والوں کے حوالے کر دیں، ایسے ہی سب ہندوؤں، مسلمانوں اور سکھوں کا فرض ہے کہ اس کام کے کرنے والوں کو ہر طرح مدد دیں۔ یہ کام بہنوں ہی کے سپرد ہوا ہے۔

इसी तरह हिन्दू मन्दिरों या सिक्ख गुरूद्वारों पर जिन मुसलमानों ने क़ब्ज़ा जमा लिया है उनका फ़र्ज़ है कि जल्दी से जल्दी उन्हें हिंदुओं और सिक्खों के हवाले कर दें और जिन हिंदुओं या सिक्खों ने मसजिदों पर क़ब्ज़ा कर लिया है उनका फ़र्ज़ है कि जल्दी से जल्दी उन्हें मुसलमानों के सुपुर्द कर दें. हमारे गुनाहों का यह थोड़ा सा प्रायश्चित होगा.

—सुन्दरलाल

(हरिजन सेवक से)

—:—:—

हरिजनों से व्यवहार

शिमला पहाड़ की एक देशी रियासत से कुल हिन्द देशी राज्य लोकपरिषद् दिल्ली के आर्गनाइज़िंग इन्सपेक्टर श्री वेंकटराव के पास इसी १० दिसम्बर का लिखा एक ख़त आया है, जिस पर सौ के क़रीब हरिजनों के दस्तख़त या अँगूठे की निशान हैं. इस ख़त से पता चलता है कि वहाँ की देशी रियासतों में हरिजनों के साथ अभी तक नीचे लिखे अन्याय जारी हैं—

१—जब किसी ऊँची जात के किसी हिन्दू का कोई डंगर मर जाता है तो डंगर का मालिक ख़ुद उसे छूने में छूत मानता है, और हरिजनों को जबरदस्ती उसे ले जाकर गाड़ना पड़ता है.

२—कोई ब्राह्मण किसी हरिजन के यहाँ सत्यनारायण की कथा कहने या कोई यज्ञ कराने नहीं जाता.

३—किसी ऊँची जात वाले के लिये किसी हरिजन की लड़की या स्त्री को जबरदस्ती ले जाना कोई जुर्म नहीं समझा जाता.

اسی طرح ہندو مندروں یا سکھ گرودواروں پر جن مسلمانوں نے قبضہ جما لیا ہے، ان کا فرض ہے کہ جلدی سے جلدی انھیں ہندوؤں اور سکھوں کے حوالے کر دیں اور جن ہندوؤں یا سکھوں نے مسجدوں پر قبضہ کر لیا ہے ان کا فرض ہے کہ جلدی سے جلدی انھیں مسلمانوں کے سپرد کر دیں۔ ہمارے گناہوں کا یہ تھوڑا سا پرائشچت ہوگا۔

—سندرلال

(ہریجن سیوک سے)

ہریجنوں سے ویوہار

شملہ پہاڑ کی ایک دیشی ریاست سے کُل ہند دیشی راجیہ لوک پریشد دلی کے آرگنائزنگ انسپکٹر شری وینکٹراو کے پاس اسی ۱۰ دسمبر کا لکھا ایک خط آیا ہے، جس پر سو کے قریب ہریجنوں کے دستخط یا انگوٹھے کے نشان ہیں۔ اس خط سے پتہ چلتا ہے کہ وہاں کی دیشی ریاستوں میں ہریجنوں کے ساتھ ابھی تک نیچے لکھے انیائے جاری ہیں—

۱۔ جب کسی اونچی جات کے کسی ہندو کا کوئی ڈنگر مر جاتا ہے تو ڈنگر کا مالک خود اسے چھونے میں چھوت مانتا ہے، اور ہریجنوں کو زبردستی اسے لے جا کر گاڑنا پڑتا ہے۔

۲۔ کوئی براہمن کسی ہریجن کے یہاں ستیہ نارائن کی کتھا کہنے یا کوئی یگیہ کرانے نہیں جاتا۔

۳۔ کسی اونچی جات والے کے لئے کسی ہریجن کی لڑکی یا استری کو زبردستی لے جانا کوئی جرم نہیں سمجھا جاتا۔

(۲۰۹)

४—कोई हरिजन हिन्दू तरीक़े से कन्यादान करके अपनी लड़की की शादी नहीं कर सकता.

५—सरकारी अफ़सरों के दौरे के वक़्त दूध, लकड़ी, घास और हर तरह की बेगार हरिजनों से ली जाती है. ऊँची जात वालों से वह चीज़ें नहीं ली जातीं. इन चीज़ों की अगर कोई क़ीमत कोई अफ़सर देता है, तो ज़ैलदार या नम्बरदार ले लेते हैं, हरिजनों को नहीं मिलती.

६—ज़मीन की जो मालगुज़ारी ऊँची जात वालों से ली जाती है उतनी ही ज़मीन की मालगुज़ारी हरिजनों से उसकी दुगनी और तिगुनी ली जाती है. इस पर भी हरिजनों को ज़मीन का मौरूसी हक़दार नहीं माना जाता.

७—जो हरिजन इस तरह के अत्याचारों पर एतराज़ करते हैं उन पर झूठे मुक़दमे चलाये जाते हैं.

इनसे भी ज़्यादा अफ़सोस की शिकायत यह है कि—

८—रियासतों के प्रजामण्डलों में ऊँची जात वाले लोग हरिजनों को प्रजामण्डल के मेम्बर नहीं बनने देते और अगर बनने भी देते हैं, तो उन्हें चुनाव वग़ैरह में बराबरी के हक़ नहीं देते.

हो सकता है कि इनमें से कई शिकायतें कुछ रियासतों या कुछ जगहों के बारे में ठीक हों और दूसरी रियासतों या जगहों के बारे में ठीक न हों. जिस रियासत की ख़ास शिकायत आई है उसका नाम हम देना नहीं चाहते. एक थियोग (Theog) रियासत की बाबत यह भी ख़बर मिली है कि वहाँ के राजा हरिजनों की इन शिकायतों को दूर करने की कोशिश कर रहे हैं. उन्होंने इसका एलान भी कर

۴۔ کوئی ہریجن ہندو طریقے سے کنیادان کرکے اپنی لڑکی کی شادی نہیں کر سکتا۔

۵۔ سرکاری افسروں کے دَورے کے وقت دودھ، لکڑی، گھاس اور ہر طرح کی بیگار ہریجنوں سے لی جاتی ہے۔ اونچی جات والوں سے وہ چیزیں نہیں لی جاتیں۔ ان چیزوں کی اگر کوئی قیمت کوئی افسر دیتا ہے، تو ذیلدار یا نمبردار لے لیتے ہیں، ہریجنوں کو نہیں ملتی۔

۶۔ زمین کی جو مالگذاری اونچی جات والوں سے لی جاتی ہے اتنی ہی زمین کی مالگذاری ہریجنوں سے اس کی دگنی اور تگنی لی جاتی ہے۔ اس پر بھی ہریجنوں کو زمین کا موروثی حقدار نہیں مانا جاتا۔

۷۔ جو ہریجن اس طرح کے اتیاچاروں پر اعتراض کرتے ہیں ان پر جھوٹے مقدمے چلائے جاتے ہیں۔

ان سے بھی زیادہ افسوس کی شکایت یہ ہے کہ—

۸۔ ریاستوں کے پرجامنڈلوں میں اونچی جات والے لوگ ہریجنوں کو پرجامنڈل کے ممبر نہیں بننے دیتے اور اگر بننے بھی دیتے ہیں تو انھیں چناؤ وغیرہ میں برابری کے حق نہیں دیتے۔

ہوسکتا ہے کہ ان میں سے کئی شکایتیں کچھ ریاستوں یا کچھ جگہوں کے بارے میں ٹھیک ہوں اور دوسری ریاستوں یا جگہوں کے بارے میں ٹھیک نہ ہوں۔ جس ریاست کی خاص شکایت آئی ہے اس کا نام ہم دینا نہیں چاہتے۔ ایک تھیوگ (Theog) ریاست کی بابت یہ بھی خبر ملی ہے کہ وہاں کے راجا ہریجنوں کی ان شکایتوں کے دور کرنے کی کوشش کر رہے ہیں۔ انھوں نے اس کا اعلان بھی

दिया. जहाँ और जिस दरजे तक भी यह शिकायतें सच्ची हों वहाँ अपने को ऊँची जात का समझने वालों के लिये बड़ी ही लज्जा की बात है. जब तक हम सब छुआ-छूत और ऊँच-नीच के इस फ़रक को जड़ से मिटाने की कोशिश न करेंगे तब तक हमारा और इस देश का कल्याण नामुमकिन है.

('हरिजन सेवक' से)　　　　—सुन्दरलाल

अहिंसा

पिछली दोनों जंगों से दुनिया से बहुत के सोचने वालों का ध्यान इधर जा रहा है कि हिंसा या मारकाट मुल्कों मुल्कों के बीच के सवालों को हल करने का सबसे कारगर तरीक़ा नहीं है. हमारे यहाँ के शर्मनाक दंगों से भी हमें यही सबक़ मिलता है कि आपसी झगड़ों को हल करने का तरीक़ा हिंसा नहीं है. सारा संसार इस बर्बरता से ऊब रहा है. अभी तो हिन्दुस्तान भी, जिसने अहिंसा से इतना कुछ पाया है, हिंसा के भयंकर चक्कर से नहीं निकल पा रहा है. संसार उस दिन की बाट जोह रहा है जिस दिन पूरा हिन्दुस्तान बिना फ़ौज और हथियारों के. भीतर और बाहर से अपना पूरी तरह बचाव कर सके. आज़ाद हिन्दुस्तान में फ़ौजों और हथियारों के बग़ैर काम न चल सकना हमारे लिये लज्जा की चीज़ है. इस कमी को दूर करने के लिये सबसे ज्यादा ज़रूरत अपने अन्दर की सफ़ाई और अपने ऊपर भरोसे की है. हम सब को इसके लिये पूरी कोशिश और मदद करनी चाहिये. हिन्दुस्तान के लिये यही दुनिया की सच्ची और असली सेवा होगी.

('हरिजन सेवक' से)　　　　—सुन्दरलाल

کردیا۔ جہاں اور جس درجے تک بھی یہ شکایتیں سچی ہوں وہاں اپنے کو اونچی جات کا سمجھنے والوں کے لئے بڑی ہی لجا کی بات ہے۔ جب تک ہم سب چھوا چھوت اور اونچ نیچ کے اس فرق کو جڑ سے مٹانے کی کوشش نہ کریں گے تب تک ہمارا اور اس دیش کا کلیان ناممکن ہے۔

('ہریجن سیوک' سے)　　　　—سندر لال

اہنسا

پچھلی دونوں جنگوں سے دنیا کے بہت سے سوچنے والوں کا دھیان ادھر جا رہا ہے کہ ہنسا یا مارکاٹ ملکوں ملکوں کے بیچ کے سوالوں کو حل کرنے کا سب سے کارگر طریقہ نہیں ہے۔ ہمارے یہاں کے شرمناک دنگوں سے بھی ہمیں یہی سبق ملتا ہے کہ آپسی جھگڑوں کو حل کرنے کا طریقہ ہنسا نہیں ہے۔ سارا سنسار اس بربرتا سے اوب رہا ہے۔ ابھی تو ہندستان بھی جس نے اہنسا سے اتنا کچھ پایا ہے، ہنسا کے بھینکر چکر سے نہیں نکل پا رہا ہے۔ سنسار اس دن کی باٹ جوہ رہا ہے کہ جس دن پورا ہندستان بنا فوج اور ہتھیاروں کے، بھیتر اور باہر سے اپنا پوری طرح بچاؤ کر سکے۔ آزاد ہندستان میں فوجوں اور ہتھیاروں کے بغیر کام نہ چل سکنا ہمارے لئے لجا کی چیز ہے۔ اس کمی کو دور کرنے کے لئے سب سے زیادہ ضرورت اپنے اندر کی صفائی اور اپنے اوپر بھروسے کی ہے۔ ہم سب کو اس کے لئے پوری کوشش اور مدد کرنی چاہئے۔ ہندستان کے لئے یہی دنیا کی سچی اور اصلی سیوا ہوگی۔

('ہریجن سیوک' سے)　　　　—سندر لال

मज़हबी गिरोहबन्दी से ख़तरा

अमरीका जाते हुए शेख़ अब्दुल्ला ने बम्बई में वहां के अख़बार वालों की एक कान्फ़रेन्स में कुछ बड़े काम की बातें कही हैं. उन्होंने कहा है कि :—

"कश्मीर में हम मज़हबी गिरोहबन्दी से और जिन्ना साहब के दो-क़ौम वाले असूल से लड़ते रहे हैं........ क्योंकि हमें यक़ीन है कि इस मुल्क में हिन्दू, मुसलिम, पारसी और ईसाई सबको मिल कर रहना है. हमें न सिर्फ़ मुसलिम गिरोहबन्दी से बल्कि हर तरह की मज़हबी गिरोह बन्दी से लड़ना चाहिये. पाकिस्तान में हम मुसलिम राज की बात सुनते हैं. यहाँ दूसरी तरफ़ हम दूसरी तरह के मज़हबी राज की आवाज़ें सुन रहे हैं. हमने इरादा कर लिया है कि मज़हबी गिरोहबन्दी चाहे किसी भी रूप में हो, हम उसे मिटा कर छोड़ेंगे." शेख़ अब्दुल्ला से पूछा गया कि इस वक़्त हम कश्मीर की कैसे मदद कर सकते हैं. उन्होंने जवाब दिया—"कश्मीर की सबसे ज़्यादह मदद आप यही कर सकते हैं कि हिन्दुस्तान में अलग-अलग मज़हब वालों में मेल-मिलाप क़ायम रखें. अगर आप हिन्दुस्तान में मेल मुहब्बत क़ायम नहीं रख सकते तो मेरे लिये कशमीर के मुसलमानों को यह भरोसा दिलाना बहुत मुशकिल हो जायगा कि आप के साथ रह कर उनकी जान, माल और आबरू को कोई ख़तरा नहीं. मज़हबी गिरोह बन्दी से लड़ने की जिस तरह की मिसाल इस वक़्त कशमीर क़ायम कर रहा है, वैसी ही आपको करनी चाहिये ."

مذہبی گروہ بندی سے خطرہ

امریکا جاتے ہوئے شیخ عبداللہ نے بمبئی میں وہاں کے اخبار والوں کی ایک کانفرنس میں کچھ بڑے کام کی باتیں کی ہیں۔ انھوں نے کہا ہے کہ:—

"کشمیر میں ہم مذہبی گروہ بندی سے اور جناح صاحب کے دو قوم والے اصول سے لڑتے رہے ہیں...... کیوں کہ ہمیں یقین ہے کہ اس ملک میں ہندو، مسلم، پارسی اور عیسائی سب کو مل کر رہنا ہے۔ ہمیں نہ صرف مسلم گروہ بندی سے بلکہ ہر طرح کی مذہبی گروہ بندی سے لڑنا چاہئے۔ پاکستان میں ہم مسلم راج کی بات سنتے ہیں۔ یہاں دوسری طرف ہم دوسری طرح کے مذہبی راج کی آوازیں سن رہے ہیں۔ ہم نے ارادہ کر لیا ہے کہ مذہبی گروہ بندی چاہے کسی بھی روپ میں ہو، ہم اسے مٹا کر چھوڑیں گے۔" شیخ عبداللہ سے پوچھا گیا کہ اس وقت ہم کشمیر کی کیسے مدد کر سکتے ہیں۔ انھوں نے جواب دیا "کشمیر کی سب سے زیادہ مدد آپ یہی کر سکتے ہیں کہ ہندستان میں الگ الگ مذہب والوں میں میل ملاپ قایم رکھیں۔ اگر آپ ہندستان میں میل محبت قایم نہیں رکھ سکتے تو میرے لئے کشمیر کے مسلمانوں کو یہ بھروسا دلانا بہت مشکل ہو جائے گا کہ آپ کے ساتھ رہ کر ان کی جان، مال اور آبرو کو کوئی خطرہ نہیں۔ مذہبی گروہ بندی سے لڑنے کی جس طرح کی مثال اس وقت کشمیر قایم کر رہا ہے، ویسی ہی آپ کو کرنی چاہئے۔"

हमें मालूम है कि खुद कशमीर के अन्दर शेख अब्दुल्ला को दोनों तरफ़ की मज़हबी गिरोहबन्दी से लड़ना पड़ रहा है. हम इस देश में शेख अब्दुल्ला के शब्दों से बहुत कुछ सीख सकते हैं. यह नहीं हो सकता कि हिन्दुस्तान में हिन्दू फ़िरक़ापरस्ती या सिख फ़िरक़ापरस्ती का बोलबाला रहे और कशमीर की मुसलिम जनता को हम यक़ीन दिला दें कि उनका भला हिन्दुस्तान के साथ रहने में है. कशमीर के लोग बहुत कर गरीब या बीच के दरजे के कारीगर होते हैं. वह लकड़ी की खुदाई का काम और ऊन का काम बहुत अच्छा करते हैं. अपनी इन चीज़ों को बेच कर ही वह गुज़ारा करते हैं. हिन्दुस्तान से बाहर के देशों में भी उनकी इन चीज़ों की बड़ी क़दर है. आजकल के दंगों से पहले यह लोग, इनके दलाल या दूकानदार अपने व्यापार के लिये अमृतसर आया जाया करते थे और वहां के व्यापारियों से लेन देन करते थे. अब, जब तक हम फिर ऐसे हालात न पैदा कर दें कि जिनसे यह कशमीरी मुसलमान हमारे और उनके बीच की सरहद पर और अमृतसर, दिल्ली जैसे शहरों में निश्चिन्त होकर आ जा सकें और रह सकें, तब तक न हम ईमानदारी के साथ उनसे हिन्दुस्तान के साथ नाता जोड़ने को कह सकते हैं और न हमें इसमें कामयाबी हो सकती है.

अभी उस दिन ईरान का एलची गान्धी जी से मिलने आया था. उसने गान्धी जी से कहा कि ईरान की सरकार बहुत चाहती है कि हिन्द सरकार के साथ दोस्ती से रहे और इसमें कभी फ़रक पड़ने न पावे, पर हाल में कुछ ईरानी बम्बई में मार डाले गए. इस पर बम्बई की सरकार और दिल्ली की सरकार ने जो कुछ किया, उससे

ہمیں معلوم ہے کہ خود کشمیر کے اندر شیخ عبداللہ کو دونو طرف کی مذہبی گروہ بندی سے لڑنا پڑ رہا ہے۔ ہم اس دیش میں شیخ عبداللہ کے شبدوں سے بہت کچھ سیکھ سکتے ہیں۔ یہ نہیں ہوسکتا کہ ہندستان میں ہندو فرقہ پرستی یا سکھ فرقہ پرستی کا بول بالا رہے اور کشمیر کی مسلم جنتا کو ہم یقین دلادیں کہ اُن کا بھلا ہندستان کے ساتھ رہنے میں ہے۔ کشمیر کے لوگ بہت کر غریب یا بیچ کے درجے کے کاریگر ہوتے ہیں۔ وہ لکڑی کی کھدائی کا کام اور اُون کا کام بہت اچھا کرتے ہیں۔ اپنی ان چیزوں کو بیچ کر ہی وہ گذارا کرتے ہیں۔ ہندستان کے باہر کے دیشوں میں بھی اُن کی ان چیزوں کی بڑی قدر ہے۔ آج کل کے دنگوں سے پہلے یہ لوگ، ان کے دلال یا دوکاندار اپنے بیوپار کے لئے امرتسر آیا جایا کرتے تھے اور وہاں کے بیوپاریوں سے لین دین کرتے تھے۔ اب، جب تک ہم پھر ایسے حالات نہ پیدا کردیں کہ جن سے یہ کشمیری مسلمان ہمارے اور اُن کے بیچ کی سرحد پر اور امرتسر، دلی جیسے شہروں میں نشچنت ہوکر آجا سکیں اور رہ سکیں، تب تک نہ ہم ایمانداری کے ساتھ اُن سے ہندستان کے ساتھ ناتا جوڑنے کو کہہ سکتے ہیں اور نہ ہمیں اس میں کامیابی ہوسکتی ہے۔

ابھی اُس دن ایران کا ایلچی گاندھی جی سے ملنے آیا تھا۔ اُس نے گاندھی جی سے کہا کہ ایران کی سرکار بہت چاہتی ہے کہ ہند سرکار کے ساتھ دوستی سے رہے اور اس میں کبھی فرق پڑنے نہ پاوے۔ پر حال میں کچھ ایرانی بمبئی میں مار ڈالے گئے۔ اس پر بمبئی کی سرکار اور دلی کی سرکار نے جو کچھ کیا، اُس سے

ईरान की पूरी तसल्ली हो गई, फिर भी हिन्दुस्तान के दंगों की जो खबरें. बढ़ा चढ़ा कर ईरान पहुंचती रहती हैं उन्हें सुन सुन कर ईरान के कुछ लोग भड़क जाते हैं. ईरानी एलची ने गान्धी जी को यक़ीन दिलाया कि अभी तक ईरान के अन्दर हिन्दू, मुस्लिम और सिख व्यापारी पूरी शान्ति और मेलजोल के साथ रहते हैं.

इन बातों से पता चलता है कि हमारी ग़लतियों के नतीजे कहां तक पहुँच सकते हैं. जब तक हम हिन्दुस्तान में मज़हब के नाम पर गिरोहबन्दी को ख़त्म न कर लेंगे, जब तक हम सब मज़हबों के लोगों को बराबर की आज़ादी और फलने फूलने के बराबर के मौक़े न देंगे, तब तक न केवल हम बाहर की सभ्य दुनिया को हो मुंह दिखाने के क़ाबिल नहीं हो सकते, बल्कि डर है कि अपनी तंग दिली से ऐसी हालतें पैदा कर दें जिनसे मुल्क के अन्दर और बाहर हमारे ख़तरे बेहद बढ़ जायँ. हमें यह समझना होगा कि नेकी का रास्ता, सच्चे दान धर्म का रास्ता, उदारता और रवादारी का रास्ता, बिना जात पात या मज़हब के फ़रक़ के सबके साथ न्याय का रास्ता, प्रेम और सबकी भलाई का रास्ता ही दुनियवी सलामती और बढ़ौती का सबसे अच्छा रास्ता है।

—सुन्दरलाल

ایران کی پوری تسلی ہو گئی، پھر بھی ہندستان کے دنگوں کی جو خبریں بڑھا چڑھا کر ایران پہنچتی رہتی ہیں انھیں سن سن کر ایران کے کچھ لوگ بھڑک جاتے ہیں. ایرانی ایلچی نے گاندھی جی کو یقین دلایا کہ ابھی تک ایران کے اندر ہندو، مسلم اور سکھ ویاپاری پوری شانتی اور میل جول کے ساتھ رہتے ہیں.

ان باتوں سے پتہ چلتا ہے کہ ہماری غلطیوں کے نتیجے کہاں تک پہنچ سکتے ہیں. جب تک ہم ہندستان میں مذہب کے نام پر گروہ بندی کو ختم نہ کر لیں گے، جب تک ہم سب مذہبوں کے لوگوں کو برابر کی آزادی اور پھلنے پھولنے کے برابر کے موقعے نہ دیں گے، تب تک نہ کیول ہم باہر کی سبھیہ دنیا کو ہی منہ دکھانے کے قابل نہیں ہو سکتے، بلکہ ڈر ہے کہ اپنی تنگ دلی سے ایسی حالتیں پیدا کر دیں جن سے ملک کے اندر اور باہر ہمارے خطرے بے حد بڑھ جائیں. ہمیں یہ سمجھنا ہوگا کہ نیکی کا راستہ، سچے دان دھرم کا راستہ، اُدارتا اور رواداری کا راستہ، بنا جات پات یا مذہب کے فرق کے سب کے ساتھ نیائے کا راستہ، پریم اور سب کی بھلائی کا راستہ ہی دُنیوی سلامتی اور بڑھوتی کا سب سے اچھا راستہ ہے.

—سندرلال

Printer—Bishambhar Nath, Vishwavani Press, South Malaka, Allahabad.

Publisher—Bishambhar Nath for Hindustani Culture Societ'ʎ 48 Bai ka Bagh, Allahabad.

Registered No. A—210.

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

मकसद

(१) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों।

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरह का छापना।

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना।

—०—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—सर तेज बहादुर सप्रू ; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़. गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरीपं० सुन्दरलाल; ख़ज़ान्ची—डा० ताराचन्द. गवर्निंग बाडी के और मेम्बर

डा० सय्यदमहमूद, मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा, मौलवी सय्यद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, पं० विशम्भर नाथ.

—०—

सोसाइटी की बम्बई शाख़ का दफ़्तर

जहांगीर वाडिया बिल्डिङ्ग, ५१ महात्मा गान्धी रोड, फ़ोर्ट बम्बई.

बम्बई शाख़ की मैनेजिंग कमेटी के मेम्बर—

श्री बी० जी० खेर, श्रीमती सोफ़िया वाडिया, प्रिन्सपल ए० ए० ए० फ़ैज़ी, श्री एम० एच० पकवासा, श्रीमती हंसा मेहता, सय्यद अबदुल्ला बरेलवी, मि० के० वी० शाह.

मेम्बरी के क़ायदों के लिए लिखिए.

सुन्दर लाल,
सेक्रेटरी हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद.

ھندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(۱) ایک ایسی ھندستانی کلچر کا بڑھانا' پھیلانا او رپرچار کرنا جس میں سب ھندستانی شامل ھوں ۔

(۲) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں' اخباروں' رسالوں وغیرہ کا چھاپنا ۔

(۳) پڑھائی گھروں' کتاب گھروں' سبھاؤں' کانفرنسوں' لکچروں سے سب دھرموں' جاتوں' برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا ۔

—:o:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ — سرتیج بہادر سپرو؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق؛ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ . ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری پنڈت سندر لال؛ خزانچی—ڈاکٹر تارا چند .

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود' مسٹر عبدالمجید خواجہ' مولوی سید سلیمان ندوی' مسٹر منظر علی سوختہ' شری بی جی کھیر ' مسٹر ایس . کے' رودرا ' پنڈت بشمبھر ناتھ .

—:o:—

سوسائٹی کی بمبئی شاخ کا دفتر—

جہانگیر واڈیا بلڈنگ' ۵۱ مہاتما گاندھی روڈ' فورٹ بمبئی .

بمبئی شاخ کی منیجنگ کمیٹی کے ممبر—

شری بی - جی - کھیر' شریمتی صوفیاواڈیا' پرنسپل اے - اے - اے فیضی' شری یم - یچ - پکواسا' شریمتی ھنسا مہتا' سید عبداللہ بریلوی' مسٹر کے - وی - شاہ .

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے .

سندر لال
سکریٹری ھندستانی کلچر سوسائٹی'
۴۸ بائی کا باغ' الہ آباد .

नया हिन्द

जिल्द ४ मई '४८ नम्बर ५

نیا ہند

جلد ۴ مئی ۴۸ نمبر ۵

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली.
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی.
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی.

वतन यतीम हो गया !

(भाई खलील 'साबिर' अकबराबादी)

सितम की आँधियाँ चलीं, हसद की बिजलियाँ गिरीं.
यह किस पे गोलियाँ चलीं, यह किसकी हड्डियाँ गिरीं ?
वतन की धज्जियाँ उड़ीं, वतन की पसलियाँ गिरीं ?
चट्टानें टूट टूट कर, यह क्यों यहाँ वहाँ गिरीं ?
वतन यतीम हो गया, वतन यतीम हो गया.

وطن یتیم ہوگیا!

(بھائی خلیل 'صابر' اکبرآبادی)

ستم کی آندھیاں چلیں، حسد کی بجلیاں گریں.
یہ کس پہ گولیاں چلیں، یہ کس کی ہڈیاں گریں؟
وطن کی دھجیاں اڑیں، وطن کی پسلیاں گریں؟
چٹانیں ٹوٹ ٹوٹ کر، یہ کیوں یہاں وہاں گریں؟
وطن یتیم ہوگیا، وطن یتیم ہوگیا

वतन की आत्मा दुखी थी, इसलिये मचल गई,
वतन का जिस्म रह गया, वतन की जाँ निकल गई.
वतन का आशियाँ जला, वतन की शाख़ जल गई.
वतन में वह हवा चली, वतन का दिल मसल गई.

वतन यतीम हो गया, वतन यतीम हो गया.

नज़र उठा के देखिये जिसे वह सोगवार है,
भरा चमन उजड़ गया न बर्ग है न बार है.
यह मुल्क मुल्क अब नहीं, मज़ार ही मज़ार है,
गुज़र चुका है कारवाँ, ग़ुबार ही ग़ुबार है.

वतन यतीम हो गया, वतन यतीम हो गया.

भलों का भी वह आसरा, बुरों का भी वह आसरा.
जिया भी तो भला किया, मरा भी तो भला किया.
वतन के वास्ते जिया, वतन के वास्ते मरा.
तमाम मुल्को क़ौम का, वही था एक नाख़ुदा.

वतन यतीम हो गया, वतन यतीम हो गया.

सुकूँ के गीत कौन अब हमें तुम्हें सुनायगा ?
लड़े न भाई, भाई से, यह कौन अब सिखायगा ?
गिरे हुए जो आदमी, हैं उनको कौन उठायगा ?
वतन को ठीक रास्ते, पे कौन अब चलायगा ?

वतन यतीम हो गया, वतन यतीम हो गया.

आशियाँ = घोंसला. सोगवार = दुखी, शोक में डूबा. बर्ग = पत्ती. बार = टहनी. कारवाँ = क़ाफ़ला, ग़ुबार = धूल. नाख़ुदा = नाव खेने वाला, मल्लाह. सुकूँ = शान्ति.

وطن کی آتما دکھی تھی اس لئے مچل گئی،
وطن کا جسم رہ گیا، وطن کی جاں نکل گئی.
وطن کا آشیاں جلا، وطن کی شاخ جل گئی.
وطن میں وہ ہوا چلی، وطن کا دل مسل گئی.

وطن یتیم ہوگیا، وطن یتیم ہوگیا.

نظر اٹھا کے دیکھئے جسے وہ سوگوار ہے،
بھرا چمن اجڑ گیا نہ برگ ہے نہ بار ہے.
یہ ملک ملک اب نہیں، مزار ہی مزار ہے،
گزر چکا ہے کارواں، غبار ہی غبار ہے.

وطن یتیم ہوگیا، وطن یتیم ہوگیا.

بھلوں کا بھی وہ آسرا، بروں کا بھی وہ آسرا.
جیا بھی تو بھلا کیا، مرا بھی تو بھلا کیا.
وطن کے واسطے جیا، وطن کے واسطے مرا.
تمام ملک و قوم کا، وہی تھا ایک ناخدا.

وطن یتیم ہوگیا، وطن یتیم ہوگیا.

سکوں کے گیت کون اب ہمیں تمہیں سنائے گا؟
لڑے نہ بھائی، بھائی سے، یہ کون اب سکھائے گا؟
گرے ہوئے جو آدمی، ہیں ان کو کون اٹھائے گا؟
وطن کو ٹھیک راستے پہ کون اب چلائے گا؟

وطن یتیم ہوگیا، وطن یتیم ہوگیا.

آشیاں = گھونسلا. سوگوار = دکھی، شوک میں ڈوبا. برگ = پتی. بار = ٹہنی.
کارواں = قافلہ. غبار = دھول. ناخدا = ناؤ کھینے والا، ملاح. سکوں = شانتی.

गांधी जी की याद में—

(डा० राम प्रताप बहादुर)

गांधी जी आज नहीं रहे. पच्चीस सौ साल की लगातार कोशिशों के बाद हिन्दुस्तान की आत्मा ने एक ऐसे व्यक्तित्व (शख़्सियत) को जन्म दिया था पर अफ़सोस है कि वह व्यक्तित्व आज हमारे बीच नहीं रहा. शर्म का मौक़ा है कि जिसे हम दुनिया के सामने हिन्दुस्तान की सबसे बड़ी देन समझकर पेश कर सकते थे उसे एक हिन्दुस्तानी ही के हाथों ने हमसे छीन लिया. आख़िर इस अन्तर्राष्ट्रीय पाप से हम अपने हाथ कैसे धो सकते हैं? इन्सानियत के साथ जो यह ज़ुल्म हुआ है उसकी ज़िम्मेवारी से हिन्दुस्तान अपने को कैसे बचा सकता है? वैसे यह सभी जानते हैं कि पैग़म्बर और अवतार भी अमर नहीं होते. ख़ुदा के बन्दे और बेटे भी आख़िर एक दिन मर जाते हैं. मगर उस क़ौम की आत्मा को कैसे शांति मिल सकती है जिसको इतिहास एक पैग़म्बर और रहनुमा को सूली पर चढ़ाने या गोली मारने के लिये ज़िम्मेवार ठहरायेगी? इसमें शक नहीं कि जब तक गांधी जी ज़िन्दा रहे तब तक उन्होंने एक शानदार और बड़ी इज़्ज़त की ज़िन्दगी बिताई और जब वह मरे तो एक शानदार मौत मरे और उनके बाद उनका नाम इतिहास के बड़े से बड़े इन्सानी कारनामों के सिलसिले में याद किया जायगा. लेकिन असल सवाल [illegible]

(ڈاکٹر رام پرتاپ بہادر)

گاندھی جی آج نہیں رہے. پچیس سو سال کی لگاتار کوششوں کے بعد ہندوستان کی آتما نے ایک ایسے ویکتتو (شخصیت) کو جنم دیا تھا پر افسوس ہے کہ وہ ویکتی آج ہمارے بیچ نہیں رہا. شرم کا موقع ہے کہ جسے ہم دنیا کے سامنے ہندوستان کی سب سے بڑی دین سمجھ کر پیش کر سکتے تھے اسے ایک ہندوستانی ہی کے ہاتھوں نے ہم سے چھین لیا. آخر اس انترراشٹریہ پاپ سے ہم اپنے ہاتھ کیسے دھو سکتے ہیں؟ انسانیت کے ساتھ جو یہ ظلم ہوا ہے اس کی ذمے واری سے ہندوستان اپنے کو کیسے بچا سکتا ہے؟ ویسے یہ سبھی جانتے ہیں کہ پیغمبر اور اوتار بھی امر نہیں ہوتے. خدا کے بندے اور بیٹے بھی آخر ایک دن مر جاتے ہیں. مگر اس قوم کی آتما کو کیسے شانتی مل سکتی ہے جس کو اتہاس ایک پیغمبر اور رہنما کو سولی پر چڑھانے یا گولی مارنے کے لئے ذمے وار ٹھہرائے گی؟ اس میں شک نہیں کہ جب تک گاندھی جی زندہ رہے تب تک انھوں نے ایک شاندار اور بڑی عزت کی زندگی بتائی اور جب مرے تو ایک شاندار موت مرے اور مرنے کے بعد ان کا نام انسانی کارناموں کے سلسلے سے جڑے [illegible]

सोचेंगी जो हमने गांधी जी को उस वक्त नहीं समझा और पह-चाना जब वह हमारे बीच मौजूद थे.

हम क्या करें ? क्या हमारी तसल्ली के लिये इतना ही काफ़ी होगा कि जब हम बूढ़े हो जायँगे, हमारे सर के बाल सफ़ेद हो जायँगे और हमारी आँखों की रोशनी धुँधली और फीकी पड़ जायगी तब हम आनेवाली पीढ़ियों से कहेंगे कि हमने गांधी जी की राख को गंगा और जमुना के पवित्र संगम में पड़ते देखा था ? परेशान हो कर हम बार बार सोचते हैं मगर किसी नतीजे पर पहुँचते नहीं. हमारी अक्ल और समझ हमको किसी सही नतीजे पर नहीं पहुँचाती है. जितना ही हम अपने इख़लाक़ी या नैतिक पाप और सियासी जुर्म पर विचार करते हैं उतना ही हमारी आत्मा को जैसे अन्दर से चोट लगती है और हमारे दिल को रंज पहुँचता है. फिर भी हम ऐसा कुछ करने पर अपने को मजबूर पाते हैं जो उस रोशनी को फिर से हमारे बीच में ले आवे जो अभी कल तक हमारे दरमियान थी.

हमारे बीच इस वक्त तीन तरह के विचार आम तौर से पैदा होते हैं. कुछ लोग तो यह सोचते हैं कि गांधी जी को अमर बनाने का एक यह ढंग होगा कि उनके उन सारे विचारों को जिनके लिये वह अपने जीवन भर आन्दोलन करते रहे, एक सिरे से इस तरह जनता क़बूल कर ले कि वह विचार हमारे क़ौमी जीवन का हमेशा के लिये एक अंग बन जायें. दूसरा गिरोह कोई ऐसी सूरत सोच निकालने के लिये अपने दिमाग़ों पर ज़ोर डालता है जिसके मुताबिक गांधी जी की याद में हम कोई ऐसी यादगार

سوچے گی جو ہم نے گاندھی جی کو اُس وقت نہیں سمجھا اور پہچانا جب وہ ہمارے بیچ موجود تھے۔

ہم کیا کریں؟ کیا ہماری تسلی کے لئے اتنا ہی کافی ہوگا کہ جب ہم بوڑھے ہو جائیں گے، ہمارے سر کے بال سفید ہو جائیں گے اور ہماری آنکھوں کی روشنی دھندھلی اور پھیکی پڑ جائے گی تب ہم آنے والی پیڑھیوں سے کہیں گے کہ ہم نے گاندھی جی کی راکھ کو گنگا اور جمنا کے پوتر سنگم میں پڑتے دیکھا تھا؟ پریشان ہوکر ہم بار بار سوچتے ہیں مگر کسی نتیجے پر پہنچتے نہیں۔ ہماری عقل اور سمجھ ہم کو کسی صحیح نتیجے پر نہیں پہنچاتی ہے۔ جتنا ہی ہم اپنے اخلاقی یا نیتک پاپ اور سیاسی جرم پر وچار کرتے ہیں اتنا ہی ہماری آتما کو جیسے اندر سے چوٹ لگتی ہے اور ہمارے دل کو رنج پہنچتا ہے۔ پھر بھی ہم ایسا کچھ کرنے پر اپنے کو مجبور پاتے ہیں جو اُس روشنی کو پھر سے ہمارے بیچ میں لے آئے جو ابھی کل تک ہمارے درمیان تھی۔

ہمارے بیچ اس وقت تین طرح کے وچار عام طور سے پیدا ہوتے ہیں۔ کچھ لوگ تو یہ سوچتے ہیں کہ گاندھی جی کو امر بنانے کا ایک ڈھنگ یہ ہوگا کہ اُن کے اُن سارے وچاروں کو جن کے لئے وہ اپنے جیون بھر اندولن کرتے رہے، ایک سرے سے اس طرح جنتا قبول کرلے کہ وہ وچار ہمارے قومی جیون کا ہمیشہ کے لئے ایک انگ بن جائیں۔ دوسرا گروہ کوئی ایسی صورت سوچ نکالنے کے لئے اپنے دماغوں پر زور ڈالتا ہے جس کے مطابق گاندھی جی کی یاد میں ہم کوئی ایسی یادگار

क़ायम कर सकें जो हमेशा के लिये आनेवाली सन्तानों के रास्ते में समुन्दर के मीनार की तरह रोशनी दिखलाती रहे. साथ साथ वह लोग भी हैं जो उन लोगों को ऐसी कड़ी सज़ायें देना चाहते हैं, जिन्होंने बहुत ही बेरहमी से एकाएक उस चराग़ को हमारे बीच से बुझा दिया, यह सोचकर कि ऐसा एख़लाक़ी या नैतिक और सियासी दृष्टिकोण (नज़रिया), जिसके ख़िलाफ़ गांधी जी हमेशा लड़ते रहे, हमारे समाजी जीवन से सदा के लिए ख़तम हो जाये. कहने का मतलब यह कि इन लोगों का मतलब भी बदला लेना या दुश्मनी साधना नहीं है, बल्कि यह लोग भी सुधार ही करना चाहते हैं.

ऐसी हालत में होना क्या चाहिये ? होना यह चाहिये कि जब मौजूदा तूफ़ान दब जाय और वक़्ती ग़ुस्सा ख़तम हो जाय तो इन तीनों नज़रियों को मिलकर कोई ऐसा रूप धारण करना चाहिये जिसकी मदद से हम उन तीनों कामों में कामयाबी हासिल कर सकें जिनका ज़िक्र हमने अभी किया. मगर अपने इस हौसले में हम तब ही कामयाब हो सकते हैं जब कि गांधी जी की याद में हम कोई ऐसी यादगार क़ायम करें जो पत्थर की मूर्ति होने की जगह एक ऐसी जीती जागती संस्था हो जो इन तीनों नज़रियों को अमली रूप दे सके. पत्थर की यादगार बनाना बहुत पुराना विचार है ऐसा पुराना विचार गांधी जी को, जो हर सूरत से और हर मानी में एक बहुत ही इन्क़लाबी विचार के आदमी थे, कभी भी पसन्द न आ सकता था. यही कारण है जो कस्तूर बा के मरने के बाद उनके सुझाव और सलाह के मुताबिक़ कस्तूरबा की यादगार क़ायम हुई, जिसका पूरा मक़सद दुनिया की निगाहों में हिन्दुस्तान की

قایم کر سکیں جو ہمیشہ کے لئے آنے والی سنتانوں کے راستے میں سمندر کے مینار کی طرح روشنی دکھاتی رہے. ساتھ ساتھ وہ لوگ بھی ہیں جو اُن لوگوں کو ایسی کڑی سزائیں دینا چاہتے ہیں جنھوں نے بہت ہی بے رحمی سے اکایک اس چراغ کو ہمارے بیچ سے بجھا دیا، یہ سوچ کر کہ ایسا اخلاقی یا نیتک اور سیاسی درشٹی کون (نظریہ) جس کے خلاف گاندھی جی ہمیشہ لڑتے رہے، ہمارے سماجی جیون سے سدا کے لئے ختم ہو جائے. کہنے کا مطلب یہ ہے کہ اِن لوگوں کا مطلب بھی بدلا لینا یا دشمنی سادھنا نہیں ہے، بلکہ یہ لوگ بھی سدھار ہی کرنا چاہتے ہیں.

ایسی حالت میں ہونا کیا چاہئے؟ ہونا یہ چاہئے کہ جب موجودہ طوفان دب جائے اور وقتی غصہ ختم ہو جائے تو ان تینوں نظریوں کو مل کر کوئی ایسا روپ دھارن کرنا چاہئے جس کی مدد سے ہم اُن تینوں کاموں میں کامیابی حاصل کر سکیں جن کا ذکر ہم نے ابھی کیا. مگر اپنے اس حوصلے میں ہم تب ہی کامیاب ہو سکتے ہیں جب کہ گاندھی جی کی یاد میں ہم کوئی ایسی یادگار قایم کریں جو پتھر کی مورتی ہونے کی جگہ ایک ایسی جیتی جاگتی سنستھا ہو جو اِن تینوں نظریوں کو عملی روپ دے سکے. پتھر کی یادگار بنانا بہت پرانا وچار ہے ایسا پرانا وچار گاندھی جی کو، جو ہر صورت سے اور ہر معنی میں ایک بہت ہی انقلابی وچار کے آدمی تھے، کبھی بھی پسند نہ آسکتا تھا. یہی کارن ہے جو کستوربا کے مرنے کے بعد ان کے سجھاؤ اور صلاح کے مطابق کستوربا کی یادگار قایم ہوئی جس کا پورا مقصد دنیا کی نگاہوں میں ہندستان کی

स्त्रियों का दरजा ऊँचा करना था.

इसलिये गांधी जी के लिये यादगार क़ायम करते समय हमें गांधी जी के उन ऊँचे विचारों और नज़रियों को याद रखना है जो उन्हें उनकी ज़िन्दगी में बहुत ही प्यारे थे. इसलिये इस वक़्त हमें एक ऐसा ट्रस्ट क़ायम करना है जिसकी मदद से हम गांधी जी के उस काम को पूरा कर सकें जिसे वह ख़ुद पूरा न कर सके. ट्रस्ट क़ायम करते वक़्त हमें इसका ध्यान रखना है कि उन्हें कौन चीज़ें सबसे ज़्यादा प्यारी थीं. जैसा कि हम जानते हैं, हिन्दुस्तान की सताई हुई और मजबूर बेज़बान जनता को वह अपने दिल में सबसे बड़ी जगह देते थे. उनकी बेचैन आत्मा हमेशा इस ख़याल से परेशान रहती थी कि सदियों के ज़ुल्म और बेपरवाही के कारण मिटी हुई और तबाह जनता के बीच से किस तरह ग़रीबी, गंदगी, जेहालत, बीमारी, ग़ुस्सा, नफ़रत और डर को निकालकर उन्हें तरक़्क़ी और सुधार के सही रास्ते पर लगा दिया जाय. हम उनकी याद में जो ट्रस्ट क़ायम करेंगे उसके सामने पहले यही मक़सद होंगे और इनके बाद कुछ और.

कस्तूर बा ट्रस्ट के वास्ते पच्चासी लाख रुपये इकट्ठा करने का हौसला हमने किया था. पर जब क़ौम के सामने इस अच्छे काम के लिये हमने हाथ फैलाये तो जनता ने हमारी आशाओं से भी ज़्यादा मदद की. हाँ क़ौम के इस सबसे बड़े रहनुमा की यादगार के वास्ते हम कम से कम पच्चासी करोड़ का निशाना अपने सामने रखकर आगे बढ़ेंगे. ऐसी हालत में हम दरअसल इससे भी बड़ी रक़म इकट्ठा कर सकेंगे और इस सिलसिले में हमें

استریوں کا درجہ اونچا کرنا تھا۔

اس لئے گاندھی جی کے لئے یادگار قایم کرتے سمے ہمیں گاندھی جی کے اُن اونچے وچاروں اور نظریوں کو یاد رکھنا ہے جو اُنھیں اُن کی زندگی میں بہت ہی پیارے تھے۔ اس لئے اس وقت ہمیں ایک ایسا ٹرسٹ قایم کرنا ہے جس کی مدد سے ہم گاندھی جی کے اس کام کو پورا کر سکیں جسے وہ خود پورا نہ کر سکے۔ ٹرسٹ قایم کرتے وقت ہمیں اس کا دھیان رکھنا ہے کہ اُنھیں کون چیزیں سب سے زیادہ پیاری تھیں۔ جیسا کہ ہم جانتے ہیں۔ ہندستان کی ستائی ہوئی اور مجبور بے زبان جنتا کو وہ اپنے دل میں سب سے بڑی جگہ دیتے تھے۔ اُن کی بےچین آتما ہمیشہ اس خیال سے پریشان رہتی تھی کہ صدیوں کے ظلم اور بےپروائی کے کارن مٹی ہوئی اور تباہ جنتا کے بیچ سے کس طرح غریبی، گندگی، جہالت، بیماری، غصہ، نفرت اور ڈر کو نکال کر اُنھیں ترقی اور سدھار کے صحیح راستے پر لگا دیا جائے۔ ہم اُن کی یاد میں جو ٹرسٹ قایم کریں گے اُس کے سامنے پہلے یہی مقصد ہوں گے اور ان کے بعد کچھ اور۔

کستوربا ٹرسٹ کے واسطے پچاسی لاکھ روپے اکٹھا کرنے کا حوصلہ ہم نے کیا تھا۔ پر جب قوم کے سامنے اس اچھے کام کے لئے ہم نے ہاتھ پھیلائے تو جنتا نے ہماری آشاؤں سے بھی زیادہ مدد کی۔ ہاں قوم کے اس سب سے بڑے رہنما کی یادگار کے واسطے ہم کم سے کم پچاسی کروڑ کا نشانہ اپنے سامنے رکھ کر آگے بڑھیں گے۔ ایسی حالت میں ہم دراصل اس سے بھی بڑی رقم اکٹھا کر سکیں گے اور اس سلسلے میں ہمیں

हिन्दुस्तान की जनता के साथ साथ हिन्द सरकार से भी कुछ कम आशायें नहीं हैं. हिन्द सरकार को चाहिये कि वह अगले दस बरसों में तालीम, तन्दुरुस्ती और मजदूरों के मुहकमों की तरफ से जनता की भलाई के लिये जो कुछ खर्च करनेवाला है उसका ज्यादा हिस्सा इस समय गांधी यादगार ट्रस्ट के वास्ते देने का ऐलान कर दे. यह जाहिर है कि इस समय हिन्द सरकार इन मुहकमों की तरफ से जो खर्च कर रही है उससे ज्यादा ही अगले बरसों में खर्च करेगी. इसलिये अगले दस बरसों का औसत लगाकर हमारी सरकार अभी यह ऐलान कर सकती है कि इस पूरी रक़म का इतना हिस्सा वह गांधी यादगार ट्रस्ट को देना चाहती है. इसके लिये यह जरूरी नहीं कि पूरी रक़म अभी अलग कर दी जाय बल्कि इस समय तो जो रक़म आगे चलकर देनी है उसका सिर्फ ऐलान ही करना काफ़ी होगा. इसी तरह सूबों की सरकारें भी इन्हीं मदों में जनता की भलाई के लिये जो रुपये खर्च करनेवाली हैं उनका एक मुनासिब हिस्सा गांधी यादगार ट्रस्ट के लिये दे सकती हैं. इस तरह हमारी पूंजी सरकारी मदद से कम से कम पचास करोड़ से शुरू हो सकती है और जाहिर है कि जब सरकार ऐसा काम करेगी या काम करने का इरादा करेगी तो क़ौम के ऊपर इसका बहुत अच्छा असर पड़ेगा. फिर हम आसानी से यह आशा कर सकते हैं कि गांधी जी की यादगार में सौ करोड़ से ज्यादा रक़म हम वसूल कर सकेंगे. हमारा यह भी विश्वास है कि यह रक़म हम बिना किसी जोर या किसी तरह की जबरदस्ती के वसूल कर सकेंगे. जोर और जबरदस्ती गांधी जी के जीवन में कहीं जगह नहीं रखते

ہندستان کی جنتا کے ساتھ ساتھ ہند سرکار سے بھی کچھ کم آشائیں نہیں ہیں۔ ہند سرکار کو چاہئے کہ وہ اگلے دس برسوں میں تعلیم، تندرستی اور مزدوروں کے محکموں کی طرف سے جنتا کی بھلائی کے لئے جو کچھ خرچ کرنے والی ہو اس سے زیادہ حصہ اسی سمے گاندھی یادگار ٹرسٹ کے واسطے دینے کا اعلان کردے۔ یہ ظاہر ہے کہ اس سمے ہند سرکار ان محکموں کی طرف سے جو خرچ کر رہی ہے اس سے زیادہ ہی اگلے برسوں میں خرچ کرے گی۔ اس لئے اگلے دس برسوں کا اوسط لگاکر ہماری سرکار ابھی یہ اعلان کر سکتی ہے کہ اس پوری رقم کا اتنا حصہ وہ گاندھی یادگار ٹرسٹ کو دینا چاہتی ہے۔ اس کے لئے یہ ضروری نہیں ہے کہ پوری رقم ابھی الگ کر دی جائے بلکہ اس سمے تو جو رقم آگے چل کر دینی ہے اس کا صرف اعلان ہی کرنا کافی ہوگا۔ اسی طرح صوبوں کی سرکاریں بھی انھیں مدوں میں جنتا کی بھلائی کے لئے جو روپے خرچ کرنے والی ہیں ان کا ایک مناسب حصہ گاندھی یادگار ٹرسٹ کے لئے دے سکتی ہیں۔ اس طرح ہماری پونجی سرکاری مدد سے کم سے کم پچاس کروڑ سے شروع ہو سکتی ہے اور ظاہر ہے کہ جب سرکار ایسا کام کرے گی یا کام کرنے کا ارادہ کرے گی تو قوم کے اوپر اس کا بہت اچھا اثر پڑے گا۔ پھر ہم آسانی سے یہ آشا کر سکتے ہیں کہ گاندھی جی کی یادگار میں سو کروڑ سے زیادہ رقم ہم وصول کر سکیں گے۔ ہمارا یہ بھی وشواس ہے کہ یہ رقم ہم بنا کسی زور یا کسی طرح کی زبردستی کے وصول کر سکیں گے زور اور زبردستی گاندھی جی کے جیون میں کہیں جگہ نہیں رکھتے

थे. इसलिये आज उनके न रहने पर भी उनके नाम पर हम कोई ऐसा काम नहीं कर सकते जो उनके जीवन और उनके कामों के खिलाफ हो.

इस तरह जब हम एक बहुत ही शानदार ट्रस्ट क़ायम कर लेंगे तो हमारा दूसरा काम यह होगा कि उसके नीचे हम देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक स्कूल, हस्पताल, छोटे बड़े दवाख़ाने और दूसरी संस्थायें काम करें जो लोगों को मुफ्त या थोड़े ख़र्च पर ज्यादा से ज्यादा फायदा पहुँचायें. इन संस्थाओं का काम ग़रीब और दुखी लोगों के दुख दर्द में हाथ बटाने के अलावा यह भी होगा कि वह पूरी क़ौम को उस रूहानी (आध्यात्मिक) और शारीरिक (जिसमानी) शान्ति और भाईचारे और भलाई के रास्ते पर ले चलें जिस पर गांधी जी इस क़ौम को चलाना चाहते थे. लेकिन इस सिलसिले में यह बात याद रखने की है कि इस तरह के ट्रस्ट आमतौर से कम से कम इस देश में ज्यादा कामयाब नहीं रहे हैं. इसलिये इस ख़तरे को दूर करने के इरादे से हमारे लिये यह ज़रूरी होगा कि दूसरी एहतियाती काररवाई के अलावा हम शुरू से ही सरकार और उसके कुछ नुमाइन्दों को ट्रस्ट की पालिसी और उसके कामों के साथ मिलाये रक्खें. इसलिये हिन्द सरकार के तालीम, तन्दुरुस्ती और मजदूरों के मंत्रियों को ट्रस्ट का मुस्तक़िल या स्थायी मेम्बर बना देना ज़रूरी होगा. जब सरकार के प्रतिनिधि और जनता के प्रतिनिधि मिलकर ट्रस्ट का काम करेंगे तो वह सारी ख़राबियाँ आप से आप दूर हो जायेंगी जो आम तौर पर सरकारी कामों में पैदा हो जाती है.

تھے. اس لئے کہ آج اُن کے نہ رہنے پر بھی اُن کے نام پر ہم کوئی ایسا کام نہیں کر سکتے جو اُن کے جیون اور اُن کے کاموں کے خلاف ہو.

اس طرح جب ہم ایک بہت ہی شاندار ٹرسٹ قایم کر لیں گے تو ہمارا دوسرا کام یہ ہوگا کہ اُس کے نیچے ہم دیش کے ایک سرے سے دوسرے سرے تک اسکول، ہسپتال، چھوٹے بڑے دواخانے اور دوسری سنستھائیں کام کریں جو لوگوں کو مفت یا تھوڑے خرچ پر زیادہ سے زیادہ فائدہ پہنچائیں. ان سنستھاؤں کا کام غریب اور دکھی لوگوں کے دکھ درد میں ہاتھ بٹانے کے علاوہ یہ بھی ہوگا کہ وہ پوری قوم کو اس روحانی (آدھیاتمک) اور شاریرک (جسمانی) شانتی اور بھائی چارے اور بھلائی کے راستے پر لے چلیں جس پر گاندھی جی اس قوم کو چلانا چاہتے تھے. لیکن اس سلسلے میں یہ بات یاد رکھنے کی ہے کہ اس طرح کے ٹرسٹ عام طور سے کم سے کم اس دیش میں زیادہ کامیاب نہیں رہے ہیں. اس لئے اس خطرے کو دور کرنے کے ارادے سے ہمارے لئے یہ ضروری ہوگا کہ دوسری احتیاطی کارروائی کے علاوہ ہم شروع سے ہی سرکار اور اُس کے کچھ نمائندوں کو ٹرسٹ کی پالیسی اور اُس کے کاموں کے ساتھ ملائے رکھیں. اس لئے ہند سرکار کے تعلیم، تندرستی اور مزدوروں کے منتریوں کو ٹرسٹ کا مستقل یا استھائی ممبر بنا دینا ضروری ہوگا. جب سرکار کے پرتی ندھی اور جنتا کے پرتی ندھی مل کر ٹرسٹ کا کام کریں گے تو وہ ساری خرابیاں آپ سے آپ دور ہو جائیں گی جو عام طور پر سرکاری کاموں میں پیدا ہو جاتی ہیں.

शायद यहाँ इस बात पर जोर देना जरूरी नहीं कि इस पैमाने पर यह अपनी तरह का ऐसा तजरबा होगा जिसकी मिसाल दुनिया के दूसरे हिस्सों में ढूँढने से आसानी से नहीं मिल सकेगी.

मगर यह सब करते और सोचते वक़्त हमें एक पल के लिये भी इस असलियत को नहीं भुलाना है कि दरअसल गांधी जी हर हैसियत और हर दृष्टि से हिन्दुस्तानी थे. इसके अलावा अगर वह हिन्दू भी थे तो सिर्फ इस कारण कि वह एक हिन्दू घराने में पैदा हुए थे. इसलिये गान्धी जी की कोई यादगार क़ायम करते वक़्त हमें इस बात को एक पल के लिये भी नहीं भुलाना चाहिये. उनकी याद में मन्दिर बनाना शायद उतना ही नामुनासिब होगा जितना मसजिद या गिरजा बनाना. इसके अलावा जैसा कि हमें मालूम है, इस देश में मन्दिरों, मसजिदों और गिरजों की कोई कमी नहीं है. इसलिये अगर कुछ लोग ऐसे हैं, जो ख्वाहमख्वाह गांधी जी का नाम कुछ खालिस मजहबी संस्थाओं के साथ जोड़ना चाहते हैं, तो वह लोग देश में जितने मन्दिरों, मसजिदों और गिरजों को चाहें, गान्धी जी के नाम कर सकते हैं. ऐसा करने पर किसी को भी कुछ एतराज नहीं हो सकता.

कहने का मतलब यह कि हम ग़रीब और मुफ़लिस हिन्दुस्तानी, जो भी इस समय गान्धी जी के नाम पर दे सकते हैं, उसमें से एक पैसा भी किसी ऐसे काम में नहीं लगने देना चाहिये जो इस क़ौम के भूखों और प्यासों की तक़दीर बनाने में काम न आ सके. इस लिये इस वक़्त जो कुछ भी जोड़ा और जमा किया जा सकता है वह सिर्फ एक काम में आना चाहिये और सिर्फ एक मक़सद के

شاید یہاں اس بات پر زور دینا ضروری نہیں کہ اس پیمانے پر یہ اپنی طرح کا ایسا تجربہ ہوگا جس کی مثال دنیا کے دوسرے حصوں میں ڈھونڈھنے سے آسانی سے نہیں مل سکے گی۔

مگر یہ سب کرتے اور سوچتے وقت ہمیں ایک پل کے لئے بھی اس اصلیت کو نہیں بھولنا ہے کہ دراصل گاندھی جی ہر حیثیت اور ہر درشٹی سے ہندستانی تھے۔ اس کے علاوہ اگر وہ ہندو بھی تھے تو صرف اس کارن کہ وہ ایک ہندو گھرانے میں پیدا ہوئے تھے۔ اس لئے گاندھی جی کی کوئی یادگار قائم کرتے وقت ہمیں اس بات کو ایک پل کے لئے بھی نہیں بھولنا چاہئے۔ ان کی یاد میں مندر بنانا شاید اُتنا ہی نامناسب ہوگا جتنا مسجد یا گرجا بنانا۔ اس کے علاوہ جیسا کہ ہمیں معلوم ہے، اس دیش میں مندروں، مسجدوں اور گرجوں کی کوئی کمی نہیں ہے۔ اس لئے اگر کچھ لوگ ایسے ہیں۔ جو خواہ مخواہ گاندھی جی کا نام کچھ خالص مذہبی سنستھاؤں کے ساتھ جوڑنا چاہتے ہیں، تو وہ لوگ دیش میں جتنے مندروں، مسجدوں اور گرجوں کو چاہیں، گاندھی جی کے نام کر سکتے ہیں۔ ایسا کرنے پر کسی کو بھی کچھ اعتراض نہیں ہو سکتا۔

کہنے کا مطلب یہ کہ ہم غریب اور مفلس ہندستانی، جو بھی اس سمے گاندھی جی کے نام پر دے سکتے ہیں اس میں سے ایک پیسہ بھی کسی ایسے کام میں نہیں لگنے دینا چاہئے جو اس قوم کے بھوکوں اور پیاسوں کی تقدیر بنانے میں کام نہ آ سکے۔ اس لئے اس وقت جو کچھ بھی جوڑا اور جمع کیا جا سکتا ہے وہ صرف ایک کام میں آنا چاہئے اور صرف ایک مقصد کے

लिये इस्तेमाल होना चाहिये. और वह मक़सद होगा गान्धी जी के असूलों और आदर्शों का हिन्दुस्तान में ही नहीं बल्कि अगर हो सके तो सारी दुनिया में प्रचार करना. हमें गान्धी जी के मरने के बाद यह मालूम हुआ कि उनके सिद्धान्त दुनिया में सब को कितने प्यारे थे. बल्कि दुनिया के कोने कोने से जिस तरह उनके गुन गान हुए उसके आधार पर हम आज कुछ हिम्मत से कह सकते हैं कि अगर अपने जीवन का ज्यादा हिस्सा उन्हों ने इस अभागे देश की सियासी आज़ादी हासिल करने में न लगा दिया होता तो आज वह मौजूदा युग के सब से बड़े रहनुमा की हैसियत से दुनिया से उठते. फिर भी अगर आज भी हम हिन्दुस्तानी सोच समझ कर इरादा कर लें तो उनकी जिन्दगी के पैग़ाम को दुनिया के कोने कोने में पहुँचा सकते हैं.

महात्मा बुद्ध के मरने पर इस देश ने दुनिया के दूर दूर देशों में मज़हबी सफ़ीर या धार्मिक दूत भेजे और वहाँ मठ क़ायम किये. जिनके कारन बौद्ध धर्म चीन, जपान, तिब्बत, स्याम, बरमा और लंका जैसे देशों में अमर धर्म साबित हुआ. इसी तरह आज हमें चाहिये कि हम अगर दुनिया के हर हिस्से में नहीं तो कम से कम बड़े बड़े देशों में ऐसी संस्थायें क़ायम करें जो गान्धी जी के नैतिक (अख़लाक़ी) सन्देश को दुनिया भर में पहुँचाने की कोशिश करें. आज जबकि मौजूदा राजकाजी युग में आदमी की इज़्ज़त और रुतबा, बहुत घट गया है, इस बात की सख़्त ज़रूरत है कि हम दुनिया को यह बतायें कि इन्सानी तरक़्क़ी के लिये यह रास्ता खुदकुशी का रास्ता है. आज जबकि ऐटम बम एक

لئے استعمال ہونا چاہئے. اور وہ مقصد ہوگا گاندھی جی کے اصولوں اور آدرشوں کا ہندستان میں ہی نہیں بلکہ اگر ہو سکے تو ساری دنیا میں پرچار کرنا. ہمیں گاندھی جی کے مرنے کے بعد یہ معلوم ہوا کہ ان کے سدھانت دنیا میں سب کو کتنے پیارے تھے. بلکہ دنیا کے کونے کونے سے جس طرح ان کے گن گان ہوئے اس کے آدھار پر ہم آج کچھ ہمت سے کہہ سکتے ہیں کہ اگر اپنے جیون کا زیادہ حصہ انھوں نے اس ابھاگے دیش کی سیاسی آزادی حاصل کرنے میں نہ لگا دیا ہوتا تو آج وہ موجودہ یگ کے سب سے بڑے رہنما کی حیثیت سے دنیا سے اٹھتے. پھر بھی اگر آج بھی ہم ہندستانی سوچ سمجھ کر ارادہ کر لیں تو ان کی زندگی کے پیغام کو دنیا کے کونے کونے میں پہنچا سکتے ہیں.

مہاتما بدھ کے مرنے پر اس دیش نے دنیا کے دور دور دیشوں میں مذہبی سفیر یا دھارمک دوت بھیجے اور وہاں مٹھ قائم کئے. جن کے کارن بودھ دھرم چین، جاپان، تبت، سیام، برما اور لنکا جیسے دیشوں میں امر دھرم ثابت ہوا. اسی طرح آج ہمیں چاہئے کہ ہم اگر دنیا کے ہر حصے میں نہیں تو کم سے کم بڑے بڑے دیشوں میں ایسی سنستھائیں قائم کریں جو گاندھی جی کے نیتک (اخلاقی) سندیش کو دنیا بھر میں پہنچانے کی کوشش کریں. آج جب کہ موجودہ راج کاجی یگ میں آدمی کی عزت اور رتبہ بہت گھٹ گیا ہے، اس بات کی سخت ضرورت ہے کہ ہم دنیا کو یہ بتائیں کہ انسانی ترقی کے لئے یہ راستہ خودکشی کا راستہ ہے. آج جب کہ ایٹم بم ایک

भयानक खूनी दरिन्दे या हिंसक जन्तु की तरह इन्सान की सभ्यता (तहज़ीब) और संस्कृति (तमद्दुन) को निगल जाने के लिये मुँह फाड़े बैठा है, इस चीज़ की सख्त ज़रूरत है कि दुनिया को हम सुख, शान्ति और अहिंसा का सन्देश दें.

इस सिलसिले में हमारे लिये जो सन्तोष की चीज़ है वह यह है कि अगर कोई इस तरह का अन्तर्राष्ट्रीय आन्दोलन हम शुरू करें तो इसका खतरा नहीं है कि हमारी कोशिश दूसरे देशों के लोगों के दिलों में किसी तरह का शक पैदा करे. इसमें शक नहीं कि पहले इस तरह के आन्दोलन किसी खास धर्म का सन्देश लेकर ही बाहर गये. अकसर मज़हबी असर क़ायम होने के बाद देश पर सियासी क़ब्ज़ा भी हो गया. पर हमलोगों के सामने इस तरह का कोई मक़सद या हौसला नहीं है. इसलिये कि गान्धी जी ने हमको कोई ऐसा नया मज़हब ही नहीं दिया जिसका प्रचार करके हम सियासी या साम्राजी हौसले बाँध सकें. असल में गान्धी जी की बड़ाई भी इसी में थी. दुनिया में एक के बाद दूसरे पैग़म्बर और एक के बाद दूसरे अवतार आये और क़रीब क़रीब सभों ने अपने से पहले आने वाले की बातों को काटा लेकिन गान्धी जी अकेले ऐसे रहनुमा थे जिन्हों ने हर धर्म, हर अवतार और हर पैग़म्बर के सन्देश को सच माना और किसी की बात को नहीं काटा. गान्धी जी ने यह साफ़ साफ़ देख लिया था कि दुनिया को किसी नये धर्म की ज़रूरत नहीं थी. बल्कि इस बात की ज़रूरत थी कि इन्सानियत को ज़िन्दा रखने के लिये पुराने धर्मों की अच्छाइयों को ज़ोर

بھیانک خونی درندے یا ہنسک جنتو کی طرح انسان کی سبھیتا (تہذیب) اور سنسکرتی (تمدن) کو نگل جانے کے لئے منہ پھاڑے بیٹھا ہے، اس چیز کی سخت ضرورت ہے کہ دنیا کو ہم سکھ، شانتی اور اہنسا کا سندیش دیں۔

اس سلسلے میں ہمارے لئے جو سنتوش کی چیز ہے وہ یہ ہے کہ اگر کوئی اس طرح کا انترراشٹریہ اندولن ہم شروع کریں تو اس کا خطرہ نہیں ہے کہ ہماری کوشش دوسرے دیشوں کے لوگوں کے دلوں میں کسی طرح کا شک پیدا کرے۔ اس میں شک نہیں کہ پہلے اس طرح کے اندولن کسی خاص دھرم کا سندیش لے کر ہی باہر گئے۔ اکثر مذہبی اثر قایم ہونے کے بعد دیش پر سیاسی قبضہ بھی ہو گیا۔ پر ہم لوگوں کے سامنے اس طرح کا کوئی مقصد یا حوصلہ نہیں ہے۔ اس لئے کہ گاندھی جی نے ہم کو کوئی ایسا نیا مذہب ہی نہیں دیا جس کا پرچار کرکے ہم سیاسی یا سامراجی حوصلے باندھ سکیں۔ اصل میں گاندھی جی کی بڑائی بھی اسی میں تھی۔ دنیا میں ایک کے بعد دوسرے پیغمبر اور ایک کے بعد دوسرے اوتار آئے اور قریب قریب سبھوں نے اپنے سے پہلے آنے والے کی باتوں کو کاٹا لیکن گاندھی جی اکیلے ایسے رہنما تھے جنھوں نے ہر دھرم، ہر اوتار اور ہر پیغمبر کے سندیش کو سچ مانا اور کسی کی بات کو نہیں کاٹا۔ گاندھی جی نے یہ صاف صاف دیکھ لیا تھا کہ دنیا کو کسی نئے دھرم کی ضرورت نہیں تھی۔ بلکہ اس بات کی ضرورت تھی کہ انسانیت کو زندہ رکھنے کے لئے پرانے دھرموں کی اچھائیوں کو زور

देकर जिन्दा रक्खा जाय. जहाँ महात्मा बुद्ध, हजरत ईसा, हजरत मुहम्मद और दूसरों ने अलग अलग तस्वीरें बनाई थीं वहाँ गान्धी जी ने उन तस्वीरों की रेखाओं और लकीरों को ही यहाँ वहाँ से और साफ़ करने की कोशिश की. जहाँ जरूरत समझी वहाँ कहीं कहीं रंग भी गहरा कर दिया पर इससे ज्यादा और कुछ नहीं.

आखिर में एक दिक्कत पैदा हो सकती है. सवाल हो सकता है कि इस देश के ग़रीब लोग कहाँ से इतना धन इकट्ठा कर सकते हैं जिसकी मदद से इतना शानदार और बड़े पैमाने पर आन्दोलन शुरू किया जा सके. पर मेरा निजी विचार यह है कि अगर हम हिम्मत करके सही रास्ते पर मजबूत कदम उठायें तो पैसों की कमी हमें आगे बढ़ने से नहीं रोकेगी. हमें आशा है कि हम सही ढंग से काम शुरू करेंगे तो समझदार और अच्छे विचारों के लोग दुनिया के क़रीब क़रीब हर हिस्से से हमारी मदद करने के लिये बहुत जल्द तैयार हो जायेंगे. इसमें शक नहीं कि आज दुनिया की नजरों में हिन्दुस्तान बिलकुल पिछड़ा और गिरा हुआ है. दुनिया की बड़ी क़ौमों में इस वक्त इसकी गिनती भी नहीं है. पर मेरी समझ में यह एक ऐसा मौक़ा आ गया है जबकि हम अपनी खोई हुई इज्जत और शान फिर से दुनिया की नजरों में क़ायम कर सकते हैं. बल्कि मुझे पूरा विश्वास है कि अगर हम अपने क़दम सही रास्ते पर उठाये तो दुनिया हमें अकेला नहीं छोड़ेगी.

जब हम इस तरह कमर कस कर आगे बढ़ेंगे तो इसमें खूबसूरती का एक पहलू यह भी होगा कि इस तरह का आन्दोलन

دے کر زندہ رکھا جائے۔ جہاں مہاتما بدھ، حضرت عیسیٰ، حضرت محمد اور دوسروں نے الگ الگ تصویریں بنائی تھیں وہاں گاندھی جی نے ان تصویروں کی ریکھاؤں اور لکیروں کو ہی یہاں وہاں سے اور صاف کرنے کی کوشش کی۔ جہاں ضرورت سمجھی وہاں کہیں کہیں رنگ بھی گہرا کر دیا پر اس سے زیادہ اور کچھ نہیں۔

آخر میں ایک دقت پیدا ہو سکتی ہے۔ سوال ہو سکتا ہے کہ اس دیش کے غریب لوگ کہاں سے اتنا دھن اکٹھا کر سکتے ہیں جس کی مدد سے اتنا شاندار اور بڑے پیمانے پر اندولن شروع کیا جا سکے۔ پر میرا نجی وچار یہ ہے کہ اگر ہم ہمت کر کے صحیح راستے پر مضبوط قدم اٹھائیں تو پیسوں کی کمی ہمیں آگے بڑھنے سے نہیں روکے گی۔ ہمیں آشا ہے کہ ہم صحیح ڈھنگ سے کام شروع کریں گے تو سمجھدار اور اچھے وچاروں کے لوگ دنیا کے قریب قریب ہر حصے سے ہماری مدد کرنے کے لئے بہت جلد تیار ہو جائیں گے۔ اس میں شک نہیں کہ آج دنیا کی نظروں میں ہندوستان بالکل پچھڑا اور گرا ہوا ہے۔ دنیا کی بڑی قوموں میں اس وقت اس کی گنتی بھی نہیں ہے۔ پر میری سمجھ میں یہ ایک ایسا موقع آ گیا ہے جب کہ ہم اپنی کھوئی ہوئی عزت اور شان پھر سے دنیا کی نظروں میں قائم کر سکتے ہیں۔ بلکہ مجھے پورا وشواس ہے کہ اگر ہم اپنے قدم صحیح راستے پر اٹھائیں تو دنیا ہمیں اکیلا نہیں چھوڑے گی۔

جب ہم اس طرح کمر کس کر آگے بڑھیں گے تو اس میں خوبصورتی کا ایک پہلو یہ بھی ہوگا کہ اس طرح کا اندولن

दुनिया में हमारे लिये उससे कहीं ज़्यादा नेकनामी पैदा कर सकेगा जितनी हमारे राजकाजी सफ़ीरों या दूतों की कोशिश से होगी. पर यह सब तभी मुमकिन होगा जब कि हम काफ़ी उदार नज़रों से काम लें और छोटे छोटे घिरौंदों और भूल भुलैयों में अपने को न खोदें. जिस आदमी का व्यक्तित्व (शख़्सियत) अन्तर्राष्ट्रीय था और जिसके सिद्धान्त और आदर्श सारी दुनिया के लिये थे उसकी यादगार हिन्दुस्तान के क़ौमी दायरों तक महदूद नहीं रक्खी जा सकती. इसलिये गान्धी जी के लिये हमें जो भी यादगार क़ायम करनी है उसे कोई रूप देते समय हमें यह याद रखना पड़ेगा कि गान्धी जी सिर्फ़ हिन्दुस्तान ही की नहीं बल्कि सारी दुनिया की सम्पत्ति थे. यह जरूर है कि हमें इस बात पर नाज़ है कि हिन्दुस्तान ने उन्हें अपनी धरती पर जन्म दिया. इसलिये उनको एक अन्तर्राष्ट्रीय यादगार क़ायम करते समय हम अनजाने तौर पर अपनी क़ौम में एक खुद्दारी का भाव भी पैदा कर सकेंगे. आज तक अपनी बड़ाई के सबूत में हम अपनी पुरानी क़ब्रें खोद कर दुनिया के सामने अपने पिछले युग को पेश करते रहे. शायद इस क़ौम की आत्मा पर यह भाव छाया हुआ था कि चूँकि इसका मौजूदा युग दुनिया को कुछ दे नहीं सकता था, इसलिये यहाँ के रहने वाले अपनी पुरानी बड़ाई की कहानियाँ दुनिया को सुनाते रहे. लेकिन महात्मा गाँधी के कारन आज हमारे सामने एक ऐसा मौक़ा आ गया है जब कि हम अपने सिर ऊँचे करके कह सकते हैं कि हमारे पास भी दुनिया को देने के लिये कुछ है.

دنیا میں ہمارے لئے اس سے کہیں زیادہ نیک نامی پیدا کر سکے گا جتنی ہمارے راج کاجی سفیروں یا دوتوں کی کوشش سے ہوگی. پر یہ سب تبھی ممکن ہوگا جب کہ ہم کافی اُدار نظروں سے کام لیں اور چھوٹے چھوٹے گھروندوں اور بھول بھلیّوں میں اپنے کو نہ کھودیں. جس آدمی کا ویکتتو (شخصیت) انترراشٹریہ تھا اور جس کے سدھانت اور آدرش ساری دنیا کے لئے تھے اس کی یادگار ہندستان کے قومی دایروں تک محدود نہیں رکھی جا سکتی. اس لئے گاندھی جی کے لئے ہمیں جو بھی یادگار قایم کرنی ہے اسے کوئی روپ دیتے سمے ہمیں یہ یاد رکھنا پڑے گا کہ گاندھی جی صرف ہندستان ہی کی نہیں بلکہ ساری دنیا کی سمپتی تھے. یہ ضرور ہے کہ ہمیں اس بات پر ناز ہے کہ ہندوستان نے انھیں اپنی دھرتی پر جنم دیا. اس لئے ان کی ایک انترراشٹریہ یادگار قایم کرتے سمے ہم ان جانے طور پر اپنی قوم میں ایک خودداری کا بھاؤ بھی پیدا کر سکیں گے. آج تک اپنی بڑائی کے ثبوت میں ہم اپنی پرانی قبریں کھود کر دنیا کے سامنے اپنے پچھلے یگ کو پیش کرتے رہے. شاید اس قوم کی آتما پر یہ بھاؤ چھایا ہوا تھا کہ چوں کہ اس کا موجودہ یگ دنیا کو کچھ دے نہیں سکتا تھا، اس لئے یہاں کے رہنے والے اپنی پرانی بڑائی کی کہانیاں دنیا کو سناتے رہے. لیکن مہاتما گاندھی کے کارن آج ہمارے سامنے ایک ایسا موقع آگیا ہے جب کہ ہم اپنے سر اونچے کر کے کہہ سکتے ہیں کہ ہمارے پاس بھی دنیا کو دینے کے لئے کچھ ہے.

हिन्दुस्तानी कल्चर और संगीत

(११)

(भाई गणेश प्रसाद द्विवेदी)

पिछले लेख में हमने बासित खाँ के बड़े बेटे अलीमुहम्मद खाँ उर्फ़ बड़कूमियाँ का हाल लिखा था, अब इनके मँझले भाई मुहम्मद अली खाँ का हाल लिखना है. ये सेनी घराने के आखिरी रबाबिये थे. इन्हीं के साथ रबाब का अंत हुआ. यह बासित खाँ के दूसरे बेटे थे. इनकी पैदायश सन् १८३४ में हुई और ९४ बरस की लम्बी उमर पाकर सन् १९२८ में यह परलोक सिधारे. इनका गाना बजाना खूब सुने समझे हुये बहुत से संगीतरसिक और इनके कई गुनी शागिर्द अभी भी मौजूद हैं, जो इनका पूरा हाल जानते हैं. इनके खास शागिर्द थे प्रिंस सआदत अली खाँ उर्फ़ नवाब छम्मन साहब, जो नवाब हैदर अली खाँ रामपुर के बेटे और बीलसी के रईस थे. बाद को नवाब हामिद अली खाँ साहब ने इन्हें रामपुर के होम सेक्रेटरी (गृहसचिव या वजीरे दरबार) का ओहदा देकर इन्हें रामपुर में ही बुला लिया था. इनके दो और मशहूर शागिर्द थे पं० विष्णु नारायण भातखंडे और लखनऊ के राजा नवाब अली साहब. इन्हीं लोगों की कोशिश से लखनऊ में मैरिस कालेज आफ़ हिन्दुस्तानी म्युज़िक नाम का संगीत का वह बड़ा कालेज खोला गया जो कि गाने बजाने की तालीम के लिये हिन्दुस्तान का सबसे

ہندستانی کلچر اور سنگیت

(۱۱)

(بھائی گنیش پرشاد دودیدی)

پچھلے لیکھ میں ہم نے باسط خاں کے بڑے بیٹے علی محمد خاں عرف بڑکو میاں کا حال لکھا تھا، اب اُن کے منجھلے بھائی محمد علی خاں کا حال لکھنا ہو. یہ سینی گھرانے کے آخری ربابیے تھے. انھیں کے ساتھ رباب کا انت ہوا. یہ باسط خاں کے دوسرے بیٹے تھے. ان کی پیدائش ۱۸۳۴ء میں ہوئی اور ۹۴ برس کی لمبی عمر پاکر ۱۹۲۸ء میں یہ پرلوک سدھارے. ان کا گانا بجانا خوب سُنے سمجھے ہوئے بہت سے سنگیت رسک اور ان کے کئی گنی شاگرد ابھی بھی موجود ہیں، جو ان کا پورا حال جانتے ہیں. ان کے خاص شاگرد تھے پرنس سعادت علی خاں عرف نواب چھمن صاحب، جو نواب حیدر علی خاں رام پور کے بیٹے اور بلسی کے رئیس تھے. بعد کو نواب حامد علی خاں صاحب نے انھیں رام پور کے ہوم سکریٹری (گرہ سچو یا وزیر دربار) کا عہدہ دے کر انھیں رام پور میں ہی بلا لیا تھا. ان کے دو اور مشہور شاگرد تھے پنڈت وشنو نراین بھات کھنڈے اور لکھنؤ کے راجا نواب علی صاحب. انھیں لوگوں کی کوشش سے لکھنؤ میں میرس کالج آف ہندستانی میوزک نام کا سنگیت کا وہ بڑا کالج کھولا گیا جو کہ گانے بجانے کی تعلیم کے لئے ہندستان کا سب سے

बड़ा कालेज माना जाता है . इसमें तालीम देने के लिये शुरू में तो खोज खोजकर घरानेदार खानदानी गुनी ही रक्खे गये पर हमें दुख है कि आगे चलकर वह बात न रह गई.

मुहम्मद अली खाँ साहब को पूरी तालीम अपने पिता बासित खाँ साहब से ही मिल चुकी थी . ध्रुपद और रबाब में यह माहिर थे. लड़कपन और नौजवानी में इन्हें कसरत और कुश्ती का भी खूब शौक़ दिलाया गया था. नियम से रोज़ाना वरज़िश तो यह अंत तक करते गये. लाठी और बाँदा पटा भी यह निहायत अच्छा खेलते थे. इन सबका फल यह हुआ कि इनके बदन में बेहद ताक़त थी और तन्दुरुस्ती आला दर्जे की रही. लगातार पाँच पाँच घंटे यह रियाज़ किया करते और गाने बजाने में कभी थकावट नहीं महसूस करते थे. ज़रूरत पड़ने पर १५—२० मील पैदल चले जाने और चले आने में इनको कोई दिक़्क़त नहीं होती थी.

पर इनका मिज़ाज अपने बड़े भाई बड़कू मियाँ से बिलकुल अलग था . वह रईस और शाही तबियत के थे पर यह निहायत सादा रहन सहन पसंद करते थे . बड़कू मियाँ के साथ हर वक़्त दस पाँच मुसाहिब और संगीतरसिक बने ही रहते थे. अकेले में उनका जी घबराता था, पर यह सोहबत से ही घबराते थे . एकांत-साधना में ही इनको आनन्द आता था . पिछले दिनों तो यह पूरे फ़क़ीर ही हो गये थे . धन दौलत के पीछे यह कभी नहीं पड़े और इसके लोभ से कभी किसी दरबार में नहीं गये. गिद्धौर दरबार में ही यह ज़्यादा तर रहे. इनका पहला जलसा जब गिद्धौर में हुआ तब राजा साहब इन्हें पाँचहज़ार रुपये भेंट करने लगे, इन्होंने यहकह कर इन्कार

बڑا کالج مانا جاتا ہے. اس میں تعلیم دینے کے لئے شروع میں تو کھوج کھوج کر گھرانے دار خاندانی گنی ہی رکھے گئے پر ہمیں دکھ ہو کہ آگے چل کر وہ بات نہ رہ گئی.

محمد علی خاں صاحب کو پوری تعلیم اپنے پتا باسط خاں صاحب سے ہی مل چکی تھی. دھرپد اور رباب میں یہ ماہر تھے. لڑکپن اور نوجوانی میں انھیں کسرت اور کشتی کا بھی خوب شوق دلایا گیا تھا. نیم سے روزانہ ورزش تو یہ انت تک کرتے گئے. لاٹھی اور باندا پٹا بھی یہ نہایت اچھا کھیلتے تھے. ان سب کا پھل یہ ہوا کہ ان کے بدن میں بے حد طاقت تھی اور تندرستی اعلیٰ درجے کی رہی. لگاتار پانچ پانچ گھنٹے یہ ریاض کیا کرتے اور گانے بجانے میں کبھی تھکاوٹ نہیں محسوس کرتے تھے. ضرورت پڑنے پر ۱۵—۲۰ میل پیدل چلے جانے اور چلے آنے میں ان کو کوئی دقت نہیں ہوتی تھی.

پر ان کا مزاج اپنے بڑے بھائی بڑکو میاں سے بالکل الگ تھا. وہ رئیس اور شاہی طبیعت کے تھے پر یہ نہایت سادہ رہن سہن پسند کرتے تھے. بڑکو میاں کے ساتھ ہر وقت دس پانچ مصاحب اور سنگیت رسک بنے ہی رہتے تھے. اکیلے میں ان کا جی گھبراتا تھا، پر یہ صحبت سے ہی گھبراتے تھے. اکانت سادھنا میں ہی ان کو آنند آتا تھا. پچھلے دنوں تو یہ پورے فقیر ہی ہو گئے تھے. دھن دولت کے پیچھے یہ کبھی نہیں پڑے اور اس کے لوبھ سے کبھی کسی دربار میں نہیں گئے. گدھور دربار میں ہی یہ زیادہ تر رہے. ان کا پہلا جلسہ جب گدھور میں ہوا تب راجا صاحب انھیں پانچ ہزار روپے بھینٹ کرنے لگے، انھوں نے یہ کہہ کر انکار

कर दिया कि, 'क्या रास्ते में जान से मरवाइयेगा? घर जाते वक़्त सब लूट ले गे.' राजा साहब ने परीशान होकर पूछा, "तो आखिर क्या खिदमत करूं आपकी?" महल की बारादरी के बीच एक बहुत बड़ा हौज़ था जिसमें हंस के बहुत से छोटे छोटे बच्चे तैर रहे थे. इन्होंने कुछ देर उनकी ओर देखा और फिर कहा, 'बस इन्हें ही देदो, बड़े अच्छे लगते हैं.' उन्होंने हंसों की एक टोली इनके यहाँ भिजवा दी, पर इनके निरलोभ होने का उनके ऊपर बहुत बड़ा असर पड़ा और फिर इन्होंने बड़ी कोशिश से अपने दरबार में इन्हें रख ही लिया. अपनी ज़िन्दगी का सबसे बड़ा भाग इन्होंने गिद्धौर में ही बिताया. यों तो यह गया, नेपाल, बनारस और रामपुर और कुछ दिन लखनऊ में भी रहे, पर गिद्धौर में ही इनका मन रम गया. लोगों की बड़ी आरज़ू मिन्नत के बाद गिद्धौर छोड़ कर यह कहीं जाते और साल छे महीने घूमघाम कर फिर वहीं पहुंच जाते थे.

शुरू में यह अपने पिता और अपने भाइयों के साथ गया में ही रहे. तालीम इनकी गया में ही हुई. फिर जब पिता के स्वर्गवास के बाद बड़कू मियाँ की फ़ैयाज़ी के कारन गया और टिकरी वालों से उनका मनमोटाव हो गया तो ताल्लुक़ा छोटे भाई रियासत अली के हवाले कर यह दोनों भाई नेपाल चले गये. बड़कू मियाँ बुज़ुर्गों की कमाई हुई बेशुमार दौलत ख़ैरात में और अपने ऐशो आराम में दोनों हाथ से लुटा रहे थे. पर जितना वह लुटाते थे उतनी ही आमदनी भी उनको हो जाती थी. मुहम्मद अली ख़ाँ इन सब मामलों से बिलकुल बरी थे. वह अपना अलग साधना और रियाज़ में ही रहते थे. जब तक बड़कू मियाँ की

کر دیا کہ، 'کیا راستے میں جان سے مروائیے گا؟ گھر جاتے وقت سب لوٹ لیں گے.' راجا صاحب نے پریشان ہو کر پوچھا، "تو آخر کیا خدمت کروں آپ کی؟" محل کی بارہ دری کے بیچ ایک بہت بڑا حوض تھا جس میں ہنس کے بہت سے چھوٹے چھوٹے بچے تیر رہے تھے. انھوں نے کچھ دیر ان کی اور دیکھا اور پھر کہا، 'بس انھیں ہی دے دو، بڑے اچھے لگتے ہیں.' انھوں نے ہنسوں کی ایک ٹولی ان کے یہاں بھجوا دی، پر ان کے نرلوبھ ہونے کا ان کے اوپر بہت بڑا اثر پڑا اور پھر انھوں نے بڑی کوشش سے اپنے دربار میں انھیں رکھ ہی لیا. اپنی زندگی کا سب سے بڑا بھاگ انھوں نے گدھور میں ہی بتایا. یوں تو یہ گیا، نیپال، بنارس اور رام پور اور کچھ دن لکھنؤ میں بھی رہے، پر گدھور میں ہی ان کا من رم گیا. لوگوں کی بڑی آرزو منت کے بعد گدھور چھوڑ کر یہ کہیں جاتے اور سال چھ مہینے گھوم گھام کر پھر وہیں پہنچ جاتے تھے.

شروع میں یہ اپنے پتا اور اپنے بھائیوں کے ساتھ گیا میں ہی رہے. تعلیم ان کی گیا میں ہی ہوئی. پھر جب پتا کے سورگ واس کے بعد بڑکو میاں کی فیاضی کے کارن گیا اور ٹکری والوں سے ان کا من موٹاؤ ہو گیا تو تعلقہ چھوٹے بھائی ریاست علی کے حوالے کر یہ دونوں بھائی نیپال چلے گئے. بڑکو میاں بزرگوں کی کمائی ہوئی بے شمار دولت خیرات میں اور اپنے عیش و آرام میں دونوں ہاتھ سے لٹا رہے تھے، پر جتنا وہ لٹاتے تھے اتنی ہی آمدنی بھی ان کو ہو جاتی تھی. محمد علی خاں ان سب معاملوں سے بالکل بری تھے. وہ اپنا الگ سادھنا اور ریاض میں ہی رہتے تھے. جب تک بڑکو میاں کی

सनतुरुस्ती ठीक रही तबतक न तो यह आम जलसों में ही प्रगट होते थे न किसी को तालीम ही देते थे. कोई इनके पास जाता तो कह देते 'भाई मुझे माफ़ करो, मैं तो खुद अभी तालीम में हूँ, भाई साहब के पास जाओ.'

नेपाल में अपनी साधना और रियाज़ में खलल पड़ते देखकर यह बड़े भाई को वहाँ पहुँचा कर एक बार फिर गया लौट आये थे, और लग-भग सात आठ साल वहाँ रहे. इस बीच बहुत पीछा छुड़ाने पर भी गया के दो शौक़ीन पंडों को इन्हें शागिर्द बनाना ही पड़ा, जिनमें से एक थे मशहूर इसराजिये कन्हैया लाल ढेंढ़ी जी और दूसरे थे बिहारी लाल. गया में ढेंढ़ी जी और हनुमान दास बहुत बड़े गुनी हो गये हैं. इन्हीं हनुमान दास जी के पुत्र सोनी जी थे जो बजाते तो हारमोनियम थे पर इसमें तंत्र की सारी खूबियाँ वह सुनाते थे. यह सभी लोग मुहम्मद अली खाँ की तालीम से या सोहबत से इस दर्जे को पहुंचे थे. इसी घराने के चंद्रिका दूबे नाम के एक इसराजिये अभी भी हैं और हिन्दुस्तान में अपने फ़न के सब से बड़े उस्ताद माने जाते हैं. गया में इस जमाने में संगीत का बहुत शौक़ बढ़ा. पर अफ़सोस है कि ज़्यादातर लोगों ने हारमोनियम बजाने और ठुमरी गाने का ही शौक़ किया; या बहुत हुआ तो इसरार, ध्रुपद गाने, या बीन. रबाब बजाने का शायद ही किसी ने शौक़ किया हो. या यह भी हो सकता है कि सेनियों ने इन चीजों की तालीम इन्हें देना ही ठीक न समझा हो.

अंग्रेज़ी हकूमत की एक देन हारमोनियम नाम का बाजा भी है. यह बाजा हिंदुस्तान का नहीं है; न हिंदुस्तानी संगीत की खूबियाँ और

تندرستی ٹھیک رہی تب تک نہ تو یہ عام جلسوں میں ہی پرگٹ ہوتے تھے نہ کسی کو تعلیم ہی دیتے تھے. کوئی ان کے پاس جاتا تو کہہ دیتے "بھئی مجھے معاف کرو، میں تو خود ابھی تعلیم میں ہوں، بھائی صاحب کے پاس جاؤ!"

نیپال میں اپنی سادھنا اور ریاض میں خلل پڑتے دیکھ کر یہ بڑے بھائی کو وہاں پہنچا کر ایک بار پھر گیا لوٹ آئے تھے، اور لگ بھگ سات آٹھ سال وہاں رہے. اس بیچ بہت پیچھا چھڑانے پر بھی گیا کے دو شوقین پنڈوں کو انھیں شاگرد بنانا ہی پڑا، جن میں سے ایک تھے مشہور اسراجئے کنھیا لال ڈھینڈھی جی اور دوسرے تھے بہاری لال.
گیا میں ڈھینڈھی جی اور ہنومان داس بہت بڑے گنی ہو گئے ہیں انھیں ہنومان داس جی کے پتر سونی جی تھے جو بجاتے تو ہارمونیم تھے پر اس میں تنتر کی ساری خوبیاں وہ سناتے تھے. یہ سبھی لوگ محمد علی خاں کی تعلیم سے یا صحبت سے اس درجے کو پہنچے تھے. اسی گھرانے کے چندرکا دوبے نام کے ایک اسراجئے ابھی بھی ہیں اور ہندستان میں اپنے فن کے سب سے بڑے استاد مانے جاتے ہیں. گیا میں اس زمانے میں سنگیت کا بہت شوق بڑھا. پر افسوس ہے کہ زیادہ تر لوگوں نے ہارمونیم بجانے اور ٹھمری گانے کا ہی شوق کیا؛ یا بہت ہوا تو اسرار، دھرپد گانے، یا بین. رباب بجانے کا شاید ہی کسی نے شوق کیا ہو. یا یہ بھی ہو سکتا ہے کہ سینیوں نے ان چیزوں کی تعلیم انھیں دینا ہی ٹھیک نہ سمجھا ہو.

انگریزی حکومت کی ایک دین ہارمونیم نام کا ایک باجا بھی ہے. یہ باجا ہندستان کا نہیں ہے؛ نہ ہندستانی سنگیت کی خوبیاں اور

बारीकियाँ इस पर अदा ही हो सकती हैं. इसमें सब बँधे और क़ायम सुरहैं जिन पर आलाप तो कतई नहीं बज सकती. गत-तोड़े, तानें, गीत निकल सकती हैं, पर राग की पूरी शकल कभी नहीं आती. गाने की संगत या गाने याद करने में इससे बहुत मदद मिलती है. पर सारंगी के मुक़ाबले में इस मानी में भी इसकी कोई हस्ती नहीं. खासकर हलके गाने, ठुमरी, दादरा, ग़ज़ल वग़ैरह की संगत ही इससे किसी हद तक होती है. आलाप, ध्रुपद और ख़याल गाने वाले इससे काम लेना पाप समझते हैं. विलायत से आई हुई बहुत सी चीज़ें हमारी संस्कृति और कला को बदशकल बनाने में कामयाब हुईं, जिनमें हारमोनियम का नम्बर संगीत कला के सिलसिले में सब से ऊपर है. हिंदुस्तान ने करोड़ों रुपये विदेशी हारमोनियम की रीड व और और सामान ख़रीदने के लिये विलायत को दिये, और इसके बदले में अपनी असली संगीत-कला को भूल चले थे, पर मुहम्मदअली ख़ाँ साहब की प्रेरणा (तहरीक) से इनके शागिर्द भातखंडे जी ने हारमोनियम के ख़िलाफ़ ज़बर्दस्त प्रोपेगैंडा किया. मैरिस कालेज में इसके लिये जगह नहीं थी. कोई सीखने वाला या इम्तहान देने वाला इससे मदद नहीं ले सकता था. जलसों में अगर कोई नया-सिखिया हारमोनियम लेकर बैठता तो लोग या तो उठ कर चल देते या तौबा करते. नतीजा यह हुआ कि इसका चलन अब क़रीब क़रीब उठ सा चला है. रेडियो में शुरू में कुछ दिन हारमोनियम का इस्तेमाल हुआ था, पर अब बिलकुल बंद हो गया है. बाक़ायदा हारमोनियम की होली जलाई गई थी रेडियो स्टेशनों में.

باریکیاں اس پر ادا ہی ہو سکتی ہیں۔ اس میں سب بندھے اور قائم سُر ہیں جن پر آلاپ تو قطعی نہیں بج سکتی. گت توڑے، تانیں گیت نکل سکتی ہیں، پر راگ کی پوری شکل کبھی نہیں آتی. گانے کی سنگت یا گانے یاد کرنے میں اس سے بہت مدد ملتی ہے. پر سارنگی کے مقابلے میں اس معنی میں بھی اس کی کوئی ہستی نہیں. خاص کر ہلکے گانے، ٹھمری، دادرا، غزل وغیرہ کی سنگت ہی اس سے کسی حد تک ہوتی ہے. آلاپ، دھرپد اور خیال گانے والے اس سے کام لینا پاپ سمجھتے ہیں. ولایت سے آئی ہوئی بہت سی چیزیں ہماری سنسکرتی اور کلا کو بدشکل بنانے میں کامیاب ہوئیں، جن میں ہارمونیم کا نمبر سنگیت کلا کے سلسلے میں سب سے اوپر ہے. ہندستان نے کروڑوں روپے ودیشی ہارمونیم کی ریڈ اور اور سامان خریدنے کے لئے ولایت کو دئے، اور اس کے عوض میں اپنی اصلی سنگیت کلا کو بھول چلے تھے، پر محمد علی خاں صاحب کی پریرنا (تحریک) سے ان کے شاگرد بھات کھنڈے جی نے ہارمونیم کے خلاف زبردست پروپیگنڈا کیا. میرس کالج میں اس کے لئے جگہ نہیں تھی. کوئی سیکھنے والا یا امتحان دینے والا اس سے مدد نہیں لے سکتا تھا. جلسوں میں اگر کوئی نیا سکھیا ہارمونیم لے کر بیٹھتا تو لوگ یا تو اٹھ کر چل دیتے یا توبہ کرتے. نتیجہ یہ ہوا کہ اس کا چلن اب قریب قریب اٹھ سا چلا ہے. ریڈیو میں شروع میں کچھ دن ہارمونیم کا استعمال ہوا تھا، پر اب بالکل بند ہو گیا ہے. باقاعدہ ہارمونیم کی ہولی جلائی گئی تھی ریڈیو اسٹیشن میں.

सात आठ बरस गया में रहने के बाद मुहम्मद अली खां साहब एक बार हरिहर क्षेत्र के मेले में घूमने गये थे. यह हिन्दुस्तान का मशहूर मेला है और इस में खास तौर से घोड़ों का बाज़ार लगता है और उनकी नुमायश होती है. बड़ी बड़ी रियासतों से घोड़ों के शौक़ीन इसमें आते हैं. गिद्धौर के दीवान साहब घोड़े ख़रीदने की ग़रज़ से आये हुये थे. इसी मौक़े पर उन्हें ख़ाँ साहब का गाना बजाना सुनने का इत्तफ़ाक़ हुआ था. सुनकर वह इतने ख़ुश हुये कि उन्हें किसी तरह गिद्धौर ले गये बिना न रह सके. उस वक़् खां साहब की उमर ४८ बरस की थी और तब से लेकर लगभग ७०—७५ बरस की उमर तक वह गिद्धौर में रहे. बीच बीच में रामपुर वग़ैरह चले जाते पर इस रियासत से उनका संबंध अंत तक न टूटा.

इनके बड़े भाई जब बहुत बूढ़े हो गये तो नेपाल छोड़ कर बनारस चले आये थे. नेपाल की सरदी यह बर्दाश्त न कर सके. फिर अंत तक यह काशीराज के दरबार में ही रहे. इनके इंतक़ाल के बाद मुहम्मद अली ख़ाँ को काशीराज ने बड़े आग्रह से बुलाया. उस समय महाराज ईश्वरी नारायण सिंह काशी के राजा थे तथा संगीत और साहित्य के बहुत बड़े प्रेमी थे. इन्होंने ख़ाँ साहब की इतनी क़द्र की कि इन्हें कई बरस तक वहां रह जाना पड़ा. काशीनरेश ने लिखा पढ़ी कर के गिद्धौर के राजा साहब को इसके लिये राज़ी कर लिया था.

उन दिनों काशी दरबार में भी कुछ अच्छे गुनी मौजूद थे. जिनमें उस्ताद मजरूह ख़ाँ सरोदिये और तसद्दुक़ हुसेन ख़ाँ गवैये

سات آٹھ برس گیا میں رہنے کے بعد محمد علی خاں صاحب ایک بار ہری ہر کشیتر کے میلے میں گھومنے گئے تھے۔ یہ ہندستان کا مشہور میلہ ہے اور اس میں خاص طور سے گھوڑوں کا بازار لگتا ہے اور ان کی نمایش ہوتی ہے۔ بڑی بڑی ریاستوں سے گھوڑوں کے شوقین اس میں آتے ہیں۔ گدھور کے دیوان صاحب گھوڑے خریدنے کی غرض سے آئے ہوئے تھے۔ اسی موقع پر انھیں خاں صاحب کا گانا بجانا سننے کا اتفاق ہوا تھا۔ سن کر وہ اتنے خوش ہوئے کہ انھیں کسی طرح گدھور لے گئے بنا نہ رہ سکے۔ اس وقت خاں صاحب کی عمر ۴۸ برس کی تھی اور تب سے لے کر لگ بھگ ۷۰—۷۵ برس کی عمر تک وہ گدھور ہی میں رہے۔ بیچ بیچ میں رام پور وغیرہ چلے جاتے پر اس ریاست سے ان کا سمبندھ انت تک نہ ٹوٹا۔

ان کے بڑے بھائی جب بہت بوڑھے ہو گئے تو نیپال چھوڑ کر بنارس چلے آئے تھے۔ نیپال کی سردی یہ برداشت نہ کر سکے۔ پھر انت تک یہ کاشی راج کے دربار میں ہی رہے۔ ان کے انتقال کے بعد محمد علی خاں کو کاشی راج نے بڑے آگرہ سے بلایا۔ اس سمے مہاراج ایشوری نارائن سنگھ کاشی کے راجا تھے تتھا سنگیت اور ساہتیہ کے بہت بڑے پریمی تھے۔ انھوں نے خاں صاحب کی اتنی قدر کی کہ انھیں کئی برس تک وہاں رہ جانا پڑا۔ کاشی نریش نے لکھا پڑھی کر کے گدھور کے راجا صاحب کو اس کے لئے راضی کر لیا تھا۔

ان دنوں کاشی دربار میں بھی کچھ اچھے گنی موجود تھے۔ جن میں استاد مجروح خاں سرودیے اور تصدق حسین خاں گویے

खास थे. पर इन साहब को सब बड़ा मानते थे और गुरू के समान आदर करते थे. इन्होंने कुछ लोगों को वहां तालीम भी दी. एक बार का जिक्र है कि जेठ की दोपहरी में खां साहब ने रबाब पर 'वृंदावनी सारंग' नाम का राग इतना सुंदर बजाया कि तब से राजा साहब को और किसी का गाना बजाना अच्छा ही नहीं लगने लगा. इनके यहाँ क़रीब २०० गायिकाएँ नौकर थीं, पर इनके आने के बाद २—४ को छोड़ कर सब को जवाब हो गया. बड़ी मैना नामकी एक गायिका बहुत मशहूर थी और खां साहब भी इसका गाना सुनकर खुश होवे थे. पर खां साहब को किसी की रोटी मारना पसन्द नहीं था . राजा साहब से खास तौर पर कह कर इन्होंने उन सभों की रोज़ी का इन्तज़ाम करा दिया था . रामनगर (काशीराज की राजधानी जो गंगा के पूर्वी किनारे पर शहर बनारस के ठीक सामने है) में खाँ साहब का जी अच्छा लगा. बनारस में कबीर चौरा के रहने वाले कुछ कथक और ब्राह्मण गुनी बड़े क़ाबिल हो गये हैं जिन में प्रसिद्ध और मनोहर मिश्र नामके दो भाई हिन्दुस्तान भर में मशहूर थे. यह आलाप, ध्रुपद, और ख़याल तीनों में माहिर थे और सेनिये इनके गुन की क़द्र करते थे. इनके बेटे रामसेवक मिश्र और पोते शिव सेवक व पशुपति सेवक हिन्दुओं में चोटी के गुनी थे. इन लोगों का और खाँ साहब का नेपाल और बनारस दोनों ही दरबारों में खूब खूब सामना हुआ करता था. पशुपति जी बीनकार थे और इनकी बीन में कुछ ऐसी बातें थीं जो सबसे निराली थीं. यह लोग अपना घराना स्वामी हरिदास से शुरू करते हैं जो मियाँ तानसेन के गुरू थे और इसलिये अपने

خاص تھے. پر ان صاحب کو سب بڑا مانتے تھے اور گرو کے سمان آدر کرتے تھے. انھوں نے کچھ لوگوں کو وہاں تعلیم بھی دی. ایک بار کا ذکر ہے کہ جیٹھ کی دوپہری میں خاں صاحب نے رباب پر 'ورنداونی سارنگ' نام کا راگ اتنا سندر بجایا کہ تب سے راجا صاحب کو اور کسی کا گانا بجانا اچھا ہی نہیں لگنے لگا. ان کے یہاں قریب ۲۰۰ گایکائیں نوکر تھیں، پر ان کے جانے کے بعد ۲-۴ کو چھوڑ کر سب کو جواب ہوگیا. بڑی مینا نام کی ایک گایکا بہت مشہور تھی اور خاں صاحب بھی اس کا گانا سن کر خوش ہوتے تھے. پر خاں صاحب کو کسی کی روٹی مارنا پسند نہیں تھا. راجا صاحب سے خاص طور پر کہہ کر انھوں نے ان سبھوں کی روزی کا انتظام کرا دیا تھا. رام نگر (کاشی راج کی راجدھانی جو گنگا کے پوربی کنارے پر شہر بنارس کے ٹھیک سامنے ہے) میں خاں صاحب کا جی اچھا لگا. بنارس میں کبیر چورا کے رہنے والے کچھ کتھک اور براہمن گنی بڑے قابل ہوگئے ہیں جن میں پرسدھ اور منوہر مشر نام کے دو بھائی ہندستان بھر میں مشہور تھے. یہ آلاپ، دھرپد اور خیال تینوں میں ماہر تھے اور سینیے ان کے گن کی قدر کرتے تھے. ان کے بیٹے رام سیوک مشر اور پوتے شیو سیوک و پشوپتی سیوک ہندوؤں میں چوٹی کے گنی تھے. ان لوگوں کا اور خاں صاحب کا نیپال اور بنارس دونوں ہی درباروں میں خوب خوب سامنا ہوا کرتا تھا. پشوپتی جی بین کار تھے اور ان کی بین میں کچھ ایسی باتیں تھیں جو سب سے نرالی تھیں. یہ لوگ اپنا گھرانا سوامی ہری داس سے شروع کرتے ہیں جو میاں تان سین کے گرو تھے اور اس لئے اپنے

घराने को सेनियों से बड़ा और पुराना मानते हैं. जो हो, पर इतना हम जानते हैं कि सेनिये इस घराने की इज्जत जरूर करते थे.

इनके अलावा बनारस में कुछ सारंगी और तबले के इतने पहुँचे हुये गुनी थे जिनकी बराबरी करने वाला हिन्दुस्तान में शायद ही कोई हो सकता था हालाँकि बीनकार और रबाबिये सारंगी और तबले को बहुत छोटी चीज समझते हैं पर सिया महराज और गौरी शंकर मिश्र नाम के दो सारंगियों ने जब तन्त्र और ध्रुपद अंग का पूरा आलाप सारंगी पर सुनाया और इसके अलावा ठुमरी व गाने व हर तरह की धुनों की बहार भी सुनाई और गवैयों की पूरी संगत की तो इनकी क़द्र करनी ही पड़ी. इनका दावा था कि बीन की सारी कैफ़ियत ये अपने बाजे पर बजा सकते थे पर सारंगी की सब बातें बीन पर निकालना ग़ैरमुमकिन है. सुर की सजावट, ठहराव, और मिठास वग़ैरह के मानी में सारंगी बेजोड़ बाजा है और न मालूम क्यों पढ़े लिखे शरीफ़ घरानों में अभी तक यह नहीं अपनाया जा रहा है. गाने की संगत तो इससे अच्छी और किसी बाजे से हो ही नहीं सकती. यह बाजा अभी तक बाजारू, पेशेवर, धाड़ी कथक या मीरासियों तक ही है. तबले का भी यही हाल था. कुछ बरस पहले तक तबले को तो भले घरों में खूब जगह मिली, पर मालूम नहीं सारंगी ने क्या क़सूर किया है कि शरीफ़ों के संगीत प्रेमी लड़के इससे दूर भागते हैं. जब कहीं गाने बजाने की बैठक भले घरों में होती है तो सारंगिया बाज़ार से बुलाना होता है. इस बाजे को हमें जल्दी से जल्दी

گھرانے کو سینیوں سے بڑا اور پرانا مانتے ہیں۔ جو ہو، پر اتنا ہم جانتے ہیں کہ سینیے اس گھرانے کی عزت ضرور کرتے تھے۔

ان کے علاوہ بنارس میں کچھ سارنگی اور طبلے کے اتنے پہنچے ہوئے گنی تھے جن کی برابری کرنے والا ہندستان میں شاید ہی کوئی ہو سکتا تھا حالاں کہ بین کار اور ربابیے سارنگی اور طبلے کو بہت چھوٹی چیز سمجھتے ہیں پر سیا مہراج اور گوری شنکر مشر نام کے دو سارنگیوں نے جب تنتر اور دھرپد انگ کا پورا آلاپ سارنگی پر سنایا اور اس کے علاوہ ٹھمری دکھانے و ہر طرح کی دھنوں کی بہار بھی سنائی اور گویوں کی پوری سنگت کی تو ان کی قدر کرنی ہی پڑی۔ ان کا دعویٰ تھا کہ بین کی ساری کیفیت یہ اپنے باجے پر بجا سکتے تھے پر سارنگی کی سب باتیں بین پر نکالنا غیر ممکن ہے۔ سُر کی سجاوٹ، ٹھہراؤ، اور مٹھاس وغیرہ کے معنی میں سارنگی بے جوڑ باجا ہے اور نہ معلوم کیوں پڑھے لکھے شریف گھرانوں میں ابھی تک یہ نہیں اپنایا جا رہا ہے۔ گانے کی سنگت تو اس سے اچھی اور کسی باجے سے ہو ہی نہیں سکتی۔ یہ باجا ابھی تک بازارو، پیشہ ور، ڈھاڑی کتھک یا میراثیوں تک ہی ہے۔ طبلے کا بھی یہی حال تھا۔ کچھ برس پہلے تک طبلے کو تو بھلے گھروں میں خوب جگہ ملی، پر معلوم نہیں سارنگی نے کیا قصور کیا ہے کہ شریفوں کے سنگیت پریمی لڑکے اس سے دور بھاگتے ہیں۔ جب کہیں گانے بجانے کی بیٹھک بھلے گھروں میں ہوتی ہے تو سارنگیا بازار سے بلانا ہوتا ہے۔ اس باجے کو ہمیں جلدی سے جلدی

अपनाना होगा, अगर हम हिन्दुस्तानी गाने की सची तालीम लेना चाहते हैं.

सो बनारस एक लम्बे अर्से तक रह कर ख़ाँ साहब फिर गिद्धौर चले गये. उन दिनों रामपुर के नवाब हैदर अली ख़ाँ साहब अपने साहबज़ादे प्रिंस सआदत अली ख़ाँ उर्फ़ छम्मन साहब को जी जान से संगीत की तालीम दे रहे थे. छम्मन साहब को वह ज़्यादातर दरबार की आबोहवा से दूर अपनी ज़ाती रियासत बिलसी में ही रखते थे, ताकि उनकी तालीम में ख़लल न पड़े. छम्मन साहब का दिमाग़ और संगीत-प्रेम ग़ैर मामूली था. अपने वालिद की सारी विद्या उन्होंने बहुत थोड़े वक़्त में ही हासिल कर ली. तब हैदर अली साहब ने बड़ी कोशिश से मुहम्मद अली ख़ाँ साहब को गिद्धौर से बुलाया. वह ख़ाँ साहब से छम्मन साहब की तालीम पूरी करवाना चाहते थे. नवाब साहब ने कुछ ऐसा आग्रह किया कि ख़ाँ साहब गये बिना न रह सके. उन्होंने बाक़ायदा शागिर्द बना कर छम्मन साहब को तालीम देना शुरू किया. छम्मन साहब की प्रतिभा, सूझ बूझ और याददाश्त कुछ इतने ऊँचे दर्जे की थी कि देखते देखते उन्होंने ख़ाँ साहब से बहुत सी चीज़ें याद कर लीं. आगे चल कर यही ख़ाँ साहब के सबसे बड़े शागिर्द मशहूर हुये. उनकी तालीम पूरी कर ख़ाँ साहब फिर गिद्धौर लौट गये, पर कुछ ही सालों बाद इन्हें फिर रामपुर लौटना पड़ा.

हैदर अली के बाद हामिद अली ख़ाँ साहब नवाब हुये. ये वज़ीर अली ख़ाँ साहब के शागिर्द थे और ख़ुद भी पहुँचे हुये गुनी

اپنانا ہوگا، اگر ہم ہندستانی گانے کی سچی تعلیم لینا چاہتے ہیں۔

بنارس ایک لمبے عرصے تک رہ کر خاں صاحب پھر گدھور چلے گئے۔ ان دنوں رام پور کے نواب حیدر علی خاں صاحب اپنے صاحبزادے پرنس سعادت علی خاں عرف چھمّن صاحب کو جی جان سے سنگیت کی تعلیم دے رہے تھے۔ چھمّن صاحب کو وہ زیادہ تر دربار کی آب و ہوا سے دور اپنی ذاتی ریاست بلسی میں ہی رکھتے تھے، تاکہ ان کی تعلیم میں خلل نہ پڑے۔ چھمّن صاحب کا دماغ اور سنگیت پریم غیر معمولی تھا۔ اپنے والد کی ساری ودّیا انھوں نے بہت تھوڑے وقت میں ہی حاصل کر لی۔ تب حیدر علی صاحب نے بڑی کوشش سے محمد علی خاں صاحب کو گدھور سے بلایا۔ وہ خاں صاحب سے چھمّن صاحب کی تعلیم پوری کروانا چاہتے تھے۔ نواب صاحب نے کچھ ایسا آگرہ کیا کہ خاں صاحب گئے بنا نہ رہ سکے۔ انھوں نے باقاعدہ شاگرد بنا کر چھمّن صاحب کو تعلیم دینا شروع کیا۔ چھمّن صاحب کی پرتبھا، سوجھ بوجھ اور یادداشت کچھ اتنے اونچے درجے کی تھی کہ دیکھتے دیکھتے انھوں نے خاں صاحب سے بہت سی چیزیں یاد کر لیں۔ آگے چل کر یہی خاں صاحب کے سب سے بڑے شاگرد مشہور ہوئے۔ ان کی تعلیم پوری کر خاں صاحب پھر گدھور لوٹ گئے، پر کچھ ہی سالوں بعد انھیں پھر رام پور لوٹنا پڑا۔

حیدر علی کے بعد حامد علی خاں صاحب نواب ہوئے۔ یہ وزیر علی خاں صاحب کے شاگرد تھے اور خود بھی پہنچے ہوئے گنی

थे. वे अपने दरबार में हिन्दुस्तान के सब चोटी के गुनियों को इकट्ठा करना चाहते थे. वजीर अली खाँ बीनकार तो राजगुरू के रूप में दरबार में थे ही पर मुहम्मद अली के बिना इन्हें मजलिस अधूरी सी लगती थी. छम्मन साहब को दरबार में बुला ही लिया था. ग़रज़ कि गिद्धौरे से खाँ सहाब फिर बुलाये गये. उनके लाने का भार छम्मन सहाब को ही सौंपा गया. खां साहब के कोई औलाद नहीं थी पर छम्मन साहब को वह औलाद से भी ज्यादा चाहते थे. हालाँकि बुढ़ापे के कारण वह अब गिद्धौर छोड़ कर कहीं जाना नहीं चाहते थे पर छम्मन साहब खुद जब गिद्धौर इन्हें ले आने को पहुंचे तो यह मजबूर हो गये. गिद्धौर नरेश ने छम्मन साहब की बेहद खातिर की, लगभग महीने भर तक जलसे होते रहे. आखिरकार खाँ साहब को लेकर छम्मन साहब रामपुर पहुंचे. खां साहब का सिन उस वक्त सत्तर के ऊपर जा रहा था, पर वह जवानों के से सुर्ख व सफ़ेद थे. आँख में वह चमक थी जो नौजवानों में ही हो सकती थी. नवाब बहादुर ने इनसे भी तालीम ली. इनके रबाब और वजीर खाँ साहब (जो रिश्ते में इनके नाती होते थे) की बीन की झंकार से रामपुर दरबार में अजीब रौनक पैदा हुई जिसकी मिसाल संगीत के मानी में अकबरी दरबार और मुहम्मद शाह रँगीले के दरबार से ही दी जा सकती थी. मुहम्मद अली और वजीर खाँ यह दोनों तानसेन और मिश्री सिंह के आखिरी प्रतिनिधि थे. इन दोनों महान् गुनियों में बड़ा प्रेम भी था, और खूब शग़ल रहता था, पर फ़न के मानी में दोनों में बेहद लाग डांट भी चलती थी. इनके खास शागिर्द छम्मन साहब ने वजीर खाँ

تھے۔ یہ اپنے دربار میں ہندستان کے سب چوٹی کے گنیوں کو اکٹھا کرنا چاہتے تھے۔ وزیر علی خاں بین کار تو راج گرو کے روپ میں دربار میں تھے ہی پر محمد علی کے بنا انھیں مجلس ادھوری سی لگتی تھی۔ چھمن صاحب کو دربار میں بُلا ہی لیا تھا۔ غرض کہ گدّھور سے خاں صاحب پھر بلائے گئے۔ ان کے لانے کا بھار چھمن صاحب کو ہی سونپا گیا۔ خاں صاحب کی کوئی اولاد نہیں تھی پر چھمن صاحب کو وہ اولاد سے بھی زیادہ چاہتے تھے حالاں کہ بڑھاپے کے کارن وہ اب گدّھور چھوڑ کر کہیں جانا نہیں چاہتے تھے پر چھمن صاحب خود جب گدّھور انھیں لے آنے کو پہنچے تو یہ مجبور ہوگئے۔ گدّھور نریش نے چھمن صاحب کی بے حد خاطر کی، لگ بھگ مہینے بھر تک جلسے ہوتے رہے۔ آخرکار خاں صاحب کو لے کر چھمن صاحب رام پور پہنچے۔ خاں صاحب کا سِن اس وقت ستّر کے اوپر جا رہا تھا، پر وہ جوانوں کے سے سُرخ و سفید تھے۔ آنکھ میں وہ چمک تھی جو نوجوانوں میں ہی ہو سکتی تھی۔ نواب بہادر نے ان سے بھی تعلیم لی۔ ان کے رباب اور وزیر خاں صاحب (جو رشتے میں ان کے ناتی ہوتے تھے) کی بین کی جھنکار سے رام پور دربار میں عجیب رونق پیدا ہوئی جس کی مثال سنگیت کے معنی میں اکبری دربار اور محمد شاہ رنگیلے کے دربار سے ہی دی جا سکتی تھی۔ محمد علی اور وزیر علی خاں یہ دونوں تان سین اور مصری سنگھ کے آخری پرتیندھی تھے۔ ان دونوں مہان گنیوں میں بڑا پریم بھی تھا اور خوب شغل بھی رہتا تھا، پر فن کے معنی میں دونوں میں بے حد لاگ ڈانٹ بھی چلتی تھی۔ ان کے خاص شاگرد چھمن صاحب نے وزیر خاں

साहब को आखिर तक नहीं माना. वह कहते थे ये तो हमारे वालिद के शागिर्द हैं. पर यों इन दोनों उस्तादों में कोई भेद भाव नजर नहीं आता था. आपस में हँसी मजाक भी खूब खूब होते थें.

बरसात में रबाब अच्छी नहीं बोलती. इसको लेकर वजीर खाँ साहब अक्सर बाबा (मुहम्मद अली खाँ साहब को वजीर खाँ 'बाबा' ही कहते थे, रिश्ते से भी, बजुर्गी से भी. और इसी वजह से आमतौर से सभी लोग उन्हें बाबा ही कहा करते थे. कुछ मिजाज में फ़क़ीराना अंदाज भी ऐसा था जिसकी वजह से यह खिताब इन्हें ठीक ही लगता था. नवाब बहादुर भी इन्हें बाबा ही कह कर पुकारते) को आड़े हाथ लिया करते. वह अक्सर एक मसला कह कर बाबा को चिढ़ाते—'बरखा में तीनों गये—तेली, ऊंट, रबाब, नवाब बहादुर ने बाबा को भी गुरू माना यह बात भीतर ही भीतर वजीर खाँ साहब को खटकती थी पर जाहिरा वह कुछ कह नहीं सकते थे.

(बाक़ी फिर)

صاحب کو آخر تک نہیں مانا. وہ کہتے تھے یہ تو ہمارے والد کے شاگرد ہیں. پر یوں ان دونوں استادوں میں کوئی بھید بھاؤ نظر نہیں آتا تھا. آپس میں ہنسی مذاق بھی خوب خوب ہوتے تھے.

برسات میں رباب اچھی نہیں بولتی. اس کو لے کر وزیر خاں صاحب اکثر بابا (محمد علی خاں صاحب کو وزیر خاں 'بابا' ہی کہتے تھے، رشتے سے بھی، بزرگی سے بھی اور اسی وجہ سے عام طور سے سبھی لوگ انھیں بابا ہی کہا کرتے تھے. کچھ مزاج میں فقیرانہ انداز بھی ایسا تھا جس کی وجہ سے یہ خطاب انھیں ٹھیک ہی لگتا تھا. نواب بہادر بھی انھیں بابا ہی کہہ کر پکارتے) کو آڑے ہاتھ لیا کرتے. وہ اکثر ایک مسئلہ کہہ کر بابا کو چڑھاتے — 'برکھا میں تینوں گئے — تیلی، اونٹ، رباب'، نواب بہادر نے بابا کو بھی گرو مانا یہ بات بھیتر ہی بھیتر وزیر خاں صاحب کو کھٹکتی تھی پر ظاہرا وہ کچھ کہہ نہیں سکتے تھے.

(باقی پھر)

महात्मा गान्धी

दुनिया की अजीब ग़रीब हस्ती

(भाई मेहर मुहम्मद ख़ाँ 'शहाब' मालियरकोटलवी)

कहने को गाँधी जी लगभग अस्सी बरस इस दुनिया में रहे, लेकिन ध्यान से देखिये तो ऐसा लगता है कि वह बिजली की तरह चमके और पलक झपकाते आँखों से ओझल हो गये—

ख़्वाब था जो कुछ कि देखा जो सुना अफ़साना था.

दुनिया कब से है, और कब तक रहेगी ? कौन जानता है. पर तारीख़ (इतिहास) ने बताया है और दुनिया ने एक बार नहीं बार बार देखा है कि इस दुनिया में जब कभी झूठ और बुराई के अंधेरे ने फैलकर दिलों को ढाँप लिया है, सचाई के चाँद और सूरज एक के बाद एक, लगातार यहाँ, वहाँ, कहीं न-कहीं चमकते रहे हैं. क़ुरान में कहा गया है—"भगवान् अपने से श्रद्धा और प्रेम रखने वालों के दोस्त और सहायक हैं. वह हमेशा उनको घोर अंधेरों में से निकाल कर यक़ीन और सचाई के उजाले की तरफ़ ले आया करते हैं."

यही उजाला कभी किसी नाम से ज़ाहिर हुआ कभी किसी नाम से. कभी किसी देश से फैला कभी किसी देश से. कभी ज़र्रे के रूप में प्रकट हुआ कभी तारों, चाँद और सूरज के रूप में. जिस तरह ज़र्रे (कण) से लेकर सूरज तक रोशनी के ज़ाहिर होने के रूप अलग अलग और दरजे जुदा जुदा और छोटे बड़े हैं उसी तरह इस

مہاتما گاندھی

دُنیا کی عجیب غریب ہستی

(بھائی مہر محمد خاں 'شہاب' مالیرکوٹلوی)

کہنے کو گاندھی جی لگ بھگ اسّی برس اِس دُنیا میں رہے، لیکن دھیان سے دیکھئے تو ایسا لگتا ہے کہ وہ بجلی کی طرح چمکے اور پلک جھپکاتے آنکھوں سے اوجھل ہو گئے—

خواب تھا جو کچھ کہ دیکھا جو سُنا افسانہ تھا۔

دُنیا کب سے ہے، اور کب تک رہے گی؟ کون جانتا ہے۔ پر تاریخ (اتہاس) نے بتایا ہے اور دُنیا نے ایک بار نہیں بار بار دیکھا ہے کہ اِس دُنیا میں جب کبھی جھوٹھ اور بُرائی کے اندھیرے نے پھیل کر دلوں کو ڈھانپ لیا ہے، سچائی کے چاند اور سورج ایک کے بعد ایک، لگاتار یہاں، وہاں، کہیں نہ کہیں چمکتے رہے ہیں۔ قرآن میں کہا گیا ہے—"بھگوان اپنے سے شردھا اور پریم رکھنے والوں کے دوست اور سہایک ہیں۔ وہ ہمیشہ اُن کو گھور اندھیروں میں سے نکال کر یقین اور سچائی کے اُجالے کی طرف لے آیا کرتے ہیں۔"

یہی اُجالا کبھی کسی نام سے ظاہر ہوا کبھی کسی نام سے۔ کبھی کسی دیش سے پھیلا کبھی کسی دیش سے کبھی ذرّے کے روپ میں پرکٹ ہوا کبھی تاروں، چاند اور سورج کے روپ میں۔ جس طرح ذرّے (کن) سے لے کر سورج تک روشنی کے ظاہر ہونے کے روپ الگ الگ اور درجے جُدا جُدا اور چھوٹے بڑے ہیں اُسی طرح

रूहानी (आध्यात्मिक) रोशनी के जाहिर होने के दरजे जुदा जुदा और नाम अलग अलग हैं. बेखबर लोगों को जब भी और जहाँ भी देखा, नामों की ही पूजा करते देखा और नामों ही के भेद पर लड़ते झगड़ते और गुत्थम गुत्था होते पाया और इसी को उन्हों ने अपने ईमान का कमाल समझा. पर आँखों वालों ने रोशनी से फ़ायदा उठाया और ज़र्रे से सूरज तक एक ही जोत देखी और इस हमेशा से और हमेशा तक रहने वाली रोशनी में अपने दिल की गहरी अंधेरी गुफाओं की सैर करके कुदरत के छिपे हुये खज़ानों को अपनाने की कोशिश करने लगे. हाँ, उन्हों ने ज़र्रे को खाक में नहीं मिलाया और सूरज पर धूल नहीं डाली. लेकिन ऐसे लोग हमेशा थोड़े रहे हैं और आज भी उनकी गिनती कुछ बड़ी नहीं है.

आज भी हिन्दुस्तान की इस पुरानी धर्म और ज्ञान की धरती पर एक आदमी—अजीब ग़रीब आदमी—जिस्म के लिहाज़ से छोटा सा आदमी, पैदा हुआ. अस्सी बरस तक इसी ज़मीन पर घूमता फिरता रहा. बोलता चालता रहा. उसको करोड़ों ने देखा, करोड़ों ने ही उसके होंठों से उसकी नर्म और मधुर आवाज़ को सुना. करोड़ों ने उसके प्रेम और अहिंसा के बतलाये हुए रास्ते पर चलने का एलान भी किया. कितनों ने उसकी बोली बोलना, उसके से कपड़े पहिनना, चरखा कातना नहीं तो खद्दर पहिनना, सत्याग्रह करना और 'अहिंसा' का नारा लगाना शुरू कर दिया. पर मौक़ा आने पर मालूम हुआ कि वह आसमान के सूरज की तरह अकेला ही आया था, अकेला रहा और अकेला ही इस दुनिया से सिधार

روحانی (آدھیاتمک) روشنی کے ظاہر ہونے کے درجے جُدا جُدا اور نام الگ الگ ہیں. بے خبر لوگوں کو جب بھی اور جہاں بھی دیکھا، ناموں کی ہی پوجا کرتے دیکھا اور ناموں ہی کے بھید پر لڑتے جھگڑتے اور گتھم گتھا ہوتے پایا اور اِسی کو اُنھوں نے اپنے ایمان کا کمال سمجھا. پر آنکھوں والوں نے روشنی سے فائدہ اُٹھایا اور ذرّے سے سورج تک ایک ہی جوت دیکھی اور اس ہمیشہ سے اور ہمیشہ تک رہنے والی روشنی میں اپنے دل کی گہری اندھیری گپھاؤں کی سیر کرکے قدرت کے چھپے ہوئے خزانوں کو اپنانے کی کوشش کرنے لگے. ہاں، اُنھوں نے ذرّے کو خاک میں نہیں ملایا اور سورج پر دھول نہیں ڈالی. لیکن ایسے لوگ ہمیشہ تھوڑے رہے ہیں اور آج بھی ان کی گنتی کچھ بڑی نہیں ہے.

آج بھی ہندستان کی اس پرانی دھرم اور گیان کی دھرتی پر ایک آدمی — عجیب غریب آدمی — جسم کے لحاظ سے چھوٹا سا آدمی پیدا ہوا. اسّی برس تک اِس زمین پر گھومتا پھرتا رہا، بولتا چالتا رہا. اس کو کروڑوں نے دیکھا، کروڑوں نے ہی اُس کے ہونٹھوں سے اُس کی نرم اور مدھر آواز کو سنا. کروڑوں نے اُس کے پریم اور اہنسا کے بتلائے ہوئے راستے پر چلنے کا اعلان بھی کیا. کتنوں نے اُس کی بولی بولنا، اُس کے سے کپڑے پہننا، چرکھا کاتنا نہیں تو کھدّر پہننا، ستیہ گرہ کرنا اور 'اہنسا' کا نعرہ لگانا شروع کر دیا. پر موقع آنے پر معلوم ہوا کہ وہ آسمان کے سورج کی طرح اکیلا ہی آیا تھا، اکیلا رہا اور اکیلا ہی اِس دُنیا سے سِدھار

गया. अब हर तरफ़ अंधेरा ही अंधेरा है पर यक़ीन है कि यह अंधेरी रात ज़रूर किसी शानदार सुबह के दर्शन करायेगी. चारों तरफ़ छाई निराशा में से ज़रूर कोई आशा की किरन चमकेगी.

इस अजीब ग़रीब आदमी ने कभी नहीं कहा कि मैं महात्मा हूँ, मैं ऋषि या मुनि हूँ, या छोटा मोटा या किसी भी दरजे का भगवान या भगवान का अवतार या ख़ुदा का पैग़ाम लाने वाला पैग़म्बर या ख़ुदा का बेटा हूँ. उसने कभी अपने बारे में ऐसी कोई बात नहीं कही जिससे ज़ाहिर हो कि वह कोई ग़ैर मामूली या असाधारन आदमी है. लफ़्ज़ों के पुजारी और रवायतों (परम्पराओं) के बन्दे आज सोच रहे हैं और बेताब हैं कि इस बड़ी शहादत या महाबलिदान के बाद ख़ुदा के इस बन्दे को किस नाम से पुकारें. हर आदमी अपने अपने ख़िताबों और मज़हबी नामों के खाते लिए बैठा है कि उस अजीब हस्ती को क्या नाम या ख़िताब दें. जैसे उनके नज़दीक अभी वह इस बात का मुहताज ही है कि जब तक उनकी मज़हबी सरकार से उसे कोई रूहानी या ईमानी ख़िताब न मिल जाय वह बेचारा कहीं का न रहेगा.

हालाँकि गांधी अपनी ज़िन्दगी के चमकते दमकते कारनामों की बिना पर सच्चाई की उस ऊँची चोटी पर पहुँच गया है कि पिछली सारी सच्चाइयाँ उसकी ज़िन्दगी और ऊँचे और बेलाग किरदार (चरित्र) की रोशनी से रौनक़ पाती हैं. वह सच्चाई, प्रेम और अहिंसा का वह सूरज है जिसको किसी और चराग़ से दिखाये जाने की ज़रूरत नहीं. कुछ लोग ऐसे भी नज़र आते हैं कि उसको किसी ऊँची जगह पर बैठाकर उसके नाम की पूजा या उसके परदे

گیا. اب ہر طرف اندھیرا ہی اندھیرا ہے پر یقین ہے کہ یہ اندھیری رات ضرور کسی شاندار صبح کے درشن کرائے گی. چاروں طرف چھائی نراشا میں سے ضرور کوئی آشا کی کرن چمکے گی.

اس عجیب غریب آدمی نے کبھی نہیں کہا کہ میں مہاتما ہوں، میں رشی یا مُنی ہوں یا چھوٹا موٹا یا کسی بھی درجے کا بھگوان یا بھگوان کا اوتار یا خدا کا پیغام لانے والا پیغامبر یا خدا کا بیٹا ہوں. اس نے کبھی اپنے بارے میں ایسی کوئی بات نہیں کہی جس سے ظاہر ہو کہ وہ کوئی غیر معمولی یا اسادھارن آدمی ہے. لفظوں کے پجاری اور روایتوں (پرمپراؤں) کے بندے آج سوچ رہے ہیں اور بےتاب ہیں کہ اس بڑی شہادت یا مہا بلیدان کے بعد خدا کے اس بندے کو کس نام سے پکاریں. ہر آدمی اپنے اپنے خطابوں اور مذہبی ناموں کے کھاتے لئے بیٹھا ہے کہ اس عجیب ہستی کو کیا نام یا خطاب دے جیسے ان کے نزدیک ابھی وہ اس بات کا محتاج ہی ہے کہ جب تک ان کی مذہبی سرکار سے اسے کوئی روحانی یا ایمانی خطاب نہ مل جائے وہ بےچارہ کہیں کا نہ رہے گا.

حالانکہ گاندھی اپنی زندگی کے چمکتے دمکتے کارناموں کی بنا پر سچائی کی اس اونچی چوٹی پر پہنچ گیا ہے کہ پچھلی ساری سچائیاں اس کی زندگی اور اونچے اور بےلاگ کردار (چرتر) کی روشنی سے رونق پاتی ہیں. وہ سچائی، پریم اور اہنسا کا وہ سورج ہے جس کو کسی اور چراغ سے دکھلائے جانے کی ضرورت نہیں. کچھ لوگ ایسے بھی نظر آتے ہیں کہ اس کو کسی اونچی جگہ پر بٹھا کر اس کے نام کی پوجا یا اس کے پردے

में अपनी इच्छाओं की पूजा शुरू करदें और शब्दों के खेल से उसे इतना ऊँचा या नीचा करदें कि उसके कारनामों की जिन्दगी पैदा करने वाली रोशनी आँखों से ओझल और दिल की गहराइयों से दूर हो जाय.

लोगों में सदा से यह आदत रही है कि जिस किसी से नफ़रत करते हैं उसे इतना गिराते हैं कि मामूली आदमी का दरजा भी नहीं देना चाहते और जब किसी से मुहब्बत करने पर आते हैं तो ख़ुदा बनाकर सातवें आसमान की आखिरी चोटी पर यों बैठा देते हैं कि आम लोगों के लिये उसकी शख़्सियत (व्यक्तित्व) में आदमीयत के लिहाज़ से अमल और किरदार की कोई ख़ूबी और बात ही न दिखाई दे. बल्कि उसकी हर बात और हर अदा 'ख़ुदाई जलवा' या 'ईश्वरी शक्ति' बनकर गोश्त और हड्डी से बने हुए आदमियों के लिये इन्सानियत या मानवता का ऐसा माउन्ट एवरेस्ट बन जाय कि पहले तो कोई उसकी तरफ़ जाने की हिम्मत ही न करे और जो करे तो हिम्मत हार कर अविश्वास के बर्फ़ और हवा के तूफ़ानों में घिर कर और रूहानी अंधकार के गढ़ों में गिरकर निकम्मे पन की घाटियों में दफ़न हो जाय.

आज कल गान्धी जी की यादगार मनाने के लिए किसी न किसी रंग और किसी न किसी रूप में कहीं न कहीं सभायें और जलसे होते ही रहते हैं जिनमें लोग अपनी-अपनी तबीयत के मुताबिक़ अपने अपने ख़याल ज़ाहिर करते हैं. अख़बार पढ़िये या भाषण सुनिये अकसर लोगों की बातें सुनकर दिल उदास होकर रह जाता है, और कहीं छोटी मोटी मजलिसों में दिल और दिमाग़ व रूह सचाई और

میں اپنی اچھاؤں کی پوجا شروع کر دیں اور شبدوں کے کھیل سے اُسے اتنا اونچا یا نیچا کر دیں کہ اُس کے کارناموں کی زندگی پیدا کرنے والی روشنی آنکھوں سے اوجھل اور دل کی گہرائیوں سے دور ہو جائے۔

لوگوں میں سدا سے یہ عادت رہی ہے کہ جس کسی سے نفرت کرتے ہیں اُسے اتنا گراتے ہیں کہ معمولی آدمی کا درجہ بھی نہیں دینا چاہتے اور جب کسی سے محبت کرنے پر آتے ہیں تو خدا بنا کر ساتویں آسمان کی آخری چوٹی پر یوں بٹھا دیتے ہیں کہ عام لوگوں کے لئے اُس کی شخصیت (ویکتتو) میں آدمیت کے لحاظ سے عمل اور کردار کی کوئی خوبی اور بات ہی نہ دکھائی دے۔ بلکہ اُس کی ہر بات اور ہر ادا 'خدائی جلوہ' یا 'ایشور شکتی' بن کر گوشت اور ہڈی سے بنے ہوئے آدمیوں کے لئے انسانیت یا مانوتا کا ایسا ماؤنٹ ایورسٹ بن جائے کہ پہلے تو کوئی اُس کی طرف جانے کی ہمت ہی نہ کرے اور جو کرے تو ہمت ہار کر اوشواس کے برف اور ہوا کے طوفانوں میں گھر کر اور روحانی اندھکار کے گڑھوں میں گر کر نکمے پن کی گھاٹیوں میں دفن ہو جائے۔

آج کل گاندھی جی کی یادگار منانے کے لئے کسی نہ کسی رنگ اور کسی نہ کسی روپ میں کہیں نہ کہیں سبھائیں اور جلسے ہوتے ہی رہتے ہیں جن میں لوگ اپنی اپنی طبیعت کے مطابق اپنے اپنے خیال ظاہر کرتے ہیں۔ اخبار پڑھئے یا بھاشن سنئے اکثر لوگوں کی باتیں سن کر دل اداس ہو کر رہ جاتا ہے، اور کہیں چھوٹی موٹی مجلسوں میں دل اور دماغ و روح سچائی اور

मुहब्बत की रूहानी गिज़ा (भोजन) भी पा जाते हैं. ऐसे ही मौक़ों पर आपने ऐसी आवाजें भी जरूर सुनी होंगी कि गान्धी जी न बहुत ज़हीन (प्रतिभाशाली) थे, न उन्होंने दुनिया को नया सन्देश दिया न उनका कोई नया फ़लसफ़ा है. वह वही चन्द बातें कहते थे जो उनसे पहले के लोग कह गये थे. उनकी पालिसी भी हमेशा एक नहीं रही. हाँ, आख़िरी वक़्त में उन्होंने पूरी सचाई से काम किया वग़ैरा वग़ैरा.

ऐसी बातों के जवाब में कहा जा सकता है कि 'हिन्द-स्वराज' गान्धी जी की छोटी सी मशहूर किताब है जो उन्होंने सन् १९०८ में गुजराती में उस वक़्त लिखी थी जब कि वह दक्खिन अफ़्रीक़ा में सच्चाई के लिये 'जेहाद' कर रहे थे. उस किताब में उन्होंने उस स्वराज की तसवीर खींची है जो वह हिन्दुस्तान के लिये चाहते थे. और बातों के अलावा उस किताब में उन्हों ने तीन बातों पर ख़ास ज़ोर दिया है—(१) हिन्दू मुस्लिम एकता, (२) छूत छात का ख़ातमा, और (३) हिन्दुस्तान में बाहर वालों की हकूमत की जगह अपनी या अपनों की हकूमत कायम करना. इस किताब का ख़ातमा इस पैरे पर हुआ है—

"मैंने ऊपर कोशिश की है कि स्वराज को जिस तरह मैं समझा हूँ, उस तरह इसे खोल कर बयान करदूँ. मेरी आत्मा इस बात की तसदीक़ (पुष्टि) करती है कि अब से मेरी जिन्दगी इस और ऐसे स्वराज के हासिल करने के लिये वक़्फ़ (समर्पण) होचुकी है".

अब आप इस फ़िक़रे की रोशनी में सन् १९०८ से सन् १९४८ तक के गान्धी जी के कारनामों पर नज़र डालिये तो आपको मालूम

محبت کی روحانی غذا (بھوجن) بھی پا جاتے ہیں. ایسے ہی موقعوں پر آپ نے آوازیں بھی ضرور سُنی ہوں گی کہ گاندھی جی نہ بہت ذہین (پرتی بھاشالی) تھے، نہ اُنھوں نے دُنیا کو نیا سندیش دیا نہ اُن کا کوئی نیا فلسفہ ہے. وہ وہی چند باتیں کہتے تھے جو اُن سے پہلے کے لوگ کہہ گئے تھے. اُن کی پالیسی بھی ہمیشہ ایک نہیں رہی؛ آخری وقت میں اُنھوں نے پوری سچائی سے کام کیا وغیرہ وغیرہ.

ایسی باتوں کے جواب میں کہا جاسکتا ہے کہ 'ہند سوراج' گاندھی جی کی چھوٹی سی مشہور کتاب ہے جو اُنھوں نے ۱۹۰۸ء میں گجراتی میں اُس وقت لکھی تھی جب کہ وہ دکھن افریقہ میں سچائی کے لئے جہاد کر رہے تھے، اُس کتاب میں اُنھوں نے اُس سوراج کی تصویر کھینچی ہے جو وہ ہندستان کے لئے چاہتے تھے. اور باتوں کے علاوہ اُس کتاب میں اُنھوں نے تین باتوں پر خاص زور دیا ہے — (۱) ہندو مسلم ایکتا، (۲) چھوت چھات کا خاتمہ، اور (۳) ہندستان میں باہر والوں کی حکومت کی جگہ اپنی یا اپنوں کی حکومت قائم کرنا. اِس کتاب کا خاتمہ اِس پیرے پر ہوا ہے —

"میں نے اوپر کوشش کی ہے کہ سوراج کو جس طرح میں سمجھا ہوں اُس طرح اِسے کھول کر بیان کر دوں. میری آتما اِس بات کی تصدیق (پُشٹی) کرتی ہے کہ اب سے میری زندگی اِس اور ایسے سوراج کے حاصل کرنے کے لئے وقف (سمرپن) ہو چکی ہے".

اب آپ اِس فقرے کی روشنی میں ۱۹۰۸ء سے ۱۹۴۸ء تک کے گاندھی جی کے کارناموں پر نظر ڈالئے تو آپ کو معلوم

होगा कि 'हिन्द-स्वराज' में उन्होंने जो कुछ लिखा, अपनी सारी ज़िन्दगी में वह उस पर अमल करते रहे. उनकी ज़िन्दगी का एक एक पल इन पाक और पवित्र आदर्शों के लिये खर्च हुआ यहाँ तक कि उन्होंने अपनी जान भी अपने पैदा करने वाले के दरबार में पेश करदी.

दुनिया में अक़्लमन्दों की कमी नहीं. पर दुनिया वालों को ऐसे अक़्लमन्दों, फ़िलास्फ़रों और बड़ी बड़ी बातें करने वालों या नये नये खयाल पेश करने वालों की ज़रूरत नहीं जो कहें तो बहुत कुछ और करें कुछ भी नहीं. क्योंकि दुनिया कामों से बनी है, सिर्फ़ बातों से नहीं बनी. और जैसी भी बनी है या बन कर बिगड़ गई है उसका सुधरना भी अगर मुमकिन है तो उन्हीं लोगों के ज़रिये जिन्होंने बातें छोटी और सीधी सादी कही हैं पर जो कुछ भी कहा है उसे कह कर दूसरों के लिये नहीं छोड़ दिया बल्कि उसको सच्चाई और ईमानदारी से करके दिखाने के लिये तन-मन-धन ही नहीं अपना जीवन भी उसी में लगा दिया और सब कुछ कुरबान कर देने को अपना धर्म और मज़हब समझा.

जैसा कि ऊपर कहा गया है, गान्धी जी ने कम से कम तीन मक़सद अपने जीवन के लिये चुन लिये थे—

(१) हिन्दुस्तान से विदेशी राज का खात्मा.

(२) जात पात या छुआ छात का खात्मा.

(३) हिन्दू मुसलमानों या हिन्दुस्तान में बसने वाली सब क़ौमों की एकता.

और इन मक़सदों के पाने के लिये उन्होंने तीन चीज़ों को

ہوگا کہ 'ہند سوراج' میں اُنھوں نے جو کچھ لکھا، اپنی ساری زندگی میں وہ اس پر عمل کرتے رہے، اُن کی زندگی کا ایک ایک پل ان پاک اور پوتر آدرشوں کے لئے خرچ ہوا یہاں تک کہ اُنھوں نے اپنی جان بھی اپنے پیدا کرنے والے کے دربار میں پیش کردی.

دُنیا میں عقلمندوں کی کمی نہیں. پر دُنیا والوں کو ایسے عقلمندوں، فلاسفروں اور بڑی بڑی باتیں کرنے والوں یا نئے نئے خیال پیش کرنے والوں کی ضرورت نہیں جو کہیں تو بہت کچھ اور کریں کچھ بھی نہیں. کیونکہ دُنیا کاموں سے بنی ہے، صرف باتوں سے نہیں بنی. اور جیسے بھی بنی ہے یا بن کر بگڑ گئی ہے اُس کا سُدھارنا بھی اگر ممکن ہے تو اُنھیں لوگوں کے ذریعے جنھوں نے باتیں چھوٹی اور سیدھی سادی کہی ہیں پر جو کچھ بھی کہا ہے اُسے کہہ کر دوسروں کے لئے نہیں چھوڑ دیا بلکہ اُس کو سچائی اور ایمانداری سے کرکے دکھانے کے لئے تن من دھن ہی نہیں اپنا جیون بھی اُسی میں لگا دیا اور سب کچھ قربان کردینے کو اپنا دھرم اور مذہب سمجھا.

جیسا کہ اوپر کہا گیا ہے، گاندھی جی نے کم سے کم تین مقصد اپنے جیون کے لئے چن لئے تھے—

(۱) ہندستان سے ودیشی راج کا خاتمہ.

(۲) جات پات یا چھوا چھوت کا خاتمہ.

(۳) ہندو مسلمانوں یا ہندستان میں بسنے والی سب قوموں کی ایکتا.

اور اِن مقصدوں کے پانے کے لئے اُنھوں نے تین چیزوں کو

अपना हथियार बनाया था—(१) सच्चाई, (२) प्रेम और (३) अदम तशद्दुद (अहिंसा) या ज़ाती क़ुरबानी.

गान्धी जी सच्चाई को ख़ुदा समझते थे, प्रेम को ईमान और अहिंसा को प्रेम का जौहर और बहादुरी का ऊँचा नमूना. इन तीनों चीज़ों को वह दुनिया के तमाम समाजी और एख़लाक़ी (नैतिक) रोगों का आख़िरी और कामयाब इलाज बताते थे. जब वह अफ़्रीक़ा में थे तो वहाँ के गोरों की ज़्यादतियों के ख़िलाफ़ इसी हथियार से जेहाद करते थे. उनके जेहाद की ख़ूबी यह थी कि वह अपने से दुशमनी करने वाले को भी कभी अपना दुशमन नहीं समझते थे और उससे भी प्रेम का बरताव करने को अपना मज़हब और धर्म समझते थे और अपने काम में अगर कहीं भी उन्हें थोड़ी हिंसा या बुराई दिखाई दी तो वह वहीं क़दम रोक देते और साफ़ साफ़ शब्दों में कह देते कि इस में यह भूल नज़र आती है. गांधी जी ने दक्खिन अफ़्रीक़ा से वापस आकर जब से हिन्दुस्तान के लिये स्वराज्य की लड़ाई शुरू की तो उन्हें यहाँ दुनिया ही और दिखाई दी. हिन्दुस्तान जहाँ एक तरफ़ विदेशियों का ग़ुलाम था वहाँ दूसरी तरफ़ इसके अपने घर में ही फूट पड़ी हुई थी. यहाँ के रहने वालों में आपस में एक दूसरे की भूल निकालने वाले और बोली बोलने वाले तो बहुत थे और उनको आपस में मिलाने वाला और एक दूसरे की अच्छाइयाँ बताने वाला कोई न था. ख़ुदग़रज़ी और स्वार्थ ने मज़हब और क़ौम, धर्म और देशभक्ति का नाम अख़्तियार कर लिया था. यही वजह है कि मज़हब और धर्म के नाम से कौन सी बेइन्साफ़ी है

اپنا ہتھیار بنایا تھا—(۱) سچائی، (۲) پریم اور (۳) عدم تشدد (اہنسا) یا ذاتی قربانی۔

گاندھی جی سچائی کو خدا سمجھتے تھے، پریم کو ایمان اور اہنسا کو پریم کا جوہر اور بہادری کا اونچا نمونہ۔ ان تینوں چیزوں کو وہ دُنیا کے تمام سماجی اور اخلاقی (نیتک) روگوں کا آخری اور کامیاب علاج بتاتے تھے۔ جب وہ افریقہ میں تھے تو وہاں کے گوروں کی زیادتیوں کے خلاف اسی ہتھیار سے جہاد کرتے تھے، اُن کے جہاد کی خوبی یہ تھی کہ وہ اپنے سے دشمنی کرنے والے کو بھی کبھی اپنا دُشمن نہیں سمجھتے تھے اور اُس سے بھی پریم کا برتاؤ کرنے کو اپنا مذہب اور دھرم سمجھتے تھے اور اپنے کام میں اگر کہیں بھی انھیں تھوڑی ہنسا یا بُرائی دکھائی دی تو وہ وہیں قدم روک دیتے اور صاف صاف شبدوں میں کہہ دیتے کہ اس میں یہ بھول نظر آتی ہے۔ گاندھی جی نے دکھن افریقہ سے واپس آکر جب سے ہندستان کے لئے سوراجیہ کی لڑائی شروع کی تو انھیں یہاں دُنیا ہی اور دکھائی دی۔ ہندستان جہاں ایک طرف ودیشیوں کا غلام تھا وہاں دوسری طرف اس کے اپنے گھر میں ہی پھوٹ پڑی ہوئی تھی۔ یہاں کے رہنے والوں میں آپس میں ایک دوسرے کی بھول نکالنے والے اور بولی بولنے والے تو بہت تھے اور ان کو آپس میں ملانے والا اور ایک دوسرے کی اچھائیاں بتانے والا کوئی نہ تھا۔ خودغرضی اور سوارتھ نے مذہب اور قوم، دھرم اور دیش بھکتی کا نام اختیار کرلیا تھا۔ یہی وجہ

जो एक नाम के हिन्दुस्तानियों ने दूसरे नाम के हिन्दुस्तानियों पर खुल्लम खुल्ला कर देने को जायज़ ही नहीं समझा, बल्कि अपनी ऐसी हरकतों को मज़हब, धर्म की सेवा ठहराया. दूसरों से हक़ तो सब माँगते थे मगर दूसरों का भी कुछ और कोई हक़ है और वह हमें देना चाहिये इसका बहुत लोगों को कम से कम ख़याल आता था. यहाँ ख़ुदा बटे हुये थे, ख़ुदाओं के नाम बटे हुये थे, लिबास बटे हुये थे, मकान बटे हुये थे, पूजा घर बटे हुये थे, क़ब्रस्तान और मरघट बटे हुए थे ग़रज़ जीना और मरना सब बटा हुआ था और ऐसा लगता था कि इस देवताओं की भारतवर्ष नाम की बस्ती में एक ईश्वर या ख़ुदा की नहीं चालीस करोड़ ख़ुदाओं की मानने वाली चालीस करोड़ जनता बस्ती थी जिनमें शायद नाम की एकाई की जगह और कोई एकाई न मानी जाती थी. न इसका लिहाज़ किया जाता था. देश की सारी आबादी एक बड़ी एकाई की जगह बेशुमार छोटी छोटी एकाइयों और समाजों में बटी हुई थी, जिनमें मेल मिलाप, रिश्ता नाता और दूसरों से मिल बैठने का सम्बन्ध कम से कम था. इस लिये हर जगह यह दिखाई देता था कि अपना पेट भर लेना और मौक़ा मिले तो दूसरे कमज़ोरों के गले में उंगली डालकर ज़िन्दगी की रोटी का छोटे से छोटासा निवाला निकाल लेना न सिर्फ़ बुरा नहीं समझा जाता था बल्कि कमाल ख़याल किया जाता था. दिलों में एक दूसरे से सफ़ाई न थी, कहीं कहीं नफ़रत की आग भी भरी हुई दिखाई दे जाती थी. जीव हत्या को पाप तो ज़रूर माना और कहा जाता था. मगर ज़रा से बहाने पर ज़िन्दा आदमी को निगल जाना और दूसरे जानदारों को सुखा सुखा कर मार

جو ایک نام کے ہندستانیوں نے دوسرے نام کے ہندستانیوں پہ کھلم کھلا کر دینے کو جایز نہیں سمجھا، بلکہ اپنی ایسی حرکتوں کو مذہب، دھرم کی سیوا ٹھہرایا۔ دوسروں سے حق تو سب مانگتے تھے مگر دوسروں کا بھی کچھ اور کوئی حق ہے اور وہ ہمیں دینا چاہئے اس کا بہت لوگوں کو کم سے کم خیال آتا تھا۔ یہاں خدا بٹے ہوئے تھے، خداؤں کے نام بٹے ہوئے تھے، لباس بٹے ہوئے تھے، مکان بٹے ہوئے تھے، پوجا گھر بٹے ہوئے تھے، قبرستان اور مرگھٹ بٹے ہوئے تھے غرض جینا اور مرنا سب بٹا ہوا تھا اور ایسا لگتا تھا کہ اس دیوتاؤں کی بھارت ورش نام کی بستی میں ایک ایشور یا خدا کی نہیں چالیس کروڑ خداؤں کی ماننے والی چالیس کروڑ جنتا بستی تھی جن میں شاید نام کی اکائی کی جگہ اور کوئی اکائی نہ مانی جاتی تھی۔ نہ اس کا لحاظ کیا جاتا تھا۔ دیش کی ساری آبادی ایک بڑی اکائی کی جگہ بے شمار چھوٹی چھوٹی اکائیوں اور سماجوں میں بٹی ہوئی تھی، جن میں میل ملاپ، رشتہ ناتا اور دوسروں سے مل بیٹھنے کا سمبندھ کم سے کم تھا۔ اس لئے ہر جگہ یہ دکھائی دیتا تھا کہ اپنا پیٹ بھر لینا اور موقع ملے تو دوسرے کمزوروں کے گلے میں انگلی ڈال کر زندگی کی روٹی کا چھوٹے سے چھوٹا سا نوالا نکال لینا نہ صرف برا نہیں سمجھا جاتا تھا بلکہ کمال خیال کیا جاتا تھا۔ دلوں میں ایک دوسرے سے صفائی نہ تھی کہیں کہیں نفرت کی آگ بھی بھری ہوئی دکھائی دے جاتی تھی۔ جیو ہتیا کو پاپ تو ضرور مانا اور کہا جاتا تھا۔ مگر ذرا سے بہانے پر زندہ آدمی کو نگل جانا اور دوسرے جانداروں کو سکھا سکھا کر مار

डालना पाप नहीं समझा जाता था. लम्बी गुलामी ने मर्दानगी के जौहर और गुन खतम कर दिये थे. आम तौर पर नज़र की बुलन्दी नाम को न रही थी. धोखे बाजी और मक्कारी को वक़्त की पुकार कह कर जिन्दगी का चलन बनाया हुआ था. जो बोल सकते थे उनकी जबानें चलती छुरियाँ थीं और जो न बोल सकते थे उनमें कितनों ही के दिलों में ग़म व गुस्सा और नफ़-रत के तूफ़ान उठा करते थे. हालत यह हो रही थी कि जो हम कहते हैं उसे हर किसी को सच्चा ही समझना चाहिये क्योंकि वही सच है और जो इसके खिलाफ़ कहता है उसमें सच्चाई नाम को भी नहीं हो सकती. इस मुसीबत से न मुसलमान बचा हुआ था न हिन्दू और न किसी और मजहब का नाम लेवा. जितना मजहब की तबलीग़ या धर्म के प्रचार का ढोल पीटा जाता था, अमली लिहाज़ से अपने अपने धर्म की किसी ऊँची सच्चाई पर लोगों को उतना हो कम यक़ीन था. जो था वह भी बस नाम का. कहते कुछ थे और करते कुछ. दिखाते कुछ थे और देते थे कुछ. मुँह से शब्द कुछ निकलते थे और उनका मतलब खुद और समझा जाता था और सामने वाले को कुछ और ही समझने दिया जाता था. मजहब मजहब, और धर्म धर्म सभी पुकारते थे मगर मजहब को सही तौर पर मानने वालों का नमूना ढूँढे न मिलता था. मज-हबी किताबों की ऊँची ऊँची तफ़सीरों या टीकाओं की कोई कमी न थी मगर उनकी बड़ी बातों पर अमल करके दिखाने वाला न खुद कोई तफ़सीर करने वाला था न टीकाकार, न तबलीग़ करने वाला न प्रचारक. नई नई मजहबी जमाअतें और धार्मिक संस्थायें क़ायम

ڈالنا پاپ نہیں سمجھا جاتا تھا۔ لمبی غلامی نے مردانگی کے جوہر اور گن ختم کر دئے تھے۔ عام طور پر نظر کی بلندی نام کو نہ رہی تھی۔ دھوکے بازی اور مکاری کو وقت کی پکار کہہ کر زندگی کا چلن بنایا ہوا تھا۔ جو بول سکتے تھے ان کی زبانیں چلتی چھریاں تھیں جو نہ بول سکتے تھے ان میں کتنوں ہی کے دل میں غم و غصہ اور نفرت کے طوفان اٹھا کرتے تھے۔ حالت یہ ہو رہی تھی کہ جو ہم کہتے ہیں اسے ہر کسی کو سچا ہی سمجھنا چاہیے کیونکہ وہی سچ ہے اور جو اس کے خلاف کہتا ہے اس میں سچائی نام کو بھی نہیں ہو سکتی۔ اس مصیبت سے نہ مسلمان بچا ہوا تھا نہ ہندو اور نہ کسی اور مذہب کا نام لیوا۔ جتنا مذہب کی تبلیغ یا دھرم کے پرچار کا ڈھول پیٹا جاتا تھا، عملی لحاظ سے اپنے اپنے دھرم کی کسی اونچی سچائی پر لوگوں کو اتنا ہی کم یقین تھا۔ جو تھا وہ بھی بس نام کا۔ کہتے کچھ تھے اور کرتے کچھ۔ دکھاتے کچھ تھے اور دیتے تھے کچھ۔ منہ سے شبد کچھ نکلتے تھے اور ان کا مطلب خود اور سمجھا جاتا تھا اور سامنے والے کو کچھ اور ہی سمجھنے دیا جاتا تھا۔ مذہب مذہب، اور دھرم دھرم سبھی پکارتے تھے مگر مذہب کو صحیح طور پر ماننے والوں کا نمونہ ڈھونڈھے نہ ملتا تھا۔ مذہبی کتابوں کی اونچی اونچی تفسیروں یا ٹیکاؤں کی کوئی کمی نہ تھی مگر ان کی بڑی باتوں پر عمل کر کے دکھانے والا نہ خود کوئی تفسیر کرنے والا تھا نہ ٹیکا کار، نہ تبلیغ کرنے والا نہ پرچارک۔ نئی نئی مذہبی جماعتیں اور دھارمک سنستھائیں قائم

करने या समाज बनाने या दूसरों को अपने धर्म में लेने का जज़्बा और जोश सभी में था पर जो भी किसी नये गिरोह में आजाता था, चन्द दिन की सैर के बाद पछताता था और घबरा कर भागता था, या फिर वहीं रह कर वह बोले पन के साथ अपनी कमियों को छिपाता था. दीन धर्म के जोशीले प्रचारक बातों बातों में हवाई क़िले बहुत बनाते थे पर अमली तौर पर सुख शान्ति का घिरौंदा भी बना कर दिखाने वाला कोई न था.

इसलिये आज नई बातें कहने और रंगीन सपने देखने और दिखाने की कोई ज़रूरत न थी. किसी नये मज़हब या धर्म और मज़हबी या क़ानूनी किताब की भी ज़रूरत न थी क्योंकि यह सब चीज़ें पहले से मौजूद हैं और इनमें कुछ घटाने बढ़ाने की ज़रूरत न थी. हाँ इसकी और सिर्फ़ इस बात की ज़रूरत थी कि इन किताबों में आई हुई असिल और बुनियादी सच्चाइयों को रवायतों (परम्पराओं), रिवाजों, ग़लत फ़हमियों और झूटे वहमों के परदे से निकाल कर, छान फटक कर सादी से सादी सूरत में दुनिया के सामने लाया जाय और फिर यह काम कर चुकने के बाद सबसे बड़ी ज़रूरत इस बात की थी कि कोई ख़ुदा का बन्दा इन छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी गिनी चुनी सच्चाइयों के रास्ते पर, जो सदा से हैं और सदा रहेंगी, बिना हिचकिचाहट के निडर होकर मज़बूत और संभले हुए क़दमों के साथ चलकर और पार हो कर दिखादे. दुनिया की कोई ताक़त, कोई डर, कोई लालच, कोई लाग लगाव, कोई तालुक़, कोई मुहब्बत और कोई नफ़रत उसे इस सच्चे रास्ते से हटा न सके. हिमालय परबत अपनी जगह से हट जाय पर वह ख़ुदा का बन्दा

کرنے یا سماج بنانے یا دوسروں کو اپنے دھرم میں لینے کا جذبہ اور جوش سبھی میں تھا پر جو بھی کسی نئے گروہ میں آجاتا تھا، چند دن کی سیر کے بعد پچھتاتا تھا اور گھبرا کر بھاگتا تھا، یا پھر وہیں رہ کر بڑ بولے پن کے ساتھ اپنی کمیوں کو چھپاتا تھا. دین دھرم کے جوشیلے پرچارک باتوں باتوں میں ہوائی قلعے بہت بناتے تھے پر عملی طور پر سکھ شانتی کا گھروندہ بھی بنا کر دکھانے والا کوئی نہ تھا.

اس لئے آج نئی باتیں کہنے اور رنگین سپنے دیکھنے اور دکھانے کی کوئی ضرورت نہ تھی. کسی نئے مذہب یا دھرم اور مذہبی یا قانونی کتاب کی بھی ضرورت نہ تھی کیونکہ یہ سب چیزیں پہلے سے موجود ہیں اور ان میں کچھ گھٹانے بڑھانے کی ضرورت نہ تھی. ہاں اس کی اور صرف اس بات کی ضرورت تھی کہ ان کتابوں میں آئی ہوئی اصل اور بنیادی سچائیوں کو روایتوں (پرمپراؤں)، رواجوں، غلط فہمیوں اور جھوٹے وہموں کے پردے سے نکال کر، چھان پھٹک کر سادی سے سادی صورت میں دنیا کے سامنے لایا جائے اور پھر یہ کام کر چکنے کے بعد سب سے بڑی ضرورت اس بات کی تھی کہ کوئی خدا کا بندہ ان چھوٹی سے چھوٹی اور بڑی سے بڑی گنی چنی سچائیوں کے راستے پر، جو سدا سے ہیں اور سدا رہیں گی، بنا ہچکچاہٹ کے نڈر ہوکر مضبوط اور سنبھلے ہوئے قدموں کے ساتھ چل کر اور پار ہوکر دکھادے. دنیا کی کوئی طاقت، کوئی ڈر، کوئی لالچ، کوئی لاگ لگاؤ، کوئی تعلق، کوئی محبت اور کوئی نفرت اسے اس سچے راستے سے

बाल बराबर भी इन सच्चाइयों से न हटे और अपनी सच्चाई से दोस्ती और आम इन्सानों के प्रेम और दुनिया के सुख शान्ति की मुहब्बत के लिये अगर उसको गोली भी खानी पड़े तो बिना झिझक हँसते हुए चेहरे से खुले सीने पर गोली खाये और हँसता, मुस्कराता, बिना आह किये अपना फ़र्ज़ पूरा करके उसी गोद में वापस चला जाय जिस गोद से आया था.

'हाफ़िज़' शीराज़ी ने अपने एक शेर में कहा है—

"अगर पवित्रता का दूत मदद करे तो जो कुछ
हज़रत ईसा ने किया था और लोग भी कर सकते हैं."

ख़ुदा का शुक्र है कि वह पाक और शानदार नमूना हमको गान्धी जी के जीवन में नज़र आता है. उन्हों ने गोलियों से छलनी हो जाने वाले अपने सीने से बहते हुए लहू की एक एक बूँद से साबित करदिया कि ख़ुदा के अच्छे बन्दे और सच्चाई के पुजारी ऐसे होते हैं. इन्सानियत का धर्म यही है और मज़हबों के अन्दर की रूह को एक समझने वालों का यही धर्म होता है. वह अपने लिये कुछ नहीं चाहा करते. आम लोग जिनको ग़ैर समझा करते हैं वह उनको भी अपना ही समझते हैं. उनकी नज़र में अपने और ग़ैर का सवाल ही नहीं होता. वह तो सब बातों को सचाई और बेग़रज़ी की खरी और ऊंची कसौटी पर कस कर देखा करते हैं. किसी सचाई को ज़ाहिर करने के लिए छोटी मोटी चीज़ का क्या सवाल है, वह अपनी जान तक क़ुरबान कर दिया करते हैं.

गांधी जी ने कहा था कि वह अदम तशद्दुद या अहिंसा के हथियारों से जेहाद करके हिन्दुस्तान को बिदेशी राज से निजात

بال برابر بھی ان سچائیوں سے نہ ہٹے اور اپنی سچائی سے دوستی اور عام انسانوں کے پریم اور دنیا کے سُکھ شانتی کی محبت کے لئے اگر اس کو گولی بھی کھانی پڑے تو بنا جھجک ہنستے ہوئے چہرے سے کھلے سینے پر گولی کھائے اور ہنستا، مسکراتا، بنا آہ کئے اپنا فرض پورا کرکے اُسی گود میں واپس چلا جائے جس گود سے آیا تھا.

حافظ شیرازی نے اپنے ایک شعر میں کہا ہے—

"اگر پوترتا کا دوت مدد کرے تو جو کچھ
حضرت عیسیٰ نے کیا تھا اور لوگ بھی کر سکتے ہیں."

خدا کا شکر ہے کہ یہ پاک اور شان دار نمونہ ہم کو گاندھی جی کے جیون میں نظر آتا ہے. انھوں نے گولیوں سے چھلنی ہو جانے والے اپنے سینے سے بہتے ہوئے لہو کی ایک ایک بوند سے ثابت کر دیا کہ خدا کے اچھے بندے اور سچائی کے پجاری ایسے ہوتے ہیں. انسانیت کا دھرم یہی ہے اور مذہبوں کے اندر کی روح کو ایک سمجھنے والوں کا یہی دھرم ہوتا ہے. وہ اپنے لئے کچھ نہیں چاہا کرتے. عام لوگ جن کو غیر سمجھا کرتے ہیں وہ ان کو بھی اپنا ہی سمجھتے ہیں. ان کی نظر میں اپنے اور غیر کا سوال ہی نہیں ہوتا. وہ تو سب باتوں کو سچائی اور بے غرضی کی کھری اور اونچی کسوٹی پر کس کر دیکھا کرتے ہیں. کسی سچائی کو ظاہر کرنے کے لئے چھوٹی موٹی چیز کا کیا سوال ہے، اپنی جان تک قربان کر دیا کرتے ہیں.

گاندھی جی نے کہا تھا کہ وہ عدم تشدد یا اہنسا کے ہتھیاروں سے جہاد کرکے ہندوستان کو بدیشی راج سے نجات

दिखायेंगे. याद रखिये, 'हिन्दुस्तान छोड़ दो' का नारा उन्होंने सन् ४२ में नहीं बल्कि सन् १९०८ में 'हिन्द स्वराज' में लगाया था. सन् ४२ में तो उसको सिर्फ़ नया रूप देकर दोहराया था. और १५ अगस्त को दुनिया ने देख लिया कि अंग्रेज़ों ने आप ही आप इस अहिंसा के पुजारी के आगे हथियार डाल दिये. दुनिया ने यह भी देख लिया कि ऐटम बम से बड़ी ताक़त भी दुनिया में है जिसका नाम रूहानी ताक़त या आत्मिक बल है. आज तक तो यह शेर सिर्फ़ शायरी ही था कि—

'इस सादगी पे कौन न मर जाय ए ख़ुदा
लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं.'

पर गांधी जी ने अपने अमल से दिखा दिया कि यह शायरी नहीं सच्ची बात है.

'हिन्दुस्तान छोड़ दो' की लड़ाई में गांधी जी के साथ एक तो वह लोग थे जिनका ईमान और धर्म यह था कि दुनिया की हर झूटी ताक़त का मुक़ाबला अहिंसा से किया जा सकता है. लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि गांधी जी की फ़ौज में ऐसे बहादुर सिपाहियों की तादाद बहुत थोड़ी थी. और जो थी भी उनमें सबसे बड़े बहादुर ख़ुद गांधी जी थे. बाक़ी सिपाही, जो तादाद में कुछ कम न थे बल्कि बहुत ज़्यादा थे, वह अहिंसा पर विश्वास न रखते थे क्योंकि यह उनके ईमान का हिस्सा नहीं था. उन्होंने अहिंसा को पालिसी या चाल के तौर पर अपनाया था. इस लिये उन्होंने जिस हद तक इस सच्चाई को मान लिया था उसका उनको इतना फल ज़रूर मिला कि बिना लड़े भिड़े और ख़ून बहाये उनका देश आज थोड़ा

دلائیں گے. یاد رکھئے، 'ہندستان چھوڑ دو' کا نعرہ اُنھوں نے سنہ ۴۲ء میں نہیں بلکہ سنہ ۱۹۰۸ء میں 'ہند سوراج' میں لگایا تھا. سنہ ۴۲ء میں تو اس کو صرف نیا روپ دے کر دُہرایا تھا. اور ۱۵ اگست کو دُنیا نے دیکھ لیا کہ انگریزوں نے آپ ہی آپ اِس اہنسا کے پجاری کے آگے ہتھیار ڈال دئے. دُنیا نے یہ بھی دیکھ لیا کہ ایٹم بم سے بڑی طاقت بھی دُنیا میں ہے جس کا نام روحانی طاقت یا آتمک بل ہے. آج تک تو یہ شعر صرف شاعری ہی تھا کہ—

اِس سادگی پہ کون نہ مر جائے اے خدا
لڑتے ہیں اور ہاتھ میں تلوار بھی نہیں،

پر گاندھی جی نے اپنے عمل سے دکھا دیا کہ یہ شاعری نہیں سچی بات ہے.

'ہندستان چھوڑ دو' کی لڑائی میں گاندھی جی کے ساتھ ایک تو وہ لوگ تھے جن کا ایمان اور دھرم یہ تھا کہ دُنیا کی ہر جھوٹی طاقت کا مقابلہ اہنسا سے کیا جا سکتا ہے. لیکن اِس میں کوئی شک نہیں کہ گاندھی جی کی فوج میں ایسے بہادر سپاہیوں کی تعداد بہت تھوڑی تھی. اور جو تھی بھی اُن میں سب سے بڑے بہادر خود گاندھی جی تھے. باقی سپاہی، جو تعداد میں کچھ کم نہ تھے بلکہ بہت زیادہ تھے، وہ اہنسا پر وشواس نہ رکھتے تھے کیونکہ یہ اُن کے ایمان کا حصہ نہیں تھا. انھوں نے اہنسا کو پالیسی یا چال کے طور پر اپنایا تھا. اِس لئے انھوں نے جس حد تک اِس سچائی کو مان لیا تھا اُس کا اُن کو اِتنا پھل ضرور ملا کہ بنا لڑے بھڑے اور خون بہائے اُن کا دیش آزاد

गया. पर चूँकि उनमें से बहुतों को अहिंसा पर पूरा विश्वास न था, इसलिये आम तौर पर अलग अलग सूरतों और नये नये रूपों में पालिसी बदलने लगी. पर गांधी जी इस मैदान में अकेले खड़े रहे. वह लोग जो अहिंसा को सिर्फ एक पालिसी के रूप में मानते थे, उनमें से अकसर कुछ का कुछ सोचने, कहने, लिखने यहाँ तक कि करने भी लगे. इस का नतीजा यह हुआ कि आखिरी इम्तिहान में गांधी जी ने शहादते कुबरा या महा बलिदान का दरजा पाकर एक कभी न मिटने वाली जिन्दगी पाली है, ऐसी जिन्दगी जिस पर दुनिया हमेशा रश्क या ईर्षा करेगी. और बाकी दुनिया अहिंसा का यह करशमा देखने के बावजूद हैरान और परेशान है कि कहें तो क्या कहें, और करें तो क्या करें, ? गान्धी जी के रास्ते पर चलने की ठानें तो मौत सामने है और पालिसी पर चलें तो क़दम नहीं उठते, अन्दर से दिल बैठे जाते हैं.

दूसरी चीज यह थी कि वह हिन्दू-धर्म, हिन्दू समाज या हिन्दुस्तान के माथे से छूत छात के कलंक के टीके को उतार देना चाहते थे. पर किस तरह ? क्या जोर से और जबरदस्ती ? नहीं, क्योंकि एक तो हिन्सा उनके असूल के खिलाफ थी, दूसरे नफ़सियाती या मनोवैज्ञानिक तौर पर हमें मालूम है कि कोई ताक़त जबरदस्ती किसी एक को दूसरे से मुहब्बत भरे मेल जोल और भेद भाव न रखने पर मजबूर नहीं कर सकती. हरिजनों का नाम ले लेकर कौंसिलों की मेम्बरियां और शायद चन्द आदमियों के लिये कुछ छोटी मोटी नौकरियां ढूँढने वाले हरिजनों के लीडर ऊँची जात के हिन्दुओं में बेचारे अछूतों के खिलाफ नफ़रत बढ़ाते गये और उनके

گیا۔ پر چونکہ ان میں سے بہتوں کو اہنسا پر پورا وشواس نہ تھا، اس لئے عام طور پر الگ الگ صورتوں اور نئے نئے روپوں میں پالیسی بدلنے لگی۔ پر گاندھی جی اس میدان میں اکیلے کھڑے رہے۔ وہ لوگ جو اہنسا کو صرف ایک پالیسی کے روپ میں مانتے تھے، ان میں سے اکثر کچھ کا کچھ سوچنے، کہنے، لکھنے یہاں تک کہ کرنے بھی لگے۔ اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ آخری امتحان میں گاندھی جی نے شہادتِ کبریٰ یا مہابلیدان کا درجہ پاکر ایک کبھی نہ مٹنے والی زندگی پالی ہے، ایسی زندگی جس پر دنیا ہمیشہ رشک یا ایرشیا کرے گی اور باقی دنیا اہنسا کا یہ کرشمہ دیکھنے کے باوجود حیران اور پریشان ہے کہ کہیں تو کیا کہیں، اور کریں تو کیا کریں، ؟ گاندھی جی کے راستے پر چلنے کی ٹھانیں تو موت سامنے ہے اور پالیسی پر چلیں تو قدم نہیں اٹھتے، اندر سے دل بیٹھے جاتے ہیں۔

دوسری چیز یہ تھی کہ وہ ہندو دھرم، ہندو سماج یا ہندستان کے ماتھے سے چھوت چھات کے کلنک کے ٹیکے کو اتار دینا چاہتے تھے۔ پر کس طرح ؟ کیا زور سے اور زبردستی ؟ نہیں، کیونکہ ایک تو ہنسا ان کے اصول کے خلاف تھی، دوسرے نفسیاتی یا منوویگیانک طور پر ہمیں معلوم ہے کہ کوئی طاقت زبردستی کسی ایک کو دوسرے سے محبت بھرے میل جول اور بھید بھاو نہ رکھنے پر مجبور نہیں کر سکتی۔ ہریجنوں کا نام لے لے کر کونسلوں کی ممبریاں اور شاید چند آدمیوں کے لئے کچھ چھوٹی موٹی نوکریاں ڈھونڈھنے والے ہریجنوں کے لیڈر اونچی جات کے ہندوؤں میں بے چارے اچھوتوں کے خلاف نفرت بڑھاتے گئے اور ان کے

मुक़ाबले में गांधी जी खुद हरिजन बनकर उनके लिये भीक मांगने लगे. उनका काम आप करने लगे और वह लोग जो उनके पास आते थे, उनको भी यही सबक़ पढ़ाने लगे कि वह काम जिसके कारन अछूतों को अछूत समझा जाता है. तुम भी किया करो जिसमें कि तुमको पता लगे कि यह काम कितना ज़रूरी है और इसके करने वाले का हमें कितना एहसान मानना चाहिये.

अंग्रेज़ ने सादगी से या चालाकी से चाहा कि वह हिन्दुओं और अछूतों को क़ानूनी तौर पर अलग करदे. अगर ऐसा हो जाता तो ग़रीबी और मुसीबत का मारा हरिजन सदा अछूत ही रहता. गान्धी जी जेल में थे. इन्होंने इसके ख़िलाफ़ जेल में बैठे बैठे जेहाद शुरू किया और सन् ३२ में यरवदा मन्दिर ही में हरिजनों को इस बरबादी से बचाने के लिये अपनी जान की बाज़ी लगादी. अंग्रेज़ों को झुकना पड़ा और हरिजनों के झूटे हमदर्दों को भी झुकना पड़ा और क़ानूनी तौर पर मान लिया गया कि अछूत हिन्दू समाज का एक भाग या पिछड़ा हुआ हिस्सा हैं और उनके इन्सानी हक़ वही हैं जो किसी ऊँचे से ऊँचे हिन्दू के.

अपने जीवन की आख़िरी साँस तक गांधी जी हरिजन और ब्राह्मण के भेद को मिटाने के लिये ऊँची जात के पत्थर दिलों को पिघलाते, नर्माते और उनके पुराने ज़माने से चले आते हुए ज़ुल्म और बेइन्साफ़ी पर उनको शर्माते रहे. उन्हीं की तालीम का नतीजा है कि हिन्दुस्तानने यहभी देख लिया कि एक ब्राह्मण लड़की की शादी एक कम्या के हरिजन से हुई और इस पर न कोई सनातनी चिल्लाया न किसी बड़े हिन्दू लीडर को आवाज़ उठाने की हिम्मत

مقابلے میں گاندھی جی خود ہریجن بن کر ان کے لئے بھیک مانگنے لگے. ان کا کام آپ کرنے لگے اور وہ لوگ جو ان کے پاس آتے تھے ان کو بھی یہی سبق پڑھانے لگے کہ وہ کام جس کے کارن اچھوتوں کو اچھوت سمجھا جاتا ہے. تم بھی کیا کرو جس میں کہ تم کو پتہ لگے کہ یہ کام کتنا ضروری ہے اور اس کے کرنے والے کا ہمیں کتنا احسان ماننا چاہئے.

انگریز نے سادگی سے یا چالاکی سے چاہا کہ وہ ہندوؤں اور اچھوتوں کو قانونی طور پر الگ کردے. اگر ایسا ہو جاتا تو غریبی اور مصیبت کا مارا ہریجن سدا اچھوت ہی رہتا. گاندھی جی جیل میں تھے. انھوں نے اس کے خلاف جیل میں بیٹھے بیٹھے جہاد شروع کیا اور ۳۲ سنہ میں یروڈا مندر ہی میں ہریجنوں کو اس بربادی سے بچانے کے لئے اپنی جان کی بازی لگادی. انگریزوں کو جھکنا پڑا اور ہریجنوں کے جھوٹے ہمدردوں کو بھی جھکنا پڑا اور قانونی طور پر مان لیا گیا کہ اچھوت ہندو سماج کا ایک بھاگ یا پچھڑا ہوا حصہ ہیں اور ان کے انسانی حق وہی ہیں جو کسی اونچے سے اونچے ہندو کے.

اپنے جیون کی آخری سانس تک گاندھی جی ہریجن اور براہمن کے بھید کو مٹانے کے لئے اونچی ذات کے پتھر دلوں کو پگھلاتے، نرماتے اور ان کے پرانے زمانے سے چلے آتے ہوئے ظلم اور بے انصافی پر ان کو شرماتے رہے. انھیں کی تعلیم کا نتیجہ ہے کہ ہندوستان نے یہ بھی دیکھ لیا کہ ایک براہمن لڑکی کی شادی ایک کم کے ہریجن سے ہوئی اور اس پر نہ کوئی سناتنی چلایا نہ کسی بڑے ہندو لیڈر کو آواز اٹھانے کی ہمت

हुई. यह तो शुरूआत है अंत तो यह होगा कि ब्राह्मण और हरिजन में भेद तो क्या शायद यह नाम भी लोगों को याद न रहें.

तीसरी चीज हिन्दू मुस्लिम एकता थी. उन मुसलमान फ़क़ीरों और संतों को तो शायद कोई जानता भी नहीं जो इसलामी देशों से प्रेम, एकता और ऊँच-नीच के भेद मिटाने के संदेश की मधुर बंसरी बजाते हुये यहाँ आये. हाँ, मुसलमान विजेताओं (फ़ातेहों) के झूठे सच्चे क़िस्सों से हिन्दुस्तान गूंज रहा है. मुसलमान आये और यहीं बस गये. उन्होंने हिन्दुस्तान को अपना देश बनाया, यहां की हर चीज को अपनाया और अपनी बहुत सी चीजें यहां के लोगों के सामने रख दीं. उनके समय में मजहब के झगड़े कम होते थे. ताक़तवरों में आपस में लड़ाई जरूर होती थी लेकिन यह नहीं था कि उस लड़ाई में हिन्दू मुसलमान के नाम से झगड़े होते हों. हिन्दू-हिन्दू और मुसलमान-मुसलमान और अक्सर हिन्दू राजाओं की तरफ़से मुसलमान और मुसलमान बादशाहों की तरफ़ से हिन्दू लड़ते रहे हैं. फ़ौजें लड़ा करती थीं और हिन्दू मुसलमान शहरों, क़स्बों और गावों में चैन की बंसी बजाया करते थे. किसी जमाने में किसी किसी बादशाह या उसके कारिन्दों से भूलें भी हुईं. आज भी ऐसी कोई सरकार नहीं दिखाई जा सकती कि उसका और उसके कारिन्दों का दामन भूलों के धब्बों से पाक हो. लेकिन मतलबी और खुदगरज लोगों का बुरा हो कि उन्होंने 'लड़ाओ और काम निकालो' की पालिसी पर चलाने वालों के बहकाने में आकर मुसलमान बादशाहों की हर झूठी सच्ची भूल का ढिंढोरा तो पीटा मगर

ہوئی۔ یہ تو شروعات ہے انت تو وہ ہوگا کہ براہمن اور ہریجن میں بھید تو کیا شاید یہ نام بھی لوگوں کو یاد نہ رہیں۔

تیسری چیز ہندو مسلم ایکتا تھی۔ ان مسلمان فقیروں اور سنتوں کو تو شاید کوئی جانتا بھی نہیں جو اسلامی دیشوں سے پریم، ایکتا اور اونچ نیچ کے بھید مٹانے کے سندیش کی مدھور بنسری بجاتے ہوئے یہاں آئے۔ ہاں، مسلمان وجیتاؤں (فاتحوں) کے جھوٹے سچے قصوں سے ہندوستان گونج رہا ہے۔ مسلمان آئے اور یہیں بس گئے۔ انھوں نے ہندوستان کو اپنا دیش بنایا۔ یہاں کی ہر چیز کو اپنایا اور اپنی بہت سی چیزیں یہاں کے لوگوں کے سامنے رکھ دیں۔ ان کے سمے میں مذہب کے جھگڑے کم ہوتے تھے۔ طاقتوروں میں آپس میں لڑائی ضرور ہوتی تھی لیکن یہ نہیں تھا کہ اس لڑائی میں ہندو مسلمان کے نام سے جھگڑے ہوتے ہوں۔ ہندو ہندو اور مسلمان مسلمان اور اکثر ہندو راجاؤں کی طرف سے مسلمان اور مسلمان بادشاہوں کی طرف سے ہندو لڑتے رہے ہیں۔ فوجیں لڑا کرتی تھیں اور ہندو مسلمان شہروں، قصبوں اور گاؤں میں چین کی بنسی بجایا کرتے تھے۔ کسی زمانے میں کسی کسی بادشاہ یا اس کے کارندوں سے بھولیں بھی ہوئیں۔ آج بھی ایسی کوئی سرکار نہیں دکھائی جا سکتی کہ اس کا اور اس کے کارندوں کا دامن بھولوں کے دھبوں سے پاک ہو۔ لیکن مطلبی اور خودغرض لوگوں کا برا ہو کہ انھوں نے 'لڑاؤ اور کام نکالو' کی پالیسی پر چلنے والوں کے بہکانے میں آکر مسلمان بادشاہوں کی ہر جھوٹی سچی بھول کا ڈھنڈورا تو پیٹا

हर बात को बुरे-बुरे रूप में पेश किया और इन्हीं कहानियों को फैला फैला कर हिन्दू मुसलमानों में दुश्मनी की वह बुनियाद डाली जिसका नतीजा हमारे सामने है.

अगरचे यह बिलकुल सच्ची बात है कि अगर दोनों के दिलों में चोर न होता तो दोनों के अगुवा आम जनता को इस ग़लतफ़हमी और बरबादी से बचा सकते थे. पर ऐसा नहीं हुआ. एक सच्ची बात को झुटलाने के लिए लाखों आवाज़ें उठती थीं. एक इंसाफ़ की बात को मलियामेट करने के लिये हज़ारों उल्टे सीधे तरीक़े अख़्तियार किये जाते थे. सच्चाई दब जाती थी और झूट पनपता दिखाई पड़ता था. उसमें ग़लती दोनों की थी. दोनों ही तरफ़ हटधर्मी और ज़िद काम कर रहा था. आख़िर छिपे विचारों ने शब्दों का रूप धारण किया, दिल की बात मुंह पर आई और मुंह की बात मारकाट और तबाही व बरबादी की सूरत अख़्तियार करने लगी. बरबादी में न मुसलमानों ने कमी का न हिन्दुओं ने और न सिक्खों ने. कोई नहीं कह सकता कि उसने पाप नहीं किया. सबके हाथ ख़ून में रंगे हुये हैं. सबके दामन धब्बों से धूप-छाँव बने हुये हैं.

कुछ भी हो, देश के दो टुकड़े हो गये. नफ़रत इस पर भी कम नहीं हुई. पच्छिम वालों के ज़ुल्मों का बदला पूरब के बेगुनाह लोगों से लिया गया. और पूरब वालों की भूल का बदला पच्छिम के निर्दोष लोगों से लिया गया. इस मारकाट और तबाही व बरबादी में न बच्चा बचा न बूढ़ा, न औरत बची न मर्द, न गुनहगार बचा न बेगुनाह. एक आग थी जो चारों तरफ़ लगी हुई थी और कहीं-कहीं तो जिन लोगों को आग बुझानी चाहिये थी वह आग

ہر بات کو بُرے بُرے روپ میں پیش کیا اور انھیں کہانیوں کو پھیلا پھیلا کر ہندو مسلمانوں میں دشمنی کی وہ بنیاد ڈالی جس کا نتیجہ ہمارے سامنے ہے۔

اگرچہ یہ بالکل سچی بات ہے کہ اگر دونوں کے دلوں میں چور نہ ہوتا تو دونوں کے اگوا عام جنتا کو اِس غلط فہمی اور بربادی سے بچا سکتے تھے۔ پر ایسا نہیں ہوا۔ ایک سچی بات کو جھٹلانے کے لئے لاکھوں آوازیں اٹھتی تھیں۔ ایک انصاف کی بات کو ملیامیٹ کرنے کے لئے ہزاروں اُلٹے سیدھے طریقے اختیار کئے جاتے تھے۔ سچائی دب جاتی تھی اور جھوٹ پنپتا دکھائی پڑتا تھا۔ اُس میں غلطی دونوں کی تھی۔ دونوں ہی طرف ہٹ دھرمی اور ضد کام کر رہی تھی۔ آخر چھپے وچاروں نے شبدوں کا روپ دھارن کیا، دل کی بات مُنہ پر آئی اور مُنہ کی بات مار کاٹ اور تباہی و بربادی کی صورت اختیار کرنے لگی۔ بربادی میں نہ مسلمانوں نے کمی کی نہ ہندوؤں نے اور نہ سکھوں نے۔ کوئی نہیں کہہ سکتا کہ اُس نے پاپ نہیں کیا۔ سب کے ہاتھ خون میں رنگے ہوئے ہیں۔ سب کے دامن دھبوں سے دھوپ چھاؤں بنے ہوئے ہیں۔

کچھ بھی ہو دیش کے دو ٹکڑے ہوگئے۔ نفرت اِس پر بھی کم نہیں ہوئی۔ پچھم والوں کے ظلموں کا بدلا پورب کے بے گناہ لوگوں سے لیا گیا۔ اور پورب والوں کی بھول کا بدلا پچھم کے نردوش لوگوں سے لیا گیا۔ اِس مار کاٹ اور تباہی و بربادی میں نہ بچہ بچا نہ بڈھا، نہ عورت بچی نہ مرد، نہ گنہگار بچا نہ بے گناہ۔ ایک آگ تھی جو چاروں طرف لگی ہوئی تھی اور کہیں کہیں تو جن لوگوں کو آگ بجھانی چاہئے تھی وہ آگ

लगाने में सब के आगे नज़र आये. जो सच्चे दिल से इन्सान इन्सान की इस लड़ाई से दुखी थे वह इस आग को बुझाने के लिये हर जगह पँहुंचे, हर खतरे में कूदे और जो भी कर सकते थे करते रहे.

न मसजिद बची न मंदिर और न गुरुद्वारा. जालिमों ने धर्म स्थानों को तोड़ कर, जलाकर और नापाक करके कहीं 'धर्म की जय' कहीं 'इसलाम जिन्दाबाद' और 'अल्लाहो अकबर' और कहीं 'वाह गुरू की फ़तेह' का नारा लगाया और हिन्दुस्तान में बसने वालों के बड़े-बड़े धर्मों ने अपने मानने वालों की करतूतों के कारन शर्म से मुँह ढाँक लिये.

इस मुसीबत के वक्त भी यही एक खुदा का बन्दा था जो आगे बढ़ा और इसी ने आगे बढ़कर हिन्दू मुसलमान और सिख सभी को उनका धर्म, उनका मज़हब और उनका फ़र्ज़ याद दिलाया और कहा कि खुदा के बन्दो, इन्सान बनो, कमज़ोरों और बेगुनाहों पर हाथ मत उठाओ, खुदा के नाम पर खुदा के बेगुनाह बन्दों को मत मारो. खुदा के नाम पर बनाये हुये मसजिदों, मन्दिरों और गुरुद्वारों को मत तोड़ो फोड़ो. इन पवित्र स्थानों को तोड़ कर यह मत समझो कि तुम मज़हब धर्म और पन्थ का बोल बाला कर रहे हो. यह तो अधर्म भी नहीं पूरी हैवानियत है. चाहिये तो यह था कि तुम किसी ज़ालिम पर भी गुस्से में हाथ न उठाते लेकिन अगर ज़ालिम को माफ़ नहीं कर सकते तो उसे क़ानून के हाथ सौंप देते. लेकिन यह क्या है कि तुम ज़ुल्म में इतने आगे बढ़ गये कि कमज़ोर और बेगुनाह भी तुम्हारे गुस्से से नहीं बचे, हिन्दुओ !

لگانے میں سب کے آگے نظر آئے۔ جو سچے دل سے انسان انسان کی اِس لڑائی سے دُکھی تھے وہ اِس آگ کو بجھانے کے لئے ہر جگہ پہنچے، ہر خطرے میں کودے اور جو بھی کر سکتے تھے کرتے رہے۔

نہ مسجد بچی نہ مندر اور نہ گوردوارہ۔ ظالموں نے دھرم استھانوں کو توڑ کر، جلاکر اور ناپاک کر کے کہیں 'دھرم کی جے' کہیں 'اسلام زندہ باد' اور 'اللہ اکبر' اور کہیں 'واہ گرو کی فتح' کا نعرہ لگایا اور ہندستان میں بسنے والوں کے بڑے بڑے دھرموں نے اپنے ماننے والوں کی کرتوتوں کے کارن شرم سے مُنہ ڈھانک لئے۔

اِس مصیبت کے وقت بھی یہی ایک خدا کا بندہ تھا جو آگے بڑھا اور اِسی نے آگے بڑھ کر ہندو مسلمان اور سکھ سبھی کو اُن کا دھرم، اُن کا مذہب اور اُن کا فرض یاد دلایا اور کہا کہ خدا کے بندو، انسان بنو، کمزوروں اور بے گناہوں پر ہاتھ مت اٹھاؤ، خدا کے نام پر خدا کے بے گناہ بندوں کو مت مارو۔ خدا کے نام پر بنائے ہوئے مسجدوں، مندروں اور گوردواروں کو مت توڑو پھوڑو۔ ان پوتر استھانوں کو توڑ کر یہ مت سمجھو کہ تم مذہب دھرم اور پنتھ کا بول بالا کر رہے ہو۔ یہ تو ادھرم بھی نہیں پوری حیوانیت ہے۔ چاہئے تو یہ تھا کہ تم کسی ظالم پر بھی غصے میں ہاتھ نہ اٹھاتے لیکن اگر ظالم کو معاف نہیں کر سکتے تو اُسے قانون کے ہاتھ سونپ دیتے۔ لیکن یہ کیا ہو کہ تم ظلم میں اتنے آگے بڑھ گئے کہ کمزور اور بے گناہ بھی تمہارے غصے سے نہیں بچے، ہندوؤ،

सोचो कि क्या यही धर्म है ? मुसलमानो ! सोचो कि क्या यही इसलाम है ? और सिक्खो ! सोचो कि क्या सच्चे गुरुओं का यही प्रेम संदेश था ? ख़ुदा के घरों को, चाहे वह किसी भी नाम से बनाये गये हों, ख़ाली और पाक कर दो. उस काम के लिए जिसके लिये वह बनाये गये हैं, उन पर जबरदस्ती का क़ब्ज़ा छोड़ दो. किसी के ज़ुल्म का बदला किसी बेगुनाह से न लो क्योंकि यह किसी भी क़ानून में अच्छी बात नहीं.

लेकिन क्या यह बात गांधी जी ने सन् ४७ के आख़िर और सन् ४८ की जनवरी ही में कही थी ? नहीं, सन् २२ में भी कही थी. जब इस बड़ी बरबादी के मुक़ाबले में छोटी बरबादी हिन्दुस्तान के कुछ हिस्सों में फूट पड़ी थी. उस समय उन्हों ने २२ दिन का उपवास किया था और कहा था कि हिन्दू मुसलमानों में एकता पैदा करने के लिए अगर मुझे जान भी देनी पड़े तो मैं ख़ुशी से जान दे दूंगा. सन् ४७ के आख़िर और सन् ४८ के शुरू में यह हालत इतनी बिगड़ गई थी कि ऐसा लगता था जैसे मुसलमानों को हिन्दुस्तान में ख़तम कर दिया जायेगा. उसी तरह जिस तरह पच्छिमी पंजाब में ग़ैर मुस्लिमों को ख़तम किया गया था. वहाँ का क़िस्सा तो शायद पहले ही ख़तम हो चुका था. पर यहाँ अब इसका बदला इस तरह लिया जायेगा कि यह लोग मिट भी जाँय और रोने वाला भी कोई न रहे. लेकिन गांधी जी, जो हिन्दू घर में पैदा तो हुये थे लेकिन जिनका धर्म इन्सानियत का धर्म और जिनकी नज़र में हर इन्सान पहले इन्सान था बाद में हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई या और कुछ, वह न पाकिस्तान के हिन्दुओं पर ज़ुल्म पसन्द

سوچو کہ کیا یہی دھرم ہے؟ مسلمانو! سوچو کہ کیا یہی اسلام ہے؟ اور سکھو! سوچو کہ کیا سچے گروؤں کا یہی پریم سندیش تھا؟ خدا کے گھروں کو، چاہے وہ کسی بھی نام سے بنائے گئے ہوں، خالی اور پاک کردو۔ اُس کام کے لئے جس کے لئے وہ بنائے گئے ہیں، اُن پر زبردستی کا قبضہ چھوڑ دو۔ کسی کے ظلم کا بدلا کسی بے گناہ سے نہ لو کیوں کہ یہ کسی بھی قانون میں اچھی بات نہیں۔

لیکن کیا یہ بات گاندھی جی نے ۴۷ء کے آخر اور ۴۸ء کی جنوری ہی میں کہی تھی؟ نہیں ۲۲ء میں بھی کہی تھی۔ جب اِس بڑی بربادی کے مقابلے میں چھوٹی بربادی ہندستان کے کچھ حصوں میں پھوٹ پڑی تھی۔ اُس سمے اُنھوں نے ۲۲ دن کا اُپواس کیا تھا اور کہا تھا کہ ہندو مسلمانوں میں ایکتا پیدا کرنے کے لئے اگر مجھے جان بھی دینی پڑے تو میں خوشی سے جان دے دوں گا۔ ۴۷ء کے آخر اور ۴۸ء کے شروع میں یہ حالت اتنی بگڑ گئی تھی کہ ایسا لگتا تھا جیسے مسلمانوں کو ہندستان میں ختم کر دیا جائے گا۔ اُسی طرح جس طرح پچھمی پنجاب میں غیر مسلموں کو ختم کیا گیا تھا۔ وہاں کا قصہ تو شاید پہلے ہی ختم ہو چکا تھا۔ پر یہاں اب اِس کا بدلا اِس طرح لیا جائے گا کہ یہ لوگ مٹ بھی جائیں اور رونے والا بھی کوئی نہ رہے۔ لیکن گاندھی جی، جو ہندو گھر میں پیدا تو ہوئے تھے لیکن جن کا دھرم انسانیت کا دھرم اور جن کی نظر میں ہر انسان پہلے انسان تھا بعد میں ہندو، مسلمان، سکھ، عیسائی یا اور کچھ، وہ نہ پاکستان کے ہندوؤں پر ظلم پسند

करते थे न हिन्दुस्तान के मुसलमानों पर, वह ऐसे नाज़ुक समयमें भी जब अच्छाई बुराईयों के नीचे दब सी गई थी और ऐसा लगता था जैसे अब बुराई के अंधेरे में भलाई की रोशनी पनप ही न सकेगी, अपने चारों तरफ़ बुराई ही बुराई देखकर भी अपनी नेक आवाज़ उठाते रहे. और अब हम देख रहे हैं कि जैसे ईश्वर ने उनको इसी काम के लिये दुनिया में भेजा ही था. वही थे जिन्होंने सन् १८९३ में कमज़ोरों की हिमायत का बोड़ा उठाया था, वही थे जिन्होंने सन् १९०८ में हिन्दू मुसलमानों को एक कर देने का अज़्म (संकल्प) किया था. वही थे जिन्होंने सन् १९२२ में इसी मक़सद के लिये अपनी जान की बाज़ी लगादी थी. अब, जब कि फ़र्ज़ ने भयानक रूप धारण कर लिया था और बरबादी का ज़हर हिन्दुस्तान के दोनों हिस्सों में फैल कर दोनों को तबाही के गड्ढे में गिरा रहा था, इन्हीं ने जनवरी सन् ४८ के शुरू में इस ज़हर को दूर करने के लिये मरन व्रत रक्खा. लोगों ने देखा कि किस तरह उनकी इस क़ुरबानी से सारे हिन्दुस्तान में हलचल मच गई और देहली में सब लोगों ने उनकी शर्तें मानने का एलान किया. भड़कती हुई आग ठंडी होने लगी और सुलह व शांति का काम अच्छी तरह होने लगा. मगर ज़हर सारे बदन में फैला हुआ था. उसने सिमट कर तीन गोलियों का रूप धारण किया और मुसलमानों की जान बचाने के लिये ज़हर का वह प्याला जो मुसलमानों के लिये था पूरे का पूरा ख़ुदा के उस प्यारे बंदे ने हंसते हुये पी लिया और इस तरह, सचाई, प्रेम, और अहिंसा की दावत देने वाली आवाज़ हमेशा के लिये ख़ामोश हो गई.

کرتے تھے نہ ہندستان کے مسلمانوں پر، وہ ایسے نازک سمے میں بھی جب اچھائی بُرائیوں کے نیچے دب سی گئی تھی اور ایسا لگتا تھا جیسے اب بُرائی کے اندھیرے میں بھلائی کی روشنی پنپ ہی نہ سکے گی، اپنے چاروں طرف بُرائی ہی بُرائی دیکھ کر بھی اپنی نیک آواز اُٹھاتے رہے، اور اب ہم دیکھ رہے ہیں کہ جیسے ایشور نے اُن کو اِسی کام کے لئے دُنیا میں بھیجا ہی تھا. وہی تھے جنھوں نے سنہ ۱۸۹۳ء میں کمزوروں کی حمایت کا بیڑا اُٹھایا تھا، وہی تھے جنھوں نے سنہ ۱۹۰۸ء میں ہندو مسلمانوں کو ایک کر دینے کا عزم (سنکلپ) کیا تھا. وہی تھے جنھوں نے سنہ ۱۹۲۲ء میں اسی مقصد کے لئے اپنی جان کی بازی لگادی تھی. اب، جب کہ فرض نے بھیانک روپ دھارن کر لیا تھا اور بربادی کا زہر ہندستان کے دونوں حصّوں میں پھیل کر دونوں کو تباہی کے گڈھے میں گرا رہا تھا، انھیں نے جنوری سنہ ۴۸ء کے شروع میں اِس زہر کو دور کرنے کے لئے مرن برت رکھا. لوگوں نے دیکھا کہ کس طرح اُن کی اِس قربانی سے سارے ہندستان میں ہلچل مچ گئی اور دہلی میں سب لوگوں نے اُن کی شرطیں ماننے کا اعلان کیا. بھڑکتی ہوئی آگ ٹھنڈی ہونے لگی اور صلح و شانتی کا کام اچھی طرح ہونے لگا. مگر زہر سارے بدن میں پھیلا ہوا تھا. اُس نے سمٹ کر تین گولیوں کا روپ دھارن کیا اور مسلمانوں کی جان بچانے کے لئے زہر کا وہ پیالہ جو مسلمانوں کے لئے تھا پورے کا پورا خدا کے اُس پیارے بندے نے ہنستے ہوئے پی لیا اور اِس طرح، سچائی، پریم اور اہنسا

गांधी जी की इस बड़ी शहादत या बलिदान से हमें क्या सबक़ मिलता है ? यही कि तमाम धर्मों और मजहबों की बुनियादी सच्चाई एक है, तमाम इन्सान एक हैं. सच्चाई, आदमी आदमी की बराबरी और शांति क़ायम करने के लिये या अपने अधिकारों की माँग करने से ज्यादा जरूरी यह है कि हर हाल में सच्चाई से काम लिया जाय, इन्साफ़ से काम लिया जाय और हिंसा को दुनिया या धर्म के मामलों के सुलझाने में कोई दखल न दिया जाय. क्योंकि यह वह बला है जो सुलझती हुई बातों को उलझा देती है. अब शांति क़ायम करने और हमेशा शांति से रहने के लिये यही गुर है कि पुरानी बातों को भुलाने की कोशिश की जाय और एक दूसरे को इल्ज़ाम न दिया जाय. पुराने घावों को कुरेदा और खुजाया न जाय क्योंकि कुरेदने से घाव भरते नहीं, हरे होते हैं. हर एक दूसरों की भूल खोजने के बजाय अपनी भूलों को खोजने की कोशिश करे.

इस रोशनी में देखें तो हमें मालूम होगा कि गांधी जी का पैग़ाम और काम अवतारों, पैग़म्बरों, ऋषियों और वलियों के संदेशों और उनके काम की जान और रूह था. अगर इस अभागी दुनिया को जीना है और इज़्ज़त आबरू के साथ जीना है तो हर हाल में सच्चाई और सिर्फ़ सचाई से काम लेना होगा. हर मामले की बुनियाद इन्साफ़ और ईमानदारी पर रखनी होगी और इन्साफ़ में अपने और ग़ैर का फ़रक़ नहीं किया जायेगा. सब जानदारों से प्रेम और हमदर्दी करना होगी. कोई मसजिद में जाता है तो ज़रूर जाय मगर

گاندھی جی کی اس بڑی شہادت یا بلیدان سے ہمیں کیا سبق ملتا ہے؟ یہی کہ تمام دھرموں اور مذہبوں کی بنیادی سچائی ایک ہے، تمام انسان ایک ہیں۔ سچائی، آدمی آدمی کی برابری اور شانتی قایم کرنے کے لئے یا اپنے ادھکاروں کی مانگ کرنے سے زیادہ ضروری یہ ہے کہ ہر حال میں سچائی سے کام لیا جائے، انصاف سے کام لیا جائے اور ہنسا کو دنیا یا دھرم کے معاملوں کے سلجھانے میں کوئی دخل نہ دیا جائے۔ کیوں کہ یہ وہ بلا ہے جو سلجھتی ہوئی باتوں کو الجھا دیتی ہے۔ اب شانتی قایم کرنے اور ہمیشہ شانتی سے رہنے کے لئے یہی گر ہے کہ پرانی باتوں کو بھلانے کی کوشش کی جائے اور ایک دوسرے کو الزام نہ دیا جائے۔ پرانے گھاووں کو کریدا اور کھجایا نہ جائے کیوں کہ کریدنے سے گھاو بھرتے نہیں، ہرے ہوتے ہیں۔ ہر ایک دوسروں کی بھول کھوجنے کے بجائے اپنی بھولوں کو کھوجنے کی کوشش کرے۔

اس روشنی میں دیکھیں تو ہمیں معلوم ہوگا کہ گاندھی جی کا پیغام اور کام اوتاروں، پیغمبروں، رشیوں اور ولیوں کے سندیشوں اور ان کے کام کی جان اور روح تھا۔ اگر اس ابھاگی دنیا کو جینا ہے اور عزت آبرو کے ساتھ جینا ہے تو ہر حال میں سچائی اور صرف سچائی سے کام لینا ہوگا۔ ہر معاملے کی بنیاد انصاف اور ایمانداری پر رکھنی ہوگی اور انصاف میں اپنے اور غیر کا فرق نہیں کیا جائے گا۔ سب جان داروں سے پریم اور ہمدردی کرنا ہوگی۔ کوئی مسجد میں جاتا ہے تو ضرور جائے مگر

उसे फ़ैसला करना होगा कि मंदिर में जाने वाले भी ख़ुदा की ही इबादत करते हैं. अगरचे उस इबादत या पूजा के स्थान का नाम मसजिद नहीं है और वहां ख़ुदा अल्लाह के नाम से याद नहीं किया जाता और वहां की पूजा में जो कुछ पढ़ा जाता है वह हमारी जानी पहचानी ज़बानमें नहीं है. कोई गुरुद्वारेमें जाता है तो ख़ुशी से जाय मगर मसजिद को भी ख़ुदा का ही घर समझे. ख़ुदा को किसी भी नाम से पुकारो, किसी भी मकान में पुकारो, किसी भी ज़बान में पुकारो, वह एक ही है. अपने अपने ढंग से उसकी पूजा करो और दूसरों के ढंग पर नाक भौं न चढ़ाओ और न अपने तरीक़ों को दूसरों से मनवाने की ही कोशिश करो. इस बहस में भी न पड़ो कि दूसरों का ढंग ग़लत और तुम्हारा ही ढंग सबसे अच्छा है. उन तमाम मतभेदों को बर्दाश्त करो जो दूसरों में पाये जाते हैं. लिबास दाढ़ी और चोटी को ही असिल धर्म न समझो. अपने तरीक़ों की ख़ूबी पर इतराओ नहीं. दूसरों को ठुकराओ नहीं. क्योंकि जितना ऐसी बातों पर उलझोगे उतना ही दूसरों को अपने से दूर कर दोगे. मगर एक चीज़ ऐसी है जिसमें दो रायँ नहीं हो सकतीं. और वह है हर आदमी के साथ भलाई, इन्साफ़ और मोहब्बत. हर इन्सान के साथ भलाई से पेश आना चाहिये. किसी से बेइन्साफ़ी नहीं करनी चाहिये और सबसे मोहब्बत भरा बर्ताव करना चाहिये. हमेशा अपने हक़ से ज़्यादा दूसरों के हक़ पर ध्यान दो. आपस में जो भेद हों उनको मोहब्बत और सच्चाई से दूर करने की कोशिश करो. हर सच्चाई चाहे वह छोटी हो या बड़ी उसको अपने अमल से साबित करो. मुशकिल से मुशकिल और

اسے فیصلہ کرنا ہوگا کہ مندر میں جانے والے بھی خدا کی ہی عبادت کرتے ہیں۔ اگرچہ اس عبادت یا پوجا کے استھان کا نام مسجد نہیں ہے اور وہاں خدا اللہ کے نام سے یاد نہیں کیا جاتا اور وہاں کی پوجا میں جو کچھ پڑھا جاتا ہے وہ ہماری جانی پہچانی زبان میں نہیں ہے۔ کوئی گوردوارے میں جاتا ہے تو خوشی سے جائے مگر مسجد کو بھی خدا کا ہی گھر سمجھے۔ خدا کو کسی بھی نام سے پکارو، کسی بھی مکان میں پکارو، کسی بھی زبان میں پکارو، وہ ایک ہی ہے۔ اپنے اپنے ڈھنگ سے اس کی پوجا کرو اور دوسروں کے ڈھنگ پر ناک بھوں نہ چڑھاؤ اور نہ اپنے طریقوں کو دوسروں سے منوانے کی ہی کوشش کرو۔ اس بحث میں بھی نہ پڑو کہ دوسروں کا ڈھنگ غلط اور تمہارا ہی ڈھنگ سب سے اچھا ہے۔ ان تمام متبھیدوں کو برداشت کرو جو دوسروں میں پائے جاتے ہیں۔ لباس داڑھی اور چوٹی کو ہی اصل دھرم نہ سمجھو۔ اپنے طریقوں کی خوبی پر اتراؤ نہیں۔ دوسروں کو ٹھکراؤ نہیں۔ کیونکہ جتنا ایسی باتوں پر الجھوگے اتنا ہی دوسروں کو اپنے سے دور کر دوگے۔ مگر ایک چیز ایسی ہے جس میں دو رائیں نہیں ہو سکتیں۔ اور وہ ہے ہر آدمی کے ساتھ بھلائی، انصاف اور محبت۔ ہر انسان کے ساتھ بھلائی سے پیش آنا چاہئے۔ کسی سے بے انصافی نہیں کرنی چاہئے اور سب سے محبت بھرا برتاؤ کرنا چاہئے۔ ہمیشہ اپنے حق سے زیادہ دوسروں کے حق پر دھیان دو۔ آپس میں جو بھید ہوں ان کو محبت اور سچائی سے دور کرنے کی کوشش کرو۔ ہر سچائی چاہے وہ چھوٹی ہو یا بڑی اس کو اپنے عمل سے ثابت کرو۔ مشکل سے مشکل اور

नाजुक से नाजुक मौक़े पर भी सच्चाई और इन्साफ़ का दामन हाथ से न छोड़ो. कोई भी सच्चाई हो, उसे बाहरऔर अन्दर क़बूल करो. कोई भी बुराई हो, उसको बाहर से ज्यादा अंदर से छोड़ने की कोशिश करो, और अन्दर से ज्यादा बाहरसे. कमज़ोरी और डर से नहीं बल्कि अपने दिल से. सच्चाई पर अमल करने में धांधली से काम न लो. अपने और ग़ैर के काम के परखने केलिये एक कसौटी और एक ही तराज़ू होनी चाहिये. यही धर्म की आत्मा है और यही मज़हब की रूह है. दूसरों की भूलों को अपने लियेनमूना न बनाओ, अपनी जिन्दगी, अपने धर्म अपने मज़हब या यक़ीन के अनुसार बनाओ. हर शख्स अपना फ़र्ज़ पहचाने. दूसरा क्या करता है इसकी ज़िम्मेवारी हमपर नहीं. जो अपना फ़र्ज़ अदा करता हुआ सच्चाई पर जान दे दे वह [illegible] हिन्दू है, वही सच्चा मुसलमान है, वही सच्चा सिक्ख है, सच्चा ईसाई या सच्चा पारसी है. और जो इस गुर को भूल जायेगा वह अपने हाथ से अपने धर्म के गले पर छुरी फेरेगा.

मैं समझता हूँ, गांधीमत ही नहीं कोई मत और मज़हब भी अगर ज़िन्दा रह सकता है तो धर्म के इसी जौहर को अपने तमाम बोल और काम में बरतने से और इसके बरतने में जहाँ जहाँ और जितनी जितनी कमी और कमज़ोरी हमारे कामों में आयेगी उतना ही हम सच्चाई, धर्म, ईमान या ख़ुदासे दूर होंगे. और इसी सच्चाई से दूरी का नाम गुमराही है.

نازک سے نازک موقعے پر بھی سچائی اور انصاف کا دامن ہاتھ سے نہ چھوڑو۔ کوئی بھی سچائی ہو، اُسے باہر اور اندر قبول کرو۔ کوئی بھی بُرائی ہو، اُس کو باہر سے زیادہ اندر سے چھوڑنے کی کوشش کرو، اور اندر سے زیادہ باہر سے۔ کمزوری اور ڈر سے نہیں بلکہ اپنے دل سے۔ سچائی پر عمل کرنے میں دھاندھلی سے کام نہ لو۔ اپنے اور غیر کے کام کے پرکھنے کے لئے ایک کسوٹی اور ایک ہی ترازو ہونی چاہئے۔ یہی دھرم کی آتما ہے اور یہی مذہب کی روح ہے۔ دوسروں کی بھولوں کو اپنے لئے نمونہ نہ بناؤ، اپنی زندگی، اپنے دھرم اپنے مذہب یا یقین کے انوسار بناؤ۔ ہر شخص اپنا فرض پہچانے۔ دوسرا کیا کرتا ہے اس کی ذمے داری ہم پر نہیں۔ جو اپنا فرض ادا کرتا ہوا سچائی پر جان دے دے وہ سچا ہندو ہے، وہی سچا مسلمان ہے، وہی سچا سکھ ہے، سچا عیسائی یا سچا پارسی ہے۔ اور جو اس گُر کو بھول جائے گا وہ اپنے ہاتھ سے اپنے دھرم کے گلے پر چھری پھیرے گا۔

میں سمجھتا ہوں، گاندھی مت ہی نہیں کوئی مت اور مذہب بھی اگر زندہ رہ سکتا ہے تو دھرم کے اسی جوہر کو اپنے تمام بول اور کام میں برتنے سے اور اس کے برتنے میں جہاں جہاں اور جتنی جتنی کمی اور کمزوری ہمارے کاموں میں آئے گی اُتنا ہی ہم سچائی، دھرم، ایمان یا خدا سے دور ہوں گے۔ اور اسی سچائی سے دوری کا نام گمراہی ہے۔

तीसरी लड़ाई के बादल

(भाई एन० ए० जिनाह)

तीसरी लड़ाई का खयाल आते ही सब ही के मुँह से निकल जाता है कि अब दुनिया में तीसरी लड़ाई क्यों ? अभी-अभी तो दुनिया ने आग और अंगारों की बरखा से छुटकारा पाया है और फिर इस लड़ाई की आग में गिर जाने से जिनके बदन झुलसे हैं उन पर अभी नई खाल आती जा रही है. बड़ी-बड़ी ताक़तें कल ही तो कंधा मिला कर दुशमन से लड़ रही थीं अब किस तरह समझ में आऽगा कि फिर से लड़ाई के काले-काले बादल दूर मंडलाते दिखाई पड़ने लगे हैं. अभी तो दुशमन की तिक्का बोटी करके अपना-अपना हिस्सा बाँट लेने का काम हो खतम हुआ है. अब लड़ाई क्यों ? फिर यह भी है कि जून सन् ४५ की फ्रेस्को कानफ्रेन्स को अभी ज्यादा दिन नहीं बीते, जहाँ बैठ कर मिली जुली क़ौमों के चाटर में सबने मिलकर मिली जुली क़ौमों की एक सभा यू० एन० ओ० की बुनियाद डाली थी और डंके की चोट दुनिया में एलान किया था कि यू० एन० ओ० का काम दुनिया को हमेशा के लिये लड़ाई से बचाना होगा. यू० एन० ओ० के बनने के बाद तो दुनिया को बेफ़िकरी होने लगी और भरोसा होने लगा कि अब दुनिया में आग और अंगारों की बरखा न होगी. लोगों के दिलों का डर मिटेगा, दुनिया में सुख और शांति का बोल बाला होगा. एक तरफ़ हथियारों पर कंट्रोल होगा तो दूसरी तरफ़ आग और बारूद से

تیسری لڑائی کے بادل

(بھائی این. اے. جناح)

تیسری لڑائی کا خیال آتے ہی سب ہی کے مُنہ سے نکل جاتا ہو کہ اب دُنیا میں تیسری لڑائی کیوں ؟ ابھی ابھی تو دُنیا نے آگ اور انگاروں کی برکھا سے چھٹکارا پایا ہو اور پھر اِس لڑائی کی آگ میں گر جانے سے جن کے بدن جھُلسے ہیں اُن پر ابھی نئی کھال آتی جا رہی ہو. بڑی بڑی طاقتیں کل ہی تو کندھا ملاکر دشمن سے لڑ رہی تھیں اب کس طرح سمجھ میں آئے گا کہ پھر سے لڑائی کے کالے کالے بادل دور منڈلاتے دکھائی پڑنے لگے ہیں. ابھی تو دشمن کی تِکّا بوٹی کرکے اپنا اپنا حصّہ بانٹ لینے کا کام ہی ختم ہوا ہو. اب لڑائی کیوں ؟ پھر یہ بھی ہو کہ جون ۴۵ سنہ کی فرِیسکو کانفرنس کو ابھی زیادہ دن نہیں بیتے، جہاں بیٹھ کر مِلی جُلی قوموں کے چارٹر میں سب نے مل کر ملی جُلی قوموں کی ایک سبھا یو. این. او. کی بنیاد ڈالی تھی اور ڈنکے کی چوٹ دُنیا میں اعلان کیا تھا کہ یو. این. او. کا کام دُنیا کو ہمیشہ کے لئے لڑائی سے بچانا ہوگا. یو. این. او. کے بننے کے بعد تو دُنیا کو بے فکری ہونے لگی اور بھروسہ ہونے لگا کہ اب دُنیا میں آگ اور انگاروں کی برکھا نہ ہوگی. لوگوں کے دلوں کا ڈر مٹے گا، دُنیا میں سُکھ اور شانتی کا بول بالا ہوگا. ایک طرف ہتھیاروں پر کنٹرول ہوگا تو دوسری طرف آگ اور بارود سے

खेलने वालों की हिम्मतें टूट जायेंगी. हथियारों और तबाही फैलाने वाले जंगी सामान पर पाबन्दी लग जायेगी. यू० एन० ओ० अब किसी क़ौम के अधिकारों का ख़ून न होने देगी.

यह सब कुछ सोचने के बाद दुनिया में वह लोग भी हैं जिनके दिमाग़ आज की दुनिया में जो मामले हो रहे हैं, उन पर सोचते हैं. और जो यह भी जानते हैं कि दुनिया का गोला कितनी तेज़ चाल से अपनी कीली पर घूमता है और इस गोले पर बसने वाले किस किस तरह घूम सकते हैं. इन लोगों की आँखें दुनिया के गोले के साथ साथ घूमती हैं और जो कुछ आजकल दुनिया में हो रहा है उससे यह अपनी आँखें बन्द करना नहीं चाहते. इन लोगों का यही कहना है कि आज दुनिया की बड़ी-बड़ी ताक़तों में जो खींचातानी हो रही है और जो क़िले बंदियाँ और मोर्चा-बन्दियाँ आज हो रही हैं और जिस तरह आज यह ताक़तें अपनी-अपनी दीवारें मज़बूत कर रही हैं और नए नए रूप में, भेस बदल कर दुनिया के सामने आ रही हैं उससे यही जान पड़ता है कि दुनिया को फिर एक भयंकर तीसरी लड़ाई में झोंक दिया जायेगा. तीसरी लड़ाई होगी चाहे देर भले ही लगे. इसके कई कारन हैं. पहला तो यही है कि जिस समय हिटलर की तोपें दूर योरप में गरज रहीं थीं और बड़ी-बड़ी ताक़तें याल्टा में एक कानफ़्रेन्स में इकट्ठा थीं और जिन सबने मिलकर दुश्मन को हराया और लड़ाई जीती, आज उनके मन साफ़ नहीं हैं, और लड़ाई ख़तम होते ही हर एक अपनी-अपनी घातें मज़बूत करने की तरफ़ ज़्यादा जुटा हुआ है. यू० एन० ओ० के लोगों ही में ख़ुद इख़तिलाफ़ या मतभेद है और अगर खुल्लम-खुल्ला कम है तो

کھیلنے والوں کی ہمتیں ٹوٹ جائیں گی۔ ہتھیاروں اور تباہی پھیلانے والے جنگی سامان پر پابندی لگ جائے گی۔ یو۔ این۔ او۔ اب کسی قوم کے ادھیکاروں کا خون نہ ہونے دے گی۔

یہ سب کچھ سوچنے کے بعد دنیا میں وہ لوگ بھی ہیں جن کے دماغ آج کی دنیا میں جو معاملے ہو رہے ہیں، اُن پر سوچتے ہیں۔ اور جو یہ بھی جانتے ہیں کہ دنیا کا گولا کتنی تیز چال سے اپنی کیلی پر گھومتا ہے اور اس گولے پر بسنے والے کس کس طرح گھوم سکتے ہیں۔ ان لوگوں کی آنکھیں دنیا کے گولے کے ساتھ ساتھ گھومتی ہیں اور جو کچھ آج کل دنیا میں ہو رہا ہے اس سے یہ اپنی آنکھیں بند کرنا نہیں چاہتے۔ ان لوگوں کا یہی کہنا ہے کہ آج دنیا کی بڑی بڑی طاقتوں میں جو کھینچا تانی ہو رہی ہے اور جو قلعے بندیاں اور مورچابندیاں آج ہو رہی ہیں اور جس طرح آج یہ طاقتیں اپنی اپنی دیواریں مضبوط کر رہی ہیں اور نئے نئے روپ میں، بھیس بدل کر دنیا کے سامنے آ رہی ہیں اُس سے یہی جان پڑتا ہے کہ دنیا کو پھر ایک بھینکر تیسری لڑائی میں جھونک دیا جائے گا۔ تیسری لڑائی ہوگی چاہے دیر بھلے ہی لگے۔ اس کے کئی کارن ہیں۔ پہلا تو یہی ہے کہ جس سمے ہٹلر کی توپیں دور یورپ میں گرج رہی تھیں اور بڑی بڑی طاقتیں یالٹا میں ایک کانفرنس میں اکٹھا تھیں اور جن سب نے مل کر دشمن کو ہرایا اور لڑائی جیتی، آج اُن کے من صاف نہیں ہیں، اور لڑائی ختم ہوتے ہی ہر ایک اپنی اپنی گھاتیں مضبوط کرنے کی طرف زیادہ جُٹا ہوا ہے۔ یو۔ این۔ او۔ کے لوگوں ہی میں

اندر اندر یہ فرق اور دلوں کا مَیل بڑھتا ہی جا رہا ہے۔ اس فرق
کا بڑھنا اور قایم رہنا لڑائی کے آنے کی ایک نشانی ہے، دوسرے
دُنیا میں آج ایک طرف تو سامراجی یا شہنشاہی نظام (ویوستھا)
ہے اور دوسری طرف سامراجی اور شہنشاہی نظام کو جڑ سے کھود کر
پھینک دینے والی سامیہ وادی ویوستھا ہے۔ لڑائی کے ختم ہوتے
ہی بڑی طاقتوں کی آپس کی کانفرنسیں ابھی تک چالو ہی ہیں لیکن
کانفرنسوں میں کرسی کے آمنے سامنے بیٹھ کر ایک دوسرے کو شبہ
کی نظروں ہی سے دیکھتا ہے۔ ایک کو دوسرے کی سچائی پر بھروسا
نہیں ہے۔ یہ فرق اور سندیہ بڑھتا ہی جا رہا ہے۔ بڑی طاقتیں
لڑائی کے بعد دُنیا کی مالک بن بیٹھنے کے دُھندھلے خیالوں اور
سنہرے سپنوں میں مگن ہو رہی ہیں۔ بڑی طاقتیں چاہتی ہیں کہ
اپنے ہر طرح کے بل پر ان کے پاس والی چھوٹی یا کمزور قومیں
ان کی مٹھی میں ہوں اور اس طرح ناکہ بندی کے لئے دوسرے
مقصد حاصل ہوں۔ پچھمی یورپ اور بیچ پورب کے دیشوں میں
انگلینڈ اسی چال بازی پر تُلا ہوا ہے۔ روس بلقان، بیچ یورپ،
بیچ پورب اور روم ساگر پر ڈورے ڈال رہا ہے۔ امریکہ پونجی کے
نشے میں مست ہوکر اپنے سمندروں سے ہزاروں میل دور ایشیا میں
پہنچ کر چین اور شانت ساگر پر قلعے بندیوں کی بنیادیں ڈال ہی چکا
ہے۔ آج بیچ پورب کے دیش اور روم ساگر دُنیا کے بڑے خطرے
کی جگہیں بنی ہوئی ہیں۔ انگلینڈ امریکہ کے ڈالروں کے بل پر بیچ
پورب اور روم ساگر کے دیشوں میں جو آج مضبوطی کر رہا ہے اور یہ

अन्दर-अन्दर यह फ़रक़ और दिलों का मैल बढ़ता ही जा रहा है. इस फ़रक़ का बढ़ना और क़ायम रहना लड़ाई के आने की एक निशानी है, दूसरे दुनिया में आज एक तरफ़ तो साम्राजी या शाहनशाही निज़ाम (व्यवस्था) है और दूसरी तरफ़ साम्राजी और शाहनशाही निज़ाम को जड़ से खोद कर फेंक देने वाली साम्यवादी व्यवस्था है. लड़ाई के ख़तम होते ही बड़ी ताक़तों की आपस की कानफ़्रेन्सें अभी तक चालू ही हैं लेकिन कानफ़्रेन्सों में कुरसी के आमने सामने बैठ कर एक दूसरे को शुबह की नज़रों ही से देखता है. एक को दूसरे की सच्चाई पर भरोसा नहीं है. यह फ़रक़ और संदेह बढ़ता ही जा रहा है. बड़ी ताक़तें लड़ाई के बाद दुनिया की मालिक बन बैठने के धुंधले ख़यालों और सुनहरे सपनों में मगन हो रही हैं. बड़ी ताक़तें चाहती हैं कि अपने हर तरह के बल पर उनके पास वाली छोटी या कमज़ोर क़ौमें उनकी मुट्ठी में हों और इस तरह नाकाबन्दी के लिये दूसरे मक़सद हासिल हों. पच्छिमी योरप और बीच पूरब के देशों में इंगलैन्ड इसी चालबाज़ी पर तुला हुआ है. रूस बलक़ान, बीच योरप, बीच पूरब और रोम सागर पर डोरे डाल रहा है. अमरीका पूंजी के नशे में मस्त होकर अपने समुन्दरों से हज़ारों मील दूर एशिया में पहुँच कर चीन और शांत सागर पर क़िलेबन्दियों की बुनियादें डाल ही चुका है. आज बीच पूरब के देश और रोम सागर दुनिया के बड़े ख़तरे की जगहें बनी हुई हैं. इङ्गलैंड अमरीका के डालरों के बल पर बीच पूरब और रोम सागर के देशों में जो आज मज़बूती कर रहा है और यह

कोशिश हो रही है कि रूस को यहाँ से हटाया जाय तो रूस इस तरह यहाँ से अपनी आँखें क्यों हटायेगा जबकि रूस के अगले जीवन का सहारा यही देश हो सकते हैं. योरप की छोटी-छोटी रियासतों में यही मुक़ाबला हो रहा है. पिछले दिनों पोटसडम समझौते में यह बात तय की गई कि जर्मनी की फ़ौजी ताक़त को बिलकुल ख़तम किया जाय और जर्मनी को चार टुकड़ों में बांट कर हकूमत की जाय लेकिन जैसे ही जर्मनी से फ़ैसिज़्म और नाज़ीइज़्म बिलकुल मिट जायें तो जर्मनी में जमहूरी या लोक-तंत्र वादी हकूमत बनाई जाय. अब जर्मनी का जो हिस्सा रूस के भाग में आया है वहाँ की हकूमत में तो जर्मनी लोगों को हिस्सा दिया जा रहा है पर बरतानिया और अमरीका के बाँटे में जो हिस्से आये हैं वहाँ दूसरा हाल है. वहाँ अपने अपने माली फ़ायदे का सब से बड़ा ख़याल है. लोगों को इस बात से रोका जा रहा है कि कहीं उन हिस्सों में रूसी कम्यूनिज़्म न फैल जाय. बड़ी ताक़तें अपने बैरी जर्मनी को इतना कुचल देना चाहती हैं कि जर्मनी अगर बिलकुल मिट न सके तो इतना कमज़ोर ज़रूर हो जाय कि कोई खटका न रहे, और वहाँ की क़ीमती पैदावार और खानों की दौलत पर क़ब्ज़ा जमा रहे. फ़्रान्स की नीयत जर्मनी के उपजाऊ इलाक़ों के कोयले और लोहे पर बिगड़ी हुई है और सब यही चाहते हैं कि अपने अपने हिस्सों में जर्मन लोगों को अपने रंग में रंग दिया जाय. लेकिन दबी हुई चिन्गारी भी कभी-कभी ज्वाला का रूप ले लेती है. जर्मन क़ौम सदा के लिए मिट नहीं सकती. जर्मनी ही लड़ाई का कारन होगा. योरप की छोटी-छोटी रियासतें

کوشش ہو رہی ہے کہ روس کو یہاں سے ہٹایا جائے تو روس اس طرح یہاں سے اپنی آنکھیں کیوں ہٹائے گا جب کہ روس کے اگلے جیون کا سہارا یہی دیش ہو سکتے ہیں۔ یورپ کی چھوٹی چھوٹی ریاستوں میں یہی مقابلہ ہو رہا ہے۔ پچھلے دنوں پوٹسڈم سمجھوتے میں یہ بات طے کی گئی ہے کہ جرمنی کی فوجی طاقت کو بالکل ختم کیا جائے اور جرمنی کو چار ٹکڑوں میں بانٹ کر حکومت کی جائے لیکن جیسے ہی جرمنی سے فیسزم اور نازی ازم بالکل مٹ جائیں تو جرمنی میں جمہوری یا لوک تنتر وادی حکومت بنائی جائے۔ اب جرمنی کا جو حصہ روس کے بھاگ میں آیا ہے وہاں کی حکومت میں تو جرمنی لوگوں کو حصہ دیا جا رہا ہے پر برطانیہ اور امریکہ کے بانٹے میں جو حصے آئے ہیں وہاں دوسرا حال ہے۔ وہاں اپنے اپنے مالی فائدے کا سب سے بڑا خیال ہے۔ لوگوں کو اس بات سے روکا جا رہا ہے کہ کہیں ان حصوں میں روسی کمیونزم نہ پھیل جائے۔ بڑی طاقتیں اپنے بیری جرمنی کو اتنا کچل دینا چاہتی ہیں کہ جرمنی اگر بالکل مٹ نہ سکے تو اتنا کمزور ضرور ہو جائے کہ کوئی کھٹکا نہ رہے، اور وہاں کی قیمتی پیداوار اور کھانوں کی دولت پر قبضہ جما رہے۔ فرانس کی نیت جرمنی کے اپجاؤ علاقوں کے کوئلے اور لوہے پر بگڑی ہوئی ہے اور سب یہی چاہتے ہیں کہ اپنے اپنے حصوں میں جرمن لوگوں کو اپنے رنگ میں رنگ دیا جائے۔ لیکن دبی ہوئی چنگاری بھی کبھی کبھی جوالا کا روپ لے لیتی ہے۔ جرمن قوم سدا کے لئے مٹ نہیں سکتی۔ جرمنی ہی لڑائی کا کارن ہوگا۔ یورپ کی چھوٹی چھوٹی ریاستیں

हमेशा लड़ाई का सबब रही हैं. पोलैन्ड, आकोस्लोवेकिया योगोस्लाविया, बलगेरिया, रोमानिया, अलबानिया और ग्रीस को एक दूसरे के खिलाफ़ साम्राजी ताक़त अन्दर-अन्दर भड़का रही है. और इन रियासतों का आपस का बैर इन्हें अपनी मदद के लिये बड़ी बड़ी ताक़तों के पैरों पर गिरा रहा है. शाहनशाहयत और रूसी कम्युनिज्म का आमने सामने नहीं तो अन्दर अन्दर भरपूर मुक़ाबला हो रहा है. अमरीका और इंगलैन्ड को धड़का है कि कहीं रूसी कम्युनिज्म दुनिया में न फैल जाय, और अमरीका और इंगलैंड के रूस से विरोध का यही कारन है. रूसी कम्युनिज्म के खिलाफ़ इंगलैन्ड बीच योरप के देशों की पूरी मदद कर रहा है और चाहता है कि रूसी कम्युनिज्म के खिलाफ़ अगर वक़्त आये तो अपने दुश्मन जर्मनी से भी काम ले. इस जगह हमें इंगलैंड के कुछ नेताओं की वह बातें याद आती हैं जो उन्होंने उस वक़्त कही थीं जब कम्युनिज्म के खिलाफ़ हिटलर जोर दिखा रहा था. हिन्दुस्तान के पहले के सेक्रेटरी आफ़ स्टेट मि० एमरी ने कहा था कि "हम किसी ऐसी पालिसी पर चलने की हिम्मत नहीं कर सकते जो हमें जर्मनी, इटली और जापान के खिलाफ़ भिड़ा दे". फिर पार्लियामेन्ट के एक टोरी मेम्बर मि० ब्योरली बाक्सटर ने कहा था कि "कभी-कभी हम इस पार्लियामेन्ट के वह लोग बड़ी बेवक़ूफ़ी करते हैं जो इस बात से इन्कार करते हैं कि नेशनल सोशलिज्म में कोई अच्छाई नहीं है या हिटलर और गोयरिंग जैसे. इन्सानों की सच्चाई और साफ़ दिली से इन्कार करते हैं." पार्लियामेन्टके एक दूसरे टोरी मेम्बर सर थामस

ہمیشہ لڑائی کا سبب رہی ہیں. پولینڈ، زاکوسلوویکیا، یوگوسلوویا، بلگیریا، رومانیا، البانیا اور گریس کو ایک دوسرے کے خلاف سامراجی طاقت اندر اندر بھڑکا رہی ہے. اور اِن ریاستوں کا آپس کا بیر انھیں اپنی مدد کے لئے بڑی بڑی طاقتوں کے پیروں پر گرا رہا ہے. شاہنشاہیت اور روسی کمیونزم کا آمنے سامنے نہیں تو اندر اندر بھرپور مقابلہ ہو رہا ہے. امریکہ اور انگلینڈ کو دھڑکا ہے کہ کہیں روسی کمیونزم دنیا میں نہ پھیل جائے، اور امریکہ اور انگلینڈ کے روس سے ورودھ کا یہی کارن ہے. روسی کمیونزم کے خلاف انگلینڈ بیچ یورپ کے دیشوں کی پوری مدد کر رہا ہے اور چاہتا ہے کہ روسی کمیونزم کے خلاف اگر وقت آئے تو اپنے دشمن جرمنی سے بھی کام لے. اِس جگہ ہمیں انگلینڈ کے کچھ نیتاؤں کی وہ باتیں یاد آتی ہیں جو انھوں نے اُس وقت کہی تھیں جب کمیونزم کے خلاف ہٹلر زور دکھا رہا تھا. ہندستان کے پہلے کے سکریٹری آف اسٹیٹ مسٹر ایمری نے کہا تھا کہ "ہم کسی ایسی پالیسی پر چلنے کی ہمت نہیں کر سکتے جو ہمیں جرمنی، اٹلی اور جاپان کے خلاف بھڑا دے." پھر پارلیامنٹ کے ایک ٹوری ممبر مسٹر بیورلی باکسٹر نے کہا تھا کہ "کبھی کبھی ہم اِس پارلیامنٹ کے وہ لوگ بڑی بےوقوفی کرتے ہیں جو اِس بات سے انکار کرتے ہیں کہ نیشنل سوشلزم میں کوئی اچھائی نہیں ہے یا ہٹلر اور گوئرنگ جیسے انسانوں کی سچائی اور صاف دلی سے انکار کرتے ہیں." پارلیامنٹ کے ایک دوسرے ٹوری ممبر سر تھامس

मूर ने तो सबसे बढ़ चढ़कर हिटलर की तारीफ़ की थी. उन्होंने कहा था—"अमन और इन्साफ़ तो हिटलर की पालिसी का असल मक़सद है. हिटलर को मौक़ा दीजिये, मुझे इतमीनान है हिटलर पूरी तरह ईमानदार और सच्चे हैं."

अब यह तो खुली हुई बात है कि इंगलैंड रूस के ख़िलाफ़ हर ताक़त की मदद को तैयार है. अगर हो सके तो पर झड़े हुये जर्मनी की भी मदद करेगा. ग्रीस, टर्की और सऊदी अरब मुल्कों को अमरीका ने अभी क़र्ज़ा दिया है. इन्हीं देशों में इंग्लैंड अपना असर जमाता जा रहा है, और अगर अमरीका इन देशों को अपने हाथ में रखना चाहता है तो रूस कब चुपका बैठेगा. इस लिये कि अगर रूस ऐसा नहीं करता तो वह आज दुनिया में चारों तरफ़ से घिरा हुआ मुल्क रह जाता है और सारी दुनिया से कट जाता है. पूरबी रोमसागर, बीच पूरब और दूर पूरब के देशों में तेल के चशमे उबलते हैं और इन्हीं देशों में तीसरी लड़ाई के लिये मज़बूती से काम हो रहा है. बीच पूरब के देशों से जिस तरह बन पड़े इंगलैंड अपना नाता और भी मज़बूत करना चाहता है. यह किसी बल पर हो या लालच देकर, जैसे वहाँ की छोटी सी रियासत ट्रान्सजॉर्डन को आज़ादी देकर इंगलैंड ने उससे अपना नाता और भी मज़बूत कर लिया है. यह सब होने पर भी ग्रीस, रोमानिया, बलगेरिया, अलबानिया में एक तरफ़ साम्राजी और दूसरी तरफ़ रूसी पार्टियों में मुक़ाबला है. जर्मनी और ग्रीस में अंग्रेज़ी फ़ौजें पड़ी हैं तो रूस भी क़रीब है. मिस्र से अंग्रेज़ हटे नहीं हैं और न हटने की पूरी उम्मीद है. इंगलैंड अमरीका के

مور نے تو سب سے بڑھ چڑھ کر ہٹلر کی تعریف کی تھی۔ اُنھوں نے کہا تھا۔ "امن اور انصاف تو ہٹلر کی پالیسی کا اصل مقصد ہے۔ ہٹلر کو موقع دیجئے، مجھے اطمینان ہے ہٹلر پوری طرح ایماندار اور سچے ہیں۔"

اب یہ تو کھلی ہوئی بات ہے کہ انگلینڈ روس کے خلاف ہر طاقت کی مدد کو تیار ہے۔ اگر ہو سکے تو پر جھڑے ہوئے جرمنی کی بھی مدد کرے گا۔ گریس، ٹرکی اور سعودی عرب ملکوں کو امریکہ نے ابھی قرضہ دیا ہے۔ اِنھیں دیشوں میں انگلینڈ اپنا اثر جماتا جا رہا ہے، اور اگر امریکہ ان دیشوں کو اپنے ہاتھ میں رکھنا چاہتا ہے تو روس کب چپکا بیٹھے گا۔ اس لئے کہ اگر روس ایسا نہیں کرتا تو وہ آج دنیا میں چاروں طرف سے گھرا ہوا ملک رہ جاتا ہے اور ساری دنیا سے کٹ جاتا ہے۔ پوربی روم ساگر، بیچ پورب اور دور پورب کے دیشوں میں تیل کے چشمے اُبلتے ہیں اور اِنھیں دیشوں میں تیسری لڑائی کے لئے مضبوطی سے کام ہو رہا ہے۔ بیچ پورب کے دیشوں سے جس طرح بن پڑے انگلینڈ اپنا ناتا اور بھی مضبوط کرنا چاہتا ہے۔ یہ کسی بل پر ہو یا لالچ دے کر، جیسے وہاں کی چھوٹی سی ریاست ٹرانس جارڈن کو آزادی دے کر انگلینڈ نے اُس سے اپنا ناتا اور بھی مضبوط کر لیا ہے۔ یہ سب ہونے پر بھی گریس، رومانیا، بلگیریا، البانیا میں ایک طرف سامراجی اور دوسری طرف روسی پارٹیوں میں مقابلہ ہے۔ جرمنی اور گریس میں انگریزی فوجیں پڑی ہیں تو روس بھی قریب ہے۔ مصر سے انگریز ہٹے نہیں ہیں اور نہ ہٹنے کی پوری اُمید ہے۔ انگلینڈ امریکہ کے

डालरों के बल पर अपनी फ़ौजी ताक़त बढ़ा ही रहा है. सन् ३९ में इंगलैंड के पास उसकी फ़ौज ५ लाख थी पर सन् ४६ में (दूसरी लड़ाई के बाद) इंगलैन्ड के पास २० लाख फ़ौज थी. सन् ३८, ३९ में इंगलैन्ड अपनी फ़ौजों पर ३५ करोड़ २० लाख पौंड ख़र्च करता था और आज कल वह एक अरब १९ करोड़ ३० लाख पौंड अपनी फ़ौजों पर ख़र्च कर रहा है. इसी बारे में इस साल पार्लियामेन्ट की मज़दूर पार्टी के एक मेम्बर मि० ज़िलियाकस ने इंगलैन्ड के बड़े वज़ीर मि० ऐटली से पार्लियामेन्ट में पूछा था कि "अगर हम अमरीका या रूस से लड़ाई होने का ख़याल नहीं करते तो क्यों अपनी माली हैसियत से बाहर पहले से तीन गुनी फ़ौज रख रहे हैं?" मि० ऐटली ने गोल मोल शब्दों में जवाब दिया—"यह सवाल हर उस मुल्क से पूछा जा सकता है जिसके पास हथियार बन्द फ़ौजें रहती हैं."

यह सब कुछ जो हो रहा है, ताज्जुब की बात नहीं है. यही लड़ाई की तैयारी के मन्सूबे हैं. अमरीका और इंगलैंड रूस को चारों तरफ़ से घेर डालने की दीवारें उठा रहे हैं और रोमसागर और दूसरे समुन्दरों पर अपनी ही ताक़त क़ायम रखना चाहते हैं, पर रूस को भी इन समुन्दरों और देशों में अमल दख़ल रखने की आज ज़रूरत है. अमरीका ने चीन में अड्डा बना लिया है उसे आठ लाख पचास हज़ार डालर की मदद दी है और दूसरा जंगी सामान भी दिया है. अमरीकी फ़ौजें चीन में रखने के अलावा हवाई और समुन्दरी समझौते भी हुये हैं. अमरीका ने चीन के क़र्ज़े अदा करने की मुद्दत दस बरस और बढ़ा दी है, पर अभी तक चीन

ڈالروں کے بل پر اپنی فوجی طاقت بڑھا ہی رہا ہے. ۳۹ء میں انگلینڈ کے پاس اس کی فوج ۵ لاکھ تھی پر ۴۶ء میں (دوسری لڑائی کے بعد) انگلینڈ کے پاس ۲۰ لاکھ فوج تھی. ۳۸، ۳۹ء میں انگلینڈ اپنی فوجوں پر ۳۵ کروڑ ۲۰ لاکھ پونڈ خرچ کرتا تھا اور آج کل وہ ایک ارب ۱۹ کروڑ ۳۰ لاکھ پونڈ اپنی فوجوں پر خرچ کر رہا ہے. اسی بارے میں اس سال پارلیامنٹ کی مزدور پارٹی کے ایک ممبر مسٹر زلیاکس نے انگلینڈ کے بڑے وزیر مسٹر ایٹلی سے پارلیامنٹ میں پوچھا تھا کہ "اگر ہم امریکہ یا روس سے لڑائی ہونے کا خیال نہیں کرتے تو کیوں اپنی مالی حیثیت سے باہر پہلے سے تین گنی فوج رکھ رہے ہیں؟" مسٹر ایٹلی نے گول مول شبدوں میں جواب دیا— "یہ سوال ہر اس ملک سے پوچھا جا سکتا ہے جس کے پاس ہتھیار بند فوجیں رہتی ہیں."

یہ سب کچھ جو ہو رہا ہے، تعجب کی بات نہیں ہے یہی لڑائی کی تیاری کے منصوبے ہیں. امریکہ اور انگلینڈ روس کو چاروں طرف سے گھیر ڈالنے کی دیواریں اٹھا رہے ہیں اور روم ساگر اور دوسرے سمندروں پر اپنی ہی طاقت قایم رکھنا چاہتے ہیں، پر روس کو بھی ان سمندروں اور دیشوں میں عمل دخل رکھنے کی آج ضرورت ہے. امریکہ نے چین میں اڈا بنا لیا ہے اسے آٹھ لاکھ پچاس ہزار ڈالر کی مدد دی ہے اور دوسرا جنگی سامان بھی دیا ہے. امریکی فوجیں چین میں رکھنے کے علاوہ ہوائی اور سمندری سمجھوتے بھی ہوئے ہیں. امریکہ نے چین سے قرضے ادا کرنے کی مدت دس برس اور بڑھا دی ہے، پر ابھی تک چین

में एक तरफ़ क्योमिन्टांग और दूसरी तरफ़ कम्युनिस्ट पार्टी में झगड़ा चल रहा है, च्यांग काई शेक को अपने देश से हज़ारों मील दूर बैठे हुये अमरीका पर भरोसा है तो कम्युनिस्ट पार्टी जानती है कि चीन और रूस ज़्यादा दूर नहीं हैं. दोनों देश इतनी ही दूर हैं कि एक देश दूसरे देश के लोगों की आवाज़ें सुन सकता है. रूस और अमरीका में झड़प होने के ढंग बीच ऐशियाई देशों में भी दिखाई देते हैं. अमरीका ईरान की खाड़ी पर आँखें जमा सकता है तो रूस ईरान पर जमा ही हुआ है. दूर ऐशियाई किनारे पर बढ़ने से मालूम होता है कि अमरीका समुन्दरी दीवार शांत सागर के सहारे-सहारे बना रहा है और क़िले बंदी हो रही है. मंगोलिया में झगड़े चल रहे हैं. कोरिया भी झगड़ों में जुटा हुआ है. मंचूरिया ऊपरी हिस्से में एक भारी जंगी हैसियत रखता है. जापान में अमरीका का जेनरल मैकार्थर जापान की हर चीज़ को मिटा रहा है पर यह न भूल जाना चाहिये कि जापान की हर चीज़ को तो मिटाया जा सकता है पर जापानी क़ौम की रगों में दौड़ता हुआ ख़ून कोई नहीं बदल सकता. अगस्त सन् ४५ में जापान के द्वीप हिरोशिमा पर अमरीका ने ऐटम बम गिरा कर २५ लाख जापानियों के ख़ून में अपने हाथ रंगे हैं. यह अमरीका की अमन पंसदी का बड़ा सबूत है. इस साल जूलाई में अमरीका की आज़ादी के दिन तक़रीर करते हुए ट्रूमैन ने और बातों के साथ साथ अमन पसंदी और दुनिया की सलामती की ठीकेदारी का फिर राग अलापा है. ट्रूमैन ने भाषण में ज़ोर देकर कहा—"दुनिया में अमनचैन बड़ी हद तक इस बात पर क़ायम रहेगा कि क़ौमों में कितनी तरक़्क़ी होती है, और यू० एन० ओ० के इन्सानी हक़ोंकी हिफ़ा-

میں ایک طرف کیومنتانگ اور دوسری طرف کمیونسٹ پارٹی میں جھگڑا چل رہا ہے، چیانگ کائی شیک کو اپنے دیش سے ہزاروں میل دور بیٹھے ہوئے امریکہ پر بھروسا ہے تو کمیونسٹ پارٹی جانتی ہے کہ چین اور روس زیادہ دور نہیں ہیں. دونوں دیش اتنی ہی دور ہیں کہ ایک دیش دوسرے دیش کے لوگوں کی آوازیں سن سکتا ہے. روس اور امریکہ میں جھڑپ ہونے کے ڈھنگ بیچ ایشیائی دیشوں میں بھی دکھائی دیتے ہیں. امریکہ ایران کی کھاڑی پر آنکھیں جما سکتا ہے تو روس ایران پر جما ہی ہوا ہے. دور ایشیائی کنارے پر بڑھنے سے معلوم ہوتا ہے کہ امریکہ سمندری دیوار شانت ساگر کے سہارے سہارے بنا رہا ہے اور قلعے بندی ہو رہی ہے. منگولیا میں جھگڑے چل رہے ہیں. کوریا بھی جھگڑوں میں جٹا ہوا ہے. منچوریا اوپری حصے میں ایک بھاری جنگی حیثیت رکھتا ہے. جاپان میں امریکہ کا جنرل میکارتھر جاپان کی ہر چیز کو مٹا رہا ہے پر یہ نہ بھول جانا چاہئے کہ جاپان کی ہر چیز کو تو مٹایا جا سکتا ہے پر جاپانی قوم کی رگوں میں دوڑتا ہوا خون کوئی نہیں بدل سکتا. اگست سنہ ۴۵ میں جاپان کے دویپ ہیروشما پر امریکہ نے ایٹم بم گرا کر ۲۵ لاکھ جاپانیوں کے خون میں اپنے ہاتھ رنگے ہیں. یہ امریکہ کی امن پسندی کا بڑا ثبوت ہے. اس سال جولائی میں امریکہ کی آزادی کے دن تقریر کرتے ہوئے ٹرومین نے اور باتوں کے ساتھ ساتھ امن پسندی اور دنیا کی سلامتی کی ٹھیکیداری کا پھر راگ الاپا ہے. ٹرومین نے بھاشن میں زور دے کر کہا—"دنیا میں امن چین بڑی حد تک اس بات پر قایم رہے گا کہ قوموں میں کتنی ترقی ہوتی ہے، اور یو. این. او. کے انسانی حقوں کی حفاظت

(۴۲۸)

बात पर भी शांति का दारमदार होगा."

इसी तरह हिटलर सन् ३७ से ३९ तक दुनिया की सुलह और शांति का खूब-खूब दावा करता रहा था और दुनिया के अमन की तरफ़-दारी का खुला हुआ ढोंग रचाता रहा था. अमरीका ने हिरोशिमा और नागासाकी पर ऐटम बम गिरा कर दुनिया में जो ढिंढोरा पीटा है वह यह साबित करने के लिये है कि अमरीका दुनिया में अब सबकी जानें ले सकता है. पर यह बात तो खुली हुई है कि ऐटम बम अभी तक सिर्फ़ एक मनोवैज्ञानिक या नफ़सियाती हथियार है और इसे इस्तेमाल करने का फ़ौजी तरीक़ा अभी तक दरियाफ़्त नहीं हुआ. गहराई से देखने से यह सच्ची और ठोस बात सामने आ जाती है कि आज कल के साइन्स की उन्नति और नित नई ईजादों के ज़माने में ऐटम बम या कासमिक रेज़ पर ही आकर साइन्स की तरक़्क़ी और ईजादें ख़तम नहीं हो जातीं. साईन्स तो बड़ी तेज़ी से तरक़्क़ी करती जा रही है और न मालूम कौन-कौन नित नई ईजादें और साइन्स के चमत्कार दुनिया के सामने आते रहेंगे. ऐटम बम लड़ाई और अमन का फ़ैसला नहीं कर सकेगा. मि० स्टालिन भी यही कहते हैं. पिछले साल एक मशहूर अख़बारी नुमाइन्दे ने दूसरे सवालों के अलावा यह भी सवाल किया कि "क्या आप को यक़ीन है कि ऐटम बम पर अमरीका की ठेकेदारी अमन के लिये बड़ा ख़तरा हो सकती है?" मि० स्टालिन ने कहा—"मैं ऐटम बम को इतनी अहम चीज़ नहीं समझता जितना कि दूसरे राजनीति जानने वाले ख़याल करते हैं. वह लड़ाई का फ़ैसला ऐटम बम से नहीं कर सकते इसलिये कि ऐटम बम इस काम के लिये किसी तरह

پر بھی شانتی کا دارمدار ہوگا۔"

اسی طرح ہٹلر ۳۷ء سے ۳۹ تک دُنیا کی صلح اور شانتی کا خوب خوب دعویٰ کرتا رہا تھا اور دُنیا کے امن کی طرفداری کا کھلا ہوا ڈھونگ رچاتا رہا تھا۔ امریکہ نے ہیروشیما اور ناگاساکی پر ایٹم بم گرا کر دُنیا میں جو ڈھنڈھورا پیٹا ہے وہ یہ ثابت کرنے کے لئے ہے کہ امریکہ دُنیا میں اب سب کی جانیں لے سکتا ہے۔ پر یہ بات تو کھلی ہوئی ہے کہ ایٹم بم ابھی تک صرف ایک منوویگیانک یا نفسیاتی ہتھیار ہے اور اسکے استعمال کرنے کا فوجی طریقہ ابھی تک دریافت نہیں ہوا۔ گہرائی سے دیکھنے سے یہ سچی اور ٹھوس بات سامنے آجاتی ہے کہ آج کل کے سائنس کی ترقی اور نت نئی ایجادوں کے زمانے میں ایٹم بم یا کاسمک ریز پر ہی آکر سائنس کی ترقی اور ایجادیں ختم نہیں ہوجاتیں۔ سائنس تو بڑی تیزی سے ترقی کرتی جارہی ہے اور نہ معلوم کون کون نت نئی ایجادیں اور سائنس کے چمتکار دُنیا کے سامنے آتے رہیں گے۔ ایٹم بم لڑائی اور امن کا فیصلہ نہیں کرسکے گا۔ مسٹر اسٹالن بھی یہی کہتے ہیں۔ پچھلے سال ایک مشہور اخباری نمائندے نے دوسرے سوالوں کے علاوہ یہ بھی سوال کیا کہ "کیا آپ کو یقین ہے کہ ایٹم بم پر امریکہ کی ٹھیکیداری امن کے لئے بڑا خطرہ ہوسکتی ہے؟" مسٹر اسٹالن نے کہا— "میں ایٹم بم کو اتنی اہم چیز نہیں سمجھتا جتنا کہ دوسرے راج نیتی جاننے والے خیال کرتے ہیں۔ وہ لڑائی کا فیصلہ ایٹم بم سے نہیں کرسکتے اس لئے کہ ایٹم بم اس کام کے لئے کسی طرح

काफ़ी नहीं है ."

पिछले बरस जब बीकनी में तजरबे हो रहे थे तो हमारे देश के एक बड़े नेता ने कहा था—"यह कमज़ोर क़ौमों को डराने के लिये ढोल पीटा जा रहा हैं." अगर हम दुनिया की तारीख़ देखें तो कई जगह हमें यह बात मिलती है कि कभी-कभी हथियार और ताक़त इस्तेमाल करने के बजाय सिर्फ़ धमकाने और डराने से ही काम निकल जाता है. जो कुछ भी हो, पर कहना पड़ेगा कि अमरीका और इंगलैन्ड जो सारी दुनिया को दो हिस्सों में बाँट लेने की फ़िक्र में हैं वह एक सपना ही रहेगा. ऐशियाई देशों में अब आज़ादी की हलचल बढ़ती ही जा रही है. बरसों से जिन ऐशियाई देशों को ग़ैर क़ौमों ने एक दूसरे से अलग—थलग रक्खा है वह सारे ऐशियाई देश आज एकता की लड़ीमें बंधने के लिए क़दम बढ़ा रहे हैं. इङ्गलैन्ड की ब्रिटिश शाही अब तलवारों के बल पर क़ायम नहीं रह सकती. दुनिया अब अमन चाहती है और दुनिया में अमन सुख और शान्ति उसी वक़् हो सकती है जब बड़ी-बड़ी ताक़तें दूसरों को अपने पैरों तले कुचलने का काम बन्द करदें. क़ौमों के हक़ों की उचित रक्षा हो. दूर देशों और दुनिया के सारे समुन्दरों पर क़ब्ज़ा जमाने की जगह बड़ी ताक़तों को हर एक की चीज़ झपट लेने और दबा लेने का ख़याल छोड़ना होगा. योरप की छोटी-छोटी रियासतों को एक लड़ी में बाँधा जाय.

आज इंडोनेशिया की आज़ादी के आंदोलन को हर तरह कुचला जा रहा है. मुट्ठी भर डचों की पीठ पर बड़ी ताक़तों की भारी मदद है. अमरीका और इंग्लैन्ड इंडोनेशिया जैसे मुल्क की जंगी पोज़ी-

کافی نہیں ہی."

پچھلے برس جب بکنی میں تجربے ہو رہے تھے تو ہمارے دیش کے ایک بڑے نیتا نے کہا تھا "یہ کمزور قوموں کو ڈرانے کے لئے ڈھول پیٹا جا رہا ہی." اگر ہم دنیا کی تاریخ دیکھیں تو کئی جگہ ہمیں یہ بات ملتی ہی کہ کبھی کبھی ہتھیار اور طاقت استعمال کرنے کے بجائے صرف دھمکانے اور ڈرانے سے ہی کام نکل جاتا ہی. جو کچھ بھی ہو، پر کہنا پڑے گا کہ امریکہ اور انگلینڈ جو ساری دنیا کو دو حصّوں میں بانٹ لینے کی فکر میں ہیں وہ ایک سپنا ہی رہے گا. ایشیائی دیشوں میں اب آزادی کی ہلچل بڑھتی ہی جا رہی ہی. برسوں سے جن ایشیائی دیشوں کو غیر قوموں نے ایک دوسرے سے الگ— تھلگ رکھا ہی وہ سارے ایشیائی دیش آج ایکتا کی لڑی میں بندھنے کے لئے قدم بڑھا رہے ہیں. انگلینڈ کی برٹش شاہی اب تلواروں کے بل پر قایم نہیں رہ سکتی. دنیا اب امن چاہتی ہی اور دنیا میں امن سکھ اور شانتی اسی وقت ہو سکتی ہی جب بڑی بڑی طاقتیں دوسروں کو اپنے پیروں تلے کچلنے کا کام بند کر دیں. قوموں کے حقوں کی اچت رکشا ہو. دور دیشوں اور دنیا کے سارے سمندروں پر قبضہ جمانے کی جگہ بڑی طاقتوں کو ہر ایک کی چیز جھپٹ لینے اور دبا لینے کا خیال چھوڑنا ہوگا. یورپ کی چھوٹی چھوٹی ریاستوں کو ایک لڑی میں باندھا جائے.

آج انڈونیشیا کی آزادی کے اندولن کو ہر طرح کچلا جا رہا ہی. مٹھی بھر ڈچوں کی پیٹھ پر بڑی طاقتوں کی بھاری مدد ہی. امریکہ اور انگلینڈ انڈونیشیا جیسے ملک کی جنگی پوزیشن

इसे खूब समझते हैं. आज डच इंडोनेशिया में अपने बल पर नहीं कूद रहा है, उसकी पीठ पर दूसरों का हाथ है जो अपने मतलब के लिए इंडोनेशिया को अपनी मुट्ठी में जकड़ रखना चाहते हैं. मलाया में अंग्रेजी फौजें अपनी संगीनें जनता के सीने पर जमाने को तुली हुई हैं. बर्मा की आजादी एक धोका है. अपना उल्लू सीधा करने के लिए हिन्दुस्तान की हजारों बरस की एकता को कुचल दिया गया है.

अमरीका और इंगलैन्ड को आज रूस का बड़ा धड़का है. सन् १८०७ में जब इंगलिस्तान और फ्रांस में लड़ाई हुई तो अंग्रेजों को रूस और नेपोलियन बोनापार्ट के भूत ने सताना शुरू किया. अंग्रेजों ने अपनी सारी ताक़त सरहदी इलाक़ों में भरी. अपनी हिन्दुस्तान की नई हुकूमत की हिफ़ाज़त के मनसूबे बाँधे. अफ़ग़ानिस्तान, और ईरान के बादशाहों से मेल मिलाप करके अपनी मजबूती कर ली. सन् १८६८ में जब रूस बीच एशिया के देशों में बढ़ रहा था तो अफ़ग़ानिस्तान के अमीर शेरअली को रूस के खिलाफ़ भड़का कर अपनी दोस्ती कर ली थी और आज ऐसा ही लालच बढ़ाया जा रहा है. दुनिया में अमन चाहिये तो लालच बन्द करना होगा. अमरीका और इङ्गलैन्ड को एशिया के देशों से बोरिया बिस्तर बाँधना होगा. एशियाई कानफ़्रेन्स के मौक़े पर दिल्ली में हमारे देश के बड़े नेता पण्डित नेहरू ने दुनिया से अमन और शान्ति के लिए वेन्डर विल्की की "एक-दुनिया" पर ज़ोर दिया था और आज दुनिया में अमन की गारेन्टी तभी होगी जब कि दुनिया एक हो जाय. एशिया के देशों में मिलाप और

خوب سمجھتے ہیں۔ آج ڈچ انڈونیشیا میں اپنے بل پر نہیں کود رہا ہے، اس کی پیٹھ پر دوسروں کا ہاتھ ہے جو اپنے مطلب کے لئے انڈونیشیا کو اپنی مٹھی میں جکڑ رکھنا چاہتے ہیں۔ ملایا میں انگریزی فوجیں اپنی سنگینیں جنتا کے سینے پر جمانے کو تلی ہوئی ہیں۔ برما کی آزادی ایک دھوکا ہے۔ اپنا اُلّو سیدھا کرنے کے لئے ہندستان کی ہزاروں برس کی ایکتا کو کچل دیا گیا ہے۔

امریکہ اور انگلینڈ کو آج روس کا بڑا دھڑکا ہے۔ ۱۸۰۷ء میں جب انگلستان اور فرانس میں لڑائی ہوئی تو انگریزوں کو روس اور نپولین بوناپارٹ کے بھوت نے ستانا شروع کیا۔ انگریزوں نے اپنی ساری طاقت سرحدی علاقوں میں بھری۔ اپنی ہندستان کی نئی حکومت کی حفاظت کے منصوبے باندھے۔ افغانستان اور ایران کے بادشاہوں سے میل ملاپ کرکے اپنی مضبوطی کر لی۔ ۱۸۶۸ء میں جب روس بیچ ایشیا کے دیشوں میں بڑھ رہا تھا تو افغانستان کے امیر شیر علی کو روس کے خلاف بھڑکا کر اپنی دوستی کر لی تھی اور آج ایسا ہی لالچ بڑھایا جا رہا ہے۔ دنیا میں امن چاہیئے تو لالچ بند کرنا ہوگا۔ امریکہ اور انگلینڈ کو ایشیا کے دیشوں سے بوریا بستر باندھنا ہوگا۔ ایشیائی کانفرنس کے موقع پر دلی میں ہمارے دیش کے بڑے نیتا پنڈت نہرو نے دنیا سے امن اور شانتی کے لئے وینڈل ولکی کی "ایک دنیا" پر زور دیا تھا اور آج دنیا میں امن کی گارنٹی تبھی ہوگی جب کہ دنیا ایک ہو جائے۔ ایشیا کے دیشوں میں ملاپ اور

एकता के लिये आज तड़प पैदा हो रही है और एशियाई क़ौमें जिस तरह अपनी बातों से आपस के मेल और एकता का प्रचार एशियाई कानफ़्रेन्स में कर चुकी है उन्हें अब अपने अमल से उसे साबित भी करना है.

पंजाब हमें क्या सिखाता है

लेखक-पंडित सुन्दरलाल

पंडित सुन्दरलाल जी ने, महात्मा गांधी की सलाह से, अक्तूबर सन् '४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब का दौरा किया था. इस छोटे से बयान में उन्होंने वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मारकाट की वजह से जो जो नतीजे लोगों को भुगतने पड़ रहे हैं उनका बहुत ही दर्दनाक वर्णन किया है. आख़ीर में, आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये, कुछ सुझाव भी पेश किये हैं. हमें विश्वास है कि पंजाब की मौजूदा हालत को ठीक तरह से समझने में इस बयान से बड़ी मदद मिलेगी.

किताब उर्दू और नागरी दोनों लिखावटों में मिल सकती है. क़ीमत चार आने.

—मैनेजर 'नया हिन्द'

४८, बाई का बाग़, इलाहाबाद

ایکتا کے لئے آج تڑپ پیدا ہو رہی ہے اور ایشیائی قومیں جس طرح اپنی باتوں سے آپس کے میل اور ایکتا کا پرچار ایشیائی کانفرنس میں کر چکی ہیں انھیں اب اپنے عمل سے اسے ثابت بھی کرنا ہے۔

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

لیکھک پنڈت سندر لال

پنڈت سندر لال جی نے، مہاتما گاندھی کی صلاح سے، اکتوبر سنہ ۴۷ میں پچھمی اور پوربی پنجاب کا دورہ کیا تھا۔ اس چھوٹے سے بیان میں انھوں نے وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مارکاٹ کی وجہ سے جو جو نتیجے لوگوں کو بھگتنے پڑ رہے ہیں اُن کا بہت ہی دردناک ورنن کیا ہے۔ آخر میں، آج کل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے ہیں۔ ہمیں وشواس ہے کہ پنجاب کی موجودہ حالت کو ٹھیک طرح سے سمجھنے میں اس بیان سے بڑی مدد ملے گی۔

کتاب اردو اور ناگری دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے۔ قیمت چار آنے۔

— منیجر 'نیا ہند'

۴۸، بائی کا باغ، الہ آباد

मौ० मुहम्मद बरकतुल्ला साहब भूपाली

(भाई. रतनलाल बंसल)

हिन्दुस्तान के उन सैकड़ों हज़ारों देश भक्तों में, जो देश की आज़ादी के लिये अपना घरबार छोड़ कर विदेश गये और फिर जीतेजी अपने वतन को न लौट सके, मौलाना मुहम्मद बरकतुल्ला-साहब भूपाली के नाम और काम की चरचा हमेशा की जाती रहेगी और वतन की भलाई के लिये काम करने वाले लोग हमेशा उनकी ज़िन्दगी के हालात से रोशनी और हिम्मत पाते रहेंगे.

इसकी वजह यह है कि मौलाना बरकतुल्ला साहब ने जिस ज़माने में देशभक्ति की राह में क़दम रक्खा, उस ज़माने में हालाँकि बहुत से लोग मुल्क की आज़ादी के लिये कोशिश कर रहे थे और इसके लिये निहायत दिलेरी के साथ तरह तरह की तकलीफें सह रहे थे, लेकिन उनमें से ज्यादातर लोगों की सियासत महज़ जज़्बाती थी. "हिन्दुस्तान हमारा, हमारे पुरखों का देश है, इसकी तहज़ीब और इसका पुराना इतिहास बहुत शानदार है लेकिन गुलाम होने की वजह से इसकी पुरानी इज़्ज़त धूल में मिल गई है, इस लिये हमको अपने देश को आज़ाद करने की कोशिश करनी चाहिए." उस वक़्त अक्सर देशभक्तों के ख़यालात ऐसे ही होते थे. इसके अलावा एक बात यह भी उनमें थी कि चूंकि उनकी देशभक्ति अपने पिछले शानदार ज़माने की याद और उसे फिर से हासिल करने की ख़्वाहिश पर क़ायम थी, इसलिये अगर मुसलमान

مولانا برکت اللہ صاحب بھوپالی

(بھائی رتن لال بنسل)

ہندستان کے اُن سیکڑوں ہزاروں دیش بھگتوں میں، جو دیش کی آزادی کے لئے اپنا گھر بار چھوڑ کر ودیش گئے اور پھر جیتے جی اپنے وطن کو نہ لوٹ سکے، مولانا محمد برکت اللہ صاحب بھوپالی کے نام اور کام کی چرچا ہمیشہ کی جاتی رہے گی اور وطن کی بھلائی کے لئے کام کرنے والے لوگ ہمیشہ اُن کی زندگی کے حالات سے روشنی اور ہمت پاتے رہیں گے۔

اس کی وجہ یہ ہے کہ مولانا برکت اللہ صاحب نے جس زمانے میں دیش بھگتی کی راہ میں قدم رکھا اُس زمانے میں حالانکہ بہت سے لوگ ملک کی آزادی کے لئے کوشش کر رہے تھے اور اس کے لئے نہایت دلیری کے ساتھ طرح طرح کی تکلیفیں سہہ رہے تھے لیکن اُن میں سے زیادہ تر لوگوں کی سیاست محض جذباتی تھی۔ "ہندستان ہمارا، ہمارے پُرکھوں کا دیش ہے، اس کی تہذیب اور اس کا پُرانا اتہاس بہت شان دار ہے لیکن غلام ہونے کی وجہ سے اس کی پُرانی عزت دھول میں مل گئی ہے، اس لئے ہم کو اپنے دیش کو آزاد کرنے کی کوشش کرنی چاہیے۔" اس وقت اکثر دیش بھگتوں کے خیالات ایسے ہی ہوتے تھے۔ اس کے علاوہ ایک بات یہ بھی اُن میں تھی کہ چونکہ اُن کی دیش بھگتی اپنے پچھلے شان دار زمانے کی یاد اور اسے پھر سے حاصل کرنے کی خواہش پر قائم تھی اس لئے اگر مسلمان

देशभक्त मुग़लों जैसा राज चाहते थे, तो हिन्दू देशभक्त राजपूतों जैसा या मरहटों जैसा. इन दोनों मे हालाँकि कोई आपसी मन मुटाव नहीं था और न इन दोनों में फ़िरक़ापरस्ती ही थी, फिर भी अपने इन ख़यालात की वजह से दोनों एक दूसरे के नज़दीक न आ सके. यही वजह है कि सन् १८९८ से सन् १९१५ तक हम हिन्दुस्तान के हिन्दू और मुसलमान इन्क़िलाबियों को साफ़-साफ़ अलग-अलग सफ़ों में पाते हैं. उस वक़्त देवबन्द का मदरसा अगर मुसलमान इन्क़िलाबियों का गढ़ था, तो महाराष्ट्र और बंगाल हिन्दू इन्क़िलाबियों के गढ़ थे. लेकिन न तो महाराष्ट्र और बंगाल के हिन्दू इन्क़िलाबियों में किसी मुसलमान का नाम पाया जाता है और न मदरसा देवबन्द के क्रान्तिकारियों में किसी हिन्दू का ज़िक्र मिलता है. इसकी वजह सिर्फ़ यह थी कि उस वक़्त जमहूरियत यानी पंचायती राज की बात इन लोगों के दिमाग़ में नहीं थी. लिहाज़ा दोनों ने कभी एक साथ मिलकर काम करने की ज़रूरत ही महसूस नहीं की. हालाँकि जब कभी मौक़ा आया, तब इन देशभक्तों ने हिन्दू मुस्लिम एकता की पूरी कोशिश की. मिसाल के लिये हाजी रशीद अहमद साहब गंगोही का वह फ़तवा इस सिलसिले में पेश किया जा सकता है, जो उन्होंने सन् १९०५ में दिया था और जिसमें मुसलमानों से कहा गया था कि वह काँग्रेसमें शामिल हों, जो हिन्दू मुसलमानों की मिली जुली जमात है, लेकिन सर सय्यद की 'मुस्लिम अंजुमन' में, जो सिर्फ़ मुसमानों की जमात है, शरीक न हों.

लेकिन इसी ज़माने में मौलाना बरकतुल्ला साहब भूपाली ने

دیش بھگت مغلوں جیسا راج چاہتے تھے، تو ہندو دیش بھگت راجپوتوں جیسا یا مرہٹوں جیسا۔ ان دونوں میں حالاں کہ کوئی آپسی من مٹاؤ نہیں تھا اور نہ ان دونوں میں فرقہ پرستی ہی تھی، پھر بھی اپنے ان خیالات کی وجہ سے دونوں ایک دوسرے کے نزدیک نہ آ سکے۔ یہی وجہ ہے کہ ۱۸۹۸ء سے ۱۹۱۵ء تک ہم ہندستان کے ہندو اور مسلمان انقلابیوں کو صاف صاف الگ الگ صفوں میں پاتے ہیں۔ اس وقت دیوبند کا مدرسہ اگر مسلمان انقلابیوں کا گڑھ تھا، تو مہاراشٹر اور بنگال ہندو انقلابیوں کے گڑھ تھے۔ لیکن نہ تو مہاراشٹر اور بنگال کے ہندو انقلابیوں میں کسی مسلمان کا نام پایا جاتا ہے اور نہ مدرسہ دیوبند کے کرانتی کاریوں میں کسی ہندو کا ذکر ملتا ہے۔ اس کی وجہ صرف یہ تھی کہ اس وقت جمہوریت یعنی پنچایتی راج کی بات ان لوگوں کے دماغ میں نہیں تھی۔ لہٰذا دونوں نے کبھی ایک ساتھ مل کر کام کرنے کی ضرورت ہی محسوس نہیں کی۔ حالاں کہ جب کبھی موقع آیا، تب ان دیش بھگتوں نے ہندو مسلم ایکتا کی پوری کوشش کی۔ مثال کے لئے حاجی رشید احمد صاحب گنگوہی کا وہ فتویٰ اس سلسلے میں پیش کیا جا سکتا ہے، جو انھوں نے ۱۹۰۵ء میں دیا تھا اور جس میں مسلمانوں سے کہا گیا تھا کہ وہ کانگریس میں شامل ہوں، جو ہندو مسلمانوں کی ملی جلی جماعت ہے، لیکن سر سید کی 'مسلم انجمن' میں، جو صرف مسلمانوں کی جماعت ہے، شریک نہ ہوں۔

لیکن اسی زمانے میں مولانا برکت اللہ صاحب بھوپالی نے

इस मैदान में आकर इस बड़ी कमी को पूरा कर दिया. मौलाना भूपाल के रहने वाले थे और आपके पिता रियासत के एक बड़े सरकारी अफ़सर थे. उन्होंने अपने लड़के को ऊँची से ऊँची तालीम पाने के लिये विलायत भेजा. इस तरह मौलवी बरकतुल्ला साहब भरी जवानी में विलायत पहुंचे. लेकिन वह विलायत पहुँचकर दूसरे हिन्दुस्तानी विद्यार्थियों की तरह रास रंग में नहीं डूब गये, बल्कि इंगलैंड पहुँचते ही उनके दिल में यह सवाल उठा कि इंगलैंड जैसा छोटा मुल्क इतना खुशहाल क्यों है और मेरा देश हिन्दुस्तान इतना विशाल होता हुआ इतना ग़रीब क्यों है. उन्होंने इस पर ग़ौर करना शुरू किया और फिर इस नतीजे पर पहुंचे कि हिन्दुस्तान की दिल को कँपा देने वाली यह ग़रीबी सिर्फ़ इसलिये है कि 'हिन्दुस्तान पर अंग्रेजों' का क़ब्ज़ा है. अंग्रेजी हकूमत जोंक की तरह हिन्दुस्तान का खून पी रही है, जिसका नतीजा यह है कि अंग्रेज क़ौम और उनका मुल्क मोटा और मजबूत होता जा रहा है जबकि हमारा देश दिनों दिन कमज़ोर और बीमार पड़ता जा रहा है.

उस ज़माने में महाराष्ट्र के मशहूर नेता श्री गोपाल कृष्ण गोखले का बड़ा जोर था. "हिन्दुस्तान की माली हालत कैसे बिगड़ी ?" इस मज़मून पर उनके बड़े ज़ोरदार जानकारी से भरे हुए लेक्चर होते थे, इसलिये शुरू शुरू में मौलाना बरकतुल्ला साहब पर उनका बहुत असर पड़ा. लेकिन कुछ ही दिनों बाद वह उनकी नरम नीति से ऊब गये और उनका झुकाव तिलक की पार्टी की तरफ़ हो गया. इसके बाद मौलाना हिन्दुस्तान आगये और उन्होंने भूपाल से एक अख़बार

اِس میدان میں آکر اِس بڑی کمی کو پورا کر دیا. مولانا بھوپال کے رہنے والے تھے اور آپ کے پتا ریاست کے ایک بڑے سرکاری افسر تھے. اُنھوں نے اپنے لڑکے کو اونچی سے اونچی تعلیم پانے کے لئے ولایت بھیجا. اس طرح مولوی برکت اللہ صاحب بھری جوانی میں ولایت پہنچے. لیکن وہ ولایت پہنچ کر دوسرے ہندوستانی ودیارتھیوں کی طرح راس رنگ میں نہیں ڈوب گئے، بلکہ انگلینڈ پہنچتے ہی اُن کے دل میں یہ سوال اُٹھا کہ انگلینڈ جیسا چھوٹا ملک اِتنا خوش حال کیوں ہے اور میرا دیش ہندوستان اِتنا وشال ہوتا ہوا اِتنا غریب کیوں ہے. اُنھوں نے اس پر غور کرنا شروع کیا اور پھر اس نتیجے پر پہنچے کہ ہندستان کی دل کو کنپا دینے والی یہ غریبی صرف اِس لئے ہے کہ 'ہندستان پر انگریزوں' کا قبضہ ہے. انگریزی حکومت جونک کی طرح ہندستان کا خون پی رہی ہے، جس کا نتیجہ یہ ہے کہ انگریز قوم اور اُن کا ملک موٹا اور مضبوط ہوتا جا رہا ہے جبکہ ہمارا دیش دنوں دن کمزور اور بیمار پڑتا جا رہا ہے.

اُس زمانے میں مہاراشٹر کے مشہور نیتا شری گوپال کرشن گوکھلے کا بڑا زور تھا. "ہندستان کی مالی حالت کیسے بگڑی؟" اِس مضمون پر اُن کے بڑے زوردار جانکاری سے بھرے ہوئے لکچر ہوتے تھے، اس لئے شروع شروع میں مولانا برکت اللہ صاحب پر اُن کا بہت اثر پڑا لیکن کچھ ہی دنوں بعد وہ اُن کی نرم نیتی سے اوب گئے اور اُن کا جھکاؤ تلک کی پارٹی کی طرف ہوگیا. اس کے بعد مولانا ہندستان آگئے اور اُنھوں نے بھوپال سے ایک اخبار

निकालना शुरू कर दिया. उस जमाने में, जब कि विलायत हो आना बहुत बड़ी बात समझी जाती थी और विलायत के पास लोगों को बड़ी से बड़ी नौकरियाँ मिलना बेहद आसान था, मौलाना ने उस तरफ़ न जाकर अपने मुल्क की ख़िदमत करने का फ़ैसला किया. इससे ज़ाहिर होता है कि मौलाना की देशभक्ति महज़ दिखावटी नहीं थी. उनके दिल में सचमुच अपने मुल्क के लिये भारी दर्द था और वह उसके लिये भारी से भारी कुर्बानी करने में भी आगा पीछा नहीं सोचते थे.

मौलाना का यह अख़बार कुछ दिनों तक चला, लेकिन उसके गरम विचारों को ज़्यादा दिन तक सरकार बर्दाश्त नहीं कर सकी. अख़बार बन्द कर दिया गया और मौलाना पर कड़ी नज़र रक्खी जाने लगी. मौलाना समझ गये कि अब वह देश में रह कर अपने ख़यालात का प्रचार नहीं कर सकेंगे. इस लिये वह जापान पहुँचे और वहाँ की एक यूनिवर्सिटी में प्रोफ़ेसर हो गये. यहीं से उन्होंने 'इस्लामिक फ़्रेटरनिटी' के नाम से एक अख़बार निकालना शुरू किया.

यह अख़बार सर सय्यद की उन हलचलों की मुख़ालफ़त करता था, जिनसे हिन्दू मुसलमानों में फूट पड़ जाने का अन्देशा था. मौलाना बरकतुल्ला साहब का कहना था कि मुसलमानों की भलाई सिर्फ़ इसी में है कि वह हिन्दुओं के साथ मिल कर अंग्रेज़ हकूमत से मोरचा लें.

इस अख़बार की वजह से जब अंग्रेज़ हकूमत ने अपने काम में बाधा पड़ते देखी, तो उसने जापान सरकार पर इसके ख़िलाफ़

نکالنا شروع کر دیا۔ اُس زمانے میں، جب کہ ولایت ہو آنا بہت بڑی بات سمجھی جاتی تھی اور ولایت کے پاس لوگوں کو بڑی سے بڑی نوکریاں ملنا بے حد آسان تھا، مولانا نے اُس طرف نہ جاکر اپنے ملک کی خدمت کرنے کا فیصلہ کیا۔ اِس سے ظاہر ہوتا ہے کہ مولانا کی دیش بھگتی محض دکھاوٹی نہیں تھی۔ اُن کے دل میں سچ مچ اپنے ملک کے لئے بھاری درد تھا اور وہ اُس کے لئے بھاری سے بھاری قربانی کرنے میں بھی آگا پیچھا نہیں سوچتے تھے۔

مولانا کا یہ اخبار کچھ دنوں تک چلا، لیکن اُس کے گرم وچاروں کو زیادہ دن تک سرکار برداشت نہیں کر سکی۔ اخبار بند کر دیا گیا اور مولانا پر کڑی نظر رکھی جانے لگی۔ مولانا سمجھ گئے کہ اب وہ دیش میں رہ کر اپنے خیالات کا پرچار نہیں کر سکیں گے۔ اِس لئے وہ جاپان پہنچے اور وہاں کی ایک یونیورسٹی میں پروفیسر ہو گئے۔ یہیں سے انھوں نے 'اسلامک فریٹرنیٹی' کے نام سے ایک اخبار نکالنا شروع کیا۔

یہ اخبار سر سید کی اُن ہلچلوں کی مخالفت کرتا تھا، جن سے ہندو مسلمانوں میں پھوٹ پڑ جانے کا اندیشہ تھا۔ مولانا برکت اللہ صاحب کا کہنا تھا کہ مسلمانوں کی بھلائی صرف اِسی میں ہے کہ وہ ہندوؤں کے ساتھ مل کر انگریز حکومت سے مورچہ لیں۔

اِس اخبار کی وجہ سے جب انگریز حکومت نے اپنے کام میں بادھا پڑتے دیکھی، تو اُس نے جاپان سرکار پر اِس کے خلاف

कारवाई करने के लिये जोर डाला. इसका नतीजा यह हुआ कि जापान की हकूमत ने उस अखबार को बन्द कर दिया. अखबार के बन्द होते ही मौलाना ने भी अपना बोरिया बिस्तर संभाला और जापान से चल दिये. जिस यूनिवर्सिटी में मौलाना प्रोफेसर थे, उसके मुन्तज़िम नहीं चाहते थे कि मौलाना यूनिवर्सिटी को छोड़ जायँ, लेकिन मौलाना ने लड़के पढ़ाने और पेट पालने के लिये अपना वतन नहीं छोड़ा था. वह जापान से सीधे अमरीका पहुँचे और वही अपना पुराना काम शुरू कर दिया. लेकिन उनको यह देख कर बड़ी तकलीफ़ होती थी कि उनके मुल्क के मुसलमान कुछ स्वार्थी नेताओं के बहकावे में आकर आज इस बात पर बहस करने में लगे हुए हैं कि कांग्रेस में मिलना चाहिये या नहीं. हालाँकि उस वक़्त काँग्रेस की जो नरम पालिसी थी, उसकी वजह से मौलाना काँग्रेस को भी कुछ ज्यादा काम की चीज़ नहीं समझते थे, लेकिन उनका ख़याल था कि यह देश का एक मिला जुला प्लेट-फ़ार्म है, जिसका असर हकूमत पर भी कुछ न कुछ पड़ता ही है. इस सिलसिले में मौलाना ने २१ फ़रवरी सन् १९०५ को एक ख़त मौलाना हसरत मूहानी साहब को लिखा था. यह ख़त मौलाना की उस वक़्त की विचार-धारा को पूरी तरह ज़ाहिर करता है, इसलिए उसका कुछ हिस्सा यहाँ दिया जाता है. ख़त फ़ारसी में था, जिसमें मौलाना ने लिखा था:—

"हाल ही में आपने हिन्दू-मुस्लिम एकता पर जो एडीटोरियल लिखा है और इंडियन नेशनल कांग्रेस के सालाना जलसे में मुसलमानों के शामिल होने के बारे में लिखने की जो मेहरबानी की

کارروائی کرنے کے لئے زور ڈالا۔ اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ جاپان کی حکومت نے اُس اخبار کو بند کردیا۔ اخبار کے بند ہوتے ہی مولانا نے بھی اپنا بوریا بستر سنبھالا اور جاپان سے چل دئے۔ جس یونیورسٹی میں مولانا پروفیسر تھے، اُس کے منتظم نہیں چاہتے تھے کہ مولانا یونیورسٹی کو چھوڑ جائیں، لیکن مولانا نے لڑکے پڑھانے اور پیٹ پالنے کے لئے اپنا وطن نہیں چھوڑا تھا۔ وہ جاپان سے سیدھے امریکہ پہنچے اور وہی اپنا پرانا کام شروع کردیا۔ لیکن اُن کو یہ دیکھ کر بڑی تکلیف ہوتی تھی کہ اُن کے ملک کے مسلمان کچھ سوارتھی نیتاؤں کے بہکاوے میں آکر آج اس بات پر بحث کرنے میں لگے ہوئے ہیں کہ کانگریس میں ملنا چاہئے یا نہیں۔ حالاں کہ اُس وقت کانگریس کی جو نرم پالیسی تھی، اُس کی وجہ سے مولانا کانگریس کو بھی کچھ زیادہ کام کی چیز نہیں سمجھتے تھے، لیکن اُن کا خیال تھا کہ یہ دیش کا ایک ملا جلا پلیٹ فارم ہے، جس کا اثر حکومت پر بھی کچھ نہ کچھ پڑتا ہی ہے۔ اس سلسلے میں مولانا نے ۲۱ر فروری ۱۹۰۵ء کو ایک خط مولانا حسرت موہانی صاحب کو لکھا تھا۔ یہ خط مولانا کی اُس وقت کی وچار دھارا کو پوری طرح ظاہر کرتا ہے، اس لئے اُس کا کچھ حصہ یہاں دیا جاتا ہے۔ خط فارسی میں تھا، جس میں مولانا نے لکھا تھا:۔

"حال ہی میں آپ نے ہندو مسلم ایکتا پر جو ایڈیٹوریل لکھا ہے اور انڈین نیشنل کانگریس کے سالانہ جلسے میں مسلمانوں کے شامل ہونے کے بارے میں لکھنے کی جو مہربانی کی

है, उसका अँग्रेजी तर्जुमा मैंने देखा. बहेद खुशी हुई.

सबसे पहिली बात, जो हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिये दलील बन सकती है, देश-प्रेम और हमजिन्स (दोनों का हिन्दुस्तानी) होना है. असलियत तो यह है कि ज्यादातर मुसलमानों के पुरखे हिन्दू थे और हिन्दुस्तानी थे. इसलिए कुछ मजहबी मत भेद उनकी असली एकता को खतम नहीं कर सकते. इसके अलावा हिन्दू-मुस्लिम एकता की सबसे बड़ी जरूरत इसलिये भी है कि इस वक्त देश में आम तबाही फैली हुई है.

पिछले दस बरसों में क़रीब दो करोड़ इन्सान भूख से मर चुके हैं. और इन ग़रीबी के मारे हुए लोगों में हिन्दू भी थे और मुसलमान भी. इस हादसे (दुर्घटना) की भयंकरता तब समझ में आती है, जब हम इस तादाद का मुक़ाबला ईरान की आबादी से करें, जो सिर्फ़ डेढ़ करोड़ है.

आखिर यह ग़रीबी कहाँ से आई ?

(१) जिस वक़्त से ब्रिटिश हकूमत क़ायम हुई, अँग्रेजी कारखानों के मालिकों ने मशीनों के जरिये कपड़ा, हथियार, बरतन वग़ैरा बनाकर हिन्दुस्तान की तमाम कारीगरी को धूल में मिला दिया. १८वीं सदी के आखिर और १९वीं सदी के शुरू में इंगलैंड की पार्लियामेन्ट ने यह क़ानून बनाया कि हिन्दुस्तान की बनी हुई चीजें जब इंगलैंड आवेंगी, तो उन पर कस्टम-ड्यूटी करीब सत्तर या अस्सी फ़ीसदी लगेगी और इंगलैंड की बनी हुई चीजों पर जो हिन्दुस्तान पहुँचेंगी, या तो कस्टम-ड्यूटी लगाई ही न जाय और अगर लगाई भी जाय, तो बहुत कम और हिन्दुस्तान की हकूमत

ہے، اس کا انگریزی ترجمہ میں نے دیکھا بے حد خوشی ہوئی۔

سب سے پہلی بات، جو ہندو مسلم ایکتا کے لئے دلیل بن سکتی ہے، دلیش پریم اور ہم جنس (دونوں کا ہندستانی ہونا) ہے۔ اصلیت تو یہ ہے کہ زیادہ تر مسلمانوں کے پُرکھے ہندو تھے اور ہندستانی تھے۔ اِس لئے کچھ مذہبی مت بھید اُن کی اصلی ایکتا کو ختم نہیں کر سکتے۔ اِس کے علاوہ ہندو مسلم ایکتا کی سب سے بڑی ضرورت اِس لئے بھی ہے کہ اِس وقت دلیش میں عام تباہی پھیلی ہوئی ہے۔

پچھلے دس برسوں میں قریب دو کروڑ انسان بھوکھ سے مر چکے ہیں۔ اور اِن غریبی کے مارے ہوئے لوگوں میں ہندو بھی تھے اور مسلمان بھی۔ اِس حادثے (درگھٹنا) کی بھینکرتا تب سمجھ میں آتی ہے جب ہم اِس تعداد کا مقابلہ ایران کی آبادی سے کریں، جو صرف ڈیڑھ کروڑ ہے۔

آخر یہ غریبی کہاں سے آئی؟

(۱) جس وقت سے برٹش حکومت قایم ہوئی، انگریزی کارخانوں کے مالکوں نے مشینوں کے ذریعے کپڑا، ہتھیار، برتن وغیرہ بنا کر ہندستان کی تمام کاریگری کو دھول میں ملا دیا۔ ۱۸ ویں صدی کے آخر اور ۱۹ ویں صدی کے شروع میں انگلینڈ کی پارلیامنٹ نے یہ قانون بنایا کہ ہندستان کی بنی ہوئی چیزیں جب انگلینڈ آویں گی، تو اُن پر کسٹم ڈیوٹی قریب ستر یا اسی فی صدی لگے گی اور انگلینڈ کی بنی ہوئی چیزوں پر جو ہندستان پہنچے گی، یا تو کسٹم ڈیوٹی لگائی ہی نہ جائے اور اگر لگائی بھی جائے، تو بہت کم اور ہندستان کی حکومت

का खर्च चलाने के ख़याल से लगाई जाय. यही वजह है कि हिन्दुस्तान की कारीगरी दूसरे मुल्कों में गाहक नहीं पा सकी और अपने हिन्दुस्तान में इंगलैंड की चीजें सस्ती होने की वजह से खूब बिकने लगीं. इसीलिये धीरे धीरे हिन्दुस्तान की तमाम कारीगरी जड़ से खतम हो गई और हिन्दुस्तान, जो अपने पुराने जमाने से कला कौशल का घर समझा जाता था, सिर्फ एक खेती बाड़ी का मुल्क बन कर रह गया.

दूसरी वजह यह है कि हिन्दुस्तान की तमाम उपज और यहाँ तैयार होने वाली चीजों को अंग्रेज पूंजी पति बहुत सस्ता ख़रीद कर दूसरे मुल्कों में मँहगा बेचते हैं.

तीसरी वजह यह है कि हिन्दुस्तान में खेती नए तरीक़ों से नहीं होती.

चौथी वजह यह है कि हिन्दुस्तान की हकूमत क़रीब तीस करोड़ रुपया हिन्दुस्तान की वजारत पर ख़र्च करने के लिये, इंगलैंड के पूँजी पतियों से लिये हुये क़र्ज़ का सूद चुकाने के लिये और पुराने अंग्रेज नौकरों को पेन्शन देने के लिये हर साल विलायत भेज देती है.

पाँचवीं वजह यह है कि सब बड़े बड़े ओहदे सिर्फ़ अंग्रेजों को दिये जाते हैं और छोटी छोटी नौकरियाँ ही हिन्दुस्तानियों को मिलती हैं.

छटी वजह यह है कि क़ानून और इंडियन सिविल सर्विस के इम्तहान देने के लिये हिन्दुस्तानियों को इंगलैंड जाने के लिये मजबूर कर दिया गया है.

کا خرچ چلانے کے خیال سے لگائی جائے۔ یہی وجہ ہے کہ ہندستان کی کاریگری دوسرے ملکوں میں گاہک نہیں پا سکی اور اپنے ہندستان میں انگلینڈ کی چیزیں سستی ہونے کی وجہ سے خوب بکنے لگیں۔ اسی لئے دھیرے دھیرے ہندستان کی تمام کاریگری جڑ سے ختم ہو گئی اور ہندستان، جو اپنے پرانے زمانے سے کلا کوشل کا گھر سمجھا جاتا تھا، صرف ایک کھیتی باڑی کا ملک بن کر رہ گیا۔

دوسری وجہ یہ ہے کہ ہندستان کی تمام اپج اور یہاں تیار ہونے والی چیزوں کو انگریز پونجی پتی بہت سستا خرید کر دوسرے ملکوں میں مہنگا بیچتے ہیں۔

تیسری وجہ یہ ہے کہ ہندستان میں کھیتی نئے طریقوں سے نہیں ہوتی۔

چوتھی وجہ یہ ہے کہ ہندستان کی حکومت قریب تیس کروڑ روپیہ ہندستان کی وزارت پر خرچ کرنے کے لئے، انگلینڈ کے پونجی پتیوں سے لئے ہوئے قرض کا سود چکانے کے لئے اور پرانے انگریز نوکروں کی پنشن دینے کے لئے ہر سال ولایت بھیج دیتی ہے۔

پانچویں وجہ یہ ہے کہ سب بڑے بڑے عہدے صرف انگریزوں کو دئے جاتے ہیں اور چھوٹی چھوٹی نوکریاں ہی ہندستانیوں کو ملتی ہیں۔

چھٹی وجہ یہ ہے کہ قانون اور انڈین سول سروس کے امتحان دینے کے لئے ہندستانیوں کو انگلینڈ جانے کے لئے مجبور کر دیا گیا ہے۔

यह थोड़े से नुक़सान हैं, जो हमारी बरबादी के असली कारन हैं और जिनसे पूरे हिन्दुस्तान की बरबादी हो रही है. यह नुक़सान मैंने बहुत मुख़्तसर, यानी किसी बड़े ढेर में एक मुट्ठी की तरह, इसलिये बयान किये हैं, जिससे उन लोगों को, जो काँग्रेस से दूर रहना चाहते हैं, नसीहत हासिल हो.

अगर मुसलमान काँग्रेस में शामिल होकर इस कशमकश के मैदान में नामवरी की गेंद अपने हिन्दू भाइयों से आगे निकाल ले जावें, तो वह इसलाम की बहुत बड़ी ख़िदमत करेंगे."

यह ख़त बताता है कि मौलाना बरकतुल्ला साहब की सियासत सिर्फ़ जज़्बाती नहीं थी, बल्कि अपने लाखों करोड़ों देश भाइयों की तकलीफ़ें और ग़रीबी ही उनको इस मैदान में खींच लाई थी.

इसके बाद सन् १९१०-११ में जब अमरीका में ग़दर पार्टी का संगठन हुआ. तो मौलाना उसमें शामिल हो गये. यहाँ पर यह बता देना ज़रूरी है कि ग़दर पार्टी के तमाम नेता सिक्ख थे, लेकिन मौलाना को उसमें शामिल होना ज़रूरी मालूम हुआ, क्योंकि उनके नज़दीक देशभक्तों की एक अलग क़ौम थी, जिसमें हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख वग़ैरा का कोई भेदही नहीं था. ग़दरपार्टी के सिक्ख भाइयोंने भी उनको सर आँखों पर बैठाया और आगे चलकर जब जब ग़दर पार्टी के नेताओं में फूट पड़ी, तब तब मौलाना ही एक अकेले ऐसे आदमी रहे, जिन पर ग़दर पार्टी का हर एक मेम्बर पूरी तरह यक़ीन रखता था और उनकी बात मान लेता था.

सन् १९१४ में जब यूरोप में बड़ी लड़ाई शुरू हुई तो मौलाना

یہ تھوڑے سے نقصان ہیں، جو ہماری بربادی کے اصلی کارن ہیں اور جن سے پورے ہندستان کی بربادی ہو رہی ہے۔ یہ نقصان میں نے بہت مختصر، یعنی کسی بڑے ڈھیر میں ایک مٹھی کی طرح، اس لئے بیان کئے ہیں، جس سے ان لوگوں کو، جو کانگریس سے دور رہنا چاہتے ہیں، نصیحت حاصل ہو۔

اگر مسلمان کانگریس میں شامل ہو کر اس کشمکش کے میدان میں ناموری کی گیند اپنے ہندو بھائیوں سے آگے نکال لے جائیں، تو وہ اسلام کی بہت بڑی خدمت کریں گے۔"

یہ خط بتاتا ہے کہ مولانا برکت اللہ صاحب کی سیاست صرف جذباتی نہیں تھی، بلکہ اپنے لاکھوں کروڑوں دیش بھائیوں کی تکلیفیں اور غریبی ہی ان کو اس میدان میں کھینچ لائی تھی۔

اس کے بعد سنہ ۱۹۱۰-۱۱ء میں جب امریکہ میں غدر پارٹی کا سنگٹھن ہوا، تو مولانا اس میں شامل ہو گئے۔ یہاں پر یہ بتا دینا ضروری ہے کہ غدر پارٹی کے تمام نیتا سکھ تھے، لیکن مولانا کو اس میں شامل ہونا ضروری معلوم ہوا، کیونکہ ان کے نزدیک دیش بھگتوں کی ایک الگ قوم تھی، جس میں ہندو، مسلمان، سکھ وغیرہ کا کوئی بھید ہی نہیں تھا۔ غدر پارٹی کے سکھ بھائیوں نے بھی ان کو سر آنکھوں پر بیٹھایا اور آگے چل کر جب جب غدر پارٹی کے نیتاؤں میں پھوٹ پڑی، تب تب مولانا ہی ایک اکیلے ایسے آدمی رہے، جن پر غدر پارٹی کا ہر ایک ممبر پورا پورا یقین رکھتا تھا اور ان کی بات مان لیتا تھا۔

औरत जर्मनी पहुँचे और वहाँ से जो 'इन्डो-जर्मन-टर्किश' मिशन अफ़ग़ानिस्तान के लिए चला, उसके एक मेम्बर बन कर टर्की होते हुए अफ़ग़ानिस्तान आ गये. यह मिशन इसलिये आया था, जिससे कि अफ़ग़ानिस्तान की सरकार को अपनी तरफ़ मिला कर हिन्दुस्तान पर हमला कर दिया जाय. यहीं पर मौलाना बरकतुल्ला साहब की जान पहिचान मौलाना उबेदुल्ला साहब सिन्धी और मौलाना मुहम्मद मियाँ साहब के साथ हुई और वह हिन्दुस्तान की उस आरज़ी आज़ाद हकूमत में शामिल हो गये, जो इन लोगों ने बनाई थी. इस सरकार में मौलाना बरकतुल्ला साहब की हैसियत सबसे बड़े वज़ीर की थी.

जैसा कि सभी जानते हैं कि यह हकूमत अफ़ग़ानिस्तान की अंग्रेज़ परस्त पालिसी की वजह से कुछ ज़्यादा काम न कर सकी, इसलिये लड़ाई ख़तम होने पर मौलाना रूस चले गये. वहाँ आपने रूस की हकूमत और कम्यूनिज़्म की बाबत पूरे हालात समझे और पढ़े, जिससे आपको एक नई रोशनी मिली. लेकिन बहुत सी बातें ऐसी भी थीं, जिनसे आप रूस के नज़रिये से इत्तिफ़ाक़ नहीं करते थे. इसलिए आप रूस से लौट कर जर्मनी आ गये और वहाँ से 'अल इसलाह' नाम का एक अख़बार निकालने लगे. इस अख़बार का मंशा भी हिन्दुस्तान के मुसलमानों को अंग्रेज़ों के मुक़ाबले में खड़ा कर देना था. यह अख़बार कुछ दिनों तक चला, लेकिन रुपये पैसे की तंगी की वजह से आख़िर मौलाना को इसे बन्द कर देना पड़ा.

फ़रवरी सन् १९२७ में जब ब्रूसेल्स में 'ऐन्टी इम्पीरियलिज़्म

(۷۵۲)

فوراً جرمنی پہنچے اور وہاں سے جو انڈو جرمن ٹرکش مشن افغانستان کے لئے چلا اُس کے ایک ممبر بن کر ٹرکی ہوتے ہوئے افغانستان آگئے۔ یہ مشن اِس لئے آیا تھا جس سے کہ افغانستان کی سرکار کو اپنی طرف ملاکر ہندستان پر حملہ کردیا جائے۔ یہیں پر مولانا برکت اللہ صاحب کی جان پہچان مولانا عبید اللہ صاحب سندھی اور مولانا محمد میاں صاحب کے ساتھ ہوئی اور وہ ہندستان کی اُس عارضی آزاد حکومت میں شامل ہوگئے، جو اِن لوگوں نے بنائی تھی۔ اِس سرکار میں مولانا برکت اللہ صاحب کی حیثیت سب سے بڑے وزیر کی تھی۔

جیسا کہ سبھی جانتے ہیں کہ یہ حکومت افغانستان کی انگریز پرست پالیسی کی وجہ سے کچھ زیادہ کام نہ کرسکی، اِس لئے لڑائی ختم ہونے پر مولانا روس چلے گئے۔ وہاں آپ نے روس کی حکومت اور کمیونزم کی بابت پورے حالات سمجھے اور پڑھے، جس سے آپ کو ایک نئی روشنی ملی۔ لیکن بہت سی باتیں ایسی بھی تھیں، جن سے آپ روس کے نظریے سے اتفاق نہیں کرتے تھے۔ اِس لئے آپ روس سے لوٹ کر جرمنی آگئے اور وہاں سے "الاصلاح" نام کا ایک اخبار نکالنے لگے۔ اِس اخبار کا منشا بھی ہندستان کے مسلمانوں کو انگریزوں کے مقابلے میں کھڑا کردینا تھا۔ یہ اخبار کچھ دنوں تک چلا، لیکن روپئے پیسے کی تنگی کی وجہ سے آخر مولانا کو اِسے بند کردینا پڑا۔

فروری ۱۹۲۷ء میں جب بروسیلس میں انٹی امپیریلزم

कानफ्रेन्स' हुई तो आपने उसमें ग़दर पार्टी के सरकारी नुमाइन्दे की हैसियत से हिस्सा लिया. इस कानफ्रेन्स में तमाम दुनिया के नुमाइन्दे आये थे और हिन्दुस्तान की कांग्रेस की तरफ़ से इसमें पं० जवाहर लाल नेहरू ने हिस्सा लिया था. उसी वक़्त आपकी मुलाक़ात नेहरू जी से भी हुई थी जिसका जिक्र नेहरू जी ने अपनी मशहूर किताब 'मेरी कहानी, में बहुत अच्छे लफ़्ज़ों में किया है.

इस कानफ्रेन्स के बाद ही सान फ्रान्सिसको में ग़दर पार्टी का सालाना इजलास हुआ, जिसमें आपको बहुत इसरार के साथ बुलाया गया. उस वक़्त आपकी सेहत ऐसी नहीं थी कि आप इतनी दूर की यात्रा कर सकें. फिर भी आप इनकार न कर सके और वहाँ पहुँचे. इस इजलास में होने वाली तक़रीर ही आपकी सबसे आख़िरी तक़रीर थी, जिसमें आपने अपने साथियों से ब्रिटिश हुकूमत के ख़िलाफ़ बराबर लोहा लेते रहने की अपील की थी. कहा जाता है कि यह तक़रीर मौलाना की सबसे अच्छी और सबसे ज़्यादा कामयाब तक़रीर थी, जिसके एक एक लफ़्ज़ में ग़ज़ब का जोश और दर्द था. बहुत से लोग तो इस तक़रीर को सुन कर रोने लगे थे.

ग़दर पार्टी के इजलास के बाद ही आप बीमार पड़ गये. उस वक़्त आपकी उमर पैंसठ बरस की थी, जिसके क़रीब ४२ बरस आपने जिलावतनी की हालत में एक मुल्क से दूसरे मुल्क में भागते दौड़ते बिताये थे. उस ज़माने में उनको जिस हालत में रहना पड़ा, उसकी कहानी आज भी

کانفرنس' ہوئی تو آپ نے اس میں غدر پارٹی کے سرکاری نمائندے کی حیثیت سے حصہ لیا۔ اس کانفرنس میں تمام دنیا کے نمائندے آئے تھے اور ہندستان کی کانگریس کی طرف سے اس میں پنڈت جواہر لال نہرو نے حصہ لیا تھا۔ اسی وقت آپ کی ملاقات نہرو جی سے بھی ہوئی تھی جس کا ذکر نہرو جی نے اپنی مشہور کتاب 'میری کہانی' میں بہت اچھے لفظوں میں کیا ہے۔

اس کانفرنس کے بعد ہی سان فرانسسکو میں غدر پارٹی کا سالانہ اجلاس ہوا، جس میں آپ کو بہت اصرار کے ساتھ بلایا گیا۔ اس وقت آپ کی صحت ایسی نہیں تھی کہ آپ اتنی دور کی یاترا کر سکیں۔ پھر بھی آپ انکار نہ کر سکے اور وہاں پہنچے۔ اس اجلاس میں ہونے والی تقریر ہی آپ کی سب سے آخری تقریر تھی، جس میں آپ نے اپنے ساتھیوں سے برٹش حکومت کے خلاف برابر لوہا لیتے رہنے کی اپیل کی تھی۔ کہا جاتا ہے کہ یہ تقریر مولانا کی سب سے اچھی اور سب سے زیادہ کامیاب تقریر تھی، جس کے ایک ایک لفظ میں غضب کا جوش اور درد تھا۔ بہت سے لوگ تو اس تقریر کو سن کر رونے لگے تھے۔

غدر پارٹی کے اجلاس کے بعد ہی آپ بیمار پڑ گئے۔ اس وقت آپ کی عمر پینسٹھ برس کی تھی، جس کے قریب ۴۲ برس آپ نے جلاوطنی کی حالت میں ایک ملک سے دوسرے ملک میں بھاگتے دوڑتے بتائے تھے۔ اس زمانے میں ان

पत्थर से पत्थर दिल को पिघला सकती है. पास में पैसा नहीं, रहने को ठिकाना नहीं, बिलकुल बेगाना मुल्क, अंग्रेजी हकूमत के जासूसों का घेरा और साथियों में भी आपसी फूट. भला इस हालत में किस की हिम्मत क़ायम रह सकती है. लेकिन मौलाना जिसे भी मिले और जब भी मिले, हँसते हुए ही मिले. जब उनके और साथी इन मुसीबतों और परेशानियों की कडुवाहट की वजह से आपस में लड़ते थे, और एक दूसरे पर बुरे से बुरे इलजाम लगाने लगते थे, तब उनको समझाना और धीरज बँधाना मौलाना का ही काम था. वह कभी अपनी मुसीबतों की बात ज़बान पर भी नहीं लाते थे और अपने हर एक साथी की मुसीबत सुनने के लिये हमेशा तैयार रहते थे. यही वजह थी कि हर एक हल्क़े में वह बड़ी इज़्ज़त की निगाह से देखे जाते थे.

कुछ लोग उनको पिछड़े हुए ख़यालों का समझते थे, क्योंकि उनकी हर बात कुछ रूहानियत का रंग लिये हुए होती थी. बावजूद इसके कि वह तमाम यूरोप घूम आये थे और रूस में भी काफ़ी दिनों तक रहे थे, ख़ुदा और मज़हब पर उनका विश्वास दिनों दिन पक्का ही होता गया. शायद ही कभी उन्होंने एक वक़्त भी नमाज़ छोड़ी हो और शायद ही किसी रमज़ान में एक दिन भी बिना रोज़ा रक्खे रहे हों. फिर भी और शायद इसीलिये वह हिन्दू-मुसलमानों की एकता पर दिल से यक़ीन रखते थे और उनको आपसी फूट से इतनी नफ़रत और चिढ़ थी कि सिर्फ़ इस बारे में वह किसी को भी कभी माफ़ नहीं कर सकते थे.

अपनी उस आख़िरी बीमारी के वक़्त भी उनकी ग़रीबी की

پتھر سے پتھر دل کو پگھلا سکتی ہے. پاس میں پیسہ نہیں، رہنے کو ٹھکانا نہیں، بالکل بیگانہ ملک، انگریزی حکومت کے جاسوسوں کا گھیرا اور ساتھیوں میں بھی آپسی پھوٹ. بھلا اس حالت میں کس کی ہمت قائم رہ سکتی ہے. لیکن مولانا جسے بھی ملے اور جب بھی ملے، ہنستے ہوئے ہی ملے. جب اُن کے اور ساتھی ان مصیبتوں اور پریشانیوں کی کڑواہٹ کی وجہ سے آپس میں لڑتے تھے، اور ایک دوسرے پر برے سے برے الزام لگانے لگتے تھے، تب اُن کو سمجھانا اور دھیرج بندھانا مولانا کا ہی کام تھا. وہ کبھی اپنی مصیبتوں کی بات زبان پر بھی نہیں لاتے تھے اور اپنے ہر ایک ساتھی کی مصیبت سننے کے لئے ہمیشہ تیار رہتے تھے. یہی وجہ تھی کہ ہر ایک حلقے میں وہ بڑی عزت کی نگاہ سے دیکھے جاتے تھے.

کچھ لوگ اُن کو پچھڑے ہوئے خیالوں کا سمجھتے تھے، کیونکہ اُن کی ہر بات کچھ روحانیت کا رنگ لئے ہوئے ہوتی تھی. باوجود اس کے کہ وہ تمام یوروپ گھوم آئے تھے اور روس میں بھی کافی دنوں تک رہے تھے، خدا اور مذہب پر اُن کا وشواس دنوں دن پکا ہی ہوتا گیا. شاید ہی کبھی انھوں نے ایک وقت بھی نماز چھوڑی ہو اور شاید ہی کسی رمضان میں ایک دن بھی بنا روزہ رکھے رہے ہوں. پھر بھی اور شاید اسی لئے وہ ہندو مسلمانوں کی ایکتا پر دل سے یقین رکھتے تھے اور اُن کو آپسی پھوٹ سے اتنی نفرت اور چڑھ تھی کہ صرف اس بارے میں وہ کسی کو بھی کبھی معاف نہیں کر سکتے تھے.

اپنی اس آخری بیماری کے وقت بھی اُن کی غریبی کی

हालत यह थी कि उनका बिस्तर एक छोटी सी कोठरी में था, जिसमें फ़र्नीचर के नाम पर एक मेज़ तक नहीं थी और दवा या डाक्टर का तो ज़िक्र करना ही फ़ज़ूल है. इस हालत में हमारे देश की आज़ादी की लड़ाई का यह सूरमा अपनी आख़िरी रातें बिता रहा था. लेकिन फिर भी उनके चेहरे की मुस्कराहट छीनी नहीं जा सकी और ५ जनवरी १९२८ को जब उन्होंने हमेशा के लिए अपनी आँखें बन्द करलीं, तब भी उनके चेहरे पर वही मुस्कराहट बनी रही.

मरते वक़्त उन्होंने अपने साथियों से कहा था:-"तमाम ज़िन्दगी मैं ईमानदारी के साथ अपने वतन की आज़ादी के लिये कोशिश करता रहा. मेरी यह ज़बरदस्त ख़ुशक़िस्मती थी कि मेरी यह नाचीज़ ज़िन्दगी मेरे वतन के काम आई. आज इस ज़िन्दगी से विदा होते समय जहाँ मुझे यह अफ़सोस है कि मैं अपनी कोशिशों में नाकामयाब रहा, वहाँ मुझे इस बात की भी तसल्ली है कि मेरे बाद मेरे मुल्क की मदद करने के लिये आज लाखों आदमी आगे बढ़ रहे हैं. जो सच्चे हैं, बहादुर हैं, जाँबाज़ हैं. मैं इत्मीनान के साथ अपने मुल्क की क़िस्मत उनके हाथों में सौंप कर जा रहा हूँ."

यह उस शहीद के आख़िरी लफ़्ज़ थे जो इस दुनिया ने सुने. इसके बाद तो सिर्फ़ उनकी याद ही बाक़ी रह गई.

मौलाना मुहम्मद बरकतुल्ला की ज़िन्दगी के यह तमाम हालात मालूम होनेपर कभी-कभी दिलमें ख़याल होता है कि काश वह आज भी होते और आज़ाद हिन्दुस्तान में कुछ दिन ही बिता लेते. लेकिन फिर ख़याल आता है कि उनका आज न होना भी अच्छा ही है.क्योंकि अगर वह आज होते, तो या तो पाकिस्तान के किसी जेल में होते,

حالت یہ تھی کہ اُن کا بستر ایک چھوٹی سی کوٹھری میں تھا، جس میں فرنیچر کے نام پر ایک میز تک نہیں تھی اور دوا یا ڈاکٹر کا تو ذکر کرنا ہی فضول ہے۔ اِس حالت میں ہمارے دیش کی آزادی کی لڑائی کا یہ سورما اپنی آخری راتیں بتا رہا تھا لیکن پھر بھی اُن کے چہرے کی مُسکراہٹ چھینی نہیں جاسکی اور ۵ جنوری ۱۹۲۸ کو جب اُنھوں نے ہمیشہ کے لئے اپنی آنکھیں بند کرلیں، تب بھی اُن کے چہرے پر وہی مُسکراہٹ بنی رہی۔

مرتے وقت اُنھوں نے اپنے ساتھیوں سے کہا تھا:- "تمام زندگی میں ایمانداری کے ساتھ اپنے وطن کی آزادی کے لئے کوشش کرتا رہا۔ میری یہ زبردست خوش قسمتی تھی کہ میری یہ ناچیز زندگی میرے وطن کے کام آئی۔ آج اِس زندگی سے بدا لیتے سمے جہاں مجھے یہ افسوس ہے کہ میں اپنی کوششوں میں ناکامیاب رہا، وہاں مجھے اِس بات کی بھی تسلی ہے کہ میرے بعد میرے ملک کی مدد کرنے کے لئے آج لاکھوں آدمی آگے بڑھ رہے ہیں۔ جو سچے ہیں، بہادر ہیں، جاں باز ہیں۔ میں اطمینان کے ساتھ اپنے ملک کی قسمت اُن کے ہاتھوں میں سونپ کر جا رہا ہوں۔"

یہ اِس شہید کے آخری لفظ تھے جو اِس دُنیا نے سُنے اِس کے بعد تو صرف اُن کی یاد ہی باقی رہ گئی۔

مولانا محمد برکت اللہ کی زندگی کے یہ تمام حالات معلوم ہونے پر کبھی کبھی دل میں خیال ہوتا ہے کہ کاش وہ آج بھی ہوتے اور آزاد ہندستان میں کچھ دن ہی بتا لیتے لیکن پھر خیال آتا ہے کہ اُن کا آج نہ ہونا بھی اچھا ہی ہے کیوں کہ اگر وہ آج ہوتے، تو یا تو پاکستان کے کسی جیل میں ہوتے

क्योंकि वे हिन्दू मुस्लिम एकता के हामी थे और यह बरबादी व आपसकी नफ़रत बर्दाश्त नहीं कर सकते थे. और अगर वह हिन्दुस्तानमें रहते तो उनके इसी मुल्क के बच्चे उनके हिन्दुस्तान में रहने पर एतराज़ करते और उनकी वफ़ादारीपर कोई ऐसे साहब शक ज़ाहिर करते नज़र आते, जिनकी पूरी उमर ब्रिटिश हकूमत के तलवे सहलाने में बीती होती. इस लिये यह अच्छा ही है कि आज वह ऐसी जगह है, जहाँ उनसे वफ़ादारी का हलफ़ उठाने के लिये कह कर हम उनका अपमान नहीं कर सकते. हाय रे बदक़िस्मत हिन्दुस्तान !

'हिन्दू मुस्लिम एकता'

पंडित सुन्दरलाल के

चार लैकचर जो उन्होंने

सेन्ट्रल कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर

की दावत पर ग्वालियर में दिये.

सौ सफ़े की किताब की क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

किताब नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में मिल सकती है

—मैनेजर "नया हिन्द"

४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

کیوں کہ وے ہندو مسلم ایکتا کے حامی تھے اور یہ بربادی و آپس کی نفرت برداشت نہیں کر سکتے تھے۔ اور اگر وہ ہندستان میں رہتے تو اُن کے اِسی ملک کے بچے اُن کے ہندستان میں رہنے پر اعتراض کرتے اور اُن کی وفاداری پر کوئی ایسے صاحب شک ظاہر کرتے نظر آتے، جن کی پوری عمر برٹش حکومت کے تلوے سہلانے میں بیتی ہوتی۔ اِس لئے یہ اچھا ہی ہے کہ آج وہ ایسی جگہ ہیں، جہاں اُن سے وفاداری کا حلف اٹھانے کے لئے کہہ کر ہم اُن کا اپمان نہیں کر سکتے۔ ہائے رے بدقسمت ہندستان!

'ہندو مسلم ایکتا'

پنڈت سندر لال کے چار لکچر

جو انھوں نے سنٹرل کنسیلیٹری بورڈ گوالیر کی دعوت پر گوالیر میں دئے

سو صفحے کی کتاب کی قیمت صرف بارہ آنے۔

کتاب ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے۔

—منیجر "نیا ہند"

۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد

کلنک کا ٹیکا

(دیہاتی وجاہت علی سندیلوی)

رمضانی کا جی چاہ رہا تھا کہ وہ گرم گرم تازی امرتیاں کھائے۔
اس کی جیب میں تین روپے تھے۔ اس نے گھر پہنچتے ہی اکا کھول دیا
اور بیوی سے کہنے لگا "دیکھنا ابھی تمہارا منہ میٹھا کرتا ہوں۔ آج
ایک آدمی نے بتایا ہے کہ اگر تین دن شام کو ہم تم بڑے پیر کی
نیاز کر کے تازی امرتیاں کھالیں تو پھر ایک سال کے اندر ہی اندر
تمہارے چاند سا بیٹا ہوگا۔"

نصیبن ایک ڈنڈا لئے چارپائی سے کھٹمل نکال رہی تھی۔
میاں کی باتیں سن کر وہ کھلکھلاتی ہوئی شرما گئی، بولی "تم کو بس
ایسی ہی باتیں آتی ہیں۔"

رمضانی انگوچھا لے کر بازار چلا گیا اور نصیبن، جسے بیٹے کی بڑی
چاہ تھی، کھٹمل جھاڑنا بھول گئی اور جلدی سے اپنی دھلی ہوئی
ساڑی نکال کر منہ ہاتھ دھونے لگی۔

شہر میں کئی دن سے خبریں گرم تھیں کہ ہندو مسلم دنگا ہونے
والا ہے۔ اس سلسلے میں جتنے منہ تھے اتنی باتیں۔ کوئی کہتا کہ
مسلمانوں نے دہلی اور کانپور سے چاقو اور چھریاں منگائی ہیں
اور ان کو زہر کے پانی میں بجھا کر تیز کیا جا رہا ہے۔ کوئی کہتا
کہ اس نے خود اپنی آنکھوں سے دیکھا ہے کہ ہندوؤں کے پاس
بنا لائسنس کی بندوقوں اور ریوالوروں کا ایک ڈھیر جمع ہے۔

कलंक का टीका

(शाह वजाहत अली संदिलवी)

रमजानी का जी चाह रहा था कि वह गर्मागर्म ताज़ी इमरतियाँ खाये. उसकी जेब में तीन रुपये थे. उसने घर पहुँचते ही इक्का खोल दिया और बीवी से कहने लगा—"देखना अभी तुम्हारा मुँह मीठा करता हूँ. आज एक आदमी ने बताया है कि अगर तीन दिन शामको हम तुम बड़े पीर की नियाज़ करके ताज़ी इमरतियाँ खालें तो फिर एक साल के अन्दर ही अन्दर तुम्हारे चाँद सा बेटा होगा."

नसीबन एक डंडा लिये चारपाई से खटमल निकाल रही थी. मियाँ की बातें सुनकर वह खिलखिलाती हुई शर्मा गई, बोली—"तुमको बस ऐसी ही बातें आती हैं,"

रमजानी अंगोछा लेकर बाजार चला गया और नसीबन, जिसे बेटे की बड़ी चाह थी, खटमल झाड़ना भूल गई और जल्दी से अपनी धुली हुई साड़ी निकाल कर मुँह हाथ धोने लगी.

शहर में कई दिन से खबरें गर्म थीं कि हिन्दू-मुस्लिम दंगा होने वाला है. इस सिलसिले में जितने मुँह थे उतनी बातें. कोई कहता कि मुसलमानों ने देहली और कानपूर से चाक़ू और छुरियाँ मँगाई है और उनको जहर के पानी में बुझाकर तेज किया जा रहा है. कोई कहता कि उसने खुद अपनी आँखों से देखा है कि हिन्दुओं के पास बिना लाईसेन्स की बन्दूकों और रिवालवरों का एक ढेर जमा है.

कोई कहता कि शहर के बाहर पंजाबी मुसलमानों का एक लशकर ठहरा हुआ है और वह किसी रोज़ रात में शहर पर टूट पड़ेगा. कोई कहता कि हिन्दुओं ने आस पास के देहातों से हज़ारों आदमी बुलाकर छिपा रक्खे हैं, जो मौक़ा मिलते ही एक एक मुसलमान की खोपड़ी तोड़ कर रख देंगे. इस क़िस्म की सैकड़ों अफ़वाहें उड़ रही थीं. आम लोग घबराये हुये थे. उनकी समझ में न आता कि क्या करें और इस आने वाली मुसीबत से अपने आप को और अपने साथ वालों को कैसे बचावें. कुछ लोग आम लोगों की इस बेचैनी और परेशानी से ख़ुश भी थे. वह मूछों पर ताव दिये, लाठियों पर तेल लगाये इधर उधर अकड़ते फिरते और जहाँ कहीं दो चार आदमी देखते, फ़ौरन अपनी बहादुरी और, अगर दंगा हुआ तो वह क्या क्या कर डालेंगे, का राग अलापने लगते. आम लोग उनकी सूरत देखते ही काँप जाते. शहर में हर घड़ी डर और दहशत बढ़ती जाती. दो दिन पहले ही गावों में बड़ा ख़ूनी फ़साद हुआ था और उसके ज़ख़्मी और मरे हुये लोगों की लाशें अब तक हस्पताल में लाई जा रही थीं. हर आदमी को यक़ीन था कि अब दो तीन दिन के अन्दर ही शहर में भी दंगा हो जायगा. लेकिन यह किसी को भी मालूम नहीं था कि आखिर क्यों? जिस दिन लाला गोबरधन दास की कोठी पर दो नये बंदूक़चियों का पहरा लगाया गया था उसी दिन रमज़ानी ने भी दस पैसे देकर मसजिद के मौलवी साहब से एक तावीज़ लिखवाया था और अपने मकान के दरवाज़े पर चिपका दिया था. अपनी हैसियत के मुताबिक़ कोई आदमी भी अपनी हिफ़ाज़ती कारवाई से ग़ाफ़िल नहीं था.

بولی کہ شہر کے باہر پنجابی مسلمانوں کا ایک لشکر ٹھہرا ہوا ہے اور وہ کسی روز رات میں شہر پر ٹوٹ پڑے گا. کوئی کہتا کہ ہندوؤں نے آس پاس کے دیہاتوں سے ہزاروں آدمی بلا کر چھپا رکھے ہیں، جو موقع ملتے ہی ایک ایک مسلمان کی کھوپڑی توڑ کر رکھ دیں گے. اس قسم کی سیکڑوں افواہیں اڑ رہی تھیں. عام لوگ گھبرائے ہوئے تھے. ان کی سمجھ میں نہ آتا کہ کیا کریں اور اس آنے والی مصیبت سے اپنے آپ کو اور اپنے ساتھ والوں کو کیسے بچائیں. کچھ لوگ عام لوگوں کی اس بے چینی اور پریشانی سے خوش بھی تھے. وہ مونچھوں پر تاؤ دئے، لاٹھیوں پر تیل لگائے ادھر ادھر اکڑتے پھرتے اور جہاں کہیں دو چار آدمی دیکھتے، فوراً اپنی بہادری اور، اگر دنگا ہوا تو وہ کیا کیا کر ڈالیں گے، کا راگ الاپنے لگتے. عام لوگ ان کی صورت دیکھتے ہی کانپ جاتے. شہر میں ہر گھڑی ڈر اور دہشت بڑھتی جاتی. دو دن پہلے ہی گاؤں میں بڑا خونی فساد ہوا تھا اور اس کے زخمی اور مرے ہوئے لوگوں کی لاشیں اب تک ہسپتال میں لائی جا رہی تھیں. ہر آدمی کو یقین تھا کہ اب دو تین دن کے اندر ہی شہر میں بھی دنگا ہو جائے گا. لیکن یہ کسی کو بھی معلوم نہیں تھا کہ آخر کیوں؟ جس دن لالہ گوبردھن داس کی کوٹھی پر دو نئے بندوقچیوں کا پہرا لگایا گیا تھا اسی دن رمضانی نے بھی دس پیسے دے کر مسجد کے مولوی صاحب سے ایک تعویذ لکھوایا تھا اور اپنے مکان کے دروازے پر چپکا دیا تھا. اپنی حیثیت کے مطابق کوئی آدمی بھی اپنی حفاظتی کاروائی سے غافل نہیں تھا.

रमज़ानी ने जयराम हलवाई के यहाँ से दो रूपये की सेर भर इमरतियाँ तौलवाईं लेकिन इसके पहले कि दोना उसके हाथों में पहुँचता, रमेश पहलवान आ गया और उसने रमज़ानी को धक्का देकर जयराम के बढ़े हुये हाथों से दोना ले लिया और चलता बना. रमज़ानी रूपये पहले ही फेंक चुका था. उसने जयराम से बिगड़ कर कहा—"लाओ मेरी इमरतियाँ मुझे दो!"

जयराम, जो रमेश के एकाएकी दोना उचक ले जाने से भौंचक्का सा रह गया था, कहने लगा—"इमरतियाँ लो जाकर पहलवान से. मैं तौल चुका. अब मैं क्या जानू?"

बस इतनी ही सी बात पर बातबढ़ गई. रमज़ानी ने आस्तीनें चढ़ाईं, हलवाई ने गाली दी, रमज़ानी ने गुस्से में आकर उसके मिठाइयां भरे दो थाल उठा कर ज़मीन पर फेंक दिये. जयराम के लड़के ने दूकान से निकल कर एक भरपूर लट्ठ रमज़ानी के सिर पर मारा. वह त्योरा कर ज़मीन पर गिर पड़ा और उसके सर से ख़ून का एक फ़ौवारा छूट निकला. इस गड़बड़ में बीस पच्चीस तमाशाई जमा हो गये. एक ने कहा—"हिन्दुओं ने एक मुसलमान को मार डाला."

दूसरे ने कहा—हाँ मार डाला, तो फिर क्या?" पास ही एक हिन्दू लड़का खड़ा था. एक मुसलमान ने उसके ज़ोर से लात मारी और वह नाली में जा गिरा.

नारए तकबीर, अल्लाहो अक्बर! जय जय महादेव! मारो, मारो! लेना! पकड़ना. लाठियों से लाठियाँ खड़कने लगीं और लोग एक दूसरे से लपट पड़े. सारे शहर में हवा उड़ गई कि 'चल गई?' और सचमुच शहर में इधर उधर चलने लगी, गली और कूचे,

رمضانی نے جے رام حلوائی کے یہاں سے دو روپئے کی سیر بھر امرتیاں تلوائیں لیکن اس کے پہلے کہ دونا اس کے ہاتھ میں پہنچتا، رمیش پہلوان آگیا اور اس نے رمضانی کو دھکا دے کر جے رام کے بڑھے ہوئے ہاتھوں سے دونا لے لیا اور چلتا بنا. رمضانی روپے پہلے ہی پھینک چکا تھا. اس نے جے رام سے بگڑ کر کہا—"لاؤ میری امرتیاں مجھے دو!"

جے رام جو رمیش کے ایکایکی دونا اچک لے جانے سے بھوچکا سا رہ گیا تھا، کہنے لگا—"امرتیاں لو جا کر پہلوان سے. میں تول چکا. اب میں کیا جانوں؟"

بس اتنی ہی سی بات پر بات بڑھ گئی. رمضانی نے آستینیں چڑھائیں، حلوائی نے گالی دی، رمضانی نے غصے میں آکر اس کے مٹھائیاں بھرے دو تھال اٹھا کر زمین پر پھینک دئے. جے رام کے لڑکے نے دکان سے نکل کر ایک بھرپور لٹھ رمضانی کے سر پر مارا. وہ تیورا کر زمین پر گر پڑا اور اس کے سر سے خون کا ایک فوارہ چھوٹ نکلا. اس گڑبڑ میں بیس پچیس تماشائی جمع ہو گئے. ایک نے کہا—"ہندوؤں نے ایک مسلمان کو مار ڈالا."

دوسرے نے کہا—"ہاں مار ڈالا، تو پھر کیا؟" پاس ہی ایک ہندو لڑکا کھڑا تھا. ایک مسلمان نے اس کے زور سے لات ماری اور وہ نالی میں جا گرا.

نعرۂ تکبیر، اللہ اکبر! جے جے مہادیو! مارو، مارو! لینا! پکڑنا. لاٹھیوں سے لاٹھیاں کھڑکنے لگیں اور لوگ ایک دوسرے سے لپٹ پڑے. سارے شہر میں ہوا اڑ گئی کہ "چل گئی؟" اور سچ مچ شہر میں ادھر ادھر چلنے لگی، گلی [illegible]

जहाँ भोले और मासूम बच्चे खेलते फिरते थे, लड़ाई का मैदान बन गये. दंगा शुरू हो चुका था और अब उसे रोकता कौन !

नारए तकबीर, अल्लाहो अकबर, जय जय महादेव ! मारो और मर-जाओ ! दीन की इज्जत ! धर्म की लाज ! शांति चाहने वाले लोग अपने अपने घरों में घुस रहे और मैदान बिलकुल ही लड़ाकू और खूनी गुंडों और लुटेरों के हाथ में आ गया. हैवानियत अपनी कामयाबी पर हँस रही थी और इन्सानियत अपना मुँह छिपाने की जगह ढूँढ रही थी !

शाम होते ही दंगा और भी बढ़ गया. अंधेरा दंगा करने वालों के लिये जैसे मुँह माँगी मुराद था . गलियाँ और अंधेरा और काम पर से लौटते हुये थके हारे मजदूर ! गुंडों को अपनी बहादुरी के जौहर दिखाने का खूब-खूब मौक़ा मिला. लाठियाँ चल रही थीं, छुरे भोंके जा रहे थे, दरवाजे तोड़े जा रहे थे, दूकानें लूटी जा रही थीं, मकान जलाये जा रहे थे और फिर चीख पुकार, भगदड़, औरतों का रोना, बच्चों का बिलखना और नारए तकबीर और जय जय महादेव ! लड़ाई के मैदान का नजारा उसके सामने हेच था. सारा शहर आग और खून के तूफ़ान में डूब चुका था. बड़ी बड़ी सड़कों और चौराहों पर पुलिस के दो चार सिपाही भी दिखाई देते लेकिन इतनी बड़ी मारधाड़ और लूट खसोट के बीच वह एक मजाक़ की चीज़ मालूम होते थे. सड़कें सुनसान थीं और गलियों में गुंडाशाही थी. हां बाजारों में कहीं कहीं लाशें पड़ी थीं या दूकानों के लूटे और फुँके हुये सामानों के पास घायल बड़ी बेबसी से कराह रहे थे. जब रात ज्यादा गई तो हिन्दू और मुसलमान गुंडों के पच्चीस पच्चीस तीस

جہاں بھولے اور معصوم بچے کھیلتے پھرتے تھے لڑائی کا میدان بن گئے .
دنگا شروع ہو چکا تھا اور اب اُسے روکتا کون !

نعرۂ تکبیر اللہ اکبر، جے جے مہادیو! مارو اور مر جاؤ! دین کی عزت! دھرم کی لاج! شانتی چاہنے والے لوگ اپنے اپنے گھروں میں گھس رہے اور میدان بالکل ہی لڑاکو اور خونی گنڈوں اور لٹیروں کے ہاتھ میں آگیا. حیوانیت اپنی کامیابی پر ہنس رہی تھی اور انسانیت اپنا منہ چھپانے کی جگہ ڈھونڈھ رہی تھی!

شام ہوتے ہی دنگا اور بھی بڑھ گیا. اندھیرا دنگا کرنے والوں کے لئے جیسے مُنہ مانگی مراد تھی. گلیوں اور اندھیرا اور کام پر سے لوٹتے ہوئے تھکے ہارے مزدور! گنڈوں کو اپنی بہادری کے جوہر دکھانے کا خوب خوب موقع ملا. لاٹھیاں چل رہی تھیں، چھرے بھونکے جا رہے تھے، دروازے توڑے جا رہے تھے، دکانیں لوٹی جا رہی تھیں، مکان جلائے جا رہے تھے اور پھر چیخ پکار، بھگدڑ، عورتوں کا رونا، بچوں کا بلکھنا اور نعرۂ تکبیر اور جے جے مہادیو! لڑائی کے میدان کا نظارہ جس کے سامنے ہیچ تھا. سارا شہر آگ اور خون کے طوفان میں ڈوب چکا تھا. بڑی بڑی سڑکوں اور چوراہوں پر پولیس کے دو چار سپاہی بھی دکھائی دیتے لیکن اتنی بڑی مار دھاڑ اور لوٹ کھسوٹ کے بیچ وہ ایک مذاق کی چیز معلوم ہوتے تھے. سڑکیں سنسان تھیں اور گلیوں میں گنڈا شاہی تھی. ہاں بازاروں میں کہیں کہیں لاشیں پڑی تھیں یا دکانوں کے لُٹے اور پھُکے ہوئے سامانوں کے پاس گھایل بڑی بے بسی سے کراہ رہے تھے. جب رات زیادہ گئی تو ہندو اور مسلمان گنڈوں کے پچیس پچیس تیس

बीस के गिरोह बाक़ायदा घरों पर छापे मारने लगे. माल असबाब की तरह बेचारी घर में बैठने वाली औरतें भी लूटी जा रही थीं. बूढ़ी औरतों को तो मार डालने की कोशिश की जाती लेकिन जवान औरतों को थोड़ी बहुत शैतानी छेड़छाड़ के बाद एक तरफ़ एकत्रा कर लिया जाता. आठ दस साल की लड़की तक का शुमार जवान औरतों में किया जाता. बच्चों को जवान और बूढ़े मर्दों से ज़्यादा तेज़ी के साथ ख़तम किया जाता.........इंसान की इन्सानियत ख़तम हो चुकी थी. और सदियों से सोई हुई उसकी हैवानियत अपनी असली शक्ल में जाग उठी थी. वह जानवरों से भी ज़्यादा भयानक बन गया था. बच्चों की टाँगें पकड़ कर उनका सर दीवार पर दे मारा जाता. बूढ़ी औरतों को कोठे पर से नीचे ढकेल दिया जाता. रोते बिलबिलाते, हाथ जोड़ते इन्सानों के सीने में बड़ी ही बेदर्दी से छुरे भोंक दिये जाते, दम तोड़ते जवानों के सीने पर ईंटें दे मारी जातीं. औरतों को उनके बाप, पति और बच्चों के सामने नंगा कर दिया जाता—और यह सब कुछ धर्म और मज़हब के नाम पर था!—धर्म का बोलबाला और अधर्म का मुँहकाला!

पंडित शिवशंकर के बड़े दो तल्ले मकान के पास ही बदलू कुँजड़े की कोठरी थी. पंडित जी की बज़ाज़े में कपड़े की बहुत मशहूर दूकान थी और वह सारा दिन वहीं रहते. बदलू हर रोज़ मार्केट से चार छः रुपये की तरकारी और फल लेकर शहर में फेरी से बेचता. इसीतरह उसकी सारी उमर बीत गई थी और अब उसकी उमर साठ साल से ऊपर थी. बीस साल से पंडित जी के यहाँ वही तरकारी देता था. बदलू के कोई संतान नहीं थी. तीन लड़कियाँ हुई थीं लेकिन जिन्दा

تیس کے گروہ باقاعدہ گھروں پر چھاپے مارنے لگے. مال اسباب کی طرح بیچاری گھر میں بیٹھنے والی عورتیں بھی لوٹی جا رہی تھیں. بوڑھی عورتوں کو تو مار ڈالنے کی کوشش کی جاتی لیکن جوان عورتوں کو تھوڑی بہت شیطانی چھیڑ چھاڑ کے بعد ایک طرف اکٹھا کر لیا جاتا. آٹھ دس سال کی لڑکی تک کا شمار جوان عورتوں میں کیا جاتا. بچوں کو جوان اور بوڑھے مردوں سے زیادہ تیزی کے ساتھ ختم کیا جاتا...... انسان کی انسانیت ختم ہو چکی تھی. اور صدیوں سے سوئی ہوئی اس کی حیوانیت اپنی اصلی شکل میں جاگ اٹھی تھی. وہ جانوروں سے بھی زیادہ بھیانک بن گیا تھا. بچوں کی ٹانگیں پکڑ کر ان کا سر دیوار پر دے مارا جاتا. بوڑھی عورتوں کو کوٹھے پر سے نیچے ڈھکیل دیا جاتا. روتے بلبلاتے، ہاتھ جوڑتے انسانوں کے سینے میں بڑی ہی بے دردی سے چھرے بھونک دئے جاتے، دم توڑتے جوانوں کے سینے پر اینٹیں دے ماری جاتیں. عورتوں کو ان کے باپ، پتی اور بچوں کے سامنے ننگا کر دیا جاتا— اور یہ سب کچھ دھرم اور مذہب کے نام پر تھا!— دھرم کا بول بالا اور ادھرم کا منہ کالا!

پنڈت شیو شنکر کے بڑے دو منزلے مکان کے پاس ہی بدلو کنجڑے کی کوٹھری تھی. پنڈت جی کی بزازے میں کپڑے کی بہت مشہور دکان تھی اور وہ سارا دن وہیں رہتے. بدلو ہر روز مارکٹ سے چار چھ روپے کی ترکاری اور پھل لے کر شہر میں پھیری سے بیچتا. اسی طرح اس کی ساری عمر بیت گئی تھی اور اب اس کی عمر ساٹھ سال سے اوپر تھی. بیس سال سے پنڈت جی کے یہاں وہی ترکاری دیتا تھا. بدلو کے کوئی سنتان نہیں تھی. تین لڑکیاں ہوئی تھیں لیکن زندہ

एक भी नहीं बची. बीवी भी मर चुकी थी और बहुत अरसे से वह अकेला ही रहता. पंडित जी के सब लड़के और लड़कियाँ उसकी गोद के खिलाये हुये थे, और उसी के हाथों अमरूद, केले, संतेरे नारियल और कमरखें खा खा कर पले बढ़े थे. वह सब उसको 'बदलू चाचा' कहते. बदलू जब शाम को वापस आता तो उन बच्चों के लिये ज़रूर कुछ न कुछ लाता. और यह बच्चे भी कुछ ऐसा परच गये थे कि उसके आने से पहले ही उसकी कोठरी के सामने इकट्ठा हो जाते और जब तक उससे खाने के लिये कुछ ले न लेते न टलते. पंडित जी रूखे मिज़ाज के आदमी थे. वह बदलू को कभी मुंह न लगाते और घर में जब किसी बच्चे को खाँसी आती तो फ़ौरन बदलू को ही डाँटते—"यह तुम अमरूद और कमरखें खिला खिलाकर इन लड़कों को खाँसी लगाते हो. अब जो तुमने किसी बच्चे को कुछ खिलाया तो मुझसे बुरा कोई न होगा."

पंडित जी जब बदलू को डाँटते तो सब लड़के और लड़कियाँ छिप-छिप कर सुनतीं और जब पंडित जी चले जाते तो बदलू के पास आकर सब उसे चिढ़ातीं—"बदलू चाचा डाँटे गये ! बदलू चाचा डाँटे गये !!" बदलू झूटमूट मुंह बनाने लगता और कहता—"लाट साहब के पतलून की क़सम, अब कभी तुम लोगों को कोई चीज़ नहीं दूंगा." इस पर लड़के और लड़कियाँ उसकी ख़ुशामद करने लगते. बड़ी देर तक यह क़िस्सा रहता और आख़िर में इस पर समझौता हो जाता कि कोई लड़का या लड़की पंडित जी के सामने खाँसेगा नहीं और बदलू बराबर उन सब को चीज़ें देता रहेगा.

ایک بھی نہیں بچی بیوی بھی مر چکی تھی اور بہت عرصے سے وہ اکیلا ہی رہتا۔ پنڈت جی کے سب لڑکے اور لڑکیاں اُس کی گود کے کھلائے ہوئے تھے، اور اُسی کے ہاتھوں امرود، کیلے، سنترے، ناریل اور کمرکھیں کھا کھا کر پلے بڑھے تھے۔ وہ سب اُس کو "بدلو چاچا" کہتے۔ بدلو جب شام کو واپس آتا تو اُن بچوں کے لئے ضرور کچھ نہ کچھ لاتا۔ اور یہ بچے بھی کچھ ایسا پرچ گئے تھے کہ اُس کے آنے سے پہلے ہی اُس کی کوٹھری کے سامنے اکٹھا ہو جاتے اور جب تک اُس سے کھانے کے لئے کچھ لے نہ لیتے نہ ٹلتے۔ پنڈت جی روکھے مزاج کے آدمی تھے، وہ بدلو کو کبھی مُنہ نہ لگاتے اور گھر میں جب کسی بچے کو کھانسی آتی تو فوراً بدلو کو ہی ڈانٹتے— "یہ تم امرود اور کمرکھیں کھلا کھلا کر ان لڑکوں کو کھانسی لگاتے ہو۔ اب جو تم نے کسی بچے کو کچھ کھلایا تو مجھ سے بُرا کوئی نہ ہوگا۔"

پنڈت جی جب بدلو کو ڈانٹتے تو سب لڑکے اور لڑکیاں چھپ چھپ کر سنتیں اور جب پنڈت جی چلے جاتے تو بدلو کے پاس آکر سب اُسے چڑھاتیں— "بدلو چاچا ڈانٹے گئے! بدلو چاچا ڈانٹے گئے!!" بدلو جھوٹ موٹ مُنہ بنانے لگتا اور کہتا— "لاٹ صاحب کے پتلون کی قسم، اب کبھی تم لوگوں کو کوئی چیز نہیں دوں گا۔" اس پر لڑکے اور لڑکیاں اُس کی خوشامد کرنے لگتے۔ بڑی دیر تک یہ قصہ رہتا اور آخر میں اس پر سمجھوتا ہو جاتا کہ کوئی لڑکا یا لڑکی پنڈت جی کے سامنے کھانسے گا نہیں اور بدلو برابر ان سب کو چیزیں دیتا رہے گا۔

پنڈت جی کی سب سے چھوٹی لڑکی راج کماری بدلو کو بہت

ज्यादा प्यारी थी. वह उसको अपनी बेटी की तरह समझता. सब बच्चों में उसी को सबसे ज्यादा चाहता और उसी के लिये सबसे अच्छी चीजें लाता. फलों के अलावा अक्सर उसके लिये खिलौने भी ले आता. राजकुमारी भी उससे बहुत हिली हुई थी. घंटों उसके पास खेला करती, और उसकी हर एक चीज का अपने को मालिक समझती. उसकी डलिया में से जो चीज चाहती बेधड़क निकाल लेती और कभी कभी जब उससे खफ़ा होती तो उसके लिपट जाती और उसकी दाढ़ी खूब नोचती. बदलू उसकी किसी बात को बुरा न मानता. राजकुमारी जरा बड़ी हुई तो वह बदलू का और ज्यादा खयाल करने लगी. घर में जो कोई भी अच्छी चीज पकती वह बदलू के लिये जरूर अलग निकाल कर रख लेती. पंडित जी के पुराने कपड़े वह बड़ी मेहनत से बदलू के लिये दुरुस्त कर देती और बदलू को अपने पास से अपने लिये कोई कपड़ा न बनवाना पड़ता. एक बार बदलू बीमार हुआ और आठ दिन चारपाई पर पड़ा रहा तो राजकुमारी न उसकी बड़ी देखभाल और सेवा की. पंडित जी की पत्नी रूपा देवी को भी बदलू से हमदर्दी थी. एक दिन उन्होंने बदलू से कहा—"राजकुमारी का ब्याह होने वाला है. बेटी बनाया है तो अब कुछ खर्च भी करो."

बदलू ने जवाब दिया—"मेरे पास तो जो कुछ भी है, राजकुमारी ही का है. उसके लिये खर्च करना क्या मुशकिल है. मैं उसको सोने के कंगन बनवा दूँगा."

रूपा देवी ने मुँह बना कर कहा—"कंगन बनवाने में बहुत खर्च होगा."

زیادہ پیاری تھی. وہ اُس کو اپنی بیٹی کی طرح سمجھتا. سب بچوں میں اُسی کو سب سے زیادہ چاہتا اور اُسی کے لئے سب سے اچھی چیزیں لاتا. پھلوں کے علاوہ اکثر اُس کے لئے کھلونے بھی لے آتا. راج کماری بھی اُس سے بہت ہلی ہوئی تھی. گھنٹوں اُس کے پاس کھیلا کرتی، اور اُس کی ہر ایک چیز کا اپنے کو مالک سمجھتی. اُس کی ڈلیا میں سے جو چیز چاہتی بے دھڑک نکال لیتی اور کبھی کبھی جب اُس سے خفا ہوتی تو اُس کے لپٹ جاتی اور اُس کی داڑھی خوب نوچتی. بدلو اُس کی کسی بات کو بُرا نہ مانتا. راج کماری ذرا بڑی ہوئی تو وہ بدلو کا اور زیادہ خیال کرنے لگی. گھر میں جو کوئی بھی اچھی چیز پکتی وہ بدلو کے لئے ضرور الگ نکال کر رکھ لیتی. پنڈت جی کے پرانے کپڑے وہ بڑی محنت سے بدلو کے لئے درست کر دیتی اور بدلو کو اپنے پاس سے اپنے لئے کوئی کپڑا نہ بنوانا پڑتا. ایک بار بدلو بیمار ہوا اور آٹھ دن چارپائی پر پڑا رہا تو راج کماری نے اُس کی بڑی دیکھ بھال اور سیوا کی. پنڈت جی کی پتنی روپا دیوی کو بھی بدلو سے ہمدردی تھی. ایک دن اُنھوں نے بدلو سے کہا— "راج کماری کا بیاہ ہونے والا ہے. بیٹی بنایا ہے تو اب کچھ خرچ بھی کرو."

بدلو نے جواب دیا— "میرے پاس تو جو کچھ بھی ہے، راج کماری ہی کا ہے. اُس کے لئے خرچ کرنا کیا مشکل ہے. میں اُس کو سونے کے کنگن بنوا دوں گا."

روپا دیوی نے مُنہ بنا کر کہا— "کنگن بنوانے میں بہت خرچ ہوگا."

बद्दू बेपरवाही से बोला—"हूँ ! इससे आपको क्या मतलब ? वह मैं जानूं और मेरी बेटी."

बद्दू के कई सौ रुपये राजकुमारी के पास जमा थे.

पंडितजी का मकान बजाजेके पिछवाड़े नरायनटोले में था. उस मोहल्ले में अधिक तर हिन्दुओं के घर थे.

रात को ग्यारह बजे के क़रीब मुसलमानों के एक बहुत बड़े हथियार बन्द गिरोह ने उस पर हमला किया. नारएतकबीर, अल्लाहो अकबर से सारा मोहल्ला गूँज उठा और उसके साथ ही औरतों का रोना और बच्चों का चिल्लाना और लोगों की चीख पुकार की भयानक आवाजें भी आने लगीं. हर तरफ़ मारधाड़ और लूट मार शुरू हो गई. बड़ा ही भयानक समाँ था. दस पन्द्रह घर लूटे गये और उनके रहने वालों को बड़ी ही बेरहमी के साथ मौत के घाट उतार दिया गया. सात आठ घरों में, जहाँ दरवाजे नहीं तोड़े जा सके, पेट्रोल छिड़क कर आग लगा दी गई और देखते ही देखते आग की लपटें हवा से बातें करने लगीं. एक गिरोह ने पंडित शिवशंकर का मकान घेर लिया और लाठियों और बल्लमों से उनका दरवाजा तोड़ने लगा।

बद्दू अपनी कोठरी से यह सब देख रहा था—उससे न रहा गया तो वह पंडित जी के दरवाजे के पास जाकर खड़ा हो गया और बलवाइयों से हाथ जोड़ कर कहने लगा—"यहाँ सिर्फ़ पंडित जी के बाल बच्चे रहते हैं, इनको सताने से कुछ नहीं मिलेगा."

"तू कौन ?" कह कर एक बलवाई ने बद्दू को घसीट लिया और बड़ी ज़ोर से उसके एक थप्पड़ मारा.

بدلو بے پرواہی سے بولا — "ہوں! اس سے آپ کو کیا مطلب؟ یہ میں جانوں اور میری بیٹی!"

بدلو کے کئی سو روپے راج کماری کے پاس جمع تھے۔

پنڈت جی کا مکان بزازے کے پچھواڑے نراین ٹولے میں تھا۔ اس محلے میں ادھک تر ہندوؤں کے گھر تھے۔

رات کو گیارہ بجے کے قریب مسلمانوں کے ایک بہت بڑے ہتھیار بند گروہ نے اس پر حملہ کیا۔ نعرۂ تکبیر، اللہ اکبر سے سارا محلہ گونج اٹھا اور اس کے ساتھ ہی عورتوں کا رونا اور بچوں کا چلانا اور لوگوں کی چیخ پکار کی بھیانک آوازیں بھی آنے لگیں۔ ہر طرف مار دھاڑ اور لوٹ مار شروع ہو گئی۔ بڑا ہی بھیانک سماں تھا۔ دس پندرہ گھر لوٹے گئے اور ان کے رہنے والوں کو بڑی ہی بے رحمی کے ساتھ موت کے گھاٹ اتار دیا گیا۔ سات آٹھ گھروں میں، جہاں دروازے نہیں توڑے جا سکے، پٹرول چھڑک کر آگ لگا دی گئی اور دیکھتے ہی دیکھتے آگ کی لپٹیں ہوا سے باتیں کرنے لگیں۔ ایک گروہ نے پنڈت شیو شنکر کا مکان گھیر لیا اور لاٹھیوں اور بلموں سے ان کا دروازہ توڑنے لگا۔

بدلو اپنی کوٹھری سے یہ سب دیکھ رہا تھا — اس سے نہ رہا گیا تو وہ پنڈت جی کے دروازے کے پاس جا کر کھڑا ہو گیا اور بلوائیوں سے ہاتھ جوڑ کر کہنے لگا — "یہاں صرف پنڈت جی کے بال بچے رہتے ہیں، ان کو ستانے سے کچھ نہیں ملے گا!"

"تو کون؟" کہہ کر ایک بلوائی نے بدلو کو گھسیٹ لیا اور بڑی زور سے اس کے ایک تھپڑ مارا۔

दो एक और बलवाई उसको मारने के लिये आगे बढ़े. लेकिन किसी ने उसके चेहरे पर टार्च की रोशनी डाल कर कहा—"अरे यह तो बदलू कुँजड़ा है !"

मारने वाले रुक गये और बदलू उठ कर खड़ा हो गया.

"बड़ा-हमदर्द का बच्चा बनकर चला है, हरामज़ादा !" बलवाईयों में से किसी ने कहा.

पंडित जी का दरवाज़ा टूटने ही वाला था कि एक दम से बदलू दौड़ कर दरवाज़ा गिराने वालों और दरवाज़े के बीच घुस पड़ा, "मैं दरवाज़ा नहीं तोड़ने दूँगा ! नहीं तोड़ने दूँगा !!"

"तेरा दिमाग़ ख़राब है ?"

"दिमाग़ ख़राब है तुम्हारा. बेचारी शरीफ़ औरतों को सताने से फ़ायदा ?" बदलू ने हाँफते हुये कहा.

"इस हरामज़ादे को भी जहन्नुम पहुँचाओ !"

"मारो ! मारो साले को !"

"यह इसलाम का दुशमन है" भीड़ से लोगों ने कहा.

"हटते हो या पड़ती है लाठी ?" एक बलवाईने बदलू से कहा.

"नहीं हटूंगा. मेरे जीते जी तुम ...." बदलू बात पूरी न कर सका. उसके सिर पर दो लाठियाँ पड़ीं और वह बेसुध होकर डेवढ़ी पर गिर पड़ा.

"बिलकुल पागल ही था साला !" एक ने कहा.

"इस ग़द्दार का यही हश्र होना चाहिये था." किसी और ने कहा.

तीन चार बलवाई आगे बढ़े और बदलू को डेवढ़ी से घसीट

دو ایک اور بلوائی اس کو مارنے کے لئے آگے بڑھے. لیکن کسی نے اس کے چہرے پر ٹارچ کی روشنی ڈال کر کہا—"ارے یہ تو بدلو کنجڑا ہے!"

مارنے والے رک گئے اور بدلو اٹھ کر کھڑا ہو گیا.

"بڑا ہمدرد کا بچہ بن کر چلا ہے، حرام زادہ!" بلوائیوں میں سے کسی نے کہا.

پنڈت جی کا دروازہ ٹوٹنے ہی والا تھا کہ ایک دم سے بدلو دوڑ کر دروازہ گرانے والوں اور دروازے کے بیچ گھس پڑا، "میں دروازہ نہیں توڑنے دوں گا! نہیں توڑنے دوں گا!!"

"تیرا دماغ خراب ہے؟"

"دماغ خراب ہے تمہارا. بیچاری شریف عورتوں کو ستانے سے فائدہ؟" بدلو نے ہانپتے ہوئے کہا.

"اس حرام زادے کو بھی جہنم پہنچاؤ!"

"مارو! مارو سالے کو!"

"یہ اسلام کا دشمن ہے" بھیڑ سے لوگوں نے کہا.

"ہٹتے ہو یا پڑتی ہے لاٹھی؟" ایک بلوائی نے بدلو سے کہا.

"نہیں ہٹوں گا. میرے جیتے جی تم......" بدلو بات پوری نہ کر سکا. اس کے سر پر دو لاٹھیاں پڑیں اور وہ بے سدھ ہو کر ڈیوڑھی پر گر پڑا.

"بالکل پاگل ہی تھا سالا!" ایک نے کہا.

"اس غدار کا یہی حشر ہونا چاہئے تھا." کسی اور نے کہا.

تین چار بلوائی آگے بڑھے اور بدلو کو ڈیوڑھی سے گھسیٹ

कर नाली के पास डाल दिया. दरवाजे पर फिर लाठियाँ, बल्लम और हथौड़े बरसने लगे.

एकाएक पास ही से 'जय बजरंग बली' का नारे सुनाई दिया. "हिन्दुओं का मजमा आ रहा है." किसी ने कहा और मजमे में खलबली मच गई. कहीं से दो तीन बन्दूकें चलने की भी आवाजें आईं "भागो, भागचलो!" की आवाजें सुनाई दीं और जो मजमा पंडित शिवशंकर का मकान घेरे हुये था वह एक तरफ भाग निकला.

गली में फिर सन्नाटा छा गया.

मजमे के जाते ही राजकुमारी घर वालों की आँखें बचाकर चोर दरवाजे से गली में निकल आई. वह ऊपर की खिड़की से देख चुकी थी कि बेचारे बद्दू का क्या हाल हुआ था. उसने फ़ौरन जमीन पर बैठकर बद्दू का सर अपनी गोद में उठा लिया और अपनी साड़ी का पल्ला नोच कर उसके माथे से खून पोंछने लगी.

बद्दू धीरे धीरे कराह रहा था. राजकुमारी रोती जाती और भर्राई हुई आवाज में कहती जाती—"चाचा! आखें खोलो, मैं हूँ राजकुमारी!"

"जय बजरंग बली," "जय महादेव!" "हरि ओम" के नारे लगाता हुआ एक बहुत भारी मजमा गली में घुस आया. उसके साथ गैस की लालटेनें भी थीं. बेचारी राजकुमारी हक्का बक्का रह गई. उसके बदन में कपकपी दौड़ गई और वह आँखें फाड़कर

نالی کے پاس ڈال دیا. دروازے پر پھر لاٹھیاں، بلّم اور ہتھوڑے برسنے لگے.

یکایک پاس ہی سے 'جے بجرنگ بلی' کا شور سنائی دیا. "ہندوؤں کا مجمع آرہا ہے." کسی نے کہا اور مجمع میں کھلبلی مچ گئی. کہیں سے دو تین بندوقیں چلنے کی بھی آوازیں آئیں "بھاگو، بھاگ چلو!" کی آوازیں سنائی دیں اور جو مجمع پنڈت شیوشنکر کا مکان گھیرے ہوئے تھا وہ ایک طرف بھاگ نکلا.

گلی میں پھر سناٹا چھا گیا.

مجمع کے جاتے ہی راج کماری گھر والوں کی آنکھیں بچا کر چور دروازے سے گلی میں نکل آئی. وہ اوپر کی کھڑکی سے دیکھ چکی تھی کہ بےچارے بدلو کا کیا حال ہوا تھا. اس نے فوراً زمین پر بیٹھ کر بدلو کا سر اپنی گود میں اٹھا لیا اور اپنی ساڑی کا پلّو نوچ کر اس کے ماتھے سے خون پونچھنے لگی.

بدلو دھیرے دھیرے کراہ رہا تھا. راج کماری روتی جاتی اور بھرّائی ہوئی آواز میں کہتی جاتی—"چاچا! آنکھیں کھولو، میں ہوں راج کماری!"

"جے بجرنگ بلی" "جے مہادیو!" "ہری اوم" کے نعرے لگاتا ہوا ایک بہت بھاری مجمع گلی میں گھس آیا. اس کے ساتھ گیس کی لالٹینیں بھی تھیں. بےچاری راج کماری ہکا بکا رہ گئی. اس کے بدن میں کپکپی دوڑ گئی اور وہ آنکھیں پھاڑ کر

भीड़ को देखने लगी.

भीड़ में से एक महाशय ने बढ़कर पूछा—"तुम कौन ?"

"राजकुमारी"

"और यह कौन ?"

"चाचा."

"अरे यह बदलू है. बदलू कुँजड़ा. मुसलमंटा." एक बलवाई ने चीख कर कहा. लालटेनें क़रीब आ गईं.

"दम बाक़ी है अभी साले में, साँस ले रहा है." किसी और ने कहा.

"खतम करो, खतम करो !"

"मारो !" भीड़ में से कई लोगों ने कहा.

एक बहादुर हिन्दू ने पैंतरा बदल कर बदलू पर बल्लम का भरपूर वार किया लेकिन इसके पहले कि यह वार बदलू पर लगता, राजकुमारी बीच में आ गई. बल्लम का फल उसकी छाती के आर-पार हो गया और वह फड़कती हुई बदलू के बेसुध शरीर पर गिर पड़ी.

"मुसलमंटे के पीछे जान देदी. हाय हाय."

"ऐसी कन्यायें अपने धर्म के लिये कलंक का टीका हैं ! इसकी यही सजा है."

"यह उमर और यह इश्क़ बाज़ी ?"

"बे धरम, हरामजादी" भीड़ के लोग इसी तरह की बातें करते हुए आगे बढ़े.

———

بھیڑ کو دیکھنے لگی.

بھیڑ میں سے ایک مہاشے نے بڑھ کر پوچھا—"تم کون ؟"

"راج کماری."

"اور یہ کون ؟"

"چاچا."

"ارے یہ بدلو ہے. بدلو کنجڑا مسلمنٹا." ایک بلوائی نے چیخ کر کہا. لالٹینیں قریب آ گئیں.

"دم باقی ہے ابھی سالے میں، سانس لے رہا ہے." کسی اور نے کہا.

"ختم کرو، ختم کرو !"

"مارو !" بھیڑ میں سے کئی لوگوں نے کہا.

ایک بہادر ہندو نے پینترا بدل کر بدلو پر بلم کا بھرپور وار کیا لیکن اس کے پہلے کہ یہ وار بدلو پر لگتا، راج کماری بیچ میں آ گئی. بلم کا پھل اس کی چھاتی کے آر پار ہو گیا اور وہ پھڑکتی ہوئی بدلو کے بے سدھ شریر پر گر پڑی.

"مسلمنٹے کے پیچھے جان دے دی. ہائے ہائے."

"ایسی کنیائیں اپنے دھرم کے لئے کلنک کا ٹیکا ہیں ! اس کی یہی سزا ہے."

"یہ عمر اور یہ عشق بازی ؟"

"بے دھرم، حرام زادی" بھیڑ کے لوگ اسی طرح کی باتیں کرتے ہوئے آگے بڑھے.

सुबह को जब सूरज अपनी खूनी किरणें फैलाता हुआ निकला तो सारे शहर में हिन्दू-मुस्लिम दंगा हो रहा था. लेकिन एक गली में एक पैंसठ साल का मुसलमान बूढ़ा और एक चौदह साल की हिन्दू लड़की एक दूसरे के बग़ल में लेटे अपनी कभी न टूटने वाली नींद में मुसकुरा रहे थे. ऐसा लगता था जैसे दुनिया के लिये उनके पास भी कोई संदेश था.

('फ़साना' इलाहाबाद से)

जो ख़ुदाय महजीद बसतु है, अवर मुलुक केहि केरा,
तीरथ मूरत राम निवासी, दुइ मँह किनहु न फेरा.
पूरब दिसा हरी को बासा, पच्छिम अलह मुक़ामा,
दिल मँह खोज दिलहि मँह खोजो, इहै करीमा रामा.
वेद कतेब कहो किन झूठा, मूठा जो न विचारै,
सब घट एक एक कर जानै, वै दूजा केहि मारै.
जेते औरत मर्द उपाने, सो सब रूप तुम्हारा,
कबीर पोंगरा अल्लह राम का, सो गुरु पीर हमारा

—कबीर

صبح کو جب سورج اپنی خونی کرنیں پھیلاتا ہوا نکلا تو سارے شہر میں ہندو مسلم دنگا ہو رہا تھا۔ لیکن ایک گلی میں ایک پینسٹھ سال کا ایک مسلمان بوڑھا اور ایک چودہ سال کی ہندو لڑکی ایک دوسرے کے بغل میں لیٹے اپنی کبھی نہ ٹوٹنے والی نیند میں مسکرا رہے تھے۔ ایسا لگتا تھا جیسے دنیا کے لئے ان کے پاس بھی کوئی سندیش تھا۔

('فسانہ' الہ آباد سے)

جو خدائے مسجد بس تو ہے، اور ملک کیہی کیرا،
تیرتھ مورت رام نواسی، دوئی منہ کنہو نہ پھیرا۔
پورب دِسا ہری کو باسا، پچھم اللہ مقاما،
دل منہ کھوج دلی منہ کھوجو، اہے کریما راما۔
وید کتیب کہو کن جھوٹھا، جھوٹھا جو نہ وچارے،
سب گھٹ ایک ایک کر جانے، اوے دوجا کیہی مارے۔
جیتے عورت مرد اپانے، سو سب روپ تمہارا،
کبیر پونگرا اللہ رام کا، سو گرو پیر ہمارا۔

— کبیر

गाँधी जी और क्रांतिकारी

(भाई जी० रामचंद्रन)

हम कुछ आदमी सेवाग्राम के मेहमान घर के बरामदे में बैठे हुये थे. वह जगह हम लोगों से अक्सर घिरी रहा करती थी और दुनिया भर की बातें वहाँ की जातीं. इतने में ही वह आया और हमारे बीच में आकर बैठ गया. उसका आना एक दूसरे सूबे से हुआ था और उस व्यक्ति से शोहरत या प्रसिद्ध भी दूर नहीं थी. बैठते ही उसने कहना शुरू किया—"हमारे प्रांत में गांधी जी देवता की तरह नहीं पूजे जाते."

यह कह कर उसने एक असर डालने वाली चुप्पी साध ली.

"हम उन्हें सिर्फ़ एक नेता ही मानते हैं और इस समय उन्होंने जिस पालिसी को स्वीकार किया है उससे हम काफ़ी असंतुष्ट हैं."

वह और भी बहुत सी बातें करता रहा, और उसने बताया कि बापू से कुछ जरूरी मसलों पर बहस करने के लिये ही वह आया है. हम पर उसका काफ़ी असर पड़ा और यह देखकर वह खुश हो गया.

"हमारे प्रांत में सब क्रन्तिकारी हैं," उसकी आवाज़ में एक चुनौती सी थी. फिर वह बोला—"हम ताक़त पर अधिकार पा लेने के लिये बहुत बेचैन हैं." बात बहुत साफ़ थी, मतलब यह था कि बापू उसके लिये काफ़ी 'क्रांतिकारी' नहीं थे. और वह स्वाराज्य

گاندھی جی اور کرانت کاری

(بھائی جی۔ رام چندرن)

ہم کچھ آدمی سیواگرام کے مہمان گھر کے برامدے میں بیٹھے ہوئے تھے۔ وہ جگہ ہم لوگوں سے اکثر گھری رہا کرتی تھی اور دُنیا بھر کی باتیں وہاں کی جاتیں۔ اتنے میں ہی وہ آیا اور ہمارے بیچ میں آکر بیٹھ گیا۔ اُس کا آنا ایک دوسرے صوبے سے ہوا تھا اور اُس ویکتی سے شہرت یا پرسدھی بھی دور نہیں تھی۔ بیٹھتے ہی اس نے کہنا شروع کیا— "ہمارے پرانت میں گاندھی جی دیوتا کی طرح نہیں پوجے جاتے۔"

یہ کہہ کر اُس نے ایک اثر ڈالنے والی چپی سادھ لی۔

ہم انھیں صرف ایک نیتا ہی مانتے ہیں اور اس سمے انھوں نے جس پالیسی کو سویکار کیا ہے اُس سے ہم کافی اسنتشٹ ہیں۔"

وہ اور بھی بہت سی باتیں کرتا رہا اور اُس نے بتایا کہ باپو سے کچھ ضروری مسئلوں پر بحث کرنے کے لئے ہی وہ آیا ہے۔ ہم پر اُس کا کافی اثر پڑا اور یہ دیکھ کر وہ خوش ہو گیا۔

"ہمارے پرانت میں سب کرانت کاری ہیں" اُس کی آواز میں ایک چنوتی سی تھی۔ پھر وہ بولا— "ہم طاقت پر ادھکار پالینے کے لئے بہت بے چین ہیں" بات بہت صاف تھی، مطلب یہ تھا کہ باپو اُس کے لئے کافی 'کرانت کاری' نہیں تھے۔ اور وہ سوراجیہ

पाने के लिये बहुत ही धीमी रफ़्तार से बढ़ रहे थे.

गांधीजी से भेंट करने के लिये उसे दोपहर के बाद का समय दिया गया था. हम लोग बड़ी बेचैनी से इन्तज़ार कर रहे थे. क्रांतिकारी महोदय क़रीब एक घंटे तक बापू के साथ कुटिया में रहे और फिर उनसे शाम को प्रार्थना के मौक़े पर हमारी भेंट हुई. लेकिन कितना परिवर्तन हो गया था उस व्यक्ति में; सारा शोर और अपनी तारीफ़ व घमण्ड ख़तम हो चुका था. तब हममें से एक ने पूछा—"कहो भाई, बापू के साथ कैसी निपटी? क्या तुमने उन्हें बताया कि तुम्हारे प्रांत में लोग कैसे असंतुष्ट हैं?"

हमें ताज्जुब हुआ कि वह व्यक्ति कुछ क्षमा प्रार्थना की सी भावना में डूबा हुआ था. कहने लगा—"तुम जानते हो हम लोग कितने मूर्ख हो सकते हैं?"

बापू की कुटिया में छोटा सा दिया प्रकाश फैला रहा था और वह छोटासा साधु जीव कुछ फ़ाइलों पर झुका हुआ काम में लगा था. उसी ओर इशारा करते हुये क्रांतिकारी महोदय बोले—"सिर्फ़ उस कुटी में बैठा हुआ वह ज़रा सा व्यक्ति ही हमारे देश में सच्चा क्रांतिकारी है. हम केवल बात करने और शोर मचाने में ही अपना समय गुज़ारते हैं और वह काम करता है. गांधी जी ने मुझे थोड़ी ही देर में अपने शांत शब्दों से असलियत की धरती पर ला पटका है. हम सब में वह सबसे बड़े यथार्थ वादी या सचाई पसन्द करने वाले हैं."

इतना कहकर वह चुप हो गया. उसने हमारी बातें ध्यान से सुनीं. शायद वह सोच में डूबा था—गहरी और गंभीर सोच में.

پانے کے لئے بہت ہی دھیمی رفتار سے بڑھ رہے تھے۔

گاندھی جی سے بھینٹ کرنے کے لئے اُسے دوپہر کے بعد کا سمے دیا گیا تھا۔ ہم لوگ بڑی بےچینی سے انتظار کر رہے تھے۔ کرانت کاری مہودے قریب ایک گھنٹے تک باپو کے ساتھ کٹیا میں رہے اور پھر اُن سے شام کو پرارتھنا کے موقع پر ہماری بھینٹ ہوئی لیکن کتنا پرورتن ہو گیا تھا اُس ویکتی میں؛ سارا شور اور اپنی تعریف و گھمنڈ ختم ہو چکا تھا۔ تب ہم میں سے ایک نے پوچھا—"کہو بھائی، باپو کے ساتھ کیسی نپٹی؟ کیا تم نے انھیں بتایا کہ تمھارے پرانت میں لوگ کیسے اسنتشٹ ہیں؟"

ہمیں تعجب ہوا کہ وہ ویکتی کچھ کشما پرارتھنا کی سی بھاونا میں ڈوبا ہوا تھا۔ کہنے لگا—"تم جانتے ہو ہم لوگ کتنے مورکھ ہو سکتے ہیں؟"

باپو کی کٹیا میں چھوٹا سا دیا پرکاش پھیلا رہا تھا اور وہ چھوٹا سا سادھو جیو کچھ فائلوں پر جھکا ہوا کام میں لگا تھا۔ اُسی اور اشارہ کرتے ہوئے کرانت کاری مہودے بولے—"صرف اُس کٹی میں بیٹھا ہوا وہ ذرا سا ویکتی ہی ہمارے دیش میں سچا کرانت کاری ہے۔ ہم کیول بات کرنے اور شور مچانے میں ہی اپنا سمے گزارتے ہیں اور وہ کام کرتا ہے۔ گاندھی جی نے مجھے تھوڑی ہی دیر میں اپنے شانت شبدوں سے اصلیت کی دھرتی پر لا پٹکا ہے۔ ہم سب میں وہ سب سے بڑے یتھارتھ وادی یا سچائی پسند کرنے والے ہیں۔"

اتنا کہہ کر وہ چپ ہو گیا۔ اُس نے ہماری باتیں دھیان سے سنیں۔ شاید وہ سوچ میں ڈوبا تھا—گہری اور گمبھیر سوچ میں۔

हमारी राय

बापू के बाद—

पिछले मार्च के महीने में वर्धा में रचनात्मक काम करने वालों की एक कानफ़रेन्स हुई थी. देश भर के क़रीब क़रीब सब वह सेवक जो महात्मा गान्धी के तामीरी काम में थोड़ा बहुत विश्वास रखते हैं, या उसमें लगे हुए हैं, जमा हुए. कई दिन तक बहसें, बातें, लेक्चर और सलाहें होती रहीं. इसमें शक नहीं, बीच के और मामूली दरजे के ज़्यादहतर काम करने वालों में अब भी सचाई है, लगन है और कुछ सेवा करने की इच्छा है. इन सबका आपस में मिलना ही एक अच्छी बात थी. पर सारी कानफ़रेन्स को देखते हुए मोटे तौर पर यही लगता था कि हम सब जो वहाँ जमा हुए थे एक बे सरदार की फ़ौज थे. गान्धी जी का सारा तामीरी काम बहुत दरजे तक अभी एक बिना खेवैया की नाव दिखाई देता था. हम उस कानफ़रेन्स के दूसरे कमज़ोर पहलुओं पर कुछ नहीं कहना चाहते. मेहमान दारी, खाने पीने और ठहरने ठहराने का इन्तज़ाम बहुत ही अच्छा था. एक और बात मुरझाई हुई उम्मीदों को फिर से ताज़ा करने वाली और दिल को तसल्ली देने वाली थी. वह यह कि गान्धी जी के चोटी के चेलों में से कुछ ऐसे भी हैं जो उस शक्ति के साथ न सही पर उसी सचाई, उसी असूल और उसी भावना के साथ उस बड़े काम को जारी रखना और जिन्दा रखना चाहते हैं. धर्म, मज़हब और फ़िरक़ावाराना सवाल पर भी

ہماری رائے

باپو کے بعد—

پچھلے مارچ کے مہینے میں وردھا میں رچناتمک کام کرنے والوں کی ایک کانفرنس ہوئی تھی. دیش بھر کے قریب قریب سب وہ سیوک جو مہاتما گاندھی کے تعمیری کام میں تھوڑا بہت وشواس رکھتے ہیں یا اس میں لگے ہوئے ہیں، جمع ہوئے. کئی دن تک بحثیں، باتیں، لیکچر اور صلاحیں ہوتی رہیں. اس میں شک نہیں، بیچ کے اور معمولی درجے کے زیادہ تر کام کرنے والوں میں اب بھی سچائی ہے، لگن ہے اور کچھ سیوا کرنے کی اچھا ہے. ان سب کا آپس میں ملنا ہی ایک اچھی بات تھی. پر ساری کانفرنس کو دیکھتے ہوئے موٹے طور پر یہی لگتا تھا کہ ہم سب جو وہاں جمع ہوئے تھے ایک بے سردار کی فوج تھے. گاندھی جی کا سارا تعمیری کام بہت درجے تک ابھی ایک بنا کھیویّا کی ناو دکھائی دیتا تھا. ہم اس کانفرنس کے دوسرے کمزور پہلوؤں پر کچھ نہیں کہنا چاہتے. مہمان داری، کھانے پینے اور ٹھہرنے ٹھہرانے کا انتظام بہت ہی اچھا تھا. ایک اور بات مرجھائی ہوئی امیدوں کو پھر سے تازہ کرنے والی اور دل کو تسلی دینے والی تھی. وہ یہ کہ گاندھی جی کے چوٹی کے چیلوں میں سے کچھ ایسے بھی ہیں جو اس شکتی کے ساتھ نہ سہی پر اسی سچائی، اسی اصول اور اسی بھاو کے ساتھ اس بڑے کام کو جاری رکھنا اور زندہ رکھنا چاہتے ہیں. دھرم، مذہب اور فرقہ وارانہ سوال پر بھی

इनके दिल और दिमाग़ वैसे ही आज़ाद और सच्चे हैं जैसे पूज्य बापू के थे. इनमें एक चोटी का नाम श्री विनोबा भावे का है, जिनके आजकल के कामों और विचारों को अख़बारों के पढ़ने वाले काफ़ी जान गए हैं. दूसरा नाम जिसे बहुत ही कम लोग जानते हैं हमारे बहुत दिनों के मित्र अप्पा साहब पटवर्धन का है. अप्पा साहब बहुत ही सीधे सादे विद्वान पर इस तरह के काम करने वाले हैं कि जिनके दिल और दिमाग़ की सारी बनावट में शायद ही कोई रेशा ख़ुदी या अहंकार का निकल सके. अप्पा साहब का एक लेख हिन्दू मुसलिम एकता पर १२ दिसम्बर '४७ को मरहटी ज़बान में निकला था. हमें यह लेख पसंद आया. छोटी मोटी किसी तफ़सील में फ़रक़ भी हो पर इस लेख के ख़ास ख़ास विचार हमें इतने पसंद हैं कि हम इसका हिन्दुस्तानी तरजुमा ख़ुशी से 'हमारी राय' में नीचे दे रहे हैं. अप्पा साहब ने जैसा आख़ीर में लिखा है हम चाहते हैं कि और भाई भी, हिन्दू, मुसलमान या दूसरे, इस लेख की बातों और तजवीज़ों पर 'नया हिन्द' की मार्फ़त अपनी राय ज़ाहिर करें.

११ – ५ – ४८   —सुन्दर लाल

—❀—

हम हिन्दू मुसलमान एक हैं, और आओ हम एक ही रहें !

क़ुदरत ने या कहिये ईश्वर ने ही हिन्दुस्तान के रहने वाले हम हिन्दू मुसलमानों को एक बनाया है. हमारे दोनों के जिस्म हिन्द भूमि की एक ही पाक मिट्टी से बने हैं और मरने पर उसी मिट्टी में मिल जाने वाले हैं. सरदी गरमी, हवा और बारिश,

ان کے دل اور دماغ ویسے ہی آزاد اور سچے ہیں جیسے پوجیہ باپو کے تھے۔ ان میں ایک چوٹی کا نام شری ونوبا بھاوے کا ہے، جن کے آج کل کے کاموں اور وچاروں کو اخباروں کے پڑھنے والے کافی جان گئے ہیں۔ دوسرا نام جسے بہت ہی کم لوگ جانتے ہیں ہمارے بہت دنوں کے متر اپّا صاحب پٹوردھن کا ہے۔ اپّا صاحب بہت ہی سیدھے سادے وِدوان پر اس طرح کے کام کرنے والے ہیں کہ جن کے دل اور دماغ کی ساری بناوٹ میں شاید ہی کوئی ریشہ خودی یا اہنکار کا نکل سکے۔ اپّا صاحب کا ایک لیکھ ہندو مسلم ایکتا پر ۱۲ دسمبر ۴۷ کو مراٹھی زبان میں نکلا تھا۔ ہمیں یہ لیکھ پسند آیا، چھوٹی موٹی کسی تفصیل میں فرق بھی ہو پر اس لیکھ کے خاص خاص وچار ہمیں اتنے پسند ہیں کہ ہم اس کا ہندستانی ترجمہ خوشی سے 'ہماری رائے' میں نیچے دے رہے ہیں۔ اپّا صاحب نے جیسا آخر میں لکھا ہے ہم چاہتے ہیں کہ اور بھائی بھی، ہندو، مسلمان یا دوسرے، اس لیکھ کی باتوں اور تجویزوں پر 'نیا ہند' کی معرفت اپنی رائے ظاہر کریں۔

—سندرلال   ۱۱-۵-۴۸

—— :<.>✻<.>: ——

ہم ہندو مسلمان ایک ہیں، اور آؤ ہم ایک ہی رہیں!

قدرت نے یا کہئے ایشور نے ہی ہندستان کے رہنے والے ہم ہندو مسلمانوں کو ایک بنایا ہے۔ ہمارے دونوں کے جسم ہند بھومی کی ایک ہی پاک مٹی سے بنے ہیں اور مرنے پر اسی مٹی میں مل جانے والے ہیں۔ سردی گرمی، ہوا اور بارش،

सस्ती मँहगाई, बीमारी तनदुरुस्ती और सब सुख और दुख हमें एक से होते हैं. हजार साल हमें एक साथ रहते सहते हो गए. कम से कम मुझे अपने हिन्दू देश भाइयों से जितना प्रेम है उतना ही मुसलमान देश भाइयों से है. रत्नागिरी जिले और उसके आस-पास के देश भाइयों से और भी ज्यादा प्रेम है, चाहे वह हिन्दू हों, मुसलमान हों या ईसाई हों. वह सब मुझे अपने कुटुम्बी से मालूम होते हैं. हम सब एक ही कुटुम्ब हैं, यह बात समझाने के लिये मुझे और कोई सबूत देने की जरूरत नहीं.

ईश्वर की योजना के मुताबिक़ हम एक हैं. इसलिये मेरी सब देश भाइयों से हाथ जोड़ कर प्रार्थना है कि ईश्वर की योजना को दिल से मान कर हम एक ही बने रहें.

मुझे तो यह साफ़ दिखाई देता है कि बिना इसके हमारी खैरियत नहीं, न हिन्दू की और न मुसलमान की.

हम सब को उम्मीद थी कि देश का बटवारा हो जाने पर दोनों तरफ़ की तसल्ली हो जावेगी और मार काट, लूटपाट, आग लगाना और बहनों को बेइज्जती हमेशा के लिये बन्द हो जावेगी. पर इसके खिलाफ़ बटवारे के कारन दंगे और मार काट और भी बाक़ायदा तरीक़े से होने लगे. अगर यही हालत रही तो हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में खुली जंग हुए बिना नहीं रह सकती. दोनों तरफ़ वालों को इस बात की फ़िक्र है कि अगर यह जंग छिड़ गई तो हमारे यहाँ के कम तादाद वाले न जाने क्या दुख लेंगे.

यह सोच कर हममें से कुछ को ऐसा मालूम होने लगता है

سستی مہنگائی، بیماری تندرستی اور سب سکھ اور دکھ ہمیں ایک سے ہوتے ہیں. ہزار سال ہمیں ایک ساتھ رہتے سہتے ہوگئے. کم سے کم مجھے اپنے ہندو دیش بھائیوں سے جتنا پریم ہے اتنا ہی مسلمان دیش بھائیوں سے ہے. رتناگری ضلع اور اس کے آس پاس کے دیش بھائیوں سے اور بھی زیادہ پریم ہے، چاہے وہ ہندو ہوں، مسلمان ہوں یا عیسائی ہوں. وہ سب مجھے اپنے کٹمبی سے معلوم ہوتے ہیں. ہم سب ایک ہی کٹمب ہیں، یہ بات سمجھانے کے لئے مجھے اور کوئی ثبوت دینے کی ضرورت نہیں.

ایشور کی یوجنا کے مطابق ہم ایک ہیں. اس لئے میری سب دیش بھائیوں سے ہاتھ جوڑ کر پرارتھنا ہے کہ ایشور کی یوجنا کو دل سے مان کر ہم ایک ہی بنے رہیں.

مجھے تو یہ صاف دکھائی دیتا ہے کہ بنا اس کے ہماری خیریت نہیں، نہ ہندو کی اور نہ مسلمان کی.

ہم سب کو امید تھی کہ دیش کا بٹوارا ہوجانے پر دونوں طرف کی تسلی ہوجاوے گی اور مار کاٹ، لوٹ پاٹ، آگ لگانا اور بہنوں کی بےعزتی ہمیشہ کے لئے بند ہوجاوے گی. پر اس کے خلاف بٹوارے کے کارن دنگے اور مار کاٹ اور بھی باقاعدہ طریقے سے ہونے لگے. اگر یہی حالت رہی تو ہندستان اور پاکستان میں کھلی جنگ ہوئے بنا نہیں رہ سکتی. دونوں طرف والوں کو اس بات کی فکر ہے کہ اگر یہ جنگ چھڑ گئی تو ہمارے یہاں کے کم تعداد والے نہ جانے کیا دکھ لیں گے.

یہ سوچ کر ہم میں سے کچھ کو ایسا معلوم ہونے لگتا

कि—" हिन्दुस्तान के सब मुसलमानों को पाकिस्तान भेज देना चाहिये क्योंकि यहाँ के मुसलमानों ने पाकिस्तान के मुसलमानों से बढ़ कर जोश के साथ बटवारे की माँग की थी. इन्होंने ही पाकिस्तान बनवाया है. पाकिस्तान ही की तरफ़ इनका मन लगा रहेगा. यहाँ वह झगड़े की जड़ और घर के भेदी ही रहेंगे. इस तरह के भीतरी दुश्मनों को यहाँ रहने देना धोका खाना है. इसके सिवा पाकिस्तान से भी हिन्दू और सिक्ख निकाले जा रहे हैं. उन्हें वहाँ से करोड़ों रुपए की अपने पसीने की कमाई और माल असबाब छोड़ कर आना पड़ा है. उनके उस नुक़सान को पूरा करने के लिये भी यहाँ के मुसलमानों का माल असबाब यहाँ ही रखवा कर उन्हें पाकिस्तान भेज देना बिल्कुल इन्साफ़ मालूम होता है." पूरबी पंजाब में और दिल्ली में सरकारी हुक्मों और क़ानूनों की परवाह न करते हुए भी थोड़ा या बहुत इसी ख़याल पर अमल होता रहा है.

ठीक यही शिकायत पाकिस्तान के मुसलमानों को वहाँ के हिन्दुओं और सिक्खों से है. मुसलमान कहते हैं—" १५ अगस्त तक मुसलमानी इलाक़ों के यह हिन्दू और सिक्ख पाकिस्तान के कट्टर विरोधी थे. अब एकाएक यह लोग पाकिस्तान के वफ़ादार कैसे बन सकते हैं? पाकिस्तान के मिटाने के लिये इन लोगों की छिपी छिपी कोशिशें जारी ही रहेंगी." वहाँ के हिन्दू और सिक्ख वहाँ की सरकार के लिये जितनी जितनी वफ़ादारी दिखाते हैं उतना उतना ही उनके ख़िलाफ़ यह शक और पक्का होता है. आख़िर पाकिस्तान में से सब हिन्दुओं और सिक्खों को निकाल देने की

کہ — " ہندستان کے سب مسلمانوں کو پاکستان بھیج دینا چاہئے کیوں کہ یہاں کے مسلمانوں نے پاکستان کے مسلمانوں سے بڑھ کر جوش کے ساتھ بٹوارے کی مانگ کی تھی. انھوں نے ہی پاکستان بنوایا ہے. پاکستان ہی کی طرف ان کا من لگا رہے گا. یہاں وہ جھگڑے کی جڑ اور گھر کے بھیدی ہی رہیں گے. اس طرح کے بھیتری دشمنوں کو یہاں رہنے دینا دھوکا کھانا ہے. اس کے سوا پاکستان سے بھی ہندو اور سکھ نکالے جا رہے ہیں. انھیں وہاں سے کروڑوں روپے کی اپنے پسینے کی کمائی اور مال اسباب چھوڑ کر آنا پڑا ہے. ان کے اس نقصان کو پورا کرنے کے لئے بھی یہاں کے مسلمانوں کا مال اسباب یہاں ہی رکھوا کر انھیں پاکستان بھیج دینا بالکل انصاف معلوم ہوتا ہے." پوربی پنجاب میں اور دلی میں سرکاری حکموں اور قانونوں کی پرواہ نہ کرتے ہوئے بھی تھوڑا یا بہت اسی خیال پر عمل ہوتا رہا ہے.

ٹھیک یہی شکایت پاکستان کے مسلمانوں کو وہاں کے ہندوؤں اور سکھوں سے ہے. مسلمان کہتے ہیں — "۱۵ اگست تک مسلمانی علاقوں کے یہ ہندو اور سکھ پاکستان کے کٹر ورودھی تھے. اب یکایک یہ لوگ پاکستان کے وفادار کیسے بن سکتے ہیں؟ پاکستان کے مٹانے کے لئے ان لوگوں کی چھپی چھپی کوششیں جاری ہی رہیں گی." وہاں کے ہندو اور سکھ وہاں کی سرکار کے لئے جتنی جتنی وفاداری دکھاتے ہیں اتنا اتنا ہی ان کے خلاف یہ شک اور پکا ہوتا ہے. آخر پاکستان میں سے سب ہندوؤں اور سکھوں کو نکال دینے کی

बाकायदा कोशिश हुई और हो रही है. और यहाँ के मुसलमानों से वहाँ के हिन्दू सिक्ख गिनती में बहुत कम हैं. इसलिये पाकिस्तान को हिन्दुओं से खाली करना इस हिसाब से आसान भी है.

और पाकिस्तान हिन्दुओं से खाली होगया तो हिन्दुस्तान को मुसलमानों से खाली करने का कट्टर हिन्दुओं का इरादा और भी पक्का हो जायगा. हम तुम ही ज्यादा से ज्यादा कट्टर हिन्दू बनते जायंगे. ऐसा हुआ तो पाकिस्तान के कट्टर मुसलमानों की हिन्दू सिक्ख विरोधी चाल को सहारा मिलेगा और वह ठीक साबित हो जायगी.

इस बेएतबारी और इस हार का नतीजा क्या होगा ? एक तरफ़ १० करोड़ मुसलमान सब पाकिस्तान में जमा हो जायंगे और दूसरी तरफ़ कोई ३० करोड़ हिन्दू सिक्ख हिन्दुस्तान में जमा होंगे. इस तरह अलग अलग होकर क्या यह दोनों फ़िरक़े सुख शान्ति से रह सकेंगे ? क्या इनमें अपने अपने अन्दर मेल बना रहेगा ? बिल्कुल नहीं. इसके खिलाफ़ पाकिस्तान का अभी जितना इलाक़ा है वह उनके लिये कम पड़ेगा. उनकी तरफ़ से यह माँग आयगी कि हमें और मुल्क चाहिये और फिर बीच से रास्ता चाहिये. उनको जो और मुल्क देने की तजवीज होगी उस मुल्क के हिन्दुओं को फिर निकालना होगा. वह हिन्दू भी खुशी से निकलना न चाहेंगे. फिर झगड़े होंगे और आखरी निबटारे के लिये खुल्लम खुल्ला लड़ाई होगी. इसके बाद दूसरे लालची और बलवान मुल्कों को हम दोनों पर हमला करने का अच्छा मौक़ा मिलेगा, और इतनी मेहनत से जो आज़ादी हमने पाई है वह फिर धूल में मिल जायगी.

باضابطہ کوشش ہوئی اور ہو رہی ہے۔ اور یہاں کے مسلمانوں سے وہاں کے ہندو سکھ گنتی میں بہت کم ہیں۔ اس لئے پاکستان کو ہندوؤں سے خالی کرنا اس حساب سے آسان بھی ہے۔

اور پاکستان ہندوؤں سے خالی ہو گیا تو ہندستان کو مسلمانوں سے خالی کرنے کا کٹر ہندوؤں کا ارادہ اور بھی پکا ہو جائے گا۔ ہم تم ہی زیادہ سے زیادہ کٹر ہندو بنتے جائیں گے۔ ایسا ہوا تو پاکستان کے کٹر مسلمانوں کی ہندو سکھ ورودھی چال کو سہارا ملے گا اور وہ ٹھیک ثابت ہو جائے گی۔

اس بے اعتباری اور اس ہار کا نتیجہ کیا ہوگا؟ ایک طرف ۱۰ کروڑ مسلمان سب پاکستان میں جمع ہو جائیں گے اور دوسری طرف کوئی ۳۰ کروڑ ہندو سکھ ہندستان میں جمع ہوں گے۔ اس طرح الگ الگ ہو کر کیا یہ دونوں فرقے سکھ شانتی سے رہ سکیں گے؟ کیا ان میں اپنے اپنے اندر میل بنا رہے گا؟ بالکل نہیں۔ اس کے خلاف پاکستان کا ابھی جتنا علاقہ ہے وہ اُن کے لئے کم پڑے گا۔ اُن کی طرف سے یہ مانگ آئے گی کہ ہمیں اور ملک چاہئے اور پھر بیچ سے راستہ چاہئے۔ اُن کو جو اور ملک دینے کی تجویز ہوگی اُس ملک کے ہندوؤں کو پھر نکالنا ہوگا۔ وہ ہندو بھی خوشی سے نکلنا نہ چاہیں گے۔ پھر جھگڑے ہوں گے اور آخری نپٹارے کے لئے کھلم کھلا لڑائی ہوگی۔ اس کے بعد دوسرے لالچی اور بلوان ملکوں کو ہم دونوں پر حملہ کرنے کا اچھا موقع ملے گا اور اتنی محنت سے جو آزادی ہم نے پائی ہے وہ پھر دھول میں مل جائے گی۔

यह सब क्यों होगा? इसलिए कि हिन्दू मुसलमानों ने मिलकर यह ठहरा लिया है कि हम दोनों एक दूसरे के कट्टर दुश्मन हैं. इन दोनों में से हर एक कहता है कि इस मामले में पहल दूसरे ने की है, मैंने तो सिर्फ़ उसका जवाब दिया है. पर यह झगड़ा उतना ही बे अन्त है जितना यह पुरानी बहस कि 'बीज पहले या दरख़्त पहले'. अच्छी बात तो यह है कि पहल किसी ने की हो दोनों फ़रीक़ को इस बारे में एक सी शिकायत है.

"अच्छी बात" मैंने इसलिये कहा कि अगर दुश्मनी के लिये एक राय हो सकती है तो दोस्ती के लिये (और उसके भी आगे आकर मैं कहता हूँ कि पूरे मेल के लिये) एक राय कर लेना और भी आसान होगा. इसलिये हम हिन्दू और मुसलमान, जिन्हें आपस में लड़ने का शौक़ नहीं है, इसी कोशिश में लग जायं. अजीब पर यानी ग़ैरियत को दिल से मिटाने पर ही ज़ोर देने के लिए एक दूसरे को समझें समझावें.

अभी हाल हम पर जो पागलपन सवार है उसमें यह कहना कि "हम एक ही हैं" कितना भी अजीब लगे तो भी यह बात बिल्कुल सच है. हाल का पागलपन आज या कल ज़रूर उतरेगा ही.

अपनी इस धर्म भूमि, सर ज़मीन हिन्दुस्तान ने आज तक बहुत से धर्म मज़हबों का मेल करा दिया है. वैदिक धर्म और बौद्ध धर्म, शैव और वैष्णव, स्मार्त और भागवत, शाक्त और वैष्णव—इन सबके उस ज़माने के आपसी झगड़े हाल के झगड़ों

یہ سب کیوں ہوگا؟ اس لئے کہ ہندو مسلمانوں نے مل کر یہ ٹھہرا لیا ہے کہ ہم دونوں ایک دوسرے کے کٹر دشمن ہیں۔ ان دونوں میں سے ہر ایک کہتا ہے کہ اس معاملے میں پہل دوسرے نے کی ہے، میں نے تو صرف اس کا جواب دیا ہے۔ پر یہ جھگڑا اتنا ہی بے انت ہے جتنا یہ پرانی بحث کہ 'بیج پہلے یا درخت پہلے'! اچھی بات تو یہ ہے کہ پہل کسی نے کی ہو دونوں فریق کی اس بارے میں ایک سی شکایت ہے۔

"اچھی بات" میں نے اس لئے کہا کہ اگر دشمنی کے لئے ایک رائے ہو سکتی ہے تو دوستی کے لئے (اور اس کے بھی آگے جا کر میں کہتا ہوں کہ پورے میل کے لئے) ایک رائے کر لینا اور بھی آسان ہوگا۔ اس لئے ہم ہندو اور مسلمان، جنھیں آپس میں لڑنے کا شوق نہیں ہے، اسی کوشش میں لگ جائیں۔ اجنبیت یعنی غیریت کو دل سے مٹانے پر ہی زور دینے کے لئے ایک دوسرے کو سمجھیں سمجھاویں۔

ابھی حال ہم پر جو پاگل پن سوار ہے اس میں یہ کہنا کہ "ہم ایک ہی ہیں" کتنا بھی عجیب لگے تو بھی یہ بات بالکل سچ ہے۔ حال کا پاگل پن آج یا کل ضرور اترے گا ہی۔

اپنی اس دھرم بھومی، سرزمین ہندستان نے آج تک بہت سے دھرم مذہبوں کا میل کرا دیا ہے۔ ویدک دھرم اور بدھ دھرم، شیو اور وشنو، سمارت اور بھگوت، شاکت اور وشنو — ان سب کے اس زمانے کے آپسی جھگڑے حال کے جھگڑوں

तरीके फैले हुए तो नहीं थे, पर कट्टरपन में कम भी नहीं थे. महानुभाव, शाक्त, जैन, लिंगायत वग़ैरा भगड़ालू पन्थ भी समय समय पर निकले, पर समाज की जिन्दगी में कुछ समय के बाद उनकी भी ठीक ठीक खपत हो गई. सब मिलकर रहने लगे. यहूदी, ईसाई, मुसलमान, पारसी, वग़ैरा मजहब भी जो दूसरे देशों में पैदा हुए, हजारों बरस पहले, तलवार के जोर से नहीं, मेल और मेहमानी की बुनियाद पर ही हिन्दुस्तान में दाखिल हुये, बढ़े, हँसी खुशी रहे और फले फूले. हिन्दू धर्म और इसलाम जब एक दूसरे से मिले तब भी दोनों के माननेवालों ने जोरों के साथ धर्म की खोज और सुधार शुरू किया. पन्द्रहवीं और सोलहवीं सदियों में बहुत से मिले जुले मजहब निकले. अकबर का "दीन इलाही", योगी पंथ, भरथरी संप्रदाय, बंगाल के राम बल्लभी, बेलरामी, सहजी, संयोगी वग़ैरा, बुन्देलखंड का प्राननाथ फिरका, गुजरात का स्वामी नारायन पन्थ—जैसे पंथों के मानने वाले हिन्दू और मुसलमान दोनों हैं और उन पर दोनों धर्मों का असर है. कबीर, दादू, आसाम के शंकरदेव, सिन्ध के शाह करीम, शाह इनायत और शाह लतीफ, उज्जैन के दरिया साहब वग़ैरा की तालीम दोनों धर्मों से चुन चुनकर बनाई गई है, और उनके माननेवाले दोनों धर्मों में हैं (देखो, 'कलचरल हेरिटेज आफ़ इन्डिया' पार्ट सेकेंड, लेखक श्री० क्षिति मोहन सेन) हमारे शिवाजी महाराज के दादा मालोजी ने अपने दोनों बेटों के नाम अपने गुरू शाह शरीफ की यादगार में शाहजी और शरफो जी रक्खे थे. शाह शरीफ एक मुसलमान फ़क़ीर थे. इस तरह हम हिन्दुओं ने इसलाम से बहुत कुछ हासिल

طریقے پھیلے ہوئے تو نہیں تھے، پر کڑوے پن میں کم بھی نہیں تھے۔ مہانو بھاو، شاکت، جین، لنگایت وغیرہ جھگڑالو پنتھ بھی سمے سمے پر نکلے، پر سماج کی زندگی میں کچھ سمے کے بعد ان کی بھی ٹھیک ٹھیک کھپت ہوگئی۔ سب مل کر رہنے لگے۔ یہودی، عیسائی، مسلمان، پارسی، وغیرہ مذہب بھی جو دوسرے دیشوں میں پیدا ہوئے، ہزاروں برس پہلے، تلوار کے زور سے نہیں، میل اور مہمانی کی بنیاد پر ہی ہندستان میں داخل ہوئے، بڑھے، ہنسی خوشی رہے اور پھلے پھولے۔ ہندو دھرم اور اسلام جب ایک دوسرے سے ملے تب بھی دونوں کے ماننے والوں نے زوروں کے ساتھ دھرم کی کھوج اور سدھار شروع کیا۔ پندرھویں اور سولھویں صدیوں میں بہت سے ملے جلے مذہب نکلے۔ اکبر کا "دین الٰہی"، یوگی پنتھ، بھرتھری سمپردائے، بنگال کے رام بلبھی، بیلرامی، سہجی، سنیوگی وغیرہ، بندیل کھنڈ کا پران ناتھ فرقہ، گجرات کا سوامی نارائن پنتھ — جیسے پنتھوں کے ماننے والے ہندو اور مسلمان دونوں ہیں اور ان پر دونوں دھرموں کا اثر ہے۔ کبیر، دادو، آسام کے شنکر دیو، سندھ کے شاہ کریم، شاہ عنایت اور شاہ لطیف، اجین کے دریا صاحب وغیرہ کی تعلیم دونوں دھرموں سے چن چن کر بنائی گئی ہے، اور ان کے ماننے والے دونوں دھرموں میں ہیں (دیکھو، 'کلچرل ہیریٹیج آف انڈیا' پارٹ سیکنڈ، لیکھک شری کشتی موہن سین) ہمارے شیواجی مہاراج کے دادا مالوجی نے اپنے دونوں بیٹوں کے نام اپنے گرو شاہ شریف کی یادگار میں شاہ جی اور شرفو جی رکھے تھے۔ شاہ شریف ایک مسلمان فقیر تھے۔ اس طرح ہم ہندوؤں نے اسلام سے بہت کچھ حاصل

किया है. हाल में अछूत उद्धार के रूप में हम हासिल कर रहे हैं, और भी बहुत ज्यादा हासिल कर सकते हैं. मैं हिन्दू धर्म का माननेवाला एक छोटा सा आदमी अपने धर्म की बड़ाई नहीं करता, पर मुझे विश्वास है कि हिन्दू धर्म की तरफ से मुसलमानों को भी बहुत कुछ मिला होगा और मिलेगा. हिन्दू मुसलमानों को ईसाइयों से भी बहुत कुछ हासिल करने लायक है और उन्होंने बहुत कुछ हासिल किया भी है. धर्म धर्म में झगड़ा नहीं है. सब धर्म एक ही पेड़, एक ही सद्धर्म यानी एक ही मजहबे हक़ की शाखें हैं. एक ही ईश्वर के अलग अलग समाजों और मुल्कों को दिये हुये उपदेश हैं. उनमें फ़रक़ होना स्वाभाविक है पर विरोध नहीं है. विरोध आता है तब इस बात पर आता है कि यह मेरा धर्म है, यह तुम्हारा धर्म है. मेरी छोटी उम्र में पड़ोस के लोग जब अपने अपने ठाकुरजी के लिये फूल ले जाते थे तब यह सोचकर कि इतने फूल हमारे ठाकुरजी के लिये कम हो जायंगे, हमें भी जलन होती थी. यानी मजहब के झगड़े मजहब की वजह से नहीं पर मजहब या धर्म की आड़ में रहनेवाले अहंकार यानी खुदी के कारन पैदा होते हैं. हम सच्चे धर्मवाले बन जायँ तो एकता होने में देर न लगेगी.

धर्म धर्म के बुनियादी विचार एक दूसरे को मदद देनेवाले ही होते हैं. यह सच है कि रीत रिवाज में बहुत फ़रक़ रहता है, पर बुनियादी विचारों पर जोर देना और रीत रिवाजों पर जोर न देना हमें सीखना चाहिये. हिन्दू हिन्दुओं में फ़रक़ कम नहीं है. हिन्दू सिक्खों में भी कम फ़रक़ नहीं है. उन्हें हम बरदाश्त

کیا ہی. حال میں اچھوت ادھار کے روپ میں ہم حاصل کر رہے ہیں، اور بھی بہت زیادہ حاصل کر سکتے ہیں. میں ہندو دھرم کا ماننے والا ایک چھوٹا سا آدمی اپنے دھرم کی بڑائی نہیں کرتا، پر مجھے وشواس ہو کہ ہندو دھرم کی طرف سے مسلمانوں کو بھی بہت کچھ ملا ہوگا اور ملے گا. ہندو مسلمانوں کو عیسائیوں سے بھی بہت کچھ حاصل کرنے لائق ہو اور انھوں نے بہت کچھ حاصل کیا بھی ہی. دھرم دھرم میں جھگڑا نہیں ہی. سب دھرم ایک ہی پیڑ، ایک ہی سدھرم یعنی ایک ہی مذہب حق کی شاخیں ہیں. ایک ہی ایشور کے الگ الگ سماجوں اور ملکوں کو دئے ہوئے اپدیش ہیں. ان میں فرق ہونا سوابھاوک ہی پر ورودھ نہیں ہی. ورودھ آتا ہی تب اس بات پر آتا ہی کہ یہ میرا دھرم ہی، یہ تمھارا دھرم ہی. میری چھوٹی عمر میں پڑوس کے لوگ جب اپنے اپنے ٹھاکر جی کے لئے پھول لے جاتے تھے تب یہ سوچ کر کہ اتنے پھول ہمارے ٹھاکر جی کے لئے کم ہو جائیں گے، ہمیں بھی جلن ہوتی تھی. یعنی مذہب کے جھگڑے مذہب کی وجہ سے نہیں پر مذہب یا دھرم کی آڑ میں رہنے والے اہنکار یعنی خودی کے کارن پیدا ہوتے ہیں. ہم سچے دھرم والے بن جائیں تو ایکتا ہونے میں دیر نہ لگے گی.

دھرم دھرم کے بنیادی وچار ایک دوسرے کو مدد دینے والے ہی ہوتے ہیں. یہ سچ ہی کہ ریت رواج میں بہت فرق رہتا ہی، پر بنیادی وچاروں پر زور دینا اور ریت رواجوں پر زور نہ دینا ہمیں سیکھنا چاہئے. ہندو ہندوؤں میں فرق کم نہیں ہی. ہندو سکھوں میں بھی کم فرق نہیں ہی. انھیں ہم برداشت

कर सकते हैं तो हिन्दू मुसलमान, ईसाइयों को आपस के फ़रक़ बरदाश्त करने में रुकावट क्या है ? और अगर दूसरे का दिल रखने के लिये ईसाई और हिन्दू सुअर का गोश्त और मुसलमान गाय का गोश्त खाना छोड़ दें तो और ही अच्छा होगा. हाँ, इसके लिये किसी को जिद करने की ज़रूरत नहीं.

हिन्दू मुसलमानों का असली झगड़ा धर्म का नहीं, निरा राजकाजी है. हुकूमत किसके हाथ में कितनी रहे, किसका बाज़ू ऊँचा रहे, किसका बोल बाला हो, यही खेंचातानी है. हर एक जिन्दा रहने की नहीं ऊँचा रहने की खटपट करता है. बड़ाई का ठेका चार छै लीडरों को ही मिलता है, लेकिन इसके लिये वे अपने अपने मजहबवालों को भड़काकर उनसे फ़ायदा उठाते हैं. इसी लिये ग़ैर मजहबवालों को अपने मजहब में खींचने की कोशिशें होती हैं. इससे असली मतलब अपनी तादाद बढ़ाने का होता है. पर ऊपर से और शायद भूल से दिखाया यह जाता है कि हम सब ग़ैर मजहबवालों की शुद्धि या उनको पाक करते हैं. पर सारे मजहबवाले अगर हमारे मजहब में आ जायं तो शुद्ध करने का असली मतलब ही न रह जायगा, तब किसी पर बड़प्पन न सधेगा, बहुत हुआ तो जान माल की हिफ़ाज़त कुछ सधेगी. हम मेल मिलाप से रहें तब भी यह बात और मज़बूती से हासिल होगी.

हम जो एकता चाहते हैं वह समझौते की नहीं दिल की एकता है. सारे हिन्दुस्तान का एक प्रेम धर्म, एक समाज, एक राष्ट्र बनाना चाहिये. मेल और रोटी बेटी व्यवहार पर जितनी रीत रिवाज की रुकावटें हैं वह सब दूर होनी चाहियें. अपने अपने स्वभाव और दिलों के

کر سکتے ہیں تو ہندو، مسلمان، عیسائیوں کے آپس کے فرق برداشت کرنے میں رکاوٹ کیا ہے؟ اور اگر دوسرے کا دل رکھنے کے لئے عیسائی اور ہندو سؤر کا گوشت اور مسلمان گائے کا گوشت کھانا چھوڑ دیں تو اور ہی اچھا ہوگا۔ ہاں، اس کے لئے کسی کو ضد کرنے کی ضرورت نہیں۔

ہندو مسلمانوں کا اصلی جھگڑا دھرم کا نہیں، نرا راج کاجی ہے۔ حکومت کس کے ہاتھ میں کتنی رہے، کس کا بازو اونچا رہے، کس کا بول بالا ہو، یہی کھینچا تانی ہے۔ ہر ایک زندہ رہنے کی نہیں اونچا رہنے کی کھٹ پٹ کرتا ہے۔ بڑائی کا ٹھیکا چار چھے لیڈروں کو ہی ملتا ہے، لیکن اس کے لئے وے اپنے اپنے مذہب والوں کو بھڑکا کر ان سے فائدہ اٹھاتے ہیں۔ اسی لئے غیر مذہب والوں کو اپنے مذہب میں کھینچنے کی کوششیں ہوتی ہیں۔ اس سے اصلی مطلب اپنی تعداد بڑھانے کا ہوتا ہے۔ پر اوپر سے اور شاید بھول سے دکھایا یہ جاتا ہے کہ ہم سب غیر مذہب والوں کی شدھی یا ان کو پاک کرتے ہیں۔ پر سارے مذہب والے اگر ہمارے مذہب میں آجائیں تو شدھی کرنے کا اصلی مطلب ہی نہ رہ جائے گا، تب کسی پر بڑپن نہ سدھے گا، بہت ہوا تو جان مال کی حفاظت کچھ سدھے گی۔ ہم میل ملاپ سے رہیں تب بھی یہ بات اور مضبوطی سے حاصل ہوگی۔

ہم جو ایکتا چاہتے ہیں وہ سمجھوتے کی نہیں دل کی ایکتا ہے۔ سارے ہندستان کا ایک پریم دھرم، ایک سماج، ایک راشٹر بنانا چاہئے۔ میل اور روٹی بیٹی ویوہار پر جتنی ریت رواج کی رکاوٹیں ہیں

कुदरती बंधन चाहे रहें. एक सी माली हालत, एक सी तालीम और जान पहचान होने से दिल भी मिलेंगे ही. इसमें कुछ समय लगेगा, लगने दो, पर इस बीच सब पागलपन के बंधन जिनका कुछ मतलब नहीं रह गया दूर होने चाहिये और एकता का रास्ता खुला होना चाहिये—यही हमारा कहना है.

अब विचारवान लोगों को यह बात जच गई है कि हिन्दू हिन्दुओं में जात पात तोड़ने की जरूरत है. तब उसी कारन से अलग अलग मजहबवालों में फ़रक़ मिटाने और मेल बढ़ाने के लिये कोई अड़चन नहीं होनी चाहिये. आदमी आदमी सब बराबर—का अन्दोलन हो ही रहा है. पर सबको एक जात करने या एक प्रेम धर्म मनाने के लिये ठीक ठीक असूल तय्यार करके उसको अमल में लाने और फैलाने की जरूरत है. माली बराबरी, एक सी तालीम, और एक दूसरे से ऐसी जान पहचान जिससे सब के गुन हममें आवें, एकता के अचूक साधन हैं. सची एकता के लिये हिन्दुस्तान के अलग अलग धर्म, बंस, पंथ, भाषा, संस्कृति, कलचर, कला वग़ैरा की क़द्र और जानकारी करानेवाले सेन्टर और उनके साधन जुटाने वाले सब धर्म वालों को जो एक जगह लावें ऐसे सब मजहबों की एक बराबर इज्जत करने वाले प्रचारक और उनके सांस्कृतिक यानी कलचर के केन्द्र जगह जगह बनाए जायं. रत्नागिरी में कांग्रेस भवन बनाने का इरादा हो रहा है. उसके साथ हम कुछ लोगों की मंशा है कि एक हिन्द-भाई-घर भी बनाया जावे. ऐसे घर जगह जगह होने चाहियें.

इसके अलावा जो लड़के लड़कियाँ जात पात तोड़कर शादी

قدرتی بندھن چاہے رہیں۔ ایک سی مالی حالت، ایک سی تعلیم اور جان پہچان ہونے سے دل بھی ملیں گے ہی۔ اس میں کچھ سمے لگے گا۔ لگنے دو، پر اس بیچ سب پاگل پن کے بندھن جن کا کچھ مطلب نہیں رہ گیا دور ہونے چاہئیں اور ایکتا کا راستہ کھلا ہونا چاہئے — یہی ہمارا کہنا ہے۔

اب وچاروان لوگوں کو یہ بات جچ گئی ہے کہ ہندو ہندوؤں میں جات پات توڑنے کی ضرورت ہے۔ تب اسی کارن سے الگ الگ مذہب والوں میں فرق مٹانے اور میل بڑھانے کے لئے کوئی اڑچن نہیں ہونی چاہئے۔ آدمی آدمی سب برابر — کا اندولن ہو ہی رہا ہے۔ پر سب کو ایک جات کرنے یا ایک پریم دھرم ماننے کے لئے ٹھیک ٹھیک اصول تیار کر کے اس کو عمل میں لانے اور پھیلانے کی ضرورت ہے۔ مالی برابری، ایک سی تعلیم، اور ایک دوسرے سے ایسی جان پہچان جس سے سب کے گن ہم میں آویں، ایکتا کے اچوک سادھن ہیں۔ سچی ایکتا کے لئے ہندوستان کے الگ الگ دھرم، بنس، پنتھ، بھاشا، سنسکرتی، کلچر، کلا وغیرہ کی قدر اور جانکاری کرانے والے سینٹر اور ان کے سادھن جٹانے والے سب دھرم والوں کو جو ایک جگہ لاویں ایسے سب مذہبوں کی ایک برابر عزت کرنے والے پرچارک اور ان کے سنسکرتک یعنی کلچر کے کیندر جگہ جگہ بنائے جائیں۔ رتناگری میں کانگریس بھون بنانے کا ارادہ ہو رہا ہے۔ اس کے ساتھ ہم کچھ لوگوں کی منشا ہے کہ ایک ہند بھائی گھر بھی بنایا جاوے۔ ایسے گھر جگہ جگہ ہونے چاہئیں۔

اس کے علاوہ جو لڑکے لڑکیاں جات پات توڑ کر شادی

करने को तय्यार हों उन्हें ठीक सलाह देकर मुनासिब जोड़ीदार दिलवाने की कोशिश हाथ में लेनी जरूरी है. इसके बिना वह सुधार जिसका हम इरादा कर चुके हैं नहीं हो सकता. ब्याह की इच्छा रखनेवाले लड़के लड़कियों को ठीक राह बतानेवाला या मददगार न मिलने पर अपनी अक़ल के मुताबिक़ या जो सध सके वह रास्ता लेना पड़ता है. मिले जुले ब्याह एक बढ़ती हुई जरूरत रहेगी. उसके लिये सलाह देने और राह बतानेवाले बुजुर्ग और जिम्मेदार लोगों की जरूरत वैसे भी है ही. उस बड़े काम की निगाह से जिसकी हमने योजना की है यह और भी जरूरी है.

इस लेख की गरज अपने हम खयाल लोगों से राय मिलाने की है. मेरी यह जानने की इच्छा है कि इस लेख के विचार किसको कहाँ तक रुचते हैं, इस बारे में कौन कहाँ तक साथ देने को तय्यार है. मेरा नाम और पता नीचे दिया हुआ है.

—अप्पा पटवर्धन

कनकवली, जिला रत्नागिरी
१२ – २ – ४७

کرنے کو تیار ہوں انھیں ٹھیک صلاح دے کر مناسب جوڑی دار دلوانے کی کوشش ہاتھ میں لینی ضروری ہے۔ اس کے بنا وہ سُدھار جس کا ہم ارادہ کر چکے ہیں نہیں ہو سکتا۔ بیاہ کی اچھا رکھنے والے لڑکے لڑکیوں کو ٹھیک راہ بتانے والا یا مددگار نہ ملنے پر اپنی عقل کے مطابق یا جو سدھ سکے وہ راستہ لینا پڑتا ہے۔ ملے جلے بیاہ ایک بڑھتی ہوئی ضرورت رہے گی۔ اس کے لئے صلاح دینے اور راہ بتانے والے بزرگ اور ذمے دار لوگوں کی ضرورت ویسے بھی ہے ہی۔ اس بڑے کام کی نگاہ سے جس کی ہم نے یوجنا کی ہے یہ اور بھی ضروری ہے۔

اس لیکھ کی غرض اپنے ہم خیال لوگوں سے رائے ملانے کی ہے۔ میری یہ جاننے کی اچھا ہے کہ اس لیکھ کے وچار کس کو کہاں تک رُچتے ہیں، اس بارے میں کون کہاں تک ساتھ دینے کو تیار ہے۔ میرا نام اور پتہ نیچے دیا ہوا ہے۔

— اپّا پٹوردھن

کنکولی، ضلع رتناگری
۱۲-۲-۴۷

नया हिन्द

जिल्द ४ जून '४८ नम्बर ६

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

ए साथी !

(भाई 'नज़ीर' बनारसी)

इस शान्ति वाले दाता से व्यवहार न टूटे ए साथी !

हम झूलते हैं झूला जिस पर वह तार न टूटे ए साथी !

क्यों रोक रहा है बढ़ने दे इस प्रेमलता को बढ़ने दे,

बहता है जो आँसू बहने दे यह तार न टूटे ए साथी !

वह काम करें हम क्यों जिससे भारत के पिता का दिल टूटे,

मन्दिर का कलश या मसजिद का मीनार न टूटे ए साथी !

نیا ہند

جلد ۴ جون سنہ ۴۸ء نمبر ۶

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی.

اے ساتھی!

(بھائی 'نظیر' بنارسی)

اس شانتی والے داتا سے ویوہار نہ ٹوٹے اے ساتھی!
ہم جھولتے ہیں جھولا جس پر وہ تار نہ ٹوٹے اے ساتھی!
کیوں روک رہا ہے بڑھنے دے اس پریم لتا کو بڑھنے دے،
بہتا ہے جو آنسو بہنے دے یہ تار نہ ٹوٹے اے ساتھی!
وہ کام کریں ہم کیوں جس سے بھارت کے پتا کا دل ٹوٹے،
مندر کا کلس یا مسجد کا مینار نہ ٹوٹے اے ساتھی!

परलोक की बातें तो चलकर परलोक में समझी जायेंगी,
हम सबकी मुहब्बत का बन्धन इस पार न टूटे ए साथी!
जीना हो कि मरना ए साथी, सब साथ का अच्छा होताहै,
दम टूटे तो टूटे आपस का व्यवहार न टूटे ए साथी!
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, आपस में रहें भाई भाई,
गूँथा है जो बुढ़े माली ने वह हार न टूटे ए साथी!
उस वक़्त तलक सुखसागर की लहरों से न खेला जायेगा,
हर देश द्रोही की जब तक तलवार न टूटे ए साथी!
माँझीसे कहो बच बचके ज़रा, तूफ़ानभी है और आँधीभी,
फिर देश की जीवन नैया की पतवार न टूटे ए साथी!
प्रचार अहिंसा का जैसे करता है बराबर करता चल,
कुछ टूटे तो टूटे बापू की तलवार न टूटे ए साथी!

پرلوک کی باتیں تو چل کر پرلوک میں سمجھی جائیں گی،
ہم سب کی محبت کا بندھن اِس پار نہ ٹوٹے اے ساتھی!
جینا ہو کہ مرنا اے ساتھی، سب ساتھ کا اچھا ہوتا ہے،
دم ٹوٹے تو ٹوٹے آپس کا ویوہار نہ ٹوٹے اے ساتھی!
ہندو، مسلم، سکھ، عیسائی، آپس میں رہیں بھائی بھائی،
گوندھا ہے جو بوڑھے مالی نے وہ ہار نہ ٹوٹے اے ساتھی!
اس وقت تلک سکھ ساگر کی لہروں سے نہ کھیلا جائے گا،
دیش دروہی کی جب تک تلوار نہ ٹوٹے اے ساتھی!
ماجھی سے کہو بچ بچ کے ذرا، طوفان بھی ہے اور آندھی بھی،
پھر دیش کی جیون نیا کی پتوار نہ ٹوٹے اے ساتھی!
پرچار اہنسا کا جیسے کرتا ہے برابر کرتا چل،
کچھ ٹوٹے تو ٹوٹے، باپو کی تلوار نہ ٹوٹے اے ساتھی!

इन्सानियत का धर्म

(भाई वजाहत अली संदीलवी)

हम जिस वक़् अपने आप को हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख या ईसाई कहते हैं उस वक़् शायद हम यह सोचना और समझना भूल जाते हैं कि हम सबसे पहले इन्सान हैं. अलग-अलग धर्मों की छोटी छोटी बिरादरियों से पहले हम एक सब से बड़ी बिरादरी के मेम्बर हैं जिसका नाम इन्सानियत है. हर इन्सान हमारा भाई है. और अगर हम यह नहीं समझते तो हम अपनी बड़ी बिरादरी के लिये एक कलंक हैं.

अगर एक आदमी एक अच्छा इन्सान नहीं है तो वह हरगिज़ कभी एक अच्छा हिन्दू या मुसलमान, सिक्ख या ईसाई नहीं हो सकता. जो आदमी इन्सानियत के लिये कलंक हो वह कभी अपने धर्म के लिये फ़ख्र या गौरव के क़ाबिल नहीं हो सकता. हर मज़-हब का बुनियादी मक़सद और आदर्श सदा यही रहा है कि वह अपने मानने वालों को अच्छा इनसान बनाये और उनके ज़रिये इन्सानियत की तरक़्क़ी और तामीर कराये.

क्या दुनिया का कोई मज़हब यह सिखाता है कि एक इन्सान दूसरे इन्सान से नफ़रत करने लगे ? इन्सानों के बीच फूट और झगड़े पड़ जायें ? उनके आपस के रिश्तों में मज़बूती की जगह कमज़ोरी आ जाय ? उनकी हमदर्दियों और मेलजोल का मैदान बढ़ने और फैलने की जगह तंग और सीमित होता चला जाय ?

انسانیت کا دھرم

(بھائی وجاہت علی سندیلوی)

ہم جس وقت اپنے آپ کو ہندو، مسلمان، سکھ یا عیسائی کہتے ہیں اُس وقت شاید ہم یہ سوچنا اور سمجھنا بھول جاتے ہیں کہ ہم سب سے پہلے انسان ہیں۔ الگ الگ دھرموں کی چھوٹی چھوٹی برادریوں سے پہلے ہم ایک سب سے بڑی برادری کے ممبر ہیں جس کا نام انسانیت ہے۔ ہر انسان ہمارا بھائی ہے۔ اور اگر ہم یہ نہیں سمجھتے تو ہم اپنی بڑی برادری کے لئے ایک کلنک ہیں۔

اگر ایک آدمی ایک اچھا انسان نہیں ہے تو وہ ہرگز کبھی ایک اچھا ہندو یا مسلمان، سکھ یا عیسائی نہیں ہو سکتا۔ جو آدمی انسانیت کے لئے کلنک ہو وہ کبھی اپنے دھرم کے لئے فخر یا گورو کے قابل نہیں ہو سکتا۔ ہر مذہب کا بنیادی مقصد اور آدرش سدا یہی رہا ہے کہ وہ اپنے ماننے والوں کو اچھا انسان بنائے اور اُن کے ذریعے انسانیت کی ترقی اور تعمیر کرائے۔

کیا دنیا کا کوئی مذہب یہ سکھاتا ہے کہ ایک انسان دوسرے انسان سے نفرت کرنے لگے؟ انسانوں کے بیچ پھوٹ اور جھگڑے پڑ جائیں؟ اُن کے آپس کے رشتوں میں مضبوطی کی جگہ کمزوری آ جائے؟ اُن کی ہمدردیوں اور میل جول کا میدان بڑھنے اور پھیلنے کی جگہ تنگ اور سمٹتا ہوا چلا جائے؟

अगर सचमुच ऐसा कोई मजहब है तो ऐसे मजहब को जल्दी से जल्दी इस दुनिया से खतम हो जाना चाहिये. इन्सानियत हर मजहब से ऊँची है और कोई मजहब इन्सानियत से कभी ऊँचा नहीं हो सकता, क्योंकि इन्सानियत ही का दूसरा नाम खुदा, भगवान, परमेश्वर और गाड है.

हर मजहब का मानने वाला समझता है कि उसका ही मजहब सबसे सच्चा और अच्छा है. लेकिन उसने कभी यह भी सोचा है कि सच्चाई और अच्छाई की तराजू क्या है ? इन्सानियत और सिर्फ इन्सानियत ! हर मजहब और हर धर्म की सच्चाई और अच्छाई इसी से तौली जा सकती है कि वह इन्सानियत की सेवा पर कितना ज़ोर देता है ? वह इन्सान और इन्सान के बीच प्रेम और मोहब्बत को किस तरह बढ़ाता है ? वह दुनिया के बसने वालों में मेलजोल और सुलह शांति की बुनियाद किसी तरह रखता है. वह इन्सान के अच्छे जज्बात, जैसे एक दूसरे का खयाल रखना, एक दूसरे से हमदर्दी रखना, एक दूसरे के लिये त्याग और कुरबानी करना, और अपने फ़र्ज़ या कर्त्तव्य के भावों को किस तरह जगाता और बढ़ाता है ?

हर मजहब के तौर तरीक़े और रीत रिवाज अलग अलग होते हैं. लेकिन दरअसल यह मतभेद सिर्फ़ ज़ाहिरी और बहुत मामूली हैं. क़रीब क़रीब सब धर्मों की बुनियादी तालीम एक ही है, यानी सच्चाई को पहचानना और इन्सानियत की सेवा करना. रास्ते अलग अलग हैं. लेकिन मंज़िल एक ही है. रंग जुदा जुदा हैं, लेकिन तस्वीर एक ही है. आवाज़ अलग अलग मालूम

اگر سچ مچ ایسا کوئی مذہب ہو تو ایسے مذہب کو جلدی سے جلدی اس دنیا سے ختم ہو جانا چاہئے. انسانیت ہر مذہب سے اونچی ہے اور کوئی مذہب انسانیت سے کبھی اونچا نہیں ہو سکتا، کیونکہ انسانیت ہی کا دوسرا نام خدا، بھگوان، پرمیشور اور گاڈ ہے.

ہر مذہب کا ماننے والا سمجھتا ہے کہ اس کا ہی مذہب سب سے سچا اور اچھا ہے. لیکن اس نے کبھی یہ بھی سوچا ہے کہ سچائی اور اچھائی کی ترازو کیا ہے؟ انسانیت اور صرف انسانیت! ہر مذہب اور ہر دھرم کی سچائی اور اچھائی اسی سے تولی جا سکتی ہے کہ وہ انسانیت کی سیوا پر کتنا زور دیتا ہے؟ وہ انسان اور انسان کے بیچ پریم اور محبت کو کس طرح بڑھاتا ہے؟ وہ دنیا کے بسنے والوں میں میل جول اور صلح شانتی کی بنیاد کس طرح رکھتا ہے. وہ انسان کے اچھے جذبات، جیسے ایک دوسرے کا خیال رکھنا، ایک دوسرے سے ہمدردی رکھنا، ایک دوسرے کے لئے تیاگ اور قربانی کرنا، اور اپنے فرض یا کرتویہ کے بھاوؤں کو کس طرح جگاتا اور بڑھاتا ہے؟

ہر مذہب کے طور طریقے اور ریت رواج الگ الگ ہوتے ہیں. لیکن دراصل یہ مت بھید صرف ظاہری اور بہت معمولی ہیں. قریب قریب سب دھرموں کی بنیادی تعلیم ایک ہی ہے یعنی سچائی کو پہچاننا اور انسانیت کی سیوا کرنا. راستے الگ الگ ہیں. لیکن منزل ایک ہی ہے. رنگ جدا

पड़ती है लेकिन बोल एक ही है.

हम उस आदमी से बिल्कुल खफ़ा नहीं हो जाते जो हमारी तरह टोपी नहीं पहनता. हमें उस आदमी से बिलकुल नफ़रत नहीं हो जाती जो उन फूलों को पसंद नहीं करता जिनको कि हम पसंद करते हैं. हम उस आदमी से कोई बैर नहीं रखते जो हिन्दुस्तान में नहीं बल्कि रूस में पैदा होता है. फिर यह समझ में नहीं आता कि एक धर्म के मानने वाले दूसरे धर्म के मानने वालों से क्यों खोट रखते हैं ? यह उनकी नासमझी और खुद अपने धर्म के साथ दुशमनी है.

इस खोट रखने का एक खास कारन भी है. इन्सान जन्म से ही खुदगरज़ या स्वार्थी है. वह अच्छी और बुरी हर चीज़ से अपना मतलब निकालने की कोशिश करता है. अपना मतलब निकालने के लिये लोग इसी तरह मज़हब का भी ज़्यादातर ग़लत इस्तेमाल करते हैं. जैसे पुराने ज़माने में अगर एक राजा का मतलब दूसरे राजा का राज लूट लेना होता तो वह अपनी इस नंगी और नीच हवस (लालच) को भी धर्म का चोला पहना देता. इसी तरह आजकल अगर मेम्बरी के एक उम्मीदवार को अपने निजी स्वार्थ के लिये दूसरे उम्मीदवार को हराना होता है तो वह फ़ौरन धर्म और मज़हब की कोई फुलझड़ी छोड़ देता है. जिस तरह हर अच्छी से अच्छी चीज़ के लिये मज़हब का नाम लिया जाता है उसी तरह हर बुरी से बुरी चीज़ के लिये भी किसी न किसी तरह मज़हब या धर्म का नाम जोड़ दिया जाता है. इस सिलसिले में मुझे एक बड़ा दिलचस्प क़िस्सा याद आ गया. मेरे क़स्बे में एक बदमाश मुसलमान ने एक लड़की भगाई.

ہے لیکن بول ایک ہی ہے.

ہم اُس آدمی سے بالکل خفا نہیں ہوجاتے جو ہماری طرح ٹوپی نہیں پہنتا. ہمیں اُس آدمی سے بالکل نفرت نہیں ہوجاتی جو اُن پھولوں کو پسند نہیں کرتا جن کو کہ ہم پسند کرتے ہیں. ہم اُس آدمی سے کوئی بَیر نہیں رکھتے جو ہندستان میں نہیں بلکہ روس میں پیدا ہوتا ہے. پھر یہ سمجھ میں نہیں آتا کہ ایک دھرم کے ماننے والے دوسرے دھرم کے ماننے والوں سے کیوں کھوٹ رکھتے ہیں؟ یہ اُن کی ناسمجھی اور خود اپنے دھرم کے ساتھ دشمنی ہے.

اس کھوٹ رکھنے کا ایک خاص کارن بھی ہے. انسان جنم سے ہی خودغرض یا سوارتھی ہے. وہ اچھی اور بُری ہر چیز سے اپنا مطلب نکالنے کی کوشش کرتا ہے. اپنا مطلب نکالنے کے لئے لوگ اسی طرح مذہب کا بھی زیادہ تر غلط استعمال کرتے ہیں. جیسے پُرانے زمانے میں اگر ایک راجا کا مطلب دوسرے راجا کا راج لوٹ لینا ہوتا تو وہ اپنی اس ننگی اور نیچ ہوس (لالچ) کو بھی دھرم کا چولا پہنا دیتا. اسی طرح آج کل اگر ممبری کے ایک اُمیدوار کو اپنے نجی سوارتھ کے لئے دوسرے اُمیدوار کو ہرانا ہوتا ہے تو وہ فوراً دھرم اور مذہب کی کوئی پھلجھڑی چھوڑ دیتا ہے. جس طرح ہر اچھی سے اچھی چیز کے لئے مذہب کا نام لیا جاتا ہے اُسی طرح ہر بُری سے بُری چیز کے لئے بھی کسی نہ کسی طرح مذہب یا دھرم کا نام جوڑ دیا جاتا ہے. اس سلسلے میں مجھے ایک بڑا دلچسپ قصہ یاد آگیا. میرے قصبے میں ایک بدمعاش مسلمان نے ایک لڑکی بھگائی.

जब मुक़द्दमा चला उस वक़्त यह बदमाश क़स्बे के हर मुसलमान के पास यह कहता फिरा—"मेरी इज़्ज़त बचाइये, एक मुसलमान की इज़्ज़त का सवाल है." जब यह मेरे पास आया तो मैंने उससे पूछा—"भाई इस वक़्त तो तुम मुसलमान हो लेकिन उस वक़्त तुम क्या थे जब तुमने लड़की भगाई थी?" कहने लगा—"उस वक़्त भी मैं मुसलमान था." मैंने कहा—"हरगिज़ नहीं. अगर तुम सचमुच मुसलमान होते तो तुम लड़की भगाते ही क्यों?" इस पर वह बहुत अकड़ कर कहने लगा—"साहब, लड़की तो हिन्दू थी." इसी तरह एक नहीं ऐसे हज़ारों क़िस्से पेश किए जा सकते हैं, जिनमें धर्म और मज़हब का नाम ले लेकर औरतों की इज़्ज़तें लूटी गईं, बूढ़ों और बच्चों को बड़ी ही बेरहमी और बेदर्दी से क़त्ल किया गया. बुरे से बुरा काम मज़हब के नाम पर अच्छा समझा गया और इसका नतीजा यह हुआ कि अलग अलग धर्मों के मानने वाले अपने बीच धर्म ही को लड़ाई की जड़ और झगड़ों की बुनियाद समझने लगे. अलग अलग धर्मों के कुछ झूटे और मक्कार ठेकेदारों नें मज़हबी मतभेदों को उछालने, बढ़ाने और फैलाने को अपने पेट भरने का ज़रिया बना लिया. और धीरे धीरे धर्मों की साफ़ और पवित्र नदियाँ, जो सब एक ही महासागर में जाकर गिरती हैं, गंदे नालों में बदल कर रह गईं और उस महासागर को भी भूल गईं जहाँ जाकर वह एक दूसरे में घुल मिल जातीं.

धर्म और मज़हब का यह ग़लत इस्तेमाल आज से नहीं सदियों से होता चला आरहा है और इसने एक ही तरह जीने और मरने वाले आदमियों के बीच नफ़रत और बैर की एक बड़ी खाई डालदी

جب مقدمہ چلا اُس وقت یہ بدمعاش قصبے کے ہر مسلمان کے پاس یہ کہتا پھرا—"میری عزت بچائیے، ایک مسلمان کی عزت کا سوال ہے۔" جب یہ میرے پاس آیا تو میں نے اُس سے پوچھا—"بھائی اِس وقت تو تم مسلمان ہو لیکن اُس وقت تم کیا تھے جب تم نے لڑکی بھگائی تھی؟" کہنے لگا—"اُس وقت بھی میں مسلمان تھا۔" میں نے کہا—"ہرگز نہیں۔ اگر تم سچ مچ مسلمان ہوتے تو تم لڑکی بھگاتے ہی کیوں؟" اِس پر وہ بہت اکڑ کر کہنے لگا—"صاحب، لڑکی تو ہندو تھی۔" اِسی طرح ایک نہیں ایسے ہزاروں قصے پیش کیے جاسکتے ہیں، جن میں دھرم اور مذہب کا نام لے لے کر عورتوں کی عزتیں لوٹی گئیں، بوڑھوں اور بچوں کو بڑی ہی بیرحمی اور بےدردی سے قتل کیا گیا۔ بُرے سے بُرا کام مذہب کے نام پر اچھا سمجھا گیا اور اِس کا نتیجہ یہ ہوا کہ الگ الگ دھرموں کے ماننے والے اپنے بیچ دھرم ہی کو لڑائی کی جڑ اور جھگڑوں کی بنیاد سمجھنے لگے۔ الگ الگ دھرموں کے کچھ جھوٹے اور مکار ٹھیکیداروں نے مذہبی مت بھیدوں کو اُچھالنے، بڑھانے اور پھیلانے کو اپنے پیٹ بھرنے کا ذریعہ بنالیا۔ اور دھیرے دھیرے دھرموں کی صاف اور پوتر ندیاں، جو سب ایک ہی مہاساگر میں جاکر گرتی ہیں، گندے نالوں میں بدل کر رہ گئیں۔ اور اُس مہاساگر کو بھی بھول گئیں جہاں جاکر ایک دوسرے میں گھل مل جاتیں۔

دھرم اور مذہب کا یہ غلط استعمال آج سے نہیں صدیوں سے ہوتا چلا آرہا ہے اور اِس نے ایک ہی طرح جینے اور مرنے والے آدمیوں کے بیچ نفرت اور بیر کی ایک بڑی کھائی ڈال دی

हों और वह इन्सानियत के कुदरती जज़्बे से महरूम हो कर अन्धे जज़्बात का शिकार हो गये हैं.

आज एक मुसलमान यह सोच भी नहीं सकता कि महमूद गज़नवी एक लुटेरा और सिर्फ एक लुटेरा था जिसने सोमनाथ का मंदिर तोड़ कर इसलाम और मुसलमान दोनों को हमेशा के लिये बदनाम कर दिया. आज एक हिन्दू अजमेर के ख्वाजा साहब की पाक और बुज़ुर्ग हस्ती में कोई गुन नहीं देखता बल्कि उनका नाम सुनकर उसको कुछ उलझन सी महसूस होती है. एक औसत दर्जे का हिन्दू और मुसलमान हिन्दुस्तान की पुरानी तारीख, तारीख समझ कर पढ़ ही नहीं सकता. उसे यह खयाल भी नहीं आता कि उन पुराने लोगों ने, जिन्होंने धर्म को अपने निजी स्वार्थ के लिये इस्तेमाल किया था, धर्म से ग़द्दारी की थी. अगर अब से चार पाँच सौ साल पहले कोई मुसलमान बादशाह किसी हिन्दू राजा से लड़ाई में जीत गया तो क्या और अगर अब से दो ढाई सौ साल पहले किसी हिन्दू हाकिम ने किसी मुसलमान को क़त्ल करवा दिया तो क्या? लड़ाई झगड़े और मारकाट करने वालों को हिन्दू धर्म या इसलाम से वास्ता ही क्या? और अगर पुराने हिन्दू या मुसलमान सज़ा के क़ाबिल थे तो उनकी सज़ा आजकल के हिन्दुओं और मुसलमानों को कैसे दी जा सकती है?

समय आ गया है कि इन्सानों के दिलों को पुराने शक और संदेह, एक दूसरे के बारे में ग़लत फ़हमी और नफ़रत की पड़ी हुई और जमी हुई धूल से साफ़ कर दिया जाय और उनको एक ऐसे नये साँचे में ढाला जाय जो इन्सानों को सबसे पहले इन्सान होना सिखाये.

وہ انسانیت کے قدرتی جذبے سے محروم ہو کر اندھے جذبات کا شکار ہو گئے ہیں۔

آج ایک مسلمان یہ سوچ بھی نہیں سکتا کہ محمود غزنوی ایک لٹیرا اور صرف ایک لٹیرا تھا جس نے سومناتھ کا مندر توڑ کر اسلام اور مسلمان دونوں کو ہمیشہ کے لئے بدنام کر دیا۔ آج ایک ہندو اجمیر کے خواجہ صاحب کی پاک اور بزرگ ہستی میں کوئی گن نہیں دیکھتا بلکہ ان کا نام سن کر اس کو الجھن سی محسوس ہوتی ہے۔ ایک اوسط درجے کا ہندو اور مسلمان ہندوستان کی پرانی تاریخ، تاریخ سمجھ کر پڑھ ہی نہیں سکتا۔ اسے یہ خیال بھی نہیں آتا کہ ان پرانے لوگوں نے جنھوں نے دھرم کو اپنے نجی سوارتھ کے لئے استعمال کیا تھا، دھرم سے غداری کی تھی۔ اگر اب سے چار پانچ سو سال پہلے کوئی مسلمان بادشاہ کسی ہندو راجا سے لڑائی میں جیت گیا تو کیا اور اگر اب سے دو ڈھائی سو سال پہلے کسی ہندو حاکم نے کسی مسلمان کو قتل کروا دیا تو کیا؟ لڑائی جھگڑے اور مارکاٹ کرنے والوں کو ہندو دھرم یا اسلام سے واسطہ ہی کیا؟ اور اگر پرانے ہندو یا مسلمان سزا کے قابل تھے تو ان کی سزا آج کل کے ہندوؤں اور مسلمانوں کو کیسے دی جا سکتی ہے؟

سمے آ گیا ہے کہ انسانوں کے دلوں کو پرانے شک اور سندیہ، ایک دوسرے کے بارے میں غلط فہمی اور نفرت کی پڑی ہوئی اور جمی ہوئی دھول سے صاف کر دیا جائے اور ان کو ایک ایسے نئے سانچے میں ڈھالا جائے جو انسانوں کو سب سے پہلے انسان ہونا سکھائے۔

जलियानवाला बाग़ की कुछ यादगारें

(भाई रामजी दर)

११

स्वर्गीय दीनबन्धु एन्ड्रयूज़ का सतसंग

अमृतसर लौटने पर मुझे स्वर्गीय दीनबन्धु सी० एफ़० एन्ड्रयूज़ के नियाज़ हासिल हुये. आप पंजाब के ज़ख़्मी दिल पर मरहम लगाने के लिये पहले लाहौर तशरीफ़ लाये और फिर अमृतसर. आप भी वहीं टिके थे जहाँ हमारी पार्टी थी. हमारे मेहमान का नाम था लाला गिरधारीलालजी. वह भी एक मार्के के व्यक्ति थे. इनकी तारीफ़ मैं आगे करूंगा.

एन्ड्रयूज़ साहब किसी राजनैतिक मत या मन्डली से कोई वास्ता नहीं रखते थे. इन्सान की ख़िदमत उनका धर्म था. उनके चेहरे का नक़्शा एक ख़ूबसूरत तसवीर थी, जिसमें उनके दिल व दिमाग़ की अनमोल ख़ूबियाँ झलकती थीं.

उनकी बोली बड़ी नम्र, भोली और मीठी थी. दिल पर फ़ौरन असर करने वाली. इतनी धीमी आवाज़ में वह बोलते कि हमें बड़े ध्यान से कान लगाकर सुनना पड़ता. जी यही चाहता कि उनके पास से कभी न हटें. उनकी शख़्सियत में एक आकर्षण शक्ति थी. इस शक्ति की असली वजह थी उनके दिल की सच्चाई और सफ़ाई. एन्ड्रयूज़ साहब मामूली कपड़े का कोट और पतलून पहनते थे. न मालूम कितने पेवन्द उनके पतलून और कोट में लगे थे.

جلیانوالا باغ کی کچھ یادگاریں

(بھائی رام جی در)

سورگیہ دین بندھو اینڈریوز کا ست سنگ

امرتسر لوٹنے پر مجھے سورگیہ دین بندھو سی. ایف. اینڈریوز کے نیاز حاصل ہوئے. آپ پنجاب کے زخمی دل پر مرہم لگانے کے لئے پہلے لاہور تشریف لائے پھر امرتسر. آپ بھی وہیں ٹکے تھے جہاں ہماری پارٹی تھی. ہمارے مہمان کا نام تھا لالہ گردھاری لال جی. یہ بھی ایک مرکے کے ویکتی تھے. ان کی تعریف میں آگے کروں گا.

اینڈریوز صاحب کسی راجنیتک مت یا منڈلی سے کوئی واسطہ نہیں رکھتے تھے. انسان کی خدمت ان کا دھرم تھا. ان کے چہرے کا نقشہ ایک خوبصورت تصویر تھی جس میں ان کے دل و دماغ کی انمول خوبیاں جھلکتی تھیں.

ان کی بولی بڑی نرم، بھولی اور میٹھی تھی. دل پر فوراً اثر کرنے والی. اتنی دھیمی آواز میں وہ بولتے کہ ہمیں بڑے دھیان سے کان لگا کر سننا پڑتا. جی یہی چاہتا کہ ان کے پاس سے کبھی نہ ہٹیں. ان کی شخصیت میں ایک آکرشن شکتی تھی. اس شکتی کی اصلی وجہ تھی ان کے دل کی سچائی اور صفائی. اینڈریوز صاحب معمولی کپڑے کا کوٹ اور پتلون پہنتے تھے. معلوم نہیں کتنے پیوند ان کے پتلون اور کوٹ میں لگے تھے.

वह क़लम चलाने में बड़े माहिर थे. उनका क़लम उनके लिये ग़रीबों और दुखियों की ख़िदमत करने का एक बड़ा पुरअसर ज़रिया था.

पंजाब में उन्होंने जो कुछ देखा और जाँच पड़ताल की उसे बड़ी ख़ूबी और सच्चाई से लेखों के ज़रिये अख़बारों में छपवा दिया ताकि हिन्दुस्तान को पंजाब के बारे में जानकारी हो और वह उसके दुख को दूर करने के लिये कुछ करे.

मैं एन्ड्रयूज़ साहब को अकसर क़लम चलाते देखता था.

भोजन भी उनका सीधा-सादा था. उनको प्रकृति (नेचर) से बड़ा प्रेम था. हम सब बरामदे में रात को सोने लगे थे, क्योंकि सरदी शुरू हो चली थी. मगर एन्ड्रयूज़ साहब अपनी चारपाई खुले में रखते.

चारपाई उनको बहुत पसन्द थी. चारपाई में उनको देहाती कारीगरी नज़र आती थी. और उसको वह सेहत के लिये बहुत अच्छा समझते थे.

मैंने एन्ड्रयूज़ साहब से पूछा—"आप सरदी में कैसे खुले में सोते हैं?" उन्होंने जवाब दिया—"ज्यों ज्यों सरदी बढ़ती जाती है मैं अपने ऊपर कम्बलों का नम्बर बढ़ाता जाता हूँ...... मगर अपना मुँह कभी नहीं ढँकता...... मुझे आसमान के तले सोने में एक ख़ास आनन्द आता है."

एन्ड्रयूज़ साहब के चेहरे से नूर टपकता था. वह इतने ख़ुश थे.

وہ قلم چلانے میں بڑے ماہر تھے۔ اُن کا قلم اُن کے لئے غریبوں اور دُکھیوں کی خدمت کرنے کا ایک بڑا پُراثر ذریعہ تھا۔

پنجاب میں انھوں نے جو کچھ دیکھا اور جانچ پڑتال کی اُس سے بڑی خوبی اور سچائی سے لیکھوں کے ذریعے اخباروں میں چھپوا دیا تاکہ ہندستان کو پنجاب کے بارے میں جانکاری ہو اور وہ اُس کے دُکھ کو دور کرنے کے لئے کچھ کرے۔

میں انڈریوز صاحب کو اکثر قلم چلاتے دیکھتا تھا۔

بھوجن بھی اُن کا سیدھا سادا تھا۔ اُن کو پرکرتی (نیچر) سے بڑا پریم تھا۔ ہم سب برامدے میں رات کو سونے لگے تھے کیونکہ سردی شروع ہو چلی تھی۔ مگر انڈریوز صاحب اپنی چارپائی کھلے میں رکھتے۔

چارپائی اُن کو بہت پسند تھی۔ چارپائی میں اُن کو دیہاتی کاریگری نظر آتی تھی۔ اور اُس کو وہ صحت کے لئے بہت اچھا سمجھتے تھے۔

میں نے انڈریوز صاحب سے پوچھا "آپ سردی میں کھلے میں سوتے ہیں؟" انھوں نے جواب دیا— "جوں جوں سردی بڑھتی جاتی ہے میں اپنے اوپر کمبلوں کا نمبر بڑھاتا جاتا ہوں...... مگر اپنا منہ کبھی نہیں ڈھکتا...... مجھے آسمان تلے سونے میں ایک خاص آنند آتا ہے۔"

انڈریوز صاحب کے چہرے سے نور ٹپکتا تھا [illegible]

उनके दर्शन किये अब क़रीब ३० बरस बीत गये हैं, फिर भी उनकी फ़रिश्तों जैसी नेक, भोली और नम्र सूरत अब भी अकसर मेरी आँखों के सामने फिरती रहती है.

एन्ड्रयूज साहब को मैंने गुजरानवाला के तजरबे पूरी तफ़सील से सुनाये थे. उन्होंने बड़े ध्यान और हमदर्दी से मेरी कहानी सुनी. कभी कभी उनकी आँखें नम हो जातीं और कभी उनका लाल चेहरा और भी तमतमा उठता.

उन्होंने मुझसे वादा किया था कि वह गुजरानवाला के सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस से ज़रूर मिलने की कोशिश करेंगे.

जलियानवालाबाग़ के क़त्लेआम का जब ज़िक्र हुआ तो एन्ड्रयूज साहब ने एक सच्चा क़िस्सा सुनाया. कहने लगे—"मेरा एक ख़ानसामाँ है जो पहले फ़ौजी क्लब में नौकर था. वह मुझसे कह रहा था कि जिस रोज़ जलियानवाला बाग़ में ख़ून बहाया गया, वह उस क्लब में काम पर हाज़िर था. मशीनगन चलवाने के बाद जनरल डायर बड़े जोश में क्लब में लौटा और उसने ख़ानसामाँ से पेग (शराब का) माँगा और अँगरेज़ी में अपने और फ़ौजी साथियों से बड़े फ़ख़्र के साथ कहा—"आज मैंने दो हज़ार से कम का शिकार नहीं किया." ख़ानसामाँ टूटी-फूटी अंगरेज़ी समझता था. मैंने एक रिपोर्ट अपने तजरबों की पंडित मोतीलाल जी नेहरू को भी भेज दी थी.

१२

ख़ून से सींची ज़मीन

अमृतसर में पहुँचते ही सबसे पहला काम जो हमने किया था

حالانکہ ان کے درشن کئے اب قریب ۳۰ برس بیت گئے
ہیں، پھر بھی اُن کی فرشتوں جیسی نیک، بھولی اور نرم صورت
اب بھی اکثر میری آنکھوں کے سامنے پھرتی رہتی ہے۔

اینڈریوز صاحب کو میں نے گجرانوالا کے تجربے پوری تفصیل
سے سنائے تھے۔ انھوں نے بڑے دھیان اور ہمدردی سے میری
کہانی سنی۔ کبھی کبھی اُن کی آنکھیں نم ہو جاتیں اور کبھی اُن کا
لال چہرہ اور بھی تمتما اٹھتا۔

انھوں نے مجھ سے وعدہ کیا تھا کہ وہ گجرانوالا کے
سپرنٹنڈنٹ پولیس سے ضرور ملنے کی کوشش کریں گے۔

جلیاں والا باغ کے قتل عام کا جب ذکر ہوا تو اینڈریوز
صاحب نے ایک سچا قصہ سنایا۔ کہنے لگے — "میرا ایک
خانساماں ہے جو پہلے فوجی کلب میں نوکر تھا۔ وہ مجھ سے
کہہ رہا تھا کہ جس روز جلیان والا باغ میں خون بہایا گیا،
وہ اس کلب میں کام پر حاضر تھا۔ مشین گن چلوانے کے بعد
جنرل ڈائر بڑے جوش میں کلب میں لوٹا اور اس نے خانساماں
سے پیگ (شراب کا) مانگا اور انگریزی میں اپنے اور فوجی ساتھیوں
سے بڑے فخر کے ساتھ کہا — "آج میں نے دو ہزار سے کم کا
شکار نہیں کیا۔" خانساماں ٹوٹی پھوٹی انگریزی سمجھتا تھا۔ میں
نے ایک رپورٹ اپنے تجربوں کی پنڈت موتی لال جی نہرو کو بھی بھیج دی تھی۔

۱۲

خون سے سینچی زمین

امرتسر میں پہنچتے ہی سب سے پہلا کام جو ہم نے کیا تھا

वह था जलियानवाला बाग़ की शहीदों के ख़ून से सींची हुई ज़मीन के दर्शन करना. आज तो उस जगह की शकल दूसरी है. उस समय वह एक खँडहर सा अहाता था जिसके चारों तरफ़ मकान की पुश्तें थीं. कहने को वह बाग़ था. शायद किसी ज़माने में यहाँ फूल हों मगर जब हमने उसे देखा तो वहाँ सिवाय सूखी ज़मीन के और कुछ न था. एक पटा हुआ कुआँ भी था जिसमें न मालूम कितने बेगुनाह हिन्दुस्तानी ज़िन्दा गिर कर दफ़न हो गये थे. इसमें मर्द, औरतें, बच्चे, सब ही थे.

कहा जाता है कि जिस दिन जलियानवाला बाग़ में जनरल डायर ने धोका देकर एक पब्लिक-मीटिंग पर मशीनगन की गोलियाँ बरसाई थीं, उस दिन शहर में एक मेला भी था. उस की वजह से इस मीटिंग में हज़ारों की गिन्ती में आस-पास के देहाती भी आये हुये थे.

गोली चलने पर जब भीड़ तितर-बितर हुई तो लोगों को उस मैदान में से बाहर निकलना मुशकिल था. अहाते के चारों तरफ़ जाबजा मिट्टी की दीवारें थीं और कहीं कहीं इन दीवारों में बरसाती पानी निकलने के लिये छेद बने थे. लोग जब भागे तो उन्हों ने कुदरती तौर पर घबराहट में इन नालों मे से निकलना चाहा या दीवारों पर से कूदे.

ऐसे मौक़ों पर ज़ालिम डायर के लिये निशाने अच्छे थे. हमें लोगों के बयान से सबूत मिला था कि इन दीवारों के पास सब से ज़्यादा लोग मर कर गिरे थे. कहा जाता है कि इस पर

تھا جلیاں والا باغ کی شہیدوں کے خون سے سینچی ہوئی زمین کے درشن کرنا. آج تو اس جگہ کی شکل دوسری ہے. اس سمے وہ ایک کھنڈر سا احاطہ تھا جس کے چاروں طرف مکان کی پشتیں تھیں. کہنے کو یہ باغ تھا. شاید کسی زمانے میں یہاں پھول ہوں مگر جب ہم نے اسے دیکھا تو وہاں سوائے سوکھی زمین کے اور کچھ نہ تھا. ایک پٹا ہوا کنواں بھی تھا جس میں نہ معلوم کتنے بے گناہ ہندوستانی زندہ گر کر دفن ہو گئے تھے. اس میں مرد، عورتیں، بچے سب ہی تھے.

کہا جاتا ہے کہ جس دن جلیاں والا باغ میں جنرل ڈائر نے دھوکا دے کر ایک پبلک میٹنگ پر مشین گن کی گولیاں برسائی تھیں اس دن شہر میں میلہ بھی تھا. اس کی وجہ سے اس میٹنگ میں ہزاروں کی گنتی میں آس پاس کے دیہاتی بھی آئے ہوئے تھے.

گولی چلنے پر جب بھیڑ تتر بتر ہوئی تو لوگوں کو اس میدان میں سے باہر نکلنا مشکل تھا. احاطے کے چاروں طرف جابجا مٹی کی دیواریں تھیں اور کہیں کہیں ان دیواروں میں برساتی پانی نکلنے کے لئے چھید بنے تھے. لوگ جب بھاگے تو انھوں نے قدرتی طور پر گھبراہٹ میں ان نالوں میں سے نکلنا چاہا یا دیواروں پر سے کودے.

ایسے موقعوں پر ظالم ڈائر کے لئے نشانے اچھے تھے. ہمیں لوگوں کے بیان سے ثبوت ملا تھا کہ ان دیواروں کے پاس سب سے زیادہ لوگ مر کر گرے تھے. کہا جاتا ہے کہ اس پر

वह जगह की जमा हो गई थी और उन पर से लोग भागते थे. गोली बराबर उनकी पीठों पर चल रही थी.

जलियानवाला बाग के चारों तरफ़ गलियों थीं. ज़ख़्मी लोग जोश में काफ़ी दूर तक इन गलियों में आकर बेहोश होकर गिरे और कुछ मरे और कुछ ऐसे ही पड़े रहे.

मैं मार्शलला के ख़तम होने के ६ महीने के बाद वहां गया था. मगर हम को वहां के रहने वालों ने ख़ास-ख़ास दीवारें दिखाईं जिनमें धब्बे जैसी कोई चीज़ लिखी थी. उनका कहना था कि वह इन्सानों का ख़ून था जो उस वक़्त तक मौजूद था.

जलियानवाला बाग के इर्द-गिर्द के मकानों की दीवारों में भी मशीनगन की गोलियों के काफ़ी निशान मौजूद थे.

हम से लोगों ने कहा कि क़त्ले आम के बाद उस जगह से ठेले भर कर लोगों के जूते, जो वह घबराहट में छोड़कर भागे थे, हटाकर फिकवाये गये थे.

एक नन्हे से बच्चे का जूता मुझे भी मिला था और वह आज भी मेरे एक अज़ीज़ के बंगले के ड्राइंग रूम में शीशे की आलमारी में बड़ी हिफ़ाज़त से रक्खा है.

१२

एक बहादुर स्त्री

जलियानवाला बाग के बारे में हमने जनता की बड़ी बहादुरी की बातें भी सुनी थीं.

उन्होंने शुरू में बहुत निडर होकर जनरल डायर की मशीनगन का मुक़ाबला किया था. मगर सबसे बहादुर तो एक वीर

جگہ کی جمع ہوگئی تھی اور ان پر سے لوگ بھاگتے تھے. گولی برابر اُن کی پیٹھوں پر چل رہی تھی.

جلیاں والا باغ کے چاروں طرف گلیاں تھیں. زخمی لوگ جوش میں کافی دور تک ان گلیوں میں جاکر بے ہوش ہوکر گرے اور کچھ مرے اور کچھ ایسے ہی پڑے رہے.

میں مارشل لا کے ختم ہونے کے ۶ مہینے کے بعد وہاں گیا تھا. مگر ہم کو وہاں کے رہنے والوں نے خاص خاص دیواریں دکھائیں جن میں دھبے جیسی کوئی چیز لیسی تھی. اُن کا کہنا تھا کہ وہ انسانوں کا خون تھا جو اُس وقت تک موجود تھا.

جلیاں والا باغ کے اِرد گرد کے مکانوں کی دیواروں میں مشین گن کی گولیوں کے کافی نشان موجود تھے.

ہم سے لوگوں نے کہا کہ قتل عام کے بعد اُس جگہ سے ٹھیلے بھر کر لوگوں کے جوتے، جو وہ گھبراہٹ میں چھوڑکر بھاگے تھے ہٹاکر پھنکوائے گئے تھے.

ایک ننھے سے بچے کا جوتا مجھے بھی ملا تھا اور وہ آج بھی میرے ایک عزیز کے بنگلے کے ڈرائنگ روم میں شیشے کی الماری میں بڑی حفاظت سے رکھا ہے.

۱۳

ایک بہادر استری

جلیاں والا باغ کے بارے میں ہم نے جنتا کی بڑی بہادری کی باتیں بھی سنی تھیں. انھوں نے شروع میں بہت نڈر ہوکر جنرل ڈائر کی مشین گن کا مقابلہ کیا تھا. مگر سب سے بہادر تو ایک ویر

स्त्री थी. जब उसे पता चला कि उसका पति या बेटा (मुझे ठीक याद नहीं) मारा गया, तो वह फ़ौरन उस नाज़ुक वक़् में बग़ैर कुछ परवाह किये अकेली उस भयानक जगह पहुंची. वहां हज़ारों लाशें पड़ी थी. ज़ख़मी चीख़ रहे थे, तड़प रहे थे. शाम हो चली थी. शहर भर में सन्नाटा था. एक हू का आलम था. हर जगह फ़ौजी नज़र आते थे.

ऐसे डरावने वक़् वह बहादुर हिन्दुस्तानी स्त्री अपने सम्बंधी के पास जाकर बैठ गई और उस मरे या अधमरे सम्बंधी का सिर अपनी जाँघ पर रखकर उस क़ब्रस्तान में रात भर अकेली भगवान् के भरोसे बैठी रही.

कहा जाता है कि रात को कुत्ते लाशों को खा रहे थे और पुलीस वाले भी मुर्दों की जेबें टटोल रहे थे !

ऐसी घड़ी में और ऐसे हालात में वह वीर स्त्री वहां उस समय तक रही जब तक उसकी मदद को लोग न आये.

१४

बन्द खिड़की

हमने जलियानवाला बाग़ के चारों तरफ़ के रहने वालों से मिलकर बयान लिये थे और उनसे आँखों देखा हाल सुना था.

हम एक दोमन्ज़िले मकान में मकान वाले से बयान ले रहे थे. इस मकान के कमरे में मुझे एक खिड़की दिखाई दी. वह बन्द थी.

استری تھی جب اسے پتہ چلا کہ اس کا پتی یا بیٹا (مجھے ٹھیک یاد نہیں) مارا گیا، تو وہ فوراً اس نازک وقت میں بغیر کچھ پرواہ کئے اکیلی اس بھیانک جگہ پہنچی۔ وہاں ہزاروں لاشیں پڑی تھیں۔ زخمی چیخ رہے تھے، تڑپ رہے تھے۔ شام ہو چلی تھی۔ شہر بھر میں سناٹا تھا۔ ایک ہُو کا عالم تھا۔ ہر جگہ فوجی نظر آتے تھے۔

ایسے ڈراونے وقت وہ بہادر ہندستانی استری اپنے سمبندھی کے پاس جا کر بیٹھ گئی اور اس مرے یا ادھ مرے سمبندھی کا سر اپنی جانگھ پر رکھ کر اس قبرستان میں رات بھر اکیلی بھگوان کے بھروسے بیٹھی رہی۔

کہا جاتا ہے کہ رات کو کتے لاشوں کو کھا رہے تھے اور پولیس والے بھی مُردوں کی جیبیں ٹٹول رہے تھے!

ایسی گھڑی میں اور ایسی حالت میں وہ ویر استری وہاں اس سمے تک رہی جب تک اس کی مدد کو لوگ نہ آگئے۔

۱۴

بند کھڑکی

ہم نے جلیان والا باغ کے چاروں طرف کے رہنے والوں سے مل کر بیان لئے تھے اور ان سے آنکھوں دیکھا حال سنا تھا۔

ہم ایک دو منزلے مکان میں مکان والے سے بیان لے رہے تھے۔ اس مکان کے کمرے میں مجھے ایک کھڑکی دکھائی دی۔ وہ بند تھی۔

मैंने मकान वाले से पूछा—"इस खिड़की के पीछे क्या है ?"

उसने कहा "जलियान वाला बाग."

"जरा खोलिये. मैं देखूँ यहाँ से बाग कैसा नजर आता है." मैंने बड़े साधारण तौर पर कहा.

"नहीं साहब." उसने चौंककर जवाब दिया. "मैं नहीं खोलूँगा."

"क्यों ? क्या बात है ?" मैंने ताज्जुब से पूछा.

मकानवाले को पुरानी याद ने और भी उदास कर दिया. उसके चेहरे पर डर दिखाई दिया. बोला—"मैंने उस दिन से आज तक इस खिड़की को नहीं खोला...मेरी हिम्मत नहीं पड़ती..न मेरा जी चाहता है...आप समझ नहीं सकते, हम लोगों ने वह रात कैसे गुजारी थी....सैकड़ों आदमी एक साथ रात भर पीड़ा से चीखते चिल्लाते रहे...बस उसका जिक्र न छेड़िये..." मकानवाले ने आँखें बन्द करलीं. ऐसा मालूम हुआ कि उसके सामने वही भयंकर दृश्य असली रूप में फिर लौट आया हो.

मकानवाले ने खिड़की न खोली. मगर मुझसे न रहा गया. मैंने उसे खोलकर एक बार फिर उस पवित्र भूमि के दर्शन किये जिसमें हिन्दू, मुसलमान और सिक्खों का खून मिलकर बहा था.

१५

जुल्म की इन्तिहा

यह भी अमृतसर का जिक्र है. एक रोज एक हट्टाकट्टा, बड़े डील डौल का पंजाबी बयान देने आया. पहले उसने इधर उधर

میں نے مکان والے سے پوچھا۔ "اس کھڑکی کے پیچھے کیا ہے؟"

اس نے کہا "جلیان والا باغ۔"

"ذرا کھولیے۔ میں دیکھوں یہاں سے باغ کیسا نظر آتا ہے۔" میں نے بڑے سادھارن طور پر کہا۔

"نہیں صاحب۔" اس نے چونک کر جواب دیا۔ "میں نہیں کھولوں گا۔"

"کیوں؟ کیا بات ہے؟" میں نے تعجب سے پوچھا۔

مکان والے کو پرانی یاد نے اور بھی اداس کر دیا۔ اس کے چہرے پر ڈر دکھائی دیا۔ بولا۔ "میں نے اس دن سے آج تک اس کھڑکی کو نہیں کھولا... میری ہمت نہیں پڑتی... نہ میرا جی چاہتا ہے... آپ سمجھ نہیں سکتے، ہم لوگوں نے وہ رات کیسے گزاری تھی... سیکڑوں آدمی ایک ساتھ رات بھر پیڑا سے چیختے چلاتے رہے... بس اس کا ذکر نہ چھیڑیے..." مکان والے نے آنکھیں بند کر لیں۔ ایسا معلوم ہوا کہ اس کے سامنے وہی بھیانک درشیہ اصلی روپ میں پھر لوٹ آیا ہو۔

مکان والے نے کھڑکی نہ کھولی۔ مگر مجھ سے نہ رہا گیا۔ میں نے اسے کھول کر ایک بار پھر اس پوتر بھومی کے درشن کیے جس میں ہندو، مسلمان اور سکھوں کا خون مل کر بہا تھا۔

۱۵

ظلم کی انتہا

یہ بھی امرتسر کا ذکر ہے۔ ایک روز ایک ہٹا کٹا، بڑے ڈیل ڈول کا پنجابی بیان دینے آیا۔ پہلے اس نے ادھر ادھر

की सुनी हुई बातें सुनाईं जो हमने बहुतों से सुनी थीं. फिर उसने अपनी आप बीती बयान की. कहने लगा—"मुझे पुलीस ने बिना किसी वजह के पकड़ कर हवालात में बन्द कर दिया. दो चार रोज़ ऐसे ही रक्खा. फिर मुझसे कहने लगे कि अगर मैं यह क़बूल करलूँ कि डाक्टर सत्यपाल और डाक्टर किचलू गोला बारूद बनाने की साज़िश में शरीक थे, तो पुलीस मुझे छोड़ देगी."

मैंने पूछा "गोला बारूद कैसा ?"

"अजी साहब ! वह चाहते थे कि हमारे नेताओं के ऊपर अंगरेज़ी सलतनत के ख़िलाफ़ बग़ावत का इलज़ाम लगा कर उन्हें बहुत सख़्त सज़ा दें." उसने मुझे समझाया.

"फिर तुमने क्या जवाब दिया ?" मैंने पूछा.

वह बोला—"मैंने साफ़ कह दिया कि मैं अपने नेताओं के ख़िलाफ़ झूटा इलज़ाम नहीं लगा सकता, चाहे वह मुझे मार डालें. इस पर उन्होंने मुझे धमकाया, मारा, डराया. मैंने बराबर इनकार किया."

"फिर क्या हुआ ?" मैंने पूछा.

"फिर थानेदार ने पुलीस वालों से इशारा किया तो उन्होंने ज़बरदस्ती मेरा हाथ पकड़ कर एक चारपाई के पाये के नीचे दबा दिया और उस चारपाई पर दो आदमी चढ़ कर बैठ गये...!"

तुमको बड़ी चोट लगी होगी...तुमने कैसे बरदाश्त किया ?" मैंने बीच में रोक कर जल्दी से पूछा.

کی سُنی ہوئی باتیں سُنائیں جو ہم نے بہتوں سے سُنی تھیں۔ اُس نے اپنی آپ بیتی بیان کی۔ کہنے لگا۔"مجھے پولیس نے بلا کسی وجہ کے پکڑ کر حوالات میں بند کر دیا۔ دو چار روز ایسے ہی رکھا۔ پھر مجھ سے کہنے لگے کہ اگر میں یہ قبول کر لوں کہ ڈاکٹر ستیہ پال اور ڈاکٹر کچلو گولا بارود بنانے کی سازش میں شریک تھے تو پولیس مجھے چھوڑ دے گی۔"

میں نے پوچھا "گولا بارود کیسا؟"

"اجی صاحب! وہ چاہتے تھے کہ ہمارے نیتاؤں کے اوپر انگریزی سلطنت کے خلاف بغاوت کا الزام لگا کر انھیں بہت سخت سزا دیں۔" اُس نے مجھے سمجھایا۔

"پھر تم نے کیا جواب دیا؟" میں نے پوچھا۔

وہ بولا۔"میں نے صاف کہہ دیا کہ میں اپنے نیتاؤں کے خلاف جھوٹا الزام نہیں لگا سکتا، چاہے وہ مجھے مار ڈالیں۔ اس پر انھوں نے مجھے دھمکایا، مارا، ڈرایا۔ میں نے برابر انکار کیا۔"

"پھر کیا ہوا؟" میں نے پوچھا۔

"پھر تھانے دار نے پولیس والوں سے اشارہ کیا تو انھوں نے زبردستی میرا ہاتھ پکڑ کر ایک چارپائی کے پائے کے نیچے دبا دیا اور اُس چارپائی پر دو آدمی چڑھ کر بیٹھ گئے...!"

"تم کو بڑی چوٹ لگی ہوگی... تم نے کیسے برداشت کیا؟" میں نے بیچ میں روک کر جلدی سے پوچھا۔

"मैंने ठान लिया था कि चाहे जो हो, मैं अपने नेताओं पर झूठा इलज़ाम लगाने में हिस्सा नहीं लूँगा......मेरे हाथ में बड़ा दर्द हो रहा था मगर मैं दांत दबा कर चुप बैठा रहा...थानेदार कुरसी पर बैठा तमाशा देख रहा था और हुक्का गुड़गुड़ा रहा था...अब उसने देखा कि मुझे तकलीफ ज़्यादा हो रही है तो बोला "अब भी कबूल दो."

मैंने गरदन हिलाकर इनकार किया. इस पर उसने चार और आदमियों को चारपाई पर बैठने का हुक्म दिया और वह खुद भी आकर बैठ गया ....."

" उफ...ऐसा जुल्म ?" मेरे मुँह से ज़ोर से निकला.

" बस मैं ही जानता हूँ कि उस वक्त मेरी क्या हालत थी.... थानेदार ने फिर मुझसे क़बूलने को कहा. मैंने फिर इनकार किया. थोड़ी देर बाद चारपाई पर से सब उतर गये. मेरे हाथ में सख्त दर्द था. मैं कराहने लगा. आँखों से आँसू निकल पड़े थे. थानेदार ने फिर मुझसे कहा कि मैं झूठा बयान दे दूँ. लेकिन मैंने ऐसा करना मंज़ूर न किया. "

" तुमने कमाल किया " मैंने उस जाट की तारीफ की.

वह बोला—" भाई जी ! मेरे लिये पाप था कि मैं ऐसे सज्जन लीडरों के खिलाफ झूठा इलज़ाम लगाने में शरीक होता. इन लीडरों ने हमारे लिये कितनी क़ुरबानियां की हैं और हम उनको दग़ा देते. यह मुझसे नहीं हो सकता था... मगर... ."

अभी तक तो वह बहादुर जाट ठंडे दिल से अपनी कथा सुना रहा था. मगर अब वह एकाएक " मगर " कह कर कुछ रुका

"میں نے ٹھان لیا تھا چاہے جو ہو! میں اپنے نیتاؤں پر جھوٹا الزام لگانے میں حصہ نہیں لوں گا.... میرے ہاتھ میں بڑا درد ہو رہا تھا مگر میں دانت دبا کر چپ بیٹھا رہا... تھانے دار کرسی پر بیٹھا تماشا دیکھ رہا تھا اور حقہ گڑگڑا رہا تھا... جب اس نے دیکھا کہ مجھے تکلیف زیادہ ہو رہی ہے تو بولا "اب بھی قبول دو."

میں نے گردن ہلا کر انکار کیا. اس پر اس نے چار اور آدمیوں کو چارپائی پر بیٹھنے کا حکم دیا اور وہ خود بھی آکر بیٹھ گیا....."

"اف... ایسا ظلم؟" میرے منہ سے زور سے نکلا.

"بس میں ہی جانتا ہوں کہ اس وقت میری کیا حالت تھی... تھانے دار نے پھر مجھ سے قبولنے کو کہا. میں نے پھر انکار کیا. تھوڑی دیر بعد چارپائی پر سے سب اتر گئے. میرے ہاتھ میں سخت درد تھا. میں کراہنے لگا. آنکھوں سے آنسو نکل پڑے تھے. تھانے دار نے پھر مجھ سے کہا کہ میں جھوٹا بیان دے دوں. لیکن میں نے ایسا کرنا منظور نہ کیا."

"تم نے کمال کیا" میں نے اس جاٹ کی تعریف کی.

وہ بولا— "بھائی جی! میرے لئے پاپ تھا کہ میں ایسے لیڈروں کے خلاف جھوٹا الزام لگانے میں شریک ہوتا. ان لیڈروں نے ہمارے لئے کتنی قربانیاں کی ہیں اور ہم ان کو دغا دیتے. یہ مجھ سے نہیں ہو سکتا تھا... مگر....."

ابھی تک تو وہ بہادر جاٹ ٹھنڈے دل سے اپنی کتھا سنا رہا تھا. مگر اب وہ ایکا ایک "مگر" کہہ کر کچھ رکا

और उसके चेहरे पर उदासी छा गई.

"क्या हुआ भाई ! रुक क्यों गये ?" मैंने धीरे से कहा.

वह ठंडी साँस लेकर बोला—"मगर इसके बाद उस बेरहम ज़ालिम थानेदार ने सिपाहियों को हुक्म दिया कि लाल धधकता हुआ तवा उसके हुक्के की चिलम में से निकाल कर मेरी हथेली पर रक्खें."

यह सुन हम सब को एक धक्का पहुँचा.

"जलता हुआ लाल तवा जबरदस्ती मेरी हथेली पर रक्खा गया...."

जाट की आवाज़ कँपकँपाने लगी और आँखें नम हो गईं.

हमारा सब का भी बोल बन्द था. ज़ुल्म की इन्तिहा थी.

जाट ने हाथ खोल कर हमारे सामने रख दिया और धीरे-धीरे रोकर कहा—"यह देखिये.... तवे का निशान... मैंने... कुछ देर तो और बरदाश्त किया ... मगर ... आखिर सह ... न .. सका ... तो .., मुझे .. ला ... चारी ... दरजे ... झूटी गवाही ... देनी.... .

जाट फूट-फूटकर शर्म के मारे रोने लगा. उसको बेहद रंज व शर्म थी कि उसको अपने प्यारे लीडरों के खिलाफ़ झूटा बयान देना पड़ा.

हमने उसकी पीठ पर हाथ फेरा और उसकी बहादुरी की तारीफ़ की और यक़ीन दिलाने की कोशिश की कि उसने वह काम किया जो कम इन्सान कर सकते हैं.

मगर वह यही कहता था—"मैंने बड़ा पाप किया .. मैं मर

اور اس کے چہرے پر اداسی چھا گئی۔

"کیا ہوا بھائی! رک کیوں گئے ہو" میں نے دھیرے سے کہا۔

وہ ٹھنڈی سانس لے کر بولا — "مگر اس کے بعد اس بے رحم ظالم تھانیدار نے سپاہیوں کو حکم دیا کہ لال دھدھکتا ہوا توا اس کے حقے کی چلم میں سے نکال کر میری ہتھیلی پر رکھ دیں۔"

یہ سن ہم سب کو ایک دھکا پہنچا۔

"جلتا ہوا لال توا زبردستی میری ہتھیلی پر رکھا گیا..."

جاٹ کی آواز کپکپانے لگی اور آنکھیں نم ہو گئیں۔

ہمارا سب کا بھی بول بند تھا۔ ظلم کی انتہا تھی۔

جاٹ نے ہاتھ کھول کر ہمارے سامنے رکھ دیا اور دھیرے دھیرے رو کر کہا — "یہ دیکھئے.... توے کا نشان... میں نے... کچھ دیر تو اور برداشت کیا... مگر... آخر سہہ... نہ... سکا... تو... مجھے... لا... چاری... درجے... جھوٹی... جھوٹی گواہی... دینی....

جاٹ پھوٹ پھوٹ کر شرم کے مارے رونے لگا۔ اس کو بے حد رنج و شرم تھی کہ اس کو اپنے پیارے لیڈروں کے خلاف جھوٹا بیان دینا پڑا۔

ہم نے اس کی پیٹھ پر ہاتھ پھیرا اور اس کی بہادری کی تعریف کی اور یقین دلانے کی کوشش کی کہ اس نے وہ کام کیا جو کم انسان کر سکتے ہیں۔

مگر وہ یہی کہتا تھا — "میں نے بڑا پاپ کیا.. میں مر

जाता और न क़बूलता तो ज़्यादा अच्छा होता."

१६

हमारे अमृतसर के मेज़बान की तारीफ़

जितनी मदद श्री गिरधारीलाल जी ने मोतीलाल जी और उनकी पार्टी को बयानात इकट्ठा करने और असली वाक़यात मालूम करने में की थी उतनी शायद और किसी ने न की होगी. गिरधारीलाल जी के घर ही में हम लोग काफ़ी दिन अमृतसर में टिके थे. आप क़द में छोटे थे. मगर बदन के मजबूत और काम करने में हर वक़्त मुस्तैद. आपकी उम्र उस वक़्त शायद ३५ बरस की होगी.

खाने के आप खुद बड़े शौक़ीन थे और मेहमानों की ख़ातिर करने में भी किसी से कम नहीं थे.

पूरे अमृतसर शहर की रिआया से—ग़रीब व रईस—आप की जान पहचान थी. समाज के हर तबक़े से आपका मेल था. मार्शलला के ज़माने में आपको बड़े बड़े तजरबे हुये थे.

आपके बारे में एक बार मोतीलाल जी ने तारीफ़ करते हुये कहा था, "मुझे सबसे ज़्यादा सुलझा हुआ और काम में चुस्त अगर पंजाब भर में कोई शख़्स मिला है तो वह गिरधारीलाल जी हैं."

आप शहर के बड़े बड़े रईसों से अकेले में मिलते और उनको बड़ी मुश्किल से राज़ी करके मोतीलाल जी के पास लाते और उनकी ज़बानी मोतीलाल जी उनकी मुसीबत की कहानी सुनते. मार्शलला के ज़माने में इनके ऊपर बड़ी बड़ी आफ़तें आई थीं. वह इतने बेबस हो गये थे कि मोतीलाल जी का दिल

جاتا اور نہ قبولتا تو زیادہ اچھا ہوتا۔"

16

ہمارے امرتسر کے میزبان کی تعریف

جتنی مدد شری گردھاری لال جی نے موتی لال جی اور ان کی پارٹی کو بیانات اکٹھا کرنے اور اصلی واقعات معلوم کرنے میں کی تھی اتنی شاید اور کسی نے نہ کی ہوگی۔ گردھاری لال جی کے گھر ہی میں ہم لوگ کافی دن امرتسر میں ٹکے تھے۔ آپ قد میں چھوٹے تھے۔ مگر بدن کے مضبوط اور کام کرنے میں ہر وقت مستعد۔ آپ کی عمر اس وقت شاید ۳۵ برس کی ہوگی۔

کھانے کے آپ خود بڑے شوقین تھے اور مہمانوں کی خاطر کرنے میں بھی کسی سے کم نہیں تھے۔

پورے امرتسر شہر کی رعایا سے۔ غریب و رئیس۔ آپ کی جان پہچان تھی۔ سماج کے ہر طبقے سے آپ کا میل تھا۔ مارشل لا کے زمانے میں آپ کو بڑے بڑے تجربے ہوئے تھے۔

آپ کے بارے میں ایک بار موتی لال جی نے تعریف کرتے ہوئے کہا تھا، "مجھے سب سے زیادہ سلجھا ہوا اور کام میں چست اگر پنجاب بھر میں کوئی شخص ملا ہو تو وہ گردھاری لال جی ہیں۔"

آپ شہر کے بڑے بڑے رئیسوں سے اکیلے میں ملتے اور ان کو بڑی مشکل سے راضی کرکے موتی لال جی کے پاس لاتے اور ان کی زبانی موتی لال جی ان کی مصیبت کی کہانی سنتے۔ مارشل لا کے زمانے میں ان کے اوپر بڑی آفتیں آئی تھیں۔ یہ اتنے بے بس ہو گئے تھے کہ موتی لال جی سے دل

से आदर करते हुये भी इनकी हिम्मत नहीं पड़ती थी कि उनके पास बयान देने या उनके दर्शन करने आयें.

शाम को जब सूरज डूब जाता तब इन लोगों को गिरधारी लाल जी छिपे तौर पर अपने साथ घोड़ा गाड़ी पर ले आते और पंडित जी के साथ किसी बाग़ में सैर करने के बहाने इन रईसों को ले जा कर वहां इनके बयान सुनवाते.

और न मालूम कितने ग़रीब मुख़तलिफ़ देहातों के जाटों को गिरधारी लाल जी ने बुलवा कर बयान दिलवाये थे.

जितने दिन हम गिरधारी लाल जी के यहाँ रहे, वह सुबह से शाम तक अपने ताँगे पर दिखाई देते. उनकी हर घड़ी यही कोशिश रहती कि मोतीलाल जी की जाँच-कमेटी की मदद करें.

गिरधारीलाल जी का स्वभाव बड़ा सरल था. बड़े प्रेम और हमदर्दी से बात चीत करते थे. हमारा उनका रिश्ता थोड़े ही दिनों की मुलाक़ात में भाई भाई का सा हो गया था. काफ़ी बेतकल्लुफ़ी हो चुकी थी.

पंजाब में लोग ज़्यादातर खाने में रोटी या चपाती का इस्तेमाल करते हैं. हम भी बहुत दिनों से रोटी ही खा रहे थे. मेरा और जवाहरलाल जी का चावल खाने को जी चाहा. आम तौर पर काश्मीरियों को चावल ज़्यादा पसन्द होता है. हमने दो चार बार गिरधारीलाल जी से चावल बनवाने की इच्छा ज़ाहिर की. वह मुसकराकर रह जाते और कहते "अजी चावल क्या खाओगे."

आख़िर बार बार कहने पर उन्होंने चावल पकाने को खाना बनाने वाले से कहा.

جلیانوالا باغ   جون سنہ ۴۸

... ادر کرتے ہوئے بھی ان کی ہمت نہیں پڑتی تھی کہ اُن کے
پاس بیان دینے یا اُن کے درشن کرنے آئیں۔
شام کو جب سورج ڈوب جاتا تب ان لوگوں کو گردھاری
لال جی چھپے طور پر اپنے ساتھ گھوڑا گاڑی پر لے آتے اور
پنڈت جی کے ساتھ کسی باغ میں سیر کرنے کے بہانے ان
رئیسوں کو لے جا کر وہاں ان کے بیان سنواتے۔
اور نہ معلوم کتنے غریب مختلف دیہاتوں کے جاٹوں کو
گردھاری لال جی نے بلوا کر بیان دلوائے تھے۔
جتنے دن ہم گردھاری لال جی کے یہاں رہے، وہ صبح
سے شام تک اپنے تانگے پر دکھائی دیتے۔ ان کی ہر گھڑی یہی
کوشش رہتی کہ موتی لال جی کی جانچ کمیٹی کی مدد کریں۔
گردھاری لال جی کا سوبھاؤ بڑا سرل تھا۔ بڑے پریم اور ہمدردی
سے بات چیت کرتے تھے۔ ہمارا ان کا رشتہ تھوڑے ہی دنوں کی
ملاقات میں بھائی بھائی کا سا ہو گیا تھا۔ کافی بے تکلفی ہو چکی تھی۔
پنجاب میں لوگ زیادہ تر کھانے میں روٹی یا چپاتی کا استعمال کرتے
ہیں۔ ہم بھی بہت دنوں سے روٹی ہی کھا رہے تھے۔ میرا اور
جواہر لال جی کا چاول کھانے کو جی چاہا۔ عام طور پر کشمیریوں کو
چاول زیادہ پسند ہوتا ہے۔ ہم نے دو چار بار گردھاری لال جی
سے چاول بنوانے کی اچھا ظاہر کی۔ وہ مسکرا کر رہ جاتے اور
کہتے "اجی چاول کیا کھاؤ گے۔"
آخر بار بار کہنے پر انہوں نے چاول پکانے کو کھانا
بنانے والے سے کہا۔

भोजन के वक़्त मैं और ग़ालिबन जवाहरलाल जी भी बड़े शौक़ से चावल की उम्मीद में बैठे. बहुत दिनों के बाद चावल से मुलाक़ात होने वाली थी. थाली सामने आई. उसमें तीन चार प्रकार के चावल की क़िस्में थीं, किसी में छोले मिले थे. कोई जीरा मिला कर बना था, एक में मीठा मिला था. सब घी के साथ पकाये गये थे.

मगर सादा चावल—जो हमारी असली ख़्वाहिश थी—वह ग़ायब था.

मुझे मायूसी हुई. मेरे ख़याल में जवाहर लाल जी के मन की भी यही दशा थी. जहाँ तक मुझे याद है हम दोनों ने गिरधारी लाल जी से कहा—"अरे भाई सादा चावल कहां है? वही तो हमको चाहिये."

उन्होंने जवाब दिया—"सादा चावल पंजाब में मरीज़ों को देते हैं. यह भी कोई खाने की चीज़ है."

इस पर हम सब ख़ूब हँसे. गिरधारीलाल जी ने बड़ी नेकनीयती से और हमारी ख़ातिर व इज़्ज़त के ख़याल से हमें सादा चावल खाने से महरूम रक्खा.

मगर दूसरे दिन उन्हें बनवाना ही पड़ा.

१७

एक अंगरेज़ी सिफ़त

पंजाब की जाँच कमेटी का काम ख़तम होगया. हम अपने, घर इलाहाबाद लौट आये. एक साल बाद मेरी शादी हुई.

بھوجن کے وقت میں اور غالباً جواہر لال جی بھی بڑے شوق سے چاول کی اُمید میں بیٹھے. بہت دنوں کے بعد چاول سے ملاقات ہونے والی تھی. تھالی سامنے آئی - اُس میں تین چار پرکار کے چاول کی قسمیں تھیں. کسی میں چھولے ملے تھے. کوئی زیرہ ملا کر بنا تھا، ایک میں میٹھا ملا تھا. سب گھی کے ساتھ پکائے گئے تھے.

مگر سادا چاول — جو ہماری اصلی خواہش تھی — وہ غائب تھا.

مجھے مایوسی ہوئی. میرے خیال میں جواہر لال جی کے من کی بھی یہی دشا تھی. جہاں تک مجھے یاد ہے ہم دونوں نے گردھاری لال جی سے کہا — "ارے بھائی سادا چاول کہاں ہے؟ وہی تو ہم کو چاہیے."

انھوں نے جواب دیا — "سادا چاول پنجاب میں مریضوں کو دیتے ہیں. یہ بھی کوئی کھانے کی چیز ہے."

اس پر ہم سب خوب ہنسے. گردھاری لال جی نے بڑی نیک نیتی سے اور ہماری خاطر و عزت کے خیال سے ہمیں سادا چاول کھانے سے محروم رکھا.

مگر دوسرے دن انھیں بنوانا ہی پڑا.

۱۷

ایک انگریزی صفت

پنجاب کی جانچ کمیٹی کا کام ختم ہوگیا. ہم اپنے گھر الہ آباد

शाम का वक़्त था. मैं दूल्हा बन रहा था. बरात रवाना होने को तैयार थी.

किसी ने मुझे सूचना दी, 'कोई साहब आपसे फ़ौरन मिलना चाहते हैं. एक मिनट का काम है."

मैं हैरान, कौन हैं और क्या काम है? वह भी ऐसे मौक़े पर.

मैं बाहर गया. देखा तो हमारे अमृतसर के मेहरबान मेज़-बान थे.

"लाला गिरधारीलाल जी.....आप कब आये?" मैंने उनका स्वागत किया.

बोले—"मैं जानता हूँ तुम नौशा बने हो बरात चलने वाली है मगर मैं भी अभी-अभी स्टेशन जा रहा हूँ. मेरी भी रेल छूटने वाली है."

मैंने उनसे बहुत इसरार किया कि हमारे मेहमान होकर बरात में शामिल हों, मगर उन्होंने माफ़ी माँगी और कहा—"अरे भाई मुझे अभी वापस लौटना जरूरी है. किसी जरूरी काम से आनन्द भवन आया था. मुझे तुमसे एक जरूरी बात कहनी थी. वह एन्ड्रयूज़ साहब का पैग़ाम है. उन्होंने मुझसे ताकीद की थी कि जब कभी रामजी से मिलोगे कह देना, एन्ड्रयूज़ साहब उस सुपरिन्टेण्डेण्ट पुलिस से मिले थे जिसने तुम्हें बन्दरभपकी दी थी. उसने एन्ड्रयूज़ साहब से तुम्हारा जिक्र करते हुये कहा—'मुझे एक बड़ा सच्चा, साफ़गो नौजवान मिला था. मुझे उसकी खरी और साफ़ बातचीत बहुत पसन्द आई.' एन्ड्रयूज़ साहब ने मुझसे कहा था कि उसका सर्टिफ़िकेट तुम्हारे बारे में तुम्हारे कान तक ज़रूर

شام کا وقت تھا۔ میں دولھا بن رہا تھا۔ برات روانہ ہونے کو تیار تھی

کسی نے مجھے سوچنا دی، "کوئی صاحب آپ سے فوراً ملنا چاہتے ہیں۔ ایک منٹ کا کام ہے۔"

میں حیران، کون ہیں اور کیا کام ہے؟ وہ بھی ایسے موقع پر۔

میں باہر گیا۔ دیکھا تو ہمارے امرتسر کے مہربان میزبان تھے۔

"لالہ گردھاری لال جی.... آپ کب آئے؟" میں نے ان کا سواگت کیا۔

بولے "میں جانتا ہوں تم نوشا بنے ہو برات چلنے والی ہے مگر میں بھی ابھی اسٹیشن جا رہا ہوں۔ میری بھی ریل چھوٹنے والی ہے"

میں نے ان سے بہت اصرار کیا کہ ہمارے مہمان ہو کر برات میں شامل ہوں، مگر انھوں نے معافی مانگی اور کہا "ارے بھائی مجھے ابھی واپس لوٹنا ضروری ہے۔ کسی ضروری کام سے آنند بھون آیا تھا۔ مجھے تم سے ایک ضروری بات کہنی تھی۔ وہ اینڈریوز صاحب کا پیغام ہے۔ انھوں نے مجھ سے تاکید کی تھی کہ جب کبھی رام جی سے ملوگے کہہ دینا، اینڈریوز صاحب اس سپرنٹنڈنٹ پولیس سے ملے تھے جس نے تمھیں بندر بھبکی دی تھی۔ اس نے اینڈریوز صاحب سے تمھارا ذکر کرتے ہوئے کہا — مجھے ایک بڑا سچا، صاف گو نوجوان ملا تھا۔ مجھے اس کی کھری اور صاف بات چیت بہت پسند آئی۔' اینڈریوز صاحب نے مجھ سے کہا تھا کہ اس کا سرٹیفکیٹ تمھارے بارے میں تمھارے کان تک ضرور

पहुँचा हूँ. बस यही कहने आया था."

"शुक्रिया उनका" मैंने हँसकर कहा—"अँगरेज की यह खासियत है. पहले रोब में लाना चाहता है. टक्कर खाकर क़दर करता है."

× × × ×

गिरधारीलाल जी से आख़री मुलाक़ात

कई बरसों बाद एक बार श्री गिरधारीलाल जी के अचानक शहर की स्वदेशी नुमायश में दर्शन हुये थे. वह मेरे सामने आकर खड़े हो गये और मुसकराते हुये झुक कर उन्होंने बन्दगी की.

मैंने बड़े ग़ौर से उन्हें देखा मगर न पहचाना.

कहां एक ज़माने में वह ख़ासे तन्दुरुस्त और मोटे ताज़े थे और अब हड्डियों का ढाँचा.

आख़िर मुझे पूछना पड़ा—"आप अपनी तारीफ़ कीजिये. मैंने आप को नहीं पहचाना."

"मैं गिरधारी लाल हूँ." उन्होंने मुसकराते हुये बड़े प्रेम से कहा.

मुझे उनके शरीर की यह दशा देखकर बड़ा दुख हुआ.

कहने लगे "मैं मरते मरते बचा हूँ. मेरा मेदा बिलकुल जवाब दे गया है."

इसके बाद फिर उनसे मिलना नहीं हुआ. मगर याद उनकी अक्सर आया करती है.

چکا ہوں، بس یہی کہنے آیا تھا۔"

"شکریہ ان کا" میں نے ہنس کر کہا — "انگریز کی یہ خاصیت ہے۔ پہلے رعب میں لانا چاہتا ہے۔ ٹکر کھا کر قدر کرتا ہے۔"

× × × ×

گردھاری لال جی سے آخری ملاقات

کئی برسوں بعد ایک بار شری گردھاری لال جی کے اچانک شہر کی سودیشی نمائش میں درشن ہوئے تھے۔ وہ میرے سامنے آ کر کھڑے ہو گئے اور مسکراتے ہوئے جھک کر انھوں نے بندگی کی۔

میں نے بڑے غور سے انھیں دیکھا مگر نہ پہچانا۔

کہاں ایک زمانے میں وہ خاصے تندرست اور موٹے تازے تھے اور اب ہڈیوں کا ڈھانچا۔

آخر مجھے پوچھنا پڑا — "آپ اپنی تعریف کیجیے۔ میں نے آپ کو نہیں پہچانا۔"

"میں گردھاری لال ہوں۔" انھوں نے مسکراتے ہوئے بڑے پریم سے کہا۔

مجھے ان کے شریر کی یہ دشا دیکھ کر بڑا دکھ ہوا۔

کہنے لگے "میں مرتے مرتے بچا ہوں۔ میرا معدہ بالکل جواب دے گیا ہے۔"

اس کے بعد پھر ان سے ملنا نہیں ہوا۔ مگر یاد ان کی

इस्लाम और मूर्ति-पूजा

(पंडित सुन्दरलाल जी)

अिस्लाम सिर्फ अेक निराकार अीश्वर का मानने वाला और मूर्ति-पूजा के खिलाफ है. अरब में और अुसके आसपास लोगोंकी जो हालत थी, अुसमें मुहम्मद साहब ने देख लिया कि लोगोंकी आपसी फूट, अुनकी गिरावट और अुनके दुखों का सबसे बड़ा कारण अुनका सैकड़ों देवी-देवताओं को पूजना और अुनकी तरह तरह की अंधी मान्यताओं और ग़लत रीत-रिवाज थे. अुन्होंने सारी अुमर अिन बुराअियों के खिलाफ प्रचार किया और अपने अपने अलग अलग देवी-देवताओं को छोड़कर सब को अेक निराकार अल्लाहकी अिबादत करनेका अुपदेश दिया.

दुनियाके मज़हबी अितिहास में यह कोअी नअी बात नहीं थी. हाल ही में हिन्दुस्तान के अन्दर कबीर साहब और गुरु नानक, राजा राममोहन राय और स्वामी दयानन्द ने खुले और कभी कभी कड़े शब्दों में हर तरह की मूर्ति-पूजा के खिलाफ अुपदेश दिया है. गुरु गोविन्दसिंह ने औरंगज़ेब के नाम अपने मशहूर फ़ारसी खत में अुचित अभिमान के साथ अपने को 'बुतशिकन' बताया है. खासकर पन्द्रहवीं सदी के बादसे देश भर में सैकड़ों सन्त-महात्माओंने मूर्ति-पूजा के खिलाफ अिस तरह का अुपदेश दिया है.

पर कुछ गरम-मिज़ाज और कट्टर मुसलमान बादशाहों की करतूतों की वजहसे, बहुतसे लोगोंकी निगाहमें, अिस्लामका नाम अेक बहुत ज़िद्द की और बेजा बुतशिकनी के साथ जुड़ गया है.

اسلام اور مورتی پوجا

(پنڈت سندرلال جی)

اسلام صرف ایک نراکار ایشور کا ماننے والا اور مورتی پوجا کے خلاف ہے. عرب میں اور اس کے آس پاس لوگوں کی جو حالت تھی، اس میں محمد صاحب نے دیکھ لیا کہ لوگوں کی آپسی پھوٹ، ان کی گراوٹ اور ان کے دکھوں کا سب سے بڑا کارن ان کا سیکڑوں دیوی دیوتاؤں کو پوجنا اور ان کی طرح طرح کی اندھی ماننائیں اور غلط ریت رواج تھے. انھوں نے ساری عمر ان برائیوں کے خلاف پرچار کیا اور اپنے اپنے الگ الگ دیوی دیوتاؤں کو چھوڑ کر سب کو ایک نراکار اللہ کی عبادت کرنے کا اپدیش دیا.

دنیا کے مذہبی اتہاس میں یہ کوئی نئی بات نہیں تھی. حال ہی میں ہندستان کے اندر کبیر صاحب اور گرو نانک، راجا رام موہن رائے اور سوامی دیانند نے کھلے اور کبھی کبھی کڑے شبدوں میں ہر طرح کی مورتی پوجا کے خلاف اپدیش دیا ہے. گرو گوبند سنگھ نے اورنگ زیب کے نام اپنے مشہور فارسی خط میں اچت ابھیمان کے ساتھ اپنے کو 'بت شکن' بتایا ہے. خاص کر پندرھویں صدی کے بعد سے دیش بھر میں سیکڑوں سنت مہاتماؤں نے مورتی پوجا کے خلاف اس طرح کا اپدیش دیا ہے.

پر کچھ گرم مزاج اور کٹر مسلمان بادشاہوں کی کرتوتوں کی وجہ سے، بہت سے لوگوں کی نگاہوں میں، اسلام کا نام ایک غلط قسم کی اور بیجا بت شکنی کے ساتھ جڑ گیا ہے.

बदकिस्मती से बहुतसे पढ़े-लिखे मुसलमान भी अैसे हैं, जो अपने अुन बादशाहों की अैसी करतूतोंकी तारीफ़ें करते हैं और अुनपर फ़ख करते हैं. अिसलिये हम जरा यह देखना चाहते हैं कि अिस बारेमें कुरानकी क्या आज्ञा है और खुद मुहम्मद साहबने हमारे सामने क्या मिसाल रखी है .

कुरानका साफ़ हुक्म है—"अेक अल्लाहके सिवा जिन्हें (जिन देवी-देवताओं या बुतोंको) दूसरे लोग पूजते हैं, अुन्हें बुरा न कहो (६–१०७)." अिसलिये किसी अैसी मूर्तिको तोड़ना या अुसकी तौहीन करना, जिसे कोअी पूजता है, कुरानके हुक्मके खिलाफ़ है.

मुहम्मद साहब की पैदायशके वक़्त यमनका सूबा अबीसीनियाके अीसाअी बादशाहके मातहत था. वहाँके अीसाअी गवर्नरने काबेके मन्दिर पर हमला करके अुसे गिरा देना चाहा . काबे में अुस समय ३६० मूर्तियाँ थीं. मक्के और आसपास के लोग अुनकी पूजा करते थे. कुरान में गवर्नरके अिस कामका जिक्र आया है, और जो आफ़त हमला करने वालों पर आअी, अुसे 'अल्लाह की भेजी हुअी' बताया गया है .

अब हम यह देखें कि अिस बारे में मुहम्मद साहब ने हमारे सामने क्या मिसाल रखी है . पैग़म्बर होने के पहले १३ साल तक, मुहम्मद साहब, जहाँ तक हो सकता था, काबे ही के अन्दर नमाज पढ़ते थे . यही सलाह वह अपने साथियों को देते थे. पर कभी अेक बार भी अुन्होंने अिमारतके अन्दरकेकिसी बुतकी तौहीन नहीं की और न अपने किसी चेले को करने दी. जब कभी अुन्होंने काबेका जिक्र किया, अिज्जतके साथ किया, और जब जब लोगोंको बुतोंकी

قسمتی سے بہت سے پڑھے لکھے مسلمان بھی ایسے ہیں جو اپنے ان بادشاہوں کی ایسی کرتوتوں کی تعریفیں کرتے ہیں اور ان پر فخر کرتے ہیں۔ اس لئے ہم ذرا یہ دیکھنا چاہتے ہیں کہ اس بارے میں قرآن کا کیا حکم ہے اور خود محمد صاحب نے ہمارے سامنے کیا مثال رکھی ہے۔

قرآن کا صاف حکم ہے "ایک اللہ کے سوا جنھیں (جن دیوی دیوتاؤں یا بتوں کو) دوسرے لوگ پوجتے ہیں، انھیں برا نہ کہو (۶-۱۰۷)۔" اس لئے کسی ایسی مورتی کو توڑنا یا اس کی توہین کرنا جسے کوئی پوجتا ہے، قرآن کے حکم کے خلاف ہے۔

محمد صاحب کی پیدائش کے وقت یمن کا صوبہ ابی سینیا کے عیسائی بادشاہ کے ماتحت تھا۔ وہاں کے عیسائی گورنر نے کعبہ کے مندر پر حملہ کر کے اسے گرا دینا چاہا۔ کعبے میں اس سمے ۳۶۰ مورتیاں تھیں۔ مکے اور اس پاس کے لوگ ان کی پوجا کرتے تھے۔ قرآن میں گورنر کے اس کام کا ذکر آیا ہے، اور جو آفت حملہ کرنے والوں پر آئی، اسے 'اللہ کی بھیجی ہوئی' بتایا گیا ہے۔

اب ہم یہ دیکھیں کہ اس بارے میں محمد صاحب نے ہمارے سامنے کیا مثال رکھی ہے۔ پیغمبر ہونے کے پہلے ۱۳ سال تک، محمد صاحب، جہاں تک ہو سکتا تھا، کعبے ہی کے اندر نماز پڑھتے تھے۔ یہی صلاح وہ اپنے ساتھیوں کو دیتے تھے۔ پر کبھی ایک بار بھی انھوں نے عمارت کے اندر کے کسی بت کی توہین نہیں کی اور نہ اپنے کسی پیرو کو کرنے دی۔ جب کبھی انھوں نے کعبے کا ذکر کیا، عزت کے ساتھ کیا، اور جب جب لوگوں کو بتوں کی

पूजा से हटाने की कोशिश की, तो क़ुरानकी आज्ञा के अनुसार, बहुत ही मीठे शब्दोंमें की.

मदीने चले जानेके छह साल के बाद मुहम्मद साहबने फिर १८०० मुसलमानोंको लेकर मक्केकी यात्रा की. हज्ज का महीना था. मुहम्मद साहब और अुनके सब साथी 'अेहराम' बाँधे हुअे थे, जो हज्जके खास कपड़े होते हैं. हज्जके दिनों में हथियार बाँधना मना है. मुहम्मद साहब और अुनके सब साथी निहत्थे थे. अुन्होंने अपने और अपने साथियोंके लिअे काबेकी ज़ियारत करनेकी अिजाज़त चाही. अुन्हें हक़ था. क़ुरैशसे बातचीत हुअी. यह समझौता हो गया कि मुसलमान अिस साल लौट जावें और फिर अगले साल हज्जके दिनोंमें आकर तीन दिन तक मक्केमें ठहर सकें. अगले साल मुहम्मद साहब दो हज़ार मुसलमानोंको लेकर फिर आये. तीन दिन तक मुहम्मद साहब और अुनके साथियोंने मक्केमे रहकर हज्जकी सब रस्में अदा कीं. अुन्होंने काबेके चारों तरफ़ सात चक्कर लगाये. ३६० के ३६० बुत काबेके अन्दर मौजूद थे. मुसलमानोंने काबेका तवाफ़ (परिक्रमा) तो कर लिया. काबेके बुत अन्दर थे और बाहरसे दिखाअी नहीं देते थे. पर जब सफ़ा और मरवाकी पाक पहाड़ियोंकी रस्में अदा करनेका वक़्त आया, तो मुसलमान झिझके. अिन दोनों पहाड़ियोंके अूपरकी मूर्तियाँ खुली थीं और सामने दिखाअी देती थीं. तुरन्त क़ुरानमें अेक नअी आयत नाज़िल हुअी—"जो लोग सफ़ा और मरवाका तवाफ़ करें, अुनपर कोअी अिलज़ाम नहीं है, क्योंकि ये भी अल्लाह की निशानियों में से हैं."

پوجا سے ہٹانے کی کوشش کی، تو قرآن کی آگیا کے انوسار بہت ہی میٹھے شبدوں میں کی۔

مدینے چلے جانے کے چھ سال کے بعد محمد صاحب نے پھر ۱۸۰۰ مسلمانوں کو لے کر مکے کی یاترا کی۔ حج کا مہینہ تھا۔ محمد صاحب اور ان کے سب ساتھی 'احرام' باندھے ہوئے تھے، جو حج کے خاص کپڑے ہوتے ہیں۔ حج کے دنوں میں ہتھیار باندھنا منع ہے۔ محمد صاحب اور ان کے سب ساتھی نہتے تھے۔ انھوں نے اپنے اور اپنے ساتھیوں کے لئے کعبے کی زیارت کرنے کی اجازت چاہی۔ انھیں حق تھا۔ قریش سے بات چیت ہوئی۔ یہ سمجھوتا ہو گیا کہ مسلمان اس سال لوٹ جاویں اور پھر اگلے سال حج کے دنوں میں آ کر تین دن تک مکے میں ٹھہر سکیں۔ اگلے سال محمد صاحب دو ہزار مسلمانوں کو لے کر پھر آئے۔ تین دن تک محمد صاحب اور ان کے ساتھیوں نے مکے میں رہ کر حج کی سب رسمیں ادا کیں۔ انھوں نے کعبے کے چاروں طرف سات چکر لگائے۔ ۳۶۰ کے ۳۶۰ بت کعبے کے اندر موجود تھے۔ مسلمانوں نے کعبے کا طواف (پرکرما) تو کر لیا۔ کعبے کے بت اندر تھے اور باہر سے دکھائی نہیں دیتے تھے۔ پر جب صفا اور مروا کی پاک پہاڑیوں کی رسمیں ادا کرنے کا وقت آیا، تو مسلمان جھجکے۔ ان دونوں پہاڑیوں کے اوپر کی مورتیاں کھلی تھیں اور سامنے دکھائی دیتی تھیں۔ فوراً قرآن میں ایک نئی آیت نازل ہوئی— "جو لوگ صفا اور مروا کا طواف کریں، ان پر کوئی الزام نہیں ہے، کیونکہ یہ بھی اللہ کی نشانیوں میں سے ہیں۔"

मुसलमानों के मक्के में घुसने से पहले मुहम्मद साहब ने अुन्हें हिदायत कर दी थी कि कोअी काम अैसा न करना, न कोअी बात अैसी कहना, जिससे किसी पुराने खयालवाले का दिल दुखे (बुखारी). अिस हिदायत पर पूरा अमल किया गया. यही गज़ब की रवादारी थी, दूसरों का दिल न दुखे, अिसका अूंचा खयाल था, जिसे देख अगले चन्द बरसों के अन्दर ही सारा मक्का मुसलमान हो गया.

अगली बार जब मुहम्मद साहब फिर मक्का आये, तो काबे की ३६० मूर्तियों में से अेक अेक मूर्ति, मुहम्मद साहब की आज्ञा से, अपनी जगह से हटाकर अलग कर दी गअी. पर यह आज्ञा तब दी गअी, जब सारा मक्का मुसलमान हो चुका था, जब शायद अरब भर में अेक भी आदमी अुन मूर्तियों का पूजनेवाला न रह गया था!

बनुदौस क़बीले के लोग पहले अेक 'लकड़ी के लट्ठे' की पूजा किया करते थे. तुफ़ैल अुनके सरदार का नाम था. तुफ़ैल को अुस लकड़ी के लट्ठे को जला देने की अिजाज़त तब दी गअी, जब सारा क़बीला मुसलमान हो चुका था और कोअी अब अुस लट्ठे को पूजनेवाला न था.

अयाश को यमन के तीन बड़े बड़े क़बीलों में अिस्लाम के प्रचार के लिअे भेजा गया. चलते वक़्त मुहम्मद साहब ने अुसे हिदायत की कि जिन तीन लकड़ियों के सामने वहाँ के लोग दुआअें माँगते हैं, जब अुनमें से कोअी अुन लकड़ियों का पूजने वाला न रह जाय और सब 'अेक निराकार अल्लाह' की पूजा करने लगें, तब

مسلمانوں کے مکے میں گھسنے سے پہلے محمد صاحب نے انہیں ہدایت کر دی تھی کہ کوئی کام ایسا نہ کرنا، نہ کوئی بات ایسی کہنا، جس سے کسی پرانے خیال والے کا دل دکھے (بخاری)۔ اس ہدایت پر پورا عمل کیا گیا۔ یہی غضب کی رواداری تھی، دوسروں کا دل نہ دکھے، اس کا اونچا خیال تھا، جسے دیکھ اگلے چند برسوں کے اندر ہی سارا مکہ مسلمان ہو گیا۔

اگلی بار جب محمد صاحب پھر مکے آئے، تو کعبے کی ۳۶۰ مورتیوں میں سے ایک ایک مورتی، محمد صاحب کی آگیا سے اپنی جگہ سے ہٹا کر الگ کر دی گئی۔ پر یہ آگیا تب دی گئی، جب سارا مکہ مسلمان ہو چکا تھا، جب شاید عرب بھر میں ایک بھی آدمی ان مورتیوں کا پوجنے والا نہ رہ گیا تھا۔

بنودوس قبیلے کے لوگ پہلے ایک لکڑی کے لٹھے کی پوجا کیا کرتے تھے۔ طفیل ان کے سردار کا نام تھا۔ طفیل کو اس لکڑی کے لٹھے کو جلا دینے کی اجازت تب دی گئی، جب سارا قبیلہ مسلمان ہو چکا تھا اور کوئی اب اس لٹھے کو پوجنے والا نہ تھا۔

عائشہ کو یمن کے تین بڑے بڑے قبیلوں میں اسلام کے پرچار کے لئے بھیجا گیا۔ چلتے وقت محمد صاحب نے اسے ہدایت کی کہ جن لکڑیوں کے سامنے وہاں کے لوگ دعائیں مانگتے ہیں، جب ان میں سے کوئی ان لکڑیوں کا پوجنے والا

अुन लकड़ियों को लेकर जला देना.

और भी मिसालें दी जा सकती हैं. अिस्लाम के अन्दर लकड़ी-पत्थर की किसी भी मूर्ति को नष्ट करने की अिजाज़त सिर्फ़ अुस सूरत में है, जब कि कोअी अुसका पूजने वाला न रह गया हो, और फिर भी पुराने पूजने वालों की रज़ामन्दी से ही अैसा किया जा सकता है.

अरब के हाकिम की हैसियत से मुहम्मद साहब ने बार बार मुसलमानों का यह फ़र्ज़ बताया है कि जिन दूसरे मज़हब वालों की मदीना सरकार के साथ किसी तरह की सुलह हो गअी थी, अुनके पूजा घरों की हिफ़ाज़त करें. अुनमें से कअी पूजाघर मूर्तियों से भरे हुअे थे और लोग अुन मूर्तियों की पूजा करते थे.

हम फिर दोहराते हैं. अिस्लाम सिर्फ़ अेक निराकार अीश्वर को मानता है. वह दूसरे बहुत से हिन्दुस्तानी और ग़ैर-हिन्दुस्तानी मज़हबों की तरह मूर्ति-पूजा के ख़िलाफ़ है. लेकिन किसी भी पुराने ज़माने के मग़रूर बादशाह का या आज कल के बहके हुअे गरम मिज़ाज-वाले का, किसी अैसी मूर्ति को तोड़ना या अुसकी तौहीन करना, जिसे कोअी दूसरा पूजता हो, .कुरान के हुक्म और मुहम्मद साहब के अमल के ख़िलाफ़ है, और अुस महान धर्म के अूपर अेक कलंक है.

यह है रवादारी की वह तालीम जो अिस्लाम की रूह को ज़ाहिर करती है. अब अगर सूफ़ियों की तरफ़ देखें तो वे अिससे भी आगे गये हैं.

जो आज़ाद ख़याल सूफ़ी वहदत-अुल-वजूद (अद्वैतवाद)

ان لکڑیوں کو لے کر جلا دینا۔

اور بھی مثالیں دی جا سکتی ہیں۔ اسلام کے اندر لکڑی پتھر کی کسی بھی مورتی کو نشٹ کرنے کی اجازت صرف اس صورت میں ہے، جب کہ کوئی اس کا پوجنے والا نہ رہ گیا ہو، اور پھر بھی پرانے پوجنے والوں کی رضامندی سے ہی ایسا کیا جا سکتا ہے۔

عرب کے حاکم کی حیثیت سے محمد صاحب نے بار بار مسلمانوں کا یہ فرض بتایا ہے کہ جن دوسرے مذہب والوں کی مدینہ سرکار کے ساتھ کسی طرح کی صلح ہو گئی تھی، ان کے پوجا گھروں کی حفاظت کریں۔ ان میں سے کئی پوجا گھر مورتیوں سے بھرے ہوئے تھے اور لوگ ان مورتیوں کی پوجا کرتے تھے۔

ہم پھر دہراتے ہیں۔ اسلام صرف ایک نراکار ایشور کو مانتا ہے۔ وہ دوسرے بہت سے ہندستانی اور غیر ہندستانی مذہبوں کی طرح مورتی پوجا کے خلاف ہے۔ لیکن کسی بھی پرانے زمانے کے مغرور بادشاہ کا یا آج کل کے بہکے ہوئے گرم مزاج والے کا، کسی ایسی مورتی کو توڑنا یا اس کی توہین کرنا جسے کوئی دوسرا پوجتا ہو، قرآن کے حکم اور محمد صاحب کے عمل کے خلاف ہے، اور اس مہان دھرم کے اوپر ایک کلنک ہے۔

یہ ہے رواداری کی وہ تعلیم جو اسلام کی روح کو ظاہر کرتی ہے۔ اب اگر صوفیوں کی طرف دیکھیں تو وے اس سے بھی آگے گئے ہیں۔

جو آزاد خیال صوفی وحدت الوجود (ادویت واد)

को मानते हैं, वे भी अपना यह अुसूल कुरान ही से साबित करते हैं. कुरान और मुहम्मद साहब की हदीसों, दोनों में अिस तरह की चीजें मौजूद हैं, जिनके ये मानी किये जा सकें. मूर्ति-पूजा की तरफ अिसलाम की अिस बुनियादी अुदारता को लेकर ही प्रेम और भक्ति में डूबे हुअे अिन सूफ़ियों ने मूर्ति-पूजा के बारे में बहुत सी अैसी बातें भी कही हैं, जो बहुत से पक्के मुसलमानों को पसन्द नहीं आ सकतीं. मिसाल के लिअे शेख मुहिबुल्ला अिलाहाबादी की आम मुसलमानों में बड़ी अिज्जत है. दाराने शेख मुहिबुल्ला से पूछा कि 'ला अिलाह अिल्लल्लाह' का ठीक ठीक मतलब क्या है ? शेख मुहिबुल्लाने जवाब दिया— 'अिसका मतलब यह है कि कोअी माबूद (अिष्टदेव) नहीं सिवा अल्लाह के, यानी दुनिया के सब अिष्टदेव अल्लाह ही हैं.' दाराने फिर पूछा कि 'क्या अिस्लाम से पहले के अरब की तीन मशहूर देवियाँ लात, अुजा और मनात भी अल्लाह हैं ?' शेख मुहिबुल्ला ने जवाब दिया—'हाँ, हैं.' अिसके बाद अुन्होंने समझाया कि सारा सवाल नियत और निगाह का है.

अिसी तरह सूफ़ी खयाल की मशहूर किताब 'मशाहदे नाज़' के, जिसे 'गुलशने राज़' भी कहते हैं, विद्वान और पहुँचे हुअे लेखक से जब पूछा गया कि 'बुत' क्या चीज है, और जनेअू क्या चीज है, तो अुन्होंने जवाब दिया—

"बुत अल्लाह की 'वहदत' (अेकता) और 'अिश्क़' का 'मज़हर' (प्रतीक या निशानी) है,

"जनेअू बाँधना भगवान की सेवा करने के लिअे कमर कसना है.

کو مانتے ہیں، وے بھی اپنا یہ اصول قرآن ہی سے ثابت کرتے ہیں۔ قرآن اور محمد صاحب کی حدیثوں، دونوں میں اس طرح کی چیزیں موجود ہیں، جن کے یے معنی کئے جا سکیں۔ مورتی پوجا کی طرف اسلام کی اس بنیادی اُدارتا کو لے کر ہی پریم اور بھکتی میں ڈوبے ہوئے ان صوفیوں نے مورتی پوجا کے بارے میں بہت سی ایسی باتیں بھی کہی ہیں، جو بہت سے پکّے مسلمانوں کو پسند نہیں آ سکتیں۔ مثال کے لئے شیخ محب اللہ الٰہ آبادی کی عام مسلمانوں میں بڑی عزت ہے۔ دارا نے شیخ محب اللہ سے پوچھا کہ 'لا الٰہ الا اللہ' کا ٹھیک ٹھیک مطلب کیا ہے؟ شیخ محب اللہ نے جواب دیا: "اس کا مطلب یہ ہے کہ کوئی معبود (اشٹ دیو) نہیں سوا اللہ کے، یعنی دنیا کے سب اشٹ دیو اللہ ہی ہیں۔" دارا نے پھر پوچھا کہ "کیا اسلام سے پہلے کے عرب کی تین مشہور دیویاں لات، عزّیٰ اور منات بھی اللہ ہیں؟" شیخ محب اللہ نے جواب دیا— "ہاں، ہیں۔" اس کے بعد انھوں نے سمجھایا کہ سارا سوال نیت اور نگاہ کا ہے۔

اسی طرح صوفی خیال کی مشہور کتاب 'مشاہدِ ناز' کے، جسے 'گلشنِ راز' بھی کہتے ہیں، ودوان اور پہنچے ہوئے لیکھک سے جب پوچھا گیا کہ 'بت' کیا چیز ہے، اور جنیو کیا چیز ہے، تو انھوں نے جواب دیا—

"بت اللہ کی 'وحدت' (ایکتا) اور 'عشق' کا 'مظہر' (پرتیک یا نشانی) ہے،

"جنیو باندھنا بھگوان کی سیوا کرنے کے لئے کمر کسنا ہے۔

"जब कि दुनिया की सब चीज़ें अुसी पाक 'हस्ती' (अस्तित्व) की निशानियाँ हैं,

"तो बुत भी आख़िरकार अुन्हीं चीज़ों में से अेक है.

"अिस्लाम की शरअ में बुत के पूजने वाले को 'काफ़िर' अिसलिअे कहा गया क्योंकि

"अुसने बुत में सिवाय अूपरी सूरत के और कुछ न देखा.

"तू भी अगर बुत के अन्दर छिपे हुअे 'हक़' (सत्य) रूप भगवान को जल्दी से नहीं देखेगा,

"तो तू भी 'मुसलमान' कहलाने का हक़दार न होगा."

('हरिजन सेवक' से)

'हिन्दू मुस्लिम एकता'

पंडित सुन्दरलाल के

चार लैकचर जो उन्होंने सेन्ट्रल कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये.

सौ सफ़े की किताब की क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

किताब नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में मिल सकती है

—मैनेजर "नया हिन्द"

४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

"جب کہ دنیا کی سب چیزیں اسی پاک 'ہستی' (استیتو) کی نشانیاں ہیں.

"تو بت بھی آخرکار انھیں چیزوں میں سے ایک ہیں.

"اسلام کی شرع میں بت کے پوجنے والے کو 'کافر' اسی لئے کہا گیا کیونکہ

"اس نے بت میں سوائے اوپری صورت کے اور کچھ نہ دیکھا.

"تو بھی اگر بت کے اندر چھپے ہوئے 'حق' (ستیہ) روپ بھگوان کو جلدی سے نہیں دیکھے گا،

"تو تو بھی 'مسلمان' کہلانے کا حق دار نہ ہوگا."

('ہریجن سیوک' سے)

"ہندو مسلم ایکتا"

پنڈت سندرلال کے

چار لیکچر جو انھوں نے سنٹرل کنسیلیٹری بورڈ گوالیر کی دعوت پر گوالیر میں دیئے.

سو صفحے کی کتاب کی قیمت صرف بارہ آنے. کتاب ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے.

—منیجر "نیا ہند"

۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد

बापू के नाम पर

(भाई मधुकर खेर)

अब गांधी जी को हमसे बिछुड़े काफी समय हो गया पर अब भी उनकी बातें चलने पर हमें उनकी याद आ जाती है और हम अपने में कुछ कमी महसूस करते हैं. एकाएक यह विश्वास नही होता कि हमारे ही बीच के एक आदमी ने उनपर गोलियाँ चलाई थीं. इसके साथ ही राष्ट्रकवि के उद्‌गार—

"अरे राम. कैसे हम झेलें अपनी लज्जा उसका शोक.
गया हमारे ही पापों से अपना राष्ट्रपिता परलोक ॥"

हमारे कानों में गूजते हैं और हम पछताते और शर्मिन्दगी से भर जाते हैं. यह लाइनें अभी हमें ठोकर मारती ही रहती हैं कि सुकुमार कवि 'नजीर' की फ़रियाद हमारे कानों में टकराती है—

"मेरे गाँधी जमीं वालों ने तेरी क़द्र जब कमकी
उठा कर ले गये तुझको जमीं से आसमाँ वाले."

यह लाइने हमे चेतावनी देने के लिये काफ़ी हैं. खुद हमारी आत्मा हमसे कहती है कि हमने अपनी बेवक़ूफ़ी से अपना राष्ट्र पिता गँवा दिया. पर यह ठोकर हमें चेतावनी देती है कि हमें संभल कर चलना पड़ेगा नहीं तो हमारा राष्ट्र भी मिट जायगा. अपने देश की कुचली और पिछड़ी हुई आत्मा को अपने कुचले पिछड़े हुये राष्ट्र के बापू के नाम पर जिन्दा रखना पड़ेगा. आज देश की रचना बापू के असूलों की ही बुनियाद पर होनी चाहिये. हमारे मुल्क पर जो कलंक लग गया है वह तो कभी मिट

باپو کے نام پر

(بھائی مدھوکر کھیر)

اب گاندھی جی کو ہم سے بچھڑے کافی سے ہوگیا پر اب بھی ان کی باتیں چلنے پر ہمیں ان کی یاد آجاتی ہے اور ہم اپنے میں کچھ کمی محسوس کرتے ہیں. یکایک یہ وشواس نہیں ہوتا کہ ہمارے ہی بیچ کے ایک آدمی نے ان پر گولیاں چلائیں تھیں. اس کے ساتھ ہی راشٹر کوی کے ادگار—

"ارے رام. کیسے ہم جھیلیں اپنی لجا اس کا شوک.
گیا ہمارے ہی پاپوں سے اپنا راشٹر پتا پرلوک."

ہمارے کانوں میں گونجتے ہیں اور ہم پچھتاتے اور شرمندگی سے بھر جاتے ہیں. یہ لائنیں ابھی ہمیں ٹھوکر مارتی ہی رہتی ہیں کہ سوکمار کوی 'نظیر' کی فریاد ہمارے کانوں میں ٹکراتی ہے—

"میرے گاندھی زمیں والوں نے تیری قدر جب کم کی
اٹھا کر لے گئے تجھ کو زمیں سے آسماں والے."

یہ لائنیں ہمیں چیتاونی دینے کے لئے کافی ہیں. خود ہماری آتما ہم سے کہتی ہے کہ ہم نے اپنی بے وقوفی سے اپنا راشٹر پتا گنوا دیا. پر یہ ٹھوکر ہمیں چیتاونی دیتی ہے کہ ہمیں سنبھل کر چلنا پڑے گا نہیں تو ہمارا راشٹر بھی مٹ جائے گا. اپنے دیش کی کچلی اور پچھڑی ہوئی آتما کو اپنے کچلے پچھڑے ہوئے راشٹر کے باپو کے نام پر زندہ رکھنا پڑے گا. آج دیش کی رچنا باپو کے اصولوں کی ہی بنیاد پر ہونی چاہئے. ہمارے ملک پر جو کلنک لگ گیا ہے وہ تو کبھی مٹ

ही नहीं सकता; हमारा पछतावा भी कम नहीं हो सकता; लेकिन अगर हम हिन्दुस्तान को बापू के असूलों के अनुसार बनायें, अगर बापू का सब स्वप्न पूरा कर दें तो हम किसी हद तक अपना वह फ़र्ज़ पूरा कर देंगे जो बापू की तरफ़ से हमारे ज़िम्मे है.

बापू ने हिन्दुस्तान को बहुत कुछ दिया .लेकिन देश ने उन्हें कुछ भी नहीं दिया. बापू इन्सान थे इसलिये कभी न कभी उन्हें मौत जरूर आती लेकिन उनकी इस बेरहमी और बेदर्दी के साथ हत्या ने हमारे देश के हर एक रहने वाले की इन्सानियत का चुनौती दी है. बापू के हत्यारे के रूप में हमने एक हिन्दुस्तानी आत्मा का गिरना देखा और यह गिरावट इतनी बड़ी है कि हम हत्यारे को इन्सान कहने के लिये तैयार नहीं हैं. यह बेरहमी भरी हत्या हमें यह बताती है कि हिन्दुस्तान में मारकाट की ज़हनियत कितनी ज़्यादा तरक़्क़ी कर गई है.इस हिंसा और नफ़रत की हवा ने हमसे हमारा बापू छीन लिया लेकिन हम इतने अभागे हैं कि अभी भी हममें यह भावनायें या जज़्बात मौजूद हैं. प्रेम, शाँन्ति और माफ़ी यह तीन बापू के ख़ास गुन थे. इन्हीं गुनों के कारण हम बापू को ईसा और बुद्ध का दर्जा देते हैं. हमें बापू का आदर्श अपने सामने रखना चाहिये, जिनकी आत्मा अब भी अपने हत्यारे के लिये यही कह रही है कि भगवान् तेरा भला करे. हमने एक हिन्दुस्तानी को तरक़्क़ी की सबसे ऊँची चोटी तक पहुँचते देखा और इसके साथ ही हमने एक हिन्दुस्तानी को गिरते हुये भी देखा. अगरचे बापू की सहनशीलता और रवादारी [illegible] नहीं बल्कि नामुमकिन सा है, फिर भी

ہی نہیں سکتا؛ ہمارا پچھتاوا بھی کم نہیں ہو سکتا؛ لیکن اگر ہم ہندستان کو باپو کے اصولوں کے انوسار بنائیں، اگر باپو کا سب سپنا پورا کر دیں تو ہم کسی حد تک اپنا وہ فرض پورا کر دیں گے جو باپو کی طرف سے ہمارے ذمے ہے۔

باپو نے ہندستان کو بہت کچھ دیا لیکن دیش نے انھیں کچھ بھی نہیں دیا۔ باپو انسان تھے اس لئے کبھی نہ کبھی انھیں موت ضرور آتی لیکن ان کی اس بیرحمی اور بے دردی کے ساتھ ہتیا نے ہمارے دیش کے ہر ایک رہنے والے کی انسانیت کو چنوتی دی ہے۔ باپو کے ہتیارے کے روپ میں ہم نے ایک ہندستانی آتما کا گرنا دیکھا اور یہ گراوٹ اتنی بڑی ہے کہ ہم ہتیارے کو انسان کہنے کے لئے تیار نہیں ہیں۔ یہ بے رحمی بھری ہتیا ہمیں یہ بتاتی ہے کہ ہندستان میں مارکاٹ کی ذہنیت کتنی زیادہ ترقی کر گئی ہے۔ اس ہنسا اور نفرت کی ہوا نے ہم سے ہمارا باپو چھین لیا لیکن ہم اتنے ابھاگے ہیں کہ ابھی بھی ہم میں یہ بھاونائیں یا جذبات موجود ہیں۔ پریم، شانتی اور معافی یہ تین باپو کے خاص گن تھے۔ انھیں گنوں کے کارن ہم باپو کو عیسیٰ اور بدھ کا درجہ دیتے ہیں۔ ہمیں باپو کا آدرش اپنے سامنے رکھنا چاہئے، جن کی آتما اب بھی اپنے ہتیارے کے لئے یہی کہہ رہی ہے کہ بھگوان تیرا بھلا کرے۔ ہم نے ایک ہندستانی کو ترقی کی سب سے اونچی چوٹی تک پہنچتے دیکھا اور اس کے ساتھ ہی ہم نے ایک ہندستانی کو گرتے ہوئے بھی دیکھا۔ اگرچہ باپو کے سہن شیلتا اور [illegible] تک پہنچنا مشکل ہی نہیں بلکہ ناممکن سا ہے، پھر بھی

हमें अपने प्यारे बापू की याद में गुस्सा, नफ़रत और हिंसा की भावनाओं को अपने दिल से दूर करना ही पड़ेगा. इन भावनाओं को दूर करना हर एक हिन्दुस्तानी का फ़र्ज़ है चाहे वह सरकार के अन्दर हो, सरकार के बाहर हो या किसी भी पार्टी से सम्बन्ध रखता हो. कुछ लोगों ने अपने देश का नाम 'गांधी देश' या 'गांधी-स्तान' रखने की सलाह दी है. इन लाइनों के लिखने वाले की मामूली बुद्धि तो यह कहती है कि इन बातों से खुद बापू की आत्मा को तकलीफ़ पहुँचेगी. बापू की आत्मा को तो तभी संतोष होगा जब न सिर्फ़ हर हिन्दुस्तानी बल्कि हर इन्सान अपनी रोज़ाना की ज़िन्दगी उनके असूलों पर चलाये. हमारे दुर्भाग्य से होता इसके ख़िलाफ़ ही है. हमारे देश में महा पुरुषों की पूजा तो की जाती है लेकिन उनके आदर्शों को जीवन में अपनाने वाले बहुत ही कम लोग होते हैं. यह पूजा का तरीक़ा भी आज़कल बहुत सस्ता हो गया है. गांधी होटल, जवाहर टी-स्टाल, पटेल छाप बीड़ी, यह सब बहुत आम हो गये हैं. बापू के उठते ही हम उनका संदेश भूल गये हैं. जिस इन्सानियत के लिए बापू ने बलिदान दिया उसे ही हम भूल रहे हैं और फिर साम्प्रदायिकता या फ़िरक़ा वारियत की तरफ़ बढ़ रहे हैं. न जाने कब फ़िरक़ापरस्ती से हमारे मुल्क का पीछा छूटेगा. अभी तो यह शैतानी ताक़त हमारे देश का गला घोंट रही है. बदला लेने का विचार हमें अन्धा बना रहा है. हिन्दू और मुसलमान दोनों एकता का ढोंग रचते हैं, राष्ट्रीयता की बड़ी-बड़ी बातें करते हैं पर वक़्त आने पर सभी फ़िरक़ापरस्ती के बहाव में बह जाते हैं. हिन्दू एक जाति, मुसलमान दूसरी जाति,

اپنے پیارے باپو کی یاد میں غصہ، نفرت اور ہنسا کی بھاوناؤں
اپنے دل سے دور کرنا ہی پڑے گا۔ ان بھاوناؤں کو دور کرنا ہر
ہندستانی کا فرض ہے چاہے وہ سرکار کے اندر ہو، سرکار کے
باہر ہو یا کسی بھی پارٹی سے سمبندھ رکھتا ہو۔ کچھ لوگوں نے
دیش کا نام 'گاندھی دیش' یا 'گاندھی استان' رکھنے کی صلاح
ہے۔ ان لائنوں کے لکھنے والے کی معمولی بدھی تو یہ کہتی ہے کہ
باتوں سے خود باپو کی آتما کو تکلیف پہنچے گی۔ باپو کی آتما کو تو
سنتوش ہوگا جب نہ صرف ہر ہندستانی بلکہ ہر انسان اپنی
روزانہ کی زندگی ان کے اصولوں پر چلائے۔ ہمارے دربھاگیہ سے
اس کے خلاف ہی ہے۔ ہمارے دیش میں مہا پرشوں کی پوجا تو
جاتی ہے لیکن ان کے آدرشوں کو جیون میں اپنانے والے بہت ہی
کم لوگ ہوتے ہیں۔ یہ پوجا کا طریقہ بھی آج کل بہت سستا ہوگیا
ہے۔ گاندھی ہوٹل، جواہر ٹی اسٹال، پٹیل چھاپ بیڑی، یہ سب
بہت عام ہو گئے ہیں۔ باپو کے اٹھتے ہی ہم ان کا سندیش بھول گئے
ہیں۔ جس انسانیت کے لئے باپو نے بلیدان دیا اسے ہی ہم بھول
رہے ہیں اور پھر سامپردایکتا یا فرقہ واریت کی طرف بڑھ رہے ہیں
نہ جانے کب فرقہ پرستی سے ہمارے ملک کا پیچھا چھٹے گا۔ ابھی تو یہ شیطانی
طاقت ہمارے دیش کا گلا گھونٹ رہی ہے۔ بدلا لینے کا وچار ہمیں اندھا
بنا رہا ہے۔ ہندو اور مسلمان دونوں ایکتا کا ڈھونگ رچتے ہیں، راشٹریتا
کی بڑی بڑی باتیں کرتے ہیں پر وقت آنے پر سبھی فرقہ پرستی
کے بہاؤ میں بہہ جاتے ہیں۔ ہندو ایک جاتی، مسلمان دوسری جاتی۔

उसके क़दम लड़खड़ा रहे हैं. हमारा फ़र्ज़ है कि हम उसे गिरने न दें. यह हम तभी कर सकते हैं जब कि हम अपने रोज़ के जीवन में प्रेम, शांति और क्षमा को जगह दें. हिन्दू और मुसलमान अगर एक दूसरे के खिलाफ़ 'धर्म-युद्ध' और 'जिहाद' छेड़ने के बजाय फ़िरक़ापरस्ती के शैतान के खिलाफ़ मिल कर मोर्चा जमा लें तभी देश तरक़्क़ी की तरफ़ जा सकेगा नहीं तो आगे अंधेरा ही अंधेरा दिखाई पड़ता है.

हरिजनों का सवाल बापू के जीवन में अपना एक खास दर्जा रखता था. समाज के एक ठुकराये और कुचले हुये तबक़े की तरक़्क़ी और उसको आम इन्सानों की सी जगह देना बापू का ही काम था. हरिजनों को ठाकुर जी के मंदिर में दाखिल होने का हक़ दिलाने के पहले बापू ने उन्हें अपने दिल में जगह दी थी. अब हरिजनों के मन्दिर में दाखिल होने का क़ानून भी पास हो गया है. आये दिन शहर के लोग हरिजनों के साथ जुलूस बनाकर उन्हें मंदिर में दाखिला दिलाने निकलते हैं. साथ में पुलिस भी रहती है. महंत और पुजारी जी न चाहने पर भी क़ानून के दबाव के कारण हरिजनों को मंदिर में ले जाते हैं. कुछ तो पान इलायची का भी जुलूस के लिये इंतज़ाम कर देते हैं. कहीं कहीं हरिजनों के हाथों शरबत पिलाया जाता है. मंदिर में दाखिल कराने के बाद हम समझ लेते हैं कि हमने अपना फ़र्ज़ पूरा कर दिया है. अगर कोई इक्का-दुक्का हरिजन कभी मंदिर में जाना चाहता है तो महंत जी सिर [illegible] है. रायपुर में दो बड़े महाधारा कांग्रेस के बड़े भारी [illegible] और ओहदेदार भी हैं. एक बार

اُس کے قدم لڑکھڑا رہے ہیں۔ ہمارا فرض ہے کہ ہم اُسے گرنے نہ دیں۔ یہ ہم تبھی کر سکتے ہیں جب کہ ہم اپنے روز کے جیون میں پریم، شانتی اور کشما کو جگہ دیں۔ ہندو اور مسلمان اگر ایک دوسرے کے خلاف 'دھرم یُدھ' اور 'جہاد' چھیڑنے کے بجائے فرقہ پرستی کے شیطان کے خلاف مل کر مورچا جما لیں تبھی دیش ترقی کی طرف جا سکے گا نہیں تو آگے اندھیرا ہی اندھیرا دکھائی پڑتا ہے۔

ہریجنوں کا سوال باپو کے جیون میں اپنا ایک خاص درجہ رکھتا تھا۔ سماج کے ایک ٹھکرائے اور کچلے ہوئے طبقے کی ترقی اور اُس کو عام انسانوں کی سی جگہ دینا باپو کا ہی کام تھا۔ ہریجنوں کو ٹھاکر جی کے مندر میں داخل ہونے کا حق دلانے کے پہلے باپو نے انھیں اپنے دل میں جگہ دی تھی۔ اب ہریجنوں کے مندر میں داخل ہونے کا قانون بھی پاس ہو گیا ہے۔ آئے دن شہر کے لوگ ہریجنوں کے ساتھ جلوس بنا کر انھیں مندر میں داخلہ دلانے نکلتے ہیں۔ ساتھ میں پولیس بھی رہتی ہے۔ مہنت اور پجاری جی نہ چاہتے پر بھی قانون کے دباؤ کے کارن ہریجنوں کو مندر میں لے جاتے ہیں۔ کچھ تو پان الائچی کا بھی جلوس کے لئے انتظام کر دیتے ہیں۔ کہیں کہیں ہریجنوں کے ہاتھوں شربت پلایا جاتا ہے۔ مندر میں داخل کرانے کے بعد ہم سمجھ لیتے ہیں کہ ہم نے اپنا فرض پورا کر دیا ہے۔ اگر کوئی اِکّا دُکّا ہریجن کبھی مندر میں جانا چاہتا ہے تو مہنت جی سر [illegible] رائے پور میں دو بڑے مہا دھیش کانگریس

का सहारा लेना पड़ता है. अब हमें सब दिखावे छोड़ कर सच्चे दिल से काम करना चाहिये. बाजे गाजे और धूम-धाम के साथ मंदिरों में हरिजनों को दाखिल कराने की जगह अगर हम अपने दिलों में उन्हें जगह दे दें तो वह बहुत बड़ी बात हो जायेगी क्योंकि सच्चा ईश्वर मंदिरों, मठों या मसजिदों में नहीं बल्कि हर इन्सान के दिल में बसता है. बापू तो हरिजनों की सेवा अपना फर्ज ही समझ कर करते थे. हमें भी उनका आदर्श अपने सामने रखना होगा.

बापू स्वालम्बन (अपना काम आप ही कर लेना) और तामीरी प्रोग्राम के खुद बहुत बड़े माहिर थे. उनके जीवन से बहुत से लोगों ने शिक्षा ली. उनका आश्रम, उनका केन्द्र या मर-कज़ है. वहाँ एक से एक महापुरुष हैं बापू के साथियों को किसी सभा का सदर होने में कुछ हिचकिचाहट होती है, लेकिन सभा के पंडाल के लिये खंभे गाड़ने में हम उन्हें सब से आगे पाते हैं. बापू ने अपनी रोज़ की जिन्दगी में भी स्वालम्बन को बहुत महत्व (अहमियत) दिया था. लेकिन हमारे दैनिक जीवन में इससे उलटी ही बातें हैं. हम स्वालम्बन से कोसों दूर रहते हैं और सभाओं में भाषण देना तामीरी काम समझा जाता है. बापू दूसरों की सेवा के लिये हमेशा मुस्तैद रहते थे लेकिन हम लोग दूसरों की सेवा करने के बजाय हमेशा दूसरों से सेवा लेना ही चाहते हैं. वर्धा में सच्ची तामीरी काम करने वालों का जलसा हुआ था. हमें उस सभा का आदर्श अपने सामने रखना चाहिये. बापू के जीवन से अपने पर भरोसा करना, अपने पर विश्वास करना और

لینا پڑتا ہے۔ اب ہمیں سب دکھاوے چھوڑ کر سچے دل سے کام کرنا چاہئے۔ باجے گاجے اور دھوم دھام کے ساتھ مندروں میں ہریجنوں کو داخل کرانے کی جگہ اگر ہم اپنے دلوں میں انھیں جگہ دیں تو یہ بہت بڑی بات ہو جائے گی کیونکہ سچا ایشور مندروں، مٹھوں یا مسجدوں میں نہیں بلکہ ہر انسان کے دل میں بستا ہے۔ باپو تو ہریجنوں کی سیوا اپنا فرض ہی سمجھ کر کرتے تھے۔ ہمیں بھی ان کا آدرش اپنے سامنے رکھنا ہوگا۔

باپو سواولمبن (اپنا کام آپ ہی کر لینا) اور تعمیری پروگرام کے خود بہت بڑے ماہر تھے۔ ان کے جیون سے بہت سے لوگوں نے شکشا لی۔ ان کا آشرم، ان کا کیندر یا مرکز ہے۔ وہاں ایک سے ایک مہاپرش ہیں۔ باپو کے ساتھیوں کو کسی سبھا کا صدر ہونے میں کچھ ہچکچاہٹ ہوتی ہے، لیکن سبھا کے پنڈال کے لئے کھمبے گاڑنے میں ہم انھیں سب سے آگے پاتے ہیں۔ باپو نے روز کی زندگی میں بھی سواولمبن کو بہت مہتو (اہمیت) دیا تھا۔ ہمارے دینک جیون میں اس سے الٹی ہی باتیں ہیں۔ ہم سواولمبن سے کوسوں دور رہتے ہیں اور سبھاؤں میں بھاشن دینا تعمیری کام سمجھا جاتا ہے۔ باپو دوسروں کی سیوا کے لئے ہمیشہ مستعد رہتے تھے لیکن ہم لوگ دوسروں کی سیوا کرنے کے بجائے ہمیشہ دوسروں سے سیوا لینا ہی چاہتے ہیں۔ وردھا میں سچی تعمیری کام کرنے والوں کا جلسہ ہوا تھا۔ ہمیں اس سبھا کا آدرش اپنے سامنے رکھنا چاہئے۔ باپو کے جیون سے اپنے پر بھروسہ کرنا، اپنے پر وشواس کرنا اور

अपना काम आप करने का सबक़ लेना हर एक हिन्दुस्तानी का फ़र्ज़ है.

बापू का जीवन एक आदर्श शहरी का जीवन था. उनके जीवन के हर एक मैदान में अनुशासन या डिसिप्लिन था. आज दुनिया भर में हिन्दुस्तान से ज्यादा डिसिप्लिन को न मानने वाला शायद कोई दूसरा देश न होगा. बापु के कामों, बोलों और विचारों. सब में एक डिसिप्लिन रहता था. हम अगर अनुशासन या डिसिप्लिन को नहीं मानते तो उससे हमारा ही नुक़सान होता है. हमारी रोज़ाना ज़िन्दगी तक में डिसिप्लिन की कमी हमें एक आज़ाद देश का अच्छा निवासी नहीं बनने देती. इस ऐब को जितनी भी जल्द हो सके हमें दूर करना चाहिये. क्योंकि अगर हम ऐसे ही बने रहे तो अपने नेताओं की बात भी नहीं सुनेंगे. जैसा कि हमने गुस्से और नफ़रत को त्यागने के लिये बापू के उपदेशों पर कान नहीं धरा और उसका नतीजा हमने देख लिया कि किस तरह शैतानी ताक़तों ने तरक़्क़ी की और हमारे बीच से बापू जैसे महापुरुष को उठा दिया.

बापू के गुणों और खूबियों की कोई सीमा नहीं है. सचाई, अहिंसा, प्रेम, शांति और दूसरों को माफ़ करदेना यह सभी खूबियां उनमें थीं. इनमें से किसी एक गुण पर मोटी से मोटी किताबें लिखी जा सकती हैं. लेकिन मैंनें अपने इस छोटे से लेख में सिर्फ़ ऐसी बातों को लेने की कोशिश की है जो हमारे दैनिक जीवन को सुधार सकती हैं. बापू के नाम पर यह बातें अपनानी ही [illegible] हिन्दुस्तानी का पहला फ़र्ज़ है कि

اپنا کام آپ کرنے کا سبق لینا ہر ایک ہندستانی کا فرض ہے۔

باپو کا جیون ایک آدرش شہری کا جیون تھا۔ ان کے جیون کے ہر ایک میدان میں انوشاسن یا ڈسپلن تھا۔ آج دنیا بھر میں ہندستان سے زیادہ ڈسپلن کو نہ ماننے والا شاید کوئی دوسرا دیش نہ ہوگا۔ باپو کے کاموں، بولوں اور وچاروں۔ سب میں ایک ڈسپلن رہتا تھا۔ ہم اگر انوشاسن یا ڈسپلن کو نہیں مانتے تو اس سے ہمارا ہی نقصان ہوتا ہے۔ ہماری روزانہ زندگی تک میں ڈسپلن کی کمی ہمیں ایک آزاد دیش کا اچھا نواسی نہیں بننے دیتی۔ اس عیب کو جتنی بھی جلد ہو سکے ہمیں دور کرنا چاہئے کیونکہ اگر ہم ایسے ہی بنے رہے تو اپنے نیتاؤں کی بات بھی نہیں سنیں گے۔ جیسا کہ ہم نے غصے اور نفرت کو تیاگنے کے لئے باپو کے اپدیشوں پر کان نہیں دھرا اور اس کا نتیجہ دیکھ لیا کہ کس طرح شیطانی طاقتوں نے ترقی کی اور ہمارے بیچ سے باپو جیسے مہاپرش کو اٹھا دیا۔

باپو کے گنوں اور خوبیوں کی کوئی سیما نہیں ہے۔ سچائی، اہنسا، پریم، شانتی اور دوسروں کو معاف کر دینا یہ سبھی خوبیاں ان میں تھیں۔ ان میں سے کسی ایک گن پر موٹی سے موٹی کتابیں لکھی جا سکتی ہیں۔ لیکن میں نے اپنے اس چھوٹے سے لیکھ میں صرف ایسی باتوں کو لینے کی کوشش کی ہے جو ہمارے دینک جیون کو سدھار سکتی ہیں۔ باپو کے نام پر یہ باتیں اپنانی [illegible] ہر ایک ہندستانی کا پہلا فرض ہے۔

यह बापू के राजकाजी वारिस पंडित जवाहरलाल नेहरू की रहनुमाई में चलना सीखे. क्योंकि उन्हीं से हिन्दुस्तान की सारी आशायें बँधी हैं और वही हिन्दुस्तान को ऊँचा उठा सकते हैं.

बापू के दैनिक जीवन के आदर्श ही हमें सभ्य और तहज़ीब याफ़्ता बना सकते हैं. बापू के रास्ते पर चलने ही से अंधेरे में रोशनी की अनेक किरणें फूटेंगी और दुनिया में भलाई और नेकी का दौर दौरा होगा. मैं उन व्यापारियों से भी दरख़ास्त करूँगा जो बापू के नाम का नाजायज़ फ़ायदा उठाकर गाँधी सोप, गाँधी बटन, गाँधी शरबत वग़ैरा बेच रहे हैं, कि वह राष्ट्र पिता के नाम को इतना सस्ता न बनायें और अपने फ़ायदे के लिये इतने बड़े और इतने पवित्र नाम का ग़लत इस्तेमाल न करें. यह चीज़ें यही नहीं कि हमें शोभा नहीं देतीं बल्कि हमें दुनिया की नज़रों में ज़लील भी करती है.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

लेखक—पंडित सुन्दर लाल

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ा परस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज, जिसने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया !

क़ीमत बारह आना.

किताब हिन्दी और उर्दू लिखावटों में अलग अलग मिल सकती है.

मैनेजर 'नया हिन्द'
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद.

یہ باپو کے راج کاجی وارث پنڈت جواہر لال نہرو کی رہنمائی میں چلنا سیکھے۔ کیونکہ انھیں سے ہندستان کی ساری آشائیں بندھی ہیں اور وہی ہندستان کو اونچا اٹھا سکتے ہیں۔

باپو کے دینک جیون کے آدرش ہی ہمیں سبھیہ اور تہذیب یافتہ بنا سکتے ہیں۔ باپو کے راستے پر چلنے ہی سے اندھیرے میں روشنی کی کرنیں پھوٹیں گی اور دنیا میں بھلائی اور نیکی کا دور دورہ ہوگا۔ میں ان ویاپاریوں سے بھی درخواست کروں گا جو باپو کے نام کا ناجائز فائدہ اٹھا کر گاندھی سوپ، گاندھی بٹن، گاندھی شربت وغیرہ بیچ رہے ہیں، کہ وہ راشٹر پتا کے نام کو اتنا سستا نہ بنائیں اور اپنے فائدے کے لئے اتنے بڑے اور اتنے پوتر نام کا غلط استعمال نہ کریں۔ یہ چیزیں یہی نہیں کہ ہمیں شوبھا نہیں دیتیں بلکہ ہمیں دنیا کی نظروں میں ذلیل بھی کرتی ہیں۔

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

لیکھک — پنڈت سندر لال

سامپردائکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی، مذہبی اور تاریخی پہلو سے وچار اور اس کا علاج، جس نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا!

قیمت بارہ آنہ۔

کتاب ہندی اور اردو لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہے۔

مینیجر 'نیا ہند'
۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد۔

हिन्दुस्तानी कलचर और संगीत

१२

(भाई गणेशप्रसाद द्विवेदी)

(पिछले अङ्क से आगे)

कुछ अर्से तक रामपुर दरबार की शोभा बढ़ा कर ख़ाँ साहब ज़्यादातर छम्मन साहब की इस्टेट बिलसी में ही रहने लगे. हम कह चुके हैं यह ज़्यादातर सोसाइटी और दरबारी तकल्लुफ़ से दूर भागते थे, धूम धाम, तड़क भड़क से इन्हें चिढ़ थी. इन्हें अकेलापन बहुत पसंद था. ख़ास मौक़ों पर दरबार में चले आते और ज़्यादा-तर छम्मन साहब के साथ बिलसी में ही रहते और उनकी मालूमात बढ़ाते.

इस तरह बिलसी दो बरस रहने के बाद छम्मन साहब यका-यक सख़्त बीमार पड़े और देखते देखते गुज़र गये. उनका सिन उस वक़्त चालीस से ऊपर नहीं था और सेहत आला दर्जे की थी. कोई सबूत तो नहीं मिला पर ज़्यादातर लोगों को यह यक़ीन है कि इन्हें किसी शकल में ज़हर दे दिया गया था. इसके दो कारन बताए जाते हैं. एक तो यह कि इन्होंने वज़ीर ख़ाँ साहब को नहीं माना. ध्रुपद, धमारें इन्हें सैकड़ों, हज़ारों की तादाद में ज़बानी याद थीं. दरबार में किसी भी राग का ज़िक्र चलते ही उसकी १०—२० ध्रुपद या होरियां गले से निहायत सुर में गाकर सुना देते थे और [illegible] की बंदिश, उसकी सारी [illegible] बयान कर जाते.

ہندستانی کلچر اور سنگیت

۱۲

(بھائی گنیش پرساد دوویدی)

(پچھلے انک سے آگے)

کچھ عرصے تک رام پور دربار کی شوبھا بڑھاکر خاں صاحب زیادہ تر چھمن صاحب کی اسٹیٹ بلسی میں ہی رہنے لگے۔ ہم کہہ چکے ہیں زیادہ تر سوسائٹی اور درباری تکلف سے دور بھاگتے تھے، دھوم دھام، تڑک بھڑک سے انھیں چڑھ تھی۔ انھیں اکیلاپن بہت بھاتا تھا۔ خاص موقعوں پر دربار میں چلے آتے اور زیادہ تر چھمن صاحب کے ساتھ بلسی میں ہی رہتے اور اُن کی معلومات بڑھاتے۔

اس طرح بلسی دو برس رہنے کے بعد چھمن صاحب یکایک سخت بیمار پڑے اور دیکھتے دیکھتے گزر گئے۔ اُن کا سن اُس وقت چالیس سے اوپر نہیں تھا اور صحت اعلا درجے کی تھی۔ کوئی ثبوت تو نہیں ملا پر زیادہ تر لوگوں کو یہ یقین ہے کہ انھیں کسی شکل میں زہر دے دیا گیا تھا۔ اس کے دو کارن بتائے جاتے ہیں۔ ایک تو یہ کہ انھوں نے وزیر خاں صاحب کو نہیں مانا۔ دھرپد، دھماریں انھیں سیکڑوں، ہزاروں کی تعداد میں زبانی یاد تھیں۔ دربار میں کسی بھی راگ کا ذکر چلتے ہی اُس کی [illegible] گلے سے نہایت [illegible] سنا دیتے

संगीत जैसी विद्या, जिसकी हस्ती हवा में बाँधे हुये सात सुरों पर ही मुनहसर है, ज्यादा दिन तक नहीं टिक सकती. यह विद्या इन दिनों कुछ इने गिने, ख़ास कर मुसलमान ख़ानदानी उस्तादों की ज़बान तक ही है और इनकी ज़बान ही थ्योरी या शास्त्र है. इन्होंने देखा कि मौजूदा हिन्दुस्तानी संगीत को अगर थ्योरी की पक्की बुनियाद पर नहीं रक्खा जाता है तो कुछ दिनों बाद सब राग रागनियाँ या तो ख़तम हो जायंगी या फिर अपनी अपनी डफली और अपना अपना राग वाला हिसाब ही रह जायगा. जो गवैया जिस तरह चाहेगा उसी तरह रागों को बरतेगा, क्योंकि किसी नियम या शास्त्र की पाबन्दी तो है नहीं. एक हद तक यह हाल अब भी है. हर घराने में रागों के बारे में बहुत ज्यादा मतभेद है. तो ज़रूरत इस बात की थी कि सब घरानों से चीज़ों को इकट्ठा कर उन्हें समान आधार पर स्थापित करना और ऐसे नियम बना देना कि संगीत के मामले में स्वेच्छाचार या मनमानी करना बंद हो जाय. यह काम बहुत ही मुशकिल था और इसमें बड़ी मेहनत, दौड़ धूप और रुपये ख़र्च करने की भी ज़रूरत थी. पर भातखंडे जी ने इस काम को हाथ में लिया ही और उन्हें एक हद तक कामयाबी भी मिली. इन्होंने सबसे पहले संगीत के पुराने ग्रंथों व लिखी हुई पोथियों की खोज करनी शुरू की और इस सिलसिले में देश भर के, ख़ास कर बड़ी रियासतों के पुस्तकालयों और कुतुबख़ानों से लिखा पढ़ी की और फिर ख़ुद सब जगह का दौरा कर पोथियों, चित्रों वग़ैरा का मुआइना किया और मालिकों की इजाज़त लेकर उनकी नक़ल कराई. इस दौरे में जिस रियासत में

[illegible] ودیا، جس کی ہستی ہوا میں باندھے ہوئے سات
[illegible] زیادہ دن تک نہیں ٹک سکتی. یہ ودیا ان دنوں
[illegible] خاص کر مسلمان خاندانی استادوں کی زبان تک ہی ہے
[illegible] تھیوری یا شاستر ہے. انھوں نے دیکھا کہ موجودہ
[illegible] سنگیت کو اگر تھیوری کی پکی بنیاد پر نہیں رکھا جاتا ہے تو
[illegible] بعد سب راگ راگنیاں یا تو ختم ہو جائیں گی یا پھر اپنی اپنی
[illegible] اپنا اپنا راگ والا حساب ہی رہ جائے گا. جو گویا جس طرح
[illegible] اسی طرح راگوں کو برتے گا، کیوں کہ کسی نیم یا شاستر کی پابندی
[illegible] نہیں. ایک حد تک یہ حال اب بھی ہے. ہر گھرانے میں راگوں
[illegible] بہت زیادہ مت بھید ہے. تو ضرورت اس بات کی تھی کہ
[illegible] سے چیزوں کو اکٹھا کر انھیں سمان آدھار پر
[illegible] کرنا اور ایسے نیم بنا دینا کہ سنگیت کے معاملے میں سوِچھاچار
[illegible] کرنا بند ہو جائے. یہ کام بہت ہی مشکل تھا اور اس میں
[illegible] دھوپ اور روپے خرچ کرنے کی بھی ضرورت تھی.
[illegible] بھات کھنڈے جی نے اس کام کو ہاتھ میں لیا ہی اور انھیں ایک
[illegible] کامیابی بھی ملی. انھوں نے سب سے پہلے سنگیت کے پرانے
[illegible] لکھی ہوئی پوتھیوں کی کھوج کرنی شروع کی اور اس
[illegible] میں دیس بھر کے، خاص کر بڑی ریاستوں کے پستکالوں اور
[illegible] خانوں سے لکھا پڑھی کی اور پھر خود سب جگہ کا دورہ کر
[illegible] چتروں وغیرہ کا معائنہ کیا اور مالکوں کی اجازت
[illegible] ان کی نقل کرائی. اس دورے میں جس ریاست میں

जो खास संगीत के माहिर और ख़ानदानी गुनी मिले उनसे ख़ूब ख़ूब मरासिम पैदा किये, उनकी चीज़ों को सुना और उनकी इजाज़त से उनके रिकार्ड भरवाये. इस तरह से घूम घूम कर उन्होंने क़रीब दो हज़ार ख़याल, ध्रुपद, धमार, सादरे और तरानों के रिकार्ड भरे और फ़िर सभों की, जहां तक मुमकिन था, वहां तक सही सही सुर लिपि (नोटेशन) लिख कर अपनी किताब में छपवा कर प्रकाशित कर दिया. इस किताब का नाम है, "हिंदुस्तानी संगीत पद्धति क्रमिक पुस्तक मालिका" यह किताब ६ भागों में और लगभग दो हज़ार पन्नों में है और करीब डेढ़ हज़ार गाने की चीजें भी इसमें होंगी. नोटेशन के साथ इतनी बड़ी किताब हिन्दुस्तान में तो क्या शायद और किसी भी देस की भाषा में नहीं छपी. यह बहुत बड़ा काम उन्होंने किया.

दूसरा काम जो उन्होंने किया वह था थ्योरी पर किताब लिखना. यह किताब चार जिल्दों में अपनी बोली मराठी में (पंडितजी महाराष्ट्र ब्राह्मण थे) ही उन्होंने लिखी और छपाई. हमें दुख है कि इस निहायत ज़रूरी किताब का तर्जुमा अभी तक हिन्दी या उर्दू में नहीं हो सका है. इस किताब के लिखने से पहले उन्होंने संस्कृत की पुरानी किताबें, जितनी भी उन्हें मिल सकीं, अच्छी तरह से पढ़ीं और जहाँ ज़रूरत हुई पंडितों की मदद भी ली. फिर पुरानी थ्योरी मौजूदा हिन्दुस्तानी संगीत पर कहाँ तक लागू है, इस बात को ख़ूब ख़ूब देखा, समझा और रागों की बनावट, उनमें सुरों का व्यवहार पहले कैसा था और अब कहाँ तक बदल गया है, इन बातों का मिलान किया. और अपने समूचे अध्ययन, सारी

خاص سنگیت کے ماہر اور خاندانی گنی ملے اُن سے خوب خوب
مراسم پیدا کئے، اُن کی چیزوں کو سُنا اور اُن کی اجازت سے
اُن کے ریکارڈ بھروائے۔ اس طرح سے گھوم گھوم کر انھوں نے
قریب دو ہزار خیال، دُھرپد، دھمار، سادرے اور ترانوں کے
ریکارڈ بھرے اور پھر سبھوں کی، جہاں تک ممکن تھا، وہاں تک
صحیح صحیح سُر لپی (نوٹیشن) لکھ کر اپنی کتاب میں چھپوا کر پرکاشت
کر دیا۔ اس کتاب کا نام ہے "ہندستانی سنگیت پدھتی کرمک
پستک مالکا" یہ کتاب ۶ بھاگوں میں اور لگ بھگ دو ہزار
صفحوں میں ہے اور قریب ڈیڑھ ہزار گانے کی چیزیں بھی اس میں
ہوں گی۔ نوٹیشن کے ساتھ اتنی بڑی کتاب ہندستان میں تو کیا
شاید کسی بھی دیس کی بھاشا میں نہیں چھپی۔ یہ بہت بڑا
کام انھوں نے کیا۔

دوسرا کام جو انھوں نے کیا وہ تھا تھیوری پر کتاب لکھنا۔ یہ
کتاب چار جلدوں میں اپنی بولی مراٹھی میں (پنڈت جی مہاراشٹر
برہمن تھے) ہی انھوں نے لکھی اور چھپائی۔ ہمیں دُکھ ہے کہ اس
نہایت ضروری کتاب کا ترجمہ ابھی تک ہندی یا اردو میں نہیں ہو سکا ہے۔
اس کتاب کے لکھنے سے پہلے انھوں نے سنسکرت کی پرانی کتابیں، جتنی
بھی مل سکیں، اچھی طرح سے پڑھیں اور جہاں ضرورت ہوئی پنڈتوں کی
مدد بھی لی۔ پھر پرانی تھیوری موجودہ ہندستانی سنگیت پر کہاں تک لاگو ہے
اس بات کو خوب خوب دیکھا، سمجھا اور راگوں کی بناوٹ، اُن میں سُروں کا ویوہار پہلے
کیسا تھا اور اب کہاں تک بدل گیا ہے، ان باتوں کا ملان کیا۔ اور اپنے سموچے ادھین ساری

मेहनत और जानकारी का निचोड़ इन चार भागों में लिख दिया. जहाँ ज़रूरत समझी वहाँ संस्कृत के खास खास ग्रंथों से श्लोकों को भी उतार कर रख दिया है और मौजूदा रागों पर बहस करते हुये मिलान किया है. उनकी खास देन इस मामले में यह है कि सब रागों को उनके सुरों के मेल के हिसाब से अलाहदा कर उन को दस ठाटों में बाँट दिया है और इस तरह से कि सारे राग इन दस ठाटों के अन्दर आ जाते हैं. पहले कुल बहत्तर ठाट थे. 'चतुर्दंडी प्रकाशिका' नाम की एक पुरानी किताब में इन बहत्तर ठाटों का बयान दिया गया है. पंडित जी ने दस ठाटों में ही खींचतान कर किसी तरह सब रागों को ला दिया. इससे बड़ी सहूलियत तो हो गई है पर बहुत से ऐसे राग भी हैं जिनको किसी भी तरह इन दस ठाटों के दायरे में ही रखना मुशकिल है. दकन या करनाटक स्कूल की संगीत पद्धति अब भी इसी बहत्तर ठाट वाले असूल पर चल रही है. भातखंडे जी के चलाये हुये दस ठाटों के नाम हैं—१ बिलावल; २ ऐमन; ३ खम्माच; ४ भैरों; ५ काफ़ी; ६ पूर्वी; ७ मारवा; ८ आसावरी; ९ भैरवी; १० तोड़ी. पिछले दिनों पंडित जी खुद महसूस करने लगे थे कि सब चालू रागों को इन दस ठाटों में लाना मुशकिल है और इस लिये अपनी इस थ्योरी की बाबत वह कुछ ढीले भी हो चले थे. पुराने घरानों के गुनी उनकी इस दस ठाट वाली थ्योरी को नहीं मान सके हैं.

अपनी इन अमर किताबों के सिलसिले में दौरा करते वक़्त उन्हें सेनी घराने व दूसरे खास घरानों के उस्तादों से बहुत कुछ सीखने, समझने का मौक़ा मिला पर बेहद परेशानी भी कहीं कहीं

محنت اور جانکاری کا نچوڑ ان چار بھاگوں میں لکھ دیا. جہاں ضرورت سمجھی وہاں سنسکرت کے خاص خاص گرنتھوں سے اشلوکوں کو بھی اتار کر رکھ دیا ہے اور موجودہ راگوں پر بحث کرتے ہوئے ملان کیا ہے. ان کی خاص دین اس معاملے میں یہ ہے کہ سب راگوں کو ان کے سُروں کے میل کے حساب سے علاحدہ کر کے ان کو دس ٹھاٹوں میں بانٹ دیا ہے اور اس طرح سے کہ سارے راگ ان دس ٹھاٹوں کے اندر آجاتے ہیں. پہلے کل بہتر ٹھاٹ تھے. 'چترونڈی پرکاشکا' نام کی ایک پرانی کتاب میں ان بہتروں ٹھاٹوں کا بیان دیا گیا ہے. پنڈت جی نے دس ٹھاٹوں میں ہی کھینچ تان کر کسی طرح سب راگوں کو لا دیا. اس سے بڑی سہولیت تو ہو گئی ہے پر بہت سے ایسے راگ بھی ہیں جن کو کسی بھی طرح ان دس ٹھاٹوں کے دائرے میں ہی رکھنا مشکل ہے. دکن یا کرناٹک اسکول کی سنگیت پدھتی اب بھی اسی بہتر ٹھاٹ والے اصول پر چل رہی ہے. بھات کھنڈے جی کے چلائے ہوئے دس ٹھاٹوں کے نام ہیں— ۱ بلاول؛ ۲ ایمن؛ ۳ کھماج؛ ۴ بھیروں؛ ۵ کافی؛ ۶ پوروی؛ ۷ مارواہ؛ ۸ آساوری؛ ۹ بھیروی؛ ۱۰ ٹوڑی. پچھلے دنوں پنڈت جی خود محسوس کرنے لگے تھے کہ سب چالو راگوں کو ان دس ٹھاٹوں میں لانا مشکل ہے اور اس لئے اپنی اس تھیوری کی بابت وہ کچھ ڈھیلے بھی ہو چلے تھے. پرانے گھرانوں کے گنی ان کی اس دس ٹھاٹ والی تھیوری کو نہیں مان سکے ہیں.

اپنی ان امر کتابوں کے سلسلے میں دورہ کرتے وقت انہیں سینی گھرانے و دوسرے خاص گھرانوں کے استادوں سے بہت کچھ سیکھنے، سمجھنے کا موقع ملا پر بے حد پریشانی بھی کہیں کہیں

उठानी पड़ी. कुछ उस्ताद अपने बुज़ुर्गों की चीज़ों को रिकार्ड में भरवाने पर राज़ी नहीं हुये. उनकी चीज़ों को सुनकर अपनी याददाश्त के सहारे ही उन्होंने नोटेशन किया. कुछ उस्तादों को यह ख़ौफ़ हो गया था कि अगर इनकी चीज़ें रिकार्ड करली गईं तो फिर उन्हें कौन पूछेगा. पंडित जी ने ऐसे गुनियों को बहुत बहुत समझाया बुझाया कि इससे उनका नाम सदा के लिये अमर हो जायगा और विद्या की रक्षा भी हो सकेगी. और एक दफ़ा नोटेशन हो जाने पर फिर अगली पुश्त के लोगों के हाथ में उनके बदल जाने या बिगड़ जाने का ख़ौफ़ नहीं रहेगा. कुछ लोग मान गये. कुछ नहीं भी माने. पर पंडित जी धुन के बेहद पक्के थे. जिन लोगों ने अपनी चीज़ें गा कर सुनाने तक से इनकार किया उनकी चीज़ें पंडित जी ने छिप कर सुनीं और फिर खुद गाकर उन्हें सुना दिया. वह हर वक़्त अपने पास नोट बुक रखते थे और उनका दिमाग़ इतना तेज़ और अभ्यास इतना बढ़ा हुआ था कि गाना सुनते सुनते नोटेशन लिखते चल सकते थे. रामपुर के वज़ीर ख़ां साहब बीनकार के तख़्त के नीचे पड़े-पड़े इन्होंने बहुत सी सुरलिपियां तैयार कीं. उन्होंने अपनी बहुत सी चीज़ें तो ख़ुशी से दीं पर जिनको छिपाना चाहते थे उनमें से कुछ तो पंडित जी ने ले ही लिया. कुछ लोगों ने यह शर्त लगाई थी कि बाक़ायदा गंडा बँधा कर शागिर्द बनो तो चीज़ें देंगे. ऐसे लोगों के पंडित जी बाक़ायदा शागिर्द भी हो गये. पर सब से ज़्यादा चीज़ें इनको मुहम्मद अली ख़ां साहब और फिर वज़ीर ख़ां साहब से मिलीं. इन दोनों बुज़ुर्गों से बाक़ायदा तालीम भी पंडित जी ने ली थी.

اٹھانی پڑی. کچھ استاد اپنے بزرگوں کی چیزوں کو ریکارڈ میں بھروانے پر راضی نہیں ہوئے. ان کی چیزوں کو سن کر اپنی یادداشت کے سہارے ہی انھوں نے نوٹیشن کیا. کچھ استادوں کو یہ خوف ہوگیا تھا کہ اگر ان کی چیزیں ریکارڈ کرلی گئیں تو پھر انھیں کون پوچھیگا. پنڈت جی نے ایسے گنیوں کو بہت بہت سمجھایا بجھایا کہ اس سے ان کا نام سدا کے لئے امر ہو جائے گا اور ودّیا کی رکشا بھی ہو سکے گی. اور ایک دفعہ نوٹیشن ہو جانے پر پھر اگلی پشت کے لوگوں کے ہاتھ میں ان کے بدل جانے یا بگڑ جانے کا خوف نہیں رہے گا. کچھ لوگ مان گئے. کچھ نہیں بھی مانے، پر پنڈت جی دھن کے بے حد پکے تھے. جن لوگوں نے اپنی چیزیں گا کر سنانے تک سے انکار کیا ان کی چیزیں پنڈت جی نے چھپ کر سنیں اور پھر خود گا کر انھیں سنا دیا. وہ ہر وقت اپنے پاس نوٹ بک رکھتے تھے اور ان کا دماغ اتنا تیز اور ابھیاس اتنا بڑھا ہوا تھا کہ گانا سنتے سنتے نوٹیشن لکھتے چل سکتے تھے. رام پور کے وزیر خاں صاحب بین کار کے تخت کے نیچے پڑے پڑے انھوں نے بہت سی سُرلپیاں تیار کیں. انھوں نے بہت سی چیزیں تو خوشی سے دیں پر جن کو چھپانا چاہتے تھے ان میں سے کچھ تو پنڈت جی نے لے ہی لیا. کچھ لوگوں سے یہ شرط لگائی تھی کہ باقاعدہ گنڈا بندھا کر شاگرد بنو تو چیزیں دیں گے. ایسے لوگوں کے پنڈت جی باقاعدہ شاگرد بھی ہوگئے. پر سب سے زیادہ چیزیں ان کو محمد علی خاں صاحب اور پھر وزیر خاں صاحب سے ملیں. ان دونوں بزرگوں سے باقاعدہ تعلیم بھی پنڈت جی نے لی تھی.

इनके अलावा जिन लोगों से इन्हें चीज़ें मिलीं उनमें से खास के नाम यह हैं—

१. हिज़ हाइनेस नवाब हामिद अली खां बहादुर, रामपुर.
२. नवाबज़ादा प्रिंस सआदत अली खां उर्फ़ "छम्मन साहब" रामपुर (बिलसी).
३. खां साहब मुहम्मद, अली खां, कोठीवाल जयपुर, 'मनरंग' घराना.
४. खां साहब आशिक़ अली खां, जयपुर.
५. खां साहब अहमद अली खां, जयपुर
६. खां साहब हैदर खां, धार, मशहूर उस्ताद बहराम खां के शागिर्द.
७. खां साहब फ़ैयाज़ खां बड़ोदा, गायकवाड़, 'रंगीले' घराना.
८. खां साहब अमीर खां, गुलाब सागर, बड़ोदा.
९. रावजी बुवा, बेलबागकर, बम्बई. अबदुल्ला खां साहब ध्रुपदिये के शागिर्द.
१०. रामनाथ पंडित, ग्वालियर, मशहूर शंकर पंडित के भाई और नथ्थन खां, पीरबख़्श घराने के प्रतिनिधि.
११. राजा भैया पोंछ वाले, ग्वालियर.
१२. विष्णु बुवा वामन देशपांडे, ग्वालियर, मशहूर ध्रुपदिये वामन बुवा के बेटे.
१३. कृष्ण राव गोपाल दांते ग्वालियर.
१४. कृष्ण बुवा गोखले, मिरज. मशहूर उस्ताद अमीन खां

ان کے علاوہ جن لوگوں سے انھیں چیزیں ملیں اُن میں سے خاص نام یہ ہیں۔

۱۔ ہزہائنس نواب حامد علی خاں بہادر، رام پور۔
۲۔ نواب زادہ پرنس سعادت علی خاں عرف "چھمن صاحب" رام پور (بلسی)۔
۳۔ خاں صاحب محمد، علی خاں، کوٹھی وال جے پور، منرنگ گھرانا۔
۴۔ خاں صاحب عاشق علی خاں، جے پور۔
۵۔ خاں صاحب احمد علی خاں، جے پور۔
۶۔ خاں صاحب حیدر خاں، دھار، مشہور استاد بہرام خاں کے شاگرد۔
۷۔ خاں صاحب فیاض خاں بڑودا گائکواڑ، 'رنگیلے' گھرانا۔
۸۔ خاں صاحب امیر خاں گلاب ساگر بڑودا۔
۹۔ راؤجی بوا بیلباگکر، بمبئی، عبداللہ خاں صاحب دھرپدیے کے شاگرد۔
۱۰۔ رام ناتھ پنڈت، گوالیر، مشہور شنکر پنڈت کے بھائی اور نتھن خاں، پیر بخش گھرانے کے پرتی ندھی۔
۱۱۔ راجا بھیا پونچھ والے، گوالیر۔
۱۲۔ وشنو بوا بامن دیش پانڈے، گوالیر، مشہور دھرپدیے بامن بوا کے بیٹے۔
۱۳۔ کرشن راؤ گوپال دانتے گوالیر۔
۱۴۔ کرشن بوا گوکھلے، مرج، مشہور استاد امین خاں

के घराने के खास शागिर्द.

१५. कृष्ण शास्त्री शुक्ल, उज्जैन.

१६. गनपति बुवा, भिलवड़ीकर, सितारा.

इनके सिवा मुहम्मद अली ख़ां और वज़ीर ख़ां साहब तो ख़ास थे ही.

हम देखते हैं पंडित जीने ख़ासकर रामपुर, जयपुर, ग्वालियर और बड़ोदे के उस्तादों से ही चीज़ें हासिल कर के उनकी सुरलिपियाँ प्रकाशित कीं. इधर पूरब की ओर दौरा करने और चीज़ें इकठ्ठी करने का मौक़ा उन्हें न मिल सका. पूरब में, जैसा कि हम पहले बता चुके हैं, दिल्ली दरबार टूटने के बाद, बनारस, गया, गिद्धौर, बंगाल, और उत्तर में नेपाल राज में बहुत से चोटी के संगीत घराने बस गये थे. इन लोगों की चीज़ें अभी तक इन्हीं के प्रतिनिधियों तक ही चलती हैं. और फिर पंडित जी ने सिर्फ़ कंठ संगीत यानी गायकी और ख़याल ध्रुपद वग़ैरा के ही नोटेशन दिये हैं. वह तंत्र या बीन, रबाब, सितार, सरोद वग़ैरा पर बजने वाले रागों के आलाप और उनकी गतों की ओर ध्यान न दे सके. एक तो इस तरफ़ इनकी तवज्जह कम थी और ख़ुद इनका शौक़ भी नहीं था. पर किसी एक आदमी के किये जो कुछ हो सकता है उससे ज़्यादा ही पंडित जी ने किया, इसमें शक नहीं. और आजकल गाने बजाने की इतनी चरचा जो बढ़ रही है इसमें पंडित जी का बहुत बड़ा हाथ है.

एक बात और है जिसकी ओर ध्यान दिये बिना हम आगे

کے گھرانے کے خاص شاگرد۔

۱۵۔ کرشن شاستری شکل، اجین۔

۱۶۔ گنپتی بوا، بھلوڈیکر، ستارا۔

ان کے سوا محمد علی خاں اور وزیر خاں صاحب تو خاص تھے ہی۔

ہم دیکھتے ہیں پنڈت جی نے خاص کر رامپور، جے پور، گوالیر اور بڑودے کے استادوں سے ہی چیزیں حاصل کر کے ان کی سر لپیاں پرکاشت کیں۔ ادھر پورب کی اور دورہ کرنے اور چیزیں اکٹھی کرنے کا موقع انھیں نہ مل سکا۔ پورب میں، جیسا کہ ہم پہلے بتا چکے ہیں، دلی دربار ٹوٹنے کے بعد بنارس، گیا، گدھور، بنگال اور اتر میں نیپال راج میں بہت سے چوٹی کے سنگیت گھرانے بس گئے تھے۔ ان لوگوں کی چیزیں ابھی تک انھیں کے پرتی ندھیوں تک ہی چلتی ہیں۔ اور پھر پنڈت جی نے صرف کنٹھ سنگیت یعنی گائکی اور خیال دھرپد وغیرہ کے ہی نوٹیشن دئے ہیں۔ وہ تنتر یا بین، رباب، ستار، سرود وغیرہ پر بجنے والے راگوں کے آلاپ اور ان کی گتوں کی اور دھیان نہ دے سکے۔ ایک تو اس طرف ان کی توجہ کم تھی، اور خود ان کا شوق بھی نہیں تھا۔ پر کسی ایک آدمی کے کئے جو کچھ ہو سکتا ہے اس سے زیادہ ہی پنڈت جی نے کیا، اس میں شک نہیں۔ اور آج کل گانے بجانے کی اتنی چرچا جو بڑھ رہی ہے اس میں پنڈت جی کا بہت بڑا ہاتھ ہے۔

ایک بات اور ہے جس کی اور دھیان دئے بنا ہم آگے

नहीं बढ़ सकते. पंडित जी की किताबों में जो सुरलिपियाँ दर्ज हैं उन्हीं चीज़ों को जब हम किसी घरानेदार मशहूर उस्ताद से सुनते हैं तो हमें काफ़ी फ़र्क़ दिखाई पड़ता है. इसके मानी यह हैं कि या तो उस्तादों ने चीज़ों को ग़लत बताया, या सुरलिपि ठीक नहीं लिखी जा सकी, या उस्ताद लोग जान बूझ कर अब दूसरे तरीक़े से गाने लग गये हों. क्योंकि हम अक्सर ख़ानदानी उस्तादों को यह कहते हुये सुनते हैं कि किताबों में ग़लत सुरलिपियाँ छपी हैं, ठीक वही है जैसे हम गाते हैं. उस्तादों को इस बात की बड़ी शिकायत है कि पंडित जी ने हमारी चीज़ों को किताब में छपवा कर हमारा पेट मारा है. पर हमारी राय में यह बात नहीं है. हमारा तो ऐसा ख़याल है कि इन किताबों के छपने के बाद से ही उस्तादों की क़द्र बहुत बढ़ गई है, और दिन पर दिन उनकी माँग बढ़ती ही जा रही है. ज़माना तो ऐसा आ रहा था कि यही रवैया अगर कुछ दिन और चलता तो इन उस्तादों को सदा के लिये अपने तानपूरे रख देने पड़ते. पंडित जी और उन्हीं के ज़माने के एक दूसरे मराठी पंडित—विष्णु दिगम्बर जी की बदौलत ही संगीत का प्रचार फिर से शुरू हुआ. विष्णु दिगम्बर जी ने किताबें कम लिखीं पर अमली तौर पर काम बहुत किया. यह ख़ुद बहुत बड़े गवैये थे और इन्होंने हिन्दुस्तान भर में अपनी पूरी मंडली के साथ घूम घूम कर जलसे किये और सैकड़ों स्कूल क़ायम किये जिनमें इनके शागिर्द गाना बजाना सिखाते हैं. यह बालकृष्ण बुवा के शागिर्द थे जो ग्वालियर के मशहूर हद्दू हस्सू ख़ाँ के ख़ास शागिर्द थे. ये पंडित जी भी

نہیں بڑھ سکتے. پنڈت جی کی کتابوں میں جو سُرلپیاں درج ہیں انہیں چیزوں کو جب ہم کسی گھرانے دار مشہور اُستاد سے سنتے ہیں تو ہمیں کافی فرق دکھائی پڑتا ہے. اس کے معنی یہ ہیں کہ یا تو اُستادوں نے چیزوں کو غلط بتایا، یا سُرلپی ٹھیک نہیں لکھی جا سکی یا اُستاد لوگ جان بوجھ کر اب دوسرے طریقے سے گانے لگ گئے ہوں. کیونکہ ہم اکثر خاندانی اُستادوں کو یہ کہتے ہوئے سنتے ہیں کہ کتابوں میں غلط سُرلپیاں چھپی ہیں، ٹھیک وہی ہے جیسے ہم گاتے ہیں. اُستادوں کو اس بات کی بڑی شکایت ہے کہ پنڈت جی نے ہماری چیزوں کو کتاب میں چھپوا کر ہمارا پیٹ مارا ہے. پر ہماری رائے میں یہ بات نہیں ہے. ہمارا تو ایسا خیال ہے کہ ان کتابوں کے چھپنے کے بعد سے ہی اُستادوں کی قدر بہت بڑھ گئی ہے. اور دن پر دن ان کی مانگ بڑھتی ہی جا رہی ہے. زمانہ تو ایسا آ رہا تھا کہ یہی رویہ کچھ دن اور چلتا تو ان اُستادوں کو سدا کے لئے اپنے تان پورے رکھ دینے پڑتے. پنڈت جی اور انہیں کے زمانے کے ایک دوسرے مراٹھی پنڈت — وشنو دگمبر جی کی بدولت ہی سنگیت کا پرچار پھر سے شروع ہوا. وشنو دگمبر جی نے کتابیں کم لکھیں پر عملی طور پر کام بہت کیا. یہ خود بہت بڑے گویے تھے اور انہوں نے ہندستان بھر میں اپنی پوری منڈلی کے ساتھ گھوم گھوم کر جلسے کئے اور سینکڑوں اسکول قائم کئے جن میں ان کے شاگرد گانا بجانا سکھاتے ہیں. یہ بال کرشن بُوا کے شاگرد تھے جو گوالیر کے مشہور ہدو ہسو خاں کے خاص شاگرد تھے. یہ پنڈت جی بھی

लाहौर से बनारस तक ही घूम सके. पूरब की ओर आगे न बढ़ सके. पंडित भातखंडे और विष्णु दिगम्बर की करनी के बारे में आज दुनिया चाहे जो भी कहे, यह मानी हुई बात है कि हिन्दुस्तानी संगीत के इतिहास में इनके नाम सुनहरे हरफ़ों में लिखे जायंगे, और डूबते हुये हिन्दुस्तानी संगीत के फिर से उबारने वालों में इनका नाम सब से आगे लिया जायगा.

छम्मन साहब और पंडित भातखंडे के बाद मुहम्मद अली ख़ाँ साहब के तीसरे मशहूर शागिर्द थे, राजा नवाब अली साहब. राजा साहब लखनऊ के एक बड़े ताल्लुक़ेदार थे और गाने बजाने में बहुत दिलचस्पी रखते थे. इन्हों ने सब से पहले लाहौर वाले उस्ताद काले ख़ाँ से गाना सीखा. इन्हीं के लड़के बड़े ग़ुलाम अली साहब लाहौर वाले हैं, जो हिन्दुस्तान के सब से बड़े गानेवालों में से एक हैं. हमें यह लिखते हुये बेहद अफ़सोस व शर्म आती है कि मुल्क के बँटवारे के बाद यह मार काट की अशांति से ऊब कर सरहद की ओर चले गये और आज कल शायद क़ाबुल में हैं. काले ख़ाँ के बाद फिर राजा साहब ने नज़ीर ख़ाँ साहब मुरादाबादी और अंत में मुहम्मद अली ख़ाँ साहब से गाना सीखा और मरते दम तक उनकी सोहबत की. रामपुर से लखनऊ में ख़ाँ साहब इन्हीं की वजह से एक अरसे तक रहे.

"मुआरिफ़ुन्नग़मात" नाम से राजा साहब ने दो भागों में एक बहुत बेशक़ीमत किताब लिख कर हिन्दी और उर्दू दोनों लिखावटों में नवल किशोर प्रेस से छपवा कर प्रकाशित की.

نیا ہند   ہندوستانی کلاکار اور سنگیت   جون سنہ ۴۸

لاہور سے بنارس تک ہی گھوم سکے. پورب کی اور آگے نہ بڑھ سکے. پنڈت بھات کھنڈے اور وشنو دگمبر کی کرنی کے بارے میں آج دنیا چاہے جو کہے یہ مانی ہوئی بات ہو کہ ہندوستانی سنگیت کے اتہاس میں ان کے نام سنہرے حرفوں میں لکھے جائیں گے، اور ڈوبتے ہندوستانی سنگیت کے پھر سے ابھارنے والوں میں ان کا نام سب سے آگے لیا جائے گا.

چھمن صاحب اور پنڈت بھات کھنڈے کے بعد محمد علی خاں صاحب کے تیسرے مشہور شاگرد تھے، راجا نواب علی صاحب. راجا صاحب لکھنؤ کے ایک بڑے تعلقدار تھے اور گانے بجانے میں بہت دلچسپی رکھتے تھے. انھوں نے سب سے پہلے لاہور والے استاد کالے خاں سے گانا سیکھا. انھیں کے لڑکے بڑے غلام علی صاحب لاہور والے ہیں جو ہندوستان کے سب سے بڑے گانے والوں میں سے ایک ہیں. ہمیں یہ لکھتے ہوئے بے حد افسوس و شرم آتی ہو کہ ملک کے بٹوارے کے بعد یہ مار کاٹ کی اشانتی سے اوب کر سرحد کی اور چلے گئے اور آج کل شاید کابل میں ہیں. کالے خاں کے بعد پھر راجا صاحب نے نذیر خاں صاحب مرادابادی اور انت میں محمد علی خاں صاحب سے گانا سیکھا اور مرتے دم تک ان کی صحبت کی. رامپور سے لکھنؤ میں خاں صاحب انھیں کی وجہ سے ایک عرصے تک رہے.

"معارف النغمات" نام سے راجا صاحب نے دو بھاگوں میں ایک بہت بیش قیمت کتاب لکھ کر ہندی اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں نول کشور پریس سے چھپوا کر پرکاشت کی.

इसमें मुहम्मद अली खां साहब की क़रीब क़रीब सब ध्रुपदें और होरियां (धमार) और उनकी सुरलिपियां खां साहब से तसदीक़ करवा कर छापी गई हैं. पहले भाग में थ्योरी के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है. बहुत सी ध्रुपदें ऐसी हैं जो भातखंडे जी और राजा साहब की किताब दोनों ही में हैं, और सुर-लिपियों में काफ़ी फ़र्क़ भी है. ऐसी हालत में किस को ज़्यादा प्रामाणिक या क़ाबिल एतबार मानना चाहिये इसके बारे में यहां कुछ कहना हम ठीक नहीं समझते. जहाँ फ़र्क़ मिले वहाँ दोनों ही ढंग याद करवाना अच्छा होगा. फिर कलाकार की अपनी सूझ बूझ पर है. राजा साहब को अपनी सुरलिपियाँ तैयार करने में बड़े आग़ा साहब से, जो मैरिस कालेज में गाने के प्रोफ़ेसर हैं, काफ़ी मदद मिली थी. बड़े आग़ा साहब राजा साहब के शागिर्द ता हैं ही साथ ही उस्ताद मुहम्मद अली खां साहब और छम्मन साहब से भी उन्हों ने बहुत कुछ सीखा था.

राजा साहब ने एक ज़माने में सितार पर भी बड़ी मेहनत की थी. क़रीब आठ बरस तक सितार का ही रियाज़ किया. पर इमदाद खां और बरकतुल्ला का सितार सुन कर उन्हों ने यह कह कर छोड़ दिया कि अगर इनके ऐसा सितार न बजा तो बेकार है. यहाँ तक कि कलाई पर लोहे के छल्ले पहन रक्खे थे कि हाथ वैसा ही टेढ़ा जाय जैसा कि उन दोनों उस्तादों का था. पर हार-मोनियम में इनकी बराबरी शायद कोई नहीं कर सका. भैया साहब गनपति राव उस ज़माने में बेहतरीन बाजा बजाते थे,

اس میں محمد علی خاں صاحب کی قریب قریب سب دھرپدیں اور ہوریاں (دھمار) اور ان کی سُرلپیاں خاں صاحب سے تصدیق کروا کر چھاپی گئی ہیں۔ پہلے بھاگ میں تھیوری کے بارے میں بہت کچھ لکھا گیا ہے۔ بہت سی دھرپدیں ایسی ہیں جو بھات کھنڈے جی اور راجا صاحب کی کتاب دونوں ہی میں ہیں، اور سُرلپیوں میں کافی فرق بھی ہے۔ ایسی حالت میں کس کو زیادہ پرامانک یا قابلِ اعتبار ماننا چاہئے اس کے بارے میں یہاں کچھ کہنا ہم ٹھیک نہیں سمجھتے۔ جہاں فرق ملے وہاں دونوں ہی ڈھنگ یاد کروانا اچھا ہوگا۔ پھر کلاکار کی اپنی سوجھ بوجھ پر ہے۔ راجا صاحب کو اپنی سُرلپیاں تیار کرنے میں بڑے آغا صاحب سے، جو میرس کالج میں گانے کے پروفیسر ہیں، کافی مدد ملی تھی۔ بڑے آغا صاحب راجا صاحب کے شاگرد تو ہیں ہی ساتھ ہی اُستاد محمد علی خاں صاحب اور چھمن صاحب سے بھی اُنھوں نے بہت کچھ سیکھا تھا۔

راجا صاحب نے ایک زمانے میں ستار پر بھی بڑی محنت کی تھی۔ قریب آٹھ برس تک ستار کا ہی ریاض کیا۔ پر امداد خاں اور برکت اللہ کا ستار سن کر اُنھوں نے یہ کہہ کر چھوڑ دیا کہ اگر ان کے ایسا ستار نہ بجا تو بے کار ہے۔ یہاں تک کہ کلائی پر لوہے کے چھلّے پہن رکھے تھے کہ ہاتھ ویسا ہی ٹیڑھا جائے جیسا کہ ان دونوں اُستادوں کا تھا۔ پر ہارمونیم میں ان کی برابری شاید کوئی نہیں کر سکا۔ بھیا صاحب گنپتی راؤ اس زمانے میں بہترین باجا بجاتے تھے۔

पर जब राजा साहब का सामना होता था तो बाजा उनके सामने बढ़ा देते थे और कोई न कोई बहाना कर जाते थे. राजा साहब की लखनऊ वाली कोठी गाने बजाने के शौक़ीनों के लिये तीरथ या मक्का मदीना से कम न थी. दस पाँच उस्ताद हर वक़् जमे ही रहते थे. इनकी सोहबत में बैठने वालों में से आमतौर पर बड़े और छोटे मुन्ने ख़ाँ, महराज कालका-दीन व बिन्दा दीन, बाक़र हुसैन, मेहदी हुसेन, ख़लीफ़ा अहमद ख़ाँ. उस्ताद ख़ुर्शीद अली, उस्ताद सादिक़ अली, नसीर ख़ां, मीर मंझू साहब सोज़ख़्वाँ, मीर ज़िन्दे रज़ा, बच्चन ख़ां, व नसीर ख़ां हैदराबादी वग़ैरा थे. इनके अलावा बाहर से कोई न कोई उस्ताद आये दिन रोज़ ही पहुँच जाते थे, जिनके साथ अपनी हैसियत के मुताबिक़ वह सलूक तो करते ही थे, साथ ही गाने बजाने में ख़ुद साथ देते थे. रोज़ाना दो तीन बजे रात तक जलसे हुआ करते थे. कोई भी गवैया हो राजा साहब बाजा लेकर साथ बैठ जाया करते थे और गवैये की शायद ही कोई तरकीब हो जिसकी बाबत राजा साहब को यह कहना पड़ता हो कि, उस्ताद ज़रा फिर से कहिये!

राजा साहब, नवाब छम्मन साहब व पंडित भातखंडे जी में बेहद दोस्ती थी. गुरुभाई तो ये थे ही, पर हक़ीक़ी भाई का सा ही इत्तफ़ाक़ आपस में था. इन लोगों ने मिल कर ही भले घरानों में संगीत के प्रचार में इतनी बड़ी कामयाबी हासिल की. सब से पहले सन् १९१६ ई० में पहली आल इण्डिया म्यूज़िक कानफ़रेन्स इन्हीं तीनों की कोशिश से बड़ोदा में हुई और बड़ोदा नरेश इसके सभापति चुने गये. देश भर के चोटी के उस्ताद इसमें शरीक हुये.

راجا صاحب کا سامنا ہوتا تھا تو باجا ان کے سامنے بڑھا دیتے اور کوئی نہ کوئی بہانہ کر جاتے تھے۔ راجا صاحب کی لکھنؤ والی کوٹھی گانے بجانے کے شوقینوں کے لئے تیرتھ یا مکہ مدینہ سے کم نہ تھی۔ دس پانچ استاد ہر وقت جمے ہی رہتے تھے۔ ان کی صحبت میں بیٹھنے والوں میں سے عام طور پر بڑے اور چھوٹے منے خاں، مہاراج کالکا دین و بندا دین، باقر حسین، مہدی حسین، خلیفہ احمد خاں، استاد خورشید علی، استاد صادق علی، نصیر خاں، میر منجھو صاحب سوز خواں، میر زندہ رضا، بچن خاں، و نصیر خاں حیدرآبادی وغیرہ تھے۔ ان کے علاوہ باہر سے کوئی نہ کوئی استاد آئے دن روز ہی پہنچ جاتے تھے، جن کے ساتھ اپنی حیثیت کے مطابق وہ سلوک تو کرتے ہی تھے، ساتھ ہی گانے بجانے میں خود ساتھ دیتے تھے۔ روزانہ دو تین بجے رات تک جلسے ہوا کرتے تھے۔ کوئی بھی گویا ہو راجا صاحب باجا لے کر ساتھ بیٹھ جایا کرتے اور گوئیے کی شاید ہی کوئی ترکیب ہو جس کی بابت راجا صاحب کو یہ کہنا پڑتا ہو کہ، استاد ذرا پھر سے کہئے!

راجا صاحب، نواب چھمن صاحب و پنڈت بھات کھنڈے جی میں بے حد دوستی تھی۔ گرو بھائی تو یے تھے ہی، پر حقیقی بھائی کا سا ہی اتفاق آپس میں تھا۔ ان لوگوں نے مل کر ہی بھلے گھرانوں میں سنگیت کے پرچار میں اتنی بڑی کامیابی حاصل کی۔ سب سے پہلے سنہ ۱۹۱۶ء میں پہلی آل انڈیا میوزک کانفرنس انہیں تینوں کی کوشش سے بڑودا میں ہوئی اور بڑودا نریش اس کے سبھاپتی چنے گئے۔ دیش بھر کے چوٹی کے استاد اس میں شریک ہوئے۔

फिर हर दूसरे साल यह कानफरेन्स धूम से होने लगी. सन् १९२६ में इन्हीं लोगों की कोशिश से लखनऊ का मैरिस कालिज आफ हिंदुस्तानी म्यूजिक खुला. इस बीच तक चार आल इंडिया म्यूजिक कानफरेंसें हो चुकी थीं. पंडितजी वग़ैरा का मक़सद यह था कि दिल्ली, लखनऊ, वग़ैरा हिन्दुस्तान के ख़ास ख़ास शहरों में आल इंडिया म्यूजिक कानफ़रेंस बारी बारी से की जाय· जिससे पहले जनता में संगीत की तरफ़ फिर से रुचि बढ़े और देश की क़ौमी जिंदगी या जातीय जीवन में संगीत और कलचर का जो स्थान पहले था वह फिर से क़ायम हो और इसके बाद ख़ास ख़ास केन्द्रों में संगीत के कालेज खोले जायं जिनमें घरानेदार चोटी के गुनी तालीम देने के लिये रक्खे जायं. इस ख़याल से लखनऊ में पहला कालेज खोला गया. उस ज़माने के गवर्नर सर विलियम मैरिस और शिक्षामंत्री राय राजेश्वर बली दोनों ही कल्चर और तालीम में बड़ी दिलचस्पी और हमदर्दी रखते थे. हिंदू मुसलमान दोनों ने मिलकर इस कालेज के लिये चंदा दिया और सरकार से माक़ूल इमदाद भी मिली. पहले यह क़ैसर बाग़ की तोपवाली कोठी में खुला और नवाब रामपुर इसके प्रेसिडेंट चुने गये. पंडित भातखंडे जी पहले ख़ुद क्लास लिया करते थे.

پھر ہر دوسرے سال یہ کانفرنس دھوم سے ہونے لگی ۔ سنہ ۱۹۲۶ میں انہیں لوگوں کی کوشش سے لکھنؤ کا میرس کالج آف ہندستانی میوزک کھلا ۔ اس بیچ تک چار آل انڈیا میوزک کانفرنسیں ہو چکی تھیں ۔ پنڈت جی وغیرہ کا مقصد یہ تھا کہ دلی، لکھنؤ وغیرہ ہندستان کے خاص خاص شہروں میں آل انڈیا میوزک کانفرنس باری باری سے کی جائے جس سے پہلے جنتا میں سنگیت کی طرف پھر روچی بڑھے اور دیش کی قومی زندگی یا جاتیہ جیون میں سنگیت اور کلچر کا جو استھان پہلے تھا وہ پھر سے قائم ہو اور اس کے بعد خاص خاص کیندروں میں سنگیت کے کالج کھولے جائیں جن میں گھرانے دار چوٹی کے گنی تعلیم دینے کے لئے رکھے جائیں ۔ اس خیال سے لکھنؤ میں پہلا کالج کھولا گیا ۔ اس زمانے کے گورنر سر ولیم میرس اور شکشا منتری رائے راجیشور بلی دونوں ہی کلچر اور تعلیم میں بڑی دلچسپی اور ہمدردی رکھتے تھے ۔ ہندو مسلمان دونوں نے مل کر اس کالج کے لئے چندہ دیا اور سرکار سے معقول امداد بھی ملی ۔ پہلے یہ قیصر باغ کی توپ والی کوٹھی میں کھلا اور نواب رام پور اس کے پریسیڈنٹ چنے گئے ۔ پنڈت بھات کھنڈے جی پہلے خود کلاس لیا کرتے تھے ۔

मेरा बेटा

(भाई विष्णु प्रभाकर)

सिविल अस्पताल का नया सरजन डाक्टर हसन जैसे ही कमरे में दाखिल हुआ, उसने किवाड़ बन्द कर लिये- ठण्डी हवा का झोंका, जो उसके साथ-साथ अन्दर घुस आया था, छन भर के लिये उसके पिता को कँपाता हुआ गायब हो गया. डाक्टर ने एक गहरी साँस खींची और हाथ के दस्ताने उतारते हुये कहा—" अब्बा बड़ी खतरनाक हालत है !"

अब्बा जो पलंग पर लेटे थे, "हूँ" करके रह गये. डाक्टर ने चुपचाप ओवरकोट उतारा और खूँटी पर टाँग दिया. फिर अँगीठी के पास आ खड़ा हुआ. बाहर सनसन करती हुई हवा चल रही थी और उस ठंड को जिसके थपेड़े खाते हुये वह अभी लौटा था, याद करके उन्हें अब भी कँपकँपी आ जाती थी. एकाएक अब्बा बोल उठे—"अब तक कितने आदमी मर चुके होंगे? "

डाक्टर ने जवाब दिया—" अस्पताल में कुल तीस लाशें आई हैं."

" और जख्मी ? "

" सौ होसकते हैं. "

" मुसलमान ज्यादा होंगे ? "

डाक्टर छन भर रुका, फिर हाथों को मलता हुआ बोला—" कुछ नहीं कहा जा सकता. "

میرا بیٹا

(بھائی وشنو پربھاکر)

سول اسپتال کا نیا سرجن ڈاکٹر حسن جیسے ہی کمرے میں داخل ہوا اس نے کواڑ بند کر لئے. ٹھنڈی ہوا کا جھونکا، جو اس کے ساتھ ساتھ اندر گھس آیا تھا، چھن بھر کے لئے اس کے باپ کو کپکپاتا ہوا غایب ہو گیا. ڈاکٹر نے ایک گہری سانس کھینچی اور ہاتھ کے دستانے اتارتے ہوئے کہا— "ابا بڑی خطرناک حالت ہے!"

ابا جو پلنگ پر لیٹے تھے، "ہوں" کرکے رہ گئے. ڈاکٹر نے چپ چاپ اوورکوٹ اتارا اور کھونٹی پر ٹانگ دیا. پھر انگیٹھی کے پاس آ کھڑا ہوا. باہر سن سن کرتی ہوئی ہوا چل رہی تھی اور اس ٹھنڈ کو جس کے تھپیڑے کھاتے ہوئے وہ ابھی لوٹا تھا، یاد کرکے انہیں اب بھی کپکپی آ جاتی تھی. یکایک ابا بول اٹھے—
"اب تک کتنے آدمی مر چکے ہوں گے؟"

ڈاکٹر نے جواب دیا— "اسپتال میں کل تیس لاشیں آئی ہیں."

"اور زخمی؟"

"سو ہو سکتے ہیں."

"مسلمان زیادہ ہوں گے؟"

ڈاکٹر چھن بھر رکا، پھر ہاتھوں کو ملتا ہوا بولا— "کچھ نہیں کہا جا سکتا."

"फिर भी ?"

वह झिझका जैसे कुछ सोचना चाहता हो. अब्बा तब तक उसके मुंह की तरफ़ देखते रहे.

उसने हाथों को आग के आगे किया और कहा—"हो सकता है, हिन्दू ज़्यादा हों."

फिर कई छन कोई नहीं बोला. सिर्फ़ हवा दरवाज़े पर थपेड़े मारती रही. अब्बा के मुख पर अनेक भाव आये और गये. उनके तने हुये चेहरे की नसें और भी तन गईं. एकाएक बैठे बैठे उन्होंने कहा—"तो कोई उम्मीद नहीं?"

"किस बात की?" हसन ने चौंक कर पूछा.

"फ़ैसले की."

"फ़ैसला?" डाक्टर ज़बरदस्ती मुस्कराया और फिर जोश में बोला—"अब्बा हज़ार साल इस तरह लड़ते रहने पर भी फ़ैसला नहीं हो सकता. असली बात यह है कि वह फ़ैसला करना ही नहीं चाहते. वह लड़ना चाहते हैं और लड़ते रहेंगे. इसीलिये वह एक दूसरे की बात समझने से इनकार करते हैं."

"इनकार करते हैं?"

"हाँ अब्बा, मैं तो इसे इनकार करना ही मानता हूँ. समझना चाहें तो झगड़ा ही क्या है."

अब्बा ने एक बार अपने बेटे को देखा, फिर कहा—"शायद तुम ठीक कहते हो."

"शायद नहीं अब्बा, मैं बिल्कुल ठीक कहता हूँ."

तभी किसी ने दरवाज़ा खटखटाया. डाक्टर चौंका. वहीं से

"پھر بھی؟"

وہ جھجکا جیسے کچھ سوچنا چاہتا ہو. ابا تب تک اس کے منہ کی طرف دیکھتے رہے.

اس نے ہاتھوں کو آگ کے آگے کیا اور کہا— "ہو سکتا ہے، ہندو زیادہ ہوں."

پھر کئی چھن کوئی نہیں بولا. صرف ہوا دروازے پر تھپیڑے مارتی رہی. ابا کے چہرے پر انیک بھاؤ آئے اور گئے. ان کے تنے ہوئے چہرے کی نسیں اور بھی تن گئیں. ایکایک بیٹھے بیٹھے انھوں نے کہا— "تو کوئی امید نہیں؟"

"کس بات کی؟" حسن نے چونک کر پوچھا.

"فیصلے کی."

"فیصلہ؟" ڈاکٹر زبردستی مسکرایا اور پھر جوش میں بولا— "ابا ہزار سال اس طرح لڑتے رہنے پر بھی فیصلہ نہیں ہو سکتا. اصلی بات یہ ہے کہ وہ فیصلہ کرنا ہی نہیں چاہتے. وہ لڑنا چاہتے ہیں اور لڑتے رہیں گے. اسی لیے وہ ایک دوسرے کی بات سمجھنے سے انکار کرتے ہیں."

"انکار کرتے ہیں؟"

"ہاں ابا، میں تو اسے انکار کرنا ہی مانتا ہوں. سمجھنا چاہیں تو جھگڑا ہی کیا ہے."

ابا نے ایک بار اپنے بیٹے کو دیکھا، پھر کہا— "شاید تم ٹھیک کہتے ہو."

"شاید نہیں ابا، میں بالکل ٹھیک کہتا ہوں."

تبھی کسی نے دروازہ کھٹکھٹایا. ڈاکٹر چونکا. وہیں سے

पूछा—"कौन है ?"

जवाब आया—"जी, अस्पताल में डाक्टर शर्मा ने आपको बुलाया है."

"क्यों ?"

"एक नया केस आया है, साब!"

"तो ?"

"साब, उन्होंने कहा है, ज़ख्मी की हालत खतरनाक है. आप का आना ज़रूरी है."

अब्बा ने सुनकर गुस्से से कहा—"क्या वाहियात बात है. अभी आये हो. खाना न पीना. मरने दो उसको."

डाक्टर बोला—"मरना तो है ही! अब्बा. आज मौत के फ़रिश्ते ने हम सब को अपने परों के साये में समेट लिया है." यही और फिर किवाड़ खोले. ठण्डी हवा तेज़ी से अन्दर घुसी, उन्होंने काँपते हुये कहा-"खाना खा सकता हूँ?"

आने वाला अस्पताल का जमादार था. सिकुड़ते हुये जवाब दिया—"साब वह तो जल्दी बुलाते हैं."

डाक्टर ने लम्बी साँस खींची. कहा—"अच्छा तो कह दो, अभी आता हूँ." और उसने जल्दी से किवाड़ बन्द कर लिये. सीधे अँगीठी के पास आया और कहा—"ख़ून जमा देने वाली सरदी पड़ रही है, और वह लोग लड़े जा रहे हैं, वहशी, हैवान दोज़खी कुत्ते..!" साथ ही साथ दस्ताने पहिनता रहा फिर ओवर कोट उठाया और चलते चलते कहा—"मैं कहता हूँ अब्बा, वह हैवान हैं. वह फ़ैसला नहीं कर सकते."

پوچھا—"کون ہے؟"

جواب آیا—"جی، اسپتال میں ڈاکٹر شرما نے آپ کو بلایا ہے."

"کیوں؟"

"ایک نیا کیس آیا ہے صاب!"

"تو؟"

"صاب، انھوں نے کہا ہے زخمی کی حالت خطرناک ہے. آپ کا آنا ضروری ہے."

ابا نے سن کر غصے سے کہا—"کیا واہیات بات ہے. ابھی آئے ہو. کھانا نہ پینا. مرنے دو اس کو."

ڈاکٹر بولا—"مرنا تو ہے ہی! ابا. آج موت کے فرشتے نے ہم سب کو اپنے پروں کے سایے میں سمیٹ لیا ہے."

اور پھر کواڑ کھولے. ٹھنڈی ہوا تیزی سے اندر گھسی. انھوں نے کانپتے ہوئے کہا—"کھانا کھا سکتا ہوں؟"

آنے والا اسپتال کا جمعدار تھا. سکڑتے ہوئے جواب دیا—"صاب وہ تو جلدی بلاتے ہیں."

ڈاکٹر نے لمبی سانس کھینچی. کہا—"اچھا تو کہہ دو، ابھی آتا ہوں." اور اس نے جلدی سے کواڑ بند کر لئے. سیدھے انگیٹھی کے پاس آیا اور کہا—"خون جما دینے والی سردی پڑ رہی ہے، اور وہ لوگ لڑے جا رہے ہیں، وحشی، حیوان، دوزخی کتے!" ساتھ ہی ساتھ دستانے پہنتا رہا پھر اوور کوٹ اٹھایا اور چلتے چلتے کہا—"میں کہتا ہوں ابا، وہ حیوان ہیں. وہ فیصلہ نہیں کر سکتے."

अब्बा यद्यपि क्रोध में भरे हुये थे पर न जाने क्या हुआ कि हसन की बात सुन कर हँस पड़े. बोले—"हैवान बड़ी जल्दी फ़ैसला करता है बेटे!"

वह कुछ जवाब देता कि इस बार अन्दर के दरवाजे पर आहट हुई. वह मुड़ा. देखा, सामने उसकी बीवी खड़ी है. उसने गरम शाल लपेट रखी है और उसके सुन्दर मुख पर क्रोध मिली मुस्कराहट है. पास आने पर वह कुछ नराज़ी से बोली—"अभी आये और चल दिये. क्या मुसीबत है ?"

"खुदा जाने क्या होने वाला है, बेगम."

"खाना नहीं खाओगे ?"

"कैसे खाऊँ, बुलावा आगया है."

बेगम के हाथ में कुछ बिस्कुट थे. उन्हें डाक्टर के ओवर कोट की जेब में डालते हुये कहा—"चाय तो पी लेते."

डाक्टर मुस्कराया बोला—"तुम बहुत अच्छी हो, बेगम."

और फिर उसके मुंह पर आई हुई एक लट को पीछे करते हुये वह जल्दी से मुड़ा और कहा—"अब नहीं रुक सकता बेगम! देर हो गई तो शायद पछताना पड़ेगा."

बेगम ने कुछ जवाब नहीं दिया. उसका सुन्दर मुखड़ा परेशानी से उदास हो गया था. दुखी मन से उसने डाक्टर को जाते देखा और देखती ही रह गई. डाक्टर दरवाजा खोल कर जल्दी जल्दी क़दम रखता हुआ बाहर निकल गया. बूटों की तेज आवाज के साथ सनसनाती हुई हवा एक बार तेज़ी से उठी और फिर धीमी पड़ने लगी. चटकनी लगा कर अब्बा फिर पलंग पर आ बैठे.

ابّا اگرچہ کرودھ میں بھرے ہوئے تھے پر نہ جانے کیا ہوا کہ حسن کی بات سُن کر ہنس پڑے۔ بولے — "حیوان بڑی جلدی فیصلہ کرتا ہے بیٹے!"

وہ کچھ جواب دیتا کہ اِس بار اندر کے دروازے پر آہٹ ہوئی۔ وہ مڑا۔ دیکھا، سامنے اُس کی بیوی کھڑی ہے۔ اُس نے گرم شال لپیٹ رکھی ہے اور اُس کے سُندر مکھ پر کرودھ ملی مسکراہٹ ہے۔ پاس آنے پر وہ کچھ ناراضی سے بولی — "ابھی آئے اور چل دئے۔ کیا مصیبت ہے؟"

"خدا جانے کیا ہونے والا ہے، بیگم۔"

"کھانا نہیں کھاؤگے؟"

"کیسے کھاؤں، بُلاوا آگیا ہے۔"

بیگم کے ہاتھ میں کچھ بسکٹ تھے۔ انھیں ڈاکٹر کے اُورکوٹ کی جیب میں ڈالتے ہوئے کہا — "چائے تو پی لیتے۔"

ڈاکٹر مسکرایا بولا — "تم بہت اچھی ہو بیگم۔"

اور پھر اُس کے مُنہ پر آئی ہوئی ایک لٹ کو پیچھے کرتے ہوئے وہ جلدی سے مڑا اور کہا — "اب نہیں رُک سکتا بیگم! دیر ہوگئی تو شاید پچھتانا پڑے گا۔"

بیگم نے کچھ جواب نہیں دیا۔ اُس کا سُندر مکھڑا پریشانی سے اُداس ہو گیا تھا۔ دُکھی من سے اُس نے ڈاکٹر کو جاتے دیکھا اور دیکھتی ہی رہ گئی۔ ڈاکٹر دروازہ کھول کر جلدی جلدی قدم رکھتا ہوا باہر نکل گیا۔ بوٹوں کی تیز آواز کے ساتھ سنسناتی ہوئی ہوا ایک بار تیزی سے اُٹھی اور پھر دھیمی پڑنے لگی۔ چٹخنی لگا کر ابّا پھر پلنگ پر آ بیٹھے۔

"आह, होश ? मुझे अचरज है कि वह जिन्दा कैसे है ?"

"क्या उसका जिन्दा रहना जरूरी है ?" हसन ने उसी तरह कहा—"उसके मर जाने पर क्या दुनिया मिट जायेगी, ऐसा कोई डर तो नहीं है ?"

शर्मा बोला—"मैं जानता हूँ, पर जब तक वह मर नहीं जाता, तब तक उसे जिन्दा रखने का बोझ हम पर आ पड़ा है. क्या करें ?"

वह चल रहे थे और बातें भी करते जाते थे. वह घायलों के वार्ड में दाखिल हो चुके थे और दर्दभरी चीख पुकारें सुनाई पड़ने लगी थीं. दरवाजा खोलते खोलते हसन ने पूछा—"वह है कौन ?"

"एक बूढ़ा हिन्दू है."

"यहीं का रहने वाला है."

"नहीं, परदेसी है. जेब में जो काग़ज़ मिले हैं उन से पता लगता है कि वह कानपुर का रहने वाला है और उसका नाम रामप्रसाद है."

हसन ने धीरे से दोहराया—"रामप्रसाद, कानपुर,—बस ?"

"बस."

उन लोगों ने कपड़े बदले और फिर नर्सों और कम्पाउन्डरों से घिरे हुये वह जख्मी के ऊपर झुक गये, जो बीसों जख्म खाकर आपरेशन की मेज पर बेहोश पड़ा हुआ था. उसकी साँस बहुत आहिस्ता आहिस्ता चलरही थी और अधखुली आँखें दिल में डर पैदा करती थीं.

× × ×

आपरेशन खतम करके जब वह बाहर निकले तो पूरे पाँच घन्टे बीत चुके थे. वह बेहद थके हुये थे और उनके तमाम बदन में दर्द हो रहा था. वह उस हवा में इतने डूब चुके थे कि दूर तक

"اوہ، ہوش؟ مجھے اچرج ہے کہ وہ زندہ کیسے ہے؟"

"کیا اس کا زندہ رہنا ضروری ہے؟" حسن نے اسی طرح کہا — "اس کے مر جانے پر کیا دنیا مٹ جائے گی، ایسا کوئی ڈر تو نہیں ہے؟"

شرما بولا — "میں جانتا ہوں، پر جب تک وہ مر نہیں جاتا، تب تک اسے زندہ رکھنے کا بوجھ ہم پر آ پڑا ہے۔ کیا کریں؟"

وہ چل رہے تھے اور باتیں بھی کرتے جاتے تھے۔ وہ گھایلوں کے وارڈ میں داخل ہو چکے تھے اور درد بھری چیخ پکاریں سنائی پڑنے لگی تھیں۔ دروازہ کھولتے کھولتے حسن نے پوچھا — "وہ ہے کون؟"

"ایک بوڑھا ہندو ہے۔"

"یہیں کا رہنے والا ہے؟"

"نہیں، پردیسی ہے۔ جیب میں جو کاغذ ملے ہیں ان سے پتہ لگتا ہے کہ وہ کانپور کا رہنے والا ہے اور اس کا نام رام پرساد ہے۔"

حسن نے دھیرے سے دہرایا — "رام پرساد، کانپور — بس؟"

"بس۔"

ان لوگوں نے کپڑے بدلے اور پھر نرسوں اور کمپاؤنڈروں سے گھرے ہوئے وہ زخمی کے اوپر جھک گئے، جو بیسوں زخم کھا کر آپریشن کی میز پر بے ہوش پڑا ہوا تھا۔ اس کی سانس بہت آہستہ آہستہ چل رہی تھی اور ادھ کھلی آنکھیں دل میں ڈر پیدا کرتی تھیں۔

× × ×

آپریشن ختم کر کے جب وہ باہر نکلے تو پورے پانچ گھنٹے بیت چکے تھے۔ وہ [illegible]

साथ साथ चलते रहने पर भी वह एक दूसरे से नहीं बोले. शाम हो चुकी थी, पर हवा की सनसनाहट उसी तरह गूँज रही थी. उसके थपेड़े खाकर वह कभी कोट का कालर ठीक करते, कभी क़दम तेज़ करके गरमी पैदा करना चाहते. उसी वक़्त एकाएक डाक्टर शर्मा ने धीरे से कहा, जैसे नींद में बड़बड़ाते हैं—"कैसा अजीब केस है."

डा० हसन ने भी धीरे से कहा—"पर मुझे ख़ुशी है, हम उसे बचा सकेंगे."

"शायद."

"नहीं शर्मा," हसन ने पूरे भरोसे से कहा—"मुझे यक़ीन होता है, वह बच जावेगा."

डाक्टर शर्मा ने हसन की ओर देखा फिर मुस्करा कर कहा—"तुम्हें यक़ीन होता है, क्योंकि तुमने उसके लिये परिश्रम किया है."

"वह केस ही ऐसा था. उसे देख कर मुझे लगा कि इसे बचना चाहिये......"

"क्योंकि उसके बचने में तुम्हारी विद्या का इम्तहान है."

डा० हसन ने एकाएक डा० शर्मा को देखा. उसे जान पड़ा वह ठीक कह रहा है. केस जितना ख़तरनाक था, उसको बचाने का ख़याल भी उतनी ही ज़्यादा था.

यह जान कर डा० हसन को गहरा सन्तोष हुआ और उसने ख़ुश होकर कहा—"मेहनत तो तुमने भी की है, शर्मा."

"पर तुम्हारी तरह नहीं."

हसन ने इस बात का जवाब नहीं दिया. पहिले की तरह

ساتھ ساتھ چلتے رہنے پر بھی وہ ایک دوسرے سے نہیں بولے. شام ہو چکی تھی، پر ہوا کی سنسناہٹ اسی طرح گونج رہی تھی. اس کے تھپیڑے کھا کر وہ کبھی کوٹ کا کالر ٹھیک کرتے، کبھی قدم تیز کرکے گرمی پیدا کرنا چاہتے. اسی وقت ایکایک ڈاکٹر شرما نے دھیرے سے کہا، جیسے نیند میں بڑبڑاتے ہیں—"کیسا عجیب کیس ہے."

ڈاکٹر حسن نے بھی دھیرے سے کہا—"پر مجھے خوشی ہے، ہم اسے بچا سکیں گے."

"شاید."

"نہیں شرما،" حسن نے پورے بھروسے سے کہا—"مجھے یقین ہوتا ہے، وہ بچ جاوے گا."

ڈاکٹر شرما نے حسن کی اور دیکھا پھر مسکرا کر کہا—"تمہیں یقین ہوتا ہے کیونکہ تم نے اس کے لئے پریشرم کیا ہے."

"وہ کیس ہی ایسا تھا. اسے دیکھ کر مجھے لگا کہ اسے بچنا چاہئے......"

"کیونکہ اس کے بچنے میں تمہاری ودیا کا امتحان ہے."

ڈاکٹر حسن نے ایکایک ڈاکٹر شرما کو دیکھا. اسے جان پڑا وہ ٹھیک کہہ رہا ہے. کیس جتنا خطرناک تھا، اس کو بچانے کا خیال بھی اتنا ہی زیادہ تھا.

یہ جان کر ڈاکٹر حسن کو گہرا سنتوش ہوا اور اس نے خوش ہوکر کہا—"محنت تو تم نے بھی کی ہے، شرما."

"پر تمہاری طرح نہیں."

حسن نے اس بات کا جواب نہیں دیا. پہلے کی طرح

चुपचाप चलता रहा. उसका घर सामने दिखाई पड़ रहा था. उसी को देख कर वह बोला—"मैं समझता हूँ, घर जाने से पहिले तुम एक प्याली चाय पीना पसन्द करोगे ?"

शर्मा ने मुस्करा कर कहा—"जरूर करूँगा ! सारा बदन टूट रहा है."

हसन हँसा, बोला—"और इस बात की क्या गारेन्टी है कि हमें अभी फिर उसी कमरे में नहीं लौटना पड़ेगा."

"हाँ कौन कह सकता है ?"

"लेकिन शर्मा, उस आदमी का पूरा पता मालूम होना चाहिये. देखने में किसी बड़े घर का जान पड़ता है ?"

शर्मा ने उसी तरह कहा—"मैंने पुलिस को पूरी रिपोर्ट देदी है. वह पता लगा लेगी और न भी लगे तो क्या है. न जाने कौन कौन मरता है."

"वह नहीं मरेगा शर्मा, उस पर आज मैंने बाजी लगाई है."

शर्मा मुस्कराया—"तब और भी जरूरत नहीं है."

घर आ गया. किवाड़ खोलते हुये डा० हसन ने कहा—"बैठो शर्मा, मैं चाय के लिये कहता हूँ."

और फिर अब्बा की ओर मुड़ कर कहा—"अब्बा, वाक़ई वह बड़ा खतरनाक केस था, लेकिन उम्मीद है कि वह बच जायगा. शर्मा और मैं अब तक उसी पर लगे थे."

शर्मा ने हसन के अब्बा को अदाब अर्ज किया. जवाब देकर अब्बा बोले—"कौन है ?"

"कोई बड़ा आदमी है."

چپ چاپ چلتا رہا. اس کا گھر سامنے دکھائی پڑ رہا تھا. اسی کو دیکھ کر بولا — "میں سمجھتا ہوں، گھر جانے سے پہلے تم ایک پیالی چائے پینا پسند کروگے؟"

شرما نے مسکرا کر کہا — "ضرور کروں گا، سارا بدن ٹوٹ رہا ہے."

حسن ہنسا، بولا — "اور اس بات کی کیا گارنٹی ہے کہ ہمیں ابھی پھر اسی کمرے میں نہیں لوٹنا پڑے گا."

"ہاں کون کہہ سکتا ہے؟"

"لیکن شرما، اس آدمی کا پورا پتہ معلوم ہونا چاہئے. دیکھنے میں کسی بڑے گھر کا جان پڑتا ہے؟"

شرما نے اسی طرح کہا — "میں نے پولیس کو پوری رپورٹ دے دی ہے. وہ پتہ لگا لے گی اور نہ بھی لگے تو کیا ہے. نہ جانے کون کون مرتا ہے."

"وہ نہیں مرے گا شرما، اس پر آج میں نے بازی لگائی ہے"

شرما مسکرایا — "تب اور بھی ضرورت نہیں"

گھر آگیا. کواڑ کھولتے ہوئے ڈاکٹر حسن نے کہا — "بیٹھو شرما، چائے کے لئے کہتا ہوں."

اور پھر ابا کی اور مڑ کر کہا — "ابا، واقعی وہ بڑا خطرناک کیس تھا، لیکن امید ہے کہ وہ بچ جائے گا. شرما اور میں اب تک اسی پر لگے تھے."

شرما نے حسن کے ابا کو آداب عرض کیا. جواب دے کر ابا بولے — "کون ہے؟"

"کوئی بڑا آدمی ہے."

"एक बूढ़ा हिन्दू है. अच्छे घर का जान पड़ता है."

"यहीं का रहने वाला है ?"

शर्मा ने कहा—"जी नहीं, परदेसी है. जो कागज़ात उसकी जेब में मिले हैं, उनसे पता चलता है कि वह कानपुर का रहने वाला है और उसका नाम रामप्रसाद है."

अब्बा कुछ चौंके—"क्या........क्या बताया.......रामप्रसाद.... कानपुर...........?"

"जी."

"और कुछ ?"

"जी नहीं."

"उसके साथ कोई और नहीं है ?"

"जी नहीं."

हसन लौट आया था और अब्बा की बेचैनी को ध्यान से देख रहा था, बोला—"क्या आप उसे जानते हैं ?"

अब्बा का चेहरा तन चला था और उनकी आँखों में ग़ुस्से की हल्की लकीरें उभर आयी थीं. उन्होंने अनजाने ही तल्ख़ी से कहा—"वह मरा नहीं है ?"

शर्मा ने जवाब दिया—"मरने में कुछ कसर तो नहीं थी, परन्तु डा० हसन ने अपनी होशियारी से उसे बचा लिया है."

अब्बा ने अब हसन की तरफ़ ग़ौर से देखा और देखते रहे. हसन को उनका यह रुख़ बहुत अजीब सा मालूम हुआ. उसने अब्बा के पास जाकर पूछा—"अब्बा, क्या आप उन्हें जानते हैं ?"

जैसे बिना सुने उन्होंने कहा—"रामप्रसाद.....कानपुर.... उसके

"ایک بڈھا ہندو ہے. اچھے گھر کا جان پڑتا ہے."

"یہیں کا رہنے والا ہے؟"

شرما نے کہا—"جی نہیں، پردیسی ہے. جو کاغذات اس کی جیب سے ملے ہیں، ان سے پتہ چلتا ہے کہ وہ کانپور کا رہنے والا ہے اور اس کا نام رام پرساد ہے."

ابا کچھ چونکے—"کیا...... کیا بتایا...... رام پرساد... کانپور...؟"

"جی."

"اور کچھ؟"

"جی نہیں."

"اس کے ساتھ کوئی اور نہیں ہے؟"

"جی نہیں."

حسن لوٹ آیا تھا اور ابا کی بے چینی کو دھیان سے دیکھ رہا تھا، بولا—"کیا آپ اسے جانتے ہیں؟"

ابا کا چہرہ تن چلا تھا اور ان کی آنکھوں میں غصے کی ہلکی لکیریں ابھر آئی تھیں. انھوں نے ان جانے ہی تلخی سے کہا—"وہ مرا نہیں؟"

شرما نے جواب دیا—"مرنے میں کچھ کسر تو نہیں تھی، پرنتو ڈاکٹر حسن نے اپنی ہوشیاری سے اسے بچا لیا ہے."

ابا نے اب حسن کی طرف غور سے دیکھا اور دیکھتے رہے. حسن کو یہ رخ بہت عجیب سا معلوم ہوا. اس نے ابا کے پاس جا کر پوچھا—"ابا، کیا آپ انھیں جانتے ہیں؟"

[illegible]

मुँह पर दायीं तरफ़ एक मस्सा है."

"है."

"उसका रंग गोरा है और उसकी शकल......"

"उसकी शकल" हसन ने एकाएक अब्बा की तरफ़ देखा. जैसे बिजली कौंदी हो. आपरेशन करते समय उसके मन में यह विचार आया था कि इसकी शकल तो अब्बा से मिलती है. अब्बा उसी तेज़ी से बोले—"हाँ, मेरी तरफ़ देखो, उसकी शकल कुछ कुछ मुझसे मिलती है ?"

हसन काँपा—"अब्बा......"

अब्बा अपनी सुध बुध खोरहे थे. उनके चेहरे की झुर्रियों में नफ़रत उभरती आरही थी. उन्होंने जलती हुई आँखों से हसन की तरफ़ देखा और कहा—"हाँ, मैं कानपुर के रामप्रसाद को जानता हूँ और मैं उससे नफ़रत करता हूँ......"

हसन जैसे पागल हो चला था—"आप उनसे नफ़रत करते हैं, क्यों......?"

"हाँ, मैं उससे नफ़रत करता हूँ और उसके मरने का मुझे ज़रा भी रंज नहीं है."

वह बुरी तरह काँपने लगे थे. उनकी आँखों में गुस्से और जोश के कारन पानी भर आया था. पर हसन को जैसे कुछ याद आरहा था. कुछ, वह जो प्यारा होकर भी कड़ुआ था, उसके अब्बा की इस बेचैनी का कारन था. 'अब्बा की बेचैनी'—वह आहिस्ता से अपने आप से बोला—'नहीं, वह केवल अब्बा की बेचैनी नहीं है, यह तो...

منہ پر دائیں طرف ایک مسّا ہو۔"

"ہو۔"

"اس کا رنگ گورا ہو اور اس کی شکل......"

"اس کی شکل" حسن نے یکایک ابا کی طرف دیکھا۔ جیسے بجلی کوندی ہو۔ آپریشن کرتے سمے اس کے من میں یہ وچار آیا تھا کہ اس کی شکل تو ابا سے ملتی ہو۔ ابا اسی تیزی سے بولے۔ "ہاں، میری طرف دیکھو، اس کی شکل کچھ کچھ مجھ سے ملتی ہو؟"

حسن کانپا۔ "ابا......"

ابا اپنی سدھ بدھ کھو رہے تھے۔ ان کے چہرے کی جھریوں میں نفرت ابھرتی آ رہی تھی۔ انھوں نے جلتی ہوئی آنکھوں سے حسن کی طرف دیکھا اور کہا۔ "ہاں، میں کانپور کے رام پرساد کو جانتا ہوں اور میں اس سے نفرت کرتا ہوں......"

حسن جیسے پاگل ہو چلا تھا۔ "آپ ان سے نفرت کرتے ہیں، کیوں......؟"

"ہاں، میں اس سے نفرت کرتا ہوں اور اس کے مرنے کا مجھے ذرا بھی رنج نہیں ہو۔"

وہ بری طرح کانپنے لگے تھے۔ ان کی آنکھوں میں غصے اور جوش کے کارن پانی بھر آیا تھا۔ پر حسن کو جیسے کچھ یاد آ رہا تھا۔ کچھ، وہ جو پیارا ہو کر بھی کڑوا تھا، اس کے ابا کی اس بے چینی کا کارن تھا۔ "ابا کی بے چینی" وہ آہستہ سے اپنے آپ سے بولا۔ "نہیں، یہ کیول ابا کی بے چینی نہیں ہو، یہ تو......"

ठीक उसी समय अन्दर के कमरे के किवाड़ भड़भड़ा कर खुल गये. सबकी नज़रें उस ओर उठीं. देखा, नौकर के कन्धे पर हाथ रखे डा० हसन के बूढ़े दादा अन्दर चले आये हैं. उनके बाल सफ़ेद हो चुके थे और कमर झुक गई थी. उनके हाथ पैर लड़खड़ाते थे और आँखें देखने से इन्कार कर चुकी थीं. उन्हें देखकर हसन के अब्बा घबरा कर उठे और दोनों हाथों से थाम कर उन्हें पलंग पर ले आये. बोले—"आज आप इतनी सरदी में क्यों उठे."

दादा ने कुछ नहीं सुना और लड़खड़ाते हुये कहा—"अनवर तुमने अभी किसका नाम लिया था. कौन आया है ?"

"कोई नहीं, अब्बा." हसन के अब्बा अनवर ने शान्ति से जवाब दिया—"यहाँ तो हसन के साथी शर्मा साहब बैठे हैं."

"नहीं अनवर, मैंने अच्छी तरह सुना तुम उसका नाम ले रहे थे."

डाक्टर शर्मा एक अजीब भूलभुलैयाँ में फँस गये थे. वह कभी हसन की ओर देखते कभी अब्बा को, और कभी बाबा को. पर उनकी समझ में कुछ नहीं आरहा था. हसन चुपचाप जेब में हाथ डाले बाबा पर नज़र गड़ाये हुये था. उसके मुख पर अब थकान नहीं थी, बल्कि एक गहरे दर्द ने उसे परेशान कर दिया था. इसके ख़िलाफ़ उस के अब्बा की नफ़रत गहरी होती जारही थी और बाहर हवा उसी तेज़ी से सर पटक रही थी. अनवर ने अब्बा को आराम से सहेज कर पलंग पर लिटा दिया और फिर धीरे धीरे चारों ओर से कम्बल ढकने लगे.

ٹھیک اُسی وقت اندر کے کمرے کے کواڑ بھڑ بھڑا کر کھل گئے. سب کی نظریں اُس اور اُٹھیں. دیکھا، نوکر کے کندھے پر ہاتھ رکھے ڈاکٹر حسن کے بوڑھے دادا اندر چلے آئے ہیں. اُن کے بال سفید ہو چکے تھے اور کمر جھک گئی تھی. اُن کے ہاتھ پیر لڑکھڑاتے تھے اور آنکھیں دیکھنے سے انکار کر چکی تھیں. انھیں دیکھ کر حسن کے ابا گھبرا کر اٹھے اور دونوں ہاتھوں سے تھام کر انھیں پلنگ پر لے آئے. بولے۔ "آج آپ اتنی سردی میں کیوں اٹھے"

دادا نے کچھ نہیں سُنا اور لڑکھڑاتے ہوئے کہا۔ "انور تم نے ابھی کس کا نام لیا تھا. کون آیا ہے؟"

"کوئی نہیں، ابا." حسن کے ابا انور نے شانتی سے جواب دیا۔ "یہاں تو حسن کے ساتھی شرما صاحب بیٹھے ہیں."

"نہیں انور، میں نے اچھی طرح سُنا تم اُس کا نام لے رہے تھے."

ڈاکٹر شرما ایک عجیب بھول بھلیاں میں پھنس گئے تھے. وہ کبھی حسن کی اور دیکھتے کبھی ابا کو، اور کبھی بابا کو. پر اُن کی سمجھ میں کچھ نہیں آرہا تھا. حسن چپ چاپ جیب میں ہاتھ ڈالے بابا پر نظر گڑائے ہوئے تھا. اُس کے مکھ پر اب تھکان نہیں تھی، بلکہ ایک گہرے درد نے اُسے پریشان کر دیا تھا. اِس کے خلاف اُس کے ابا کی نفرت گہری ہوتی جا رہی تھی اور باہر ہوا اُسی تیزی سے سر پٹک رہی تھی. انور نے ابا کو آرام سے سہیج کر پلنگ پر لٹا دیا اور پھر دھیرے دھیرے چاروں اور سے کمبل ڈھکنے لگے.

दादा उसी तरह बोले—"अनवर तू बोलता क्यों नहीं ?"

"अब्बा........."

"हाँ वह कहाँ है ? तू उसका नाम क्यों ले रहा था ?"

अनवर की आवाज़ कुछ लड़खड़ायी. उन्होंने कहा—"अब्बा वह यहाँ नहीं आये"

"तो....... ?"

"अस्पताल में हैं.''

दादा की आवाज़ एकाकए और भी दर्दनाक हो उठी—"क्या··· क्या कहा—अस्पताल में ?..... क्यों.....?"

जब हसन से नहीं रहा गया. तो आगे बढ़कर उसने कहा—"हाँ दादा, कानपुर वाले रामप्रसाद अस्पताल में पड़े हैं जख्मी होगये थे, लेकिन अब बेहतर हैं." सुनकर दादा ने कम्बल को दूर फेंक दिया और लड़खड़ाते हुये बोले—"रामप्रसाद जख्मी होगया......कैसे हुआ.....किसने किया........ ?"

"शहर में जो दंगा हो रहा है उसी में......"

"मुसलमानों ने उसे मारा" दादा ने अब सब कुछ समझ कर कहा. और पलभर के लिये ऐसे हो गये जैसे प्राण ने साथ छोड़ दिया. फिर उनकी आँखों से आंसू बहने लगे. आवाज़ भर गई. बोले—"अनवर उसे मुसलमानों ने मार डाला और तुमने मुझे बताया भी नहीं. तुमने........."

"दादा, मैं उनको जानता नहीं था."

"पर तूने कहा, वह अभी जिन्दा है."

"हाँ, दादा."

"अस्पताल में ?"

دادا اسی طرح بولے — "انور تو بولتا کیوں نہیں؟"

"ابا......"

"ہاں وہ کہاں ہے؟ تو اس کا نام کیوں لے رہا تھا؟"

انور کی آواز کچھ لڑکھڑائی. انھوں نے کہا — "ابا وہ یہاں نہیں آئے."

"تو......؟"

"اسپتال میں ہیں."

دادا کی آواز یکایک اور بھی دردناک ہو اٹھی — "کیوں..... کیا کہا — اسپتال میں؟..... کیوں.....؟"

جب حسن سے نہیں رہا گیا. تو آگے بڑھ کر اس نے کہا — "ہاں دادا، کانپور والے رام پرساد اسپتال میں پڑے ہیں زخمی ہو گئے تھے، لیکن اب بہتر ہیں." سن کر دادا نے کمبل کو دور پھینک دیا اور لڑکھڑاتے ہوئے بولے — "رام پرساد زخمی ہو گیا..... کیسے ہوا..... کس نے کیا......؟"

"شہر میں جو دنگا ہو رہا ہے اسی میں......"

"مسلمانوں نے اسے مارا" دادا نے اب سب کچھ سمجھ کر کہا. اور پل بھر کے لئے ایسے ہو گئے جیسے پران نے ساتھ چھوڑ دیا. پھر ان کی آنکھوں سے آنسو بہنے لگے. آواز بھر گئی. بولے — "انور اسے مسلمانوں نے مار ڈالا اور تم نے مجھے بتایا بھی نہیں. تم نے......"

"دادا، میں ان کو جانتا نہیں تھا."

"پر تو نے کہا، وہ ابھی زندہ ہے."

"ہاں، دادا."

"हाँ, दादा."

"तो हसन, मेरे बच्चे?" उन्हों ने उठने की कोशिश करते हुये कहा—"तू मुझे उसके पास ले चल. मैं एक बार उसे देखूंगा. वह मेरा बेटा है, मेरा बड़ा बेटा....." कहते-कहते दादा फूट फूट कर रोने लगे. उनसे उठा नहीं गया. कटे हुये पेड़ की तरह वहीं लुढ़क गये. अनवर ने उन्हें देखा और पुकार उठे—"हसन, जल्दी करो अब्बा को ग़श आगया है."

हसन न काँपा, न घबराया. आगे बढ़ कर उसने आलमारी में से दवा निकाली और उसे प्याले में डालते डालते बोला—"शर्मा, क्या तुम इन्जेक्शन तैयार नहीं कर दोगे?"

"ज़रूर कर दूगाँ." शर्मा, जो अब सब कुछ समझ गया था, बोला और उठ कर सिरिंज में सुई साफ़ करने लगा. हसन ने दवा दादा के गले में डाली. फिर पुकारा—"दादा!"

कोई आवाज़ नहीं.

"दादा आ...."

अनवर ने पुकारा—"अब्बा....."

धीरे धीरे उनको होश आया. होंठ फड़फड़ाये. बोले—"कहाँ है वह? मेरा बेटा..मेरा बेटा.."

"अब्बा......"

"मैं उसके पास आऊँगा."

हसन ने कान के पास मुँह लेजाकर धीरे से कहा—"अभी चलते हैं, दादा! आप ज़रा अपने को संभालिये तो...."

उन्होंने उसी तरह कांपते हुये कहा—"मैं होश में हूं, मेरे बच्चे.

"ہاں، دادا۔"

"تو حسن، میرے بچے؟" انھوں نے اٹھنے کی کوشش کرتے ہوئے کہا — "تو مجھے اس کے پاس لے چل۔ میں ایک بار اسے دیکھوں گا۔ وہ میرا بیٹا ہے، میرا بڑا بیٹا....." کہتے کہتے دادا پھوٹ پھوٹ کر رونے لگے۔ ان سے اٹھا نہیں گیا۔ کٹے ہوئے پیڑ کی طرح وہیں لڑھک گئے۔ انور نے انھیں دیکھا اور پکار اٹھے "حسن جلدی کرو ابا کو غش آگیا ہے۔"

حسن نہ کانپا، نہ گھبرایا۔ آگے بڑھ کر اس نے الماری میں سے دوا نکالی اور اسے پیالے میں ڈالتے ڈالتے بولا — "شرما کیا تم انجکشن تیار نہیں کرو گے؟"

"ضرور کر دوں گا۔" شرما، جو اب سب کچھ سمجھ گیا تھا، بولا اور اٹھ کر سرنج میں سوئی صاف کرنے لگا۔ حسن نے دوا دادا کے گلے میں ڈالی۔ پھر پکارا — "دادا!"

کوئی آواز نہیں۔

"دادا!....."

انور نے پکارا — "ابا....."

دھیرے دھیرے ان کو ہوش آیا۔ ہونٹھ پھڑپھڑائے۔ بولے — "کہاں ہے وہ؟ میرا بیٹا.. میرا بیٹا.."

"ابا......"

"میں اس کے پاس جاؤں گا۔"

حسن نے کان کے پاس منہ لے جا کر دھیرے سے کہا — "ابھی چلتے ہیں، دادا! آپ ذرا اپنے کو سنبھالیے تو....."

انھوں نے اسی طرح کانپتے ہوئے کہا — "میں ہوش میں ہوں، میرے بچے۔

मैं उसके पास जाऊंगा. आखिर वह मेरा बेटा है, कोई गैर नहीं. मैं मुसलमान हूं और वह हिन्दू. वह मुझसे, मेरे बच्चों से नफरत करता है.पर.....पर वह भी मेरा बच्चा है.मैं उससे नफ़रत नहीं करता हसन""हसन""

"हां दादा."

"हसन मैं उससे पूछूंगा. मैं मुसलमान होगया तो क्या हुआ. हमारा बाप बेटे का नाता तो नहीं टूट सकता. आखिर उसकी रगों में अब भी मेरा खून बहता है, इतना ही जितना अनवर की रगों में बहता है, शायद ज्यादा........"

उनकी आवाज़ फिर धीमी पड़ रही थी. वह रो रो उठते थे. दोनों डाक्टर उनके ऊपर झुके हुये थे और अनवर ने उनकी नाड़ी संभाल रक्खी थी.

बाहर अंधेरा बढ़ा आ रहा था और हवा शान्त पड़ रही थी. अन्दर बेगम आंखों में आंसू भरे दुखी दिल से चाय लिये बैठी थीं. और वह चाय न जाने कब की ठण्डी होकर काली पड़ गई थी.

میں اس کے پاس جاؤں گا. آخر وہ میرا بیٹا ہے، کوئی غیر نہیں، میں مسلمان ہوں اور وہ ہندو. وہ مجھ سے، میرے بچوں سے نفرت کرتا ہے. پر..... پر وہ بھی میرا بچہ ہے. میں اس سے نفرت نہیں کرتا حسن... حسن..."

"ہاں دادا."

"حسن میں اس سے پوچھوں گا. میں مسلمان ہوگیا تو کیا ہوا. ہمارا باپ بیٹے کا ناتا تو نہیں ٹوٹ سکتا. آخر اس کی رگوں میں اب بھی میرا خون بہتا ہے، اتنا ہی جتنا انور کی رگوں میں بہتا ہے. شاید زیادہ......"

ان کی آواز پھر دھیمی پڑ رہی تھی. وہ رو رو اٹھتے تھے. دونوں ڈاکٹر ان کے اوپر جھکے ہوئے تھے اور انور نے ان کی نبض سنبھال رکھی تھی.

باہر اندھیرا بڑھا آ رہا تھا اور ہوا شانت پڑ رہی تھی. اندر بیگم آنکھوں میں آنسو بھرے دکھی دل سے چائے لئے بیٹھی تھیں. اور وہ چائے نہ جانے کب کی ٹھنڈی ہوکر کالی پڑ گئی تھی.

हिन्दू मुसलमान

(डाक्टर सैयद महमूद)

मुसलमान जब पहले पहल इस देश के दक्खिनी भाग में आये तो उनके पास न कोई सरकार थी और न वह कोई फ़ौज अपने साथ लाये थे. वह इस देश में इन्सानों का आपस का ऊँच नीच का भेद मिटाने और सब इन्सानों को बराबर समझने का सबक़ देते हुए आये और इस देश के रहने वालों के साथ भाई भाई बनकर रहे. उन्हों ने जब इस मुल्क को अपना वतन बनाया तो इसलामी तहज़ीब और इसलामी तमद्दुन को हिन्दू सभ्यता और हिन्दू संस्कृति से इस तरह मिला दिया कि आज कोई आदमी पूरी कोशिश के बाद भी इसलामी तहज़ीब को हिन्दुस्तानी तहज़ीब से अलग नहीं कर सकता. अफ़सोस है कि सैकड़ों बरस तक लोगों को हिन्दुस्तान का सही इतिहास पढ़ने का मौक़ा नहीं मिला. जब इस देश में अंगरेज़ों का राज क़ायम हो गया तो उन्होंने ख़ास तौर पर ऐसी ऐसी तारीख़ की किताबें तैयार कराईं जिनसे हिन्दू मुसलमानों के दिलों में मैल और खोट पैदा हो. उन्हों ने तारीख़ की किताबों में ऐसी बातें और ऐसी घटनायें दिखाईं जिनसे हिन्दू मुसलमान दोनों के दिलों में नफ़रत और वैर के बीज पलते बढ़ते रहे. इसका नतीजा यह हुआ कि आज हिन्दू और मुसलमान एक दूसरे के दुश्मन बन गये. यह अंगरेज़ी इतिहासों का ही फल है. मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि ईलियट की मशहूर

ہندو مسلمان

(ڈاکٹر سید محمود)

مسلمان جب پہلے پہل اس دیش کے دکھنی بھاگ میں آئے تو ان کے پاس نہ کوئی سرکار تھی اور نہ وہ کوئی فوج اپنے ساتھ لائے تھے۔ وہ اس دیش میں انسانوں کا آپس کا اونچ نیچ کا بھید مٹانے اور سب انسانوں کو برابر سمجھنے کا سبق دیتے ہوئے آئے اور اس دیش کے رہنے والوں کے ساتھ بھائی بھائی بن کر رہے۔ انھوں نے جب اس ملک کو اپنا وطن بنایا تو اسلامی تہذیب اور اسلامی تمدن کو ہندو سبھیتا اور ہندو سنسکرتی سے اس طرح ملا دیا کہ آج کوئی آدمی پوری کوشش کے بعد بھی اسلامی تہذیب کو ہندستانی تہذیب سے الگ نہیں کر سکتا۔ افسوس ہے کہ سیکڑوں برس تک لوگوں کو ہندستان کا صحیح اتہاس پڑھنے کا موقع نہیں ملا۔ جب اس دیش میں انگریزوں کا راج قایم ہو گیا تو انھوں نے خاص طور پر ایسی ایسی تاریخ کی کتابیں تیار کرائیں جن سے ہندو مسلمانوں کے دلوں میں میل اور کھوٹ پیدا ہو۔ انھوں نے تاریخ کی کتابوں میں ایسی باتیں اور ایسی گھٹنائیں دکھائیں جن سے ہندو مسلمان دونوں کے دلوں میں نفرت اور بیر کے بیج پلتے بڑھتے رہے۔ اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ آج ہندو اور مسلمان ایک دوسرے کے دشمن بن گئے۔ یہ انگریزی اتہاسوں کا ہی پھل ہے۔ میں آپ کو یاد دلانا چاہتا ہوں کہ ایلیٹ کی مشہور

तारीख़ इसी ग़रज़ से लिखी गई थी. उसने अपनी किताब की शुरुआत में साफ़ साफ़ लिखा है कि मेरी ग़रज़ शहन्शाही नुक़्त-ए-नज़र (दृष्टि कोण) से हिन्दुस्तान की तारीख़ पेश करना है.

लेकिन वह सारी कोशिश भी जो अंगरेज़ी राज में हिन्दू मुसलमानों में फूट डालने के लिये की गई, हिन्दू मुस्लिम तहज़ीब और संस्कृति को एक दूसरे से अलग करने में कामयाब न हो सकी. हिन्दू मुस्लिम तहज़ीब के मेल जोल से हिन्दुस्तान में एक नई सभ्यता बनी जो इस देश के कोने कोने में फैली हुई है और जिसको हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का ग़ैर क़ुदरती बँटवारा भी नहीं मिटा सकता ! जामे मसजिद देहली और आगरे का ताजमहल किसी के मिटाये नहीं मिट सकते. जामे मसजिद देहली एक मज़हबी इमारत है लेकिन उससे भी हिन्दू मुस्लिम तमद्दुनी या सांस्कृतिक एकता टपकती है. इमारत बनाने की इस कला को कोई बाँट नहीं सकता. अंगरेज़ों ने जो पालिसी बरती है उसका नतीजा यह हुआ कि उसने बीच के मेल जोल के एक हज़ार बरस को छोड़ कर हिन्दुओं की निगाहें दो तीन हज़ार बरस पीछे कर दीं. हिन्दू मुस्लिम तहज़ीब के मेल जोल का असर यह हुआ कि हिन्दुस्तान बीसवीं सदी का साथ दे सका. अगर मुसलमानों की यह बीच की कड़ी न होती तो इस बात में शक है कि हिन्दुस्तान आज बीसवीं सदी का साथ दे सकता.

हिन्दुस्तान में मुसलमानों ने कभी मज़हब के लिये जंग नहीं की. इस देश में जितनी लड़ाइयाँ हिन्दुओं और मुसलमानों में हुईं वह हुकूमत और राजकाजी बुनियादों पर लड़ी जाती रही

تاریخ اسی غرض سے لکھی گئی تھی۔ اس نے اپنی کتاب کی شروعات میں صاف صاف لکھا ہے کہ میری غرض شہنشاہی نقطۂ نظر (درشٹی کون) سے ہندستان کی تاریخ پیش کرنا ہے۔

لیکن وہ ساری کوشش بھی جو انگریزی راج میں ہندو مسلمانوں میں پھوٹ ڈالنے کے لئے کی گئی، ہندو مسلم تہذیب اور سنسکرتی کو ایک دوسرے سے الگ کرنے میں کامیاب نہ ہو سکی۔ ہندو مسلم تہذیب کے میل جول سے ہندستان میں ایک نئی سبھیتا بنی جو اس دیش کے کونے کونے میں پھیلی ہوئی ہے اور جس کو ہندستان اور پاکستان کا غیر قدرتی بٹوارہ بھی نہیں مٹا سکتا! جامع مسجد دہلی اور آگرے کا تاج محل کسی کے مٹائے نہیں مٹ سکتے۔ جامع مسجد دہلی ایک مذہبی عمارت ہے لیکن اس سے بھی ہندو مسلم تمدنی یا سنسکرتک ایکتا ٹپکتی ہے۔ عمارت بنانے کی اس کلا کو کوئی بانٹ نہیں سکتا۔ انگریزوں نے جو پالیسی برتی ہے اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ اس نے بیچ کے میل جول کے ایک ہزار برس کو چھوڑ کر ہندوؤں کی نگاہیں دو تین ہزار برس پیچھے کر دیں۔ ہندو مسلم تہذیب کے میل جول کا اثر یہ ہوا کہ ہندستان بیسویں صدی کا ساتھ دے سکا۔ اگر مسلمانوں کی یہ بیچ کی کڑی نہ ہوتی تو اس بات میں شک ہے کہ ہندستان آج بیسویں صدی کا ساتھ دے سکتا۔

ہندستان میں مسلمانوں نے کبھی مذہب کے لئے جنگ نہیں کی۔ اس دیش میں جتنی لڑائیاں ہندوؤں اور مسلمانوں میں ہوئیں وہ حکومت اور راج کاجی بنیادوں پر لڑی جاتی رہی

हैं और उनमें हिन्दुओं के साथ मुसलमान भी होते और मुसलमानों के साथ हिन्दू भी. एक गिरोह दूसरे गिरोह से इसलिए लड़ता कि वह एक राज को उखाड़ दे और दूसरी हकूमत क़ायम करे. इसमें मजहब का कोई सवाल न था. अगरचे देशों को जीतने का मक़सद हासिल करने के लिये कभी कभी मजहब का नाम ले लिया जाता था, जैसा कि महमूद ग़ज़नवी और तैमूर ने किया. अगरचे तैमूर की ग़रज़ सिर्फ़ इतनी थी कि वह हिन्दुस्तान को जीत ले. लेकिन उसने इसके लिये मजहब का नाम लिया और यहाँ के मुसलमान हाकिमों और हिन्दुस्तानी मुसलमानों पर यह इलज़ाम लगाया कि उन्हों ने हिन्दुओं से इतना मेल कर लिया है कि वह बिलकुल हिन्दू हो गये हैं. लेकिन महमूद और तैमूर दोनों हिन्दुस्तानी नहीं थे. औरंगजेब को कभी यह हिम्मत न हुई कि मजहब के नाम पर कोई लड़ाई लड़ता. और-गजेब को तो ज्यादा तर अपने खानदान वालों या दक्खिन के मुसलमान बादशाहों से लड़ना पड़ा. मुसलमान हिन्दू भाई भाई की तरह मिलते. मेले ठेले और त्योहारों में हर जगह हिन्दू मुस्लिम एकता का नज़ारा दिखाई देता. आठ सौ बरस के इतिहास में हिन्दू मुसलमानों के बीच सिर्फ़ दो बलवे हुए. यह दो बलवे जिसका ज़िक्र तारीख में मिलता है, मुग़लों के बिलकुल आखिरी दौर यानी फ़र्रुख सियर के समय में हुए. एक अहमदाबाद और दूसरा काश्मीर में. इन दोनों बलवों में मुसलमानों का क़सूर साबित हुआ और उनको सख्त सजायें दी गईं.

हम बिना किसी शक व शुबह के कह सकते हैं कि उस जमाने

ہیں اور اُن میں ہندوؤں کے ساتھ مسلمان بھی ہوتے اور مسلمانوں کے ساتھ ہندو بھی۔ ایک گروہ دوسرے گروہ سے اس لئے لڑتا کہ وہ ایک راج کو اُکھاڑ دے اور دوسری حکومت قایم کرے۔ اس میں مذہب کا کوئی سوال نہ تھا۔ اگرچہ دیشوں کو جیتنے کا مقصد حاصل کرنے کے لئے کبھی کبھی مذہب کا نام لے لیا جاتا تھا، جیسا کہ محمود غزنوی اور تیمور نے کیا۔ اگرچہ تیمور کی غرض صرف اتنی تھی کہ وہ ہندستان کو جیت لے۔ لیکن اُس نے اس کے لئے مذہب کا نام لیا اور یہاں کے مسلمان حاکموں اور ہندستانی مسلمانوں پر یہ الزام لگایا کہ انھوں نے ہندوؤں سے اتنا میل کر لیا ہے کہ وہ بالکل ہندو ہوگئے ہیں۔ لیکن محمود اور تیمور دونوں ہندستانی نہیں تھے۔ اورنگ زیب کو کبھی یہ ہمت نہ ہوئی کہ مذہب کے نام پر کوئی لڑائی لڑتا۔ اورنگ زیب کو تو زیادہ تر اپنے خاندان والوں یا دکھن کے مسلمان بادشاہوں سے لڑنا پڑا۔ مسلمان ہندو بھائی بھائی کی طرح ملتے۔ میلے ٹھیلے اور تیوہاروں میں ہر جگہ ہندو مسلم ایکتا کا نظارا دکھائی دیتا۔ آٹھ سو برس کے اتہاس میں ہندو مسلمانوں کے بیچ صرف دو بلوے ہوئے۔ یہ دو بلوے جن کا ذکر تاریخ میں ملتا ہے، مغلوں کے بالکل آخری دور یعنی فرخ سیر کے سمے میں ہوئے۔ ایک احمد آباد اور دوسرا کشمیر میں۔ ان دونوں بلووں میں مسلمانوں کا قصور ثابت ہوا اور اُن کو سخت سزائیں دی گئیں۔

ہم بنا کسی شک و شبہ کے کہہ سکتے ہیں کہ اُس زمانے

के लिहाज़ से मुसलमानों की हकूमत एक तरह की क़ौमी सरकार थी. हिन्दू मुसलमान मिल कर उस सरकार को चलाते थे और दोनों एक सा फ़ायदा उठाते थे. उस सरकार का आम मक़सद हर तरह जनता और देश को फ़ायदा पहुँचाना और सब के साथ बराबर इन्साफ़ करना हुआ करता था. अगर बाहर का कोई दुशमन मुल्क के अमन को ख़तरे में डाल देता तो सब मिलकर उसका मुक़ाबला करते. नादिरशाह के हमले के वक़्त सिंध्या को पेशावा ने एक ख़त लिखा था कि इस देश में दो दुशमन आरहे हैं. एक पुर्तगेज़ और दूसरा नादिर, अगर हमने मिल कर मुक़ाबला न किया तो डर है कि मुग़लों की हकूमत कहीं बरबाद न हो जाय.

अंगरेज़ों ने अपनी हकूमत को मज़बूत करने के लिये मुसलमानों को कुचलना शुरू किया और सन् १८८५ ई० तक उन्हों ने हिन्दुओं को बढ़ाया. अंगरेज़ी हकूमत के शुरू ज़माने से हिन्दुओं को हर क़िस्म की तरक़्क़ी के मौक़े मिलते रहे और वह आगे बढ़ते गये. जब दौलत और तालीम के कारन हिन्दुओं में काफ़ी तरक़्क़ी हो गई और वह सरकार पर नुक्ता चीनी करने लगे तो अंगरेज़ हाकिम घबराने लगे. जब सन् १८८५ में कांग्रेस की नींव डाली गई तो अंगरेज़ों की आँखें खुलीं और उन्होंने कहना शुरू किया कि अब तो 'बाबू' हमारा मुक़ाबला करना चाहता है. इसके बाद उन्हों ने मुसलमानों की तरफ़ ध्यान देना शुरू किया. चन्द नौकरियाँ और कुछ रिआयतें देकर अंगरेज़ों ने हिन्दुओं को बढ़ाया था, फिर मुसलमानों में अपने पिछड़े और

کے لحاظ سے مسلمانوں کی حکومت ایک طرح کی قومی سرکار تھی۔ ہندو مسلمان مل کر اس سرکار کو چلاتے تھے اور دونوں ایک سا فائدہ اٹھاتے تھے۔ اس سرکار کا عام مقصد ہر طرح جنتا اور دیش کو فائدہ پہنچانا اور سب کے ساتھ برابر انصاف کرنا ہوا کرتا تھا۔ اگر باہر کا کوئی دشمن ملک کے امن کو خطرے میں ڈال دیتا تو سب مل کر اس کا مقابلہ کرتے۔ نادر شاہ کے حملے کے وقت سندھیا کو پیشوا نے ایک خط لکھا تھا کہ اس دیش میں دو دشمن آرہے ہیں۔ ایک پرتگیز اور دوسرا نادر، اگر ہم نے مل کر مقابلہ نہ کیا تو ڈر ہے کہ مغلوں کی حکومت کہیں برباد نہ ہو جائے۔

انگریزوں نے اپنی حکومت مضبوط کرنے کے لئے مسلمانوں کو کچلنا شروع کیا اور ۱۸۸۵ء تک انھوں نے ہندوؤں کو بڑھایا۔ انگریزی حکومت کے شروع زمانے سے ہندوؤں کو ہر قسم کی ترقی کے موقع ملتے رہے اور وہ آگے بڑھتے گئے۔ جب دولت اور تعلیم کے کارن ہندوؤں میں کافی ترقی ہو گئی اور وہ سرکار پر نکتہ چینی کرنے لگے تو انگریز حاکم گھبرانے لگے۔ جب ۱۸۸۵ء میں کانگریس کی نیو ڈالی گئی تو انگریزوں کی آنکھیں کھلیں اور انھوں نے کہنا شروع کیا کہ اب تو 'بابو' ہمارا مقابلہ کرنا چاہتا ہے۔ اس کے بعد انھوں نے مسلمانوں کی طرف دھیان دینا شروع کیا۔ چند نوکریاں اور کچھ رعایتیں دے کر انگریزوں نے ہندوؤں کو بڑھایا تھا، پھر مسلمانوں میں اپنے پچھڑے اور

गिरे होने का ख़याल पैदा करके उन्हीं नौकरियों और रिआयतों के लिये उन्हें हिन्दुओं से लड़वा दिया और इस तरह मुसलमानों को और भी पस्त और छिछोरा बना दिया. मुझे डर है कि कहीं फिर मुसलमान उसी तरह और न गिर जायें जैसे अंगरेज़ों की पालिसी से बन गये थे. पन्द्रह आना बड़ी बड़ी नौकरियाँ जो अंगरेज़ों की जेब में थीं वह तो न मिलीं पर एक आना जो हिन्दुओं को मिला था उस पर मुसलमानों की नज़र दौड़ाई. नौकरियों के महफ़ूज़ रहने से किसी क़ौम का कैरेक्टर नहीं बनता बल्कि दिन पर दिन बिगड़ता जाता है. पहली ग़लती मुसलमानों ने यह की कि उस एक आना नौकरी में हिस्सा बँटवाने के लिये अंगरेज़ों के दरबार में सिर झुका कर हिन्दुओं से लड़े और अपने को दिन पर दिन ज़लील व ख़्वार करते गये. मुसलमानों को अब यह पालिसी छोड़नी होगी.

हिन्दुओं के दिमाग़ को अंगरेज़ों ने तरह तरह से बहकाया और प्राचीन सभ्यता को फिर से वापस लाने की तरफ़ तवज्जह दिलाई. हिन्दू और मुसलमानों के कलचरी और समाजी तौर पर अलग होने का प्रोपैगन्डा शुरू किया और मुसलमानों ने उसे सच मान लिया. ज़िन्दगी के हर मैदान में अंगरेज़ों ने हिन्दू मुसलमानों का अलग अलग हिस्सा मुक़र्रर करना शुरू किया. नतीजा यह हुआ कि मुसलमान भी विश्वास करने लगे कि हिन्दू और मुसलमान सचमुच न सिर्फ़ मुल्की और सरकारी बल्कि समाजी और कलचरी एतबार से भी दो अलग अलग क़ौमें हैं. यहाँ तक कि मुसलमानों की बहुत बड़ी तादाद उस मुल्क के

گرے ہونے کا خیال پیدا کر کے انھیں نوکریاں اور رعایتوں کے لئے انھیں ہندوؤں سے لڑوا دیا اور اس طرح مسلمانوں کو اور بھی پست اور چھچھورا بنا دیا۔ مجھے ڈر ہے کہ کہیں پھر مسلمان اسی طرح اور نہ گر جائیں جیسے انگریزوں کی پالیسی سے بن گئے تھے۔ پندرہ آنہ بڑی بڑی نوکریاں جو انگریزوں کے جیب میں تھیں وہ تو نہ ملیں پر ایک آنہ جو ہندوؤں کو ملا تھا۔ اس پر مسلمانوں کی نظر دوڑائی۔ نوکریوں کے محفوظ رہنے سے کسی قوم کا کیریکٹر نہیں بنتا بلکہ دن پر دن بگڑتا جاتا ہے۔ پہلی غلطی مسلمانوں نے یہ کی کہ اس ایک آنہ نوکری میں حصہ بٹوانے کے لئے انگریزوں کے دربار میں سر جھکا کر ہندوؤں سے لڑے اور اپنے کو دن پر دن ذلیل و خوار کرتے گئے۔ مسلمانوں کو اب یہ پالیسی چھوڑنی ہوگی۔

ہندوؤں کے دماغ کو انگریزوں نے طرح طرح سے بہکایا اور پراچین سبھیتا کو پھر سے واپس لانے کی طرف توجہ دلائی۔ ہندو اور مسلمانوں کے کلچری اور سماجی طور پر الگ ہونے کا پروپیگنڈا شروع کیا اور مسلمانوں نے اسے سچ مان لیا۔ زندگی کے ہر میدان میں انگریزوں نے ہندو مسلمانوں کا الگ الگ حصہ مقرر کرنا شروع کیا۔ نتیجہ یہ ہوا کہ مسلمان بھی وشواس کرنے لگے کہ ہندو اور مسلمان سچ مچ نہ صرف ملکی اور سرکاری بلکہ سماجی اور کلچری اعتبار سے بھی دو الگ الگ قومیں ہیں۔ یہاں تک کہ مسلمانوں کی بہت بڑی تعداد اس ملک کے

बँटवारे का भी नारा लगाने लगी, जिसको उनके बुजुर्गों ने अपने खून और पसीने से एक बना कर दिखा दिया था. इस मुल्क को एक बनाने में मुसलमानों ने बहुत बड़े बड़े काम अंजाम दिये थे और बजाय इसके कि वह इस पर फ़ख़्र करते, सिरे से इस मुल्क की एकाई से इनकार करके इसके बँटवारे पर ही तुल गये. उन्हों ने अपनी अमली ताक़त और क़ाबलियत के बढ़ाने में ग़फ़लत की. आज उनमें जो निराशा और कमज़ोरी है वह वही ग़फ़लत है जिसकी उन्होंने आदत डाली है. लोग या क़ौमें उसी वक़्त तरक़्क़ी करती हैं जब कि वह जिन्दगी की खींचा तानी में एक दूसरे से टकराती और मुक़ाबला करती रहती हैं. अंगरेज़ों ने हिन्दुओं के मुक़ाबले से मुसलमानों को डराया. मुसलमानों ने कभी अपनी तादाद के कम होने का ख़याल नहीं किया था लेकिन अंगरेज़ों ने यह सवाल पैदा कर दिया. मुसलमानों के दिमाग़ों में हिन्दुओं का ज़्यादा तादाद का डर बैठाया और नौकरियों वग़ैरा में जगहें महफ़ूज़ (सुरच्चित) रखने की लोहे की दीवारें खड़ी कर दीं जिसमें कि उनको मुक़ाबले की हवा भी न लगे. यह नशा इस तरह पिलाया गया कि आजतक उतर न सका. नौकरियाँ और सीटें, बस इसी पर उनकी नज़रें जमी रहीं. उसने ऊँची ऊँची चीज़ों पर से उनकी नज़रें हटा दीं. हिन्दुओं का डर और ज़्यादा रिआयतें हासिल करने की कोशिश, बस यही दो चीज़ें उनके सामने रहीं. पिछले दस बारह बरस में मुसलमान और भी गिरते गये. मैं किसी ख़ास आदमी पर इस ग़लती का इलज़ाम नहीं धरता, जहाँ लोग ग़लती करते हैं वहाँ

بٹوارے کا بھی نعرہ لگانے لگی، جس کو اُن کے بزرگوں نے اپنے خون اور پسینے سے ایک بنا کر دکھا دیا تھا. اِس ملک کو ایک بنانے میں مسلمانوں نے بہت بڑے بڑے کام انجام دئے تھے اور بجائے اِس کے کہ وہ اِس پر فخر کرتے، سرے سے اِس ملک کی اکائی سے انکار کرکے اِس کے بٹوارے پر ہی تُل گئے. انھوں نے اپنی عمل طاقت اور قابلیت کے بڑھانے میں غفلت کی. آج اُن میں جو نراشا اور کمزوری ہے وہ وہی غفلت ہے جس کی انھوں نے عادت ڈالی ہے. لوگ یا قومیں اُسی وقت ترقی کرتی ہیں جب کہ وہ زندگی کی کھینچا تانی میں ایک دوسرے سے ٹکراتی اور مقابلہ کرتی رہتی ہیں. انگریزوں نے ہندوؤں کے مقابلے سے مسلمانوں کو ڈرایا. مسلمانوں نے کبھی اپنی تعداد کے کم ہونے کا خیال نہیں کیا تھا لیکن انگریزوں نے یہ سوال پیدا کر دیا. مسلمانوں کے دماغوں میں ہندوؤں کی زیادہ تعداد کا ڈر بیٹھایا اور نوکریاں وغیرہ میں جگہیں محفوظ (سُرکشت) رکھنے کی لوہے کی دیواریں کھڑی کر دیں جس میں کہ اُن کو مقابلے کی ہوا بھی نہ لگے. یہ نشہ اِس طرح پلایا گیا کہ آج تک اُتر نہ سکا. نوکریاں اور سیٹیں، بس اِسی پر اُن کی نظریں جمی رہیں. اُس نے اونچی اونچی چیزوں پر سے اُن کی نظریں ہٹا دیں. ہندوؤں کا ڈر اور زیادہ رعایتیں حاصل کرنے کی کوشش، بس یہی دو چیزیں اُن کے سامنے رہیں. پچھلے دس بارہ برس میں مسلمان اور بھی گرتے گئے. میں کسی خاص آدمی پر اِس غلطی کا الزام نہیں دھرتا، جہاں لوگ غلطی کرتے ہیں وہاں

क़ौमें भी ग़लती करती हैं. पूरी मुस्लिम क़ौम ने यह ग़लती की और उन्हें इस ग़लती का नतीजा भुगतना पड़ेगा. लेकिन मैं यह नहीं कह सकता कि हिन्दुओं से भूलें नहीं हुईं. उन्हों ने भी ग़लतियां कीं और हिन्दू मुसलमान दोनों अंगरेज़ों के हाथ में खेलते रहे, और उसी का नतीजा आज हमारी आँखों के सामने है.

हिन्दुस्तान में जब कभी भी तरक़्क़ी हुई, वह उसी वक़्त हुई जब कि यहाँ पूरी एकता क़ायम थी. चन्द्रगुप्त और अशोक का ज़माना तरक़्क़ी का ज़माना था क्योंकि हिन्दुस्तान उस वक़्त टुकड़े टुकड़े न हुआ था. अकबर और शाहजहाँ का ज़माना तरक़्क़ी का ज़माना था क्योंकि हिन्दुस्तान उस वक़्त भी एक था. आज जो हिन्दू मुसलमान दोनों ने देश का बँटवारा कराया, उससे बेशक हिन्दुस्तान की इज़्ज़त में बट्टा लगा. लेकिन मुसलमानों को सोचना चाहिये कि इस बँटवारे से उनका क्या भला हुआ. क्या यह सच नहीं है कि इस बटवारे ने उनके सुख चैन को और ज़्यादा ख़तरे में डाल दिया ?

मुझे अख़बारों में यह पढ़ कर ख़ुशी हुई कि क़ायदे आज़म मुहम्मद अली जिनाह ने कहा है कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के डिफ़ेन्स (बचाव) का एक होना मुमकिन है. क़ायदे आज़म ने बहुत देर के बाद इसका इक़रार किया.

क्या मिले जुले बचाव के बिना इस तजवीज़ का आगे बढ़ना मुमकिन है ? अगर मेरी कमज़ोर आवाज़ कराची पहुँच सकती है तो मैं बड़े अदब से कहूँगा कि क़ायदे आज़म ने हिन्द व पाकिस्तान के मिले जुले बचाव के बारे में जो ख़याल ज़ाहिर

قومیں بھی غلطی کرتی ہیں. پوری مسلم قوم نے یہ غلطی کی اور انھیں اس غلطی کا نتیجہ بھگتنا پڑے گا. لیکن میں یہ نہیں کہہ سکتا کہ ہندوؤں سے بھولیں نہیں ہوئیں. انھوں نے بھی غلطیاں کیں اور ہندو مسلمان دونوں انگریزوں کے ہاتھ میں کھیلتے رہے. اور اسی کا نتیجہ آج ہماری آنکھوں کے سامنے ہے.

ہندستان میں جب کبھی بھی ترقی ہوئی، وہ اسی وقت ہوئی جب کہ یہاں پوری ایکتا قائم تھی. چندرگپت اور اشوک کا زمانہ ترقی کا زمانہ تھا کیونکہ ہندستان اس وقت ٹکڑے ٹکڑے نہ ہوا تھا. اکبر اور شاہجہاں کا زمانہ ترقی کا زمانہ تھا کیونکہ ہندستان اس وقت بھی ایک تھا. آج جو ہندو مسلمان دونوں نے دیش کا بٹوارہ کرایا، اس سے بے شک ہندستان کی عزت میں بٹا لگا. لیکن مسلمانوں کو سوچنا چاہیے کہ اس بٹوارے سے ان کا کیا بھلا ہوا. کیا یہ سچ نہیں ہے کہ اس بٹوارے نے ان کے سکھ چین کو اور زیادہ خطرے میں ڈال دیا؟

مجھے اخباروں میں یہ پڑھ کر خوشی ہوئی کہ قائد اعظم محمد علی جناح نے کہا ہے کہ ہندستان اور پاکستان کے ڈیفنس (بچاؤ) کا ایک ہونا ممکن ہے. قائد اعظم نے بہت دیر کے بعد اس کا اقرار کیا.

کیا ملے جلے بچاؤ کے بنا اس تجویز کا آگے بڑھنا ممکن ہے؟ اگر میری کمزور آواز کراچی پہنچ سکتی ہے تو میں بڑے ادب سے کہوں گا کہ قائد اعظم نے ہند و پاکستان کے ملے جلے بچاؤ کے بارے میں جو خیال ظاہر

किया है वह सिर्फ़ अख़बारी बयान होकर न रह जाय. क्यों न यह चीज़ बाक़ायदा तौर पर दोनों सरकारों के ग़ौर के लिये पेश की जाय. पं० जवाहर लाल नहरू ने भी कई बार ऐसा ख़याल ज़ाहिर किया है. मिले जुले बचाव के बाद बाहरी पालिसी को भी एक करना ज़रूरी होगा. यह दोनों देशों के लिये अच्छा होगा कि हम क़ायदे के साथ इस मसले को पेश करके आपस में तय कर लें, अगर यह हो जाय तो काश्मीर का मसला कोई अहमियत न रक्खेगा, वह आपसे आप हल होजायगा.

तीसरी जंग का ख़तरा साफ़ नज़र आ रहा है. कल अख़बार में यह ख़बर थी कि इंगलैंड का बादशाह कनाडा चला जायगा. यह जंग फिर ख़ुदा के क़हर या आफ़त की सूरत में आने वाली है. अगर हिन्दुस्तान व पाकिस्तान में से एक देश ने भी किसी लड़ाकू देश का साथ दिया तो दोनों देश तबाह और बरबाद हो जायँगे. सलामती इसी में है कि हिन्दुस्तान व पाकिस्तान दोनों लड़ाई से अलग रहें. पं० जवाहर लाल नहरू की राय आपको मालूम ही है कि वह इस आने वाली लड़ाई से कोई सरोकार नहीं रखना चाहते. दोनों (पाकिस्तान व हिन्दुस्तान) आने वाली मुसीबत से अपने को बचा सकते हैं. अगर हमने यह पहले सोचा होता तो इस मुसीबत से ख़ुद भी बचे होते और दूसरे देशों को भी बचा लेते. आज जिस लड़ाई का हमें डर है उसके कारनों को दूर करके हम ख़ुद अपनी इज़्ज़त और तौक़ीर बढ़ाते. हिन्दुस्तान का अगर बँटवारा न होता तो मुमकिन था कि हिन्दुस्तान की ताक़त में इतना वज़न होता कि उसकी आवाज़ तीसरी लड़ाई को रोक सकती. आज किस मुंह से हमारे

کیا ہے وہ صرف اخباری بیان ہوکر نہ رہ جائے، کیوں نہ یہ چیز باقاعدہ طور پر دونوں سرکاروں کے غور کے لئے پیش کی جائے. پنڈت جواہر لال نہرو نے بھی کئی بار ایسا خیال ظاہر کیا ہے. ملے جلے بچاؤ کے بعد باہری پالیسی کو بھی ایک کرنا ضروری ہوگا. یہ دونوں دیشوں کے لئے اچھا ہوگا کہ ہم قاعدے کے ساتھ اس مسئلے کو پیش کرکے آپس میں طے کرلیں، اگر یہ ہوجائے تو کشمیر کا مسئلہ کوئی اہمیت نہ رکھے گا، وہ آپ سے آپ حل ہوجائے گا.

تیسری جنگ کا خطرہ صاف نظر آرہا ہے. کل اخبار میں یہ خبر تھی کہ انگلینڈ کا بادشاہ کناڈا چلا جائے گا. یہ جنگ پھر خدا کے قہر یا آفت کی صورت میں آنے والی ہے. اگر ہندستان و پاکستان میں سے ایک دیش نے بھی کسی لڑاکو دیش کا ساتھ دیا تو دونوں دیش تباہ اور برباد ہوجائیں گے. سلامتی اسی میں ہے کہ ہندستان و پاکستان دونوں لڑائی سے الگ رہیں. پنڈت جواہر لال نہرو کی رائے آپ کو معلوم ہی ہے کہ وہ اس آنے والی لڑائی سے کوئی سروکار نہیں رکھنا چاہتے. دونوں (پاکستان و ہندستان) آنے والی مصیبت سے اپنے کو بچا سکتے ہیں. اگر ہم نے یہ پہلے سوچا ہوتا تو اس مصیبت سے خود بھی بچے ہوتے اور دوسرے دیشوں کو بھی بچا لیتے. آج جس لڑائی کا ہمیں ڈر ہے اس کے کارنوں کو دور کرکے ہم خود اپنی عزت اور توقیر بڑھاتے. ہندستان کا اگر بٹوارہ نہ ہوتا تو ممکن تھا کہ ہندستان کی طاقت میں اتنا وزن ہوتا کہ اس کی آواز تیسری لڑائی کو روک سکتی. آج کس منہ سے ہمارے

सफ़ीर (राजदूत) इस लड़ाई को रोकने की कोशिश करें जब कि हम खुद आपस में लड़ाई के लिये तुले बैठे हैं. उम्मीद है कि क़ायदे आज़म अपने इस क़ीमती और मुबारक ख़याल को सिर्फ़ अख़बारों तक ही न रक्खेंगे. उनका यह ख़याल सारे झगड़ों को ख़तम करने वाला है. इस पर अमल करने में जल्दी करनी चाहिये.देर करने में कोई फ़ायदा नहीं. वक़्त निकल जाने पर अच्छी से अच्छी तजवीज़ भी बेकार हो जाती है, जैसा कि पिछले वाक़ेआत हमें बताते हैं.

हिन्दुस्तान एशिया का क़ुदरती लीडर है. इंडोनेशिया के छै करोड़ मुसलमानों की नज़रें हिन्दुस्तान पर पड़ रही हैं. पच्छिमी एशिया की नज़रें भी हिन्दुस्तान पर लगी हुई हैं, उत्तरी अफ़रीक़ा के इस्लामी मुल्कों की नज़रें भी हिन्दुस्तान पर ही जमी हुई हैं और ट्रान्सजार्डन के बादशाह अमीर अब्दुल्ला ने भी अपने आदमियों की मारफ़त ऐसा ही पैग़ाम भेजा है. अगर यह मिलेजुले बचाव का सामान हो जाय तो हिंदुस्तान एशियाटिक फ़िडरेशन का बिला किसी शक व शुबे के लीडर माना जायगा. यह वह बड़ाई है जिसका यह देश क़ुदरती तौर पर हक़दार है. दुनिया के अमन शांति की हिफ़ाज़त हिन्दुस्तान और पाकिस्तान मिलकर ही कर सकते हैं. काश ! इस कमज़ोर टूटे हुये दिल की सदा कराची पहुँचे. काश ! क़ायदे आज़म का दिल पिघले और वह इसको अमली सूरत दे दें तो हमारी और पाकिस्तान की सारी मुसीबतें दूर हो जायं.

एशियाटिक फ़िडरेशन क़ायम होने और हिन्दुस्तान के उस फ़िडरेशन का लीडर होने से एक तरफ़ मुसलमानों को ज़्यादा

سفیر (راج دُوت) اِس لڑائی کو روکنے کی کوشش کریں جب کہ ہم خود آپس میں لڑائی کے لئے تُلے بیٹھے ہیں۔ اُمید ہے کہ قائد اعظم اپنے اِس قیمتی اور مبارک خیال کو صرف اخباروں تک ہی نہ رکھیں گے۔ اُن کا یہ خیال سارے جھگڑوں کو ختم کرنے والا ہے۔ اِس پر عمل کرنے میں جلدی کرنی چاہئے۔ دیر کرنے میں کوئی فائدہ نہیں۔ وقت نکل جانے پر اچھی سے اچھی تجویز بھی بیکار ہوجاتی ہے، جیسا کہ پچھلے واقعات ہمیں بتاتے ہیں۔

ہندستان ایشیا کا قدرتی لیڈر ہے۔ انڈونیشیا کے چھ کروڑ مسلمانوں کی نظریں ہندستان پر پڑ رہی ہیں۔ پچھمی ایشیا کی نظریں بھی ہندستان پر لگی ہوئی ہیں، اُتری افریقہ کے اسلامی ملکوں کی نظریں بھی ہندستان پر ہی جمی ہوئی ہیں اور ٹرانس جارڈن کے بادشاہ امیر عبداللہ نے بھی اپنے آدمیوں کی معرفت ایسا ہی پیغام بھیجا ہے۔ اگر یہ ملے جلے بچاؤ کا سامان ہوجائے تو ہندستان ایشیاٹک فیڈریشن کا بلا کسی شک و شبہ کے لیڈر مانا جائیگا۔ یہ وہ بڑائی ہے جس کا یہ دیش قدرتی طور پر حقدار ہے۔ دُنیا کے امن شانتی کی حفاظت ہندستان اور پاکستان مل کر ہی کر سکتے ہیں۔ کاش! اِس کمزور ٹوٹے ہوئے دل کی صدا کراچی پہنچے۔ کاش! قائد اعظم کا دل پگھلے اور وہ اِس کو عملی صورت دے دیں تو ہماری اور پاکستان کی ساری مصیبتیں دُور ہوجائیں۔

ایشیاٹک فیڈریشن قایم ہونے اور ہندستان کے اِس فیڈریشن کا لیڈر ہونے سے ایک طرف مسلمانوں کو زیادہ

आदाद वाली क़ौमों का नाजायज़ ख़ौफ़, जो अंग्रेज़ों ने उनके दिल में पैदा कर दिया है, दूर हो जायगा, दूसरी तरफ़ हिन्दुस्तान को यह बड़ाई हासिल हो जायगी कि वह पूर्वी व पच्छिमी एशिया और उत्तरी अफ़्रीक़ा के सारे देशों का लीडर बनकर दुनिया में अपनी आवाज़ को इतनी मज़बूत बना सकता है कि उसकी सुलह और शांति की पुकार को योरप और अमरीका वाले ठुकरा नहीं सकेंगे. लेकिन इसमें जल्दी करने की ज़रूरत है. इसकी पहली कड़ी हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के मिले जुले बचाव के मामले का तय हो जाना है. इसके बाद मिली जुली बाहरी पालिसी का तय हो जाना लाज़िमी हो जायगा. और इसके बाद हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दुनिया के सामने शांति और अहिंसा का संदेश पूरे ज़ोर और ताक़त के साथ पहुँचा सकते हैं.

हिन्दुओं के दिल में मुसलमानों की तरफ़ से जो शक और बेएतबारी पैदा हो गई है उसे दूर करने की कोशिश मुसलमानों को करनी चाहिये. पिछले दस बरस की मुसलमानों की पालिसी और बर्ताव से मुसलमानों की तरफ़ से जायज़ तौर पर हिन्दुओं का भरोसा उठ गया है. वह समझने लगे हैं कि मुसलमान उनको अपना भाई नहीं समझते और न इस देश को अपना देश समझते हैं. मुसलमानों को अपने अमल से, अपने अच्छे व्यवहार से, अपनी सेवाओं से उनके इस शक का दूर करना चाहिये और एक बार फिर यह साबित करना चाहिये कि हिन्दुस्तान उनका भी वैसा ही देश है जैसा हिन्दुओं का और इस देश के लिये वह अपनी जानमाल इज़्ज़त आबरू सब कुछ क़ुरबान करने के लिये तैयार हैं.

تعداد والی قوموں کا ناجایز خوف، جو انگریزوں نے اُن کے دل میں پیدا کر دیا ہے، دُور ہو جائے گا، دوسری طرف ہندستان کو یہ بڑائی حاصل ہو جائے گی کہ وہ پوربی و پچھمی ایشیا اور اُتری افریقہ کے سارے دیشوں کا لیڈر بن کر دُنیا میں اپنی آواز کو اتنی مضبوط بنا سکتا ہے کہ اُس کی صلح اور شانتی کی پکار کو یورپ اور امریکہ والے ٹھکرا نہیں سکیں گے۔ لیکن اِس میں جلدی کرنے کی ضرورت ہے۔ اِس کی پہلی کڑی ہندستان اور پاکستان کے ملے جلے بچاو کے معاملے کا طے ہو جاتا ہے۔ اِس کے بعد ملی جُلی باہری پالیسی کا طے ہو جانا لازمی ہو جائے گا۔ اور اِس کے بعد ہندستان اور پاکستان دُنیا کے سامنے شانتی اور اہنسا کا سندیش پورے زور اور طاقت کے ساتھ پہنچا سکتے ہیں۔

ہندوؤں کے دل میں مسلمانوں کی طرف سے جو شک اور بے اعتباری پیدا ہو گئی ہے اسے دور کرنے کی کوشش مسلمانوں کو کرنی چاہیے۔ پچھلے دس برس کی مسلمانوں کی پالیسی اور برتاؤ سے مسلمانوں کی طرف سے جایز طور پر ہندوؤں کا بھروسا اُٹھ گیا ہے۔ وہ سمجھنے لگے ہیں کہ مسلمان اُن کو اپنا بھائی نہیں سمجھتے اور نہ اِس دیش کو اپنا دیش سمجھتے ہیں۔ مسلمانوں کو اپنے عمل سے، اپنے اچھے بیوہار سے، اپنی سیواؤں سے اُن کے اِس شک کا دُور کرنا چاہیے اور ایک بار پھر یہ ثابت کرنا چاہیے کہ ہندستان اُن کا بھی ویسا ہی دیش ہے جیسا ہندوؤں کا اور اِس دیش کے لیے وہ اپنی جان مال عزت آبرو سب کچھ قربان کرنے کے لیے تیار ہیں۔

मुसलमानों को इसी देश में रहना है. वह पहले भी हिन्दुओं के भाई बनकर रहे और अब भी उसी तरह रह सकते हैं. पिछले दस बरसों में हिन्दू और मुसलमानों में नफ़रत और बेएतबारी बहुत ज़्यादा बढ़ गई. इतने दिनों की नफ़रत दूर होने के लिये भी कुछ वक़्त चाहिये और इसके लिये मुसलमानों को सब्र और धीरज के साथ कोशिश करते रहना चाहिये. अगर वह हिन्दुओं से मुहब्बत करें तो हिन्दू भी उनसे प्रेम करने लगेगें. तारीख़ गवाह है कि जब किसी ने उनसे प्रेम किया तो वह उसकी पूजा करने लगे. मुसलमानों को मोहब्बत के साथ उनकी तरफ़ बढ़ना चाहिये. वह मुसलमानों को आप ही गले लगा लेंगे.

مسلمانوں کو اِسی دیش میں رہنا ہے۔ وہ پہلے بھی ہندوؤں کے بھائی بن کر رہے اور اب بھی اُسی طرح رہ سکتے ہیں۔ پچھلے دس برسوں میں ہندو اور مسلمانوں میں نفرت اور بے اعتباری بہت زیادہ بڑھ گئی۔ اِتنے دنوں کی نفرت دُور ہونے کے لئے بھی کچھ وقت چاہئے اور اِس کے لئے مسلمانوں کو صبر اور دھیرج کے ساتھ کوشش کرتے رہنا چاہئے۔ اگر وہ ہندوؤں سے محبّت کریں تو ہندو بھی اُن سے پریم کرنے لگیں گے۔ تاریخ گواہ ہے کہ جب کسی نے اُن سے پریم کیا تو وہ اُس کی پوجا کرنے لگے۔ مسلمانوں کو محبّت کے ساتھ اُن کی طرف بڑھنا چاہئے۔ وہ مسلمانوں کو آپ ہی گلے لگا لیں گے۔

बापू स्कूल मास्टर के रूप में

(भाई पी० बी० चन्दवानी)

जब मैं दिसम्बर के अंत में बापू से मिला, उनका पहला सवाल यह था कि मैं हिन्दी जानता हूँ या नहीं. मैंने जवाब दिया—"नहीं." वे बोले कि हिन्दी जानने से मेरी उपयोगिता बढ़ जावेगी. और जब उन्होंने खुद मुझे हिन्दी पढ़ाना शुरू किया, तो मेरे अचरज का ठिकाना न रहा. इससे मुझे झूठा अभिमान हुआ, मगर मैंने अपने आपसे पूछा, बापू के सिर पर इतने बोझ और इतनी ज़िम्मेदारियाँ हैं, उनमें एक इसको और बढ़ा देना क्या ठीक है? अगर वे रोज़ाना मेरे लिये कुछ मिनट दे सकते हैं, तो मैं अपने जीवन की समस्याओं और उलझनों के लिये उनसे रहनुमाई पाने में उनका उपयोग क्यों न करूं? आखिर हिन्दी तो मैं किसी दूसरे से भी इतनी ही अच्छी तरह—शायद ज्यादा अच्छी तरह सीख सकता हूँ, क्योंकि जब वे मुझे पढ़ाते या मुझसे बोलते थे, तो उनके शब्दों के बजाय, उनका उज्ज्वल मुख और उत्साही ढंग ही मुझे ज्यादा आकर्षित करते थे.

मगर मैंने इस विषय में बापू से कोई दलील नहीं की और मुझे जल्द ही पता चल गया कि एक स्कूल मास्टर का काम करना उन्हें अच्छा लगता है. पहले पंद्रह दिनों में उन्होंने धार्मिक नियमितता (बाकायदगी) के साथ मुझे सबक दिया. मेरे वहाँ पहुँचने पर वे अक्सर "हिन्दी, हिन्दी" कह कर मेरा स्वागत करते थे, जिसे सुन कर हम

باپو اسکول ماسٹر کے روپ میں

(بھائی پی۔ بی۔ چندوانی)

جب میں دسمبر کے انت میں باپو سے ملا، اُن کا پہلا سوال یہ تھا کہ میں ہندی جانتا ہوں یا نہیں۔ میں نے جواب دیا—"نہیں". وے بولے ہندی جاننے سے میری اُپیوگتا بڑھ جاوے گی۔ اور جب اُنھوں نے خود مجھے ہندی پڑھانا شروع کیا، تو میرے اچرج کا ٹھکانا نہ رہا۔ اِس سے مجھے جھوٹا ابھیمان ہوا، مگر میں نے اپنے آپ سے پوچھا، باپو کے سر پر اِتنے بوجھ اور اتنی ذمّہ داریاں ہیں، اُن میں ایک اِس کو اور بڑھا دینا کیا ٹھیک ہے؟ اگر وے روزانہ میرے لئے کچھ منٹ دے سکتے ہیں، تو میں اپنے جیون کی سمسیاؤں اور اُلجھنوں کے لئے اُن سے رہنمائی پانے میں اُن کا اُپیوگ کیوں نہ کروں؟ آخر ہندی تو میں کسی دوسرے سے بھی اِتنی ہی اچھی طرح— شاید زیادہ اچھی طرح سیکھ سکتا ہوں، کیونکہ جب وے مجھے پڑھاتے یا مجھ سے بولتے تھے۔ تو اُن کے شبدوں کے بجائے، اُن کا اُجّول مکھ اور اُتساہی ڈھنگ ہی مجھے زیادہ آکرشت کرتے تھے۔

مگر میں نے اِس وشے میں باپو سے کوئی دلیل نہیں کی اور مجھے جلدی ہی پتہ چل گیا کہ ایک اسکول ماسٹر کا کام کرنا اُنھیں اچھا لگتا ہے۔ پہلے پندرہ دنوں میں اُنھوں نے دھارمک نیمتّا (باقاعدگی) کے ساتھ مجھے سبق دیا۔ میرے وہاں پہنچنے پر وے اکثر "ہندی، ہندی" کہہ کر میرا سواگت کرتے تھے، جسے سن کر ہم

सबको बड़ा मजा आता था. वे चाहते थे कि मैं घर पर ही अपना फालतू वक्त हिन्दी सीखने में बिताऊँ और कुछ समय बाद उनको इस बात की रिपोर्ट दूं कि यहाँ के काम के घण्टों के बाद मैंने अपना वक्त किस तरह बिताया. मैंने कहा—"बापू, मैं मन लगाकर काम करते हुये काफी घंटे यहाँ बिताता हूँ, और जब मैं घर आता हूँ, तो कभी कभी कुछ न करने का संतोष पाने की मेरी इच्छा होती है." तब सुविधा की भावना से उन्होंने घर पर यह काम करने से मुझे छुट्टी दे दी, अगरचे अपने सुख और फायदे के लिये कभी कभी मैं घर पर अपने परिवार वालों को इकट्ठा करके उनको बापू के, आत्मा पर असर डालने वाले, प्रार्थना सभा के भाषण पढ़कर सुनाया करता था.

उनकी नजर से मेरी एक भी गलती नहीं बचती थी. कुछ दिनों में मैंने श्रीमती रामेश्वरी नेहरू को लिखा हुआ अपना पहला हिन्दी खत उन्हें अभिमान के साथ दिखाया. मुझे उम्मीद थी कि इसे देखकर वे गुरु और चेले दोनों की तारीफ करेंगे, मगर वे किसी अधूरी चीज से खुश होने वाले व्यक्ति नहीं थे. उन्होंने पहली ही लकीर में मेरी एक बुरी गलती बताई. उसमें मैंने श्रीमती नेहरू को "बेन" की जगह "घेन" लिखकर सम्बोधित किया था. उन्होंने कहा कि जल्दी जल्दी और बेइतमीनानी के साथ काम करने के बजाय धीमे धीमे और इतमीनान के साथ काम करना ज्यादा अच्छा है. मैं बोला कि मैं एक गलती करने वाला बच्चा हूँ और आप सख्त स्कूलमास्टर.

साथ ने मेरे अच्छे अक्षर लिखने पर बेहद जोर दिया, शायद

سب کو بڑا مزا آتا تھا۔ وے چاہتے تھے کہ میں گھر پر ہی اپنا فالتو وقت ہندی سیکھنے میں بتاؤں اور کچھ سمے بعد اُن کو اِس بات کی رپورٹ دوں کہ یہاں کے کام کے گھنٹوں کے بعد میں نے اپنا وقت کس طرح بتایا۔ میں نے کہا ”باپو! میں من لگا کر کام کرتے ہوئے کافی گھنٹے یہاں بتاتا ہوں، اور جب میں گھر جاتا ہوں تو کبھی کبھی کچھ نہ کرنے کا سنتوش پانے کی میری اچھا ہوتی ہے۔“ تب سودھا کی بھاونا سے اُنھوں نے گھر پر یہ کام کرنے سے مجھے چھٹی دے دی، اگرچہ اپنے سُکھ اور فائدے کے لئے کبھی کبھی میں گھر پر اپنے پریوار والوں کو اکٹھا کر کے اُن کو باپو کے آتما پر اثر ڈالنے والے، پرارتھنا سبھا کے بھاشن پڑھ کر سُنایا کرتا تھا۔

اُن کی نظر سے میری ایک بھی غلطی نہیں بچتی تھی۔ کچھ دنوں میں میں نے شریمتی رامیشوری نہرو کو لکھا ہوا اپنا پہلا ہندی خط اُنھیں ابھیمان کے ساتھ دکھایا۔ مجھے اُمید تھی کہ اِسے دیکھ کر وے گرو اور چیلے دونوں کی تعریف کریں گے، مگر وے کسی ادھوری چیز سے خوش ہونے والے ویکتی نہیں تھے۔ اُنھوں نے پہلی ہی لکیر میں میری ایک بُری غلطی بتائی۔ اُس میں میں نے شریمتی نہرو کو ”بہن“ کی جگہ ”گھین“ لکھ کر سمبودھت کیا تھا۔ اُنھوں نے کہا کہ جلدی جلدی اور بے اطمینانی کے ساتھ کام کرنے کے بجائے دھیمے دھیمے اور اطمینان کے ساتھ کام کرنا زیادہ اچھا ہے۔ میں بولا کہ میں ایک غلطی کرنے والا بچہ ہوں اور آپ سخت اسکول ماسٹر۔

... نے میرے اچھے اکشر لکھنے پر بے حد زور دیا، شاید

इसलिये कि उनके खुद के अक्षर बहुत अच्छे नहीं थे. उन्हें सुधारने के लिये वे मुझको बारीक से बारीक तरीक़े बतलाते थे. मिसाल के लिये उन्होंने मुझे कहा था कि 'म' बनाते समय मैं ४५ डिग्री का कोण (ज़ाविया) बनाऊँ. वे चाहते थे कि मैं इतने अच्छे अक्षर लिखूँ कि वे छपे हुये अक्षरों से होड़ ले सकें. जब मैंने अपनी अयोग्यता की दलील दी, तो उन्होंने कहा कि चाहे जितनी मुश्किलें हों, हमें अपने आदर्श तक पहुँचने की कोशिश जारी रखनी ही चाहिये. उन्होंने दूसरी अंग्रेज़ी पुस्तक में छपे हुये लूसी और डेमास्थनीज़ के उदाहरण देते हुये कहा कि जब तक लूसी ने अपना मक़सद हासिल नहीं कर लिया, तब तक वह बारबार कोशिश करती रही और डेमास्थनीज़ ने, जो कभी हकलाते हुये बोलता था, मुँह में कंकड़ रख कर नदी किनारे बोलने की कलाका अभ्यास किया, और अन्त में वह अपने ज़माने का सबसे बड़ा वक्ता (मुक़र्रिर) बन गया. मैंने दावा किया कि मेरे अक्षर कम से कम उनके अक्षरों से तो अच्छे थे. उनके अक्षरों की उपमा मैं चीनी अक्षरों से देता था. हाँ, मेरा यही विचार था, मगर उनके और चीनी अक्षरों में सिर्फ़ यही फ़र्क़ था.

गांधी जी से हिन्दी पढ़ना मेरे लिये बेहद खुशी की बात थी और जैसा कि मैंने पाया, उनको इससे कुछ शांति मिलती थी. चूंकि यह पढ़ाई हँसी खुशी में होती थी, इस लिये यह हमारे बीच नज़दीक के आपसी सम्बन्ध क़ायम करने का काम करती थी. जब उन्होंने अपना उपवास शुरू किया, तब भी वे पढ़ाने का काम जारी रखना चाहते थे. एक बार मैंने हँस कर उनसे कहा—"बापू

اِس لئے کہ اُن کے خود کے اکشر بہت اچھے نہیں تھے. انھیں سُدھارنے کے لئے وے مجھ کو باریک سے باریک طریقے بتلاتے تھے. مثال کے لئے انھوں نے مجھے کہا تھا کہ 'م' بناتے سمے میں ۴۵ ڈگری کا کون (زاویہ) بناؤں. وے چاہتے تھے کہ میں اتنے اچھے اکشر لکھوں کہ وے چھپے ہوئے اکشروں سے ہوڑ لے سکیں. جب میں نے اپنی ایوگیتا کی دلیل دی، تو انھوں نے کہا کہ چاہے جتنی مشکلیں ہوں، ہمیں اپنے آدرش تک پہنچنے کی کوشش جاری رکھنی ہی چاہئے. انھوں نے دوسری انگریزی پستک میں چھپے ہوئے لوسی اور ڈیماستھنیز کے اداہرن دیتے ہوئے کہا کہ جب تک لوسی نے اپنا مقصد حاصل نہیں کر لیا، تب تک وہ برابر کوشش کرتی رہی اور ڈیماستھنیز نے، جو کبھی ہکلاتے ہوئے بولتا تھا، منہ میں کنکڑ رکھ کر ندی کنارے بولنے کی کلا کا ابھیاس کیا، اور انت میں وہ اپنے زمانے کا سب سے بڑا وکتا (مقرر) بن گیا. میں نے دعوی کیا کہ میرے اکشر کم سے کم ان کے اکشروں سے تو اچھے تھے. ان کے اکشروں کی اپما میں چینی اکشروں سے دیتا تھا. ہاں، میرا یہ وچار تھا، مگر ان کے اور چینی اکشروں میں صرف یہی فرق تھا.

گاندھی جی سے ہندی پڑھنا میرے لئے بے حد خوشی کی بات تھی اور جیسا کہ میں نے پایا، ان کو اس سے کچھ شانتی ملتی تھی. چونکہ یہ پڑھائی ہنسی خوشی میں ہوتی تھی، اس لئے یہ ہمارے بیچ نزدیک کے آپسی سمبندھ قائم کرنے کا کام کرتی تھی. جب انھوں نے اپنا اپواس شروع کیا، تب بھی وے پڑھانے کا کام جاری رکھنا چاہتے تھے. ایک بار میں نے ہنس کر ان سے کہا "باپو،

अब आपको अपनी शक्ति के थोड़े से थोड़े हिस्से को भी बचा कर रखना चाहिये. पंडित सुन्दरलाल ने आपके बदले मुझे हिन्दी पढ़ाना मंजूर कर लिया है." फीकी मुस्कान के साथ बापू ने कहा—"मगर वे पढ़ाना नहीं जानते."यह सुन कर पंडित जी मौजूँ जवाब के साथ बीच में बोले की ऐसा करने से मैं पढ़ाना सीख सकूंगा! और तब बापू ने लचार हो कर अपनी सम्मति दी, मगर उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि समय समय पर उन्हें मेरी तरक़्क़ी के बारे में रिपोर्ट दी जाय. उनके उपवास के पाँचवें दिन, जब उनकी हालत को देखकर सब चिन्ता में पड़ गये थे, उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं कैसी प्रगति कर रहा हूँ, और जब मैंने कहा कि मेरा काम ठीक चल रहा है, तो वे ख़ुश हो गये.

बापू कितने अद्भुत और कितने सरल थे! इस ज़माने के सबसे बड़े आदमी ने एक तुच्छ लड़के के लिये हिन्दी के मास्टर का छोटा काम किया. सचमुच, बापू के लिये न तो कोई चीज़ बहुत बड़ी थी, न कोई बहुत छोटी.

('हरिजन सेवक' से)

اب آپ کو اپنی شکتی کے تھوڑے سے تھوڑے حصے کو بھی بچا کر رکھنا چاہیئے۔ پنڈت سندر لال نے آپ کے بدلے مجھے ہندی پڑھانا منظور کر لیا ہے۔" پھیکی مسکان کے ساتھ باپو نے کہا۔ "مگر وے پڑھانا نہیں جانتے۔" یہ سن کر پنڈت جی موزوں جواب کے ساتھ بیچ میں بولے کہ ایسا کرنے سے میں پڑھانا سیکھ سکوں گا! اور تب باپو نے لاچار ہو کر اپنی سمتی دی، مگر انھوں نے اس بات پر زور دیا کہ سمے سمے پر انھیں میری ترقی کے بارے میں رپورٹ دی جائے۔ ان کے اپواس کے پانچویں دن، جب ان کی حالت کو دیکھ کر سب چنتا میں پڑ گئے تھے، انھوں نے مجھ سے پوچھا کہ میں کیسی پرگتی کر رہا ہوں، اور جب میں نے کہا کہ میرا کام ٹھیک چل رہا ہے، تو وے خوش ہو گئے۔

باپو کتنے ادبھت اور کتنے سرل تھے! اس زمانے کے سب سے بڑے آدمی نے ایک تچھ لڑکے کے لئے ہندی کے ماسٹر کا چھوٹا کام کیا۔ سچ مچ، باپو کے لئے نہ تو کوئی چیز بہت بڑی تھی، نہ کوئی بہت چھوٹی۔

('ہریجن سیوک' سے)

कुछ किताबें

गान्धी गाथा—लिखने वाले श्री वी० रामचन्द्रन्, सफे १६१, लिखावट हिन्दी, दाम एक रुपया, पता—हिन्द किताब्स लिमिटेड, २६१-२६२ हार्नबी रोड, बम्बई.

श्री वी० रामचन्द्रन् २५ बरस तक गान्धी जी के साथ रहे हैं और एक प्रेमी की हैसियत से उन्होंने गान्धी जी का अध्ययन या मुताला किया है.

इस किताब में उन्होंने गान्धी जी से ताल्लुक रखने वाली १५ घटनाओं को कहानियों के रूप में लिखा है जिसके कारन इनमें बहुत दिलचस्पी पैदा होगई है.

शुरू में एक सफे की भूमिका है जिसमें श्री राजगोपालचार्य ने बहुत ठीक लिखा है कि "अगर सभी गाथायें न लिखी जातीं तो डर था कि इस विषय पर दंत कथाएँ (रवायतें) गढ़ी जातीं." लेकिन गान्धी जी से इतने आदमियों को मिलने का, बात करने का मौक़ा मिला है कि यह डर अब भी बना रहेगा कि कौन क्या बात कह दे और उसे गान्धी जी से जोड़ दे. इस बारे में लोगों को हमेशा अपनी समझ से भी काम लेना पड़ेगा और गान्धी गाथा जैसी किताबें भी लोगों की रहनुमाई करेंगी, जिनको पढ़कर गान्धी जी का जीवन और उनका मिज़ाज समझने में मदद मिलती है और जिनकी सचाई पर भी कोई शक नहीं किया जा सकता.

किताब का हिन्दी तर्जुमा श्री रुद्रनारायण शुक्ल ने किया है. चार तस्वीरें भी किताब में हैं जो अब, जब कि गान्धी जी नहीं रहे, अपनी एक खास अहमियत रखती हैं.

کچھ کتابیں

گاندھی گاتھا — لکھنے والے شری وی. رام چندرن، صفحے ۱۶۱، لکھاوٹ ہندی، دام ایک روپیہ، پتہ — ہند کتابس لمیٹڈ، ۲۶۱-۲۶۲ ہارن بی روڈ، بمبئی.

شری وی. رام چندرن ۲۵ برس تک گاندھی جی کے ساتھ رہے ہیں اور ایک پریمی کی حیثیت سے انھوں نے گاندھی جی کا ادھین یا مطالعہ کیا ہے.

اس کتاب میں انھوں نے گاندھی جی سے تعلق رکھنے والی ۱۵ گھٹناؤں کو کہانیوں کے روپ میں لکھا ہے جس کے کارن ان میں بہت دلچسپی پیدا ہوگئی ہے.

شروع میں ایک صفحے کی بھومکا ہے جس میں شری راج گوپالاچاریہ نے بہت ٹھیک لکھا ہے کہ "اگر سبھی گاتھائیں نہ لکھی جاتیں تو ڈر تھا کہ اس وشے پر دنت کتھائیں (روایتیں) گڑھی جاتیں." لیکن گاندھی جی سے اتنے آدمیوں کو ملنے کا، بات کرنے کا موقع ملا ہے کہ یہ ڈر اب بھی بنا رہے گا کہ کون کیا بات کہہ دے اور اسے گاندھی جی سے جوڑ دے. اس بارے میں لوگوں کو ہمیشہ اپنی سمجھ سے بھی کام لینا پڑے گا اور گاندھی گاتھا جیسی کتابیں بھی لوگوں کی رہنمائی کریں گی، جن کو پڑھ کر گاندھی جی کا جیون اور ان کا مزاج سمجھنے میں مدد ملتی ہے اور جن کی سچائی پر بھی کوئی شک نہیں کیا جا سکتا.

کتاب کا ہندی ترجمہ شری رودر نارائن شکل نے کیا ہے. چار تصویریں بھی کتاب میں ہیں جو اب، جب کہ گاندھی جی نہیں رہے، اپنی ایک خاص اہمیت رکھتی ہیں.

गांधी जी—प्रधान सम्पादक, श्री कमला पति त्रिपाठी, सफ़े १४४, साइज़ डिमाई, क़ीमत डेढ़ रुपया, मिलने का पता—काशी विद्यापीठ प्रकाशन विभाग, बनारस छावनी.

इस किताब में उन सभी सन्देशों को जमा करके छाप दिया गया है जो इंगलैंड के बादशाह, हिन्दुस्तान के बड़े बड़े नेताओं, हिन्द सरकार और सूबों की सरकारों के गवर्नरों, मन्त्रियों, पार्लीमेन्ट्री सेक्रेट्रियों ने महात्मा गांधी के बलिदान पर दिये हैं. कांग्रेस वर्किंग कमेटी, कुल हिन्द कांग्रेस कमेटी और हिन्द सरकार ने गांधी जी की मौत पर जो ठहराव पास किये वह भी इस में शामिल हैं. पं० नहरू, डा० राजेन्द्र प्रसाद और दूसरे कांग्रेसी लीडरों और वज़ीरों ने रेडियो पर जो तक़रीरें कीं उनके हिस्से भी इसमें छापे गये हैं.

शुरू में 'साम्प्रदायिकता की वेदी पर' नाम से एक लेख में गांधीजी के बलिदान से लेकर उनकी राख बहाये जाने तक का हाल भी लिख दिया गया है जो न होता तो किताब बेकार होती. क्योंकि यह किताब आज कोई ख़ास अहमियत नहीं रखती क्योंकि ये सभी चीज़ें आज के बूढ़े, जवान, बच्चे अख़बारों में या रेडियो पर पढ़ या सुन चुके हैं. लेकिन हमारी आने वाली पीढ़ियाँ जब इस किताब को पढ़ेंगी तो उन्हें यह किताब बतायेगी कि गांधी जी कितने महान थे और उनकी मौत पर दुनियाने कितने आँसू बहाये थे.

तस्वीरों के कारन किताब और भी दिलचस्प हो गई है. छपाई बहुत अच्छी है.

—'हुनर'

گاندھی جی — پردھان سمپادک، شری کملاپتی ترپاٹھی، صفحے ۱۴۴، سائز ڈمائی، قیمت ڈیڑھ روپیہ، ملنے کا پتہ — کاشی ودیاپیٹھ پرکاشن وبھاگ، بنارس چھاؤنی۔

اس کتاب میں ان سبھی سندیشوں کو جمع کر کے چھاپ دیا گیا ہے جو انگلینڈ کے بادشاہ، ہندستان کے بڑے بڑے نیتاؤں، ہند سرکار اور صوبوں کی سرکاروں کے گورنروں، منتریوں، پارلیمنٹری سکریٹریوں نے مہاتما گاندھی کے بلیدان پر دئے ہیں۔ کانگریس ورکنگ کمیٹی، کل ہند کانگریس کمیٹی اور ہند سرکار نے گاندھی جی کی موت پر جو ٹھہراؤ پاس کئے وہ بھی اس میں شامل ہیں۔ پنڈت نہرو، ڈاکٹر راجیندر پرساد اور دوسرے کانگریسی لیڈروں اور وزیروں نے ریڈیو پر جو تقریریں کیں ان کے حصے بھی اس میں چھاپے گئے ہیں۔

شروع میں 'سامپرداکتا کی ویدی پر' نام سے ایک لیکھ میں گاندھی جی کے بلیدان سے لے کر ان کی راکھ بہائے جانے تک کا حال بھی لکھ دیا گیا ہے جو نہ ہوتا تو کتاب بے کار ہوتی۔ کیونکہ یہ کتاب آج کوئی خاص اہمیت نہیں رکھتی کیونکہ یہ سبھی چیزیں آج کے بوڑھے، جوان، بچے اخباروں میں یا ریڈیو پر پڑھ یا سن چکے ہیں۔ لیکن ہماری آنے والی پیڑھیاں جب اس کتاب کو پڑھیں گی تو انہیں یہ کتاب بتائے گی کہ گاندھی جی کتنے مہان تھے اور ان کی موت پر دنیا نے کتنے آنسو بہائے تھے۔

تصویروں کے کارن کتاب اور بھی دلچسپ ہو گئی ہے۔ چھپائی بہت اچھی ہے۔

— ہنر

हमारी राय

पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में लड़ाई

लोगों को पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बीच लड़ाई छिड़ जाने का डर है. उम्मीद की जाती है कि दोनों तरफ़ की सरकारें लड़ाई से बचने की पूरी पूरी कोशिश करेंगी. बहुत से लोग लड़ाई की बातें इस तरह करते हैं जैसे लड़ाई कोई अच्छी चीज़ हो. ऐसे मौक़े पर हम यह देखें कि जिन राजकाजी या फ़ौजी लोगों ने पिछले दोनों महायुद्धों में से किसी न किसी को शुरू करने और जारी रखने में सबसे ज़्यादा हिस्सा लिया था, उनमें से कुछ ने बाद में अपनी कारगुज़ारी पर क्या राय क़ायम की. फ़ील्ड मार्शल सर विलियम राबर्टसन पहले महायुद्ध के ख़ास महारथियों में से थे. सन् १९३० में उन्होंने कहा कि—

"पहले कभी लोगों ने इतने आम तौर से इस बात को नहीं समझा था जितना अब कि मुल्कों मुल्कों या क़ौमों क़ौमों के बीच के झगड़ों को तय करने के लिये लड़ाई का तरीक़ा एक ग़लत और नाकारा तरीक़ा साबित हो चुका है. यह बात दिन पर दिन ज़ाहिर होती जा रही है कि असल में कोई क़ौम ग़ैर क़ौम है ही नहीं, बल्कि सबका नफ़ा नुक़सान एक दूसरे के साथ इस तरह गुथा हुआ है कि अगर एक क़ौम या एक मुल्क को नुक़सान होता है तो कम या ज़्यादा सबको नुक़सान उठाना पड़ेगा. इसमें कोई शक नहीं कि युद्ध

ہماری رائے

پاکستان اور ہندستان میں لڑائی

لوگوں کو پاکستان اور ہندستان کے بیچ لڑائی چھڑ جانے کا ڈر ہے۔ امید کی جاتی ہے کہ دونوں طرف کی سرکاریں لڑائی سے بچنے کی پوری کوشش کریں گی۔ بہت سے لوگ لڑائی کی باتیں اس طرح کرتے ہیں جیسے لڑائی کوئی اچھی چیز ہو۔ ایسے موقع پر ہم یہ دیکھیں کہ جن راج کاجی یا فوجی لوگوں نے پچھلے دونوں مہایدھوں میں سے کسی نہ کسی کو شروع کرنے اور جاری رکھنے میں سب سے زیادہ حصہ لیا تھا، ان میں سے کچھ نے بعد میں اپنی کارگزاری پر کیا رائے قائم کی۔ فیلڈ مارشل سر ولیم رابرٹسن پہلے مہایدھ کے خاص مہارتھیوں میں سے تھے۔ سن ۱۹۳۰ء میں انھوں نے کہا کہ—

"پہلے کبھی لوگوں نے اتنے عام طور سے اس بات کو نہیں سمجھا تھا جتنا اب کہ ملکوں ملکوں یا قوموں قوموں کے بیچ کے جھگڑوں کو طے کرنے کے لئے لڑائی کا طریقہ ایک غلط اور ناکارہ طریقہ ثابت ہو چکا ہے۔ یہ بات دن پر دن ظاہر ہوتی جا رہی ہے کہ اصل میں کوئی قوم غیر قوم ہے ہی نہیں، بلکہ سب کا نفع نقصان ایک دوسرے کے ساتھ اس طرح گتھا ہوا ہے کہ اگر ایک قوم یا ایک ملک کو نقصان ہوتا ہے تو کم یا زیادہ سب کو نقصان اٹھانا پڑے گا۔ اس میں کوئی شک نہیں کہ جنگ

को रोकने के लिये सबसे जरूरी बात यह नहीं है कि बड़ी बड़ी फ़ौजें और क़ीमती हथियार रखे जावें, सबसे पहली और जरूरी बात यह है कि क़ौमों क़ौमों के आपसी व्यवहार में 'खुदग़रज़ी' कम हो और एक दूसरे से 'डाह या जलन' मिटे. हमें उम्मीद है कि अब धीरे धीरे हम उधर को जा रहे हैं. जब तक यह बात न हो जावेगी तब तक न हथियारों की दौड़ ख़तम होगी और न दुनिया की क़ौमों में मेल मिलाप और अमन क़ायम होगा. और जब यह हो जावेगी तो आसानी के साथ हथियारों का भी ख़ातमा हो जावेगा और दुनिया मेल मिलाप और अमन के रास्ते पर भी चलने लगेगी ."

एक दूसरे तजरबेकार सेनापति ब्रिगेडियर जनरल एफ़० पी० क्रोज़ियर का कहना है कि—

"दुनिया धीरे धीरे इस बात की तरफ़ आ रही है कि अब लड़ाई के तरीक़ों से हटकर शान्ति के तरीक़ों को बरतना चाहिये. दुनिया की आगे की खुशहाली का दारमदार इसी बात पर है कि आम जनता की राय को ऐसा बना दिया जावे जिससे लोगों को लड़ाई की बातें सोचने की जगह हमेशा अमन की ही बातें सोचने की आदत पड़ जावे. मैंने इस बात पर अच्छी तरह सोचा है, समझा है और तजरबा करके देखा है. इस लिये अब मैं चाहता हूं कि इस तरह के विचारों को फैलाऊं. मेरी जिन्दगी का बहुत सा हिस्सा लड़ने में या लड़ाई की तैयारी करने मे बीता है. अब मैं अपनी रही सही जिन्दगी दुनिया के अन्दर अमन क़ायम करने में बिताना चाहता हूं."

योरप के बहुत से अच्छे अच्छे सोचने वाले, जो राज काज

کو روکنے کے لئے سب سے ضروری بات یہ نہیں ہو کہ بڑی بڑی فوجیں اور قیمتی ہتھیار رکھے جاویں، سب سے پہلی اور ضروری بات یہ ہو کہ قوموں قوموں کے آپسی ویوہار میں 'خود غرضی' کم ہو اور ایک دوسرے سے 'ڈاہ یا جلن' مٹے. ہمیں امید ہو کہ اب دھیرے دھیرے ہم ادھر کو جا رہے ہیں. جب تک یہ بات نہ ہو جاوے گی تب تک نہ ہتھیاروں کی دوڑ ختم ہوگی اور نہ دنیا کی قوموں میں میل ملاپ اور امن قایم ہوگا اور جب یہ ہو جاوے گی تو آسانی کے ساتھ ہتھیاروں کا بھی خاتمہ ہو جاوے گا اور دنیا میل ملاپ اور امن کے راستہ پر بھی چلنے لگے گی."

ایک دوسرے تجربے کار سیناپتی برگیڈیر جنرل ایف. پی. کروزیر کا کہنا ہو کہ —

"دنیا دھیرے دھیرے اس بات کی طرف آ رہی ہو کہ اب لڑائی کے طریقوں سے ہٹ کر شانتی کے طریقوں کو برتنا چاہیے. دنیا کی آگے کی خوش حالی کا دارمدار اسی بات پر ہو کہ عام جنتا کی رائے کو ایسا بنا دیا جاوے جس سے لوگوں کو لڑائی کی باتیں سوچنے کی جگہ ہمیشہ امن کی ہی باتیں سوچنے کی عادت پڑ جاوے. میں نے اس بات پر اچھی طرح سوچا ہو، سمجھا ہو اور تجربہ کر کے دیکھا ہو. اس لئے اب میں چاہتا ہوں کہ اس طرح کے وچاروں کو پھیلاؤں. میری زندگی کا بہت سا حصہ لڑنے میں یا لڑائی کی تیاری کرنے میں بیتا ہو. اب میں اپنی رہی سہی زندگی دنیا کے اندر امن قایم کرنے میں بتانا چاہتا ہوں."

یورپ کے بہت سے اچھے اچھے سوچنے والے جو راج کاج

के मैदान से बाहर हैं, इसी तरह सोच रहे हैं. हमने सिर्फ़ दो ऐसे आदमियों की राय दी है जिन्होंने लड़ाई के तरीक़े को जी भरके आज़मा लिया था और जिन्होंने उससे बरबादी ही बरबादी देखी. उनकी राय की सचाई को हम परखना चाहें तो आजकल के योरप पर एक निगाह डाल लेना काफ़ी है. इस समय लगभग सारे योरप की हालत एक 'बीमार' की सी है. अगर योरप को, जिसके पास जवानी है, जान है, ताक़त है और इस क़दर सामान है, इस बीमारी से निकल सकना इतना कठिन मालूम हो रहा है, तो हिन्दुस्तान की तो बात ही क्या? श्री राजगोपालाचारी ने हाल में कृष्णनगर में कहा है—"लड़ाई के एलान से सारा हिन्दुस्तान बड़ी भयानक मुसीबत में पड़ जायगा और चारों तरफ़ बरबादी ही बरबादी दिखाई देगी. सारी हिन्दुस्तानी क़ौम के लिये इसके नतीजे लगभग वैसे ही होंगे जैसे किसी आदमी के लिये ख़ुद अपना गला घोट लेना." राजा जी का ख़याल शायद ग़लत नहीं है. उन्होंने दर्द भरे शब्दों में लोगों से कहा कि—"एक ऐसे बुड्ढे आदमी की हैसियत से, जिसे इस मुल्क और यहाँ के हालात का तजरबा है, मैं आपको यह बता देना चाहता हूँ कि एक दूसरे की बेएतबारी और नफ़रत की राह पर चल पड़ने की जगह यह ज़्यादह अच्छा है कि हम मुहब्बत से काम लें, एक दूसरे पर एतबार करें और इससे जो कुछ भी ख़तरा हो, उसका सामना करें.........मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप सब एक दूसरे के सब गुनाहों को माफ़ करदें."

योरप के [illegible] कर वहां के हाकिम, सरकारी अफ़सर

کے میدان سے باہر ہیں، اِسی طرح سوچ رہے ہیں. ہم نے صرف دو ایسے آدمیوں کی رائے دی ہے جنھوں نے لڑائی کے طریقے کو جی بھر کے آزما لیا تھا اور جنھوں نے اُس سے بربادی ہی بربادی دیکھی. اُن کی رائے کی سچائی کو ہم پرکھنا چاہیں تو آج کل کے یورپ پر ایک نگاہ ڈال لینا کافی ہے. اِس سمے لگ بھگ سارے یورپ کی حالت ایک 'بیمار' کی سی ہے. اگر یورپ کو، جس کے پاس جوانی ہے، جان ہے، طاقت ہے اور اِس قدر سامان ہے. اِس بیماری سے نکل سکنا اِتنا کٹھن معلوم ہو رہا ہے، تو ہندستان کی تو بات ہی کیا؟ شری راج گوپال اچاریہ نے حال میں کرشن نگر میں کہا ہے—"لڑائی کے اعلان سے سارا ہندستان بڑی بھیانک مصیبت میں پڑ جائے گا اور چاروں طرف بربادی ہی بربادی دکھائی دے گی. ساری ہندستانی قوم کے لئے اِس کے نتیجے لگ بھگ ویسے ہی ہوں گے جیسے کسی آدمی کے لئے خود اپنا گلا گھونٹ لینا." راجا جی کا خیال شاید غلط نہیں ہے. اُنھوں نے درد بھرے شبدوں میں لوگوں سے کہا کہ—"ایک ایسے بڈھے آدمی کی حیثیت سے، جسے اِس ملک اور یہاں کے حالات کا تجربہ ہے، میں آپ کو یہ بتا دینا چاہتا ہوں کہ ایک دوسرے کی بے اعتباری اور نفرت کی راہ پر چل پڑنے کی جگہ یہ زیادہ اچھا ہے کہ ہم محبت سے کام لیں، ایک دوسرے پر اعتبار کریں اور اِس سے جو کچھ بھی خطرہ ہو اُس کا سامنا کریں......میں آپ سے پرارتھنا کرتا ہوں کہ آپ سب ایک دوسرے کے سب گناہوں کو معاف کر دیں."

और पूंजीपति जो कम या ज्यादह हकूमत को चलाते हैं, अभी तक अपने अन्दर की उस बुराई को नहीं जीत पाये जो इन सब लड़ाइयों की जड़ है. अभी तक 'खुद गरज़ी' और 'जलन' का ही मुल्कों और क़ौमों के बीच के सब मामलों में दौर-दौरा है. तीसरे महायुद्ध का होना कोई नामुमकिन चीज़ नहीं है. वह महायुद्ध अगर टलता आ रहा है तो सिर्फ़ इसलिये, क्यों कि लगभग वह सब लोग जो उसमें हिस्सा लेने वाले हैं, डर रहे हैं कि उससे आजकल की योरप की तहज़ीब का ख़ातमा हो जायगा. अगर महायुद्ध हुआ तो बहुत मुमकिन है कि उससे इनसानी इतिहास का एक युग ख़तम होकर बिलकुल नया और दूसरा युग शुरू हो.

अब हम फिर अपनी तरफ़ एक निगाह डालें. दोनों पड़ोसी हकूमतों के बीच लड़ाई की बात किसी को भी न हलकी तबियत से करनी चाहिये और न उसे कोई अच्छी चीज़ समझनी चाहिये. हम सब को ईश्वर से यह प्रार्थना करनी चाहिये कि लड़ाई न हो. दोनों तरफ़ के राजकाजी लोगों को अपनी पूरी ताक़त इस बात में लगा देनी चाहिये कि जहाँ तक हो सके, लड़ाई न हो. अगर इसके बाद भी हमें इस आग में से निकलना ही पड़ा तो हर शहर, हर गली और हर गांव के लोगों को कोशिश करनी चाहिये कि यह सारा काम दोनों सरकारों के ही हाथ में रहे. हमारी समाजी ज़िन्दगी पर और ख़ास कर जगह-जगह हिन्दू मुसलमानों के आपसी संबंध पर इसका कोई असर न पड़े. काम कठिन है, पर जिस दरजे तक हम यह कर सकेंगे उस दरजे तक ही हम इस मुसीबत के बुरे नतीजों से बच सकेंगे. शायद तब ही हम तजरबे से सीख कर

اور پونجی پتی جو کم یا زیادہ حکومت کو چلاتے ہیں، ابھی تک اپنے
اندر کی اس برائی کو نہیں جیت پائے جو ان سب لڑائیوں کی جڑ
ہے۔ ابھی تک خودغرضی اور جلن کا ہی ملکوں اور قوموں کے بیچ
کے سب معاملوں میں دور دورہ ہے۔ تیسرے مہایدھ کا ہونا کوئی
ناممکن چیز نہیں ہے۔ وہ مہایدھ اگر ٹلتا جا رہا ہے تو صرف اس لئے،
کیونکہ لگ بھگ وہ سب لوگ جو اس میں حصہ لینے والے ہیں،
ڈر رہے ہیں کہ اس سے آج کل کی یورپ کی تہذیب کا خاتمہ
ہو جائے گا۔ اگر مہایدھ ہوا تو بہت ممکن ہے کہ اس سے انسانی اتہاس
کا ایک یگ ختم ہو کر بالکل نیا اور دوسرا یگ شروع ہو۔

اب ہم پھر اپنی طرف ایک نگاہ ڈالیں۔ دونوں پڑوسی حکومتوں
کے بیچ لڑائی کی بات کسی کو بھی نہ ہلکی طبیعت سے کرنی چاہئے
اور نہ اسے کوئی اچھی چیز سمجھنی چاہئے۔ ہم سب کو ایشور سے یہ
پرارتھنا کرنی چاہئے کہ لڑائی نہ ہو۔ دونوں طرف کے راج کاجی لوگوں
کو اپنی پوری طاقت اس بات میں لگا دینی چاہئے کہ جہاں تک
ہو سکے لڑائی نہ ہو۔ اگر اس کے بعد بھی ہمیں اس آگ میں سے
نکلنا ہی پڑا تو ہر شہر، ہر گلی اور ہر گاؤں کے لوگوں کو کوشش
کرنی چاہئے کہ یہ [illegible] کام دونوں سرکاروں کے ہی ہاتھ میں رہے۔
ہماری سماجی زندگی پر اور خاص کر جگہ جگہ ہندو مسلمانوں کے آپسی
سمبندھ پر اس کا کوئی اثر نہ پڑے۔ کام کٹھن ہے، پر جس درجے
تک ہم یہ کر سکیں گے اس درجے تک ہی ہم اس مصیبت کے

ज़्यादा समझदारी और ज़्यादह नम्रता के साथ, अपने आप को पाक करने, ऊंचा ले जाने और ज़्यादह नेक बनाने के काम में लग सकेंगे. इन्सानी समाज के सब दुखों का यही एक असली इलाज है.

नई दिल्ली. —सुन्दरलाल

एक क़ौमी फ़िरक़ा

अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी के इतिहास के प्रोफ़ेसर भाई मोहम्मद हबीब अपने मज़मून के बहुत बड़े विद्वान हैं. 'हिन्दुस्तानी क़ौम की एकता' के बारे में उनका विश्वास इतना अटल है कि बड़ी-बड़ी आज़माइशें और मुसिबतें भी उसे नहीं हिला सकीं. पिछले दिसम्बर में बम्बई में इंडियन हिस्ट्री कॉंग्रेस की दसवीं बैठक हुई थी, जिसमें सदर की हैसियत से उन्होंने कहा कि—"हिन्दुस्तान एक मुल्क है, यह नैतिक दृष्टि से हिन्दुस्तान में एक बुनियादी सवाल माना गया है. हज़ारों वर्ष से और हर ज़माने में हिन्दुस्तान के समझदार राजकाजी लोग हमेशा यही चाहते और कोशिश करते रहे हैं कि देश भर में एक हिन्दुस्तानी सरकार का एक कोने से दूसरे कोने तक राज हो. हिन्दुस्तान की इस एकता को तोड़कर मुल्क के अन्दर दो अलग अलग हकूमतें क़ायम करना, जो अलग अलग अपने क़ानून बनावें, और जिनमें एक हकूमत में रहने वाला दूसरी में परदेसी माना जाय,.....और इस तरह निरी मज़हबी या फ़िरक़े बन्दी की बुनियाद पर अलग अलग राज क़ायम करना एक ऐसा घोर अन्याय है, जो हमारे मुल्क के इतिहास में कभी नहीं सुना गया था."

उन्होंने कहा कि—"हमारा सबसे पहला मक़सद यह होना

[illegible] रहा एक तरफ़ का है.

جانے اور زیادہ نیک بنانے کے کام میں لگ سکیں گے۔
انسانی سماج کے سب دکھوں کا یہی ایک اصلی علاج ہے۔

نئی دلی۔ — سندر لال

ایک قومی فرقہ

علی گڑھ مسلم یونیورسٹی کے اتہاس کے پروفیسر بھائی محمد حبیب اپنے مضمون کے بہت بڑے ودوان ہیں۔ 'ہندستانی قوم کی ایکتا' کے بارے میں ان کا وشواس اتنا اٹل ہے کہ بڑی بڑی آزمائشیں اور مصیبتیں بھی اسے نہیں ہلا سکیں۔ پچھلے دسمبر میں بمبئی میں انڈین ہسٹری کانگریس کی دسویں بیٹھک ہوئی تھی، جس میں صدر کی حیثیت سے انھوں نے کہا کہ—"ہندستان ایک ملک ہے، یہ نیتک درشٹی سے ہندستان میں ایک بنیادی سوال مانا گیا ہے۔ ہزاروں برس سے اور ہر زمانے میں ہندستان کے سمجھدار راج کاجی لوگ ہمیشہ یہی چاہتے اور کوشش کرتے رہے ہیں کہ دیش بھر میں ایک ہندستانی سرکار کا ایک کونے سے دوسرے کونے تک راج ہو۔ ہندستان کی اس ایکتا کو توڑ کر ملک کے اندر دو الگ الگ حکومتیں قائم کرنا، جو الگ الگ اپنے قانون بنا دیں، اور جن میں ایک حکومت میں رہنے والا دوسری میں پردیسی مانا جائے،..... اور اس طرح نرے مذہبی یا فرقے بندی کی بنیاد پر الگ الگ راج قائم کرنا ایک ایسا گھور انیائے ہے، جو ہمارے ملک کے اتہاس میں کبھی نہیں سنا گیا تھا۔"

انھوں نے کہا کہ—"ہمارا سب سے پہلا مقصد یہ ہونا

کے اتہاس کا سارا جھکاؤ اسی ایک طرف کو ہے۔

चाहिये कि सारे हिन्दुस्तान को फिर से एक करलें." उन्होंने यह भी कहा कि—"दुनिया भर के इतिहास से अगर कोई एक सबक़ मिलता है तो यह कि एकता का यह काम शान्ति के तरीक़ों से ही होना चाहिये, ...लड़ाई आज कल के ज़माने में जितनी गुत्थियों को सुलझाती है उससे ज़्यादा नई गुत्थियाँ पैदा कर देती है. शान्ति के रास्ते को छोड़ना मौत की तरफ़ बढ़ना है."

प्रोफ़ेसर हबीब को यक़ीन है कि—"अगर दोनों में से किसी एक तरफ़ भी राजकाजी सूझ बूझ, समझ और धीरज से काम लिया गया, तो हमारा यह मतलब पूरा हो जायगा." पुराने ज़माने में इस मुल्क में दीन-धर्म, रीत-रिवाज और रहन-सहन के मामलों में सबको जो आज़ादी और आपस में रवादारी थी, उसे बयान करते हुए उन्होंने कहा कि—"धर्म के नाम पर किसी के साथ ज़बरदस्ती या अन्याय करना हमारी या हमारे मुल्क की मिट्टी में ही नहीं है." उनका सुझाव है कि हमें "एक क़ौमी कलचर सभा" या "क़ौमी फ़िरक़ा" बनाना चाहिये "जिसमें पिछली सब अलग अलग कलचरों या जमातों की अच्छी से अच्छी बातें लेली जाँय," और जिससे एक मिली जुली "हिन्दुस्तानी कलचर" बढ़े और फले फूले.

प्रोफ़ेसर हबीब के शब्द देश के एक सच्चे सपूत के मुँह से निकले हैं, जिसे अपने देश के सारे पिछले इतिहास पर ठीक नज़र है. हिन्दुस्तान को फिरसे एक करने के बारे में हमें कहना है कि बँटवारा ग़ैर मुसलमानों ने नहीं चाहा था. नेशनलिस्ट मुसलमानों, अहरार, उलमा और कुछ दूसरे

چاہئے کہ سارے ہندستان کو پھر سے ایک کرلیں." انھوں نے یہ بھی کہا کہ— "دنیا بھر کے اتہاس سے اگر کوئی ایک سبق ملتا ہو تو یہ کہ ایکتا کا یہ کام شانتی کے طریقوں سے ہی ہونا چاہئے، ..... لڑائی آج کل کے زمانے میں جتنی گتھیوں کو سلجھاتی ہو اس سے زیادہ نئی گتھیاں پیدا کردیتی ہو. شانتی کے راستے کو چھوڑنا موت کی طرف بڑھنا ہو."

پروفیسر حبیب کو یقین ہو کہ— "اگر دونوں میں سے کسی ایک طرف بھی راج کاجی سوجھ بوجھ، سمجھ اور دھیرج سے کام لیا گیا تو ہمارا یہ مطلب پورا ہوجائے گا." پرانے زمانے میں اس ملک میں دین دھرم، ریت رواج اور رہن سہن کے معاملوں میں سب کو جو آزادی اور آپس میں رواداری تھی، اسے بیان کرتے ہوئے انھوں نے کہا کہ— "دھرم کے نام پر کسی کے ساتھ زبردستی یا انیائے کرنا ہماری یا ہمارے ملک کی مٹی میں ہی نہیں ہو." ان کا سجھاؤ ہو کہ ہمیں "ایک قومی کلچر سبھا" یا "قومی فرقہ" بنانا چاہئے، "جس میں پچھلی سب الگ الگ کلچروں یا جماعتوں کی اچھی سے اچھی باتیں لے لی جائیں،" اور جس سے ایک ملی جلی "ہندستانی کلچر" بڑھے اور پھلے پھولے.

پروفیسر حبیب کے شبد دیش کے ایک سچے سپوت کے منھ سے نکلے ہیں، جسے اپنے دیش کے سارے پچھلے اتہاس پر ٹھیک نظر ہو. ہندستان کو پھر سے ایک کرنے کے بارے میں ہمیں کہنا ہو کہ بٹوارہ غیر مسلمانوں نے نہیں چاہا تھا. نیشنلسٹ مسلمانوں، احرار، علما اور کچھ دوسرے

दोनों को छोड़ कर यह माँग मुसलमानों की ही थी, देशके मुसलमानों की ही भलाई के नाम पर बँटवारा माँगा गया था, चाहे वह भलाई असली रही हो या फ़रज़ी. इसलिये फिर से एकता की माँग भी, जब मुसलमान चाहें, उन्हीं को करनी है. हिन्दुओं की तरफ़ से इस तरह का आन्दोलन हमारी कठिनाइयों को और बढ़ा सकता है और प्रोफ़ेसर हबीब जिस दिन को लाना चाहते हैं उसे और दूर फेंक सकता है.

इस बीच ग़ैर मुस्लिम, और ख़ासकर हिन्दू, सबसे अच्छा काम यही कर सकते हैं कि वह यह सोचें कि उनके अपने विचारों और चलन में ऐसी कौन कौन सी बातें थीं, जिन्हों ने दो क़ौम के उसूल को पैदा होने में मदद दी, और फिर इस तरह की सब बातों को अपने अन्दर से निकाल कर बाहर करें. उन्हें अपने दिलों के अन्दर से हर तरह के ग़ुस्से, नफ़रत, बदले के ख़याल और हर तरह की छुआछूत को निकाल कर बाहर कर देना चाहिये. उन्हें अपनी तरफ़ से इस बात की पूरी कोशिश करनी चाहिये कि जब तक दोनों राज अलग-अलग हैं, तब तक भी दोनों ही सुखी रहें, फलें फूलें, और एक दूसरे के दोस्त रहें. प्रोफ़ेसर हबीब का यह कहना बिलकुल ठीक है कि अगर दबी हुई करोड़ों जनता के भले के लिये एकता होनी है, तो वह 'शांति' यानी अहिंसा के तरीक़ों से ही होनी चाहिये.

प्रोफ़ेसर हबीब ने 'क़ौमी कलचर सभा,' 'क़ौमी फ़िरक़े' और एक मिली जुली 'हिन्दुस्तानी कलचर' की भी बात कही है. सच मुच हिन्दुस्तान के इतिहास का सारा झुकाव इसी एक तरफ़ को है.

دونوں کو چھوڑکر یہ مانگ مسلمانوں کی ہی تھی، دیش کے مسلمانوں کی ہی بھلائی کے نام پر بٹوارہ مانگا گیا تھا، چاہے وہ بھلائی اصلی رہی ہو یا فرضی. اس لئے پھر سے ایکتا کی مانگ بھی، جب مسلمان چاہیں، انھیں کو کرنی ہے. ہندوؤں کی طرف سے اس طرح کا اندولن ہماری کٹھنائیوں کو اور بڑھا سکتا ہے اور پروفیسر حبیب جس دن کو لانا چاہتے ہیں اسے اور دور پھینک سکتا ہے.

اس بیچ غیر مسلم، اور خاص کر ہندو، سب سے اچھا کام یہ کر سکتے ہیں کہ وہ یہ سوچیں کہ ان کے اپنے وچاروں اور چلن میں ایسی کون کون سی باتیں تھیں. جنھوں نے دو قوم کے اصول کو پیدا ہونے میں مدد دی، اور پھر اس طرح کی سب باتوں کو اپنے اندر سے نکال کر باہر کریں. انھیں اپنے دلوں کے اندر سے ہر طرح کے غصے، نفرت، بدلے کے خیال اور ہر طرح کی چھوا چھوت کو نکال کر باہر کر دینا چاہئے. انھیں اپنی طرف سے اس بات کی پوری کوشش کرنی چاہئے کہ جب تک دونوں راج الگ الگ ہیں، تب تک بھی دونوں ہی سکھی رہیں، پھلیں پھولیں، اور ایک دوسرے کے دوست رہیں. پروفیسر حبیب کا یہ کہنا بالکل ٹھیک ہے کہ اگر دبی ہوئی کروڑوں جنتا کے بھلے کے لئے ایکتا ہونی ہے، تو وہ 'شانتی' یعنی اہنسا کے طریقوں سے ہی ہونی چاہئے.

پروفیسر حبیب نے 'قومی کلچر سبھا،' 'قومی فرقے' اور ایک ملی جلی 'ہندستانی کلچر' کی بھی بات کہی ہے. سچ مچ ہندستان کے اتہاس کا سارا جھکاؤ اسی ایک طرف کو ہے.

हमारे सारे इतिहास का और कोई लक्ष्य या मक़सद हो ही नहीं सकता. इसके लिये भी हम दो एक बातें सुझाना चाहते हैं.

यू० पी० और बिहार की सरकारों ने उर्दू लिपि को छोड़ कर अच्छा नहीं किया. हिन्दुस्तान की आम क़ौमी ज़बान को संस्कृत शब्दों से भरने की कोशिश भी ग़लत चीज़ है. यह दोनों क़दम पीछे को उठे हैं. हम जानते हों या न जानते हों, इनके उठाने में हमारे अन्दर ग़ुस्सा, खीझ, और बदले का ख़याल काम कर रहा था. हमें यह क़दम फिर लौटाने पड़ेंगे. इस बीच हमारे मुसलमान भाई थोड़ी सी और उदारता और समझ से काम लेकर हमें मदद क्यों न दें? अगर पिछले ज़माने में अलबेरूनी और फ़ैज़ी जैसों को संस्कृत के पंडित होने का अभिमान हो सकता था, अगर ख़ुसरो, रहीम और रसखान हिन्दी भाषा और हिन्दी साहित्य के जन्म देने वालों में गिने जा सकते हैं, अगर आज कल के दिनों में भी नज़रुल इस-लाम इतनी संस्कृत भरी बंगला में कविता कर सकता है जितनी कोई हिन्दू न कर सके, और अगर मिर्ज़ा अबुलफ़ज़ल असल संस्कृत से चारों वेदों का तरजुमा कर सकते हैं, इस सब के अलावा अगर बहुत से मुसलमानों को अंग्रेज़ी के आलिम होने का फ़ख़्र हो सकता है तो हमारे मुल्क के आजकल के संकट के दिनों में हिन्दुस्तान का हर मुसलमान नागरी लिपि सीखने और हिन्दुओं से बढ़कर हिन्दी भाषा और हिन्दी साहित्य जानने की पूरी-पूरी कोशिश क्यों न करे? रही उर्दू की बात, सो जिन हिन्दू और मुसलमानों के दिलों में उर्दू ज़बान और उर्दू साहित्य की सच्ची क़द्र है, वे अगर उर्दू को ज़िन्दा रखना चाहेंगे, तो कोई उसे मार नहीं

ہمارے سارے اتہاس کا اور کوئی لکشیہ یا مقصد ہو ہی نہیں سکتا۔ اس کے لئے بھی ہم دو ایک باتیں سجھانا چاہتے ہیں۔

یو۔ پی۔ اور بہار کی سرکاروں نے اردو لپی کو چھوڑ کر اچھا نہیں کیا۔ ہندوستان کی عام قومی زبان کو سنسکرت شبدوں سے بھرنے کی کوشش بھی غلط چیز ہے۔ یہ دونوں قدم پیچھے کو اٹھے ہیں۔ ہم جانتے ہوں یا نہ جانتے ہوں، ان کے اٹھانے میں ہمارے اندر غصہ، کھیج اور بدلے کا خیال کام کر رہا تھا۔ ہمیں یہ قدم پھر لوٹانے پڑیں گے۔ اس بیچ ہمارے مسلمان بھائی تھوڑی سی اور اُدارتا اور سمجھ سے کام لے کر ہمیں مدد کیوں نہ دیں؟ اگر پچھلے زمانے میں البیرونی اور فیضی جیسوں کو سنسکرت کے پنڈت ہونے کا ابھیمان ہو سکتا تھا، اگر خسرو، رحیم اور رس خان ہندی بھاشا اور ہندی ساہتیہ کے جنم دینے والوں میں گنے جا سکتے ہیں، اگر آج کل کے دنوں میں بھی نذر الاسلام اتنی سنسکرت بھری بنگلہ میں کویتا کر سکتا ہے جتنی کوئی ہندو نہ کر سکے، اور اگر مرزا ابوالفضل اصل سنسکرت سے چاروں ویدوں کا ترجمہ کر سکتے ہیں، اس سب کے علاوہ اگر بہت سے مسلمانوں کو انگریزی کے عالم ہونے کا فخر ہو سکتا ہے تو ہمارے ملک کے آج کل کے سنکٹ کے دنوں میں ہندوستان کا ہر مسلمان ناگری لپی سیکھنے اور ہندوؤں سے بڑھ کر ہندی بھاشا اور ہندی ساہتیہ جاننے کی پوری پوری کوشش کیوں نہ کرے؟ رہی اردو کی بات، سو جن ہندو اور مسلمانوں کے دلوں میں اردو زبان اور اردو ساہتیہ کی سچی قدر ہے، وہ اگر اردو کو زندہ رکھنا چاہیں گے تو کوئی اسے مار نہیں

सकता, चाहे ऐसे लोगों की गिनती कितनी भी कम क्यों न हो. आजकल जो फ़िरक़े वारी पागलपन और अंधेपन की हवा बह रही है, वह अगर हमें मिटा कर ख़त्म कर देने के लिये नहीं आई है, तो एक न एक दिन बन्द होगी ही. पर उस शुभ दिन के लाने में मुसलमान भाई हमें इसी तरह मदद दे सकते हैं.

एक बात और. पढ़े लिखे मुसलमान जालीनूस और अरस्तू, अफ़लातून और सुक़रात के नाम बड़ी इज़्ज़त से ले सकते हैं, पर धन्वन्तरि और पातन्जलि, गौतम और कणाद के नहीं. पहले चारों यूनानी थे, दूसरे हिन्दुस्तानी. वैद्यक (तिब), साइन्स और फ़लसफ़े के मैदानों में इन सब के नाम बराबर की इज़्ज़त से लिये जाते हैं. सब ही गैर मुस्लिम, और थोड़े बहुत सब ही बुत परस्त थे. हम आशा रखते हैं कि जान बूझ कर ऐसा नहीं किया जा रहा है. इसकी बड़ी वजह जानकारी की कमी है. अभी दूसरे कारणों में जाना फ़जूल है. इसी तरह की बात हिन्दुओं के बारे में भी कही जा सकती है. इस सारी कमी को पूरा करना ज़रूरी है. अगर इस मुल्क के हम सब रहने वाले हिन्दू, मुसलमान और दूसरे मज़हबों के लोग, सचमुच प्रोफ़ेसर हबीब के दिल की हिन्दुस्तानी निगाह और मिली जुली हिन्दुस्तानी कलचर को बढ़ाने और फैलाने में मदद दें, तब ही हम सारी दुनिया की उस एक मिली जुली कलचर और उस इन्सानी भाई चारे को बढ़ाने में भी हिस्सा ले सकेंगे.

—सुन्दर लाल

('हरिजन सेवक' से)

سکتا، چاہے ایسے لوگوں کی گنتی کتنی بھی کم کیوں نہ ہو۔ آجکل جو فرقے واری پاگل پن اور اندھے پن کی ہوا بہہ رہی ہے، وہ اگر ہمیں مٹا کر ختم کر دینے کے لئے نہیں آئی ہے، تو ایک نہ ایک دن بند ہوگی ہی۔ پر اس شبھ دن کے لانے میں مسلمان بھائی ہمیں اسی طرح مدد دے سکتے ہیں۔

ایک بات اور۔ پڑھے لکھے مسلمان جالینوس اور ارسطو، افلاطون اور سقراط کے نام بڑی عزت سے لے سکتے ہیں، پر دھنونتری اور پاتنجلی، گوتم اور کناد کے نہیں۔ پہلے چاروں یونانی تھے، دوسرے ہندستانی۔ ویدک (طب)، سائنس اور فلسفے کے میدانوں میں ان سب کے نام برابر کی عزت سے لئے جاتے ہیں۔ سب ہی غیر مسلم، اور تھوڑے بہت سب ہی بت پرست تھے۔ ہم آشا رکھتے ہیں کہ جان بوجھ کر ایسا نہیں کیا جا رہا ہے۔ اس کی بڑی وجہ جانکاری کی کمی ہے۔ ابھی دوسرے کارنوں میں جانا فضول ہے۔ اسی طرح کی بات ہندوؤں کے بارے میں بھی کہی جا سکتی ہے۔ اس ساری کمی کو پورا کرنا ضروری ہے۔ اگر اس ملک کے ہم سب رہنے والے ہندو، مسلمان اور دوسرے مذہبوں کے لوگ، سچ مچ پروفیسر حبیب کے دل کی ہندستانی نگاہ اور ملی جلی ہندستانی کلچر کو بڑھانے اور پھیلانے میں مدد دیں، تب ہی ہم ساری دنیا کی اس ایک ملی جلی کلچر اور اس انسانی بھائی چارے کو بڑھانے میں بھی حصہ لے سکیں گے۔

—سندر لال

(ہریجن سیوک سے)

जवानी आकर नहीं जाती

जवानी के बारे में यह कहावत है कि जो लपकी तो लौटी नहीं. पर तुम को इसे झूट साबित कर दिखाना होगा. और यह कोई बड़ी बात नहीं. जवानों के कोश में असंभव लिखा ही नहीं रहता फिर, तुम्हारे लिए वैसा कर दिखाना मुश्किल क्यों होगा ?

जवानी और जवानों पर ही सबका क़लम क्यों उठता है ? उन पर न उठेगा तो किस पर उठेगा ? तुम लिखने के लिए घिसा क़लम नहीं लेते, पुराने पर नजर नहीं डालते. लकड़ी चीरने के लिए नई से नई आरी ढूँढते हो, और लकड़ी फाड़ने के लिए नई से नई कुल्हाड़ी. टूटे या मोथरे चाक़ू से तुम क़लम बनाने की नहीं सोचते. खेती करने में भी हल नये और बैल जवान जुटाते हो. बात साफ है. यह सब तुम्हारे हाथ में औज़ार हैं. यह नये और तेज होने ही चाहिए. तुम खुंडे औज़ारों से काम ले सकते हो, पर वह न तो ठीक काम करके देंगे न जितना तुम चाहते हो उतना कर के देंगे, और तुम्हारा जी दुखाएंगे वह अलग. यही वजह है कि तुम उन से भागते हो और नयों की खोज में रहते हो. हाँ, कुछ औज़ार ऐसे भी हैं कि जिन से अगर रोज काम लिया जाता रहे तो कम पुराने होते हैं या जल्दी पुराने नहीं होते.

आदमी भी आत्मा के हाथ में एक औज़ार है. वह बचपन में अनगढ़ और जवानी में सुघड़ और काम का बनता है. और अगर वही जवानी में बेकार पड़ा रहे तो उस को इतना मोरचा लग जाता

جوانی آکر نہیں جاتی

جوانی کے بارے میں یہ کہاوت ہے کہ جو لپکی تو لوٹی نہیں. پر تم کو اسے جھوٹ ثابت کر دکھانا ہوگا. اور یہ کوئی بڑی بات نہیں. جوانوں کے کوش میں اسمبھو لکھا ہی نہیں رہتا پھر، تمہارے لئے ویسا کر دکھانا مشکل کیوں ہوگا؟

جوانی اور جوانوں پر ہی سب کا قلم کیوں اٹھتا ہے؟ ان پر نہ اٹھے گا تو کس پر اٹھے گا؟ تم لکھنے کے لئے گھسا قلم نہیں لیتے، پرانے پر نظر نہیں ڈالتے. لکڑی چیرنے کے لئے نئی سے نئی آری ڈھونڈتے ہو اور لکڑی پھاڑنے کے لئے نئی سے نئی کلہاڑی. ٹوٹے یا موتھرے چاقو سے تم قلم بنانے کی نہیں سوچتے. کھیتی کرنے میں بھی ہل نئے اور بیل جوان جٹاتے ہو. بات صاف ہے. یہ سب تمہارے ہاتھ میں اوزار ہیں. یہ نئے اور تیز ہونے ہی چاہئیں. تم کھنڈے اوزاروں سے کام لے سکتے ہو، پر وہ نہ تو ٹھیک کام کرکے دیں گے نہ جتنا تم چاہتے ہو اتنا کرکے دیں گے، اور تمہارا جی دکھائیں گے وہ الگ. یہی وجہ ہے کہ تم ان سے بھاگتے ہو اور نیوں کی کھوج میں رہتے ہو. ہاں، کچھ اوزار ایسے بھی ہیں کہ جن سے اگر روز کام لیا جاتا رہے تو کم پرانے ہوتے ہیں یا جلدی پرانے نہیں ہوتے.

آدمی بھی آتما کے ہاتھ میں ایک اوزار ہے. وہ بچپن میں ان گھڑ اور جوانی میں سگھڑ اور کام کا بنتا ہے. اور اگر وہی جوانی میں بے کار پڑا رہے تو اس کو اتنا مورچا لگ جاتا

है कि बुढ़ापे में छूने से ही उसमें से कुछ टूट २ कर गिरने लगता है. हाँ, जवानी में अगर उससे खूब काम लिया गया हो तो बुढ़ापे में भी वह चमकता रहता है. और आत्मा उससे उस वक़्त भी खासा काम ले सकता है, और लेता भी है. यही वजह है कि जवानी और जवानों के लिए हर एक का क़लम उठता है.

आत्मा की ताक़त की हद किसी ने नहीं पाई पर कमज़ोर और निकम्मा जिस्म उसकी थाह ज़रूर पा लेता है. असल में वह खुद ही आत्मा की थाह बन बैठता है. वह आत्मा पर रोब जमाने लगता है. सवारी की जगह सवार बन बैठता है. नौकर होते मालिक समझने लगता है. काम करने की उधार की पूँजी को अपनी मानने लगता है. पर यह खूब समझता है कि वह उसकी कमाई हुई नहीं है और यह भी समझता है कि वह कमाने की योग्यता भी नहीं रखता. इसी वजह से वह उसको बहुत कंजूसी से खर्च करता है. जीते रहने भर के लिए ही उसे काम में लाता है. इससे वह दुनिया का बहुत बड़ा नुक़सान कर जाता है. वह अपने ऊपर ही नहीं अपने पास वालों पर भी असर डालता है कि आदमी कर ही क्या सकता है ? वह कुल साढ़े तीन हाथ लम्बा है, उसमें कुछ सेर हड्डियाँ हैं, कुछ चरबी और मांस है और कुछ गिलास खून है बस यही खून ज़रा गरम रह कर सारे बदन में दौड़ता रहता है, और उसी के बूते यह आदमी का ढाँचा चल फिर लेता है, उठ बैठ लेता है, और खा-पी लेता है, लेट-सो कर फिर काम में लगने के क़ाबिल हो जाता है. असल में यह जो कहता है ठीक कहता है, पर यह न तो आत्मा का नक़्शा खींचकर बताता है. और न आत्मा

ہو کہ بڑھاپے میں چھونے سے ہی اس میں سے کچھ ٹوٹ ٹوٹ کر گرنے لگتا ہو۔ ہاں، جوانی میں اگر اس سے خوب کام لیا گیا ہو تو بڑھاپے میں بھی وہ چمکتا رہتا ہو۔ اور آتما اس سے اس وقت بھی خاصا کام لے سکتا ہو، اور لیتا بھی ہو۔ یہی وجہ ہو کہ جوانی اور جوانوں کے لئے ہر ایک کا قلم اٹھتا ہو۔

آتما کی طاقت کی حد کسی نے نہیں پائی پر کمزور اور نکما جسم اس کی تھاہ ضرور پا لیتا ہو۔ اصل میں وہ خود ہی آتما کی تھاہ بن بیٹھتا ہو۔ وہ آتما پر رعب جمانے لگتا ہو۔ سواری کی جگہ سوار بن بیٹھتا ہو۔ نوکر ہوتے مالک سمجھنے لگتا ہو۔ کام کرنے کی ادھار کی پونجی کو اپنی ماننے لگتا ہو، پر یہ خوب سمجھتا ہو کہ وہ اس کی کمائی ہوئی نہیں ہو اور یہ بھی سمجھتا ہو کہ وہ کمانے کی یوگیتا بھی نہیں رکھتا۔ اسی وجہ سے وہ اس کو بہت کنجوسی سے خرچ کرتا ہو۔ جیتے رہنے بھر کے لئے ہی اسے کام میں لاتا ہو۔ اس سے وہ دنیا کا بہت بڑا نقصان کر جاتا ہو۔ وہ اپنے اوپر ہی نہیں اپنے پاس والوں پر بھی اثر ڈالتا ہو کہ آدمی کر ہی کیا سکتا ہو؟ وہ کل ساڑھے تین ہاتھ لمبا ہو، اس میں کچھ سیر ہڈیاں ہیں، کچھ چربی اور مانس ہو اور کچھ گلاس خون ہو۔ بس یہی خون ذرا گرم رہ کر سارے بدن میں دوڑتا رہتا ہو، اور اسی کے بوتے یہ آدمی کا ڈھانچا چل پھر لیتا ہو، اٹھ بیٹھ لیتا ہو، اور کھا پی لیتا ہو، لیٹ سو کر پھر کام میں لگنے کے قابل ہو جاتا ہو۔ اصل میں یہ جو کہتا ہو ٹھیک کہتا ہو، پر یہ نہ تو آتما کا نقشہ کھینچ کر بتاتا ہو۔ اور نہ آتما

के सच्चे दोस्त या नौकर तन का ही ठीक ठीक नक़्शा सामने रखता है. जो नक़्शा यह रखता है वह उस तन का नक़्शा होता है जो निकम्मा हो चुका है, और आत्मा से बाग़ी बन बैठा है. आत्मा उस पर सवार होने के नाते या उस मकान में रहने के नाते इसकी मामूली मदद करता रहता है. उन्हीं टुकड़ों पर यह तन अपने को 'मैं' या 'हम' कहकर बोलता है. जब कि इसके 'मैं' का एक भी नुक़्ता या इसके 'हम' का एक भी शोशा इस का अपना नहीं है यानी 'मैं' और 'हम' की बिंदी और मात्रा सब आत्मा से उधार ली हुई है.

जवानों, क्या तुम अपने तन को इस तरह टुकड़ों पर जीते हुए देख सकते हो ? जब तुमको यह पता लग जायेगा कि तुम क्या हो, तो यह तन जो अभी कछवे की चाल चलते जी चुराता है, ख़रगोश की चाल दौड़ेगा, और हिरनों को भी पीछे छोड़ देगा. पर यह बात उसे जवानी में ही हासिल हो सकती है. आत्मा के हाथ में इस नये औज़ार को आने दो, इसे घिस घिस कर चमकने दो. यह घिसने से घिसता नहीं चमकता है, तेज़ होता है, काम का बनता है, सवाया ड्योढ़ा काम करने लगता है, और बरसों जवान रहने की ख़ासियत पा लेता है. आत्मा के हाथ में एक बार अपने को सौंपो तो, और फिर देखो निन्यानवे दर्जे से कुछ कम हरारत वाला तुम्हारा ख़ून एक सौ बीस दरजे की हरारत के तमाशे दिखाने लग जाएगा. अन्तर आत्मा की पुकार सुनने की कला जिस दिन तुम्हें आगई उस दिन तुम कुछ के कुछ बन जाओगे. यह साढ़े तीन हाथ वाला जिस्म समुंदर की तह में पहुंचने

کے سچے دوست یا نوکر تن کا ہی ٹھیک ٹھیک نقشہ سامنے رکھتا ہے۔ جو نقشہ یہ رکھتا ہے وہ اس تن کا نقشہ ہوتا ہے جو نکما ہو چکا ہے، اور آتما سے باغی بن بیٹھا ہے۔ آتما اس پر سوار ہونے کے ناتے یا اس مکان میں رہنے کے ناتے اس کی معمولی مدد کرتا رہتا ہے۔ انھیں ٹکڑوں پر یہ تن اپنے کو 'میں' یا 'ہم' کہہ کر بولتا ہے۔ جب کہ اس کے 'میں' کا ایک بھی نقطہ یا اس کے 'ہم' کا ایک بھی شوشا اس کا اپنا نہیں ہے یعنی 'میں' اور 'ہم' کی بندی اور ماترا سب آتما سے ادھار لی ہوئی ہے۔

جوانو! کیا تم اپنے تن کو اس طرح ٹکڑوں پر جیتے ہوئے دیکھ سکتے ہو؟ جب تم کو یہ پتہ لگ جائے گا کہ تم کیا ہو تو یہ تن جو ابھی کچھوے کی چال چلتے جی چراتا ہے، خرگوش کی چال دوڑے گا، اور ہرنوں کو بھی پیچھے چھوڑ دے گا۔ پر یہ بات اسے جوانی میں ہی حاصل ہو سکتی ہے۔ آتما کے ہاتھ میں اس نئے اوزار کو آنے دو، اسے گھس گھس کر چمکنے دو۔ یہ گھسنے سے گھستا نہیں چمکتا ہے، تیز ہوتا ہے، کام کا بنتا ہے، سوایا ڈیوڑھا کام کرنے لگتا ہے، اور برسوں جوان رہنے کی خاصیت پا لیتا ہے۔ آتما کے ہاتھ میں ایک بار اپنے کو سونپو تو، اور پھر دیکھو ننانوے درجے سے کچھ کم حرارت والا تمھارا خون ایک سو بیس درجے کی حرارت کے تماشے دکھانے لگ جائے گا۔ انتر آتما کی پکار سننے کی کلا جس دن تمھیں آ گئی اس دن تم کچھ کے کچھ بن جاؤ گے۔ ساڑھے تین ہاتھ والا جسم سمندر کی تہہ میں پہنچنے

को तैयार मिलेगा, और हिमालय की चोटी पर उड़कर जा बैठने के लिए तुम्हें उकसाएगा. तभी तुमको पता चलेगा कि आत्मा की ताक़त की कोई हद नहीं है, और उसके सधे नौकर तन की ताक़त की थाह पाना भी आसान नहीं है. गोली जिस तरह तमंचे से कुछ क़दम, रायफ़िल से कई फ़र्लांग, और टामी बंदूक से कई मील जा सकती है, ठीक इसी तरह से यही तन सोते, अंगड़ाते, आँख मलते, बैठे, खड़े और पूरे जागे आत्मा के हाथ में पड़कर दूर दूर और बहुत ही दूर की खबर लाता है. पत्थरों में आत्मा सोया रहता है, पेड़ों में अंगड़ाई लेता है, कीड़े मकोड़ों में आँखें मलता है, चौपायों में बैठा मिलता है, आदमियों में घिसटता मिलता है, और चुस्त जवानों में पूरी तरह जागा हुआ मिलता है. क़लम फिर चुस्त जवानों को न पुकारे तो किस पर 'अपनी नज़र डाले ?

जवानी में अपना जोड़ा रहता है. आत्मा के साथ मिल कर वह कई गुना हो सकता है. जैसे ही तुमने अपने को उसके सुपुर्द किया वैसे ही तुम समाज के लिए बड़े कर्मठ मेंबर बन गए. अभी तुम काम काम पूछते फिर रहे थे फिर औरों को काम बताने लगोगे. कभी भी तुमने चींटी, मक्खी, मकड़ी, बिच्छू, साँप, भेड़, बकरी, गाय, घोड़े, हाथी, शेर, चिड़िया, कौव्वे को ठाली या निकम्मा पाया ? इनको कौन काम बताता है ? यह कब काम की बात पूछने किसी के पास आए ? इन्होंने कब किसी दफ़्तर में नौकरी के लिए अर्ज़ी भेजी ? यह कब किस गली में मोची काम, नाई काम, राज काम, सिखलाते पाए गए ? आत्मा इनमें पूरा

کو تیار ملے گا، اور ہمالیہ کی چوٹی پر اُڑ کر جا بیٹھنے کے لئے تمہیں اُکسائے گا. تبھی تم کو پتہ چلے گا کہ آتما کی طاقت کی کوئی حد نہیں ہوا اور اُس کے سدھے نوکر تن کی طاقت کی تھاہ پانا بھی آسان نہیں ہے. گولی جس طرح طمنچے سے کچھ قدم، رائفل سے کئی فرلانگ اور ٹامی بندوق سے کئی میل جا سکتی ہے، ٹھیک اسی طرح یہی تن سوتے، انگڑاتے، آنکھ ملتے، بیٹھے، کھڑے اور پورے جاگے آتما کے ہاتھ میں پڑ کر دور دور اور بہت ہی دور کی خبر لاتا ہے. پتھروں میں آتما سویا رہتا ہے، پیڑوں میں انگڑائی لیتا ہے، کیڑے مکوڑوں میں آنکھیں ملتا ہے، چوپایوں میں بیٹھا ملتا ہے، آدمیوں میں گھسٹتا ملتا ہے، اور چست جوانوں میں پوری طرح جاگا ہوا ملتا ہے. قلم پھر چست جوانوں کو نہ پکارے تو کس پر اپنی نظر ڈالے؟

جوانی میں اپنا جوڑا رہتا ہے. آتما کے ساتھ مل کر وہ کئی گنا ہو سکتا ہے. جیسے ہی تم نے اپنے کو اس کے سپرد کیا ویسے ہی تم سماج کے لئے بڑے کرمٹھ ممبر بن گئے. ابھی تم کام کام پوچھتے پھر رہے تھے پھر اوروں کو کام بتانے لگوگے. کبھی بھی تم نے چیونٹی، مکھی، مکڑی، بچھو، سانپ، بھیڑ، بکری، گائے، گھوڑے، ہاتھی، شیر، چڑیا، کوّے کو ٹھالی یا نکما پایا؟ ان کو کون کام بتاتا ہے؟ یہ کب کام کی بات پوچھنے کسی کے پاس آئے؟ انہوں نے کب کسی دفتر میں نوکری کے لئے عرضی بھیجی؟ وہ کب کس گلی میں
[illegible]

[illegible] हुआ नहीं है, जब है इनका यह हाल. पर तुममें वह पूरा [illegible] हुआ है. तुम को तो वह काम के खयाल से लट्टू की तरह घुमा देगा, और तुम लट्टू की तरह एक पैर के अंगूठे पर घन्टों घूम सकोगे. बस, यही तस्वीर तुम्हारी दुनिया के दिल पर खिंच जायगी, दुनिया तुम्हें इसी शक्ल में याद रक्खेगी, तुम्हारी यही तस्वीर घर घर में जगह पायेगी. राम और कृष्ण की बूढ़ी तस्वीरें तुमने कब देखीं ? अर्जुन और भीम की कमर झुकी मूरत तुम्हारी आँखों के सामने कब आई ? जाने दो पुरानी बातें, शंकर और रामतीर्थ के चित्र कहीं सफ़ेद बालों वाले मिले ? और आगे चलो, भगतसिंह और राजगुरू की जवानी कभी जा पाई ? और क्या वोह अभीतक जवान नहीं हैं ? बस, तुम अपने कामों से दुनिया की आँखों में जवानी का चित्र छोड़ जाओ, और नीले आसमान पर तुम्हारे अक्षरों में यह लिख जाओ कि "जवानी आकर कभी नहीं जाती".

—भगवान दीन

...ہوا نہیں ہے۔ جب ہے ان کا یہ حال۔ پر تم میں وہ پورا ...ہوا ہے۔ تم کو تو وہ کام کے خیال سے لٹو کی طرح گھما ...ے گا، اور تم لٹو کی طرح ایک پیر کے انگوٹھے پر گھنٹوں گھوم ...سکوگے۔ بس، یہی تصویر تمہاری دنیا کے دل پر کھنچ جائیگی، ...نیا تمہیں اسی شکل میں یاد رکھے گی، تمہاری یہی تصویر گھر ...ر میں جگہ پائے گی۔ رام اور کرشن کی بوڑھی تصویریں تم ...کب دیکھیں؟ ارجن اور بھیم کی کمر جھکی مورت تمہاری ...کھوں کے سامنے کب آئی؟ جانے دو پرانی باتیں، شنکر اور ...تیرتھ کے چتر کہیں سفید بالوں والے ملے؟ اور آگے چلو، ...گت سنگھ اور راج گرو کی جوانی کبھی جا پائی؟ اور کیا ...ابھی تک جوان نہیں ہیں؟ بس، تم اپنے کاموں سے ...نیا کی آنکھوں میں جوانی کا چتر چھوڑ جاؤ، اور نیلے آسمان پر ...مہارے اکشروں میں یہ لکھ جاؤ کہ "جوانی آکر کبھی نہیں ...تی"۔

— بھگوان دین۔

"गीता और क़ुरान"

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे देकर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों को बयान किया गया है.

उसके बाद गीता के लिखे जाने के वक़्त की इस देश की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आख़िर में क़ुरान से पहले की अरब की हालत, क़ुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर क़ुरान की तालीम का बयान किया गया है. इस में क़ुरान की पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ़्ज़ी तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि क़ुरान में जेहाद, आक़िबत, आख़िरत, जन्नत, जहन्नम, काफ़िर वग़ैरा किस कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों को इन दो अमर पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिये.

किताब आसान हिन्दुस्तानी ज़बान में, नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकती है. पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपए. डाक ख़र्च अलग.

मैनेजर "नया हिन्द"

४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

"گیتا اور قرآن"

لیکھک - پنڈت سندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیا ھے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دے دے کر ملتی جلتی بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ھے.

اسکے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اس دیش کی حالت' گیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ھے.

آخر میں قرآن سے پہلے عرب کی حالت' قرآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پر قرآن کی تعلیم کو بیان کیا گیا ھے. اسمیں قرآن کی پانچ سو سے [illegible] آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ھے. یہ بھی بتایا گیا ھے [illegible] قرآن میں جہاد' عاقبت' آخرت' جنت' جہنم' کافر وغیرہ [illegible] گیا ھے.

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاھیں یا ھندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو امر پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاھیں انھیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاھئے.

کتاب [illegible] زبان میں ناگری اور اُردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ھے. پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ - ڈاک خرچ الگ

مینیجر "نیا ھند"

۴۸ - بائی کا باغ' الہ آباد